सूचना ॥

अनेक प्रकारकी पुस्तकें इस यंत्रालय में मुद्रित हुई हैं उन में से जितने पुराणहैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखी जाती हैं जिन महाशयों को इसमें से किसी पुस्तक की आवश्यकताहो वे इस प्रेस के मेनेजर को पत्र लिखकरमँगालें तथा पुस्तकों का जो सूचीपत्र छपाहै वह भी मँगाकर देखलें ॥

देवीभागवत भाषा क़ी० ३) पु०

इसका उल्था पण्डित महेशदत्त सुकुलने कियाहै—इसमें मुख्य करके श्रीदेवीजी के पाठ आदिक का विस्तार और सर्व प्रकारकी शक्तियों का कथन और उनके अवतार, मंत्र, तंत्र, यंत्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, स्तोत्र, माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमाहिमा, गायत्री और देवियों के पुरश्चरण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि असंख्य यंत्र मंत्र रूप विषयहैं भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारणलोग भी समझसक्ते हैं ॥

लिंगपुराण क़ी० ॥।≈)

इसका उल्था छापेखाने के बहुतखर्च से जयपुरनिवासि पण्डित दुर्गाप्रसादजीने भाषामें कियाहै—जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास सूर्यवंश, चन्द्रवंशका वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

विष्णुपुराण भाषा वार्तिक क़ी० ॥।) पु०

इसका पण्डित महेशदत्त सुकुलने भाषान्तर किया है जिस में जगदुत्पत्ति, स्थिति, पालन, ध्रुव, पृथुआदि राजाओं की कथा, भूगोल, खगोल वर्णन, धर्मशास्त्र, मन्वन्तरकथा, सूर्य और सोमवंशी राजाओं का कथन इत्यादि बहुतसी कथायें संयुक्तहैं ॥

विष्णुपुराणभाषाराजाअजीतसिंहवैकुंठवासीकृतक़ी० १॥)पु०

जिसको श्रीराजाप्रतापबहादुरसिंह ताल्लुक़दार व आनरेरी मजिस्ट्रेट व प्रेसीडेंट प्रतापगढ़ने छपवायाहै इसमें सम्पूर्ण विष्णुपुराण दोहा चौपाई इत्यादि अनेकप्रकार के ललित छन्दों में वर्णित है कागज सफ़ेद है ॥

पद्मपुराण भाषा प्रथम सृष्टिखण्ड की भूमिका ॥

वास्तवमें उस करुणासागर सर्व्वशास्त्रनागर परमेश्वरने इस अपनी प्रजा के ऊपर बड़ी कृपादृष्टिकी जो वेदव्यासजीका अवतार लेकर अष्टादश महापुराण व अष्टादश उपपुराण बनाये जिनमें नानाप्रकार के धर्म्मात्माओं के व दुष्टात्माओं के भी इतिहास वर्णन किये व उनके फलभी अच्छी युक्तिके साथ दिखाये जिनके लोभ व भयसे ये महामूढ़ दुराचारी परवित्तदारापहारी मित्र-द्रोहकारी प्राणिहिंसाविहारी विशिष्टजननिन्दाप्रचारी अनेकपशुपक्षिमारी निज कामचारी महालोभचयधारी स्वकीयदुष्टमतप्रचारी सन्मतदारी परमांसपुष्ट महादुष्ट सदारुष्ट लोभातुष्ट महाचुष्ट लोग कुछ २ अपने धर्म्म कर्म्म पर चलते हैं कुमार्ग्गपरसे चरण हटाते हैं शुभधर्म्मपर आरूढ़ होते हैं इन पुराणोंके श्रवणसे अपने पापखोते हैं अधर्म्मनिद्रा में नहीं सोते हैं यह सब इन सबपुराणों काही प्रभावहै नहीं तो महाआकर वेदोंका पठनपाठन धीरे २ इस कलियुग में अत्यल्प होगयाथा धर्म्मशास्त्रोंका भी पाठ बन्दही होगयाथा अल्पबुद्धि होने के कारण व उनकी रूक्षताके कारण कोई वहांतक पहुँचताही न था यदि ये अनेक सरलसयुक्तिक चटापटीके दृष्टान्तोंसे भरेहुये पुराण न बने होते जिनका एक इतिहास देखकर फिर आद्योपान्त विना पढ़लिये छोड़ने को मन नहीं होता तो लोग अवतक महाघोर कलिसमुद्रके भ्रमरमें परकर डूबगये होते सो अब उन थोड़े संस्कृत पढ़ेहुयोंसे भी जो न्यूनहैं कुछ भाषाही जानते हैं उनका महा उपकार इन पुराणोंके भाषानुवादोंसे हुआहै उन पुराणोंमें यह पद्मपुराण जो दूसरा पुराणहै व पचपनसहस्र श्लोक इसमें हैं उसका यह प्रथम सृष्टिखण्ड जिसमें प्रथम सबप्रकारकी सृष्टियोंका वर्णन फिर नानाप्रकारके इतिहासों दृष्टान्तों से विस्तारपूर्व्वक धर्म्मोंका वर्णन बड़े विस्तारसे पुष्करमाहात्म्यकथन ब्रह्मयज्ञविधान वेदपाठादिका लक्षण दानों व व्रतोंका अलग २ कीर्त्तन पार्व्वती-जीके विवाहकी अति विचित्र कथा गोदानादिका अपूर्व्वमाहात्म्य दुष्टताकरने से कालकेयादि दैत्योंका वध सब सूर्य्यादि ग्रहोंका अलग २ पूजन व दान अच्छी रीतिसे कहाहै कि जिसको सुनतेही पुरुषकी इच्छा देवपूजन व दान करने में

तुरन्त होती है दुष्टोंका वध सुनकर दुष्टता करनेसे झट मन हटजाताहै वास्तव में यह परमोपकारकहै आशाहै कि इसे लोग अत्यादरसे ग्रहणकरेंगे ॥

इसके सिवाय इस यन्त्रालयमें औरभी बहुतसे ग्रन्थ प्रत्येक विषयके उल्था होकर मुद्रित हुये हैं वह सम्पूर्ण महाशयोंकी विज्ञप्तिके लिये निम्नलिखितहैं॥

पुराणोंमें-श्रीमद्भागवत,श्रीमहाभारत,शिवपुराण,विष्णुपुराण, लिङ्गपुराण, मार्कण्डेयपुराण,भविष्यपुराण, नृसिंहपुराण,वामनपुराण,वाराहपुराण, जैमिनि पुराण, गणेशपुराण और आदिब्रह्मपुराण सुन्दरदेशभाषाके लालित्यपदोंमें हैं ॥

काव्यमें-रघुवंश, कुमारसम्भव, शिशुपालवध ॥

धर्मशास्त्रमें-मिताक्षरा तीनोंकाण्ड और मनुस्मृति इनकी उत्तमता देखने से विदित होगी ॥

वैद्यक में--निघण्टरत्नाकर, भावप्रकाश, चरक, सुश्रुत, भैषज्यरत्नावली, रसरत्नाकर, वङ्गसेन, शार्ङ्गधर, हंसराजनिदान आदि ॥

वेदान्तमें--योगवाशिष्ठ और श्रीमद्भगवद्गीता शंकरभाष्यादि इन ग्रन्थोंको जो विद्वज्जन अवलोकन करेंगे वह प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करेंगे--और ग्रन्थ-कर्त्ता तथा यन्त्रालयाध्यक्षको धन्यवाद देंगे ॥

महेशदत्तशर्म्मा ॥

पद्मपुराणभाषा सृष्टिखण्ड का सूचीपत्र ॥

इति पद्मपुराणसृष्टिखण्डसूचीपत्रंसमाप्तिमगात् ॥

नारदीयपुराणान्तर्गतपद्मपुराणसूची ॥

ब्रह्मोवाच ॥

शृणु पुत्र! प्रवक्ष्यामि पुराणं पद्मसंज्ञकम् ॥
महापुण्यप्रदन्नृणां शृण्वताम्पठताम्मुदा १
यथा पञ्चेन्द्रियैस्सर्व्वैः शरीरीति निगद्यते ॥
तथेदं पञ्चभिः खण्डैरुदितम्पापनाशनम् २
पुलस्त्येन तु भीष्माय सृष्ट्यादिक्रमतो द्विज! ॥
नानाख्यानेतिहासाद्यैर्य्यत्रोक्तो धर्म्मविस्तरः ३
पुष्करस्य च माहात्म्यं विस्तरेणप्रकीर्त्तितम् ॥
ब्रह्मयज्ञविधानं च वेदपाठादिलक्षणम् ४
दानानाङ्कीर्त्तनं यत्र व्रतानाञ्च पृथक्पृथक् ॥
विवाहश्शैलजायाश्च तारकाख्यानकम्महत् ५
माहात्म्यञ्चगवादीनां कीर्त्तितंसर्व्वपुण्यदम् ॥
कालकेयादिदैत्यानां वधो यत्र पृथक् पृथक् ६
ग्रहाणामर्च्चनन्दानं यत्र प्रोक्तन्द्विजोत्तम! ॥
तत्सृष्टिखण्डमुद्दिष्टं व्यासेन सुमहात्मना ७
पितृमात्रादिपूजान्ते शिवशर्म्मकथा पुरा ॥
सुव्रतस्य कथा पश्चाद् वृत्रस्य च वधस्तथा ८
पृथोर्वैन्यस्य चाख्यानं सुनीथायाःकथातथा ॥
सुकलाख्यानकञ्चैव धर्म्माख्यानन्ततःपरम् ९
पितृशुश्रूषणाख्यानं नहुषस्य कथा ततः ॥
ययातिचरितं चैव गुरुतीर्थनिरूपणम् १०
राज्ञा जैमिनिसंवादो बह्वाश्चर्य्यकथायुतः ॥
कथा ह्यशोकसुन्दर्य्या हुण्डदैत्यवधान्विता ११
कामोदाख्यानकं तत्र विहुण्डवधसंयुतम् ॥

कुञ्जलस्य च संवादश्च्यवनेन महात्मना १२
सिद्धाख्यानन्ततःप्रोक्तंखण्डस्यास्यफलन्तथा॥
सूतशौनकसंवादं भूमिखण्डमिदं स्मृतम् १३
ब्रह्माण्डोत्पत्तिरुदिता ऋषिभ्योयत्रसौतिना॥
सभूमिलोकसंस्थानं तीर्थाख्यानन्ततःपरम् १४
नर्म्मदोत्पत्तिकथनं तत्तीर्थानां कथा पृथक्॥
कुरुक्षेत्रादितीर्थानां कथाः पुण्याः प्रकीर्त्तिताः १५
कालिन्दीपुण्यकथनं काशीमाहात्म्यवर्णनम्॥
गयायाश्चैवमाहात्म्यम्प्रयागस्य च पुण्यकम् १६
वर्णाऽऽश्रमाऽनुरोधेन कर्म्मयोगनिरूपणम् ॥
व्यासजैमिनिसंवादः पुण्यकर्म्मकथान्वितः १७
समुद्रमथनाख्यानं व्रताख्यानं ततः परम् ॥
ऊर्ज्जपञ्चाहमाहात्म्यं स्तोत्रं सर्व्वापराधनुत् १८
एतत्स्वर्गाभिधं विप्र! सर्वपातकनाशनम् ॥
रामाश्वमेधे प्रथमं रामराज्याभिषेचनम् १९
अगस्त्याद्यागमश्चैवपौलस्त्यान्वयकीर्त्तनम्॥
अश्वमेधोपदेशश्च हयचर्य्या ततः परम् २०
नानाराजकथाः पुण्या जगन्नाथानुवर्णनम् ॥
वृन्दावनस्य माहात्म्यं सर्वपापप्रणाशनम् २१
नित्यलीलानुकथनं यत्र कृष्णावतारिणः ॥
माघवस्नानमाहात्म्ये स्नानदानार्च्चने फलम् २२
धरावराहसंवादे यमब्राह्मणयोः कथा ॥
संवादो राजदूतानां कृष्णस्तोत्रनिरूपणम् २३
शिवशम्भुसमायोगो दधीच्याख्यानकन्ततः ॥
भस्ममाहात्म्यमतुलं शिवमाहात्म्यमुत्तमम् २४
देवराजसुताऽऽख्यानं पुराणज्ञप्रकाशनम् ॥
गौतमाख्यानकञ्चैव शिवगीता ततस्स्मृता २५
कल्पान्तरीरामकथा भारद्वाजाश्रमस्थितौ ॥
पातालखण्डमेतद्धि शृण्वतां पठतां सदा २६

सर्व्वपापप्रशमनं सर्व्वाऽभीष्टफलप्रदम् ॥
पर्व्वताख्यानकञ्चोर्ध्वङ्कोपैः प्रोक्तं शिवेन वै २७
जालन्धरकथा पश्चाच्छ्रीशैलाद्यनुकीर्त्तनम् ॥
सगरस्य कथा पुण्या ततः परमुदीरिता २८
गङ्गाप्रयागकाशीनाङ्गयाश्राद्धादिपुण्यकम् ॥
अन्नादिदानमाहात्म्यंमाहात्म्यन्द्वादशीव्रतम् २९
चतुर्विंशैकादशीनां माहात्म्यं पृथगीरितम् ॥
विष्णुधर्म्मसमाख्यानं विष्णुनामसहस्रकम् ३०
कार्त्तिकव्रतमाहात्म्यं माघस्नानफलन्ततः ॥
जम्बूद्वीपस्यतीर्थानां माहात्म्यम्पापनाशनम् ३१
साभ्रमत्याश्चमाहात्म्येनृसिंहोत्पत्तिवर्णनम् ॥
देवशर्मादिकाख्यानं गीतामाहात्म्यवर्णनम् ३२
भक्त्याख्यानञ्चमाहात्म्ये श्रीमद्भागवतस्यहि ॥
इन्द्रप्रस्थस्य माहात्म्यं बहुतीर्थकथान्वितम् ३३
मन्त्ररत्नाभिधानञ्च त्रिपाद्भक्त्यनुवर्णनम् ॥
अवतारकथाः—पुण्या मत्स्यादीनामतःपरम् ३४
रामनामशतन्दिव्यन्तन्माहात्म्यञ्च वाडव ! ॥
परीक्षणं च भृगुणा श्रीविष्णोर्वैभवस्य च ३५
इत्येतदुत्तरङ्खण्डं पञ्चमं सर्व्वपुण्यदम् ॥
पञ्चखण्डयुतम्पद्मं यः शृणोति नरोत्तमः ३६
सलभेद्वैष्णवन्धाम भुक्त्वा भोगानिहेप्सितान् ॥
एतद्वै पञ्चपञ्चाशत्सहस्रं पद्मसञ्ज्ञितम् ३७
पुराणं लेखयित्वा वै ज्यैष्ठ्या स्वर्णाब्ज्यसंयुतम् ॥
यः प्रदद्यात्सुसत्कृत्य पुराणज्ञाय मानद ! ३८
स याति वैष्णवन्धाम सर्वदेवनमस्कृतः ॥
पद्माऽनुक्रमणीमेतां यः पठेच्छृणुयादपि ३९
सोऽपि पद्मपुराणस्य लभेच्छ्रवणजम्फलम् ४०

इति श्रीनारदीयपुराणेपूर्व्वभागेबृहदुपाख्यानेचतुर्थपादे
पद्मपुराणानुक्रमणिकायांद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

नारदीयपुराणान्तर्गत पद्मपुराण सूची का भाषाऽनुवाद ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र! सुनो सुननेवाले व आनन्दसे पढ़तेहुये मनुष्योंको महापुण्यदेनेवाला पद्मपुराण कहतेहैं १ जैसे पांचइन्द्रियोंके होनेसे सब प्राणी देही कहाते हैं तैसेही यह पद्मपुराण पांच खण्डों से पापोंके नाशनेवाला कहा जाता है २ जिस पद्मपुराण में पुलस्त्यमुनि ने भीष्मपितामहसे सृष्ट्यादि क्रमसे नानाप्रकारके आख्यानों व इतिहासों से धर्म्मका विस्तार वर्णन किया है ३ इस में सृष्टिखण्ड, भूमिखण्ड, स्वर्गखण्ड, पातालखण्ड व उत्तरखण्ड ये पांच खण्डहैं उनमें प्रथम सृष्टिखण्डमें कमलका माहात्म्य विस्तार पूर्व्वक कहागया है जैसे कि कमल से उत्पन्न होकर ब्रह्माजी ने सृष्टिकी है—फिर ब्रह्मयज्ञका विधान व वेदपाठका निरूपण किया गयाहै ४ फिर दानोंका कीर्त्तनहै व सब व्रतोंका अलग २ वर्णन है, तदनन्तर महादेव पार्व्वतीजीके विवाहकी कथा, फिर तारकासुरका आख्यान ५ फिर गोदानादिकों का माहात्म्य सब पुण्य देनेवाला कहागयाहै फिर कालकेयादि दैत्योंका पृथक् २ वध वर्णन किया गयाहै ६ हे उत्तम ब्राह्मण! सब सूर्य्यादि ग्रहोंके दान व पूजन का वर्णन, बस महात्मा व्यासजी ने सृष्टिखण्डमें इतनी कथा वर्णनकी ७ इसके आगे भूमिखण्डमें पितामाताके पूजनके पीछे शिवशर्म्मा की कथा फिर सुव्रतकी कथा पश्चात् वृत्रासुरके वधकी कथा कही है ८ फिर वेनकेपुत्र महाराजाधिराज पृथुजीका आख्यान, तदनन्तर सुनीथा की कथा, फिर सुकला का आख्यान, फिर धर्म्मका आख्यान ९ फिर पिताकी शुश्रूषाकरनेका आख्यान, तदनन्तर राजानहुष की कथा, फिर ययातिकी कथा, फिर गुरुतीर्थ का निरूपण १० फिर राजा व जैमिनि का संवाद, जिसमें कि बड़े बड़े आश्चर्य्यों की

कथा युक्तहैं, तदनन्तर अशोकसुन्दरी की कथा, जिस में कि हुण्ड दैत्यके वधकी विचित्रकथा युक्तहै ११ फिर कामोदा का आख्यान जिसमें विहुण्डका वध संयुतहै, फिर च्यवनमहात्मा के साथ कुञ्जलका संवाद १२ फिर सिद्धाख्यान का वर्णन, फिर इसखण्ड की फलस्तुति, फिर कुछ सूत शौनकका संवाद,बस भूमिखण्ड समाप्त हुआ १३ इस के आगे स्वर्गखण्ड में प्रथम ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति सौतिने ऋषियों से कही है, फिर भूमिलोकका आख्यान,फिर तीर्थों का वर्णन १४ फिर नर्म्मदाकी उत्पत्ति का कथन तदनु उस के तीरके तीर्थोंका अलग २ वर्णन, फिर कुरुक्षेत्रादि पुण्यकारी तीर्थोंकी पृथक् २ कथा १५ फिर यमुनाका पुण्य आख्यान,फिर काशीजी का माहात्म्य, गयाजी का माहात्म्य अतिपुण्यदायक प्रयागजी का माहात्म्य वर्णितहै १६ फिर वर्णों व आश्रमोंके अनुरोधसे कर्म्मयोगका निरूपण, फिर पुण्यकर्म्म कथाओंसहित व्यासजी व जैमिनि का संवाद १७ फिर समुद्रमथनका आख्यान तदनन्तर व्रतों का आख्यान, फिर कार्त्तिक के अन्त के पांचदिनों का माहात्म्य, तदनन्तर सर्व्वापराधनाशनस्तोत्र का वर्णन १८ हे विप्र! सब पापों के नाशनेवाला यह स्वर्गखण्ड हुआ इसके आगे पातालखण्डहै उसमें प्रथम रामाश्वमेधकी कथा जिसमें प्रथम श्रीरामजीके राज्याभिषेक का वर्णन १९ फिर अगस्त्यादिऋषियोंका अयोध्याजी में आगमन, फिर रावणके वंशकावर्णन, फिर अश्वमेध करने का उपदेश उसके पीछे अश्वका छोड़ना व उसका इधर उधर घूमना २० फिर नाना प्रकार के राजाओं की पुण्यकथा, जगन्नाथजी का अनुवर्णन फिर वृन्दावनका माहात्म्य जो कि सब पापों को नाश करताहै २१ जिस में कि कृष्णचन्द्रजी के अवतारकी सम्पूर्ण लीला वर्णित हैं, फिर वैशाखमाहात्म्य की कथा जिसमें प्रथम स्नान दान पूजनके फलका वर्णन २२ फिर पृथ्वी व वराहजीके संवादमें यमराज व ब्राह्मणकी कथा, फिर राजदूतोंका संवाद, कृष्णचन्द्रजी के स्तोत्रका निरूपण२३ फिर शिवशम्भुका संयोग,दधीचिकी कथा,फिर भस्मका अतुल माहात्म्य,फिर अत्युत्तम शिवजीका माहात्म्य २४ फिर देवराज के

पुत्रका आख्यान, फिर पुराणज्ञ का आख्यान, फिर गौतमजीकी कथा तदनन्तर शिवगीताका वर्णन २५ फिर भारद्वाज के आश्रमपर स्थिति करके कल्पान्तरी श्रीरामचन्द्रजीकी कथा, बस पातालखण्ड इतनाहै जो पढ़ने सुननेवालों का सदैव पाप नशाता है २६ इसके आगे उत्तरखण्डहै सब पापोंका नाशक व सब अभीष्टफलोंको देनेवालाहै, उसमें प्रथम पर्व्वताख्यानहै जो कि गोपोंने व शिवजीनेकहा है २७ फिर जालन्धरीकथाका वर्णन, फिर श्रीशैलादिका अनुकीर्त्तन, इसके पीछे अतिपुण्य सगर महाराजकी कथा २८ फिर गंगा प्रयाग काशी व गयामें श्राद्धादि करने का पुण्य, अन्नादि दानोंका माहात्म्य व द्वादशी के व्रतका माहात्म्य २९ फिर चौबीस एकादशियों का पृथक् २ माहात्म्य कहागया है, फिर विष्णु के धर्म्मों के आख्यान, विष्णुजी के सहस्रनामों का वर्णन ३० कार्त्तिकव्रतमाहात्म्य व माघस्नानफल फिर जम्बूद्वीप के तीर्थों का पापों के नाशनेवाला विलक्षण माहात्म्य ३१ फिर साभ्रमती के माहात्म्यमें नृसिंह जीकी उत्पत्ति का वर्णन, देवशर्म्मादिकों का आख्यान व गीतामाहात्म्य का वर्णन ३२ फिर श्रीमद्भागवतके माहात्म्यमें भक्ति का आख्यान व इन्द्रप्रस्थका माहात्म्य, इसमें बहुत से तीर्थोंकी कथा युक्तहैं ३३ फिर मन्त्ररत्नाभिधान व त्रिपदीभक्तिका अनुकीर्त्तन इसके पीछे मत्स्यादि दश अवतारोंकी पुण्यकारी कथा ३४ फिर हे वाडव! श्रीरामचन्द्रजीका दिव्य अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र व उसका माहात्म्य, तदनन्तर श्रीविष्णुभगवान् व शिवजीकी परीक्षा का वर्णन जिसे भृगुमुनि ने सब मुनियों के सम्मत से लीथी ३५ यह पञ्चम उत्तर खण्डहुआ, यह अत्यन्त पुण्यदायक है, जो उत्तम पुरुष पांचखण्ड युत पद्मपुराण भक्तिसे सुनता है ३६ वह इसलोक में मनोवांछित भोग भोगकर वैष्णवधामको जाता है यह पद्मपुराण पचपन सहस्र श्लोकों का है ३७ हे मानके देनेवाले! इस पुराण को लिखवाकर घृत व सुवर्ण के साथ ज्येष्ठमास की पौर्णमासी को अच्छे प्रकार सत्कार करके जो कोई पुराण जाननेवाले पण्डित ब्राह्मणको देता है ३८ वह श्रीविष्णुभगवान् के धामको जाताहै व उसको सब

देवता नमस्कारकरतेहैं व जोकोई पद्मपुराणकी इस अनुक्रमणिका को सुनेगा वा पढ़ेगा ३९ वह भी पद्मपुराणके श्रवणसे उत्पन्न फल को पावेगा ४० ॥

इति श्रीनारदीयपुराणेपूर्व्वभागेबृहदुपाख्यानेचतुर्थपादे पद्मपुराणानुक्रमणिकाभाषायांद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

SAMAJ LIBRARY

पद्मपुराण भाषा ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

खेलन्तम्पितुरङ्गणे करुणया भोक्तुञ्जनन्यादरा
दाहूतन्दधिभक्तसक्तवदनन्ध्यात्वा हृदा राघवम् ॥
कुर्वे पद्मपुराणकस्य सरलं भाषाऽनुवादं सतां
प्रीत्यायल्पधियांस्वमानसमुदेचब्रह्मरुद्रार्च्चितम् १

हरिगीतिका ॥

रघुनाथपद धरि माथ होय सनाथ साधि स्वपञ्चमी ।
रसरसधिग्रहशशिसहितसंवतसहससितसितसप्तमी ॥
तब करहुँ पद्मपुराणभाषान्तर सरल सुठिही सही ।
ज्यहि लखतही सबही कही यहहै सही न वही कही १

दो० कहब प्रथम अध्यायमहँ सौति ऋषिनपहँ जाय ॥
कही पाद्म संक्षेप जिमि सूची रुचिर बनाय १

ॐ३म् ॥

स्वच्छ चन्द्रमाके समान निर्म्मल हाथियों की सूंड़ों व मगर घड़ियालादिकों के चलनेसे फेनसहित व ब्रह्मको अपने हृदय में प्रकाशित करनेमें लगे हुये व ब्रतनियमों में तत्पर उत्तम ब्राह्मणों से सेवित व ॐकारके उच्चारण करनेसे भूषित तीनोंलोकों के गुरु ब्रह्माजीकी दृष्टिसे पवित्र श्रीनारायणजी के शयन करनेके शेषनाग

के शरीर के होने से अतिमनोहर व अशुभ हरनेवाला, कमलका जल आपलोगों को पवित्र करै १ महामतिमान् लोमहर्षण जी एकान्त में बैठेहुये उग्रश्रवानाम व्यासजीके शिष्य सूतसे बोले २ कि हे तात! जो धर्म्म हमसे तुमने सुनेहैं ऋषियोंके आश्रमोंपर जाय एकाग्रचित्तहो पूंछतेहुये ऋषियों से विस्तारपूर्व्वक कहो ३ हे पुत्र! हमने सब पुराण मुनियों से विस्तारसहित कहतेहुये श्रीवेदव्यासजी से पाये हैं ४ जो कहो कि व्यासजी से तुमने पुराण कहां सुने तो प्रयागजी में जब षट्कुलों में उत्तम ब्राह्मणों ने श्रीव्यासभगवान् से पूंछा था तब धर्म्म सुनने व करनेकी इच्छा कियेहुये उन मुनियों से भगवान् व्यासजी ने कहाथा ५ तब उन मुनियों ने भगवान्व्यास से पूंछा कि कोई और पुण्यदायक स्थान हमलोगों को सदा के लिये बताइये जहां हम पुराणोंको सुनाकरें यह सुन श्रीनारायणरूपी व्यासजीने अपना सुदर्शननाम चक्र चलाया ६ व कहा कि इस दिव्यरूप उपमारहित सुन्दर चलनेवाले चक्रके पीछे २ तुमलोग जाओ ऊपर २ यह जायगा नीचे तुमलोग जावोगे पर इसका मार्ग तुम्हें दिखाई देतारहेगा ७ इससे जाने जहां इस धर्म्मचक्रकी पहिया टूटजाने से यह गिरपड़े उस देशको पुण्य समझना ८ ऐसाकह व्यासभगवान् तो वहीं अन्तर्द्धानहोगये व वह चक्र जाय गङ्गाजी के व गोमतीजी के उत्तर गिरा जो स्थान नैमिषारण्य कहाताहै वहीं सब ऋषिलोग सहस्रों वर्षों के लिये यज्ञकरने व कथा सुननेकेलिये जाबैठे ९ इससे हे पुत्र! वहां जाय जो जो संशय धर्म्म के विषय में वे लोग करें उनका निवारण करतेहुये उत्तमधर्म्म उनसे कहना १० यह सुन परमज्ञानी उग्रश्रवा जी वहां जाय उनलोगों के समीप हाथजोड़ नमस्कार कर बैठे ११ व अपने नमस्कारसे उन ऋषियोंको सन्तुष्टकिया कि जिससे वे लोग बहुत प्रसन्नहुये व सब अपने सभासदोंसहित १२ उनके निकट आय बड़ाभारी पूजन सत्कारकर ऋषिलोग बोले कि हे सूतजी! तुम किस देशसे आये १३ अपने यहां आनेका कारण बताइये तुमतो ऐसे प्रकाशित होतेहो जैसे देवतालोग शोभित होते हैं इतना सुन सूतके पुत्र उग्रश्रवा जिनका सौतिभी नामहै बोले कि व्यासजी के

शिष्य अतिबुद्धिमान् हमारे पिता सूतजीने हमको आज्ञादी है १४ कि तुम मुनियों के समीपजावो वे जो पूँछें उन्हें वही सुनाओ इससे आपलोग हमसे कहें वही कथा हम सुनावें १५ चाहे पुराणसुनो चाहे इतिहास चाहे अलग अलग धर्म्म सौतिजी की उस मधुरवाणीको सुन उन श्रेष्ठ ऋषियोंके पुराण सुननेकी इच्छा उत्पन्नहुई रोमहर्षण के पुत्र सौतिजीको अत्यन्तविद्वान् और विश्वासकेपात्र देख१६।१७ उस हज़ारों वर्षतक यज्ञकरनेवाले ऋषियोंके बीचमेंसे सबशास्त्रोंके पढ़ने में बड़ेचतुर अतिबुद्धिमान् विज्ञानवन में विहरनेवाले शौनक जी १८ और ऋषियोंका अभिप्रायभी पुराणही सुननेका जान सौति जी से बोले कि हे सूत महाबुद्धिवाले ! तुमने इतिहास व पुराणों के लिये वेदजाननेवालों में उत्तम व्यासभगवान् की उपासना अच्छे प्रकार की है उसमें पुराणकी आश्रयी उनकी कल्याणकारिणी मतिको अच्छीतरह दुहली है १९।२० व इन मुनियोंकी भी इस समय में पुराणही सुननेकी इच्छाहै इससे हे महाबुद्धिवाले ! इन्हें तुम पुराणही सुनाओ २१ जिससे ये सब नानागोत्रों के महात्मा यहां आये हैं पुराणके कहे हुये अपने अपने भागोंको सुनें २२ इससे हे महामतिवाले ! जबतक यह बहुत दिनोंका यज्ञ पूराहुआ चाहे तबतक तुम इन लोगोंको पद्मपुराण सुनाओ २३ पद्म कैसे उत्पन्नहुआ व ब्रह्माजी उससे कैसे उत्पन्नहुये फिर उत्पन्न होकर उन्होंने सृष्टि [illegible]से उत्पन्नकी उसेभी हमसे कहो २४ जब इसभांति रोमहर्षणके पुत्रसे शौनकजी ने पूँछा तो वे बड़ी सूक्ष्म व न्यायसंयुक्त वाणी से शुभवचनबोले २५ कि पुराणों के जाननेवाले सबधर्म्मों में परायण आपलोगोंने जो हमसे पुराणही पूँछा इससे आपलोगों के इस पूँछने से हम बहुतही प्रसन्न हुये व बड़ीकृपा हमारे ऊपर की २६ क्योंकि आप महात्मा लोगोंने अच्छेप्रकार देखलिया कि सूतका यही धर्म्म है कि देवता ऋषि व अमिततेजस्वी राजाओंकी उत्पत्ति यश वंश वर्णनकरै व उनलोगोंकी प्रशंसा करता रहै स्तुतिकरै २७।२८ और इतिहास पुराणोंमें जे वेदके कहनेवाले देखेगये हैं वेदोंके पढ़ने पढ़ानेमें सूतको कुछभी अधिकार नहीं होता २९ क्योंकि राजावेनके पुत्र महाराजा-

धिराज पृथुजी के यज्ञमें मागध व सूत दोनों ने उन महात्मा महाराज की स्तुति की ३० तब प्रसन्न होकर उन महात्मा राजाने सूतको सूत का अधिकार व मागध को मागध का अधिकार दिया ३१ क्योंकि जो ऐसेही वंशमें उत्पन्न होता है वही सूत कहाता है सब नहीं सूत कहाते न और कोई राजाओंका यशही कहसक्ताहै सूतों की उत्पत्ति यों है कि एकसमय इन्द्रजी के यहां यज्ञथा बृहस्पतिजी करारहे थे उसमें उन्होंने खीरले एक अपने शिष्यको दिया परन्तु वह उस समय कुछ अशुद्ध था बृहस्पतिजी ने जब जाना कि यह अशुद्धहै कहा अच्छा यह अशुद्ध खीर अपनी स्त्रीको खवाओ उससे जो उत्पन्नहोगा वह सूतहोगा जिससे कि उन्होंने ऐसे शिष्य के हाथमें खीर दी व उसने वैसेही अपनी स्त्री को खिलाया ३२ । ३३ इससे वर्णसङ्कर यह सूतों की जाति उत्पन्न हुई व ब्राह्मणी में क्ष-त्रिय से उत्पन्नको भी सूत कहते हैं उसे भी पुराणादि कहनेही का अधिकार होताहै वेद पढ़ने पढ़ाने का नहीं सो मैं भी सूतकी जाति में उत्पन्नहूं इससे मुझे भी यही पुराणही सुनाने का अधिकार है वेद सुनाने का नहीं है इसी से वेदवादी आपलोगों ने मेरे योग्य पुराणही की कथा मुझसे पूंछी मैं कृतार्थहुआ अब पुराण कहताहूं पितरोंकी एक मानसी कन्याथी वह इन्द्रजी के पास विना पितरों की आज्ञा के पहुँची ३४ । ३७ इससे उन्हों ने उसका तिरस्कार किया तो उसने इन्द्रका बीज अपने अङ्ग से निकाल फेंकदिया उसे एक मछलीने लीललिया वह मछली सन्तान उत्पन्न करने के लिये ऐसी हुई जैसे यज्ञके लिये अग्नि उत्पन्न करने के निमित्त शमीकी लकड़ी होतीहै ३८ क्योंकि उस मछली के पेटसे एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका मत्स्योदरी नाम हुआ उसी में पराशरमुनि से पवित्र आत्मा भगवान् विष्णुजी आप आय उत्पन्नहुये उनका नाम द्वैपा-यन व्यास हुआ वे वहां सबके उत्पन्न करनेवाले पुरुष पुराण ब्रह्मा के वचनके अनुकारी ब्रह्मरूप माधवके नमस्कार करके खड़े होगये व उत्पन्न होतेही सब वेद अपनारूप धारणकरके उनके पास आय उपस्थित हुये व उन्होंने अपनी बुद्धि को मथानी बनाय उससे

वेदरूप सागरको मथ ३९।४१ उससे चन्द्ररूप महाभारत इतिहास प्रकाशित किया जिस भारतसे सब लोक प्रकाशित हैं क्योंकि यदि इस संसार में भारत सूर्य्य व चन्द्रमा ये तीन न होते ४२ तो अज्ञान अन्धकार से अन्धे इस जगत् की कौन अवस्था होती इससे कृष्ण द्वैपायन व्यासजी को साक्षान्नारायण प्रभु जानना चाहिये ४३ क्योंकि विना पुण्डरीकाक्ष श्रीनारायणस्वामी के और कौन महाभारत को बनासक्ता सो हमने सर्वज्ञ सब लोगों से पूजित महातेजस्वी व वेदवादी उन्हीं वेदव्यास भगवान् के मुखारविन्द से सुने हुये अपने पिता के मुख से सब पुराण सुने हैं ब्रह्माजी ने पुराणों को सब शास्त्रों से प्रथम कहाहै ४४।४५ क्योंकि ये पुराण सब लोकों में उत्तम सब ज्ञानों के उपपादक अर्थ, धर्म, काम इन तीनों के साधक पुण्यकारी हैं और उनमें सब सौ किरोड़ श्लोक हैं ४६ सो इन पुराणों व वेदोंको प्रलयके समय ब्रह्माजी के कहने से भगवान् विष्णुजी ने घोड़ेका रूप धारणकर जाय जल के भीतर रख छोड़ा था ४७ जब फिर ब्रह्माजी कल्पके आदि में जागे तो भगवान् ने मत्स्यावतारले ६ अङ्गसहित चारों वेद व सब पुराण जलके भीतर से ले आनदिये फिर ब्रह्माजी ने व्यासका रूप धारण कियेहुये श्रीहरिभगवान् से सब वेद व पुराण कहे ये पुराण व वेद सब प्रलयों के पीछे जब सृष्टि होने लगती है तब कहेजाते हैं ४८।५१ परन्तु उन सौ किरोड़ पुराणों के श्लोकों में से प्रत्येक द्वापरयुग के अन्त में चारलाख श्लोक ब्रह्माजी व्यासजी से कहते हैं उन्हीं चार लाख श्लोकों के व्यासजी अठारहपुराण अलग २ कर देते हैं वही चारही लक्ष श्लोक इस पृथ्वीपर प्रकट रहते हैं अधिक नहीं ५२ अबभी देवलोकमें पुराणों के सौ किरोड़ श्लोक विद्यमान हैं उन्हीं में से सब कथाओंको संक्षेपकर ब्रह्माजी ने चारहीलक्ष श्लोक यहांकेलिये रखछोड़े हैं ५३ तिस महापुण्यकारी, पचपनहजार श्लोकोंवाले, पांचखंडोंसेयुक्त यह पद्मपुराणको कहताहूं ५४ पहला सृष्टिखण्डहै, दूसरा भूमिखण्ड, तीसरा स्वर्गखण्ड, चौथा पातालखण्ड ५५ पांचवां उत्तरखण्ड प्रसिद्ध है इतनाही महापद्म उत्पन्नहुआ है जिस

मय संसार है ५६ और जिससे तिस वृत्तान्त के आश्रयहै इससे पाद्मपुराण कहाताहै यह पुराण मलरहित और विष्णुजीके माहात्म्य से निर्मलहै ५७ जिसको पहले देवोंके देव भगवान्‌हरिजी ने ब्रह्मासे कहा था सो ब्रह्माजीने सृष्टि होतेही इन पुराणों को पहिले अपने पुत्र मरीचिजी से कहा था ५८ उन सबों में प्रथम पद्म अर्थात् कमलपर बैठ ब्रह्माजीने इस पुराणको संसारमें कहा था इससे इसका पाद्मपुराण नाम पण्डितोंने कहा है ५९ इस पाद्मपुराण में पचपनहज़ार श्लोक हैं उनके व्यासजीने पांच पर्व्वोंके नाम से पांचखण्ड संक्षेपसे बनाये हैं ६० उन में प्रथम पौष्करपर्व्व अर्थात् सृष्टिखण्ड है कि जिसमें विराट् की उत्पत्ति विस्तार सहित है दूसरा तीर्थपर्व्व अर्थात् भूमिखण्डहै इसमें सब सूर्य्यादि ग्रहोंकी गतिका वर्णन है ६१ तीसरा ग्रहणपर्व्व अर्थात् स्वर्गखण्ड है इसमें सब प्रतापी राजाओं के चरित्रहैं व चौथा वंशानुचरित्र अर्थात् पातालखण्ड कहाता है उसमें सबके वंशोंकी कथा हैं ६२ पांचयें का मोक्षतत्त्व अर्थात् उत्तरखण्ड नाम है इसमें मोक्ष होने के प्रकार व सर्व्वज्ञाता होने के यत्न कहेगये हैं उनमें पौष्कर में ब्रह्माकी कीहुई सबकी नव प्रकार की सृष्टि है ६३ उसमें देवता, मुनि व पितरोंकी उत्पत्तिहै दूसरे पर्व्व वा खण्डमें पर्व्वत द्वीप व सातों सागरोंका वर्णनहै ६४ तीसरे पर्व्व वा खण्डमें रुद्रसर्ग्गहै व दक्षप्रजापतिके शापकी कथाहै चौथे पर्व्व वा खण्डमें राजाओंकी उत्पत्ति व उनके वंशवालोंका वर्णन है ६५ व पांचयें पर्व्व वा खण्डमें मोक्षशास्त्रका अनुकीर्त्तन व मोक्षमार्ग्ग दर्शायागयाहै सो हे ब्राह्मणो ! आपलोगोंसे इस पुराणमें हम इतने विषय वर्णन करेंगे ६६ ॥

हरिगीतिका॥

यह अतिपवित्र विचित्रयशयुत अरु अतिप्रिय पितरनको ।
अरु सुखद देवनकहँ भलीविधि अघविनाशन नरनको ॥
मनुजादिकन के कर्ण गोचर होतही तरि हैं सही ।
यह ग्रन्थसूचनिकावचनिका गुणनगणिकाहै कही ६७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेपुराणावतारे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० कहब द्वितीयाध्याय महँ सब पुराण प्रस्ताव ॥
जिमिपुलस्त्यमुनिभीष्मसों कह्योस्वसूतबनाव ॥ १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि हम सबलोकों सबविश्व व सब जगत् के उत्पन्न करनेवाले व पतिके व सबके देखनेहारे स्वामी के नमस्कार करते हैं १ जोकि सबलोकों को करते व सबका निश्चय जानते इससे योगमें स्थित होकर सब स्थावर जङ्गमों को उत्पन्न करते हैं २ व लोककेसाक्षी, विश्वकेकर्त्ता, चैतन्यके पति, विभु उन अजके शरण में पुराण जानने की इच्छाकिये हमहैं ३ ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, इन्द्रादि लोकपाल व सूर्य्यनारायणके नमस्कार एकाग्र चित्तहोकर ४ सब मुनियों से ज्येष्ठ महात्मा वसिष्ठजी के व उनके मुखके वचनोंके सुनने से प्रकाशित तपवाले और बड़ीदीर्घायुवाले जातूकर्ण्यजी के नमस्कार कर ५ व पुरुषपुराण भृगुजी के वचनों के अनुयायी सब कुछ करनेवाले भगवान् वेदव्यासजी के नमस्कार करके ६ व उन्हीं वेदवादी से सब पुराण सुनकर प्रकाश करते हैं क्योंकि वे सर्व्वज्ञ हैं सब लोकों में पूजित व प्रकाशित तेज हैं ७ प्रथम सब जड़ चैतन्यरूप इस विश्वका कारण शरीररहित ब्रह्म है वही महत्तत्त्वादिकों को उत्पन्न करके इस विश्वकी रचना करता है यह निश्चयहै कुछ भी सन्देह नहीं है ८ व उन महत्तत्त्वादिकों से हिरण्मय अण्डकी उत्पत्ति होती है जो कि ब्रह्माकी उत्तम उत्पत्तिका कारण कहाता है उस अण्डका पहिला आवरण जल है व जल का अग्नि ९ अग्निका वायु वायुका आकाश व भूतादिकों से आवृतहै व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश पञ्चमहाभूतों से व महत्तत्त्वसे व शरीररहित उस ब्रह्म से वह अण्ड घिरा रहता जिससे कि सब लोकों की उत्पत्ति होती है ऐसेही फिर सब नदी पर्व्वतादिकों की उत्पत्ति होती है १०।११ फिर मन्वन्तरोंकी फिर कल्पोंकी यह संक्षेप रीतिसे सृष्टि का वर्णन हुआ व इस ब्रह्मवृक्ष के जो ब्रह्मा जी उत्पन्न करनेवाले हैं उनकाभी वर्णन हुआ १२ नित्य नैमित्तिक व प्राकृतिके के भेदसे तीन प्रकारके प्रलयोंका वर्णन तथा पाद्मादिकल्पों का व जगत् के स्थापनका फिर प्रलयके पीछे जलमें श्रीविष्णुभगवान्जी

के जलमें शयन करने का वर्णन फिर पृथ्वीका उद्धार करना १३
फिर दशप्रकार की देवादिकों की व भृग्वादिकोंकी उत्पत्तिका वर्णन
व विष्णुभगवान् को भृगु का शाप फिर युगादिकों की व्यवस्था व
उनका प्रमाण, फिर सब वर्णाश्रमों का अलग अलग विभाग १४ व
स्वर्गस्थानों का विभाग मनुष्य व स्वर्ग्गवासियों की उत्पत्ति पशुओं
व पक्षियों की कहीगई १५ फिर कल्पों की कथा व वेदाध्ययनादि
की कथा फिर बुद्धिपूर्व्वक ब्रह्माकी सब सृष्टि का वर्णन १६ फिर
बुद्धिपूर्व्वकही तीन और लोकोंकी सृष्टि व जैसे सब लोकों को एक
दूसरे के पीछे बनायाहै व जिसप्रकार ब्रह्माके मुखादिकों से भृग्वा-
दिकोंकी उत्पत्ति हुई १७ ऐसेही जितना २ कल्पों का अन्तर है
व सर्ग्गों का जोड़ है फिर भृग्वादि ऋषियों की सन्तान का वर्णन
जैसे हुआ वह १८ फिर ब्रह्मर्षि वसिष्ठजी के ब्रह्मत्वका वर्णन तद-
नन्तर स्वायम्भुवमनुकी कथा का कीर्त्तन १९ फिर राजा नाभिकी
सृष्टि फिर द्वीप व समुद्रोंका वर्णन पर्व्वतों की उत्पत्ति उनसे खण्डों
का विभाग करना २० फिर द्वीपों व समुद्रोंका भेद व उन सातों में
जो जो पदार्थ एकसे हैं उनका पृथक् २ वर्णन व योजन २ भर पर
द्वीपोंके निवासियोंकी कुछपैकुछ बोली आदिमें अन्तर २१ नदियों
व पर्व्वतोंसहित भारतादि खण्डों का वर्णन व सात समुद्रों से
अलग २ घिरेहुये जम्बूद्वीपादि सातद्वीपों का वर्णन २२ व इसी
ब्रह्माण्डही के भीतर सबलोक तथा सातद्वीप की पृथ्वी सूर्य्य चन्द्र-
माकी चाल व अन्यग्रहों नक्षत्रोंकी गतिका वर्णन २३ व ध्रुवोंकी
सामर्त्थ्य से प्रजाओं के शुभाशुभों का होना व प्रयोजन के लिये
ब्रह्माजीने जैसे सूर्य्यकारथ बनाया उसका वर्णन २४ व उस रथपर
चढ़कर भगवान् सूर्य्य जिसप्रकार अपने मार्ग्ग में चलते हैं व जैसे
सूर्य्यादिकोंके रथ ध्रुवही के कारण चलते हैं उसका वर्णन २५ फिर
जिस शिशुमारकी पूँछपर ध्रुवजी टिके हैं उसका वर्णन व मन्वन्तर
के पीछे प्रलयहोना प्रलयके पीछे फिर सृष्टिके होने का वर्णनकिया
गया २६ व देवता, ऋषि, मनु, पितर इनकी जो विस्तारपूर्व्वक
सृष्टि कहाचाहे तो नहीं वर्णन होसक्ती इससे यह संक्षेपरीति से

हमने आपलोगों से वर्णनकिया २७ व जैसे स्वायम्भुव मन्वन्तरमें देवताओं व प्रजापत्यादिकों का वर्णनहै वैसेही जो मन्वन्तर ६ बीत गये व सात और होनेवाले हैं उन में भी था व होगा २८ नैमित्तिक, प्राकृतिक व आत्यन्तिकके भेदसे सब प्राणियों के प्रलय तीन प्रकारके हैं २९ इन प्रलयों में प्रथम सौवर्षतक अनावृष्टि रहती है फिर सूर्य्यनारायण से इतना प्रबल अग्नि निकलता है कि वह सब को भस्म करदेताहै व मेघ हाथीकी सूंड़ के समान मोटी धारासे वर्षा करते हैं जिससे सब एकार्णव होजाता है वह तबतक रहताहै कि जब तक महात्मा ब्रह्माजी की रात्रिरहतीहै ३० जिसप्रकार ब्रह्माजी की सन्ध्याहोती उसकाभी लक्षण विशेषकर वर्णन किया व सब प्राणियों तथा सातों लोकोंका भी वर्णन किया ३१ व रौरवादि नरकोंका भी इस ग्रन्थमें वर्णनहै जिनमें सब प्रकारके पापीलोग पड़ते हैं व सब प्राणियों के नाश होनेका भी निर्णय इसमें कियागया है ३२ वैसेही ब्रह्माकी सृष्टि व उसका नाश वह भी प्रत्येक कल्पमें यह नहीं कि किसी कल्पमें संहार होताहै व किसी में नहींहोता ३३ इससे अपनी बुद्धिसे ब्रह्मा की भी अनित्यता हमने विचारी है व सब सृष्टि की दुरात्मता भी विचारीहै कि जिससे उसको नानाप्रकार के संसारके कष्ट होते हैं ३४ व वैराग्य करनेमें दोष देखने से मोक्ष होनेकी दुर्लभताका भी वर्णन कियागया है फिर जड़ व चैतन्य सब ब्रह्महीमें टिके हैं इस बातको भी इस ग्रन्थ में अच्छीतरह दर्शाया है ३५ व इस संसारके पदार्थोंकी अनेक प्रकारता दिखाई देतीहै इससे सब उसी ब्रह्महीमें अच्छेप्रकार स्थितहैं कुछ उससे पृथक् नहीं है इसी से जो प्राणी दैहिक दैविक व भौतिक तीनों तापों से रहित होजाता है वह फिर रूपरहितहो सब चेष्टाओं से भिन्नहो ३६ आनन्द ब्रह्मको प्राप्तहोजाताहै फिर कहींसे नहीं डरता इसप्रकार सबकार्यों के होने का हेतु प्रमाणसहित कहागया ३७ जिसमें कि इस जगत्की सृष्टि व प्रलयका वर्णन है और प्राणियोंके प्रवृत्तिमार्गका वर्णन इसग्रन्थ में है फिर निवृत्ति होनेके फलभी बहुत दिखायेगयेहैं ३८ वसिष्ठ जी की व इन्द्रकी उत्पत्तिभी अच्छीरीति से वर्णितहै विश्वामित्रजी

के कारणसे राजा त्रिशंकुका स्वर्ग्ग गमन व वहांसे पतन भी कहा गया है ३९ व पराशरमुनिकी उत्पत्ति भी जैसे अदृश्यन्ती में हुई उसकाभी वर्णनहै व जैसे पितरों की मानसी कन्यामें व्यास भगवान् पराशरजी से उत्पन्नहुये ४० फिर अति विज्ञानी शुकाचार्य्य जी जैसे व्यासजी से हुये वह वृत्तान्त भी वर्णित है व जिस प्रकार पराशर और विश्वामित्रका वैर हुआ ४१ कि जिसमें विश्वामित्र के भस्म करनेकी इच्छासे वसिष्ठजी ने अपने तपोवलसे महाप्रचण्ड अग्नि उत्पन्नकिया इसका भी वर्णन इसमें है परन्तु जिसमें विश्वामित्र न मरें इस लिये बुद्धिमान् कण्व मुनिने उस अग्निको पानकर पचाडाला ४२ इससे विश्वामित्र व उनकेहित चाहनेवाले ब्राह्मणों के ऊपर वह अग्निनहीं पहुँचा व जिस प्रकार सबके ऊपर कृपाकर एकही वेदके ईश्वर भगवान् वेदव्यासजीने चार वेद करदिये व आपने अच्छेप्रकार अभ्यास किया उसका वर्णन किया गयाहै फिर व्यास जी के शिष्य प्रशिष्योंने उन वेदोंकी पृथक् २ शाखा बनाईं उसका वर्णन है ४३ । ४४ व जैसे प्रयागजीमें मुनि श्रेष्ठोंने प्रश्नकिया यह भी कथा इसमें है व फिर उन उत्तम ब्राह्मणों से जिस प्रकार व्यासजी ने वर्णन किया हे ब्राह्मणोत्तमो! वह सब हमने आपलोगों से वर्णन किया इस पुराणमें धर्म्म में तत्पर मुनियों के सबधर्म्म भलीभांति वर्णितहैं ४५।४६ इसेप्रथम ब्रह्माजीने महात्मा पुलस्त्य मुनिसे कहाथा फिर उन्हों ने हरिद्वारमें गङ्गाजी के समीप बैठकर भीष्मपितामहजी से कहा ४७ इसपुराणका कहना सुनना व धारण करना विशेष कर धनकारी यश करनेवाला आयु बढ़ानेवाला व सबपाप विनाशनेवालाहै ४८ जोकि पूर्व्वकालमें ब्रह्माजीने विस्तारसहित इस पुराण को ब्राह्मणों से कहाथा सूतजीने वही शौनकादि ऋषियोंसे कहा ४९ जोपुरुष जितेन्द्रिय होकर अच्छीतरह इसपुराणके एक श्लोक को चतुर्थांशभी पढ़ेगा उसने जानों सब पूरा पुराण निस्सन्देह पढ़ लिया ५० जोपुरुष षडङ्ग व उपनिषदों सहित चारों वेद पढ़ताहै व जो इसपुराणको अच्छेप्रकार पढ़ता वेदपाठी से पुराणपाठी विशेष समझाजाताहै ५१ क्योंकि इतिहास व पुराणों से वेदको बढ़ाना

चाहिये जिस्से कि थोड़ीबातोंके जाननेवाले से वेद सदा डरतारहता है कि यह मुझको पढ़कर खराबकरेगा कुछका कुछ अर्थ करने लगेगा ५२ ब्रह्माजीके कहेहुये एक अध्यायको पढ़कर सब आपदों से छूटजाताहै व अपनी वाञ्छित गतिको पाताहै ५३ अर्थ में परम्परा को कहताहै इससे मुनियोंने पुराणनाम रक्खा है इस निरुक्तिको जो कोई जानता है वह सबपापों से छूटजाता है ५४ इतना सुन ऋषियों ने सूतजीसे पूँछा कि बुद्धिमान् भीष्मजीने ब्रह्माजीके मानसी पुत्र भगवान् पुलस्त्य ऋषि से कैसेपूँछा ५५ क्योंकि उन का दर्शन पापी पुरुषोंको दुर्ल्लभहै हे सूत! यहबाततो हमको बड़े आश्चर्य्यकी जान पड़तीहै कि उस क्षत्रिय भीष्म व मुनिका समागम कैसेहुआ ५६ व हे महाबुद्धियुक्त! किसतरह उन्होंने उन मुनिराज की आराधनाकी यह सब हमसे कहो हमारे सुननेकी इच्छाहै उन्होंने कैसी तपस्याकी व और कौन नियम किया ५७ कि जिससे सन्तुष्ट होकर मुनिजीने उनसेसम्भाषण किया इस पुराण का एक पर्व्व मुनिने कहा व आधापर्व व समग्र पुराण उन्हों ने कहा ५८ जिस स्थानपर जैसे भगवान् पुलस्त्य ऋषि दिखाई दिये हों हे महाभाग ! यह सब हम से कहो हम लोग सुनने में समर्थ हैं ५९ यह सुन सूतजी बोले कि जहाँ भुवनपावनी महाभागा व साधुओं की हितकारिणी गङ्गाजी वेग से पर्व्वतको तोड़कर निकली हैं ६० उस गङ्गाद्वार महातीर्थ में पितरों की सेवाकरने की इच्छा से बहुत काल तक भीष्मजी तपस्वियों के नियमों में स्थित रहे ६१ व त्रिकाल स्नानकरते हुये परम समाधि लगाये सौवर्ष तक परब्रह्म का ध्यानकरते रहे ६२ इसतरह पितरों व देवताओं को तृप्तकरते हुये व वेद पढ़ते हुये व अपने शरीर को दुर्ब्बल करतेहुये उन महात्मा भीष्मजी के ऊपर ब्रह्माजी प्रसन्न हुये ६३ व अपने पुत्र ऋषियोंमें श्रेष्ठ पुलस्त्य जी से बोले कि तुम कुरुवंश में उत्पन्न वीर देवव्रत भीष्मजी के पासजावो ६४ व तपस्याकरने से उनको रोंको और कारण बतावो कि तुम ने जो पितरों की भक्ति व अच्छे प्रकार एकाग्र चित्त हो देवताओं का भी ध्यान किया ६५ उससे ब्रह्मा प्रसन्न

हैं जो तुम मनसे चाहतेहो मांगो हम पूर्णकरेंगे ऐसाजाकर कहो देर न करो ब्रह्माजी के ऐसे वचन सुन मुनियों में श्रेष्ठ पुलस्त्यजी ६६ गङ्गाद्वार पर जाय भीष्मजी से बोले कि तुम्हारे मनमें जो बात हो उसकेलिये वरदान मांगो तुम्हारा कल्याणहो क्योंकि तुम्हारी तपस्यासे साक्षाद्देव पितामह ब्रह्माजी सन्तुष्ट हुये हैं इससे उन्होंने हमको तुम्हारे निकट भेजाहै अब जो तुमको वाञ्छित होंगे वे वर तुम को देंगे ६७।६८ भीष्मजी ने भी मन व कानों के सुख देनेवाले उनके वचन सुन नेत्र उघार आगे पुलस्त्यजी को खड़े देख ६९ साष्टाङ्ग प्रणाम कर व सव अङ्गोंसे पृथ्वी पर गिर मुनिराजसे कहा ७० आज मेरा जन्म सफल हुआ व यह दिन अतिकल्याणकारक हुआ जोकि आपके संसारमें वन्दनीय चरणारविन्द मैंने देखे ७१ व आपको जो मैंने देखा वह इस तपस्याही का फलहै नहीं तो विशेष वर देनेके लिये गङ्गाजीके निकट क्यों आप आते ७२ अव आप इस हमारे सुखदेनेवाले वनाये हुये कुशासनपर विराजिये व पलाश के पत्तों के दोने में दूब, अक्षत, समिध, कुश, सरसों, दही, शहद व यव सहित जल यह मुनियों ने पूर्वकालमें अष्टाङ्गअर्घ्य कहाहै इसको ग्रहण कीजिये ७३।७४ इस रीतिसे अमितपराक्रमी भीष्मजी के वचन सुन ब्रह्माजी के पुत्र भगवान्पुलस्त्यऋषि कुशासन पर बैठगये ७५ व भीष्मजी के दियेहुये अर्घ्य, पाद्य, ग्रहणकर तिस अच्छे आचार से बहुत सन्तुष्टहुये ७६ व बोले कि हे महाभाग वत्स भीष्म! तुम बड़े सत्यवादी, दानी, सत्यप्रतिज्ञ, लज्जावान्, मैत्री करनेवाले, क्षमाशील, व शत्रुओं के सिखानेमें बड़े पराक्रमी, धर्म्मज्ञ, उपकारजाननेवाले, दयावान्, प्रियवादी, मान्य, औरोंकामान करनेवाले, जाननेहारे, ब्रह्मण्य, व साधुओं के ऊपर प्रीतिकरनेवालेहो इस से हमतुम्हारे इस साष्टाङ्गप्रणाम व अर्घ्यादिकों से बहुत सन्तुष्ट हुये हे महाभाग! जो चाहो वरमांगो हमसब तुमको देंगे ७७।७९ इतनासुन भीष्मजी बोले कि हे भगवन्! भगवान् विभु ब्रह्माजीने किसकालमें स्थित होकर पूर्व्वकाल में देवादिकोंकी सृष्टि की है वह हम से कहिये ८० फिर भगवान् विष्णुजी व रुद्रजी कैसे उत्पन्न हुये

व उन महात्मा ब्रह्माजीने देवताओं व ऋषियोंको कैसे बनाया ८१
व पृथ्वी, आकाश, समुद्र, द्वीप, पर्व्वत, ग्राम, वन, पुर कैसे बनाये ८२
मुनियों, प्रजापतियों, सप्तर्षियों व और श्रेष्ठलोगों को, पवन, स्थान,
गन्धर्वों, यक्षों, राक्षसोंकोभी कैसे निर्म्माण किया ८३ तीर्थ, नदी,
सूर्य्यादिग्रह, तारामण्डल इन सबोंको जिसप्रकार भगवान् ब्रह्माजी
ने बनायाहै आप कृपाकरके सब हम से बताइये ८४ भीष्मजी के
प्रश्नसुन पुलस्त्यजी बोले कि ब्रह्माजी सब परोंसेपरे हैं इससे पर-
मात्मा कहाते हैं वे रूप, वर्णादिकों से रहित हैं व महत्तत्त्वादिसे वि-
वर्जितहैं ८५ वृद्धि व नाशसे भी रहितहैं इससे उनका अन्त कभी
होताही नहीं, व सत्त्व, रजस्तमो गुणोंसे भी रहित हैं केवल सदा
प्रकाशित रहते हैं ८६ व सबकहीं सब जड़ों व चैतन्यों में उनकी
समान मूर्त्ति रहती इससे उनकी उपमा किसी के साथ नहीं दे सक्के व
इसीसे इनको ब्रह्मरूपसे सब जगत्को भावित करनेवाले मुनिलोग
कहते हैं ८७ उन परमगुह्यरूप, सदाविद्यमान, अज, नाशरहित,
अव्यय व पुरुषरूप कालरूपसे स्थित ८८ ब्रह्माजीको नमस्कारकर
जिसप्रकार उन्होंने जगत् बनायाहै तुमसे वर्णन करेंगे चित्तलगाय सु-
निये प्रथमकमलपरसे सोयकरउठ जगत् के प्रभु ब्रह्माजीने ८९ गुणों
के इकट्ठे होनेके कारणसे सृष्टि करनेके समय सात्त्विक,राजस व तामस
तीनप्रकारका महत्तत्त्व ९० प्रधान तत्त्व व बीजादिकों के साथ उ-
त्पन्नकिया फिर उसमहत्तत्त्व से वैकारिक, तैजस व भूतादि यह तीन
प्रकार का तामस अहंकार उत्पन्न हुआ फिर पांचज्ञानेन्द्रिय व पांच
कर्मेन्द्रियों के साथ ९१।९२ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश ये
पांचमहाभूत उत्पन्न हुये उनका स्वरूप एक एक करके बताते हैं ९३
जैसे कि आकाश अपने शब्द तन्मात्र सहित उत्पन्नहुआ उस का
विषय शून्य है इससे उसीको उसने आच्छादित किया उससे वायु
हुआ जब उसमें विकारहुआ तो उसने रूपमात्रको ज्योतीरूपके साथ
उपजाया व उसवायुका गुण स्पर्श है उसनेजाय रूपमात्र अग्निको
आच्छादितकिया ज्योतिने भी विकारपाय रसतन्मात्र उत्पन्न किया
जिससे कि जलउत्पन्नहुआ जब रूपके कारण जलमें विकार हुआ तो

उसने गन्धतन्मात्रको उत्पन्नकिया ९४।९८ उससे पृथ्वी उत्पन्नहुई जिसका कि गुण गन्ध है व वैकारिक दशइन्द्रियों को तैजसइन्द्रिय कहते हैं उनमें दशतो वैकारिक देवताहैं ९९ व उनके साथ ग्यारहवां मनहै उसको लेकर वे ग्यारहहुये वायुका विषय त्वगिन्द्रिय है, तेजका विषय चक्षुरिन्द्रिय, पृथ्वीका विषय नासिकाहै, जलका विषय जिह्वा, आकाशका विषय श्रोत्रेन्द्रिय १०० ऐसेही गुदका विषय विसर्गहै व शिश्नका औपस्थ्य, करोंका शिल्प, पदोंकीगति, रसनाकीउक्ति व आकाश, वायु, तेज, जल व पृथ्वी क्रमसे इनकेगुण १०१।१०२ शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध ये हैं इससे ये सब शान्त, घोर, मूढ़, विशेष कहाते हैं १०३ व इनके नानाप्रकारके अलग२ वीर्य्य हैं जबतक कि एक नहीं होजाते प्रथम तो इन्होंने अलग अपनी २ शक्तिसे जोर लगाया जबकुछ न हुआ तो सबोंने १०४ इकट्ठे होकर प्रजाओंकी सृष्टिका विचार किया तब इनसबोंके इकट्ठे होकर एकही सङ्कल्प करनेसे व सबोंके एकही पदार्थ में लगजाने से १०५ व पुरुषके अधिष्ठित होने से व ब्रह्मके अनुग्रहसे महत्तत्त्वादिकोंने मिलकर अण्डको चलादिया १०६ वह अण्ड प्रथम जलबबूले के समान होजाता है तब अव्यक्त स्वरूपी, ब्रह्मस्वरूपी, भगवान्, जनार्दनजी आय शक्तिलगाते १०७ व ब्रह्मके स्वरूपसे ब्रह्माजी अपनेआप आय प्राप्त होजाते हैं इस ब्रह्मांडोत्पत्ति में सुमेरुपर्व्वतही तो उल्बगर्भवेष्टन व जरायु व झरी पर्व्वत होजाते हैं १०८ व उस महात्मा के गर्भकाजल ये सब समुद्र हैं व द्वीप समुद्रादि सहित सब लोक जितना संग्रह है १०९ व जितने देवता, मनुष्य, असुर, जल, अग्नि, पवन, आकाशआदि हैं सब उसी अण्डके भीतर हैं उससे बाहर कोई भी पदार्थ नहीं है ११० यह अण्ड पञ्चमहाभूतों से क्रमसे वेष्टितहो फिर महत्तत्त्व से वेष्टित रहताहै सबसे पीछे अव्यक्तब्रह्मसे वेष्टित होताहै १११ फिर वह इन सब आवरणों व सब भूतों से संयुक्त अण्डबीजरूप होजाता है जैसे नारियरमें आवरण अलग रहता व दुग्धरूप अलग रहता जिसकी फिर गिरी होजाती है ऐसेही और फलोंमें भी बीज अलगही दिखाई देताहै ११२ व ब्रह्मा आप इस सृष्टि को उत्पन्नकर फिर

प्रत्येक युगमें पालन करते रहते हैं जबतक कि कल्पनहीं होजाताहै ११३ परन्तु जो मूर्त्ति पालन करती है उसका नाम जनार्द्दन भगवान् है जो कि सत्त्वगुणी व सत्त्वही के भोक्ताहैं व जिनका पराक्रम किसीके प्रमाण करनेके योग्यनहीं है ११४ सो कुछ पालनही नहीं ये करते अन्त समय तमोगुणी रौद्ररूप धारणकर संहारभी वेही करते हैं वह मूर्त्ति ऐसी भयङ्करीहोती कि सब सृष्टिमात्रको भक्षण करलेतीहै ११५ फिर वही जनार्द्दन अपनी उस रौद्री मूर्त्ति से संहारकर व जगत् को एकार्णवकर जाय नागको बिछौना बना शयन करने लगते हैं ११६ जागनेपर फिर वही ब्रह्मा बनकर सृष्टि करने लगते हैं इस रीति से सृष्टि, पालन व संहार करने से ब्रह्मा, विष्णु व महादेव ये तीननाम उन्हीं जनार्द्दन भगवान्हीके होजाते हैं ११७ उसमें ब्रह्मा होकर तो इसे बनातेहैं व विष्णुहोकर पालते हैं व रुद्रहो संहार करतेहैं ११८॥

चौ० क्षितिजलअनलअनिल आकाशा॥विश्वरूपकर सकल प्रकाशा॥
अव्ययअविकारीसबस्वामी॥स्वर्ग्गादिकसबत्याहिअनुगामी ११९

हरिगीतिका ॥

स्वइसृज्य स्वइ स्रष्टा कहावत पाल्य पालकहै वही ।
हर्त्तव्य हारक कार्य्यकारक है स्वई यह है सही ॥
विधि विष्णु रुद्र स्वरूप धरि वह ब्रह्मही सबही करै ।
भरिदेत छूँछी भरी पुनि स्वइ रीतिकरि पुनि सो भरै १२०

इति श्रीमत्पाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेपुराणावतारेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० कहब तृतीयाध्यायमहँ सृष्टि अनेक प्रकार॥
स्थावर जङ्गम जो लखत सुमति सकल संसार १

इतनी कथा सुन भीष्मजी फिर पुलस्त्यमुनि से बोले कि महाराज निर्गुण प्रमाण करने के अयोग्य शुद्धस्वरूप ब्रह्माजी के सृष्टि करने पालने व नाशनेकी शक्ति कैसे होसक्ती है ये सब कार्य्य सगुण ब्रह्मसे होसक्ते हैं निर्गुणसे नहीं १ पुलस्त्यजी बोले कि सब भावोंकी शक्तियां अचिन्त्य हैं इसीसे ज्ञानहीमें आती हैं दिखाई नहीं देतीं वेही शक्तियां जब ब्रह्माजी उत्पत्ति पालन व संहार की इच्छा करते हैं तो सब करादेती हैं बस जब जगत् को उनकी शक्तिने

उत्पन्न किया तो विद्वानों ने कहा कि ब्रह्माने उत्पन्नहो संसार को उत्पन्न किया इसीप्रकार पालन व संहारमें भी जानो उन ब्रह्माजी की आयुष् उनके वर्षों के प्रमाणसे सौवर्षकी होती है २।३ उसमें आधी पहिली वालीको पर कहते हैं व पिछली आधीको परार्द्ध मुनियों ने पन्द्रह निमेषों की एककाष्ठा बताई है ४ व तीस काष्ठाओंकी एक कला व तीसही कलाओंका एक मुहूर्त्त व तीसही मुहूर्त्तोंकी मनुष्यों की दिन रात्रि होती है ५ व तीस दिनरात्रियों का मास होता है एक मासमें दो पक्ष होते हैं वेही दोनों पक्ष पितरों के रात्रिदिन होते हैं उनमें पितरों के सबकर्म्म कृष्णही पक्षमें होते हैं इससे कृष्णपक्ष उनका दिनहै व शुक्लपक्ष शयन करनेकेलिये रात्रिहै और देवताओं की रात्रि व दिन मनुष्योंके एकवर्ष में होते हैं उनका विभाग ऐसाहै कि उत्तरायण अर्थात् मकरकी संक्रान्ति से छः महीने का दिन व कर्ककी संक्रान्तिसे दक्षिणायन भरकी रात्रि होती है इन देवताओं के बारहहजार वर्षों में सत्ययुग त्रेता द्वापर कलियुग ये चारोंयुग एकबार बीतजाते हैं उसीको चतुर्य्युगी कहते हैं-देवताओं के चार हजार वर्ष अर्थात् मनुष्यों के १७२८००० सत्रहलाख अट्ठाइस हजार वर्षों का सत्ययुग होताहै व देवताओं के तीनहजार अर्थात् मनुष्यों के १२९६००० बारहलाख छानवेहजार वर्षों का त्रेतायुग होताहै व देवताओं के दो सहस्र अर्थात् मनुष्यों के ८६४००० आठलाख चौंसठहजार वर्षों का द्वापर युग होताहै व कलियुग देवताओं के एकहजार वर्ष अर्थात् मनुष्यों के ४३२००० चार लाख बत्तीसहजार वर्षोंका होताहै ६।८ व जो युग जितने देवताओंके हजारोंका होताहै उसमें उतनेही सौवर्षकी सन्ध्यायुगके आदि में होतीहै ९ व उतनाही सन्ध्यांश युगके अन्तमें होताहै जैसे कि देवताओंके चारहजारका सत्ययुग होता है तो उसमें ४०० वर्ष की सन्ध्या व ४०० वर्षका सन्ध्यांशसब ८०० वर्ष और मिलेहुये होते हैं ऐसेही त्रेतामें ६०० वर्ष द्वापरमें ४०० वर्ष व कलियुगमें २०० वर्ष सन्ध्या सन्ध्यांशके मिलेहुये होतेहैं हे राजन्! इसप्रकार सन्ध्या व सन्ध्यांशके बीचमें जितनाकाल होता है १० उतनेही का वहयुग

कहाताहै वे युग सत्य, त्रेता, द्वापर व कलिकेनामसे प्रसिद्ध हैं सत्य, त्रेता, द्वापर व कलियुग इन चारोंको चतुर्युगकहते हैं ११ जबहजार चतुर्य्युग वीतजातेहैं तो ब्रह्माजीका एकदिन होताहै व हे राजन्! ब्रह्माजी के एक दिनमें चौदह मन्वन्तर वीतते हैं १२ उनका काल का किया परिमाण सुनो प्रत्येक मन्वन्तरमें एकही समय में सप्तर्षि, देवता, इन्द्र, मनु व मनुके पुत्र उत्पन्न कियेजाते हैं व अन्तमें साथही संहार कियेजाते हैं मन्वन्तर इकहत्तर चौयुगी का होताहै १३।१४ जिस मन्वन्तर में जो मनु व जो देवता, ऋषि, इन्द्रादि होता है उसकी आयुर्दाय भी मन्वन्तरही के वर्षों के प्रमाण से होती है व प्रत्येक मन्वन्तर में मनुष्यों के वर्षों के प्रमाण से ३०६७२०००० तीसकिरोड़सरसठलाख बीसहजार होते हैं व इन्हीं तीसकिरोड़ आदिके चौदह गुने अर्थात् ४२९४०८०००० चार अर्ब्ब उन्तीस किरोड़ चालीसलाख अस्सीहजार मनुष्यों के वर्षों का ब्रह्माजीका एकदिनहोता १५।१८ इतनेही वर्षों के पीछे ब्रह्माजीकी नैमित्तिक प्रलय होतीहै इस नैमित्तिक प्रलयमें भूर्ल्लोक भुवर्ल्लोक व स्वर्ल्लोक ये तीनों भस्म होजाते हैं १९ व स्वर्ल्लोकको कुछगर्म्मी चौथे अर्थात् महर्ल्लोक में पहुँचती है इसलिये वहां के रहनेवाले महर्षिलोग जनलोकको चलेजाते हैं जब इसप्रकार सब जलमयहोजाता है तो वेदवादियोंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजी २० तीनोंलोकोंको अपने में मिलाकर शेषनागको शय्याबनाय उसीपर सो रहते हैं जब उनके दिनके प्रमाण उतनीही रात्रि बीतजाती है तो जनलोकके रहनेवाले योगी लोग उनकी चिन्तनाकरतेहैं कि रात्रि बीततेही फिर वे सृष्टि करने लगतेहैं इस प्रमाण का ब्रह्माका दिन होताहै इन्हीं दिनों के वर्षों से उनकी सौवर्ष की आयुर्दाय होतीहै २१।२२ यह बड़ी से बड़ी उन महात्मा की आयुषहोतीहै बस इससे अधिक नहीं होसक्ती एकइस ब्रह्माजी के परार्द्ध बीतने के २३ अन्तमें पाद्मनाम महाकल्प होता है और दूसरे परार्द्ध के वर्त्तमान होनेमें २४ पहला वाराह कल्पहोताहै हे महामुनि पुलस्त्यजी! कल्पकी आदि में नारायण नाम ब्रह्मा भगवान् जिसप्रकार २५ सब प्राणियों को रचते हैं तिसको कहिये

तब पुलस्त्यजी बोले इसी प्रकार जब व्यतीत हुए कल्प के अंत में रात्रि में से सोकरउठे तो अनादि सबके उत्पन्न करनेवाले भगवान् ने फिर सृष्टि की क्योंकि सब की उत्पत्ति के कारण तो यही ठहरे पर जैसेही सोकरउठे कि देखा तो सब लोक शून्यपड़ा था २६।२७ पृथ्वी समुद्र के नीचे डूबीपड़ीथी इस बातको विचार कर जैसेही पृथ्वी को ऊपर लाने की इच्छाकी है कि वैसेही जाना कि विष्णुही के रूपसे धरणी यहां आसकेगी इससे विष्णु रूप होगये व मत्स्य, कूर्म्मादि, विष्णुजी मूर्त्तियों को छोड़ नईसूकरावतार की मूर्त्ति को धारण किया २८।२९ यहयज्ञवाराहजीका रूप यज्ञरूपी व वेदरूपी है इस प्रकारस्थिरात्मा सर्वात्मा परमात्मा भगवान् विष्णुजी वराह मूर्त्ति धारणकर निराधार उस जलमें पैठे व वहां पाताल तलमें टिकी पृथ्वी देवी इनको आयेहुये देखकर ३०।३१ अति भक्तिसे प्रणत हो श्रीवाराह जीकी स्तुति करने लगी पृथ्वी स्त्रीरूप धारणकर बोली कि सब प्राणियों के निवास करने के योग्य परमात्मा आपके नमस्कार करती हूं ३२ आज यहां से हमारा उद्धार कीजिये क्योंकि आपही ने पूर्व्व समय में भी हमारा उद्धार कियाथा हे परमात्मन्! तुम्हारे नमस्कारहै व पुराण पुरुष के नमस्कार है ३३ फिर प्रधान विष्णु भगवान् व सब के कालरूप के नमस्कार है ॥

चौ० तुमसबभूतनकेहोकर्त्ता । अरुप्रभुतुमहींसबकेभर्त्ता ॥
तुमहींहोपुनिसबकेहर्त्ता । जोविधिहरिहरवरतनुधर्त्ता १
जोपररूपतुम्हारमुरारी । त्यहिनाहिंजानतब्रह्मपुरारी ॥
जोतनुअवतारनमहँधरहू । तासोंदेवकार्य्यसबकरहू २
परब्रह्मकरितवआराधन । भयेअनेकमुक्तबिनसाधन ॥
वासुदेवतजिकोसंसारा । मुक्तभयहुअरुहोवनहारा ३
जोतवरूपमननकेयोगू । अरुजोदर्शनीयकहलोगू ॥
जहांनमतिपहुँचैजनकेरी । सोतवरूपकृपानिधिटेरी ४

व हेभगवन्! मैं तुम्हीं से बनीहूं व तुम्हारेही ऊपर टिकी रहती हूँ व तुम्हारीही बनाई हुई हूँ इससे तुम्हारेही आश्रित हूँ ३४।३५व इसीसे लोग मुझको माधवी इसनामसे, पुकारते हैं क्योंकि माधव

जो आपहो उन्हीं से मेरा सब कुछ होताहै पृथिवी के धारणकरने-
वाले श्रीविष्णु भगवान् जब इसरीतिसे धरणीसे स्तुतिकियेगये ४०
तो सामवेदके उच्चारणके ध्वनि से घर्घर शब्द करतेहुये गर्ज्जे ॥

हरिगीतिका ॥

निजदन्त परमभगवन्त महि धरि विकच जलज सुलोचनो ।
निकसे रसातल सों विकाशित कमल सम अघमोचनो ॥
जिमि नीलमहिधर हरित तरुततिसों सुशोभित होतही ।
तिमिश्रीवराह दिखात त्यहिक्षण भणत नहिं बनक्यों कही ॥४१

व उस समय भगवान् वराहजी के मुखारविन्दसे जो श्वास निक-
ले उनसे जनलोक निवासी सुखराशी संसार सुखनन्दन सनन्दन
आदि ऋषि लोग और भी पवित्रताके स्थान होगये ४२ व मुखके
अग्रभाग से सब प्रलयकाजल फैलगया व शब्द तो नीचेरसातल
तकपहुँचा व श्वासों के पवनसे जनलोक निवासी सिद्ध इधर उधर
उड़ने लगे व पृथ्वी को धारण किये जल के भीतर से निकलतेहुये
उन महावराहजी के वेदमय शरीरके कँपाने से अंतरिक्षमेंटिकेहुये
देवगणों को बड़ी प्रसन्नता हुई ४३।४४ वे जन निवासी श्री वराह
जी की स्तुति करनेलगे कि हे गदा शंख चक्र खड्ग धारण करने-
वाले व सृष्टि पालन संहार करनेवाले केशव ! जो कुछ है सब तुम्हीं
हो तुमसे पृथक् परमपद कुछ भी नहीं है ४५ हे स्वामिन् ! आपके
चरणों में चारो वेद हैं व थोंहड़ी में यज्ञों के खम्भे व दांतों में यज्ञ
मुख में यज्ञकी रचना जिह्वामें अग्नि रोम सब आपके कुश हैं इससे
यज्ञपुरुष आपही हैं और कोईनहीं ४६ हे अतुल प्रभाव ! पृथ्वी व
स्वर्गका जोकुछ अन्तरहै वह आपहीका शरीरहै व यह सब जगत्
आपही में व्याप्तहै इससे हे भगवन्! इस विश्वके हितके लिये हूजि-
ये ४७ हे जगत् के पति परमात्मा! तुम्हीं अकेले हो और कोई नहीं
है ४८ क्योंकि यह आपहीकी महिमा है जिससे यह संसार व्याप्त
है इस ज्ञानस्वरूपी सम्पूर्ण जगत्को अज्ञानी लोग ४९ अर्थस्वरूप
देखतेहुये महा अन्धकारमें भ्रमते हैं व जो ज्ञानी शुद्धचित्तहैं वे इस
सब जगत् को ५० ज्ञानस्वरूप देखते हैं हे परमेश्वर! जो कि आपही

का स्वरूपहै हे सर्वभूतात्मन्! प्रसन्नहूजिये व जगत्के हित केलिये
इस पृथ्वीको स्थापित कीजिये यह अबतक जलमें डूबीरही इससे
विश्वका बड़ा अकार्य था हे भगवन्! हे कमलनयन! हे गोविन्द!
आपबड़े पराक्रमी हैं इससे इस पृथ्वीको रसातलसे लाये ५१।५२
इससे अब स्थापनकर सब जगत्का हित कीजिये जब इसप्रकार
पृथ्वीधारण कियेहुये परमात्मा सूकरजी स्तुति किये गये ५३ तो
उसधरणी को ऊपर उठाकर फिर उसी महार्णवके जल पर उन्होंने
शीघ्रही स्थापित करदिया वह पृथ्वी उस जल समूह के ऊपर बड़े
भारीजहाज के समान स्थित होगई ५४ तब अनादि पुरुषोत्तम
भगवान् सूकरजी ने उसके ऊपर सब पर्वतों को अपने हाथों से
यथा स्थानपर स्थापित करदिया जो कि पृथ्वी डूबनेपर कुछ इधर
उधर अपने अपने स्थानों से हटगये थे ५५ इसके पीछे पृथ्वी
के बहुत से भाग कर सातद्वीप बनादिये व भूः, भुवः, स्वः, व जन
इन चारोंलोकों को पूर्ववत् कल्पित करदिये ५६ व ब्रह्माजी
को पहिलेही प्रसन्न हुए देवदेव विष्णुभगवान्जी ने दिखा दिया
था कि तुम्हीं पुरुषोत्तम देवहो ५७ इसप्रकार इनका स्थापन करेंगे
देखलो क्योंकि इस जगत्का पालन हमको तुमको दोनोंको करना
है व इसका धारण भी दोनों कोही यत्नसे करना है फिर ब्रह्माजीने
श्रीभगवान् विष्णुजी से, कहा कि जिन असुर मुख्यों को हम इस
समयमें देवताओं का हित करने के लिये वर देवें उनको आप मार-
डाला करें व हम सदा सृष्टि करेंगे पर पालन आपही को करना
होगा ५८ । ५९ जब ऐसा विष्णुजी से ब्रह्माजी ने कहा तो वे सब
देवताओं से व ब्रह्मासे भी विदाहो चलेगये व ब्रह्माजीने कुछ बुद्धि
से नहीं चाहा कि तमोगुण प्रकटहो परन्तु तमोमय एकरूप उत्पन्न
होआया ६० वही तम, मोह, महामोह, तामिस्र और अंधसंज्ञक
पांचवर्ष की अवस्थाकी अविद्या होगई उसीसे पांच प्रकारकी सृष्टि
हुई कुछ तो ऐसी जिसका बाहर प्रकाशित रहता, कुछ का मध्य,
कुछ सर्व्वत्र अप्रकाशित, कुछ सर्व्वत्र प्रकाशित, कुछ सब ओर से
आच्छादित पर उस पांच प्रकार की सृष्टि का कोई मुख्यअंग नहीं

कहागया इस से वह मुख्य सृष्टि कहाती है ६१ । ६२ उसको देख ब्रह्माजी ने विष्णुभगवान् का ध्यान किया कि भगवन् ! यह कैसी सृष्टि है जिसका कोई अंगही नहीं जानपरता है ऐसा ध्यान करते हुये ब्रह्माजी की नासिकासे तिरछीधार सी निकली ६३ उसी से तिर्य्यक्की प्रवृत्तिहुई वही तिर्य्यक्जाति अर्थात् पशुओंकी जातिहुई इसी से जितनेपशु हैं बहुधा तमोगुण से भरेहीहुये होते हैं उनको कुछ विशेषज्ञान भी नहीं होता ६४ इसीसे वे उत्पथगामी भी होते क्योंकि वे अज्ञानही को ज्ञान समझते हैं तदनन्तर ब्रह्माजी को कुछ अहंकार हुआ उससे अट्ठाइस प्रकार के अहंकारी जीव उत्पन्न हुये इन सबका अन्तःकरण तो प्रकाशित रहता और ऊपरीभाग आच्छादित रहता इससे ये परस्पर एक दूसरेसे विरुद्ध रहतेहैं ६५ इस सृष्टिको भी ब्रह्माजीने सृष्टि के विषय में असाधक ही माना व ध्यानकिया उससे फिर और सृष्टिहुई उसका ऊर्ध्वस्रोत नाम हुआ यह तीसरी सृष्टिहुई ६६ इस में जो उत्पन्न हुये उनका सुख करने व प्रीतिमें बहुत मनलगा इनका बाहर भीतर सब खुलाहै आच्छादित नहीं ये बाहर भीतर प्रकाशित ऊर्ध्वस्रोत कहाये ६७ यह सन्तुष्टात्मा देवताओं की सृष्टि कहाती है उस सृष्टिमें ब्रह्माजीकी बड़ी प्रीतिहुई इस से मारे आनन्द के रोमाञ्च होआया ६८ फिर उन्होंने ध्यान किया कि यह सृष्टि तो स्वर्ग में रहनेवाली है कुछ इस से और सृष्टि नहीं बनसक्ती यह तो बहुधा इतनी की इतनीही बनी रहेगी ६९ जब उन्हों ने फिर ध्यान किया तो सत्य की बाधा करनेवाली उन्हीं ब्रह्माजीसे अर्वाक्स्रोत नाम सृष्टिहुई यह सब सृष्टियों की साधक हुई ७० जिससे कि वे देवादिकों से नीचे इस मर्त्यलोक में रहतेहैं इससे अर्वाक्स्रोत कहाते हैं उनका प्रकाश तो बहुतहै पर कुछ २ तमोगुण भी होता नहींतो रजोगुण से तो भरेही हुये होते हैं ७१ इसी से इनको दुःख बहुत होते पर वे मानते नहीं जिसमें उनको दुःखहोते उन्हीं कर्म्मों को बार २ किये जातेहैं इनका बाहर व अन्तःकरण दोनों प्रकाशित रहता है व येही मनुष्य कहाते हैं ये सब लोकों व सब कर्म्मों के साधक होतेहैं यह चतुर्थसर्गहै ७२

अब पांचईं सृष्टि कहते हैं जो इस ऊपर वाली चौथी से सम्बन्ध रखती है पर मनुष्य जो चौथीसृष्टि के हैं उनसे वे सिद्धताशक्ति व सन्तुष्टतामें अधिक होते हैं इसीसे इनमें उनमें बड़ाभेदहै ७३ क्योंकि वे भूत व वर्त्तमान सब जानते हैं केवल भविष्य नहीं जानते यह भूत प्रेतोंकी जाति व सृष्टि है इसके पीछे छठींसृष्टि हुई ७४ वे परिग्राही कहाते हैं इनमें विभाग भी होता है प्रेरणा करने से ये जपादिक भी करते हैं यह पितरोंकी सृष्टिहै ७५ हे राजन् ! इस प्रकार छः तरहकी सृष्टि आपसे हमने कही व सब सृष्टियोंके प्रथम ब्रह्मासे महत्तत्त्व की उत्पत्ति होतीहै इससे पहिली सृष्टिवहीहै ७६ इसके पीछे पञ्चभूत पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तन्मात्रा गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द सहितों की सृष्टि दूसरी सृष्टि हुई फिर वैकारिक सृष्टि तीसरी हुई जोकि इन्द्रिय व इन्द्रियों की देवताओं की सृष्टिहै ७७ यह तीनोंप्रकार की प्राकृत सृष्टि कहाती है यह ब्रह्मसे बुद्धिपूर्व्वक होजाती है व चौथी सृष्टि भूतसर्ग्ग कहाती इसीका मुख्य सर्ग्गभी नाम है ७८ व जो तिर्यक्स्रोत कहाते उन्हींको तिर्यक्योनि कहते हैं जोकि पशुवादि हैं यह पांचवीं सृष्टिहै इसके पीछे ऊर्ध्वस्रोतसों की छठी सृष्टिहुई यह देवसृष्टि कहाती है ७९ इसके पीछे अर्व्वाक्स्रोतसों की सातवींसृष्टि है जो मनुष्यसृष्टि कहातीहै व आठवीं अनुग्रहसृष्टि कहाती है इसमें दोप्रकार हैं एक सात्त्विक व एक तामस ८० इससे पितर सात्त्विक व भूत, प्रेत, पिशाचादि तामस बस पितरोंकी आठवीं व प्रेतादिकों कीं नववींसृष्टि हुई इनमें तीन प्रथम के तो प्राकृत सर्ग्ग वा सृष्टिहैं व पांच जिनमें आठवें नवें दोनों एकमें हैं इससे छः कहना चाहिये वैकृत सर्ग्ग हैं सो राजन् ब्रह्माजीकी यह ९ प्रकारकी सृष्टि हमने तुमसे कही इनमें प्राकृत व वैकृत दोनों प्रकारकी सृष्टियां इस जगत् के मूलके हेतुहैं ८१ । ८२ अब और आपसे क्याकहैं और क्या सुना चाहतेहो यह सुन भीष्मजी बोले कि हे मुनिवरों में उत्तम गुरुजी ! ये देवादिकों को सर्ग्ग आपने संक्षेपरीतिसे कहे हम आपसे विस्तार सहित सुना चाहते हैं तब पुलस्त्यमुनि बोले कि यह जितनी सृष्टि है सब अपने २ कर्मोंसे कुशल वा अकुशल कराईजातीहै ८३ । ८४

प्रथम सब अलग अलग होते हैं प्रलयके समय सब उसीमें मिल-
जाते हैं सो राजन्! स्थावरादि व देवादि सब प्रजा चार प्रकार की
होती हैं ८५ प्रथम जब ब्रह्माजी ने सृष्टिकरना चाहा तो मानसी
सृष्टिहुई जो कि सनकादिकों व मरीच्यादिकों की है इसके पीछे फिर
देवता, दैत्य, पितर व मनुष्यों के ८६ उत्पन्न करने की इच्छासे उस
जलमें अपने शरीर को बहुत न माना तथापि उसी उदासीन ही
शरीर से दुष्टात्मा दैत्यगण ब्रह्माजी के पेडूसे उत्पन्नहो आये जो कि
राक्षस कहाते हैं उस सृष्टिसे अप्रसन्नहोकर ब्रह्माजीने अपना वह
शरीरही छोड़ दिया ८७ । ८८ वह उनका छोड़ाहुआ शरीर स्त्रीके
आकारकी रात्रिहोगई तब अन्य देहको धारणकर सृष्टि करनेकी
इच्छासे ब्रह्माजी वहुत प्रसन्नहुये उस देहसे सत्त्वगुणी देवता लोग
ब्रह्माजी के मुखसे उत्पन्न हुये वह शरीर भी ब्रह्माजीने छोड़ा वही
दिन होगया ८९ । ९० हे राजन्! इसीसे रात्रिमें असुर व दिनमें
देवगण बलवान् होते हैं इसके पीछे सत्त्वगुणही के अंशसे ब्रह्माजी
ने और शरीर ग्रहण किया ९१ उस देहको पिताके समान मनमें
समझा इससे पितर लोग उत्पन्न हुये पितरों को उत्पन्न करके उस
देहको भी छोड़दिया उससे सन्ध्या उत्पन्न हुई जो कि दिन व रात्रिके
बीच में रहती है फिर उन्होंने रजोगुणी और शरीर धारण किया
९२ । ९३ इससे हे कुरुसत्तम! रजोगुणी मनुष्य लोग उत्पन्न हुये
ब्रह्माजीने अपने उस देहको भी शीघ्रही परित्यागकर दिया ९४
वह चांदनी होगई इसीकानाम प्राक्सन्ध्या भी है इसीसे मनुष्य व
पितर चांदनीरात्रि व दिनमें बलीरहते हैं ९५ व सन्ध्याके समय
युद्धादि नहीं करसक्के ब्रह्माजीके सब शरीर सत्त्व, रज, तम तीनों
गुणोंसे संयुक्त होते हैं इससे उन्होंने फिर रजोगुणही और शरीर
ग्रहण किया ९६ । ९७ उससे जो उत्पन्न हुये उन्हें देखकर ब्रह्माजी
के बड़ाक्रोधहुआ क्योंकि वे जन्मतेंही बड़े भूँखे थे इससे उन्हीं को
भक्षण करने दौड़े परन्तु उन्होंने उन्हें अन्धकारमें उठाकर फेंकदिया
९८ उनके बड़े भयङ्कर रूप बड़ी बड़ी दाढ़ी मोछ रखाये अति
बिकराल थे वे उन्हींको फिर खानेको दौड़े उनमें से जिन्होंने कहा कि

रक्षाकरो इनको भक्षण न करो वे तो राक्षस होगये ९९ व जिन्होंने कहा हम खादामम अर्थात् खालेंगे वे यक्ष होगये व जिनको आपसमें एक दूसरेको खातेहुये देखकर ब्रह्माजी के शिरके बाल गिरपड़े १०० फिर शिरपर न आये वे दोप्रकारके थे एक हीनाङ्ग दूसरे शब्द करते हुये इधर उधर डोलनेवाले उनमें जो इधर उधर सर्प्पण करते चलते फिरते वे तो सर्प्प होगये व जो हीनाङ्ग थे वे अहि बहुत टेढ़े चलने वाले सर्प्प होगये १०१ ऐसादेख ब्रह्माजीने बड़ाकोप किया उससे बड़े क्रोध करनेवाली सृष्टि उत्पन्न हुई जो कि रङ्गमें काबिसके समान भूरेथे वेही मांसभक्षी भूत प्रेतहोगये १०२ व जो लोग उनमें शब्द करते हुये इधर उधर मुहँबाये हीं हीं करते घूमतेथे वे गन्धर्व्व होगये जो कि गाने बजाने के अधिकारी हैं १०३ उनको रचकर उन्हीं के शब्दसे प्रेरित ब्रह्माजी ने अपनी इच्छा से पक्षियों को उत्पन्न किया ये बहुधा मीठीबोली बोलते हैं १०४ और उसी समय अपने वक्षस्स्थलसे ब्रह्माजीने भेड़ियों को उत्पन्न किया व मुख से बकरियों को गाइयों और भैंसों को पेट से यह सब सृष्टि उन भूतादिकों के परोक्षमें कीगई १०५ व अपने दोनों चरणों से ब्रह्माजी ने घोड़े हाथी गधे नीलगाय मृग ऊँट खच्चर व सब वनमें रहनेवाले जन्तु बनाये १०६ फूलने फलनेवाले सब अन्न व वृक्ष ब्रह्मजी के रोमोंसे उत्पन्न हुये जिनको उन्होंने असुरों व मनुष्यों के ही पीछे बनाया था १०७ पशु और औषधियों को ब्रह्माजी अच्छी तरह रचकर तिस समयमें यज्ञमें युक्त करतेभये गऊ, बकरी, भैंसा, मेढ़ा, घोड़ा, खच्चर, गधा १०८ इनको गांवके पशु कहते हैं अब वन के पशुओं को मुझ से जानिये श्वापद, दोखुरा, हाथी, वानर, पक्षी १०९ ऊंट, सरीसृप ये वनके पशु हैं गायत्र, ऋक्, त्रिवृत, सोम, रथंतर ११० अग्निष्टोमयज्ञ इनको ब्रह्माजी ने पहले मुखसे रचा है यजुर्वेद, त्रैष्टुभछन्दस्तोम, पंचदश १११ बृहत्साम, उक्थ, इनको दक्षिणमुख से रचा है साम, जगतीछन्द, सत्रहस्तोम ११२ वैरूप और अतिरात्र को पश्चिम मुख से रचा है इकीस अथर्वा, अप्तोर्याम ११३ और वैराजसमेत आनुष्टुभ को उत्तर मुखसे रचा है

बड़े छोटे प्राणियों को देहोंसे उत्पन्न किया है ११४ कल्पके आदि
में देवता, असुर और पितरों को रचकर ब्रह्माजीने फिर मनुष्योंको
रचा है ११५ इनके पीछे फिर सब यक्ष, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरा,
सिद्ध, किन्नर, राक्षस, सिंह, पशु, मृग, सर्प सब बनाया ११६ इसी
प्रकार कल्पके आदि में स्थावर, जंगम नाशरहित व नाशयुक्त जो
कुछहै सबको आदिके करनेवाले विभु भगवान् ब्रह्माजीनेही बनाया
है इनके बनानेवाला और कोई नहीं है ११७ इन सबोंके जो २ कर्म्म पूर्व
सृष्टिमेंथे वे ही जब फिर उत्पन्नहुये तो फिर उनके वैसेही कर्म स्वभा-
वादि हुये ११८ जिनका पूर्वसृष्टिमें हिंसा करने का स्वभावथा उनका
इस सृष्टिमेंभी वैसाही हुआ ऐसेही जिनका अहिंसा करने का था उन
का अहिंसाकरनेवाला, कोमलस्वभाव वालोंका कोमल, क्रूरवालोंका
क्रूर, धर्म्मात्माओं का धर्म्मात्मा, अधर्म्मात्माओं का अधर्म्मात्मा,
सत्यवादियों का सत्यवादी, झुठोंका झुठा ये सब स्वभाव चाहे उन-
को अच्छेभी न लगें पर उत्पन्न होनेपर ज्योंकेत्यों होहीजाते हैं ११९
सब प्राणियों के शरीरोंकी सब इन्द्रियों में नानाप्रकारकी पृथक् २
शक्तियां ब्रह्माजीही बनादेते हैं इससे जो विषय जिस इन्द्रियका है
वह उसीसे होता है दूसरीका नहीं होता जैसे कान देखते नहीं नेत्र
सुनते नहीं ऐसेही और भी जानना चाहिये १२० ऐसेही सब प्राणियों
के नाम रूप व उनके कार्योंका प्रपञ्च क्या देवता क्या मनुष्यादि
सबका ब्रह्माही का बनायाहुआ है सो उन्होंने भी वेदके शब्दों से
ही बनाया है १२१ ऋषियों के नाम जैसे वेदमें सुने वैसेही यथा
योग्य जैसे का तैसा बनादिया ऐसेही औरोंका भी उन्होंने बना-
या १२२ ऐसेही जिस ऋतुका जो चिह्न व वृत्त व उलटा पटली जो
कुछ था वैसेही इस सृष्टिमें भी बनादिया उनमें वैसेही दिखाईदेते
हैं ऐसेही युगोंके विषयमें है जिस युगके प्राणियों का जैसास्वभाव
था उनका उनमें वैसाही किया १२३ बस इसी प्रकार की सृष्टि
कल्पकी आदिमें बार बार ब्रह्माजी किया करते हैं जैसेही सृष्टिकरने
की इच्छा हुई कि सृष्टिकी शक्तिने उनको वैसीही प्रेरणा की १२४
इतनी सृष्टिकी कथा सुनकर भीष्मजीने फिर पूछा कि जो आपने

मानुषों की अर्व्वाक्स्रोत नाम मनुष्य सृष्टिका वर्णन किया हे ब्रह्मन्! उसे विस्तारसहित कहिये कि जैसे ब्रह्माजीने उसको बनायाहो १२५ फिर उसमें भी जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इनचारों वर्णों को बनाया व उनके जो २ गुण और कर्म हों उन्हें भी कहिये १२६ यह सुन पुलस्त्य मुनिबोले कि हे कुरुश्रेष्ठ! जब ब्रह्माजीने सृष्टि करने की इच्छा की तो प्रथम उनके मुखसे सत्त्वगुणी प्रजा उत्पन्न हुईं उनमें पराक्रम अधिकहोता १२७ फिर और प्रजा उन के वक्षस्स्थल से उत्पन्न हुईं वे सब रजोगुणीहुईं फिर रजोगुण तमोगुणसे मिली हुई प्रजा जंघा से उत्पन्न हुईं १२८ फिर हे कुरुसत्तम! ब्रह्माजीने अपने दोनों पदों से और प्रजाओं को बनाया वे सब तमोगुणीहुईं इसके पीछे उन्हों ने चार वर्ण बनाये १२९ जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के नाम से प्रसिद्धहैं उनमें ब्राह्मणों को मुखसे उत्पन्न किया बाहों से क्षत्रियों को ऊरुओं से वैश्यों को व चरणों से शूद्रों को १३० सो हे महाराज! इन चारों वर्णों को उन्हों ने यज्ञक्रिया सिद्ध करने के लिये उत्पन्नकिया इससेयह चातुर्व्वर्ण्य यज्ञका उत्तम साधन है यज्ञको इनचारों को छोड़ और कोई नहीं करसक्ता १३१ यज्ञ करने से देवता लोग बढ़ते हैं फिर वे प्रसन्न होकर जल बरसते उस से मनुष्य बढ़ते हैं इस से यज्ञही सब धर्म्म हैं व यज्ञही कल्याण के हेतु हैं १३२ इस से जितने सुकर्म्म करने में तत्पर व विशुद्धआचार करनेवाले अच्छी मार्ग के चलनेवाले पुरुष हैं वे सब सदैव यज्ञ करते हैं १३३ व इसीसे मनुष्य का देह धारण कर के फिर स्वर्ग्ग व मोक्ष के अधिकारी होते हैं जो स्थान चाहते हैं वहां को यज्ञही के प्रभाव से चले जाते हैं १३४ हे राजन्! प्रथम जब ब्रह्माजीने चारों वर्णों की व्यवस्था की सिद्धि के लिये प्रजाओंको उत्पन्न किया तो सब को शुद्ध आचरण करनेवाली व सदाचार निष्ठही बनाया १३५ व सब अपने यथेष्ट निवास करने में निरत सब बाधाओं से वर्जित शुद्धान्तःकरण वाले शुद्ध व धर्म के अनुष्ठान से निर्म्मल १३६ व सब का मन शुद्ध क्योंकि सब के शुद्ध अन्तःकरण में हरिभगवान् स्थितरहते हैं इसी से वे शुद्ध

ज्ञान से ब्रह्म नामकयोगियों का स्थान देखते हैं १३७ परन्तु जो ब्रह्माके व उनकी सृष्टि के बसने का स्थानकाल कहाताहै व संसार को अत्यन्त घोर असार अन्धकार में गिराता है १३८ यह अन्धकार अधर्म्म के बीजसेही उत्पन्न होता है वह अधर्म्म लोगोंसे उत्पन्न होता जब कि सब प्रजा होते२ रजोगुणी तमोगुणीही कामों में लगजाती हैं तो काल उनको उस घोर अन्धकार में डालताहै जब तक शुद्धान्तःकरण सदाचारादि युक्त लोग रहते तब तक इसमें नहीं गिरायेजाते १३९ जब काल की ऐसी कुटिलता होती कि सब राग द्वेषादि करनेही में लगजाते तब उनकी वह साथ उत्पन्न हुई शुद्धान्तःकरणवाली सिद्धि जाती रहती जिससे वश्य अणिमादिक आठ सिद्धियाँ होतीं १४० जब होते होते पापबढ़जाता है तो वे आठसिद्धियाँ क्षीण होजाती हैं इससे प्रजा नानाप्रकार के दुःखों से संयुक्त होजाती हैं १४१ तभी सब पर्व्वतादि दुर्ग्गमस्थानों में बसतीं फिर ग्राम पुर नगरादिकों में भी बसनेलगतीं और अपने २ स्थानोंकी रक्षा पानीकांटा वृक्षादि दीवारादिकोंसे करनेलगतीं जब तक उनमें सिद्धियां रहतीं उन्हें स्थान बनानेआदि की आवश्यकताही नहीं पड़ती जब ये जाती रहतीं तभी पुर ग्रामादिकों में घर बनाते जिसमें कि शीत घाम वर्षाआदि से बाधा न हो १४२ । १४३ इसप्रकार घर बनाकर उनकी रक्षाकर फिर हाथों से नानाप्रकार के कामों का करना सीखते हैं उससे नानाप्रकार की जीविकाओं के करनेके उपाय करते हैं उसमें कोई खेती कोई वाणिज्य कोई गोरक्षा कोई किसीकी अधीनता करने लगते १४४ खेती में धान, यव, गेहूँ, ज्यठऊसावां, तिल, काकुन, कोदो, सोंथी, भदैलासावां १४५ उर्द, मूंग, मसूर, मटर वा क्यराव, कुलथी, अर्हीं, चना, जुँधरी ये १७ अन्नबोने उपराजने लगते हैं १४६ हे राजन्! ये अन्न ग्रामों में होते हैं इससे ग्राम्य कहाते हैं यज्ञ के योग्य कुछ इन्हीं में से व कुछ और वनके अन्न चौदह और हैं १४७ जैसे कि धान, यव, उर्द, गेहूँ, ज्यठऊसावां, तिल, काकुन, कुलथी १४८ भदैलासावां, तिनी, पसाढ़ी, गवेधु जिसे वङ्गदेशमें गड़गड़ कहते इन्द्रयव, क्यवांच ये १४ यज्ञके

अन्न हैं १४९ ये चौदह ग्राम्य और वन्यभी कहाते हैं क्योंकि ग्रामके रहनेवालों के काममें भी आते हैं कुछ यज्ञही में नहीं लगायेजाते १५० ये सब अन्न यज्ञ व खाने में काम आते हैं इससे प्रजाओं के जीने के कारण हैं इसी से ज्ञानी पण्डितलोग सदा यज्ञ करते हैं जिसमें मेघ बरसें अन्न उपजै १५१ हे राजन् ! यज्ञका अनुष्ठान प्रतिदिन करना चाहिये क्योंकि फल चाहनेवाले लोगों को वह सदा उपकारक होताहै १५२ ब्रह्माने इसीलिये इन अन्नों व प्रजाओं को उत्पन्न किया है कि इनसे यज्ञकरें जिससे देवगण प्रसन्नहो वर्षाकरें अन्न उपजे प्रजा भोजनकर अपनी आयुर्दाय भर सुखसे रहें १५३ व चारवर्ण चार आश्रम सब अपना २ धर्मकरें अधर्मत्यागें क्योंकि धर्म्म करनेसे जिसके लिये जो लोकहै वह मिलता है अधर्म करनेसे नहीं मिलता हे महाराज ! अपना धर्म्म कर्म्म करनेवाले ब्राह्मणों का प्राजापत्य स्थानहै वे मरनेपर वहीं जाकर विराजते हैं व संग्रामसे न भागनेवाले क्षत्रियों का ऐन्द्रस्थानहै १५४ । १५५ अपने धर्म्म में टिकेहुये वैश्यों का मारुतलोकस्थानहै व ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों की निश्छल सेवा करनेवाले शूद्रों का गन्धर्व्वलोक स्थान है १५६ व ऊर्ध्वरेता अट्ठासीहजार ऋषियों के लिये जो स्थान है वह ब्रह्मचारियोंको मिलताहै १५७ व जो स्थान सप्तर्षियों का है वह वानप्रस्थ को मिलता है अपने धर्म्म में चलतेहुये गृहस्थों को प्राजापत्य अर्थात् ब्रह्माका लोक मिलताहै व सन्न्यासियोंको ब्रह्मलोक मिलता है १५८ योगाभ्यास वालोंको भी परमउत्कृष्ट ब्रह्मपद मिलता व जो योगी सदा एकान्त में टिकेहुये ध्यानही किया करते हैं १५९ उनको वह परम स्थान मिलताहै जिसको बड़े २ विचारी विज्ञानी पण्डित लोग देखते हैं ये सूर्य्य चन्द्रादि ग्रह अपने २ स्थानों में आया जायाकरते अन्त में च्युत भी होजाते १६० पर प्राणायाम करने में परायण योगी ब्राह्मण उस परमपदसे कभी लौटतेही नहीं व तामिस्र, अन्धतामिस्र, महारौरव, रौरव १६१ असिपत्रवन, कालसूत्र, अवीचिमान् ये स्थान वेदोंकी निन्दा करनेवाले व यज्ञविध्वंस करनेवाले १६२ व जो अपने धर्म्म के घाती होते हैं उनके हैं तदन-

न्तर ब्रह्माजीने फिर ध्यानकिया तो उनसे मानसी प्रजा उत्पन्न हुई १६३ उनमें सब कायस्थ व उनकी एक करण जाति जोकि शूद्री में वैश्यसे उत्पन्न हुई थी ये सब हुये ये कायस्थ ब्रह्माजी के सब अङ्गों से उत्पन्न हुये थे इसी से ये लोग खेतोंको व्यवस्था बहुत जानते हैं १६४ वे जितने देवादिक हमने प्रथम कहे उनसे लेकर कायस्थों तक सब किसी न किसी ब्रह्माजी के अङ्गही से उत्पन्न हुये हैं इससे सब ज्ञानी हैं १६५ ब्रह्माजीने इसरीतिसे सब मानसीही सृष्टि प्रथम की पर जब उनकी प्रजा न बढ़ी तो उन्होंने फिर भी अपने समान और मानसीही पुत्र उत्पन्न किये वे ये हैं भृगु, पुलह, क्रतु, अङ्गिरा, १६६ । १६७ मरीचि, दक्ष, अत्रि, वसिष्ठ व हम अर्थात् पुलस्त्य इन नवपुत्रोंको ब्रह्माजीने उत्पन्न कियाहै ये सब पुराणोंमें प्रसिद्धहैं १६८ व जोकि सनन्दनादिक चारपुत्र उन्होंने प्रथम उत्पन्न किये थे उन का चित्त लोकोंमें नहीं लगा क्योंकि वेलोग प्रजाओंके विषयमें निर-पेक्षहुये १६९ व सब बड़े विज्ञानी अनुराग रहित मत्सरादि हीनथे जब वे लोग लोककी सृष्टि में ऐसे निरपेक्षहुये कि ब्रह्माजी के कहने पर भी उन्होंने सृष्टि करनेकी इच्छा न की तो १७० उन महात्मा के ऐसा बड़ाभारी क्रोधहुआ जो तीनोंलोकों को भस्म करसक्ता था इससे उनके क्रोधसे बड़ीज्वाला की माला निकली १७१ कि जिस-से तीनोंलोक पूर्णहोगये व सब जलनेलगे महा हाहाकार मचगया तब ब्रह्माजी की भौंहें अति कुटिलहुई मस्तकमें सिकुड़े पड़गये वे-सेही मस्तक से १७२ रुद्रजी का अवतार हुआ जो कि मध्याह्न के सूर्य्य के समान प्रकाशित थे उस रुद्रजीके स्वरूपमें आधे अङ्ग स्त्री के आधे पुरुषकेथे व महाप्रचण्ड शरीरथा १७३ उनसे यह कहकर कि तुम अपने अङ्गोंको अलगकरो जिसमें स्त्रीका रूप अलग होजाय व पुरुषका अलग ब्रह्माजी वहीं अन्तर्द्धान होगये ब्रह्माजी के कहने पर महादेवजीने अपना शरीर अलग २ करलिया एक स्त्री का व एक पुरुषका १७४ फिर जो पुरुष का शरीरथा उसमें ग्यारह होगये उन ग्यारह मूर्त्तियों में कोई तो सौम्यस्वभाव कोई असौम्य स्वभाव हुये और स्त्री के भी बहुत स्वरूपहुयेपर वे सब शान्त स्वभाव १७५

हां कुछ तो उनमें अत्यन्त गौर वर्णकीथीं कुछ अत्यन्त काली इसके पीछे ब्रह्माजीने अपने शरीरसे एक पुरुष व एक स्त्री साथही उत्पन्न किया उनमें पुरुष तो राजा स्वायम्भुव मनुहुये व स्त्री शतरूपा रानी जो कि तपस्यासे पाप रहित थीं १७६। १७७ राजास्वयम्भुव मनुजीने उनको अपनी स्त्री बनाया उन महाराज स्वायम्भुव जीसे उन महारानी शतरूपाजी में चार सन्तान उत्पन्न हुये १७८ दो पुत्र दो कन्या प्रियव्रत उत्तानपाद ये पुत्र प्रसूति आकूति ये दो कन्या प्रसूति का विवाह तो ब्रह्माजीके पुत्र दक्षजी के साथ किया व आकूति को रुचि नाम ऋषिके सङ्ग आकूति में रुचि से एक कन्या एक पुत्र युगल साथही उत्पन्न हुये पुत्रका नाम यज्ञ व कन्या का नाम दक्षिणा हुआ पर स्वायम्भुवजीने कौल करलिया था कि इस हमारी आकूति कन्या में जो प्रथम गर्भ से सन्तान होगी हम लेलेंगे इससे यज्ञ व दक्षिणा दोनों को लेलिया और दोनोंका आपस में विवाह करदिया १७९। १८० अब राजा स्वायम्भुव मनुजी के पुत्र तीन होगये कन्या जानों दो थीहीं यज्ञसे दक्षिणा में १२ पुत्र हुये उन सबोंका याम नाम हुआ येही याम इस स्वायम्भुव मन्वन्तर में देवता हैं १८१ और प्रसूति में दक्षसे चौबीस कन्या उत्पन्न हुईं उनके नाम हम से सुनिये १८२ श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, ऋद्धि व कीर्त्ति ये तेरह कन्या तो दक्षजीने १८३ धर्म्म को दीं कि तुम इनको अपनी स्त्रियां बनाओ और उन से जो ग्यारह और छोटी सुन्दर नेत्रवाली थीं १८४ उनके नाम ये हैं कि ख्याति, सती, सम्भूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनसूया, ऊर्ज्जा, स्वाहा, स्वधा १८५ उन ग्यारह कन्याओंका क्रमसे भृगु, महादेव, मरीचि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु १८६ अत्रि, वसिष्ठ, अग्नि व पितर इन ग्यारहों के सङ्ग विवाहहुआ जैसे कि ख्यातिका भृगु के साथ सतीका महादेव के सम्भूति का मरीचि के स्मृति का अङ्गिरा के प्रीति का पुलस्त्य के क्षमा का पुलह के सन्नतिका क्रतुके अनसूया का अत्रिके ऊर्ज्जाका वसिष्ठ के इन्हीं ऊर्ज्जा का अरुन्धती भी नाम है स्वाहा का अग्नि के साथ व स्वधा का

पितरों के सङ्ग विवाह हुआ अब दक्षकी चौबीस कन्याओं के स-न्तान कहते हैं १८७ श्रद्धाने काम व बल दो पुत्र उत्पन्न किये धृतिने नियम नाम पुत्र तुष्टिने सन्तोष पुष्टिने लोभ १८८ मेधाने श्रुत, क्रियाने दण्ड, नय, विनय, बुद्धिने बोध, लज्जाने विनय, वपु १८९ व्यवसाय, शांतिने क्षेम, ऋद्धिने सुख कीर्त्तिने यश इन स्त्रियों में धर्म्म के इतने पुत्रहुये १९० काम, हर्ष ये दो बुद्धिसे उत्पन्न हुये ये भी धर्म्म के पुत्र हैं अधर्म्म की स्त्री का हिंसा नामहै उसने अनृत नाम पुत्र उत्पन्न किया १९१ व निकृति नाम कन्याभी अधर्म्मसेही उत्पन्न हुई इस अनृत व निकृति से भय व नरक दो पुत्र उत्पन्न हुये माया व वेदना दो कन्याभी १९२ सो उस भयसे माया ने सब प्रा-णियों के हरनेवाले मृत्युको उत्पन्न किया व नरक से वेदना स्त्री में दुःख उत्पन्न हुआ जो सबको असुख देता है १९३ व मृत्यु से व्याधि, जरा, शोक व क्रोध उत्पन्न हुये इन दुःखादिकों के न कोई स्त्री है न पुत्र क्योंकि ये ऊर्ध्वरेताहैं केवल सबको दुःख दिया करते और अधर्म लक्षण हैं हे राजन्! ब्रह्माजी के ये सब रौद्ररूप हैं १९४। १९५ इसी से इस जगत् के प्राणों के हरने के कारण हैं अब जिस रीति से ब्रह्माजीने कल्प के आदि में रुद्र सृष्टि की है उसको कहतेहैं १९६ जब सनकादिकों के सृष्टि न करने पर ब्रह्मा जीको क्रोध हुआ और उन के ललाटसे रुद्र जी हुये जिनका रंग लाल काला मिलाहुआ था १९७ बड़े जोरसे रोनेलगे व कहा कि हमारा नाम बताइये क्या है तब ब्रह्माजीने कहा क्यों रोतेहो धैर्य्यधारण करो रोने से तुम्हारा रुद्र नाम हुआहै १९८। १९९ इस प्रकार ब्रह्माजी के कहने पर भी वे सातबार रोये तब ब्रह्माने सात नाम और दिये २०० और आठों मूर्तियों के आठही स्थान करते भये वे नाम ये हैं भव, शर्व, ईशान, पशुपति २०१ भीम, उग्र और महादेव ये सातों नाम भये फिर ब्रह्माजी महादेवजी से बोले कि सूर्य, जल, पृथ्वी, अग्नि, पवन, आकाश २०२ दीक्षित ब्राह्मण और चन्द्रमा ये क्रमसे तुम्हारी मूर्ति है इनमें बसिये ॥

इमि शिव सती नारि वरपावा। सकल भांति ज्यहि रूप सुहावा ॥

दक्ष यज्ञ महँ सो करि क्रोधा । निज शरीर किये भस्म अबोधा १
पुनि सो भई हिमाचल कन्या । सब शुभगुणयुत अरु बहु मन्या ॥
तबहुँ सदा शिव ताहि विवाही । जाय वहां जहँवां सोराही २
धाता और विधाता दोई । सुतभृगु ख्याति माहिं उपजोई ॥
अरु लक्ष्मीतनयाअतिपावन।जोनारायणवधूकहावन।३।२०३।२०६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणे प्रथमेसृष्टिखण्डे भाषानुवादेतृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय ॥

दो० चौथे महँ सुरराज श्री दुर्व्वासा के शाप ॥
नष्ट क्षीरसागर मथनलक्ष्मी जन्मसुथाप १

भीष्म जी इतनी कथा सुनकर बोले कि हमने तो सुना है कि लक्ष्मी जी क्षीरसागरमें उत्पन्न हुई हैं फिर आपने यह कैसे कहा कि वे भृगुमुनि से ख्याति नाम स्त्रीमें उत्पन्न हुई हैं १ व दक्ष की कन्या सतीजीने कैसे देह छोड़ा और मेनाके गर्भ में बासकर कैसे जन्मी २ फिर देवताओं के देवता महादेवजी ने हिमवान् पर्व्वत की कन्या के साथ कैसे विवाह किया दक्ष व महादेवजी से विरोध क्यों हुआ आप हमसे सब कहें ३ यह सुन पुलस्त्यमुनि बोले कि हे भूप! तुमने जो पूँछा सो सुनो हमने भी ब्रह्माजी के मुखसे लक्ष्मी जीका सम्बन्ध समुद्र से सुनाहै ४ एक समय दुर्व्वासामुनि पृथ्वीतल पर घूमते चले जाते थे उन्होंने एक विद्याधरी के हाथ में बड़े सुगन्धित फूलों की शुभ मालादेखी ५ उससे मांगा कि यह माला हमें दो हम इसे अपनी जटा में धारण करेंगे इस प्रकार जब ऋषिने विद्याधरी से पूंछा ६ तब आनन्द युक्त विद्याधरी मुनि को तिस मालाको देतीभई तब मुनिने बहुत समय तक मालाको अपने शिरपर धारणकरलिया ७ उसके धारण करतेही ब्राह्मणदेव उन्मत्तसे होकर यह वचन बोले कि यह विद्याधरी कन्या मोटे व ऊंचे कुचवाली है ८ व नानाप्रकार के शोभित भूषणों और सौभाग्य से भूषित है इसे देख हमारा मन चलायमान होता है पर हम कामशास्त्र में चतुर नहीं हैं ९ इससे तब तक कहीं अलग चलेजायँ अपना सौभाग्य दिखावें इतना कहकर

दुर्व्वासाऋषि पृथ्वीपर घूमने लगे घूमते २ देखा १० तो ऐरावत हाथीपर चढ़े देवताओं के राजा प्रकाशितु इन्द्रजी चलेआते थे जो कि तीनोंलोकों के स्वामी व इन्द्राणी के पतिथे ११ अपने शिर से उतार भ्रमर गुञ्जार करती हुई वहमाला ले उन्मत्त के समान मुनि-जीने इन्द्रजी के ऊपर फेंकदी १२ इन्द्र ने उसे ले अपने हाथी के शिर में पहिना दिया वह माला उस श्वेतरंग के हाथी के शिरपर ऐसी शोभित हुई जैसे कैलास पर्व्वत पर गंगाजी शोभित होती हैं क्योंकि हाथीभी श्वेतही था व मालाभी व कैलास और गङ्गाभी श्वेत ही हैं इससे यह उपमा ठीकहुई १३ परन्तु उस मालाकी सुगन्धि से वह हाथी तुरन्त मदान्ध होगया इससे सूंड़से सूंघकर तोड़कर उसने उसे पृथ्वीपर फेंकदिया १४ तब तो हे राजेन्द्र! मुनिश्रेष्ठ दुर्व्वासाजी ने बड़ा क्रोधकिया व क्रुद्धहोकर देवराज से यह कहा कि १५ हे दुष्टा-त्मा इन्द्र! तू बड़ा अहङ्कारी है जो कि शोभा व लक्ष्मी राज्यश्री देने-वाली हमारी मालाका आदर नहीं करता १६ अच्छा हे मूढ़! जिससे तूने हमारी दीहुई माला को पृथ्वीमें फेंकदिया इससे तेरे तीनोंलोकों का राज्य नष्ट होजायगा १७ व सब तीनों लोकों की शोभा जाती रहेगी जिस मेरे कोपके सन्ताप से चराचर सब भयभीत होतेहैं १८ उस मुझको बड़े गर्व्व से देवराज तू अनादरित करता है इतनासुन इन्द्रजी झटपट हाथी पर से उतर १९ पाप रहित दुर्व्वासा जी के चरणोंपर गिर प्रसन्न करनेलगे यद्यपि उन्होंने बहुत कुछ प्रार्थना करके हाथ जोड़े बिनती की पर दुर्व्वासा जीने कहा २० हे इन्द्र! बहुत बकने से कौन प्रयोजन है हम अब न क्षमा करेंगे इतना कह दुर्व्वासाऋषि चलेगये व इन्द्रजी भी मुनि के फिर प्रणामकर २१ हाथीपर चढ़ अपनी अमरावती नाम पुरीको चलेगये तब से ये तीनोंलोक इन्द्र समेत श्री रहित होगये २२ न तो कहीं यज्ञ होते न ब्राह्मण लोग तपस्या करते न कोई दानदेता इससे सब जगत् नष्ट प्राय होगया २३ इस रीति से सब तीनोंलोक पराक्रम रहित अत्यन्त निश्श्रीक होगये तो दैत्योंने देवताओं के ऊपर बड़े बलका उद्योग किया यहांतक कि दानव दैत्योंने जाय २४ सब देवताओं

को जीतलिया इससे अग्नि देवता को आगेकर इन्द्रादि देव ब्रह्मा जीके शरण में गये २५ जब दैत्यों के सब वृत्तान्त देवताओं ने कहे तो ब्रह्माजी सब देवगणों से बोले व सब देवताओं को सङ्गले क्षीर-समुद्र के उत्तरी किनारे पर जाय २६ उन्होंने श्रीविष्णु भगवान्‌की स्तुति करके कहा कि उठिये देवताओं का कल्याण कीजिये २७ आप के विना इन देवताओं को दानवों ने बार २ जीता है ऐसा सुन भगवान् पुण्डरीकाक्ष पुरुषपुरुषोत्तम विष्णुजी २८ देवताओं को अपूर्वरूप निश्श्रीक धारणकिये देखकर उनसे बोले कि हे देवताओ! हम आप लोगों का तेज बढ़ावेंगे २९ अब हम वह उपाय बताते हैं जो आप लोगों को शीघ्रही करना चाहिये वह यह है कि आप लोग जाय पहिले दैत्यों से मिलें उनको संगले सब औषधियां क्षीर-समुद्र में डालें ३० फिर मन्दराचल को मथानी बनाय व वासुकि नाग को मथानी में बांधकर खींचने की रस्सी बनाय समुद्र मथकर उसमें से अमृत निकालें सहाय हमभी करते रहेंगे ३१ दैत्यों को केवल समझाय बुझाय सामान्य फल भोग करावेंगे और तुम लोगों को अमृत पान करावेंगे ३२ और जो पदार्थ समुद्र मथनेपर अमृत निकलेगा वह तुम्हीं लोगोंको हम पिलावेंगे उससे आप लोग बली होजावेंगे ३३ हे देवताओ! हम वैसाही उपाय करेंगे जिससे तुम्हारे शत्रु अमृत न पावेंगे केवल क्लेश ही के भागीहोंगे ३४ जब देवताओं के देवता श्री विष्णु भगवान् जीने देवताओं से ऐसा कहा तो उन लोगों ने दैत्यों से मिलकर क्षीरसमुद्र मथने का उपाय किया ३५ प्रथम तो देवता और दैत्यों ने पर्व्वतों परजाय २ सब औषधियां लाय २ क्षीरसागर में छोड़ीं जो सागर शरदृतु के चन्द्रमा के समान प्रकाशित था ३६ फिर मन्दराचल को मथानी व वासुकि नागराजको उसमें बांधकर खींचनेकी जोती बनाकर शीघ्रही अमृत मथने लगे ३७ श्री भगवान् विष्णुजीने युक्ति से देवताओं को वासुकि की पूँछ की ओर लगाया व दैत्यों को मुख की ओर ३८ इस से उस के अग्नि समान श्वासों से बहुत दैत्य लोग झुलसगये व सब दैत्य तेजोरहित होगये क्योंकि ज्यों २ नागराज के श्वास

निकलते थे दैत्यों के ही बहुत लगते थे जिससे कि वे मुखकी ओर थे देवताओं की ओर जो गर्म्मी पहुँचतीथी विष्णु भगवान् की आज्ञासे पूँछकी ओर मेघ जल बरसातेथे इस से देवतालोग शीतल रहते ३९।४० उस क्षीर समुद्रके बीचमें वेदवादियोंमें श्रेष्ठ भगवान् ब्रह्माजी व महातेजस्वी महादेवजी कच्छपरूपी श्रीविष्णु भगवान्की पीठ पर खड़े थे ४१ उनमें परंतप ब्रह्माजी तो अपने हाथोंसे कमल की नाईं मन्दराचलको पकड़े थे व महादेवजी वासुकि नागको पकड़े थे इस प्रकार मथतेथे ४२ व देवताओं दैत्यों के बीचमें कच्छपरूप धारण किये विष्णु भगवान् आप मन्दराचल के नीचे बैठे अपनी पीठपर उसे आड़े थे कि नीचे को न चलाजाय ४३ और श्री भगवान् अपने तेजसे देवताओं का बलबढ़ाते जाते थे जिसमें उनका चित्त प्रसन्न बनारहै क्षीर सागर मथनेसे ऊब न जाय इस रीतिसे देवताओं दैत्योंके मथने पर क्षीर सागर से ४४ सबसे प्रथम कामधेनु गाय निकली जो कि देवताओं से पूजित हुई उसे देख देवता दैत्य सब बहुत प्रसन्न हुये ४५ व उस के तेज से सब के तेज कुछ कुछ हत होगये इस से वे दोनों बड़े बिस्मित हुये व स्वर्ग्ग में सिद्ध लोग कहने लगे कि यह क्यापदार्थहै इतने में ४६ वारुणी देवी मदिरा उत्पन्नहुई जिसके मद से नेत्र घूमरहेथे व पद पद पर घूम २ गिरती थी ४७ केवल एक ही सूक्ष्म सारी ऊपर नीचे ओढ़े पहिने थी शिर के बाल सब खोले थी नेत्र लाल २ होरहेथे मारे नशेके घूमेजाते थे प्रथम देवताओं की ओर गई ४८ परन्तु अपवित्र मान कर उन लोगों ने उसे नहीं ग्रहण किया तब दैत्यों की ओर जाय उसने कहा दैत्यो तुम हमको ग्रहण करो हम तुमको बहुत बलदेंगी तब दैत्योंने उसे ग्रहण किया इसी से उनका असुर नाम पड़ा क्योंकि नहीं पाई सुरों ने जिसे उसे पाया जिन्हों ने वे असुर हुये ४९ तदनन्तर कल्प वृक्ष उत्पन्न हुआ जिसे पारिजात भी कहते हैं वहदेवताओं के नन्दन नाम वनमें लगाया गया उस के पीछे रूप उदारतादि गुणोंसे युक्त अप्सराओं के गण उत्पन्न हुये ५० ये अप्सरा साठकिरोड़ हुईं देवता दैत्य दोनों की सामान्य स्त्रियां हैं

इनके सिवाय जे अन्य कोई पुण्यात्मा मनुष्य हैं वे अपनी पुण्य से स्वर्गादि में जाते हैं तो उनकी भी वेही स्त्रियां होती हैं ५१ इसके पीछे चन्द्रमा समुद्र से निकला जो कि देवताओं को प्रीतिदायक हुआ उसे महादेव जी ने मांगा व कहाकि यह हमारेजटाको भूषित करेगा ५२ इसे हम लेंगे ब्रह्माजीने कहा बहुत अच्छा यह महादेवहीजीके अंगोंका भूषण हो इसेयेही लें ५३ उसके पीछे अति भयङ्कर कालकूट नाम विष निकला उससे दानव देवता सब अति पीड़ित हुये व ब्रह्मादि सब देवता भी पीड़ित हुये ५४ तब महादेवजीने उसे पान करलिया उसके पीनेसे महादेवजीकागल श्याम रंग का होगया इससे उनका नीलकण्ठ एक नाम हुआ ५५ इसके पीछे हाथमें अमृतसे भराहुआ कमण्डलु लिये श्वेत वस्त्र धारणकिये धन्वन्तरिजी समुद्रसे निकले इनवैद्यराज धन्वन्तरिजीके दर्शन से देवता दैत्य सब बहुत प्रसन्नहुये कि अब क्या अब तो अमृत पान किया ५६ । ५७ तदनन्तर उच्चैश्श्रवा नाम अश्व व ऐरावत नाम गज दोनों समुद्र से निकले इस के पीछे उसी क्षीरसागर से प्रफुल्लित कमल हाथ में लिये अति शोभावती प्रसन्न मुखी लक्ष्मीजी निकलीं महर्षि लोगों ने श्री सूक्त नाम वैदिक स्तोत्र से तब उनकी बड़ीभारी स्तुतिकी ५८ । ५९ विश्वावसुआदि गन्धर्व उन के आगे गान करने लगे घृताची आदि अप्सरा उनके आगे नाचने लगीं ६० गंगादि सब नदियां स्नान करने के लिये जल लेलेकर आय खड़ीहुईं दिग्गज लोग सोने के बर्तन में स्थित निर्मलजल लेकर ६१ सर्व लोकों की महेश्वरी लक्ष्मी परमेश्वरी को स्नान करानेलगे क्षीरसमुद्रने अपने आप आय एक ऐसी माला लक्ष्मीजीको दी जिसके कमल कभी न सूखें ६२ विश्वकर्म्माने सब अङ्गों के लिये विभूषणदिये व पहिनाये भी जो जहांचाहिये इस प्रकार दिव्यमाला दिव्यवस्त्र भूषणोंसे भूषित लक्ष्मीजीकी ब्रह्मा, विष्णु, महादेव तीनों देवताओं ने प्रार्थनाकी ६३ इन्द्रादिदेवता, विद्याधर, नाग, दानव, दैत्य, गुह्यक व राक्षस ६४ इनसबोंने उनकिसीकी न विवाहित स्त्रीके पानेकी इच्छाकी तब ब्रह्माजीबोले कि हे वासुदेव ! हमारी

दीहुई इन लक्ष्मीजीको तुम्हीं ग्रहणकरो ६५ हमने देवता,दैत्य दोनों को रोकदिया अब कोईभी नहींपासक्ते हम आपके इसबड़ेभारी समुद्र मथानेके कर्म्म से बहुत सन्तुष्टहुये ६६ इतना विष्णु भगवान्से कह ब्रह्माजीने लक्ष्मीजी से कहाकि तुमअब केशव भगवान्को ग्रहणकरो हमारे दियेहुये पतिको पाय बहुत वर्षोंतकहर्षितहोओ ६७ तब देवताओंके देखतेही देखते लक्ष्मी जी जाय श्री भगवान् विष्णुकी छाती में लपटगईं व वक्षस्स्थलमें लपटकर अपने पति श्रीहरिसे बोलीं ६८ कि हे देव! आप हमको कभी परित्याग न कीजियेगा व हमभी सदा आपकी आज्ञा करेंगी व हम सब जगत्के प्रिय करनेवाले आपके वक्षस्स्थलही में सदा स्थित रहेंगी ६९ यहकह विष्णु भगवान् के वक्षस्स्थल में स्थित लक्ष्मीजी ने कृपादृष्टि से देवताओं की ओर देखदिया उसलक्ष्मी जी की दृष्टि से देवगण आनन्दित हुये जो समुद्र मथनेका श्रमथा जातारहा ७० परन्तु दैत्यलोग तो विष्णु से पराङ्मुख होतेहींहैं इससे उनको बड़ा उद्वेग हुआ लक्ष्मीजीने इसी से करुणार्द्र दृष्टिसे देखाभी नहीं जब लक्ष्मीजीसे दैत्यलोग परित्यक्तहुये तो विप्रचित्त्यादिकों ने ७१ धन्वंतरिजी के हाथसे वह अमृत का पात्र छीनलिया क्योंकि वे एकतो महावीर्य्य पराक्रमी होतेहैं व पापीतो होतेहींहैं ७२ जब दैत्यों ने अमृत लेलिया तो भगवान् विष्णुजी एक अति स्वरूपवती स्त्री का रूप बनाय वहां आय माया से दानवोंको लुभाय उनसे बोलेकि यह अमृतका कमण्डलु हमको देदो ७३ हम तुमलोगों के वशमें आय सदा तुम्हारे घरों में टिकी रहेंगी तब दैत्योंने उस परम शोभन रूपवती नारीको देख ७४ कि वह अपना शरीरही हम लोगोंको देनेको कहतीहै इससे लोभसे हत चित्त होकर उस स्त्रीको अमृतका भाजन देदिया कि वहस्त्री ७५ दानवोंसे अमृतले देवताओं को देकर उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगई तब इन्द्रादि देवगणोंने वह अमृत आनन्दसे पानकिया ७६ तब दैत्यों ने अस्त्र शस्त्र धारणकर देवताओं को मारना चाहा परन्तु देवगण अमृत पीने से बलवान् होगये थे इससे उन्होंने दैत्योंकी सब सेनाको जीतलिया ७७ यहांतक कि मारेहुये सब दैत्य सब

दिशाओंको भागे जब वहांभी नबचे तो पातालमें पैठगये तब देव- गण आनन्दितहो शङ्ख चक्र गदाधारी संसार हितकारी श्रीविष्णु भगवान्‌के प्रणामकर ७८ अपने स्वर्गलोकको चलेगये हेभीष्म! तबसे सब दानव स्त्री के लोभी होगये ७९ क्योंकि विष्णु भगवान्‌ने स्त्री स्वरूपसे ऐसा मोहित किया कि वे रसातल मेंभी स्त्रीका लोभही किया करते हैं तबसे सूर्य्य दिव्य प्रकाश युक्तहो अपने मार्गपर चलनेलगे ८० चन्द्रमा प्रकाश सहित उदित होनेलगे अग्नि प्रज्व- लित होगये सब प्राणियोंकी मति धर्म्म कर्म्म करने में लगनेलगी ८१ विष्णु भगवान् से पालित तीनोंलोक श्रीयुक्तहुये तब देवताओं को बुलाकर लोकधारी ब्रह्माजीने कहा ८२ कि हमने तुम लोगोंकी रक्षाके लिये श्रीभगवान् विष्णुजी को नियत करदिया है इससे ये व महादेवभी तुमलोगोंका योग क्षेम सदा करते रहेंगे ८३ तुमलोग इनदोनों महात्माओंकी उपासना करते रहना क्योंकि इनको जो भजताहै उसीकेऊपर विशेष कृपाकरतेहैं व तभी क्षेमकारकभी होतेहैं वरदान करतेहैं ८४ यह कह ब्रह्माजी अन्तर्द्धान होगये इसरीतिसे जब सब लोकोंके पितामह ब्रह्माजी अन्तर्द्धान होगये ८५ इन्द्र देवलोक को चलेगये तो श्रीहरि भगवान् व शंकरभगवान् भी अपने २ लोकों को चलेगये उनमें श्रीविष्णु भगवान् तो श्वेतद्वीप को पधारे व महादेवजी कैलास को ८६ तबसे देवराज फिर तीनोंलोकोंको पालने लगे इसप्रकार महाभाग्यवती लक्ष्मीजी क्षीरसागरसे उत्पन्नहुईं ८७ यद्यपि ये सनातनी हैं किसी से कभी उत्पन्न नहीं होतीं तथापि कारणवश फिर भृगुजीकी ख्याति नामस्त्री में भी उत्पन्नहुईं वहां भृगुऋषिकी शोभाके साथ उत्पन्नहो ८८ नर्म्मदा नदी के किनारे लक्ष्मीजी ने अपने नामका एक पुर बसाया उसका अनुमोदन ब्रह्माजीने भी किया ८९ व भृगुजीने लक्ष्मीपुर उसकानाम धराया और लक्ष्मी को देदिया इसके पीछे श्री विष्णुभगवान् ने भृगु के समीप आय अतिहर्षाय लक्ष्मी को मांगा भृगुने विवाह कर लक्ष्मी को तो देदिया ९० पर मारे लोभके लक्ष्मीपुर नहींदिया जब लक्ष्मीजी विष्णु भगवान् के यहां आईं तो कहा ९१ कि पिता

ने हमारा बड़ा अनादर किया जो हमारा पुर हमें नहींदिया आप चलकर मंगादीजिये ९२ यह सुनकर कमलनयन, चक्र और गदा के धारण करनेवाले भगवान् ने भृगुजीके समीप जाय बातेंवनाय अति हर्षाय कहा कि यह लक्ष्मीपुर अपनी कन्या लक्ष्मी को दीजिये क्योंकि यह तो उन्हीं का है ९३ और प्रसन्नहोकर ताला और कुंजी इन दोनों को भी देदीजिये तब क्रोधयुक्त होकर भृगु जी उन से बोले कि मैं पुरको नहीं दूंगा ९४ हे देव ! यह लक्ष्मी का पुर नहीं है मैंने यह बसाया है हे भगवन् ! हे केशवजी ! मैं नहींदूंगा आप आक्षेप को छोड़िये ९५ तब भगवान् फिर उन से बोले कि लक्ष्मी के पुरको दीजिये एक तो कन्याका धन ऐसेही अग्राह्य है दूसरे हम कहतेहैं आप देही दीजिये इसी में अच्छा है पराया धन कभी आपको अपने पास न रखनाचाहिये ९६ यहसुन अत्यन्त कोपकर भृगुजीने केशव भगवान् से कहा कि तुम अपनी स्त्री लक्ष्मी के पक्षपात से इस समय ऐसा कहतेहो कुछ न्याय से नहीं ९७ इससे जाइये मृत्युलोक में तुमको दशबार जन्मलेना पड़ेगा व उनमें जो सब से बड़ा जन्महोगा उसमें भार्य्याके वियोग का बड़ाभारी दुःख सहना पड़ेगा ९८ जब परमक्रोधी भृगुजी नें निष्कारण ऐसाशाप श्रीभगवान् को दिया तो उन महात्मा ने भी भृगुजीको शाप दिया ९९ कि हे मुनिश्रेष्ठ ! आपको पुत्रसे कीहुई प्रीति नहीं प्राप्त होवे इसप्रकार ऋषिको शापदेकर भगवान् ब्रह्मा के लोक को चलेगये १०० और ब्रह्माजीको देखकर उनसे कहा कि अब हमको तुम्हारे पुत्र परमक्रोधी भृगु के शाप से मर्त्यलोक में दशअवतार लेनेपड़ेंगे १०१।१०२ उनमें भी जो सबसेबड़ा अवतार होगा उसमें भार्य्याके वियोगका बड़ाभारी दुःख सहना पड़ेगा इससे अब हम इसलोकको छोड़ जाय समुद्र के भीतर शयन करेंगे १०३ देवताओंके सब काजोंमें फिर हमारा आवाहन करना ऐसा कहतेहुये श्रीभगवान् विष्णुजीकी स्तुति ब्रह्माजी करने लगे कि इस संसारकी सृष्टि आपहीकी बनाई हुई है क्योंकि आपही की नाभिसे कमल जमता है हम उत्पन्न होतेहैं इससे हे केशव ! हम

तुम्हारे वशहैं १०४ । १०५ हे प्रभो ! सबलोकों के रक्षक आपही हैं व बनानेवाले भी जगत् के आपही हैं इससे आप इस त्रिलोकी को न छोड़ें यही हम वर मांगते हैं १०६ मर्त्यलोक में आप लोकोंके कल्याण की इच्छसेही दश जन्म लेंगे कोई भी आपको शाप नहीं दे सक्ता १०७ और हे जनार्दनजी ! यह भृगु कौनहोताहै इसे क्या सामर्थ्य जो आपको शाप देसके हां यह आपकी बड़ाई है जो ब्राह्मणों को मानते हो कि ब्राह्मण हमारेही शरीर हैं १०८ हे ईश्वर माधवजी ! इससे अच्छा तबतक क्षीरसागर में जाय अपनी योगनिद्रा को ग्रहण कर शयनकीजिये जब कोई विशेषकार्य्य होगा तो आपके शरण में निवेदन कियाजायगा १०९ हे भगवन् ! अभी तो आपही की शक्तिसे बढ़ाये हुये इन्द्र सब कार्य्य करते हैं क्योंकि आपही की कृपासे शत्रुओं को मारपाया है ११० इससे आपकी आज्ञाका पालन करते हुये तीनों लोकोंकी रक्षा करते हैं इसप्रकार जब ब्रह्माजीने स्तुति की तो विष्णु भगवान् बोले १११ कि हेप्रभो! अच्छा जैसा आपकहते हैं वैसाही सब करेंगे इतना कह श्रीभगवान् तो अन्तर्द्धान होगये ब्रह्माजीने उनके अन्तर्द्धान होनेको नहीं जाना और उनके चलेजानेपर फिर लोकोंके पितामह और उत्पत्ति करनेवाले प्रभु ब्रह्माजी विचारपूर्व्वक सृष्टि करनेलगे ११२ । ११३ उस सृष्टिको देख वाक्य जाननेवालों में श्रेष्ठ नारदजी बोले कि आप सहस्रशीर्ष पुरुष हैं सहस्रही आपके नेत्र सहस्रही चरणहैं सर्व्व व्यापी भी आपही हैं व आप सबके अन्तःकरण में दश अंगुलकी मूर्त्ति धारणकिये स्थित रहते हैं ११४ जो कुछ होचुका है जो होनेवालाहै सब आपहीहैं क्योंकि यह विश्व आपहीसे उत्पन्न हुआहै फिर आपहीसे होताभी रहेगा ११५ यज्ञ तुम्हींसे सब हवनकी वस्तु, पृषत, घी, दोप्रकारके पशु, ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्नहुये व तुम्हींसे घोड़े, हाथी, गाय, बैलभी उत्पन्न हुये व तुम्हींसे भेड़, मृग ११६ । ११७ तुम्हारे मुखसे ब्राह्मण उत्पन्न हुये तुम्हारे बाहोंसे क्षत्रिय ऊरुओंसे वैश्य चरणोंसे शूद्र उत्पन्नहुये ११८ व तुम्हारे नेत्रोंसे सूर्य्य कानोंसे पवन मन से चन्द्रमा अन्तःकरणसे प्राण व मुखसे अग्नि उत्पन्न हुये ११९

नाभिसे अन्तरिक्ष शिरसे आकाश कानोंसे दिशा चरणों से पृथ्वी उत्पन्नहुई इससे सब जगत् की रचना आपहीसे है १२० जैसे एक छोटेसे बीजसे बड़ाभारी बरगदका वृक्ष उत्पन्न होताहै ऐसेही बीजरूपी आपसे यह सब विश्व बनता है १२१ जैसे बीजांकुर से उत्पन्न बरगद का वृक्ष स्थित रहता है व फिर विस्तारको प्राप्त होताहै ऐसेही तुमसे उत्पन्नहो यह जगत् विस्तृत होरहाहै १२२ जैसे केलेकी नसोंमेंही उसके बकले पत्ते दिखाई देतेहैं ऐसेही इस विश्वकी नाड़ीरूप आपहैं व जगत् सब बकले पत्तोंके समानहै १२३ सब विश्वको आह्लादित करने व उत्पन्न कराने की शक्ति आपमें है परन्तु आह्लादताप दोनोंकी मिलीहुई शक्ति गुणवर्ज्जित आप में नहीं है १२४ सब विश्व से अलग सबमें व्याप्त सब प्राणियों के आत्मा बहुत से प्राणियों के उत्पन्न करनेवाले व सब भूतों के आत्मा आपको नमस्कारहै सर्व्वकारण प्रधान पुरुष विराट् सम्राट् आपहीहो क्योंकि सब प्राणियोंमें आप टिके हैं व आपमें सब प्राणी इससे सब स्वरूपधारी आपहैं जिससे सब तुम्हींसे है इससे तुम सर्व्वात्मक कहातेहो १२५।१२६ व सब प्राणियों के ईश्वरहो आप के नमस्कार करतेहैं फिर आप सबके हृदयकी बात जानते हैं इस से आपसे हम क्या कहें जो हमारा मनोरथ था उसे आपने सफल किया हमारी सब तपस्या सफल हुई जिस्से कि आपके दर्शन हुये १२७। १२८ नारदजी की इतनी स्तुति सुन ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र! यह तपस्याही का फलहै जो हमारे दर्शन तुमको इस समय में हुये हे नारद! हमारा दर्शन इस संसार में विफल नहीं होता १२९ इससे जो तुमको अभीष्टहो वर मांगो क्योंकि जिसको हमारे दर्शन होते हैं वह सबकुछ पाताहै १३० ब्रह्माजीके ऐसे वचन सुन नारदजी बोले कि हे भगवन्! हे सब प्राणियों के ईश! हे स्वामिन्! आप सबके हृदय में टिके रहते हैं इससे जो हमारे मनका वांछित है वह क्या आप नहीं जानते कहने की कौन आवश्यकताहै १३१ हे विभो! जैसी सृष्टि आपने की हमने सब देखी आपके बनायेहुये देवता दानवादिकों को देखकर हमको बड़ाकौतुक हुआ १३२

पुलस्त्यजी भीष्मजीसे बोले कि नारदके पिता सब स्वर्गों केस्वामी ब्रह्माजी ने प्रसन्नहो उन्हें यह वर दिया कि आप सब ऋषियों में उत्तम हैं १३३ हमारे प्रसाद से तुमको कलियुग के खेलकी कथा बहुत प्रिय लगेगी व स्वर्ग मर्त्य रसातलादि सब कहीं तुम्हारी पहुँच विना रोंकटोंक होगी जहां चाहोगे चले जाओगे १३४ हे पापरहित ! यज्ञोपवीत धारण करना कमलाक्ष की माला पहिनना छत्र शिरपर लगाना व वीणा धारण करना येही तुम्हारे भूषण हैं १३५ ऐसेतुम श्रीविष्णुभगवान् के समीप महादेवजीके निकट इन्द्रके उपान्त्य सब द्वीपोंके प्रत्येक महाराजाधिराजों के पास जाने में सदा प्रसन्नता से रहोगे १३६ ॥

चौ० ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यशूद्रगण । सबनसिखावनदेहुशास्त्रभण ॥
यहवरदीन तुम्हें हमताता । विचरहुसदादीनसुखदाता १ ।
जबलगचहहुदेवगणसेवित । बसहुस्वर्गमहँमुदितअभेदित ॥
जबजहँचहहुतबहिंतहँजाहू । देहुजननकहँअद्भुतलाहू २।१३७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेलक्ष्मीसमुत्पत्तिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

दो० दक्षयज्ञअरुहतिसती मरणउमेशविलाप ॥
उमाजन्महिमगिरिसदन पँचयेंमाहिंअलाप १

लक्ष्मीजीके जन्मकी कथा सुन भीष्मजीने पुलस्त्यजीसे पूँछा कि दक्षकी कन्या कल्याण कारिणी सतीजीने कैसे शरीर त्याग किया व दक्षका यज्ञ महादेवजी ने किसहेतु विध्वंस किया १ हे ब्रह्मन्! यह हमको बड़ाआश्चर्य लगताहै कि महायशस्वी देवमहेश्वर त्रिपुरारि जी कैसे क्रोधके वशीभूतहुये २ पुलस्त्यजी बोले कि हे भीष्म! बहुत दिनहुये कि हरिद्वारमें गङ्गाजीके तीरपर दक्षप्रजापतिने यज्ञका आरम्भकिया उसमें देवता,दैत्य समूह,पितर व महर्षि ३ सब आनन्दयुक्त आये उनमें इन्द्रादि सब देवगण नाग,यक्ष,गरुड़,वृक्ष,औषधियां सब आये ४ कश्यप,भगवान् अत्रि,पुलस्त्य,पुलह, क्रतु,प्रचेता,अङ्गिरा व

महातपस्वी वसिष्ठजी ये भी सब आये ५ फिर वहां चातुर्होत्रके विधान से वेदी समान बनाईगई उसयज्ञमें वसिष्ठजी तो होताहुये अङ्गिरा अध्वर्य्यु ६ बृहस्पतिजी उद्गाता व नारदजी ब्रह्माहुये जब यज्ञकर्म्म होनेलगे अग्नियोंका आवाहनहुआ ७ आठ वसुआये बारह आदित्य दो अश्विनीकुमार पवन चौदह मनु आये ८ जब इसरीतिसे यज्ञ होनेलगा अग्नियों में आहुतियां पड़नेलगीं नानाप्रकार के भोजन करने के उत्तम उत्तम पदार्थों की सामग्री इकट्ठीहुई ९ एकवेदी और चालीस कोसकी लम्बी चौड़ी बनाईगई जिसे बहुत लोगोंने बड़ी २ युक्तियों से बनायाथा १० उसपर इन्द्रादि देवताओं को बैठेहुये अपने २ भागग्रहण करतेहुये देख दक्षजी की कन्या व महादेवजी की स्त्री सतीजी अपने पिता से विनय पूर्व्वक वचन बोलीं-११ ऐरावत गजराज पर आरूढ़ इन्द्रजी अपनी अतिरूपवती इन्द्राणी जिन का शची भी नामहै उनसहित आपके यज्ञमें आय विराजते हैं १२ जो सब अधर्म्मों के नाश करनेवाले व सब धर्म्मों के स्वामी धर्म्मराजहैं वही पापियों के लिये यमराजहैं वे भी अपनी ऊर्णानाम स्त्री समेत तुम्हारे यज्ञमें आय विराजमान हैं १३ सब जल जन्तुओं के स्वामी सब जगत्‌केप्रिय वरुणजी अपनी गौरीनामपत्नी समेतआय इसयज्ञ में शोभित होरहेहैं १४ विश्रवामुनिके पुत्र सबयक्षों के स्वामी कुबेरजी अपनी भार्य्या समेतआय देदीप्यमान होरहे हैं १५ सब देवताओं के मुख, प्राणियों के पेटमें स्थित और जिनके लिये वेद उत्पन्न हुये हैं सो अह यज्ञमें प्राप्त हैं १६ राक्षसों में श्रेष्ठ, दिशाओं के पति, निर्ऋति भी स्त्रीसमेत हे पिताजी ! इसयज्ञमें आये हैं १७ जो कि इसजगत् में सबकी आयुर्दायकेलिये ब्रह्माजी से बनाये गयेहैं प्राण उदान समान अपान व्यानके नामसे प्रसिद्धहैं १८ व ४९ गणोंसहित सदारहते हैं सब प्रजाओंकेपति वायु देवता आये विराजते हैं १९ जिनकी द्वादश मूर्त्तियां हैं सबग्रहोंके अधिपति संसार भरके नेत्र सबभुवन सब देवताओं के परायण २० आयुर्बल वन व दिनोंकेपति लोकके पवित्र करनेवाले भास्करजी अपनी सञ्ज्ञानाम पत्नीसमेत विराजमान हैं २१ अत्रिजी के वंशमें उत्पन्न सबके नेत्रों

के आनन्द देनेवाले पृथ्वीपर जो लोकनाथ कहाते सब औषधियों व ब्राह्मणों के राजा महायशस्वी चन्द्रमा रोहिण्यादि अपनी २७ स्त्रियों समेत आय शोभित होते हैं २२। २३ आठोंवसु और अश्विनीकुमार भी आये हैं वृक्ष, वनस्पति सब गन्धर्व्व अप्सराओं के गण २४ विद्याधर भूत प्रेत पिशाच बेताल यक्ष राक्षस ये सब महाउग्रकर्म्म करनेवाले ऐसेही और २ जीवोंके हरनेवाले लोग २५ सबनदियां नद समुद्र द्वीप पर्व्वत ग्रामके रहनेवाले पशु वनके रहनेवाले मृगगण व और भी जो चलनेवाले जो नहीं चलसक्ते येसब तुम्हारे यज्ञमें आये हैं २६ कश्यप भगवान् अत्रि व अपने सब शिष्यों सहित वसिष्ठजी पुलस्त्य पुलह सनकादि महर्षि २७ पृथ्वीमण्डल पर जितने पुण्यात्माराजा व राजर्षि हैं सब के सब सबवर्ण सब आश्रम अपने २ कर्म्म करने में तत्पर यहां आयेहैं २८ बहुत हमारे कहने से क्या है जितनी ब्रह्माकी बनाई सृष्टि है सब आपके यहां आई है हमारी ये सब बहिनें उनकेपुत्र व सब उनकेपति आये हैं २९ अपनी २ भार्य्या पुत्र बान्धवसमेत ये सब हैं तुमने दान मानादि से सबका पूजन शिष्टाचारादि सब किया ३० जो तुम्हारे न्योतेपर आये वा ऐसेही विना न्योतेआये सबोंकामान आपने अच्छेप्रकार किया बस इसमें एक हमारे पति भगवान् महादेव जीही नहींआये ३१ जिनके विना यह तुम्हारी सभा हमको शून्य-ही जान पड़ती है इससे हम जानती हैं कि आपने हमारे पतिका निमन्त्रण नहीं किया ३२ निश्चय है कि उनको आप भूलगये हैं इससे इसका सब कारण हमसे कहिये कि क्यों उनका निमन्त्र-ण नहीं क्रिया पुलस्त्यजी भीष्मजी से बोले कि सतीजी के ऐसे व-चन सुन सब प्रजाओं के स्वामी दक्षजी ३३ अपने पतिके स्नेहमें परायण प्राणों से भी अधिक प्रिय साध्वी पतिमें परायण, पतिव्रता, महाभाग्यवती, पतिकाप्रिय चाहनेवाली, ऐसी अपनी कन्याको गोद में बैठाय बोले कि जिसकारण से तुम्हारे पतिका निमन्त्रण हमने नहीं किया सुनो एक तो वे मनुष्यकी खोपड़ीही को पात्र बनाये लिये रहतेहैं गजचर्म्म ओढ़ते चिता की भस्म लगाते ३४।३५।३६ त्रि-

शूलधारण करते, मुण्डालिये रहते, नङ्गेसदा रहते श्मशानभूमि में निवासकरते, अङ्गों में नित्यही विभूति लगाते कि कोई भी अङ्ग बाकी नहीं रखते ३७ व्याघ्रका चर्म्म ओढ़तेही हैं हाथी का भी चर्म्म ओढ़ते हैं कपालोंकी माला तो गले में धारण कियेही रहते हाथ में एक मनुष्यकी मांजर विना मांसकी लियेरहतें हैं ३८ एक कन्था ऊपरसे और ओढ़ेरहते जिसमें धद्धाकारअग्नि प्रज्वलितरहता सर्प को लँगोटबनाय अपना लिंग आच्छादित करते सर्पोंके राजा वासुकिजीको ही यज्ञोपवीत बनाये रहते ३९ फिर ऐसारूप अमङ्गल बनाये पृथ्वीपर घूमाकरते हैं यहभी नहीं कि कहीं छिपकर बैठें फिर आपतो ऐसे सङ्ग हजारों भूत प्रेत पिशाच डाकिनी ब्रह्मराक्षसादि भी सब नङ्ग धड़ङ्ग ४० व त्रिशूल धारणकिये तीन नेत्रधारी सदा गाते ही नाचते रहते ऐसेही और भी सब खराबही वेष तुम्हारे पतिजी किये रहते हैं ४१ उनको देखकर हमको लज्जा होतीहै कि लोग कहेंगे इनके ऐसेही दामाद हैं फिर वे यहां सबदेवताओं के निकट कैसे बैठसक्के हैं इस प्रकार का वेष बनाये वे किसी ऐसे स्थानपर बैठने के योग्य कब हैं ४२ हे वत्से! इन्हीं सब दोषोंके कारण व सब लोगोंकी लज्जासे तुम्हारे पतिको निमंत्रण नहीं दिया ४३ जब यज्ञ होजायगा तो तुम्हारे पतिको यहां बुलाय तुमको उनको एक सङ्ग बैठाय बड़ीभारी पूजाकरेंगे ४४ जैसी कि त्रिलोकी में न किसी ने उनकी पूजा की होगी न कोई करेगा यह हमने अपनी लज्जा का कारण सब तुमसे वर्णन किया ४५ इससे अब इस विषय में तुमको क्रोध न करना चाहिये क्योंकि तुम व तुम्हारे पति तो यहां जो कुछ है सब पदार्थों के योग्य हैं सब उन्हीं का है हे पुत्रि! अन्य जन्म में जो जैसा भला बुरा कर्म्म करता है ४६ उसका फल वैसाही वह इस जन्ममें भोगता है इससे अबतुम परिताप न करो पूर्व्वजन्म में जैसा कर्म्म किया है उसका फल भोगो ४७ तुम जो लक्ष्मीजी के रूप सौभाग्य सुन्दरता को देख शोचती हो तो उन्होंने वैसेही कर्म्म किये थे तुमने ऐसेही कियेथे क्योंकि रूप, कान्ति, सौभाग्य, सुन्दर भूषण, ४८ उत्तमकुल में जन्म, अतिसुन्दर शरीर, बड़ीआयुर्दाय ये

सब पदार्थ मनुष्योंको पूर्व्वजन्मके भाग्यकेही अनुसार मिलते हैं ४९ इससे हे सुव्रते! न तुम अपनीनिन्दाकरो न अपने भाग्य की यह सब फल भाग्यही का कियाहै और कौन किसको देसक्ताहै ५० नतो कोई इस संसार में बलवान् है न कोई मूढ़ न पण्डित पाण्डित्य व बल दोनों पूर्व्वजन्मके कर्म्महीं से होते हैं ५१ इन सब देवताओं ने स्वर्ग अपने २ भाग्योंसेही पाया है पूर्व्वसमय में विविधप्रकार के तीर्थों में जिसने जो पुण्यकर्म्म किया उसने उसका फल पाया है अपना२ सब भोगते हैं हे भीष्म! जब इस प्रकार सतीजी से उनके पिता ने कहा ५२ । ५३ तो मारे कोपके लालनेत्र कर पिता की निन्दाकरती हुई वे बोलीं कि हे तात ! जैसा तुमने हमसे कहा यह ऐसाही है ५४ सब पुण्यभागी जन पुण्यही से लक्ष्मी को पाताहै और पुण्यही से अच्छेकुल में जन्म होताहै पुण्यही में सब भोगटिके हैं ५५ परन्तु ये महादेवजी उत्तमों में उत्तम और सब जगतों के स्वामी हैं व इन सब देवताओं को इन्हीं बुद्धिमान्ने ये सब स्थान दिये हैं ५६ तिन देव परमेष्ठी शिवजी में जो २ गुण हैं उनके कहनेको ब्रह्माकी जिह्वा भी समर्त्थ नहीं है ५७ उनको तुमने कहा कि श्मशान में रहते हाड़ और भस्म धारण करते खोपड़ियोंकी माला पहिनते सर्प्पोंके भूषण पहिनते ५८ भूत प्रेत पिशाच और गुह्यकों के सङ्ग घूमते वे सब स्थानों के पति हैं यही सबका पालनकरते यही सबको उत्पन्न करते हैं ५९ रुद्रही के प्रसाद से इन्द्रने स्वर्ग पायाहै यदि रुद्रमें देवत्व है व यदि शिव सबमें प्राप्तहैं ६० तो इस सत्यसे शङ्कर तुम्हारे यज्ञ का विध्वंसकरावें जो हमारा कुछ तप हो वा कुछ धर्म्म हमने कियाहो ६१ उस धर्म्म के फल से तुम्हारे यज्ञ का नाशहो जो हम देव महादेव की प्रियाहों जो हमको वे तारेंगे ६२ तो उस सत्य से तुम्हारा अहङ्कार समाप्तहो इतना कह योगाभ्यासकर अपने शरीर से अग्नि उत्पन्नकर ६३ देहको भस्म करतीहुई सब देवता, असुर, सर्प, गन्धर्व्व, गुह्यकों के ऐसा कहतेही कहते कि यह क्याहै यह क्या है ६४ मारे क्रोध के सतीजीने गङ्गा के तीर पर अपना शरीर छोड़ दिया गङ्गाजी के पश्चिम के किनारे पर वह तीर्थ सौनक के

नाम से प्रसिद्ध होगया ६५ अपनी पत्नीका नाश सुन रुद्रभगवान् ने बड़े दुःखित होकर सब देवताओं के देखतेही देखते यज्ञ विध्वंस करने की इच्छा की ६६ इससे कोटियों भूत प्रेत पिशाच ग्रह यक्षादिकों को दक्षयज्ञ विध्वंस करने की आज्ञा दी ६७ उन्होंने जाय सब देवताओं को जीत यज्ञ को विध्वंस करडाला जब यज्ञ हत होगया तो दक्ष निरुद्यम व उत्साह रहित होगये ६८ व देवदेव महादेव जीके समीपजाय बोले कि हे देव ! हमने सब देवताओंके प्रभु ईश्वर आपको नहीं जानपाया ६९ तुम इस जगत् के स्वामीहो क्योंकि तुमने सब देवताओं को जीतलिया अब महेशान कृपा कीजिये व अपने सब गणों को लौटारिये ७० आपके नानाप्रकारके भयानक गण अनेकप्रकार के भूषणों से भूषित नानाप्रकार के मुख दांत ओष्ठों से युक्त नानाप्रकारके आयुध लिये ७१ नानाप्रकार के सर्प्प जटाओं में लटकाये अत्यन्त दर्प युक्त अतिघोररूप दया रहित ७२ कामरूप अकान्त सब कामोंसे युक्त अनिर्व्वार्य्य बलवाले उग्र बड़े २ योगियोंसे भी योगी ७३ बड़े चञ्चल, सिंहके समान गर्ज्जते हुये कन्धेपर केश रखाये डाढ़ों से उत्कट हँसते हुए मुखवाले, मानों सिंहही बनेहुये ७४ कोई हाथियों को घटा के समान मन्द २ झूमते झामते चलतेहुये सिंहों के आकार बनाये किसी २ के बड़े हाथी के समान सूँड़ लगी हुई चित्र विचित्र वस्त्रधारण किये बड़े भयङ्कर स्वरूप अतिघोर शब्द करते हुये ७५ मृग व्याघ्र सिंहों के समान शब्द करतेहुये राक्षसों के समान दौड़तेहुये सब के सब श्वेत सर्प्पों के यज्ञोपवीत धारण किये ७६ शूल, खड्ग, पटा, फरशा, प्रास आयुध हाथों में लिये पीलेरंगवाले वज्र, आरा, धनुष, कालदण्ड अस्त्र हाथों में लिये ७७ आपके गणोंसे हमारा यज्ञ इसप्रकार पूर्णहोगया जैसे ग्रहों से सूर्य पूर्ण होजाताहै हे देव देव महादेव ! यज्ञ तो नष्ट होकर स्वर्ग को चलागया ७८ व मृगरूप धारण किये इधर उधर भयसे डराहुआ फिरता रहताहै स्वर्ग में भी उसके लिये स्थान नहीं है ॥
चौ० सोमदेवगणसहित तुम्हारे । नन्दिसगणयुत तिन्हें पिआरे ॥
वृषारूढ़ वर शूल विधारी । नमो नमो हम करत पुकारी १ ।

चर्म्मधारिअरुवसनदिगन्ता। तीव्र तेज यश तव भगवन्ता ॥
ब्रह्म देह द्विज ब्रह्मस्वरूपा । नमो नमस्तव करत अनूपा २ ।
अन्धक नाशन यज्ञसँहारी । रुद्र वज्रतनु हर त्रिपुरारी ॥
कथनकशिवभवतुम्हेंनमामी । मोहिंजानियेनिजअनुगामी ३ ।
ईश गणेश महेश गिरीशा । धूम्र विरूप उग्र जगदीशा ॥
दिव्य वसन माला परधारी । नमःकरत हम मति अनुसारी ४ ।
सुरासुराधिप यतिप तुम्हारे । चण्ड मुण्ड मारण तनुधारे ॥
वरखट्वाङ्ग लिये कर माहीं । तुम्हें नमामि नमामि सदाहीं ५ ।
शुभलोचन विरूपनयनाहू । सहस नेत्र त्र्यम्बक वरदाहू ॥
धन्वी ईश कपर्द्दि तुम्हारे । करत प्रणाम हरहु दुख भारे ६ ।
दर्प्पाहत दनुजेन्द्र विदारी । शिव मृड भक्तानुग्रहकारी ॥
रुद्रजाप प्रिय विश्व संहारी । कृपाकरहु म्वहिं दीन विचारी ७ ।
भूप स्वरूप विरूप सुरूपा । पञ्चानन शुभ वदन निरूपा ॥
चन्द्रभालशिरमालविशाला । कृपा करहु अब दीनदयाला ८ ।
वरद वराह कूर्म्म मृगरूपा । लीलालक शिखण्ड अनुरूपा ॥
करमहँसुखद कमण्डलुधारी । तुम्हें न मोहरु विपति हमारी९ ।
विश्वनाथ विश्वेश त्रिनेत्रा । त्रिपुर घाति लीन्हें करवेत्रा ॥
करहुमहेश्वरकामहमारे । हमवहुकरतप्रणामतुम्हारे१०।७९।८७

जब इतनी स्तुति दक्षप्रजापतिने की तो भगवान् श्रीशङ्करअभयङ्कर भव्यङ्कर वरवचन बोले कि तुम्हारे इस दिव्यस्तोत्र से हम बहुत प्रसन्नहुये ८८ हे दक्ष! इससे पूरे यज्ञका फल तुम्हें हमने दिया तुम्हारे सब काम अर्थ सिद्ध होंगे व सब उत्तम फल पाओगे ८९ इसप्रकार महादेवजी से कहेगये दक्षप्रजापति महादेवजी के प्रणाम कर सबगणों के देखतेही देखते अपने स्थानको चलेगये ९० इसके पीछे अपनी पत्नी के शोकसे शिवजी हरिद्वार में आये व उन सतीजी की चिन्ता करने लगे कि हमारी प्राणप्यारी कहां को गई ९१ तब उस शोक में डूबेहुये शङ्करजी के समीप नारदमुनिने आय कहा कि जो प्राण के समान प्रिय तुम्हारी नारी सतीजी थीं ९२ वे अब हिमवान् पर्व्वतकी स्त्री मैना के गर्भमें से उत्पन्न हो हिमाचल की

कन्या होगई हैं इस से उन लोक वेदके अर्थ जाननेवाली ने दूसरा शरीर धारण कर लियाहै ९३ यह बात नारदजी के मुख से सुनकर महादेवजी ने भी ध्यान लगाकर देखा तो सत्य २ हिमवान् के गृह में उत्पन्न अपनी प्राणप्रियाको देखा तब अपनेको कृतकृत्यमान शिवजी स्थितहुये ९४ जब पार्वतीजी युवावस्थाको प्राप्तहुईं तो जाय शिवजीने फिर उनकेसाथ अपना विवाहकिया हे भीष्म ! जिसप्रकार दक्षकेयज्ञ का विध्वंस पूर्व्वकालमें हुआथा उसकी कथा हमने आपसेकही ९५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेदक्षयज्ञविध्वंसोनामपञ्चमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय ॥

दोहा कश्यप तेरह युवतिकी सन्तति छठयें माहिं ॥
वर्णितहै जासों अधिक सृष्टिकहींही नाहिं १

भीष्मजी ने इतनी कथा सुनकर फिर पुलस्त्यजी से पूँछा कि हे गुरूजी ! देवता, दानव, गन्धर्व्व, नाग, राक्षसों की उत्पत्ति आप विस्तार सहित कहिये १ पुलस्त्यजी बोले कि हे कौरव भीष्म ! सङ्कल्प करने, दर्शन करने व स्पर्श करनेही से पूर्ववालों की सृष्टिहोती थी जबसे दक्षप्रजापति हुये तबसे मैथुनी स्त्री पुरुष के संयोग से सृष्टि होनेलगी जिस रीतिसे ब्रह्माजीने प्रथम मानसी सृष्टिमें देवता ऋषिसमूह और सर्पादिकों को बनाया पर जैसे मैथुनी सृष्टि में प्रजा बढ़ी वैसी मानसी में नहीं उसका वृत्तान्त सुनिये दक्षप्रजापति ने असिक्नी नाम अपनी स्त्रीमें प्रथम दशहज़ार पुत्र उत्पन्न किये २।४ वे महाभाग जब विविध प्रकार की सृष्टि करने पर हुये तो हर्य्यश्वसञ्ज्ञक उन सब दक्षप्रजापति के पुत्रों से नारदजी ने कहा ५ कि हे श्रेष्ठऋषियो ! प्रथम तुमलोग इस पृथ्वीका प्रमाण नीचे ऊँचे चारों ओर का जान लो तो निश्चिन्तहो सृष्टि को करना ६ वे लोग नारदजी के ऐसे वचन सुनकर सब दिशाओं में पृथ्वीका प्रमाण जाननेके लिये चलेगये सो अबभी नहीं लौटे जैसे समुद्रमें जाय फिर नदियां लौटकर नहींआतीं ७ जब हर्य्यश्वसञ्ज्ञक दशसहस्रपुत्र इसप्रकार नष्ट होगये तो प्रभु दक्षप्रजापतिजी ने उसी अपनी स्त्री में जिसका

वीरिणी भी नामथा एकसहस्र पुत्र और उत्पन्न किये ८ इनका सब-
लाश्व नामथा ये भी जब इकट्ठे होकर सृष्टि करने पर उद्यत हुये तो
नारदजी ने आय इन्हें भी उपदेश किया कि तुमभी अपने भाइयों
कासा कर्म्म करो ९ सब पृथ्वी का प्रमाण जान आओ व अपने
भाइयोंकोभी बुलालाओ तो मिल झुलकर सबजने सृष्टि करना १०
ऐसा सुनकर वे भी उन्हीं अपने बड़े भाइयों के मार्ग्ग में चलेगये
इससे न लौटे तबसे कोईभी छोटेभाई बड़े भाइयों के मार्ग्गपर च-
लनेकी इच्छा नहीं करते ११ क्योंकि बड़े भाइयोंके ढूँढ़ने व उनके
मार्ग्गपर चलने से दुःख मिलता है इस से उस कर्म्म को न करना
चाहिये जब ये भी हजार पुत्र नष्टहोगये तो दक्षप्रजापति ने फिर
उसी अपनी वीरिणी स्त्री में साठकन्या उत्पन्न कीं उनको इसप्रकार
सबको दीं कि धर्म्मको दश कश्यप को तेरह १२ । १३ चन्द्रमाको
सत्ताईस अरिष्टनेमिको चार भृगुके पुत्रको दो बुद्धिमान् कृशा-
श्वको दो १४ अङ्गिराको दो इसप्रकार साठहुईं उनकेनाम विस्तार
सहित हमसे सुनो व उन देवताओं की माताओं की प्रजाभी आदि
से सुनो १५ अरुन्धती, वसु, जामि, लम्बा, भानु, मरुत्वती, सङ्कल्पा,
मुहूर्त्ता, साध्या, विश्वा ये दश धर्म्म की स्त्रियां हैं इनके पुत्रों के
नाम सुनिये विश्वाके पुत्र विश्वेदेव हैं साध्याने साध्यगणोंको उत्प-
न्न किया १६ । १७ मरुत्वती से सब मरुत्वान् अर्थात् पवन उत्पन्न
हुये वसु से आठ वसु भानुसे भानु उत्पन्न हुये मुहूर्त्ता से सब मुहूर्त्त
१८ लम्बा से घोषनाम देवगण उत्पन्न हुये जामि से नागवीथी
उत्पन्न हुई पृथ्वी के ऊपर का भाग अरुन्धती से उत्पन्न हुआ १९
सङ्कल्पा से सब सङ्कल्प हुये अब वसुकी सृष्टि कहतेहैं सुनो जो देव-
गण बड़े प्रकाशित हैं व सबकहीं व्याप्त रहते हैं २० वे वसु कहाते
हैं उनके नाम हम से सुनो आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल,
२१ प्रत्यूष, प्रभास ये आठ वसु कहाते हैं आपके चार ये पुत्रहुये
श्रान्त, वैतण्ड २२ शान्त मुनि, बभ्रु ये सब यज्ञकर्म्म के अधिकारी
हुये ध्रुवके पुत्र का कालनाम हुआ व सोम से वर्च्चा नाम पुत्र हुआ
२३ द्रविण, हव्यवाह ये दो धरके पुत्रहुये व एककल्पानाम कन्या

हुई उस से प्राण रमण शिशिर पुत्रहुये २४ व मनोहरा नाम कन्या उसके पतिका हरिनाम था उससे उसमें शिवानाम कन्या हुई शिवा के मनोजव व अविज्ञातगतिप्रद दो पुत्र हुये २५ अनलके अग्नि-प्रायगुणनाम पुत्रहुआ उसके शाख विशाख नाम पुत्रहुये व कृत्ति-कानाम एक कन्या कृत्तिका के जितने पुत्रहुये उन सबोंका कार्त्ति-केय नामहुआ प्रत्यूष के ऋभुनाम पुत्रहुआ इसीका मुनिभी नाम था इसके पुत्रका देवलनाम हुआ २६।२७ प्रभास के पुत्रका विश्वकर्मा नामहुआ जो कि देवताओं के शिल्पी कहाते हैं इससे देवताओं के घवरहर, वाटिका, प्रतिमा, भूषण २८ तड़ाग, फुलवाड़ी, कूपआदि सब बनाते हैं व उनके यहां बढ़ईका भी काम यही करते हैं अजे-कपाद्, अहिर्बुध्न, विरूपाक्ष, रैवत २९ हर, बहुरूप, त्र्यम्बक, सुरे-श्वर, जयन्त, पिनाकी और अपराजित ये धर्म्मकी सावित्रीनाम स्त्री में उत्पन्नहुये ३० गणों के स्वामी ग्यारह रुद्र कहाये इन श्रेष्ठ त्रिशूल धारण करनेवाले मानसीपुत्रों के ३१ नाशरहित चौरासी करोड़ पुत्रहुये जे गणोंके ईश्वर सब दिशाओं में रक्षा करतेहैं ३२ ये पुत्र और पौत्र निश्चय सुरभी के गर्भसे उत्पन्नहुयेहैं अब कश्य-पजीकी स्त्रियों से जो पुत्र पौत्रादि उत्पन्न हुये उनका वर्णन करते हैं ३३ अदिति, दिति, दनु, अरिष्टा, सुरसा, सुरभि, विनता, ताम्रा, क्रोधवशा, इरा ३४ कद्रू, मुनि, खसा ये १३ कश्यपजी की स्त्रियां हैं इनके पुत्रों के नाम हम से सुनो चाक्षुषमन्वन्तर में जो तुषितनाम देवता थे ३५ व वैवस्वतमन्वन्तर में जो बारह आदित्य कहाते हैं वे इन्द्र, धाता, भग, त्वष्टा, मित्र, वरुण, अर्यमा ३६ विवस्वान्, सवि-ता, पूषा, अंशुमान्, विष्णु ये सहस्रकिरण बारहों आदित्यहैं ३७ ये कश्यपजी मरीचि ब्रह्मपुत्र के पुत्रहैं कृशाश्वनाम ऋषि के पुत्रों को देवप्रहरण कहतेहैं ३८ ये देवगण प्रत्येकमन्वन्तरमें प्रत्येक कल्पमें उत्पन्न होतेहैं फिर नष्ट होजाते हैं ३९ कश्यप से दितिके दो पुत्र हुयेहैं यह हमने सुना है एक हिरण्यकशिपु दूसरा हिरण्याक्ष ४० हिरण्यकशिपु के चार पुत्रहुये प्रह्लाद, अनुह्लाद, संह्लाद व ह्लाद ४१ प्रह्लादके चार पुत्रहुये आयुष्मान्, शिबि, बाष्कलि, विरोचन विरो-

चनके पुत्रका बलिनाम हुआ ४२ बलिके सौ पुत्रहुये उनमें बाणासुर सबों में ज्येष्ठहुआ यों तो धृतराष्ट्र, सूर्य्य, विवस्वान्, तापन ४३ निकुम्भ नाम, गुर्व्वक्ष, कुक्षि, भौम, भीषण इत्यादि औरों के नाम थे पर उनमें बाणासुर ज्येष्ठ और गुणों से भी अधिक था ४४ बाणासुर के सहस्रबाहु हुये व वह सब शस्त्रास्त्रों के चलानेमें कुशल थे तपस्यासे शिवजी का ऐसा आराधन उसने किया वे उसके पुर में बसनेलगे थे ४५ वहांके बसेहुये महादेवजी महाकाल के नामसे प्रसिद्ध हुये हिरण्याक्ष के अन्धक नाम ४६ भूतसन्तापन; महानाग ये पुत्र हुये इनके पुत्र पौत्रादि सब इकट्ठे करने से सतहत्तर किरोड़ हुये ४७ सब महाबली महाकाय नानाप्रकार के रूपवाले महापराक्रमी हुये कश्यपजी से दनु नाम स्त्री में सौ पुत्रहुये ये सब वरपाय बड़े अहङ्कारी हुये ४८ इनमें महाबली होनेके कारण विप्रचित्ति प्रधान हुआ औरों के नाम ये हुये द्विरष्टमूर्द्धा, शकुनि, शंकु, शिरा, अधर ४९ अयोमुख, शम्बर, कपिल, वामन, मरीचि, मागध, हरि,गजशिरा ५० निद्राधर, केतु, केतुवीर्य, शतक्रतु, इन्द्र, मित्रग्रह, वज्रनाभ ५१ एकवस्त्र, महाबाहु, वज्राक्ष, तारक, असिलोमा, पुलोमा, विकुर्वाण, महासुर ५२ स्वर्भानु, वृषपर्व्वा इत्यादि दनु के पुत्रहुये स्वर्भानु की सुप्रभा कन्या पुलोमजा शचीहुई ५३ मयकी उपदानवी, मन्दोदरी और कुहूहुई वृषपर्व्वा के शर्म्मिष्ठा चन्द्रा दो कन्याहुईं ५४ पुलोमा कालका ये दो वह्नि नाम के कन्याहुईं इन दोनोंके महापराक्रमी बहुत सन्तानहुये इन दोनोंका विवाह मारीच नाम दैत्य के संग हुआ ५५ उससे इन दोनोंमें साठ हजार दानव उत्पन्न हुये जिनका पौलोम कालकंज नाम हुआ ५६ ये सब मनुष्यों से अवध्य थे हिरण्यपुर में बसते थे ये सब ब्रह्माजीसे वर पानेके कारण पृथ्वीपर सबको मारते फिरते थे ५७ विप्रचित्ति ने अपनी सिंहिका नाम स्त्री में नव पुत्र उत्पन्न किये जो कि हिरण्यकशिपु के भागिनेय कहाये क्योंकि यह सिंहिका हिरण्यकशिपु की बहिन थी व तेरह पुत्र और हुये ५८ जिनके नाम ये हैं कंस,शङ्ख, नल, वातापि, इल्वल, नमुचि, खसृम; अञ्जन ५९ नरक, कालनाभ, परमाण,

कल्पवीर्य्य, विख्यात ये सब दानवों के वंशके बढ़ानेवाले हुये ६०
संह्लाददैत्य के कुल में निवातकवच नाम दैत्य उत्पन्न हुये जो कि
देवता, गन्धर्व्व, नाग व राक्षसोंसे अवध्य थे ६१ इनको बड़ेबलसे
अर्जुनजी ने जाय समरमें माराहै कश्यपजी से ताम्रानाम स्त्रीमें ६
कन्या उत्पन्न हुईं ६२ उनके नाम ये हैं शुकी, श्येनी, भासी, सुगृध्री,
गृध्रिका, शुचि, शुकीका धर्म्म नाम पतिके साथ विवाह हुआ इस से
उससे शुक अर्थात् तोते व उल्लूनाम पक्षी उत्पन्नहुये ६३ श्येनीने
श्येन अर्थात् बाजनाम पक्षी उपजाये भासी में करांकुल उत्पन्नहुये
गृध्री गृध्रोंको, सुगृध्री कबूतर पक्षियों को ६४ और शुचि हंस, सारस
और बकोंको उत्पन्नहुये कश्यपकी स्त्री ताम्राका यह वंशहै अब उन्हीं
की विनतानाम पत्नीका वंश सुनो ६५ गरुड़ जो कि सब पक्षियों
में श्रेष्ठ और राजा कहलाते हैं व अरुण ये दो पुत्र व सौदामिनी
नाम कन्या जिसे आकाश में बिजुली कहते हैं ६६ अरुण के स-
म्पाति जटायु दो पुत्रहुये सम्पाति के दो पुत्रहुये एकका बभ्रु दूसरे
का शीघ्रग नाम हुआ ६७ जटायु के कर्णिकार व शतगामी बड़े
प्रसिद्ध दोपुत्रहुये इनसे असंख्य पुत्र पौत्र मिलकर हुये ६८ कश्यप
जीकी सुरसानाम स्त्रीमें सहस्रों सर्प्प उत्पन्न हुये उन सबोंके सहस्र
सहस्र शिरहैं व सुन्दरब्रत करनेवाली कद्रूनाम कश्यपकी स्त्री में भी
सहस्रों सर्प्प उत्पन्न हुयेहैं ६९ पर उन में प्रधान छब्बीसहैं उनके
नाम ये हैं शेष, वासुकि, कर्कोट, शङ्ख, ऐरावत, कम्बल ७० धन-
ञ्जय, महानील, पद्म, अश्वतर, तक्षक, एलापत्र, महापद्म, धृतराष्ट्र,
वलाहक ७१ शङ्खपाल, महाशङ्ख, पुष्पदंष्ट्र, शुभानन, शङ्खरोमा,
नहुष, रमण, पाणिन ७२ कपिल, दुर्म्मुख, पतञ्जलि इन सबों के
पुत्र पौत्रादि अनन्त हैं ७३ इन्हींमें से किरोड़ों को तो जनमेजय
राजाने अपने यज्ञमें जलादिया कश्यप की क्रोधवशा स्त्री ने अपने
नामके राक्षस उत्पन्नकिये ७४ उनमेंसे दशलक्ष भीमसेनने मारडाले
इनकी बड़ी २ डाढ़ेंथीं सुरभिनाम कश्यपकी श्रेष्ठ स्त्रीने दंष्ट्रि, सियार,
कौआ आदिक और गायें भैंसें कश्यपजी से उत्पन्न कीं मुनिनाम
स्त्रीने बहुत से मुनियों के गण उत्पन्न किये अरिष्टा ने अप्सरा कि-

न्नर, गन्धर्वों के गण उपजाये तृण, वृक्ष, लता छोटी झाड़ें आदि सब इरानाम स्त्री ने उपजाये ७५ । ७७ खसाने कोटियों यक्ष राक्षस उत्पन्न किये ये सब सैकड़ों सहस्रों कोटियोंकी कोटि कश्यपमुनिकी सन्ततियां हैं ये सब स्वारोचिषमन्वन्तर में उत्पन्न कियेगये हैं तदनन्तर कश्यपमुनिसे दितिनाम स्त्रीही में उनचास देवताओंके प्यारे पवन उत्पन्न हुये ७८ । ७९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

दो० सावित्रीव्रतविधिपवन जनिमन्वन्तरगाथ ॥
सतयेमहँप्रतिसर्ग्गसब वर्णनकियमुनिनाथ ॥ १ ॥

इतनी कथासुन भीष्मजी पुलस्त्यमुनिसे बोले कि दिति के पुत्र देवताओं के प्यारे ४९ पवन देवता कैसे होगये क्योंकि दिति के तो सब पुत्र दैत्यही हैं उनसे तो देवताओं से वैर रहता है फिर उत्तम मित्रता कैसे होगई जो वे देवताओं में मिलगये १ पुलस्त्य मुनि बोले कि पूर्व्व समय में जब देवासुर संग्राम हुआ था विष्णु भगवान् ने असुरोंको नाशकरडाला तब पुत्र पौत्रोंके शोकसे पीड़ित दैत्योंकी माता दितिजी स्वर्ग्गलोक से मर्त्यलोक में आई २ सरस्वती नदीके समीप पुष्करतीर्थ में अपने पति के आराधन में तत्पर होकर उग्र तपस्या करनेलगीं ३ सो इस रीतिसे कि फलाहार किया करें अन्न नहीं भोजन करतीं चान्द्रायण कृच्छ्रआदि बहुत से व्रत उन्होंने किये क्योंकि उनके सृष्टि करने की इच्छा थी ४ वृद्धावस्था और शोकसे व्याकुल होकर ऐसी तपस्या उन्होंने सौ वर्षसे कुछ अधिक वर्षोंतक की फिर वशिष्ठादि ऋषियों से पूंछा ५ कि आपलोग हमसे पुत्रशोक विनाशन कोई व्रत बतावें जिस से इस लोक में सौभाग्य भी हो व परलोक में भी सुख मिले ६ तब वशिष्ठादि मुनियों ने दिति से ज्येष्ठ की पूर्णमासी का व्रत बताया जिसके प्रसाद से दिति पुत्रशोकसे रहित होगईं ७ इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने पूँछा कि हे ब्रह्मन् ! हम ज्येष्ठ की पूर्णमासी का

व्रत सुनाचाहते हैं जिसके करने से दिति ने ४९ पुत्र पाये ८ पुलस्त्यजी बोले कि जो व्रत पूर्वकाल में वशिष्ठादिकों ने दिति से कहा है उसे हम से विस्तार सहित सुनो ९ ज्येष्ठमास के शुक्लपक्ष की पूर्णमासी को स्त्री जितेन्द्रिय होकर एक कलश अच्छा नया स्थापित करै उसमें सफेद चावल भरै १० फिर उसके ऊपर नाना प्रकारके फल ईखकी गड़ेरियां धरै व कलशमें सबओरसे श्वेतचन्दन लीपै ऊपरसे श्वेतवस्त्रसे आच्छादित करै ११ प्रथम उसीके भीतर नाना प्रकार की भक्षणकरने के योग्य और वस्तु व शक्तिके अनुसार कुछ सुवर्ण भी छोड़े उस वस्त्रसे आच्छादित फलादि से पूरित कलश के ऊपर ताम्र का एक पात्र धरै उसे गुड़ से भरै १२ उसके ऊपर कमल के पुष्प पर ब्रह्माजी की सुवर्ण की मूर्त्ति स्थापित करै उसी मूर्त्ति के वाम भागमें उनकी स्त्री सावित्रीजी को स्थापित करै इन दोनों मूर्त्तियों के आसपास शक्कर से पूर्ण करै १३ फिर दोनों मूर्त्तियों की पूजा गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अक्षतादि से करै तदनन्तर उनके आगे कुछ गावे बजावे व ब्रह्माजीकी कहीहुई इसी पद्मपुराण की कथा बांचै १४ ब्रह्माजी की शुभ प्रतिमा में अच्छी तरह गुड़ लगादे उसे शुक्लअक्षत तिल और पुष्पादिकों से पूजे १५ ब्रह्मणे नमः इस मन्त्र से चरणों की पूजा करै सौभाग्यदायनमः इस से फीलीकी पूजा करै विरिञ्चाय नमः इससे जांघोंकी मन्मथाय नमः इससे कमरकी १६ स्वच्छोदराय नमः इससे उदरकी अतंद्राय नमः इससे हृदय की पद्ममुखाय नमः इससे मुखकी वेदपाणये नमः इस से बाहों की १७ सर्व्वात्मनेनमः इससे शिरकी इस प्रकार पूजाकर प्रातःकाल वह कलश ब्राह्मणको देदे १८ फिर भक्तिसे ब्राह्मण को भोजन करावे पीछे आपभी भोजनकरै पर लवण न खाय फिर भक्ति से ब्राह्मण के प्रदक्षिणा करती हुई यह मन्त्र पढ़े १९ ॥

चौ० जो सबलोकपितामहअहई । होइ प्रसन्न सकलउररहई ॥
पूजालखिआनँदयुतहोई । यहैचहतहमतनिकनगोई ॥ २०

इस रीतिसे सब मासोंकी पूर्णमासियों में व्रतकरै उपवास करके ही नाशरहित ब्रह्माजी की मूर्त्तिकी पूजाकरै २१ व एक फल भोजन

कर रात्रिमें पृथ्वीही पर शयनकरै फिर जब ऐसा व्रत करते २ तेर-
हवां महीना आवे तो एक घृतधेनुसहित २२ सब सामग्री समेत
उत्तम शय्यादान ब्रह्माजीकी प्रसन्नताकेलिये उस ब्राह्मणकोदे जिसने
प्रतिमास पूजाकराई हो ब्रह्माजीकी मूर्त्ति सोनेकी सावित्रीजी की
चांदीकी बनावे दोनों मूर्त्तियां उसी एकही कमलदलपर स्थापित
रहेंगी जिस ब्राह्मणको यह सामग्री दीजाय वह स्त्री सहितहो इससे
उनदोनोंका स्त्री पुरुष दोनोंके वस्त्र भूषणोंसे भूषितकरे २३।२४ तब
इस कलश के सिवाय और भी अपनी शक्तिके अनुसार गऊआदिक
दे और यह कहे कि प्रसन्नहूजिये ब्रह्माजी के नामोंको उच्चारण करता
हुआ उज्ज्वल तिलों से होमकरै सो केवल तिलोंसेही नहीं बरन गाय
के दूधकी खीर व गायहीके घृतसे मिश्रितकरके होमकरै होमके अन्त
में और भी ब्राह्मणोंको धन पुष्पमालादि दे जैसी शक्तिहो २५।२६
इस विधिसे जो पुरुष व स्त्री इस व्रतको विधानसहित करै वह सब
पापों से छूट निरन्तर ब्रह्मको प्राप्त होजाय २७ इस लोक में श्रेष्ठ
पुत्र शुभ सौभाग्य को निश्चय पावे ब्रह्माजीकी मूर्त्ति ऐसी ध्यान
करनी चाहिये कि उसकी दहिनी ओर विष्णुभगवान् हैं बाईं ओर
महादेवजी ये तीनों यथेच्छरूपधारी सुख देवें यह ध्यान करनेवाला
विचारता रहै ऐसा सुनकर दितिजीने इस व्रतको आदरसे वर्ष दिन
तक किया २८। २९ तो प्रसन्न होकर कश्यपजी उनके पति उनके
गृह में आये तब दितिने अपनारूप सुन्दर बनाय भूषितकर बड़े
प्रेमसे कश्यपजी को प्रसन्न किया जिससे उन्होंने कहा कि वरदान
मांगो तब दितिने कहा कि हम ऐसा तेजस्वी समर्थ पुत्र आपसे
चाहती हैं जो इन्द्रको तो मारही डाले ३०। ३१ और समरमें कोई
देवता उसके सम्मुख न खड़े होसकें यह सुन कश्यपजी बोले कि
इन्द्रको मारनेवाला पुत्र तो हम तुम्हें देंगे पर हे शुभे! हे सुन्दरस्तन
वाली! तुमको हमारे कहनेके अनुसार नियम करने होंगे व इससमय
में आपस्तम्बीनाम पुत्रेष्टि यज्ञकरो ३२ । ३३ तब हम तुम्हारे
स्तनोंको स्पर्शकर भोग करके वैसा पुत्र उत्पन्न करेंगे वह हे देवि!
अवश्य इन्द्रको मारनेवाला होगा ३४ तब दितिने अधिक द्रव्य

खर्वकर आपस्तम्बी नाम पुत्रेष्टिकी कि इन्द्रका वैरी होवे ऐसा कह-
कर शीघ्रही हविका हवन किया ३५ तब देवता मोहित होगये और
राक्षस विमुख होगये कश्यपने उनमें गर्भधारण कराया उसके पीछे
कश्यपजी बोले ३६ कि तुम्हारा मुख तो चन्द्रमाके समान प्रका-
शित है स्तन बेलके फलके समान ओठ मूंगे के रङ्गके देहका सब
रङ्ग अतीवसुन्दर ३७ हे विशालनयने ! हे सुन्दरकटिवाली ! तुमको
देख हम अपने भी शरीरको उत्तम स्मरण करते हैं व तुम्हारे स्तनों
को स्पर्श कर यह गर्भ तुममें स्थापन करते हैं ३८ परन्तु तुम इस
गर्भ के धारण करने में बड़ा यत्न करना हे श्रेष्ठमुखवाली ! सौवर्ष
तक यह गर्भ तुम्हारे उदर में रहेगा तबतक तुम इसी तपोवन में
रहना ३९ जबतक पुत्र उत्पन्न न हो तबतक कभी सन्ध्यामें भोजन
न करना न वृक्षके नीचे बैठना न जाना ४० जहां मूसल व ओखरी
का संयोग हुआहो भूमि फिर झारी न गई हो वहां न बैठना
नदी तड़ागादि में पैठकर स्नान न करना जिस घरमें कोई रहता
न हो शून्यही पड़ाहो उसमें न शयन करना न जाना ४१ जहां
सर्प्पकी ब्यमोर व बामीहो वहां न बैठना कभी मन उदासीन न
करना न तो भूमिपर न अंगार और भस्ममें नख से लिखना ४२
शयन बहुत न करना न बहुत अंगिराय जंभोईलेना बलुही अंगार
भस्ममें उबटनलगा हाड़ खोपड़ी युक्त पृथ्वीपरन बैठना ४३ लोगों
से कलह न करना न किसी अंगमें उबटन लगाना शिरके बार कभी
खुले न रखना अपवित्र कभी किसी तरह न होना ४४ न कभी
उत्तरको शिर करके सोना न नीचेको शिर करके न कभी विना वस्त्र
पहिने सोना न ऊबती हुई न भीगेहुये चरणों सहित ४५ न अम-
ङ्गलयुक्त वचन बोलना न कभी अत्यन्त हँसना अपने से बड़े गुरु-
जनोंकी पूजा मंगल वस्तुओं से सदा करती रहना ४६ सब औषधि
मिलेहुये जलसे स्नान करना शयनके समय गरुड़ मन्त्रादिकों से
रक्षाकरके सोना वचन कभी कड़े न बोलना ४७ सदा प्रसन्नमुखी
पतिके प्रियकल्याण में तत्पर रहना चाहे वह कैसाही दुष्ट प्रकृति
दुराचारी आदिहो पर पतिका निरादर कभी न करना ४८ हमको

तुमने बहुत कृश दुर्बल वृद्ध स्तनगिरी हुई मुखपर सिकुड़े पड़ी हुई करडाला ४९ ऐसे वचन पतिसे कभी न कहना बस तुम्हारा कल्याण हो हम जाते हैं ऐसा कहकर ५० सब प्राणियों के देखतेही देखते कश्यपजी वहीं अन्तर्द्धान होगये व पतिके वचन के अनुसार दिति रहनेलगीं ५१ इस बातको जानकर भयभीतहो इन्द्र भी दिति अपनी सौतेली माता व मौसी के पास आय रहनेलगे देवलोक छोड़ उनकी सेवा करतेहुये वहीं रहते ५२ दितिके व्रतमें छिद्र निहारते कि नियम में कुछ जैसेही अन्तर पड़े विघ्न कियाजाय भयभीत होने के कारण मनमें तो व्याकुल रहते पर ऊपर से बहुत प्रसन्न मुख रहते ५३ इससे दितिने उनके वृत्त न जाना समझा कि हमारी सेवाही करने को आये हैं इसरीति से व्रत नियम करते २ दितिके सौवर्ष पूरेहोगये केवल तीनदिन बाकी रहे ५४ तब वे अपने को कृतार्थ मानकर मारे प्रीति के विस्मित होगईं विना पाद धोयेहीहुई बालखोलेही दिनमेंही लेटगईं व निद्रा के वशीभूत होगईं तब यह व्रतमें अन्तर देख इन्द्रजी ने योगाभ्यास से अपना छोटारूप बनाकर दितिके गर्भ में जाकर ५५ । ५६ उस गर्भके वज्रसे सातखण्ड करडाले तब वे सात लड़के होगये सबकातेज सूर्य के समान था ५७ रोदन करनेलगे इन्द्रने रोंका रोदन मतकरो तो भी वे रोदन करतेहीरहे तब इन्द्रजी ने वज्रसे उन सातों के सात २ खण्ड करडाले ये सब माताके पेटही के भीतर अभीतकथे इसप्रकार वे सब उनचास होगये व फिर भी रोतेहीरहे ५८ । ५९ तो इन्द्रने कहा कि अब बार २ तुमलोग रोदन न करो तब वे चुप होगये इन्द्र ने चिन्तना की कि एक गर्भ के हमने सातकिये तब ये न मरे फिर उनके सात २ किये उनचास हुये तब भी न मरे ६० यह किस कर्म्म का माहात्म्यहै जो फिर जीगयेहैं फिर विचारा कि इस हमारी मौसी ने व्रत नियमादि पुण्यकिया है व ब्रह्माजी की पूजा की है उसी का प्रभाव है इसमें अन्तर नहीं इसीसे वज्रके लगने परभी न मरे ६१ । ६२ बरन एकके अनेक होगये इस उदरकी अवश्यही बड़ी भारी रक्षाहै इनके और भी खण्ड करें तो भी ये न मरेंगे तो अवध्य

ठहरे इससे अब ये देवताहों ६३ जिससे कि रोदन करते हुये इन को हमने कहा कि (मारुद) न रोदन करो इससे ये मारुत नाम सुखके भागी देवताहों ६४ ऐसा कह इन्द्रतो बाहर आये वे उन-चास पुत्र भी बाहर आये दिति ने कारण पूँछा उनके प्रणाम कर प्रसन्नकर कारण कहा कि अर्थशास्त्र के अनुसार यह दुष्कर्म्म हम नेही कियाहै अब आप क्षमा कीजिये ऐसाकह उन उन्चाशों और दिति को विमानपर चढ़ाकर देवताओं के समानकर इन्द्र स्वर्ग्गको चलेगये ६५।६६ तब से वे उनचास पवन होगये अब जैसे सब देव-गण यज्ञ के भाग भोगते हैं वैसेही ये पवनभी भोगते हैं इसीसे वे असुरों की ओर न गये देवताओंकेही प्रिय होगये ६७ इतनी कथा सुन भीष्मजीने पूँछा कि हे ब्रह्मन् ! तुमने आदि सृष्टि तो हम से विस्तारसे कही जिसे आदिसर्ग्ग भी कहते हैं अब जिसका जो प्रतिसर्ग्गहो वहभी हमसे कहिये कि जाति २ में किनका राजा कौन हुआ ६८ पुलस्त्यजी बोले कि जब पृथ्वी जलपर स्थापित हुई राजा मनु राज्य करने लगे जिनकाही नाम महाराजाधिराज पृथुहै जो कि समस्त पृथ्वी मण्डल के राजा किये गये तब सब औषधि यज्ञ व्रत करनेवाले ब्राह्मणों के राजा चन्द्रमा बनायेगये ६९ व नक्षत्र तारा द्विज वृक्ष गुल्म लता वितानादिकोंकेभी राजा चन्द्र ही कियेगये सब जलोंके राजा वरुण सब धन सब राजाओंके राजा कुबेरजी कियेगये ७० बारह सूर्य्यों के राजा विष्णुनाम सूर्य्य किये गये सब वसुओं व सब लोकों के राजा अग्नि बनाये गये सब प्रजा-पतियों के स्वामी दक्षप्रजापतिहुये व सब देवताओं के स्वामी इन्द्र किये गये ७१ सब दैत्यों दानवोंके प्रह्लादजी अधिप हुये पितरों के यमराज, पिशाच, भूत, यक्ष, पशु, राक्षस, बेतालोंके राजा महादेवजी किये गये ७२ सब पर्व्वतों के राजा हिमाचल सब नदियों के राजा समुद्र, गन्धर्व्व, विद्याधर, किन्नरों के राजा चित्ररथनाम गन्धर्व्व कियेगये ७३ नागोंके अधिप उग्रवीर्य्य वासुकिनाग कियेगये व सर्पों के तक्षक सब दिग्गजों का राजा ऐरावत नाम दिग्गज किया गया ७४ सब पक्षियों के राजा गरुड़ व सब घोड़ोंका स्वामी उच्चैःश्रवा

सब मृगोंका राजा सिंह गाय बैलोंका नन्दीश्वर व सब वनस्पतियोंके भी राजा फिर अग्निजी कियेगये ७५ इन सबोंको इन पदार्थोंके राजा ब्रह्माजीनेही नियत कियाथा व पूर्व्वदिशाके दिक्पाल शत्रुओं के मारनेमें बड़ेप्रबल सुधर्माको बनाया ७६ दक्षिणदिशाके दिक्पाल शङ्खपदनाम को नियत किया पश्चिम दिशा के दिक्पाल केतुमान् को बनाया ७७ उत्तर दिशाका स्वामी हिरण्यरोमाको नियत किया प्रजापति मेघसुतको किया ये सब दिक्पाल अपनी २ दिशाकी रक्षा करते हुये अबभी रहतेहैं ७८ और पृथ्वी की चारों दिशाओंके राजा पृथुहीनियत किये गये जब सब मन्वन्तर हुये तो उनमें वही पृथु वैवस्वतमन्वन्तर में भी अगले वैवस्वतके नामसे प्रसिद्ध हुये यहपृ-थु नाम राजा स्वायम्भुवमनुही का दूसरा है यही स्वायम्भुवजी सब पृथ्वीमण्डल के सबसे प्रथम महाराजाधिराज हुयेहैं जो इस सातयें मन्वन्तरके भी स्वामी वैवस्वतके नामसे प्रसिद्ध हुये हैं ७९ । ८० पुलस्त्यजी बोले कि सब मन्वन्तर मनुओं के चरित एककल्प का प्रमाण व उसकी सृष्टि संक्षेप सहित ८१ एकचित्त प्रसन्नात्मा होकर हमसे सुनो हे भीष्मजी ! पूर्व्वकाल में स्वायम्भुव मन्वन्तर में याम नाम देवताहुये ८२ व सप्तर्षि मरीच्यादि हुये आग्नीध्र, अग्निबाहु, विभु, सवन, ८३ ज्योतिष्मान्, द्युतिमान्, भव्य, मेधा, मेधातिथि, वसु, स्वायम्भुवमनुके येदशपुत्र हुये ८४ इन्हींका वंश उस मन्वन्तर भरमें प्रतिसर्ग्ग कर सब परमपदको चलेगये इसप्रकार स्वायम्भुव मन्वन्तर हुआ अब स्वारोचिष मन्वन्तर सुनो ८५ स्वारोचिषके देव-ताओंके समान तेजस्वी चार तो पुत्रथे जिनके नाम येथे नभ नभस्य, प्रभृति, भावन, कीर्त्तिवर्द्धन, ८६ व दत्त,आत्रि,च्यवन,स्तम्भ, प्राण, कश्यप, अर्व्वा,बृहस्पति ये सात सप्तर्षिथे ८७ उस मन्वन्तरमें तुषित नाम देवताथे उनके पृथक् २ नामयेथे हवीन्द्र, सुकृत, मूर्त्ति, आ-पोज्योति, अय ८८ व वसिष्ठजीके सातपुत्र उसमें प्रजापतिथे यह स्वारोचिषनाम दूसरा मन्वन्तर कहागया अब इसके पीछे ८९ और कहतेहैं सुनो तीसरे मनुका उत्तम नामथा उनके दशपुत्र हुये ९० जिनके नाम येहैं ईषदूर्ज्ज, तनूज, शुचि, शुक्र, मधु, माधव, नभस्य,

नभ ९१ सह, सहस्य, इनमें उत्तम कीर्त्तिका बढ़ानेवाला था भानु नाम इसमें देवताहुये ऊर्जा के पुत्र सातऋषिहुये ९२ उनके नाम ये हैं कौकभिण्डि, कुतुण्ड, दाल्भ्य, शंख, प्रवाहित, मिति, संमिति ये सातों योग के बढ़ानेवाले हुए हैं ९३ अब चौथे रैवतमन्वन्तरके समाचार सुनो कपि, पृथु, अग्नि, अकपि, कवि ९४ जन्य, धाम ये सात मुनि हुये हैं साध्यदेव समूह हुए हैं जे तामस मन्वन्तर में कहेगये हैं ९५ अकल्मष, तप, धन्वी, तपोमूल, तपोधन, तपोराशि, तपस्य, सुतपस्य, परंतप ९६ ये तामस के दशपुत्र सब वंशके बढ़ानेवाले हुए हैं अब पांचयें रैवत मन्वन्तर को सुनो ९७ देवबाहु, सुबाहु, पर्ज्जन्य, समय, मुनि, हिरण्यरोमा, सप्ताश्व ये तो सप्तर्षि थे ९८ भूतरजस तथा प्रकृति नाम देवता हुए अवश, तत्त्वदर्शी, वीतिमान्, हव्यपन्, कपि ९९ मुक्त, निरुत्सुक, सत्व, निर्म्मोह, प्रकाशक, धर्म्मवीर्य बलसे युक्त ये दश रैवतके पुत्रथे १०० अब पँचयें मन्वन्तरके वृत्तान्त सुनिये भृगु, सुधामा, विरज, सहिष्णु, नारद, विवस्वान्, कृतिनामा ये तो सप्तर्षि थे १०१ देवता इस मन्वन्तरमें लेखा नाम हुये उनके पृथक् २ विभव पृथग्भानु इत्यादि नाम थे १०२ छठें तामस नाम मन्वन्तरमें जो पांचयें के देवता हैं व जो ऋषि हैं तथा रुरु प्रभृति चाक्षुष के दश पुत्र १०३ स्वायम्भुव के वंशमें जो मैंने पूर्व में कहे हैं और चाक्षुष मन्वन्तर भी मैंने कहा है १०४ अब जो सातवां वैवस्वतनाम मन्वन्तर विद्यमानहै उसकी व्यवस्था सुनो अत्रि, वसिष्ठ, कश्यप, गौतम १०५ भारद्वाज, योगी और प्रतापी विश्वामित्र, जमदग्नि ये तो सप्तर्षि हैं १०६ इन सातयें वैवस्वत मनुके पुत्र ये हैं इक्ष्वाकु, नभग, धृष्ट, शर्य्याति, नरिष्यन्त, नाभाग, दिष्ट १०७ करूष, पृषध्र, वसुमान् व आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव, पवन, अश्विनीकुमार, ऋभु ये देवता हैं व इस मन्वन्तरके इन्द्रका पुरन्दर नाम है १०८ इस मन्वन्तर में भी कश्यपमुनि से अदिति नाम स्त्री में भगवान् का जन्महुआ जोकि सब आदित्यादि देवताओंसे पीछेहुये और वामन विष्णु कहाते हैं १०९ इसरीति से सात मन्वन्तरोंकी कथा तो संक्षेप रीति से हमने कही अब जो सात मन्वन्तर और होने

वालेहैं विष्णुभगवान् की शक्तिसे युक्त उनकी उत्पत्ति कहतेहैं ११० विवस्वान् के विश्वकर्म्माकी कन्या छाया व संज्ञा नाम दोस्त्रियां थीं जो पूर्व्व तुमसे कहचुके हैं १११ कोई २ कहते हैं कि सूर्य्य की तीसरी स्त्री का वड़वा नाम था परन्तु हमारे मतसे उनके सञ्ज्ञा छाया दोही स्त्रियां थीं सञ्ज्ञाही वड़वा भी होगई है उसके सूर्य्य से यमराज, यमुना व श्राद्धदेव, ये तीन सन्तान हुये ११२ अब उनकी दूसरी स्त्री छाया के सन्तान हमसे सुनो सावर्णिनाम पुत्र व तपती नाम कन्या जोकि संवरण की स्त्री हुई और शनैश्चर नाम पुत्र ये तीन सन्तान हुये जब सञ्ज्ञा वड़वा होगई तो अश्विनीकुमार नाम दो पुत्र उसके हुये ११३ जब आठवां मन्वन्तर आवेगा तो यही सूर्य्य के पुत्र सावर्णिमनुहोंगे उनके पुत्र निर्म्मोक विरजस्क आदि होंगे ११४ उस मन्वन्तर में सुतपा, विरजा, अमृतप्रभ आदि देवता होंगे व उनके इन्द्र विरोचनकेपुत्र बलिजी होंगे ११५ जिन बलिने वामनरूपी श्रीविष्णुभगवान् को तीनपद भूमि दीथी जिसके प्रभाव से अभी सुतललोक में हैं आठयें में इन्द्र होंगे ११६ जब इन्होंने तीनपैरभूमि देनेको कहीथी पर न दे पाई तो प्रथम तो भगवान्की आज्ञासे बांधेगये फिर सुतल को भेजेगये उस सुतल में स्वर्ग्ग से अधिक सुखहै इससे वहां वे अब इन्द्रही के समान शोभित होरहेहैं ११७ इस आठयें मन्वन्तर में गालव, दीप्तिमान, परशुराम, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, ऋष्यशृङ्ग, व्यास ये सात ऋषि होंगे ११८ अब भी ये अपने २ योगाभ्यास से अपने २ आश्रमों में टिके हुये तप कररहे हैं व परमानन्द में हैं ११९ देवगुही नाम सरस्वती में उत्पन्न हो सार्व्वभौम नाम ईश्वर इन्द्र से उनका अधिकार छीनकर बलिको देंगे १२० नवयें मनु का दक्षसावर्णि नाम होगा ये वरुणजी के पुत्र हैं भूतकेतु दीप्तिकेतु आदि इनके पुत्र होंगे १२१ पारा मरीचिगर्भादि उस मन्वन्तर में देवता होंगे व अद्भुत नाम इन्द्र द्युतिमान आदि सप्तर्षि होंगे १२२ आयुष्मान् से अम्बुधारा नाम स्त्री में ऋषभ नाम भगवान् का अवतार होगा जिसकी कृपा से उसके इन्द्र अद्भुतजी तीनोंलोकों को आनन्द से भोगेंगे १२३ दशयें मनु का

ब्रह्मसावर्णि नाम होगा ये उपश्लोक के पुत्र होंगे भूरिषेणादि इनके पुत्र होंगे व हविष्मान् आदि सप्तर्षि १२४ जैसे कि हविष्मान् सुकृत, सत्य, जय, मूर्त्ति इत्यादि तो ब्राह्मण व सुवासन विरुद्धादि देवता होंगे इस मन्वन्तर के इन्द्र का शंभुनाम होगा १२५ प्रजापति के गृह में विसूची नाम स्त्री में अपनी कला से उत्पन्न हो विष्वक्सेन नाम भगवान् शम्भुनाम इन्द्र की मित्रता करेंगे १२६ ग्यारहयें मनु का धर्म्म सावर्णि नाम होगा उनके पुत्रों का अनागत सत्यधर्म्मादि नाम होगा १२७ विहङ्गम कामगम निर्व्वाणरुचि आदि देवता इन्द्र का वैधृति नाम होगा और अरुणादि उसमें ऋषिहोंगे १२८ उन्हीं वैधृति की कन्या वैधृता में आर्य्यक नाम पुरुष से उत्पन्न होकर विष्णुभगवान् के अंश धर्म्मसेतु नाम ईश्वर वैधृति इन्द्र की सहायता के लिये तीनोंलोकों को धारण करेंगे १२९ बारहयें मनुका रुद्रसावर्णि नामहोगा उनके देववान् उपदेव देवश्रेष्ठादिपुत्र होंगे १३० उसके इन्द्रका ऋतधामानाम होगा हरित आदि देवता होंगे, तपो मूर्ति, तपस्वी, आग्नीध्रादि ऋषिहोंगे १३१ सत्यसहा से सूनृता नाम स्त्री में हरिके अंश से उत्पन्नहो स्वधामा नाम भगवान् उस मन्वन्तर के अन्तर को सिद्धकरेंगे १३२ तेरहयें मनुका देवसावर्णि नाम होगा चित्रसेन, विचित्रादि देवसावर्णि के पुत्र होंगे १३३ सुकर्म्मा, सुत्रामा आदि देवता व दिवस्पति नाम इन्द्र उस मन्वन्तर में होंगे निर्म्मोक, तत्त्वदर्शी आदि ऋषि लोग होंगे १३४ देवहोत्रसे बृहती नाम स्त्री में हरिके अंश से अवतार ले योगेश्वर नाम भगवान्, दिवस्पति नाम इन्द्र के कार्य्यों के सम्पादक होंगे १३५ चौदहें मनुका इन्द्रसावर्णि नाम होगा इन इन्द्रसावर्णि के पुत्रोंके नाम उरु गम्भीर बुद्धि होंगे १३६ पवित्र, चाक्षुष आदि देवता होंगे इन्द्र का नाम शुचिहोगा अग्नि, बाहु, शुचि, शुद्ध मागधादिऋषि होंगे १३७ व सत्रायण से विताना नाम स्त्री में हरिके अंश से उत्पन्नहो बृहद्भानु नाम भगवान् उस मन्वन्तर की क्रियाओं का विस्तार करेंगे १३८ हे राजन् ! ये चौदहमनु हमने आप से कहे सो ये भूत वर्त्तमान भविष्यत् तीनोंकाल में रहते हैं उनमें छ मन्वन्तर तो बीत

चुके सातवां यह वैवस्वत नाम विद्यमान है सात और सावर्णि आदि होंगे जिन सबों के वृत्तान्त कहचुके हैं ऐसे सहस्रों युगों के कालको कल्प कहते हैं १२९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेमन्वन्तरवर्णनन्नामसप्तमोध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

दो० पृथुचरित्ररविवंशसब कछुविधुवंशबखान ॥
अठयेंमहँमुनिराजकिय करिकैबहुतविधान १

इतनी कथा सुन भीष्मजी ने पुलस्त्यजी से पूँछा कि महाराज बहुत से राजाओंने इस पृथ्वीकोभोगा यह बात पूर्व समय में सुनाई देती है पर इस भूमिकी परिभाषा से सिद्ध पृथ्वी सञ्ज्ञा क्यों हुई व गौ इसका नाम क्यों हुआ इनपृथ्वी और गौ दोनों नामों के होनेका कारण हमसे कहिये १ । २ यह सुन पुलस्त्यजी बोले कि पूर्व्वसमय सत्ययुगमें एक अङ्गनाम महाराजहुये उन्होंने मृत्युकी कन्या अतिकुरूपवतीके साथ अपना विवाह किया ३ उस स्त्री का सुनीथा नाम था उसमें उससे वेननाम पुत्र उत्पन्नहुआ जोकि सदा अधर्म्म मेंही निरत रहता महाकामी बलवान्था अपने पिता के पीछे राजाहुआ ४ लोगोंके सङ्ग सब अधर्म्महीके काम करता जिसकी सुन्दर स्त्री देखता छीनलेता यज्ञादि अपने राज्यमें नहीं होने देता और भी नाना प्रकारके पाप करता था उसके अच्छे के लिये व संसारके हितके लिये ऋषियोंने आय बहुत कुछ समझाया बुझाया पर उस दुष्टात्मा दुराचारीने कुछ भी न माना तब ऋषियोंने शापदेकर उसे मारडाला विनाराजा का देशहोगया चोरादिकों ने बड़ा उपद्रव मचाया तब पापरहित ऋषियों ने जबरदस्ती उसकी लोथको मथा जोकि उसकी माताने तैलकी नौका में धरारक्खी थी जबउसकी देह मथी गई तो उससे म्लेच्छ बहुत उत्पन्नहुये ५ । ७ जोकि उसकी माताकेही अंशके कारण कालेरङ्गके महापापी हुये व पिताके अंशके एक अतिधर्म्मात्मा औरोंसेभी धर्म्म करानेवाला ८ धनुर्बाण गदादि अस्त्रशस्त्र धारण किये हुये दहिने हाथ से पुत्रउत्पन्नहुआ उस का अतिदिव्य

तेजथा सब रत्नही कवच बख्तर आदि पहिनेथा ९ इस पुत्रका पृथु नाम हुआ व यह साक्षाद्विष्णु भगवान्‌का अवतार था उनको जैसेही ब्राह्मणों ने राज्याभिषेक किया कि वे तपस्या करने चलेगये बड़ा तपकरके १० जब विष्णुभगवान् से वरपाय लौटे तो आय पृथ्वी मण्डल भरके महाराज हुये देखा कि इस भूतलपर न कोई वेद शास्त्र पढ़ता है न यज्ञ दान तपस्या व्रत नियमादि धर्म्म करता है ११ इससे उन्होंने बड़ाभारी कोपकर बाण से धरणी को मारना चाहा क्योंकि वे पराक्रमी अत्यन्त थे तब भूमिगाय का रूप धारण कर भागी १२ व धन्वापर बाण चढ़ाये महाराज पृथुजी उसके पीछे २ दौड़े तब गो रूप धारण किये हुई वह भूमि एक स्थानपर खड़ी होकर बोली कि क्याकरूं क्या आज्ञा होती है १३ महाराज पृथु ने कहा कि हे सुन्दर व्रत करनेवाली ! हम लोगों का जो अभीष्ट है वह दो सो यह नहीं कि केवल हमाराही अभीष्ट पूराकरो किन्तु सब जगत् में जो स्थावर जङ्गम हैं अलग २ सब के मनोरथ पूरे करो १४ भूमि ने कहा बहुत अच्छा परन्तु आप अपने योगाभ्यास से अपना वाञ्छित पदार्थ हम में से दुहलें और भी लोग इसी प्रकार जो चाहें दुहलें तब राजा पृथुने महाराज स्वायम्भुवमनुको बछड़ा बनाकर अपने हाथ को पात्रकर दुग्ध दुहलिया १५ वही सब अन्न होगये जिन से सब प्रजा जीने लगी अब तक उन्हीं से जीती है इसके पीछे ऋषियों ने चन्द्रमाको बछड़ा व बरगदके वृक्षको दुहने वाला वेदको पात्र बनाकर दुग्ध दुहाया वही सब तपहोगया जो ऋषियों का जीवन है देवताओं ने धरणी को पवन को दुहनेवाला १६ । १७ इन्द्रको बछड़ा बनाय दूध दुहा वही उनका बल पराक्रम वीर्य्य होगया देवताओंने सुवर्ण के पात्रमें दुहाया था पितरों ने चांदीका पात्र बनाय १८ अन्तक को दुहनेवाला यमराजको बछड़ा कर अमृत मय दुग्ध दुहालिया नागोंने लौकी को पात्र तक्षक को बछड़ा १९ धृतराष्ट्र नाम नाग को दुहनेवाला बनाय विषरूप दुग्ध दुहाया असुरों ने प्रह्लाद को बछड़ा लोहका पात्र त्रिमूर्द्धा को दुहनेवाला बनाय नानाप्रकार की माया दुहा लीं जिनसे शत्रुओं को

अत्यन्त पीड़ा होतीहै २० । २१ यक्षों ने धरणी को कुवेरको बछड़ा मणिमान को दुहनेवाला बनाय अन्तर्द्धान होजाने की विद्यालेने के लिये दुहा २२ प्रेत व राक्षसों ने रौप्यनाभ नाम को दुहनेवाला सुमालीको बछड़ा बनाय उल्वण वसा रुधिररूप दुग्ध दुहालिया २३ गन्धर्व व अप्सराओं ने चित्ररथको बछड़ा अथर्वणवेदके पारगामी व सुरुचि को दुहनेवाला कमल के पत्ते को पात्र बनाय नानाप्रकार के गाने बजाने नाचने की विद्या दुहाली पर्व्वतों ने धरणीसे विविध प्रकारके रत्न २४।२५ दिव्य औषध दुहे उन्होंने सुमेरुपर्व्वत को तो दुहनेवाला बनाया हिमवान् को बछड़ा शिलामय पात्र बनाया था इस युक्तिसे दुहा २६ वृक्षों ने धरणीको इस रीतिसे दुहा कि पालाश का तो पात्र बनाया साखूके वृक्षको दुहनेवाला २७ पकरियाको बछड़ा और दुग्ध जो दुहा उसमें यह गुणहै कि जहां से वृक्ष काटे जाते हैं वहींसे कल्ले निकलआते हैं इसी प्रकार और लोगों ने भी अपने २ मनमाने बछड़े दोहनेवाले पात्र बनाय अपने मनमानी वस्तु दुहलीं २८ इसीसे महाराज पृथुके राज्यमें सब पूरी आयु धन पाते थे सुख भोगते थे उनके राज्यमें कोई दरिद्री, रोगी, निर्द्धनी, पापी नहीं था २९ न महामारीआदि रोग किसी को होते न औरही कोई कष्ट होते सब लोग दुःख शोकसे हीनहो नित्यआनन्द मङ्गल करते थे ३० उन्हों ने अपने धन्वा की कोटि से सब पर्व्वतों को कुछ २ कमकरदिया भूमि जहां ऊंची खालीथी उसे समान करदिया जिस से कि लोगों का हित हो बसते बसाते जोतते बोतेबने ३१ उनके राज्यमें और किसीछोटे २ राजाओं वा प्रधान लोगोंको ग्रामों नगरों में किलाखाईं आदि बनाय नगरादि की रक्षा करने की आवश्यकता न थी न किसीको आयुध धारण करने की अपना २ कार्य्य सब निर्भय होकर करते थे कोई शास्त्रों का बाधक न था सब वेद शास्त्र के लिखनेही के अनुसार कामकरते थे ३२ पृथुके राज्य में सब पुरुष धर्म्महीमें मन लगाते थे पापकरने का कोई स्वप्न में नहीं मन करता था हे राजन्! यह पृथु का चरित्र हम ने तुम से कहा जिस से कि धरणी ने उन के राज्य में धेनु का स्वरूप धारण किया था इससे उसका एक गो नाम हुआ

व दुहने के पीछे उन्हों ने उसे अपनी कन्या करके माना था इस कारण उस का पृथ्वी व पृथिवी नाम हुआ बस उन के अनुरागही के योग से यह नाम हुआ यों तो बहुत राजाओं ने राज्य किया पर पृथु महाराजाधिराज के समान इसे किसीने नहीं सुधारा इनके प्रथम ऐसे बहुत ग्राम पुर नगरादि भूमिपर न बसते थे क्योंकि यह सब ऊंची नीची थी ये सब उन के समान करने पर बसे ३३।३५ इतनी कथासुन भीष्मजी ने पूँछा कि हे ब्रह्मन्! अब आप हमसे यथा-वस्थित सूर्य्यवंशका वर्णन कीजिये व सोमवंश भी अच्छेप्रकार वर्णन कीजिये ३६ पुलस्त्यजी बोले कि कश्यपजी से अदिति नाम स्त्री में पूर्व्व समय सूर्य्य नाम पुत्र हुये उनके सञ्ज्ञा, राज्ञी, प्रभा ये तीन स्त्रियां हुईं३७ यह राज्ञी राजा रैवत की कन्या थी इसके जो पुत्र हुआ उसका रैवतक नाम हुआ प्रभाने प्रभात नाम पुत्र उत्पन्न किया सञ्ज्ञा से त्वाष्ट्र और श्राद्धदेवमनुभी उत्पन्न हुये ३८ व यम-राज और यमुना ये दोनों युगल उत्पन्न हुये तब सूर्य्यका तेजोमय रूप न सहती हुई सञ्ज्ञा ने ३९ अपने शरीर से एक और स्त्री अपनेही समान निन्दारहित उत्पन्न की उसीका छाया नाम हुआ ४० वह आगे स्थित सञ्ज्ञा से बोली कि मैं क्या करूँ क्या आज्ञा होतीहै तब सञ्ज्ञा ने कहा कि हे श्रेष्ठमुखवाली! तुम हमारे पतिकी सेवाकरो ४१ हमारे पुत्र कन्याओं को अपने पुत्र केही स्नेहसे पालन करना इतना कह सुन्दरव्रत करनेवाली सञ्ज्ञा तो कहीं चलीगई उनकी छाया रहगई वह सूर्य्यनारायण की स्त्री रही ४२ उन्हों ने जाना यह वही हमारी स्त्री है क्योंकि रूप में उससे इसमें कुछ भी अन्तर न था फिर सूर्य्यनारायण से छाया में सावर्णिनाममनु पुत्र हुआ ४३ जो सावर्णि और वैवस्वतमनु के सवर्ण हुआ व एक तपती नाम कन्या जो संवरण को ब्याही गई ४४ परन्तु छाया सञ्ज्ञा के पुत्रोंकी अपेक्षा अपने पुत्र सावर्णि में अधिक स्नेह करने लगी ४५ तब श्राद्धदेवमनुने तो कुछ नहीं कहा पर यमराज ने बड़ा कोपकिया व दहिना पाद उठाय छाया के मारा ४६ तब छाया ने यमराज को शाप दिया कि तुम्हारे इसपाद को कीड़े खायँगे

व रुधिर पीब सदा बहा करेगी ४७ तब यमराज ने अपने शापका वृत्तान्त पिता सूर्य्यजी से कहा कि हे देव! विना कारण हमारी माताने कोप कर हमें शाप दिया ४८ वाल्यभाव से हमने केवल लात मारने को उठाया था हमारे भाई दोनों मनुओं ने रोंकाभी पर उन्होंने नहीं माना हमको शापदेही दिया ४९ यह हमारी वह माता नहीं है क्योंकि हम लोगों में बराबर स्नेह नहीं करती है तब सूर्य्य ने यमराज से कहा कि हे महामते! अब हम इस विषय में क्या करें ५० सुख के पीछे किस को दुःख नहीं होता सो वह भी अपने कर्म्मों सेही होता किसी का कुछ अपराध नहीं महादेवके भी निवारण के योग्य नहीं होती और प्राणियों में क्या कथाहै ५१ अच्छा तुम्हारे कृमि नष्ट होने का उपाय हम बताते हैं जो पुरुष सब साधर स्त्रियों के विषयीहोंगे वही काक व मुर्गा होंगे वे तुम्हारे चरण के कृमियों को खालिया करेंगे इससे तुमको दुःख न होगा ५२ इतना सुन यमराज वैराग्य से घर छोड़ फल फेन और पवन भक्षण कर पुष्करतीर्थ में जाय तपस्या करनेलगे ५३ वहां दश हजार वर्षतक तप करते रहे इनकी तपस्या के प्रभाव से ब्रह्माजी बहुत प्रसन्न हुये ५४ व कहा कि यम हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्नहुये तुमको पितृलोकका लोकपाल बनाया जाय सब जगत् के धर्म्माधर्म्म की परीक्षा लेकर उचित दण्ड दिया करो ५५ इस रीति से ब्रह्माजी के आशीर्व्वाद से यमराज पितृलोक के स्वामी होगये वहां सब के धर्म्माधर्म्म की परीक्षा करने लगे ५६ यहां सूर्य्य ने विचारा कि सत्य २ जो यह वही सञ्ज्ञा होती तो अपने पुत्रको ऐसा अमङ्गल शाप न देती यह कोई दूसरीहै फिर ध्यान कर विचारा तो सञ्ज्ञा के कर्म्म विदित हुये कि वह इस को उत्पन्न करके कहीं चली गई यह विचार कोपकर संज्ञाके पिता विश्वकर्म्मा के समीप जाकर उनकी कन्याका वृत्तान्त उन से कहा ५७ तब विश्वकर्म्मा बहुत समुझाय बुझाय सूर्य्य से बोले कि हे भगवन्! आपका अन्धकार दूरकरनेवाला तीव्रतेज न सहकर वह संज्ञा बड़वा अर्थात् घोड़ी का रूप धारण करके हमारे निकट चली आई तब हमने तुम्हारे भयसे उसे रोंका ५८।५९ कि तू हमारे गृह

में न आव क्योंकि तूने अपने पतिके प्रतिकूल काम कियाहै तिससे मेरे स्थानमें प्रवेश करने के योग्य नहीं है ६० जब हमने ऐसा कहा तो वह यहां से शीघ्रही चलीगई अब घोड़ीहीका रूप धारणकिये मरुदेशमें विचरती है ६१ इससे अब आप हमारे ऊपर प्रसन्न हों व कहें तो हम आपको यन्त्रपर चढ़ाकर कुछ छोल डालें जिसमें तेज कम होजाय तो आपका तेज संज्ञा सहसके ६२ ऐसा आपका रूप बनादेंगे जो लोगोंको आनन्दकरेगा सूर्य्य ने कहा अच्छा तब विश्वकर्म्मा ने सूर्य्य को यन्त्रपर चढ़ाकर बहुत उनकातेज छोलडाला ६३ उसीसे श्रीविष्णुभगवान् का सुदर्शनचक्र बनादिया महादेवका त्रिशूलभी उसीसे बनाया व इन्द्र का वज्रभी उसीसे निर्म्माण किया ६४ इस वज्रमें व चक्र त्रिशूलमें हज़ार हज़ार धारें हैं जिनसे अनेक दैत्य,दानव मारे जाते हैं सूर्य्य का भी अद्भुतहीरूप विश्वकर्म्मा ने बनाया उसमें भी चरण बहुतही उत्तम बनाये ६५ पर उन सूर्य्यके चरणोंको वे मारे तेज के देख न सके तब उन्हों ने बहुतकम तेज के पाद उनके करडाले इससे अबभी कोई पुरुष सूर्य्य के सामने अपने पैर नहीं करता क्योंकि उनके छोटे पाद हैं इससे वे क्रोध करते हैं ६६ जो कोई पापी उनकी ओर चरण करताहै वह निन्दित गति पाताहै इसलोकमें अवश्य कोढ़ी होताहै जिससे लोकमें दुःखित होजाताहै ६७ इसलिये बुद्धिमान् देव देव सूर्य्यकी ओर कभी किसी धर्म और कामके इच्छा करनेवालेको पैर भूलसे भी न करना चाहिये ६८ इसके पीछे देवताओंके स्वामी सूर्य्यनारायण भूलोकपर आये व घोड़ेका रूप धारणकर उसघोड़ीके रूपको प्राप्त संज्ञाके सङ्ग विहारकरनेलगे पर तो भी तेज बहुत विशेषथा संज्ञाने जाना यह और कोई है इससे उसे और भी विह्वलताहुई और बहुतही भयव्याकुलहुई ६९ । ७० व दूसरा पति जानकर नासिकासे सूंघ उसने सूर्य्य का वीर्य्य अलग करदिया उसीसे अश्विनीकुमार नाम दो देवताओं के वैद्य उत्पन्नहुये यह हमनेसुनाहै ७१ इन्हींको अश्विनी अर्थात् घोड़ीमें उत्पन्न होनेसे अश्विनीकुमार पवित्रहोने से दस्र नासिकासे होनेसे नासत्य कहतेहैं फिर जब संज्ञाने जाना कि ये हमारे स्वामी सूर्य्यही हैं अश्व-

कारूप धारण करके आये हैं तब बहुत प्रसन्नहुई ७२ व अपना पूर्व्वकारूप धारणकर आनन्दयुक्त होकर अपनेपतिके संग विमानपर चढ़कर फिर देवलोकको गई और छाया के पुत्र सावर्णिमनु अबभी मेरुपर्वत में तपस्या करते हैं ७३ व छायाके एक पुत्र शनैश्चर नाम हुयेथे वे तपस्या करके ग्रहोंमें मिलगये यमुना और तपती ये दोनों सूर्य्यकी कन्या नदियां होगईं दोनों बर्षाऋतुमें बड़ी भयङ्कर होजाती हैं व जलतो उनका बहुधा कालेरङ्गका बहुत स्वच्छ रहताहै सूर्यकेपुत्र जो प्रथम वैवस्वतमनु हुये थे उनके दशपुत्र महाबली हुये ७४।७५ इन दशों के पूर्व्व एक इलानाम कन्या हुई थी जिसे फिर वसिष्ठजी ने सुद्युम्न वा इलनामपुत्रबनायाथा और उन दशोंके नाम ये हैं इक्ष्वाकु, कुशनाभ, अरिष्ट, धृष्ट, ७६ नरिष्यन्त, करूष, शर्य्याति, पृषध्र, नाभाग ये सब दिव्यमनुष्यहुये ७७ राजा वैवस्वतजी अपने धार्म्मिक इल नाम पुत्रको राज्याभिषेक करके आप पुष्करतीर्थपर तप करने को चलेगये ७८ वहां बहुतदिन तप करतेरहे तब वरके देनेवाले ब्रह्माजी प्रसन्नहोकर वहां आये और राजासे बोले कि जो तुम्हारे मनमें हो वर मांगो क्या चाहते हो ७९ तब महाराज वैवस्वतजीने हाथ जोड़कर कमलनयन विभु ब्रह्माजी से कहा कि हम आपसे यही वरमांगते हैं कि हमारे इस सूर्य्यवंशमें पृथ्वी में जितने राजाहों सब धर्म्मात्मा हों ८० व सब बड़े ऐश्वर्य्यवान् आपके प्रसादसेहों तब तथास्तु ऐसाकह कर ब्रह्माजी वहीं अन्तर्धान होगये ८१ तो मनुजी अयोध्याजी में आकर पहलेकी नाईं स्थित होते भये उनके पुत्र राजा इल एक समय रथपर चढ़कर ८२ अर्थकी सिद्धिके लिये सबद्वीपों को घूमते हुए ८३ हिमवान्पर्व्वत के उसपार बहुतदूर इलावृत खण्डको चलेगये जहाँ कल्पवृक्षके वृक्षलगे थे व नानाप्रकारके पक्षी पशु बोलरहेथे ८४ जहां किसी समय पार्व्वतीजी की लज्जा मिटाने के लिये महादेवजी ने कहदिया था ८५ कि यहां जो पुरुषवाची मनुष्य पशु पक्षी कीट पतङ्ग कोईआवेगा वह स्त्री होजायगा केवल अकेले हमीं इस दशयोजन में पुरुष रहेंगे और सब स्त्रीही रहेंगी ८६ इस बातको राजा इल जानते न थे वहां चलेगये इससे राजा

स्त्री होगये और घोड़ा क्षणमात्रही में घोड़ी होगया ८७ स्त्रीभावहोनेसे पुरुषभावमें कियाहुआ सबकार्य भूलगया उनमें राजातो बड़े मोटे ऊंचे कड़ेस्तनवाली ८८ मोटीजांघ पतलीकटि कमलवत् नेत्रवाली पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली, पतले अंगयुक्त, विलासिनी, कालेनेत्र वाली ८९ मोटेऊंचे और लम्बे भुजोंसे युक्त, नील और कुंचित बालोंवाली, सूक्ष्मरोमों से युक्त, सुंदर मुखवाली, कोमल गद्गद भाषणे वाली ९० श्यामा, हरिणके समान वर्णवाली, सूक्ष्मताम्र के समान नहों के अंकुरयुक्त, धनुष के तुल्य दोभौंहोंवाली, हंसकी चालयुक्त ९१ तिस वनमें घूमती हुई चिन्तना करती भई कौन हमारा पिता भाई व कौन हमारा रक्षकहै ९२ हम किसकी स्त्री हैं ऐसा विचारताहुआ वनमें फिरने लगा फिरते २ बहुत वर्षों के पीछे उस वनसे निकलकर एकदिन चन्द्रमाके पुत्र बुधकोदेखा ९३ तो इला मोहित होगई और कामसे पीड़ित बुधभी तिसकी प्राप्ति के लिये यत्न करने लगा ९४ बुध उससमय ब्रह्मचारी का वेष धारण किये थे इससे कमण्डल हाथ में लिये पुस्तक बगलमें दबाये बांसका दण्ड लिये हाथोंकी अँगुलियों में कुश की पवित्री पहिने ९५ ब्राह्मण का रूप बनाये बड़ी शिखारखाये वेद उच्चारण करते सुवर्ण के कुण्डल धारण किये सङ्गमें और भी भिक्षार्थियों को लिये जोकि सब के सब पुष्प, कुश, पलाश की लकड़ियां और जल हाथों में लिये थे ९६ सो ऐसे बुधने उस समय इलाको बुलाया कि यहां इस घनेवृक्षोंकी छायामें आओ ९७ अग्निहोत्रकी सेवा छोड़कर मेरेस्थान से कहां जातीहो यह विहार करनेकी वेलाहै कहां घूमतीहो किसे ढूँढ़तीहो भोगका समय बीता जाताहै तुम क्यों व्याकुल दिखाई देतीहो कहती क्यों नहीं क्या चाहतीहो ९८ । ९९ यह सन्ध्या की वेलाहै यह भोग करने का समय मेरेघर को लीपकर फूलों से भूषित करो १०० तब इला विस्मृत हुई बोली कि हे तपस्वी ! हे पापरहित ! प्रथम यह तो बताओ कि हमकौन हैं तुम कौनहो जो हमारे पति बनाचाहते हो अपना हमारा दोनोंका कुल बताओ १०१ इतना सुनकर बुध उस स्त्रीसे बोले कि तुम्हारा तो इलानाम है और हम बड़ेभारी विद्वान्

कामी बुध हैं १०२ तेजस्वी के कुल में उत्पन्न हुये हैं हमारे पिता सब ब्राह्मणों के राजा चन्द्रमाजी हैं ऐसा बुधका वचन सुनकर इला उन के साथ झट उनके स्थान में पैठगई १०३ वह मन्दिर ताम्रसे बनाहुआथा ऊपरसे रत्नमणि जड़े थे उसे देख इलाने अपने को कृतार्थ माना १०४ और कहनेलगी कि मेरा मेरे पतिका क्या आचरण क्या रूप कैसाधन कैसा उत्तमकुल मेरी और इनकी सुन्दरता कैसीदिव्यहै १०५ ऐसा कहकर उस इन्द्र मन्दिरतुल्य सब भोगयुक्त स्थान में बहुत दिनोंतक इला बुध के सङ्ग भोग विलास करती कराती रही १०६ ये दोनों तो इस प्रकार नानाप्रकार के भोग विलास करते करातेरहे वहां राजा इलकेभाई इक्ष्वाकु आदि राजाको ढूँढ़ते हुये उसी महादेवजी के शापित शरवणके समीप आये १०७ देखा तो राजाका घोड़ा जोकि घोड़ी होगयाथा रत्नों से जटित दिव्यभूषण धारण किये उसी स्थानपर घूमरहा था १०८ यह देखकर पतापाकर सबके सब बड़े विस्मित चित्तहुये कि देखो यह चन्द्रप्रभनाम घोड़ा महात्मा इलजीका है १०९ यह घोड़ी किसहेतु होगया तब सबों ने जाकर अपने पुरोहित वसिष्ठजी से पूँछा ११० कि महाराज यह क्या अद्भुत चरित्र है आप तो सब योगियोंमें श्रेष्ठ हैं बतावें क्या बात है तब वसिष्ठजी ने ध्यानलगाकर देखा १११ व कहा कि महादेवजी ने अपनी स्त्रीकी प्रसन्नताके लिये यह शापदिया है कि जो पुरुष यहां कभी आवेगा वह स्त्री होजायगा ११२ इससे यहघोड़ा व कुबेर के तुल्य राजाभी स्त्री होगया ११३ यह सुनकर इक्ष्वाक्वादिकों ने कहा महाराज जिसप्रकार राजा इल फिर पुरुषहों महादेवजी की प्रार्थना करके फिर वैसा करना हम लोगोंको अभीष्ट है इतना कहकर उनलोगों ने उस शरवणके समीप जाकर जहां पर महादेवजी थे ११४ विविध प्रकारके स्तोत्रोंसे महादेव पार्व्वतीजीकी बड़ीभारी स्तुतिकी तब वे दोनों महात्मा आकर बोले कि जो प्रतिज्ञा हमने कररक्खी है वह किसी के टालने के योग्य नहीं है ११५ इससे हे इक्ष्वाक्वादिको! तुम जाकर अश्वमेध यज्ञकरो उसका फल हमदोनों को देदो तो राजाइल निस्सन्देह किम्पुरुष

अर्थात् खराब पुरुष होजायगा अब वैसा न होगा जैसाथा ११६ यह सुनकर बहुत अच्छा ऐसाही करेंगे ऐसा महादेव पार्व्वतीजी से कहकर अपनी पुरी अयोध्याजी में आय अश्वमेध यज्ञकर महादेव जीके समर्प्पण किया इससे राजाइल किम्पुरुष होगये ११७ एक मासभर पुरुष होजानेलगे एकमासतक फिर स्त्री रहनेलगे जब इला नाम स्त्री होकर राजा इल बुधके सङ्ग रहेथे तब उनसे एक अनेक गुण संयुक्त पुत्र उत्पन्न हुआथा उसका पुरूरवानाम हुआ उसे अपना राज्य देकर बुध स्वर्ग्ग लोकको चलेगये ११८।११९ व वह खण्ड तबसे इलके नामसे प्रसिद्ध होकर इलावृतखण्ड कहाने लगा इस प्रकार सोमवंशका प्रकाशक इलासे उत्पन्न ऐलपुरूरवा राजा हुआ और इल मासभर पुरुष मासभर स्त्री रहने लगे उन्हीं इलका नाम सुद्युम्न भी है इनसे उस समय में जब किम्पुरुष रहते थे तब किसी से नहीं हारनेवाले तीनपुत्र उत्पन्नहुये १२०।१२२ उनके नाम येहैं उत्कल,गय,वीर्यवान् हरिताश्व उत्कलकी बसाईहुई उत्कलापुरी है जिसमें अब जगन्नाथजी विराजते हैं और गयकी गयापुरी १२३ हरिताश्वकी दिग्याम्यापुरी है इसमें कुरुवंशी राजा रहते थे पुरूरवा को प्रतिष्ठानपुरमें राजगद्दीपर बैठाय १२४ उनके पिता बुध तप करनेगये थे सुद्युम्नके पीछे उनके पुत्र उत्कलादि नहीं राजाहुये किन्तु इसको छोड़ वैवस्वतमनु के सब पुत्रों में ज्येष्ठ इक्ष्वाकु थे इससे वे सूर्य्यवंश के राजा अयोध्यापुरी में हुये १२५ इक्ष्वाकुके भाई नरिष्यन्तके महाबलवान् शुकनाम पुत्रहुआ नाभागके अम्बरीषहुये,धृष्ट के तीनपुत्र धृष्टकेतु स्वधर्म्म, रणधृष्ट ये तीनों बड़े वीर्य्यवान् हुये शर्य्याति के अनन्त नाम पुत्र व सुकन्या नाम कन्या ये दो लड़के हुये १२६।१२७ आनर्त्तके बड़ाप्रतापी रोचमान नाम पुत्रहुआ इसीके नामसे आनर्त्त नाम देश व द्वारका नामपुरी प्रसिद्ध हुई है १२८ रोचमानके रेवनाम पुत्रहुआ रेवसे रैवत इसी रैवत का ककुद्मी भी नाम है यह अपने सौभाइयों में ज्येष्ठ है १२९ इसीकी कन्या का रेवतीनामहै जो बलदेजीकी स्त्री हुई करूषसे पृथ्वी में प्रसिद्ध बहुत पुत्रहुये वे सब कारूष कहाये १३० पृषध्रने गोवध भूलसे किया इससे

वह गुरूके शापसे शूद्रहोगया इक्ष्वाकुके १३० विकुक्षि, निमि और दण्डकइत्यादि पुत्रहुए ये अपने सौ भाइयोंसे श्रेष्ठथे इनके पचासपुत्र हुये ये सब सुमेरु पर्व्वत के उत्तरदेशोंके राजाहुये १३१।१३२ फिर इन्हींके एकसे अड़तालीस पुत्र और हुये जो सुमेरुके दक्षिणवाले देशों के राजाकियेगये १३३ इनमें सबसे ज्येष्ठपुत्र के ककुत्स्थ नामपुत्रथा उसके पुत्रका सुयोधन इसके पृथुनामपुत्र हुआ उसके पुत्रका नाम विश्वहुआ १३४ उसके आर्द्र नामकहुआ इसके युवनाश्वनाम तनय हुआ युवनाश्वके पुत्रका शावस्तनाम हुआ जिसने अंगदेशमें अपनी शावस्ति नामनगरी बसाई इससे इसका शावस्त नाम हुआ इसके पुत्रका बृहदश्वनाम हुआ इसके का कुवलयाश्व १३५।१३६ इसने धुन्धुनाम दैत्यको मारा इससे धुन्धुमार भी एक नाम इसका हुआ इसके तीनपुत्रहुये दृढाश्व, घृणि १३७ व कपिलाश्व दृढ़ाश्वके प्रमोद प्रमोदके हर्य्यश्व १३८ हर्य्यश्व के निकुम्भ निकुम्भ के संहताश्व संहताश्वके अकृताश्व अकृताश्वके रणाश्व और संहताश्व ये दो पुत्र हुये १३९ रणाश्व के युवनाश्व और युवनाश्व के मान्धातानाम राजा हुये मान्धाता के पुरुकुत्स, धर्म्मसेतु, १४० और इन्द्र के मित्रप्रतापी मुचकुन्दहुये इनमें पुरुकुत्सके दुःसह नर्मदाकापतिहुआ तिसकेपुत्र संभूतिहुये संभूतिके त्रिधन्वा त्रिधन्वाके त्रय्यारुणहुये १४१।१४२ त्रय्यारुण के सत्यव्रत सत्यव्रत के सत्यरथ सत्यरथ के हरिश्चन्द्र हरिश्चन्द्र के रोहिताश्व १४३ रोहिताश्व के वृक वृक के बाहु बाहु के महाधार्मिक सगर हुये १४४ इनके प्रभा भानुमती दो स्त्रियांथीं इनदोनों ने पुत्र होने के लिये और्व्वाग्निकी आराधना की १४५ और्व्व ने सन्तुष्ट होकर उनदोनों को यथेष्टवर दिया कहा कि एक जो चाहै साठसहस्र पुत्र मांगले एक एक प्रतापी वंश करनेवाला मांगे उनमें प्रभा ने तो साठहजार मांगे भानुमती ने एकपुत्र अङ्गीकार किया जिसका असमञ्जसनाम हुआ १४६ । १४७ फिर यदुवंशकी कन्याप्रभा ने साठहज़ार पुत्र उत्पन्न किये जो घोड़े के ढूंढ़ने में श्रीविष्णु के अवतार कपिलदेवजी की दृष्टिसे भस्म होगये १४८ असमञ्जस् के अंशुमान् हुये अंशुमान् के दिलीप दिलीप के भगी-

रथ १४९ जो तपस्याकर गङ्गाजी को अपने पुरुषों के तरने को लाये भगीरथ के पुत्र नाभाग १५० नाभाग के अम्बरीष अम्बरीष के सिन्धुद्वीप उसके अयुतायु अयुतायु के ऋतुपर्ण १५१ उसके कल्माषपाद उसके सर्व्वकर्म्मा उसके अनरण्य अनरण्य के निघ्न १५२ निघ्न के अनमित्र व दिलीप दो पुत्र हुये अनमित्र के अरिनाश हुये इनको राजा बनाय अनमित्र वन को चलेगये उनसे राज्य न होसका तो दिलीप राजा हुये दिलीप के रघुहुये रघु के अज अज के दीर्घ्घबाहु दीर्घ्घबाहु के प्रजापाल प्रजापाल के फिर अज अज के महाराज दशरथ इनके चार पुत्रहुये सब नारायण के अवतार हुये उनमें ज्येष्ठ पुत्र का श्रीरामचन्द्र नामहुआ १५३ । १५५ जो रघुवंश के बढ़ानेवाले हुये जिन्होंने लङ्का के राजा रावण का नाश किया जिनका चरित भृगुवंशी बाल्मीकि कवि ने वर्णन करके रामायण नाम ग्रन्थ अतिमनोहर बनायाहै १५६ रामचन्द्रजी से इक्ष्वाकु के कुलके बढ़ानेवाले कुश हुये कुशके अतिथि, अतिथि के निषध १५७ निषधकेनल, नलके नभस्, नभस्के पुण्डरीक, पुण्डरीक के क्षेमधन्वा, १५८ क्षेमधन्वाके वीर, वीरके महाप्रतापी देवानीक, देवानीक के अहीनगु अहीनगु के सहस्राश्व १५९ सहस्राश्वके चन्द्रावलोक, चन्द्रावलोकके तारापीड, तारापीडके चन्द्रगिरि, चन्द्रगिरिके चन्द्र १६० चन्द्रके श्रुतायु जो कि भारतमें मारेगये इसवंश मेंनल नाम दो राजाहुये १६१ एक निषधके नल एक वीरसेनके नलहुए ॥

चौ० इमिरविवंशी भूपबखाने । जो इक्ष्वाकुनृपान्वयभाने ॥
परमप्रतापीसकलभुआला। प्रकटजासुशुभगुणकीमाला १
परसन्क्षेपरीतिसों कह्यऊँ । नहिंविस्तारसहितसबभन्यऊँ ॥
भयेप्रधानतिन्हनकीगाथा । कहीसुनीसोसबनृपनाथा २।१६२।१६३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेसूर्य्यवंशवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय ॥

दो० पार्व्वणमन्वादिकयुगादिकतिथिश्राद्धबखान ॥
नवयेंमहँमुनिराजकियकहि २सकलविधान १

इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने पूँछा कि हे भगवन् हम अब पितरों का उत्तमवंश सुना चाहते हैं व श्राद्धदेव और सोमवंश भी विशेष रीति से सुना चाहते हैं १ पुलस्त्यजी बोले कि अच्छा हम तुम से पितृगणों का उत्तमवंश कहते हैं सुनो स्वर्ग्ग में पितरों के सात गणहैं उनमें तीन तो मूर्त्ति रहित हैं २ व चार सब तेजों की मूर्त्तिधारण किये हैं इससे मूर्त्तिमान् हैं जो पितृगण अमूर्त्ति हैं उन का वैराज नाम है ३ जो योगी लोग यहां योगकरते हैं व योग से भ्रष्ट होजाते हैं उनकी मुक्ति नहीं होती पर स्वर्ग्गलोक आदि को चले जाते हैं वहां बहुत दिनों तक रहते हैं ४ जब ब्रह्माका दिन बीत जाता है और रात्रि भी बीत जाती है तब वे फिर जन्म लेते हैं और वेद शास्त्र पढ़ते हैं तथा सदाचारनिष्ठ होते हैं और पूर्व्वजन्म की स्मृति उनको बनी रहती है इस हेतु योगाभ्यास कर अत्युत्तम सांख्य वेदान्त शास्त्र के अनुसार परमेश्वर का ध्यान करके ५ ऐसी सिद्धि को प्राप्त होजाते हैं कि जहां से फिर कभी लौटना दुर्ल्लभ होजाता है परमेश्वर में लीनही होजाते हैं इससे देनेवालों को चाहिये कि श्राद्धमें जो दानदें योगियोंकोही दें ६ पितृगणों की मानसी एक कन्या थी उसका मेनानाम था वह हिमवान् पर्व्वतकी स्त्री हुई मेनामें हिमवान् से मैनाकनाम पुत्र हुआ मैनाक के क्रौञ्च ७ इसी के नामसे क्रौञ्चद्वीप प्रसिद्ध हुआ जो कि चौथाहै जिसके चारोंओर घृतका समुद्र है मेनाके मैनाक के पीछे तीन कन्या उत्पन्न हुईं एक उमा दूसरी एकपर्णा तीसरी अपर्णा ये तीनों बड़े तीव्रव्रत करने में परायण हुईं इनमें उमाका रुद्रजी के सङ्ग विवाह हुआ व एकपर्णा का भृगु के साथ अपर्णा का जैगीषव्यऋषि के सङ्ग ८।९ ये तीनों हिमवान् की कन्या महातपस्विनियां थीं कि तीनोंलोकों में उनके समान किसी ने तप नहीं करपाया अब पितरों का लोक व उनकी सृष्टि तुम से कहते हैं सुनो १० सोमपथनाम लोक है जहां कश्यप के पुत्र सब पितरों के गण रहते हैं जिनकामान देवगण सदा किया करते हैं ११ इस लोक में बड़े यज्ञ करनेवाले अग्निष्वात्ता नाम पितरों के गण रहते हैं इनलोगों के एक अतिरूपवती मानसी अ-

च्छोदा नाम कन्याहुई १२ इसलिये पितरों ने अपने लोक में एक अच्छोद नाम तड़ाग बनाया उसके तीरपर अच्छोदा देवताओं के हज़ारवर्षतक तप करतीरही १३ उसकेतपसे प्रसन्नहोकर पितरलोग वर देने के लिये वहांआये सबोंके दिव्यरूपथे सब दिव्यमाला और अनुलेपन धारण कियेथे १४ सब के सब ऐसी विशेष मूर्त्तियां धारण किये थे मानौं कामदेव साक्षात् आपही मूर्त्ति धारण कर आया था उनपितरों में से अमावसु नाम पितर को देखकर वह अच्छोदा स्त्री १५ कामसे पीड़ित होकर बोली कि तुम हमारेपति होओ औ इतना कहतेही वह योगसे भ्रष्टहोगई क्योंकि उसके मनमें व्यभिचार आगयाथा इसीसे उसने ऐसा कहा था १६ प्रथम वह अन्तरिक्षही में टिकीहुई तप कररही थी पर जैसे ऐसाकहा पृथ्वीपर गिरपड़ी ऐसेही अमावसुने भी इच्छाकी कि यह हमारी स्त्री हो १७ परन्तु फिर धैर्य्य धारण करके चुपरहे क्योंकि उस दिन कृष्णपक्षकी पन्द्रहीं तिथि थी उस दिन भोग करने से पितरों का बल क्षीण होजाताहै व उस मासभर उसके पितर वीर्य्यपीने को पाते हैं बस जिससे कि अमावसुने उस तिथि में स्त्री प्रसङ्ग न किया इससे उसका नाम अमावास्या होगया और अच्छोदाने जो उस दिन पति संयोग करने की इच्छाकी इससे उसका तप भ्रष्टहोगया इससे बहुत दुःखित व लज्जितहो उसने पितरों से प्रार्थनाकी कि मेरा तप फिर पूरा होजावे १८ । १९ तब पितरों ने यह कहा कि अब इस समय तो तुम्हारा तप नहीं पूरा होसक्ता परन्तु आगे देवताओं का कार्य्य करने के लिये तुम पृथ्वीपर उत्पन्न होवोगी २० तब तपस्याका फल मिलेगा यहां तो जो कुछ दिव्यशरीर से पृथ्वीपर बुद्धिमानों से कियाजाता है वही भोगने को मिलता है इससे यह शरीर तुम्हारा छूटजायगा फिर मर्त्यलोकमें जन्म होगा वहां के किये हुये कर्म्म तुरन्त फल देते हैं २१ । २२ इससे तुम पुण्य करके उत्तम फल पाओगी अट्ठाइसयें द्वापर में तुम मछली के पेटसे उत्पन्न होओगी २३ सो उसमें भी पितरों का व्यतिक्रम करने से नीचजाति के घरमें कुछ दिनोंतक रहनाहोगा परन्तु मछली के पेटसे राजावसु के वीर्य्य से

होओगी २४ जिसके कारण दुर्लभ देवलोक पाओगी क्योंकि विवाह होनेके प्रथमही जब कन्या रहोगी तभी पराशर मुनिके वीर्य्यसे एक पुत्र तुम्हारे होगा २५ जिससे कि वहपुत्र तुम्हारे बदरीके वृक्षों सहित नदीके द्वीप में होगा इससे उसका बादरायण व द्वैपायन नाम होगा वह तुम्हारा पुत्र वेदके कई विभाग करदेगा २६ फिर तुम्हारा विवाह पौरववंशी राजा शन्तनुके संगहोगा उनसे चित्राङ्गद व विचित्रवीर्य्य दो पुत्र उत्पन्नकरके फिर पितृलोकको चली आओगी तब तुम्हारा प्रौष्ठपद्यष्टका एक नाम होगा २७ । २८ पितृलोक में अष्टका व मर्त्यलोक में सत्यवती नाम होगा जो कोई भाद्रमास की पूर्णमासीको अष्टकाश्राद्ध करेगा उसको आयु आरोग्य व सब कर्मों केफल तुम नित्यही दोगी २९ जब सत्यवतीका देह छूटजायगा तो उससे सुपुण्यदायक जलयुक्त नदियों में श्रेष्ठ अच्छोदा नाम नदी तुम मर्त्यलोकमें होकर बहोगी ३० इतना कहकर पितृगण सब वहीं अन्तर्द्धान होगये व अच्छोदाने अपने व्यभिचारके दोषसे बहुत दिनों तक उसका फल भोगा ३१ व सात जो पितरोंके गण तुमसे हमने बताये उनमें एकतो अग्निष्वात्ता हुये जिनकी कथा यह कही दूसरे बर्हिषद नाम पितृगणहुये ३२ जहां ये बर्हिषद रहते हैं वहां बर्हिषद नाम हजारों विमान भी रहते हैं व बहुतसे ऐसे वृक्ष रहते हैं कि उनके तीर जातेही सब सङ्कल्प सिद्ध होजाते हैं ३३ व जो कोई इसलोकमें अपने पुरुषों के लिये श्राद्ध तर्प्पण करते हैं उनके सुख आनन्द करनेके लिये वहां परम मनोहर स्थान बने हैं दानव, देवता, गन्धर्व्व, अप्सरा ३४ यक्ष, राक्षस ये सब उन लोगोंकी सेवा किया करते हैं और वहां हमारे अर्थात् पुलस्त्य के हजारों पुत्र तपस्या और योगके बलसे युक्त ३५ महात्मा महाभाग और भक्तोंके अभय करनेवाले विद्यमान रहते हैं इन लोगों के भी स्वर्ग में एक दिव्य रूपिणी मानसी कन्याथी ३६ उसका योगिनी नामथा यह बड़ा योगाभ्यास करतीथी उसके योगाभ्यास व तपसे प्रसन्नहोकर ब्रह्मा जीने आय दर्शन देकर कहा हम प्रसन्नहैं जो चाहो वर मांगो ३७ तब उसने कहा यदि आप हमारे ऊपर प्रसन्न हैं तो हमको जिते-

रूसकी लकड़ी ये पितृकार्यों में न दे ऐसेही भेड़ी बकरीका दूधभी न देना चाहिये ६५ कोदो मकरा वा म्यड़ुआ कैथा महुआ अलसी ये भी जो कल्याण चाहे तो पितरों को न दे ६६ पितरोंको जो भक्ति से प्रसन्न करताहै उसे पितर भी सन्तुष्ट होकर पुष्टि, अंगकी आरोग्य सन्तान देकर तृप्त करते हैं ६७ देवकार्य्य से पितृकार्य्य विशेष है क्योंकि जो कुछ देना होताहै प्रथम पितरों को दियाजाता है फिर देवताओंको इसका कारण यह है कि ६८ पितर शीघ्र प्रसन्न होते हैं क्रोध कभी करते नहीं निस्सङ्ग रहते अपने साथ बहुत भीर भाड़ नहीं रखते सौहृद उनमें अचल रहता है शान्तचित्त होते पवित्रता में सदा तत्पर रहते निरन्तर प्रिय वचन बोलते ६९ भक्तों के ऊपर अत्यन्त प्रीति करते सुख देते हैं इससे प्रथम के देवता पितरही हैं व सब देवताओं के स्वामी श्राद्ध के देवता सूर्य्य हैं ७० ॥

चौ० यहपवित्रपितृवंशबखाना । पुण्यअरोग्ययशस्यमहाना ॥
सदापुरुषकीर्त्तनकेलायक । सकलभांतिसुखसदनसुहायक ७१

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि पुलस्त्यजी के मुखसे इसप्रकार श्राद्ध का विधान सुनकर भीष्मजीने फिर श्राद्धही का विषय पूँछा कि हे महाराज श्राद्धका काल उसका विधान श्राद्धोंके सबनाम ७२ श्राद्ध में भोजन करानेके ब्राह्मण व उसमें वर्जित ब्राह्मणों के लक्षण बताइये किस दिनके भागमें श्राद्ध करना चाहिये ७३ श्राद्ध में तो यहां दिया जाता है पर पितृलोक में कैसे पितरों के समीप पहुँचता है फिर किस विधिसे श्राद्ध करना चाहिये कि जिससे पितृगण तृप्तहों उसका क्रम भी बताइये ७४ यह सुनकर पुलस्त्यजी बोले कि अन्न जल दुग्ध मूल फलादिकों से पितरों को प्रसन्न करते हुए श्राद्ध प्रतिदिन करना चाहिये ७५ नित्य नैमित्तिक काम्य श्राद्ध तीन प्रकार के होते हैं उनमें प्रथम नित्यश्राद्ध कहते हैं इसमें अर्घ्य व आवाहन नहीं होता ७६ व न विश्वेदेव इस में होते हैं और पार्व्वणश्राद्ध पर्व्वों में होते हैं वे तीन प्रकार के हैं राजन् चित्त लगाकर सुनिये ७७ प्रथम पार्व्वण श्राद्ध में नियोजित करने के योग्य ब्राह्मणों का वर्णन करते हैं पञ्चाग्नि तापने वाले वेद मन्त्र

पढ़ २ कर स्नान करनेवाले त्रिसौपर्णादि ऋचा पढ़नेवाले षडङ्ग वेद पढ़े हुये ७८ वेदानुसार कर्म्म करनेवाले वा वेदानुसार कर्म्म करनेवाले के पुत्र जितने वेद शास्त्र के विधान हैं उनके जाननेवाले हों सर्वज्ञ, वेदपाठी, मन्त्र जपने वाला, ज्ञानी, अच्छे कुलमें उत्पन्न ७९ चाहे तीन वेद पढ़ा हो वा दो वा एक वा त्रिमधु आदि मन्त्रही पढ़ा हो व आपभी वेदानुसार कर्म्म करताहो अष्टादश पुराणों में से किसी पुराण का वक्ता ब्रह्मजाननेवाला वेद शास्त्र रामायण पाठी गायत्र्यादि मन्त्र जपने में तत्पर ८० ब्राह्मणों का भक्त, पिता, माता की सेवा में तत्पर सूर्य्य का भक्त वैष्णव ब्राह्मण योगशास्त्र में निपुण, विनीत, नम्रस्वभाव सुशील, ८१ इतने ब्राह्मण श्राद्धमें भोजन करानेके योग्यहैं अब जो वर्ज्जित हैं उनका वर्णन करते हैं सुनो पतित जो अपनी जाति से भ्रष्ट होगया हो वा पतित का पुत्रहो, नपुंसक, चुगुल, अङ्गहीन, काना, अन्धा, पँगुला लँगड़ादि, रोगी, ८२ ये सब श्राद्धके भोजनमें क्या उस समय आने में भी वर्ज्जित हैं जिस प्रकार के ब्राह्मण भोजन कराने को कहचुके हैं उनको चाहे एक दिन प्रथम निमन्त्रित करआवे चाहे उसी दिन प्रातःकाल ८३ जब से श्राद्ध के लिये ब्राह्मण निमन्त्रित होते हैं तभी से पितर जाय उन के समीप स्थित होते हैं व पवन का रूप धारण कर उनके भीतर पैठ जाते हैं और बाहर भी गुप्त शरीर होकर उन के लगे बैठे रहते हैं ८४ जब ब्राह्मणको न्योतने के लिये जाय तो अपनी बाईं जांघ झुकाय उस का दहिना चरण पकड़ कर बैठकर यह मन्त्र पढ़े कि ॥

चौ० क्रोधरहितकृतशौचनहाई । ब्रह्मचर्य्ययुतश्रुतिपदगाई ॥

आयहुश्राद्धमाहिंकरिनेहू । कहतविनययुतमनधरिलेहू १

करिपितृमखतर्पणपुनिकरई । पिण्डविसर्ज्जनफिरअनुसरई ॥

श्राद्ध कर्म्मजबकरैअरम्भू । तबतेत्यागदेयसबदम्भू २

जबश्राद्ध करनेकाप्रारम्भकरना होतो प्रथम गोबरसे दक्षिणावर्त्त चौका लगावे वा लगवावे वहांभक्तिसे श्राद्ध करनेकाआरम्भकरे अथवा जहां गायें बांधीजाती हों वा जलका किनाराहो वहां करे जब अग्नि बारे तो खीर बनावे अथवा सत्तू लेकरश्राद्ध करे खीर वा

सत्तूको हाथमें लेकर कहे ८५ । ८८ कि हम इससे पितरोंका श्राद्ध करतेहैं फिर दक्षिण दिशामें धरदे उसमें घृतादि मिलावै फिर तीन डौआ खैरके बनवाय कुछ उनमें चांदी भी लगाय वहीं स्थापितकरे ये डौवे हाथ २ के लम्बे और चार अंगुल चौड़े होने चाहिये सुन्दर चीकने गढ़े गढ़ायेहों अग्र उनके हाथके आकारहों जल श्राद्ध करनेके लिये जितना आवे सब कांस्य के पात्रोंमेंही आना चाहिये होम करने के लिये लकड़ियां व कुश जैसे शास्त्रों में लिखे हैं वैसे होने चाहिये ८९ । ९१ तिलके पात्र, अच्छा नवीन धुलाहुआ वस्त्र, चन्दन, धूप, दीपके लिये बत्तियां अन्य कर्प्पूरादि युक्त अनुलेपनके लिये अग्गजादि जो वस्तु वहां लावे सब अपसव्य होकरही लावे सव्य होकर नहीं ९२ इस प्रकार सब श्राद्ध की वस्तु इकट्ठाकरके उत्तर दिशाको छोड़ अन्य जिस किसी दिशा में घर में धरदे फिर गोबरसे लिपीहुई व गोमूत्र छिरकी हुई भूमिमें ९३ अक्षत पुष्प जल आदि सब स्थापित करे जो वस्तुवें विश्वेदेवों के लिये स्थापित की जायँ वे सव्य होकर व जो पितरोंके लिये वे अपसव्य होकर प्रथम कुशादि आसनों पर बैठेहुये विश्वेदेव ब्राह्मणों के बार २ प्रणामकर उनके चरण कमल विधिपूर्व्वक धोवे उन पादधोयेहुये ब्राह्मणों को अच्छीतरह बैठाय फिर उनसे सम्मत पूँछे सो भी बहुत धीरेसे जोर से नहीं ९४ । ९५ विश्वेदेवों के निमित्त दो ब्राह्मण होने चाहिये व व पितरों के लिये तीन व मातामहादिकों के लिये तीन ये आठहुये यदि इतने न मिलें तो दो विश्वेदेवों के लिये व एक पितरों के लिये व एक मातामहादिकों के अर्थ बस चाहे बड़ाभारी धनाढ्य भी हो पार्व्वण श्राद्धमें बहुत विस्तार न करे क्योंकि श्राद्धमें भोजन करने के योग्य ब्राह्मण बहुत नहीं मिलते यदि मिलें तो अधिक भी भोजन करावे प्रथम विश्वेदेव ब्राह्मणों की अर्घ्य पाद्याचमनीयादि से पूजाकरे तदनन्तर ब्राह्मणों की आज्ञासे विधिपूर्व्वक अग्नि में आहुतिदे ९६ । ९७ होम करने के समय अपने गृह्याग्निके विधान से सब रीति करके अग्नीषोमादि दो मन्त्रों से आहुति का प्रारम्भकरे ९८ प्रथम दक्षिणाग्नि में आहुति दे वह सव्य होकरहीदे इसप्रकार

पर्युक्षणादि करके फिर अपसव्य होकर दक्षिणको मुख करके पितरों के अर्थ उसी अग्निमें आहुति दे तदनन्तर पिण्ड बनाय तिल अक्षत जल सहित हाथ में ले पिण्डदान करे पर पिण्ड देने के समय अपनी इन्द्रियोंको अच्छे प्रकार दमन कियेरहे व मद मोह ईर्ष्यादि से रहित होजाय ९९।१०१ पिण्ड देनेका क्रम यहहै कि प्रथम वेदी बनाय उसपर रेखाकर अङ्गार भ्रमण कराय कुश बिछाय अवनेजन के लिये जलमोटक से आसन दे दक्षिण को मुख कर सजलाक्षत पिण्डदानकरे सो क्रमसे जितने पिण्ड देनेहैं उतनेमोटकों के आसन प्रथम दे फिर प्रत्येकका नाम गोत्र प्रवर वेद शाखादि उच्चारणकरके एक २ पिण्ड सबको दे फिर वह अपना पिण्ड दियाहुआ हाथ उन सब आसनवाले कुशोंमें लेपभाग भोजन करनेवालों के लिये पोंछे व उनका मन्त्र भी लेपभाग भुजस्तृप्यन्तु यह पढ़तारहे तदनन्तर प्रत्यवनेजन करे अर्थात् जो जल दोनों में अवनेजन के समय प्रत्येक पिण्ड के लिये धरा गया था उस प्रत्येक से प्रत्येक पिण्ड को स्नान करावे फिर गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्यादि दें फिर वैदिक मन्त्रों से प्रत्येक पितृपितामह प्रपितामह मातामहादिकों का आवाहन स्मरण करे इस प्रकार पित्रादिकों को दे फिर मात्रादिकों को दे उनके देने में भी उसी प्रकार प्रत्येक के लिये कुशासनादि अवनेजन दे प्रत्येक को नाम गोत्रादि के उच्चारण के साथ पिण्ड दान करे इनके आवाहन में भी जिस ब्राह्मण का आवाहन उसके पति के लिये हुआ है उसी ब्राह्मण का आवाहन पूजनादि होना चाहिये उसका क्रम यह है कि प्रथम उन ब्राह्मणों के हाथोंमें कुश जलादि दे फिर उनके हाथों पर स्त्रियों के नाम के पिण्ड दे स्त्रियों को पुरुषों के प्रथम कभी न पिण्ड देना चाहिये न पितरोंके अन्नका खट्टा मीठा आदि स्वादु बखान करना चाहिये १०२।१०८ और अन्नदेने के समय क्रोध न करे जबसे हाथमें पिण्डदेनेके लिये उठावे बराबर श्रीनारायण हरिका स्मरण करतारहे स्वादु चाहे वर्णनभीकरे पर अस्वादुका वर्णन तो किसीप्रकार न करे क्योंकि उसके सुनतेही पितर निराश होकर चलेजाते हैं इस प्रकार श्राद्ध

कर जब पितरोंको खनाय तृप्तजाने तो उनको फिर कुछ थोड़ा२अन्न जलादि दे उसमें अन्न प्रथम देकर फिर जल पृथ्वीपर छोड़ दे फिर स्वधा बाचनवाले कुश उठाय उनके सङ्ग अन्न जल पुष्प अक्षत चन्दनादि और भी विधिपूर्वकदे यह सब पिण्डके ऊपर छोड़े अलग नहीं प्रत्येक वस्तु देनेके लिये वेदका मन्त्र पढ़ना चाहिये नहीं तो श्राद्धका नाश होजाता है प्रथम पितृब्राह्मणों का विसर्ज्जन करना चाहिये फिर देवब्राह्मणों का विसर्ज्जनके समय उन दोनों प्रकारके ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा करनी चाहिये प्रदक्षिणा करने के पीछे उन ब्राह्मणों में पितरों के रूपका ध्यान करके यह विचारे कि जो कुछ दिया खवाया पियाया वह पितरोंको पहुँचगया इससे दक्षिणको मुख कर पितरों से हाथ जोड़कर यह कहे कि १०९।११२॥

चौ० दाताबहुतबढ़हिंकुलमोरे। सन्ततिवेदबहुबढ़हिंनथोरे॥
श्रद्धाहोय हमारेनीकी। बहुतदानदेंविधिठीकी १। ११३
बहुतअन्नहमरेगृहहोई। अतिथिआयपुनिफिरैंनकोई॥
याचकमांगहिंहमसेपावहिंहमनकाहुसोंयाचनजावहिं२।११४

वस अग्निहोत्रादि करनेवाला ब्राह्मण इस प्रकार से पार्व्वण श्राद्धकरे व ऐसेही प्रत्येक अमावास्या के दिनभी पार्व्वणही के विधानसे श्राद्ध करना चाहिये ११५ श्राद्धके पिण्ड गाय, बकरी व ब्राह्मण को दे देना चाहिये अथवा अग्नि में डालदे वा जल में ब्राह्मण न ग्रहण करे तो उसके समीपही धरदे नहीं तो सबसे उत्तम जलमें फेंकनाहै ११६ यदि अपनी स्त्री पिण्ड खानेके लिये प्रार्थना करे क्योंकि उसके खाने से पुत्र होता है तो उसे मध्यका अर्थात् पितामह वाला पिण्ड दे व (आधत्त पितरोगर्ब्भम्) यह मन्त्र पढ़े जिसका अर्थ यह है कि पितरलोग गर्ब्भ धारण करावें यह पिण्ड सन्तानके बढ़ानेवाला है ११७ श्राद्धमें देना पूजादि तभीतक रहता है जबतक कि विश्वेदेव ब्राह्मण विदा नहींहोते इस रीति से पितृकार्यसे निवृत्त होकर फिर वैश्वदेवकर्म्म करना चाहिये ११८ तदनन्तर फिर अपने इष्टपुत्र पौत्र भाई बन्धुओं व मित्रादिकों के संग जैसे पदार्थ श्राद्धवाले ब्राह्मणों को खिलाये पिलाये हों वैसे ही

भोजनकरे करावे व श्राद्ध करनेवाला तथा श्राद्धमें भोजन करनेवाले ब्राह्मण नीचे लिखेहुये कार्य्य न करें ॥

चौ० पुनिभोजनअरुचलननकरहीं। भारनलादहिंमैथुनतजहीं ॥
मानकरहिंजनिशास्त्रनपढ़हीं।कलहतजैंदिनशयननचरहीं॥११९।१२०

इस विधि से अग्निहोत्रादि यज्ञ करनेवाले ब्राह्मण को नित्य श्राद्ध करना चाहिये क्योंकि गृहस्थ को श्राद्ध करना अर्थ धर्म्म काम तीनोंको सिद्ध करताहै अब इसके पीछे श्राद्धके साधारणकाल जो ब्रह्माजी ने कहेहैं उनका वर्णन करते हैं वे भुक्तिमुक्ति सब कुछ देतेहैं कन्या, कुम्भ और वृषकी संक्रान्ति सब अमावास्या व सब संक्रान्ति आश्विनकी कृष्णनवमी अगहन की अष्टमी सब पूर्णमासियां १२१।१२४ जिस दिन आर्द्रा, मघा व रोहिणी नक्षत्रहो जब अच्छीश्राद्ध के योग्य वस्तु मिले या श्राद्धमें भोजन करानेके योग्य वेदशास्त्र पुराणादि पढ़ा ब्राह्मण मिलजावे जहां हाथीकी छाया पड़तीहो व्यतीपात योग जिस दिनहो भद्रा, वैधृति जिस दिनहो १२५ वैशाखकी शुक्ल तृतीया व कार्त्तिक की शुक्लनवमी के दिन माघकी पूर्णमासी,भाद्रपदकी शुक्लत्रयोदशी १२६ये तिथियां युगादि कहाती हैं व सब पितरों का उपकार करनेवाली हैं इसी प्रकार जो मन्वंतरों के आदिकी तिथियां हैं वे भी पितरों का उपकार करती हैं १२७वे येहैं आश्विनकी शुक्लनवमी, कार्त्तिक की शुक्लद्वादशी, चैत्रशुक्ल तृतीया व भाद्रपद की भी शुक्लतृतीया १२८ फाल्गुनकी अमावास्या, पौषकी शुक्ल एकादशी, आषाढ़शुक्ल दशमी,माघ शुक्लसप्तमी १२९ श्रावण कृष्णाष्टमी, आषाढ़की पूर्णमासी, कार्त्तिक फाल्गुन व ज्येष्ठ की पूर्णमासी १३० ये जितनी मन्वन्तरादि तिथियां हैं इन में जो कुछ पितरों के अर्थ वा औरही किसी के लिये दियाजाता है सब अक्षय होजाता है उसका नाश कभी नहीं होता ॥

हरिगीतिका ॥

इनतिथिनमहँतिलसहितजलहू प्रयतचितह्वैकैकभूं ।
जो देत पितर निमित्तनरवर मनहुँ श्राद्धकरीसभूं ॥
सो सहसवर्ष प्रमाणके सब कीनश्राद्ध न शङ्कहू ।

इमि पितरगावतनहिंकहावत कहतदेकेंडङ्कहू १ ॥
वैशाखकी पूर्णमासी को व्रत रहकर श्राद्धकरना चाहिये व आश्विन कृष्णपक्ष को महालय कहते हैं उसमें भी प्रतिदिन जबतक श्राद्ध तर्प्पण न करले तबतक कुछ खाना पीना न चाहिये व पन्द्रह दिनतक ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये १३१ । १३२ व जिस किसी तीर्थ में जिस किसी तिथि में पहुँचे तीर्त्थश्राद्धकरे गृहमें गोशाला द्वीप फुलवाड़ी बाटिका श्राद्धके योग्य स्थानहैं जहांकहीं श्राद्धकरे एकान्त स्थल व गोबरसे अच्छीतरह लीपहीकरकरे १३३ जिस दिन श्राद्ध करना हो उसीदिन प्रातःकाल वा उसके एक दिन पहिलेकी सन्ध्याको ब्राह्मणोंका निमन्त्रण करना चाहिये परन्तु वे सब अच्छे प्रकार वेद शास्त्र पुराण धर्म्म शास्त्र पढ़ेहों शीलसदाचार व उत्तम गुणोंसे संयुक्तहों अवस्था भी तीसवर्ष से अधिक हो रूपवान् भी अवश्यहों १३४ इसीसे लिखाहै कि विश्वेदेवों के लिये दो ब्राह्मण व पितरों व माता महादिकों के लिये तीन २ अथवा दो विश्वेदेवों के लिये एक पितरों के अर्त्थ व एक माता महादिकों के लिये सब चारही ब्राह्मण जैसे ऊपर लिखेहैं खिलावे चाहे बड़ा सम्पन्नभी हो पर श्राद्धमें बहुत बिस्तार न करे १३५ अब श्राद्ध करने का क्रम ठीक ठीक बताते हैं कि प्रथम विश्वेदेव ब्राह्मणों का आवाहन पूजनादि करे उनके लिये दो दोने धरे उनमें एक एक कुशकी पवित्रक धरे फिर (शन्नोदेवीरभीष्टये) इस मन्त्रसे उसके ऊपर जल छोड़े व (यवोऽसि)इत्यादि मंत्रसेयवछोड़े फिर गन्ध,पुष्प,तुलसी,ताम्बूलादि से पूजाकर विश्वेदेवों के स्थानपर दोनों पात्र धरे १३६।१३७ तदनन्तर (विश्वेदेवास) इस मन्त्रसे आवाहन करे मन्त्र पढ़कर यव उसी स्थानपर छोड़े यवसे यह प्रार्त्थनाकरे कि हे यव तुम सब अन्नों के राजाहो वरुण ने तुममें मधु मिलायाहै १३८ हमारे सब पापोंको दूरकरो क्योंकि तुम पवित्रहो इसी से ऋषिलोग सब धान्यों से अधिक तुम्हारी स्तुति करते हैं ऐसा कहकर उन दोनों विश्वेदेव पात्रोंकी पूजा चन्दन पुष्पादिकों से करके (यादिव्याआपः) इस मन्त्रसे अर्घ्यदे १३९ फिर अच्छी तरह से पूजेहुये विश्वेदेवों को

छोड़पितरोंके यज्ञका प्रारम्भकरे अपसव्यहो कुशसे आसन दे उन के आगे तीनपात्र धरे १४० उनमें पवित्रक धरके(शन्नोदेवीः)इत्यादि मन्त्रसे जलछोड़े फिर (तिलोसि) इत्यादि मंत्रसे तिल चढ़ावे फिर तीनमेंसे पहिलेवालेपात्रमें चन्दन और पुष्पादिक चढ़ावे १४१ पात्र चाहे आम्रके काष्ठके बनावे वा पलाश के पत्तेके अथवा चांदीके वा समुद्रकी सीपीके १४२ पितरों के पात्र सोने चांदी व ताम्रके बनाने चाहियें उनमें भी चांदी के मुख्य हैं इसीसे उनके आगे चांदी की कथा कहनी और दर्शनचांदी के चाहिये व चांदीही उनके दान में भी देनी चाहिये १४३ चांदीही के पितरों के पात्र चाहिये व उसी की शलाकासे पितरोंके लिये रेखाखींचनी चाहिये क्योंकि चांदीके पात्रमें पितरों को श्रद्धा पूर्व्वक जलभी दो तो अक्षय तृप्ति करता है १४४ इसीसे अबभी जितने पितरहैं उनका चांदीहीका पात्रबनाया जाताहै क्योंकि यह चांदी शिवजीके नेत्रसे उत्पन्नहै इससे अति उत्तम होनेके हेतु पितरोंको अतिप्रिय होतीहै १४५ इस रीतिसे कहे हुये चांदी आदिके पात्रोंमें जिसके मिलनेका सम्भव हो उसके पात्र बनाय अहङ्कार रहितहो पवित्रक जल, गन्ध, पुष्पाक्षत, तुलसी पत्रादिसे पूरितकर (यादिव्याः) इत्यादि मन्त्रसे १४६ पिताकेनाम गोत्र वेद प्रवरादिका उच्चारणकर कुशके ऊपर छोड़े फिर(पितॄनहमावाहयिष्ये) इस मन्त्रको धीरे धीरे पढ़ताहुआ (उशन्तस्त्वा) इस कोपढ़े इस रीतिसे पितरोंका आवाहन करे १४७ फिर (यादिव्याः) इत्यादि मन्त्रसे अर्घ्यदे भोजनपात्र पर गन्ध पुष्प अक्षत धूप दीपादि करे वस्त्र चढ़ावे इस तरह सब पूजाकरके प्रत्येक के लिये पृथक् पृथक् सङ्कल्पपढ़े १४८ फिर पितृपात्रोंको क्रमसे एक दूसरे में कर पितरों की बाईओर (पितृभ्यस्स्थानमसीति) मन्त्रसे उन को न्युब्जीकरण अर्थात् उलटे करके धरे १४९ वहांभी पहिले अग्नौकरण करे अर्थात् अग्निमें विधिपूर्व्वक हवनकरे पीछे दोनों हाथोंसे अन्न जल घृत मध्वादि भोजनपात्र पर छोड़े इसीका परिवेषण नामहै परिवेषण की सब सामग्री यह हैं अच्छे पवित्र काले तिल, कुश, गुणकारीशाक और नानाप्रकार के भक्ष्य पदार्थ जो

उत्तम उत्तम हों १५० । १५१ नाना प्रकारके अन्न, दधि, दुग्ध, गऊका घृत, शर्कराआदि भोजनके सब दिव्यपदार्थ अन्ययुगों में पितरों को मांसभी दियाजाता था पर कलियुग में वर्जित है जिन में दिया जाता था उनकी यह व्यवस्थाथी कि पितरों को सब में अधिक मांसही तृप्तकरता है और कुछ नहीं ऐसा वामनाचार्य्य ने कहा है १५२ मछली के मांससे पितर दो मासतक तृप्त रहते थे हरिण के से तीनमास तक भेड़के से चारमासतक पक्षियों केसे पांचमासतक १५३ लालमृग केसे छःमासतक श्यामरंगके हरिणसे सातमासतक छागकेसे आठमासतक १५४ पृषतनाम हरिण के से नवमास तक शूकर व भैंसेकेसे दशमासतक १५५ चौगड़ा और कछुहेकेसे ग्यारहमास तक व वर्ष दिनतक गायके दूधसे व उसीके दूधसे बनाई हुई खीरसे बारह महीने तक १५६ वार्घ्रीणसके मांस से बारह वर्ष और गैंड़के मांस से सदाकेलिये तृप्ति रहतीथी उसके चर्म्म के पात्रसे व अंगुली में उसके चर्म्म की अँगूठी पहिनकर श्राद्ध करने से इस कलियुगमें भी पितरोंकी तृप्ति सदाके लिये रह तीहै और मधु मिलाया हुआ गायकादुग्ध दधि पायस१५७।१५८ सबसे अधिक प्रीतिकारक सब युगों में था व इस कलियुग में तो विशेष इसी से पितरों की तृप्ति होती है मांस की तो इस युग में वार्त्ता ही नहीं यह बात पितरों ने अपने मुखसे कही है कि हमारी जैसी तृप्ति गायके दुग्ध, घृत, दधि, मधु से बनाई हुई खीरसे है ऐसी किसी भी पदार्थ से नहीं इससे सब पदार्थों को छोड़ गोदुग्ध घृतादिकही से हम लोगोंका श्राद्ध करना चाहिये इस प्रकार परि-वेषण करके पितरोंको वेद अष्टादश पुराण ब्रह्मा विष्णु रुद्रके नाना प्रकार के स्तोत्र सुनावें इन्द्र और रुद्रके सूक्त पावमानी सोमसूक्त सहस्रशीर्षा के मन्त्र १५९ । १६० बृहद्रथन्तर जो कि ज्येष्ठसामसे बड़ी गुरुताके साथ पढ़ाजाता है सुनावे इसी रीतिसे शांतिकाध्याय व मधुब्राह्मण व मण्डलब्राह्मण व जो कुछ श्राद्धभोजी ब्रह्मणको अ-त्यन्त प्रिय हो जो श्राद्धकर्त्ता को अत्यन्त प्रियहो श्रद्धासे सुनावे प्रायः जो कुछ उन ब्राह्मणों को व अपने को प्रियहो वहीवेदपुराण

धर्म्म शास्त्रादि सुनाने चाहिये जिनसे दोनों की अरुचि हो कभी न पितरों को सुनाना चाहिये १६१। १६२ जब अच्छी तरह भोजन करके श्राद्धके ब्राह्मण तृप्तहों तो भारत उनको सुनाया जाय क्योंकि इसके समान पितरों को और कुछ प्रियतर नहीं है जब ब्राह्मण भोजन करचुकें तो उनका उच्छिष्ट अन्न जल अधम पितरोंको पृथ्वी पर कुशके ऊपर दियाजाय व मन्त्र यह पढ़ाजाय कि १६३। १६४

दो० अग्निदग्धजोजीव वा नहींदग्धकुलमाहिं ॥
भूमिदत्तजलअन्नसों तृप्तपरमगतिजाहिं १। १६५
जिनकेमाताजनकबँधु मित्रआप्तकोनाहिं ॥
तिनतर्प्पणहितअन्नजल दीनलेहिंहरषाहिं २। १६६
मरेजौन संस्काराबिन ममकुलभागीलोग ॥
जूंठोचाहत भागतिन हितकुशआसनयोग ३। १६७

इसप्रकार जब उन अधम पितर विकरों को भोजनसे तृप्तजानें तो फिर कुछ थोड़ा जलदे पर वह विना लिपीहुई भूमिपर छोड़े सो भी गायके गोबर और उसीके मूत्रसे मिलाहुआ १६८ फिर इसके पीछे विधिपूर्व्वक प्रदक्षिणक्रमसे वेदीके ऊपर कुशाबिछाय अपने वर्णके अनुसार पित्रादिकोंको व मात्रादिकोंको विधिपूर्वक पिण्डदान दे १६९ पहले मनुष्य नाम और गोत्रका उच्चारण कर अवनेजन कर फूलआदिकों को देकर प्रत्यवनेजन करे १७० सव्य अपसव्य का विचार कियेरहे देवताओंका कार्य्य सव्य होकरकरे व पितरोंका अपसव्य होकर जैसेही पित्रादिकोंका श्राद्ध करे वैसेही मात्रादिकों का भी करना चाहिये १७१ दीपकका बारना पुष्पादिकों से पूजन करना भोजन करनेपर आचमन कराना अक्षत जल फूल तिल अक्षय्योदकादि देना सब पितृमातृश्राद्ध में समान होताहै क्या पितृश्राद्ध क्या मातृश्राद्ध सबमें अलग२ प्रत्येक के लिये दक्षिणा देनी चाहिये पर उस में अपनी २ शक्तिके अनुसार दक्षिणा दीजाती है शक्तिहो तो प्रत्येक के लिये १७२। १७३ गाय, पृथ्वी, सुवर्ण, वस्त्र चित्र विचित्र बिछौनादे उस में इस बातका बड़ा विचार रक्खे कि बहुधा जो पदार्थ अपने को प्रियहों वा ब्राह्मणों को प्रियहों और

पितरोंको जो२हितकारीहों वेही पदार्थ दे १७४ देने में वित्तशाठ्य न करे कि सामर्थ्य तो सहस्रों रुपये देनेकीहो और दो पैसेही द-क्षिणादें नहीं जैसी शक्तिहो उसके अनुसार देने से पितर प्रसन्न होते हैं अन्यथा कोप करतेहैं इसप्रकार पितरोंको देकर फिर विश्वे-देवोंकेलिये स्वधावाचन करे उनको स्वधावाचनोदक १७५ देकर उन से आशीर्वाद ग्रहणकरे तदनन्तर (अघोराः पितरस्सन्तु) यह पढ़े फिर ब्राह्मणलोगभी कहें कि (सन्तु) हों १७६ फिर कहे कि (गोत्रन्नो वर्द्धताम्) हमलोगों का गोत्र बढ़ाओ तब ब्राह्मणलोगभी कहें कि अच्छा बढ़े फिर कहे कि हमलोगों के यहां दातालोग बढ़ें वेद पाठ बहुत हो सन्तति बढ़े इतनी सत्य आशिषेंहों ब्राह्मणलोग कहें कि ये सब बातें तुम्हारेहों इसके पीछे गृह में जाय बलिवैश्वदेवादि नित्य कर्म्म करे धर्म्मकी यही व्यवस्था है १७७ । १७८ श्राद्ध में और यदि किसी कपट और मूर्खता हीन सेवक के लिये पिण्डादि देनाहो तो उसी श्राद्धसे बचीहुई जूठी वस्तुसे पिण्ड बनाय भूमिमें छोड़देना चाहिये १७९ पितरों ने दासोंके लिये यही तृप्त होनेका विधान कहाहै व जो स्त्रियां वंशकी व्रत और पुत्रके विना मृतक हुई हैं उनके लिये भी उसी उच्छिष्ट सामग्रीसे पिण्ड देना चाहिये १८० जब इस रीतिसे सबको पिण्डदेहो तो जलपात्रको ग्रहणकर (वाजे वाजे) इत्यादि मन्त्रपढ़कर पितरोंका विसर्ज्जनकरे १८१ फिर श्राद्ध स्थानके बाहर २ आठ पैगजाकर प्रदक्षिणाकरे प्रदक्षिणाके समय अपने पुत्र बन्धु व स्त्रीको भी सङ्गलेले तब करे १८२ इसप्रकार प्रद-क्षिणा करके जब निवृत्तहो तो बलिवैश्वदेवादि सब नित्यकार्य्य करे १८३ वैश्वदेव कर होने के पीछे अपने पुत्र दासगण भाई बन्धु व अतिथियों के सङ्ग उसदिन वैसेही पदार्थ भोजन करे जैसे कि ब्रा-ह्मणोंको खिलाये हों १८४ पार्व्वण एकोद्दिष्टादि सब श्राद्ध जिसका पिता जीता न हो चाहे उसका यज्ञोपवीत न भी हुआहो तो वहभी करसक्ताहै उसेभी वहीफल मिलेगा जो उपवीत संस्कार होनेवालेको श्राद्ध करनेसे मिलता है श्रीरहित पुरुष व विदेश में टिकाहुआ भी पुरुष वहीं सब श्राद्धादि करसक्ताहै १८५ शूद्रभी विना वेदमन्त्रों के

पढ़े सब श्राद्ध करसक्ताहै उसके लिये भी विधान यही है जो ऊपर कह चुके हैं इन श्राद्धों को छोड़ एक अभ्युदयिक श्राद्ध होताहै वह पुत्र के उत्पन्न होने व यज्ञोपवीत विवाहादि मङ्गल कार्यों में किया जाताहै वहभी अवश्यही करना चाहिये इस श्राद्धमें माता पितामही प्रपितामहीका पूजन प्रथम होताहै फिर पिता पितामह प्रपितामहों का १८६।१८७ तदनन्तर मातामहादिकों का इसमें भी विश्वेदेवों की पूजा होतीहै इसमें दक्षिणावर्त्तकी रीतिसे दधि, अक्षत, फल, जल सेही पिण्डदान होताहै अन्य श्राद्धों के समान खीर सत्तू आदि के पिण्ड नहीं दियेजाते १८८ और पूर्वहीको मुखकरके सबमातृ पितृ मातामहादिकों की पूजा होती है (सम्पन्न) इस मन्त्रसे मात्रादिकोंके अर्घ्यपात्र अलग देने चाहियें व पित्रादिकों के अलग ऐसेही माता-महादिकोंके भी अलगही अलग १८९ स्त्रियोंकी पूजा वस्त्र व सुवर्णसे करनी चाहिये तिलों के स्थानमें सब कार्य्य यवोंसे करना चाहिये १९० मातृ पित्रादिकों के आगे इस श्राद्धमें सब मङ्गल प्रकरणकेही स्तोत्र पाठादि करनेचाहियें इसप्रकार शूद्रभी इस अभ्युदयिक वृद्धि श्राद्धको सब मङ्गलों के कार्य्यों में करे १९१ पर मन्त्रों के स्थान में केवल प्रत्येक मात्रादिकों के नमस्कारही करे मन्त्र कभी न पढ़ेसुने॥

चौ० दानप्रधानशूद्रकेयागा। कीनविधाता यही विभागा॥
जासोंदानहिंसोंसबकाजा। सिद्धिहोतशूद्रनकेसाजा १।१९२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादेसाधारणाभ्युदयकीर्तनंनामनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

दो० एकोद्दिष्टविधान अरु ब्रह्मदत्तनृपगाथ॥
दशयेंमहँमाहात्म्ययुत श्राद्धकह्योमुनिनाथ १

पुलस्त्यऋषि बोले कि ब्रह्माजी ने जिसे पूर्व्वसमयमें कहाहै वह एकोद्दिष्टनाम श्राद्ध हम तुमसे कहतेहैं जब जिसका पिता मरे पुत्रको दशदिनतक आशौच रहताहै सो ब्राह्मणकेलिये यह बातहै कि यह मृतक सूतकका आशौच दशदिनतक बराबर रहता क्षत्रियको बारह

दिन रहता व वैश्यको पन्द्रहदिनतक ११२ शूद्रोंको मासपर्यंत आशौ-
च होता सो कुछ पुत्रोंकोही नहीं बरन उस मरेहुयेके जितने सपिण्ड
वालेहैं सबको इसीरीतिसे होताहै राजाको एकही रात्रिदिन आशौच
रहताहै व सामान्यरीतिसे सब वर्णोंको तीन रात्रियों में भी शुद्धिहो
सक्तीहै ३ उत्पत्ति में भी ऐसाही आशौचहोताहै और नहीं तो चारों
वर्णोंको बारह दिनतक पूरा आशौच रहताहै इससे चौथेदिन अस्थि
सञ्चयन श्राद्ध करके बारह दिनतक बराबर प्रेतको पिण्ड देतारहे
बहुधा बारह दिनतक यही काम करना चाहिये जो प्रेतके लिये प्रि-
यहो क्योंकि बारहदिनतक प्रेत अपने घरही में रहताहै ४।५ फिर
यमपुरको जाताहै घरमेंबैठाहुआ प्रेत बारहदिनतक अपनी स्त्री पुत्रा-
दिकोंको देखा करताहै ६ इससे दशरात्रितक बराबर उसके लिये
तीन लकड़ियोंके ऊपरपात्रमें रखकर दूध व एकमें जल देनाचाहिये
इस से जो उसका शरीर भस्म किया जाता है व जो उसे मार्ग में
चलनेका श्रमपड़ेगा वह सब शान्त होजाताहै ७ ब्राह्मणको चाहिये
दशयें दिन क्षौरकराय ग्यारहें दिन ग्यारह ब्राह्मणोंको बुलाय उनको
भोजन करावै ८ फिर एकोद्दिष्ट श्राद्ध करें इसमें न तो आवाहन होता
न अग्नौकरण न विश्वेदेव कर्म पर अन्य सब विधान सहित करना
होताहै ९ एकहीतो पवित्रक होता व एकही अर्घ्य व एकही पिण्ड
दियाजाता है सोभी प्रेतका नाम लेकर (उपतिष्ठताम्) पहुँचै यह
पढ़कर तिल जल छोड़नाचाहिये १० स्वस्तिवाचन जल ब्राह्मण
के हाथ में देना चाहिये व (अभिरम्यताम्) इसमन्त्र से विसर्जन
और सब जैसा इस श्राद्धके लिये कह आयेहैं वैसाही करना चाहिये
यह वेद के जाननेवाले कहते हैं ११ इसी विधिसे प्रत्येक महीने में
करै फिर सूतकके अन्त में दूसरे दिन चित्र विचित्र एक शय्यादान
करना चाहिये १२ उसी शय्यापर स्थापित कर फल वस्त्र युक्त से
एक काञ्चन पुरुष की पूजाकर फिर दान करना चाहिये फिर एक
द्विजदम्पती का अनेक प्रकार के आभरणों से भूषित कर अच्छी
तरह पूजकर १३ शय्या पर बैठाय मधुपर्क उसे दे और प्रेत के म-
स्तक का एक सूक्ष्म हाड़ले चूर्णकर चांदी के पात्र में रख दही दूध

मिलाय पिता की भक्ति से उन शय्या पर बैठे हुये स्त्री पुरुष दोनों ब्राह्मणी ब्राह्मणों को पिलावे १४। १५ पर यह विधि बहुधा पर्व्वत पर रहनेवाले ब्राह्मण करते हैं व उन्हीं का सम्मत है कि सब कोई ऐसा करें इस से इस दुष्टशय्या को उत्तम ब्राह्मणों को चाहिये कि कभी न ग्रहणकरें १६ व जो लेताहै वह फिर यज्ञोपवीतादि संस्कार करनेसेही शुद्ध होता है अन्यथा नहीं वेदों व पुराणों में शय्यादान लेना सर्व्वत्र निन्दित है १७ इसी से ऐसी शय्या के लेनेवाले सब नरकही में जाते हैं द्रव्य समूह से युक्त और स्त्री पुरुष से सेवित शय्या को १८ नहीं जानकर भी जे छूते हैं वे सब नरकमेंही जाते हैं उस नव श्राद्ध एकादशाहके दिन कभी न भोजन करना चाहिये यदि कभी भूलसे भोजनभी करे तो चान्द्रायणव्रत करनेही से शुद्ध होता है अन्यथा नहीं १९ पिताकी भक्तिसे सब पुत्रों को यह अवश्य करना चाहिये कि वृषोत्सर्ग करें व एक उजले रङ्ग की सुन्दरी कपिला गाय दान करें २० और वर्षभरतक अन्न जल तिल सहित उदकुम्भ दान भी प्रतिदिन अवश्यही पुत्र करता रहे उसके सङ्ग प्रतिदिन भोजन पानादि के उत्तम उत्तम पदार्थ जो बहुधा उस के पिता को रुचते रहे हों देने चाहियें २१ तदनन्तर जब वर्ष पूर्ण हो तो सपिण्डीकरण श्राद्ध करना चाहिये क्योंकि सपिण्डीकरण के पीछेही प्रेतत्व छूटता है व तभी वह प्राणी पार्व्वण श्राद्ध के भोगने का अधिकारी होता है २२ अन्य सब वृद्धि पार्व्वणादि श्राद्ध घरके भीतर करने चाहियें परन्तु सपिण्डीकरणतकके पूर्व्ववाले व सपिण्डी-करण ये सब गृहके बाहर करने चाहियें २३ इस श्राद्धमें प्रथम सब पितरों की क्रिया करनी चाहिये फिर प्रेतकी उसका क्रम यह है कि गन्ध पुष्प जल अक्षतादि से चार पात्र युक्तकरे २४ तीन पितरोंके लिये व एक प्रेत के लिये उन में पितरों के पात्रों में जो जलादि धरे जायँगे उन प्रत्येक में प्रेतके पात्र का जल मिलाया जायगा इसी प्रकार सङ्कल्प करने में चतुर व्याकरण अच्छी तरहसे पढ़ा हुआ पण्डित पितामें परायण पितरों के पिण्डोंमें प्रेतके पिण्डके तीनभाग कर प्रत्येक पिण्ड में मिलवावे वा वह आप पण्डित हो तो मिलावे

(ये समाना) इत्यादि दो मन्त्रों से प्रेतके अर्घ्यपात्र का जल व पिण्ड भी तीन तीन भागकरके प्रत्येक पितृपात्र व पिण्डमें मिलाना चाहिये २५।२६ बस इसी विधि से सपिण्डीकरण श्राद्ध करना चाहिये जब प्रेतका पिण्ड पितरों के पिण्डमें मिलजाता है तबसे वह भी पितर होजाता है फिर उसके लिये प्रेत का शब्द न उच्चारण करना चाहिये क्योंकि फिर वहभी अग्निष्वात्तादि पितृगणों में मिलजाता है और उत्तम अमृत को प्राप्त होता है २७ इससे सपिण्डीकरण से पहिले उस प्राणी के लिये (तस्मै) यह पद न देना चाहिये यह (तस्मै) पद पितरोंकोही देना चाहिये जबसे सपिण्डी होजाय तब से संक्रान्ति और ग्रहणआदि सम्पूर्ण पर्व्वों में उस प्राणी के लिये तीन पिण्डका श्राद्ध करना चाहिये और वर्ष दिन तक प्रतिमासकी मरनेवाली तिथिमें एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना चाहिये जब से सपिण्डी होजाय तब से प्रत्येक वर्षके मरनेवाले मासकी उसी तिथिमें एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना चाहिये २८। २९ और जो मरण की तिथि में प्रत्येक वर्षमें एकोद्दिष्ट श्राद्ध नहीं करता उसने जानो अपने पिता को मारा व भाई का भी विनाश किया ३० व जो पुरुष मरने के मासवाली उसी तिथि में पार्व्वण करताहै एकोद्दिष्ट नहीं करता वह नरकको जाताहै क्योंकि जबसे सपिण्डन श्राद्ध होजाताहै वह प्राणी अग्निष्वात्ता आदि पितरों में मिलजाताहै और महालय में पार्व्वण की इच्छा करता तथा एकोद्दिष्टके दिन केवल एकही पिण्डकी इच्छा करता है ३१ व जो पुरुष आमश्राद्ध करताहै वह जिस कच्चे अन्नसे अग्नौकरण करे उसीसे पिण्डदान भी करे ३२ सपिण्डीकरण श्राद्ध तीसरे मास व एकमास के पीछे भी होसक्ताहै उससे भी प्रेत बन्धन से मुक्त होसक्ताहै ३३ जब प्राणी की सपिण्डी होजातीहै तो उससे तीन पीढ़ीतक के पिण्ड पाते हैं व चौथे पांचवें आदि सब लेप भाग भोजन करते हैं जोकि पिण्डदानके पीछे पिण्डके नीचे के कुशमें हाथ पोंछाजाताहै जिनको २ पिण्ड दियाजाता वे पितर व उनके ऊपरके तीन लेपभागी ३४ व पिण्ड देनेवाला सातवां बस इन्हीं सातों को सपिण्ड कहते हैं इतनी कथासुन भीष्मजी ने पूँछा कि हव्य व कव्य

मनुष्य किसप्रकारसे दें ३५ व पितरलोग किसप्रकारसे ग्रहण करते हैं ब्राह्मण को तो खिलाया जाताहै अथवा अग्निमें आहुति दीजाती है ३६ वह अन्न शुभ वा अशुभ रूप प्रेतोंको कैसे पहुँच जाताहै जो कि वे उससे तृप्त होते हैं यह सुनकर पुलस्त्यजीबोले कि देवताओं में जो वसु हैं वे तो पिताका रूपहैं व रुद्र पितामहोंके रूप ३७ और आदित्य प्रपितामहोंके रूप होते हैं यह वेदकी श्रुतिहै इसीसे पितृ पितामह प्रपितामहों के नाम गोत्र प्रवरादि उच्चारणकर श्रद्धापूर्व्वक जो हव्य कव्य श्राद्धमें दिये जातेहैं सब पित्रादिकों को पहुँच जाते हैं सो भी जो वेदों के मन्त्रों से व शुद्धव्याकरण के पदोंसे भक्तिपूर्व्वक दिये जाते हैं वेही पहुँचते हैं और नहीं और अग्निष्वात्ता आदि पितृगण सब के पितरोंके अधिष्ठाता हैं ३८ । ३९ व जो कोई इस जगत् में उत्पन्न होता है उस का नाम गोत्रादि अवश्यही कुछ पै कुछ होताहै इससे जिस प्राणी के नाम गोत्र से कुछ दिया जाताहै उससे अग्निष्वात्ता आदि उसे तृप्त करते हैं उन में कर्म्मों के योग से जिनके पिता माता दिव्यरूप होजाते हैं उनके लिये जो अन्न दियाजाता है वह अमृतरूप होकर उनको पहुँचता है ४० । ४१ जिन के पिता माता आदि कर्म्म के योग से दैत्यता को प्राप्त होते हैं उन को भोगके रूपसे अन्नादि प्राप्त होता है इसी प्रकार जिनके पशु होगये हैं उन को घास तृणरूप से मिलताहै व जिनके सर्प्प होगये हैं उनको श्राद्ध का अन्न पवन होकर पहुँचता है ४२ जिन के यक्ष होजाते हैं उनके लिये पीने की वस्तु होकर श्राद्धान्न पहुँचता है जो राक्षस होजाते हैं उनको वही श्राद्ध का अन्न मांस होकर पहुँचता है क्योंकि राक्षसों काही भोजन मांस है और मनुष्यादिकों का नहीं दानवयोनि में जो उत्पन्न होते हैं उनको वही श्राद्ध का अन्न मदिरा होकर पहुँचता है जिनके प्रेतत्व को प्राप्त होते हैं उन को रुधिर होकर पहुँचताहै ४३ जिनके माता पिता मनुष्ययोनि में जाय जन्म पाते हैं उन्हें अन्नादि भोजन के पदार्थ व दुग्धादि पीने के पदार्थ होकर श्राद्धान्न पहुँचता है जब पितरों के नाम से अन्नादि दिया जाताहै तो भोजनादि से उनको एक पक्ष में रति करने

की शक्ति होजातीहै उससे आनन्दितहो पितरलोग अपने सन्तानों को दान देनेमें शक्ति, रूप, आरोग्य, विभव देते हैं यह श्राद्ध पुण्य कहाहै और ब्रह्मका समागम फल कहाहै ४४। ४५ और आयुर्बल, पुत्र, धन, विद्या, सुख भोग विलास के पदार्थ व स्वर्ग व मोक्ष देते हैं व राज्य आदि पदार्थ भी प्रसन्न होकर देते हैं ४६ पूर्व समय में इसी श्राद्ध के अन्नसे कौशिकमुनिके पुत्र एकही रात्रि के पीछे मुक्त होगये और पांच जन्म के सम्बन्धों से परंपद को प्राप्त हुये हैं ४७ इतनी बात के सुनने पर भीष्मजीने पूँछा कि कौशिकजी के पुत्र उत्तम योग को कैसे पहुँचे व उनके पांच जन्मके सम्बन्धों से कर्म्म कैसे नष्ट होगये जिससे वे मोक्ष को प्राप्तहोगये ४८ पुलस्त्य जी बोले कि कुरुक्षेत्र में एक बड़े धर्म्मात्मा कौशिक नाम महाऋषि हुये उनके पुत्रों के नाम व कर्म्म सब हम से सुनो ४९ एक का नाम स्वसृप, दूसरे का क्रोधन, तीसरेका हिंस्र, चौथे का पिशुन, पांचयें का कवि, छठें का वाग्दुष्ट, सातयें का पितृवर्ती ये सब गर्ग मुनि के शिष्य हुये ५० जब इन सबों के पिता कौशिक मृतकहुये तब दैवयोग से बड़ा कठिन दुर्भिक्ष पड़ा क्योंकि सब प्राणियों को भय करनेवाली बड़ी भारी अनावृष्टि हुई ५१ उन दिनों में गर्ग्ग मुनि की आज्ञा से वे सातों मुनि की गाय की रक्षा वन में करते थे तब सबों ने यह कुमन्त्र किया कि अब तो बड़े भूँखे हैं अन्न कहीं मिलताही नहीं लाओ इस कपिला कोही भक्षण करें ५२ जब सबों ने यह महापाप करने का विचार किया तो उन में से सब से छोटा भाई बोला कि यदि अवश्यहो इसे मारनाही चाहते हो तो श्राद्धके रूपसे वधकरो ५३ क्योंकि यद्यपि पितृलोग भी इसे अभक्ष्य समझते हैं पर जब श्राद्धमें उनके निमित्त इस का वध करेंगे तो मारने का दोष हमलोगों को न लगेगा तब सब ज्येष्ठ भाइयों ने आज्ञा दी कि अच्छा श्राद्धही के लिये इस का वध करो तब सब से छोटे पितृवर्त्ती ने श्राद्ध करनेका उद्यमकिया दो भाईयों को तो देवब्राह्मण बनाया व तीन को पितृब्राह्मण ५४। ५५ एकको अतिथि बनाया सबसे छोटा जानो श्राद्धकर्त्ता हुआ इसप्रकार उन दुष्टोंने उस कपिला

को भक्षण करलिया व सब मन्त्र पूर्व्वक श्राद्धके विधानही से किया कुछ योंही नहीं भक्षण किया ५६ इस के पीछे वे सब शङ्कारहित हत्यारे उस गायके बछड़ेको लेजाय गुरु गर्ग्गजी से बोले कि यह बछड़ा आप लीजिये क्योंकि गायको तो वनमें व्याघ्र ने मारडाला यह बात उन सातों दुष्ट तपस्वियोंने जाय गुरुजी से कही ५७ इस प्रकार तिन सातों तपस्वियोंने गऊको खालिया क्रूरकर्म में भी वैदिक बल से आश्रित होकर वे सब दुष्ट निर्भय रहे गर्ग्गजी ने भी विचार नहीं किया जाना कि ऐसाही हुआहोगा तब तो इन सातोंने कहा नहीं तो ऐसा क्यों कहते ५८ पर जिससे कि उनलोगों ने यह लोकवेदबाह्य कर्म्म कियाथा मरने के पीछे सब के सब दशार्णदेश में व्याधाहुये परन्तु जिससे कि पितरों के भावसे उसका वध किया था इस से सबको पूर्व्वजन्म की जातिका स्मरण बनारहा ५९ इस व्याधाओं के रूपमें उन्होंने कुछ भी पाप न किया केवल वैराग्यही का धारण किया जो कर्म्म किया धर्म्म के विपरीत नहीं किया केवल जन्मभर मनुष्यों से अदृश्य होकर एकतीर्थसे दूसरे तीर्थ में घूमते ही रहे इसप्रकार हजारों तीर्थों के दर्शन स्नानादि किये ६० जब उन का शरीर छूटा तो कालञ्जर नाम पर्व्वत पर सब के सब जाय मृग हुये वहां भी उनको विज्ञान बनारहा इससे सुकर्म्मही करते२ वह भी उन लोगोंका शरीर छूटा ६१ तब वैराग्यके कारण मानससर के किनारेपर सातों चक्रवाकहुये फिर कुछ दिनोंतक चक्रवाककीयोनि में रहे पर उससेंभी उनको वैराग्यही रहा इससे जाय फिर ब्राह्मणहुये उसमें भी योगाभ्यासी ६२ नाम व कर्म्म दोनों से वे सब अच्छेहुये सुमना, कुसुम, वसु, चित्रदर्शी, सुदर्शी, ज्ञाता, ज्ञानपारग ये सातों के नामहुये ६३ ये सब श्रेष्ठ ब्राह्मण अपने जेठ भाई के अनुयायी हुये व सब के सब योगाभ्यास करने से पावनहुये परन्तु उनमें तीन के चित्त चलायमान थे इस से वे योगसे भ्रष्ट होगये ६४ क्योंकि एक समय पाञ्चालदेश का राजा विभ्राजमान नाम अपनी स्त्रियों के साथ विविध प्रकार के भोगविलासों से क्रीड़ा कर रहा था उस को उन्होंने देखा था इस राजा के बड़ी भारी सेना थी व वाहन भी

बहुत थे उन योगियों में से एक को राज्य करने की इच्छा हुई ६५।
६६ जो पितृवर्त्ती था जिस ने श्राद्ध कियाथा व पितरों के ऊपर बड़ा
प्रेम रखताथा उस ने व अन्य दोने और दोको मन्त्री देखकर मन्त्री
होने की इच्छा की तब उन ब्राह्मणों में से एक तो विभ्राजमान
राजा का पुत्र हुआ उसका ब्रह्मदत्त नाम हुआ व दो राजमन्त्री के
पुत्रहुये जिनका पुण्डरीक व सुबालक नाम हुआ ब्रह्मदत्त अपने
पिता के मरने के पीछे काम्पिल्य नाम सुन्दर नगर में राजगद्दी
पर बैठा ६७। ६८। ६९ व वही पाञ्चालदेशका बड़ा पराक्रमी रा-
जाहुआ यह वही सब से छोटा था पिताका प्याराथा जिसने श्राद्ध
कियाथा यह ऐसा योगी हुआ कि सब प्राणियों के चित्त की वार्त्ता
जान लेताथा ७० उस राजाकी स्त्री सुदेवकी सुन्दर रूपवती कन्या
हुई उस का सन्नति नाम था व पूर्वजन्म की वही गर्गजी की
कपिला गाय थी ७१ जिससे कि पितरों के अर्थ उस के प्राण गये
थे इस से इस जन्म में बड़ी ब्रह्मवादिनी हुई उस के सङ्ग भोगवि-
लास करतेहुये उस राजकुमारने कुछदिनों तक राज्य किया ७२
एक दिन वह राजा अपनी स्त्री के सङ्ग फुलवाड़ी में बैठा था उसने
दो कीड़ोंको कामक्रीड़ा में कलह करतेहुये देखा ७३ उनमें नीचेका
मुख किये हुई एक च्यूँटी की प्रार्थना एक च्यूँटा कररहाथा वह ऐसा
काम से व्याकुल था कि बड़ी गद्गदवाणी से च्यूँटी से बोला ७४
कि लोक में तेरे समान और कोई स्त्री नहीं है कटि तो तेरी बहुत
पतली पेडू व नितम्बभाग बहुत मोटे कुच बड़े मोटेऊंचे व कड़े छाती
चौड़ी चाल बहुत मन्द ७५ सोने के रङ्ग के समान तेरे शरीर का
रङ्ग सुन्दर मुख मन्द २ मुसुकराना मुख मानों गुड़ व शक्करसे भराही
हुआ रहता ऐसा मीठा है ७६ फिर पतिव्रता भी तू ऐसी है कि जब
मैं भोजन करलेता हूँ तब तू भोजन करती है व मेरे स्नान करने
पर स्नान करती है जब मैं कहीं विदेश को जाता हूँ तब तू दुःखित
रहती है जब कभी मैं क्रोध करता हूँ तो मारे डरके काँपने लगती
है ७७ सो हे कल्याणिनि! कह तो किसलिये आज दुःखितहो नीचे
को मुख किये बैठी है इतना सुन वह बड़े कोप से काँपती हुई अपने

पतिसे बोली कि रे मूर्ख ! तू बहुत क्या बातें बनाय २ मुझ से बोलताहै क्योंकि तू ने लड्डू के चूर मुझको नहीं दिये अपने आप सब खालिये मुझको तो न दिया काममोहित हो और दूसरी को खिलाया ७८।७९ यह सुन च्यूँटा बोला कि हे श्रेष्ठरङ्गवाली ! तेरेही समान होने के कारण मैंने दूसरी को लड्डूके चूर दिये थे सो एक यह मेरा अपराध क्षमाकर हे मानकरनेवाली ! ८० हे सुन्दरस्तनवाली ! कोप को छोड़ दे अब ऐसा कभी न करूंगा मैं अब तेरे पैर छूकर सौगन्द खाताहूं प्रणाम करतेहुये मेरे ऊपर प्रसन्न हो ८१ क्योंकि हे सुन्दर पेडूवाली ! तेरे क्रोधकरने से मैं अभी तेरे सामनेही मरजाऊंगा व हे सुन्दरजाँघवाली ! तेरे सन्तुष्ट होनेपर मेरे सब मनोरथ पूरे होजायँगे ८२ हे सुन्दर पेड़ू व नितम्बवाली ! कोप छोड़ पूर्णमासी के चन्द्र के समान प्रकाशित स्वादु में अमृत के रस के तुल्य काम से पीड़ित मेरा मुख अत्यन्त प्रीति से पीले ८३ व ऐसा मानकर हे शुभे ! सदा मेरे ऊपर तुझको दया करनी चाहिये क्योंकि सेवकों से भूल हुआ ही करती है यह वचन सुन वह च्यूंटी प्रसन्न हुई ८४ अपने को उस च्यूंटे को सौंप दिया कि वह उसके सङ्ग भोग करनेलगा राजा ब्रह्मदत्त उसकी सब बातें सुनकर व जानकर बहुतहँसा ८५ क्योंकि वह राजा पूर्व्वजन्म के कर्म्म के प्रभाव से सब प्राणियों की बोली व उनके मनकी बात जानता था यह सुन भीष्मजी बोले कि राजा ब्रह्मदत्त सब प्राणियों की बोली कैसे जानताथा ८६ व ये पूर्व्वजन्म में चकवानाम पक्षी सातो कैसे हुये थे और किस कुलमें उत्पन्न हुये यह सब हम से आप कृपापूर्व्वक कहैं हमारे बड़ी सुनने की इच्छा है ८७ पुलस्त्यमुनि कहनेलगे कि हे महाराज ! वे सब चक्रवाकादि उसी काम्पिल्य नाम नगर में उत्पन्न हुये थे ८८ एक वृद्धब्राह्मण के पुत्र हुये व सब के सब चतुर और अपनी पूर्व्वजन्मकी जाति का स्मरण रखते थे उनमें से एक का धृतिमान् नाम था व जैसा नाम था वैसाही धारणाशक्ति भी रखता था एक का तत्त्वदर्शी नाम था वह भी अपने नाम के अनुसार सब तत्त्वों को अच्छेप्रकार देखता था एक का विद्यावर्णनाम था वह विद्यामें पूर्ण अभ्यास रखता था

एक का तपोऽधिक नाम था वह महातपस्वी था ८९ जिसके ये सब पुत्र हुये थे उस ब्राह्मण का सुदरिद्रनाम भी था वह अत्यन्त दरिद्र भी था उन सब पुत्रों के मन में एक दिन यह बात आई कि हम सब जाय तपस्याकरें ९० जिससे परमसिद्धि को प्राप्त हों उनके उस विचारकी वार्त्ता सुन वह महातपस्वी सुदरिद्र नाम ब्राह्मण ९१ अति दीनवचनसे अपने पुत्रोंसे बोला कि हे पुत्रो! यह क्या विचार तुमलोगोंने कियाहै ९२ जो कि वृद्ध दरिद्र वनवासी अपने पिता मुझको छोड़कर वनको जाया चाहते हो यह अधर्म्मही है धर्म्म किसीप्रकार नहीं है इससे मुझको छोड़कर चलेजाने से तुम लोगों को कौनसा धर्म्म व कौनसी गति होगी ९३ तब वे सब बोले कि हे तात! हम लोगों ने आपके जीवन के लिये जो वृत्ति कल्पित की है उसे आप सुनें इस नगर के राजाके बहुत धन व राज्य है वह आपको सहस्र ग्राम और बहुतसा धन दानमें देगा प्रातःकाल जैसेही उसके द्वार पर तुमजावोगे व आशीर्व्वाद पढ़ोगे वैसेही देगा और यह भी तुम जब पढ़ोगे कि जो कुरुक्षेत्र में ब्राह्मण थे फिर दशार्णदेश में जाय व्याधाहुये ९४।९५ फिर वेही कालञ्जर पर्व्वत पर मृग हुये फिर मानससर में चक्रवाक हुये ऐसा पितासे कहकर वे सब तो तप करने के लिये वनको चलेगये ९६ और वह वृद्धब्राह्मण भी अपना अर्थ सिद्ध करने के लिये गया उसके प्रथम अणुहनाम अतिप्रकाशित पाञ्चालदेश का राजा हुआथा ९७ उसने पुत्र पानेकी इच्छासे देवदेवेश ब्रह्माजी की बड़ी आराधनाकी यहांतक कि अतितीव्र व्रत में परायणहुआ ९८ जिससे बहुतकालके पीछे ब्रह्माजी प्रसन्नहोकर बोले कि तुम्हारा कल्याणहो तुम्हारे हृदयमें जो अभीष्टहो वह वर हमसे मांगो ९९ यह सुनकर राजाबोला कि देवोंके स्वामी महाबल पराक्रमी सब विद्याओंके पारगन्ता परमधर्म्मात्मा योगियोंमें श्रेष्ठ १०० सब प्राणियों की बोली जाननेवाला परमयोगी पुत्र मुझको दीजिये तब संसार की आत्मा परमेश्वर ब्रह्माजी ने कहा कि अच्छा ऐसाही होगा ऐसाकह १०१ सबलोगोंके देखतेही देखते वहीं अन्तर्द्धानहोगये उस वरदान से उस राजाके ब्रह्मदत्तनाम प्रतापी पुत्रहुआ १०२ जोकि

सबप्राणियों के ऊपर अत्यन्त दया करताथा व सब प्राणियोंसे अ-
धिक बल रखताथा सब प्राणियोंकी बोली जानताथा व सब प्राणियों
के पराक्रमका भी स्वामीथा १०३ इसीसे उस ब्रह्मदत्त राजाने उस
च्यूँटा च्यूँटीकी बोली को जानलियाथा जोकि वे दोनों मैथुन करने
की वार्त्ता कररहेथे उस राजाको हँसते देखकर उसकी रानी सन्नति
अपने मनमें शङ्काकरके कि राजा हमकोही हँसते हैं इससे राजासे
पूँछनेलगी १०४।१०५ हे राजन्! अकस्मात् यह हँसी आपको कैसे
आई क्योंकि इससमय कोई भी हँसी की बात नहींहुई न कोई ऐसा
अद्भुत पदार्थ दिखाई दिया जिससे आप हँसे यह सुनकर राजाने
रानी से उस च्यूँटा च्यूँटीकी सब वार्त्ताकही कि हे वरानने! देखो तो
कैसी प्रीतिकी वार्त्ता इन दोनों की है १०६।१०७ हे पवित्र मुसि-
कानिवाली ! बस हँसी का कारण और कुछ भी नहीं यही है सो
तुमसे हमने कहा परन्तु इस बात को रानी ने न माना कहा आप
झूँठ कहते हैं १०८ तुमने हमको हँसाहै अब बात बनातेहो क्या करें
राजा इस बात को सुनकर निरुत्तर होगये व विचारनेलगे कि पर-
मेश्वर इस बातका ज्ञान रानीको कैसेहो क्योंकि जबतक उसको भी
प्राणियोंकी बोली न समझपड़ेगी तबतक कैसे समझेगी यह सोच-
तेहुये पापरहित राजा ब्रह्माजी का बहुतसा ध्यान करके सातरात्रि
तक नियममें स्थितहोकर जाय रात्रिमें शयन कररहा स्वप्नमें ब्रह्मा
जी ने दर्शन देकर राजासे कहा कि प्रातःकाल घूमता २ एक वृद्ध
ब्राह्मण तुम्हारे द्वारपर आवेगा उसके वचन सुनतेही तुम्हारी स्त्रीको
सब पूर्व्वजन्म का ज्ञान होजायगा तभी तुम्हारी बातको सत्य माने-
गी इतना कहकर ब्रह्माजी तो अन्तर्द्धान होगये प्रातःकाल मंत्रियों
समेत राजा रानी दोनों नगरके बाहर निकले उनको आगेवाले श्लोक
पढ़ताहुआ एक वृद्धब्राह्मण दिखाई दिया व बोला १०९।११२॥

हरिगीतिका ॥

जो विप्रवर कुरुदेशमहँ भे दास सेवक गर्गके ।
पुनि लही व्याधशरीर दश पुरमाहिं एकहिवर्गके ॥
फिर जाय कालञ्जर महीभृत पै भये मृगयोनिमैं ।

पुनि चक्रवाकरु हंस मानसमें हुये इमिहोनिमें ११४

इस श्लोकके सुनतेही राजाको अपने सब्र पूर्व्वके जन्मोंका स्मरण होआया इससे मूर्च्छितहो पृथ्वीपर गिरपड़ा व उसके मन्त्री के दोनों पुत्रोंको भी पूर्व्वजातिका स्मरण होआया ११५ वही पाञ्चाल देशका राजा बाभ्रव्यके नामसे कामशास्त्र बनानेका आचार्य्यहुआ सो केवल कामशास्त्रही नहीं जानताथा किन्तु सब शास्त्रों में विज्ञानी था ११६ व पुण्डरीक भी बड़ा धर्म्मात्मा वेदशास्त्रों के जानने में अतिनिपुणहुआ वह भी मारेशोकके पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर तीनों उठकर शोककरनेलगे ११७ हाय हमलोग कर्म से भ्रष्टहोकर ऐसे कर्म्मके बन्धन में बँधे कि जिससे छूटतेही नहीं हैं इसप्रकार वे तीनों योगके पारगामी बहुत विलापकर ११८ विस्मयसे बार२ श्राद्धका माहात्म्य वर्णन करनेलगे जिसके कारण ऐसा निंद्यकर्म्म गोहत्यारूप करनेपर भी योगीहुये व पूर्व्वजन्मका स्मरण होआया तदनन्तर राजाने उस वृद्धब्राह्मणको बहुतसा धन व सहस्रग्राम देकर बिदा किया व सब राजलक्षणयुक्त विष्वक्सेन नाम अपने पुत्रको राजाने वेदविधि से राजगद्दीपर बैठाया व राजा ब्रह्मदत्त तथा उसके दोनों मन्त्री योगियों में श्रेष्ठ और मत्सररहित तो थेही पितरों की भक्ति से जाय मानससरके किनारे तप करनेलगे वहां पितरों ने आय दर्शन दिया व कहा कि हे राजन्! हमलोगोंकी कृपासे देखो तुम्हारे सन्तति भी हुई व योगका फलभी अब प्राप्तहोगा राजाने भी कहा कि हां आपही के प्रसादसे यह सब्र हुआ व सब फल हमने भोगे व जाति स्मरणादि ज्ञान भी आपहीकी कृपा से हुआ ११९।१२४ ऐसा कहकर वे ब्रह्मदत्तादि तीनों तपस्वी योगाभ्यासकरके ब्रह्मरन्ध्रद्वारा प्राणों को निकाल जाय परमपदको प्राप्तहुये १२५ ऋषिलोगों ने इसीसे कहाहै कि जब पितर श्राद्धसे सन्तुष्ट होते हैं तो धन, विद्या, स्वर्ग्ग, मोक्ष, पुत्र व राज्य, सुख सब कुछ देते हैं १२६ इससे हे राजन् भीष्मजी! यह पितरोंका माहात्म्य व ब्रह्मदत्तराजाकी कथा श्राद्धभोजी ब्राह्मणोंको सुनानी चाहिये व श्राद्धहोने के समय इसे पाठ करना चाहिये जो कोई इसे श्राद्धमें सुनता वा पाठकरताहै वह

प्राणी सैकड़ों करोड़कल्पतक ब्रह्मलोकमें जाकर पूजितहोताहै १२७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेस्सृष्टिखण्डेभाषानुवादेपितृमाहात्म्यकथनं नामदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

दो० सकल तीर्थ वर्णन कियो श्राद्धकरन हितकारि ॥
एकादश अध्यायमहँ बहुविधि सुमुनि विचारि १

इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने प्रश्न किया कि हे द्विज ! दिनके किस भाग में श्रद्धासे श्राद्ध करनाचाहिये व किन २ तीर्थों में करने से श्राद्धका बहुतफल होताहै १ यह सुनकर पुलस्त्यमुनि कहने लगे कि तीर्थों में प्रथमतो पुष्करनाम तीर्थ बहुत श्रेष्ठतमहै जो कि सब पुण्यात्मा ब्राह्मणोंका मनोरथहीसा भूतलपर स्थितहै २ तहांपर दान देने हवन करने और जप करने से निश्चय अनन्तफल होताहै यह तीर्थ नित्यही पितरोंको प्यारा और ऋषियों को परममत है ३ फिर नन्दातीर्त्थ,ललितातीर्त्थ,सुन्दरमायापुरी वैसेही मित्रपदतीर्त्थ,उत्तम केदारतीर्त्थ ४ गङ्गासागरतीर्त्थ यह तीर्त्थ सर्व्वतीर्त्थमय व परम शुभदायक है ब्रह्मसरतीर्त्थ शतद्रूनदीका सुन्दर जल ५ नैमिषतीर्थ जोकि सब तीर्त्थोंका फल देताहै जिस नैमिषारण्यमें गङ्गाजीका दूसरा रूपही गोमती नामसे प्रसिद्ध होकर परम निर्म्मल जलसे बहती है यह गोमती की धारा गङ्गाहीके समान सनातनी है ६ वहीं यज्ञवराहतीर्त्थ व देवदेव शूलधृक्तीर्त्थ है जहां कि सुवर्णका दान दिया जाता है व महादेवजीकी अष्टादशभुजी मूर्त्ति है ७ इस नैमिषतीर्थ मेंही श्रीविष्णुभगवान् के चक्रका पहिया पहले गिराथा इससे चक्रतीर्त्थ के नामसे प्रसिद्ध है व इसीसे उसका नैमिषारण्य भी नाम है इसकी सेवा पृथ्वीमण्डल के सब तीर्त्थ नित्य किया करते हैं ८ यहीं देवदेव वराहजी के दर्शन होते हैं जो कोई इस तीर्त्थमें जाताहै वह पवित्रशरीरहो नारायणजी के पुर वैकुण्ठको जाताहै ९ फिर कोकामुख नाम परमोत्तमतीर्त्थ इस तीर्त्थहोकर इन्द्रपुरीके जानेका मार्ग्ग दिखाई देता है यहीं पितृतीर्त्थ व ब्रह्मतीर्त्थ नाम दो और हैं १०

पुष्कर के समान ब्रह्माजी की मूर्ति यहां भी निरन्तर रहती है वहां ब्रह्माजीके दर्शनमात्र से सब स्वर्गोंका फल मिलताहै ११ एक कृत नाम सब पापोंका नाशक महापुण्यदायक तीर्थ है जहां आदि नारसिंह नाम साक्षात्‌जनार्दन भगवान् आपही विराजमान रहतेहैं १२ एक इक्षुमती नाम तीर्थ है यह पितरों को कल्याण को देता और नित्यही बहुत आनन्दित करता है व एक बड़ाभारी तीर्थ प्रयागहै जहां गङ्गा, यमुना का सङ्गम है इस तीर्थमें पिण्डदान करने व जलदान करने से पितृगण बहुत ही तृप्त होते हैं १३ ऐसेही कुरुक्षेत्र नाम महापुण्यतीर्थ जिसमें पितृलोक जानेके लिये मार्गभी दिखाई देताहै वहां अबभी नीलकण्ठ के नामसे प्रसिद्ध पितृतीर्थ विद्यमान है यह सब कामनाओं के फलोंको देताहै ऐसेही भद्रसर, पुण्य मानससर १४।१५ मन्दाकिनीतीर्थ अर्थात् जहां २ गङ्गाजी बहती हैं सब उनके निकटके स्थान तीर्थही हैं गोदावरी, विपाशा जिसे अब व्यासा कहते हैं सरस्वती सर्वमित्रपदस्थान जहां वैद्यनाथजी महाफल देनेवाले हैं १६ क्षिपानदी शुभकालञ्जर, तीर्थोद्भेद, हरोद्भेद, गर्भभेद, महालय १७ भद्रेश्वर, विष्णुपद, नर्मदाद्वार फिर गया नाम तीर्थ जहां कि विष्णुपदनाम पितरोंका सर्वोपरि तीर्थ है जहां कि आश्विनमासके कृष्णपक्ष भरमें पिण्ड वा जलदान करने से प्रेत योनिमें प्राप्तभी पिता, पितामहादि तुरन्त ब्रह्मलोकको चले जातेहैं इसीके समानही बदरिकाश्रम में गङ्गाजीके तट पै श्राद्धकरनेसे पितृगणों की मुक्ति होती है ये जितने गिनाये सबके सब पितृतीर्थही हैं स्मरणकरनेसे सब पापोंको हरते हैं फिर स्नान,दान करनेसे क्याकहना फिर श्राद्ध करनेसे तो पितरों को आनन्दितही करदेते हैं १८।१९ इनके विशेष ॐकारनाम पितृतीर्थकावेरी, कपिलोदक नाम तीर्थ, चण्डवेगासम्भेद, अमरकण्टक २० इन में स्नानादि करने से कुरुक्षेत्रका दूनाफलहोताहै शुक्लतीर्थ, सोमेश्वरतीर्थ ये दोनों सब पापोंको हरलेते हैं श्राद्ध करने व दानकरने व होम करने में सदा इनतीर्थोंका स्मरण करनाचाहिये व महापुण्य शम्भल ग्राम जहां कि ब्राह्मण के सुन्दर गृहमें देवदेव कल्कीजीका अवतारहोगा तथा चर्मण्वती नदी,

शूल, तापी, पयोष्णी, पयोष्णीसंगम २१ । २४ महौषधी, चारण, नागतीर्थप्रवर्तिनी, महावेणा पुण्यनदी और महाशालतीर्थ २५ गोमती व वरुणानदीका सङ्गम तथा अग्नितीर्थ, भैरवतीर्थ, भृगुतुंग तीर्थ, उत्तमगौरीतीर्थ २६ वैनायक नाम तीर्थ, उत्तमवस्त्रेश्वर पापहर तीर्थ, पुण्यकारिणी वेत्रवती नदी २७ महारुद्रा, महालिंगा, दशार्णा, महानदी, शतरुद्रा, शताह्वा, पितृपदपुर २८ अङ्गारवाहिका नदी ऐसेही शोण व घर्घर दो महानद, कालिका पुण्यनदी, पितरा शुभनदी २९ ये सब पितरों के तीर्थ स्नान, दानकर्म में प्रशंसनीयहैं इन में जो श्राद्ध कियाजाता है वह अनन्त फल देता है ३० शटावटा नदी, ज्वाला, शरद्वीनदी, कृष्णचन्द्रजी का तीर्थ द्वारकापुरी तथा उदक्सरस्वती, ३१ मालावतीनदी, गिरिकर्णिका नदी, धूतपाप तीर्थ यह समुद्रके दक्षिणके किनारेपरहै ३२ व समुद्र के उत्तर के किनारेपर गोकर्णतीर्थ, गजकर्णतीर्थ, सुन्दरचक्रनदी, श्रीशैल, शाकतीर्थ, नारसिंह, ३३ महेन्द्राचल अतिपुण्यदायक व पुण्यकारिणी महानदी, इनमें भी श्राद्ध करने से अनन्तफल होताहै ३४ व दर्शनमात्रसेभी पुण्यहोती है व तुरन्त पापको हर लेते हैं तुङ्गभद्रा पुण्यनदी, चक्ररथीनदी ३५ भीमेश्वरतीर्थ कृष्णवेणा, कावेरी, अंजनानदी, गोदावरी, पुण्यनदी, उत्तम त्रिसन्ध्यापूर्ण तीर्थ ३६ सब तीर्थों से नमस्कार कियाहुआ त्रैयम्बकतीर्थ, इसतीर्थ में भगवान् त्रिलोचन महादेव अपनेआप सदा विराजमान रहते हैं ३७ इन सबों में श्राद्ध करने से कोटिगुण फल होताहै स्मरणमात्र से भी पाप सैकरोंमार्गों को भागते हैं ३८ श्रीपर्णापुण्यनदी, व्यास तीर्थ यह अत्युत्तमतीर्थ है मत्स्यनदी, कारा, शिवधारा, ३९ भवतीर्थ, पुण्यतीर्थ, शाश्वततीर्थ, पुण्यदायक रामेश्वरतीर्थ, वेणापुर, अलम्पुर ४० अङ्गारक, आत्मदर्शतीर्थ, अलम्बुषतीर्थ, वत्सव्रातेश्वर तीर्थ, गोकामुखतीर्थ, ४१ गोवर्द्धनपर्वत, हरिश्चन्द्र, पुरश्चन्द्र, पृथूदकतीर्थ, सहस्राक्ष, हिरण्याक्ष तीर्थ, कदलीनदी, ४२ नामधेयानदी, सौमित्रि सङ्गतीर्थ, इन्द्रनील, महानाद, प्रियमेलक ४३ येभी सब सदा श्राद्धकेलिये पवित्र व अतिपुण्यदायी हैं जिससे कि इनसब

जातेहैं ७४ गयाजीमें एकमुनि कुशजल हाथमें लेकर आम्रोंके वृक्षों की जड़ों के निकट तर्पण किया करतेथे उधर उनके पितरभी तृप्त होते थे इधर आम्रके वृक्षभी सींचे जातेथे एकही क्रियाने दो अर्थों को सिद्धकिया ७५ गया में पिण्डदान करने से अन्य कोई भी दान विशेष नहींहोता क्योंकि एकही पिण्ड देने से तृप्त होकर पितृगण मोक्षगामी होजाते हैं ७६ कोई २ मुनिलोग सब पदार्थोंमें अन्न को श्रेष्ठ कहते हैं कोई २ द्रव्यको कहते परन्तु गयातीर्थ में जितना अन्नकेपिण्डदेने का माहात्म्य है द्रव्यादिकों का उतना नहीं है ७७ व जो पुरुष मानसके दक्षिण वा उत्तरके किनारेपर जाय सब प्रकार पवित्र मन रहतेहैं व वहांजाय महाचल महानदी के दर्शनकरते ७८ और श्रेष्ठ ब्राह्मणों के प्रणाम करते उनको जन्म लेनेका फल मिल जाताहै और निश्चय मनुष्य जो जो इच्छा करताहै तिस तिस को निस्सन्देह प्राप्तहोता है ७९ यह तीर्थोंका माहात्म्य मैंने संक्षेप से कहा विस्तार से ब्रह्माजीभी नहीं कहसक्के हैं मनुष्य क्या कहसक्ता है ८० सत्य दया और इन्द्रियनिग्रह भी तीर्थहै वर्णों व आश्रमोंके गृहमें भी श्रद्धापूर्वक श्राद्धादि करने से तीर्थों के समानही फल मिलता है ८१ परन्तु घरकी अपेक्षा सब तीर्थों में साधारण रीति से भी करनेसे कोटिगुण अधिक फल मिलता है और गयाजी में पिण्डदानसे तो मोक्षपद मिलताहै इससे श्राद्धके विषयमें गयाके समान कोईभी तीर्थनहीं है ८२ इससे जहांतक होसके तीर्थही में श्राद्धकरे प्रातःकाल तीन मुहूर्त्त तक सङ्गवकाल कहाताहै ८३ फिर तीन मुहूर्त्त तक मध्याह्न उसके पीछे सायाह्नकाल होता है उसमें श्राद्ध कभी न करना चाहिये ८४ वह राक्षसी वेला सब कर्मों के लिये निन्दितहै दिनमें सदा पन्द्रहमुहूर्त्त हुआ करते हैं ८५ उनमें जो आठवां मुहूर्त्त है उसकी कुतप संज्ञा है उसी मुहूर्त्त में सदा मध्याह्नकाल हुआकरता है उसमें सूर्य्यदेव कुछ मन्दहोजाते हैं ८६ इससे वह समय अनन्त फल देनेवाला होताहै बस उसी में श्राद्ध का आरम्भ करना चाहिये इसी प्रकार गैंड़ेका पात्र, नैपाल देशका कम्बल, ८७ सुवर्ण, कुश, तिल, गायकादुग्ध घृतादि, मध्याह्नकाल

सहित सात ये कुतप कहाते हैं व कन्याका पुत्र आठवां कुतप कहा ताहै पापको (कु) कुत्सित कहते हैं व उसके तापकरने वालों को कुतप कहते हैं ८८ ये आठ इसीसे कुतप कहाते हैं कुतप मुहूर्त्तसे लेकर चारमुहूर्त्त पीछेतक ८९ इनपांचमुहूर्तोंमें स्वधावाचन श्राद्धादि होना चाहिये विष्णुभगवान्‌के देहसे कुश व काले तिल उत्पन्न हुये हैं ९० इससे ये श्राद्धकेलिये अतीव पवित्र होते हैं यह पण्डित लोग कहते हैं इससे देवताओं व पितरोंको तिलजल कुश हाथ में लेकर अञ्जलि देना चाहिये ९१ ऐसेही श्राद्धमें भी करना चाहिये हे राजन्! यह पुण्य, पवित्र, आयुर्दाय बढ़ानेवाला व सबपाप नाशनेहारा ९२ तीर्थों का अनुकीर्त्तन तुमसे हमने किया जो पुरुष इसे सुनेगा वा पढ़ेगा वह लक्ष्मीयुक्त होगा ९३ इसे तीर्थवासियों के सामनेश्राद्ध समयमें भी पढ़ना चाहिये क्योंकि यहसब पापोंकोशान्तकरता है व अलक्ष्मीको नाशताहै इससे अवश्य पठनीयहै ९४॥

दो० यहपवित्रयशकरमहा पापनशावनहार ॥
विधिरविहरपूजितकहत बुधहुश्राद्धमहिमार १ । ९५

इति श्रीमत्पाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेश्राद्धप्रकरणंनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

दो० बारहयेंअध्यायमहँ चन्द्रवंशकीगाथ ॥
जामेंशुभयदुवंशकर वर्णनकियमुनिनाथ १

इतनी श्राद्धकी कथासुन भीष्मजी ने प्रश्नकिया कि हे महाराज! सब शास्त्रों में विशारद पुलस्त्यजी चन्द्रवंश कैसे उत्पन्नहुआ उनके वंश में जो २ राजा कीर्त्तिबढ़ानेवाले हुये उनका वर्णन कीजिये १ पुलस्त्यजी कहनेलगे कि पूर्व्वसमयका वृत्तान्त यह है कि ब्रह्माजी ने सृष्टि करने के लिये अत्रिजी को आज्ञादी तब उन्हों ने सृष्टि के लिये बड़ा तप किया २ उसमें ध्यान उस परमशक्तिमान् का किया जो कि ब्रह्मक्लेशनाशन करनेवाला सबको आनन्द करनेवाला है व जिसतक ब्रह्मा इन्द्र सूर्य्य महादेवादि देवताओं की इन्द्रियाँ नहीं पहुँचसक्तीं ३ उस परमेश्वरको मनसे स्मरणकर अपनी इन्द्रि-

योंका संयमकर अत्रिजी तप करनेलगे उस तपके माहात्म्यसे उ-
नको परमानन्दहुआ ४ व जिससे कि वंशकाहोना तपस्याही के
आधीन है इससे तप करने से अत्रिजी के चन्द्रमा पुत्रहुये ५ उनके
होनेका क्रम यहहै कि तपसे आनन्दित अत्रिजी के नेत्रोंसे जलबहा
वह ऐसा उज्ज्वल था कि उसने अपनी उजियाली से चर अचर सब
विश्वभरको प्रकाशित किया ६ उस जलको स्त्रीरूप धारण करके
पुत्र होनेकी इच्छासे सब दिशाओं ने ग्रहण किया इसलिये अत्रि-
मुनि से उत्पन्न वह जल उन दिशाओं के गर्भरूप होगया ७ परन्तु
वे उसे बहुत दिनोंतक धारण न करसकीं इससे उन्होंने छोड़दिया
तब ब्रह्माजी ने आय उस गर्भको इकट्ठाकर ८ उसे सब आयुध
धारण कियेहुये युवापुरुष बनालिया व उसे लेकर वे ब्रह्मलोकको
चलेगये उसे देखकर वहां ब्रह्मर्षियों ने कहा कि यह हमलोगों का
स्वामी हो यह कह ९ । १० ऋषि देवता गन्धर्व्व अप्सरादि
सब उसकी स्तुति करनेलगे स्तुति में जितने मन्त्र वेदों में सोम
देवताके हैं उन्हीं को सबों ने पढ़ा इस प्रकार स्तुति करने से और
भी उस पुरुषका रात्रिमें सदैव तेज अधिक होगया और उस तेज
के सर्व्वत्र फैलजाने से पृथ्वी पर सब अन्नादि औषधिगण उत्पन्न
होगये ११ । १२ इसी से चन्द्रमा औषधियों के स्वामी हुये व
ब्राह्मणों के भी हुये क्योंकि प्रथम ब्रह्मर्षियों नेही कहा था कि हमारे
स्वामी हों जिससे कि अन्न व सब पर्व्वतोंपर की औषधियां इन्हीं
चन्द्रमाकेही तेजसे उत्पन्नहुईं इसी से चन्द्रमा भी रात्रि में अधिक
प्रकाशितहोता है व पर्व्वतपर की औषधियां भी रात्रिही में चमकती
हैं और यह तेज अधिक बहुधा वेद मन्त्रों से स्तुति करनेही से
बढ़ा था इसी से वह चन्द्रमण्डल सुन्दर दिखाईदेता १३ और शुक्ल
पक्षमें बढ़ता है कृष्ण पक्ष में सदा घटता रहता है क्योंकि शुक्लमें
ही स्तुति की गई थी जब इस प्रकार चन्द्रमा अच्छे प्रकाशित पु-
रुष हुये तो दक्षप्रजापतिने अतिरूप गुणवती अपनी अश्विन्यादि
सत्ताइस कन्या उनको स्त्री बनानेके लिये दीं तदनन्तर कई किड़ोर
वर्षों तक १४ । १५ चन्द्रमाने श्रीविष्णु भगवान्‌के ध्यानमें तत्पर

होकर बड़ी भारी तपस्या की उस तप से भगवान् परमात्मा नारायण हरि जनार्दनजी प्रसन्न होकर चन्द्रमासे बोले कि हम तुम्हारे तप से बहुत प्रसन्न हुये जो चाहो हमसे वर मांगो चन्द्रमाने कहा कि हम इन्द्रलोकमें यज्ञ किया चाहते हैं १६ । १७ उस में आप सहित सब देवता प्रत्यक्ष होकर मेरेमंदिरमें अपना अपना भाग लें व जिसके करने का जो काम हो उसेभी करें यह वर मांग राजसूय यज्ञ करने की तयारी चन्द्रमा ने की जिसमें विष्णुभगवान् की आज्ञासे सबब्रह्मादि देवगण रक्षकहुये महादेवजी भी उसयज्ञमें प्रत्यक्षआये १८ । १९ उस यज्ञमें होता अत्रिमुनि हुये भृगुजी अध्वर्य्यु, उद्गाताब्रह्मा, उपद्रष्टा साक्षात् विष्णुभगवान् आपहुये २० सदस्य अन्य सब देवगण हुये इस प्रकार वह राजसूययज्ञ होनेलगा वसुलोगभी अध्वर्य्यु कियेगये विश्वेदेवगणभी अध्वर्य्युही कियेगये २१ इस यज्ञमें चन्द्रमाने तीनोंलोक देवताओं को दक्षिणा में दे दिये व ऐसे दुःप्राप्त ऐश्वर्य्य को पाय चन्द्रमा सृष्टिभी करनेलगे २२ यहांतक कि अपनी तपस्यासे सातोंलोकोंके एक सोमहीराजा होगये एक दिन एक फुलवाड़ी में सब देवताओं के गुरू बृहस्पतिजी की स्त्री दिखाईदी जोकि अनेक फूलोंके गहनों से शोभित, २३ बड़े नितम्ब और स्तनके भारसे खेदयुक्त, फूलके तोड़ने मेंभी अत्यन्त दुर्बल अंगयुक्त, कामके बाणसे अभिराम विस्तृत सुन्दर नेत्रवालीथी २४ देखतेही चन्द्रमा कामबाण से ऐसे पीड़ितहुये कि उसके शिर केबाल पकड़खींच अपने पासकर एकान्त में लेगये वह भी महातेजस्वी चन्द्रमाके रूपको देखतेही कामबाण से अतीव पीड़ितहुई २५ कि दोनों प्रसन्न होकर विहार करनेलगे इस प्रकार विहारकर चन्द्रमाने ताराको अपने घरमें करलिया भोग करने के पीछे भी नहीं जानेदिया जब बहुत दिन होगये तो बृहस्पतिजी अपनी स्त्री के विरहसे बहुत व्याकुलहुये न तो मारेभय व स्नेहके चन्द्रमा को शापही देसके न कुछ मारणमोहन वशीकरण उच्चाटनादि प्रयोगही करसके इससे चन्द्रमाके पास जाय उन्होंने अपनी स्त्री मांगी २६ । २८ पर वे ऐसे कामके वशीभूत होकर निर्लज्ज होगये कि मांग-

नेपरभी अपने गुरू बृहस्पतिजी की स्त्री न दी तब ब्रह्मा महादेव साध्यगण सब पवन इन्द्र वरुणादि लोकपालोंने जाय समझाया तो भी चन्द्रमाने ताराको न छोड़ा तब महादेवजीने बड़ा कोपकिया जिनका नाम पृथिवी में वामदेव प्रसिद्ध है जिनके चरण कमल की पूजा अनेक रुद्रगण करते हैं २९। ३० उन्होंने अपने शिष्यों को सङ्गले वृषभपर सवारहोकर बृहस्पतिजीके स्नेह से युद्धकरने की तयारीकी अपना अजगव नाम धन्वा लेकर सब भूतेश्वरोंसे सेवित ३१ महाकोप करके महादेवजी सोमकेसङ्ग युद्धकरनेको गये उनके सङ्ग गणेश, कार्त्तिकेय, यक्ष, प्रमथादि साठसहस्र गणभी रथों पर चढ़कर युद्ध करनेके लिये चले ३२ उधर चन्द्रमा भी बड़ाभारी क्रोधकर एक पद्म वेताल यक्ष सर्प्प किन्नर पन्द्रह लक्ष रथ लेकर युद्ध करने को बाहर निकले इनके सङ्ग शनैश्चर, मंगल, नक्षत्र, दैत्य, राक्षस व देश २ वन २ के सब रहनेवाले सब प्रकार के प्राणीआये जब महादेवजी महाकोप करके आये व चन्द्रमाभी बड़ीभारी सेना लेकर आये ३३।३४ तो उनदोनों सेनाओंसे महाभयङ्कर युद्धहुआ जिसमें किरोड़ों प्राणियों का नाशहोगया उस युद्धमें ऐसे विकराल अस्त्र शस्त्रादिचले कि जिनका वर्णन करना असम्भवहै उधर महा-देवजी के अस्त्र शस्त्रादि इधर चन्द्रमा के ऐसे चले कि स्वर्ग पृथ्वी पाताल सब भस्म होनेलगे ३५।३७ तब महादेवजीने ब्रह्मशिरो नाम अस्त्रचलाया व चन्द्रमाने अतिवीर्य्ययुक्त सोमास्त्र चलाया इन दोनों अस्त्रोंके चलनेसे समुद्र पृथ्वी आकाश सबकहीं भय उत्पन्नहुआ ३८ जब इस महाअस्त्रयुद्ध से तीनों सचराचर लोक नष्ट होने लगे व बहुत नष्टहोगये तो ब्रह्माजी वहां आये व महादेवजीको समझाया कि व्यर्थ आप सब सृष्टिही को नाश किये डालते हैं अब युद्ध रहने दीजिये व चन्द्रमा से कहा कि एक तो तुमने यह महानिन्द्यकर्म्म किया अब युद्ध करके सबको नष्ट कराये डालतेहो हे सोम ! जिससे कि तुमने परस्त्री हरलेनेके लिये यह महाभयङ्कर युद्ध किया ३९।४० इससे सब जनों के पाप के भागी होगे व सब देवताओं में पापी देव कहाओगे अब जो किया सो किया बृहस्पतिजी की स्त्री उनको

देदो यह अन्यकी स्त्री उसमें भी ब्राह्मणकी फिर तुम सबके गुरूकी स्त्री का हरलेना महापाप है इसकी बड़ाई कोई भी न करेगा ४१ यहसुनकर चन्द्रमा युद्ध करनेसे निवृत्तहुये व उन्होंने कहा कि यथार्थमें इससे बढ़कर और कोई पाप नहीं है ताराको ले आय दिया बृहस्पति प्रसन्न हो अपनी स्त्री लेकर चलेगये व महादेवजी भी अपने कैलासको चलेगये ४२ पुलस्त्यजी बोले कि उसके पीछे बारह महीने पर बारह सूर्य्यों के समान तेजस्वी सुन्दर पीताम्बर धारण किये, दिव्य गहनों से भूषित सूर्य के सदृश सब अस्त्र शास्त्रमें निपुण बड़ा विद्वान् हाथियोंकी विद्यामें अति विचक्षण पुत्र ४३ । ४४ कि जिसका राजवैद्य तो प्रसिद्ध नाम हुआ ऐसा विलक्षण पुत्र बृहस्पतिजीकी स्त्री में चन्द्रमा से उत्पन्न हुआ बुध यह नाम गर्भहीसे सबविद्या जाननेके कारण हुआ ४५ उस पुत्र ने उत्पन्न होतेही सब जनोंका तेज व बल हरलिया पुत्रका जन्म सुनकर ब्रह्मादि देवता उसी समय बृहस्पतिके स्थानपर आये जब जातकर्म्म उत्सव होगया तो सब देवताओं व ऋषियों ने तारासे पूंछा कि बताओ यह पुत्र किससे उत्पन्नहै बृहस्पतिसे वा चन्द्रमा से ४६ । ४७ उन सबोंके वचन सुनकर श्रेष्ठ स्त्री तारा बहुत लज्जित होकर कुछभी न बोलीं जब बार २ सबोंने पूँछा तो क्या करें धीरेसे कहा कि चन्द्रमासेही यह पुत्र हुआहै इससे चन्द्रमाने वह पुत्रलिया व बुध यही नाम उन्होंने प्रमाण किया व पृथ्वीकेराजा उनको बनाया ४८ । ४९ राज्याभिषेक करके फिर ग्रहोंके बीचमें भी बुधको स्थापित किया इसप्रकार जब बुध ग्रहोंमें स्थापितहोगये तब सब लोगोंके देखतेही देखते ब्रह्मर्षियों से युक्त ब्रह्माजी वहीं अन्तर्द्धान होगये इलबुधसे इलानाम स्त्री में बड़ा धर्मवान् पुत्र उत्पन्न हुआ ५० । ५१ जिसने अपने तेजसे सौ अश्वमेधोंसे कुछ अधिक किये उस पुत्रका पुरूरवा नाम हुआ यह सब लोकोंसे नमस्कार किया गया ५२ उसने हिमवान् पर्व्वतपर जाय इतना बड़ा भारी तप किया कि उससे प्रसन्नहोकर ब्रह्माजीने ऐसा वरदिया जिससे सब लोकों के ऐश्वर्यपाय पुरूरवा सातद्वीपवती पृथ्वी के

राजाहोगये ५३ केशी इत्यादि दैत्यलोग सब राजाकी सेवकता में प्राप्तहुये व जिनकेरूप से मोहित होकर उर्व्वशी नाम अप्सरा जिनकी स्त्री हुई ५४ इन राजा पुरूरवाने सातोंद्वीप सहित वन पर्व्वत समेत इस पृथ्वी का पालन सब लोकों के कल्याण की इच्छावाले बड़े धर्म्म के साथ किया ५५ इनराजाको ब्रह्माजीके प्रसादसे इन्द्र अपने आधे आसनपर बैठने को देते व चामर ग्रहण करनेवाली दासियां भी अपने लोककी इन्हेंदीं ५६ यह राजा धर्म्म, अर्त्थ, काम तीनोंकी सेवा सदा एकही सङ्ग करता रहा था एक समय धर्म्म, अर्त्थ, काम तीनों पदार्त्थ कौतुकसे युक्त इनके देखने के लिये साथही आये ५७ कि देखेंतो यह राजा हमतीनोंको समान कैसे देखताहै राजाने भक्तिसे उन तीनोंको अर्घ्य, पाद्य, आचमनीय दिये ५८ तीनोंके लिये एकही प्रकारके सुवर्ण के आसन बैठने को दिये उनपर बैठाय सबोंकी पूजाभी समानहीकी जब राजाने तीनों की समानही पूजाकी तो अर्त्थ व कामने राजाके ऊपर बड़ाकोप किया व अर्त्थने शापदिया कि हे राजा लोभसे तू नष्ट होजायगा ५९।६० कामने भी कहा कि राजन् तुमको गन्धमादन पर्व्वतपर उन्माद होजायगा व कुमारके वचन से उर्व्वशी का वियोग तुम्हें होगा ६१ तब धर्म्मने कहा कि राजन् तुम बहुत दिनोंतक जीवोगे व धर्म्मात्माहोगे व हे राजेन्द्र जबतक चन्द्रमा और नक्षत्र विद्यमान रहेंगे तब तक तुम्हारी सन्तति रहेगी ६२ बढ़तीही रहेगी कभी पृथ्वी पर तुम्हारी सन्ततिका नाशही न होगा हां अन्तमें साठहजार वर्ष तक उर्व्वशीके वियोगसे तुमको उन्माद होजायगा ६३ फिर तुम्हारा शरीर छूटजायगा शीघ्रही उर्व्वशीके लोकको चले जाओगे वहां वह अप्सरा फिर तुमको मिल जायगी इतना कहकर सबके सब अन्तर्द्धानहोगये राजा अपना राज्य करने लगे ६४ ये राजापुरूरवा ऐसे हुये कि प्रतिदिन इन्द्रको देखनेकेलिये इन्द्रपुरीको जातेथे एकसमय रथपरचढ़े सब आयुधलिये राजा इन्द्रपुरीको सिद्धमार्ग्ग होकर फिर सोम मार्ग्गमें होकर जारहेथे कि उसी समय केशीनाम दानवेन्द्र ने इन्द्र व पुरूरवा दोनों से वैरकर चित्रलेखा व उर्व्वशी दोनों अ-

प्सराओंको हरलेगया तब राजा पुरूरवा इन्द्रलोकमें पहुँचे इन्द्रने बड़ा आदर करके राजासे कहा कि आजसे हमारी तुम्हारी मित्रता होगई तीनों लोकों में जो बल पराक्रम श्री है सबमें आधा २ साझा होगया इससे हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं उर्व्वशी अप्सरा को तुम भोग करनेकेलिये लेजाओ गायत्री तुम्हारे यहांरहे राजलक्ष्मी हमारे यहां ऐसा राजासे बहुत समझाय बुझाय कहा और यह भी कहा कि मेनका रम्भा दो अप्सरा तुम्हारे आगे नाचनेके लिये देते हैं परन्तु तुम केशीनाम दैत्य को जीतकर उर्व्वशी को यहां लाओ यह सुनकर राजा पुरूरवा केशी के पासगये व समर में उसे नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसेजीता इन्द्र भी राजाके सङ्गगयेथे उन्होंने भी बहुत अस्त्र शस्त्र चलायेथे पर पराजित वह पुरूरवासे ही हुआ इससे उर्व्वशी को उससे छीन राजाने इन्द्रको देदिया तब लक्ष्मी के समान रूपवती उर्व्वशी फिर इन्द्रको मिली एकसमय इन्द्रके आगे उर्व्वशी नाचरही थी ६५ । ७१ व राजा पुरूरवा भी बैठेथे इन का रूप देखकर वह कामबाणसे ऐसी पीड़ितहुई कि उसे सब नाचना गाना हाव भावादि भूलगये ७२ तब इन्द्रने बड़ेकोप से उसे शाप दिया कि आज से पचपनवर्ष तक तू लता होकर रहेगी व राजा पुरूरवा प्रेत होकर तेरेभीतर प्रवेश करके तुझ से भोगकरते रहेंगे जब शापके कारण उर्व्वशी व पुरूरवा दोनों ऐसे होगये तो फिर पचपनवर्ष तक तो वही दशारही जब शाप मिटगया तो उर्व्वशी जाय राजा पुरूरवाके घरमें ही रहनेलगी तब पुरूरवासे उर्व्वशी में ७३ । ७४ आठ पुत्र उत्पन्नहुये उन के नाम ये हैं आयु, दृढ़ायु, वश्यायु, बलायु, धृतिमान्, वसु, ७५ दिव्यजायु व शतायु इन सबों के दिव्यतेज व बलहुआ उन में सबसे बड़े आयु के पांचपुत्र हुये उनके नाम ये हैं नहुष, वृद्धशर्म्मा, ७६ रजि, दण्ड, विशाख ये पांचो बड़ेवीर व महारथहुये रजिके सौ पुत्र हुये उन सबोंका राजेय नाम हुआ ७७ रजिने पापरहित श्रीनारायण भगवान् की आराधना की उनकी तपस्या से श्रीविष्णुभगवान् प्रसन्नहुये तब उन्होंने राजा को वरदिया ७८ जिससे राजा रजिसे देवता असुर मनुष्य चाहे जो

युद्धकरे पर विजय राजाही की हो उन्हीं दिनों में इन्द्र व दैत्यों के महाराज प्रह्लाद से तीनसौ वर्ष तक देवासुर नाम संग्रामहुआ पर विजय किसी की न हुई तब देवता व दैत्योंने जाय ब्रह्माजीसे पूँछा ७९।८० कि हमदोनोंमें विजय किसकी होगी ब्रह्माजीने कहा जिसकी ओर राजा रजिहोगा तब प्रथम दैत्यों ने जाय राजा रजिसे प्रार्थनाकी कि आप जिताने के लिये हमारे सहायकहों ८१ राजाने कहा अच्छा पर राज्य सब हमलेलेंगे तुम को न देंगे इस बात को दैत्योंने नहीं अङ्गीकारकिया तब देवताओंने कहा अच्छा आप जितादें ८२ राज्य आपहीकरें इसबातको सुनकर रजिने दैत्योंसे युद्ध करके सब इन्द्रके शत्रुओंको मारडाला व मारनेसे बचेहुये भागगये ८३ इस राजाके अद्भुत कर्म्मसे इन्द्र राजा रजिके पुत्रके समान हो गये बहुत दिनोंतक राज्यकरके इन्द्रका पालन पोषणकर फिर उनका राज्य उन्हींको सौंप राजारजि तप करनेको चलेगये ८४ परन्तु राजा रजिके तो सौ पुत्रथे उन्होंने आय बलसे इन्द्रका राज्य छीनलिया व तपोबल और गुणोंसे युक्त आप राज्य और यज्ञ भाग भोगनेलगे ८५ तब राज्यसे भ्रष्ट रजिके पुत्रोंसे पीड़ित होकर अतिदुःखित हो इन्द्रजीने जाय अपने गुरू बृहस्पतिजीसे कहाकि महाराज हम राजा रजि के पुत्रोंसे बहुत पीड़ितहैं ८६ न हमको राज्यही भोगनेको मिलता हैं न यज्ञ भागही भोजन करने को मिलते हैं इससे हमारे राज्यादि मिलने के लिये आप यत्न कीजिये ८७ यह सुनकर बृहस्पतिजी ने इन्द्रजीको ग्रहशान्तिविधान व पौष्टिककर्म्म वेदविधि से कर बलसे युक्त किया ८८ व अपने रथपर चढ़कर और ऊंचे आकाशमें जाय वेदकी ऐसीनिन्दा सुनाय रजिके पुत्रोंको मोहितकिया कि उन्हों ने उस वचनको देववाणी समझ वेदके सबकर्म्मों को छोड़ दिया ८९ इससे सबके सब धर्म्मसे भ्रष्टहोगये इससे उनका बल भी जातारहा इन्द्रनेजाय वज्रसे सबोंको मारडाला अब नहुषके बड़े धार्म्मिक सात पुत्रोंका वर्णनकरते हैं सुनिये ९०।९१ यति,ययाति, शर्याति,उत्तर, पर, अयति, वियति, ये सातोवंशके बढ़ानेवाले हुये ९२ उनमें यति तो कुमारही अवस्थामें योगीहोगये राज्य विवाह करनेकी उन्हों ने

इच्छाही नकी तब ययाति राजाहुये ये सदा बड़ेधर्म्मात्मा राजाहुये ९३ इनके दोस्त्रियांथीं एकदैत्योंके राजावृषपर्व्वाकी कन्या शर्म्मिष्ठा, व दूसरी शुक्राचार्य्यकी कन्या सुन्दरव्रतवाली देवयानी ९४ ययातिके दोनोंस्त्रियोंमें पांचपुत्रहुये उनके नाम कहतेहैं सुनिये देवयानीने यदु व तुर्व्वसु दोपुत्र उत्पन्नकिये ९५ व द्रुह्यु, अनु, पूरु ये तीन पुत्र शर्म्मिष्ठाने जाये उनमें यदु व पुरु दोपुत्र वंशके बढ़ानेवालेहुये ९६ हे भीष्मजी अबहम प्रथम पूरुकावंश कहतेहैं जिसमें कि आप उत्पन्नहुये हैं फिर यदुकावंश कहेंगे जिसमें यादव और बलदेवजी व श्रीकृष्णचन्द्रजी उत्पन्नहुये ९७ ये दोनों महात्मा पृथ्वीकाभार उतारने व पाण्डवों का हितकरनेके लिये अवतरे हैं यदु के पांचपुत्र हुये सब देवताओं के समान प्रकाशित थे ९८ उनके नाम ये थे सहस्रजित्, क्रोष्टा, नील, अंजिक, रघु, सहस्रजित् का पुत्र शतजित् नाम राजाहुआ ९९ इसके परम धार्म्मिक, हैहय, रेणुहय व तालहय ये तीन पुत्रहुये १०० हैहय के धर्म्मनेत्र नाम पुत्रहुआ धर्म्मनेत्र के कुन्ति उसके संहत १०१ उसके महिष्मान् महिष्मान्के बड़ा प्रतापी भद्रसेननाम पुत्रहुआ १०२ यह काशीका राजा हुआहै इसकी कथा प्रथम कहचुके हैं भद्रसेन के धर्मात्मा दुर्दम नाम पुत्रहुआ १०३ दुर्दम के भीम भीम के धनक धनक के चार पुत्रहुये सब लोक में विख्यात हुये १०४ उनके नाम ये थे कृताग्नि, कृतवीर्य्य, कृतधर्म्मा व चौथा कृतौजा कृतवीर्य्यके अर्ज्जुन नाम १०५ महाप्रतापी राजा हुआ इसके सहस्रभुजाथीं इससे सहस्रबाहु भी इसी का नामहुआ यह महाराजाधिराज सातद्वीप का स्वामी हुआ इसने दशहजारवर्ष तक बड़ा दुश्चर तपकिया १०६ उस में इस महाराजाधिराज ने अत्रिमुनि से उत्पन्न भगवान् दत्तात्रेयजी की आराधना की उसको पुरुषोत्तम दत्तात्रेयजी ने प्रसन्न होकर चार वरदिये १०७ उन्होंने प्रथम यह मांगा कि हमारे सहस्रबाहु हों दूसरे अधर्म्म करने में कभी मति नहो तीसरे आपके चरणारविन्द की भक्ति सदाबनी रहे चौथे युद्ध करके सब पृथ्वी को जीत धर्म्म से पालन करूँ ऐसे वर पाय राजा संग्राम में निर्भयहोगया १०८ । १०९ व जायसा-

तो द्वीप, छियालिसो खण्ड, पर्व्वत, नदी, समुद्र, बलसहित सब उन्हों
ने जीतली ११० फिर उस बुद्धिमान्‌के हजारभुजा होगये तब अ-
संख्यों यज्ञ बहुत २ दक्षिणा देकर सबद्वीपोंके प्रत्येक खण्डोंमें उन
महाराजने किये १११ सब यज्ञों में सुवर्णही के खम्भे गाड़ेगये थे
व सबों में सुवर्णही की वेदियां बांधीगई थीं सब यज्ञों में सब अल-
कारयुक्त देवगण प्रत्यक्ष विमानों पर चढ़ २ आय २ अपना
भागलेते थे ११२ गन्धर्व्व लोग सदा यज्ञों में आय २ गाते थे
अप्सरा नाचती थीं इस से राजा व उनके सब यज्ञ अति शोभित
थे जिसके यज्ञ में आय महाराज कार्त्तवीर्य्य की सब यज्ञ सामग्री
देखकर नारदजी ने ये श्लोकगाये कि यज्ञ, दान, तप, विक्रम व वेद
शास्त्र पढ़नेसे कोई भी राजा लोग महाराज कार्त्तवीर्य्यकी गति
को न पहुँचेंगे जो राजा, सातों द्वीपों में पवनके समान सबकालों में
फिरतारहा ११४ जो कहते हैं कि इसप्रकार पचासी हजार वर्षोंतक राज्य
किया पुरुष का एक चक्रवर्त्ती राजाहुआ ११६ सब पशुओंका पालक
पृथ्वीमेंयही था व सब अन्यमनुष्यादिकों का भी रक्षक सर्व्वत्रथा और
भी अपने योगाभ्यास से समय २ पर मेघ होकर पानी भी वही बर-
सता था ११७ जब वह अपने सहस्रों बाहुओं से पांच सौ धनुषों
पर टङ्कोर देताथा तब सहस्रों किरणों से प्रकाशित शरदृऋतु के
सूर्य्यके समानही दिखाई देताथा ११८ यह महाप्रकाश युक्त राजा
नर्म्मदाके किनारे माहिष्मतीनाम पुरी में रहता था यह वर्षाकालमें
जाय समुद्रका वेग अपने हाथोंसे रोकलेता था ११९ व सब अपनी
स्त्रियोंको लेकर क्रीड़ा करने को जब चाहता आकाशको चला जाता
फिर नीचे आय नानाप्रकारकी नदियों के किनारे तथा पर्व्वतों पर
क्रीड़ाकिया करता था यह जब कभी नर्म्मदा नदीमें क्रीड़ाकरने लग-
ता तो इसकी टेढ़ी भौहें देखतेही नर्म्मदा शङ्कित होकर अपनी
लहरें बन्दकरदेती थी मनुके वंशमें इसी महाराज ने समुद्रको ऐसा
थहाया कि ऊपरको लहरें आनेलगीं जिसके कारण विदितहुआ कि
ग्रीष्मकालमें भी वर्षाऋतुही विद्यमानथा जब उसके बाहुओंके हजारों

मे समुद्र खलभलाय उठता था १२०।१२२ तो पातालमें रहनेवाले असुरलोग मूर्च्छित होजाते व जहां तहां लुकारहते व सर्प्पलोग झते थे कि मानों अब फिर समुद्र मथा जायगा व अमृत निका मन्दराचलसे मथा जाता है १२३ इससे नम्रहो नीचेको मुहँ करलेते इसी महाराज ने एक समय धन्वाबाणले पांचबाण रावण कीओर चलायेथे जिससे रावण घबड़ागया था फिर और बाण चलाये कि जिन्होंने सपरिवार रावणको जीत व उसे बँधुवाकर आय माहिष्मतीपुरी में कररक्खा व बन्दीखानेमें डालदिया तब पुलस्त्य जी कहते हैं कि हमने जाय इसराजाकी बड़ी प्रार्त्थनाकी १२४। १२६ तब उसने हमारा बड़ागौरव मानकर रावणको छोड़ा जब यह सहस्रबाहु अपने भुजों से ताल देताथा तो आकाश, पाताल, भूलोक सब कांपउठते थे धन्यहै परशुरामजी को कि जिन्होंने इसके सब बाहुकाटडाले १२७। १२८ सो यह नहीं कि चोरी से काटाहो समर में जाय प्रचारकर परशुसे काटकर बाहुओं का पर्व्वतसा बनादिया परन्तु उसका कारण यहथा कि एक समय इसने जाय ब्रह्मपुरीके वनको अपने बाहुओं से गड़बड़ाया इससे ब्रह्माजीने कोप करके कहा कि जिससे तुमने इस वनमें उपद्रव किया इस से हे सहस्रभुज ऐसेही तुम एक तपस्वी जमदग्नि के सङ्ग ऐसा दुष्कर्म करोगे जिसे कोईभी न करेगा अर्त्थात् उनकी कामधेनु जबरदस्ती छीनलोगे तब महातपस्वी उनके पुत्र परशुरामजी तुम्हारे हाथ काटकर तुम्हें मारभी डालेंगे १२९। १३१ इसी शाप के कारण इस महाप्रतापी राजाको परशुरामजीने मारपाया नहींतो इसका मारना बहुतकठिनथा इस राजा के सौपुत्रथे परन्तु उनमें पांच महारथथे १३२ सबकेसब अस्त्रविद्यामें बड़ेनिपुण महाबली शूरवीर धर्म्मात्मा थे उनके नाम ये थे शूरसेन, शूर, धृष्ट, कृष्ण १३३ व जयध्वज इन में जयध्वज के पुत्रको तालजङ्घनाम था यह महाबली राजाहुआ १३४ इसके सौपुत्रहुये उनसबोंका तालजङ्घ नामहुआ इन सब महात्मा हैहय वंशवाले तालजङ्घा नामों से पांचकुल उत्पन्नहुये १३५ एक वीतिहोत्र, दूसराभोज, तीसराअवन्तय, तुण्डकेशरचौथा, पांचवां

विक्रान्त ये सब तालजङ्घाही कहाते थे १३६ वीतिहोत्र के पुत्रका अनन्त नामहुआ यह बड़ा वीर्य्यवान् था इसके पुत्रका दुर्ज्जय नाम हुआ यह शत्रुओं को देखते ही मारडालता था १३७ व प्रजाओं को अपने औरसपुत्र के समान प्रिय के साथ पालता था व बड़ा धर्म्मात्माथा ॥

दो० कार्त्तवीर्य्य अर्ज्जुनसहस बाहुमान रणधीर ॥
जो सागरपर्य्यन्तमहि जीती निजधनुतीर १
उठि प्रभातजो पुरुषनित लेत तासु शुभनाम ॥
कबहुँ नशात न तासुधन नष्ट मिलतधनधाम २
कार्त्तवीर्य्य नृपजन्मजो कहतपुरुष चितलाय ॥
वाञ्छितसुखलहियहँबहुरि लहैस्वर्गसुखजाय३।१३८॥१४०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेयदुवंशकीर्त्तनन्नाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

दो० तेरहयें अध्यायमहँ क्रोष्टादिककरवंश ॥
कृष्णचन्द्रअवतारजहँ अरुबहुवंशप्रशंस १
अरुगुरुधरिभृगुतनयतनु नास्तिकधर्म्मसिखाव ॥
दैत्यनकहँभृगुसुततपहु करिबहुभांतिबनाव २
नामजयन्तीशचिसुता जिमिशुक्रहिवशकीन ॥
तासोंलहिवरसुरविजय करवाईलवलीन ३ ॥

पुलस्त्यमुनि भीष्मजी से बोले कि हे राजेन्द्र अब क्रोष्टाका उत्तमपुरुषवाला वंश कहते हैं सुनो जिसवंश में वृष्णिके कुलमें श्रेष्ठ श्रीभगवान्विष्णुजीने अवतार लिया १ क्रोष्टाके पुत्रका वृजिनीवान् नामथा यह महायशस्वी हुआ तिसकापुत्र स्वातिहुआ स्वाति के कुशंकुहुआ २ कुशंकु के चित्ररथनाम पुत्रहुआ इन्हींका शशबिन्दु भी नामहुआ यह राजा चक्रवर्त्ती हुआ ३ इसवंश के विषय में उसयुग में यह श्लोक गाया जाता था कि शशबिन्दुराजा के सौपुत्र हुये सबकेसब बड़े बुद्धिमान्, सुन्दररूपवान्, बड़ेधनवान् व महा-

बलवान् हुये ४।५ उनमें पृथुसाह्न, पृथुश्रवा, पृथुयशा, पृथुतेजा, पृथूद्भव, पृथुकीर्ति, पृथुमान् ये प्रधान हुये ६ इनमें भी पुराण जानने वाले लोग पृथुश्रवा की बड़ी बड़ाई करते हैं पृथुश्रवाके शत्रुओं को तापदेनेवाला उशना नाम पुत्र हुआ ७ उशना के शिनेयु नाम श्रेष्ठ पुत्र हुआ शिनेयुके रुक्मकवच हुआ ८ यह युद्धमें निपुण राजा युद्धमें अनेकप्रकारके बाणोंसे धनुषधारियों को मारकर इस पृथ्वीको पाकर ९ अश्वमेधमें ब्राह्मणों को दक्षिणा देताभया इसके शत्रुवीरों का नाशनेवाला परावृत् पुत्र हुआ १० इसके महावीर्य्य पराक्रमी पांचपुत्र हुये उनके नाम ये थे रुक्मेषु, पृथुरुक्म, ज्यामघ, परिघ, हरि ११ परिघ और हरिको उसके पिताने विदेहपुरका राजा बनाया फिर रुक्मेषु अपने देशका राजा हुआ पृथुरुक्म उसका अनुयायी रहा १२ इन दोनोंने मिलकर ज्यामघ नाम अपने भाईको राज्यसे निकाल दिया यह ज्यामघ बड़ा प्रशान्त चित्त मनुष्य था वन को चलाजाताथा मार्ग में एक ब्राह्मणदेव मिले उन्होंने रोंका कि क्यों वनजाते हो उनके वचन मानकर १३ धनुर्बाण धारणकर ज्यामघ वनको नहींगये जाते २ नर्म्मदानदी के किनारेपर अकेले पहुँचे पर जीविका तो कुछ थी नहीं इससे दुःखित रहते थे वहां ऋक्षवान् पर्व्वतपर पहुँचे उसपर किसी कारण उनके भाई नहीं जातेथे ज्यामघ का विवाह होगयाथा उनकी स्त्रीका शैब्या नाम सतीस्त्रीथी १४।१५ राजाके कोई पुत्र न था पर दूसरी स्त्री नहीं मिलती थी कि उसमें पुत्र उत्पन्न करते ज्यामघसे एक ठिकानें युद्ध हुआ उसमें इनकी विजय हुई उसराजाके एककन्याथी उसे अपनी स्त्री बनानेके लिये घरलाये १६ जब इनकी स्त्री शैब्याने पूंछा कि यह कौनहै तो मारेडरके कह दिया कि हे पवित्र मुसिकानिवाली यह तुम्हारी बहूहै उसने कहा मेरे तो पुत्रही नहीं फिर बहू कैसे १७ राजाने कहा जब तुम्हारे पुत्रहोगा तो उसकी यह स्त्री होगी इतना कह राजा रानी तपकरनेलगे उनके तपसे प्रसन्नहो विश्वेदेवोंने आशीर्वाद दिया उससे यद्यपि शैब्या वनाय वृद्धाहोगईथी पर पुत्रहुआ उसका विदर्भ नामहुआ जब वह विवाहके योग्य हुआ उसी कन्याके साथ विवाहहुआ जिसको ज्याम-

घलाये थे विदर्भ से उस स्त्री में क्रथ, कौशिक १८।१९ व तीसरा लोमपाद परमधर्मात्मा पुत्रहुआ यह महाशूर वीर रण में विशारद हुआ२०लोमपादके बभ्रुनामपुत्र हुआ उसके पुत्रका धृति नामहुआ कौशिकके चेदिनाम पुत्रहुआ उसके चैद्य नृप नाम २१ क्रथके कुन्ति नाम तनयहुआ कुन्तिके घृष्ट घृष्टके सृष्ट यहभी बड़ापराक्रमी राजा हुआ २२ सृष्टके परमधर्म्मात्मा व शत्रुओं का नाशक निवृत्ति नाम पुत्रहुआ निवृत्ति के दाशार्ह पुत्रहुआ इसीका विदूरथभी नाम हुआ २३ विदूरथके दाशार्ह दाशार्ह के भीम भीमके जीमूत जीमूतके विकृति विकृतिके भीमरथ २४ भीमरथके नवरथ उसके दशरथ उसके शकुनिनाम पुत्रहुआ २५ शकुनिके करम्भ करम्भके देवरात देवरात के देवक्षत्र यहराजा महायशस्वी था २६ इसके पुत्रका देवल नाम हुआ यह देवगर्भही के समानथा इसके मधुनाम महातेजस्वी तनय हुआ मधुके कुरुवश कुरुवशके पुरुहोत्र नाम पुत्र हुआ यह पुरुषों में बहुत प्रतापीथा पुरुहोत्रके द्रवती वैदर्भी में अंशु अंशुके वेत्रकी स्त्री में सत्त्वयुक्त सात्त्वत सात्त्वतके कीर्त्तिवर्द्धन २७।२९ यह इतना वंश ज्यामघका वर्णन कियागया जिसको उनके भाइयोंने निकालदिया तौभी वे विदर्भदेश के राजा होहीगये ३० और सात्त्वतकी एक स्त्री का कौसल्या नाम था उसने भजमान, दिव्य, देवावृध, अन्धक व वृष्णि इतने पुत्र उत्पन्नकिये ३१ उनमें चारसे बड़ी सृष्टि हुई उसको सुनो वर्णन करते हैं भजमानके सृंजयकी कन्या सृञ्जयी नाम स्त्री में भाज नाम पुत्रहुआ ३२ भाजके दो स्त्रियांथीं उन्होंने बहुतसे पुत्र उत्पन्न किये जिनके नाम येथे नेमिकृकण, वृष्णि, परपुरञ्जय ३३ इत्यादि ये सब भाजक कहाते देवावृध पृथु, मधु, मित्रवर्द्धन ये दूसरी स्त्री में हुये ३४ मित्रवर्द्धन के कोई पुत्र नहीं था इस से उन्होंने बड़ा तप किया मनमें इस बातकी इच्छा करतेथे कि हमारे सबगुणोंसेयुक्त पुत्र हो ३५ अपना चित्त परमेश्वरमें लगादिया था व तप एक वर्णाशा नदी के किनारेपर करते थे तपकरते२ एक दिन उसनदी का जल हाथमें लेकर सङ्कल्प करनेलगे कि वह नदी मनुष्यका शरीर धारण कर निकलआई ३६ व मनमें शोचकरनेलगी कि इस राजाका क-

ल्याण कैसेहो फिर शोचते २ उसके विचार में वह बात आगई जिससे राजाके सन्तान न होतीथी ३७ वह यहबातथी कि ऐसी तो कोई स्त्रीही नहीं जिसमें जैसा राजा चाहता वैसा पुत्रहो इससे अब हमीं इसकी स्त्रीहो इसको वैसा पुत्रदेवें ३८ यह शोचकर कुमारी कन्याका रूप धारणकर जोकि अत्यन्त स्वरूपवती स्त्रीकासाथा राजासे जनाया राजा उसकी सञ्ज्ञाजानकर उसके निकटगया ३९ व भोगकिया इससे उसनदीने नवयें महीनेमें सबगुणोंसेयुक्त जैसा कि राजा चाहताथा पुत्र उत्पन्नकिया उस पुत्रका देवावृध नाम हुआ व दूसरा नाम बभ्रुभी हुआ ४० इस वंशके विषयमें महात्मा देवावृध के गुणोंको बखानतेहुये यह श्लोक महात्मा लोगोंने गायाहै ४१ कि मनुष्योंमें बभ्रुनाम राजा श्रेष्ठहै व देवावृध देवताओं के समानहै जो कि अपने पिताके छिहत्तर हज़ार पुत्रों के ४२ मरनेपर उत्पन्न हुआ यह पुत्र यज्ञ, दान व तप करने में बड़ा दृढ़व्रतथा व बड़ा बुद्धिमान्, ब्रह्मण्य, महातेजस्वी और रूपवान्था बभ्रुके एककन्याहुई जिसका शर्करानामथा उसके चार पुत्र उत्पन्नहुये ४३।४४ उनके नाम ये हैं कुकुर, भजमान, श्याम, कंबलबर्हिष कुकुरके पुत्रका वृष्टिनाम हुआ वृष्टिके पुत्र धृति ४५ उसके कपोतरोमा उसके तैत्तिरि उसके बहुरूप उसके निश्चय अति विद्वान् नरिनाम पुत्रहुआ ४६ इस पुत्रका चन्द-नोदक दुन्दुभि दूसरा नाम हुआ इसके पुत्रका अभिजित् नामहुआ अभिजित् ने पुनर्व्वसु नाम पुत्रपाया ४७ इसकेलिये अश्वमेध यज्ञ किया गया था उस यज्ञमें सभाके मध्य में योंही अयोनिज यह पुत्र प्रकट होआयाथा यह पुनर्व्वसु सब अधर्म्म व धर्म्म जानता पर धर्म्म ही करताथा ४८।४९ इसके एकपुत्र व एक कन्या जोड़ी उत्पन्न हुये पुत्र का आहुक नामहुआ व कन्याका आहुकी ५० इन आहुक के विषय में यह श्लोक गाया ज़ाता है इनके अकेले शरीर से लक्षोंपुत्र पौत्रादि उत्पन्नहुये सबके सब हाथी घोड़ेवाले व रथवालेहुये कोईभी असत्यवादी नहींथा न कोई अज्ञानीथा ५१।५२ अपवित्र कोई नहीं रहता मूर्ख एकभीनथा यह भोजवंश है आहुक के देहतकरहा उनके पुत्रों से फिर वंश नहींचला ५३ आहुकने अपनी भगिनी आहुकी

का विवाह अवन्तिनाम राजाके सङ्गकिया इनके एक कन्याथी उ-
सके दोपुत्रहुये ५४ एक देवक दूसरे उग्रसेन ये दोनोंपुत्र देवताओं
के समान तेजस्वीथे देवक के चारपुत्र हुये ये सब देवोंकेही तुल्य
थे ५५ देववान्, उपदेव, सुदेव और देवरक्षित ये नामथे इन दोनों
भाइयों के सात बहनेथीं उनसातोंका वसुदेवजीके सङ्ग विवाहहुआ
५६ उनके नामये हैं देवकी, श्रुतदेवा, यशोदा, श्रुतिश्रवा, श्रीदेवा,
उपदेवा व सुरूपा ५७ उग्रसेन के नवपुत्र थे, उनमें कंस सबसे ज्येष्ठ
था न्यग्रोध, सुनामा, कङ्क, शंकु, सुभू ५८ राष्ट्रपाल, बद्धमुष्टि, समु-
ष्टिक इनके बहिनेंभी पांचथीं कंसा, कंसवती ५९ सुरभी, राष्ट्रपाली
व कंका ये श्रेष्ठहुई हैं पुत्रों समेत उग्रसेन कुकुरवंशी होनेके कारण
कुकुरोद्भव कहातेथे ६० और भजमानके महारथी विदूरथ नाम पुत्र
हुआ राजाधिदेव व शूर येदो विदूरथ के पुत्रहुये ६१ राजाधिदेव के
क्षत्रियों के व्रतमें युक्त अत्यन्त वीर दो पुत्रहुये एक शोणाश्व, दूसरे
श्वेतवाहन ६२ शोणाश्वके पांचपुत्र हुये सबबड़े शूरवीर और लड़ाई
में निपुणहुये उनके नाम ये हैं शमी, राजशर्म्मा, निमूर्त, शत्रुजित् व
शुचि ६३ शमीके प्रतिक्षत्र प्रतिक्षत्रके भोज भोजके हृदीक नाम पुत्र
हुआ व हृदीकके बड़े पराक्रमी दशपुत्र हुये ६४ उनमें सबसे बड़ेका
कृतवर्म्मा नामथा दूसरेका शतधन्वा तीसरेका देवार्ह चौथेका सुभानु
पांचयेंका भीषण छठेंका महाबल ६५ सातयेंका अजात आठयें का
विजात नवयेंका करक व दशयेंका करन्धम नाम था उनमें तीसरे
देवार्ह के पुत्रका कम्बलबर्हिष नाम हुआ ६६ इसके असमौजा व
समौजा दो पुत्रहुये असमौजाके अजात पुत्र व समौजा दोपुत्र हुये
६७ व समौजाके परमधर्म्मात्मा तीनपुत्र हुये पहिला सुदंश दूसरा
सुवंश तीसरा कृष्ण ६८ यह अन्धक वंश कहाता है इसका जो कोई
कीर्त्तन करता है उसका वंश बहुत बढ़ता है व प्रजावान् होताहै ६९
अब फिर क्रोष्टा का वंश कहते हैं क्रोष्टाके गांधारी व माद्री दो स्त्रियां
थीं गान्धारीने सुमित्र व मित्रवत्सल दो पुत्र उत्पन्नकिये ७० व माद्री
ने युधाजित्, देवमीढ़, अनमित्र, शिनि व कृतलक्षण पांचपुत्र उत्पन्न
किये ७१ इनमें अनमित्रके निघ्न नाम पुत्र हुआ व निघ्नके दो पुत्र

हुये एक महावीर्य्यवान् प्रसेन व दूसरा शक्तिसेन ७२ प्रसेनके एक स्यमन्तक नाम मणियों में उत्तम रत्न था पृथ्वीपर वह मणि सब मणियोंका राजा कहाता था ७३ बहुधा प्रसेन उस मणिको अपने हृदयपर धारण किये शोभित रहता था एक दिन कृष्ण-चन्द्रजी ने उससे वह मणि राजा के लिये मांगा पर उसने नहीं दिया ७४ यद्यपि कृष्णजी समर्थ थे चाहते तो छीन लेते पर नहीं लिया एक समय उस मणि से भूषित होकर घोड़ेपर चढ़ प्रसेन शिकार खेलने गया ७५ जाते २ उसने एक बिलके किनारे बड़ाभारी शब्दसुना जो कि उसके विनाश होने का कारण हुआ पर प्रसेन उस बिलमें पैठा तो वहां एक ऋक्षरहता था वह दिखाई दिया ७६ ऋक्षने प्रसेनको मारा व प्रसेनने ऋक्षको दोनों परस्पर जीतनेकी इच्छा से युद्धकरते भये ७७ परन्तु प्रसेन का प्रहार उसके थोड़ा लगा व ऋक्षका प्रसेनके अधिक इससे प्रसेन मरगया मणि ऋक्षने लेलिया और अपनी गुहाके भीतर वह ऋक्ष चलागया जब इस प्रकार प्रसेन मारा गया तो सत्राजित और दूसरे यादव कृष्णचन्द्र महाराजके ऊपर शङ्का करने लगे कि मणि के लिये श्रीकृष्णचन्द्रही ने प्रसेन को मारा है ७८ । ७९ क्योंकि प्रसेन मणिरत्न स्यमन्तक धारण करके वनको गयाही था वहां कृ-ष्णचन्द्रको देख उसने मणि न दिया होगा बस इसी से उस दुष्टको शत्रु समझकर श्रीकृष्णजीने मारडाला होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं जब इस प्रकारका दुर्य्यश सत्राजितका किया हुआ सब ओर श्रीकृष्ण महाराजने सुना बहुतसमय में तो ८० । ८१ किसी समय शिकार खेलनेके ओढ़रसे उसी वनमें गये जहां प्रसेन मारागया था जाते २ उसी बिलके समीप पहुँचे ८२ उसी समयमें उस महाबली ऋक्षराजने अपनी गुहाके भीतर शब्दकिया उसे सुनकर श्रीकृष्ण-चन्द्र खड्गलेकर उस गुहा में पैठे ८३ वहां देखा तो महाबली जाम्बवान् नाम ऋक्षोंका राजा शब्द कररहाथा उसे देखकर कृष्ण-चन्द्रजी शीघ्रही उसके निकटगये ८४ और क्रोधसे लालनेत्र होकर इन्होंने जाम्बवान् को पकड़ लिया जाम्बवान्ने भी इनको विष्णु

भगवान्‌कारूप समझकर विष्णुसूक्त नाम वैदिक स्तोत्रसे इनकी बड़ी स्तुतिकी तब भगवान् कृष्णचन्द्रजीने प्रसन्न होकर कहा हम से जो चाहो वरमांगो ८५ । ८६ जाम्बवान्‌ने कहा मैं और कुछभी नहीं चाहताहूं आप अपने चक्रसे मुझे मारडालें बस यहीवर मुझ को इष्टहै और हमारी यह कन्याहै सो आपको पति करना चाहती है इससे इसे ग्रहणकीजिये ८७ व जो यह मणि हम प्रसेनको मारकर लाये हैं वह यह देखिये हमारे यहां विद्यमानहै उसे आप दायजमें लीजिये ८८ तब श्रीहरि चक्रसे जाम्बवान् को मारकर उस की कन्या जाम्बवती व मणिको ले अपनी द्वारकापुरी में आये ८९ व सब यादवों को बुलाय सभामें बैठाय सबके सामने सत्राजितको मणि देदिया ९० क्योंकि उस मणिके कारण कृष्णचन्द्रजीको प्रसेनके मारडालने का मिथ्या दोष लगाथा इससे व्याकुलथे तब सब यादवलोग श्रीवासुदेव भगवान् से बोले कि महाराज हम सबलोगोंके मनों में यही बातथी कि प्रसेन को तुम्हींने मारा है इसप्रकार कृष्णचन्द्रजी ने इस मिथ्या दोषसे छुट्टीपाई व प्रसेनकी कथा कही इस स्यमन्तकोपाख्यान को जो कोई सुनता सुनाता है उसे मिथ्या दोषनहीं लगता व जो लगगयाहो तो छूटजाता है व सत्राजित के दश स्त्रियां थीं उन सबों में दश २ पुत्र उत्पन्न हुये ९१ । ९२ इस से सब सौपुत्र हुये सबके सब बड़े पराक्रमी व शूर वीरथे उन सब पुत्रों में महापराक्रमी सब से बड़ा भङ्ककार नाम था ९३ व भङ्ककार से भी ज्येष्ठा एक व्रतवती नाम कन्या थी यह कन्या यद्यपि इस भङ्ककार की बहिन थी पर पूर्व्वजन्म की उस की स्त्री थी इस लिये उन दोनों का विवाह होगया इससे उन दोनोंसे शिनि, वाल, प्रतापवान् ९४ अभङ्ग ये पुत्र हुये अभङ्ग से युयुधान नाम पुत्र हुआ युयुधान से युगन्धर नाम पुत्र हुआ युगन्धरके सौ पुत्र हुये ९५ उन सबोंकी सत्यसञ्ज्ञा हुई और जो वृष्णिके वंश में अनमित्र नाम राजा हुआ उसके एकपुत्र हुआ उसका भी शिनि नाम हुआ यह सब से छोटा पुत्र था ९६ अनमित्रके युधाजित् यदुवंशियों में वीर पुत्र हुआ दो और भी दूसरी स्त्री के पुत्रथे एकका ऋषभ नाम था दूसरेका चित्र

ये दोनों भी वीरथे ९७ ऋषभ व चित्र दोनोंका विवाह हुआ काशी के राजाकी कन्या दो जयन्तीके नामसे प्रसिद्धथीं उन्हींके सङ्ग दोनों के विवाह हुये ऋषभसे जयन्ती में जयन्त नाम पुत्र हुआ जयन्त से अतिधीर, श्रुतवान्, अतिथि, प्रिय, श्वफल्क ये पुत्रहुये ९८।९९ श्वफल्कके अक्रूरहुये अक्रूरके सुदक्ष व भूरिदाक्षिण ये दो पुत्र व रत्न कन्या व शैब्या ये दो कन्या हुईं १०० व दूसरी स्त्री में महाबली ग्यारहपुत्र उत्पन्नहुये उनके नाम ये हैं उपलम्भ, सदालम्भ, उत्कल, आर्य्यशैशव १०१ सुधीर, सदायक्ष, शत्रुघ्न, अरिमेजय, धर्म्मदृष्टि, धर्म, सृष्टिमौलि १०२ ये सब रत्नादिकोंके लेआनेवाले हुये व अक्रूर से शूरसेना नाम स्त्री में कुलनन्दन देववान्, उपदेव ये दो पुत्र हुये दोनों देवतुल्य पराक्रमीहुये अश्विनी स्त्री में पृथु, विपृथु १०३।१०४ व अश्वग्रीव, अश्वबाहु नाम स्त्री में सुबाहु, सुपार्श्वक, गवेषण, रिष्टनेमि, सुवर्च्चा, सुधर्म्मा, मृदु १०५ अभूमि, बहुभूमि, श्रविष्ठा, श्रवण ये पुत्रहुये सबके सब बड़ेपराक्रमी व तेजस्वी हुये व जो ख्यात नाम राजा पूर्व्वमें हुआ उसने ऐक्ष्वाकी नाम स्त्री में मीढुकनाम पुत्र उत्पन्न किया १०६।१०७ मीढुक से भोजा नाम स्त्री में शूरसञ्ज्ञक दश पुत्र हुये उन दश शूरों में प्रत्येक के दश २ पुत्र हुये एकके महाबाहु वसुदेव जिनको आनकदुन्दुभिभी कहतेहैं १०८ व देवभाग, देवश्रवा, अनावृष्टि, कुनि, नन्दि, सकृद्यश १०९ श्याम, शमीक व सप्ताख्य ये दश पुत्र हुये उन में जिस शूर के वसुदेव जी हुये उनके पांचकन्या भी हुईं उनके नाम ये हैं श्रुतकीर्ति, पृथा, श्रुतदेवी, श्रुतश्रवा ११० व राजाधिदेवी ये पांचो बड़े २ वीरोंकी माताहुईं उन में श्रुतदेवीने कृतनाम राजासे करूषसञ्ज्ञक पुत्र उत्पन्नकिया १११ व श्रुतकीर्तिने केकयदेशके राजासे सन्तर्दननाम पुत्रको उत्पन्नकिया श्रुतश्रवाने चैद्यदेशके राजासे सुनीथनाम पुत्र उत्पन्नकिया ११२ व राजाधिदेवीके धर्म्म नाम पुत्र हुआ इसने अपना विवाहही नहीं किया राजाशूरकी व कुन्तिभोज नाम राजाकी मित्रताथी इसलिये उन्होंने अपनी पृथा नाम कन्या कुन्तिभोजको देदी ११३ इससे कुन्तिभोजने अपनेमित्र की कन्या पृथा को अपने यहां लेजाकर कुन्ती अपने नामके सम्ब-

न्ध से नाम धराया ये कुन्तीजी वसुदेव अपने भाईकेही समान सब
गुणों में थीं व कुन्तिभोज राजाने फिर कुन्ती का विवाह महाराज
पाण्डुजी के संग किया उन महादेवी कुन्तीजीने अपनेपति पाण्डु के
कहने से महारथ तीनपुत्र उत्पन्न किये उनमें धर्म्मराज से तो यु-
धिष्ठिरजी को व पवनसे भीमसेन को ११४।११५ इन्द्रसे धनञ्जय
को जिनका प्रसिद्ध नाम अर्ज्जुन हुआ जिनमें इन्द्रही के समान वल
व पराक्रम हुआ ये अर्ज्जुन परमेश्वर नारायण भगवान् के अंशसे
जो तीन पुरुष हुये उनमें हैं ११६ इन्होंने देवताओं का बड़ाकार्य्य
किया व महाभारत में सब शत्रुओं को मारा व इन्द्रके वरदान से
इन्द्रके अवध्य भी दानवों को मारडाला ११७ वहां इन्द्रपुरीसेलाकर
कल्पवृक्ष लगादिया व जिस प्रकार कुन्तीजी में धर्म्म, पवन व इन्द्र
ये तीनों देवता आय उत्पन्न हुयेथे उसी प्रकार पाण्डुजी की दूसरी
माद्रीनाम स्त्रीमें अश्विनीकुमार नामके दो देव उत्पन्न हुये ११८ उन
में एकका नकुल नाम हुआ दूसरेका सहदेव ये दोनों रूप व वल,
पराक्रम में वड़े विशेष हुये अब वसुदेवकी सब स्त्रियोंका वंश कहते
हैं पुरुवंशकी कन्या रोहिणी नाम स्त्रीमें ११९ वसुदेवजी से सबसे
इष्ट राम पुत्र हुए फिर सारण नाम पुत्रहुआ फिर रणप्रिय, दुर्द्धर,
दमन, पिण्डारक, महाहनु येपुत्रहुये१२० और जो उनकी महाभाग्य-
वती देवकी नाम स्त्री थी उसमें महापुरुष, महाबाहु, श्रीकृष्णचन्द्रजी
हुये १२१ इनके प्रथम देवकीजी में सात पुत्र और उत्पन्न हुये थे
उनमें एक बलदेवजीभी सातयेंहुये कृष्णचन्द्रजी आठयें हुये उनसे
छोटी एक बहनहुई उसका सुभद्रा नाम हुआ व वसुदेवजीकी उपदेवी
नामस्त्रीमें विजय, रोचमान, वर्द्धमान, देवल ये महात्मा पुत्र उत्पन्नहुये
वृहद्देवी में महात्मा अगावह नाम पुत्र हुआ १२२।१२३ व वृहद्देवीमें
मन्दकनाम पुत्र हुआ देवकीजी के सातयें पुत्र का रैमन्तनाम हुआ
यह उन्हीं वलदेवजी का दूसरा नामहै १२४ व गवेषण, महाभाग,
संग्रामापराजित् ये श्रुतदेवानाम स्त्री में हुये एकसमय वसुदेवजी वन
में विहार करनेगये वहां एक वैश्यामें कौशिकनाम पुत्र उत्पन्न किया
उस शौरिकी स्त्री का श्रुतन्धरा नाम हुआ उसमें उस महावलवान्

बसुदेवजी के पुत्रने कपिल नाम पुत्र उत्पन्न किया इस बातको सुन जानकर जनोंको बड़ा विषादहुआ कि महात्मा वसुदेवजीके वेश्यामें कैसे पुत्रहुआ व वसुदेवजीकी कन्या जो सुभद्रानाम थीं उनका अर्जुन के सङ्ग विवाहहुआ १२५।१२७ उसमें सौभद्रनाम महाधनुर्द्धर पुत्र हुआ इसी पुत्रका अभिमन्यु भी नाम हुआ ये अभिमन्यु पूर्वजन्म में चन्द्रमाके पुत्र बुध थे देवों की प्रार्थनासे उन्होंने केवल पन्द्रहवर्ष के लिये भूमिपर रहने व देवकार्य्य करनेकेलिये भेजाथा १२८ यशस्विनी मनस्विनी प्रथम पण्डित उत्तमबाहु देवश्रवसको उत्पन्नकरती भई १२९ निवृत्तशत्रु शत्रुघ्न तिनसे श्रद्धा उत्पन्नहुई और कृष्णजी ने प्रसन्न होकर गण्डूषामें सौपुत्रदिये १३० सचन्द्र महाभाग वीर्य्यवन्त महाबल हुए नन्दनके रतिपाल और रति ये दो पुत्रहुए १३१ और जो भोजवंशमें एक शमीक नाम राजा कहाये हैं उनके महाबली व महापराक्रमी चार पुत्र हुये उनके नाम ये हैं विरज, धनु, व्योम व सृञ्जय १३२ उनमें व्योम के कोई सन्तान कन्या वा पुत्र नहीं हुआ व औरों के वंश हुआ पर राजा कोई न हुआ सृञ्जय के धनञ्जय हुआ यह राजर्षिहुआ इससे यह भोजवंश समाप्त होगया १३३ अब आगे कृष्णचन्द्रजी की कुछ कथा कहते हैं सुनिये जो कोई नित्य कृष्णचन्द्र महाराजके जन्मकी कथा कहता है वा नित्य सुनता है वह सब पापों से छूटजाता है १३४ ये देवदेव महादेव कृष्णचन्द्रजी पूर्व्वसमय में तो सब प्रजाओं व सब देवताओं के नाथथे पर नरलोकमें विहार करनेकी इच्छासे मनुष्यका रूप धारण करके अवतरे १३५ इसका कारण यह है कि देवकी वसुदेवने पूर्व्वजन्ममें बड़ी तपस्या कीथी इससे कमलनयन श्रीभगवान् चतुर्भुजी सुन्दर मूर्त्ति को धारणकर उनके यहां अवतरे १३६ जन्म होने के समय जब श्रीवत्स कौस्तुभमणि शङ्ख चक्रादि धारण किये कृष्णचन्द्र भगवान्को देखा तो वसुदेवजी बोले कि हे महाराज इस रूप को हरलीजिये १३७ क्योंकि हम कंस से बहुत डरेहुये हैं इससे आपसे ऐसा कहते हैं उसने अतिभीमविक्रमी हमारे छःपुत्र मार डाले हैं १३८ वसुदेवजीके ऐसे वचन सुनकर श्रीभगवान्ने अपना

वह चतुर्भुजी स्वरूप संहार करके कहा कि यदि ऐसा है कंस से डरतेहो तो हमको नन्दके यहां पहुँचा आओ १३९ यह सुनकर वसुदेवजी कृष्णचन्द्रजीको लेजाकर नन्दगोपको देकर फिर उन्होंने उनसे कहा कि हमारे इस पुत्रकी रक्षा आप करते रहियेगा क्योंकि इस हमारे पुत्रसे सब यादवों का कल्याण होगा १४० यह बालक हमारी देवकी स्त्री में हुआ है जबतक यह कंस को न मारे तबतक तुम रक्षा करना तबतक यह तुम्हारे यहां रहकर पृथ्वीका भार उतारता रहेगा १४१ जो कोई दुष्ट राजा हैं उन सबोंको मारेगा व फिर जब कंसादिकों को ये हमारे लड़के मारडालेंगे तो जब कौरवों पाण्डवोंका युद्धहोगा उसमें सब क्षत्रियोंका समागम होगा १४२ तब अर्ज्जुनके सारथि बनकर और सब दुष्टोंका संहार करेंगे इसप्रकार सब दुष्ट क्षत्रियों को मार मरवाकर सब पृथ्वीके भोगों को भोगेंगे, १४३ व पीछे सब यदुकुल को देवलोक को पहुँचावेंगे यह कहकर वसुदेव अपने यहां चले आये इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने पूँछा कि ये वसुदेव पूर्व्वजन्म के कौन थे व महायशस्विनी देवकी कौन थी १४४ व नन्द कौन थे व उनकी स्त्री यशोदा कौन थीं जिन यशोदाजीने विष्णुभगवान् कृष्णचन्द्रजी का पालन पोषण किया व जिनको उन्होंने माता कहा १४५ देवकीजी ने तो गर्भ में धारण किया व यशोदाजी ने पालन करके बढ़ाया पुलस्त्यमुनि बोले कि कश्यप तो पुरुष थे व अदिति उनकी स्त्री थी १४६ उनमें कश्यप तो ब्रह्माजी के अंशसे उत्पन्न हुये व अदिति पृथ्वी के अंशसे इसी प्रकार नन्द द्रोण नाम वसुथे व धरा उनकी स्त्रीका नामथा वही आकर यशोदा हुईं १४७ पूर्वजन्ममें देवकीने विष्णु भगवान् को अपने में पुत्र होना व यशोदा ने पुत्रभाव होना मांगा था इसीसे जन्मके समय देवकीजीसे कृष्णचन्द्रजीने कहाकि तुमने हमारा जन्म अपने उदरसे चाहाथा इससे हमने तुम्हारे गर्भ से अवतार लिया है इस प्रकार कहकर उनकी कामना पूर्ण करते भये १४८ और योगी, महादेव कृष्णजी बहुतकाल तक सब प्राणियों को मोहित करतेहुए मनुष्य देहमें स्थितरहे १४९ ये विष्णुजी धर्म और यज्ञके नष्ट होने

में धर्म के स्थित और असुरों के नाशके लिये यदुकुलमें हुए हैं १५०
इन कृष्णचन्द्रजी के रुक्मिणी, सत्यभामा, नग्नजित् राजाकी कन्या
सत्या, सुमित्रा, भीमसेनराजा की कन्या शैब्या, गान्धारी, लक्ष्मणा
१५१ सुभीमा, माद्री, कौसल्या व विजया इन्हें आदिसब सोलह
सहस्र एकसौआठ स्त्रियां थीं १५२ उनमें सबसे प्रथम पट्टरानी
रुक्मिणीजीने जितनेपुत्र उत्पन्न किये उनके नाम हमसे सुनो महा-
बली प्रद्युम्न, रणमेंशूर चारुदेष्ण १५३ सुचारु व चारुभद्र, सदश्व,
ह्रस्व, चारुगुप्त, भद्रचारु, चारुक १५४ चारुहास सबसे छोटा और
चारुमती कन्या हुई और सत्यभामाने भानु, भीमरथ, क्षण, १५५
रोहित, दीप्तिमान्, ताम्रबन्ध, जलन्धम इतनेपुत्र उत्पन्न किये व
चार कन्याभी सत्यभामाके हुईं १५६ और जाम्बवतीके अतिसुन्दर
सुत साम्बजीहुये जिन्होंने बड़ाभारी सूर्य्यका ग्रन्थ बनाया उसमें
बहुत से स्तोत्र व यन्त्र मन्त्र हैं जिनसे सन्तुष्टहोकर सूर्य्य भग-
वान् ने साम्बका कुष्ठरोग मिटा दिया १५७ ॥१५८ सुमित्र, चारु-
मित्र इत्यादि मित्रविन्दाके पुत्रहुये मित्रबाहु, व सुनीथ आदि
नाग्नजिती के पुत्रहुये १५९ सबस्त्रियों के सबपुत्र १६१०८० एक
लाख इकसठसहस्र अस्सीहुये प्रद्युम्नजीसे वैदर्भीनाम स्त्रीमें अनि-
रुद्ध, बुद्धिसत्तम, मृगकेतन आदिपुत्र हुये उनमें अनिरुद्धजी अपने
पिताही के तुल्य पराक्रमादि में हुये १६० । १६१ व सुपार्श्व नाम
राजाकी कन्या काम्यानाम साम्बकी स्त्रीने साम्बसे तरस्वीनाम एक
पुत्र उत्पन्न किया इन सब कृष्णचन्द्रजी के पुत्रों पौत्रों व भाई
बन्धुओं में आकर बहुधा सब देवताओं ने जन्मलिये १६२ उनमें
तीनकरोड़ महापराक्रमी यदुवंशी तो मुख्य देवताही थे और
साठसौ हजार वीर्य्यवान् और महाबलीथे १६३ ये सब दैत्यादिकों
से युद्ध करनेमें कृष्णचन्द्रजीके सहायक होनेके लिये उत्पन्न हुयेथे
जे महाबली असुर देवता और असुरोंके संग्राममें मारेगयेथे १६४
वे यहां मनुष्यों में उत्पन्न होकर सब मनुष्यों को पीड़ा देतेभये इन
यादवों के एकसौ एक कुलथे उन सबोंमें प्रधान व प्रेरक तथा
स्वामी श्रीकृष्णचन्द्रजी थे १६५ । १६६ व और सब यादवलोग

उनके आज्ञाकारी थे कोई कुछभी उनके विपरीत नहीं करताथा इतनीकथा सुनकर भीष्मजी ने पूछा कि सप्तऋषि, कुबेर, यक्ष, मणिधर १६७ सात्यकि, नारद, शिव, धन्वन्तरि आदिदेवता व श्री विष्णुभगवान् सब देवोंके साथ किसलिये उत्पन्न हुये १६८ व सब और भी देवगण पृथ्वीपर कैसे अवतरे व इन श्रीविष्णुभगवान् के और सब देवताओं के भविष्यभी अवतार बताइये १६९ ये सब सब लोगोंके यहां किसलिये अवतार लेते हैं व मुख्यकर श्रीविष्णु भगवान् जिसलिये वृष्णिवंशी व अन्धक वंशियों के यहां होकर अवतरे १७० व फिरभी जहां कहीं मनुष्यों में उन्होंने अवतार लियाहो पूंछतेहुये हमसे सब कहिये पुलस्त्यमुनि बोले कि जिन श्रीविष्णुभगवान् की दिव्यतनु मनुष्यों में युगोंके अन्त में उत्पन्न होतीहै व देवता असुर मनुष्यादिकों में विराजमान होतीहै उनके जन्म लेने का कारण कहते हैं सुनो १७१। १७२ पहिले सत्ययुग में एक हिरण्यकशिपु नाम दैत्य बड़ापराक्रमी हुआ जो कि तीनों लोकों का पालन पोषण करताथा जब उस महाबलीने तीनोंलोकों में अपना अधिकार करलिया १७३ तो देवताओं व दैत्योंमें बड़ी भारी मित्रता होगई यहांतक कि दश चौयुगीतक वह बराबर राज्य करतारहा व सब जगत्को अपने वशमें कियेरहा १७४ उतने दिनों तक देवता दैत्य दोनों उसके आज्ञाकारी बनेरहे व उसीके थोड़ेही दिनोंके पीछे उसी वंश में बलिनाम महाप्रतापी दैत्य उत्पन्न हुआ वह और हिरण्यकशिपु दोनों मिलकर त्रिलोकी का राज्य करतेरहे व दोनों के वशमें देवता दैत्य राक्षस मनुष्यादि सबरहे परन्तु जब भगवान्ने अवतारलेकर राजाबलिको बँधुवाकिया तो देवताओं और दैत्योंका बड़ाभारी युद्धहुआ जिसमें देवता दैत्य दोनोंका बड़ा विनाश हुआ तब उन दोनोंका विरोध मिटाने के लिये भृगुमुनि के शापके कारण मर्त्यलोकमें श्रीविष्णुभगवान्ने अवतार लिया इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने पुलस्त्यमुनिसे पूँछा कि महाराज देवताओं व असुरों का विरोध मिटाने के लिये श्रीविष्णुभगवान् ने कब कब कौन कौन अवतार लिया हमसे आप विस्तार सहित कहें पुलस्त्य

मुनि बोले कि उन देवता दैत्यों में अपनी अपनी जीतके लिये बड़े बड़े महादारुण युद्धहुये १७५। १७८ उनके मिटाने के लिये सब मन्वंतरों में बारहशुद्ध अवतार लिये उन सबोंके नाम व जिस २ इच्छासे जो २ अवतारहुआ सब हमसे सुनो वर्णन करते हैं १७९ प्रथम नरसिंहजीका अवतार हुआ दूसरा वामनजीका तीसरा वराहजीका चौथा अमृत मथने के समय कच्छपजीका १८० इन अवतारोंका कार्य्य पीछे कहेंगे अब जो युद्ध देवताओं व दैत्यों के हुये हैं सुनिये पांचवां अतिघोर तारकामय संग्राम हुआ छठवां आडीबक नाम महायुद्ध हुआ सातवां त्रैपुर संग्राम १८१ आठवां अन्धकवध समर नवां वृत्रासुरवध युद्ध दशवां ध्वजासुरवध ग्यारहवां हालाहल १८२ बारहवां अतिघोर कोलासुरवध उन चार अवतारों में नृसिंहजी ने तो हिरण्यकशिपु नाम दैत्यको मारा १८३ व वामन जीने जब तीनपैरसे तीनों लोक नापलिये तब राजा बलिको बँधुआ किया जब सब देवताओंको हिरण्याक्षने जीत लिया तो समुद्र में टिकेहुये श्रीवराहजीनें लीलापूर्वक अपने दांतों से दोखण्ड कर डाला व अमृत मथने के समयमें इन्द्रने संग्राम में प्रह्लादजी को जीत लिया १८४।१८५ तब से प्रह्लादका पुत्र विरोचन नित्य इन्द्र के मारनेमें उद्यत रहा परन्तु उसे तारकामय संग्राममें पराक्रम से इन्द्रने मारडाला १८६ त्रिपुरमें बसते हुये त्रिपुरासुर को जब देवतालोग किसी कारणसे न मारसके तो त्रैलोक्य में सब दानवों को जाकर महादेवजीने मारा १८७।१८८ व अन्धकासुरके वधमें सब दैत्य इकट्ठे हुये थे तब देवता, मनुष्य व पितरोंने मिलकर अन्धक सहित सब दैत्य दानव राक्षस पिशाचों को मारा १८९ फिर एक बार कोलाहल ने बड़ाभारी उपद्रव किया उसके ऊपर क्रुद्धहोकर इन्द्रने उसेमारा तब वृत्रासुर ने अत्यन्त क्रोधकर इन्द्रादि देवताओं को समर में जीत लिया तब श्रीविष्णुभगवान्‌की सहायता से इन्द्रने समर में बड़े कष्टसे उसे मार पाया इसीप्रकार ध्वजासुर के साथ इन्द्रका युद्धहुआ पर जब श्रीविष्णुजीने सहायताकी तो उसे इन्द्रनेमारा उस ध्वजासुर के सङ्ग एक बड़ा प्रतापी विप्रचित्तिनाम

दैत्य था उसका भाईभी उसी के तुल्यथा १९०।१९१ व और भी बहुत से दैत्य, दानव, पिशाच, राक्षसादि थे इन सबों ने देवताओं से बड़ायुद्धकिया ये देवता और असुरों से बारह संग्राम हुये १९२ इस युद्धमें देवता, दैत्य दोनों बहुत मारेगये तोभी प्रजाओं के क-ल्याण के लिये दैत्यों में प्रथम दैत्य महापराक्रमी हिरण्यकशिपुने एकअर्बुद बहत्तरलाख अस्सीहज़ार वर्ष तक तीनों लोकोंका राज्य किया १९३।१९४ उसके पीछे फिर बलिनाम दैत्य त्रिलोकी का महाराज रहा यह एक अर्बुद बीसलाख साठहज़ार वर्ष तक राज्य भोगतारहा १९५ जितने दिन राजाबलि के राज्यका समय हमने कहा उतने दिन बीच में प्रह्लाद उसके पितामह ने राज्य नहीं किया बरन उन्होंने असुरोंका सङ्गछोड़ एकान्तमें बैठकर परमेश्वर का ध्यान किया था १९६ जितने दिन प्रह्लाद तप करते थे व बलिका जन्म नहीं हुआ था उसबीचमें इन्द्र फिर तीनों लोकोंका राज्य करने व सब प्रजाओंका पालन करनेलगे थे १९७।१९८ तब सब यज्ञोंके भाग असुरोंको छोड़ देवताओंको प्राप्त होनेलगे जब सब यज्ञभाग देवताओं को प्राप्तहुये तो दैत्यलोग शुक्रजीसे बोले कि १९९ अब इन्द्रने राज्य करलिया है इससे यज्ञोंने दैत्योंको छोड़दिया व विना यज्ञभागों के भोजन किये हमलोग स्वर्ग में ठहर नहींसक्ते इससे अब रसातलको चलेचलें २०० ऐसा कहतेहुये अति दीनमुख उन दैत्यों से तपस्वियों के राजा शुक्राचार्य्य ने आय कहा कि तुमलोग न डरो हम अपने तेजसे तुम्हारा पालनपोषण करेंगे २०१ क्योंकि पृथ्वीपर जितने मंत्रहैं व पर्व्वतों पर जितनी ओषधियां हैं वे सब हमारे पासहैं देवताओं में तो केवल चौथाई मंत्रादि हैं २०२ वे सब हमने तुम लोगों के लिये धर रक्खे हैं तब देवता राक्षसों को बुद्धिमान् शुक्रसे धारण कियेहुए देखकर २०३ संविग्न होकर ति-नके मारनेकी इच्छासे सलाह करतेभये कि शुक्रजी जबर्दस्ती कर रहे हैं २०४ इससे शीघ्रही हमलोग जाकर बचेहुओंको जीतकर पाताल को पहुँचादेंगे २०५ तदनन्तर संरब्ध देवता दैत्यों के पास प्राप्तहुए तब देवताओं से पीड़ित सब दैत्यों ने शुक्राचार्य्यजी की

बड़ी स्तुति की कि वास्तव में आपके सिवाय और कोई इस समय हम लोगोंकी रक्षा नहीं करसक्ता है शुक्राचार्य्यजी ने भी देखा कि ये दैत्यलोग इन्द्रादि देवताओं से बहुत पीड़ित हैं इनकी देवगणों से रक्षाकरनी चाहिये २०६। २०७ यह शोचकर ब्रह्माजी के हितकारी वचन की चिन्तना कर २०८ उन्होंने दैत्यों से कहा कि हमने सब पूर्व्व समय के समाचार शोचलिये हैं तुम इस समय देवताओं से नहीं जीतसक्ते क्योंकि विष्णुभगवान् ने वामनावतार धारणकर तीनपैरोंसे बलिके तीनोंलोक हरलिये हैं २०९ व बलिको बांध लियाहै जम्भासुरको व विरोचनको भी मारडाला है इसके सिवाय बारहसंग्रामों में बहुत से उपायों से देवताओं ने दैत्यों को मारडाला है २१० मुख्यकर प्रधानोंको तो छोड़ाही नहींहै कुछ तुम लोग बचगयेहो इससे हमारे मतसे अब तुमलोगों को युद्ध न करना चाहिये २११ इससे हम तुमलोगों को यहीनीति बताते हैं कि जबतक हम महादेवजीकी उपासना व तप न करआवें तबतक तुम देवताओं से युद्ध न करो हमकेवल तुम्हारी विजय के लिये शिवाराधन करने को जायँगे इस समय उनलोगों ने महादेवजी की उपासना करली है इससे उनसे अभी न जीतसकोगे हां यह करो कि तबतक जाकर देवताओंसे मिलरहो जबहम तपस्या करके लौटेंगे तब तुम लोगों की जीतहोगी २१२। २१३ यह कहकर शुक्राचार्य्यजी तो तप करनेको चलेगये व दैत्यलोग देवताओं के निकट जाकर बोले कि हमलोग अस्त्र शस्त्र कवच बख्तर आदि से रहित होकर तुमलोगोंके निकट आये हैं व अब तप करनेको जाते हैं युद्ध करनेका कुछ काम नहीं है जब इसप्रकार प्रह्लादादि दैत्यों के वचन सुने तो देवतालोग युद्ध करने से निवृत्त होकर लौटआये व दैत्यों का पीछा करना छोड़दिया जब सब दैत्योंने इसप्रकार शस्त्रास्त्र धरदिये तब देवगण युद्ध करनेसे निवृत्त होकर परमानन्दित हुये तब फिर दैत्यगण बोले कि हमलोग वल्कलादि धारण करके तप करने जाते हैं तबतक आपलोग कुछ उपद्रव न करें इतना कहकर अपने कार्य्य के साधक दैत्यलोग एकत्रहो तप करनेके बहाने

से पितृलोक को चलेगये व वहां शुक्राचार्य के कहेहुये कालकी राह परखनेलगे और वहां उन दैत्योंके कार्य्यके लिये शुक्राचार्यजी महा- देवजीके निकट पहुँचकर हाथ जोड़कर बोले कि २१४। २१८ हे महादेवजी हम आपसे वेमंत्र चाहते हैं जो बृहस्पतिके पास नहीं हैं क्योंकि जिनसे देवताओंकी पराजय व दैत्यों की विजयहो २१९ तब महादेवजी ने कहा कि हे शुक्र तुम हज़ार वर्ष तक नीचे को शिर करके धुआं पान करके व्रत धारण करो २२० जब ऐसा करोगे तब वैसे मन्त्र पावोगे अन्यथा नहीं तब शुक्रजीबोले कि हे प्रभो बहुत अच्छा आपके कहनेसे मैं व्रत करूंगा यह कहकर २२१ महादेवजी के चरणारविन्द छूकर शुक्राचार्य तपकरनेलगे जब इसप्रकार असुरों के कल्याणकेलिये भार्गवमुनि तपकरने लगे पहुँचतेही ब्रह्मचर्य्य को धारणकर महादेवजीकी आज्ञाके अनुसार नीचेको मुखकरधुआं पीनेलगे इस बातको जानकर देवताओंने बड़ा क्रोधकरके शुक्राचार्य्य के तपमें विघ्न डालने का बड़ाभारी उद्योग किया यहांतक कि बृह- स्पतिजीको आगे कर सब शस्त्रास्त्र धारणकर मन्त्र तन्त्रसे संयुक्तहो- कर जाकर दैत्यों को घेरलिया २२२। २२५ तब देवताओं को फिर शस्त्रास्त्र धारण किये युद्ध करनेपर उद्यत देखकर अतिभय से व्या- कुलहोकर दैत्य लोग उनसे बोले कि २२६ हे देवता लोगो हम लोगों ने तो अस्त्र शस्त्र छोड़ दियेहैं व हमारे आचार्य्यजी कहीं तप करनेको गये हैं व तुम लोगों ने हम लोगों को तबतक अभयदान दियाथा अब वृथा हम लोगोंको क्यों मारना चाहते हो २२७ भला इस समय अमर्ष रहित चीर वल्कल मृगचर्मादि धारणकिये अस्त्रादि रहित हमलोगों की युद्ध करनेकी अवस्था है जो तुम अस्त्र शस्त्रादि धारण करके आये हो २२८ हमलोग इस समय किसी प्रकार से आप लोगों से संग्राम में नहीं जीतसक्ते हैं हमलोग तो शुक्राचा- र्य्य के शरण में हैं जबतक वे न आवेंगे तबतक कभी न शस्त्रास्त्र धारण करके तुम लोगों से युद्ध करेंगे जबतक हमारे गुरूजी नहीं आते तबतक के लिये हमलोग आपलोगों से प्रार्थना करते हैं जब हमारे गुरूजी आजायँगे तो तुमसे अच्छेप्रकार हमलोग युद्धकरेंगे

अन्तर न पड़ेगा २२९ । २३० देवताओंसे ऐसा कह सबदैत्यलोग शुक्राचार्य्य की माताके शरणमें गये कि देवतालोग हमको व्यर्थ मारते हैं इससे हम आपके शरण में हैं यह सुन उन्हों ने कहा तुम देवताओं से न डरो जबतक तुम्हारे गुरु न आवें हमारे पासरहो देवताओं की क्या सामर्थ्य जो हमारे निकट बैठेहुये तुमलोगों की ओर देखसकें २३१ । २३२ इस प्रकार शुक्राचार्य्य की माता से दैत्योंको रक्षित जानकर बलाबल न विचार कर इन्द्रादि देवताओं ने दैत्यों को वहां भी जाकर घेरा व जबरदस्ती युद्ध करने को प्रारम्भ करदिया २३३ इस बातको देख शुक्रकी माता बोली कि अच्छा जो तुमलोग इनको हठसे व्यर्थ मारा चाहते हो तो हम तुमलोगों को मोहित करती हैं २३४ इतना कह उस योगयुक्ता तपस्विनी ने सबसामग्री इकट्ठाकर निद्रा भगवती को उत्पन्न किया तब निद्राने बलसे देवताओं को आच्छादित करलिया २३५ व इन्द्र खड़ेहोकर ऊंघनेलगे तब सब देवगण इन्द्रको निद्राके वशीभूत देखकर मूढ़की नाईं भाग खड़ेहुये २३६ जब सब देवगण भागगये तो श्रीविष्णुभगवान् इन्द्रसे बोले कि हे इन्द्र ! हमारे शरीर में प्रवेशकरो हम तुम्हारी रक्षाकरते हैं तुम्हारा कल्याण हो २३७ इस प्रकार कहने से इन्द्र श्रीभगवान्‌विष्णुके शरीर में प्रवेश कर गये इन्द्रको रक्षित देखकर शुक्रकी माता क्रोध करके बोली २३८ कि हे इन्द्र ! विष्णुसहित तुमको अभी भस्म करतीहूँ सब देवताओं के सामने मेरी तपस्या का बल देखो २३९ इतना कह उस शुक्राचार्य्य की माताने ऐसा कोप किया कि जिससे इन्द्र व विष्णु दोनों तिरस्कृतहुये तब विष्णुभगवान् इन्द्रसे बोले कि अब इससे कैसे छूटें २४० तब इन्द्र बोले कि महाराज जबतक यह हमको भस्म करना चाहे तबतक इसे मारडालिये अब हम बहुतही व्याकुल हैं इससे मारहीडालिये विलम्ब न कीजिये २४१ तब श्रीविष्णुभगवान्‌ने देखकर शीघ्रही विचारा कि इन्द्र अतिव्याकुल है व इस अवध्य स्त्रीजातिका वधकरना बड़ेकष्टकी बात है २४२ तब बड़ेशीघ्रकारी भययुक्त उन विष्णुभगवान् ने उस क्रूर देवी का अभिप्राय

जानकर कि यह हमको व इन्द्रको अपने तपके प्रभावसे भस्मकरना चाहती है हमें तो क्या इन्द्रको भस्मभी करडालेगी इस भयसे इन्होंने क्रोधकर चक्र उठाकर मारा तो शिरकटकर अलग जाकर गिरा इस अतिघोर स्त्री के वधका पाप देखकर समर्त्थ भृगुजी ने कोप कर २४३ । २४४ स्त्री के वधके करने से श्रीविष्णुभगवान् को शाप दिया कि जिससे तुमने स्त्री वधके दोषकी ओर न दृष्टिकर-के इस अवध्य स्त्री का वधकिया है २४५ तिससे तुम सात जन्म तक मनुष्यों के बीचमें उत्पन्नहोओगे इस भृगुमुनिके शापके कारण जब धर्म्म नष्ट होजाता है तब श्रीभगवान्विष्णु २४६ लोक के कल्याण के लिये वारंवार मर्त्यलोक में अवतार लेते हैं और भृगु मुनिने इसप्रकार श्री विष्णुभगवान् को शाप देकर अपनी स्त्रीका शिर उठाकर २४७ हाथमें लेकर कहा कि हे देवि ! तुमको विष्णुभ-गवान् ने मारडालाहै पर हम फिर जिलातेहैं २४८ जो हमने कुछ धर्म्म जानाहो व कियाभी हो तो उससे तुम जीउठो जो हम यह बात सत्य कहतेहों २४९ इतना कह शीतलजल हाथमें लेकर उस का मुख पोंछकर कहा जीव जीव जैसेही ऐसा कहा कि वह भृगुकी स्त्री जीउठी २५० तब उसको सोकर उठीहुईके समान देखकर सब लोग बहुतअच्छा बहुतअच्छा ऐसा कहउठे २५१ इसप्रकार उन भृगुजीने उस अपनी स्त्रीको सब देवताओं के सामने जिलाया यह बात बड़ी अद्भुतसी हुई २५२ जब विना भ्रान्तचित्त होनेकेही भृगु जीने अपनी स्त्रीको जिलालिया इस समाचारको जानकर इन्द्रसुखी न हुये क्योंकि उनको शुक्राचार्य का तो भय लगाहीरहा कि जो वे तपकरके आवेंगे तो नहीं जानते हैं क्याकरेंगे २५३ इससे जिसमें शुक्राचार्य से मेलहोजाय उनकी माताके वधका बिगाड़ मिटजाय इसलिये इन्द्र अपनी जयन्तीनाम कन्यासे बोले कि २५४ हे पुत्रि ! शुक्राचार्य्य इन्द्ररहित इसलोक को करनेके लिये तप करते हैं इस से हम बहुत व्याकुल हैं क्योंकि ऐसे लोग जिस कर्मके करने की प्रतिज्ञा करते हैं उसे करकेही छोड़ते हैं २५५ इससे आलस्य को छोड़कर उन ब्राह्मणदेवके मनके अनुकूल ऐसे सब कर्म्म जाकर

करो जिसमें शुक्राचार्य्य सन्तुष्टहों २५६ जाओ हमारे इस कष्टको मिटाओ इसप्रकार अपने पिता इन्द्रजी के वचन सुनकर २५७ जयन्ती जहां शुक्राचार्य्य घोरतप करतेथे वहांगई व देखा तो शुक्राचार्यजी यज्ञ कर उस के ऊपर किसी युक्तिसे नीचेको मुख कियेहुये धुआं के कणुके पीरहेथे २५८ इसप्रकार इन्द्रके मारने व दैत्योंके जिताने के लिये यत्न करतेहुये अतिदुर्ब्बल शरीर मुनिके समीप जाकर जैसा पिताने कहाथा वैसाही सेवन करनेलगी २५९ । २६० जैसे कि जबतक मुनिजी लटकेहुये धुआं पीतेथे तबतक वहां समीपही बैठकर मधुर बाणी से अतिअनुकूल गीतें गाय २ कर स्तुति करतीथी फिर मुनिके सब पात्र शोधन करतीथी जब सन्ध्या वन्दनानन्तर मुनि शयन करने लगतेथे तब उनके पैरचापतीथी इसप्रकार जो २ बातें मुनिके अनुकूलथीं समय २ पर सब करतीथी ऐसा करते२ हजार वर्ष बीतगये जब वह अतिघोर व्रत हजार वर्ष के पीछे पूर्ण हुआ २६१ । २६२ तो प्रसन्न होकर महादेवजी ने दर्शन देकर कहा कि इस व्रतको अकेले तुमनेही किया और किसीने नहीं किया २६३ इससे तपस्या, बुद्धि, वेदाध्ययन, बल व तेजसे सब देवताओं का अनादर तुम अकेले करसकोगे २६४ हे भृगुनन्दन ! जो कुछ हम में विद्यमानहै वह सब तुमको देंगे परन्तु तुम किसी से न कहना २६५ बहुत कहने से क्याहै तुम किसी के भी मारने से न मरोगे यह कहकर शुक्राचार्य को महादेवजी ने २६६ प्रजाधिपत्य धनेशाधिपत्य व अवध्यत्व देदिया इस प्रकार इतने वरपाकर अतिप्रसन्न होकर शुक्रजी ने २६७ देवों के स्वामी नीललोहित महादेव जी से कहके कि हम आपके अनुग्रह से परिपूर्ण मनोरथ हुये हाथ जोड़ प्रणाम किया २६८ जब शिव जी अन्तर्द्धान हो गये तो शुक्रजी जयन्ती से यह बोले कि हे सुभगे ! तुम किसकी कन्या वा स्त्री हो व कौन हो जो कि हमारे दुःख में दुःखिनी होरही हो २६९ बड़े तप से युक्त होकर क्यों हमारे सङ्ग निन्दित होतीहो हम तुम्हारी इस तपस्या भक्ति नम्रता इन्द्रियों के जीतने २७० व स्नेह से बहुत प्रसन्न हुये हे वरारोहे ! तुम क्या चाहती हो

तुम्हारे कौन मनोरथ उत्पन्न हुआ है २७१ हम तुम्हारा वह काम पूरा करेंगे चाहे बहुत दुष्कर भी हो जब शुक्रजी ने ऐसा कहा तो जयन्ती ने कहा कि आप अपने तपोबल से जानने के योग्यहैं २७२ जो कुछ हमको करनाहै सब आप जानते हैं जब जयन्ती ने ऐसा कहा तो शुक्राचार्य्य दिव्यदृष्टिसे सब देख उससे बोले २७३ कि हे सुश्रोणि ! हमने जाना कि तुम बड़ाभारी वर चाहतीहो जो कि सौ वर्षतक सब प्राणियों से अदृश्य होकर एकान्त में हमारे सङ्ग भोगादि किया चाहतीहो हे देवि ! हे श्याम कमलके रङ्गवाली ! हे श्रेष्ठ कटिवाली ! व हे मनोहर नेत्रवाली ! व हे मनोहर वाणी बोलनेवाली ! जो तुम चाहतीहो हमने सब वर तुमको दिये २७४ । २७५ अच्छा जैसा तुम चाहतीहो वैसाहीहो अब आओ दोनोंजने अपने गृहको चलें इसके पीछे जयन्तीको सङ्गले शुक्राचार्य्य अपने घरको आये २७६ व सौ वर्षतक सब प्राणियों से अदृश्य होकर जयन्तीसहित अपने घरमें रहकर भोग विलास करते रहे ऐसी मायाकी कि न कोई उन्हीं को देखे न जयन्तीही को २७७ इनकी तो यह दशा हुई वहां सब दैत्यों ने समय जाना कि अब गुरुजी तप करके अपने गृहको आये होंगे इससे सब प्रसन्न होकर देखनेकी इच्छासे भार्गवजी के गृह पर आये २७८ पर आकर जब मायासे अन्तर्द्धान हुये अपने गुरु को उन्हों ने न देखा तो जाना कि अभी हमलोगों के गुरु तप करके नहीं आये २७९ ऐसा विचारकर सब दैत्य अपने २ स्थानोंको चले गये तब इन्द्रादि देवताओं ने यह वृत्तान्त जानकर जाकर अपने गुरु बृहस्पतिजी से कहा २८० कि हे भगवन् ! अब आप दैत्यके स्थान में चलकर दैत्योंकी बड़ीभारी उस सेनाको मोहित करें व मोहित करके शीघ्रही हमलोगोंके वशमें करादेवें २८१ देवताओंको ऐसे व्याकुल देखकर बृहस्पतिजी ने कहा अच्छा ऐसाही होगा हम वहां जायँगे इतना कहकर शुक्राचार्य्य का रूप धारणकर बृहस्पतिजी वहां जाकर दैत्यों के राजा प्रह्लादको वशमें करके उनकी पुरोहिती करने लगे इस प्रकार बृहस्पतिजी सौ वर्षतक दैत्यों के यहां रहे सौ वर्ष के पीछे जब जयन्ती का वर पूरा होगया तो शुक्राचार्य्यजी दैत्यों

की सभामें आये २८२ । २८३ तब दैत्यों ने अपनी सभामें बृहस्पतिजीको देखकर कहा कि एक शुक्राचार्य्य तो हमारे यहां थेही ये दूसरे कहांसे व कैसे आये २८४ यहतो बड़े आश्चर्य्यकी बातहै अब लोग किसको इन दोनोंमें शुक्र बतावेंगे व किसको दूसरा कोई कहेंगे २८५ व जो ये हमारे गुरुजी सभामें बहुत दिनोंसे विराजमान हैं ये क्या कहेंगे ऐसा वे दैत्य आपस में कहरहे थे कि इतने में शुक्रजी आगये २८६ व अपना रूप धारण कियेहुये बृहस्पतिजी से क्रुद्ध होकर बोले कि तुम यहां किसलिये आये २८७ व हमारे शिष्यों को मोहित कररहे हो तुमतो देवताओं के गुरुहो व तुम्हारी माया से मोहित ये हमारे शिष्य दैत्यलोग तुमको जानतेही नहीं हैं २८८ हे ब्रह्मन्! दूसरे के शिष्यों को प्रधर्षित करना तुमको उचित नहीं है तुम अपने देवलोकही में टिकेहुये धर्म्मको पाओगे २८९ क्योंकि तुम्हारे पुत्र व हमारे शिष्य कचको दैत्यों ने देवताओं का पक्षी जानकर मारडाला था इससे यहां रहना तुम्हारा अयोग्य है २९० इस बातको सुनकर हँसकर बृहस्पतिजी शुक्र से बोले कि पृथ्वीपर जे चोर हैं वे परधन हरने में तत्पर हैं २९१ जैसे तुम हो कि दूसरे का रूप धारण करके दैत्यों का धन हरना चाहते हो ऐसे नहीं दिखाई देतेहैं पूर्वसमय में वृत्रासुरके मारने से इन्द्रको ब्रह्महत्या हुई थी २९२ जिससे इन्द्रने तुम्हारा तिरस्कार करके निकाल दिया है इससे अब शुक्रका रूप धारणकरके यहां आयेहो हम जानतेहैं कि तुम देवताओं के आचार्य्य बृहस्पति हो हमारा रूप धारणकरके आयेहो २९३ इतना कहकर दानवोंसे कहा कि देखो तो ये कैसा हमारा सा रूप बनाकर आये हैं ये तुमलोगों को मोहित कराने के लिये विष्णु की प्रेरणा से बृहस्पति हैं यहां आये हैं २९४ इससे इनको जँजीरमें बांधकर क्षार समुद्रमें डालदो यह सुनकर शुक्रजी फिर दैत्यों से बोले कि ये देवताओं के पुरोहित बृहस्पति हैं २९५ हे दानवो! इनसे मोहित होकर अवश्य तुमलोग नष्ट होजाओगे हे दानवो! तुमलोगों की रक्षा तो हमने दुष्टात्मा इन्द्र से कर दी थी २९६ फिर तुमलोगोंने हमको छोड़ यह दूसरा पुरोहित कैसे करलिया अरे ये देवताओं के आचार्य्य

अङ्गिरा के पुत्र बृहस्पति हैं २९७ इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है इन्हों ने देवताओं के हित के लिये तुमलोगों को मोहित कर रक्खा है इससे हे महाभाग्यवालो! शत्रुपक्ष के जयकी इच्छा कियेहुये इन को त्याग दो २९८ हम वे हैं जो कि इनके शिष्य देवताओं से तुम लोगों की रक्षा करने के लिये समुद्र के जल के भीतर तप करने को चले गये थे वहां महादेवजीने हमको पीलिया २९९ फिर उन के हृदयमें पैठेहुये हमको कुछ अधिक सौवर्ष बीतगये तदनन्तर पेटसे लिंगके द्वारा शुक्ररूपसे मैं बाहर कियागया ३०० व हम से बोले कि हे शुक्र! हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं जो चाहो वर मांगो तो हे प्रह्लाद! हमने देवदेव महादेवजी से यह वर मांगा कि ३०१ हे शङ्कर! जो अर्थ हम अपने मन से चिन्तना करें वह तुरन्त होजावे चाहे अपने लियेहो वा जगत्के लिये हो बस जो आप प्रसन्नहों तो यही वर दें ३०२ तब महादेवजीने यह कहकर कि ऐसाही हो हमको तुम्हारे पास भेजा परन्तु तबतक तुम्हारे आचार्य्य व पुरोहित बृहस्पति होगये ३०३ सो यह समाचार सत्यही है तुम अब इन्हीं को अपना आचार्य्य समझते हो यह सुन बृहस्पतिजी प्रह्लाद से यह वाक्य बोले कि ३०४ हे राजन्! हम इनको यह नहीं जानते कि हमारा रूप धारण करके कोई देवता वा दानव तुमको छलने के लिये आया है ३०५ इस बातको सुनकर सब दानवोंने कहा आप बहुत अच्छा कहते हैं जो हमारा पुरोहित बहुत दिनों से चलाआताहै वही रहे ३०६ इनसे हमारा कुछ प्रयोजन नहीं ये जैसे आये हैं लौटजावें यह सुनकर बड़ा क्रोधकर शुक्राचार्य्य ने दानवोंको शापदिया ३०७ कि जैसे तुमलोगों ने हमको त्याग दिया है वैसेही बहुतही शीघ्र तुम्हारी राजलक्ष्मी जाती रहेगी इससे श्रीरहित होजावोगे ३०८ व बड़े दुःख से जीवनवृत्ति करोगे व बहुतही शीघ्र अघोर आपदा को पावोगे ऐसा कहकर शुक्राचार्य्य अपने मनमाने किसी वन में तप करने चलेगये ३०९ उन शुक्रके चलेजाने पर बृहस्पतिजी कुछ कालतक दानवोंकी रक्षा मन्त्रादिकोंसे करतेहुये वहीं रहे ३१० इस प्रकार बहुत समय बीत जाने के पीछे सब दानवों ने इकट्ठे हो-

कर बृहस्पतिजी से पूँछा ३११ कि हे गुरुजी ! इस असार संसार में कोई ऐसा ज्ञान यत्न से बताते कि जिससे हमलोग आपके प्रसाद से मोक्ष पाते ३१२ यह सुनकर शुक्र का रूप धारण कियेहुये बृहस्पतिजी उन दैत्यों से बोलेकि हमभी यही विचारते थे जैसा कि पहले तुमलोगों ने विचारांश किया है ३१३ हे दैत्यलोगो ! एक क्षणभर चुपरहो सब जने पवित्रहोकर एकाग्रचित्तकर आओ तो हम वैसा ज्ञान तुमसे बतावें जिससे मोक्ष मिलताहै यह सुनकर सब स्नानकर पवित्रहोकर बृहस्पतिजी के निकट ज्ञान सुनने के लिये आकर स्थित हुये ३१४ तब बृहस्पतिजी बोले कि जो ऋक् यजुः सामवेदों में लिखा है कि अग्नि में होम करने से मोक्षादि सुख मिलते हैं यह बात केवल प्राणियों के दुःख के लिये है ३१५ यज्ञ करना व श्राद्ध करना क्षुद्र भूखे नङ्गे मतलबीलोगों ने प्रसिद्ध कर दिया है जिस में लोग उन को यज्ञों में दान दें व श्राद्धों में भोजन करावें वास्तव में इनके करने से कुछ नहीं होता है ३१६ व जो ये वैष्णवीधर्म्म हैं वा रुद्र के कियेहुये शैवधर्म्म हैं ये सब कुधर्म्म हैं सुधर्म्म नहीं हैं क्योंकि इन सबों में हिंसाकी प्रधानता है विना हिंसा का कोई धर्म्मही नहीं है भला महादेव आधे अङ्ग में सदा स्त्री का स्वरूप बनाये रहते हैं वे कैसे मोक्ष को प्राप्त होंगे ३१७ इसके सिवाय भूतगणों को सदा सङ्ग लिये रहते व चिता की विभूति लगाते हैं हाड़ों की माला पहिनते हैं उनको ऐसा कर्म्म करने से न स्वर्ग्ग ही मिलेगा न मोक्षही मिलेगा लोग वृथा क्लेश करके उनका भजन पूजादि करते हैं ३१८ ऐसेही विष्णु भी सब दैत्यादिकों को मारते हैं हिंसाहीमें तत्परहैं वेभी मुक्त नहीं होसक्ते ब्रह्मा जानों रजोगुणीहैं अपनी सृष्टि बनाते हैं उसी के समीप में जीते हैं ३१९ व और देवर्षिलोग भी वेदके पक्षपर टिकेहुये हिंसामय होरहे हैं व सदा यज्ञ के बहाने से मांसभक्षण किया करते हैं कहांतक कहें सब पापही का कर्म्म करते हैं ३२० देवतालोग सब मदिरापान करते हैं व सब ब्राह्मण मांसभक्षण करते हैं भला ऐसे धर्म्म से कौन स्वर्ग्ग को जायगा व कौन मोक्ष पावेगा ३२१ और जो यज्ञादिक कर्म्म हैं व स्मार्त्तोंके

मत से श्राद्धआदिक कर्म्म हैं उन दोनों के करने से स्वर्ग्ग नहीं मिल सक्ता क्योंकि इस विषयमें यह बहुत पुरानीश्रुति सुनी जातीहै३२२॥

दो० मखकरिपशुबलिदैरुधिर कर्दमकरिजोलोग ॥
जाहिंस्वर्ग्गतोकहहुको करिहिनरककरभोग १ । ३२३

जो यहां अन्नके भोजन करने से दूसरेकी तृप्तिहोती तो जो लोग विदेशको जाते उनके लिये श्राद्धही करदिया जाता मार्ग्ग के खर्चा बांधने वा अन्न लादलेजाने की कौन आवश्यकता पड़ती ३२४ देखो ये सब ब्राह्मण प्रथम आकाशको चले जातेथे बरन वहीं ब्रह्मलोक में उत्पन्नही हुये थे पर मांसभक्षण करनेके कारण पृथ्वीपर गिरपड़े अब वहां नहीं जासक्ते अब उनको न स्वर्ग्गही मिलसक्ता है न मोक्ष ही मिलसक्ता है ३२५ जो प्राणी उत्पन्न हुआ है सबको अपना जीव प्रियहै फिर सबके मांसको अपनेही मांसके समान समझकर ऐसा कौन पण्डित है जो दूसरेका मांस खावे ३२६ हे दानवेश्वर ! भला योनिही से उत्पन्न प्राणी फिर योनिका सेवन कैसे करे मैथुन करने से स्वर्ग्ग कैसे मिलसक्ता है मिट्टी व राख लगाकर पात्र व अङ्गोंकी शुद्धि करते हैं इससे कौनसी शुद्धि होसक्तीहै ३२७ इस से हे दानव-सत्तम ! जिसको जो अच्छा लगता है वह वही करता है पर सब विपरीतही है विष्ठा व मूत्रकरने पर गुद व लिङ्ग की शुद्धि करते हैं ३२८ पर मुखकी शुद्धि मृत्तिका आदि से नहीं करते क्योंकि जो पदार्थ गुदलिङ्ग से निकलते हैं वही थूँकने से मुखसे भी निक-लते हैं ३२९ फिर भोजन करने पर गुद व शिश्नइन्द्रिय का शो-धन क्यों नहीं करते जैसे कि मूत्र पुरीषोत्सर्ग्ग में करते हैं क्योंकि उन मार्ग्गों से अन्न निकलता है व मुखके भीतर जाता है बस सब व्यवस्था विपरीतही हैं जहां धोना चाहिये वहां वे लोग नहीं धोते जहां न धोना चाहिये वहां धोते हैं कोई रीति सीधी नहीं दिखाई देती ३३० देखो पूर्व्व समय में बृहस्पतिकी स्त्री तारा को चन्द्रमा हरलेगये उसमें उनसे बुधनाम पुत्र उत्पन्न हुआ बृहस्प-तिने उसको फिर ग्रहण करलिया यह न विचारा कि यह अन्य पुरुष से भोगकरा आई है ३३१ गौतममुनि की स्त्रीका अहल्या

नाम था उसको जाकर इन्द्र ने ग्रहणकरलिया फिर उनका धर्म्म वैसाही बनारहा कुछ भ्रष्ट न हुआ ३३२ यह व इसीप्रकार और भी जगत् में पापदायक कर्म्म दिखाई देतेहैं जहां इस प्रकार का धर्म्महै वहां दूसरे का कौन अर्त्थ सिद्ध होसक्ताहै ३३३ हे दानवेंद्र! जब ऐसा धर्म्महै तो मोक्ष होनेका कौन उपायहै तुम्हीं बताओ तो हम फिर उत्तरदें इसप्रकार परमार्त्थयुक्त बृहस्पतिजी के वचन सुन कर ३३४ वड़े कौतूहल में पड़कर सब दैत्य शुभकर्म्म करने में विरक्त होगये जानलिया कि यज्ञादि शुभकर्मों में कुछ नहीं है व सबके सब बोले कि हे गुरुजी! हम सब आपके चरणकमलों के शरण में हैं इससे हम सबोंको ऐसी दीक्षा दीजिये ३३५ जिससे हम आपकी शिक्षासे मोक्षको प्राप्तहों व मोहित कभी न हों हम सब शोकमोहदायक इस संसार से अच्छे प्रकार विरक्त होगये हैं ३३६ इससे हे गुरुजी इस संसारकूप से बाल पकड़कर खींचिये कि हम सबोंका उद्धारहो हे ब्राह्मणोत्तम! हम किस देवताके शरण में जावें ३३७ हम सब दीनोंके लिये कोई देवता बताइये अब ऐसा उपाय बताइये चाहे किसीके स्मरण से उपवास करने से ध्यान से तथा धारणा से ३३८ वा कोई पूजाकी सामग्री करने से मोक्षमिले हमलोग कुटुम्ब से विरक्त होगये हैं जिससे फिर इसीमें न गिरें ३३९ इसप्रकार उन दैत्यपुंगवों ने छिपेहुये उन अपने गुरुसे कहा तब गुरुजी ने अपने मनमें चिन्तना की कि यह कार्य्य कैसे सिद्धहो ३४० इन पापियोंको किस उपाय से हम नरकगामी करें कि जिससे वि-ष्ठाके समान अपवित्र होकर इन तीनों लोकों में हास्यको व तिर-स्कारको पहुँचें ३४१ हे राजन्! ऐसा कह बृहस्पतिजी ने श्रीकेशव भगवान् की चिन्तना की उनके उस चिन्तितको जानकर जनार्दन भगवान् ने मायामोह को ३४२ उत्पन्न करके बृहस्पतिजीको दिया व उनसे बोले भी कि यह महामोह उनसब दैत्यों को मोहित करेगा ३४३ तुम सहित वे सब वेदमार्ग्ग से बाहर होजावेंगे ऐसा बृहस्प-तिजी से कहकर श्रीभगवान् वहीं अन्तर्द्धानहोगये ३४४ तदनन्तर वह महामोह तप करने में तत्पर उन सब दैत्यों के समीप आया उस

समय बृहस्पतिजी सब दैत्यों के सामने बोले कि ३४५ यह योगी दिगम्बरी मुण्डी व कुशपत्रधारी आपलोगों के ऊपर अनुग्रह करने के लिये यहां आयाहै ३४६ ऐसा बृहस्पति के कहनेपर वह मायामोह एक दिगम्बरका स्वरूप धारण कियेथा कहनेलगा कि जो तुम लोग मुक्ति चाहतेहो तो हमारे वचनोंको करो एक (अर्हन्) शब्द मुक्तिका खुलाहुआ द्वार है और कोई नहीं इसके पीछे वह दिगम्बर कुशके पत्ते पहिने शिरके बाल मुड़ाये हुआ मायामोह दैत्यों से यह वचन बोला कि भो भो दैत्यों के स्वामियो ! बताओ तुमलोग तप करने में स्थित होकर ३४७ इस लोकका प्रयोजन चाहतेहो वा परलोकका दानवलोग बोले कि हमलोग मोक्षपाने के लिये यह तप करते हैं ३४८ इस विषयमें तुमको क्या कहनाहै वह कहो तब वह दिगम्बर बोला कि यदि मुक्ति चाहतेहो तो हमारे वाक्य करो ३४९ केवल अर्हन् शब्द खुलाहुआ मुक्तिका द्वारहै यह धर्म्म कर्म्म से मुक्तकरता व मोक्षके योग्यहोता इसीसे अर्हन् कहाता है उससे अधिक और कोईभी मुक्तिका साधक नहीं है ३५० इसी मार्ग्ग में स्थित होकर स्वर्ग्गलोकको व मुक्तिको भी पहुँचोगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है इसप्रकार बहुत से मुक्तिदर्शन से रहित वचन कह कर ३५१ मायामोहने दैत्योंको वेदमार्ग से बाहर करदिया अपने नास्तिकपक्षको बताया कि यह तो धर्म्म के लिये है व वेदमार्ग्ग को बताया कि यह अधर्म्म के लिये है इससे उसमें श्रद्धाकरो व इसमें न करो ३५२ क्योंकि हमारा मत विमुक्तिदेगा व वेदमार्ग्ग नरक देगा मुक्ति कभी न देगा यह हमारा मत अत्यर्त्थ परमार्त्थ करने वाला है पर हम परमार्त्थ नहीं हैं ३५३ हमारा मत करने के योग्य है पर हमारा आचरण करने के योग्य नहीं है यह बात प्रसिद्ध है जो धर्म्म हम कहते हैं वह दिगम्बरोंका है व जो वेदमें लिखाहै वह बहुत वस्त्रधारण करनेवालों का है ३५४ इसप्रकार मायामोह ने किसी धर्म्मको मुख्य न बताया इससे दैत्योंने अपना तप करना धर्म्म छोड़दिया ३५५ जो अर्हधर्म्म अर्त्थात् नास्तिकों का धर्म्म मायामोहने बताया उसीको ग्रहण किया ३५६ इससे सब अर्हता

धर्म्म में टिके क्योंकि उसीको मायामोहने उत्तम बताया व वेदमार्ग को अधर्म्म इससे उन सबोंने वेदधर्म्म जप, तप, व्रत, यज्ञ, श्राद्धादि करना छोड़दिया केवल महामोहके स्वरूप होगये ३५७ इसीप्रकार उन्होंने औरोंको समझाया औरों ने दूसरों को उन्होंने दूसरों को व परस्पर यही कहनेलगे कि हम सब मोक्ष पावेंगे व वेदवाले नरकको जावेंगे ३५८ यहांतक कि थोड़ेही दिनों में जब दैत्यों ने वेदत्रयीधर्म का त्यागकिया लज्जा छोड़दी व वस्त्रछोड़ अलग बहा दिये मायामोह के समान नङ्गे घूमने लगे जब वे दैत्य इसप्रकारके होगये तब मायामोहने अलगजाकर गेरूके रँगेवस्त्र धारणकर ३५९ और दैत्यों से मीठे वचनों से कहा कि तुमलोग स्वर्ग के लिये दीक्षा कररहेहो वा मोक्षके लिये ३६० हे दुष्टो ! जो यज्ञादि करतेहो जिनमें अनेक पशु मारेजाते हैं उनसे मोक्ष नहीं होसक्ता अब हम जो विज्ञानमय वचन कहते हैं उसे सुनो व उसीको करो अन्य वेदादि वचनोंको छोड़ो क्योंकि वेद मूर्ख अज्ञानियों के बनाये हुयेहैं ३६१ इससे जो बात वेदमें लिखी है उसका आधार कुछ नहीं सब निराधारही है ३६२ इससे जो उस दुष्ट मतपर चलता है वह बार २ भवसागर में डूबता उतराता है इसी तरह के नाना प्रकार के वचन मायामोहने कहे जिनसे वेदादिकों की निन्दा व उनके मोक्षकी प्राप्ति पाईगई ३६३ यहांतक कि सबोंने यज्ञ व्रत जपादि करना छोड़ दिया हे राजेन्द्र ! कोई दैत्य तो वेदोंकी निन्दा करनेलगे कोई देवताओंकी ३६४ कोई यज्ञादिकर्म्मसमूहकी व कोई ब्राह्मणोंकी व कोई कहनेलगे कि ये हिंसारूप वेदकर्म्म कभी मुक्ति नहीं देसक्के ३६५ व न अग्नि में होमकीहुई खीर कुछ फल देसक्ती है व यदि यज्ञ में मारेहुये पशुको स्वर्गप्राप्ति होतीहो ३६६ तो यज्ञमें यजमान करके अपना पिता क्यों नहीं मारडालाजाताहै तथा यदि और पुरुष करके भोजन कियाहुआ पदार्थ दूसरे पुरुष की तृप्तिके लिये होताहै ३६७ तो जो लोग परदेशको जाते हैं उनकेलिये श्राद्धमें किसी ब्राह्मणको खिलादियाजावे वे क्यों अपनी पीठपर सीधा बांधकर लेजाते हैं और अनेक यज्ञों करके देवताहोके इन्द्र के समान भोगकरें सो जो

पशु यज्ञमें मारे जाते हैं उनकी हत्या फलके स्थानमें यज्ञ करनेवाले को मिलती है ३६८ छिउकुर आदि जो काष्ठहैं इनसे श्रेष्ठ पत्तों के खानेवाला पशुहैं हे लोगो! यह तुम सबों करके श्रद्धापूर्व्वक धारण करने योग्यहै और तिन वचनों को विचारके ३६९ इन यज्ञ श्राद्धादिकोंमें उपेक्षा करके मुझकरके कहाहुआ वाक्य कल्याणके लिये रुचै जिससे कि यथार्थ कहनेवाले महासुर स्वर्ग से नहीं गिरतेहैं ३७० इससे हमको तुमको सबको सयुक्तिकवचन ग्रहण करना चाहिये यह सुनकर दानवलोग बोले कि हम सबलोग तत्त्ववाद करने में आपके शरण में हैं इससे कुछ यज्ञ किया चाहते हैं ३७१ हे प्रभो! यदि इससमय आप प्रसन्नहों तो इस विषयमें अनुग्रह करें यज्ञ के योग्य सब सामग्री इकट्ठी करते हैं आप यज्ञ कराइये ३७२ जिससे शीघ्रही मोक्ष हमलोगों के हाथमें आजावे इतना सुनकर उन सब असुरों से मायामोह ने कहा कि ३७३ यदि तुम लोग हमारे शरण में हो तो जो तुम्हारे गुरु ये शुक्राचार्य्य कहें वही करो ये तुमको यज्ञ करादेंगे ३७४ इतना दैत्यों से कहकर फिर शुक्ररूपी बृहस्पति से बोले कि हे ब्राह्मणदेव! हमारी आज्ञा से इन दैत्योंको यज्ञ करावो इतना कहकर मायामोह तो चलेगये तब दानवलोग अपने शुक्रजी से बोले कि ३७५ हे महाभाग! ऐसी कोई दीक्षा बताइये व कराइये जिससे सब संसारी बातें छूटजावें शुक्राचार्य्यने कहा बहुत अच्छा तुमलोग सब नर्मदानदी के किनारेपर चलो वहीं यज्ञ करावेंगे ३७६ परन्तु सबलोग यहीं अपने२ वस्त्रउतारडालो हमने यहीं से तुमको दीक्षितकिया हे भीष्म! इसप्रकारसे शुक्रकारूप धारणकिये हुये अतिबुद्धिमान् बृहस्पतिजी ने ३७७ उन सब दैत्यों के वस्त्र उतारकर नङ्गे करदिया कुशोंमें गांठ बांध२ कर माला बना२कर सबों को पहिनाया ३७८ व सबों के बाल मुड़वाडाले व कहा कि बालोंको बनवाडालनाही सब कार्य्यों के सिद्ध करनेका परम धर्म्मसाधन है इसी से सब सिद्धता होसक्ती है ३७९ देखो धनोंकेस्वामी कुबेरजी केशोंके मुड़ानेही से धनों के अधिपति हुयेहैं व यही वेष सदा धारण किये रहनेसे परमसिद्धिको प्राप्तहैं ३८० हमसे पूर्वसमयमें अर्हत्तम

अर्थात् बौद्धोंके आचार्य्य ने कहाथा कि बाल मुड़ाडालनेसे नित्यत्ता मिलती है यदि मनुष्य भी अपने केश मुड़ा डालताहै तो तुरन्त देवता होजाताहै ३८१ फिर जब बालों का मुड़ाना ऐसा पुण्यदायक धर्म्म है तो तुम लोग क्यों नहीं करते देवतालोग भी यही मनोरथ किया करते हैं कि हमलोग कभी मनुष्यों के लोकमें जाते तो केश मुड़ाकर संसारसे मुक्तहोजाते ३८२ क्योंकि इस भरतखण्डमें जिनका जन्म सरावगियोंके कुलमें हुआ वे धन्यहैं कि अपने २ केश मुड़ाकर तपसे अपनेको मुक्तकरलेते हैं ३८३ इन सरावगियोंके चौबीस तीर्थ अत्युत्तमहैं उनमें वेलोग तपकरते हैं जब वे उनमें शिर घुटाकर तप करने लगते हैं तो नागराज शेषजी अपनी फणाओंसे उनके ऊपर छाया करते हैं ३८४ फिर जब वे लोग उनका ध्यान करते हैं व मन्त्र पढ़ पढ़के स्तुति करते हैं तो स्वर्ग व मोक्ष मानो उनके हाथोंमेंही प्राप्त होजाते हैं बस सब स्वर्ग मोक्ष इसी कर्म्म से मिलते हैं इसमें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं है ३८५ देखो कब किस ऋषि ने सूर्य अग्नि आदि के मन्त्रोंको जपकर तपकिया व किसने विरागीहोकर मन्त्रों के पञ्चाङ्ग से उन्हें सिद्ध कियाहै ३८६ इससे तुमलोग ऐसी तपस्याकरो जिसमें मृत्यु कभी निकट न आवे क्योंकि इन उत्तम तपस्वियों को जब मरने की इच्छा होती है तो अपना शिर पाषाण से फोड़ते हैं तभी प्राण निकलते हैं यों मृत्यु कभी उनके निकट आतीही नहीं ३८७ व वे लोग यही कहा करते हैं कि हमलोग कब जाकर निर्जन वनमें बसेंगे व सरावगी लोग आकर हमारे कानों में मन्त्र सुनावेंगे ३८८ जब वे लोग ऐसा विचार करते हैं तो उनका आचार्य उनके समीप आताहै व कहता है कि जिससे कि तुमलोग मोक्षके भागी हो इससे अब इस स्थानसे न हटना ३८९ न किसी अन्य कर्म्मकी इच्छाकरना जो कुछ तुमलोगों के थोड़े बहुत स्थानहों उन्हेंभी त्यागदो हमारा यह वचन सत्यमानो तुमको तप करनेकी भी कुछ आवश्यकता नहीं है केवल तुम सबोंके लिये हम विविधप्रकारके तप व्रत नियम करेंगे ३९० जिनसे तुम सब मुक्त होजाओगे क्योंकि तपस्वी लोग भक्तिभावसे तपका फल

पाते हैं कुछ करनेकी आवश्यकता नहीं होती ३९१ केवल न्द्रियों को रोंकेरहे इधर उधर न जानेपावें और सब प्राणियों के ऊपर दया करतारहे इसीका तपस्या नामहै और तो पञ्चाग्नि तापना ऊर्ध्वबाहु होकर खड़े होना इत्यादि तो विडम्बनाहै तप नहीं है ३९२ इससे यह जानकर तुमलोगोंको जो पद सिद्ध करनाहै उसे सिद्धकरो जिस परमपदमें सब तीर्थ करनेवाले व योगीलोग भी नहीं पहुँचते हैं ३९३ इस बातकी चिन्तना पूर्वकालमें सब देवता, गन्धर्व, ऋषि, विद्याधर व नागोंने भी की थी कि हमलोग भी ऐसे पदपर पहुँचें ३९४ इससे हे दानवो! जो तुम लोग इससंसारसे निवृत्त होनाचाहतेहो तो स्वर्ग मार्गके रोंकनेकी जंजीररूप प्रथम अपनी २ स्त्रियों को छोड़ो ३९५ क्योंकि जिस योनि में पिता उत्पन्न हुआ व आप भी उत्पन्न हुआ उस योनि में भोग करना बहुतही अनुचितहै इसीप्रकार अपने मांस के समान अन्य का मांस खानाभी अनुचितहै इस लिये स्त्रीसेवन व मांसभक्षण ज्ञानी पण्डित नहीं करते हैं ३९६ हे भीष्मजी! इस बात को सुनकर सब दानव अपने गुरुजी से बोले कि हमलोगों को यथोचित यज्ञ करने के लिये दीक्षित करो हम आप के शरण में उपस्थित हैं ३९७ तब बहुत अच्छा ऐसा कहकर प्रतिज्ञापूर्वक उनके पुरोहितजी बोले कि हे दैत्यो! हम यज्ञतो कराते हैं पर इस समयसे जब तक इस जगत् में हो कभी किसी अन्य देवताके प्रणाम न करना ३९८ बस एक स्थान में बैठकर जब भूखलगे केवल अपने २ हाथ में भोजन धरकर खाना किसी पात्र में न धरना व पवित्र स्थान में भराहुआ जलपीना जिसमें बाल व कीट आदि न हों ३९९ प्रिय व अप्रिय वस्तुको तुल्य समझना तुमलोगों के सिवा और कोई खाने पीनेकी वस्तु देखने न पावे व भूमिही में शयन करतेहुये ब्रह्मचर्य से रहना ४०० व सबके सब एकही सङ्ग रहना अलग कोई कभी न जावे ऐसा करने से तुमलोग मोक्षके भागीहोगे अब और किसी राज्य भोगादिकी इच्छा न करना हे राजन्! इस प्रकार के नियम बताकर व बनाय उन दनुपुङ्गवोंको इस नास्तिकमतपर आरूढ़ कराकर बृहस्पतिजी इन्द्रलोक को चलेगये व सब बातें दानवों की

देवताओं से कहीं जो आप कराआये थे ४०१ । ४०२ तब सब देवगण नर्म्मदा नदीके किनारेपर गये जहां कि वे नङ्गे मुण्डे दैत्य बैठे थे इन्द्रने देखा तो वहां प्रह्लाद न थे और सब दैत्य थे ४०३ इस से देवराज इन्द्रजी बहुत प्रसन्न होकर नमुचिनाम दैत्य से बोले कि नमुचिके विशेष और भी जो मुख्य २ हिरण्याक्ष, यज्ञहन, धर्म्मघ्न, वेदनिन्दक ४०४ क्रूरकर्म्मा, प्रघस, विघस, मुचि, बाणासुर, विरोचन ४०५ महिषाक्ष, बाष्कल, प्रचण्ड, चण्ड, रोचमान, अत्युग्र, सुषेणनाम दानवोत्तम ४०६ इन तथा और बहुत दानवों को देख सबोंसे बोले कि हे दानवेन्द्रो ! तुमलोग तो देवता होगये थे इससे स्वर्ग में राज्य करते थे ४०७ अब इस समय यह वेदमार्ग से विरुद्धकर्म्म कैसे करनेलगे जो कि नङ्गे मुण्डे होकर कमण्डलु हाथों में लिये ४०८ मोर के पङ्खों की पताका बनाये यहां सबके सब एकत्र बैठेहो ॥

चौ० इतना सुन सब दानव बोले । मधुरवचन कहि निजमुखखोले ॥
असुरधर्म्म त्यागे हम सारे । टिकि ऋषिधर्म्म अतीव उदारे ४०९
धर्म्मवृद्धि कर कर्म्म सुधारत । जो सब जन्तुन प्राण उधारत ॥
तीनलोक कर राज्य पुरन्दर । अब तुम भोगहु जाय निरन्तर ४१०
यहसुनिहितगुनिगयहुशचीपति । स्वर्गहिभोगनराज्यसहितयति ॥
इमि सब दैत्य देवगुरु मोहे । भीष्म कहा तुमसन करि छोहे ४११
सब दानव मेकलतनयातट । बैठि करन हित तप अतिदुर्घट ॥
जानि दशा तिनकी भृगुनन्दन । जाय वहां बोध्यहु करिफन्दन ४१२
पुनि त्रैलोक्यहरण मति कीन्हीं । परमक्रूर कृतिकी गति चीन्हीं ॥
इमि यह नास्तिकचरित बखाना । कहहु बहुरि का कहीं महाना ४१३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेवतारचरितंनामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

दो० चौदहयें महँ दिव्यविधि अर्ज्जुन जन्म बखान ॥
बहुरि कर्ण उत्पत्ति विधि शिरकृन्तन सविधान १

भीष्मजी ने इतनी कथा सुनकर पुलस्त्यजी से पूछा कि हमने

सुनाहै कि अर्ज्जुनकी उत्पत्ति तीन पुरुषों से है व कर्ण विना विवाहिता स्त्री में उत्पन्नहुआ इससे कानीन कहाता है १ फिर अर्जुन व कर्ण का हमने स्वाभाविक वैर देखा इसका क्या कारणहै हमारे सुननेकी इच्छाहै आप वर्णन करें २ यह सुनकर पुलस्त्यजी बोले कि एक समय छिन्नवक्त्र होतेहुये बड़े क्रोध करके युक्त ब्रह्माजी अपने माथेमेंउत्पन्न हुये स्वेदबिन्दुको पकड़कर पृथ्वीपर पटक देतेभये ३ उस पसीनासे एक वीरपुरुष धनुर्बाण हाथमें लिये कुण्डल व सहस्रकवच धारण कियेहुये उत्पन्न हुआ व क्याकरें ऐसावचन ब्रह्माजीसे कहता भया ४ तब ब्रह्माजीने बलयुक्त रुद्रको दिखातेहुये उस पुरुषसे कहा कि इस दुर्बुद्धि को मारडालो जिससे फिर न उत्पन्नहोवे ५ ब्रह्माजी के ऐसे वचनसुन धनुर्बाण लियेहुये वह महाभयानक पुरुष महादेव जीके निकटगया ६ तब उस महाभयंकर पुरुषको देख रुद्रभगवान् बहुत डरे व अपने स्थानसे भाग खड़ेहुये जाते जाते श्रीविष्णुभगवान् के आश्रमपर पहुँचे ७ व बोले कि हे शत्रुहन्! हे विष्णो! इस घोररूप पुरुषसे हमारी रक्षाकरो रक्षाकरो इस म्लेच्छरूपी पापी भयंकर पुरुषको ब्रह्माने उत्पन्नकियाहै ८ आप ऐसा उपाय करें जिसमें यह क्रुद्धपुरुष हमको न मारे हे जगत्पते! आपको छोड़ इस समय दूसरा रक्षक कोई नहीं है यह सुनकर श्रीविष्णुभगवान् ने हुङ्कारकी ध्वनिसे उस पुरुषको ऐसा मोहित किया कि ९ वह पुरुष सबप्राणियों से अदृश्य होगया व केशवजीने वहां आयेहुये महादेवजीको स्वस्थचित्त किया १० तब महादेवजीने भूमिपर गिरकर साष्टाङ्ग प्रणामकिया तब श्रीविष्णुभगवान् बोले कि आइये शिवजी तुम्हारा क्या प्रिय कार्य्यकरें कहिये ११ तब नारायण देवको देख महादेवजी बोले कि हमको भिक्षा दीजिये इतना कहकर उत्कट तेजसे प्रज्वलित अपना कपाल दिखाया १२ कपाल हाथ में लिये रुद्रको देखकर श्रीविष्णु भगवानने चिन्तनाकी कि ऐसे भिक्षुकको भिक्षादेनेमें इससमय और कौन समर्थ है १३ हमीं योग्य हैं इससे अपना दहिना हाथ समर्पण किया महादेवजीने उसमें अपना अतितीक्ष्ण शूल मारा १४ तब श्रीविष्णुभगवान् के भुजसे बड़ीभारी रुधिरकी धारा निकली

वह धारा सुवर्ण के रस व अग्निकी ज्वालाके सदृश थी १५ व जाकर शम्भुभगवान् के कपाल के समीप गिरनेलगी सीधी व बड़ी वेगवती तीव्र धाराथी मानो वेगसे आकाश में बादर को छूती थी १६ लम्बाईमें तो पचासयोजनकी व चौड़ाईमें दश योजनकीथी यह धारा देवताओं के सहस्र वर्षतक श्रीहरि के भुज से बहतीरही १७ उसे कालरुद्र महादेवजीने भिक्षा मानकर ग्रहण किया नारायण भगवान्की दीहुई यह भिक्षा उन्होंने उत्तम अपने कपालपात्रमें स्थापितकरली १८ तब नारायण भगवान् शम्भुजी से बोले कि यह बात बहुत अच्छीहुई अब तुम्हारा पात्र सम्पूर्ण होगया १९ मेघके समान गर्जतीहुई श्रीहरिभगवान् की वाणी सुन शिवभगवान् जिनके चन्द्रमा, सूर्य व अग्नि तीन नयन हैं व मस्तकपरभी चन्द्रमा रहता है २० अपने कपाल में अच्छीतरह तीनों नेत्रों से दृष्टि लगा कर श्रीनारायण जनार्दन भगवान्से बोले कि बस अब हमारा पात्र भरहुआ यह कह अपना पात्र अंगुलियों से झांपलिया २१ शिव जीकी वाणी सुनकर विष्णुभगवान् ने उस रुधिर की धाराको बन्द करदिया व श्रीहरिके देखतेही देखते शिवजी अपनी अंगुलीसे उस रुधिर को मथने लगे २२ यहांतक कि देवताओं के सहस्र वर्ष तक देखतेहुये मथाकिये मथने से वह रुधिर बुल्ला के समान होगया२३ उसी बुल्ला से किरीट मस्तक पर धारण किये धनुर्बाण लिये व दो तरकस बांधे छत्र मस्तकपर लगाये एक खन्ता हाथ में लिये एक पुरुष उत्पन्नहुआ २४ यह पुरुष उसी अग्निसमान प्रकाशमान महादेवजी के भिक्षापात्र कपालमें दिखाई दिया उसे देख श्रीभगवान् विष्णुजी रुद्रजी से यह वचन बोले कि २५ हे भव ! यह आप के कपाल में कौन नर उत्पन्न दिखाई देता है श्रीहरिके वचन सुन शिवजी बोले कि हे विभो ! हमारा वचन सुनिये २६ यह परमास्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ नरनाम पुरुष है जो उत्पन्नहुआ आपने कहा कि यह नर कौन पुरुष है बस इससे इसका नरनाम होगा २७ यह पुरुष आगे नरनारायण के नाम से प्रसिद्धहोगा संग्रामों में व देवताओं के कार्यों में व लोकों के पालने में २८ हे नारायण ! यह नर

तुम्हारा सखाहोगा व अन्धकासुर के संग्राम में हमारा भी सखा होगा २९ व मुनियों के समान ऐसा तप करेगा कि सब लोकों के जीतने वाला होगा इसमें तेज बहुत अधिक है क्योंकि एक तो यह ब्रह्माजीका पांचवां शिर है ३० इस से ब्रह्माके तेज से प्रकाशित है फिर ब्रह्माके तेजसे अधिक आप के भुज के रुधिरसे उत्पन्न है फिर हमने अच्छेप्रकार अपनी दृष्टि लगाकर देखाहै इससे तीन तेजोंसे यह भरा है ३१ सो इस संयोग से उत्पन्न होने के कारण जो कोई शत्रु युद्ध में इसके सम्मुख आवेगा उसे यह जीतहीलेगा व जो लोग किसीकारण आपसे भी अवध्य और दुर्ज्जेय होंगे ३२ व इन्द्रादि सब देवताओं से भी अवध्य व दुर्ज्जेय होंगे उन सबोंको यह पुरुष भयङ्करहोगा जब महादेवजीने ऐसा कहा तो श्रीविष्णुभगवान् बड़े विस्मितहुये ३३ इतने में वह कपाल में टिकाहुआ उदारबुद्धि वीर पुरुष महादेवजी व विष्णुजीकी स्तुतिकरनेलगा और शिरपर दोनों हाथों की अञ्जलि करके ३४ दोनों जनों से बोला कि मैं क्या करूं कुछ आज्ञा होती है ऐसा कहकर प्रणतहोताहुआ स्थितभया तब महादेवजीने कहा कि ब्रह्माजीने अपने तेज से ३५ इस पुरुष को उत्पन्न किया है जो धनुर्ब्बाण हाथमें लिये खड़ाहै तुम इसे मारडा-लो हाथजोड़े स्तुति करतेहुये उस नरनाम पुरुषसे महादेवजी ऐसा कहकर ३६ उसीप्रकार दोनों हाथ जोड़ेहुये उस दूसरे पुरुषके दोनों हाथ पकड़कर व अपने कपाल के बीच में बैठाकर फिर उस से नि-कालकर यह वचन बोले कि ३७ इस पुरुषको तुम जानतेहो कौन है जो अतिभयङ्कररूप धारणकिये है यह वह पुरुष है जो हम को मारने को दौड़ाआताथा व विष्णुभगवान् के हुङ्कार के शब्द से रचित मोहनिद्रा को प्राप्त होगया था ३८ इससे इसको तुम शीघ्रजगावो इतना कहकर महादेवजी तो अन्तर्द्धान होगये व नारायणजीके प्रत्यक्ष में नरने उसके वाम चरण से प्रहार किया तब वह महाबली पुरुष मोहनिद्रा को त्याग कर उठ खड़ाहुआ तदनन्तर पसीना व रक्तसे उत्पन्न उन दोनों पुरुषोंका घोरयुद्धहोने लगा ३९ । ४० दोनोंके धन्वाओं के शब्दोंसे सम्पूर्ण भूतल नादित

होगया व ब्रह्माजी के पसीना से उत्पन्नवालेका एक कवच विष्णुजी के रक्तसे उत्पन्नवालेने तोड़डाला ४१ हे नृप ! इस प्रकार युद्ध करते करते देवताओं के दो वर्ष बीते उन दोनों स्वेद व रक्तसे उत्पन्न पुरुषोंके युद्धसे सबलोग व्याकुल हुये ४२ उसमें रक्तसे उत्पन्नवाले की विजयहुई व स्वेदसे उत्पन्नवाले की पराजय इसको देखकर श्री वासुदेव भगवान् ब्रह्माजीके स्थान को गये ४३ व बड़े सन्देह के साथ ब्रह्माजीसे मधुसूदनजी बोले कि भो ब्रह्मन् ! आज रक्तसे उत्पन्न हुये पुरुष ने पसीना से उत्पन्नहुये पुरुषको मार गिराया ४४ इस बातको सुनकर ब्रह्माजी बहुत अकुलाकर मधुसूदनभगवान्से बोले कि हे हरे ! यदि दूसरे जन्ममें भी हमारा पुरुष हारे ४५ तब सन्तुष्ट होकर आप अच्छा कहना इस जन्मके जय पराजयका कुछ ठीक नहीं इतना कहकर जहां दोनों पुरुषोंका संग्राम होताथा वहां जाकर शुभवचन कहकर दोनों को रोककर बोले ४६ कि अब युद्ध बन्दकरो अन्य जन्म में द्वापरके अन्त में व कलियुग के प्रारम्भ में एक बड़ा दारुण समर होगा तब हम तुमदोनोंको युद्ध करनेके लिये नियुक्त करेंगे ४७ इतना कह श्रीविष्णुभगवान् के द्वारा सूर्य्य व इन्द्रको बुलवाय दोनोंजनों से ब्रह्माजीने कहा कि इस समय हमने इन दोनोंको युद्ध करनेसे छुड़ादियाहै अब तुमदोनों हमारी आज्ञा से इन दोनोंकी रक्षाकरो ४८ फिर विष्णुभगवान्ने कहा कि हे सूर्य ! इनमें एक तो तुम्हारेही तेजसे उत्पन्नहै क्योंकि तुम्हींने अपने किरणों से गर्मीकी है तभी ब्रह्माके शरीर से पसीनाहुआ जिससे यह उत्पन्नहुआ व एक जानो हमारे रुधिर से उत्पन्न है इन दोनों को द्वापरके अन्तमें देवताओं के कार्य्यकी सिद्धि के लिये अवतार लिवावेंगे ४९ यदुवंशियों के कुलमें एक शूरनाम राजा महाबलवान् होगा उसकी कन्याका पृथानाम होगा रूपमें उसके समान पृथ्वी पर उससमय दूसरी स्त्री न होगी ५० वह महाभाग्यवती देवताओं के कार्य्यकी सिद्धिके लिये उत्पन्न होगी दुर्व्वासामुनि उसे एक देवहूती विद्या बतादेंगे ५१ व कहेंगे कि इस विद्याके मन्त्रसे तुम जिस देवताको बुलाओगी हे देवि ! उसके प्रसादसे तुम्हारे पुत्रहोगा ५२

वह पृथा रजस्वला होनेके पीछे स्नान करके एकदिन तुमको उये हुये देखकर अभिलाषा करेगी व तुममें अपना चित्त लगादेगी तब हे सूर्य्य!तुम उसका मनोरथ पूराकरना ५३ उसके गर्भ में यह पुरुष जो कि तुम्हारे तेज व ब्रह्माके पसीना से उत्पन्नहुआ है उत्पन्न होगा व कन्यामें होनेके कारण कानीन कहावेगा हे देव! यह कुन्तिनन्दन नाम बालक देवताओं का कार्य्य सिद्ध करनेके लिये होगा ५४ इस बातको सुनकर तेजकी राशि सूर्य्यजीने कहा कि बहुत अच्छा हम उसमें पुत्र उत्पन्न करेंगे वह कन्याका पुत्र अपने बलसे बड़ा अहं-कारी होगा ५५ व सबलोग उसका कर्ण ऐसा नाम कहेंगे हे विष्णो! हमारे प्रसाद से वह ऐसा दानी होगा कि ब्राह्मणों के मांगनेपर व आपके मांगनेपर ५६ लोकमें ऐसी कोई वस्तु न समझेगा जो देने के योग्य न हो किन्तु सब कुछ देडालेगा हे केशव! आपके कहने से हम ऐसे प्रभावयुक्त इस पुत्रको उत्पन्न करेंगे ५७ दानवोंके घाती महात्मा श्रीनारायण भगवान्से ऐसा कहकर सूर्य्यभगवान् वहीं अ-न्तर्द्धान होगये ५८ जलके नष्ट करनेवाले सूर्य्यजी जब अन्तर्द्धान होगये तो प्रसन्नमन होकर श्रीभगवान्जी इन्द्रसे बोले ५९ कि हे सहस्रनेत्र! हमारे अनुग्रहसे द्वापर के अन्तमें तुम अपने अंशसे इस रक्तोत्थपुरुष को उत्पन्न करके उस पुरुषको मारडालना जो सूर्य्यसे उत्पन्नहोगा ६० हे महाभाग इन्द्रजी! जब महाभाग पाण्डुजी पृथा नाम भार्य्या पावेंगे व दूसरी माद्रीनाम स्त्री पावेंगे तब वनको जा-वेंगे ६१ वनमें रहतेहुये उनको मृग शापदेगा उससे राज्यादि से वैराग्य करके शतशृङ्गनाम पर्व्वतस्थली को चले जावेंगे ६२ वहां शापके कारण आप तो मैथुन करी न सकेंगे अपनी भार्य्या कुन्ती से कहेंगे कि तुम क्षेत्रजपुत्रोंको उत्पन्नकराओ पर इस बातकी इच्छा न करती हुई कुन्ती अपने पतिसे कहेगी ६३ कि हे राजन्! हे न-राधिप! हम मनुष्योंसे पुत्र उत्पन्न कराना कभी नहीं चाहती हैं हां यदि आपकी आज्ञाही है तो देवताओं के प्रसादसे पुत्र उत्पन्न क-राना चाहती हैं ६४ तब हे इन्द्र! कुन्ती तुम्हारी प्रार्थना करेगी तो हमारे कहने से तुम जाकर उसमें अपने अंश से पुत्र उत्पन्न

करना ६५ इस बातको सुनकर देवेश इन्द्र बहुत दुःखित वचन श्री विष्णुभगवान् से बोले कि इसी मन्वन्तर की चौबीसईं चौयुगी के त्रेतायुग के अन्त में ६६ रघुकुल में महाराजाधिराज दशरथजी के यहां रावण के वध के लिये व देवताओं के कार्य्य के लिये आपने पूर्ण अवतार लियाथा ६७ तब आपका श्रीरामचन्द्रनाम था सीताजीके संग वनको गये थे तब सीताजीके खोजने के लिये सूर्य्य के पुत्र के अर्त्थ हमारे पुत्र को आपने मारडालाथा ६८ जोकि सुग्रीव के लिये वाली नाम वानरेन्द्र को आपने माराथा वह हमारा पुत्र था व सुग्रीव सूर्य्य का इस दुःख से हम दुःखित हैं इस से अब नर पुत्र न ग्रहण करेंगे ६९ कारणान्तर कहकर अपने को पाण्डुका क्षेत्रज पुत्र न होना कहतेहुये इन्द्र से श्रीभगवान् जी बोले क्योंकि उनको पृथ्वी का भार उतारना अंगीकारथा ७० हे इन्द्र ! हम भी मर्त्यलोक में सूर्य्य के पुत्र के नाश के लिये व तुम्हारे पुत्रके जयके अर्त्थ व कुरुवंशियों के विनाश के निमित्त अवतारलेंगे तुम्हारे पुत्र के सारथि बनेंगे इस श्रीभगवान् विष्णुजी के वचन से इन्द्र बहुत सन्तुष्ट हुये ७१ । ७२ व कहा बहुत अच्छा हम कुन्ती में उत्पन्न होंगे आपका वचन सत्यहो यह सुनकर श्रीभगवान् जीने इन्द्रको बिदाकिया ७३ व आपने ब्रह्माजी के समीप जाकर कहा कि हे ब्रह्मन् ! तुम सचराचर इस विश्वको उत्पन्न करतेहो ७४ पर हम व महादेव इसके पालनादि करनेमें सहायता करते हैं हे देव ! तुम यह नहीं जानते कि आपही बनाकर फिर आपही इसका नाश नहीं करसक्ते यह कार्य्य रुद्रही करसक्ते हैं ७५ जो कि शम्भु के अंश के नाशकरने की इच्छा से तुमने कोप से एक पुरुष उत्पन्न किया यह बड़ा निन्दित कर्म किया ७६ इस पापकी शुद्धिके लिये बड़ा प्रायश्चित्त करो गृह से तीनों अग्नियों को बाहर ले चलकर अग्निहोत्र करो ७७ हे पितामह ! चाहे किसी पुण्यतीर्थ में वा पुण्यदेशमें अथवा वनमें चलकर करो सो अकेले नहीं अपनी स्त्रीकोभी संग लिये चलो उसके संग ग्रन्थिबन्धन करके यज्ञकरो ७८ हे जगत्पते ! इस यज्ञमें सब देवता व रुद्र आदित्य सब आप की आज्ञा करेंगे व हमभी सहायता

करगे जिससे कि आप हमलोगों के प्रभु हैं ७९ एकगार्हपत्य अग्नि, दूसरा दक्षिणाग्नि, तीसरा आहवनीय इनतीनोंको तीन कुण्डों विषे कल्पितकरो ८० सो चलकर हमारे धनुष की आकृति का यज्ञ-स्थल बनाओ व चारोंकोणों में ऋग्यजुस्साम के नाम से महादेवजी का स्थापन करो ८१ व वहां तीनों अग्नि अपने तप से उत्पन्नकरो इसप्रकार देवताओं के सहस्र वर्षतक अग्निहोत्र करो तो इस अ-पराध से छूटो ८२ क्योंकि इस संसार में अग्निहोत्र से पर और कुछ पवित्र नहीं है इस से अच्छी तरह अग्निहोत्र करने से सब ब्राह्मण लोग परमगति को जाते हैं ८३ ब्राह्मणों ने देवलोक को जाने के लिये यही मार्ग दिखायाहै ब्राह्मणोंका आचार्य एक अग्नि ही है ८४ विना अग्नि के गृहस्थी का धर्म ब्राह्मण को नहीं मि-लता इस से सब ब्राह्मणोंको सदा अग्निहोत्र करना चाहिये इतनी कथा सुनकर भीष्म जीने पूँछा कि जो धनुर्द्धर नर कपालसे उत्पन्न हुआ था ८५ क्या वह माधवसे उत्पन्न हुआथा वा अपने कर्म्म से नरनाम पुरुष उत्पन्न हुआथा अथवा बुद्धिपूर्वक रुद्र ने उत्पन्न कि-याथा ८६ हे ब्रह्मन्! प्रथम तो हिरण्यगर्भ ब्रह्माका स्वरूप बहुत सूक्ष्म उत्पन्नहोता है फिर चारमुखका स्वरूप कैसे होजाता है यह बड़ा अद्भुत है उनके मुख कैसे होजातेहैं फिर चारभी नहीं हमने सुना है कि ब्रह्मा के पांच मुख थे ८७ इसके सिवाय सत्त्व रजोगुण में नहीं दिखाई देता न रजोगुण सत्त्वगुण में फिर सत्त्वगुण में टिके हुये भगवान् ब्रह्माजी रुद्रके ऊपर कैसे मारने को दौड़े ८८ जोकि मूढ़ात्मा के समान उन्हों ने एक पुरुष को हरजीके मारने को भेजा इस विषय में हमें बड़ा सन्देह है आप कृपा करके कहें यह प्रश्न सुनकर पुलस्त्यजी बोले कि श्रीहरि व महादेव ये दोनों सत्त्व-गुणी हैं ८९ इससे इन दोनों महात्माओं को कुछ भी सिद्ध व असिद्ध अविदित नहीं है सब कुछ इन को सिद्धही रहता है व महात्मा ब्रह्माजी के पांचवांमुख शिरकेऊपरथा ९० इसीसे ब्रह्मा मूढ़हुये व रजोगुण से सदा आच्छादित रहतेहैं इसीसे अपना तेज अधिक जानकर ब्रह्माजानतेहैं कि यहसृष्टि हमनेही की है ९१ हमसे

अन्य और कोई देव नहींहै जिसने यहसृष्टि कीहो यह देव,गन्धर्व्व, पशु,पक्षी, मनुष्यादि सहित सब सृष्टि हमारीही कीहुईहै ब्रह्माजीने जैसेही ऐसा विचाराथा कि अच्युतभगवान्‌की कृपासे ९२ उन के पांचमुख होगये उनमें पूर्व्वओरके मुखसे श्रीविष्णुभगवान् की इच्छा से ऋग्वेद प्रवृत्तहुआ ९३ व दक्षिणवाले दूसरे मुखसे यजुर्व्वेद व तीसरे पश्चिमवाले मुखसे सामवेद व उत्तरवाले चौथे मुखसे अथर्व्व-वेद प्रवृत्त हुये ९४ व साङ्गोपाङ्ग इतिहास पुराण व सरहस्य सब शास्त्र भी उन्हीं चारोंमुखोंसे उत्पन्नहुये व ब्रह्माजी पढ़ने भी लगे ९५ परन्तु उस अद्भुत पांचवें मुखके तेजसे देवता दैत्यादिक जो प्रथम उत्पन्न होचुकेथे अत्यन्त व्याकुल हुये उसके तेजके आगे ऐसे अप्र-काशितहुये जैसे सूर्य्य के उदयमें दीपक नहीं प्रकाशितहोतेहैं ९६ यहांतक कि ब्रह्माजी के सम्मुख जाने पर तो क्या अपने २ स्थानों पर बैठेहुये देवादिकोंका सब तेज उस मुखके तेजसे हत होगया इस से वे विचेतस होतेहुये प्रकाशित नहीं होतेथे वह तेज औरोंको कुछ समझताही नहीं था सबोंका तिरस्कार करताथा यहांतक कि ९७ न तो कोई समीप जासक्ता था न देखसक्ताथा न कुछ स्तुति करसक्ता था जब महाप्रभु ब्रह्माजीके सामने किसीप्रकार उस शिरके अत्यन्त तेजके कारण कोई देवगण न जासके ९८ तो उन्होंने अपना तिर-स्कारसा मानलिया इससे सब देवताओं ने अपने हितके लिये यह सम्मत किया कि ९९ चलो महादेवजी के शरण को चलें फिर वहां जाकर देवगण शिवजी से बोले हे सब प्राणियों के ईश ! आप को नमस्कारहै हे महेश्वर ! आपको बार बार प्रणाम करते हैं १०० आप इस जगत् की योनि परब्रह्म सनातन हैं व आपही सब जगतों की प्रतिष्ठा हैं व श्रीविष्णु भगवान् के साथ आप इस सब संसार की रक्षा करते हैं हमारे ऊपर कृपाकरें १०१ जब देवता,ऋषि,पितृ, दानव, गन्धर्व्व, मनुष्यादिकोंने ऐसी स्तुतिकी तो अन्तर्द्धान होकर महादेवजी देवताओंसे बोले कि हे देवगणो ! तुम क्याचाहतेहो १०२ तब देवताओंने कहा हे देव ! प्रथम तो प्रत्यक्ष होकर दर्शन दीजिये फिर जो हमलोगोंको अभीष्ट है वर दीजिये व दया कीजिये १०३

हमलोगों के जो महातेज वीर्य्य पराक्रम व बलथा सब ब्रह्माजी ने अपने पांचवें शिरके तेजसे हरलिया १०४ सब तेज हमलोगों के नष्टहोगये अब आपही के प्रसादसे फिर होसक्ते हैं इससे जैसा करने से हम लोगों के तेजआदि पूर्व्वसमय के अनुसार होजावें वैसा कीजिये हे महेश्वर ! यही आपसे प्रार्थनाकरते हैं १०५ तब महादेव जी प्रसन्न होकर प्रकट हुये व देवताओं ने नमस्कार किया फिर वे वहां गये जहां रजोगुण के अहङ्कार से मूढ़बुद्धि ब्रह्मा विराजते थे १०६ उन की स्तुति करके महादेव जी आसनपर बैठगये परन्तु रजोगुणसे आच्छादित होनेसे ब्रह्मा आये हुये महादेव जी को जानाही नहीं कि कौन आकर बैठा है १०७ ब्रह्मा जीका तेज उस समय सहस्रों सूर्य्यों के समान था उससे सब जगत् को प्रकाशित करतेहुये विश्वके उत्पन्न करनेवाले व विश्वात्मा ब्रह्माजी महादेवजी से अच्छे प्रकार देखेगये १०८ व ऐसे बैठेहुये सब देवगणों के मध्य में बैठे ब्रह्माजी को देखकर महादेवजी ने बड़ा आश्चर्य्य किया कि हां ऐसा तेज ब्रह्माका है १०९ यह विचारते हुये महादेव जी बनाय निकट जाकर अहो ब्रह्मन् ! आपका यह मुख तो ऐसा विराजमान है कि हम कुछ कह नहीं सक्ते बस ऐसा कहकर शिवजी ने बड़ा अट्टहास किया ११० व अपने बायें अंगूठे के नख से ब्रह्माजी का पांचवां शिर काट लिया जैसे कि केले का गाभ पुरुष नखों से काट लेता है १११ वह कटा हुआ पांचवां शिर महादेवजी के हाथ में ऐसा शोभित हुआ जैसे ग्रहों के मध्य में दूसरा चन्द्रमा कहीं आजावे तो शोभित हो ११२ व उस शिर को हाथ में लिये हुये महादेवजी नाचनेलगे तो ऐसे शोभित हुये जैसे शिखरपर टिके हुये सूर्य्य से कैलास पर्वत शोभित होता है ११३ इस प्रकार ब्रह्माजी के मुखके कटजाने पर देवगण बहुत प्रसन्न हुये व देवदेव महादेवजीकी विविध स्तोत्रों करके स्तुति करने लगे ११४ कपाली महाकालके भी काल नित्यस्वरूपी ऐश्वर्य्य व ज्ञानसे युक्त व सब भोग देनेवाले महादेव के नमस्कार है ११५ हर्षपूर्व्वक विलासकारी सब देवताओं के देव महादेव के नमस्कारहै हे महादेव ! सबको

संहार करतेहो इससे महाकाल कहातेहो ११६ व भक्तोंका दुःख नाशतेहो इससे दुःखान्त कहातेहो व शीघ्रही अपने भक्तोंका कल्याण करते हो इससे शंकर कहातेहो ११७ व ब्रह्माका शिरकाटकर फिर अपने हाथमें धारण किये रहे इससे कपाली कहातेहो हे देव! हम लोगों ने यथामति स्तुतिकी आप प्रसन्नहो ११८ जब देवताओं ने महादेवजीकी ऐसी स्तुतिकी तो प्रसन्न होकर देवताओं को अपने अपने स्थानोंको जानेकी आज्ञादेकर आप वहीं रहे ११९ तब ब्रह्माजीने वीरनाम पुरुषको उत्पन्न करके महादेवजी के समीप भेजा उसके कहने से महादेवजीने जाना कि ब्रह्माजी इस बातपर अप्रसन्नहैं इससे उनके कोपके शान्त होने के लिये १२० शिरपर अञ्जलि करके शिवजीने प्रथम वहीं से ब्रह्माजी के प्रणाम किया फिर तेज के निधि परब्रह्म श्रीविष्णुभगवान्का स्मरणकरके १२१ ऋग्यजुस्साम वेदके निरुक्तसूक्तरहस्यमन्त्रों से जाकर ब्रह्माजीकी स्तुतिकरनेलगे॥

दो० अप्रमेय परपर बहुरि अद्भुतजनक महान ।
अक्षयतेजोनिधि तुम्हें प्रणमतसहितविधान ॥
विश्वविजयसर्ज्जनकरण ऊर्ध्वानन धरणीश ।
वरद्युतिधारण नतिकरत हो प्रसन्न जगदीश ॥
जलजजलालयजलजसम नयनजलाशयनमोहिं ।
ह्वै प्रसन्न वरदेहु अब विनय करतहैं तोहिं ॥
सृष्टिकरणहित मोहिं तुम उपजायहु महराज ।
यज्ञाहुतिभक्षक तुम्हें विनवतहैं हम आज ॥
स्वर्णगर्भसुरगर्भकज गर्भप्रजापति आप ।
यज्ञवषट्कृतिकमलभव स्वधा अहौ यह थाप ॥
देववचनसों शीर्ष तव हम काटा जगदीश ।
द्विजहत्या बाधत तऊ हमहिं बचावहु ईश ॥
इमिसुनि शिवके वचनवर बोले विधि सविचार ।
दयासहितहितकृतबहुत महितरहितदुखवार १२८

ब्रह्माजी बोले हे शिव! हमारे पूज्य तुम्हारे सखा सब कुछ करने में स्वयं समर्थ श्रीनारायणदेव तुमको इस ब्रह्महत्या से पवित्र

करेंगे इससे तुम जाकर उनका कीर्त्तन करो १२९ उन्हीं के ध्यानसे तुम्हारा कल्याण होगा क्योंकि तुमने उन्हींका स्मरण मन से किया है तभी हमारी स्तुति करनेकी मति तुम्हारे उत्पन्न हुई है १३० हे महाद्युते ! जिससे तुमने हमारा शिर काटाहै इससे तुम्हारा कपाली एक नाम होगा व सोमसिद्धान्तकारक भी नामहोगा व तुम कोटियों ब्राह्मणों के उद्धार करनेवाले होगे १३१ तुम्हारी ब्रह्महत्या मिटने के लिये और कुछ व्रत नहीं है केवल अब तुम पापी क्रूरस्वभाव वाले पुरुष ब्रह्मघाती पापकारी पुरुषोंसे वार्त्तालाप न करना १३२ व जो लोग भूतप्रेतादिकोंके यज्ञ करते हैं वा औरही कोई दुराचार करते हैं उनसे भी न वार्त्ता करना कदाचित् कहीं मार्ग्ग में ऐसे लोग दिखाईदें तो तुम सूर्य्य की ओर देखलेना १३३ यदि कभी ऐसे लोगोंके अङ्गोंका स्पर्श होजावे तो वस्त्रसहित जलके भीतर पैठकर स्नान करना पण्डितों ने यही ब्रह्महत्या की शुद्धि लिखी है १३४ सो आप जिससे कि ब्रह्महन्ता हैं इससे इस ब्रह्महत्यासे शुद्धहोनेके लिये अवश्य यह व्रत करें जब यह व्रत करचुकोगे तो हम फिर आप को बहुतसे वरदेंगे १३५ शिवजी से ऐसा कहकर ब्रह्माजी तो अपने स्थानको गये व रुद्रजी ब्रह्माजीको न जाना कि कहांगये तदनन्तर शिवजीने ध्यान की गति से प्रथम तो थोड़ीदूर चलकर श्री विष्णुका स्मरण किया १३६ फिर और दूरजाकर देखा तो उनके स्मरण करने के कारण लक्ष्मीसहित नारायणभगवान् दिखाई दिये तब साष्टाङ्गप्रणाम करके १३७ शङ्ख चक्र गदादि धारण किये हुये विष्णुभगवान् की स्तुति करनेलगे—रुद्रभगवान् बोले ॥

हरिगीतिका ॥

पर अपर पर वर अमृत पारावार पार पुराणजू ।
अरु विष्णुआद्यअनन्तकेशव अमितवीर्य्यप्रमाणजू ॥
परमपुरुष पुराणतर त्रय प्रथम नारायण हरे ।
हम करत सुमिरण देवदेव अनेक दुख दारिद दरे ॥
परापरतर पूर्व्व जगभीर गभीरमति नुति गति दये ।
अतिउग्रवेग सुदेव ईशित परम धाम तुम्हें श्रये ॥

हरि हरहु परम उदार मम दुखवार तुमहिं मनावऊं ।
यह ब्रह्महत्या परम कृत्या तव सुदृत्या जावऊं ॥
पर अपर तत्पर परमधाम अकाम शुद्ध विशुद्धहू ।
सब भांति नाथ विशुद्ध भाव प्रभाव भाव अरुद्धहू ॥
अतिसूक्ष्मरूप सुरूप यह जग सृजत पालतहो सही ।
मम विनय संनम्र विचारि पुरवहु बात जो हमहूं कही ॥
सब कहत तुमहिं प्रधानपूरुष रहत जासों तुम सदा ।
वरज्ञान गुणकारण परात्पर हरहु जनके दुखमदा ॥
विगत मल जल शुद्ध पुरुष पुराण नारायण नवों ।
तुम सकल विश्व अपारपार न पार तव पावत कवों ॥
तव मूर्त्ति नाथ पुरातनी सुप्रधान अरु द्युतिमानहो ।
अरु शान्तिक्षमाविधानपर क्षितिपालशुभकरमुहिंगहो ॥
सहसशीर्ष अनेकपाद विषादगत नत मैं अहौं ।
सबकार्य्यकारण जगउधारण नाथ तव गुण किमि कहौं ॥

दो० शशिरविनयन अनन्तभुज क्षीरसिन्धुकृतशैन ।
परपरेश त्रिदशेश मुख हू अगम्य बहुनैन ॥
तुम त्रिसर्गकारण त्रिहुतनयन त्रितत्त्वागम्य ।
त्रिलयत्रिनेत्र नमामि नारायण स्वमन नियम्य ॥
कृत सित द्वापर रक्त कलि कृष्ण पीत त्रेताहि ।
तव स्वरूप सरसिजनयन सदा प्रणत जन पाहि ॥
तुम मुखसों ब्राह्मण सृजे भुज क्षत्रिय उरु वैश ।
शूद्र चरणसों हरु कुमति जिमि रवि हरु तम नैश १४६

अनुष्टुप् ॥

सूक्ष्ममूर्त्ति महामूर्त्ति विद्यामूर्त्ति अमूर्त्तिक ॥
सर्व देव महावर्म नमामि कुरुपूर्त्तिक १४७
सहस्र शीर्ष देवेश सहस्र कर लोचन ॥
जगत् संव्याप्य तिष्ठन्त नमामि भवमोचन १४८
विष्णु जिष्णु महादेव शरण्य शरणागत ॥
सनातन घनश्याम शार्ङ्गपाणि सदानत १४९

सनातन चिद्रूप नित्य शुद्धरु सर्व्वग ॥
भावाभावविनिर्मुक्त नमामि हरु गर्व्वग १५०

हे अच्युत! हम आपसे व्यतिरिक्त इस संसारमें कुछ नहीं देखते किन्तु यह सचराचर जगत् आपमय देखते हैं १५१ जब इसप्रकार रुद्रभगवान् ने स्तुति की तो अद्भुतरूपदर्शन सनातन चक्र हाथ में लिये गरुड़पर आरूढ़ श्रीविष्णुभगवान् प्रकट हुये जैसे उदय पर्व्वतको विदारण करके सूर्य्य निकलते हैं व प्रकट होकर बोले कि महादेवजी वरमांगो क्या चाहतेहो वरदेनेवाले हम तुमको अभीष्ट वरदेने के लिये आयेहैं १५२। १५३ ऐसा कहनेपर महादेवजी बोले कि हे सुरेश! इस पापसे हमारी अतिशुद्धिहो क्योंकि इस ब्रह्महत्या महापापसे छुड़ानेवाला आपको छोड़कर दूसरा कोई नहीं दिखाईदे-ता १५४ हे परमेश्वर! ब्रह्महत्या से तिरस्कृत होकर हमारा शरीर कृष्णताको प्राप्तहोगयाहै व हमारे अङ्गोंमें मरेहुये प्राणीकी दुर्गन्धि आतीहै भूषण सब लोहेके होगये हैं १५५ हे जनार्दन! कैसा करने से हमारी यह दशा बदले हे देवदेव! हम क्या करें जिससे हमारा पूर्व्व कासा शुद्ध गौरस्वरूप होजावे १५६ हे अच्युत ! सो वह आपही के प्रसाद से होगा उसका उपाय हमसे कहिये महादेवजी के ऐसे वचन सुन श्रीविष्णुभगवान् बोले कि ब्राह्मण का मारना अतिउग्र व महाकष्ट देनेवाला है १५७ इससे इस महापापकी भावना मन सेभी कभी किसी को न करनी चाहिये परन्तु आपने अपने आप यह ब्रह्मवध नहीं किया देवताओंके कहनेसे उनके उपकार के लिये किया है इससे शीघ्र मिटजावेगा १५८ अब इस समय तो जैसा ब्रह्माजीने कहा है वैसाकरो फिर अपने शरीर पर सम्पूर्ण अङ्गों में तीनों काल भस्म लगाते रहना १५९ व शिखा, दोनों कर्ण व एक हाथमें हाड़ोंको धारण किये रहना ऐसा करनेसे हे रुद्र! आपको कुछ कष्ट न विदित होगा १६० इस प्रकार महादेवजी से कहकर श्री विष्णुभगवान् लक्ष्मीसहित अन्तर्द्धान होगये व शिवजीने न जाना कि कहांगये १६१ व एक हाथमें ब्रह्माजीका कपाल लियेहुये देवेश महादेवजी इस पृथ्वीपर आकर घूमने लगे हिमवान् पर्व्वतपर गये

फिर मैनाक पर फिर मेरुपर १६२ इसीप्रकार कैलास, विन्ध्याचल, नीलगिरि पर गये फिर काञ्चीपुरी, काशीपुरी, ताम्रपर्णा नदी, मगधदेश, मालवदेश में घूमे १६३ वत्सगुल्म, गोकर्णतीर्थ, उत्तर कुरुदेश, भद्राश्वखण्ड, केतुमाल, हिरण्यकवर्ष १६४ कामरूपदेश, प्रभासक्षेत्र, महेन्द्रपर्व्वत इन सबपर महादेवजी घूमे परन्तु वह ब्रह्महत्या न छूटी १६५ हाथमें वह ब्रह्मकपाल लियेहुये मारे लज्जाके बार २ उसको हाथ झिटक २ कर गिराते उछालते छुड़ातेरहे पर नहीं छूटा १६६ जब हाथ झिटकनेपर भी वह कपाल हाथसे न छूटा तो महादेवजी के यह बुद्धि उत्पन्नहुई कि अब हम यह व्रत करें १६७ जिसमें हमारे इस मार्ग्गपर सब ब्राह्मण लोग भी चलेंगे यह बहुत देर तक ध्यान करके वे पृथ्वीमण्डल के सब तीर्थादिकों में घूमने लगे १६८ घूमते २ पुष्करतीर्थ में पहुँच करके उत्तम वनमें प्रवेश करते भये जो नाना प्रकारके वृक्षलतादिकोंसे युक्त व नानाप्रकारके मृगों के शब्द से भरा १६९ व वृक्षोंके पुष्पोंकी सुगन्धिसे युक्त पवन करके वासित इसीप्रकार गिरेहुये बहुत पुष्पों से भूषित भूतल १७० नाना प्रकार के रसों गन्धोंसे सनाहुआ तथा कच्चे पक्के फलों से युक्त ऐसा वन देखा व उसमें वृक्षोंके नीचे २ होकर व पुष्पामोद करके अभिनन्दित होतेहुये महादेवजी पैठे १७१ व विचारा कि बस अब हम यहीं बैठकर ब्रह्माजी की भक्ति करके आराधना करें तो सन्तुष्ट होकर वे अवश्य वरदेंगे क्योंकि ब्रह्माजीकेही प्रसाद से हम पुष्करतीर्थ में आये जहांकि हमको यह उत्तम ज्ञान मिला १७२ जोकि पापनाशन, दुष्टशमन, पुष्टि, श्री व बलके बढ़ानेवाला है इस से हम यहीं ब्रह्माजी का ध्यान करेंगे क्योंकि अब तक जो प्रयत्न हमने किये सब निष्फल हुये जैसेही ऐसा विचार करके अमिततेज रुद्रभगवान् ध्यान करनेलगेहैं कि १७३ भक्तिसे प्रसन्न होकर कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी वहां आकर प्रकटहुये व महादेवजीने प्रणाम किया तब शिवजी को उठाकर छाती में लगाकर ब्रह्माजी बोले कि १७४ आपने दिव्य व्रतोंकी पूजा सामग्री से हमारी आराधनाकी इस प्रकार जो कोई हमारे दर्शन की कामना से ध्यान

करेंगे १७५ वे मनुष्य व देवता अपने व्रतमें टिकेहुये हमको देखेंगे हम आपसे बहुत प्रसन्नहैं जो चाहिये वर मांगिये अवश्य देंगे १७६ क्योंकि आपने सब कामों के सिद्ध करनेवाले व्रतकी सेवाकी है इस से हम मन वचन व कर्म्म से सन्तुष्ट हैं १७७ जो कुछ अभीष्ट हो मांगो हम आपका वाञ्छित पूराकरेंगे इस विषय में सन्देह न कीजिये कि कहते ही कहतेहैं पर देंगे नहीं यह सुनकर रुद्रजीबोले कि हे भगवन्! यही बड़ाभारी आपका वरहै कि १७८ जो आपने दर्शन दिया हे जगद्वन्द्य! हे जगत्कर्तः! अब आपके नमस्कार है क्योंकि बड़ेभारी यज्ञसे साध्य बहुत कालतक एकत्र कियेहुये १७९ प्राण भी खर्च करने से सिद्धतप करने से हे देव! आप के दर्शन होते हैं यों साधारण नहीं होते हे देवेश! हे विभो! यह आपका कपाल हमारे हाथसे छूटताही नहीं है १८० यह कर्म्म ऋषियों के सम्मुख बड़ी लज्जा करताहै व सब इसे निन्दित समझतेहैं आपके प्रसाद से हमने यह कापालिक व्रत किया १८१ व सिद्धभी हुआ क्योंकि आपने प्रसन्न होकर दर्शनदिया अब कोई ऐसा पुण्यस्थान बताइये जहां हम इसे फेंकदें १८२ जिससे कि भावितात्मा मुनियों के मध्य में पवित्र समझे जावें इस बातको सुनकर ब्रह्माजी बोले कि एक श्री भगवान् विष्णुजीका बहुत पुराना अविमुक्तनाम स्थानहै १८३ वहीं जाकर तुम इस कपालको फेंको अब वह कपालमोचन नाम तुम्हारा तीर्थ कहावेगा उस तीर्थ में हम तुम व श्रीविष्णुजी भी सदा बसे रहेंगे १८४ वहां जो कोई हम तुम विष्णुका दर्शन करेंगे वे महापापीभी होंगे तो विशुद्ध होकर हमारे भवनमें आकर नाना प्रकारके भोग भोगेंगे १८५ वह स्थान देवताओं की वल्लभा वरुणा व असी नदी के मध्यक्षेत्र में है वहां कभी वध्य पुरुष प्रवेश नहीं करता है १८६ तीर्थों व क्षेत्रों में श्रेष्ठ उस कपालमोचन नाम तुम्हारे तीर्थ में जो कोई पुरुष तीर्थवास करनेके लिये जन्मपर्य्यन्त वा मरण के समय में बसेंगे १८७ वे मरनेपर हंसके ऊपर आरूढ़ होकर व सब कहींसे भयरहित होकर स्वर्गको जाते हैं ऐसा पांचकोस प्रमाणका क्षेत्र हमने आपको दिया १८८ व जब उस क्षेत्रमें होकर गंगानाम

नदी जाकर समुद्रमें मिलेगी तब हे रुद्र! वहां गंगा व वरुणाके मध्य में महापुण्यवती काशीनामपुरी कहावेगी १८९ उस पुण्यकाशीपुरी के निकट गंगा उत्तरवाहिनी व सरस्वती पूर्ववाहिनी होगी सो गंगा जी उत्तरवाहिनी दो योजनतक उस पुरीके निकट होगी १९० वहां हम व इन्द्रादिक देवतालोग बसते रहेंगे इससे जाकर वहीं इस कपालको छुड़ाओ १९१ उस तीर्थ में जाकर जो कोई श्रद्धापूर्वक पितरोंका तर्प्पण करेंगे व पिण्डदान करेंगे उनको स्वर्ग में अक्षय लोक मिलेगा १९२ वाराणसी महातीर्थमें स्नान करनेसे पुरुष विमुक्त होजाता है व केवल जानेही से सातजन्म के किये हुये पापों से छूटजाता है १९३ यह तीर्थ सब तीर्थों में उत्तम परिकीर्त्तित है जो प्राणी वहां जाकर तुम्हें प्रणतहोकर प्राण छोड़ते हैं १९४ वे रुद्रत्व को प्राप्तहोकर आपके साथ मोदित होते हैं व हे रुद्र! वहां जो कोई यतात्मा पुरुष दान देता है १९५ उस भावितात्मा पुरुष को बड़ाभारी फल होगा और वाराणसी में जे मनुष्य अपने अंगों में स्फुटित संस्कार करते हैं १९६ वे रुद्रलोकमें जाकर सदा सुखी रहते हैं व रुद्रकी भक्ति से युक्त जो प्राणी वहां पूजा जप होमादि करतेहैं उनको अनन्तफल मिलतेहैं व वहां जो प्राणी दीपदान करता है वह ज्ञानचक्षु होता है १९७ । १९८ व जो प्राणी सब अंगों से सुन्दर, युवावस्था को प्राप्त, सीधेस्वभाव व रूपवान् बैलको अंकितकरके जाकर वहां छोड़ देताहै वह परमपदको जाता है १९९ आप तो जाताही है जो उसके पितर स्वर्गादिको न गये हों तो उनको भी संग लेजाता है अब बहुत कहनेसे क्या है पुरुष वहां जो कुछ २०० कर्म्म धर्म्म करते हैं वह अनन्तफल होजाता है और उनको परलोक में भोगनेको मिलता है यह तीर्थ पृथ्वी में स्वर्ग व मोक्ष दोनोंका हेतु कहा जाता है २०१ इससे स्नान जप होमादि करनेसे अनन्तफलको साधता है जो लोग वाराणसीतीर्थ में जाकर भक्तिसे रुद्रपरायण होकरके २०२ प्राणोंका त्याग करते हैं वे लोग मुक्त होजाते हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है पिता वसुओंका रूप होताहै पितामह रुद्रोंका २०३ व प्रपितामह आदित्यों

का यह वैदिकी श्रुति है इससे हे अनघ ! तीनप्रकारकी विधि पिण्ड-दानके लिये मुञ्जकरके कहीगई २०४ मनुष्योंको यहां आकर सदा पिण्डदान पितृपितामह प्रपितामहों को देनाचाहिये जे पुत्र वहां जाकर पितरों के लिये आदरपूर्वक पिण्डदान करते हैं २०५ वेही सुपुत्र पितरों के सुखदायी होते हैं यह तीर्थ तुम्हारे अर्थ मुञ्जकरके कहागया जो दर्शनमात्रसे मुक्ति देताहै २०६ व वहां जलमें स्नान करनेसे तो जन्मोंके बन्धनोंसे छूटजाता है इससे हे रुद्र ! ब्रह्महत्या से विमुक्त होकर वहां सुखपूर्वक २०७ मुञ्जकरके दियेहुये उस अ-विमुक्त तीर्थ में अपनी स्त्रीसमेत जाकर बसो इतना सुनकर रुद्र भगवान् बोले कि पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं तिन सबों में हम विष्णु भगवान् सहित २०८ बसे रहते हैं तथापि आप के कहने से यह वरदान मैंने अंगीकार किया हम महादेव देव हैं तुमको चाहियेकि सदा हमारी आराधना करो २०९ तो हम सन्तुष्टात्मा होकर तुम को वरदेंगे और जब कभी मांगेंगे तो विष्णुको भी मनोवांछित वरदेंगे २१० सब देवताओं व सब भावितात्मा मुनियों को भी वर देंगे बस हमीं इस संसार में दाता हैं इससे हमींसे सबको जो कुछ हो मांगना चाहिये और कोई किसी प्रकार नहीं देसक्ता २११ ॥

दो० यह सुनि विधि बोले वचन करब कहन तुम जौन ।
हमहीं वर मांगब कबहुँ जो अभिलाषित तौन ॥
अरु नारायण तव वचन करिहैं संशय नाहिं ।
जो तुम निजमुखसों कहत करिविचारचितमाहिं २१२
इमि कहि शिवसन विधि तहां ह्वैगे अन्तर्द्धान ।
जाय बसे वाराणसी शंकर देव महान २१३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादेरुद्रस्यब्रह्मवध्याना शरचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

दो० पन्दरहें अध्याय महँ पुष्करतीर्थ महत्त्व ॥
ब्रह्मयज्ञ वर्णाश्रमन के सब धर्म्म संतत्त्व १

पिछले अध्याय की कथा सुनकर भीष्मजीने पूँछा कि हे मुनि-

राज! ब्रह्माजी ने व श्रीविष्णुभगवान् व शंकरजी ने वाराणसीपुरी को देखकर क्या किया १ व ब्रह्माजीने श्रीविष्णुजी के कहने से किस तीर्थ में यज्ञ किया फिर उनके यज्ञ में सदस्य ऋत्विज् आदि कौन कौन हुये हमसे सब कहिये २ व उस यज्ञमें कौन २ देवगण तृप्त हुये सब हमसे कहिये हमको इसके सुनने की बड़ी इच्छा है पुलस्त्यजी कहनेलगे कि सुमेरु पर्व्वत के शिखरपर एक श्रीनिधाननाम पुर रत्नों से चित्रविचित्र ३ अनेक आश्चर्य्योंका स्थान बहुतसे वृक्षों से भराहुआ विचित्र धातुओं से चित्रित स्वच्छ स्फटिक मणियोंकी वेदियों से शोभित ४ लताओं के वितानों की शोभासे युक्त मोरोंके शब्दों से शब्दायमान सिंहों के शब्द से भयभीत हाथियों से समाकुल ५ झरनों से बहतेहुये जल के शीतल फुहारों से अतिशीतल पवन के मन्द मन्द झकोरों से हिलतेहुये बड़े २ वृक्षों से चित्रविचित्र ६ कस्तूरीवाले मृगोंकी नाभियोंकी सुगन्धियों से सम्पूर्ण वन सुगन्धित रति करने से थके सोतेहुये विद्याधर विद्याधरियोंसे भरे हुये कुञ्जों से शोभित ७ अत्युत्तम गीत गातेहुये किन्नरों के झुण्डों के मधुर शब्दों से नादित है उसपर अनेक प्रकार के विन्यासों से शोभित भूमिवाला ८ ब्रह्माजीका एक वैराजनाम अतिमनोहर स्थानहै वहां दिव्याङ्गनाओं के गानेकी मधुरध्वनि से शब्दायमान ९ पारिजातवृक्षकी मञ्जरी के दामों से भूषित नानाप्रकारके रत्नसमूहों की चमक व विचित्र रत्नोंसे विचित्रित १० कोटियों मणियों के खम्भों से युक्त निर्मल मणियों के शीशे झाड़ोंसे शोभित अप्सराओं के नाचने गाने हाव भावादिकों से भरीहुई ११ बहुत से बाजों से व अनेक अप्सराओं के एकही संग हाथ उठाने व ताल तोड़ने से विनादित लयतालयुक्त अनेक गीतों व बाजों से शोभित १२ देवताओं के कल्याण देनेवाली ऋषियों के झुण्डों से भरी मुनियोंके समूहों से सेवित ब्राह्मणों के गाये हुये सामवेद के शब्द से पूरित सबको अतीवआनन्ददायिनी कान्तिमती नाम सभा है उस सभा में बैठेहुये देवताओं के देवता ब्रह्माजी के सन्ध्या करतेहुये १३।१४ न सब जगत्के निर्म्माण करनेवाले परब्रह्मको ध्यान करतेहुये ऐसी

बुद्धि उत्पन्न हुई कि हम अब कैसे यज्ञकरें १५ व पृथ्वीपर किस स्थान में व किस स्थल में यज्ञकरें काशीमें प्रयाग में तुङ्गभद्रानदी के तीरपर नैमिषारण्य में व कनखलतीर्थ में १६ व कांचीपुरी में भद्रानदी के तटपर देविकानदी के कूलपर कुरुक्षेत्र में सरस्वती के तीरपर व पृथ्वीपर प्रभासादि बहुत से तीर्थ हैं उनमें १७ व बहुत से इस भूतलपर और भी पुण्यक्षेत्र विद्यमान हैं वहां करें व हमारी आज्ञासे महादेवजीने बहुत से तीर्थ बनाये हैं उनमें करें १८ यह कुछ नहीं जिससे कि हम सब देवोंमें आदिदेव हैं इससे आदिभूत एक परम तीर्थभी अपने यज्ञ करने के लिये अपूर्व बनावें १९ सो वह भी वहां बनावें जहां कि प्रथम विष्णुकी नाभिसे जमेहुये कमल पर हम उत्पन्न हुयेथे सो बनाना भी नहीं है क्योंकि उसी स्थानपर तो वेदपाठी ऋषियों करके पुष्कर तीर्थ कहागया है २० जैसेही ऐसी चिन्तनाकी है कि ब्रह्माजीकी ऐसी मतिहुई कि बस अब हम यहांसे पृथ्वीपर चलें २१ बस यह विचार करके ब्रह्माजी पुष्करतीर्थ में आये व वहां उत्तम वनमें प्रवेशकिया जो कि वन नानाप्रकारके वृक्षलताओं से आकीर्ण नानप्रकार के पुष्पोंसे शोभित २२ नाना प्रकारके पक्षियोंके शब्दोंसे आकीर्ण नानाप्रकारके मृगगणों से पूर्ण वृक्षोंके पुष्पोंके सुगन्धिसे सुरों असुरोंको सुगन्धित करताहुआ २३ मानों किसीने पुष्पोंको बुद्धिपूर्वक चुनाहै ऐसे वृक्षोंसे गिरेहुये पुष्पों में भूषितहै भूतल जिसमें व छहोंऋतुओं के पक्के कच्चे गन्ध रसयुक्त २४ व सुवर्ण के तुल्य आकार व सूँघने तथा देखने में अतिमनोहर फलोंसे रमणीय व पुरानेपत्तों व तृणोंको व सूखेकाठोंको व फलोंको २५ पवन जानों अनुग्रह करनेहीकी दृष्टिसे जिसमें से बाहरको फेंकताथा व जिसमें कि नाना प्रकारके पुष्पोंकी सुगन्धिलेकर पवन २६ आकाश, पृथ्वी व दिशाओं में शीतलहोकर सुगन्धित करता हुआ बहरहाथा व हरे चीकने छिद्ररहित बाँसोंसे शोभित २७ खो थलवाले पुराने भी वृक्षोंसे भूषित बड़ेऊँचे २ व छोटे २ नानाप्रकार के सघनवृक्षों से मनोहर अरोग दर्शनीय सुन्दर सब्राङ्गसे बनेहुये कितनेहूं उज्ज्वल २८ मृगोंसे ऐसा शोभित था मानों ब्राह्मणों के

कुटुम्बहीसे भराथा धातुओं के समान झलझलातेहुये अंकुरों से युक्त वृक्ष कैसे शोभित होतेथे २९ मानों दोषरहित कुलीनों के गुणोंसे आच्छादित सज्जनपुरुष शोभित होते हैं पवनकरके ताड़ित चोटियों से वृक्ष ऐसे शोभित होतेथे कि मानों परस्पर स्पर्शही करते हैं ३० व मानों आपस में पुष्प सूँघतेही हैं व कहीं पुष्प शाखादिही हैं भूषण जिनके ऐसे पुन्नागवृक्ष पुष्पों व बेतके वृक्षों व नागकेसर के वृक्षों करके ३१ काली पुतलीवाले चञ्चल नेत्रोंके तरह शोभित होते हैं तथा कहीं पुष्पों करके सम्पन्नहैं चोटी जिनकी ऐसे कठचम्पाके वृक्ष ३२ पृथक् पृथक् दो दो स्त्री पुरुषके तरह शोभित होते हैं व सुन्दर नवीन पुष्पों के आवरण युक्त सिन्दुवार वृक्षकी पंक्तियां ऐसी शोभित होती हैं ३३ जैसी मूर्त्तिमती वनदेवी पूजित होनेपर शोभित होती हैं व कहीं कहीं कुन्दकी लतायें अपने उज्ज्वल पुष्पाभरणों से ऐसी शोभित होती हैं ३४ जैसे नक्षत्रों के बीचमें बाल चन्द्रमा सब दिशाओं में शोभित होताहै व कहीं वनमें सांखू व अर्ज्जुन के वृक्ष पुष्पों से युक्त ऐसे शोभित होतेथे ३५ जैसे धोयेहुये रेशमी वस्त्रोंको ओढ़ेहुये पुरुष शोभित होते हैं फूलीहुई अतिमुक्तक की लताओं के लपटने से वृक्ष ऐसे शोभित होतेथे ३६ जैसे भूषणोंसे भूषित अपनी स्त्रियोंके संग लपटेहुये पुरुष शोभित होतेहैं सांखू व अशोक के वृक्ष पल्लवों से परस्पर ऐसे मिलने से शोभित होतेथे ३७ जैसे सुहृद् लोग जब बहुत दिनोंके पीछे मिलते हैं तो परस्पर हाथों से हाथमिलाकर आनन्दित होते हैं फलों व पुष्पोंके भारसे गरुआ कर झुँकेहुये कटहल असना व अर्ज्जुन के वृक्ष ऐसे शोभित होतेथे ३८ मानों आपस में फलों फूलों से एक दूसरेकी पूजाही कररहे थे मारुत के वेगसे सांखूके वृक्ष झुँककर एक दूसरेमें मिलजाने से ऐसे शोभित होतेथे ३९ जैसे कि बहुत श्रमकरके आयेहुये लोग आपसमें बाहोंसे लपटकर मिलनेके समय शोभित होते हैं एकही प्रकार के पुष्पोंके होनेसे परस्पर एकही प्रकारके होजानेके कारण ४० वसन्तऋतुमें सब सतीयवृक्ष ऐसे शोभित होतेथे जैसे विवाहादि मङ्गलों में एकही प्रकारके रँगेहुये वस्त्र ओढ़े पहिनेहुये पुरुष शोभित

होते हैं फूलोंकी शोभाके भारसे शिर झुँकायेहुये वृक्ष पवन के वेग से ऐसे शोभित होतेथे ४१ जैसे कि नाचनेवाले कथिक आदिपुरुष नाचने के समय शिरझुँकाकर भावबताने के समय शोभित होते हैं ऊँचे शृङ्गोंके पुष्पों के गिरने से आच्छादित होकर वृक्ष ऐसे शोभित होते थे ४२ जैसे एकही प्रकारके वस्त्रधारण कियेहुये स्त्री पुरुष एकही सङ्ग नाचतेहुये शोभित होते हैं फूलोंके भारसे झुँकीहुई लताओंके लपटने से कहीं कहीं वृक्ष ऐसे शोभित होतेथे ४३ जैसे कि शरद्ऋतुमें तारागणोंसे आकाश अँधेरीरात्रियों में शोभित होताहै वृक्षोंके ऊपर फूलीहुई मालतीलता ऐसी शोभित होतीथी ४४ मानों उनकी चोटी किसीने जानबूझकर फूलोंसे गुहीथी हरे फलेफूलेहुये कचनारके वृक्ष आपसमें मिलेहुये ऐसे शोभित होतेथे ४५ जैसे साधुओं के समागममें गृहस्थ सज्जन पुरुष सौहृद दिखाने में शोभित होते हैं फूलोंकी धूलिसे कपिलवर्णहुये भ्रमर सब दिशाओं में ऐसे शोभित होतेथे ४६ मानों कदम्ब के फूलोंकी विजय सबको सुनाते हुयेही घूमरहे थे कहीं २ फूलोंके रससे मतवाले ४७ कोकिल घने वृक्षोंपर गिरते थे जैसे काम से मतवाले कामीपुरुष अपनी स्त्री के संग घूमते हैं कहीं सिरसाके पुष्पके रंगके तोतोंके जोड़े इकट्ठेहोकर ४८ ऐसा प्रिय वचन बोलते थे जैसे यज्ञ में पूजित होकर ब्राह्मण लोग वेदोच्चारण करते हैं चित्रविचित्र पंखोंवाले मोर अपनी अपनी स्त्रियोंके संग ४९ वनोंमें नाचतेहुये ऐसे शोभित होते थे जैसे कि नाचनेवाले लोग सभाओंमें नाचतेहुये शोभित होतेहैं नानाप्रकार के शब्द बोलनेवाले पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड ऐसे मधुर रमणीय शब्द कूजते थे कि ५० उससे रमणीयवन को रमणीयतर करते थे व नित्य हर्षित नानाप्रकार के मृगगणों से भराथा ५१ इससे वह नन्दनवनके तुल्य वन देखनेवालोंको अत्यन्त आनन्दित करता था कमलयोनि भगवान् ब्रह्माजीने ऐसे सुहावने वनोत्तम को ५२ अति सौम्यदृष्टिसे शीशाके तरह देखा मानों उसे औरभी बड़ा करदिया उस समय आयेहुये ब्रह्माजीको देखकर उन वृक्षोंकी पंक्तियोंने ५३ ब्रह्माजीके ऊपर भक्तिपूर्वक पुष्पोंकी वर्षाकी फूलबरसातेहुये वृक्षोंको देख

कर ब्रह्माजी ५४ उन तरु व लताओं से बोले कि हम तुमलोगों से बहुतप्रसन्न हैं जो चाहो हमसे वरमांगो जब भगवान् ब्रह्माजीने ऐसाकहा तो डालियों को झुकाकर ५५ हाथजोड़कर वृक्षोंकी अधिष्ठात्री देवता नमस्कार करके बोलीं कि हे देव! हे प्रपन्नजनों के ऊपर कृपा करनेवाले! यदि प्रसन्नहोकर वर देतेहो तो ५६ हे भगवन्! यह वरदीजिये कि आप सदा यहांही वनमें बसेरहिये व हे पितामह! आपके नमस्कार करतेहैं यही हमलोगोंका परमकामहै कि ५७ हे देवेश! हे विश्वभावन! तुम इसवनमें बसो व सबप्रकारसे आपके चरणों के शरणमें प्राप्त इस वनको बढ़ाओ ५८ व कोटिवरोंसे अधिक यह वरदो कि सबतीर्थों से इसतीर्थ को अपने रहनेसे श्रेष्ठ बनादो ५९ तब ब्रह्माजी बोले कि अच्छा यह स्थान सबक्षेत्रोंमें उत्तम पुण्यक्षेत्र होगा व इस वन में नित्य फल पुष्प वृक्षों में लगेहुयेरहेंगे व नित्य नई अवस्था इस वनकी बनीरहेगी ६० व सदा यह वन सबकी इच्छाओंको पूर्णकरतारहेगा व इष्टफल दियाकरेगा व इसवनके दर्शनमात्रही से सबके सब मनोरथ पूरे होजावेंगे ६१ व हमारे प्रसाद से परमाश्री करके युक्तहोंगे इसप्रकार वरदानदेकर ब्रह्माजी ने सब वृक्षोंके ऊपर अनुग्रह किया ६२ व सहस्रवर्षपर्य्यन्त वहां रहकर अपने हाथमें जो कमलका पुष्प लियेथे उसे वहीं फेंकदिया उसकमलके पुष्पकी धमक से सबकी सब रसातलपर्यन्त पृथ्वी कांपउठी ६३ सब समुद्र विवश होगये समुद्र में लहरें बड़ेवेग से उठनेलगीं अपनी २ वेलाओं को त्याग देतेभये व इन्द्रके वज्रकरकेही मानों फटे व व्याघ्र व सर्पादिकों करके युक्त ६४ पर्व्वतों के सहस्रों शृंग फटगये देवताओं व सिद्धोंके सैकड़ों विमान व गन्धर्वों के सहस्रों नगर ६५ चलायमान होगये व घूमनेलगे व ऊपरसे नीचे गिरपड़े व पृथ्वीमें घुसगये कबूतरपक्षी व मेघसमूह क्या जाने कहांकेकहां उड़कर के चलेगये व फिर बहुत बादर इकट्ठे होगये कि ६६ जिस से सूर्य्य आच्छादित होगये यहांतक कि उस बड़ेभारी शब्द से सब चराचर तीनोंलोक मूक व बधिर व अन्धहोकर व्याकुल से होगये सुर असुर सबके शरीर टूटनेलगे मन सबके ६७ । ६८ अत्यन्त

व्याकुलहुये व सब कहनेलगे कि यह क्याहुआ क्याहुआ किसीको कुछ विदित न हुआ कि यह क्यों ऐसाहै तब धैर्य्य धारणकरक सब ब्रह्माजी को देखनेलगे ६९ परन्तु उनको किसीने न देखा कि ब्रह्मा कहां चलेगये सब आश्चर्य्य में आगये कि यह क्या होगया जो पृथ्वी ऐसी कांपरही है बड़ेभारी कोई उत्पातका निमित्त दिखलाई देताहै ७० तबतक जहां सब देवगण व्याकुल होकर ऐसा विचारते थे कि वहां श्रीविष्णुभगवान् आये उनके प्रणाम करके देवतालोग यहवचनबोले कि ७१ हे भगवन्! कहिये इस उत्पातके दिखाई देनेका क्या कारण है जिससे कि तीनोंलोक कांपरहे हैं व जानों नष्ट होजाया चाहतेहैं ७२ कांपने के कारण चारोंदिशाओं के समुद्र खलभलाकर अपनी २ मर्य्यादासे बाहर होगये व चारोंदिशाओं के दिग्गज जो सदा अचल रहते थे चलायमान होगये ७३ हे भगवन्! जानों यह सब पृथ्वी जलमें डूबजाया चाहती है इस शब्द की उत्पत्तिका कुछ प्रयोजन नहीं जानपड़ता कि क्या है ७४ जैसा यह शब्दहुआहै ऐसा न कभी हुआहै न हमलोगों ने सुनाहै कि जिस भयङ्कर शब्दसे तीनोंलोक व्याकुल होगये हैं ७५ इस शुभशब्द ने तीनोंलोकों का अशुभ इससमय कर रक्खा है हे भगवन्! जो आप इसका कारण जानतेहों तो हमलोगों से कहें ७६ जब देवताओं ने ऐसा कहा तो सब कुछ जाननेवाले श्रीविष्णुभगवान् बोले कि हे देवताओ! न डरो इस विषयका कारण सुनो ७७ निश्चय से जान कर हम सब यथाविधि कहेंगे यह नहीं कि योंही कहडालें लोकके पितामह भगवान् ब्रह्माजी कमल हाथमें लियेहुये ७८ इस पुण्यराशि भूतलपर यज्ञ करनेके विचार से आये व जहा बहुतसे पर्वत व अतीव शोभनवनहै वहां ७९ कमल उनके हाथसे पृथ्वीपर गिरपड़ा उसीका यह बड़ाभारी शब्दहै जिससे तुमलोग कांपउठेहो ८० तहां भगवान् ब्रह्माजी वृक्षोंके समूहकरके सुगन्धित पुष्पोंकेद्वारा अभिनन्दित होते हुये उस सम्पूर्ण वनपर अनुग्रह करके ८१ जगत् के अनुग्रहकेअर्थ वहांरहनेकी अनुरुचि करतेभये व वह पुष्करनाम तीर्थ क्षेत्रोंमेंश्रेष्ठ ८२ लोकों के हितकारी भगवान् ब्रह्माजी ने उत्पन्न कियाहै इससे अब

हमारे साथ वहां चलकर ब्रह्माजीको सन्तुष्टकरो ८३ जब आराधना करोगे तो वे भगवान् बहुतसे श्रेष्ठ वर आपलोगोंको देंगे यह कहकर भगवान् विष्णुजी उन देवताओं व दानवोंके संग ८४ प्रहृष्ट व तुष्ट मन होकर कोकिलों के शब्द सुनतेहुये उस वनोद्देशको कि जहां ब्रह्माजी विद्यमानथे जातेभये ८५ व उज्ज्वल पुष्प समूह के सदृश शोभित ब्रह्माजीके वन में प्रवेश करतेभये इन सब देवतादिकोंकरके युक्त होने से वह वन नन्दनवन के तुल्य ८६ कमलादि पुष्पों से शोभित तिस समय अत्यन्तशोभित हुआ सर्व पुष्पोंसे शोभित उस वन में देवतालोग प्रवेशकरके ८७ देव ब्रह्माजी यहां हैं, ऐसा कह २ कर देखने की इच्छा करतेहुये देवतालोग घूमनेलगे व वहांसे ढूंढ़ते हुये वे सम्पूर्ण इन्द्रादि देवता ८८ शीघ्र चलनेपर भी उस अद्भुत वनके अन्तको न देखतेभये तब देव ब्रह्माजीको ढूंढ़तेहुये देवताओं करके मूर्तिमान् वायुदेव देखेगये ८९ उन्हों ने कहा हे देवताओ! ब्रह्माजीके दर्शन विना तपकरने से प्रत्यक्ष में नहीं होसक्ते इस बात को सुनकर देवलोग बहुत उदासीन होकर फिर उस पर्वतके किनारे के वनमें ढूंढ़नेलगे ९० दक्षिण उत्तर व मध्य सबकहीं फिर २ कर ढूंढ़ा जब न मिले तो फिर वायुदेव का स्मरण किया कि वे आकर देवादिकों से बोले कि ९१ ब्रह्माजी के दर्शन के तीन उपाय कहेगये हैं श्रद्धापूर्वक ज्ञान व तपस्या व योगाभ्यास ९२ योगीलोग सकल व निष्कल देव ब्रह्माजीको देखतेहैं व तपस्वीलोग सकल देखतेहैं व ज्ञानीलोग परम निष्कल देखतेहैं ९३ व विज्ञान उत्पन्न होतेहुये श्रद्धा-मन्द पुरुष नहीं देखताहै किन्तु परमभक्ति करके योगीलोग शीघ्रही ब्रह्माको देखते हैं ९४ प्रधानपुरुषेश्वर निर्विकार यह ब्रह्माजी देखने के योग्य हैं इससे कर्म्म मन वचन करके नित्ययुक्तहो ब्रह्माजी की आराधना में तत्पर होतेहुये पितामहकी तपस्याकरो तुमलोगों का कल्याणहो क्योंकि ब्राह्मीदीक्षाको पाकरके उनके शरण में प्राप्त जो द्विजन्मा भक्तहैं उनको ९५ । ९६ ब्रह्माजी सर्वकाल विचार करतेहैं कि मुझकरके दर्शन देनेयोग्यहैं वायुदेवताके ऐसे वचनसुनकरके ये वचन हितही हैं ऐसा निश्चयकरके ९७ ब्रह्माकी इच्छाहीसेहुईहै मति

जिनके ऐसे देवतादिक तदनन्तर अपने गुरु बृहस्पतिजी से बोलते भये कि हे प्रज्ञानविबुध! हमलोगोंको ब्रह्माजीका मन्त्र धारण करावो ९८ ब्रह्मदीक्षा करके देवताओं को शीघ्रही दीक्षित करने की इच्छा करतेहुये वे बृहस्पतिजी वेदोक्तविधानपूर्व्वक उनसबको दीक्षा देते भये ९९ तब सब देवताओं ने विनीतवेष धारण करके गुरुजी के बहुत प्रणाम किया जैसे कि मन्त्र श्रवण करनेके पीछे अबभी लोग गुरुके साष्टांग प्रणाम करते हैं ब्रह्माजी की प्रसन्नता से उस मन्त्रके सुनतेही ऐसा ज्ञान देवताओंको हुआ कि ब्रह्माजी के दर्शनका बोध होगया १०० उसके पीछे अध्वर्य्युसत्तम बृहस्पतिजी ने सबोंको विधिपूर्वक ब्रह्मयज्ञ कराया उसका विधान यहहै कि सहित नाड़ीके प्रथम एक २ कमल सबोंके हाथमें दिया जैसा कि कमलदीक्षाके प्रयोगमें लिखा है १०१ तदनन्तर देवेच्छाकरके प्रेरित मुनिने उन सबों के ऊपर अनुग्रह किया इस से जैसा वेदका विधान है उसीके अनुसार उन विवेकी देवताओं को दीक्षित किया १०२ फिर उदार बुद्धिवाले महात्मा बृहस्पतिजी ने विस्मय छोड़कर एक अग्नि को संस्कार करके देवताओं के १०३ आगे स्थापित किया फिर तुष्ट होते हुये उन्होंने सब देवताओं को जपने के लिये ये वेदोक्त मन्त्र बताये जोकि त्रिसुपर्ण, त्रिमधु, पवित्रपावमानी कहाते हैं १०४ फिर उन उदारधी बृहस्पतिजीने जपनेकेलिये सब देवताओं को संहिता पूरी बताई फिर आपोहिष्ठा इत्यादि ब्राह्मस्नान का मन्त्रपढ़ा १०५ जोकि पापनाशनेवाला दुष्टोंका विनाशक पुष्टि व श्री व बलका बढ़ानेवाला सिद्धि व कीर्त्ति देनेवाला व कलियुगके भी पापों के विनाशनेवाला मन्त्रहै १०६ इससे सब प्रयत्नों से ब्राह्मस्नान उस मन्त्रसे सबको सदा करना चाहिये व जो लोग यज्ञ करनेके लिये दीक्षितहों सब मौनरहें व अपनी इन्द्रियोंको जीतें १०७ एक २ कमण्डलु सब लियेरहें धोतीकी एक लांगखोलेरहें व अक्षकी एक २ माला पहिने रहें व सबोंको एक २ दण्डधारण कराया सबोंने चीरवस्त्र पहिने व जटा रखाने से अतिशोभित होतेभये १०८ व जिसस्थानपर बैठे तो वीरासनही बांधकर बैठे व ध्यान प्रयत्नपूर्व्वक सब करनेलगे सबोंने

ब्रह्माजी में मन लगाकर नियत भोजन करनेका प्रारम्भकिया १०९ तबसे किसीने भयंकर मृतक आदि अमंगल वस्तु नहीं देखी न किसीने पतित पापी आदिसे सम्भाषण व प्रसङ्ग व ध्यान किया इसप्रकार व्रत धारणकियेहुये सब तीनकाल स्नानकरने लगे ११० व सदा परमभक्ति व परमविधि करकेयुक्त रहनेलगे व जब इसप्रकार के नियमोंके साथ देव ब्रह्माजी के जानने को मनोगत होते हुये सब देवताओं ने बहुत काल तक ध्यानकिया १११ व ब्राह्मध्यान के अग्निसे सब पाप नष्टहोजानें से शुद्धमन होगये तब भगवान् ब्रह्माजीने प्रकटहोकर सबोंको दर्शनदिया ११२ परन्तु उनके तेजसे सबके चित्त भ्रान्त होगये तदनन्तर धैर्यधारण करके सबोंने षडंग वेदके योगसे हर्षितमन व तत्पर होकर सबके सब शिरोंपर हाथ जोड़कर धरके व पृथ्वीमें शिर झुकाकर सृष्टिकेकर्त्ता व स्थिति के करनेवाले ईश्वर इष्टदेव ब्रह्माजी की स्तुति करनेलगे देवगण बोले ब्रह्मा ब्रह्मदेह ब्रह्मण्य अजित यज्ञ व वेदके देनेवाले आपके हम सब नियतहोकर नमस्कार करते हैं हे देव! लोकोंके ऊपर दया करनेवाले सृष्टि के रूप तुम्हारे नमस्कार हैं ११३ । ११६ भक्तिसे पूजाकरनेवालों के ऊपर कृपाकरनेवाले व वेदजाप्य मन्त्रोंसे स्तुति करनेके योग्य बहुत रूपोंके स्वरूप सैकड़ों रूप धारण करनेवाले सावित्री व गायत्रीकेपति कमलपर बैठनेवाले, कमलरूप, कमलमुख तुम्हारे नमस्कार हैं ११७ । ११८ वरदेनेवाले, वराह, कूर्म्मादि स्वरूपी जटामुकुटयुक्त पवित्ररूप पृथ्वी के धारण करनेवाले चन्द्रमाके मृगके धर्म्मवाले व धर्म्मनेत्र विश्वनाम वाले, विश्वरूप, विश्वकेईश तुम्हारे नमस्कार हैं ११९ । १२० हे धर्मनेत्र! आप हमलोगों की इससे अधिक रक्षाकरनेके योग्यहैं हे पितामह! हम लोग मन वचन व कर्म्म के भावों से आपके शरण में हैं १२१ जब इसप्रकार वेद जाननेवाले व ब्रह्म जाननेवालोंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजीकी स्तुति देवताओं ने की तो ब्रह्माजी बोले कि तुम लोगों को जो दर्शन दियाहै वह निष्फल नहीं होगा १२२ इससे हे पुत्रो! तुमलोग अपना वाञ्छित बताओ हम श्रेष्ठ वरदान तुम लोगों को देंगे जब इसप्रकार भग-

वान् ब्रह्माजी ने कहा तो देवता लोग बोले १२३ कि हे भगवन्! यही बड़ा भारी वर है कि आप यह बतावें कि कमल हाथसे फेंकने के समय आपने ऐसा सुन्दर शब्द क्योंकिया १२४ पृथ्वी को क्यों कम्पित किया व सब लोकोंको क्यों व्याकुल किया हे देव ! यह निरर्थक कार्य्य नहीं है किन्तु इसका आप कारण बतावें १२५ यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि यह शब्द हमने तुम लोगोंके हितही के लिये किया है क्योंकि मुझकरके जो कमल फेंकागया है सो तुम लोगोंकी रक्षाहीकेलिये अब इसका कारण सुनो १२६ एक वज्रनाभ नाम असुर बालकों के जीवोंका हरनेवाला था जोकि रसातल में रहताथा १२७ वह दुराचार तुमलोगों का आना जानकर तपस्या में स्थित व सम्पूर्ण आयुध त्यागकिये हैं जिन्हों ने ऐसे इन्द्रसहित तुम सब देवताओं के मारनेके लिये कामना करता था १२८ इससे हमने जोरसे वह कमल पृथ्वीपर पटकदिया जिसके कारण वह मरगया व उसका राज्यभी सब नष्ट होगया १२९ अब इस समय इसलोकमें वेदपारगामी भक्त ब्राह्मणलोग सुन्दरगतिपावें दुर्गतिको न पावें १३० इसलिये उसदुष्ट को हमने मारडाला है नहीं तो हे देवताओ ! हम तो देवता, दैत्य, मनुष्य, उरग, राक्षस व सब प्राणी मात्रको समान समझते हैं क्योंकि सब हमारेही बनायेहुयेहैं १३१ परन्तु तुम लोगोंके हितकेलिये हमने इसपापीको मन्त्रसे मारडाला परन्तु इस कमलके दर्शनके कारण वह पुण्यवानों के लोकको गया १३२ व जिससे हमने इस स्थान पर पुष्कर अर्थात् कमल हाथसे फेंकाहै इससे पृथ्वीपर यह पवित्र व पुण्य को देनेवाला श्रेष्ठ स्थान पुष्कर तीर्थके नामसे प्रसिद्धहोगा १३३ व पृथ्वीपर सब प्राणियों को पुण्यदायकहोगा हे देवताओ ! भक्ति चाहनेवाले भक्तोंको हमने बड़ा अनुग्रह कियाहै जो ऐसातीर्थ बना दियाहै १३४ हे अनघ देवताओ ! इसवनमें नित्यवास करतेहुये व वृक्षोंसे पूजितहुये हमको बहुतकाल बीतगया १३५ अब तपस्याकरते तुमलोगों को बहुत ज्ञानप्रदर्शित किया इससे हे देवो ! इस ज्ञानको अपने व परायेलिये हृदयमें ग्रहणकियेरहो १३६ व नानाप्रकारकेरूप धारण करके पृथ्वी

पर सब ब्राह्मणोंको ज्ञान सिखाना वे लोग सबको सिखलाते रहेंगे व जो कोई पुरुष ज्ञानी ब्राह्मण के साथ पापबुद्धिसे वैर करता है १३७ वह सैकरों कोटि जन्मोंतक पापसे नहीं छूटता इससे वेद वेदाङ्गपारगन्ता ब्राह्मणको न कभी मारना चाहिये न दूषित करना चाहिये १३८ क्योंकि ऐसे एक ब्राह्मण के मारने से कोटि ब्राह्मणोंके मारने का दोष होताहै इसीप्रकार जो कोई वेदवेदाङ्गादि पढ़ेहुये एकब्राह्मणको श्रद्धासमेत भोजन कराता है १३९ उसको कोटिविप्रोंके भोजन करानेका फल मिलताहै इसमें कुछभी सन्देह नहींहै व जो कोई पात्रभरकर भिक्षा संन्यासियों को देताहै १४० वह सब पापोंसे छूटजाता है व दुर्गति को नहीं प्राप्त होता है व जैसे हम सब देवताओं में ज्येष्ठ व श्रेष्ठ होनेके कारण पितामह कहातेहैं १४१ ऐसेही ज्ञानी ममतारहित विरक्त ब्राह्मण सदा पूजनेके योग्य होताहै संसारबन्धनसे छूटनेकेलिये यह गुप्त ब्रह्मव्रत १४२ हमने कहा इसे जो कोई ब्राह्मण करता है वह फिर जन्म नहीं लेता मुक्त होताहै व जो कोई ब्राह्मण अग्निहोत्र करना ग्रहण करके फिर छोड़देता है वह अजितेन्द्रिय पुरुष १४३ यमदूतोंका लेगयाहुआ शीघ्र रौरव नरकको जाताहै जो पुरुष इसलोकमें आकर लोगों को देख २ कर आपभी क्षुद्र अर्थात् नीचकर्म्म करने लगता है १४४ व सरागचित्त व शृङ्गार करनेवाला व स्त्रीजन तथा धनही है प्रिय जिसके व जो कोई ब्राह्मण मीठीवस्तु अकेले आप खाताहै बैठेहुये अन्यलोगों को नहीं देता व खेती और वाणिज्य करता है १४५ व वेदको नहीं जानता है और वेदकी निन्दा करता है व पराई स्त्रीके संग भोगकरता है इत्यादि दोषोंसे जो पुरुष दुष्ट होजाता है उसके साथ बोलनेसे भी १४६ पुरुष नरकगामी होताहै व जो अच्छेव्रत नियम आचारोंका दूषण करता है वहभी नरक को जाताहै व असन्तुष्ट भिन्नचित्त दुष्टबुद्धि पापकारी ऐसेपुरुषों को १४७ छूना न चाहिये यदि स्पर्शही होजावे तो स्नान करने से शुद्ध होताहै इसप्रकार देवताओं से कहकर देवताओं सहित भगवान् ब्रह्माजी १४८ जैसा आगे कहेंगे उसतरह वहां क्षेत्रस्थापन करतेभये चन्द्रनदीके उत्तर

व सरस्वतीके पश्चिम १४९ नन्दनस्थान के पूर्व व कान्यपुष्कर के दक्षिण इतने बीचकी जितनी भूमिहै उसमें लोककर्त्ता ब्रह्माजीने यज्ञ करनेकी वेदी बनाई १५० उसमें प्रथम ज्येष्ठपुष्करनामसे प्रसिद्ध तीर्थ बनाया जोकि तीनों लोकोंको पवित्र करता है इसके ब्रह्माजी देवता हैं दूसरा मध्यमपुष्करतीर्थ बनाया इसके श्रीविष्णु देवताहैं १५१ तीसरा कनिष्ठपुष्करतीर्थ इसके रुद्र देवता हैं इसप्रकार ब्रह्माजीने तीनपुष्कर वहां पूर्व समयमें बनाये यह सबसे प्रथम का परमगुप्तक्षेत्र वेदोंमें पढ़ाजाता है १५२ इस पुष्करारण्यतीर्थ में ब्रह्माजी सदा टिकेरहते हैं स्वयं ब्रह्माजीने पृथ्वीके इसभागके ऊपर बड़ा अनुग्रह किया जो ऐसा तीर्थस्थापनकिया १५३ व इसे सब ब्राह्मणादि जितने पृथ्वी पर रहनेवाले मनुष्य पशुपक्ष्यादिहैं उनके ऊपर दयाकरके बनायाहै अन्यथा उनका कौन प्रयोजनथा ब्रह्माजीने सुवर्णकी सब वेदी बनाकर हीरे ऊपरसे जड़ादिये थे व नानाप्रकार से शोभित कियाथा जिसपर बैठकर लोकके पितामह ब्रह्माजी सदा रमित होतेहैं १५४।१५५ ब्रह्माके सिवाय श्रीविष्णुभगवान् व रुद्रभगवान् और वसु अश्विनीकुमार व मरुद्गण व इन्द्रादि सब देवगण उस वेदी पर सदा रमित रहते हैं १५६ यह इस तीर्थका माहात्म्य लोगोंके ऊपर अनुग्रह करके सत्य कहागया जोकि वेदोंके मन्त्रोंसे विधिपूर्वक बनाया गयाथा १५७ इस तीर्थ में बैठकर जो कोई ब्राह्मणलोग गुरुशुश्रूषा में रत होतेहुये वेदपाठ करते हैं वे सब इसतीर्थके अनुभावसे ब्रह्माजीके समीप बसते हैं १५८ इतनी कथा सुनकर भीष्म जीने पुलस्त्यजी से पूँछा कि हे भगवन्! ब्रह्मलोकके जानेकी इच्छा कियेहुये पुष्करक्षेत्रके वासी किस विधिसे उस पुष्करारण्य में वास करें १५९ क्या पुरुषही उसमें वासकरें व स्त्रियांभी व सब वर्णाश्रम के लोग निवासकरें व वहां रहनेवाले कैसा अनुष्ठान करें यह सब हमसे कहिये १६० पुलस्त्यजी बोले कि पुरुष स्त्री व सब वर्ण और सब आश्रम के लोगों को वहां रहना चाहिये पर सब अपने धर्म्म आचार सहित व दम्भमोहादि से रहित होकर वहां निवासकरें १६१ व कर्म्म मन वचन से सब ब्रह्माजीकी भक्ति करतेहुये जितेन्द्रिय रहें

निन्दा किसीकी न करें सब प्राणियों का हितकरें क्षुद्रता छोड़ें १६२ भीष्मजीने इतना सुनकर फिर पूँछा कि इस संसार में कौन कर्म्म करताहुआ पुरुष ब्रह्मभक्त कहाता है व मनुष्यों में कैसे मनुष्य ब्रह्म-भक्त समझे जाते हैं यह सब हमसे कहिये १६३ पुलस्त्यजी बोले कि मन वचन व काय से उत्पन्न तीनप्रकार की भक्ति कही गई है फिर लौकिकी, वैदिकी व आध्यात्मिकी के कारण तीनों तीन तीन प्रकारकी हैं १६४ उनमें जो भक्ति ध्यानकी धारणासे व बुद्धि पूर्व्वक वेदके अर्थों के स्मरण करने से उत्पन्न होती है वह मानसी भक्ति कहाती है यह ब्रह्माजीको बहुत प्रियहै १६५ व जो भक्ति वेद मन्त्रपढ़कर नमस्कार करने अग्निमें आहुतिदेने व श्राद्धादि करने व आवश्यक मन्त्र स्तोत्रादिकोंके जप पाठ करने से उत्पन्न होती है वह वाचिकी भक्ति कहाती है १६६ व जो भक्ति व्रत उपवास नियमोंसे व चित्तकी इन्द्रियों के जीतने व रोकने से कृच्छ्र शान्तपन तथा अन्य चान्द्रायणादि व्रतोंके करनेसे १६७ ब्रह्मकृच्छ्र उपवासों से व इसीप्रकार अन्य शुभ व्रतों के करने से होती है वह कायिकी भक्ति कहाती है यह तीन प्रकारकी भक्ति ब्राह्मणोंके करने के योग्य है १६८ और गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि, रत्नदीप, कुश, जल, चन्दनादि सुगन्धित वस्तु, पुष्पों की माला विविधप्रकार के सोने चांदी आदि धातुओंके भूषणपात्रादि देने १६९ घृत मिलाकर गुग्गुलकी धूपदेने कालागुरु, अगर आदि देने, सुवर्णादि की माला अँगूठी बहूँटादि धारण कराने १७० नाचने गाने बजाने सब रत्नोंकी सामग्री से पूजा करने भक्ष्य भोज्य अन्न व पान करनेके पदार्थोंसे पितामह ब्रह्माजी के लिये जो पूजा मनुष्यों करके कीजाती है वह ब्रह्माजी की लौकिकी भक्ति कहाती है इसप्रकार लौकिकी भक्ति कहीगई अब वैदिकी भक्ति कहते हैं जोकि वेदके मन्त्र पढ़ २ कर यज्ञ कियेजाते १७१ । १७२ अमावास्या व पौर्णमासी में अग्निहोत्र कियाजाता अच्छे २ पदार्थ ब्राह्मणों को दक्षिणामें दियेजाते पुरोडाशादि चरु क्रिया कीजातीं १७३ इष्टि, धृति, सोमपानआदि यज्ञ कर्म्म किये जाते ऋक्, यजु,सामवेदों के मन्त्र जंपेजाते व वेदोंकी संहिताओंका

पाठ कियाजाता व वेदाध्ययन करते १७४ ये सब कर्म्म ब्रह्माजीके लिये कियेजाते हैं उसीको वैदिकी भक्ति कहते हैं व जो अग्नि, भूमि, पवन, आकाश, जल, चन्द्रमा व सूर्य के लिये कुछ कर्म्म कियाजाता है उसके भी ब्रह्माजी देवताहैं हे राजन्! आध्यात्मिकी ब्रह्मभक्ति दो प्रकारकी होती है १७५।१७६ एक सांख्य शास्त्रके अनुसार दूसरी योगशास्त्र के अनुसार इनदोनों का विभाग हमसे सुनो बुद्धिआदि चौबीस तत्त्वहैं १७७ ये सब अचेतनहैं इससे सब भोग्यवस्तुहैं व पुरुष जोकि भोक्ताहै वह पच्चीसवां है यह पुरुष चेतन है इसी से भोगकरनेवाला है पर कर्म्म नहीं करता १७८ जो भोक्ता है आत्मा अर्थात् जीव वह अनित्य है व जो उसका प्रेरक अधिष्ठाता है वह अव्ययहै कभी घटता नहीं है वह सबका कारण पितामह है जोकि अव्यक्त व नित्यपुरुष कहाताहै १७९ तत्त्वसर्ग्ग भावसर्ग्ग व भूतसर्ग्ग ये सब तत्त्वसे उत्पन्न होते हैं संख्या परिसंख्या व प्रधान ये तीनों गुणमयहैं क्योंकि ये साधर्म्म्य व वैधर्म्म्यको पृथक् पृथक् जानकर गुणोंसे युक्त रहते हैं सो साधर्म्म्य तीनकी होती है एक प्रधान की दूसरी पुरुषकी तीसरी ईशकी वह ईश अजहै व नित्यहै पर जीव अनित्यहै व उत्पन्न होताहै प्रधान में साधर्म्म्य वैधर्म्म्य दोनों टिके रहते हैं क्योंकि उसमें कारणत्व ब्रह्मत्व व काम्यत्व तीनों टिके रहते हैं १८०।१८१ प्रधान प्रेरणाकरनेके योग्यहै इससे उसमें वैधर्म्म्य विद्यमान रहताहै व सब कहीं कर्त्तृता ब्रह्महीको है व पुरुषमें अकर्त्तृताहै क्योंकि विना ब्रह्मकी प्रेरणा के पुरुष कुछ भी नहीं करसक्ता है १८२ चेतनत्व प्रधान में भी है पर ब्रह्मही का कियाहुआ स्वतः नहीं इसीसे उसमें साधर्म्म्य भी है ये सब तत्त्व कार्य्यकारणादिके भेद से जो संख्याकी जाती है तो पच्चीस होतेहैं जैसे कि पृथ्वी, जल, तेज, वायु व आकाश पांच महाभूत व गन्ध, रस, रूप, स्पर्श व शब्द पांच उनके गुण पांच ज्ञान इन्द्रिय पांच कर्म्मइन्द्रिय मन, बुद्धि, अहंकार, जीव व ईश्वर यही पच्चीस तत्त्वहैं संख्याशब्द स्त्रीलिंगहै व संख्या अर्थात् तत्त्वोंकी गणना करनेही से इस शास्त्रका सांख्य नाम अर्थ चिन्तक विद्वानों करके कहाजाता है १८३। १८४ इसप्रकार तत्त्वों

का सम्भार व तत्त्वों की संख्या व ब्रह्मतत्त्व की अधिकता सुनकर पण्डितलोग तत्त्व जानते हैं १८५ व सांख्यशास्त्र बनानेवाले सज्जनोंने सम्पूर्ण आध्यात्मिकी भक्ति इसप्रकार से कही है अब ब्रह्माजी में योगशास्त्रके अनुसार भी जो आध्यात्मिकी भक्तोंकी भक्ति है उसको चित्तलगाकर सुनिये हम वर्णन करते हैं १८६ पुरुषको चाहिये कि अपनी इन्द्रियों को वशमें करके प्राणायाम में तत्पर होकर ध्यानवान्हो भिक्षासे जो कुछ प्राप्तहो उसी का खानेवाला व व्रती होताहुआ जितनी खाने पीने देखने सुनने व आनन्द प्राप्तकरनेकी इन्द्रियां हैं उनको उन विषयों से खींचकर अपने वशमें लावे १८७ इसप्रकार धारणाको हृदय में करके प्रजेश्वर ब्रह्माजीका ध्यान करे ध्यानमें ऐसीमूर्त्तिका स्मरणकरे जैसी कि आगेबताते हैं हृदयमें एक कमल है उसकी पखुड़ीपर बैठेहुये रक्तवस्त्र ओढ़े सुंदर नेत्रवाले १८८ चारोंओर देखतेहुये यज्ञोपवीत धारणकिये चारमुखवाले व चार भुजावाले व वरदान देने के लिये एक अभयकारी हाथ उठायेहुये ब्रह्माजी विराजते हैं १८९ बस यही योगसे उत्पन्न मानसीसिद्धि ब्रह्मभक्ति कहाती है जो इसप्रकारकी भक्ति करता है वह ब्रह्मभक्त कहाता है १९० हे राजेन्द्र! अब क्षेत्रवासी ब्राह्मणोंकी वृत्ति कहते हैं सुनिये जिसे एकसमय विष्णुआदि देवताओंके सम्मुखमें व और सबके निकटमें ब्रह्माजीने अपने आप सविस्तर कहाहै कि निर्म्ममं रहें अहंकार कभी न करें निस्संग रहें किसीकासंग न करें कुछ वस्तु संग्रह न करें १९१।१९२ अपने भाईबन्धुओंमें स्नेह न रक्खें मिट्टी के ढेले व लोहे तथा सुवर्णमें समस्नेह करें कर्म्मणा मनसा व वाचा तीनोंप्रकार से सबप्राणियोंका नित्य हित करें १९३ प्राणायामकरने में नित्यरत रहें व परमेश्वरके ध्यान में परायण संन्यासियोंके धर्म्म में परायण यजनशील व सदापवित्र रहनाचाहिये १९४ सांख्यशास्त्र व योगशास्त्रकी विधिको जानते रहें धर्म्मशास्त्र भी जानें जिस में किसी विषयमें सन्देह न रहे बस जो क्षेत्रवासी ब्राह्मण इस विधिसे परमेश्वर का यजन करते हैं १९५ पुष्करारण्य में मृतक होतेहुये उनके पुण्यका फल हमसे सुनिये वेलोग दुष्प्राप ब्रह्माजी की सायु-

ज्यमुक्ति पाते हैं जिसकी क्षय कभी नहीं होती १९६ जिसको प्राप्त होकर फिर वे मृत्युदायक जन्मको नहीं प्राप्तहोते हैं क्योंकि फिर लौट आनेको छोड़कर वेलोग ब्राह्मीविद्याको प्राप्त होजाते हैं १९७ क्योंकि पुनरावृत्ति तो अन्य प्रपंचाश्रम वासियोंकी होती है अब गृहस्थाश्रम की व्यवस्था बताते हैं जबतक ब्राह्मण गृहस्थाश्रम में रहे छः कर्म्म नित्य कियाकरे जैसे कि सदा तो होम करतारहे सो अच्छे प्रकार मन्त्रों का उच्चारण करके यह नहीं कि योंहीं अग्नि में उठाफेंके जो ब्राह्मण पढ़ना पढ़ाना यज्ञकरना यज्ञकराना दानदेना इनपांचों कर्मों को नित्य करताहै व आपत्कालमें दानभी लेलेता है उसको अधिक फल प्राप्तहोताहै व सब दुःखोंसे रहित होजाताहै १९८।१९९ और किसीलोकके जाने में उसकी गति नहीं रुकती चाहे जहां चलाजाताहै प्रातःकालके बालसूर्य्यकेसमान प्रकाशित सुतेजोवान् दिव्य ऐश्वर्य्य योगवाले व किसीकरके भी न निवारण करनेकेयोग्य ऐसे विमानपर स्त्रीसहित अच्छेप्रकार आरूढ़ होताहुआ व और भी हजारोंस्त्रियों करकेयुक्त स्वच्छन्द गमन करताहुआ अपने मनमाना सम्पूर्णलोकों में विचरताहै उसको देखकर और लोग इच्छा करते हैं कि क्या कहें हमने ऐसाकर्म्म न किया नहीं तो हमभी सर्वधर्मोत्तम व धनीहोकर ऐसे सुख भोगते २००।२०२ इसप्रकार बहुत दिनोंतक स्वर्ग्ग के सुखभोगकर जब वहांसे नीचे आता है तो उत्तम कुलमें जन्मलेकर रूपवान् व धर्म्मज्ञ व धर्म्मभक्त व सब विद्याओंके अर्थोंका पारगन्ता होताहै २०३ व जो ब्रह्मचर्य्याश्रम में बसकर ब्रह्मचर्य्य से रहकर गुरुकी शुश्रूषाकरताहै व वेदाध्ययनकरता व भिक्षासे जीविका करता व जितेन्द्रिय रहताहै २०४ नित्य सत्यव्रतमें युक्तरहता व अपने सब धर्म अच्छीतरह करता रहताहै तो सम्पूर्ण कर्मोंसे सम्बद्ध, सर्वकामा- वलम्बी २०५ व सूर्यकीतरह प्रकाशित दूसरे विमानपर चढ़ा किसी करकेभी न निवारितहुआ गुह्यकनामके जो ब्रह्मारण्यगण परमसम्मत हैं २०६ कैसे हैं कि अप्रमेय बल व ऐश्वर्यवाले व देव दानवों करके पूजित उनकी तुल्यता को वह उनके तुल्य ऐश्वर्ययुक्तवाला पुरुष प्राप्तहोताहै २०७ देवता दानव व मनुष्य कोई भी उससे विरोधनहीं

करसक्ता है कोटि सहस्रोंवर्षों तक व सैकड़ों कोटि वर्षोंतक २०८ इसप्रकारके ऐश्वर्यसंयुक्त होताहुआ विष्णुलोकमें पूजितहोताहै तथा ऐसीविभूतियुक्त वह पुरुष वहां वासकरके जब फिर च्युतहोताहै २०९ तो विष्णुलोकसे अपने कृत्योंकरके स्वर्गस्थान अर्थात् उत्तम स्थानों बिषे जन्मलेताहै २१० अथवा जो पुष्करारण्यमें जाकर ब्रह्मचर्य्याश्रममें टिककर वेदोंके अभ्यासकरके युक्त होताहुआ वासकरताहै तो जब मरता है २११ तब वह मृतक पुरुष अपने तेजसे पूर्णचन्द्रमा के समान प्रकाशित दिव्य विमानपर चढ़कर चन्द्रमाकी तरह सर्व प्रियदर्शन होताहुआ गमन करता है २१२ व रुद्रलोकको जाकर गुह्यकोंकेसंग सुख भोगता है व सब जगत्के बड़े २ ऐश्वर्य्योंको प्रभु होताहुआ वह प्राप्तहोता है २१३ व सहस्रयुगतक भोगकरके रुद्रलोकमें पूजित होताहै फिर जब उस रुद्रलोक से क्रमपूर्वक नीचे च्युत होताहै तो वहां नित्य प्रमुदित होताहुआ अनामय सुख को भोगकरके द्विजोंके दिव्यमन्दिर व श्रेष्ठकुल में जन्मलेताहै २१४। २१५ मनुष्योंमें वह पुरुष धर्म्मात्मा सुन्दर रूपवान् व महापण्डित बृहस्पतिके समान होताहै व स्त्रियोंका स्पृहणीय वपु होताहै अर्थात् उसकारूप देखकर सबस्त्रियां चाहती हैं कि यह हमारापतिहोता तो अच्छा होता व महाभोग पति व बली होताहै इस प्रकार ब्रह्मचारी के लक्षण कहे २१६ व जो पुरुष ब्रह्मचर्य्याश्रम से वानप्रस्थाश्रम को जाताहै उसको चाहिये कि जो अन्न ग्रामों में होते हैं उनका भक्षण न करे ऐसा करनेवाले की गति सर्वलोकों बिषे किसी करकेभी नहीं रोकी जासक्ती है २१७ व वृक्षों के सूखेपत्ते, फल, फूल, मूल, जल खापीकर रहे सो भी जो कहीं से आजाय कोई अपने आप देजावे २१८ अपनी जीविका का कुछ उपाय अपने आप न करे चीर वल्कलादि धारणकरे वस्त्रादिक कोई देभीजाय तोभी न पहिने सदा जटारखायेरहै त्रिकालस्नान नदी तड़ागादि में करता रहै दोषकभी न करे दण्डकमण्डलु सदाधारण कियेरहै २१९ कृच्छ्र चान्द्रायणादि सब व्रतकरता है जो वह श्वपचहो चाहे और कोईहो व जाड़ेके दिनोंमें रात्रिको जलके भीतररहे ग्रीष्मकाल में पञ्चाग्नितापे वर्षा-

कालमें बिनाछाये स्थान में रहकर सबवर्षा का जल अपने शिरपर ले २२० कीड़ों, कांटों वा पत्थरों को भूमिपर शयनकरे जबतक बैठकर कुछभजन स्मरणादिकरे तो दृढ़व्रतहोता हुआ वीरासनही से बैठे २२१ वनकेअन्न तिनी पसाढ़ी आदि भोजनकरे सब प्राणियों को कुछ भय न पहुँचावे नित्यधर्म्मही इकट्ठा करनेमें निरतरहै क्रोध व सबइन्द्रियोंको जीतेरहै २२२ ब्रह्माकी भक्तिसे युक्त क्षेत्रवासी पुष्करतीर्थमें मुनिहोकर बसे संग किसीका न करे किंतु आत्मारामरहै किसी से किसी वस्तुकी चाहना न करे २२३ हे भीष्म! जो इस प्रकार पुष्कर में बसताहै उसकी जो गति होती है सुनो तरुणसूर्य्य के समान प्रकाशित वेदीके स्तम्भके समान शोभित २२४ स्वच्छन्दगमन विमानपर चढ़कर ब्रह्मभक्ति करताहुआ यथेष्टलोकों को जाताहै आकाश में दूसरे चन्द्रमाके समान विराजमान होताहै २२५ वहां गाने बजाने नाचने में तत्पर गंधर्व्व व अप्सराओं से सेवित होकर सैकड़ों कोटिवर्ष पर्य्यन्त वह बसताहै २२६ फिर जिस किसी देवताके लोकमें जायाचाहताहै चलाजाताहै कोई उसे रोकता नहीं है ब्रह्माजीके अनुग्रहहीसे सबकहीं विराजमान होताहै २२७ ब्रह्मलोक से भ्रष्टहोकर फिर वह विष्णुलोकको जाताहै व विष्णुलोकसे पतित होनेपर रुद्रलोकको जाताहै २२८ वहांसेभी च्युतहोनेसे अन्यद्वीपों में वह निश्चयकरके प्राप्तहोताहै व नानाप्रकारके यथेप्सितभोग भोगकरके फिर और और स्वर्गोंमें जाकर प्राप्तहोताहै २२९ तदनन्तर तिनमें ऐश्वर्य्य भोगकरके फिर मर्त्यलोक में उत्पन्न होताहै सो कितो राजा होताहै वा राजपुत्र होताहै व धनवान् सुखी होताहै २३० अति रूपवान् मनोहर कीर्त्तिमान् व भक्तिमान्होताहै आश्रमोंके धर्म्मकहे अब वर्णोंके धर्म्म मिलेहुये सुनो ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र क्षेत्रवासी होतेहुये २३१ हे राजन्! अपने २ धर्म्मों में निरत व चिरजीवी होकर सदाचारमें निष्ठरहते हैं व सबप्रकार ब्रह्माजी के भक्तहोकर सबप्राणियोंकेऊपर दयाकरतेहैं २३२ व महाक्षेत्र पुष्करतीर्थ में जे मुक्तिकी इच्छासे बसते हैं वे लोग मरनेपर शोभन विमानोंपरचढ़कर ब्रह्मलोक को जातेहैं २३३ उनकेसंग अप्सरा नाचती जाती हैं गन्धर्व्व गाते

हुये चलेजाते हैं अथवा जो पुरुष श्रद्धाकार बरतेहुये अग्निमें अपने शरीरको होमकरदेता है २३४ वह ब्रह्मध्यायी प्राणी बड़ापराक्रमी होकर ब्रह्मलोकको जाता है व सब ऐश्वर्य्य विभवादि सहित अक्षय ब्रह्मलोक उसको सदाकेलिये रहताहै २३५ जोकि सबलोकों में उत्तम रमणीय व सब इष्टार्थोंका साधक है इसी प्रकार जो लोग महापुण्यदायक पुष्करतीर्थ के जलमें डूबकर अपने प्राण छोड़ते हैं २३६ हे भीष्म! उन महात्माओंकोभी अक्षय ब्रह्मलोक मिलताहै व वे लोग सब विष्णु रुद्रादि देवताओं से युक्त सब दुःखों के नाशक साक्षात् देवदेव ब्रह्माजीके दर्शन करते हैं व जो कोई शूद्र पुरुष उपासकरके पुष्करवनमें मरते हैं २३७।२३८ व हंसयुक्त सूर्य्येकेसमान प्रकाशित नानाप्रकारके रत्नों व सुवर्णों से दृढ़बनेहुये चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओंसे लिपे हुये उपमारहित गुणवाले अप्सराओंके गानेके शब्दों से भरेहुये पताका ध्वजादिकों से शोभित नानाप्रकारके घण्टाओं से निनादित बहुत आश्चर्य्ययुक्त क्रीड़ा करने के स्थानोंसेयुक्त सुन्दर प्रभावाले व गुणसम्पन्न व मयूर वरवाही विमानोंपर चढ़कर ब्रह्मलोक को जातेहैं २३९।२४१ उपास करके मृतकहुये धीर मनुष्य ब्रह्मलोक में रमण करते हैं व तहां बहुत दिनोंतक वासकरके व नानाप्रकार के यथेप्सित भोगोंको भोग करके २४२ फिर मर्त्यलोकमें धनवान् व भोगीहोकर ब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न होताहै व जो कोई मनुष्य पुष्करतीर्थ में वासकरके केवल बिनऊकण्डे खाकर रहताहै २४३ वह अन्य सबलोकों को छोड़ सीधे ब्रह्मलोकको जाताहै व वहां कल्पक्षय पर्य्यन्त वासकरता है २४४ फिर कभी अपने कर्म्मोंसे क्लेशित मर्त्यलोक को देखताही नहीं व वहांसे ऊपर व तिरछी उसकी गति रहती है केवल नीचे आनेकी नहीं २४५ व वह सबलोकों में अपनायश फैलाताहुआ पूजित होताहै व सदाचारविधि में प्रज्ञ व वशी व सब इन्द्रियों से मनोहर होताहै २४६ नाचना गाना बजाना जानने वाला व सुन्दर ऐश्वर्य युक्त व सबको उसका दर्शन प्रिय लगताहै जो पुष्प वह धारण करता है सदा तुरन्तकेसे तोड़े बनेरहते कभी कुँभिलाते नहीं हैं व दिव्यभूषणों से सदा भूषित रहताहै २४७

देहकारंग नीलकमल के दल के रंगका होताहै बाल घुँघुवारे व नील रंगके रहते हैं ऐसे उस पुरुषको उत्तम व सुन्दर कटिभागवाली व सब सौभाग्य सहित २४८ व सब ऐश्वर्य्य गुणयुक्त युवावस्था से अतिगर्व्वित वहांकीस्त्रियां अपनेसंग लपटकर शयनकरातीं व क्रीड़ा कराती हैं २४९ जब वीणा बाँसुड़ी आदि बाजे बजाये जातेहैं तब शयनसे उठताहै इसप्रकार ऐसे महोत्सवके सुख भोगताहै जो अ-जितेन्द्रियों को सर्व्वथा दुर्ल्लभहैं २५० ये सब पदार्त्थ उसको सदा शुभकरने वाले ब्रह्माजीके प्रसादसे मिलते हैं इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने पूछा कि आचार परमधर्म्म है इससे जो लोग क्षेत्रधर्म में परायण हैं २५१ व अपने धर्म्म व आचारमें निरंतरहते हैं व क्रोध और इन्द्रियों को जीतते हैं वे लोग ब्रह्मलोक को जाते हैं यहकोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है ऐसा हमारा मत है २५२ व इसी प्रकार अन्य २ लोकों कोभी ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्यजाते हैं इसमें सन्देह नहीं है पर विना पुष्करतीर्त्थ में उपवासकरने से व विना नियमादि करने से २५३ स्त्रियां, म्लेच्छ, शूद्र, पक्षी, पशु, मृगगण, गूंगे, जड़, अन्धे, बहिरे, तप व नियमसे रहित ऐसे जीव २५४ जो पुष्करती-र्त्थ में रहते हैं हे ब्राह्मण देव! उनकी गति बताइये कैसे होती है पु-लस्त्यजी बोले कि हे भीष्म! पुष्करतीर्त्थ में जो कोई मरते हैं वे सब दिव्यरूप शरीर धारणकर ब्रह्मलोक को सूर्य्यवत् प्रकाशित विमानों पर चढ़कर जातेहैं २५५ । २५६ वे विमान दिव्य वस्तुओं के समू-होंसे शोभित सुवर्णके बड़े २ पताका ध्वजों से युक्त व सुवर्ण और हीरों से जटित सीढ़ी व मणियों से जटित खम्भों से विभूषित २५७ सब इष्ट भोगकरनेकी वस्तुओं से युक्त सब कामशास्त्रकी सामग्रियों से भरेपुरे कामचारी होने से सब कहीं चलेजाने वाले नानाप्रकार के रसों से युक्त व सहस्रों स्त्रियों से भरेहुये होते हैं २५८ उन्हींपर चढ़कर महात्मालोग ब्रह्मलोक व अन्य जिसको जो लोक वाञ्छित होते हैं उनको जाते हैं जबकभी ब्रह्मलोक से च्युत होते हैं तो क्रमसे इन सातोंद्वीपों में आते हैं २५९ यहां किसी बड़ेभारीकुल में उत्पन्न होकर बड़ेभारी धनी ब्राह्मण होते हैं ऐसेही तिर्य्यग्योनि को प्राप्त

जो पशु पक्षी कीटपतंग च्यूंटी आदि स्थलचारी वा जलचारी स्वेदज, अण्डज, उद्भिज, जरायुजादि जीव चाहे सकामहों वा अकाम जैसेही पुष्करतीर्थ में मरते हैं २६० । २६१ वे सूर्य के समान चमकतेहुये विमानोंपर चढ़कर ब्रह्मलोक को जाते हैं इस महाघोर कलियुग में सबप्रजा बड़े २ पापों से युक्त होती हैं २६२ उनको और किसी उपायसे धर्म्म व स्वर्ग्ग नहीं मिलताहै केवल जो ब्रह्मार्चन में निरत होकर पुष्करतीर्थ में बसते हैं २६३ कलियुग में वहीलोग कृतार्थ होते हैं और निरर्थक लोग क्लेश पाते हैं पुरुषपांचों इन्द्रियों से रात्रि में कर्म्म, मन, वचन व कामक्रोधके वशीभूतहोकर जो पापकरते हैं वे प्रातःकाल पुष्करतीर्थ के जलमें जैसेही स्नानकरके ब्रह्माजी के २६४ । २६५ सम्मुख जाकर खड़े होते हैं तुरन्त पवित्र होकर सब पापों से छूटजाते हैं फिर सूर्य्योदय से लेकर मध्याह्न तक जो पाप करते हैं २६६ जैसेही दोपहरके समय ब्रह्मचर्य्यके साथ ब्रह्माजीको देखकर हृदयमें स्मरणकरते हैं वैसेही सब पापों से छूटजाते हैं २६७ फिर मध्याह्नसे सायंकाल तक इन्द्रियों से जो पाप करते हैं जैसेही पितामहजी के दर्शन सन्ध्यामेंकिये कि वैसेही सब पापोंसे छूटजाते हैं २६८ पुष्करमें जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध इन सब विषयोंको भोगता व कामनापूर्वक तपस्या में स्थित ब्रह्मभक्त होता हुआ ब-सताहै २६९ व पुष्करमें जो स्वादयुक्त मिष्टान्न भोजनकरते हैं अ-थवा तीनोंकाल भोजन करतेहैं वा पवनपीकर रहते हैं सब समान समझेजाते हैं २७० इस प्रकार जिसी किसी प्रकारसे जो पुण्यात्मा पुरुष पुष्करतीर्थ में बसते हैं वे इस तीर्थ के प्रभावसे नाना प्रकार के बड़ेभोग पाते हैं २७१ जैसे समुद्रके तुल्य और कोई जलाशय नहीं गिनाजाता है ऐसेही पुष्करके समान दूसरातीर्थ नहीं है २७२ इससे पुष्करारण्यकेसमान वा गुणोंसे अधिक कोई तीर्थ नहींहै अब हम और देवताओं को गिनाते हैं जो कि पुष्कर में सदा टिके रहते हैं २७३ विष्णुकेसहित सब इन्द्रादि देवता, गणेश, षडानन, चन्द्र-मा, सूर्य्य २७४ शिवदूतीदेवी, कन्या क्षेमंकरी ये सब तपस्या नियम सुन्दर क्रिया पूजनादि करने से उसतीर्थ को भूषितकरते हैं २७५

क्योंकि अन्यतीर्थों में बड़े २ व्रत उपवासकर्म करके जो रहता है व ज्येष्ठपुष्करतीर्थ में ऐसेही विना उद्यमका बैठारहता २७६ परन्तु इस पुष्कर में जो द्विज सदा रहताही है वह सबकामनाओं को बैठे ही बैठे प्राप्तहोताहै और वह पितामहके समान परमअव्यय स्थान को प्राप्तहोताहै २७७ हे भीष्म! इस तीर्थमें तीर्थवासियों को सत्य-युगमें बारहवर्ष वासकरने से जो फल मिलता था त्रेता में वही एक वर्षमें द्वापरमें एकमास में व कलिमें वहीफल एकदिनरात्रि में मि-लजाताहै व यह बात देवदेव ब्रह्माजी ने हमसे पूर्वसमय में कहीथी कि २७८। २७९ इससे परतर और कोई तीर्थ भूतलपर नहीं है इससे सब प्रयत्नों से इसतीर्थ में वासकरना चाहिये २८० चाहे गृहस्थहो वा ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, व संन्यासी कोई हो जैसा जिसके आश्रमका धर्म्म है वैसाकरतेहुये सब परमगति पाते हैं २८१ जो कोई एक आश्रममें भी स्थितहोकर विधिपूर्वक अपने आश्रम का धर्म्म निष्काम व द्वेष त्यागकरके करता है वह ब्रह्मलोक में जाकर पूजितहोता है २८२ इनचारों आश्रमों की ब्रह्माजी ने चारडण्डों की सिढ़ी बनाई है इससे इसपर चढ़कर लोग ब्रह्मलोकमें पहुँचकर पूजितहोतेहैं अर्थात् सब देवता गंधर्व्वादि उनकी सेवाकरतेहैं २८३ आयुर्दाय के चतुर्थांश पर्यन्त किसीकी निन्दा न करताहुआ व ध-र्मार्थमें कोविद होता हुआ ब्रह्मचारी गुरुमें व गुरुके पुत्रमें वासकरे २८४ व धर्म्मयुक्त होकर ढिठाईआदि दोष छोड़कर गुरुसे वेदशा-स्त्र पुराणादि पढ़ने चाहिये व दक्षिणाओंका देनेवाला होवे व गुरुजी के बुलानेपर शीघ्र गुरुके समीप जावे २८५ व जबतक गुरुके यहां रहे सदा गुरुसे पीछे सोवे व पहिले उठे सेवा आदि जो २ कार्य्य शिष्यको करने चाहियें वह सब करके तदनन्तर गुरुकेसमीप बैठे व गुरुका सदा किंकर बनारहे ऊँची नीची सब प्रकारकी सेवाकरतारहे व सबकामों विचारवान् रहे २८६। २८७ पवित्र सब गुणयुक्त क्रिया करने में कुशल रहे व गुरुका इच्छित उत्तर बोले जितेन्द्रिय सदा रहकर सावधान होताहुआ गुरुकामुख देखतारहे कि अब क्या आज्ञा होतीहै २८८ विनागुरुके भोजन किये आप कभी न भोजनकरे न

विना गुरूके पिये जलादि पिये जबतक गुरू न बैठें आप न बैठे न विना गुरुके शयनकिये आप शयनकरे २८९ उत्ताने हाथोंसे गुरुके चरण कोमलतासे स्पर्शकर उसमें दहिने हाथ से दहिना चरण व बायें से बावां २९० जब गुरुसे कुछ कहनाहो तो प्रथम प्रणामकरके फिर आप अपने नामको कहता हुआ शब्दका उच्चारण करे तुम आदि शब्द कभी न कहे जब कुछ कामकर आवे तो कहे हे भगवन्! यह कार्य्य कर आया व यह फिर करूंगा इसरीतिसे विनागुरुकी आज्ञा कुछभी कार्य्य न करे २९१ इसप्रकार गुरुसे विद्यापढ़े व जो भिक्षादि धनपावे गुरुके निवेदनकरे व अपनेको जो करनाहै करतारहे और कियाहुआ सब गुरुसे कहनाचाहिये भूले कभी न २९२ ब्रह्मचारीको चाहिये कि सुगन्धित पुष्प तैलादि व घृत दुग्धादिरस न धारण भोजनकरे ब्रह्मचर्य्याश्रमधर्म समाप्तकरके इनको सेवनकरे यह धर्म शास्त्रोंमें निश्चय कियागयाहै २९३ व जो नियम ब्रह्मचारीके लिये विस्तारसहित कहे गये हैं उन सबको तब तक ग्रहणकरे जब तक कि गुरुके यहां पढ़े २९४ इसप्रकार अपने बलके अनुसार गुरुकी प्रसन्नताकेलिये उपकारादि करके पढ़होनेके पीछे भी जब तक ब्रह्मचर्य्यरहे ग्राममें न बसे किंतु वनादिमेंही रहे २९५ व जब तक द्विज पढ़े चाहिये कि पूरावेद पढ़े नहीं तो आधा न होसके तो चौथाई नहीं तो होसके तो चारोवेदपढ़े पढ़नेके समय सदाभिक्षाका अन्न भक्षणकरे व भूमिमें शयनकरे खट्वा आदिपर नहीं व गुरुमुख से पढ़जानेके पीछे २९६ वेद व्रतोपयोगी होताहुआ अपनी शक्तिके अनुसार गुरुको दक्षिणादे पर जहांतक होसके जितनी विद्यापढ़ी है उसके अनुसारहो इस प्रकार दक्षिणा देकर गुरुकी आज्ञालेकर यथाविधि धर्मयुक्त स्त्रीके साथ विवाह करके अग्निहोत्र करनेका प्रारम्भकरे ब्रह्मचर्य्य से आयुर्दायके दूसरे भाग पर्यन्त गृहमेधी होताहुआ आचरणकरे २९७ । २९८ मुनियों करके गृहस्थों की चार जीविका कहीगई हैं एक कुसूलधान्या दूसरी कुम्भीधान्या २९९ तीसरी अश्वस्तनी चौथीकापोती उन में पहिली से दूसरी दूसरी से तीसरी तीसरी से चौथी जीविका श्रेष्ठहै धर्म से अतिशय करके लोक जीतनेवाली हैं ३०० पहिली जीविका पढ़ना

पढ़ाना यज्ञकरना कराना दानदेना व लेना इन ६ कर्म्मों के नित्य करने से होतीहै दूसरी पढ़ने यज्ञकरने व दानदेने से होतीहै तीसरी दानदेने व यज्ञकरने से चौथी केवल दानदेने से सिद्ध होतीहै इनमें ब्राह्मणको तो नित्य ६ कर्म्म करने चाहियें व क्षत्रिय को पढ़ना यज्ञ करना व दानदेना ये तीन वैश्यको दानदेना व यज्ञकरना दो व शूद्र की केवल दानदेना एकही कर्म्म नित्यकरना चाहिये ३०१ अब गृहस्थोंका सबसे उत्तम पवित्रधर्म्म बताते हैं गृहस्थको चाहिये कि केवल अपनेही अर्थ न अन्न पकावे किंतु उसमें देवता अग्नि अतिथिको भी दे तो भोजनकरे व वृथा किसी जीवकी हत्या न करे ३०२ क्योंकि जैसेही उसको अपने प्राणप्रिय होतेहैं ऐसेही दूसरेके भी प्रियहोते फिर अपने लिये क्यों दूसरे के प्राणले गृहस्थको चाहिये कि दिनमें कभी न सोवे व न प्रातःकाल व सायंकाल की सन्ध्याओं में ३०३ न कुसमय में भोजनकरे न कभी झूंठ बोले व कभी किसी के यहां बिनाआदर सत्कारहुये भोजन व वास न करे ३०४ व अपने गृहमें नित्य हव्य कव्यादिकों से अतिथि व पितरों की पूजा करता रहै क्योंकि जो ब्राह्मण वेदविद्या पढ़ने व व्रत करने में तत्पर व श्रोत्रिय व वेदपारगहैं ३०५ व अपनेही ब्राह्मणोंकेही कर्म्मों से जीविका करते हैं व इन्द्रियों को दमन जिन्होंने कियाहै व सदा कर्म्म क्रिया करनेवाले व तपस्वी हैं उन्हींकी पूजा के लिये हव्य कव्यादि पदार्थ बनाये जातेहैं जो देवताओंके लिये खीर आदि होते हैं उन्हें हव्य व जो पितरोंके लिये होते हैं उन्हे कव्य कहते हैं ३०६ जो नाशवान् पदार्थों से संप्रयुक्तहो उसे व जो अपने कर्म्म धर्म्म से हीन होगयाहै वा जिसने अग्निहोत्र करना ग्रहण करके फिर छोड़दिया है वा जो अपने गुरुकी निन्दा करता है ३०७ व जो झूंठ बोलने वाला है उनको हव्य कव्य कुछ न देना चाहिये इनको छोड़ अन्य सब प्राणियों को ऊपरवालों को देना चाहिये ३०८ व गृहस्थ को यह भी चाहिये कि जो कोई भूंखा प्राणी मांगे उसको भोजनमात्र देदे व आप नित्य विघसाशी रहे व उत्तम पदार्थ प्रतिदिन भोजन करे व करावे क्योंकि वह अमृततुल्य भोजनहै ३०९ व यज्ञसे बचा

हुआ खीरके समान अन्न अमृत के तुल्य भोजन है व जो सब को देकर आप पीछे भोजन करता है उसे विघसाशी कहतेहैं ३१० जो केवल अपनीही स्त्रीके संग भोगकरता है उसीको दान्त जितेन्द्रिय व दक्ष कहतेहैं ऋत्विक्, पुरोहित, गुरु, मामा, अतिथि ३११ वृद्ध, बाल, रोगी, पण्डित, वैद्य, जातिके लोग, सम्बन्धी, बन्धुजन, माता, पिता, दामाद, भाई, पुत्र, भार्य्या ३१२ कन्या, दासी, दास इन सबों से कभी विवाद न करे न करावे जो कोई इनसे विवाद नहीं करता है वह सब पापोंसे छूटजाता है ३१३ व जो इनसे हारारहताहै वह तीनोंलोकों को जीतता है इसमें कुछभी संशय नहीं है आचार्य ब्रह्माकी मूर्त्तिहै पिता प्रजापतिकी मूर्त्तिहै ३१४ अतिथि सबलोकोंका स्वामी होताहै व ऋत्विक् वेदोंका स्वामी कन्याका पति अप्सराओं के लोकका स्वामी व जातिकेलोग विश्वेदेवोंके समान होते हैं ३१५ सम्बन्धी व बन्धुवर्ग्ग सब दिशाओं के स्वामी होते हैं माता व मामा पृथ्वी भरके स्वामी व वृद्ध, बाल व रोगी ये आकाशके स्वामी होते हैं ३१६ पुरोहित ऋषिलोक का ईश होताहै दासी दासादि आश्रयी लोग साध्यलोकके स्वामी होते हैं वैद्य अश्विनीकुमार के लोककापति होता है व भाई वसुलोक का स्वामी होता है ३१७ भार्य्या चन्द्रलोक की स्वामिनी होती है कन्या अप्सराओं के लोककी स्वामिनी व ज्येष्ठभाई पिताके समान होताहै भार्य्या व पुत्र अपना शरीरही होते हैं ३१८ कायस्थ व दासवर्ग्ग व कन्या ये परमकृपण अर्थात् दीनोंके तुल्य होते हैं इससे ये जो अपना अनादरकरें तो सहलेना चाहिये सन्तप्त न होनाचाहिये ३१९ जो गृहकर्म्म में रत विद्वान् धर्मनिष्ठ पुरुष ऐसा करता है उसे किसी कामके करने में ग्लानि नहीं होती है गृहस्थको बहुतसे कर्म्मोंका आरम्भ एकही संग न करदेना चाहिये वरन धर्म्मवान् को चाहिये कि जिसकर्म्म में आरम्भकरे उसे पूर्ण करके फिर दूसरे में आरम्भकरे ३२० गृहस्थकी तीनवृत्तियांहैं उनमें सबसे पीछेवाली कल्याण करनेवाली होती है ऐसेही चारों आश्रमों की भी तीन २ वृत्तियां होती हैं व पीछे २ वाली कल्याणदायिनी होती हैं ३२१ गृहस्थों के जो नि-

यम कहेगये हैं वे संपूर्ण भूषित होने की इच्छावाले पुरुषकरके क-रने योग्यहैं ब्राह्मणों की तीनवृत्तियां ये हैं एक कुम्भधान्या जिस में एक घड़ेभरसे अधिक अन्न घर में नहीं होता दूसरी उञ्छशिला जिस में खेतों में किसानसे बचीहुई बालियां बीनआती हैं तीसरी कापोतीवृत्ति इस में स्थानपर बैठे २ जो मिलजाता है उसका ग्रहण कियाजाता है ३२२ जिसके राज्यमें ऐसे ब्राह्मण बसते हैं वह राज्य बढ़ता है व करनेवाले तो अपने दश पहिले के पुरुषोंको व दश पीछेवालोंको व अपनेको सब इक्कीस पुरुषोंको तारते हैं ३२३ जो गृहस्थ गतव्यथ होताहुआ अपनीवृत्तिपर टिकारहता है वह चक्रवर्त्ती राजाओं के समान गतिको प्राप्त होता है ३२४ व जितेन्द्रिय पुरुषों को भी यहीगति मिलती है व गृहस्थों को स्वर्गलोक मिलता है व नियतात्माओंको यहां वहां सर्व्वत्र प्रतिष्ठा मिलती है ३२५ ब्रह्माजी करके यह वृत्तिरूपी श्रेणी कही गईहै जो पुरुष इस से छूटजाता है क्रमपूर्वक दूसरीवृत्तिको प्राप्तहोकर अन्तको स्वर्गलोक में पूजित होता है ब्रह्मचारी व गृहीके धर्म्म कहे ३२६ अब तीसरे वानप्रस्थाश्रम के धर्म कहते हैं सुनो गृहस्थ जब देखे कि अब हम वृद्धहुये वृद्धता के वलीपलितादि धर्म्म सब आगये ३२७ व हमारे पुत्रोंकेभी पुत्र होगये तो आप वनको चलाजावे हे भीष्म! गृहस्थों के व्रतोंसे खिन्नहोकर वानप्रस्थाश्रम के व्रत में गयेहुये व सर्वलोकाश्रयात्मा वाले व दीक्षापूर्वक गृहस्थाश्रम के सबकर्म्म अ-च्छीतरह कर कराकर स्त्री, पुत्र, बन्धुवर्गों का अच्छेप्रकार पालन पोषण करके निवृत्तहुये व पुण्यदेश निवासी व बुद्धिबल युक्त व स-त्य, शौच, क्षमादि गुणोंवाले पुरुषोंके नियम व लोक सुनो तुम्हारा कल्याणहो जब आयुर्दाय का तीसराभाग शेषरहे तो वानप्रस्था-श्रम में बसताहुआ ३२८ । ३३० अग्निहोत्रादि करे व देवताओं का यजमान बनारहे सब बातों का नियमकरे व आहार भी अप्र-माण बहुत न करे श्रीविष्णुभगवान् की भक्ति में परायणरहे ३३१ केवल अग्निहोत्रमात्र यज्ञकरे जो अन्न विना जोतेबोये तिनी पसा-दीआदि होते हैं उनको लेकर देवता अतिथि आदिकों का भागल-

गाकर फिर आप भोजनकरे ३३२ ग्रीष्मऋतु में अग्निमें उसी की खीर बनाकर आहुतिदे इसीप्रकार और भी पांचों ऋतुओंमें करता रहे वानप्रस्थाश्रममें ये चार प्रकारकी वृत्तियां हैं ३३३ कोई २ वानप्रस्थाश्रमी तो तुरन्त जो पदार्थ आगया उसको भोजन करलेतेहैं व कोई २ एकमास के लिये इकट्ठा करलेते हैं कोई २ वर्षभरके लिये व कोई २ बारहवर्ष के लिये ३३४ अतिथि पूजार्थ व यज्ञ तन्त्रार्थ इकट्ठा करते हैं वे वर्षाकालमें केवल अभ्रावकाश रहते हैं व हेमन्त ऋतु में जलके भीतर रहते हैं ३३५ व ग्रीष्ममें पंचाग्नि तापते हैं व शरत्कालमें अमृततुल्य भोजन करतेहैं कोई २ तो भूमिपर रहते हैं व कोई २ वृक्षोंपरही स्थित होते हैं ३३६ व कोई २ स्थानमात्र आसनपर स्थित होते हैं व कोई २ वस्त्रोंविषे संस्थित होतेहैं कोई२ पीसाकूटा अन्न नहीं खाते केवल दांतोंसेही चाब लेते हैं कोई २ पत्थरसे कूटकर फिर फंकीमारलेते हैं ३३७ कोई २ शुक्लपक्षमें यव का आटा कुछ गुड़ मिलाकर घोरतेहैं वही पीकर रहजातेहैं कोई२ कृष्णपक्ष में पीते हैं व कोई जो मिलजाय उसी को भोजन करते हैं ३३८ सो भी कोई मूलही खाते कोई फल कोई जलमात्र ही पान करके रहजाते हैं इस प्रकार दृढ़व्रत होते हुये यथान्याय वैखानसों के व्रतका बर्त्ताव बर्त्तते हैं ३३९ इनको आदिकरके और भी बहुत सी दीक्षा तिन मनस्वियों की हैं उपनिषद् धर्मयुक्त चौथा आश्रम यतियोंका है वह साधारण है क्योंकि उस में तो सर्वकर्म्मादिकों का न्यासही होता है इसी से संन्यास कहाता है ३४० वानप्रस्थ व गृहस्थाश्रम कुछ २ एकमें मिलते हैं क्योंकि गृहस्थ अन्नसे अभ्यागतादिकों की पूजा अग्निहोत्रादि करते हैं व वानप्रस्थ वन्य कन्द मूल फलादिकों से परन्तु हे तात! कलियुगमें ऐसे नियम संयम बहुतकम निबहते हैं नहीं तो और युगों में तो सब ऐसेही ब्राह्मण होतेथे ३४१ अगस्त्य, कश्यपादि सप्तर्षिलोग, मधुच्छन्द, गवेषण, सांकृति, सद्दिव, भाण्डि, यवप्राथ, अथर्वण ३४२ अहोवीर्य तथा काम्य, स्थाणु, मेधातिथि, बुध, मनोवाक, शिनीवाक, शून्यपाल, अकृतव्रण ३४३ ये सब कर्मोंविषे विद्वान् हुये तिसीसे स्वर्गको

जातेभये धर्मनिपुणतादर्शी व उग्रतपस्वी ऋषियों में ये प्रत्यक्षधर्मवाले यायावर गण ब्राह्मण श्रीविष्णुभगवान् की आराधनाकर वन में टिकते भये ३४४ । ३४५ व माया को छोंड़ उपरामताको प्राप्त, अचलायमान, किसी करके भी न धर्षित करनेयोग्य तथा उपवासयुक्त ऐसे ब्राह्मण गण वन में आश्रित देखेगये ३४६ व वृद्धावस्था से परिक्षीण, व्याधिसे परिपीड़ित होते हुये शेष जो चतुर्थाश्रम संन्यास उसको वानप्रस्थाश्रमसे जाते भये ३४७ आत्मयाजी, सौम्यमति, आत्माराम व आत्मसंश्रय होताहुआ सद्यस्कारी दक्षिणा सहित सम्पूर्ण वेदोंको भलीभाँति समाप्तकर ३४८ व सांसारिक सर्ववस्तुओं को त्यागकर व योगाभ्यास से आत्मा में अग्निको भलीभाँति धारणकर सद्यस्क इसलोकमें सदा यज्ञों व इष्टिको यजन करे ३४९ व सदैव यज्ञोंको यजन करनेवाले पुरुषोंके आत्मामें इज्या प्रवृत्त होती है उससमय बहुत शीघ्र आत्मासे आत्मामें तीनों अग्नियोंको ही भली भाँति त्यागदेवे ३५० व जिससे जो कुछ प्राप्तहोजावे उस की निन्दा न करताहुआ भोजनकरे व वानप्रस्थाश्रममें रत होकर केश, रोम व नखोंको न कटावे ३५१ व शीघ्रकर्म्मोंसे पवित्रहुआ आश्रम से आश्रम को जाता है जो द्विज सर्व प्राणियों को भय न देकर संन्यासी होगा ३५२ वह मरके तेजोमय लोकोंमें जाकर अनन्त सुखों को भोगता है व जो पुरुष सुशीलतादि सदाचार करते हुये सब पापोंको दूरकरके यहां वहां कहीं भी विचरनेकी चेष्टानहीं करताहै ३५३ वह रोष व मोहसे रहित हो सन्धि व विग्रह दोनोंको छोड़कर आत्मा की चिन्तना से इससंसार से उदासीन होजावे व अन्य गत यमों में न चलायमान, स्वशास्त्ररहित, हृदय में नहीं है आत्मविभ्रम जिसके ३५४ ऐसे आत्मयाजी, संशयरहित, धर्मपर, जितेन्द्रिय पुरुषको यथेच्छितगति प्राप्त होती हैइसप्रकार ब्रह्मचर्य गृहस्थाश्रम व वानप्रस्थ तीन आश्रमोंको लांघ इनके पीछे कहेहुये चौथे परमआश्रम को जावे जो कि सबों से श्रेष्ठ अतीवसद्गुणों से अधिष्ठित मुक्तिके लिये परमपरायण प्रकीर्त्यमान है उसका अब वर्णन करते हैं सुनो इन आश्रमों से सब यज्ञोपवीत वेदशास्त्राध्य-

यन गृहस्थ कृत्यादिकों को करके व वानप्रस्थाश्रम से भी निवृत्त होकर ३५५ । ३५६ जो कुछ करने के योग्यहोता है वह परमार्थ कहाता है उसे एकाग्रचित्त होकर सुनो उसकाक्रम यह है कि तीनों आश्रमों में होकर गेरूके रँगेहुये वस्त्र धारणकरके ३५७ जो पुरुष परमस्थान अत्युत्तम परिव्राज्याश्रम अर्थात् संन्यासाश्रम में जावे उसको उसमें जो कुछ करनाचाहिये व जिसरीति से रहनाचाहिये व जहां निवासकरना उचित होता है वह सुनो ३५८ बस संन्यास धर्म्मवाले को चाहिये कि अकेला सहायरहित होकर विचरतारहे क्योंकि जो अकेला घूमता है उसे किसीवस्तुका संग्रह नहीं करना पड़ता ३५९ नतो अग्नि अपने पासरक्खे न उसका स्पर्शकरे गृह वा स्थान कोई न बनावे हां अन्नके लिये ग्राम में चलाजायाकरे परन्तु जहां रात्रिमें पहुँचे किसी गृहस्थके यहां भोजन करले प्रातःकाल होतेही उसग्राम को छोड़दे उस रात्रिमेंभी किसीसे बहुत वार्त्तालाप न करे ३६० जो पदार्थ मिले वही भोजनकरे सो भी लघु बहुत नहीं उसका भी नियम करले कि चाहे उत्तमअन्न होगा वा खराब जितना भोजन करते हैं उतनाही करेंगे सो भी एकहीवार सन्ध्या को भोजनकरे एक जलपात्र रखना व सदा वृक्षके नीचे निवास करना मलिनवस्त्र धारण करना किसीको अपनी सहायता के लिये संग न रखना ३६१ व सब प्राणियोंकी उपेक्षा करना बस यही संन्यासी का लक्षणहै जिसमें सबके वचन पैठें पर उत्तर किसीको न मिले कूपमें गिरीहुई स्त्रीके वचन किसीकोसुननेको नहीं मिलते इसी प्रकार फिर कहनेवाले के पास उसका वचन न पहुँचे जो ऐसाहो वह संन्यासी हो कोई कुछ अवाच्यकहे तो भी कुछ न बोले न उधर देखे न ध्यान लगाकर सुने ३६२ । ३६३ उस में भी कोई ब्राह्मण कुछकहे तो विशेषकरके उसकी ओर कुछ ध्यान न दे अथवा जो वचनकहे वह ब्राह्मण के हितकारी हो ३६४ यदि कुछ निन्दा का वचन कहना हो तो चुपरहे क्योंकि इसी में उसका हित है क्योंकि जिसके वचनसे सब वर्णों व आश्रमों के कान पूर्णहोते हैं जैसे आकाशमें सब पदार्थों के भरने का स्थान होता है व जिसके वचनके

विना सब शून्य रहते हैं उसे देवता लोग ब्राह्मण जानते हैं ३६५।
३६६ व जो जिसी किसी से अपने अंगोंको ढँकले व जिसी किसी अन्न से भूँख मिटाले व जहांकहींपावे सोरहे देवतालोग उसे ब्राह्मण जानते हैं ३६७ व जो अन्यलोगों से सर्प के समान डरता हो व सुहृदों से नरकके तुल्य स्त्रियोंसे ऐसा डरे जैसे कृपण से लोग डरते हैं देवतालोग उसे ब्राह्मण जानते हैं ३६८ जोकि मानकरने से न हर्षितहो न अपमान करने से दुःखित हो व सब प्राणियों को अभयही दे उसे देवगण ब्राह्मण जानते हैं ३६९ न तो वह मरने की प्रशंसाकरे न जीनेही की अभिलाषा करे किन्तु कालको खेती करनेवालों के समान बितावै जैसे वे न बहुत वर्षाही की इच्छा करते हैं न अवर्षणही की ३७० जिसका चित्त किसी से हत नहीं होता व जो दान्त व आहतधी व सबपापों से निर्मुक्त है वही पुरुष स्वर्ग को जाता है ३७१ जो सब प्राणियों से अभयरहता व जिस से किसी प्राणीको भय नहीं पहुंचताहै देहछूटनेपर उसको कहीं से कुछ भयनहीं होता ३७२ जैसे कि हाथी के पैरमें सब पैरसे चलने वालों के पद आजाते हैं वैसेही विज्ञानी के चित्तमें सबके चित्तों के आजाने का स्थान रहता है ३७३ इसीप्रकार जिसने किसी जीव की भी हिंसा न की उसमें जानो सब धर्म्म अर्थ आचुके बस हिंसा करनेवाले की मुक्ति नहीं होसक्ती बार २ उसकाजन्म सब पापयोनियों में हुआ करता है ३७४ इससे जो पुरुष न किसीको मारता है व धृतिमान्हो भलीभांति अपनी इन्द्रियों को जीते रहताहै तथा सब प्राणियों की रक्षा करता है वह अत्युत्तम गति पाता है ३७५ इसीप्रकार प्रज्ञानतृप्त, निर्भय, बुद्धिमान् पुरुष को अधिक मृत्युनहीं होती हैं किन्तु वह अमरत्वपदको प्राप्त होजाताहै ३७६ व आकाश की नाईं सबों के संगसें विमुक्त हो स्थित, मुनिभावयुक्त, विष्णुप्रियकर व शान्त जो है उसे देवतालोग ब्राह्मण जानते हैं ३७७ व जिसका जीवन धर्म्म के अर्थ होताहै व धर्म्म प्रीति के लिये होता है दिन व रात्रि दोनों पुण्य केही लिये होते उसे देवलोग ब्राह्मण जानते हैं ३७८ जिसने संपूर्ण कामोंके प्रारम्भ को निवारित किया

है व जो नमस्काररहित व स्तुति रहित है व जो कभी क्षीण नहीं होता व जिसके सब कर्म्म चीण होगये हैं उस को देवतालोग ब्राह्मण जानते हैं ३७९ व संपूर्णप्राणी सुखपूर्वक रमण करते हैं परंतु उनको अतिशयता से अनेक दुःख ही होते हैं संसार में जन्म होने कारण से हुआहै खेद जिसके ऐसा पुरुष श्रद्धायुक्त होकर वेद विहित कर्म करे ३८० प्राणियों के अभयकरनेही को दानकहते हैं क्योंकि यह दान सब दानोंको अतिक्रमण करलेता है व जो कोई इस लोक में प्रथम तीक्ष्ण पुरुष विषे शरीर होमता अर्थात् अपने शरीर पर क्लेश भी सहकर दूसरे प्रचण्ड पुरुषतकका भी उपकारही करता है वह प्रजाओं से अनन्त अभय पाता है ३८१ व जो कोई अग्निके मुख में उत्तानता पूर्वक हवि होमता है वह सर्वत्र अनन्त प्रतिष्ठा पाताहै व उसके अंगोंके स्पर्श करनेसे और भी लोग अग्निलोकको जाते हैं ३८२ व जो कोई आत्म यज्ञकर्त्ता प्रादेशमात्र पुरुष जोकि हृदयमें वसारहता है उसी में अपने प्राणों के द्वारा हवन करता है उस के प्राणाग्निहोत्र में हुत, आत्मसंस्थित वस्तु सहित देवताओं के संपूर्ण लोकोंविषे प्राप्त होती है ३८३ जे पुरुष परमेश्वरके धारण करने के लिये सर्व वेदादिकों का सारभूत, सुन्दर अक्षर अथवा निर्मल ऐसे ओङ्कारको जानते हैं वे लोग सब प्राणियों में पूज्यमान हो समर्थ व देवता होकर अमृतरूप होजाते हैं ३८४ वेद व वेद्य परमेश्वर व सब विधि निरुक्त जिससे वेदका अर्थ जानपड़ता है व परमार्थता इत्यादि सब को शरीरात्मा में जो जानता है वह सब लोकों में निवासकरसक्ता है ३८५ भूमि में सब कहीं जिन के किरण परते हैं पर लीन कहीं नहीं होते व स्वर्ग्ग में भी कोई उनका प्रमाण नहीं जानता अपने मण्डलान्त में हिरण्यमय विराजते हैं व अन्तरिक्ष में दक्षिणावर्त्त घूमाकरते हैं ऐसे सूर्य्यनारायण को जो पुरुष आत्मा में जानता है वह तेजस्वी होता है ३८६ व सदा आने जाने वाले जिस कालचक्र में ६ ऋतु ६ पुट्ठियां होती हैं व बारहों मास आरागज व जाड़ा,गर्मी, वर्षा ये तीन पर्व हैं ऐसा कालचक्र जिसका मुख है वह परमेश्वर सब के अन्तःकरण में टिका

हुआ सबकी पालना करता है ३८७ जिस परमेश्वर के प्रसाद से इस जगत् का शरीर है व जो सब लोकों के ऊपर रहता है इस संसार विषे जो कोई उस परमेश्वर में देवताओं को तृप्त करता वह नित्यही विमुक्त होता है ३८८ व इसलोक में नित्य तेजोमय पुराण होताहै व धनादिकोंकी भयसे छूट जाताहै व कभी प्राणीलोग जिस से भयको नहीं प्राप्तहोते व जो प्राणियों से कभी नहीं डरताहै ३८९ व आप न निन्दाके योग्य न औरों की निन्दाकरता है व वही ब्राह्मण अपने आत्मामें परमेश्वर को देखताहै व मोहरहित व पापरहित होकर न यहां कुछ अर्थ चाहता है न परलोकही में कुछ चाहता है ३९० रोष मोह तो कभी करताही नहीं व मिट्टीके ढीले को और सुवर्णको समान समझताहै शोक कभीकरताही नहीं न किसी से मेलरखता है न विरोधरखता न निन्दाकरने में दुःखित होता न स्तुति करने में प्रसन्न न किसी को प्रियसमझता है न अप्रिय बस इस प्रकार उदासीनवत् ही जो संन्यासी रहता है वह सनातन ब्रह्मलोकको जाता है ३९१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेक्षेत्रवासमाहात्म्यंनाम पंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

दो० सोलहयें अध्यायमहँ ब्रह्मयज्ञ विधिपूर्व॥
श्रीपुष्करवरतीर्थमहँ भयोसुकह्योअपूर्व १

भीष्मजीने पूर्व के अध्यायकी कथा सुनकर पुलस्त्यजीसे प्रश्न किया कि हे ब्रह्मन्! जो आपने यह कहा कि कमलके गिरने से पृथ्वीतलपर उत्तमतीर्थ पुष्कर होगया व उसका इतना माहात्म्य है १ उस तीर्थ में टिकेहुये श्रीविष्णुभगवान् व श्रीशंकर भगवान् ने जो किया हो हे मुनिशार्दूल! सब हमसे कहो २ श्रीब्रह्मा भगवान्ने वहां कैसे यज्ञकिया व उनके यज्ञमें कौन २ सदस्यहुये ऋत्विक् कौनहुये व ब्राह्मण कौन २ उस यज्ञ में आये ३ उस यज्ञके भाग कौन २ हुये व द्रव्य क्या २ इकट्ठी कीगई व दक्षिणा क्या

दीगई सो कौनसी वस्तु व कितनी व वेदी कौनसी हुई व ब्रह्माजी ने क्या २ किया ४ वेदों ने सबकहीं ब्रह्माजी को सब देवताओं के पूज्य कहाहै फिर उन्होंने किस काम के विचार से यज्ञकिया ५ जैसे कि वे देवदेव ब्रह्माजी अजर अमरहैं वैसेही उन देवदेवका अक्षय स्वर्गलोक भी दिखाई देता है ६ फिर उन्हों ने तो और और देवताओंको स्वर्गदिये हैं व अग्निहोत्र के लिये वेद व ओषधियां उन्हों ने उत्पन्न किये व कीं ७ व बहुतसे पशु यज्ञों के लिये उत्पन्न किये गये इन सबोंकी सृष्टि ब्रह्माजीही से हुई यह वैदिकी श्रुति है ८ इससे हमको आपका यह वचन सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ है किसकामके व किस फलके लिये व किस भावना से ९ इन्होंने यज्ञ किया सब हमसे आप कहनेके योग्य हैं व जो शतरूपा स्त्री थी हम ने सुनाहै कि उसीका नाम सावित्री भी है १० वे सावित्रीजी ब्रह्मा जीकी भार्य्या व ऋषियों की माता हुईं उन्हीं में पुलस्त्यादि सात मुनि व दक्षादि सबप्रजापति ११ व स्वायंभुवादिक मनुओं को ब्रह्माजीने उत्पन्नकिया फिर पतिव्रता महाभाग्यवती सुन्दरव्रत धारण करनेवाली अतिमनोहर हँसनेवाली अपने को अत्यन्तप्रिय पुत्रों वाली व सती ऐसी धर्मपत्नी सावित्री को छोड़कर दूसरी स्त्री को ब्रह्माजीने कैसे ग्रहणकिया १२।१३ व जिस स्त्रीको ग्रहणकिया उस का क्या नाम है व किसकी कन्या है व उसका शील स्वभाव कैसा है उसको ब्रह्माजी ने कहांदेखा वा किसने दिखादिया १४ व उस का रूप कैसाथा व उस देवेशी मनोमोहिनी को उन्होंने किस अभिप्रायसे देखा कि जिसको देखकर ब्रह्माजी कामके वशीभूत होगये १५ हे मुने! वह वर्ण व रूपमें सावित्री से अधिकहोगी तब तो उसने सर्वलोकेश्वर विभु देव ब्रह्माजी को मोहित करलिया बड़े आश्चर्यकी बात है १६ इससे जिसप्रकार ब्रह्माजीने उस लोकसुन्दरी स्त्री को ग्रहणकिया व जैसे उन्होंने यज्ञ किया सब हमसे आप कहें १७ व उस स्त्रीको ब्रह्माजी के पास देखकर सावित्रीने क्या किया व फिर ब्रह्माजीने सावित्री के विषय में कौन बर्ताव किया १८ व उससमय सन्निधि में ब्रह्माजी ने सावित्रीजी से और सावित्रीजी ने

ब्रह्माजी से कौन २ वचनकहे सब आप हमसे कहने योग्य हैं १९ इस विषय में आपलोगोंने क्याकिया कोप व क्षमा वहां जो कुछ कियाहो व जो कुछ देखाहो व जो आपसे हमने पूंछाहो व न पूंछा हो २० परन्तु हम परमेष्ठी श्रीब्रह्माजी के सब कर्म्म शेषरहित विस्तारपूर्व्वक आपसे सुना चाहते हैं व यज्ञकी श्रेष्ठ विधिभी श्रवण किया चाहतेहैं २१ व सब कर्म्मोंका प्रारम्भ जिस प्रकारसे हुआ व अग्निहोत्र जैसे हुआ सब क्रमसे सुनाचाहते हैं होतालोगों ने क्या २ भोजन किया व प्रथम किसकी पूजा करवाई गई २२ श्री भगवान् विष्णुजीने उनके यज्ञमें किस वस्तुसे कैसे व क्या सहायताकी व देवताओंने जो सहायताकी हो वह आप कहने के योग्य हैं २३ व ब्रह्माजी यज्ञ करनेके लिये देवलोक छोड़कर मर्त्यलोक में कैसे आये विधिसे अन्वाहार्य गार्हपत्य, दक्षिण अग्नि २४ आहवनीय अग्नि व वेदी, स्रुवा, प्रोक्षणीपात्र, घृतपात्र व यज्ञान्तस्नान २५ और हव्यभाग प्राप्तकरनेवाले पूर्वोक्त तीनोंअग्नियोंको जैसे किया व हव्य भोजन करनेको देवताओंको, कव्य भोजनकरनेको पितरोंको जैसे नियतकिया २६ यज्ञकर्म्ममें यज्ञविधिसे किसका किसका भागलगायाथा यज्ञस्तम्भ, यज्ञका इन्धन, कुश, सोम, पवित्र, परिधि २७ यज्ञ के लिये अन्यद्रव्य जिसप्रकार ब्रह्माजीने कियाहो व जिस प्रकार पूर्व्व समयमें पारमेष्ठ्य कर्म्मसे ब्रह्माजी शोभितहुये हों सब हमसे कहिये २८ व क्षण, निमेष, काष्ठा, कला, त्रैकाल्य, मुहूर्त्त, तिथि, मास, दिन, संवत्सर २९ ऋतु, कालयोग व तीन प्रकार के प्रमाण, आयु, क्षेत्र, सब अन्यजीविका के पदार्थ, लक्षण, रूपकी सुन्दरता ३० तीनों वर्ण, तीनोंलोक, तीनोंविद्या, तीनप्रकार के अग्नि, तीनोंकाल, तीनों कर्म्म, त्रैवर्ण्य, तीनोंगुण ३१ सर्वलोक इनसब व अन्यसबको जिस प्रकार दीर्घमनस्वी ब्रह्माजीने उत्पन्न कियाहो व जो गति धर्म्मयुक्त प्राणियों की होतीहै व जो पापकर्म्म करनेवालों की होतीहै ३२ व चारोंवर्णों की उत्पत्ति व चारोंवर्णों की जिस प्रकार रक्षाहोती है व चारों प्रकारकी विद्याओं के वेत्ता व चारों आश्रमोंमें रहनेवाले ३३ व जो उत्कृष्ट ज्योतिश्चक्र सुनाजाता है व जो परमतप सुनाजात

है व जो पदार्थ सबसे प्रथम सबसे श्रेष्ठ कहागयाहो ३४ व जो लोक की मर्य्यादाओं का सेतुहो व जो सब पवित्रकर्म्मोंसे पवित्रहो व जो वेदज्ञों के जानने के योग्यहो व जो सब प्रभुओंका प्रभुहो ३५ व जो इनसब प्राणियोंका प्राणीहो व जो अग्निके तेजोंका तेजहो जो मनुष्यों का मनोभूतहो व जो तपस्वियों का तपोभूतहो ३६ व जो नय वृत्तिवालों का विनयरूपहो व जो सबसे तेजस्वियोंका भी तेजोरूप हो इनसबों व अखिल पदार्थों को लोकपितामहजी बनातेहुये ३७ यज्ञसे किस गतिकी इच्छा की व यज्ञ करने के लिये कैसे मतिकी यह हमको संशय है व हे ब्रह्मन्! यह हमको दूसरा संशय है कि ३८ देवता व दैत्योंसे ब्रह्माजी अद्भुतरूप व श्रेष्ठ कहेजाते हैं किंतु तत्त्वसे आश्चर्यभूत होकरभी फिर उनको यज्ञकरनेका कौन प्रयोजन था सब हमसे कहिये ३९ पुलस्त्यजी यह बड़ाभारी प्रश्न सुनकर बोले कि हे महातेजवाले! तुमने प्रश्नका भार तो बड़ाभारी लाददिया परन्तु यथाशक्ति हम ब्रह्माजीका यश वर्णन करते हैं सुनो ४० उस यज्ञमें जिस परमेश्वर के सहस्रमुख, सहस्रनेत्र, सहस्रचरण, सहस्र श्रवण, सहस्रकर, सहस्रजिह्वा हैं व जो सहस्रमूर्त्ति, सहस्रोंमें परम प्रभु, सहस्रद, सहस्रादि, सहस्रभुक् व नाशरहित है वह तो देवता हुआ ४१ । ४२ और हवन, सवन, हव्य, होता, पवित्र, यज्ञपात्र, वेदी, दीक्षा, चरु, स्रुव ४३ स्रुक्, सोम, अवभृथ, प्रोक्षणीपात्र, दक्षिणा के लिये सुवर्णरत्नादि, अध्वर्य्यु अर्थात् यजुर्वेदवेत्ता, सामगायक ब्राह्मण, सदस्य, सदनंसद् ४४ यज्ञस्तम्भ, हवन के लिये इन्धन, कुश, दर्वी अर्थात् काठका डोआ, चमस, उलूखल, प्राग्वंश, यज्ञभूमि, होता अर्थात् ऋग्वेदवेत्ता, बन्धन ४५ छोटे बड़े बहुतसे स्थिरपात्र, प्रायश्चित्त करनेकी सामग्री, चबूतरे, कुशोंके समूह ४६ मन्त्र, यज्ञ, हवन, अग्नि के अलग अलग भाग, अग्रभुक्, होमभुक्, शुभार्चिष् आयुध ४७ वेदके जाननेवाले ब्राह्मण यह यज्ञसामग्री कहतेभये व हे महाराज! जिस दिव्यपवित्रकथाको आप पूंछतेहैं कि जिसवास्ते प्रभु शाश्वत यज्ञ भगवान् ब्रह्माजीने पृथ्वीपर यज्ञकिया उसकी पुण्यकथाको कहते हैं सुनो देवताओं व मनुष्योंके हितार्थ व सर्वलोकोंके कल्याण

के लिये कि जिसमें दोनोंको सुगमतापड़े स्वर्ग्गमें करते तो मनुष्य उस में कैसे संयुक्त होसक्के ४८ । ४९ ब्रह्मा, कपिलदेव, परमेष्ठीनामऋषि, सब इन्द्रादिदेव, सप्तर्षि, महायशस्वी महादेवजी ५० महानुभाववाले सनत्कुमारादि चारों ब्रह्मपुत्र व महात्मामनु व भगवान् प्रजापति व और भी जो पुलहादि ऋषिगण ब्रह्माजी से उत्पन्नहुये हैं सब वहां आये व जलतीहुई अग्नि के समान तेजस्वी पुराणदेव ब्रह्मा जीने यथाविधि यज्ञ किया ५१ । ५२ व यह पुष्करनाम तीर्थ महात्मा ब्रह्माजी के कमलके वहां फेंकने से हुआ उस पुष्कर में आकर सब ऋषियों ने अष्टादशपुराण, वेद, स्मृति व संहिता पढ़ीं ५३ तब ब्रह्माजी के मुखसे श्रुतिमुख वाराहजी उत्पन्नहुये वाराहजी का रूप धारणकर श्रीविष्णुभगवान् ब्रह्माजीकी सहायता के लिये उत्पन्नहुये ५४ व पुष्करमें जहां शरीरको विस्तीर्ण किया वह कोकामुखतीर्थ प्रसिद्धहुआ उसी रूपके मुखसे प्रथम सबवेद उत्पन्नहुये दांतों से उनके यज्ञ करने के लिये खम्भा उत्पन्नहुये यज्ञकी बहुत सामग्री हाथों से उत्पन्नहुई ५५ अग्नि जिह्वा से, कुश रोमोंसे, दिन व रात्रि दोनों नेत्रोंसे, वेदांग सब कानों से हुये ५६ घृत नासिका से, थूथुनसे स्रुव, सामवेद का गाना शब्दसे, सत्य धर्म्म उस रूप की चालसे हुये ५७ नखों से प्रायश्चित्त, जानुसे यज्ञके उपयोगी छागादि पशु, आंतों से उद्गाता अर्थात् सामवेदवेत्ता, लिंगसे होम, रोमों से फल बीज महौषधियां हुईं ५८ व भीतरके आत्मा से वायु, हाड़ों से मंत्र, स्फिक् अर्थात् कूलों से जल, रुधिरसे सोम, कन्धों से वेद, उनकी सुगन्धिसे खीर, अतिवेगसे हव्य कव्य दोनों प्रकार की आहुतियांहुईं ५९ सब शरीरसे प्राग्वंश, नानाप्रकारकी दीक्षा प्रकाश से, दक्षिणा हृदय से व महायज्ञों के सब भेद शरीर भर से ६० उपाकर्म्मइष्टि रुचिरतासे, प्रवर्ग्यादि अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष क्षुद्रघण्टिकासे हुयें उनकी छायासे यजमानकी पत्नीहुई व मणिशृङ्गके समान ऊँचे ६१ ऐसे सर्वलोकहितात्मा पृथ्वीधर वाराहजी पृथ्वी को रसातल से दाढ़ों पर धरकर लाये तदनन्तर पृथ्वी को अपने स्थानपर स्थापित करके ६२ हरिजी अन्तर्द्धान होगये व पृथ्वी

स्थापित होगई इसी प्रकार पुरातन समयमें आदिवाराहजीने ब्रह्मा जीके हितकेलिये प्रलयके जलके मध्यसे पृथ्वीको निकालकर पुष्कर तीर्थ जहां बनाहै वहीं स्थापित करके जो शम दमयुक्तहो दिव्य कोकामुख में स्थितहुये ६३ । ६४ आदित्य, वसु, साध्य, पवन व और सब देवगण, रुद्र, विश्वेदेव, यक्ष, राक्षस, किन्नर ६५ दिशा विदिशा, पृथ्वी, नदी, समुद्र आदिकोंके सहित चराचर के गुरु ब्रह्म वेत्ताओंमें श्रेष्ठ श्रीमान् ब्रह्माजी कोकामुख अर्थात् सूकरजीसे बोले कि हे विभो ! तुम अभी न जाओ इस हमारे यज्ञकी रक्षा करते रहो ६६।६७ उन्होंनेकहा बहुत अच्छा तुम्हारे यज्ञकीरक्षा हम कियेरहेंगे इसके पीछे ब्रह्माजी वैकुण्ठविहारी श्रीविष्णुभगवान्की मूर्त्ति देख कर बोले कि ६८ हे सुरोत्तम ! तुम हमारे परमदेवहो व तुम हमारे परमगुरुहो व तुम हमारे परमतेजहो व इन्द्रादि देवताओंकेभी हो ६९ हे फूले कमलके समान नेत्रवाले ! हे शत्रुपक्षविनाशक ! आप ऐसा कीजिये जिसमें दानवलोग हमारे यज्ञका विध्वंस न करें ७० बस हम आपके प्रणामकरके यही प्रार्थना बार २ करते हैं और कुछ नहीं चाहते क्योंकि इसकी रक्षा आपको छोड़ और कोई नहीं करसक्ता यह सुन श्रीविष्णुभगवान् बोले कि हे देवेश ! आप भय छोड़दें हम यज्ञविध्वंस की इच्छा कियेहुये सब दानवों को मारडालेंगे ७१ दानवोंके सिवाय और भी दैत्य राक्षसादि जो कोई यज्ञमें विघ्नकरेंगे उन सबोंको हम विध्वंस करेंगे हे पितामह ! आप कल्याणपूर्व्वक निर्भय होकर यज्ञकीजिये ७२ यह कहकर श्रीविष्णुजी वहीं स्थित होकर यज्ञकी रक्षा करनेलगे जब ये रक्षा करनेकी प्रतिज्ञा करके खड़ेहुये तो कल्याणदायी मन्द मन्द पवन वहनेलगे सब दशोंदिशा प्रसन्न होगईं ७३ व सब नक्षत्र प्रकाशित होकर चन्द्रमाके प्रदक्षिणा करनेलगे ग्रहलोगोंने आपसमें विग्रहकरना छोड़दिया समुद्र सबप्रसन्न होगये ७४ पृथ्वी सब धूलिरहितहोकर स्वच्छ होगई व सब जल आनन्ददायी होगये नदियां सब अपने २ मार्गमें बहनेलगीं समुद्रों का उफलाना व शब्दकरना मिटगया ७५ व अन्तरात्मा पुरुषोंकी इन्द्रियां जो मन्द होगईथीं सब चैतन्य होकर अपना २ काम करने

लगीं महर्षिलोग शोकरहितहो उच्चस्वर से वेदोंको पढ़नेलगे ७६ व उस यज्ञमें कल्याणदायक अग्नि आहुति ग्रहण करनेलगे सबलोग अपने २ प्रवृत्तमार्गके कर्म्मोंमें परमानन्दित होकर लगे ७७ इसप्रकार सत्यप्रतिज्ञ श्रीविष्णुभगवान् की अरिनिधना वाणी सुनतेही सब ऐसाहुआ इसके पीछे यज्ञ जानकर सब देवता, दानव, राक्षस आये ७८ व भूत, प्रेत, पिशाच, गन्धर्व्व, अप्सरा, नाग, विद्याधर ये सब यथाक्रम वहांआये ७९ वृक्ष, वल्ली, ओषधियां व स्थावर, जंगम सब आये जिनको चलने की सामर्थ्य न थी वे भी सामर्थ्य पाकर यज्ञ देखने आये ब्रह्माजी की आज्ञासे पवनदेव सब पर्व्वतों को उड़ालाये यज्ञपर्व्वत के निकट आकर सब पर्व्वत उसके दक्षिण ओर स्थापित कियेगये व देवतालोग सब यज्ञपर्व्वत की उत्तर दिशामें बैठे ८०। ८१ गन्धर्व्व, अप्सरा व वेदपारग मुनि, ऋषि पश्चिमदिशामें बैठे ८२ सब देवता व दैत्य असुरगण आपस के स्वाभाविक वैरको छोड़ परस्पर प्रीतिकरके एकही स्थानपर बैठे ८३ ये सब ऋषियों व ब्राह्मणोंकी शुश्रूषा बड़े प्रेमसे करने लगे उस यज्ञ में जितने ऋषि, ब्रह्मर्षि, देवर्षि, राजर्षि व ब्राह्मणथे सबतरफ से सब भलीभांति आयेथे कोई बाकी नहीं रहगयाथा ये लोग अपनेआप देखने के लिये आयेथे कि देखें इस यज्ञमें पूजा विशेष किस देवताकी होतीहै ८४।८५ इनकेसिवाय पृथ्वीमण्डलके सब पशु पक्षीभी देखने की इच्छासे वहां आयेथे ब्राह्मणलोग उत्तम २ पदार्थ भोजन करनेके लिये और क्षत्रियादिवर्णभी देखने भोजन करनेआदिकी इच्छा से आये थे ८६ अपने आपही वरुणजी ने रत्न व दक्षने अन्नदिया व वरुणजी अपने लोकसे आकर यज्ञके लिये अन्न अपने हाथोंसे पकाने लगे ८७ पवनदेवता भक्ष्य भोज्यादि भोजनके विकार अलग बनाने लगे सूर्य्यनारायण अच्छीतरह सबका परिपाक करनेलगे व चन्द्रमा जी भी सब अन्नों को पचाते व अपनी अमृतदृष्टिसे देखते थे बृहस्पतिजी सबको सबकार्य्य करने में सम्मत देते ८८ कुबेरजी नाना प्रकारके धन व विविध प्रकारके वस्त्र देते थे सरस्वतीनदी व सब नदियोंकी स्वामिनी गंगाजी देविका व नर्म्मदा ८९ व और भी जो

पुण्यनदियां थीं व कूप तड़ाग छोटी तलैयां नानाप्रकार के कुण्ड झीलआदि ९० व नानाप्रकारके झरने व देवखात जो पर्व्वतों के बीच २ में देवताओं के बनायेहुये हैं सब जलाशय व सातो समुद्र ९१ जोकि क्षारसमुद्र,इक्षुरसोद, सुरोद, घृतोद,दधिमण्डोद, दुग्धोद व शुद्धोदके नामसे प्रसिद्धहैं सातोलोक सातोपाताल सातोद्वीप सब पुर पत्तनादिकों समेत ९२ सब वृक्ष,वल्ली,तृण, शाक, फलादि,पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, तेज ये पंचमहाभूत ९३ जितने ग्रह, प्राणी, धर्म्मशास्त्र, वेदभाष्य,सूत्र इत्यादि ब्रह्माजी के बनाये जितने पदार्थ हैं ९४ चाहे अमूर्त्तिमान्हों वा मूर्त्तिमान् सब मूर्त्तिधारण करके उस यज्ञमें आये जब इसप्रकार सबों के आनेपर ब्रह्माजीका यज्ञ होने लगा व सब देवता ऋषिलोग बैठे तो ब्रह्माजीकी दहिनी ओर पास ही श्रीविष्णुभगवान् विराजमानहुये ९५।९६ व बाईं ओर पिनाक धन्वावाले वरद प्रभु महादेवजी बैठे तब महात्मा ब्रह्माजी ने ऋत्विजोंका वरण किया ९७ वहां भृगुजी तो होता नियत कियेगये पुलस्त्यजी अध्वर्य्युसत्तम, मरीचिजी उद्गाता,नारदजी ब्रह्मा हुये ९८ सनत्कुमारादिक चार व और भी बहुत से ऋषि सदस्य कियेगये दक्षप्रजापत्यादि प्रजापति व ब्राह्मणादि चारोंवर्ण ये सब ब्रह्माजीके कुछदूरपर बैठे व ऋत्विक्लोग घनाय निकटबैठे इनसबोंको कुबेर जीने अपने हाथोंसे वस्त्र भूषणादि से भूषितकिया ९९।१०० एक एक अँगूठी पहुँची व मुकुटों से सब ब्राह्मण भूषितहुये वेदीकी चारों ओर चार २ ऋत्विक्बैठे इससे सब सोलहहुये १०१ उन सबोंको दण्डवत् प्रणाम करके जैसी कि पूजाकी विधि वेदशास्त्र में लिखीहै तैसेही पूजित करके सब ऋत्विजों से ब्रह्माजीने कहा कि आपलोगों ने बड़ा अनुग्रह हमारे ऊपर किया जो इस यज्ञके करानेमें उपस्थित हुये अब जो यज्ञका विधानहो कराइये १०२ हमारी पत्नी सावित्री विद्यमान है उसे भी जो कुछ करनाहो आज्ञादीजिये यह सुन ब्राह्मणों ने विश्वकर्म्मा को बुलाय प्रथम ब्रह्माजीका मुण्डन करवाया, क्योंकि यज्ञका प्रथम विधान क्षौर करानाहै फिर अग्नि में शुद्ध नवीनवस्त्र ब्रह्माजीको धारण कराये १०३।१०४ तदनन्तर उन्हों ने

वेदके मंत्र उच्चारण किये व सब ब्राह्मणोंको यज्ञके चारोंओर खड़े किया फिर उनके पीछे दूर २ रक्षाकरने के लिये सब क्षत्रियों को अस्त्र शस्त्रादि धारण कराकर खड़े किया क्योंकि जगत्की रक्षा इन्हीं क्षत्रियों से ही होती है १०५ वैश्यलोग जो आये वे सब विविधप्रकारके भोजन बनानेमें लगायेगये इससे सब समाजको बहुतशीघ्र भोजनके पदार्थ मिले १०६ न सुनेगये व न पूर्व में देखेगये ऐसे उत्तम भोजनोंको देखकर प्रसन्न हो सृष्टिकर्ता विभु ब्रह्माजीने वैश्यों का उससमय प्राग्वाट एक नाम धराया १०७ व शूद्रोंको यह आज्ञादी कि तुमलोग सदा ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्योंकी शुश्रूषा इस यज्ञ में करो व सदा करतेरहना यही तुम्हारे वर्णका धर्म्म नियत करदियागया है सबके तो इस यज्ञ में पैरधोवो व भोजन करने के पीछे उस स्थान को झारबहारकर चौका लगावो फिर पात्रों को शुद्धकरो १०८ जिन्होंने ब्रह्माजीकी आज्ञाके अनुसार उससमय कार्य्यकिया उनसे पितामहजीने फिर कहा कि तुमलोगोंको शुश्रूषार्थ हमने चौथे स्थानपर नियत किया १०९ सो तुमलोगों को ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य तीनोंकी सेवा करना चाहिये इतना शूद्रोंसे कहकर ब्रह्माजीने इन्द्रको द्वारेपरका अध्यक्ष किया व वरुणजीको शर्बत आदि रसोंका स्वामी नियत किया कुबेरजी को दानाध्यक्ष बनाया वायुदेवता को चन्दनादि सुगन्धित वस्तु सबके समीप पहुँचाने का अधिकार मिला ११० । १११ सूर्य्यको प्रकाश करने की स्वामितादी व श्री विष्णुभगवान् को सबोंमें प्रभु होनेका अधिकारहुआ चन्द्रमाजीको सोमवल्ली कूट २ कर सबको देने का अधिकार दियागया क्योंकि चन्द्रमा वाममार्गी हैं इससे जो कोई मद्यपानकरें उनको वे पहुँचातेरहें ११२ व स्त्रियोंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजीकीपत्नी सावित्रीजीको सत्कार पूर्वक अध्वर्युने बुलाया कि हे देवि ! शीघ्र यहांआवो ११३ क्योंकि अब सब अग्नि प्रज्वलित हुये दीक्षाका काल आगया अब ग्रंथिबन्धन होनाचाहिये जब इसप्रकार अध्वर्य्यु ने सावित्री को बुलाया पर वे अपने स्त्रियों के कार्य्य करने में लगीथीं इससे व्याकुलचित्तथीं नहींआईं कहा कि ११४ इस द्वारपर अभी बहुत लीपना पोतना व

भीतिमें भी बहुत चित्रसारीका काम करनाहै अँगने मेंभी कुछ सँवा-रना सुधारनाहै व पात्रभी अभी जूँठे पड़ेहैं उन्हें धोनाहै इसके विशेष हमींको बड़ी शीघ्रता है नारायणकी पत्नी लक्ष्मीजीभी तो अबतक नहीं आईं ११५।११६ अग्निकी पत्नी स्वाहा यमराजकी पत्नी धूम्रो-र्णा वरुणकी स्त्री गौरी वायुकी प्रिया सुप्रभा ११७ कुबेरकी भार्या ऋद्धि महादेवजीकी प्राणप्रिया गौरी जो जगत् को प्रियहैं फिर मेधा, श्रद्धा, विभूति, अनसूया, धृति, क्षमा ११८ गंगा, सरस्वती आदि कन्या अभी नहीं आईं इन्द्रकी स्त्री इन्द्राणी चन्द्रमा की भार्य्या रोहिणी ११९ वसिष्ठजी की प्रिया अरुन्धती व सब सप्तर्षियों की स्त्रियां जैसे कि अत्रिकी स्त्री अनसूया ऐसेही और भी ऋषियों की स्त्रियां १२० वधू, कन्या, सखियां भगिनियां ये कोई अबतक नहीं आई हैं हमभी तबतक थोड़ी देर स्थित हैं १२१ जबतक ये सब हमारी सखी वध्वादि न आवेंगी तबतक हम अकेली न आवेंगी चाहें जो हो यह बात जाकर ब्रह्माजीसे कहो कि एक मुहूर्त्त भर तबतक रहजायँ १२२ हम इन सबोंके साथ बहुत शीघ्र आवेंगी हे महामतिवाले! जैसे आप सब देवताओं के मध्यमें बैठेहुये सब से अधिक शोभित होतेहैं इसीप्रकार जब हम सब देवियोंके साथ आवेंगी तो वैसे शोभित होंगी इसमें कुछ संशय नहींहै ऐसा क-हती हुई सावित्रीजी को छोड़ अध्वर्य्युने आकर ब्रह्माजी से कहा कि १२३ । १२४ हे देव! सावित्री व्याकुल होकर गृहके कार्य्यों में लगी हैं व कहती हैं कि जबतक हमारी सखियां न आवेंगी तब तक हमारा आना न होगा १२५ हमसे उन्होंने ऐसा कहाहै व काल बीताजाता है देर होजायगी हे पितामह! अब आपकी जैसी रुचिहो वैसाकरें १२६ जब अध्वर्य्युने ऐसा कहा तो ब्रह्माजी कुछ क्रुद्ध हो गये व इन्द्रसे बोले कि हे शक्र! हमारे लिये कोई और स्त्री शीघ्र लावो १२७ जिसमें यज्ञ होजाय काल न हीन हो हे इन्द्र! वैसाही करो कोई स्त्री शीघ्र यहांलावो १२८ जबतक यज्ञकी समाप्ति होगी तबतकके लिये तुम्हीं को यह ले आनेका अधिकारहै अब अन्यथा मन न करो जब यह यज्ञ समाप्त होजायगा तो फिर उस स्त्री को

छोड़देंगे १२९ यह सुन इन्द्र अतिवेगसे जाकर पृथ्वीपर ढूँढ़ने लगे जितनी स्त्रियां उन्होंने देखीं सब और किसी की विवाहिता वा योंही भोगकीहुई पाई गईं १३० एक अहीरकी कन्या अतिरूपवती सुन्दरनासिकावाली अतिमनोहरनेत्रवती इसी प्रकार सब उसके अंग अपूर्वथे जिसके समान न तो कोई देवीथीं न गन्धर्व्व की स्त्री न असुरकी न नागकी थी १३१ और न कोई वैसी कन्या थी जैसी कि वह वराङ्गना थी सो दूसरी लक्ष्मी के समान रूपवती उस कन्याको इन्द्रजीने देखा १३२ वह अपने रूपकी सम्पदा से मनकी वृत्तिको इधर उधर फेंकरही थी इन्द्रजीने उसके प्रत्येक अंग की ओर कईबार देखकर विचारा उसकेसे सब अंग जितनी स्त्रियां उन्होंने देखीथीं किसीके न थे उसे देख इन्द्रने अपने मनमें चिन्तनाकी कि जो यह अभी कन्याहो कहीं इसका विवाह न हुआहो १३३।१३४ तो हमारी बराबर पुण्यात्मा पृथ्वीपर आज कोई देव न ठहरे क्योंकि इस स्त्रीरत्नको हम अभी लेकर ब्रह्माजीके समीप पहुँचावें व उनकी प्रीतिभी इस अच्छे भाग्यवाली में लगजावे तो हमारा यह श्रम सफल होजावे क्योंकि इसके नील रंगके बादलके समान तो श्याम केशहैं व सुवर्ण के रंग के समान चमकतेहुये कपोल हैं व कमल के तुल्य नेत्रहैं व मूँगे के रंगके ओष्ठ हैं इन बातोंसे मानों कामके अशोकके वृक्षकी कलीही है फूलउठी है १३५ । १३७ जोकि कामके अग्निकी लपकोंसे अरुणरंगकी होगईहै नहीं जानते ब्रह्माने इसके समान विना दूसरारूप देखेहुये इसे कैसे उत्पन्न कियाहै १३८ कदाचित् विना देखेही अपनी बुद्धिसे इसे बनायाहै तो उनकी बुद्धिकी निपुणताकी गति अपारहै देखो तो इसके कुच कैसे ऊँचे व मोटे कड़े बनाये हैं जोकि देखनेहीसे हमको सुख देतेहैं १३९ फिर जिसकी छातीसे लपटेंगे उसको नहीं जानते क्या सुख होवे यद्यपि इसका देह अरुणताकी चमकसे ढँकाहुआ है व अधर तो अतीव अरुणहोनेके कारण अलग प्रकाशित होताहै १४० तथापि सेवा करनेवाले को तो संसारसे मुक्तही करदेगा कुटिलताको प्राप्तभी इसकी पाटी है पर सुख ही अर्पणकरतीहै १४१ दोषभी बड़ी सुन्दरताको प्राप्तहोकर गुण

हीके तुल्य विदितहोताहै नेत्रप्रान्त भूषित होके कानोंके समीपतक विस्तीर्ण हैं इसीकारण से चतुरलोग भावचैतन्य कहते हैं कि कानों के भूषण नेत्रहैं व नेत्रोंके भूषण कानहैं १४२ । १४३ क्योंकि अंजन व कुण्डलोंका कुछ अन्तरही नहींहै एकहीमें मिलेहुयेहैं व यहबात कटाक्षोंको योग्य नहीं है जोकि वे जिसके ऊपर पड़ते हैं उसके हृदयमें दोटूक करनेका विचार रखते हैं १४४ पृथ्वीपर जो तुम्हारे सम्बन्धी हैं वे दुःखभागी कैसे हैं प्राकृत गुणोंसे विकारभी कहीं २ सुन्दरता को प्राप्तहोताहै १४५ क्योंकि हमारे सहस्रनेत्र गौतमके शापके विकारसे होगये पर उनसे गुण यह हुआ कि आज हमने उतने नेत्रों से ऐसी अपूर्व्व स्त्री देखी रूपकी उत्पत्तिमें विधाताने इसे बनाकर अपनी कुशलताकी सीमा अच्छी तरहसे दिखाई है १४६ इससे यह स्नेह पूर्व्वक देखने से देखनेवाले की दृष्टिको कृतार्त्थ करती है ऐसा विचार करतेहुये इन्द्रका शरीर उसके रूपकी दीप्तिसे चमकनेलगा १४७ व शरीरमें पुलकावली छागई तदनन्तर तपायेहुये सुवर्णके सदृश कान्तिवाली व कमलपत्र के समान चौड़े नेत्रवाली उसको देखकर विचारनेलगे कि १४८ हमने देवता, यक्ष, गन्धर्व्व, नाग व राक्षसोंकी स्त्रियां बहुत प्रकार की देखी हैं परन्तु इसप्रकार की रूपसम्पदायुक्त नहीं देखी १४९ कि तीनोंलोकोंके सब सुन्दर पदार्त्थों की सुन्दरता एकहीं वस्तुमें दिखाईदे हम जानते हैं कि ब्रह्माने चौदहों भुवनोंकी सुन्दरतामेंसे मुख्य २ चुनकर इसे बनायाहै और कुछ बात नहींहै १५० ऐसा विचारकरके इन्द्र उससे बोले कि तुम कौनहो और किसकी कन्या व स्त्रीहो व कहांसे यहां आईहो हे सुभ्रु! कहो व अकेली इस चौरहे में क्यों खड़ी हो १५१ तुम जो भूषण अपने अंगों में धारणकियेहो वे तुम्हारे अंगों को नहीं भूषितकरते किन्तु तुम्हारे अंगही उन भूषणोंको भूषितकरतेहैं १५२ हे सुलोचने! जैसी रूपवती तुमहो वैसी तो हमने देवता, गन्धर्व्व, राक्षस, पन्नग, किन्नरों में से किसीकी स्त्री नहीं देखी हम क्या हम जानते हैं किसीने न देखी होगी १५३ हमने तो तुमसे बहुतसीबातेंकहीं भला तुम उत्तर क्यों नहीं देतीहो तब लज्जाकेमारे कांपतीहुई वह कन्या इन्द्रसे बोली कि १५४

हे वीर! मैं गोपकी कन्याहूँ व गोरस बेंचनेकेलिये आईहूँ व शुद्ध मक्खन व दधि भी इस पात्रमें लियेहूँ १५५ हे परंतप! दही, मट्ठा व दुग्धभी मेरे पासहै इन वस्तुओं में जो वस्तु आप चाहतेहों लेलें बताइये क्या चाहिये १५६ जैसेही उसने ऐसा कहाहै कि इन्द्रने झट उस बिशालाक्षीको हाथसे दृढ़तापूर्वक पकड़कर जहां ब्रह्माजीथे वहां लेआकर पहुँचादिया १५७ जब इन्द्र पकड़कर उसे लेचले तो वह अपने पिता माताका नाम ले२ पुकारने व रोदन करनेलगी हा तात! हा मातः! हा भ्रातः! यह पुरुष हमको जबरदस्ती पकड़े लियेजाता है १५८ फिर इन्द्रसे कहनेलगी कि यदि मुझसे आपका कुछ काम चलता दिखाईदेताहो तो मेरे पितासे मांगो वे आपको मुझको देदेंगे मैं सत्यकहतीहूँ १५९ व कौनसी कन्या भक्तवत्सल पति नहीं चाहती व हे धर्म्मवत्सल! मेरे पिता बड़ेदानीभी हैं इससे तुम्हें उनको कुछभी वस्तु अदेय नहीं है १६० जब मैं शिरद्वारा उन्हें प्रसन्न करूँगी तब प्रसन्नहोकर मेरे पिता आपही मुझे तुमको देदेंगे क्यों हठ करते हो मैं विना पिताके चित्तकी बात जाने अपनेको आपको देदूँ १६१ तो बड़ाभारी धर्म्म नाशहोजाय इससे मैं तुमको अपना शरीर नहीं देतीहूँ जो मेरा पिता देदेगा तो अवश्य तुम्हारे वश होऊँगी १६२ वह ऐसा कहतीहीरही पर इन्द्र उसे लेकर चलेहीगये व ब्रह्माजी के सामने खड़ी करके इंद्र बोले कि हे अबले! हे विशालाक्षि! हे वरवर्णिनि! हम इनके लिये तुमको लाये हैं तुम शोक न करो ब्रह्माजी उस गौरवर्ण महाद्युतिवाली गोपकन्याको देखकर १६३।१६४ समझे कि क्या यह दूसरी लक्ष्मी है जो कमलसदृश लोचन इसके हैं व तपायेहुये कांचनकासा इसके देहका रंग है छाती अतिपीन है १६५ जांघें हाथीकी सूँड़के समान चढ़ा उतारकी हैं नख सब लाल व ऊँचे हैं सबप्रकार से इसने काम की समता पाई है १६६ इस के प्राप्त होने की गति तो आश्चर्य्यही विदित होती है यह कह कर ब्रह्माजीने कहा कि हम अपना सब प्रभुत्व तुझे देंगे यदि तू प्रसन्नतापूर्वक हमारे संग का रहना अंगीकार करे यह सुन गोपकन्या ने भी अंगीकार किया १६७ व अपने मनमें कहा कि जो

ये हमारे रूप को अच्छा जानकर मुझे ग्रहण करनेकी इच्छा करते हैं तो मेरी बराबर धन्य और कोई भी सीमन्तिनी भूतलमें नहीं है १६८ ये हमको यहां लाये तो हम इनके नेत्रोंके सामने आईं नहीं तो कैसे आतीं अब इनके त्याग करने पर तो मरणही होगा व ग्रहण करने में सब प्रकार के जीवित सुख होंगे १६९ यदि मैं ऐसे स्थान पर पहुँचकर फिर लौटगई तो मेरे रूप को धिक्कार है क्योंकि जिसे ये ब्रह्माजी नेत्रोंसे प्रसन्नतापूर्वक देखदें वह स्त्री धन्य होजाय इस में सन्देह नहीं है व उसको क्याकहें जिसको स्नेहपूर्वक ये अपनी छाती में लगाकर मिलें क्योंकि जगत् में जितने रूप हैं पण्डितोंने उन सबका द्वार इन्हींको कहाहै १७० । १७१ इससे विश्वयोनिने सब रूपलावण्य इनमें एकत्र कर रक्खा है इनकी उपमाका न तो कामहै न पतिव्रता उसकी स्त्री रतिहै १७२ इस से इनका तिरस्कार करनेसे शोकके सिवाय और कुछ न होगा व पिता माता इस शोक के कारण न होंगे किन्तु मैंही हूंगी जो ये मुझको नहीं ग्रहण करते व थोड़ाभी मुझसे नहीं बोलते १७३ तो इन्हीं के सदैव स्मरण से मुझे शोक से उत्पन्न मृत्युहोगी विना अपराधही शीघ्र मेरी ऐसी दशा होजायगी १७४ व कुचों की मणिशोभा के लिये निर्म्मल कमलवत् द्युतिमान् ब्रह्माजी हैं इसीसे इनका मुख देखतीहुई मेरा मन ध्यान को प्राप्त हुआ १७५ हे जीव ! जो तुम इन ब्रह्माजी के अंगों के स्पर्श से अपने को बहुत न मानोगे तो तुम शरीर धारण कियेहुये वृथाही न घूमोगे अर्थात् वृथाही घूमोगे १७६ अथवा इस जीवका कुछ भी दोष नहीं है क्योंकि हे स्मर ! तुम्हीं स्वेच्छाचारकहो व इन ब्रह्माजी के सौन्दर्य्यादिगुणों से छलेगये हो इससे निश्चय करके अब अपनी प्रिया रति की रक्षा करो १७७ क्योंकि हे स्मर ! जिससे कि रूप में यह ब्रह्माजी तुमसे भी अधिक देखेजाते हैं इस से इन ब्रह्माजी ने हमारा सर्वस्व मनोरत्न दृढ़ता पूर्वक हरलिया है १७८ क्योंकि जो शोभा इन के मुख में दिखाई देती है वह चन्द्रमा में भी नहीं है क्योंकि सकलंक चन्द्र की उपमा इनकी कैसे होसक्ती है ये तो निष्कलंक हैं १७९ इसीप्रकार जल में

कमलभी इन के नेत्रों के समान नहीं है ऐसेही जलशंख इन के शंखरूपी कानों की उपमा नहीं होसक्ते १८० मूँगा इन के अधरों की उपमा को किसीप्रकार नहीं पासक्ते इससे अपने शरीर में अंग अंग प्रति भरेहुये अमृतको ये चुआरहे हैं १८१ यदि हमने सैकड़ों जन्मोंमें कुछ पुण्य कररक्खा हो तो उसीके प्रसादसे फिरभी यही हमारे स्वामी हों बस यही हम चाहती हैं १८२ इसप्रकार चिन्तासे युक्तहोकर वह गोपकन्या विचारतीही थी कि तबतक ब्रह्माजी यज्ञ कर्म्म में शीघ्रता होने के लिये श्रीविष्णुजी से यह वचन बोले कि १८३ कि हे प्रभो ! यह महाभागा देवी जो आई है इसका गायत्री नाम है ऐसा कहने पर उसी समय विष्णुजी ब्रह्माजी से यह वचन बोले कि १८४ हे जगत्प्रभो ! मुझकरके दीहुई इस गायत्रीके साथ गान्धर्वविवाह की रीति से विवाहकरो इस में विकल्पना व देरी न करो १८५ हे देव ! गायत्रीके इस कोमल हाथको तुम ग्रहणकरो ऐसा सुनकर ब्रह्माजीने गान्धर्व्वविवाह की रीति से उस के संग विवाह करलिया १८६ उस उत्तम पत्नी को पाकर ब्रह्मा जी अध्वर्य्यु से बोले कि हमने इनको अपनी पत्नी करलिया इससे इन्हें सदन में प्रवेश करावो १८७ तब सब वेदपारगामी ऋत्विजोंने एक मृगशृंग उन के हाथ में पकड़ाकर व रेशमी वस्त्र पहिना उढ़ाकर जाय पत्नीशाला में बैठाया १८८ ॥

दो० अरु औदुम्बरदण्डकर धरिमृगचर्म्मविधारि ॥
शोभितभे मखराजमहँ विधि निजधाम उजारि १८९ ॥
तब श्रुतिपारग विप्रवर अग्निहोत्र आरम्भ ॥
भृगुमुनिसँग सबकर्म्म वेदोक्तकीन्ह तजिदम्भ ॥
इमि सो यज्ञ सहस्रसम पुष्करतीर्थ मँझारि ॥
भयहुवेदविधिसों सकल सकलभांति हितकारि १९० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेगायत्रीसंग्रहो नामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

दो० सत्तरहें अध्यायमहँ सावित्री सबकाहिं ॥
दीनशाप गायत्रि पुनि आशिष दीन्हीं ताहिं १
विष्णुरुद्रमिलिदुहुनकी कीन्हींस्तुति बहुभांति ॥
यज्ञकर्म्म विस्तारयुत वर्णित यहां सशांति २

भीष्मजीने पूछा कि उस यज्ञमें कौन कौन आश्चर्य्यहुये हे द्विजसत्तम ! रुद्र उस यज्ञमें कैसे स्थितरहे व विष्णुभगवान् कैसे स्थित रहे १ व हे मुने ! गायत्रीजीने ब्रह्माजी की पत्नी होकर कौन कौन काम किया व अहीरों ने अपनी कन्या के समाचार जानकर क्या किया २ यह सब वृत्त जैसे हुआहो जिसने जो कियाहो हम से सब कहो जो अहीरों ने कियाहो व जो ब्रह्माजी ने किया हो सब कहो हमको इसके सुनने की बड़ी इच्छा है ३ यह श्रवण करके पुलस्त्य मुनि बोले हे राजन् ! उस यज्ञ में जो आश्चर्य्य हुआ सब कहते हैं एकाग्रमन होकर सुनो ४ उसमें रुद्रजी ने सभा में आकर बड़ा भारी आश्चर्य्य किया वे निन्द्यरूप धारण करके सभा में बैठे हुये ब्राह्मणों के समीप आये ५ श्रीविष्णुजीने कुछ आश्चर्य्य की बात नहीं की जैसे प्रधानमानकर स्थापित कियेगयेथे वैसेही प्रधानता के साथ स्थित रहे व गोप की कन्या का नाश जानकर सब गोपकुमार व गोपियां ब्रह्माजीके निकटआईं व अपनी कन्या गायत्री को यज्ञशाला में बैठी मृगचर्म्म व रेशमी वस्त्र धारण किये हुये देखकर ६।७ माता नें कहा हा पुत्रि ! फिर पिताने कहा हा पुत्रिके ! भाई बन्धुओं ने कहा हा स्वसः ! सखियोंने कहा हा सखि ! ८ तुमको यहां कौनलाया व तुम्हारे पैरोंमें म्यहाउर कैसेलगा व सारीको छोड़कर यहां कम्बल ओढ़कर बैठीहो ९ व जटारखाये हो व ये लाल सूत्रके कपड़े पहिनेहो इसप्रकार उन गोपादिकों के वचन सुनकर स्वयं पुरन्दरदेव बोले कि १० इस तुम्हारी कन्या को हम ब्रह्माजीकी पत्नी बनानेकेलिये यहां लाये हैं सो बनाभीदिया अब ब्रह्माको तुम्हारी कन्या प्राप्तहोगई वृथा प्रलाप न करो ११ यह अतिपुण्यवती व भा-

ग्यवती व तुम सबोंके कुलके आनन्ददेनेवाली है जो पुण्यवाली न होती तो इस सभामें क्यों आती १२ ऐसा जानकर हे महाभाग ! तुम शोककरनेके योग्य नहींहो गोप तो इन्द्रके कहने से चुप होरहे तब श्रीविष्णुभगवान् गायत्रीके पिता गोपसे बोले उस बोलने के समय गोपों की बड़ाईकर बड़ीप्यारी बोलीसे बोले हे सदाचारनिष्ठ गोप ! तुम शोक करने के योग्य नहीं हो क्योंकि यह तुम्हारी कन्या बड़ी भाग्यवती है इससे ब्रह्माजीको प्राप्तहुईहै १३ जिस गतिको योगयुक्त योगीलोग व वेदपारगामी ब्राह्मणलोग जब प्रार्त्थना करते हैं तब भी नहीं पाते हैं उस गतिको तुम्हारी कन्या प्राप्तहुई १४ सो हमने आप को धर्मवान् सदाचारनिष्ठ धर्मवत्सल जाना था इसीसे यह तुम्हारी कन्या ब्रह्मा जी को दिलाई है १५ इस कन्यासे तारेहुये तुम दिव्य लोकों को जावोगे जहां बड़े २ उत्तम पदार्त्थ भोगोगे व तुम लोगों के कुल में देवताओं के कार्य्य की सिद्धि के लिये १६ हम अवतार लेंगे वहां रासक्रीड़ादि करेंगे जब नन्दादिकों का जन्म पृथ्वी पर होगा तभी हम भी अवतार लेंगे तब तुमलोगों की सब कन्या हमारे संग बसकर क्रीड़ा करेंगी १७ । १८ पर उसमें न कुछ हमारी कृपा से दोष होगा न अप्रीति न आपसका मत्सर सब गोपलोग व अन्य मनुष्यलोग कुछ भय न करेंगे १९ इस हेतु इस कर्म्म से इस तुम्हारी कन्या को कदापि कुछ दोष न होगा श्रीविष्णुभगवान् का ऐसा वचन सुनकर प्रणाम करके आदरपूर्व्वक गोप बोला कि हे देव ! जो वर आपने दिया उसको पूरा कीजियेगा हमारे ऊपर बड़ी कृपाहोगी हमारे कुल में अवश्य आप अवतार करें क्योंकि उससे बड़े बड़े धर्म्म सिद्ध होंगे २० । २१ व आप के दर्शनही से हम सब परिवारसहित स्वर्ग्गवासी होंगे यह कन्या बड़ी शुभदायकहुई क्योंकि इसीके कारण कुलसहित हमारी मुक्तिहोगी २२ हे देवेश ! हे विभो ! आपका वरदान ऐसाही हो इस प्रकार विष्णुभगवान् ने गोपको अपने घरको जानेकी आज्ञादी व अनुग्रह किया २३ फिर ब्रह्माजी ने बायें हाथ से गोपों को अपनी ओर को बुलाया तब ब्रह्माजीके संग बैठीहुई अतिरूपवती गायत्री

गोपकन्या अपने माता पिता आदि भाई बन्धुओं व सखियोंको देख लज्जित हो २४ बायें हाथसे प्रणाम करके बोली कि तुमलोगों ने किससे मेरे समाचार पाये जो यहाँ आये हो हमको तो इन्द्र यहाँ लाये २५ । २६ व अब जगत्पतिकी स्त्री होगई हे मातः! आपलोग हमारा अब कुछ शोक न करें २७ ये सब हमारी सखियाँ व पतियों सहित बहिनियां अब अपने अपने स्थानको जायँ हम बहुत अच्छे प्रकारसे हैं हमारी ओर से सबकी कुशल आपलोग पूँछेंगे व कहेंगे कि वे अब देवताओं के मध्यमें विराजमान ब्रह्माजी की भार्य्या हुईं २८ यह सुनकर जब वे सब चलेगये तो सुन्दर मध्य भागवाली गायत्रीजी यज्ञशालामें ब्रह्माजीके पास जाकर बैठीं २९ व ब्राह्मणों ने ब्रह्माजी से प्रार्थनाकी कि हे ब्रह्मन्! हमको वाञ्छित वरदान दो ब्रह्माजी ने उन सब ब्राह्मणों को यथेच्छ वरदिया ३० इसके पीछे उस दियेहुयेवरदान को देवी गायत्रीजीने अनुमोदन किया तदनन्तर यज्ञमें देवतों के समीप साध्वी गायत्रीजी स्थित होती भईं ३१ व देवताओं के सौ वर्ष से कुछ अधिक वर्ष पर्य्यन्त वह यज्ञ होतारहा एक समय महादेवजी यज्ञशाला में भिक्षा मांगनेके लिये आये ३२ पंचमुण्डों से अलंकृत व एक बड़ीभारी मनुष्य की खोपड़ी हाथमें लिये आकर ऋत्विज् सदस्यादिकों के बनाय समीप बैठगये रूप यद्यपि उनका अतिनिन्दित था खोपड़ी लियेहीथे पर बैठे समीपही ३३ तब वेदवादी उन ब्राह्मणोंने कहा कि तुम ऐसा निन्दित वेष बनाये यहां यज्ञमें कैसे चलेआये यद्यपि ऐसा कहकर ब्राह्मणों ने बहुत दुत्कारा व निन्दाकी खेदाभी पर वे वहांसे न उठे ३४ कुछ हँसकर महादेवजी उन ब्राह्मणों से बोले हे ब्राह्मणो! सबको सन्तुष्ट करनेवाले इस ब्रह्माजीके यज्ञमें हमको छोड़ और कोई नहीं निकालाजाता हम कैसे निकालेजाते हैं तब ब्राह्मणोंने कहा अच्छा अन्न भोजन करलो तो यहांसे चलेजाओ ३५ । ३६ महादेवजीने कहा अच्छा भोजनमिले हम खालें फिर चलेजायँगे इतना कहकर आगे वह मुर्दाकी खोपड़ी धरकर बैठगये ३७ पर उन ब्राह्मणों का वैसा कर्म्म देखकर शिवजीने कुटिलता की कि पृथ्वीपर कपाल को छोड़

ब्राह्मणों की ओर मुखकरके ३८ बोले कि हे ब्राह्मणो ! हम पुष्करमें स्नानकरने जातेहैं उन्होंने कहा बहुत अच्छा शीघ्र जाओ तब महादेव चलेगये ३९ परं आकाश में स्थितहो सब देवताओं को अपने कौतुक से मोहित करगये जब महादेव स्नानके लिये चलेगये तो सब ब्राह्मणलोग ४० कहनेलगे कि अब सभामें यह अपवित्र कपाल धराहै हमलोग यहां होम कैसेकरें क्योंकि प्रजापतिजी ने पूर्व्वकाल में कहाहै कि जबतक कपाल कहीं धरारहता है तबतक वह स्थान अपवित्र रहताहै ४१ ब्राह्मणों के बीचमें से एक सदस्य ने कहा हम इसे उठाकर फेंके देतेहैं इतना कहकर हाथसे उठाकर उसने सभाके बाहर फेंकदिया ४२ तबतक देखा तो जहां वह धरा था दूसरा और कपाल दिखाई दिया उसे भी उठाकर फेंका उस के स्थानपर और दिखाई दिया इसप्रकार दूसरा तीसरा बीसवां तीसवां पचासवां सववां हजारवां दशहजारवांतक फेंका हे राजसत्तम ! जब इस प्रकार ब्राह्मणों को कपालों का अन्तही न मिला कि कितने हैं ४३ । ४४ तब शिवजी की स्तुति करनेके लिये सबदेव पुष्करतीर्थ में जाकर महादेवजी को नमस्कारकर शरणागतहो वैदिकजन्य मन्त्रों से बड़ी स्तुतिकी तो शंकरजी संतुष्ट हुये तदनन्तर ब्राह्मणों की भक्तिसे शिवजीने दर्शनदिया ४५ । ४६ व बोले कि हे ब्राह्मणो ! अच्छा अब हमने अपना कपाल उठालिया तुमलोग यज्ञ कर्म्मकरो सिद्धहोगा हमने तुम लोगोंका वचन मानलिया ४७।४८ ब्राह्मणों ने कहा बहुत अच्छा हम आपकी आज्ञाके अनुसार अब यज्ञकर्म्म करने जातेहैं तब कपाल हाथमें लेकर महादेवजी भगवान् ब्रह्माजी से बोले कि ४९ हे ब्रह्मन् ! तुम्हारे हृदय में जो प्रिय स्थित हो वह वर हमसे मांगो हे प्रभो ! हम सबकुछ तुमको देंगे अदेय कुछभी नहीं है इससे चाहो जो मांगो ५० यह सुन ब्रह्माजी बोले कि हम इससमय यज्ञ में दीक्षित हैं तुमसे कुछ भी नहीं मांगेंगे इससमय तो हमीं सबको वाञ्छित वर देते हैं चाहे जो हम से मांगे ५१ ऐसा कहतेहुये ब्रह्माजी से अच्छा हमीं कभी तुमसे वर मांगेंगे यह कहकर महादेवजी चलेगये ५२ बहुत दिनों के पीछे जब वह

मन्वन्तर बीतगया तो फिर महादेवजी घूमते घूमते उधर निकले
तो दूसरे मन्वन्तर में भी ब्रह्मा वहीं यज्ञ कर रहे थे ५३ निश्चय
करके चारों वेदों में पंरनिष्ठा को प्राप्त शिवजी उससमय प्रथम
नगर के बाहर घूमघामकर फिर ब्राह्मणों को आश्चर्य्यित करने के
लिये उसी उन्मत्त वेषसे नग्न व अपना लिंग बायें हाथसे पकड़े
ब्रह्माजी की सभा में आये ५४ । ५५ व ब्राह्मणश्रेष्ठोंने शिवजी को
नंगधड़ंग ब्रह्माजी के सदन में चले आते देखा तो उनमें से कोई
कोई ब्राह्मण उनको हँसने लगे और कोई कोई बकने झकने लगे
५६ व कोई २ उन्मत्त जानकर मिट्टीआदि उनके ऊपर झोंकने लगे
कोई २ बलसे गर्ववान् ब्राह्मण ढीलोंसे व लट्ठोंसे मारनेलगे व पर-
स्पर एक दूसरे का हाथपकड़ उनके नङ्गे वेष आदिका अनुकरण व
हँसौवा करने लगे फिर और बरुओं ने जटा पकड़ उनको समीप में
घसीट ५७ । ५८ पूँछनेलगे कि तुमको यह व्रतचर्य्या किसने सिखाई
है जो सबकहीं नङ्गे घूमतेहो यहाँ सुन्दरी स्त्रियाँ हैं उनके लिये तुम
यहां आयेहो ५९ अये किसपापी गुरुने तुमको इस व्रतचर्याका
मार्गदिखायाहै जिससे तुम विक्षिप्तके समान बकतेहुये इधर उधर
दौड़ते फिरतेहो ६० यह सुन महादेवजी बोले कि हमारा शिश्नतो
ब्रह्माका रूप है और भग सब जनार्दनके रूपहैं व तुमलोग हमारा
वीर्य्यहो फिर लोग वृथा हमको क्लेश देते हैं ६१ हमींने पुत्र उत्पन्न
किया है व उस पुत्रमें हमीं उत्पन्नभी हैं इससे हमारीही कीहुई सब
सृष्टि है व हमींने अपनी भार्य्या हिमालय के यहां उत्पन्न की है ६२
उसमें उमा रुद्रको देदी है बताओ वह किसकी कन्या है हे मूढ़ो !
तुम सबलोग इसबात को नहीं जानते हो भगवान् ब्रह्माजी तुम
लोगों से कहेंगे ६३ व यह चर्या न ब्रह्माजी ने की है न विष्णुजी
ने दिखलाई है किन्तु " ब्रह्मवध्याकृत " अर्थात् ब्राह्मणों से मारने
योग्य आकारवाले वास्तवसे तो वेदों द्वारा प्राप्तहोने योग्य आकार
वाले शिवजी ने की है व दिखलाई है ६४ ब्राह्मणों ने कहा कि तुम
महादेव की क्यों निन्दा करते हो निश्चय करके इसी समय तुम
हम लोगों करके मारडालने योग्य हो ऐसा कहकर मारने लगे तब

हे नृपसत्तम भीष्मजी ! शंकरजी कुछ हँसके बोले कि हे ब्राह्मणो ! नष्टचित्त उन्मत्त हमको दयावान् आप लोग क्यों मारते हो ऐसा कहतेहुये गुप्तरूप धारण कियेहुये जटाजूटधारी शिवजी को वे माया से मोहित ब्राह्मण लोग औरभी हाथों लातों मुट्ठियों से मारने लगे ६५ । ६८ दण्डों व लोहे की शलाकाओं से भी पीटने लगे जब उन लोगोंने बहुत शिवजीको पीड़ितकिया तो उन्होंने बड़ा कोपकिया ६९ व सब ब्राह्मणोंको शापदिया कि कलियुग में तुम लोग वेदविवर्ज्जित होजाओगे बड़ी २ जटा रक्खाओगे यज्ञकर्म्म से भ्रष्टहोजाओगे व पर स्त्रियोंके संग भोगकरोगे ७० वेश्यामें रतहोगे व जुआखेलने में पिता मातासे रहित हो जावोगे व किसी पुत्रको अपने पिताका धन न मिलेगा व न किसीका पुत्र पण्डितहोगा ७१ बस ब्राह्मण मोहित बने रहेंगे व बहुधा नपुंसकादि रोगों से युक्तरहेंगे रुद्रके शिवालय की भिक्षालेंगे व शूद्रोंके श्राद्धों में भोजनकरेंगे ७२ बस अपने २ प्राणकी रक्षाकरतेरहोगे अन्यकिसीका पालन पोषण न करसकोगे सबोंसे परस्पर विरोधरहेगा व धर्म्मरहित होजाओगे व जिन ब्राह्मणों ने हमको उन्मत्तहोनेपर कृपादृष्टि से देखाहै कुछ मारा पीटा नहीं ७३ उनके वंशमें धन पुत्र दासी दास गोधन छागादि सब होंगे व उन के घरकी स्त्रियांभी कुलीन और सुशीलतादि गुणोंसे युक्तहोंगी ७४ इसप्रकार ब्राह्मणों को शाप व वर दोनों देकर शिवजी अन्तर्द्धानहो गये अन्तर्द्धान होजानेपर उन ब्राह्मणोंने जाना कि ये शिवजीथे ७५ इससे दूर २ जाकर बहुत ढूंढ़ा पर उनको जब न देखा तब नियम युक्त होकर सबके सब पुष्करारण्य में आये ७६ व ज्येष्ठपुष्कर कुण्ड में स्नानकरके शतरुद्रिय जपनेलगे जप करने के पीछे उनब्राह्मणोंसे शिवजी आकाशवाणी से बोले कि ७७ हमने कभी झूंठ हँसौआकरने में भी नहीं कहा परन्तु अब तुम लोग फिर शरणमें आयेहो इससे हम फिर भी क्षेम करेंगे ७८ जो ब्राह्मण शान्त व दान्त होकर हममें स्थिरभक्तिकरेंगे उनके वेद न छिन्नहोंगे अर्थात् वे वेदाभ्यास करेंगे व उनका धनभी न नष्टहोगा न सन्तति ही नष्टहोगी ७९ व जो ब्राह्मण नित्य अग्निहोत्र क्रियाकरेंगे व जो श्रीजनार्दनभगवान् के

भक्त होंगे व जो ब्रह्माकी पूजाकरेंगे तथा तेजोराशिसूर्य्य का पूजन करेंगे ८० व जो सब इन देवताओंको समान समझेंगे उनको अशुभ कभी न होगा इतना कहकर वह आकाशवाणी चुप होगई ८१ इस रीति से देवदेव महादेवसे वर पाकर सब ब्राह्मण लोग जहां ब्रह्माजी थे वहां आये ८२ व सब आगे स्थित होकर वेदमन्त्रों से ब्रह्माजी की स्तुतिकरनेलगे तब प्रसन्नहो ब्रह्माजीने उन ब्राह्मणोंसे कहा कि हमसेभी तुमलोग वरमांगो ८३ ब्रह्माजी के उस वचनसे सब ब्राह्मणलोग हर्षितहुये व आपस में कहनेलगे कि हे ब्राह्मणो ! पितामहजी की प्रसन्नतामें कौनसा वर मांगोगे ८४ तब उन में से कोई बोले कि बस अग्निहोत्र करना, वेद पढ़ना, विविधप्रकारके शास्त्रों में अभ्यास करना व सन्तानयुक्त होना व सन्तानवालों के लोकों में जाना यही वर मांगना चाहिये ८५ इसप्रकार परस्पर कहतेहुये ब्राह्मणों में बड़ा क्रोधहुआ व कहनेलगे कि तुम कौनहोतेहो व तुमको श्रेष्ठता कहां से आई व अवस्था में भी श्रेष्ठ नहींहो ८६ इसप्रकार उन्होंने उनके पक्षकी निन्दा की उन्होंने उनके की व तीसरोंने उनदोनों वर्गवालोंकी उनका झगड़ा देख ब्रह्माजी सबोंसे बोले कि तुम सबलोग क्रोधयुक्त होगयेहो एकसम्मत नहीं हुआ ८७ और जिससे कि सभाके बाहर तीन भागकरके तुम लोग स्थित हुये हो इससे तुम ब्राह्मणों का एकगण आमूलिकके नाम से प्रसिद्ध होगा ८८ व जो उदासीन होकर इस विषयमें रहगयेथे वे उदासीन कहावेंगे व जो अस्त्रलेकर युद्धकरने के लिये उद्यत हुयेथे उनके गणका कौशिकी नामहोगा अब यह तुमलोगों का स्थान तीनप्रकारसे हमने बांधदिया ८९ । ९० अब बाहरवालोंको सबप्रजा आमूलिकके नाम से पुकारेंगे व उनदोनों को उन दोनामोंसे व पुष्करतीर्थ में भी तुम तीनों के नामसे स्थान नियतहोजायँगे व सब तुमलोगों का पालन श्रीविष्णुभगवान् करते रहेंगे ९१ मुझसे दियाहुआ बहुत काल तक स्थित रहनेवाला यह स्थान भंग न होगा ऐसा कहकर ब्रह्माजी चुप होजाते भये ९२ इनमें जिन्हों ने वेद शास्त्र पढ़ने व अतिथि सत्कारादि करनेकी इच्छाकी है व अग्नि ब्राह्मणोंका सत्कारकरेंगे

वेही लोग इस उत्तम ब्रह्मसंज्ञित पुष्करतीर्थ में बसेंगे व जो लोग शान्तचित्त होकर इसतीर्थ में बसेंगे ९३ । ९४ उन ब्राह्मणोंको ब्रह्मलोकमें कुछ दुर्लभ न होगा व कोकामुख, कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य, वाराणसी, प्रभासक्षेत्र, बदरिकाश्रम, गंगाद्वार, प्रयाग, गंगासागरसंगम, रुद्रकोटि, विरूपाक्षतीर्थ, मित्रवन व अयोध्यापुरी इनतीर्थों में बारह वर्ष वास करनेसे जो सिद्धि होतीहै ९५ । ९७ हे राजसत्तम भीष्मजी! वही सिद्धि जो पुष्करमें बसेंगे तो छःमासमें प्राप्तहोती है व यदि ब्रह्मचर्य्य से बसेंगे तो उन्हें प्राप्तहोने में कुछ सन्देहही नहींहै ९८ तीर्थोंमें परमतीर्थ, क्षेत्रोंमें उत्तम क्षेत्र, पितामहजी में भक्तियुक्त पूज्य पुरुषोंसे सदा पूजित, पुष्करतीर्थ है ९९ इसके पीछे सावित्री व ब्रह्माजीका जो वाद विवादहुआ जिसमें बड़ाभारी परिहासहुआ वह कहते हैं १०० जब सावित्रीजी यज्ञमें आईं तो सब देवोंकी स्त्रियांभी संग आईं भृगुमुनिसे ख्यातिनाम उनकीस्त्री में उत्पन्न परमयशस्विनी श्री विष्णुकी पत्नी लक्ष्मीजी भी आमन्त्रित होनेसे शीघ्र आईं महाभागा, मदिरा, योगनिद्रा, विभूतिदा १०१ । १०२ कमलालयाश्री, भूति, कीर्ति, श्रद्धा, मनस्विनी, पुष्टितुष्टिप्रदा इत्यादि सबदेवियां वहांआईं १०३ दक्षतनयासती, उमा, पार्व्वती जोकि त्रैलोक्य में सुन्दरीदेवी हैं व सबस्त्रियोंको सौभाग्यदेती हैं १०४ जया, विजया, मधुच्छन्दा, अमरावती, सुप्रिया, जनकान्ता ये सब सावित्री के मन्दिर में गौरीके साथ आभरणादि पहिन सुन्दरवेष बना के आईं पुलोमकी कन्या महाअप्सरा इन्द्राणी १०५ । १०६ स्वाहा, स्वधा, धूमोर्णा, वरानना, यक्षी, राक्षसी, गौरी, महाधना १०७ वायुकीस्त्री मनोजवा, कुबेरकी स्त्री ऋद्धि, सबदेवकन्या दानवी सब दानवोंकी स्त्रियां १०८ सप्तर्षियों की सब महापत्नियां ऐसेही और ऋषियोंकी युवतियां इसीप्रकार इन सबोंकी भगिनियां व बेटियां व सब विद्याधरियां १०९ बहुतसी राक्षसोंकी कन्या पितृकन्या व लोकमाता अपनी २ वधुओं व स्नुषाओं सहित सब सावित्री के निकटआईं ११० अदित्यादिक सब दक्षकी कन्याभी आईं इन सबोंके बीचमें विराजतीहुई ब्रह्माणी व लक्ष्मी दोनों अत्यन्त शोभित होतीथीं १११ इनमें कोई तो लड्डूलेकर कोई शूर्प

लियेहुई कोई फलही हाथों में लिये सब श्रेष्ठस्त्रियां ब्रह्माजी के निकट आगईं ११२ कोई अरहरकी दाल कोई मूंगकी कोई उर्दकी कोई शिखरनि कोई विचित्र अन्नार कोई बिजौरानींबू ११३ कोई करीरके फल कोई कमल हाथमें लिये कोई कुसुम्भ के फूल कोई जीर कोई खजूर के फल लिये ११४ कोई २ उत्तम नारियललिये कोई मुनक्कों से भरेहुये पात्रलिये कोई २ सिंघाड़ों से पूरित भाजन लिये ११५ कोई २ विचित्रकपूर हाथमें लिये कोई फरेंदेलिये कोई अखरोट कोई अँवरा कोई जम्बीरीनींबूही लिये ११६ कोई पक्केबेल हाथमें लिये जोकि पकजाने से बनाय पीले होगये थे कोई २ कपास की रुई हाथमें लिये कोई २ कुसुम्भ से रँगावस्त्रही लिये ११७ इसीप्रकार बहुतसी वस्तु सब स्त्रियां शूर्पोंमें लियेहुये सावित्रीजी के संग एक बारगी आगईं ११८ सावित्रीजीको आईहुई देखकर इन्द्र बहुतडरे व ब्रह्माजीने नीचे मुख करलिया कि ये हमको क्याकहेंगी ११९ विष्णुभगवान् व रुद्र ये भी बहुत लज्जितहुये सब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यलोग व सब सभासद्भी भयभीत हुये ऐसेही और देवगणभी डरे १२० सब पुत्र, पौत्र, भागिनेय, मातुल, भ्राता, ऋभुनाम देवता व देवताओं के भी सब्रदेव १२१ सब विस्मित हुये कि देखें अब सावित्रीजी क्या कहेंगी व ब्रह्मा कौन वचन कहेंगे व गोपकन्यका कौन वचन बोलेगी १२२ अब सब इकट्ठे होकर आपस में कहने सुनने लगे कि देखो जब अध्वर्य्यु बुलानेगया तब तो ये नहीं आईं अब आई हैं १२३ यहां इन्द्रने दूसरी गोपकन्या लेकर ब्रह्माजीको देदिया विष्णुभगवान्ने भी उसका अनुमोदनकिया व रुद्रनेभी अनुमोदन किया व उसके पिताने आकर अपने आपभी देदिया १२४ अब नहीं जानते कि यज्ञ कैसे होगा व समाप्तिको कैसे पहुँचेगा इस प्रकार सब विचार करतेही थे कि सावित्री व लक्ष्मी दोनों सहित समाज आगईं १२५ उधर सदस्यों, ऋत्विज् ब्राह्मणों व देवतों के बीचमें बैठेहुये ब्रह्माजी यज्ञकररहेथे व वेदपारग ब्राह्मणों द्वारा अग्निमें आहुतियां पड़रही थीं १२६ व मृगचर्म्म, मेखला, रेशमीवस्त्र धारणकिये परमपद को ध्यान करतीहुई गोपकन्या पत्नीशाला में

बैठीथी १२७ जो कि महापतिव्रता पतिप्राणा प्रधानतासे निवेशित कीगईथी रूपसे युक्त विशालाक्षी तेजसे सूर्य्यके समान १२८ उस सभा को ऐसे प्रकाशित करतीथी जैसे सूर्य्य की प्रभा सबको प्रकाशित करती है व सब ऋत्विज् लोग प्रज्वलित अग्नि में आहुतियां छोड़तेथे १२९ पशुओं के व अपनी २ खीरके भागभी सब देवता आनन्दयुक्त ग्रहण कररहे थे यज्ञके भागोंके अर्थी देवगण विलम्ब से बोलतेथे कि १३० कालहीन यज्ञ न हो क्योंकि उसमें फल नहीं मिलता है यह बात वेदोंमें लिखीहैं सब बुद्धिमानोंने देखीहै १३१ वेदपारग ब्राह्मणलोग हव्यकव्य दोनों प्रकारकी खीरोंसे आहुति करतेथे व सब देवताओं को अलग २ भाग देतेथे १३२ ऐसे किये जातेहुये यज्ञको देख सावित्रीजी बड़े क्रोधसे युक्त होकर सभाके मध्यमें मौनव्रतधारी ब्रह्माजीसे बोलीं हे देव! क्या विचारकरके तुम ऐसाकरनेलगे १३३।१३४ जो कि हसको छोड़कर कामके वशीभूत होकर तुमने ऐसा किल्बिष कर्म्म किया फिर जिसको तुमने शिरसे अंगीकार कियाहै वह हमारे चरणकी धूलिकेभी तुल्य नहींहै १३५ जो तुम्हारी सभाके बैठनेवाले पुरुष कहें उन्हीं ईश्वरभूतों की उस आज्ञाको करो यदि इच्छा करतेहो ? १३६ हे प्रभो! रूपके लोभसे आपने लोकनिन्दित कर्मकिया ? तुमने पुत्र, पौत्र, किसीसेभी लज्जा न की १३७ यह जो निन्दितकर्म्म तुमने कियाहै हम यही मानती हैं कि केवल कामहीके वशहोकर कियागया है सो देवताओंके पितामह व ऋषियोंके प्रपितामह होकर १३८ तुमको अपना यह देह देखकर कैसे लज्जा नहीं आती सब लोगोंके आगे तुमने दासी को बैठालिया व हे प्रभो! हमको नीचे डालदिया १३९ हे देव! जो तुम्हारा यह स्थिर अभिप्राय है तो बैठेरहो हम नमस्कार करती हैं भला हम अपनी सखियोंके आगे कैसे मुहँदिखावेंगी १४० व हम यह सबसे कैसे कहेंगी कि हमारे पतिने दूसरी स्त्री करली है ब्रह्माजी यह सुनकर बोले कि यज्ञका काल बीताजाताथा इससे ऋत्विजों ने हमसे कहा कि शीघ्रही पत्नीको यहां बुलाओ तब तुम्हारे आनेमें विलम्ब जानकर इन्द्रद्वारा यह स्त्री लाईगई है और मुझे श्रीविष्णु

भगवान्ने दीहै १४१ । १४२ हे सुभ्रु ! तब हमने इस स्त्रीको ग्रहण कियाहै अब हमारे इस अपराध को क्षमाकरो हे सुव्रते ! अब फिर हम तुम्हारा कोईभी अपराध न करेंगे १४३ अब तुम्हारे चरणोंपर पड़ते हैं इस अपराध को क्षमाकरो तुम्हारे लिये नमस्कार है पुलस्त्यजी भीष्मसे बोले कि जब इस तरह ब्रह्माजीने कहा तो अतिक्रोधयुक्त होकर उनको शाप देनेपर उतारूहुई कुछभी ब्रह्माजी की बातका विचार न किया १४४ कहा कि जो हमने कुछ तप कियाहो व अपने गुरुओं को सन्तुष्ट कियाहो तो सब ब्राह्मणों के समूहों में व सब स्थानों व विविध तीर्थोंमें १४५ कोईभी ब्राह्मण तुम्हारी पूजा आजसे न करेगा बस केवल कार्त्तिककी पूर्णमासी को तुम्हारी पूजा सब कोई करेंगे और कभी नहीं यह हमारे शापका प्रभावहै स्वर्गादि लोकोंमें चाहे कोई करेभी पर मर्त्यलोक में ब्राह्मण क्या कोईभी वर्ण न करेगा यह समझकर जो कोई तुम्हारी पूजाकरेगा तो उसे हमारा कोप नष्ट करदेगा चाहे जो हो ब्रह्माजी को ऐसा शाप देकर इन्द्रसे बोलीं १४६ । १४७ हे इन्द्र ! तुमने ब्रह्माके निकट एक अहीरी लेकर बैठादी है जिससे कि तुमने यह क्षुद्रकर्म्म कियाहै इससे इस का फल पाओगे १४८ जब तुम संग्राम में शत्रुओं के सम्मुख खड़े होओगे तब शत्रु तुमको पकड़ लेजायँगे व परमदुर्दशा करेंगे १४९ शत्रुओं के नगर में स्थितहो तुम कुछभी न करसकोगे सब तुम्हारा बल नष्ट होजायगा इस बड़े भारी अनादर को पाकर शीघ्रही छूट भी जाओगे १५० इन्द्र को शापदेकर सावित्री श्रीविष्णुभगवान् से बोलीं कि जब भृगुके वचन से तुम्हारा जन्म मर्त्यलोकमें होगा तो १५१ वहां तुम भार्य्याके वियोगसे उत्पन्न दुःख सहोगे व तुम्हारी स्त्रीको तुम्हारा शत्रु समुद्रके उस पारको हरलेजायगा १५२ व मारे शोकके तुम ऐसे व्याकुलचित्त होजाओगे कि न जानोगे कौन लेगया है तब भाईसहित बड़े कष्ट व बड़ी आपदा में पड़ोगे १५३ व जब तुम यदुवंशियों में कृष्ण नामवाले हो जन्म लेवोगे तब पशुओंकी दासता पूर्वक बहुत कालतक भ्रमण करोगे १५४ इतना विष्णु से कहकर रुद्रजीसे क्रोधकरके बोलीं कि हे हर ! जब तुम दारुवनमें बसोगे

तो निश्चय ऋषिलोग तुमको शापदेंगे कि १५५ हे कापालिक ! हे क्षुद्र ! जिससे कि हमारी स्त्रियों को हरने की इच्छा करते हो इसी से शीघ्रही तुम्हारा यह दर्पित लिङ्ग पृथ्वीपर गिरेगा १५६ फिर तुम पुरुषार्थ विहीन व मुनि के शापसे पीड़ितहो इधर उधर घूमते रोते फिरोगे तब गङ्गाद्वार अर्थात् हरद्वार में तुम्हारी पत्नी तुमको समझावेगी १५७ रुद्रसे ऐसा कहकर अग्निसे बोलीं हे अग्ने ! तुम सर्वभक्षी होओगे व तुम्हारे पुत्र तुम्हारा बड़ा निरादर करेंगे व भृगुमुनिने तुमको पूर्वसमयमें भस्म किया है इससे हम फिर नहीं तुमको जलातीहैं १५८ क्योंकि तुमसे वेद उत्पन्न हुये हैं पर जाओ महादेव तुम्हारे मुखमें कन्दर्प पतित करके तुमको बुझादेंगे व अपवित्र वस्तुओं के खाने में तुम्हारी जिह्वा और भी प्रज्वलित होगी १५९ फिर सब ब्राह्मणों व ऋत्विजों को सावित्री ने शाप दिया कि तुमलोग कलियुगमें सब तीर्थों में दानलेओगे इससे सब व्रत तप नियम करोगे भी पर सब नष्ट होजायँगे १६० और तीर्थोंमें क्षेत्रों में लोभही से बसोगे कुछ केवल तीर्थवास की इच्छासे न बसोगे और पराये अन्नके खानेसे तृप्तहोओगे व अपने अन्नसे अतृप्त रहोगे १६१ जिनको यज्ञ न करानाचाहिये उन शूद्रों व अन्त्यजोंको भी यज्ञ कराओगे व उनके कुदान छाया शय्यादानादि ग्रहण करोगे इससे तेजसे हत होजाओगे ऐसा नष्ट धन इकट्ठा करोगे फिर वृथा अधर्म्महीं में लगाओगे १६२ व प्रेतोंका अन्न भोजन करोगे उससे तुम निस्सन्देह प्रेतही होओगे इसप्रकार इन्द्र, विष्णु, रुद्र, अग्नि, ब्रह्मा व सब ब्राह्मणोंको क्रोधपूर्वक सावित्रीजीने शापदिया व शाप देकर सभासे निकल खड़ीहुई १६३।१६४ व ज्येष्ठपुष्कर में जाकर बाहर खड़ीहुईं व लक्ष्मी, सती व इन्द्राणीआदि स्त्रियों से बोलीं कि हे युवतियो ! हम यहां सभामें न ठहरेंगी किन्तु वहीं चलीजावेंगी जहां इस यज्ञका शब्द न सुनाई देगा १६५।१६६ यह सुनकर वे सब स्त्रियां अपने २ स्थानोंको चलीगईं इस बात पर सावित्री कुपितहुईं व फिर उन सबोंको शापदेनेपर उद्यत हुईं कि १६७ जिससे हमको यहां छोड़कर सब देवताओंकी स्त्रियां चलीगईं हैं इससे

हम कोप करके अब उनको भी शापदेंगी १६८ लक्ष्मी का वास बहुत दिनोंतक एकस्थानपर कभी न होगा क्योंकि उनका बड़ाक्षुद्र व चञ्चल स्वभाव होगा व मूर्खों केही घरोंमें बसेंगी १६९ व म्लेच्छोंके घरमें पर्व्वत परके रहनेवालों के गृहोंमें व सब नष्ट स्वभाव दुराचारी पुरुषों के यहां रहेंगी मूर्ख अहंकारी शापित दुष्टात्मा इत्यादिकों के घरमें हमारे शाप से लक्ष्मी को बसनापड़ेगा इसप्रकार लक्ष्मी को शापदेकर फिर इन्द्राणी को शापदिया कि १७०।१७१ जब तुम्हारे पति इन्द्र ब्रह्महत्याकरेंगे व दुःखभागी होंगे व राज्य हरके राजा नहुष राजाहोगा तब वह तुमसे यह कहेगा कि हम इन्द्रहैं तू मूर्ख इ-न्द्राणी हमारी उपासना क्यों नहीं करतीहै जो हम इन्द्राणी के साथ भोग न करनेपावेंगे तो सब देवताओंको मारडालेंगे १७२।१७३ तब तू वहांसे डरके भागेगी और बृहस्पतिके शरणमें जायगी और बड़ेदुःख हमारे शापके कारण भोगेगी १७४ यह इन्द्राणीको शाप देकर जितनी देवोंकी स्त्रियांथीं सबको शापदिया कि जाओ तुम लोगोंमेंसे सन्तान किसीके न होगी १७५ व रात्रिदिन बन्ध्याशब्द से दूषित होने के कारण जलाकरोगी फिर इसीप्रकार गौरीको भी सावित्री ने शापदिया १७६ व खड़ीहोकर उसी स्थानपर बड़ारो-दनकिया रोतीहुई सावित्री से विष्णुजी बोले कि हे विशालाक्षि! हे सदाशुभे! रोदन न करो यहां आओ १७७ सभामेंचलो व वहां मृगचर्म्म मेखला रेशमीवस्त्र धारण करके दीक्षाको ग्रहणकरो हे ब्रह्माणि! हम तुम्हारे प्रणाम करतेहैं १७८ जब उन्होंने ऐसा कहा तो सावित्री ने कहा हम तुम्हारा वचन नहीं करती हैं हम वहां जा-वेंगी जहां शब्द न सुनें १७९ इतना कहकर सावित्री उसी पर्व्वत के ऊपर चढ़गई पर विष्णुभगवान् वहांभी जाकर आगे स्थितहो हाथ जोड़ १८० प्रणतहो व परमभक्तिमें स्थितहो स्तुतिकरनेलगे॥

श्रीविष्णुरुवाच॥

चौ० सर्व्वभूतगतसकलनिवासिनि। भूतलमहँ सर्व्वत्र प्रकाशिनि॥
सर्व्वमूलमहँ जो कुछ दीखे। तुम बिन नाहिं हम कहत सुतीखे॥
यद्यपि तम सर्व्वत्र न गोई। तदपि जहां जो नाम कहोई॥

स्मरणयोग्य सब कहत विचारी। सुनु सावित्रि सकल तनुधारी ॥
तीर्थप्रवर पुष्करमहँ तेरो। सावित्री अस नाम सुहेरो ॥
लिंगधारिणी नैमिष माहीं। विपुलाक्षी काशी म कहाहीं ॥
ललिता नाम प्रयाग विराजै। गन्धमदन कामुका सुछाजै ॥
मानस महँ कुमुदा तव नामू। गगन विश्वकाया शुभधामू ॥
गोमति गोकर्णहु तव नामा। कामचारिणी मन्दर ठामा ॥
यक रथपुरहु महोत्कट तेरा। हस्तिनपुरहु जयन्ती टेरा ॥
कान्यकुब्जमहँ गौरी नामू। मलयाचल पर रम्भा सामू ॥
एकाम्रकमहँ कीर्त्तिमुखी अस। विश्वेश्वरमहँ विश्वाको यस ॥
पुरुहस्ता कर्णिकमहँ नामा। अरु मार्ग्गदा किदार सुधामा ॥
हिमगिरि पर नन्दा कह लोगू। गोकर्णे भद्रकाली योगू ॥
स्थाण्वीश्वर महँ नाम भवानी। बिल्वपत्रिका बिल्वे जानी ॥
श्रीगिरि पर माधवी कहावत। भद्रेश्वर पर भद्रा गावत ॥
जया वराह शैल पर नामा। कमलालय पर कमला वामा ॥
रुद्रकोटि महँ है रुद्राणी। कालञ्जरगिरि काली भाणी ॥
कपिला महालिंग पर नामा। कर्क्कोटके शुभेश्वरि वामा ॥
शालिग्राल महादेविका। जलप्रिया शिवलिंग सेविका ॥
नाम कुमारि मयापुरि माहीं। सन्ततिललित कुधरपर काहीं ॥
सहस्राक्ष पर उत्पल नयना। माहोत्पला हेमाक्ष सुवयना ॥
अरु मंगला गयामहँ नामू। विमला है पुरुषोत्तमधामू १८१। १९२

और विपासा नदी के निकट अमोघाक्षी, पुण्यवर्द्धन स्थान में पाटला, सुपार्श्व नाम स्थान में नारायणी, त्रिकूटपर्व्वत पर भद्र सुन्दरी तुम्हारा नामहै १९३ विपुलस्थान में विपुला, मलयाचल पर कल्याणी, कोटितीर्थ में कोटवी, माधवीवन में सुगन्धा नाम है १९४ कुब्जाम्रक स्थान में त्रिसन्ध्या, गंगाद्वार में हरिप्रिया, शिवकुण्ड स्थान में शिवानन्दा, देविका नदी के किनारे नन्दिनी नाम है १९५ द्वारका में रुक्मिणी, वृन्दावन में राधा, मथुरा में देवकी, पाताल में परमेश्वरी नामहै १९६ चित्रकूट पर सीता, विन्ध्याचल पर विन्ध्यनिवासिनी, सह्यपर्व्वतपर एकवीरा, हरिश्चन्द्र स्थान में

चन्द्रिका नामहै १९७ रामतीर्थमें रमणा, यमुनाके तटपर मृगावती, करवीर पर्व्वतपर महालक्ष्मी, विनायक स्थानपर उमा नामहै १९८ वैद्यनाथ में अरोगा, महाकालके समीप महेश्वरी, पुष्पतीर्थ में अभया, विन्ध्यकन्दरमें अमृता नामहै १९९ माण्डव्यस्थान में माण्डवी देवी, माहेश्वरपुर में स्वाहा, वेगलस्थान में प्रचण्डा, अमरकण्टक पर चण्डिका नामहै २०० सोमेश्वर में वरारोहा, प्रभासतीर्थ में पुष्करावती, सरस्वती नदी के तटपर देवमाता, पारा तटपर पारा नामहै २०१ महालयमें महापद्मा, पयोष्णी के तटपर पिंगलेश्वरी, कृतशौचतीर्थ में सिंहिका, कार्त्तिकेयमें शंकरी नाम है २०२ उत्पलावर्त्तक में लोला, समुद्र व गंगाके संगमपर सुभद्रा, सिद्धवनमें उमा, भरताश्रम में अनङ्गलक्ष्मी नामहै २०३ जालन्धर स्थानमें विश्वमुखी, किष्किन्धा पर्व्वत पर तारा, देवदारुवन में पुष्टि, काश्मीर मण्डलमें मेधा नाम है २०४ हिमाद्रिपर भीमादेवी, वस्त्रेश्वरस्थान में तुष्टि, कपालमोचनतीर्थ में श्रद्धा, कायावरोहणस्थानमें माता नामहै २०५ शंखोद्धारमें ध्वनि, पिंडारकतीर्थमें धृति, चन्द्रभागाके तट पर काला, अच्छोदमें सिद्धिदायिनी नामहै २०६ वेणाकेतटपर अमृतादेवी, बदरिकाश्रम में उर्व्वशी, उत्तरकुरुदेश में ओषधी, कुशद्वीप में कुशोदका नाम है २०७ हेमकूट पर मन्मथा, कुमुदस्थानपर सत्यवादिनी, अश्वत्थमें वन्दनीया, कुबेराश्रममें निधि नाम है २०८ वेदवदन में गायत्री, शिवजीके निकटमें पार्वती, देवलोकमें इन्द्राणी, ब्रह्मास्य में सरस्वती नाम है २०९ सूर्य्यबिम्ब में प्रभा, सब मातृयों में वैष्णवी, पतिव्रताओं में अरुन्धती, सब स्त्रियोंमें तिलोत्तमा, चित्रमें ब्रह्मकला, सब प्राणियों में शक्ति ये भक्ति से अष्टोत्तरशतनाम हमने कहे २१० । २११ इन नामों के साथ अष्टोत्तरशततीर्थों के भी नाम कहेगये हैं इनको जो जपेगा वा सुनेगा वह सब पापोंसे छूटजायगा २१२ व जो इन तीर्थोंमें स्नानकरके इन तुम्हारी मूर्त्तियोंके दर्शनकरेगा वह सब पापोंसे छूटकर ब्रह्मलोकको जायगा २१३ व जो पुरुष तुम्हारे १०८ नाम अमावास्या वा पौर्णमासीको ब्रह्माजी के निकटसुनावेगा वह बहु पुत्रवान् होगा २१४ व जो कोई गोदान व

श्राद्धदानके समय वा देवपूजाकेसमय वा ऐसेही प्रतिदिन सुनेगा वह परब्रह्मलोक में जावेगा २१५ जब श्रीविष्णुभगवान् ने सावित्रीजी की ऐसी स्तुतिकी तो प्रसन्नहोकर सुन्दर ब्रतवाली सावित्रीजी बोलीं कि हे पुत्र! तुमने हमारी अच्छी स्तुतिकी जाओ तुम अजेय होओगे २१६ व जब कभी स्त्रियोंसहित अवतार लोगे तब अपने पिता माताको परमप्रिय होओगे व जो कोई पुरुष यहां आकर इस स्तोत्र से हमारी स्तुतिकरेगा वह सब पापों से छूटकर परमस्थान को जायगा व हे पुत्रक! अब जाकर ब्रह्माजी का यज्ञ पूर्ण कराओ २१७। २१८ हमभी तुम्हारे कहने से कुरुक्षेत्र प्रयाग आदि तीर्थों में अन्न देतीहुई अपने भर्त्ता ब्रह्माजी के समीप सदा टिकीरहेंगी २१९ जब सावित्रीजी ने श्रीविष्णुभगवान् से ऐसाकहा तो वे ब्रह्माजी की उत्तम सभामेंगये व सावित्री के चलीजाने पर गायत्रीबोलीं २२० हे ऋषियो! हमारा वचन सुनो हम अपने स्वामी के समीप कहतीहैं व प्रसन्नहोकर वरदेनेपर उद्यतहैं २२१ जो कोई यहां आकर ब्रह्माजी की पूजा भक्ति श्रद्धासे करेंगे उनको वस्त्र, धन, धान्य, स्त्री, सुखादि सब मिलेंगे २२२ व उनके गृहसें पुत्र पौत्रादिकों का सुख सदा निरन्तर बनारहेगा व नानाप्रकारके सुख भोगकर अन्तमें मोक्ष पावेगा २२३ पुलस्त्यजी बोले कि जो कोई ब्रह्माजीकी मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा विधानसे करके जिस फलको पाताहै उसको एक मनहो सुनो २२४ सब यज्ञ, तप, दान, तीर्थ, वेदोंसे जो फल होताहै वही फल ब्रह्माजी की प्रतिष्ठासे कोटिगुणा अधिक पावेगा २२५ व हे नराधिप भीष्मजी! जो कोई भक्तिसे पूर्णमासी का ब्रत रहकर इस विधिसे ब्रह्माजीकी मूर्त्तिका पूजनकरेगा २२६ हे महाबाहो! वह ब्रह्माजी के स्थानको मरणान्तमें जायगा सो आपही नहीं अपने ऋत्विजोंसहित ब्रह्मलोक को जायगा २२७ व जो कोई कार्त्तिककी पूर्णमासी को ब्रह्माजीकी रथयात्राकरेगा वह मनुष्यभी ब्रह्मलोकको जायगा २२८ हे राजेन्द्र! हे परन्तप! कार्त्तिक मासकी पौर्णमासीको सावित्री व गायत्रीसहित ब्रह्माजीकी मूर्त्तिकी पूजा जो कोई इसरीतिसे करेगा कि २२९ रथपर चढ़ाकर नानाप्रकार के बाजों सहित सब नगर में मूर्त्ति फिरावेगा हे

नृप ! वह ब्रह्मलोकको जायगा २३० जब ब्रह्माजीको रथपर चढ़ानाहो तो प्रथम ब्राह्मणोंकी पूजाकर उनको भोजनकराकर फिर ब्रह्माकीमूर्त्ति का पूजनकर रथपर चढ़ावे व पुण्यवाचन कराकर बाजे बजवावे २३१ रथके आगे विधिपूर्व्वक शाण्डिलीपुत्रकी पूजा करावे फिरभी ब्राह्मणों से स्वस्ति पुण्याहवाचन करावे २३२ मूर्त्ति रथपर बैठाकर एक रात्रि भर नानाप्रकार के गानरंग करते कराते वा वेदआदि पढ़ते सुनते जागरणकरे २३३ हे नृप ! प्रातःकाल यथाशक्ति भक्ष्य भोज्यादि अनेकप्रकारके भोजनोंसे ब्राह्मणोंको भोजन कराय मन्त्रोंसे विधिपूर्व्वक ब्रह्माजी की पूजाकरे व हे नृप ! ब्राह्मणों को जितने पदार्थ भोजन करावे प्रायः सब घृतपक्कहों वा दुग्धसे बनीहुई खीरहो २३४। २३५ जब अपनी शक्तिके अनुसार ब्रह्मभोज कराचुके तो बड़ेगाने बजाने नाचने के साथ पुण्याहवाचन कराके रथ सारे नगर में फिरावे २३६ हे वीर ! रथके आगे २ चारोंवेदोंके पढ़नेवाले ब्राह्मण वेदमन्त्र उच्चारण करतेहुये चलें अथर्व्ववेद के पाठी व अध्वर्युलोग बड़े स्वरसे मन्त्रोच्चारण करतेरहें २३७ इस प्रकार देवदेवका रथ पुरमें दक्षिणावर्त्त फिरावे २३८ पर रथको शूद्र कोई न उठावे व हे नृप ! ब्रह्माजी के रथपर एक भोजन करानेवाले को छोड़कर और कोई मनुष्य न चढ़े २३९ और ब्रह्माजीकी दक्षिणओर गायत्रीजी को स्थापितकरे व उनके भोजनआदि करानेवाला पुजारी बाईंओर कुछ नीचे बैठारहे व आगे कमल रक्खेजावें २४० इस प्रकार तुरही नगारेआदि विविध प्रकारके बाजेबजाते व शंख शब्द होते हुये नगरके चारोंओर रथको घुमावे २४१ फिर चार बत्तियों की आरती करके जहां से उठायाहो वहीं जाकर रथ स्थापितकरे इस रीतिसे जो कोई पुरुष भक्तिसे यह यात्रोत्सव करता है वा दर्शन करता है २४२ अथवा रथ खींचताहै वह ब्रह्माजीके स्थान को जाताहै व कार्त्तिकमास की अमावास्या के दिन जो कोई ब्रह्माजी की शालामें दीपक जलावेगा वह परमपद को जावेगा और गन्धपुष्पादिकोंसे तथा नवीनवस्त्रोंसे जो कोई उस प्रतिपदा को अपनेको भूषित करता है वहभी ब्रह्मलोक को जाता है यह प्रतिपत् महापुण्यदायिनी तिथिहै इसीमें राजाबलि

को राज्यमिलेगा २४३ । २४५ इस से यह बालेयी कहीगई है व ब्रह्माजी को भी बहुतही प्रियहै इसमें जो कोई ब्रह्मा व ब्राह्मणों की व अपनी पूजा अच्छी तरह करताहै २४६ वह अमिततेजस्वी श्रीविष्णुभगवान् के परमपवित्र स्थान को जाताहै हे महाबाहो ! चैत्रमास की अँधेरी वा उजेरी प्रतिपदा को जो कोई पुरुष डोमड़े (श्वपच) को छूकर सचैल स्नान करता है हे नृप ! उसके न तो वर्ष-पर्य्यन्त कोई रोग होता है न कुछ पापही देहमें रहजाते हैं इससे हे कुरुशार्दूल ! उस तिथिमें अवश्य इस रीतिसे स्नान करना चाहिये व दिव्य नीराञ्जन करने से निश्चय सर्व रोगोंका विनाश होता है २४७।२४९ हे नृप ! उस तिथिमें गृहमें जितनी गाय भैंस बैलआदिहों सबको स्नान कराय हरिद्रा तैल गेरूआदिसे भूषितकरके चारबत्ती की आरती करनी चाहिये व सबको गृहके बाहर पंक्तिबद्धकरके बांधना चाहिये २५० हे कुरुकुलोद्वह ! अपनी शक्तिके अनुसार उस तिथिमें ब्राह्मणों को भोजन देना चाहिये क्योंकि हे कुरुनन्दन ! ये तीनतिथियां बहुत पुण्यदायक कही हैं २५१ एक कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदा दूसरी चैत्रशुक्लप्रतिपत् तीसरी आश्विनसुदि प्रतिपत् इन तीनोंमें स्नान दानादि जो कुछ कियाजाता है सौगुनाफल देताहै हे नृप ! इनमें कार्त्तिकशुक्लप्रतिपत् जोहै २५२ सो बलिराजाको शुभदा व पशुओं को अत्यन्तहितकारिणी होवैगी गायत्रीजी बोलीं कि जो सावित्रीने ब्रह्माजी को शापदियाथा कि तुम्हारी पूजा ब्राह्मण कभी न करेगो सो हमारे इस वचनको सुनकर कार्त्तिककी पौर्णमासी वा शुक्लप्रतिपत् को जो कोई हे ब्रह्मन् ! तुम्हारी पूजाकरेगा २५३।२५४ वह यहां सबभोग भोगकर अन्तमें मोक्षपदको पावेगा व ब्रह्माजी प्रसन्न होकर उसे वरदेंगे २५५ ब्रह्मासे ऐसा कहकर फिर इन्द्र से भी सावित्रीने यह कहाथा कि हे शक्र ! तुमको भी हम वरदेती हैं कि जब तुमको शत्रुपीड़ित करेंगे तो ब्रह्मा तुमको छुड़ावेंगे व तुम्हारे शत्रुओं का नाशकरेंगे २५६ व तुमको नष्टहुआ अपना पुर फिर मिलेगा व तीनोंलोकों में अकण्टक बड़ाभारी तुम्हारा राज्यहोगा २५७ इतना इन्द्रसे कहकर श्रीविष्णुभगवान्से कहा कि हे विष्णो ! मर्त्य-

लोकमें जो सब अवतारों से बड़ा अवतार तुम्हारा होगा उसमें भाई के साथ भार्य्याहरणादि से उत्पन्न दुःख तो बहुत भोगने पड़ेंगे २५८ परन्तु शत्रुकोमार देवकार्य करके फिर अपनी पापरहित पतिव्रता स्त्री को पावोगे देवताओं व अग्निके सामने वह स्त्री निष्पाप ठहरेगी फिर उसे पाकर राज्य भोगकर स्वर्ग को जावोगे २५९ पृथ्वीपर ग्यारह हज़ारवर्ष अखण्डराज्यकरोगे व तुम्हारी ख्याति लोकमें बड़ी भारी होगी प्रजा तुम्हारी तुममें बड़ी प्रीति करेगी २६० सन्तानवाले पुरुषों के लिये जो लोक नियतहैं हे देव ! रामरूप तुमसे पवित्र हुई तुम्हारी सब प्रजायें उन्हीं लोकोंको जायँगी २६१ इस तरह विष्णुसे कहके गायत्रीजी रुद्रसे बोलीं कि जो मनुष्य तुम्हारे पतित लिंगकी पूजा करेगें २६२ वे पुण्यकर्मवाले पुरुष पवित्र होके स्वर्गको जावेंगे व उस गतिको अग्निहोत्र यज्ञादिक करने से नहीं पातेहैं कि २६३ जिस गतिको तुम्हारे लिंगकी पूजासे मनुष्य पातेहैं व गंगाजी के तीरपर जे मनुष्य प्रीतिपूर्वक तुम्हारे लिङ्गको बिल्वपत्र से सदा पूजेंगे वे रुद्रलोकको पावेंगे इस तरह रुद्रसे कहके अग्नि से बोलीं कि हे अग्ने ! तुम महादेवजी के भक्तहोके पावन होवो २६४। २६५ व तुम्हारे प्रीतिमान् होतेहुये निश्चय सम्पूर्ण देवगण प्रीतिमान् होंगे क्योंकि तुम्हारे मुखसे देवगण हवि भोजन करते हैं इससें तुम्हारेही प्रीतिमान् होतेहुये देवगण प्रीतिमान् होंगे इसमें सन्देह नहीं है जैसे वेदोक्त वचनहै तैसेही गायत्रीजी अग्निसे कहके सब ब्राह्मणों से यह बोलीं कि २६६। २६७ सर्व तीर्थोंमें तुमलोगों का (प्रीणन) तृप्ति या तर्पण करके सर्व मनुष्य वैराजनाम पदको जावेंगे इसमें संशय नहींहै २६८ व तुमलोगोंको विविध प्रकार अन्नोंके अनेक दान देकरके व श्राद्धोंमें भोजन कराके मनुष्य देवदेव होंगे २६९ और जो कि ब्राह्मणश्रेष्ठ हैं उनके मुखसे देवतालोग हवि भोजन करते हैं इसी प्रकार पितामहलोग कव्य भोजन करते हैं २७० तुम्हीं लोग त्रैलोक्य के धारण करने में समर्थ हो इसमें संशय नहीं है व एक प्राणायाममात्रसे तुम सब पवित्र होजावोगे २७१ व हे द्विजोत्तमो ! तुमलोग जब कभी किसी तीर्थ में विशेषकरके पुष्करतीर्थ

में स्नानकरके वेदकी माता मेरा उच्चारण करोगे तो प्रतिग्रहलेने के तुम्हारे सब पाप दूरहोजायँगे २७२ क्योंकि पुष्कर में अन्नदान करनेसे सब देव प्रसन्न होते हैं व एक ब्राह्मणके भोजनकराने से कोटि ब्राह्मणोंके भोजनदेने का फल होता है २७३ व हे ब्राह्मणो! पुष्कर में तुमलोगों के हाथोंपर दानदेने से ब्रह्महत्यादि सब पाप मनुष्यों के दूरहोजायँगे २७४ व जो ब्राह्मण इस पुष्करतीर्थ में बहुत नहीं तीन २ बार गायत्री जपेगा ब्रह्महत्या वा उसके समान और पाप तुरन्त छूटजायँगे २७५ व दशबार जपने से गायत्री जन्मभर का पाप नाश करतीहै व सौबार जपनेसे सब पूर्वजन्मोंके दोष व सहस्र जप करने से तीन युगोंमें जितने पाप कियेहों सबको नष्ट करती है २७६ इससे हमारे अर्थात् गायत्री के जाप करने से हे ब्राह्मणो! सदा पवित्र रहोगे और कोई भी पाप तुमको न लगेगा इसमें कुछ भी विचार न करना चाहिये २७७ त्रिमात्र ॐकारके उच्चारणके साथ अर्थात् शिरसहित गायत्रीजपमात्र से हे सब ब्राह्मणो! सदा पवित्र रहोगे २७८ हमारे मन्त्रमें २४ अक्षरहैं व चारोंवेदोंकी हम माताहैं व यह जगत् मुझसे व्याप्त है व सर्वपदों से मैं अलंकृतहूं २७९ भक्तिपूर्वक मुझ गायत्रीको जपके हे ब्राह्मणो! सिद्धिको पावोगे व हमारे जापहीसे तुम सबोंको प्रधानता होगी २८० गायत्रीसारमात्र भी जाननेवाला सुसंयमी ब्राह्मण श्रेष्ठहै व सर्वाशी, सर्वविक्रयी चतुर्वेदी भी नहीं श्रेष्ठहै २८१ यद्यपि सावित्रीने तुमलोगोंको शापदिया है कि तुमलोग वेदाभ्यास न करोगे और शूद्रादिकोंके श्राद्धमें भोजनकरने से अशुद्ध होजावोगे परन्तु हम तुमको वरदान देती हैं कि तुमलोगोंमें जो कोई दिनभरमें एकबारभी गायत्रीजपेगा उसको जो कोई भोजन करावेगा वा कुछ दानदेगा उसको अक्षयफल होगा व जो कोई ब्राह्मण नित्य अग्निहोत्र करेगा व त्रिकाल सन्ध्योपासन करेगा २८२। २८३ वह अपनी दशपुस्त पहिले व दश पीछे सहित आप स्वर्ग में निवास करेगा इसप्रकार इन्द्र, विष्णु, रुद्र, पावक व ब्राह्मणोंको गायत्रीजीने उत्तम वरदान देकर पुष्करतीर्थ में ब्रह्माजी के समीप जाकर बैठीं २८४। २८५ उससमय चारणों

ने लक्ष्मीजी के शापका कारण कहा तथा सर्व युवतियों के अलग अलग शापोंको जानके ब्रह्माजीकी प्रिया गायत्रीजीने लक्ष्मीजीको वरदान दिया कि सदा सबोंको अनिन्दित करतीहुई २८६ । २८७ शोभा को पावोगी इसमें संदेह नहीं है व सबों को प्रीतिदायिनी होगी व हे पुत्रि ! जिसकी ओर तुम कृपाकटाक्ष से निरीक्षण करोगी वे पुण्यके पात्र समझे जायँगे २८८ व जिनको तुम परित्याग करोगी सब दुःखी रहेंगे व हे वरानने ! जिनके ऊपर तुम कृपा करोगी उन्हीं की उत्तमजाति उन्हींका उत्तम शील उन्हींका उत्तम कुल व उन्हींका सर्व्वोत्तम धर्म्म कहावेगा २८९ सभामें वेही लोग शोभित होंगे व राजालोग उन्हीं का आदर करेंगे ब्राह्मणलोग उन्हींसे आकर याचना करेंगे २९० पिता माता भ्राता व गुरु को भी छोड़कर लोग तुम्हीं को अपना बन्धु समझेंगे व विना तुम्हारे प्राण देदेंगे व कहेंगे कि हम क्षणमात्रभी लक्ष्मी विना नहीं जीसक्के २९१ व जिसके ऊपर तुम दयादृष्टि करोगी उसीके ऊपर हम भी प्रसन्न रहेंगी व हमारा मन उसके घर में अत्यन्त प्रसन्न होगा यह तुमसे सत्य २ कहती हैं २९२ व जिसके ऊपर तुम कृपादृष्टि करोगी उसको देखकर लोग कहेंगे कि हम विना तुम्हारे देखे प्रसन्न नहीं रहते व भोजन वस्त्र कुछ भी नहीं अच्छा लगता जैसेही आप को देखते हैं आनन्द होजाते हैं इस प्रकार के वचन सज्जनोंके उनको सुनाई देंगे जिनको तुम कृपादृष्टि से अवलोकन करोगी २९३ लक्ष्मीजी से ऐसा कह गायत्रीजी इन्द्राणी से बोलीं कि सावित्रीने तुमको शापदिया था कि नहुष तुमसे भोग करना चाहेगा सो हम आशीर्व्वाद देती हैं कि हां नहुष जब इन्द्र होगा तो तुमसे भोगके लिये प्रार्त्थना तो करेगा परन्तु तुमको देखतेही वह पापी अगस्त्यजी के वचन से हत होजायगा २९४ व सर्प्पयोनि को प्राप्तहोकर फिर उन्हीं मुनिकी प्रार्त्थना करेगा कि मैं अहंकार से नष्ट होगयाहूं अब मुनिराज तुम्हीं हमारे रक्षक होवो २९५ राजा नहुषका ऐसा वचन सुन भगवान् अगस्त्यऋषि मनमें करुणाकरके यह वचन बोलेंगे कि २९६ तुम्हारे कुलमें धर्म्मके अवतार महाराज युधिष्ठिर उत्पन्न

होंगे जब सर्प्परूप धारण किये हुये तुमको वे देखेंगे तब तुम्हारे शापको भेदन करेंगे २९७ तदनन्तर सर्प्पशरीर को छोड़ फिर तुम स्वर्ग्ग में निवास करोगे राजा नहुष की तो यह दशा होजायगी और हे सुलोचने! हमारे वरदानके प्रभाव से अश्वमेधयज्ञ करनेके पीछे तुम फिर अपने पति इन्द्रके साथ विहार करोगी पुलस्त्यजी भीष्मजी से बोले कि गायत्रीजी इस तरह इन्द्राणी से कहकर फिर सब देवताओं की स्त्रियों से बोलीं कि २९८।२९९ यद्यपि तुम लोगोंके सावित्रीके शापसे सन्तति न होगी पर तुमको सन्तति क्या किसी वस्तुका दुःख न होगा फिर गायत्रीजीने पार्व्वतीजी को बहुत समझाया और बड़ा भारी परितोष उनका किया फिर सब को इस प्रकार वर देकर गायत्रीजीने ब्रह्माजीके यज्ञके समाप्त होनेकी इच्छा की ३००।३०१ उससमय सबको वरदान देतीहुई वेदमाता गायत्री जीको देख प्रणाम करके रुद्रजी इस प्रकार स्तुति करनेलगे ३०२॥

रुद्रउवाच॥

चौ० वेदजननि तव चरण नमामी। अष्टाक्षर शोभित गुण ग्रामी॥
दुर्ग्गतारिणी संसृति हरणी। सप्त प्रकार विदित तव करणी॥
गाथा नियम आदि स्तुति शास्त्रा। सकल विराजत तव गुण पात्रा॥
सकल वर्ण लक्षण सब तोहीं। कहत देवि दीजे वर मोहीं॥
भाष्यादिक सब शास्त्र घनेरे। तव स्वरूप हम निज मन हेरे॥
श्वेत रूपिणी श्वेत वासिनी। विधुवदनी निज तेज काशिनी॥
कदलीसम कोमल तव बाहू। विमल विपुल निज जनप्रदलाहू॥
करमहँ मृगवर शृंग विराजै। दूजे महँ सरसिज शुभ भ्राजै॥
अरुण क्षौम द्वय वसन विधारे। सकल भांति सोहत रतनारे॥
शशिकर निकर विशद उर हारू। शोभित देवि भली विधि चारू॥
दिव्य कर्णभूषण सों भूषित। तव वर कर्ण सरोज अदूषित॥
तव मुख चारु प्रकाश विराजै। ज्यहि लखि शरद पूर्ण विधु लाजै॥
मुकुट शिरोरुह ऊपर भ्राजै। केश श्यामता लखि अलि लाजै॥
भुजग भोग सम तव भुज दोऊ। देवि नमामि नमत सब कोऊ॥
सम चूचुक कुच युगल तुम्हारे। वर्त्तुल दृढ़ उन्नत अति प्यारे॥

त्रिवली भंग विभूषित तेरो । जघन विचित्र देवि श्रुति टेरो ॥
वर्त्तुल अतिगभीर नाभी तव । निवसत मनहुँ नितान्त मनोभव॥
जघनाधर विशाल सम राजै । श्रोणिभाग अति विपुल विराजै॥
चारु जानु युग चरण सुचारू । वर्णत बनत न किहे विचारू ॥
तीन लोक तव तनु महँ दीखें । तिन्हें देखि जग कारण सीखें ॥
वरदायिनि याचक गण काहीं । देवि नमत समझहु मन माहीं॥
वार्षिक यात्रा पुष्कर माहीं । ज्येष्ठपूर्णिमा महँ तव आहीं ॥
तव प्रभाव ज्ञाता नरजोई । पुजिहैं तोहिं सकल छल खोई ॥
धन सुत पौत्र आदि तिनकाहीं । नहिं दुर्लभ सुलभै सब आहीं ॥
कठिन मार्ग्ग दुर्ग्गम वनमाहीं । तस्कर पीड़ित भ्रमत तहांहीं ॥
सागर मध्य पोत जब डूबत । तोहिं पुकारत लोग न ऊबत ॥
सिद्धि कीर्त्ति श्री धृति मति विद्या । सन्नति लज्जा प्रीति अनिन्द्या ॥
सन्ध्या रात्रि प्रभा निद्रासव । कालरात्रि वरदे नितमामव ॥
अम्बा कमला अरु ब्रह्माणी । ब्रह्मचारिणी वर गुण भाणी ॥
सर्व्व देव जननी परमेश्वरि । गायत्री सरस्वति विश्वेश्वरि ॥
विजया जया क्षमा अरु दाया । सावित्री सपत्नि वर माया ॥
सदा पितामह संग विराजहु । नमत देवि सब कर्म्मसुसाजहु ॥
बहुरूपा अरु विश्वस्वरूपा । ब्रह्मचारिणी स्वम्ब निरूपा ॥
भक्तरक्षिणी नयन विशाला । अतिसुन्दरि अब होहु कृपाला ॥
पुण्य नगर वर आश्रम माहीं । वन उपवन सब कहुँ अस नाहीं ॥
जहँ तव वास नहीं जगदम्बा । नमत तुम्हें वर्णहुँ कहु किम्बा ॥
ब्रह्मसदन महँ सब कहुँ देवी । ब्रह्मवाम शोभित जनसेवी ॥
सावित्री दक्षिण दिशि सोहै । मध्य विधाता रहत अमोहै ॥
तुम मख अन्तर्व्वेदि विराजो । ऋत्विज जन दक्षिणा सुसाजो ॥
भूपति सिद्धि रूप ह्रीरूपा । सागर वेला तुम्हें निरूपा ॥
ब्रह्म चारि पथ दीक्षा भानैं । प्रभा सकल द्योतित की मानैं ॥
नारायण सँग लक्ष्मी तोहीं । कहत सकल अंब वरदे मोहीं ॥
मुनिगण क्षमा सिद्धि तू हैरी । ऋक्ष माहिं रोहिणी कहैरी ॥
राजद्वार नदि संगम तीरथ । सबकहुँ रहत दहत अपकीरथ ॥

पूर्ण चन्द्र महँ पूरणमासी । बुद्धि नित्य धृतिमतिरुक्षमासी ॥
चारु दृष्टि दशशत लोचन की । दुष्टदृष्टि संसृति मोचन की ॥
धर्म्म बुद्धि ऋषिगण की अहहू । देवपरायण नित तुम रहहू ॥
कृषी कृषक गणकी त्वहिं भानैं । भूताधार धरणि त्वहिं मानैं ॥
नर वध बन्धन धन सुत नासा । व्याधि मृत्यु जब होत खुलासा ॥
जब तुव पूजन कर चितलाई । सकलमिटत त्यहिक्षणनञुठाई ॥
तिमि कार्तिक राका तिथि माहीं । पूजत हित चित तोहिं सचाहीं ॥
सकल काम पूरत तिनकेरे । दुरित न एक आव उन नेरे ॥
जो यह स्तोत्र पढ़ै वा सुनई । चितलगाय नर निज हितकरई ॥
सकल सिद्धि पावत सो प्राणी । निश्चयकरिहमनिजमुखभाणी ॥
चौपैया ॥ यह सुनि शिववाणी श्रीब्रह्माणी बोलीं वचन पुनीता ।
जो तुम सुत भाषा करि अभिलाषा होइहि फुर सब गीता ॥
जो हरिभगवाना कीन बखाना वहौ सत्य न सँदेहू ।
यहजनहितकारीस्तवनकरारी सदापढ़ह्युकरिनेहू ३०। ३१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेसावित्रीशापेगायत्रीवरदानेभाषानुवादे सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

दो० जिमि प्रयागसों सरस्वती पश्चिमको चलिजाय ॥
पुष्कर में ब्रहि पुनि बढ़ी आगे को हरषाय १
खर्ज्जूरी वन माहिं हरि नन्दा कर संवाद ॥
नन्दा प्राची सरस्वती अठरहें महँ नाद २
बहुत भांति प्राची सरस्वती महात्म्य बखान ॥
कीन अनेकन युक्तिकरि वर ऋषिराज महान ३

भीष्मजी इतनी कथा सुनकर बोले कि हे ब्रह्मन् ! हमने आपसे यह अतिअद्भुत चरित निश्चय करके सुना जिसमें कि गायत्रीजी का ब्रह्माजी के संग अभिषेक कियागया १ इससे सावित्री ने बड़ा विरोध करके सबोंको शापदिया फिर श्रीविष्णुभगवान् ने सावित्री के लिये नानाप्रकार के तीर्थोंमें उनके नाना नाम बताये २ फिर रुद्र

जीने श्रेष्ठवर्णवाली गायत्रीजीकी स्तुतिकी पितामह के विषय की ये सब बातें सुनकर हमारा शरीर पवित्र हुआ ३ व सब रोम प्रहृष्ट हुये मन शान्तहुआ व सुनकर हमको परमप्रीति हुई व कौतूहल भी अत्यन्तहुआ ४ व नारायण भगवान्‌जी ने सावित्रीजी की भक्तिसे बड़ीभारी स्तुतिभीकी व पर्व्वतपर उनका स्थापनभी किया ५ व उन्होंने तुष्टि पुष्टि देनेवाले वचनभी कहे व श्रीमती लज्जावती ईश्वरी आदि नामभी ब्रह्माजीकी स्त्री सावित्रीजी के बताये ६ हे ब्रह्मन्! यह सब हमने आपके मुखारविन्द से निकला हुआ सुना इसके पीछे उस सभामें जो कुछ हुआहो ७ सब क्रमपूर्व्वक हमसे आप वर्णनकरें क्योंकि उसके सुननेसे हमारे देहकी शुद्धिहोगी इस में कुछ संदेह नहींहै ८ इतनी बातें भीष्मजी की सुनकर पुलस्त्यजी बोले कि हे राजन्! यज्ञ करतेहुये देवदेव ब्रह्माजी की सभामें जो २ आश्चर्य्य की बातें हुईहैं सब सुनो ९ प्रथमके सत्ययुग में जब ब्रह्माजी यज्ञ करनेलगे तो मरीचि, अंगिरा, हम, पुलह, क्रतु, १० दक्षप्रजापति इन सबोंने जाकर ब्रह्माजी के नमस्कार किया व देखा तो सब भूषणों से भूषित पुरुष ११ व अप्सराओं के गण श्रीविष्णु भगवान् के आगे नाचतेथे व आकाश में गन्धर्व्वलोग नानाप्रकार के बाजे बजाकर गातेथे १२ व बहुतसे गन्धर्व्वोंके साथ तुम्बुरुनाम गन्धर्व्वभी वहां आयाथा इसी प्रकार महाश्रुति, चित्रसेन, ऊर्णायु, अनघ, १३ गोमायु, सूर्य्यवर्चा, सोमवर्चा, तृणायु, नन्दि, चित्ररथ ये सब एकही समय में आयेथे १४ तेरहवां शालिशिर नाम चौदहवां पर्जन्यनाम पन्द्रहवां कलिनाम सोलहवां तारकनाम १५ व हाहा हूहू देवताओंके गन्धर्व्व व हंसनाम महाद्युतिमान् एक और गन्धर्व्व इतने सब देव गन्धर्व्व उन विभु विष्णुभगवान् व ब्रह्माजी के समीप गातेथे १६ इसी प्रकार सब अप्सराभी उनके सम्मुख नाचती थीं धाता, अर्य्यमा, सविता, वरुण, अंश, भग, १७ इन्द्र, विवस्वान्, पूषा, त्वष्टा, पर्जन्य, आदित्य ये बारह सूर्य वहां खड़े अपने प्रकाश से प्रकाशित करतेथे १८ व उन देवदेव ब्रह्माजीके नमस्कार करते थे व मृगव्याध, शर्व, महायशा निर्ऋति, अजैकपात्, अहिर्बुध्न्य,

पिनाकी, अपराजित, १९ विश्वेश्वर भव, कपर्दी, स्थाणु, भगवान् भव; हे विशाम्पते! ये ग्यारह रुद्र वहां ब्रह्माजी के सम्मुख हाथजोड़े खड़ेथे अश्विनीकुमार, आठो वसु, महाबलवान् उंचास पवन २०।२१ विश्वेदेव व साध्यगण ये सब हाथ जोड़े खड़ेथे व शेषजीके वंशके वासुकि आदि सर्पगण महात्मा जिनके नाम काश्यप, कम्बल, तक्षक, महाबल ये हैं ये सब नागभी हाथ जोड़े खड़ेथे २२।२३ व तार्क्ष्य, अरिष्टनेमि, महाबल गरुड़, वारुणि, आरुणि, वैनतेय येभी सब हाथ जोड़े वहां उपस्थित थे २४ व नारायणभगवान् जानो आप वहां विद्यमानही थे उन्होंने सब ऋषियों सहित लोकगुरु ब्रह्माजी से कहा कि २५ तुमने इस सब जगत् को विस्तृत कियाहै व तुम्हींने उत्पन्न कियाहै इससे जगत्पति कहातेहो व इसी से लोकेश्वरहो हे पद्मयोनिजी! तुम्हारे नमस्कार है २६ अब इस समय जो कुछ करनाहो हमको भी कुछ आज्ञा दीजिये इस प्रकार सब महर्षियों सहित श्रीविष्णुभगवान् ब्रह्माजी से कहकर व नमस्कार करके वहां बैठगये व ब्रह्माजी जानों वहां विराजमानही थे जो कि अपने तेज से सब दिशाओं को प्रकाशित करते थे २७।२८ व विष्णुभगवान् भी श्रीवत्सनाम लोमचिह्न से युक्त व सुवर्ण का यज्ञोपवीत धारण किये स्वयम्भू भूतों के उत्पन्न करनेवाले सुरर्षियोंके समान श्रीमान् जिनके सब पवित्ररोम बड़ी चौड़ीछाती सब तेजोमयरूप प्रभु शुभ शीलवाले सज्जनोंकी गति व पापकर्म्म करनेवालोंकी अगतिथे २९। ३० व योगसिद्ध महात्मालोग जिनको उत्तमलोक कहतेहैं व देवता लोग जिनको आठगुण के ऐश्वर्य्योंसे युक्त देवसत्तम कहते हैं ३१ व जिनको शाश्वत मोक्ष चाहनेवाले योगभावित विप्रलोग पाकर जन्म मरण से छूटजाते हैं ३२ व जिनको सब आश्रमों के निवासी तपस्या का रूप कहते हैं इसीसे यताहार होकर सेवाकरते हैं ३३ व जिनको योगीलोग सब नागोंमें अनन्त ऐसा नाम कहते हैं जिनके सहस्र मस्तकहैं व अरुणनयन हैं ३४ व जिनकी पूजा स्वर्ग की कामना कियेहुये ब्राह्मणलोग सदा किया करते हैं व नानास्थानोंमें जिनकी गति है व शोभित होतेहैं व अनेक कविओं में उत्तम कवि

कहाते हैं ३५ व जिनको यज्ञभाग दियाजाता है उनको ऋषिलोग वेत्ता जानते हैं व जिनके अग्नि, सूर्य्य, चन्द्र नेत्र व आकाश जिनका शरीर है ३६ उन शरण्यभगवान् के शरण में हम सब शरणार्त्थी देवलोग हैं क्योंकि तुम सब देवताओं की उत्पत्ति के कारणहो यह देवगण स्तुति करनेलगे कि ३७ आप सब ऋषियों व लोकोंके उत्पन्न करनेवालेहो व सब देवताओं के भी ईश्वरहो व सब देवताओं का प्रिय करनेकेलिये जगत्में स्थितहो ३८ व जिससे कि पितरों की कव्य व देवताओं की हव्य तुम्हीं से प्रवर्त्तित होती है इससे सुरोत्तम तुमको हमलोग नमस्कार करते हैं ३९ व पूर्व्वकाल में आपने तीनों अग्नियोंसे यज्ञ किये हैं उसके पीछे यह सब सृष्टि बनाईहै४० व ब्रह्मा से ले स्थावरपर्य्यन्त सब जगत् के कारण आपही हैं व सब जगत् के अन्तमें भी आपही रहते हैं इस से बड़े वृद्ध व बुद्धिमान्हैं ४१ जितने यज्ञस्थान हैं उनमें अचिन्त्यात्मा आपही विराजमान रहते हैं व उसमें अन्न ऋत्विज् आदि जो पदार्थ रहतेहैं वे सब आपही के स्वरूपहैं ४२ व उन सब यज्ञोंकी रक्षा धनुर्बाणले आपही प्रभविष्णु विष्णुभगवान् की मूर्त्तिधारण करके करते हैं क्योंकि यज्ञोंमें दैत्यों व दानवों के राजा व राक्षसोंके गण विघ्न किया करतेहैं उनकी रक्षा विना विष्णुमूर्त्ति के नहीं होसक्ती है ४३ व अपनेको अपना यज्ञरूप आप सदा चिन्तना करते हैं व चिन्तना करके जिस प्रकार से सनातन यज्ञ होताहै वैसा करतेहैं ४४ व यज्ञोंका विस्तार सब ऋत्विजों से कराते हैं ऋत्विज् इस यज्ञके तो यज्ञकर्म्ममें विचक्षण भृग्वादि मुनि नियत किये हैं ४५ जिन्होंने मुख्य २ ऋचाओंसे कहेंहुये पुण्य अक्षर अर्थात् पुण्याहवाचन को किया जिसको विस्तृत कर्म्मवाले यज्ञमें श्रेष्ठ मुनिलोग सुनतेभये ४६ व यज्ञविद्या वेदविद्या व पदक्रम सबको यथावस्थित करानेलगे व परमर्षियों के वेदोच्चारण से सब यज्ञ नादित होगया ४७ व द्विजलोग यज्ञ में यथास्थान कुशादि के विछाने में चतुर व सब शिक्षा जानने में विचक्षण व शब्दोच्चारण व अर्थ जानने में अतिनिपुण व सर्व विद्याओंमें विशारद ४८ व मीमांसा के हेतुयुक्त वाक्यों के जाननेवाले

थे जिन्होंने यज्ञमें नानाप्रकारके निनाद किये व हे राजेन्द्र भीष्मजी ! तहां तहां नियत, संशितव्रत, जप व होममें परायण मुख्यद्विजोंको लोग देखतेभये व उस यज्ञभूमि में लोकपितामह ब्रह्माजी स्थित थे ४९।५० जोकि सुरासुरों के गुरु, श्रीमान्, देवता व असुर सबोंसे सेव्यमान थे व उन प्रभु ब्रह्माजीकी सब प्रजापति लोगभी उपासना करते थे ५१ दक्ष, वशिष्ठ, पुलह, मरीचि, अंगिरा, भृगु, अत्रि, गौतम व नारद ये भी सब उपस्थित हुये ५२ अन्तरिक्ष, वायु, तेज, जल, पृथ्वी, शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध ये भी मूर्त्तिधारणकरके आकर सभा में प्रविष्टहुये ५३ व इन सबों के विकृत व विकार तथा और जो महत्तत्त्व प्रकृति आदिथे सब आये ऋक्, यजुः, साम, अथर्व्वण चारोंवेद भी आये ५४ शब्द, शिक्षा, निरुक्त, कल्प, छन्द सहित आयुर्वेद, धनुर्वेद, मीमांसा, गणितशास्त्र सब आये ५५ हस्ती, अश्व ज्ञानसहित व इतिहासों से समन्वित इन अंगों व उपांगों से सब वेद विभूषित हुये ५६ व ॐकार सहित महात्मा ब्रह्माजीकी उपासना करनेलगे व तप, क्रतु, संकल्प, प्राण ये तथा और सब आकर लोकपितामह की उपासना करनेलगे अर्थ, धर्म्म, काम, हर्ष, द्वेष ५७ । ५८ शुक्र, बृहस्पति, संवर्त्तमेघ, बुध, शनैश्चर, राहु, केतु आदि सब ग्रह ५९ सब पवन विश्वकर्म्मा अग्निष्वात्ता आदि पितृगण, सूर्य्य, सोम; हे भारत ! ये सब ब्रह्माजीकी उपासना करतेथे ६० गायत्री, दुर्ग्गा, सात प्रकारकी वाणी सब अकारादि स्वर व ककारादि व्यञ्जन अश्विन्यादि सब नक्षत्र ६१ भाष्य सहित सब शास्त्र; हे विशांपते ! ये सब देह धारण करके वहां आये क्षण, लव, मुहूर्त्त, दिन, रात्रि ६२ पक्ष, मास, सब ऋतु ये भी सब मूर्त्तिधारण करके उपासना करने लगे ६३ और भी ह्री, कीर्त्ति, द्युति, प्रभा, धृति, क्षमा, भूति, नीति, विद्या, मतिआदि श्रेष्ठदेवियां मूर्त्तिधारण करके ब्रह्माजीकी उपासना करने लगीं ६४ व श्रुति, स्मृति, क्षान्ति, शान्ति, पुष्टि, क्रिया व सब अप्सरा लोग नाचने गानेमें अतिनिपुणता दिखाती हुई ६५ ब्रह्माजी के समीप आकर पूजा करने लगीं व सब देवताओं की मातायें व विप्रचित्ति, शिबि, शंकु, अय-

शशंकु ६६ वेगवान्, केतुमान्, उग्र, सोग्र, व्यग्र, महासुर, परिघ, पुष्कर, साम्ब, अश्वपति ६७ प्रह्लाद, बलि, कुम्भ, संह्लाद, गगनप्रिय, अनुह्लाद, हरिहर, वराह, कुश, रज ६८ योनिभक्ष, वृषपर्व्वा, लिंगभक्ष, वैकुरु, निष्प्रभ, सप्रभ, श्रीमान् निरूदर ६९ एकचक्र, महाचक्र, द्विचक्र, कुलसम्भव, शरभ, शलभ, कपथ, क्रापथ, क्रथ ७० बृहद्धान्ति, महाजिह्व, शंकुकर्ण, महाध्वनि, दीर्घजिह्व, अर्कनयन, मृडकाय, मृडप्रिय ७१ वायु, गरिष्ठ, नमुचि, शम्बर, विज्वर, विभु, विष्वक्सेन, चन्द्रहर्त्ता, क्रोधवर्द्धन ७२ कालक, कलकान्त, कुण्डद, समरप्रिय, गरिष्ठ, वरिष्ठ, प्रलम्ब, नरक, पृथु ७३ इन्द्रतापन, वातापी, केतुमान्, बलदर्पित, असिलोमा, सुलोमा, बाष्कलि, प्रमद, मद ७४ सृगालवदन, केशी, शरद, एकाक्ष, राहु, वृत्र, क्रोधविमोक्षण ७५ ये व और भी बलबढ़ानेवाले सब दानव लोग ब्रह्माजीकी उपासना करतेहुये ब्रह्माजी से यह वचन बोले ७६ कि हे भगवन्! आपने तीनोंलोक बनाये उनमें हम लोगोंको भी उत्पन्न किया पर हे सुरवर श्रेष्ठ! देवताओंको आपने अधिक भागदिया ७७ हम लोगोंको बहुतकम भाग मिला पर अब जो आज्ञाहो आपके यज्ञमें कार्य्यकरें व सब कार्य्यों के करने में हमलोग समर्थहैं ७८ इन देवताओं को यद्यपि आपने भाग बहुत दियाहै तथापि इन नीच अदिति के पुत्रों को हम लोग कुछभी नहीं समझते क्योंकि ये सदा हमलोगों से पराजितही होते आये हैं ७९ आप सब देवताओं के व हमलोगों के भी पितामह हैं इससे जबतक आपका यज्ञ होता है तबतक तो हमलोग नहीं बोलते यज्ञ समाप्त होनेपर देवताओं व हम लोगों से फिर विरोध होगा इनकी राज्यलक्ष्मी हमलोग अवश्य छीनलेंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है इस समय हम आपके कार्य्य के लिये जो जो आज्ञाहो देवताओं के संग संग करते रहेंगे ८०।८१ इसप्रकार उन दैत्यों के वचन अहंकारसहित सुनकर महायशस्वी श्रीजनार्दन भगवान् इन्द्रको संग लेकर शंभुजी से यह बोले कि ८२ हे रुद्र! ये दैत्य लोग यहां आये हैं व यज्ञकर्म्म में भी विघ्न किया चाहते हैं क्योंकि जब देवताओंसे ये ऐसा वैर रखते हैं तो देवगण इनके संग

क्यों यज्ञकर्म्म करनेलगे इसी विघ्नही के लिये ब्रह्माजीने इनको बुलायाही है नहीं तो यज्ञमें इनके आनेकी कौन आवश्यकता थी ८३ सो जबतक ब्रह्माके यज्ञकी समाप्ति न हो तबतक हमको व आपको भी क्षमा करनी चाहिये जब यज्ञ समाप्त होजाय तो अवश्य देवताओंकी ओर होकर दैत्योंसे युद्ध करेंगे ८४ इन्द्रकी विजय के लिये हमको व तुमको ऐसा करना चाहिये कि जिसमें यह पृथ्वी विना दानवोंकी होजाय ८५ और जितने ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य यज्ञकरें सब देवताओंकोही भोगने को मिले इन दैत्यों को कुछ भी न मिले व इस यज्ञमें जो धन दैत्यलोग लाये हैं वह भी लेकर यज्ञ में लगा दियाजावे उसका भी भाग देवताओंकोही मिले ८६ व सब ब्राह्मणलोग व देवगण जब यज्ञभाग लेकर अपने अपने स्थानोंको चलनेलगें तो मार्ग्ग में उनकी रक्षा हमको करनी चाहिये ये नीच दैत्यलोग उनके संग कुछ उपद्रव न करने पावें हां जो मारे भी न जायँ तो देवताओं के दास बनकर चाहे रहें यों तो न रहनेपावें ८७ ऐसा कहतेहुये श्रीविष्णुभगवान् से ब्रह्माजी बोले कि आपकी यह बात सुनकर ये दैत्यलोग भी क्रुद्ध होंगे व यज्ञमें विघ्न होगा जो कि आपको किसीप्रकार अभीष्ट नहीं है ८८ इससे इस समय आप व रुद्र व सब देवगण क्षमाकरें सत्ययुगके अन्तमें जब यज्ञकी समाप्ति हो जायगी ८९ तो हम फिर देवताओं को व दैत्यों को सबको इकट्ठे करेंगे चाहे उस समय संधि करना चाहे विग्रह अभी कुछ न कहना चाहिये ९० यह देवताओं से कहकर प्रभु ब्रह्माजी फिर सब दैत्यों से ऐसा वचन बोले कि हे दानवो! तुम लोगोंके साथ हमारा विरोध कभी किसी प्रकार से नहीं है ९१ किन्तु तुम लोगों से हमारी मैत्रीहै इससे तुम लोगों को चाहिये कि हमारे यज्ञका कर्म्म मैत्रीही के साथ करो कुछ विघ्न न होनेपावे दैत्योंने कहा हम अवश्य आपकी आज्ञा के अनुसारही सब कार्य्य करेंगे ९२ हमारे देवलोग भाई हैं उनका भय न हमको है न हमारा उनको है ये वचन सुनकर तिससमयमें ब्रह्माजी दैत्योंपर प्रसन्नहुये ९३ मुहूर्त्तमात्र दैत्यों के स्थितरहने में ब्रह्माजीकी यज्ञ सुनकर बहुत से ऋषि आतेभये

तिनऋषियों की पूजा केशवभगवान् करते भये ९४ पिनाकधारी महादेवजी ऋषियोंको आसन देतेभये ब्रह्माजीने वशिष्ठजीको आज्ञा दी कि इनको अर्घ्य पाद्यादि देकर बैठाओ ९५ इससे उन्होंने सुन्दर वाणी कह अर्घ्यादि दे कुशल अनामय पूँछकर कमलके पत्र पर बैठाया व कहा कि सदा इस पुष्करतीर्थ में स्थित रहियेगा ९६ इसके पीछे जटा मृगचर्म्मादि धारण कियेहुये सब ऋषिगण उसश्रेष्ठ पुष्करको ऐसे शोभित करतेभये जैसे स्वर्ग में गंगाजीको देवता शोभितकरतेहैं ९७ जो ऋषिगण आये सब गेरूके रँगे वस्त्र धारण कियेथे बहुतोंकी बड़ीलम्बी दाढ़ी व मोछें थीं बहुतों के बिरले दांत थे किसीके चिपड़े नेत्रथे ९८ किसीके वड़ेबड़े शरीर किसीका पेट बड़ाभारी कोई अतिविकराल नेत्रवाले थे किसी के बड़ेकान किसी के कानही नहीं किसीके फटेहुये कान ९९ किसी के बड़े बड़े लिंग किसी के लिंगही नहीं किसी किसीके शरीरमें नस चमड़ा व हड्डी के सिवाय और कुछ थाही नहीं व बहुत से ऋषिलोगों के पेट निकले हुये थे १०० उस समय पुष्करतीर्थको प्रकाशित करतेहुये देखकर ये सब ऋषिलोग तीर्थ के लोभसे वहां टिकेथे १०१ उनमें बहुतसे बालखिल्यलोग थे बहुत अश्मकुट्टथे जोकि पत्थरसे कूटकर अन्न फलादि खातेथे कोई दन्तोलूखली थे जो दांतोंसेही कूटकर भोजनकरते थे कोई आममक्षी थे जोकि कच्चे अन्नफलादि खातेथे १०२ कोई वायुभक्षी कोई जलाहारी कोई पत्तों कोही आहार करते थे इस प्रकार नाना नियमों को करतेहुये अपने चबूतरों पर पड़े थे १०३ ऋषिलोगभी बहुत टेढ़ेमुखके आये थे उनके मुख सीधे होगये इससे वे आपस में एक दूसरे को देखकर कहने लगे कि यह क्या हुआ १०४ इस तीर्थ के देखनेही से मुख की सुरूपता होगई इससे इस तीर्थ का आज से मुखदर्शन नामहुआ १०५ फिर उन लोगों ने नियमयुक्त होकर उस तीर्थ में स्नान किया स्नान करतेही जो अंगभंगथे सब देवताओंके समान स्वरूपवान् पुरुषहोगये व सबों के दिव्यगुण भी होगये १०६ उन के देखने के लिये उस वन के रहनेवाले सब इकट्ठे हुये व देखनेलगे जो वनवासी वहां आये

सब सुरूपवान् होगये उन में व ऋषियों में इतनाही अन्तर रहा कि ऋषि यज्ञोपवीत धारण किये थे व अन्यलोग विना उपवीत के थे १०७ वहां सब ऋषिलोग अग्निहोत्रादि करने लगे व और भी विविध प्रकार की क्रियाओं में तत्पर हुये सब तपस्वी यही चिन्तना करनेलगे कि बस अब हमलोग इसतीर्थमें आकर ज्येष्ठभावको प्राप्तहुये व सब पाप भी नष्ट होगये इससे अन्यतीर्थ को यहांसे न जायँगे फिर ऋषियों ने उस तीर्थ का ज्येष्ठपुष्कर नाम धराया १०८ । १०९ व देखा तो उस तीर्थ के किनारे पर बहुत लोग कुबड़े भी पड़े थे उनको देखकर लोग विस्मितहुये कि यहां आनेसे बाहर के लोग तो सुरूपवान् होजाते हैं व यहां बहुत कुबड़े परे हैं ११० फिर ब्राह्मणों को दान और अनेक प्रकार के बर्तनों को देकर सुना कि यहां एक प्राचीसरस्वती तीर्थ है इस से वहां जानेकी सबों ने इच्छा की व गये तो देखा १११ कि उस सरस्वतीतीर्थवर के तीरपर नानाप्रकार के नियम व्रतवाले ब्राह्मणलोग टिके हैं व तीर्थ के चारोंओर बेर इंगुद काश्मरी पकरिया पीपल बहेरा ११२ इन्द्रायणी पलाश करीर पीलूआदि वृक्ष लगे हैं और भी कैथा कँदैल बेल आम्र अम्बार अमरूद मौनश्री पारिजात आदि से शोभित कूल दिखाई दिया ११३।११४ कदम्बका बड़ाभारी वन उसके तटपर लगाथा इस से अतिमनोहर लगता था वायु जल फल पत्ते आदि सब अच्छे थे वहां नानाप्रकार के ऋषिगण भी तप करतेथे जिन में कोई कोई दांतोंसेही कूँचकर खाते चक्की से पिसे दरे हुये अन्न नहीं खाते थे ११५ कोई कोई पत्थरों सेही कूटकर खाते इसप्रकार बहुत से तपस्वीलोग वहां टिकेहुये वेदपाठ करतेथे व उनके निकट वन के सिंह व्याघ्रादि मृगगण अपना स्वाभाविक वैर छोड़कर बैठे घूमते थे कोई जीव किसी छोटेजीव की हिंसा नहीं करता था पुष्करतीर्थ में पांच सोतों से प्राचीसरस्वती बहती थी उनके नाम ये हैं सुप्रभा कांचना प्राची नन्दा विशालका ११६ । ११७ यह ब्रह्माजीकी आज्ञा से वहां आकर बहीथी सब ऋषिलोग उस देखकर प्रसन्नहुये जब ब्रह्माजीका यज्ञ होनेलगा व वेदवादीलोग पुण्याह-

वाचन करनेलगे व देवताओंके नियम होनेलगे ११८।११९ तब देव देव पितामहको सब ब्राह्मणोंने यज्ञकेलिये दीक्षित किया उस समय यज्ञ करतेहुये ब्रह्माजी ने जिसजिसअर्थ की चिन्तना की वह तुरन्त आकर उपस्थितहुआ १२०।१२१ इसी प्रकार जिन ब्राह्मणों का स्मरण किया वह वहां तुरन्त पहुँचगया व देव गन्धर्व सब गानेलगे अप्सरा नाचनेलगीं १२२ व दिव्यबाजे-बाजनेलगे उस-यज्ञकी सम्पत्ति से सब देवगण भी प्रसन्न होगये १२३ व सबके सब विस्मितहुये फिर मनुष्यों को क्या कहूं वेतो देखकर अत्यन्त विस्मितहुये जब पुष्कर में इसप्रकार ब्रह्माजी का यज्ञ होनेलगा तो १२४ सब ऋषिलोग सन्तुष्टहोकर सरस्वती से बोले कि आज से सरस्वती का सुप्रभा सरस्वती नामहुआ १२५ व वेगयुक्त सरस्वती जीको पितामहकी आज्ञा से वहां आई हुई जानकर उस यज्ञ को सब ऋषियोंने बहुत माना १२६ इसप्रकार पुष्करतीर्थमें ब्रह्माजीकी व बुद्धिमानों की प्रसन्नताके लिये सरस्वतीनदी उत्पन्नहुई है १२७ यह पुण्यकी पुण्यता करनेवाली पांचसोतोंसे युक्त सरस्वती सुप्रभा नामकहुई १२८ जैसेही सरस्वती प्रकटहुई कि सब ऋषियोंने जाकर आदरपूर्व्वक स्नानाकिया व अच्छीतरह उसका ध्यान किया १२९ यह नदी पुष्कर में पूर्व्वओर को बहती है इससे ऋषियों ने भक्तिसे प्रसन्न होनेवाली इसका प्राचीसरस्वती नाम रक्खाहै १३० हे राजन्! एक और आश्चर्य्यकी बात पृथ्वीपर हुईथी उसे सुनो पूर्व्वकाल में एक मंकणकनाम ब्राह्मण हुआ उसने एक समय कुश की जरसे अपने हाथमें छेदकरदिया उस घावसे शाककारस बहने लगा १३१।१३२ वह शाककारस देखकर मारेहर्ष के नाचनेलगा उसके नाचतेही जितने स्थावर जंगमथे सबके सब नाचनेलगे १३३ यहां तक कि सृष्टिमें कोई भी ऐसा न रहा जो उसके भयसे मोहित होकर नाचने न लगा हो इसको देख इन्द्रआदि देवता व परम तपस्वी ऋषिलोग १३४ जाकर ब्रह्माजी से बोले कि ब्रह्मन् ऐसा कीजिये जिससे यह ब्राह्मण किसीप्रकार अब न नाचे तब ब्रह्माजीने रुद्रजीको आज्ञादी १३५ कि तुम जाकर ऐसा उपायकरो जिस

नें वह ब्राह्मण अब न नाचे रुद्रजीने जाकर देखा तो वह ब्राह्मण अत्यन्त हर्ष से नाचरहाथा १३६ उससे कहा हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! तुम किस हेतुसे नाचतेहो तुम्हारे नाचने से यह सब जगत् नाचरहा है इससे इसका कारण अवश्य हमसे बताओ १३७ यह सुनकर वह मुनिबोला कि क्या तुम नहीं देखते कि हमारे हाथ से शाककारस बहताहै १३८ इसी को देखकर मारेहर्षके हम नाचते हैं इसप्रकार अनुरागसे मोहित उसमुनिसे बहुत हँसकर रुद्रभगवान् बोले १३९ कि हे विप्र! हम तुम्हारे इसनाचने से विस्मितहोकर नहीं नाचते हमको देखो जब महादेवजीने उसमुनिश्रेष्ठ से ऐसा कहा १४० तो वह ध्यानकरके विचारने लगा कि यह कौन है जो हमारे नाचने से नहीं नाचता व हमको भी नाचने से रोकताहै फिर महादेवजीने अपने अँगूठे से अँगूठे में मारा कि उसमें एकघावहोगया १४१ उससे श्वेतरंगकी राख निकलने लगी उसको देख वह मुनि बहुत लज्जितहुआ व महादेवजी के पैरोंपर गिरपड़ा व कहनेलगा १४२ कि मैं रुद्रसे श्रेष्ठ और किसीदेवको नहीं समझता हे महादेव! तुम चराचर इसजगत्की गतिहो १४३ इसीसे पण्डितलोग इस जगत् को तुम्हारा बनायाहुआ कहतेहैं व युगोंके पीछे जब प्रलय होताहै तो तुम्हीं में सब जाकर बसता है १४४ तुमको इन्द्रादि देवताभी नहीं जानसक्ते तो मैं कैसे जानूँ तुम्हींमें सब ब्रह्मादिदेव दिखाईदेते हैं १४५ देवताओं के करने व करानेवाले सब तुम्हींहो तुम्हारे प्रसाद से सब देव अकुतोभय होजाते हैं १४६ इसप्रकार महादेव जीकी स्तुति करके प्रणतहो ऋषि यह वचन बोला हे भगवन्! तुम्हारे प्रसाद से अब यहां मेरा तप नहीं नष्ट होगा १४७ यह सुन प्रसन्नमन होकर महादेवजी उस ऋषिसे बोले कि हे विप्र! हमारे प्रसादसे तुम्हारा तप सहस्रगुण अधिक बढ़े १४८ हम अब तुम्हारे साथ इस प्राचीसरस्वती में सदा बसैंगे सरस्वतीनदी ऐसेही महापुण्या है पर इस तीर्थमें तो विशेषतासे १४९ उस पुरुषको इस लोक में व परलोक में कुछभी दुर्लभ नहींहै जो कि सरस्वती के उत्तर के तटपर अपना शरीर छोड़ताहै १५० व प्राचीसरस्वती के

तीरपर जो जप यज्ञ करता है वह फिर इस संसार में जन्म मरण को नहींपाता व स्नान करनेवाला राजसूययज्ञकाफल पाताहै १५१ व जो नियमों से उपवास से अपना देह दुर्बल करता है चाहे जलाहार करके वा वायुपान करके व पत्तेखाकर १५२ व चबूतरे पर बैठकर यम नियम सब करके व व्रत नियमभी जो ब्राह्मण उसी के तीरपर करताहै १५३ वह शुद्धदेह होकर ब्रह्माके परमपदको जाता है इस तीर्थ में जो लोग तिलभर सुवर्णदान करते हैं १५४ उस दानको पूर्व्वकाल में ब्रह्माजीने पर्व्वतदान के समान कहा है इस तीर्थमें जो मनुष्य आकर श्राद्धकरेंगे १५५ वे अपने इक्कीस कुलों सहित स्वर्ग्ग को जायँगे इसतीर्थ में केवल एकपिण्ड देनेसे पितर तृप्त होजाते हैं ऐसा उत्तमतीर्थ है १५६ उसी पिण्डसे उसके पितर ब्रह्मलोकको चलेजाते हैं फिर अन्नकी इच्छा नहीं करते क्योंकि वे मोक्षमार्ग्ग में चलेजाते हैं १५७ इस सरस्वती की प्राचीनता जैसे हुई है सुनो वर्णन करते हैं एक समय सरस्वतीनदी से इन्द्रादिक सब देवताओं ने कहा १५८ कि तुम पश्चिम के समुद्र के किनारे जाओ व इस बड़वानल को क्षारसमुद्र में छोड़दो १५९ ऐसा करने से सब देवता भयरहित होजायँगे नहीं तो बड़वानल अपने तेजसे सबको भस्म करडालेगा १६० इस महाभय से देवताओं की रक्षा करो हे सुश्रोणि! माता के समान देवताओं को अभयदानदो १६१ जब सब देवताओं की ओरसे श्रीविष्णुजी ने ऐसा कहा तब सरस्वतीजी बोलीं कि हम स्वतन्त्र नहीं हैं हमारे पिता विराट् से हम को मांगो १६२ हम उन्हीं की आज्ञाकारिणी हैं व अभी कुमारी हैं विना पिताकी आज्ञा हम एकपदभी उठाकर कहीं जा नहीं सक्तीं इस से कोई और उपाय विचारिये सरस्वतीका ऐसा अभिप्राय जानकर श्रीभगवान् विष्णु ब्रह्माजी के समीप जाकर बोले १६३ । १६४ कि पितामहजी बड़वाग्नि और किसी उपायसे शान्त नहींहोसक्ता एक दोष रहित तुम्हारी कन्या सरस्वती कुमारी को छोड़ और किसी से यह कार्य्य नहीं होसक्ता १६५ तब ब्रह्माजीने सरस्वती को बुलवाकर बड़ीप्रशंसा करके स्नेह से शिर सूँघकर कहा १६६ कि हे देवि

सरस्वति! हमारी व इन हमारे पुत्र सब देवगणों की रक्षा तुमकरो इस बड़वानलको लेजाकर लवणसमुद्र में फेंकदो १६७ पिताका ऐसा वचनसुन करांकुल पक्षी के समान सरस्वती रोनेलगी क्योंकि अब पिता से वियोग हुआ चाहता था जब पिता के आगे दीनमन होकर रोनेलगी १६८ तो उसकामुख जलकणसे सींचेहुए कमलकी नाईं शोक के आंसुओं से भीगकर अतीव शोभित हुआ १६९ उस को इसप्रकार रोतीहुई देख ब्रह्मादिक देव सब के सब शोकभाव के वशीभूतहुये १७० फिर शोक के सन्तापसे तापित उसके हृदय को स्वस्थकरके ब्रह्माजी बोले कि रोदन न कर अब तुझको कहीं से कुछ भय नहीं है १७१ देवताओं के प्रभाव से तुझको बड़ामान् लाभ होगा अब लेकर इस बड़वानलको समुद्र के बीच में छोड़दे १७२ इसप्रकार जब वह बाला ब्रह्माजी से कहीगई तब नेत्रों से आंसु बहातीहुई ब्रह्माके प्रणाम करके बोली कि अच्छा आपकी आज्ञासे जातीहूँ १७३ तब सब देवताओं ने व ब्रह्माजीने भी कहा कि चली जाओ कुछ भी भय तुमको नहीं है यह सुन भय छोड़ हर्षितमन होकर चलने पर उपस्थितहुई १७४ उसकी यात्रा के समय शंख नगारेआदि बाजे बाजे व नानाप्रकार के वैदिक पौराणिक मंगल पढ़े गये १७५ सफेद कपड़े पहनायेगये श्वेतचन्दन अंगों में लगाया गया शरदृऋतु के कमल का छत्रबनाकर ऊपर लगायागया मोती हीरोंका हार पहिनायागया १७६ तब पूर्णमासी के चन्द्र के समान प्रकाशित मुखवाली व कमलपत्र के समान विस्तृत नयनवाली इन्द्र की कीर्त्ति सब दिशाओं में फैलाती हुई १७७ अपने तेज से उस शरीर से निकल जगत् को प्रकाशित करातीहुई चली तब उसके पीछे २ गङ्गाजी भी चलीं व बोलीं १७८ कि हे सखि! कहां जाती हो हम तुमको फिर से देखलें फिर सरस्वतीजी खड़ी होगईं गङ्गा जी बोलीं १७९ हे शुभे! अब तो तुम पश्चिमदिशाको जातीहो जब कभी फिर प्राचीदिशाको लौटोगी तभी हमको देखोगी और देवताओं सहित तुमको तभी हम भी देखेंगी १८० अब उत्तरको मुख करके सब शोक छोड़दो तब सरस्वती उत्तरको मुखकरके फिर पूर्व

मुख होगई व गङ्गाजी उत्तर को मुख किये रहीं १८१ इसलिये उस स्थानपर स्नान दान करने से अश्वमेध यज्ञ करने का फल होताहै व श्राद्ध करनेसे पितरोंको अक्षयफल मिलताहै १८२ जो कोई मनुष्य उत्तरवाहिनी गङ्गा व पूर्ववाहिनी सरस्वती में स्नान करेंगे वे तीनों ऋणोंसे छूटजायँगे और मोक्षमार्गमें पहुँचेंगे इसमें विचार कुछ नहीं है १८३ फिर गंगाजीने सरस्वतीसे कहा कि फिरभी तुम्हारे दर्शन हों ऐसा न हो उधरसे न लौटो अच्छा अबजाओ बार २ हमारा स्मरण करती रहना १८४ इसी प्रकार यमुनाजी भी सरस्वती से मिलीं व मनोरमा गायत्रीजी भी सावित्रीआदि औरभी सब स्त्रियां मिलीं व कुछदूर पहुँचानेगईं १८५ जब इन सबोंने विसर्जन किया तो वे सरस्वतीजी मनुष्य शरीरसे नदीरूप होकर बहीं व जाते २ उत्तंकमुनि के आश्रमपरसे आगेको चलीं सो जब गंगा यमुना से बिदा होकर आगेको चलीं १८६ तो कल्पवृक्ष के नीचे होकर पश्चिमको सरकीं सब देवताओं के देखते देखते चलीं व कहा १८७ कि हमको विष्णुभगवान्का रूप जानकर सबदेवगण सदा स्तुति करते रहना व ब्राह्मणलोग भी फलके लिये नित्य सेवा करते रहेंगे १८८ हम अब कल्पवृक्षके नीचे होकर पश्चिम के समुद्रको जाती हैं वह वृक्ष साक्षात् विष्णुभगवान् कारूप है व अनेक शाखाओं से युक्त है मानों साक्षाद्ब्रह्मा की मूर्त्तिहै व उसके खोंथलेमें कोटि २ देवगण बैठे रहते हैं १८९ व उसके पत्र २ में बैठे हुये देवगणों के वचन सुनाई देते हैं यद्यपि यह प्रयागका कल्पवृक्ष वा अक्षयवट पुष्परहित है तथापि पुष्पवान् सा दिखाई देताहै १९० क्योंकि जाती चम्पा आदिके समान उसकी भी शाखाओं पर शुक आदि पक्षी बैठे रहते हैं व केतकी अशोकादि वृक्षभी उसके किनारे २ बहुत हैं १९१ उनपर भी कोकिलादि पक्षी पुष्पों के आकार के बैठे रहते हैं इस प्रकार का वह कल्पवृक्ष है जैसे महादेवजी से युक्त गंगाजी तैसेही अक्षयवट से सरस्वतीजी युक्त हैं १९२ जब सरस्वतीजी वहां आईं तो कल्पवृक्ष रूप श्रीजनार्दन भगवान् से बोलीं कि अच्छा अब अपने अग्नि बड़वानल को हमको दो कि हम प-

श्चिम समुद्रमें पहुँचावें १९३ जब सरस्वती ने ऐसा कहा तो श्री विष्णुभगवान्जी ने कहा कि अच्छा ग्रहणकरो तुमको इससे जलनेका भय न होगा १९४ अब इसे पश्चिम समुद्रको पहुँचाओ और इसे सुवर्ण के पात्र में करलो १९५ यह सुनकर सरस्वतीने सोनेके पात्रमें करलिया इस रीतिसे श्रीविष्णुभगवान् ने बड़वानल सरस्वती को सौंपा १९६ उसे ग्रहणकर वह सुश्रोणी पश्चिम दिशा की ओर चली व वहीं अन्तर्द्धान होगई नीचे २ जाती हुई पुष्कर-तीर्थ में पहुँची १९७ जो कि सुन्दर और देवता और सिद्धों से सेवित है तहां के मर्यादा पर्वत में वह निर्मल नदी उत्पन्नहुई १९८ जहां पर ब्रह्माजी ने यज्ञ सेवन कियाहै तहांहीं मुनिश्रेष्ठोंकी सिद्धि के लिये यह महानदी सरस्वतीजी आई हैं १९९ जिन २ कुण्डों में वहां ब्रह्माजी ने होम कियाथा उन सबों को सरस्वतीने प्रत्यक्ष होकर प्लावित किया यहां तक कि उस पुण्य पुष्करतीर्थ में सरस्वती सैकड़ों धाराओं से बही व सब कुण्डों में भरहुई २०० पवन भी ऐसा उस समय चला कि सरस्वतीका जल लेकर सर्वत्र उस तीर्थ में पहुँचादिया २०१ व वह पुण्य महानदी उस क्षेत्रके प्रत्येक स्थान में व्याप्त होगई इससे वहां टिकी हुई सरस्वती सब मनुष्यों का पाप नशाती है २०२ वहां जो शुभकर्म करनेवाले लोग प्राची सरस्वती को देखते हैं वे लोग नीचे जाकर नरक कभी नहीं देखते २०३ व जो पुरुष वहां विधिपूर्व्वक स्नान करता है वह तो ब्रह्म-लोक को पाकर ब्रह्मा के साथ मोदित होता है २०४ व जो कोई वहां ब्राह्मणको सुन्दरदधि भोजन कराता है वह अग्निलोक में जाकर नानाप्रकार के भोग भोगता है २०५ व जो कोई पुरुष भक्तिसे वहां किसी ब्राह्मण को वस्त्र देताहै वह उत्तमवस्त्र के देनेसे जो फल होताहै उससे दशगुणा अधिक फलपाताहै इससे वस्त्रदान का वहां विशेष माहात्म्य है २०६ व जो मनुष्य ज्येष्ठकुण्डमें स्नान करके पितरों का तर्प्पण करता है वह नरक में गिरेहुये भी अपने सब पितरों का उद्धार करता है २०७ पितामहजी के क्षेत्र पवित्र पुष्करमें प्राप्त व पुण्य सरस्वतीनदी को पाकर मनुष्य अन्य देव-

ताओं के तीर्थोंकी प्रार्थना क्यों करे २०८ क्योंकि सब तीर्थों में स्नान करने से जो फल मनुष्य पाताहै वह फल ज्येष्ठकुण्डमें एकही बारके स्नान करने से पुरुष पाता है २०९ बहुत कहने से इस विषय में क्याहै जैसेही प्राणी सरस्वतीतीर्थ में पहुँचता है कि वैसेही सब तीर्थोंका फल पाजाता है काल तीर्थ क्षेत्र व पात्र पाकर जो कोई दान करता है वह ब्राह्मण व दाता दूनों परस्पर पुण्य भोगते हैं २१० । २११ कार्त्तिकमासकी पौर्णमासी वैशाखकी पूर्णिमा चन्द्रमा व सूर्य्य का ग्रहण, कुरुजांगलदेश में पुण्यकाल कहाते हैं २१२ इन पर्व्वों में प्रायः सब तीर्थोंका माहात्म्यहै परंतु ब्रह्माजीने सबसे अधिक पुष्करतीर्थ में सरस्वतीनदीका माहात्म्य कहाहै २१३ कार्त्तिकीपौर्णमासी को जो पुरुष मध्यमकुण्डमें स्नान करके कुछभी द्रव्य ब्राह्मण को देताहै वह अश्वमेधयज्ञ करने का फलपाता है २१४ इसीप्रकार कनिष्ठककुण्ड में भी स्नान करके जो कोई ब्राह्मण को एक रेशमी वस्त्रदान करता है २१५ वह शीघ्रही मरणान्त में मनोरम अग्निलोकको जाताहै व अपने इक्कीस कुलों के साथ वहां के सुख भोगताहै २१६ इससे सब प्रयत्नोंसे पुष्करतीर्थको जाना चाहिये बस केवल पुष्करतीर्थही के करनेसे बहुतसे फल इकट्ठे पुरुषको मिलजाते हैं २१७ उसमें भी पुष्करमें जहां प्राचीसरस्वतीनदी है मति स्मृति प्रज्ञा मेधा बुद्धि दया ये सरस्वतीहीके पर्य्यायवाचक नाम हैं अर्थ करने से केवल कुछ २ अर्थान्तरहोताहै जबसे कि वहां प्राचीसरस्वती होकर प्राप्त हुई है २१८। २१९ तबसे जो कोई पुरुष उसके किनारे पर जाकर उसके जलका दर्शन करते हैं वेभी अश्वमेधयज्ञका फल पाते हैं इसमें कुछभी सन्देह नहीं है २२० व जो उतरकर कोई उस तीर्थ में स्नान करता है वह पुरुष समाधि लगाकर ब्रह्मलोकको चला जाता है व ब्रह्माके निकट सदा बसा रहताहै २२१ व उस तीर्थ में जाकर जो कोई शाकादिसे भी पितरोंकी पूजा करताहै वह उन पितरोंके प्रसाद से विपुलभोग पितृलोक में जाकर भोगताहै २२२ व जो कोई वहां विधिपूर्व्वक पितरोंका श्राद्ध करते हैं वे तो दुःखदाता नरकमें टिके

हुये भी अपने पितरोंको स्वर्ग्गमें पहुँचातेहैं २२३ व जो मनुष्य वहां स्नान करके कुश तिल व पवित्र जलसे पितरोंका तर्प्पण करताहै उसके पितर सन्तुष्ट होजाते हैं २२४ सबतीर्थों में यह अधिक कहाहै तिससे पृथ्वीमें तीर्थोंमें यह आदितीर्थ प्रसिद्धहै २२५ धर्म और मोक्षका क्रीड़ानिधिभूत स्थितहै फिर सरस्वती संयुक्तहै २२६ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारोंका देनेवालाहै जे मनुष्य पापनाशने के लिये जलमें प्रवेशकरते हैं २२७ उनको सुखसे गोदान के समान फलहोताहै और पण्डितलोग सोनेके दानके समान भी फलको कहते हैं २२८ तर्पण और पिण्डदानसे नरकमें भी स्थितपितर पुत्रसे तारितहोकर स्वर्गकोजाते हैं २२९ पुष्कर में सरस्वती में जे पुरुष जलपीते हैं वे ब्रह्मा और महादेवजी से वन्दित अक्षयलोकोंकोजाते हैं २३० पुष्करमें सरस्वती स्वर्गकीसीढ़ीरूपहै यह महानदी पुण्यात्माओंको मिलसक्तीहै २३१ धर्म तत्त्वके जाननेवाले मुनियों से यह सेवितहै तिससे सब जगह यह सरस्वतीदेवी पवित्र स्थित है २३२ पुष्करमें विशेषकर पवित्रसे पवित्रहै यह पुण्यकारिणी सरस्वती संसार में सुलभ स्थितहै २३३ कुरुक्षेत्र; प्रभास और पुष्करमें दुर्लभहै यह तीर्थ पृथ्वी में सबतीर्थों में श्रेष्ठकहाहै २३४ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारोंका साधकहै प्राचीसरस्वतीको पाकर जो और तीर्थको ढूंढ़ताहै २३५ वह हाथमें स्थित अमृतको छोड़कर विषकी इच्छाकरता है ज्येष्ठमें प्रयागकी ज्येष्ठामध्यममें मध्यमा है २३६ बुद्धिमान् मनुष्य कनिष्ठतीर्थको प्रदक्षिण होकर जावे इन तीनों ज्येष्ठ, मध्यम और कनिष्ठ पुष्करमें स्नानकर प्रदक्षिणाकरै २३७ और पितरोंको तिलयुक्त जो जलदेवै तो वे पितर सन्तुष्ट होकर तर्प्पण करनेवालेको अमितफल देतेहैं २३८ इससे वहां स्नान तर्प्पण श्राद्धादि करके फिर पितामहजीका दर्शन करना चाहिये उसके पीछे फिर स्नान करना चाहिये क्योंकि श्राद्ध करने के पीछे सदा स्नान करना उचितहै २३९ जिस किसीको ब्रह्मलोक जानेकी इच्छाहो उसे चाहिये कि नित्यही पुष्करतीर्थ में स्नानकरे पुष्करतीर्थ में तीन तो पर्व्वतके शृंग हैं व तीनहीं उन शृंगों से बहकर कुण्डहैं २४०

उन सबोंका पुष्करही नामहै एकज्येष्ठपुष्कर दूसरा मध्यमपुष्कर तीसरा कनिष्ठपुष्कर २४१ ऐसेही शृंग व प्रस्रवणभी ज्येष्ठ मध्यम कनिष्ठके नामों से प्रसिद्धहैं वहां संकल्प करके स्नान करतेही धर्म्म अर्थ काम व मोक्ष सबोंके फल पुरुष पाजाताहै २४२ परन्तु मोक्ष उसीको मिलताहै जो वहां कुछ दिन रहकर अपना शरीर त्यागता है नहीं तो जो कोई प्रयतहो अपनी इन्द्रियोंको वशमें करके स्नान कर ब्राह्मण को एक कपिलाधेनु दान करताहै वह भी मोक्षकेदेनेवालेलोकोंको पाताहै बहुत कहनेसे क्याहै अन्यत्र रात्रिमें स्नान दान करने का निषेधहै पर पुष्करमें रात्रिको भी जो कोई याचकको २४३। २४४ दान देताहै व स्नान भी करताहै वह अनन्त सुख पाताहै इस तीर्थ में बहुधा तिल दानकी मुनिश्रेष्ठ बड़ी प्रशंसा करते हैं २४५ व कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको सदा स्नान करनेका विशेष माहात्म्यहै पीठा व गुड़से पिण्डदानका विधानहै इससे पिण्ड इन्हींदोनोंका बनाना चाहिये व पिण्डदेनेसे २४६ वह प्राणी मरणान्त में पितृलोक को जाताहै पुष्करारण्यमें जाकर फिर सरस्वती २४७ अन्तर्द्धान होकर पश्चिम दिशा को चली है जब पुष्करतीर्थ से गुप्तहोकर सरस्वतीजी चलीं तो बहुतदूर नहीं गईं २४८ कि फल पुष्पादिकों से शोभित एक खर्ज्जूर वनमिला वहां कुछ थँभकर कुछदूर जानेपर एक और सब ऋतुके पुष्पादियुक्त सिद्ध चारण मुनियों से सेवित स्थान मिला वहां तीनोंलोकोंमें प्रसिद्ध एकनन्दानाम श्रेष्ठनदीमिली २४९ २५० जोकि मत्स्य नाक मकरादिकों से शोभित निर्मल जलसे भरी थी इतनासुन भीष्मजीने पुलस्त्यजी से पूँछा कि क्या यह कोई और श्रेष्ठ नदीथी २५१ इस नन्दा सरस्वती के वृत्तान्त सुनने में हमको बड़ाकौतुक है जैसे यह श्रेष्ठ नदीहुई और जिसकारण से कीगई २५२ ऐसा कहनेपर पुलस्त्यजी भीष्मजीसे एक पुरातन वृत्तान्त कहनेलगे कि हां इसका नन्दानाम होनेका यह वृत्तान्तहै कि २५३ एक नित्यही क्षत्रव्रत धारण करनेवाला प्रभञ्जननाम महाबलवान् राजाहुआ वह शिकारखेलने के लिये एकसमय उसीवन में आया २५४ उसने एक मृगीको एक झालीके नीचे बैठीहुई देखा व

तीक्ष्णबाण से उसे मारा २५५ उसने सब दिशाओं की ओर देखा तो राजा को हाथ में बाणलिये देखकर कहा कि हे मूढ़! तूने यह दुष्करकर्म्म कैसेकिया २५६ क्योंकि इससमय नीचे को मुखकिये हुई मैं अपने बच्चे को दूध पिलारहीथी कहीं से कुछभय मुझको न था इतने में मांसके लोभसे तूने आकर बाण मारदिया २५७ व हे राजन्! हमने सुनाहै कि जिसकाबच्चा दूधपीरहाहो जो सोताहो व जो मैथुन करनेपर उद्यतहो ऐसे मृगको कभी न मारना चाहिये २५८ सो मैं अपने पुत्रको दूधही पिलातीथी उसी बीचमें तुमने वज्रसमान बाण से मुझे मारदिया मैं तो न किसीकेसाथ कुछ दोष करतीहूँ केवल वनमें चरनेआई थी २५९ इससे हे दुर्बुद्धे तूभी इस कंटकयुक्त वनमें मांसभक्षी व्याघ्रताको प्राप्तहो २६० ऐसा शाप सुनकर आगे खड़ाहुआ वह व्याकुलेंद्रिय राजा हाथजोड़कर उस मृगीसे बोला २६१ कि हे भद्रे! हमने अज्ञानसे बच्चेको दूध पिलाती हुई तुझको मारा है इससे अब हमारे अपराध क्षमाकरके प्रसन्नहो २६२ अब हम व्याघ्र का रूप छोड़कर फिर कब मनुष्य होंगे इस प्रकारके शापके छूटने का कोई समय नियत करदेना चाहिये २६३ ऐसा कहने पर वह मृगी राजासे बोली कि सौवर्ष के अन्तमें २६४ जब नन्दाकेसाथ तुम्हारा संवादहोगा तो फिर तुम मनुष्य होजाओगे बस मृगीने जैसेही ऐसा कहा है कि राजा नख व दांतों को आयुध धारण करनेवाला अत्यन्त घोररूपी व्याघ्र होगया व उस वनमें रहकर मृगोंको मार २ खानेलगा उनमें बहुधा चौपायों को २६५।२६६ व समयपाकर मनुष्यों को भी भक्षण करलेताथा इस प्रकार मृगोंका मांसखातेहुये व अपनी निन्दाकरतेहुये उस व्याघ्ररूपी राजाको उस वनमें सौवर्षबीते सदा यही शोचाकरताथा कि हम अब कब फिर मनुष्यता को प्राप्तहोंगे २६७। २६८ जिसमें कि फिर ऐसा कुत्सितयोनि के करनेवाला दुष्टकर्म्म कभी न करेंगे मनुष्य भी हमको यहां वैसेही दिखाईदेते हैं जो मांसके लोभ से मृगया खेलने को आते हैं २६९ सो भी हमको देख भयभीतहोकर भाग खड़ेहोते हैं इससे हमको मनुष्यहोना तो दूररहा अब मनुष्यों

के दर्शनही नहीं होते २७० हाय यद्यपि मेरा जन्म पापरहित सज्जनों के कुलमें हुआ तथापि अपने पापसे पापयोनिमें आपड़ा था अपापी परपापी होगया कालकी कैसी विपर्य्यय गतिहै २७१ अब जबतक यह शरीर है तबतक कुछ सुकृतभी नहीं होसक्ता क्योंकि यह तो हिंसाहीका रूप है अब मैं दुःखही पातारहूँगा क्योंकि इस शरीर से मुक्ति काहेको होगी २७२ अब काहेको और मृगी होगी व काहेको मेरी मुक्तिहोगी इसप्रकार तिस वनमें बसते २ जब पूरे सौवर्षबीते २७३ तो समयपाकर एकदिन घासचरने व पानी पीने के लिये वहां एक गाइयों का झुण्डआया उनके साथ चरानेवाले गोप भी बहुतसे थे सब सबओर से उनकी रक्षा करते थे २७४ जैसे वन वृक्षोंसे भरापुरा रहताहै ऐसेही वह गाइयोंका समूह गोपोंसे भराथा वह सब वहांतक खर्जूरीहीं का वनथा जहां कि उस मृगीको राजाने माराथा व जहां वह व्याघ्ररूप होकर पछितताथा २७५।२७६ जब वह धेनुओंका झुंडआया तो उनमें एक अतिहृष्टपुष्ट प्रसन्न नन्दानाम धेनुथी जोकि उस गोमण्डलमें मुख्यथी व हंसकासा श्वेत उसका रंग था स्तन घड़ेके समान बड़ाथा २७७ घांटी उसकी बड़ी लम्बीथी सब हाथ पैर शृंग नेत्रादि जोड़ेवाले अंग समान थे खाल उसकी बहुत पतली, नीलाकण्ठ, सुन्दर गर्दनयुक्त, घंटा बांधेहुई, मीठीवाणी बोलने वाली थी २७८ वह सब झुण्डके आगे निर्भय होकर चलतीथी व चरती भी सबोंके आगेहीथी जब ग्रामको चलतीथी तो भी आगेही आगे जातीथी व जब वन में चरती तो भी विना रोंकटोंक मनमाना खर प्रथम वह चरलेती पीछे और चरतीथीं वहां एक नदीथी उसके तटपर रोहितनाम पर्व्वतथा २७९। २८० उसमें अनेक कन्दरा गुहाआदि थीं जिनमें नानाप्रकार के जन्तुभरेथे तृणादिसे समाकुल उस पर्व्वतके पूर्व्व व उत्तरके कोनेमें २८१ बड़ा विषम दुर्गस्थान अतिभयंकर व लोमहर्षणथा जिसमें नानाप्रकार के मृग सिंह भरेथे बहुतजीवोंसे सेवितथा २८२ नानाप्रकारके छोटे बड़ेवृक्षों व [illegible] से युक्तथा सैकड़ों शृगालियां उसमें शब्द कररहीथीं उसी दुर्गस्थान में अतिभयंकर कामरूपी २८३ महादंष्ट्रावाला व महाबली व्याघ्र

रूपधारी वह व्याघ्र वसताथा जो कि मांसखाता व रुधिर पीताथा जिसका आकार तो पर्व्वत के समान था व शब्द मेघके गर्ज्जनेके तुल्य दांत उसके बड़े तीक्ष्ण और नखही आयुधथे उसी स्थानपर एक धर्म्मात्मा नन्दनाथ चरवाहा घास के लोभ से अपनी धेनुओं को चराताहुआ आया उसके झुण्डकी जो सब से बड़ी नन्दा नाम गाय थी वह झुण्ड से बाहर चलीगई २८४ । २८५ व चरते २ जाकर अनाथ उस व्याघ्र के समीप पहुँचगई उसे देख खड़ी रह खड़ी रह ऐसा कहकर वह व्याघ्र दौड़ा २८६ और बोला कि हे धेनुके ! आज तू हमारे भक्षण के लिये नियतहुई है क्योंकि अपने आप आकर उपस्थित हुई है उस व्याघ्रके ऐसे निष्ठुर रोमहर्षण वचन सुनकर २८७ उस गौने श्वेतरंग व अतिकोमल अंग के अपने बछड़े का स्मरण मारे स्नेह के किया व गद्गद अक्षरसे अपने पुत्र के लिये हुँकरने लगी २८८ व पुत्र के शोक से सुतकेऊपर कृपा करनेवाली नन्दा जलनेलगी व पुत्र के देखने से निराश होकर दीन वचन कहकर रोदन करने लगी २८९ द्वीपी उस धेनुको करुणापूर्व्वक दुःखित हुई देखकर बोला कि हे धेनुके ! अब रोदन किस लिये करती है २९० अब तो भाग्यवश से सुखपूर्व्वक हमारे भोजन के लिये प्राप्तहुई है अब रोने धोने वा हँसने से तेरा जीवन नहीं होसक्ता २९१ लोक में जो जिसके लिये नियत है उसे वह भोगता है तेरी मृत्यु आजही नियतथी सो होती है अव वृथा क्यों शोच करती है २९२ इतना कहकर व्याघ्र ने फिर उससे कहा कि रोदन करने का कारण क्या है हमसे कहती क्यों नहीं इस विषय में हम को बड़ा कौतुक है ठीक रोने का हेतु वतादे २९३ व्याघ्र के वचन सुनकर नन्दा धेनु बोली कि हे मेरे नाथ ! तुमतो यथेच्छ रूपधारीहो आपको नमस्कार है २९४ तुम्हारे सामने जब कोई आता है तो उसकी रक्षा फिर कोई नहीं करसक्ता सो कुछ मैं अपने जीवन के लिये शोच नहीं करती क्योंकि मरणतो एकदिन अवश्यही होता सो आजही सही २९५ ॥

दो० जासु जन्म सो मरत है जन्म मरे पुनि होत ॥

अमिट वस्तुहित शोचनहिं सुनहुँ ईश मृगगोत २९६
अमर कहावत देव पुनि मरत समय को पाय ॥
यासों नहिं हम प्राणनिज शोचहिं हे मृगराय २९७

किन्तु जो मैं मारे स्नेह व दुःखसे रोदन करतीहूँ व मेरे हृदयमें बड़ा संतापहै उसका कारण बतातीहूं सुनो २९८ मैं अभी थोड़ेदिन हुये कि प्रथम ब्याईहूँ व प्रथमका बच्चा सबको बहुत प्रिय होताहै उस में अभी मेराबालक बहुतही छोटाहै २९९ दूधको छोड़ अभी घास सूँघताभी नहीं फिर खाने को कौन कहै सो वह घर में बँधा है क्षुधा के मारे पीड़ित मुझ को देखरहा होगा ३०० बस मैं उसी को शोचतीहूं कि मेरे न होनेपर वह मेरा बालक कैसे जीवेगा सो पुत्र के स्नेह के वश में पड़कर अब मैं उसको दूध पिलाया चाहतीहूं ३०१ पिलाकर व उसका शिर चाटकर अपनी सखियों को सौंपकर उसका हित अहित सब बताकर ३०२ फिर मैं चलीआऊंगी तब तुम यथेष्ट भक्षण करलेना नन्दा के ऐसे वचन सुनकर व्याघ्र फिर बोला ३०३ अरे तुझे अब पुत्रसे क्याकाम है अपने मरणको नहीं जानती जो होरहाहै हमको देखकर सब प्राणी डरते हैं व मरभी जातेहैं ३०४ परन्तु तू कृपायुक्त होकर पुत्र२कहेजातीहै ॥

दो० पुत्र तपस्या दानव्रत गुरु माता पितु नाहिं ।
कालप्रपीड़ित पुरुषको रक्षत गुनुमनमाहिं ॥

भला गोपी समूहों से भरेहुये वृषभों के नाद से नादित बालबछड़ोंसे सुशोभित देवलोकको भी भूषित करनेवाले निस्सन्देह स्वर्ग के तुल्य विराजमान ३०५ । ३०७ नित्य प्रमुदित दिव्य सब देवताओं से पूजित सब पवित्रों में पवित्र मंगलों में मंगल ३०८ सब तीर्त्थोंके तीर्त्थ सब वश्योंको वशकरनेवाले सब गुणोंसे युक्त ईश्वर के बड़े २ मन्दिरोंसे युक्त ३०९ सब तीर्त्थोंके स्नानके समान भूमिलोक में स्वर्गके तुल्य गोपियोंकी मथानियों के शब्दसे बालकों व बछड़ोंके रवसे ३१० व गाइयों के हुंकारोंसे अलक्ष्मीके दूरकरनेवाले व माताओंके लिये बछड़ों के करुण वचनों से नादित ३११ व बड़े शूरवीर गोपोंके भुजोंसे पालित गाने बजाने नाचने ताड़देने आदिसे

नादित ३१२ इधर उधर कूदते फांदते व शब्द करतेहुये बछड़ों से नादित पवनप्रसंगसे चलतेहुये कमलोंसे शोभित तड़ागके समान विराजमान ३१३ ग्लानिके नाशकरनेवाले हृष्टपुष्टजनों से भरेहुये गोलोक के समान शोभित गोकुलको देखकर फिर तुम कैसे लौटोगी व कैसे लौटनेपाओगी ३१४ इससे बस अब हमारे पांचो प्राण तुम्हारा रुधिर पियेंगे हम अपने प्राणोंको वचनमात्रसे भी कभी उदास नहीं करते न करेंगे ३१५ इतना सुनकर नन्दा फिर बोली कि हे मृगेन्द्र! हां यह बात ऐसीहीहै पर पहिले पहिल ब्याईहुई हमारा वचन सुनो सखियों को देख व बालबछड़ेका लाड़कर अपने प्रतिपालक गोपोंको देख ३१६ गोपीजनोंसे विदाहोकर व अपनी माता से विशेष रीतिसे मिलकर हम शपथ करके कहती हैं फिर लौट आवेंगी जो मानो तो हमको छोड़दो ३१७ जो पाप ब्राह्मण और माता पिताके नाशकरने में होताहै वही पाप हमकोहो जो फिर हम लौट कर न आवें ३१८ जो पाप लुब्धक पक्षियों व मृगों के मारनेवाले म्लेच्छों और विष देनेवालों को होताहै वह हमको हो जो फिर हम लौटकर न आवें ३१९ जो लोग धेनुओं को ताड़ित करते हैं व उन के चरने आदि में विघ्नकरते हैं जो हम फिर न आवें तो वही पाप हमको लगे ३२० व जो किसीको कन्यादेनेको कहकर फिर दूसरेको देना चाहता है जो हम फिर न आवें तो उसका पाप हमको हो ३२१ जो तीन वर्षके भीतर बैलोंको हल आदि में जोतते हैं जो हम फिर न आवें तो उनका पाप हमको लगे व कहीं कोई कथा होतीहो वा होनेवालीहो उसमें जो विघ्नकरता है ३२२ उसका पाप हमको लगे जो फिर न लौटकर आवें व जिसके गृहमें आकर फिर मित्र निराश होकर लौट जाता है ३२३ यदि हम फिर न आवें तो उसका पाप हमको लगे इसप्रकार नन्दा के वचनोंसे कुछ विश्वास मानकर ३२४ व्याघ्र फिर नन्दासे यह बोला कि हे धेनुके! तेरे शपथों से हमको विश्वास हुआ कि तू लौटकर आवेगी ३२५ पर कदाचित् वहां जाकर न माने कि अच्छे हमने मूर्खको धोखादिया व और लोगभी आकर कहेंगे कि इतने २ स्थानों में शपथ करने से पाप नहीं होता ३२६

जैसे कि स्त्रियों के आगे व विवाहों में व गाइयों की जिविका के विषय में व जब प्राण त्यागही हुआजाता हो सो कदाचित् उन लोगों के वचनोंका तुम विश्वासही मानलो इससे न आओ ३२७ लोकमें बहुत लोग ऐसे नास्तिक मूर्ख हैं पर अपनेको पण्डित मानते हैं वे तुम्हारे चित्तको ऐसा क्षणमात्र में घुमादेंगे जैसे घुमनी आतेहुये प्राणी का चित्त घूमजाता है ३२८ जिसका चित्त अज्ञान से घिराहुआ होता है उसे क्षुद्रलोग जो कि शास्त्र नहीं पढ़े हैं कुतर्क के हेतुओं से मोहित करदेते हैं ३२९ जो अत्यन्त खललोग हैं वे असत्यको भी सत्यकरके दिखाते हैं व उसको फिर लोग मान लेते हैं क्योंकि नीची ऊँची बातें सुनकर सब लोग शीघ्र उनका अभिप्राय नहीं जानपाते ३३० बहुधा लोग कार्य्यसिद्ध होजाने पर फिर उपकार करनेवाले को नहीं मानते जैसे कि बछड़ा दुग्धकी क्षय देखकर फिर माताको छोड़देता है ३३१ ऐसे हम इसलोक में किसी को नहीं देखते जो विना कुछ अपना कार्य्य करालिये किसी के संग प्रत्युपकार करताहो व जब कार्य्य होजाता है तो सब की प्रीति और होजाती है ३३२ पूर्व्वकाल में बहुत से ऋषि देवता असुर व मनुष्यों ने परस्पर शपथ किये हैं पर उनके अनुसार कार्य्य नहीं किये फिर हम तुम्हारे शपथों का कैसे विश्वास मानें ३३३ जो देवता गुरु व अग्नि के सम्मुख सत्य २ शपथ करता है पर पूरा नहीं करता धर्म्मराजदेव उसकी आधी पुण्य तुरन्त हरलेते हैं ३३४ शपथ करने से ऐसा होता है इसलिये तुमसे हमने सब कहदियाहै जिसमें तुम्हारी बुद्धि ऐसी न हो अब तुमको अख्तियारहै चाहे जैसा करो ३३५ यह सुनकर नन्दा बोली कि हे साधो ! यह बात ऐसीही है जैसी तुम कहतेहो परन्तु तुमको कौन छलसक्ताहै क्योंकि जो और किसीको छलना चाहताहै वह आप छलजाताहै ३३६ व्याघ्र बोला कि हे धेनुके ! देख हमने सब कहदिया है जाकर अपने बछड़े को स्तन पिला व उसका शिरचाटकर ३३७ माता भ्राता सखी स्वजन बान्धवोंको देख भाल जैसा कि शपथ किया है उसी सत्यतासे फिर यहां चलीआ ३३८ इसप्रकार शपथ अर्थात् सौगन्द करके वह

सत्यवादिनी पुत्रके ऊपर दया करनेवाली धेनु वहां से अपने स्थान को चली ३३९ उससमय उसके आंसु बहते जातेथे अतिदीन होकर थरथराकर कांपतीजाती थी व हुंकार मारतीहुई शोकसागर में डूबतीजातीथी ३४० जैसे कि बड़े अगाधजलमें हथिनीको घड़ियाल पकड़लेता है व वह अपनी रक्षाकरने में असमर्थ होजाती है वही दशा नन्दाकी थी इससे वारंवार रोदन करतीहुई चलीजाती थी ३४१ जाते २ गंगाजी के तीरपर अपने गोकुल में पहुँची व भूँख के मारे बँबातेहुये अपने बच्चेका बोल सुनकर उसकी ओर दौड़ी ३४२ व नेत्रोंसे आंसुबहातीहुई झट अपने बालकको चाटनेलगी माताकी ऐसी दशा देखकर शंकितचित्त बछड़ा पूँछनेलगा ३४३ कि मैं और दिनके समान आज तुम्हारा रूप नहीं देखता कुछ उद्विग्नचित्त देखताहूँ दृष्टिभी अतिभयभीतसे व्याकुल दिखाईदेती है ३४४ यह सुन नन्दा बोली कि हे पुत्र! तुम स्तनपानकरो व अपनी यथेष्ट तृप्तिकरो जो कारण तुम पूँछतेहो उसके कहनेमें मैं असमर्थ हूँ ३४५ हे पुत्र! तुमको यह सबसे पिछला माताका दर्शनहै आज तो हम स्तन पिलाती हैं कल किसका स्तन पिओगे ३४६ क्योंकि हे पुत्र! तुमको अभी छोड़कर मैं चलीजाऊँगी यहां तो शपथों से आईहूँ मैंने अपने प्राण भूँखेहुये एक व्याघ्र को देदिये हैं ३४७ नन्दाके ऐसे वचन सुनकर उसका बालक बोला कि मैं भी वहां चलूँगा जहां तुम जानाचाहतीहो ३४८ तुम्हारे साथ मुझको भी मरना बड़ाईदेगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है क्योंकि तुम्हारे विना अकेला भी तो मैं अवश्यही मरजाऊँगा ३४९ हे मातः! जो मुझ सहित तुम को वनमें व्याघ्र मारडालेगा तो जो गति माता के भक्तलोगों की होतीहै वह अवश्य मेरी होगी ३५० इससे अवश्य मैं तुम्हारे साथ चलूँगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है अथवा हे माताजी! तुम यहां रहो जो शपथ तुमने किये हैं वे मुझको हों ३५१ विना माताके जीने से मेरा कौन प्रयोजनहै क्योंकि नाथहीन मेरा नाथ इस वनमें कौन होगा ३५२ जो बालक केवल दूधही पीते हैं उनका माताके समान और कोई बन्धु नहीं है व माता के समान नाथ भी कोई नहीं है

न माता के तुल्य गतिही कोई है ३५३ माताके समान स्नेह भी कोई नहीं करसक्ता न माताके समान और कुछ सुखही है न माता के समान इसलोक में वा परलोक में कोई देवताही है ३५४ ब्रह्मा जीका कहाहुआ यह परमधर्म्म पुत्रोंके लिये है कि जो पुत्र अपनी माता के भक्त होते हैं वे परमगति को जाते हैं ३५५ यह सुनकर नन्दा बोली कि हे पुत्र! इससमय मेरीही मृत्यु नियत है तुम क्यों जाओगे क्योंकि अन्य जीवोंकी मृत्यु अन्य जीवोंके बदले में नहीं होती ३५६ यह सबसे पिछला माता का उत्तम संदेशहै हे पुत्र! तुम मेरे कहनेसे यहीं रहो बस यही मेरी बड़ीभारी शुश्रूषाहै ३५७ कुछ शिक्षाभी देतीहूँ उसका विचार रखना जलके किनारे वा स्थल में चरने के समय असावधानी से न रहना क्योंकि प्रमाद करनेसे सब प्राणी नष्ट होजाते हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है ३५८ कहीं प-हाड़ के ऊँचेपर वा नदीकी करारपर वा कूपके निकटकी घास लोभ से न चरना क्योंकि इसलोक व परलोक में भी लोभही से सबका विनाश होताहै ३५९ लोभहीसे मोहितहोकर लोग समुद्रमें पैठते हैं लोभहीसे बड़े २ वनों में घुसजाते हैं इससे विद्वान् को चाहिये कि लोभ कभी न करे ३६० लोभसे प्रमादसे व विस्रम्भसे बस इन्हीं तीनों से मनुष्यों का नाश होताहै इससे न लोभकरे न प्रमाद न किसीका विस्रम्भ अर्थात् विश्वासकरे ३६१ हे पुत्र! आत्माकी रक्षा निरन्तर यत्नसे करनी चाहिये एक तो वृक व्याघ्र इत्यादि जिनके पैर कुत्तोंकेसे होतेहैं उनसे रक्षा करनी चाहिये व मुसल्मान व चोरों से रक्षा करनी चाहिये क्योंकि ये भक्षण करलेते हैं ३६२ व एक ठिकाने रहनेवाले पशु पक्ष्यादिकों से भी अपने को बचाये रहना चाहिये पर जब उनके चित्त अपने विपरीत जानपड़ें ३६३ और नदी नखवाले सींगवाले हाथ में शस्त्रधारण किये हुये स्त्री व जो दूतता करता हो हे पुत्र! इन सबोंका विश्वास तुम कभी न करना ३६४ जिसकी परिचय न हो उसका तो कभी विश्वासही न करना चाहिये व जिसकी परिचय हो उसका भी अतिविश्वास न करना चाहिये क्योंकि विश्वासीपुरुष जब कभी विरुद्धहोजातेहैं तो जड़ों

कोही काटडालते हैं ३६५ और कौन कहे बलके विषय में अपने देहकाभी विश्वास सदा न करना चाहिये क्योंकि जो पुरुष मस्त हो जाते हैं उनके गुप्त अर्थों को बलही बताने लगता है ३६६ गन्ध निरन्तर सुंघ कहीं रहताहै पर सब गन्धोंको कभी न सूंघना क्योंकि गाय बैल सब गन्धही से देखते हैं और राजालोग दूतों की द्वारा देखते हैं इससे दूरहीसे सूंघकर जानलेना तब घासादि चरना ३६७ घोर वनमें अकेला कभी न रहे व धर्म्म करने के समय अकेलाही रहना चाहिये हमारे वियोग का दुःख कभी न करना क्योंकि जन्म धरकर एक दिन मरना सबको पड़ता है ३६८ जैसे कोई पथिक किसी छायामें बैठकर विश्राम करलेताहै फिर चलताहै ऐसेही प्राणी कुछ दिन जीतारहकर फिर मरजाता है ३६९ हे पुत्र ! इसीप्रकार सब जगत् प्रतिदिन आया जायाकरता है फिर वियोग होनेमें शोच क्योंकरे इससे शोकको छोड़कर हमारे वचन का पालनकरो ३७० इतना कहकर बच्चेका शिरसूंघ उसका शरीर चाटनेलगी व बड़े शोकसे युक्तहोकर आँसुओं की धारा बहानेलगी ३७१ जैसे क्रोधके समय सर्प्पिणी बड़े जोरसे श्वासलेती है वैसेही बार बार लम्बी व गर्म्म श्वासेंलेकर विनापुत्रके जगत्को शून्य देखनेलगी ३७२ जैसे बड़े कीचड़ में फँसीहुई हथिनी शोच करती है वैसेही कष्टितहुई व बहुत विलाप करके नन्दा पुत्रसे फिर यह वचन बोली ३७३ कि संसार में पुत्रके समान स्नेहपात्र और कोई नहींहै न पुत्रके समान कुछ सुखही है न पुत्रके सम प्रीतिहै न पुत्रसम गतिहै ३७४ विना पुत्रके जगत् शून्य है व विना पुत्रके गृह शून्य होताहै पुत्र होने से पुरुष स्वर्गादिलोक पाताहै व विनापुत्र के नरक को जाताहै ३७५ लोग कहते हैं कि चन्दन का लेप अतिशीतल होताहै परन्तु पुत्रके अंगोंका संयोग चन्दनसे भी शीतल होताहै ३७६ इसप्रकार पुत्रके गुणोंको कह फिर २ उसकी ओर देखकर फिर अपनी माता सखियों व गोपोंके समीप बड़ी शीघ्रता से जाकर पूँछनेलगी ३७७ कि मैं झुण्डके आगे चरती चलीजाती थी मेरे अभाग्यसे एक व्याघ्र वहां आगया उससे बहुत से शपथ करके तब यहां आईथी अब फिर

वहीं जातीहूँ ३७८ पुत्र, माता, सखी और गौवों के समूह देखने के लिये मैं आईथी अब सत्यवचन से फिर वहीं जातीहूँ ३७९ हे मातः! जो कुछ दुश्शीलता मैंने आजतक की हो उसे क्षमाकरो व इस तुम्हारे दौहित्र को तुमको सौंपे जातीहूँ और अब क्या कहूँ ३८० इतना मातासे कहकर अपनी सखियों से कहनेलगी हे विपुले! हे चम्पके! हे भद्रे! हे सुरभि! हे मानिनि! हे वसुधारे! हे प्रियानन्दे! हे महानन्दे! हे घंटस्रवे! ३८१ अज्ञानसे वा ज्ञानसे जो कुछ अप्रिय वचन मैंने कभी कहाहो हे महाभागवालियो! वह सब क्षमा करना और जो कुछ न बनाहो उसेभी क्षमाकरना ३८२ तुम सब सबगुणों से युक्तहो व सबलोकों की माताहो व सब सबकुछ देने वालीहो इससे मेरे इस बच्चेकी रक्षाकरती रहना ३८३ हे भगिनियो! अनाथ दीन व्याकुलचित्त माताके शोकसे सन्तप्त मेरे इस बालक की पालना करती रहोगी ३८४ यह अपना बालक अपनी भगिनियों को सौंपतीहूँ आपलोगों से यही प्रार्थना है कि अपने अपने बालकों के समान इस अनाथकी भी पालना करना क्योंकि जैसे बहिन का बालक वैसे अपना जिससे कि यह निर्बल अनाथ होजायगा इससे पुत्रहीके समान पालन पोषण इसकाभी सबजनी करती रहना मेरे अपराध क्षमाकरना जो आपलोगोंसे जुदाहोतीहूँ क्याकरूँ सत्यकी फांसी में बँधीहूँ ३८५ हे सखीजनो! मेरे वियोगकी चिंता न करना क्योंकि यह मेरे भाग्य में लिखाहोगा कि प्रथम व्याने के पीछे थोड़ेही दिनोंमें मरजायगी ३८६ नन्दाके वचन सुनकर माता व सखियां बहुत उदासीन होगईं व बड़ा विषादकरके विस्मययुक्त होकर फिर यह वचन बोलीं कि ३८७ अहो यह बड़े आश्चर्यकी बातहै जो व्याघ्र के वचनों को न उल्लंघन करके फिर सत्यवादिनी नन्दा वहां जाना चाहती है ३८८ यह कुछबात नहीं शपथों से सत्यवाक्य बनाकर महाभय मिटानाही चाहिये सो तुमने मिटाया अब किसी प्रकार वहां न जानाचाहिये ३८९ नन्दा जो न जायगी तो कुछभी इस विषय में तुझको अधर्म्म न होगा क्योंकि केवल सत्यके लिये ऐसे छोटे बालक को छोड़कर जाना बड़ा अनु-

चित कर्म्म है ३९० इस विषय में वेदवादी ऋषियों ने यह कथा पूर्व्वसमय में कहीहै कि जब अपने प्राणही जातेहों तो शपथकरके प्राण बचाने में पाप नहीं होता ३९१ जिसमें प्राणियों की रक्षा होतीहो वहांका मिथ्या कहना भी सत्यहै व जिस सत्यके कहने से किसीप्राणी के प्राण जातेहों वह सत्यभी मिथ्या है ३९२ क्योंकि लिखाहै कि स्त्रियों के सामने विवाहोंमें गाइयोंके छुड़ाने में व ब्राह्मणोंकी विपत्ति में कसम खाने से पाप नहीं होता ३९३ यह सुन नन्दाबोली कि हां मैंभी और किसीके प्राणकी रक्षाके लिये झूठ कह सक्तीहूँ पर अपने प्राणोंकी रक्षाके निमित्त कैसे मिथ्या कहूँ ३९४ देखो गर्भवास जन्तु अकेलाही करता है व मरता भी अकेलाही है व सुख दुःखभी अकेलाही भोगताहै इससे मैं सत्यही कहूँगी असत्य न कहूँगी ३९५ क्योंकि सत्यहीपर सबलोक टिके हैं व धर्म्म भी सत्यही में टिकाहै समुद्र भी सत्यवचनही के कारण अपनी मर्यादा से बाहर नहींजाता ३९६ देखो वामनरूपी विष्णुजी को पृथ्वी देकर राजाबलि पाताल को चलेगये व छलसे वामनजीने बँधुआभी किया पर उन्होंने सत्य न छोड़ा ३९७ देखो सौ शृङ्गवाला विंध्याचल एक समय ऐसा बढ़ा कि उसने सूर्य्यमार्ग्गही रोंकलियाथा पर सत्यवचनही के कारण अब कभी नहीं बढ़ता ३९८ स्वर्ग्ग मोक्ष व नरक सब सत्य वचनही में टिके हैं फिर जिसने वचनका लोपकिया उसने जानों सबका लोपकिया ३९९ जो और प्रकारके अपने आत्मा को और प्रकारका करदिया अर्थात् सत्यरूप को असत्य करदिया उस आत्मापहारी चोरने कौनसा पाप नहीं किया बरन सब किये ४०० मैं अपने से अपने को विलोप करके घोर नरक को जाऊँगी और यमराज मेरे धर्म्मों का आधा काटलेंगे ४०१ जो पुरुष शुद्धता जलसेपूर्ण क्षमाकुण्डयुक्त सत्यतीर्थ में स्नान करताहै वह सब पापोंसे छूटकर परमगतिको जाता है ४०२ सहस्र अश्वमेधयज्ञ एक ओर व सत्य एकओर जो तराजूपर धरेजायँ तो सहस्र अश्वमेधों से सत्य ही गरू रहे ४०३ हमने सुनाहै कि सत्यही साधुहै व परमसे परम है और क्लेशादि वर्जितहै साधुओं की परीक्षा करने के लिये कसौटी

है सज्जनों के कुलका धनहै व सब आश्रमों का फलहै जिसको जन्म पर्य्यन्त कहकर प्राणी स्वर्ग को जाताहै भलाकहो उस सत्य को कैसे छोड़ें इससे सब लोगोंको चाहिये कि सदा सत्यही बोलें ४०४ इतना सुन नन्दाकी सखियां बोलीं कि नन्दे तू सब सुरासुरादिकोंसे नमस्कार करनेके योग्यहै क्योंकि सत्यके लिये अपने दुस्त्यज प्राण छोड़तीहै ४०५ अये कल्याणवाली अब इसके ऊपर हमलोग क्या कहें क्योंकि तू तो धर्म्मधुरन्धरा ठहरी इसकी बराबर तो तीनोंलोकों में कुछ वस्तुही नहीं है ४०६ जिससे कि तू अपना एक पुत्र छोड़े जातीहै इससे हमलोग तेरा वियोग नहीं समझतीं बरन संयोगही समझती हैं जाओ कल्याणचित्तवाली स्त्रीको कहींसे आपदें नहीं होतीं ४०७ तब सब गोपीजनों को देख व सब गोकुलकी प्रदक्षिणाकर देवताओं व वहां के वृक्षों से बिदाहोकर नन्दा वहांसे चली ४०८ व फिर पृथ्वी वरुण अग्नि वायु चन्द्रमा व दशदिशाओं तथा देवताओं वृक्षों व नक्षत्रों व ग्रहोंके ४०९ बार बार प्रणाम करके प्रार्थना करनेलगी जो सिद्धलोग इस वनमें गुप्त रहतेहों व सब वनदेवता लोग ४१० तुमसे यह प्रार्थनाहै कि वनमें चरतेहुये मेरे इस पुत्रकी रक्षा कियेरहना व इसके अपराध क्षमाकरना हे चम्पक अशोक पुन्नाग सरल अर्ज्जुन व पलाश! ४११ मेरा यह बड़ाभारी सन्देश सुनो इस अकेले दीन विषमवन में चरतेहुये ४१२ मेरे बालककी रक्षा अपने औरसपुत्र के समान करतेरहियेगा क्योंकि यह माता पितासे रहित अनाथ दीनमानस है ४१३ इससे दुःखितहोकर इस पृथ्वीपर घूमता चरताहुआ बार बार रोदन करेगा इससे स्नेह से रोदन करतेहुये महावन में घूमते फिरते ४१४ महाशोक से पीड़ित क्षुधा पिपासासहित शून्य अकेले व जगत् भरको शून्य देखते हुये ४१५ व वनमें चरतेहुये को अये वनके तपस्वीलोगो! आपलोग करुणादृष्टि से देखेरहियेगा इसप्रकार सब से सन्देश कहकर पुत्रके स्नेह के वशीभूत ४१६ शोकाग्नि से जलतीहुई व पुत्रके दर्शन से निराशहो नन्दा वहांसे चली जैसे चकवाके वियोग से चकई अलगजाने से दुःखित होती है जैसे वृक्षकी लता गिरती

है ४१७ जैसे अन्धा मनुष्य इधर उधर गिरता पड़ता चलताहै वैसेही दृष्टिरहित हो पद पद पर गिरतीहुई चली जाते जाते वहां पहुँची जहां वह मांसभक्षी ४१८ महाभयङ्कररूप मुखबाये बड़ेदांत नि-काले व्याघ्र बैठाथा इतने में उस नन्दा का बछड़ा भी ऊपर को पूँछउठाये अतिवेगसे दौड़ताहुआ ४१९ माताके आगे आकर झट व्याघ्र के आगे होरहा तब आकर मृत्यु के आगे पहुँच गयेहुये उस अपने बच्चेको देख ४२० व व्याघ्र की ओर देख वह धेनु यह वचन बोली हे सिंह ! सत्यधर्म्म के व्रतमें टिकीहुई मैं अब तुम्हारे आगे खड़ीहूँ ४२१ मेरे मांससे यथेष्ट अपनी तृप्तिकरो व अपने प्राणों को मेरे रुधिर से तर्पणकरो पर मेरे मरजाने के पीछे मेरे इस बालक का भक्षण न करना ४२२ व्याघ्र बोला हे कल्याणि धेनुके ! भला अच्छीरीति से तो आई हे सत्यवादिनि ! ४२३ भला कहीं सत्यवादी लोगोंका भी अशुभ होता है हे धेनुके ! तूने पहिले शपथ कियेथे कि जो मैं लौटकर न आऊँ तो अमुक अमुक पाप मुझकोलगें ४२४ सो इसी बातका मुझे कौतुकथा कि देखूँ यहकैसे फिर लौटआती है हमने तेरे सत्यकी परीक्षा लेनेके लिये तुझे भेजा था ४२५ नहीं तो हमारे समीप आकर फिर जीतीहुई कैसे जाने-पाती सो अब हमारा सन्देह जातारहा जो बात हमने विचारी थी सत्यहुई ४२६ व अपने सत्यके प्रभाव से हमसे छूटगई अब भय न कर अब तू हमारी बहिनहो व तेरा यह बालक मेरा भानजा हो ४२७ हे सुभगे ! तुमने मुझ पापीको बड़ाभारी उपदेश दिया सत्य ही पर सब लोक अपने अपने स्थानों में टिके रहते हैं व सत्यही में धर्म्म प्रतिष्ठित है ४२८ व सत्यही से गौ दुग्धकी धारा उत्पन्न क-रती है जिससे हव्य कव्यादि बनते हैं वह गोप धन्यहै जो तुम्हारे दुग्धसे जीताहै ४२९ व तृणवृक्षादिसहित वे भूमिके भाग धन्य और कृतार्थ हैं उन्होंने सुकृत किये हैं जहां ऐसी सत्यवादिनी तुम रहती हो ४३० व जो तुम्हारा क्षीर पान करते हैं उन्होंने जन्मधरने का फल पाया है व्याघ्र इसप्रकारका विश्वास देख बहुत विस्मित हुआ व कहा ४३१ कि देवताओं ने यह सत्यता मुझको दिखाई

भाई गाइयोंमेंही सत्यताहै इसको देखकर मेरे जीनेकी वाञ्छा नहीं है ४३२ अब हम वह कर्म्म करेंगे जिससे पापसे छूटें हमने सैकड़ों सहस्रों जीव भक्षण करलिये ४३३ अब धेनुकी ऐसी सत्यता देख कर नहीं जानते किस गतिको जायँगे हम बड़े पापी दुराचारी क्रूर जीवघाती जीवहैं ४३४ ऐसा अतिदारुण कर्म्म करके नहीं जानते किन किन लोकोंको जायँगे अब हम पुण्यतीर्थों में जाकर पापोंका शोधन करेंगे ४३५ अथवा पर्व्वतपरसे गिरेंगे वा प्रज्वलित अग्निमें गिरकर भस्म होजायँगे हे धेनो ! अब हम अपने पापोंके शुद्ध होनेके लिये यहीं तपकरेंगे ४३६ अथवा जो कोई उपाय संक्षेप जानती हो तो तुम्हीं बतावो विस्तार का समय नहीं है यह सुनकर धेनु बोली कि सत्ययुग में तपकरने की प्रशंसा थी व त्रेतामें ज्ञानकर्म्मकी ४३७ द्वापर में यज्ञकी कलियुग में केवल दान देनेकी प्रशंसा है सो सब प्राणियों को अभय करना इसीको दान कहते हैं इससे अधिक और कोई दान नहीं है क्योंकि चर वा अचर सब प्राणियोंको जो अभय दान करता है ४३८ । ४३९ वह सब भयों से छूटकर परब्रह्म को प्राप्त होता है अहिंसा से पर कोई भी दान नहीं है न अहिंसा के समान कोई तपहै ४४० जैसे हाथीके पावों में और सब पांव लीन होजाते हैं ऐसेही हे व्याघ्र ! अहिंसाही से सब धर्म्म लीन होते हैं ४४१ योगरूप वृक्षकी छाया दैहिक दैविक भौतिक तीनों तापोंको नाश करती है धर्म्म व ज्ञान उसके पुष्प हैं स्वर्ग्ग व मोक्ष उसके फल कहाते हैं ४४२ परन्तु दैहिकादि तीनों तापोंसे संतप्त प्राणियों को दुःख न होनेपावे इसीको योग वृक्षकी छाया कहते हैं सो उस छायामें जाकर प्राणी सब दुःखों से छूटकर मुक्त होजाता है ४४३ बस यह परमकल्याणदायक दान तुमसे हमने संक्षेप से कहा तुम सब जानतेहो केवल मुझसे पूंछतेहो ४४४ इतना सुनकर व्याघ्र फिर बोला कि पूर्व्वकाल में हम राजाथे एक मृगीके शापसे व्याघ्र होगये इस योनिमें नित्य प्राणियोंका वध करते करते सब विस्मरण होगया ४४५ अब तुम्हारे मेल व उपदेशसे फिर स्मरण होआया तुमभी इस सत्यसे परमगतिको जावोगी ४४६ अब हम तुमसे एक

और अपने हृदय का प्रश्न करते हैं कि हमको सौवर्ष इस व्याघ्रशरीर धारण किये चिन्ताकरते हुये बीते ४४७ बड़े भाग्यके योगसे आपके दर्शनहुये कि आपने बहुत उत्तम सज्जनों के मार्ग में प्रतिष्ठित धर्मका मार्ग बताया ४४८ अब बतावो तुम्हारा नाम क्याहै यह सुनकर नन्दा बोली कि मेरे नन्दनाम स्वामी ने मेरा नन्दा ऐसा नाम धराया है ४४९ अब इस समय में हमको भक्षण करो ठहर क्यों गये जैसे नन्दा ऐसा नाम सुना कि राजा प्रभंजन मृगीके शाप से छूटगया ४५० बस फिर बल और रूपयुक्त राजाहोगया जैसा प्रथम था वैसाही होगया उस समय में धर्मजी उस सत्यवादिनी नन्दाके ४५१ दर्शन करने को आये व उससे बोले कि तुम्हारे सत्यव्रत से प्रसन्नहोकर हम धर्म यहां आये हैं ४५२ हे नन्दे! तुम्हारा कल्याण हो जो चाहो वर मांगो हमदेंगे जब धर्मने ऐसा कहा तो नन्दा ने यह वर मांगा ४५३ कि आपके प्रसादसे पुत्रसहित हम उत्तमपद को जायँ व यह स्थान मुनियोंको धर्म देनेवाला शुभ तीर्थ होजाय ४५४ व नन्दानाम एक नदी यहां होजाय व नन्दानाम सरस्वती नदी भी यहां कभी आजाय हे देवेश! बस यही वरदान हमने आप से मांगा ४५५ बस उसीसमय नन्दाका शरीर छूटगया व सत्य-वादियों के शुभस्थान को गई राजा प्रभंजन भी अपने उसी राज्य को प्राप्तहुये ४५६ जिससे कि उस स्थानपर नन्दा स्वर्गको गई व सरस्वती नदी भी वहां आई इससे पण्डितों ने उस स्थानका नन्दा सरस्वती नाम रक्खा ४५७ अब सरस्वती नदी उस खर्जूर नाम वनके दक्षिण के किनारे होकर पृथ्वीको विदीर्ण करतीहुई आगेको चली ४५८ इससे जो कोई प्राणी वहां जाकर नन्दा सरस्वती का नाम लेताहै वह जबतक जीताहै तबतक सुखको प्राप्त होता है और मरनेपर स्वर्गगामी होजाताहै ४५९ व जो प्राणी शुभकर्म करते हुये वहां अपना शरीर त्यागते हैं वे सब विद्याधरों के राजा होकर सुखी होते हैं ४६० स्नान करने व जलपान करने से यह सर-स्वतीनदी मनुष्यों को स्वर्गकी सीढ़ी होजाती है जे एकाग्रचित्त हो कर अष्टमीतिथि में वहां स्नान करतेहैं ४६१ वे मरकर स्वर्ग में

जाकर हर्षित होतेहैं और यह सरस्वती स्नानादि करनेसे स्त्रियोंको सदैव सौभाग्यवती करती है ४६२ माघमासकी कृष्णतृतीयाको जो स्त्री स्नान करती है उसका सौभाग्य बढ़ता है इससे उस तिथि में भी दर्शन करनेसे सब पापोंसे मनुष्य छूटताहै ४६३ व जो लोग जाकर जलका स्पर्श करते हैं उनको मुनीश्वर जानना चाहिये वहां चांदी दान करनेसे प्राणी रूपवान् होताहै ४६४ पुण्यजल से भरी हुई यह ब्रह्माजी की पुण्यकारिणी कन्या सरस्वतीनदी है इसीका कुछ दूर आगे विपुलागंगानाम होगयाहै यह दक्षिणको मुखकर बही है ४६५ फिर वहांसे बहुत दूर नहीं गई कि पश्चिम को मुखकरके बही तब से फिर वह देवी बहुधा प्रकट दिखाईदी ४६६ उसके पुण्यतटों पर बहुत से पुण्यतीर्थ व देवताओं के मन्दिरहैं जिनकी सेवा मुनि सिद्धलोग किया करते हैं ४६७ उन सब स्थानोंमें धर्म्म का हेतु सरस्वती महानदीहै क्योंकि स्नान करने पानकरने व सुवर्ण दान करने से स्वर्गादि लोक देती हैं ४६८ उसमें जहां नन्दानदी का समागमहै वहां सुवर्ण पृथ्वी व गो लक्ष्मी दान देनेसे महाफल देताहै व जो नर और भी किसी उत्तमवस्तु का दान करते हैं वह अक्षयफल देताहै ४६९ धन दानदेने से सब वस्तुओं का दान हो जाताहै ऐसेही और वस्तुओंके दानसे धनका दान होजाताहै इससे उस तीर्थमें जो कुछ पुरुष देतेहैं वह सब धर्म्महीका हेतु होता है ४७० व चाहे स्त्रीहो वा पुरुष जो कोई उस तीर्थमें जाकर यत्न से मरनेके लिये निरशनव्रत करता है वह सायुज्य मुक्तिपाता है फिर ब्रह्मस्थान में यथेच्छफल भोगता है ४७१ व उसके समीप कर्म्म क्षय होनेसे स्थावर जंगम चाहे जो हो पर प्राण छोड़ते हैं वे सब यज्ञके दुःखसे प्राप्त होनेवाले फलको प्राप्त होतेहैं ४७२ ॥

चौ० यासोंसबतजिकैशुभमनसजिकैबसहुसरस्वतितीरा।
घहसबसुखकारीअरुअघहारी नदीजासुशुभनीरा॥
दुखदरिदनशावै धर्म्मबसावै करैसकलकल्याना।
हमकहतपुकारीबहुतविचारीसुनिकरुलोगमहाना॥ ४७३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभाषानुवादेनन्दाप्राचीमाहात्म्येऽष्टादशोध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

दो० ऊनविंश अध्यायमहँ विविधभांति मुनि गाव॥
पुष्करतीर्थ महात्म्य तहँ नाना रीति बनाव १

इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने फिर पुलस्त्यमुनिसे प्रश्न किया कि हमने प्राची सरस्वती पुष्कर व नन्दा सरस्वतीका उत्तम माहात्म्य सुना व यहभी कि कोटिशः ऋषिलोग पुष्कर में आये व जैसे ही दर्शन किया १ सबोंने तुरन्त सुरूपता पाई व महर्षियोंने यज्ञमें नानाप्रकार की भक्तियां दिखाईं २ और उन महात्माओं ने कैसे तीर्थ विभाग किया और महर्षियोंने आश्रममें जो जो तीर्थ किये हैं ३ श्रीविष्णुभगवान् जीने यज्ञपर्व्वतपर कैसे पदन्यास किया व महाविषधर नागोंने वहां आकर पांचतीर्थ कैसे किये ४ व पिण्डदान करने के लिये प्रथम पिण्डवापी किसने बनाई व भूमिपर प्राप्तहोकर गङ्गा सरस्वती उदङ्मुखी कैसे हुईं ५ व वेदवादी ब्राह्मणलोग त्रिपुष्करतीर्थ की यात्रा किस प्रकार करते हैं व उस यात्राके करनेसे जो फल मिलता हो सब हमसे कहिये ६ यह सुनकर पुलस्त्यमुनि बोले कि आपने यह बड़ाभारी प्रश्नोंका भार ऊपर डालदिया परन्तु अब एकाग्रमन होकर सुनो तीर्थ का महाफल कहते हैं ७ जिसपुरुषके हाथ पैर व मन अच्छे प्रकार उसके वशमें होते हैं व विद्या तपस्या और कीर्त्तिभी उसमें होतीहै वह पुरुष तीर्थका फल पाताहै ८ व जो तीर्थ में जाकर किसीका दान नहीं लेता व जो कुछ भोजनादि मिला उसी में सन्तुष्ट रहताहै व अहंकार कभी करता नहीं वह तीर्थका फलपाता है ९ व जो कभी क्रोध नहीं करता सत्यबोलनेका स्वभाव रखता है व व्रत नियमादिकोंमें दृढ़ता रखताहै और अपने समान सब प्राणियों को समझताहै वह तीर्थकाफल भोगताहै १० हे भरतसत्तम! ऋषियों का यह परमगुप्त अभिप्राय है जो हमने तुमसेकहा अब जिसप्रकार ब्रह्माजीके महायज्ञ में ऋषिलोग आये कहते हैं ११ प्रथम अतिउग्र तप करनेवाले कोटि संन्यासीलोग यज्ञमें आये व दर्शन करके सब ज्येष्ठपुष्करतीर्थ में स्थितहुये १२ सबके रूप प्रथमके चाहे जैसेथे

पर सुन्दररूप होगये इससे सब मुनिलोग बहुत प्रसन्नहुये बड़ेहर्षित हो सबोंने ब्रह्माजी के दर्शनकी इच्छाकी १३ फिर सबोंने अपने२ यज्ञोपवीतों से भूमिको चारों दिशाओं में नापकर तीर्थ विभाग किये व भक्तियुक्त होकर वहीं सबटिके १४ तब ब्रह्माजी उनऋषियों के ऊपर बहुत सन्तुष्टहुये व सबोंको कोटिभांति से मान सत्कार करके टिकाया १५ व कहा हे ऋषियो! आजसे तुमलोगों के धर्म्म की वृद्धिहोगी व यहां आकर जो मनुष्य जिस अङ्गको प्रथम जलमें १६ सुरूपता के लिये डुबोवेगा तीर्थके प्रभावसे उसके उस अङ्गकी सुरूपता होजायगी इसमें कुछभी सन्देह नहीं है १७ इस तीर्थका प्रमाण दोकोस चौड़ा व छःकोस लम्बा है यह कोटिऋषियों का बनाया हुआ तीर्थहै १८ पुष्करजीके जानेसे मनुष्य राजसूय और अश्वमेध के फलको प्राप्त होताहै १९ सो जैसेही सरस्वतीनदी उस पुष्करतीर्थ में आई कि ज्येष्ठपुष्करतीर्थ में प्रवेश करगई उस स्थानपर ब्रह्मादि देवता सब ऋषिलोग सिद्ध चारणादि २० और भी चैत्रशुक्ल चतुर्दशी के दिन वहां आते हैं व सब वहां स्नान करके देवता पितरों का तर्प्पण करते हैं २१ इससे जो कोई इसप्रकार स्नान तर्प्पणादि करके फिर गोदान करता है वह अपने कुलवालों का उद्धार करता है इस प्रकार तीर्थविभाग उन महर्षियोंने किया था २२ वहां देवताओं व पितरोंकीपूजा करने से पुरुष विष्णुलोक में जाकर पूजित होता है वहां स्नान करने से मनुष्य चन्द्रमा के समान विमल होजाता है २३ फिर ब्रह्मलोक में जाकर परम गतिको प्राप्तहोता है मनुष्यलोक में देव देव ब्रह्माजी का महापातकनाशन यह पुष्करनाम तीर्थ प्रसिद्ध है इस तीर्थ में प्रातर्म्मध्याह्न सायंकाल तीनों सन्ध्याओं में अर्ब्बुदों तीर्थ प्रतिदिन आते हैं व आदित्य वसु रुद्र साध्य पवन २४।२६ व गन्धर्व व अप्सरा लोग तो नित्य वहां विराजती हैं व इसी पुष्करतीर्थ में तप करके सब देवता दैत्य ब्रह्मर्षि २७ दिव्ययोग धारण करते व महापुण्य युक्त होतेहैं जो कोई मनसे भी तीनों पुष्करों का स्मरण कभी करताहै उसके सब पाप जातेरहते हैं व स्वर्ग में जाकर पूजित होता

है हे महाराज ! उस तीर्थ में नित्यब्रह्माजी २८ । २९ टिकेहुये प्रसन्नतासे देवता व दानवों को सम्मत दिया करते हैं इसीसे इसी पुष्करतीर्थमें सब देवता व महर्षि ब्रह्मर्षिलोग ३० बड़ी २ सिद्धियोंको प्राप्तहुयेहैं इस तीर्थमें स्नानकरके जो कोई देवता पितरोंका तर्प्पण करताहै ३१ वह दशअश्वमेध यज्ञों का फल पाताहै व जो कोई वहां जाकर एकभी ब्राह्मण को अन्न भोजन कराताहै ३२ उस अन्नसे कोटि ब्राह्मणों के भोजन कराने का फल उसे मिलता है व उस कर्म्म से इसलोक में व परलोकमें भी वह पुरुष हर्षित होता है ३३ अन्न न सही तो शाक मूलफलादि जो कुछ आप खाताहो वही वहां ब्राह्मणोंको भी खिलावे पर जो कुछ दे वहां स्नेहकरकेहीदे किसीकी निन्दा न करे ३४ ऐसा करने से वह बुद्धिमान् अश्वमेध यज्ञका फल पाताहै इसतीर्थ में कुछ वर्णका नियम नहीं है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र चाहे जो कोई पुष्करपुण्यतीर्थ में जाकर स्नानादि करे ३५ इसीप्रकार आश्रमोंका भी नियम नहीं ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ व संन्यासी चाहे जो स्नानादिकरे सबको पुण्यदेताहै ३६ क्योंकि सरस्वती महापुण्यदायिनीनदी यहांही से होकर पश्चिम समुद्र में जाकर मिली है इसीसे आदिदेव देवोंकेदेव महायोगी श्री विष्णुजी भी इसके निकट सदा टिकेरहते हैं ३७ व वहां जो मूर्त्ति रहती है वह आदिवराहके नामसे प्रसिद्धहै देवतालोग इसकी पूजा कियाकरते हैं व जो कोई हीनवर्ण अर्थात् वर्णबाह्य पासी कोरी चर्म्मकारादि इसतीर्थ में स्नान करते हैं मरने के पीछे सब ब्राह्मण कुलमें जन्मपाते हैं फिर कार्त्तिककी पौर्णमासी को जो कोई पुष्करतीर्थ में स्नान करते हैं ३८ । ३९ वे तो अक्षयफलपाते हैं यह बात हमने ब्रह्माजीके मुखसे सुनी है व जो कोई प्रातःकाल वा सायंकाल में हाथजोड़कर तीनों पुष्करोंका स्मरण करताहै ४० उसने जानों सब तीर्थों में स्नान करलिया चाहे स्त्री हो वा पुरुष जन्मभर में जितने पाप उसनेकियेहों ४१ पुष्करतीर्थ में स्नानमात्रसे सब छूट जाते हैं जैसे सब देवताओं में प्रथम ब्रह्माजी गिनेजाते हैं ४२ ऐसे ही सब तीर्थों में यह पुष्करतीर्थ आदि कहाजाताहै जो कोई पुष्कर-

तीर्थ में पवित्र रहकर नित्य तीनोंकुण्डोंका दर्शन करताहुआ दश वर्षतक निवासकरता है ४३ वह सब यज्ञोंका फलपाकर ब्रह्मलोक को जाताहै व जो कोई सौवर्षतक पूर्ण अग्निहोत्रयज्ञ नित्यकरताहै ४४ व जो एक कार्त्तिकीपूर्णिमा को पुष्कर में बसता है दोनों को समानफल मिलता है पुष्कर में बसना दुष्करहै व पुष्करमें तपकरनाभी दुष्करहै ४५ पुष्करमें दान देनाभी दुष्कर है फिर भी बहुत दिनोंतक निवासकरना तो अतिदुष्कर है वेद पढ़ाहुआ ब्राह्मण ज्येष्ठपुष्करमें जाकर ४६ स्नान करने से तो मोक्षभागी होताहै व श्राद्ध करने से अपने पितरों को तारताहै व जो कोई ब्राह्मण नाममात्रकोभी वहां जाकर एककाल भी संध्योपासन करताहै ४७ उस ने जानो अन्यत्र बारहवर्षतक त्रिकाल संध्योपासन किया व ब्रह्माजीने पूर्वकालमें यह कह रक्खाहै कि जो ब्राह्मण एकदिनभी यहां सन्ध्याकरेगा ४८ उसके कुलमें सावित्रीके शापके कोई भी दोष न होंगे व जो अपनी सन्ध्याका फल अपनी स्त्रीको देदेताहै तो उसकी नारीभी सन्तुष्ट होकर स्वर्ग को चलीजातीहै व जो स्त्री पुरुष दोनों संग जाकर संगहीसंग स्नान तर्प्पण श्राद्धादिकरते हैं वे ब्रह्मलोक को मरणान्तमें जाते हैं ४९ । ५० जो अकेलाभी पुष्करमें गृहस्थ-जाय तो उसे चाहिये कि कमलके पत्तेकी स्त्री बनाकर उसके संग ग्रन्थिबन्धन करके स्नानादिकरे ५१ ऐसा करनेसेभी बारहवर्ष निस्संदेह सन्ध्योपासन का फल उसे मिलता है व स्त्री उसके समीप बसती है इससे उसके पितर तृप्त होजातेहैं ५२ व जो दक्षिणको मुख करके उसतीर्थमें गायत्रीमन्त्रपढ़कर पितरोंका तर्प्पण करताहै उस सेभी पितरोंकी बारहवर्षतक परमप्रीतिसे तृप्ति होतीहै ५३ विना स्त्री के सहस्रयुगभी श्राद्ध में पिण्डदेनेसे पितर अत्यन्तप्रसन्न नहीं होतेहैं इसीलिये विद्वान् स्त्रीका संग्रहकरते हैं ५४ व जो लोग तीर्थमेंजाकर श्रद्धापूर्वक श्राद्धकरतेहैं उनके पुत्र धन धान्य व सन्तति कभी नहीं नष्ट होते वंश सदा बनारहताहै ५५ इस विषयमें कुछभी सन्देह नहीं है क्योंकि ब्रह्माजीने यह बात कहीहै कि देवताओं व पितरोंके तृप्तकरनेसे अग्निष्टोम यज्ञकाफलहोताहै ५६ अब आश्रम भी

तुमसे कहते हैं एकाग्रमन होकर सुनो अगस्त्यमुनिने एक देवसमान आश्रम यहां कियाहै ५७ व सप्तर्षियों का कियाहुआ भी देवसमान एक आश्रम इस पुष्करतीर्थमें है ब्रह्मर्षियों व मनुओंके भी कियेहुये आश्रमहैं ५८ और नागोंकीभी पुरी वहां हैं उनमें यज्ञपर्व्वतके समीप अगस्त्यजीका आश्रम है जिसका बड़ाभारी प्रभाव है ५९ और भी जो २ आश्रम हैं सबोंका वृत्तान्त संक्षेपरीति से कहते हैं चित्तलगाकर सुनिये हे भीष्म ! सत्ययुग में कालेयनाम युद्ध में बड़ेदुर्म्मद परम दारुण दानवहुये वे वृत्रासुर के आश्रयीभूत होकर नानाप्रकार के शस्त्रास्त्र धारणकरके चारोंओर से इन्द्रादि देवताओं को मारने की इच्छासे दौड़े ६० । ६१ तब देवताओं ने वृत्रासुरके मारने का यत्न किया इन्द्रको आगेकर ब्रह्माजी के समीप जापहुँचे व हाथजोड़कर खड़ेहुये उनलोगोंको वैसे देखकर ब्रह्माजी बोले कि ६२ हे देवताओ ! हमने जाना जो कार्य्य तुमलोग करना चाहतेहो अब वह उपाय बतावेंगे जिससे तुमलोग वृत्रासुरको मारडालोगे ६३ एक बड़े बुद्धिमान् उदारमति दधीचिनाम ऋषिहैं उनके समीप जाकर विनयपूर्व्वक सब देवगण वर मांगो ६४ वे धर्म्मात्मा बहुत प्रसन्न होकर तुमलोगों को वरदान देंगे जब वरदेनेको कहें तो जयकीइच्छा कियेहुये तुमलोग कहना ६५ कि तीनोंलोकों के हित के लिये आप अपने हाड़ हमकोदें तब वे अपना शरीर छोड़कर अपने हाड़ तुमलोगोंको देंगे ६६ उन हाड़ों से तुमलोग एक अतिदृढ़ वज्र बनाना वह बड़े से बड़े तुम्हारे शत्रुओं का नाशकहोगा व सहस्र उस वज्र में धाराहोंगी ६७ उसी वज्र से इन्द्र वृत्रासुर को मारडालेंगे यह हमने तुमसे सब उपाय बताया इससे जाकर शीघ्र करो ६८ जब इसप्रकार देवोंसे ब्रह्माजी ने कहा तो उनकी आज्ञालेकर इन्द्रको आगे करके सब देवगण दधीचि के आश्रमपर गये ६९ वह आश्रम सरस्वती के पार नानाप्रकार के वृक्ष लताओं से युक्तथा जहां कि भँवरों के इसप्रकार के शब्द होरहेथे मानों सामवेदके जाननेवाले सामवेदका शब्द करतेहों ७० कोकिलपक्षी बोलरहेथे व और भी नानाप्रकार के पक्षी बोलते थे व महिष वराह नीलगाय व नानाप्रकार के और मृगों से

परिपूर्णथा व ७१ ठौर २ व्याघ्रादि जन्तु शब्द कररहेथे हाथी व हथिनियों के झुण्डके झुण्ड इधर इधर फिरते थे ७२ सुरहगायें इधर उधर मनमाना घूम रही थीं सिंह शार्दूलोंके महानादों से नादित होरहाथा ७३ इनके विशेष और भी बहुतसे जन्तु गुहाओं व कन्दराओं में बैठे खड़ेहुये नादकरते थे उन सबों के शब्दसे नादित होनेके कारण अतिमनोहर लगताथा ७४ व स्वर्गकेतुल्य मनोरम दधीचिजी के ऐसे आश्रमपर देवगण पहुँचे व सूर्य्यके समान प्रकाशित दधीचिजी को देखा ७५ जोकि तेजसे जाज्वल्यमान होरहे थे जैसे कि शोभासे ब्रह्माजी प्रकाशित होते हैं उनके चरणोंके आगे झुककर सब देवताओंने प्रणाम किया व जैसा ब्रह्माजी ने कहाथा वही वर सबोंने उनसेमांगा ७६ उसे सुनकर बड़ेप्रसन्नहोकर दधीचिजी देवताओंसे बोले कि हे देवताओ! हम आजही तुमलोगोंका हित करतेहैं अपने देहको छोड़तेहैं ७७ इतना कहकर मनुष्यों में श्रेष्ठ दधीचिजीने प्राणोंको तुरन्तछोड़दिया व इन्द्रसमेत देवताओं ने उनके सबहाड़ युक्तिसे निकाललिये ७८ व बड़ेहर्षितहोकर सब के सब जाकर विश्वकर्म्मासे बोले उन लोगोंके वचन सुनकर विश्वकर्म्मा बहुत प्रसन्नहोकर बड़े यत्न से ७९ अतितीक्ष्णधारयुक्त वज्र निर्म्माण करके हर्षितहोकर बोले कि हे देव! इसश्रेष्ठ शस्त्रसे देवताओं के शत्रु वृत्रासुर को जाकर भस्मकीजिये ८० फिर शत्रुरहित होकर गणोंसहित आनन्दसे त्रिलोकीकेराज्यको भोगिये विश्वकर्म्मा ने जब ऐसा कहा तो इन्द्रने बड़ीप्रसन्नता से उस वज्रको ग्रहण किया ८१ व वज्रलेकर सब देवताओं से पूजित होकर स्वर्ग्ग व अन्तरिक्षभरमें व्याप्त उस वृत्रासुरके समीप पहुँचे ८२ उसको उस समय चारोंओरसे कालकेयादि असुररखारहेथे सबअसुरगणऊपर को अस्त्रशस्त्र उठायेहुये शृंगसहित पर्व्वतों के समान शोभित होते थे ८३ तदनन्तर देवताओं व दानवोंका एक मुहूर्त्तभर ऐसा विकराल युद्धहुआ जिससे तीनोंलोक भय व्याकुल होगये ८४ व वीरोंकेमार मार व सिंहनादसे आकाशसे पृथ्वीतक सब भरगया अस्त्रशस्त्रलिये देवता व दैत्य कँगूरोंसहित पर्वतोंके समान दिखाईदेतेथे व सबकेसब

ऐसे एकमें मिलकरलड़ेव ऐसा गचापचीकायुद्धहुआ जिसमें अपना बिराना किसीको नहीं विदित होताथा ८५ अन्तरिक्षसे भूमिकीओर गिरतेहुये सब शिरहीशिर दिखाई देतेथे व कबन्धभी उनके पीछे २ दौड़े फिरते मार २ पीट २ कहकर पुकारतेथे ८६ उससमय सुवर्णके कवचादि धारणकिये परिघ हाथोंमें लिये कालकेयअसुर देवताओं के ऊपर आनपड़े उससमय दावानलसे जलतेहुये वृक्षोंके समान दिखाई देतेथे ८७ इनदौड़तेहुये वेगवान् दानवोंका वेग देवगण न सहसके इससे सब इधर उधर भागखड़ेहुये ८८ उनको भागते हुये देखकर इन्द्र अत्यन्तभयभीतहुये व वृत्रासुर उनके सम्मुख आपहुँचा उसे देखकर और भी महादुःखित हुये ८९ इन्द्रको इसप्रकार कष्टितजानकर सनातन देवदेव श्रीविष्णुजी ने इन्द्रका तेज बढ़ाने के लिये उनके शरीरमें व वज्रमें भी अपना तेज प्रवेश कराया ९० तब श्रीविष्णुके तेजसे बढ़ेहुये इन्द्रको देखकर सब देवगणोंने भी अपना २ तेज इन्द्रमें स्थापित किया व ऋषियों ने भी अपना तेज उनमें स्थापित किया ९१ जब श्रीविष्णुभगवान् ने व देवताओं ऋषियों ने भी अपना २ तेज इन्द्रको दिया तो पुरन्दर बड़ेबलवान् होगये ९२ इन्द्रको प्रसन्नचित्त व विशेष तेजस्वी जानकर वृत्रासुरने बड़ाभारी घोरकठोर नाद किया उसके उस घोर नाद से पृथ्वी सब दिशा आकाश अन्तरिक्ष व पर्व्वत सब भरगये ९३ उसे सुनकर इन्द्र अतिहीभयभीत हुये व घोर भयके मारे व्याकुलचित्तहो अतिशीघ्र उन्होंने वृत्रासुरके मस्तक में वज्र से मारा ९४ वह इन्द्रके वज्रके लगनेसे बड़ेजोरसे शब्द करताहुआ सुवर्णके माला अंगोंमें धारण किये हुआ पृथ्वी पर गिरनेके समय ऐसे शोभित हुआ जैसे कि मन्दराचल श्रीविष्णुभगवान् के हाथ से समुद्रमें गिरने के समय शोभितहुआ था ९५ उस दैत्यश्रेष्ठ के मारजाने पर इन्द्र बहुत व्याकुल हुये व मानससर में जाकर पैठने का विचार किया क्योंकि उन्होंने जाना कि हाय हमारे हाथसे वज्र भी जातारहा व शत्रु भी नहीं मरा वरन सम्मुख दौड़ा आताहै उनको भयके मारे दिखाई न दिया कि यह मृतक होगयाहै व दौड़ा

आताहै ९६ पर और सब देव महर्षि वृत्रासुरको मराहुआ जानकर अतिहर्षित होकर इन्द्रकी स्तुति करने लगे व पुकार पुकार सबोंने इन्द्रसे कहा कि लौट आइये आपने तो इसे मारडाला अब जीता नहीं है यह सुनकर इन्द्र लौटे व सब देवताओं ने बचेहुये सब दैत्योंको दौड़ २ कर अस्त्र शस्त्रों से ऐसा मारा कि वे सब मारे पीटे हुये वायुके समान वेगसे भाग खड़े हुये व जाकर अप्रमाण अतिभयंकर समुद्र के जलमें गिरे व झटपट भीतर चलेगये९७। ९८ व वहां बैठकर सम्मत करने लगे सबोंने सम्मतकिया कि बस कुछ नहीं इसमें से बाहर निकलकर तीनोंलोकों का नाश करडालना चाहिये उनमें जो चतुरथे उन्होंने नानाप्रकारके उपाय बताये उनसे चतुरों ने इन्द्रादिकों के पराक्रमादि सुनाकर भय दिखाकर खण्डन मण्डन किया यहां तक कि विनाशकाल में तो सबकी मति विपरीत होहीजातीहै ९९ । १०० इससे उनका निश्चय यह ठहरा कि जो विद्या पढ़ेहों व तपस्वीहों सबसे प्रथम उनका विनाश करना चाहिये क्योंकि सब लोक तपस्याहीसे होते हैं व बढ़ते हैं इससे प्रथम तपहीका विनाश करो फिर लोक आप नष्ट होजायँगे १०१ सो जो कोई इसपृथ्वी पर तपस्वी विद्वान्हों व अन्यभी धर्म्म कर्म्म करतेहों बस शीघ्रही जाजाकर उनका वध करो जगत् नष्टही समझो १०२ इसप्रकार बुद्धि नष्ट होजाने के कारण सबोंने जगत् के विनाशनेके विषयमें बड़ाहर्ष उत्पन्न किया व कहा कि बस सब लोक नाश करके इसी समुद्रको स्वर्ग समझ आनन्दसे यहां बैठे रहेंगे १०३ ऐसा विचारकर सब दैत्योंके झुण्डके झुण्ड रात्रिमें समुद्र के बाहर निकल २ तीनोंलोकोंमें मुनियों ऋषियोंका नाश करनेलगे १०४ इस प्रकार रात्रि में मुनियोंके आश्रमों में व पुण्यतीर्थों में जाजाकर मुनियोंको भक्षणकरके दिन होते २ फिर समुद्रके भीतर चले आतेथे १०५ उन दुष्टोंने जाकर वसिष्ठजी के आश्रमपर एक दिन एकसौ अठासी तपस्वियोंको भक्षण करलिया यह कर्म्म भक्षण वाला कालकेय नाम दानव करते थे और मारही डालतेथे १०६ इसीप्रकार ब्राह्मणों से सेवित अतिपुण्य च्यवन मुनिके आश्रम पर

एकरात्रिमें फलमूल खाने वाले बेचारे सौ मुनियोंको भक्षण करलिया १०७ इसप्रकार रात्रि में करके दिनमें फिर समुद्र में पैठजाते थे एक रात्रि में भरद्वाजजीके आश्रम पर आकर १०८ पवन पीकर रहनेवाले व जल पानही करके समय बितानेवाले नियत ब्रह्मचारी बीस भक्षण करलिये इसतरह से मुनियों को भक्षण करनेके लिये १०९ जैसेही रात्रि होती थी कि बड़ेवेग से दौड़ २ कर अपने भुजों के बलसे दूर २ पहुँचकर खालेते इसप्रकार बहुत दिनों तक उन दुष्टों ने मुनियोंका वध किया ११० परन्तु किसी मनुष्यने न जाना कि कौन मार२ खा जाताहै यहां तक कि उन कालकेयदानवों के भयसे वेदाध्ययन वषट्कारादिसे यज्ञादि क्रियाओं के उत्सवबन्द होगये १११ इससे जगत् उत्साहरहितहोगया हेराजन्! इसप्रकार जब मनुष्य प्रतिदिन नष्ट होनेलगे ११२ तो अपनी रक्षाके लिये दशोदिशाओं में भागनेलगे कोई २ ब्राह्मण तो संसारसे उदासीन होकर पर्व्वतोंकी गुहाओंमें चलेगये ११३ बहुतोंने मारेभयके प्राणही छोड़ दिये कोई २ बड़े धनुषवाले शूरवीर परमदर्पितहुए ११४ रात्रि में व दिन में दानवों के ढूँढ़नेका यत्न करनेलगे परन्तु समुद्र में घुसेहुये राक्षसों के पीछे न जातेभये ११५ और परमशांतिको न पातेभये नाशही को पानेलगे जब संसार नष्ट होने लगा और यज्ञोत्सव क्रियाभी नाश होनेलगी ११६ तब परमव्याकुल होकर इन्द्र समेत सब देवता भयसे सलाह करनेलगे ११७ और सबके सब वैकुण्ठमें जाकर देव देव नारायण अपराजित मधुसूदन भगवान्से नमस्कार करके बोले ११८ हे भगवन्! हमलोगों के उत्पन्न करने व पालन करनेवाले स्वामी आपही हो क्योंकि जगत् के प्रभु हो यह चराचर जगत् आपही ने उत्पन्न कियाहै ११९ हे भगवन्! पूर्व्व समयमें यह पृथ्वी जलमें डूबी पड़ीथी तब वाराहरूपधारण करके जगत् के अर्थ आप निकाललाये व हिरण्याक्षदैत्यको मारा १२० ऐसेही महावीर्य्यवान् आदिदैत्य हिरण्यकशिपुको नरसिंह रूप धारणकरके आपने मारा १२१ व सब प्राणियों से अवध्य महासुर बलिथा उसेभी आपने वामनरूप धारण करके तीनोंलोकों

के राज्य से भ्रंशित करदिया १२२ महाधनुर्द्धर जम्भ नाम असुर को जोकि यज्ञों का नाशकर्त्ता था व महाक्रूरस्वभाव था आपही ने मारा १२३ इत्यादि आपके बहुतसे कर्म्म हैं जिनकी कोई संख्या ही नहीं करसक्ता इससे हे मधुसूदन! भयसे डरेहुये हमलोगों की गति आपही हैं १२४ इससे सब देवताओंके देव आप यह देवताओं व लोकोंकी रक्षा के लिये विज्ञापन करते हैं कि इस बड़ेभारी भयसे लोकों व देवताओं तथा इन्द्रकी रक्षा कीजिये १२५ आपके प्रसाद से सब प्रजाओं का कल्याण होगा व सब मनुष्य स्वस्थचित्त होंगे व हव्यकव्योंसे देवता पितर तृप्त होंगे १२६ ये सबलोग आपसमें एक दूसरे के आश्रित से विदित होते हैं पर वास्तव में आपही के प्रभाव से भयरहित रहते हैं क्योंकि आपही तो सबकी रक्षा करते हैं १२७ आजकल सबलोगोंको यह बड़ाभारी भय उत्पन्न हुआहै कि हमलोगभी नहीं जानते कि रात्रिमें ब्राह्मणोंको कौन मारजाताहै १२८ सो ब्राह्मणों के नष्ट होजाने पर पृथ्वी भी नष्ट होजायगी इससे हे महाबाहो! हे संसार के स्वामीजी! आपही के प्रसादसे सबलोक रह सक्तेहैं और कोई उपाय नहीं है १२९ जो आप रक्षाकरें तभी सब जगत् नष्ट होनेसे बचे नहीं तो ब्राह्मण नष्टही हुये जाते हैं इतनी देवताओं की प्रार्त्थना सुनकर श्रीविष्णुभगवान् बोले कि हे देवताओ! सब प्रजाओं के क्षय होनेका कारण हम जानते हैं १३० अब तुमलोगों से भी बताते हैं उसे सुनकर ज्वररहित होवो कालकेयनाम दैत्योंका एक बड़ा घोर समूहहै १३१ उन्हीं लोगोंने बुद्धिमान् इन्द्र से वृत्रासुर के मारने को देखकर अपने प्राणों की रक्षा करने की इच्छा से सब वरुणजी के स्थान समुद्रमें घुसगये १३२ व नानाप्रकारके ग्राहादि जन्तुओं से भरेहुये उस घोर समुद्र में बैठे हुये वे लोग जगत् के नाश करने के विचार से रात्रिमें आकर मुनियोंको मारडालते हैं १३३ सो वे किसी प्रकार नाश करने के योग्य नहीं हैं क्योंकि समुद्र के भीतर रहते हैं इससे तुमलोग कोई उपाय समुद्र के शोषने का विचारो १३४ श्रीभगवान् विष्णुजी के ऐसे वचन सुन देवगण ब्रह्माजी के निकटगये उनकी अनुमति से अग-

स्त्यजी के आश्रमपर आये १३५ व वहां वरुणजी के पुत्र महाते-
जस्वी महात्मा अगस्त्यजी को विराजते हुये देखा जिनकी स्तुति
ऋषिलोग अपने२ मन्त्रोंसे कररहेथे जैसे देवता ब्रह्माजीकी उपासना
करते हैं १३६ देवगण महात्मा अप्रमत्त तपकीराशि मुनिसे बोले कि
पूर्वकाल में जब हमलोगोंको दुष्ट राजा नहुष ने कष्टदिया था तब
आपने उस लोककण्टक को तीनों लोकों के ऐश्वर्य्य से भ्रष्टकरके
नीचे गिरादिया था १३७ । १३८ व एक समय सूर्य्यकी गति रों-
कने के लिये क्रोध करके विन्ध्याचल बढ़ाथा पर आपने उसकी ऐसी
गति तोड़ी कि तबसे वह नहीं बढ़सक्ता १३९ उस समय सब कहीं
सूर्य्य न देख पड़ने के कारण लोकोंमें अँधियारी छागई थी और
मृत्युसे प्रजा पीड़ित थी तब सब प्रजा आपके शरणमें आईथीं तब
आपने सबोंकी रक्षाकी थी १४० हे भगवन्! भयसे भीत हमलोगों
की गति आपही हैं इससे हमलोग आपसे वर मांगते हैं आप वर-
दाताहैं १४१ इतनी बातके सुनतेही अगस्त्यजी तो देवताओं से
बोलनेही नहीं पाये कि भीष्मजीने पुलस्त्यमुनि से यह पूँछा कि हे
महामुने! विन्ध्याचल क्रुद्धहोकर एकाएकी कैसे बढ़आया हमारे यह
सुनने की इच्छाहै आप विस्तारसहित कहें १४२ पुलस्त्यजी कहने
लगे कि सब पर्व्वतों के राजा सुवर्णके सुमेरु पर्व्वत की प्रदक्षिणा
सूर्य्यभगवान् सदा किया करते हैं १४३ इस बातको जानकर एक
दिन विन्ध्यपर्व्वत सूर्य्यसे बोला कि जैसे आप सदा सुमेरुपर्व्वत
के चारोंओर १४४ प्रदक्षिणा करते फिरते हैं वैसेही हे सूर्य्य! हमारे
भी प्रदक्षिणा नित्य कियाकरो जब उसने सूर्य्य से ऐसा कहा तो
भास्करदेव उससे बोले १४५ कि हे पर्व्वत! हम अपनी इच्छा से
यह प्रदक्षिणा नहीं करते किन्तु जिसने यह जगत् बनाया है उसने
हमारे चलने के लिये यही मार्ग्ग बनादिया है १४६ जैसेही सूर्य्य
जीने ऐसा कहाहै कि एकाएकी विन्ध्याचल बढ़ा यहांतक कि झटपट
जाकर सूर्य्य व चन्द्रमा के चलने का मार्ग्ग रोंकलिया कहीं जानेका
अवकाशही न रहगया १४७ तब इन्द्रादि देवताओंने जाकर पर्व्वत-
राज विन्ध्यसे कहा कि आप यह क्या करते हैं विना सूर्य्यके चलने

से दिनरात्रि कैसे होंगे व विना इससे जगत् कैसे रहेगा परन्तु उस पर्व्वत ने उनके वचनोंकी ओर कुछ भी न विचारकिया १४८ तब सब देवतालोग मुनियों में श्रेष्ठ ऋषिमण्डली के मध्य में प्रकाशित सब धर्म्मजाननेवालों में श्रेष्ठ अत्यन्त अद्भुत प्रकाशित वीर्य्ययुक्त श्रेष्ठ अगस्त्यजीके निकट जाकर यह कहा १४९ कि यह पर्व्वतराज विन्ध्याचल क्रोध के वशमें आकर सूर्य्य चन्द्रमा व सब नक्षत्रों के मार्ग्ग को रोंकेलेता है १५० उसके रोंकने में और कोई मुनीश्वर समर्थ नहीं है हां आप चाहें तो भले रोंकसकें देवताओं के ऐसे वचन सुनकर अगस्त्यजी विन्ध्याचल के निकटगये १५१ व जाकर विन्ध्यसे बड़ेआदर से बोले कि हे पर्व्वतोत्तम ! हम आपसे जानेके लिये मार्ग्ग मांगते हैं १५२ किसी कार्य्य के लिये दक्षिण दिशाको जानाचाहते हैं जबतक हम फिर लौटकर न आवें तबतक हमको परखना १५३ जब हम उधरसे लौटकर फिर इधर चलेआवें तब तुम अपने मनमाना बढ़ना इतना कहनेपर वह पर्व्वत फिर पृथ्वीपर गिरपड़ा मुनिराज दक्षिण को चलेगये आजतक भी नहीं लौटे १५४ जिसप्रकार विन्ध्य बढ़ाथा व फिर अगस्त्यजीके प्रभाव से गिरपड़ा अब नहीं बढ़ता सब तुमसे हमने कहा जोकि तुमने हम से पूँछाथा १५५ अब जिस प्रकार कालकेय दैत्योंको देवताओं ने अगस्त्यजी की द्वारा मारा वह कहते हैं सुनो १५६ देवताओं के वचन सुनकर अगस्त्यजी बोले कि आपलोग यहां कैसे आये और हमसे क्या वरदान पाना चाहते हैं १५७ जब उन्होंने ऐसा कहा तो देव लोग उन मुनिराज से बोले कि हे देवताओं के महात्मा देव मुनिराज ! बस एक अद्भुत वर आपसे चाहते हैं कि आप समुद्रको पीलीजिये १५८ बस इसी महार्णव के पानकरनेसेही हमारे सब कार्य्य सिद्ध होजायँगे फिर हमलोग सपरिवार व ससहाय कालकेयनाम असुरोंको ढूंढ़ ढूंढ़ कर मारडालेंगे १५९ देवताओं के वचन सुनकर मुनिराजने कहा बहुत अच्छा हम समुद्र पीलेंगे आपलोगों व लोकों के सुखका करनेवाला काम करेंगे १६० इतना कहकर सब देवताओं व मुनियों के सङ्ग अगस्त्यजी सब नदियों व जलोंके स्वामी समुद्र

के समीपगये १६१ उनके पीछे पीछे उन महात्मा का अद्भुत कर्म्म देखनेके लिये मनुष्य सर्प गन्धर्व्व यक्ष किम्पुरुषभी बहुतसेगये १६२ यह सब बड़ी भारी समाज जाकर बड़े भयङ्कर शब्दसे गर्जते हुये व वायु के लगने से बड़ी २ लहरियों से नाचतेहुये से समुद्रके किनारे सब पहुँचे १६३ वह बहुत फेनोंके बहनेके कारण मानों हँसरहाथा व किनारेपर के पर्व्वतों की कन्दराओं में लहरें भरदेताथा नाना प्रकारके ग्राह मकरादि जलजन्तु ऊपरको उछल२ कर फिर नीचेको जारहेथे १६४ ऐसे समुद्र के बनायनिकट अगस्त्यमुनिसहित सब देवता गन्धर्व्व बड़े २ सर्प महाभाग ऋषि पहुँचे १६५ भगवान् वरुणके पुत्र अगस्त्यजी समुद्रके तीर पर पहुँचकर वहां आयेहुये सब देवता और ऋषियों से बोले कि १६६ हमारा अगस्त्यनाम है व लोग हमको ऋषियों में सज्जनतम कहते हैं देखो सब लोकोंके हित के लिये अभी समुद्रको पीते हैं १६७ हे देवो! जो कुछ तुमलोगोंको इसके पीछे करनाहो शीघ्रता से उसे करो यहां कुछ भी विलम्ब न जानो इतना कहकर क्रुद्धहो सब लोकोंके देखतेही गण्डूषभरकर सब समुद्रका जलमात्र पीलिया उसे पियाहुआ देखकर इन्द्रसमेत देवतालोग १६८।१६९ बड़े विस्मयको प्राप्तहो मुनिराजकी स्तुति करने लगे तुम सबलोकोंके उत्पन्न करनेवाले और रक्षाकरनेवाले हो अब तुम्हारे प्रताप से जगत् आनन्दित होजायगा १७० जब देवताओं ने देखा कि समुद्रमें अब किञ्चिन्मात्र भी कहीं जल बाकी नहीं रहा तो सबोंने मुनिराज की बड़ी प्रशंसाकी व गन्धर्व्वमुख्य गानेलगे देवगण पुष्पोंकी वर्षा करनेलगे १७१ इस रीति से समुद्र को जल रहित देखकर परमहर्षित बलयुक्तहोकर सब देवतालोग अस्त्र शस्त्र लेकर उन कालकेयनाम दैत्योंको एकओरसे मारने काटनेलगे १७२ जब महाबली वेगवान् महानाद करतेहुये महात्मा देवताओंने दैत्यों को इस रीतिसे मारा तो वे इन महात्मा वेगवानों के वेगको न धारण करसके १७३ जब बनायसारे पीटेगये कुछ पै कुछ एक मुहूर्त्तभर युद्ध दैत्योंने किया फिर कुछ महाभयंकर भी युद्ध हुआ १७४ उनमें मरने को कुछ था भी नहीं क्योंकि पूर्व्वसमय में तो उन्हों ने जिन

जिन तपस्वियों का वध कियाथा उनके तपसे दग्ध होरहे थे फिर देवताओंने जानों संहारही करडाला १७५ जब सुवर्णके सब भूषण कुण्डल और बहूटा धारण कियेहुये कालेरंग के कालकेयनाम दैत्य देवताओं के अस्त्र शस्त्रों से मारेगये तो फूलेहुये पलाश के वृक्षोंके समान शोभित हुये १७६ व जो कालेयों में से कुछ मारनें से शेष रहे वे सब भाग २ पाताल को चलेगये १७७ जब सब दैत्य मार गये तो देवगण बड़े प्रसन्न होकर मुनिराज अगस्त्यजी की स्तुति करके व विविधप्रकार के वचनों से उनसे बोले १७८ हे महाभाग! आपही के प्रसाद से लोगोंने यह महासुख पायाहै क्योंकि आपही के तेजसे ये भीमपराक्रमी कालेयदैत्य मारेगये १७९ अब हे महाभाग! लोकके हितकारी इस समुद्र को आप फिर पूरित कीजिये जो जल आपने पानकरलिया है फिर छोड़ दीजिये १८० यह सुन कर महातेजस्वी मुनिराज देवताओं से बोले कि वह जल तो अब हमारे उदरमें पचगया समुद्रके भरनेका और कोई उपाय विचारो १८१ क्योंकि इसके पूरण करनेके लिये तुम्हीं लोग कोई यत्न विचारो क्योंकि तुमको बड़े यत्न आते हैं॥मुनिराजका ऐसावचन सुनकर १८२ सब देवतालोग बड़े विस्मित व उदासीन हुये व परस्पर वार्त्ताकरके मुनिके प्रणाम सबोंने किया १८३ व सब प्रजा व ब्राह्मण अपने २ स्थानोंकोगये व सब देवगण विष्णुभगवान् को संगलेकर ब्रह्माजी के समीपगये १८४ मार्ग्ग में समुद्रके पूरण होनेकी वार्त्ता का सम्मत आपस में करतेजाते थे इससे वहां पहुँचतेही सब के सबोंने सागर के भरजानेही का प्रश्न हाथजोड़कर किया १८५ उन सब देवताओं से भगवान् ब्रह्माजी बोले कि हे देवतालोगो! तुम यथेष्टजाकर अपना २ कामकरो १८६ अब बहुत कालकेपीछे समुद्र भरेगा जब कि अपने पुरुषों के तरने के लिये महाराज भगीरथजी १८७ गङ्गाजी के जलका समूह लावेंगे तब उसीसे समुद्र पूरणहोजायगा इसप्रकार ब्रह्माजी ने कहकर सब देवताओं और श्रेष्ठऋषियोंको बिदाकिया १८८ फिर प्रसन्नहोकर ब्रह्माजी ऋषियोंमें श्रेष्ठ अगस्त्यजी से बोले कि आपने देवताओं का कार्य्यकिया जिस में

दानवों का विनाशभी हुआ १८९ जोकि आपने बेचारे देवताओं को इस महादुःख से उबारा इससे हम बहुत सन्तुष्ट हुये अब जो आपको वर इष्टहो वह मांगिये हमदेंगे १९० जब ऐसा अगस्त्यजी कहेगये तो प्रणामकरके ब्रह्माजी से बोले कि हे देवब्रह्माजी ! यहीं हम टिकेथे तब देवताओं का कार्य्य हमने जाकर किया है १९१ इससे यहां पर सब आश्रमों के आगे हमारा आश्रम तुम्हारे कहने से होजाय व होजायगा इसमें संशय नहीं है १९२ ब्रह्माजी बोले कि जो कोई पुष्करतीर्थ की यात्रा करेंगे व तुम्हारे कुण्ड में स्नान करेंगे और देवताओं व पितरों का तर्प्पण करेंगे १९३ व देवताओं की पूजा भी करेंगे क्योंकि तुम्हारे आश्रम पर देवकार्य्य पितृ तर्प्पणादि सब अक्षयपुण्य को देगा व जो लोग छोटा बड़ा अर्घ्य ग्रहण कर अच्छे २ पुये और पूरी १९४ ब्राह्मणोंको देंगे उनलोगों का स्वर्ग में वास होगा श्राद्ध करने से उनके पितर जबतक महाप्रलय न होगी तबतक तृप्त बने रहेंगे १९५ व जो कोई यहां पर कन्दमूल फलाहारादि से मुनियोंको तृप्त करेंगे वे अपने २१ कुलों सहित सप्तर्षियों के लोक में बसेंगे १९६ व जो कोई यज्ञ पर्व्वतपर चढ़कर गंगाजी के निकलने का स्थान देखेगा जहां से कि उत्तरको मुखकरके देवनदी पुष्करकी ओर को बहती है १९७ वहां जो कोई स्नान करके देवता पितरों का तर्प्पण करेगा उसको अश्वमेध का फल होगा इसमें सन्देह नहीं है १९८ व जो कोई यहां एक विप्रको भोजन करावेगा उसको कोटि ब्राह्मणों के भोजन कराने का फल होगा व यहां का अन्न और जलमात्र का भी दान अक्षयफलको देगा १९९ यहां आकर जो जिसप्रयोजन की इच्छा करेगा उसका वह काम सिद्ध होगा यहां पर स्नानमात्रही करने से फिर पृथ्वी में बुरी योनि को मनुष्य न पावेगा २०० स्थानों में श्रेष्ठ स्थान है तीर्थों में उत्तम तीर्थ है हे मुनिश्रेष्ठ ! इसको मैंने दिया है इसमें कुछभी संशय नहीं है २०१ चाहेस्त्रीहो वा पुरुष जन्मपर्य्यन्त के कियेहुये उसके पाप केवल यहां आकर स्नानमात्र करने से सब तिसके छूटजायँगे २०२ इसप्रकार लोकके पितामह ब्रह्माजी अगस्त्यमुनि से कहकर

उनसे बिदाहोकर अपने लोकको चलेगये २०३ व अगस्त्यजी अपने उसी आश्रमपर स्थितरहे अगस्त्यके आश्रमकी उत्पत्ति यह हमने तुमसे कही २०४ हे कुरुवंशभूषण ! अब सप्तर्षियों के आश्रम तुमसे कहेंगे आत्रि वशिष्ठ पुलस्त्य पुलह क्रतु २०५ अङ्गिरा गौतम सुमति सुमुख विश्वामित्र स्थूलशिरा संवर्त्त प्रतर्द्दन २०६ रैभ्य बृहस्पति च्यवन कश्यप भृगु दुर्व्वासा जमदग्नि मार्कण्डेय गालव २०७ उशना भरद्वाज यवक्रीत स्थूलाक्ष सकलाक्ष कण्व मेधातिथि कृत २०८ नारद पर्व्वत स्वगन्धी च्यवन तृणाम्बु शवल धौम्य शतानन्द अकृतव्रण २०९ जमदग्नि राम अष्टक व अपने पुत्र शिष्यों समेत कृष्ण द्वैपायन २१० ये सब सप्तर्षियों के स्थान पुष्कर तीर्थमें आये सबके सब नियमों में युक्त दयासंयुक्त तपस्वी २११ अक्रूरता व जय करनेमें प्रवीण धैर्य्य तप सत्य क्षमा सरलता में निपुण दया दान जप ये सबों में टिकेथे २१२ यहां जो उत्तमकर्म्म तपस्वीलोग करते हैं वेही स्वर्ग्गादि में जाकर भोगते हैं इस बातको जानकर मुनिलोग पुष्कर में जाकर येही कर्म्म करते हैं २१३ पुष्कर में नास्तिकलोग नहीं जाते न चोर जाते हैं न अजितेन्द्रियलोग जाते हैं क्रूरस्वभाववाले भी नहीं जाते चुगुल भी नहीं जाते न कृतघ्न जाते न मानी लोग २१४ सत्यवादी तेजस्वी शूरवीर दयावान् क्षमा करनेवाले यज्ञ करनेमें निपुण यज्ञशील चेष्टाहीन उपद्रवरहित २१५ ममताहीन और अहंकाररहित ये लोग पुष्करतीर्थ में जाते हैं वहां जानेवाले महात्माओं के न रोग होता न असमय में वृद्धता आती न अकालमृत्यु होती २१६ मूर्ख विषयी व कामी लोभी मद द्रोह क्रोध मोह करनेवाले वहां नहीं जाते हैं २१७ मान अपमान समानवाले निर्द्वन्द्व जितेन्द्रिय ध्यान योगपरायण लोग पुष्कर में जाते हैं २१८ बहुधा जो ऋषिलोग वहांके आश्रमों में रहते हैं व जैसे नियम चाहिये करते हैं उनको बड़े महोदय के लोक मिलते हैं २१९ जो लोग किसी प्राणीको कर्म्म मन व वचन से भी नहीं मारते क्रूरता करतेही नहीं सर्व्वदा प्रिय बोलते हैं २२० व नित्य अग्निहोत्र करने में रत रहते हैं नित्य अतिथियों का पूजन करते

हैं नित्य वेद पढ़ते व नित्य त्रिकाल स्नान करते हैं २२१ व जो अपनी माता भगिनी व कन्या के समान पराई स्त्रियों को देखते हैं व किसी की वस्तु लेनेकी इच्छा नहीं करते २२२ व जो गाली इत्यादि देनेपरभी कोप नहींकरते मारनेपरभी किसीको नहीं मारते दुःख सुखमें समान रहते महात्मा जितेन्द्रिय रहते २२३ येलोग देखते हैं पृथ्वी पर चाहेजहां घूमाकरें अपने चित्तकी एकाग्रतासे सनातन ब्रह्मलोकको चिन्तन करते हैं २२४ एकसमयकी वार्ता है कि पृथ्वीपर बहुत दिनोंतक वर्षा न हुई इससे भूखोंकेमारे सबलोग बहुत दुःखित हुये २२५ जब इस मर्त्यलोक भरमें कहीं अन्नही न रहा तो लोग अपने २ प्राणोंकी रक्षामें लगे यहांतक कि मरेहुये पुत्रका मांसभी माता पिता खालेनेलगे २२६ उस समयमें सब ऋषिलोग जो पुष्करमें तप करतेथे अन्न न मिलनेसे बहुत पीड़ितहुये उनको दुःखित देखकर एक कष्टसे पीड़ित राजा आकर उनसे यह वचन बोला कि २२७ हे मुनिसत्तमो! दानलेना ब्राह्मणकी अनिन्दित वृत्तिहै इससे तुमलोग हमसे दान ग्रहणकरो २२८ सो उनमें श्रेष्ठ श्रेष्ठ ग्राम व्रीहियवादि अन्न घृत दुग्धादि रस नानाप्रकार के मणि सोना बहुत बहुत दुग्ध देनेवालीगायें जो कुछ चाहो हमसे लो परन्तु मांसको न खावो २२९ यह सुनकर ऋषिलोग बोले कि हे राजन्! प्रतिग्रह लेना बड़ाघोर कर्म्महै मधुमिलेहुये विषही के समान है इस बातको आप जानते हैं फिर हमलोगों को क्यों लोभके वशमें करते हैं २३०॥

दो० दशसूना सम चक्रिदश चक्रीसम ध्वजजानु॥
दशध्वज सम वेश्या नृपति दश वेश्यासम मानु २३१
दशसहस्र सूनासरिस सदारहत कलवार॥
ताहीसम नृप होतहै तासुदान अघवार २३२
राजदान जो लेत द्विज लोभी है अविचार॥
तामिस्रादिक नरक महँ जायपरत नउबार २३३

इससे हे राजन्! जाओ दानसहित तुम्हारी कुशलहो यह दान और लोगोंको दो इतना कहकर वे ऋषिलोग तो वनको चलेगये २३४ तब राजाकी आज्ञासे उसके मन्त्री लोगों ने वहां जाकर गूलर

फलों में सुवर्ण भरकर पृथ्वी में छितरादिया २३५ तब अन्न ढूंढ़ते हुये व गूलर लेतेहुओं को देखतेहुये उनलोगों से अत्रिजी बोले २३६ कि हमलोग मूढ़विज्ञान नहीं हैं न मन्दबुद्धि हैं हम जानते हैं कि इन गूलरके फलोंमें सोना भरा है २३७ क्योंकि दानलेना इसी लोक में बड़ी प्रसन्नता करताहै मरने के पीछे विषके तुल्य होजाताहै इससे जो कोई अनन्त सुख चाहे तो किसीका दान न ले २३८ जो पुरुष किसीके सौरुपये दानलेता है उसके स्थानमें सहस्र होजातेहैं मानों वह उसका सहस्रका ऋणी होजाताहै इस से पापिष्ठगति को पाता है २३९ पृथ्वीपर धान्य यव सोना पशु व स्त्रीआदि पदार्थ दूसरे के देखकर किसका चित्त लेनेको नहीं चाहता परन्तु परधनादि लेने से महापाप होताहै इससे न लेना चाहिये २४० वशिष्ठजी बोले कि धर्म्मके लिये धन इकट्ठा करना चाहिये यह बात अच्छी नहींहै क्योंकि हमारे मतसे धन संचय करने से तप संचय करना श्रेष्ठ है क्योंकि धन किसी न किसी प्रकार से दूसरे का लियाजाता है तभी इकट्ठा होताहै २४१ और सब पदार्थों के इकट्ठे न करने से सब उपद्रव नाश होजाते हैं और इकट्ठे करनेवाला कोई भी उपद्रवरहित नहीं दिखाईदेता २४२ जैसे २ ब्राह्मणलोग कुदान नहीं लेते वैसे २ उनके सन्तोष से ब्रह्मतेज बढ़ताहै २४३ जिसके पास कुछभी नहीं होता व राज्य इन दोनोंको जो तोलते हैं तो राज्यसे अकिंचनता अर्थात् कुछ न होना अधिक समझाजाताहै २४४ फिर कश्यपजी बोले कि जो ब्राह्मण अनाथ होताहै वह धनवान् से महान् होताहै २४५ क्योंकि ऐश्वर्य्य से विमूढ़ होकर ब्राह्मण कल्याण से रहित होजाताहै धन सम्पत्ति होनेसे पुरुष विमोहित होजाताहै फिर विमोहित होनेसे नरकमें जाताहै २४६ इससे धनसे नानाप्रकार के अनर्थ उत्पन्न होते हैं चाहिये कि कल्याण चाहनेवाला पुरुष धनको दूरसे त्यागे व जो पुरुष धर्म्म करनेके लिये धनके इकट्ठे करने की इच्छा करता है उसकी भी इच्छा अच्छी नहीं है २४७ क्योंकि कीचड़ जानकर लगाकर फिर धोनेसे दूरसे उसका न छूनाही अच्छाहोताहै क्योंकि धन पाकर उसके मदके मिटानेकेलिये दानादिधर्म्म करनेसे

धनका न संग्रह करनाही अच्छाहै जो धनसे धर्म्म कियाजाता है वह कुछ दिनोंमें क्षय भी होजाता है २४८ व जो परायेलिये छोड़दिया जाताहै संग्रहही नहीं कियाजाता वह अक्षय होकर मुक्तिदेता है फिर भरद्वाजजी बोले कि जब पुरुषके अंग जीर्ण होजाते हैं तब बालभी जीर्ण होजाते हैं व ऐसेही जीर्णपुरुषके दांतभी जीर्ण होजाते हैं २४९ पर धनकी आशा व जीनेकी आशा कभी नहीं जीर्ण होती बरन दिन २ तरुण होती जाती है नेत्र व कानभी जीर्ण होजाते हैं पर एक तृष्णा सदा अजीर्ण बनीरहती है २५० जैसे विना सिलेहुये वस्त्रोंको सुईसे दरजी बराबर करके एकमें जोड़कर सी देताहै इसी प्रकार संसारसूत्रको तृष्णारूपिणी सुई सीदेती फिर उससे अलग नहीं होसक्ता जैसे अच्छेसीनेवाले के दियेहुये डोभोंसे वस्त्र फिर नहीं अलग होता २५१ जैसे शरीर के बढ़ने से मृगका सींग बढ़ता जाता है ऐसेही यह अनन्तपारवाली तृष्णा बढ़तीही जातीहै जिससे नानाप्रकारके दुःख होते हैं २५२ व इसी तृष्णाही में अनेकअधर्म्म उत्पन्न होते हैं इससे ऐसी धनतृष्णाको छोड़ देना चाहिये गौतमजी बोले कि सन्तुष्ट पुरुष कौन फलों को नहीं त्यागसक्ता २५३ व जिस की सब इन्द्रियां अपने २ विषयों का लोभ करती हैं वह संकटों में डूबा रहताहै व जिसका मन सदा सन्तुष्ट रहताहै उसको सब ओर से सम्पदा प्राप्तहोती हैं २५४ क्योंकि जूतापहरनेवाले के लिये सब कहीं की पृथ्वी चमड़े से मढ़ीहुई होतीहै जो सुख सन्तोषरूप अमृत से तृप्त शांतचित्त पुरुषोंको होताहै २५५ वह इधर उधर दौड़तेहुये लोभी पुरुषों को कहां है असन्तोष परम दुःख देता है व सन्तोष परमसुख २५६ इससे सुखार्थी पुरुष को चाहिये कि सदा सन्तुष्ट बनारहै विश्वामित्रजी बोले कि कामकी इच्छा करनेवाले की कामना बढ़तीही जातीहै २५७ इससे फिर बार बार बाणके समान काम उसे बाधित करता है कभी कामोंके भोग करने से कामकी शान्ति नहीं होती २५८ जैसे कि घी डालने से अग्नि और भी बढ़ता है शान्त नहीं होताहै कामोंकी अभिलाषा करता हुआ पुरुष कभी सुख नहीं पाताहै २५९ जैसे जिस वृक्षपर बाज पक्षीका वास होता है

उसकी छायामें बैठेहुये गौरवा पक्षीको सुख नहीं मिलता जो राजा चारों समुद्रों तककी पृथ्वीको भोगताहै २६० व जो सोना पत्थर बराबर समझती है वह पुरुष कृतार्थ है व वह राजा नहीं जमदग्निजी बोले कि दान लेनेमें जो पुरुष समर्थभी हो व दानको न ले २६१ वह उनलोकों को जाता है जिनको सब दानी लोग जाते हैं जो मूढ़ ब्राह्मण राजासे दानपानेकी इच्छाकरताहै वह महर्षियों से शोचकरने योग्य है २६२ वह मूर्ख नरक की यातना का भय नहीं देखता जो ब्राह्मण प्रतिग्रह लेनेमें समर्थ भी हो और दान लेनेमें तत्पर न हो २६३ क्योंकि दान लेने से ब्राह्मणों का ब्रह्मतेज नष्ट होजाता है दान लेनेमें समर्थ लोगोंका भी तेज दान लेनेसे जाता रहता है व जो लोग किसीका दान नहीं लेते २६४ उनको वे लोक मिलते हैं जो दानियों को मिलते हैं अरुन्धती जी बोलीं कि कमल का डोरा जैसे जलमें रहकर सदैव जलही में प्रवेश करता है २६५ ऐसेही देहके भीतर आदि अन्तरहित तृष्णा सदैव देहहीमें प्राप्तरहतीहै जो तृष्णा दुर्बुद्धियों से बड़े दुःखसे छोड़नेके योग्यहै व जो पुरुषके जीर्ण होने पर भी जीर्ण नहीं होती २६६ व जो प्राणांत करनेवाला रोग है उस तृष्णाके छोड़ही देनेवाले को सुख मिलता है चाण्डालरूपी एक पुरुष आकर ऋषियोंसे बोला कि हे महेश्वरलोगो ! यह हमको बड़ा विस्मयहै जो आपलोग तेज नाशहोने के भयसे दान नहींलेते २६७ क्योंकि बलवान् लोगभी जो दुर्बलों के से वचन बोलतेहैं तो इससे अधिक कौन भय होगा यहसुन पशुसखजी बोले कि सदा धर्म्ममें परायण विद्वान्लोग जो आचरण करते हैं २६८ जो अपना हित चाहता हो वही करे यह कहकर सुवर्ण भरेहुये उन गूलरोंके फलों को छोड़ २६९ दृढ़व्रत करनेवाले सब ऋषिलोग वहां से अन्यत्र चलेगये व विचरते विचरते सबके सब मध्यम पुष्करनाम तीर्थ में गये २७० व वहां सहसा से शुनस्सखनाम संन्यासीको देखा उसके संग सब बड़ेभारी एक वनमें गये २७१ वहां देखा तो एक कमल संयुक्त तड़ाग दिखाई पड़ा व उस तड़ागके तीरमें बैठकर सब शुभगति की चिन्तना करनेलगे २७२ तब शुनस्सख सब भूखेप्यासे ऋषियोंसे बोले कि सन

लोग बताओ भूँखकी कैसी पीड़ा होतीहै २७३ तब सब ऋषिलोग
गुनस्सख सन्न्यासीसे बोले कि शक्ति खड्ग गदा चक्र तोमर बाणा-
दिकों से २७४ पीड़ित पुरुषों की पीड़ा से भूँखकी पीड़ा अधिक
होतीहै श्वास कोढ़ क्षयी ज्वर मृगी शूलआदि २७५ रोगोंसे पीड़ित
पुरुषकी पीड़ासे भी अधिक क्षुधाकी पीड़ा होती है सुवर्ण के बहूँटे
मुकुट उज्ज्वल कुण्डलादिकों से भूषित भी पुरुष २७६ जब क्षुधित
होतेहैं तब शोभित नहीं होते जैसे पृथ्वीपरका सब जल सूर्यनारा-
यण शोषलेते हैं २७७ ऐसेही शरीरकी सब नसें पेटकी अग्नि से
सूखजाती हैं जब मूढ़ पुरुष क्षुधासे पीड़ित होता है तब न उसको
कुछ सुनाई देताहै न सूँघने से जान पड़ता है न दिखाई पड़ता है
२७८ केवल सब अंग जलने लगता है क्षीणहोता और सूखजाता
है भूँखे पुरुष को न पूर्वदिशा सूझती है न दक्षिण न पश्चिम न उ-
त्तर २७९ न नीचे ऊँचे जब क्षुधा लगती है तो पुरुष गूँगा बहिरा
जड़ पँगुला २८० भयंकर व मर्य्यादा से बाहर होजाता है क्षुधासे
पीड़ित लोग पिता माता पुत्र स्त्री कन्या २८१ भ्राता स्वजन बा-
न्धवको भी छोड़देतेहैं क्षुधित पुरुष न तो देवताओंकी पूजा करसकता
है न पितरों की न गुरुकी २८२ न ऋषियों की न समीप प्राप्तहोने
वालोंकी इसप्रकार क्षुधित पुरुषके ये सब बातें होतीहैं व जो इससे
विपरीत अर्थात् क्षुधित नहीं होता वह इन सब कामों को अच्छी
तरह करसक्ता है २८३ जो श्रद्धासहित भूँखेको अन्न खिलाता है
वह जानों ब्रह्मारूप होकर ब्रह्मलोक में ब्रह्मासमेत आनन्द करता
है २८४ उसमेंभी जो बनाबनाया सुन्दर अन्न प्रतिदिन ब्राह्मण को
खिलाता है और जो कोई अन्नदान नहीं करता केवल अन्नदान का
माहात्म्य पढ़ता है उसमें विशेषकरके श्राद्धमें २८५ वा एकाग्रमन
होकर अमावास्या को जब कभी अन्न जल न मिलसके उस श्राद्ध
के वाक्यमात्र से अन्नदान करने से २८६ पितर निस्सन्देह तृप्त
होतेहैं सोभी जबतक वह प्राणी जीताहै आप सुखी रहताहै देवता
व ब्राह्मण के समीप अन्नादि दान करने से दाता सदा मुक्त होताहै
२८७ चाहे अतिरुद्धहो वा प्रमत्तहो वा प्रसंग से ही वहां आगया

हो व चाहे भक्तिसे रहितभी हो पर दान देखने व उसका माहात्म्य सुनने से पापों से छूटजाता है २८८ व दानसेयुक्त विप्र धर्म्मभागी होकर सदा सुखी रहते हैं तत्त्वार्थदर्शियोंने यम दम नियम कहाहै २८९ क्योंकि ब्राह्मणोंका विशेषकर सनातनधर्म्म इन्द्रियों का दम करनाहै दम तेजको बढ़ाताहै व पवित्रभी उत्तम दम करताहै २९० दम करने से पुरुष पापरहित व तेजस्वी होजाता है व जो कोई धर्म्म वा नियम शुभदायक हैं २९१ व सब यज्ञों के जितने फलहैं उन सबोंसे दम विशेषहै दमहीसे यज्ञ व दान सब प्रवृत्त होते हैं २९२ जिसने इन्द्रियों का दमन नहीं किया उसको वनवास करने से क्या होताहै व जिसने इन्द्रियों को जीतलिया है उसको घरमें रहनेसे दोष कौनहै क्योंकि जहां २ दान्त पुरुष बसता है उसी को वनाश्रम कहते हैं २९३ जो पुरुष शीलवृत्त है व अपनी इन्द्रियों को जीतेरहताहै व सरलता में अपना स्वभाव रखताहै उसको आश्रमों से क्या प्रयोजनहै २९४ जो रागी पुरुष होतेहैं उनको वनमें भी दोष होतेहैं व जो अपनी पांच इन्द्रियों को जीतेरहतेहैं उनको घरमें भी तप रहताहै जो अच्छे कर्म्म करता व रागसे निवृत्त रहता है उसे घरमें भी तपोवन है २९५ जो लोग सुकर्म्म करने से धर्म इकट्ठा करते व सन्तुष्ट होकर सदा गृह में टिकेरहते व इन्द्रियों को जीतेरहते अतिथियोंकी पूजामें लगेरहते उनको घरमें भी नियमी लोगों के धर्म्म मिलते हैं २९६ न तो शब्दशास्त्र पढ़ने में निरत पुरुषका मोक्ष होताहै न सदाचार करनेमें निरत नरकी मुक्ति होती है न भोजन आच्छादन में तत्परही की मुक्ति होती है न लोगों के आचार अनाचारोंकी स्तुति निन्दा करनेवाले की २९७ किन्तु जो पुरुष एकान्त में बैठनेका स्वभाव रखते हैं व दृढ़व्रत होतेहैं व सब इन्द्रियोंकी प्रीतिको उनके विषयों से निवृत्त करते हैं तथा अध्यात्मयोग में मन लगातेहैं व नित्य किसी जीवकी कभी हिंसा नहीं करते उनकी मुक्ति निश्चय से होती है २९८ दान्त पुरुष सुख से सोता है व सुखसे जागता है व सब प्राणियों में समदृष्टि रखता है उसका मन सदा जागताही रहता है २९९ न रथपर चढ़के सुख

से जाता है न घोड़े और हाथीपर से जैसे कि आत्मज्ञानरूपिणी हथिनीपर चढ़कर महापथमें सुखसे जाता है ३०० जो पुरुष सदा सर्पसमान क्रोधयुक्त रहताहै वह हरिभगवान्को कभी सन्तुष्ट नहीं करसक्ता जैसे जो दमवर्जित होता है उसके सब शत्रुही शत्रु होतेहैं ३०१ यमको यम नहीं कहते किन्तु आत्माको यम कहतेहैं इससे आत्माको जिसने यमित किया उसने सब विशेष नियम किये ३०२ यमको यम कहते हैं यह मानकर जन वृथा ऊबने लगताहै क्योंकि जिसने अपने आत्मा को वश करलिया नियम से उसका क्या प्रयोजन है ३०३ मांसभक्षी व अजितेन्द्रिय पुरुषों से सदा प्राणियों को भय रहताहै इससे इनलोगोंके रोकनेकेलिये ब्रह्माजीने दण्ड बनाया है ३०४ दण्डही प्राणियों की रक्षा करताहै व दण्डही प्रजाओं को पालताहै दण्डही पापियों को निवारित करताहै इससे दण्ड दुर्ज्जय होताहै ३०५ श्याम युवा अरुणाक्ष सब प्राणियों को भय पहुँचानेवाला दण्डही मनुष्यों का शिक्षकहै इससे दण्डहीमें धर्म भी टिका रहता है ३०६ सब आश्रमों में एक यम अर्थात् इन्द्रियों को सब विषयों से निवृत्तकरनाही उत्तम व्रत है इससे अब हम वे चिह्न बताते हैं जिनके शान्तहोने से दान्त होताहै ३०७ उदारता नम्रता सन्तोष शास्त्रपढ़ना किसीकी निन्दा न करनी गुरुका पूजन करना सब प्राणियोंपर दया चुगुली किसीकी न करनी ३०८ शान्तबुद्धि ऋषियोंने इनछहों से दम कहाहै दयाके अधीन धर्म मोक्ष और स्वर्गहै ३०९ अपमानमें कोप न करना सम्माननमें बहुत हर्षित न होना सदा समदुःखसुख रहना शान्तचित्त रहना बस ऐसे पुरुष को शांत कहते हैं ३१० शांत पुरुष सदा सुख से सोता है व सुख ही से जागता है व कल्याण को प्राप्त होता है व जब शान्तता का अपमान करताहै तब नष्ट होजाता है ३११ शान्त को चाहिये कि जो कोई उसका अपमानभी करे उसका ध्यान न करे और अपने धर्म को अच्छाभी देखकर दूसरे के धर्म्म को दूषित न करे ३१२ व दूसरों के दोषोंसे दूषित होनेपर अपनीभी निन्दा न करे चाहे अपना शरीर वा और किसीका देह मन्त्र वा क्रियासे हीनहो वा जन्महीन अच्छा

हो ३१३ उसको दमकरके सुधारे क्योंकि दम सब दोषोंको ढाँकता है जैसे वस्त्र सब अंगों को ढाँकता है जो इन्द्रियों का दमन करना नहीं जानते वे निरर्थ सब शास्त्र पढ़ते लिखते हैं ३१४ क्योंकि शास्त्र का मूल दम है व दमही सनातन धर्म्म है जो अपनी तौलके अनुसार सोने को तराजूपर तौलता है ३१५ और द्रव्यसे मोहित नहीं होताहै वह तिसीसे धैर्य्यवान् कहाता है इस सोनेके दानसे भी दम श्रेष्ठ है सब व्रतोंमें भी परायण दमही है इससे इन्द्रियों का दमन अवश्य करना चाहिये ३१६ क्योंकि चाहे षडंगसहित चारवेद पढ़े परन्तु जो दम नहीं करता वह पूजित नहीं होता ३१७ दमसे हीन पुरुष को वेद नहीं पवित्र करते यद्यपि उसने षडंगसहित पढ़ेहों इसी प्रकार उसके लिये सांख्ययोग उत्तमकुल में जन्म तीर्थों में स्नानकरना सब निरर्थकही होते हैं ३१८ दम करनेवाला योगी अपमान करने से और भी अमृत की नाईं अपने को तृप्त समझता है मानकी निन्दा विषके समान करता है ३१९ क्योंकि अपमानसे तपकी वृद्धि होती है व सम्मान से तपकी क्षय होती है ब्राह्मण की जब पूजा व बड़ाई हुई तो उसकी दशा दुधारी धेनुकीसी होती है ३२० जैसे घास जल खिलाकर उसे बढ़ाते हैं फिर दुग्ध दुहलेते हैं पर फिर भी उसके दुग्ध होही आताहै ऐसेही लोगों के अपमान से फिर जप और होम करने से विप्रका तेज बढ़ता है ३२१ निन्दा करनेवाले के समान और कोई सुहृद् संसार में नहीं है क्योंकि वह जिसकी निन्दा करता है उसका पाप लेकर अपनी पुण्य उसे देता है ३२२ जो कोई निन्दाकरे उसकी निन्दा न करनी चाहिये अपना क्रोध शान्त करना उचित है क्योंकि जो उस समय भी अपने शरीर को संयमयुक्त रखता है वह अपने को मानों अमृतसे सींचताहै ३२३ हाथमें कपाल लेकर फिरना वृक्षोंके नीचे रहना मलिन मोटे फटे वस्त्र धारण करना असहायरहना किसी वस्तु की इच्छा न करना व ब्रह्मचर्य से रहना ये सब परमगति देते हैं ३२४ जिसने काम व क्रोध को जीत लिया अब वह वनमें जाकर क्या करेगा क्योंकि वह तो गृहही में सिद्धहोचुका अब वनजाने की कौन आवश्यकतारही अभ्यास करने

से शास्त्रआते हैं व शीलसे कुल रहता है ३२५ व गुणों से मन्त्र धारण कियेजाते हैं व क्रोध सत्त्वसे धारण कियाजाता है जो मनुष्य उत्पन्न क्रोध को अपनेही में धारण किये रहता है प्रकट नहीं होनेदेता ३२६ अक्रोधसे सब को जीतलेता है उसके समान पृथ्वी पर कौन वीर है जिसको क्रोधहो फिर उसे रोंक दे प्रकट न होनेपावे ३२७ और उसमें जो पुरुष कष्ट न पावे उसको सज्जनों में अत्यन्त सारतम मानते हैं यही ब्रह्माजी का कहा हुआ ब्रह्मराशि सनातन धर्म्म है ३२८ व यही धर्म्म का नियम है जो कि हमने तुमसे कहा है यज्ञ करनेवालों के लिये और लोक हैं तपस्वियों के लिये और ३२९ दम करनेवालों के लिये और पर सबलोक परमपूजित हैं क्षमा करनेवाले लोगों में एकही बड़ा दोषहै दूसरा कोई नहीं ३३० जो क्षमायुक्त पुरुषको लोग शक्तिहीन समझने लगते हैं सो उसे दोष न मानना चाहिये क्योंकि बुद्धिमानों का बल क्षमा है ३३१ उसको जो जानता है वह इष्टापूर्त्तादिकों का फल पाताहै जो पुरुष क्रोधयुक्त होकर जप करता है होम करता वा पूजाकरता है ३३२ उसका सब चूजाता है जैसे फूटेहुये घड़ेसे जल टपक जाता है जो इस दमाध्याय को प्रातःकाल उठकर पढ़ता है ३३३ वह धर्म्मों की नौकापर चढ़ कर कठिन संसारसागर को उतर जाताहै व इस पुण्यदायक दमाध्याय को जो ब्राह्मण नित्य किसीको सुनावेगा ३३४ वह ब्रह्मलोक को जायगा फिर वहां से निवृत्त न होगा धर्म्म सर्व्वधनको सदा श्रवण करना चाहिये व सुनकर धारण करनाचाहिये ३३५ जो बात अपने प्रतिकूलही वह औरों के सङ्ग कभी न करे ॥

दो० परतिय मातु समान परधन पुनि लोष्ट समान ॥
आत्मसदृश सब भूत जो देखत सोइ महान १

जिसका वैश्वदेव के अर्थ पकाना और पराये अर्थ जीवन है ३३६।३३७ बस उसके सबसे उत्तम धनहै जैसे सब धातुओं में सोना सबसे उत्तम होताहै हे राजन् ! जो पढ़कर सब प्राणियों का हित करता है वह अमृत भोजन करता है ३३८ इस प्रकार सब ऋषिलोग शुनस्सखसे धर्म्म कहकर उसके सङ्ग उस वनसे दूसरे को

गये ३३९ वहां उन्होंने कमलों से शोभित एकबड़ाभारी सर देखा तब उन्होंने वहां पर बहुतसे भसीड़ों को तोड़ा ३४० और उस तड़ाग के तीरपर धरकर उसमें पैठकर पुण्यकारी जलक्रीड़ा करनेलगे व स्नानादि करके उस तड़ाग से निकलकर बहुत भसीड़ वहां पड़ी उन्होंने न देखकर परस्पर कहा सब ऋषिबोले कि क्षुधासे सन्तप्तपापकर्मी हमलोगों के लिये पड़ीहुई ३४१ । ३४२ कौन क्रूरदुष्ट पापी यह भसीड़ हरलेगया यह सुनकर सब ऋषिलोग परस्पर शंकायुक्त होकर पूँछनेलगे ३४३ व सबोंने उस भसीड़के विषय में निश्चयभीकिया पर चोरकापता न लगा कि अभी तो पड़ीथी कौन लेगया तब वेलोग आपस में शपथ करनेलगे उनमें कश्यपजी बोले कि जिसने इसबिस अर्थात् कमलकी जड़की चोरीकीहो उसको वह दोषलगे जो कि सबका धन हरलेने व धरोहर हरलेनेवाले ३४४ और झूँठ साखीदेनेवाले को होताहै व जिसने बिसकी चोरीकीहो उसे वह दोष लगे जो दम्भसेधर्मकरनेवाले व राजाकी सेवाकरनेवाले ३४५ व मधु मांस खानेवाले को लगताहै व जिसने बिसकी चोरीकीहो उसे वह दोष लगे जो सदा झूँठ बोलनेवाले व सदा विषयों की सेवा करनेवाले ३४६ व कन्या बेंचनेवालेको लगताहै वशिष्ठजी बोले कि जिसने बिसकी चोरीकीहो उसे वह दोष लगे जो विनाऋतुके मैथुन करनेवाले दिनमें सोनेवाले ३४७ व आपस में अतिथिहोनेवालोंको होताहै व जिसने बिसकी चोरीकीहो उसे वह दोष लगे जोकि जिस ग्राममें एकही कुआंहो उसमें पानी पीनेवालोंको व ब्राह्मणहोकर शूद्रकी स्त्रीकेसंग भोगकरनेवाले को होताहै ३४८ भरद्वाजजी बोले कि बिसकी चोरी करनेवालेको वह पापलगे जो सबसे क्रूरतारखनेवाले व धन होनेपर अहंकार करनेवाले घमण्डी ३४९ व चुगुल पुरुषको होते हैं व जिसने बिसकी चोरीकीहो उसे वह दोपलगे जो निन्दा करनेपर करनेवालेकी भी निन्दा करनेवाले को होताहै व मारनेपर मारनेवालेको भी मारनेवाले को होताहै ३५० व जो लोन तेल घृत दूध दहीआदि रस बेंचनेवाले को होताहै गोतमजी बोले कि जिसने बिसकीचोरी की हो उसे वह पापलगे जो अतिथि आने

पर उसके विषयमें भेदडालनेवाले को होते ३५१ व सदा शूद्रही का अन्नभोजन करनेवाले को होते हैं व विस चुरानेवाले को वह पापहो जो दानदेकर कहनेवालेको दूसरों की स्त्रियों से प्रसन्न होनेवाले को ३५२ अकेले मीठा अन्न खानेवाले को होता है विश्वामित्रजी बोले कि जिसने विसकी चोरी की हो उसे वे पापलगें जो नित्य औरही की सेवा करनेवाले दिनमें मैथुन करनेवाले ३५३ व नित्यपातक करनेवालों को लगते हैं जिसने विसचुरायाहो उसे वह दोषलगे जो दूसरे के अपवाद के कहनेवाले को लगता है व परस्त्री गमन करनेवाले को लगता है ३५४ जमदग्निजी बोले कि जिसने विसकी चोरीकी हो उसे वे दोषलगें जो पराई निन्दामें रतरहताहो और जो दुर्बुद्धि पिता माताकी सेवा न करनेवालोंको लगतेहैं ३५५ व जिसने विसकी चोरीकीहो उसे वह पापलगे जो माता में अन्य बुद्धिकरनेवाले पराई रसोई को सदा खानेवाले परस्त्रीसे भोग करनेवाले ३५६ व वेद बेंचनेवाले को लगता है जमदग्निजी बोले कि जिसने विसकी चोरीकीहो वह जन्म जन्म में दूसरेका दासहो ३५७ सब धर्मक्रियासे हीनहो शुनस्सखबोले कि जिसने विसकी चोरीकी हो वह न्यायसे वेदपढ़े गृहस्थ होकर अतिथियों का प्रियकरे ३५८ व सदा सत्य बोले जिसने विसकी चोरीकी हो वह सदा अग्नि में विधिपूर्वक होमकरे नित्य और भी यज्ञ करता रहे ३५९ तो ब्रह्माके घरमें जावे यहसुनकर सब ऋषिलोग बोले कि जो शपथ तुमने किया वह तो ब्राह्मणों को इष्टही है ३६० इससे हम सबलोगों का विस शुनस्सख तुम्हीं ने चुराया है शुनस्सख बोले कि हे ब्राह्मणो ! आप लोगों के विस हमनेही अलग धरदिये हैं सो चोरी के विचारसे नहीं ३६१ किन्तु आप लोगों से धर्म्म सुनने की इच्छा से हमको इन्द्र जानिये हे मुनिश्रेष्ठो ! विना लोभसे अक्षयलोक आपलोगों ने जीत लिये ३६२ विमानपर चढ़कर देवस्थान को चलिये तब वाक्यों में चतुर महर्षिलोग इन्द्रको जानकर ३६३ उनसे ये वचन बोले कि जो कोई यहां आकर मध्यम पुष्कर में प्रवेश करेगा ३६४ व तीन रात्रि तक व्रत करेगा वह सब आवश्यक फल पावेगा जो बारह

वर्षतक देवताओंका यज्ञ करने से पुण्य होताहै ३६५ वह इस तीर्थ में आगमनमात्र से होताहै कुछ इसमें सन्देह नहीं है व जो इस तीर्थ में आता है उसे नरकवास नहीं होता सदा देवलोक में बसता है और अपने गणोंसहित आनन्दित होताहै ३६६ व ब्रह्माके दिन भर ब्रह्मा के लोक में रहता है व इन्द्रपुरी में जाकर इन्द्रके संग हर्षित होताहै ३६७ फिर नानाप्रकारके सुख भोगताहुआ अन्य शुभ लोकों में विचरताहै इसप्रकार अनेकप्रकार के लोभों से लोभयुक्त कियेगये भी ऋषिलोग लोभ न करतेभये तिसीसे स्वर्गलोकको जातेभये ३६८॥

दो० जो ऋषिचरित पुनीत यह सुनहिं पढ़हिं करिप्रीति ॥
सकल पापसों रहित ह्वै जाहिं स्वर्ग यह नीति ३६९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेसप्तर्षिसंवादोनामै कोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

दो० विसयें महँ मुनिनाथ कह पुष्पबाहु नृप गाथ ॥
पुनि विधिकह सुस्नानकी सुनिकै होहु सनाथ १

इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने फिर पुलस्त्यजी से प्रश्नकिया कि पापनाशिनी रमणीय यह अति आश्चर्य्यवती कथा आपने कही अब इसी कथाको पूँछतेहुये हमसे विस्तारपूर्व्वक याथातथ्य कहिये १ मध्यम पुष्करका भी माहात्म्य जैसा ऋषियोंने कहाहो सब कहिये व अन्नदानका दम करने का फल भी ऋषियों का कहा हुआ हमसे आपने कहा २ अब जहां विष्णुभगवान् ने पदन्यास किया ऐसे कनिष्ठ पुष्कर व उस पर्व्वतका वर्णन आप हमसे करें ३ पुलस्त्यजी बोले कि पुरानी रथन्तर कल्पकी यह वार्त्ता है कि उसमें एक पुष्पवाहन नाम लोगों में विख्यात तेजसे सूर्य्य समान प्रकाशित राजा हुआ ४ उसने ब्रह्माजीकी बड़ी तपस्याकी उससे सन्तुष्ट होकर ब्रह्माजी ने एक सोनेका कमल ऐसा कामग दिया ५ कि जिसपर चढ़कर वह सातद्वीप व सब लोकों में यथेच्छ फिरता था

कल्पकी आदिमें पुष्करद्वीपके निवासी ६ एकही संग उसकी पूजा करते थे इससे लोकमें पूजित उसका पुष्करद्वीप नाम हुआ वही पुष्कर अर्थात् कमल ब्रह्माजीने उस पुष्पवाहन को वाहन बनाने के लिये दिया ७ व इसीसे देवता दानव मनुष्यादिकों ने उसका नाम पुष्पवाहन रक्खा यह राजा बड़ा प्रसिद्धहुआ ब्रह्माके दियेहुये कमलपर टिकेहुये उस राजा पुष्पवाहन की उपमा का राजा उन दिनों में तीनों लोकोंमें भी कोई न था ८ व उसके तपके प्रभाव से उसकी रानी की सेवा सहस्रों स्त्रियां किया करती थीं उसका नाम लावण्यवतीथा वह महादेवजीको पार्वतीजीके समान बहुतप्रिय थी ९ उसके बड़े धर्म्मात्मा व बड़े धनुर्द्धर दशहजार पुत्रहुये उन पुत्रों को देखकर राजा बार २ विस्मित होता था १० एकदिन उसके यहां अगस्त्यमुनि आये उनकी पूजा करके राजा यह वचन बोला कि हे मुनीन्द्र! मनुष्यों के पूजा करने के योग्य हमारी राज्यश्री क्यों हुई व लक्ष्मी के तुल्य रूपगुणवती हमारी रानी कैसे हुई ११ स्त्री तो हमारे थोड़े तपसे सन्तुष्ट होकर ब्रह्माजीने दी है इन सबका कारण हमारे गृहमें चलकर आप बतावें वह हमारा भवन कोटिशत राजा लोगोंकेमंत्री हाथी घोड़े रथादिकों से व राजाओं से भराहुआहै १२ वहां जानेपर आप न जानपड़ेंगे कि कहां विराजते हैं जैसे तारागणों के बीच में शोभित चन्द्रमा सूर्य्य के उदय में नहीं प्रकाशित होताहै सो हम आपसे यह पूँछते हैं कि पूर्व्व जन्ममें हमने कौनसा धर्म्मादि कियाहै १३ व हमारे सब पुत्रों ने भी पूर्व्व जन्म में कौन धर्म्मादि कियाहै व स्त्रीने भी क्या कियाहै यह सुनकर मुनि बोले कि सुनो तुम्हारे जन्मान्तरकी कथा हम कहते हैं १४ तुम्हारा जन्म एक लुब्धकके कुलमें हुआथा तुम प्रतिदिन पापकर्म करतेथे व तुम्हारी रानीका जन्म एक बड़े दरिद्र के घरमेंथा १५ पर तुम दोनोंके न तो कोई मित्रथा न पुत्र बन्धुजन बहन और न माताही रहगई थी पर सुरूपा स्त्री और पुरुष में बड़ी प्रीति थी १६ दैवयोग से बहुत दिनोंतक वर्षा न हुई लोग आहार के लिये इधर उधर घूमनेलगे तुम्हारी स्त्री भी बहुत भूँखी थी एकदिन दिनभर तुमको कुछ फला-

दिक भी खाने पीनेको न मिला १७ इससे तुम दोनों बहुत दुःखित हुये दूसरे दिन कमलों से युक्त एक सरोवर तुम दोनों ने देखा उसमें से बहुतसे कमल लेकर वैदिश नाम नगरको तुम गये १८ उनके बेंचने के लिये दिनभर उस पुरमें तुम फिरे पर किसीने कुछ भी दाम न लगाये दिन बीतगया पर मोललेनेवाला कोई भी न ठहरा इससे तुम मारे भूँख प्यासके बहुत पीड़ितहुये १९ तब तुम दोनों एक किसी के बाहर के अँगने में बैठगये व वहां तुमने कुछ मंगलका शब्द सुना २० तब स्त्री पुरुष तुम दोनों वहां गये जहां वह मंगलशब्द सुनाई देताथा वहां जाकर देखा तो श्रीविष्णु की पूजा होरही थी २१ वहां अनंगवती नाम एक वेश्या विभूतिद्वादशी व्रत रहीथी उसे उसने माघमासकी द्वादशीको लवणाचलको समाप्त कियाथा २२ फिर गुरुदेवजी को सब सामग्रीयुक्त शय्यादी और सोने के भगवान् को आदर से भूषितकर २३ यह देखा कि राजा रानी यह चिन्तना कररहे थे कि इन कमलों से क्या करना योग्यहै विष्णुजीको भूषित करना श्रेष्ठहै २४ इसप्रकार राजा रानी के तिस समयमें भक्तिहुई तो उन्होंने तिसी प्रसंगसे भगवान् और लवणाचलको पूजकर २५ फूलों से सब ओर से शय्याको भी पूजा तदनंतर प्रसन्न होकर अनंगवतीने तीनसौपल धान्य राजारानी को २६ और तीन पल सोना देने की आज्ञादी परन्तु राजारानी ने महासत्त्व के अवलम्बनसे न ग्रहण किया २७ फिर अनंगवतीने चारोंप्रकार के अन्नलाकर कहा कि हे राजन्! भोजन कीजिये २८ परन्तु राजारानी ने वह भी त्याग दिया व कहा कि हे श्रेष्ठ मुखवाली! सबेरे भोजन करेंगे प्रसंगसे यह व्रत हमको शुभका देनेवाला होगा २९ हे दृढ़ व्रत करनेवाली! जन्म से लेकर हमलोग पापी थे तुम्हारे प्रसंग से धर्म का लेश यहां हुआहै ३० इसप्रकार रात्रि भर गा बजाकर बिताया प्रभात समय अनंगवतीने अपने आचार्य्यको लवणाचलसमेत शय्यादी ३१ व चार ग्राम दे फिर १२ ब्राह्मणोंको भक्तिसे वस्त्र भूषण युत सोनेकी माला पहिनाकर १२ धेनु दान किये ३२ फिर अपने सुहृदों मित्रों दीनों अन्धों व कृपणोंको बहुत भोजन दिया और

लुब्धक स्त्री पुरुषको पूजाकरके विसर्ज्जन किया ३३ तब भगवान्
की फूलोंसे पूजाकरने से ३४ वह लुब्धक स्त्री समेत आकर राजा
रानी हुये व उसीसे सब पाप छूटकर यह पुष्कर का मन्दिर तुमको
मिला व उसी सत्य के माहात्म्यसे विना लोभकी तपस्यासे यह का-
मगनाम विमानभी प्रसन्नहोकर ब्रह्माजी ने दिया अब तुम पुष्करको
सेवनकरो ३५ । ३६ और कल्पसत्त्वको प्राप्तहोकर विभूतिद्वादशीव्रत
को करो तो मोक्षको अवश्यही प्राप्त होगे ३७ इतना कहकर वे
मुनिराज वहीं अन्तर्द्धान होगये व राजा पुष्पवाहनने विधिपूर्व्वक
विभूतिद्वादशी व्रत किया ३८ इससे इस व्रतके करनेवाला यथेष्ट
फल पाताहै इससे चाहे जिसप्रकारसे हो १२ द्वादशी व्रत करनेचा-
हिये ३९ व अपनीशक्तिकेअनुसार ब्राह्मणोंको दक्षिणा देनीचाहिये
ज्येष्ठपुष्कर में एक धेनुदान करना चाहिये व मध्यमपुष्कर में उत्तम
भूमि ४० कनिष्ठमें सुवर्ण बस यही तीनों की दक्षिणा का विधानहै
ज्येष्ठपुष्कर के ब्रह्माजी देवहैं मध्यमपुष्करके श्रीविष्णुभगवान् ४१
कनिष्ठपुष्करके रुद्रजी ये तीनों देव तीनों में स्थितहैं लोगों के पाप
नाशनेवाले इस इतिहासको जो कोई भक्तिसे पढ़ताहै वा सुनताहै
४२ वह गोलोमके समान वर्षतक वैकुण्ठ में बसताहै अब व्रतों में
उत्तम व्रत कहेंगे ४३ वे सब रुद्रके कहेहुये महापातक नाशनेवाले हैं
उनमें एक गोश्राद्ध व्रत जिसमें रात्रिको अन्न बनाकर किसी परि-
वारवाले ब्राह्मणको ४४ सोनेका चक्र बनवाकर व एक त्रिशूल और
वस्त्रदे इसप्रकारसे जो पुण्यकरताहै वह शिवलोकमें जाकर आनन्दि-
त होताहै ४५ इसी को महापातकनाशन नाम व्रतभी कहतेहैं व जो
कोई एक दिन पहिले एक बार भोजन करके प्रातःकाल वृषभसहित
४६ तिलमयी धेनु मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणको देताहै वह महादेवजी के
पदको जाताहै यह रुद्रव्रत भय शोकका नाश करनेवालाहै ४७ जो
शक्कर के बर्त्तनसमेत सोने के नीलकमलको देता है और एकदिन
के अन्तर से रात्रिमें भोजन करता है व गाय बैल एक में जोड़कर
देता है ४८ वह वैकुण्ठ को जाताहै इस व्रतको नीलव्रतनाम है व
जो आषाढ़ादि चारमासों में कोई पुरुष उबटन नहीं लगाता ४९

और भोजन सामग्री देताहै वह भगवान् हरिजी के मन्दिरको जाता है सब जनों के साथ प्रीति करनेवाला यह प्रीतिव्रत कहाताहै ५० व जो कोई चैत्रमें दही दूध घृत मिठाई छोड़कर महीन वस्त्र रसीले पात्रमें धरके ब्राह्मणको देताहै इस व्रतमें स्त्रीसहित ब्राह्मणकी पूजा करके तब उसे दान देनाचाहिये व (गौरीमेप्रीयताम्) यह मन्त्र पढ़कर दान देना चाहिये इसका गौरी व्रत नाम है यह भवानी के लोकका दाताहै ५१ । ५२ व पुष्यादि में त्रयोदशीको ज्येष्ठपुष्कर में जाकर व्रतकरे प्रातःकाल सुवर्ण का ऊंख समेत अशोक बनाकर ब्राह्मणको दे यह अशोक दश अंगुलका बनाना चाहिये ५३ वस्त्र सहित देना चाहिये व प्रद्युम्न प्रसन्नहों यह मन्त्र पढ़ना चाहिये इस व्रतके करने से एक कल्पतक विष्णुलोक में बसकर फिर जब जन्म लेता है तब सदा शोकरहित रहता है ५४ इसका कामव्रत नाम है यह सदा शोकविनाशन है व आषाढ़ादि चतुर्म्मासा में जो कोई कुछ फल नहीं खाता ५५ व चतुर्म्मासा बीतजानेपर घृत और गुड़ सहित एक घड़ा ब्राह्मणको देताहै व कार्त्तिकी को कुछ सुवर्ण विप्रको देताहै ५६ वह रुद्रलोक पाता है इसका शिवव्रत नाम है व जो हेमन्त शिशिर ऋतुओं में न पुष्प सूँघताहै न धारण करता है ५७ व अपनी शक्तिके अनुसार तीनसोनेके पुष्प बनवाकर फाल्गुन की पौर्णमासी को मध्याह्न के समय शिव व केशव की प्रीति के लिये देता है ५८ वह क्रमसे परम्पद को जाता है इसका सौम्यव्रत नाम है व जो फाल्गुनकृष्ण तृतीया में नमक छोड़ देता है ५९ और सालके अन्त में शय्या और सामग्री युक्त घर दान करे इसमें भी स्त्री पुरुषसहित ब्राह्मण की पूजा करके भवानी प्रसन्न हो ऐसा कहकर दे ६० इस व्रतका सौभाग्यव्रत नाम है इस के करने से गौरीलोक में प्राणी बसता है व सन्ध्योपासन मौन होकर जो सदा करता है व वर्ष दिन के पीछे नियम समाप्त होने पर घृत भरकर एक कलश ६१ दो वस्त्र व तिल समेत घंटा ब्राह्मण को देता है वह सारस्वतनाम लोक को जाताहै फिर वहां से लौटता नहीं ६२ इस व्रतका सारस्वतव्रत नाम है रूप व विद्याभी करने

वाले को देता है पंचमी में उपवास करके जो पुरुष लक्ष्मीकी पूजा करके ६३ समाप्त होनेपर सुवर्णका कमल व धेनु ब्राह्मण को देता है वह विष्णुपदको जाता है व जब जन्म लेताहै लक्ष्मी उसके घरसे कभी नहीं जाती ६४ इसका लक्ष्मीव्रत नाम है दुःख शोक को वि-नाशता है महादेव और भगवान् के उबटन कर ६५ जबतक वर्षहो फिर गौ जल और घटदेवे तो दशहज़ार वर्ष वह राजा होकर फिर शिवपुर को जावे ६६ यह आयुर्व्रत सब कामना देने वालाहै पीपल सूर्य्य गंगा के प्रणाम करके ६७ एक बार भोजनकर एकवर्ष मत्सर हीन होकर व्रतकरे व्रतके अन्तमें स्त्रीसहित ब्राह्मण की पूजा करके तीनधेनु ६८ व सोनेका वृक्ष अपनी शक्तिके अनुसार बनवाकर ब्राह्मणको दे तो अश्वमेधयज्ञ करनेका फल पावे इस व्रतका कीर्त्ति व्रत नाम है ऐश्वर्य व कीर्त्ति को देताहै ६९ घृतसे शम्भु वा केशव भगवान् को स्नान कराकर अक्षत फूलसहित गोमयी कमल बना-कर पूजाकरे ७० समाप्त होनेपर सोनेके कलश में तिल भरके धेनु सहित जो ब्राह्मण को देताहै और आठ अंगुलका शूल देताहै वह शिवलोकमें पूजितहोताहै ७१ इसव्रतका सामव्रतनामहै जहांतक हो सामवेदी ब्राह्मण को दान देना चाहिये नवमी को एकबार भोजन करके अपनी शक्तिके अनुसार कन्याओं को ७२ भोजन करवाकर सोनेका कलश व वस्त्र सोनेका सिंहासन ब्राह्मणको दे तो शिवके धामको जाय ७३ वहां अर्बुद वर्ष तक सुरूपवान् व शत्रुओं से अपराजित होकर बसे यह वीरव्रत मनुष्यों को सुखदाता है ७४ चैत्रादिक चारमासोंमें दयायुक्त निरन्तर जलदान करावे व्रतके अन्त में अन्न वस्त्र संयुत मणि दानकरे ७५ उसीके साथ तिलपात्र व कुछ सुवर्णभी दे तो ब्रह्मलोक में जाकर पूजितहो व एक कल्पके पीछे ऐश्वर्य्य उत्पन्न करनेवाला आनन्दव्रत कहाताहै ७६ वर्ष दिनतक निरन्तर पंचामृतसे श्रीविष्णुभगवान्का स्नानकरावे वर्षके अन्तमें पंचामृत सहित एक धेनु ७७ शंखसहित ब्राह्मणको दे तो महादेव के पदको जाय वहां कल्पभर वासकरके कहींका महाराज होवे इस का धृतिव्रत नामहै ७८ जो पुरुष मांस भक्षण न करे व कभी उस

व्रतकी पूर्त्ति के लिये एक गोदानकरे उसके संग कुछ सुवर्ण भी दे तो अश्वमेधयज्ञका फल पावे ७९ इसका अहिंसाव्रत नाम है कल्पान्त में फिर वही प्राणी राजा होताहै बड़े प्रातःकाल स्नानकरके स्त्री सहित एक ब्राह्मण की पूजाकरे ८० फिर यथाशक्ति माला वस्त्र विभूषणों से भूषित करे तो सूर्य्य के लोकमें कल्पभर बसे इस का सूर्य्यव्रत नाम है ८१ आषाढ़ से लेकर चारमासतक नित्यप्रातस्स्नान नियमसे करे फिर कार्त्तिक की पूर्णमासीको एक ब्राह्मण को भोजन देकर गोदानकरे ८२ वह वैष्णवपद को जाताहै इसका विष्णुव्रत नामहै जो पुरुष दक्षिणायनभर पुष्प धारण करना व घृतका भोजन करना छोड़ता है ८३ अन्त में ब्राह्मणको पुष्प अन्न घृत धेनु खीर देता है वह शिवपद को जाताहै ८४ इस का शीलव्रतनामहै शील आरोग्य फलको देता है जो कोई वर्षभरकी पूर्णमासी में पयोव्रत करताहै ८५ व वर्षके अन्त होनेपर श्राद्ध करके पांच दूधयुक्त गोदान करताहै व विविध प्रकारके विचित्र वस्त्र जलकुम्भयुक्त देता है ८६ वह वैकुंठ को जाता है व अपने सैकड़ों पितरोंको तारताहै ८७ व कल्पके पीछे राजराजेन्द्र होता है इसका पितृव्रत नामहै जो सन्ध्या में घी का दीप देताहै तेलका नहीं देता ८८ और वर्ष के अन्तमें दीपक, चक्र, शूल, सोना और दो कपड़े ब्राह्मणको देताहै वह मनुष्य तेजस्वी होताहै ८९ और रुद्रके लोक को प्राप्त होताहै इसका दीप्तिव्रत नामहै कार्त्तिक के कृष्णपक्ष की तृतीयामें गोमूत्रको पीकर ९० फिर सालभर रात्रि में जो गोमूत्र पीकर सालके अन्तमें गोदान करताहै वह कल्पभर पार्वतीके लोक में बसकर फिर पृथ्वी में राजा होता है ९१ इसका रुद्रव्रत नाम है यह सदैव कल्याणकर्त्ता है जो चार महीना चन्दन का लेप त्याग कर ९२ सूती, चन्दन, अक्षत और सफेद दो कपड़े ब्राह्मण को देताहै वह वरुणके पदको प्राप्त होताहै इसका दृढ़व्रत नामहै ९३ वैशाख में फूल और नमकको त्याग कर गोदान करने से विष्णुपद में कल्पभर रहकर फिर पृथ्वीमें राजा होताहै ९४ इसका शांतिव्रत नाम है यह यश और कामना के फलको देताहै जो तिलकी राशि

सहित सोने के ब्रह्माण्डको ९५ घीसे अग्निको प्रसन्नकर स्त्री पुरुष ब्राह्मणको माला, कपड़ा और गहनों से पूजनकर ९६ पुण्यदिन में तीन पलसे अधिक सोना (विश्वात्माप्रीयताम्) इस मंत्रको पढ़ कर ब्राह्मणको देताहै वह फिर जन्मरहित ब्रह्मको प्राप्त होताहै ९७ इसका ब्रह्मव्रत नामहै यह मनुष्योंको मोक्षफल देताहै जो प्रभूत शकलान्वित उभयमुखी को देताहै ९८ और दिनमें दूधही पीताहै वह परमपद को जाता है इसका सुव्रत नाम है इससे फिर जन्म मरण नहीं होताहै ९९ तीन दिन दूधपीकर सोने के कल्पवृक्ष को यथाशक्ति पलसे ऊपर बनवाकर प्रस्थभर चावल संयुक्त १०० ब्राह्मणको देनेसे मनुष्य ब्रह्मपदको जाताहै इसका भीमव्रत नामहै और महीनाभर व्रत कर जो सुन्दर गऊ ब्राह्मण को देता है १०१ वह वैष्णव पदको जाताहै इसकाभी भीमव्रतही नामहै बीस पलसे ऊपर सोनेकी पृथ्वी बनवाकर ब्राह्मणको देवे १०२ और दिनमें दूध हीपीवे तो रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै इसका धनप्रद नामहै यह एक सौ सात कल्पतक धनको देताहै १०३ माघ वा चैत्रकी तृतीया में गुड़ धेनुको देवे तो पार्वती के लोक में जावे इसका गुड़व्रत नामहै १०४ जो पक्षभर व्रतकर ब्राह्मणको दो कपिला देताहै वह परमानन्दको प्राप्त होता है इसका महाव्रत नाम है १०५ इसका कर्ता देवता और असुरोंसे पूजित होकर ब्रह्मलोकको प्राप्त होताहै और कल्पके अन्तमें सबका राजा होताहै इसका प्रभाव्रतभी नामहै १०६ जो पुरुष वर्षभरतक एक बार नित्य भोजन करके भक्ष्यपदार्थ सहित जलकुम्भ दान देता है वह कल्पपर्य्यन्त शिवलोकमें बसताहै इसका प्राप्तिव्रत नामहै १०७ जो पुरुष अष्टमियोंमें रात्रि में एकबार भोजन करताहै व वर्षके अन्तमें एक गोदान करताहै वह इन्द्रपुरको जाता है इसका सुगतिव्रत नाम है १०८ वर्षादिक चारऋतुमें जो ब्राह्मण को इन्धन देताहै अन्तमें एक घृतकी धेनु बनाकर देता वह परब्रह्मको प्राप्तहोताहै १०९ इस सर्व्वपापनाशक व्रतका वैश्वानर व्रत नामहै एकादशीके दिन जो रात्रिको भोजन करके गोमतीचक्र की मूर्त्ति ११० सुवर्णकी बनाकर वर्षके अन्तमें ब्राह्मणको देता है

वह श्रीविष्णुके धामको जाताहै इसका कृष्णव्रत नामहै करनेवाला कल्प के अन्त में राजा होता है १११ जो पुरुष वर्षपर्य्यन्त खीर भोजन करताहै व्रत समाप्त होनेपर फिर दो गोदान ब्राह्मण के लिये करता है वह कल्पपर्य्यन्त लक्ष्मी के लोकमें बसता है इसका देवी व्रत नामहै ११२ जो मनुष्य सप्तमी में रात्रिमें भोजनकर समाप्त होनेमें दूधयुक्त गऊ देताहै वह सूर्य्यलोक को प्राप्त होता है इसका भानुव्रत नामहै ११३ जो पुरुष चतुर्थी को रात्रि में भोजन करता रहता है फिर वर्ष दिनके पीछे हेमन्तऋतु में चार गऊ ब्राह्मण को देताहै वह शिवलोक को जाताहै इसका वैनायकव्रत नाम है ११४ जो पुरुष चारमासतक अच्छे अच्छे फल नहीं खाता व कार्त्तिक में सब फल सुवर्ण के बनवाकर ब्राह्मणको देता है व होमके अन्त में चारधेनु भी देताहै ११५ वह सूर्य्यलोक में जाकर बसता है इसका सौरव्रत नाम है जो पुरुष १२ द्वादशियों में व्रत करके अन्तमें ११६ धेनु वस्त्र सुवर्ण अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों की पूजा करके देताहै वह परमपदको जाताहै इसका विष्णुव्रत नामहै ११७ चतु-र्दशी को रात्रिमें भोजनकर जो चारगऊ वर्षके अन्त में दान करता है वह शिवलोकको जाताहै इसका त्रैयम्बक नामहै ११८ जो कोई सात रात्रि तक व्रत रहकर घृतसे परिपूरित करके एक घड़ा ब्राह्मण को देताहै वह ब्रह्मलोक को जाताहै इसका वरव्रत नामहै ११९ अशो-काष्टमी का व्रत रहकर जो पुरुष एक लागती हुई धेनु ब्राह्मण को देताहै वह इन्द्रलोकमें बसताहै इसका मन्त्रव्रत नामहै १२० पानका भोजन छोड़कर वर्षके अन्त में गोदान जो करता है वह वरुणलोक को जाताहै इसका वारुणव्रत नामहै १२१ जो पुरुष चान्द्रायणव्रत करके सुवर्ण का चन्द्रमा बनवाकर ब्राह्मणको देताहै वह चन्द्रलोक को जाताहै इसका चन्द्रव्रत भी नामहै १२२ ज्येष्ठमास में पंचाग्नि तापकर जो अन्त दिनमें सुवर्ण गोदान करता है चाहे अष्टमी को करे वा चतुर्दशी को तो यह रुद्रव्रत कहाता है १२३ शिवालय में जाकर तृतीया को जो एकबारभी हाथ जोड़आवे वर्षसमाप्ति में गोदान करे तो देवी के लोकको जाय इसका भवानीव्रत नाम है १२४

माघ में रात्रि में गीले कपड़े धारण करे और सप्तमी में गोदान देवे तो कल्पभर स्वर्ग में बसकर पृथ्वी में राजा होवे इसका पवनव्रत नाम है १२५ तीनदिन निर्ज्जल व्रत करके फाल्गुन की पौर्णमासी को जो पुरुष सुन्दर मन्दिर दान करता है वह आदित्य लोक को जाता है इसका धामव्रत नाम है १२६ व्रत रहकर जो तीनों सन्ध्यासमय स्त्रीसहित ब्राह्मण की पूजा भूषणों से करता है व गोदान करताहै वह मोक्ष पाताहै इसका मोक्षव्रत नाम है १२७ जो मनुष्य शुक्लपक्ष की द्वितीया चन्द्रवार में ब्राह्मणको लवणयुक्त बर्तन देता और समाप्त होने में गोदान देता है वह शिवमंदिरको जाता है १२८ वस्त्र समेत कांसा और दक्षिणा जो ब्राह्मणको देता और समाप्त होने में गोदान करता है वह शिवमंदिर को जाता है १२९ और कल्पके अन्त में राजराज होता है इस व्रतका सोमव्रत नाम है प्रतिपदा को एकबार भोजन जो वर्षपर्य्यन्त करता है व ब्राह्मण को उत्तम २ फल देताहै १३० वह वैश्वानरलोकको जाता है इस व्रत का शिखिव्रत नाम है टका भरसे अधिक २ तोलमें सुवर्ण का रथ व दोघोड़े जोतकर १३१ व्रत करके जो रथदान करता है वह सौ कल्प तक स्वर्ग्ग में बसता है उसके अन्त में राजराज होता है इसका अश्वव्रत नाम है १३२ तैसेही हाथियों संयुक्त सोने का रथ जो ब्राह्मणको देता है वह हजार कल्पतक सत्यलोक में बसता है फिर राजा १३३ पृथ्वीमें आकर होताहै इसका करिव्रत नाम है दशमी में एकबार भोजनकर समाप्त होने में दशगऊ ब्राह्मणको दे १३४ और सुवर्णका दीपक बनवाकर दे तो वह ब्रह्माण्ड का स्वामी होताहै व उसके सब पापभी नष्टहोजाते हैं इसका विश्वव्रत नामहै १३५ पुष्करतीर्थ में कार्त्तिककी पूर्णमासी को जो कन्यादान करताहै वह अपने इक्कीसकुल समेत ब्रह्मलोकमें बसताहै १३६ कन्यादान से अधिक और कोई दान नहीं है उसमें भी कार्त्तिककी पूर्णमासी को सो भी पुष्करमें विशेष रीति से १३७ इससे जो कोई कन्यादान कहीं भी ब्राह्मण को करता है वह अक्षयलोकों को जाता है जो पुरुष जलमें खड़े होकर तिल व पीठे से हाथी बनाकर

रत्नसंयुक्त ब्राह्मण को देते हैं वे प्रलयपर्य्यन्त अक्षयलोक में बसते हैं १३८ । १३९ जो कोई साठ व्रतों की अत्युत्तम कथा पढ़ता है व सुनताहै तो सौ मन्वन्तर तक वह गन्धर्व्वों का स्वामी होता है १४० हे राजन् ! जो तुम्हारे पुण्यकारी संसार के उत्पन्न करनेवाले साठ व्रतोंकी कथा सुनने की इच्छा हो तो सुनो ये सब ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्यों के करने योग्य हैं १४१ बिना स्नान किये पुरुष न निर्म्मल होता है न भावही की शुद्धि होती है इससे मन शुद्ध होनेके लिये सबसे पहिले प्रतिदिन स्नान सबको करना चाहिये १४२ मंत्रका जाननेवाला चाहें नदी तड़ागादि में चाहे कूप वापी आदि में स्नान करे पर प्रथम मूलमन्त्र से तीर्थ का आवाहन करके प्रतिष्ठाकरे १४३ (ॐनमोनारायणाय) इसको मूलमन्त्र कहते हैं इसे पढ़कर कुश हाथों में धारण करके पवित्र होकर आचमन करे १४४ चार हाथ लम्बा व इतनाही चौड़ा चार कोण का मण्डल कल्पनाकरे उसके ऊपर आगे कहेहुये मन्त्रों से चतुर मनुष्य श्री गंगाजी का आवाहनकरे १४५ तुम विष्णुके पादसे उत्पन्नहुई हो इससे तुम्हारा वैष्णवीनाम है व विष्णुभी तुम्हारी पूजाकरते हैं जन्मपर्य्यंत हमारी रक्षा सब पापोंसे करो १४६ पवनदेव ने कहा है कि साढ़ेतीन किरोड़ तीर्थ स्वर्ग अन्तरिक्ष व भूलोकमें हैं हे जाह्नवि! वे सब तुम में हैं १४७ देवलोक में तुम्हारा नन्दिनी नाम है व अन्तरिक्ष में नलिनीनामहै पृथ्वी में दक्षा सुभगा नाम हैं व विश्वकाया शिवा सिता भी नाम हैं १४८ विद्याधरी सुप्रसन्ना लोकप्रसादिनी क्षेमा जाह्नवी शान्ता शान्तिप्रदायिनी १४९ इतने पुण्यनाम जो कोई स्नानकाल में कहता है तो त्रिपथगामिनी गंगाजी वहां आकर प्राप्तहोती हैं १५० फिर सातबार मन्त्रजपकर हाथ जोड़कर विधिपूर्व्वक अंगों में मृत्तिका लगाकर मस्तकमें तीनचार पांच वा सातबार स्नानकरे मृत्तिका लगाने का मन्त्र यहहै कि हे वसुन्धरे ! अश्व रथ व विष्णु से तुम दबाई हुई हो १५१ । १५२ हे मृत्तिके! जो हमने पापकियाहो उसे हरो सैकड़ों बाहु के वराहजी ने तुम्हारा उद्धार किया है १५३ हे सबलोकों के जलसे पवित्र व निर्म्मलवारि-

वाली! तुम्हारे नमस्कारहै ऐसा कह स्नान करके विधिपूर्व्वक आचमन करे १५४ फिर जलसे बाहर निकलकर पवित्र धोती अँगौछा धारण करके त्रैलोक्यकी तृप्ति के लिये १५५ प्रथम ब्रह्माका तर्पण करे फिर विष्णुका फिर रुद्रका फिर प्रजापतिका देव यक्ष नाग गन्धर्व्व अप्सरा १५६ क्रूर सर्प्प सुपर्ण वृक्ष जृम्भक विद्याधर जलधर आकाशगामी १५७ निराधार जो जीव रहते हैं पापधर्म्म में जो निरत रहते हैं इन सबोंकी तृप्तिके लिये यह जल हम देते हैं१५८ प्रथम सव्य हो पूर्व्वमुख होकर देवतर्प्पण करे फिर निवीती अर्थात् दोनोंकन्धोंपर यज्ञोपवीत करके सनकादि मनुष्यों का तर्प्पण करे फिर लौटकर ऋषिपुत्र व ऋषियोंका तर्प्पण करे १५९ उनमें सनक सनन्दन सनातन कपिल आसुरि वोढु पञ्चशिख १६० इतने सब हमारे दियेहुये जलसे सदा तृप्तहों मरीचि अत्रि अङ्गिरा पुलस्त्य पुलह क्रतु १६१ प्रचेता वसिष्ठ भृगु नारद देवता ब्रह्मर्षि व और सबोंको भी अक्षतसहित जलसे तर्प्पण करे इन सबोंका तर्प्पणकरके १६२ फिर अपसव्यहो तब अग्निष्वात्ता सौम्य बर्हिषद सोमपा १६३ सुकाली सोमप आज्यप इन सब पितरोंका तर्प्पण चन्दन तिल जलसहित करे१६४तदनन्तर मोटक तिल जलसे भरेहुये अपने पितृ पितामह प्रपितामहादिकों का तर्प्पणकरे पित्रादिकों के नाम वेद गोत्र प्रवरादि कहकर फिर मातामहादिकों के भी नाम गोत्रादिकों का उच्चारण करके तर्प्पण करे १६५ विधिपूर्व्वक भक्ति से तर्प्पण करके यह मन्त्र उच्चारणकरे जो नीचे लिखाजाता है ॥

दो० जो हों बन्धु अबन्धु वा अन्य जन्म जो बन्धु ॥
तृप्त होहिं मम पाय जल सकल अपुत्री अन्धु १

इसप्रकार तर्प्पणकर विधिसे आचमनकरके आगे पद्मलिखै१६६। १६७अक्षतसहित कुछ जल तिल लालचन्दन लेकर सूर्य्य के नाम पढ़कर अर्घ्यदे१६८ विश्वरूपी तुम्हारे नमस्कार है व विष्णुरूपी तुम्हारे सर्व्वदेव तुम्हारे नमस्कार है भास्कर हमारे ऊपर प्रसन्न होवो१६९दिवाकर तुम्हारे नमस्कारहै प्रभाकर तुम्हारेभी प्रणामहै इसप्रकार सूर्य्य के नमस्कार करकेव तीनबार प्रदक्षिणा करके१७०

फिर ब्राह्मण गऊ सुवर्ण को देखकर स्पर्शकरके घरको जाय वहां गृहमें टिकीहुई पुण्यकारिणी मूर्त्तिका पूजन करे १७१ उसके पीछे ब्राह्मणों को यथाशक्ति पूजित करके भोजन करावे ॥

दो० यहि विधि पूजन करि सकल ऋषिगण होत कृतार्त्थ ॥
तासों सब पूजन करहु पढ़ि पढ़ि मन्त्र यथार्त्थ १७२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादेस्नान विधिर्नामविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

दो० इक्किसयें अध्याय महँ कीर्तिसिंह नृप गाथ ॥
पुनि बहुविध गिरिदान बहुव्रतविधि कह मुनिनाथ १

पुलस्त्यमुनि बोले कि पूर्व्वसमय में बृहत्कल्पकी बात है कि एक धर्मकीमूर्त्ति इन्द्रका मित्र बृहत्कीर्त्तिनाम राजाहुआ जिसने सहस्रों दैत्यों को मारडाला १ जिसके तेजसे सूर्य्यचन्द्रादि देवताओं की प्रभा निस्तेज होगई व सहस्रों दानव पराजित होगये २ उसकी भार्य्याका भानुमती नामथा वह तीनों लोकोंमें सुन्दरी और पतिव्रता थी ३ रूपमें भी लक्ष्मीके तुल्यथी व सब देवसुन्दरियोंको उसने रूप में जीतलिया था राजाकी वह सबसे ज्येष्ठरानी थी इससे प्राणों से भी अधिक गरीयसी थी ४ व दशसहस्र नारियों के बीचमें लक्ष्मीके समान शोभित होरहीथी करोड़ों राजा उसके शरण में रहते थे ५ एकसमय अपने पुरोहितके आश्रमपर जाकर राजाने पुरोहितजीसे पूँछा उसके पुरोहित मुनियोंमें श्रेष्ठ वसिष्ठजी थे इससे बड़े विस्मय से नमस्कारकर पूँछा ६ कि हे भगवन्! किस धर्म्म से हमारे गृह अत्युत्तम लक्ष्मी है व किस कारणसे हमारे शरीरमें सदैव यह इतना विपुल तेजहै ७ तब वसिष्ठजी बोले कि पूर्व्वजन्म में महादेवजी की भक्तिमें परायण एक लीलावती नाम वेश्याथी उसने पुष्करतीर्थ में एक लवणका पर्व्वत बनाकर ब्राह्मणोंको दान किया ८ उसके ऊपर देवताओं समेत सुवर्ण के वृक्ष बनवाकर विधिपूर्वक लगवाये थे शूद्र नाम एक स्वनारथा जिसने सब सुवर्ण के वृक्ष बनाये थे ९ वह

लीलावती के घरमें सेवकथा उसने बड़ी बुद्धिमत्तासे वृक्ष रचेथे व सब वृक्ष ऐसे पक्के सोने के पुष्प बड़ी भक्तिसे बनाये थे १० रूप-वान् भी ऐसे बनाये थे कि देखनेवाले मोहित होजाते थे धर्म्म के लिये उसने बनवाई नहीं ली ११ व उस स्वनारकी स्त्रीने सब सोने के वृक्षोंको अग्नि में तपाकर अच्छीतरह से साफ करके प्रकाशित कियाथा व लीलावती के घर में उन वृक्षादिकों की सेवा व लीला-वती और ब्राह्मण की भी सेवा दोनों करते रहे मरने के पीछे वह लीलावती वेश्या १२।१३ सब पापों से छूटकर शिवजी के मंदिर को चलीगई व जो वह स्वनार था यद्यपि बहुत दरिद्र था परन्तु बड़ा मनस्वी था १४ इससे उसने वेश्यासे बनवाई नहीं ली इससे हे राजन्! वही स्वनार तो आप राजाहुये सो सप्तद्वीपवती पृथ्वी के महाराजाधिराजहुये और दशहजार सूर्य्य के समान तेजस्वी हुये १५ व जिस स्वनारकी स्त्रीने सुवर्ण के वृक्षोंको झारकर साफ किया था व भक्तिपूर्व्वक अच्छीतरहसे जमायाथा वही यह आपकी रानी भानुमती हुई १६ इसीसे तुम मर्त्यलोक में सबसे अपराजितहुये आरोग्यवान् सौभाग्यवान् हुये व लक्ष्मीभी आपके यहां स्थिरहो-कर स्थित हैं इससे हे राजन्! तुमभी विधिपूर्व्वक अन्नादिका पर्व्वत बनवाकर दानदो १७ इसबातको सुनकर राजाने अंगीकार करके विधिपूर्व्वक पूजाकर अन्नादिकों का पर्व्वत बनाकर दानदिया फिर देवताओं से पूजितहोकर महादेवजी के पुरको गया १८ इससे जो कोई मनुष्य दान पूजनादि करता है व जो कोई श्रद्धापूर्व्वक देख-ताहै वा छूता वा भक्तिसे उसकी कथा सुनता है वा बुद्धि देताहै वह पापरहित होकर स्वर्ग को जाता है १९ जो कोई शांतात्मा पूराभी पर्व्वत दान नहीं करता वा पढ़ताभी है उस के भी सब दुःस्वप्न नाशहोजाते हैं व सब संसारके भय छूटजाते हैं व हे राजन्! जो कोई विधिपूर्व्वक अन्नादिका पर्व्वत लगाकर सुवर्णके वृक्ष जमाकर देता है उसको क्या कहें वह तो साक्षात् विष्णुलोकको जाता है २० इ-तनी कथा सुनकर भीष्मजी ने पूँछा कि अभीष्ट लोगों के वियोग समूहों के दूरकरने के लिये इस संसार में सबसे उत्तम कौनसा

उपोषण वा व्रतहै व इसलोकसे मुक्त होकर परलोकमें बहुतदिनोंतक रहने के लिये भवभय नाशनेके लियेभी कौनसा व्रतहै २१ पुलस्त्यजी कहनेलगे कि आपने यह जगत् का प्रिय प्रश्न किया व अतिमहत्त्व होनेसे देवताओंकोभी दुर्लभहै व शिवभक्तोंकोभी दुर्लभहै तथापि जो व्रत देवता मनुष्यादिकोंकोभी दुर्लभ है वह तुमसे कहते हैं सुनो२२ वह आश्विनमासकी पुण्यदायक अशोकद्वादशी का व्रतहै इस व्रत में दशमी के दिन थोड़ा भोजन करके व्रतका नियमसे प्रारम्भ करै २३ प्रथम उत्तरको मुख करके व पूर्व्व को मुख करके दन्तधावन करे फिर एकादशी को निराहार रहकर विधिपूर्वक श्रीविष्णुभगवान्का पूजनकरे २४ व लक्ष्मीकी पूजाकरे व कहे कि हम अब आज भोजन न करेंगे कल करेंगे इस रीतिसे नियम करके रात्रिमें शयन करे फिर प्रातःकाल उठकर २५ सब औषधें व पञ्चगव्य मिलाकर स्नानकरे फिर शुक्लमाला व वस्त्रधारण करके उजले कमलोंसे भगवान्की पूजाकरे २६ विशोकाय नमः इससे भगवान् के चरणों की पूजाकरे वरदायनमःइससे फीलियोंकी श्रीशाय नमःइससे जंघाओं की पूजाकरे जलशायिने नमः इससे पेटकी २७ कन्दर्प्पाय नमःइस से गुह्यकी माधवाय नमः इससे कटिकी दामोदराय नमः इससे उदर की विपुलाय नमः इससे वगलों की पूजाकरे २८ पद्मनाभाय नमः इससे नाभिकी मन्मथाय नमः इससे हृदयकी श्रीधराय नमः इससे छातीकी मधुभिदे नमः इससे हाथोंकी २९ वैकुण्ठाय नमः इससे कंठ की पद्ममुखाय नमः इससे मुखकी अशोकनिधये नमः इससे नासिका की वासुदेवाय नमः इससे नेत्रोंकी पूजाकरे ३० वामनाय नमःइससे ललाटकी हरये नमः इससे भौहों की माधवाय नमः इससे अलककी विश्वरूपिणे नमः इससे किरीटकी पूजाकरे ३१ सर्व्वात्मने नमः इस से शिरकी पूजाकरे इस प्रकार से स्नान धूप दीप माला चन्दन नैवेद्यादिकों से गोविन्दजीकी पूजाकरे ३२ इसके पीछे मंडल बनवावे व चबूतरा मिट्टीका चौकोना समान बीताभर का लम्बाचौड़ा होना चाहिये ३३ उसको सूक्ष्म व मनोहर तीन रकबों से आच्छादित करे रकबा तीन अंगुल का ऊँचा व विस्तार दो अंगुलका ३४

चबूतरे के ऊपर आठ अंगुलकी ईंटोंकी चुनाई सब किनारों परहो नदीकी बालूकी लक्ष्मीजीकी मूर्त्ति बनाकर उसके ऊपर स्थापित करे ३५ इस प्रकार लक्ष्मीजीकी मूर्त्ति एक शूर्प्पाकार पात्रमें धरके तब उसके ऊपर रक्खे फिर नीचे लिखे हुये मन्त्र पढ़े ॥

दो० देवी लक्ष्मी शान्ति श्री तुष्टि पुष्टि अरु सृष्टि ॥
तुम्हें नमत यह कहिकरे सुजन सुमनकी दृष्टि १ ॥

चौ० दुःख नाशकरु देवि विशोके। वरदाभव मम सदाविशोके ३६॥
अयेविशोकेसम्पतिकारिणि। सर्व्वसिद्धिकरुजनभयहारिणि१॥

इस प्रकार लक्ष्मीजीकी पूजा करके श्वेतवस्त्र से सूर्य्यकी मूर्त्ति को वेष्टित करके विविध प्रकार के फलोंसे पूजाकर ३७। ३८ नाना प्रकार के भक्ष्य भोज्य पदार्त्थों से पूजितकरे फिर सुवर्ण के कमल पुष्पचढ़ावे वेदी सब चांदीकी बनवानी चाहिये उसी वेदीमें कुश और जल रक्खे ३९ फिर रात्रिभर नाचना गाना व बजाना उसी स्थानपर करना चाहिये तीनपहर बीतजाने पर जब पुरुष उठे ४० तो स्त्री सहित ब्राह्मणों की पूजा विधिपूर्व्वक करे अपनी शक्तिके अनुसार तीन व एक दम्पती की पूजा माला चन्दन वस्त्रादिकों से करनी चाहिये ४१ व शयन में टिकेहुये जलशायी भगवान् के भी नमस्कार करे उस रात्रिमें भी गाने बजाने के साथ जागरण करे ४२ प्रातःकाल स्नान करके स्त्री सहित ब्राह्मणकी पूजाकरे भोजन यथा शक्ति करावे धनकी शठता न करे कि देनेमें सामर्थ्य हो पर न दे व दे भी सो नष्ट पदार्त्थ ४३ भक्तिसे पुराण रामायण स्मृत्यादि सुन कर शेषदिन बितावे इस विधिसे सब मासोंमें करता रहे ४४ व्रतके अन्तमें गुडकी धेनु सहित शयन दे उस शय्यापर सुन्दर बिछौना चद्दर चांदनी कनात गिर्दाआदि सब स्थापितकरे व ताने ४५ जिस-से कि हे नरेश! लक्ष्मी परित्याग करके तुम्हारे यहांसे कभी न जाय व सुरूपता आरोग्य शोकरहित बनी रहे ४६ जैसे भगवान् से रहित लक्ष्मी कहीं नहीं जाती तैसेही विशोकता होकर उत्तम भक्ति श्रीकेशव भगवान् के चरणोंमें बढ़े ४७ इसमन्त्रसे शय्या गुडधेनु व लक्ष्मी स-हित सूर्य्यकी प्रतिमा ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवालेको देनीचाहिये ४८

कमल कँदैल व और भी नानाप्रकारके तुरन्त के तोड़े हुये पुष्प व कुंकुम केतकी सिन्धुवार चमेली गंधपाटला ४९ कदम्ब गुलाबआदि ये सब पूजाके लिये उत्तम कहे हैं इससे इन सबोंसेही पूजा करनी चाहिये इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने प्रश्न किया कि हे मुनि सत्तम! किस विधिसे गुडधेनु दीजाती है उसका कौनसारूपहै और किसमंत्रसे देनी चाहिये ५० सब हमसे कहो पुलस्त्यजी कहनेलगे कि गुडधेनुके विधान का जो स्वरूप व फल है ५१ वह सब पापों के नाशनेवाला अभी कहते हैं गोबरसे पृथ्वी लीपकर उसपर कुश बिछाकर चारहाथकालम्बा मृगचर्म्म बिछावे उसकी ग्रीवा पूर्वको रहे व पूँछ पश्चिमको उसके ऊपर एक और मृगचर्म्महीका बछवा कल्पना करे ५२।५३ धेनुका भी मुख पूर्वहीकी ओरको करे मिट्टी का भी गऊ व बछवा बनसक्ताहै उत्तम गुडधेनु सदैव चार भारकी बनावे ५४ बछवा एक भारका बनावे दो भारकी मध्यम गऊ होती है बछवा आधे भारका होताहै एक भारकी कनिष्ठा गुडधेनु होतीहै ५५ चौथाई भारका बछवा होता है घरकी द्रव्य के अनुसारसे गुड-धेनु व बछवा बनाने योग्यहै उनको श्वेत व सूक्ष्म वस्त्र उढ़ाने चाहियें ५६ सूतीके कान ईखके चरण पवित्र मोतीके नेत्र बनावे श्वेतही सूतकी नसें व नाड़ियां बनाई जावें व उजले कम्बलकी गलकमरी बनावे ५७ गण्डस्थल व पीठ ताम्रकी उजली चमरीकी पूँछके बालोंके रोम बनावे मूंगे की भौहें नेनूके स्तन ५८ सोने की आँखें इन्द्रनीलमणिके नेत्रों के बीच रेशम की पूँछ कांसेके बर्तन की सुन्दर दोहनी ५९ सोने के सींगों के गहने चांदी के खुर अनेक फलों से युक्त नासिका ब-नावे ६० इस प्रकारसे बनाकर धूप दीपादिसे पूजाकरे पूजा करने के पीछे नीचे लिखेहुये मन्त्रोंसे प्रार्थना करे ॥

दो० जो लक्ष्मी सब भूतमहँ जो सब देवन माहिं ६१ ॥
धेनु रूपसों देवि वह हरे पाप मम याहिं १ ।
विष्णु हृदयमहँ जो बहुरि स्वाहानलमहँजौन ६२ ॥
विधु रवि शक्र कि शक्ति जो धेनुरूप है तौन २ ।
पितृगणकी तुमहौ स्वधा स्वाहा मखभुज केरि ६३ ॥

सर्व्व पाप हरदेविहो वरदायिनि हिय हेरि ३ ।

इसप्रकार धेनुका आमन्त्रण करके फिर ब्राह्मणको देदे ६४ यह विधान सब धेनुओं के दान का है जो पाप नाशनेवाली दश धेनु पढ़ीजाती हैं ६५ हे महाराज! उनके स्वरूप व नाम सब कहते हैं प्रथम गुडधेनु दूसरी घृतधेनु ६६ तीसरी तिलधेनु चौथी जलधेनु पांचवीं दुग्धधेनु छठीं मधुधेनु ६७ सातवीं शर्कराधेनु आठवीं दधिधेनु नववीं रसधेनु दशवीं प्रत्यक्ष धेनु ६८ इनमें महर्षियोंके मतान्तरसे भेद भी है यही इन सबों के पूजन दानादिका विधानहै व सब ये सामग्री हैं ६९।७० मन्त्र आवाहनादिसे संयुक्त करके सदा पर्वों में देनी चाहिये इन सब धेनुओं के दान के साथ सदा श्राद्ध भी करना चाहिये तब भुक्ति और मुक्ति मिलसक्ती है ७१ गुडधेनु के प्रसंग से सब धेनुओं के नाम हमने तुमसे कहे ये सब सम्पूर्ण यज्ञों का फल देती हैं व सब पापों को हरती हैं सब शुभदायक हैं ७२ जिससे कि सब व्रतों में उत्तम विशोक द्वादशी व्रतहै उस के अङ्गत्व से इन सब धेनुओं में गुडधेनुकी अधिक प्रशंसा ७३ पुण्यकारी तुला मकर मेष व कर्क्की संक्रान्तिके दिन व व्यतीपात योग में चन्द्रमा वा सूर्य्य के ग्रहण में गुडधेनु आदि सब धेनु देनीचाहिये ७४ यह विशोकद्वादशी सब पापों को हरती है व सब शुभ करती है इसका व्रत करके मनुष्य श्रीविष्णु के परमपद को जाता है ७५ इस लोक में जबतक रहता है तबतक सौभाग्य आयुआरोग्य से युक्त रहता है मरने के पीछे वैकुण्ठको जाता है क्योंकि इस व्रत में प्रायः श्री हरिका स्मरण करताहै ७६ वहां ९ नवअर्ब अठारह हजारवर्ष तक श्री हरिपुर में शोक दुःख दुर्गति कुछ भी उसको नहीं होती ७७ जो कोई स्त्री भी इस विशोक द्वादशी व्रत को करती है व नित्य नृत्य गीत में तत्पर होकर व्रत नियम करती वह भी जो पुरुष फल पाताहै पाती है ७८ क्योंकि हरिके सम्मुख एक दिन गीत नृत्य करने से असंख्य फल मिलते हैं इसको जो इस प्रकार से पढ़ता है वा सुनता है वा मधुसूदन मुरारि नरकारि भगवान् के पूजन को देखता है ७९ वा मनुष्यों को जो

बुद्धिदेता है वह इन्द्रलोक में वसकर एक कल्पपर्य्यन्त देवताओं से पूजित होता है इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने पुलस्त्यमुनि से पूँछा कि हे भगवन्! अब हम दानका उत्तम माहात्म्य सुना चाहते हैं ८० जो कि परलोकमें अक्षय फल देताहो व देवर्षिगण भी उस की पूजाकरें पुलस्त्यजी बोले कि हे राजसत्तम! पर्व्वत दानको लेकर दशदानों को कहताहूं ८१ जिनका देनेवाला देवताओं से पूजित लोकोंको पुरुष जाताहै जो फल पुराण वेद पढ़नेसे यज्ञकरने व देवमन्दिर बनवाने से ८२ नहीं होताहै वह पर्वत के दानों के करने से होता है इससे हम क्रमसे दश प्रकार के पर्व्वत दानोंको कहतेहैं ८३ प्रथम धान्यपर्व्वत दूसरालवणाचल तीसरा गुडगिरि चौथा सुवर्णशैल ८४ पांचवां तिलमेरु छठां कर्प्पासनग सातवां घृताग आठवां रत्नभूभृत् ८५ नववां राजतमहीधर दशवां शर्करा धरणीधर अब इन दशोंके विधान क्रमसे कहते हैं ८६ तुला और मेपकी संक्रांति में व्यतीपात योगमें दिनक्षयमें शुक्लपक्षकी तृतीया में ग्रहण में अमावास्या में ८७ विवाहादि उत्सव कार्यों में यज्ञों में द्वादशी तिथि में पूर्णमासी तिथि में सूर्य्य की सब संक्रान्तियों में ८८ धान्य पर्व्वतादि देने चाहिये यदि ज्येष्ठ पुष्कर तीर्थ में कार्त्तिक की पूर्णमासी को दान दियेजायँ तो अति उत्तम हैं इस के विशेष और भी जो नाना नाम के तीर्थ हैं उनमें जितने देवालय हैं उन में गोशालाओं में जहां कभी कोई यज्ञ हुआहो वहां ८९ इनमें जहां कहीं पर्वत दान करनेका सम्भव हो प्रथम उत्तरमुखका चौकोना भक्तिसे पुण्यकारी मण्डप छावे चाहे पूर्व्वही को मुख करके बनावे ९० गोमय से लिंपवाकर उस के ऊपर कुश बिछावे उस के मध्य में पर्व्वत बनावे उस के थँभने के लिये किनारे २ छोटे २ और पर्व्वत बनादे ९१ हजारमन अन्नका उत्तम पर्व्वत कहाता है पांचसौ मनका मध्यम तीनसौ मनकाकनिष्ठ ९२ मध्यमें तो महामेरु बनाया जावे और तीन सुवर्ण कँगूरे ऊँचे निर्म्माण कियेजायँ ऊपरसे बड़ेभारी उत्तम वस्त्र से उसे ढांकना चाहिये इस के लेने व बनाने के लिये बहुत से उत्तम २ ब्राह्मण चाहिये ९३ चार शृङ्ग उस में

चांदीके बनवाने चाहिये व उस के नितम्ब भाग में भी चांदी चाहिये पूर्व्वओर मोती व हीरा जड़ना चाहिये दक्षिण ओर गोमेद व पद्मरागमणि ९४ पश्चिम ओर गारुत्मत व नीलमणि उत्तर ओर गोरोचन जटितकरे चन्दन के खण्ड चारोंओर ठौर २ स्थापित करे मूंगा भी सब ओर से जड़े मोतियों की लता बनाय २ ठौर २ धरनी चाहिये ९५ ब्रह्मा विष्णु महादेव सूर्य्यकी मूर्त्तियां सुवर्ण की बनाकर उसपर स्थापित करे ऊखके रस से युक्त कन्दरा बनावै उन में से घृत रूप जल के झरने बहावे ९६ श्वेत वस्त्र से आच्छादित उसके नीचे २ की पृथ्वी चाहिये सो उस के दक्षिण भाग पीले वस्त्र से आच्छादित करे पश्चिमओर कबुले रंगके वस्त्र से ढँकना उत्तर ओर रक्तवस्त्र से व उत्तरही ओर लाल रंगके बादल बनाने चाहिये ९७ और चांदी केही इन्द्रादि आठ लोकपाल उसके ऊपर बनावे व नानाप्रकारके फलोंसे युक्त अति मनोरम वृक्ष लगावे ९८ उसके ऊपर एक बड़ा भारी चँदवा बनाकर ताने उस में नानाप्रकार के कृत्रिम व सत्य सत्य के भी सफेद पुष्प लटकावे इस प्रकार पर्व्वत बनाकर ९९ उसके चारों दिशाओंमें इस प्रकारसे और पर्वतस्थापितकरे कि फूल और लेपनोंसे युक्त काम सुवर्णमय से विराजित और अनेक फलों से युक्त पूर्वओर मन्दराचल स्थापित करे १०० दक्षिणओर गन्धमादन पर्वत स्थापित करे उस में गेहूं की मैदा को गीली करके सोना ऊपर चमकावे और सोनेकी कुबेर की मूर्त्तिबनाकर घी से सुशोभितकर कपड़े और चांदी के वनों से संयुक्त करे १०१ पश्चिम में तिलाचल स्थापितकरे उस में अनेक सुगन्धित फूल सोने का पीपल सोने का हंस बनावे चांदी के फूलों का वन और वस्त्रसे युक्त करै और उसके आगे दही और शक्कर का तालाब बनावे १०२ उत्तर ओर सुपार्श्वपर्वत को स्थापित करे कपड़ा सहित उर्द का बनाकर फूलों से युक्त करे ऊपर सोने का बर्गद का पेड़हो और सोनेहीके पताका से विराजमानहो १०३ व सबों में मधुमक्षिकाओं के रस मधुसे भरेहुये विराजमान झरने चलाने चाहिये व चारवेद पुराणके वक्ता अनिन्दित श्रेष्ठब्रा-

ह्मण की पूर्व ओर हाथ भरका कुण्ड बनाकर तिल यव घी समिधें और कुशों से होमकरें व रात्रि में जागरण और गीत गान हो यह प्रार्थना करें १०४।१०५ कि हे पर्व्वतराज! हे सब देवसमूहोंके धामके निधि! हमारे गृहमें जो पदार्थ हमारे विरुद्ध हों बहुत शीघ्र उनका नाशकरो कल्याण करो अत्युत्तम शान्ति करो परमभक्ति युक्त मैंने आपको पूजाहै १०६ हे गिरिराज तुम्हीं सबके स्वामी महादेव ब्रह्मा विष्णु व सूर्य्य हो तुम मूर्त्तिधारी अमूर्त्तिधारी दो प्रकारके हो व सनातन तेजहो हमारी रक्षा करो १०७ व जिससे तुम सब लोकपालों तथा संसारकी मूर्त्तिके स्थानहो और रुद्र आदित्य वसुओंके स्थानहो इससे हमको शान्ति दो १०८ व जिससे कि तुम्हारा शिर सब देवताओं व देवियों से सदा पूर्ण रहताहै इससे इस दुःखरूपी संसार सागर से हमारा उद्धार करो १०९ इस रीतिसे उस मेरुकी पूजा करके मन्दराचलकी पूजाकरे मन्त्र यह पढ़े कि जिससे तुम चैत्ररथ और भद्राश्वसे ११० शोभितहुये इससे हमारे मनको सन्तुष्टकरो जिससे इस जम्बूद्वीप में चूड़ामणि तुम व गन्धमादन हो १११ व गन्धर्वोंके रहने से शोभित होतेहो इससे हमारी कीर्त्ति दृढ़ हो जिससे केतुमाल और वैभ्राजवनसे ११२ हे हिरण्मय तुम शोभा युक्तहुये हो तिस से मेरी निश्चय पुष्टिहो जिससे उत्तर कुरुओं और सावित्रवनसे ११३ हे सुपार्श्व! तुम नित्यही शोभितहोतेहो इससे हमारी लक्ष्मी की रक्षाकरो इस प्रकार उन सब पर्व्वतों का सम्बोधन करके प्रातःकाल विमल जलमें फिर ११४ स्नानकरके मध्यका अन्नपर्व्वत अपने गुरूकोदे व उसके किनारे के विष्कम्भादि पर्व्वतोंको सब ऋत्विजों को क्रमसे दे ११५ फिर चौबीस वा दशधेनु दानकरे वा अपनी शक्तिके अनुसार सात आठ वा पांच जैसी शक्तिहो दे ११६ वा एकही कपिला लागती हुई गुरूको दे बस सब पर्व्वतों के दानकी यही विधिहै ११७ व पूजनके मंत्र भी वेही हैं व सामग्री भी सब वही हैं सूर्य्यादि ग्रह इन्द्रादि लोकपाल व ब्रह्मादि देवता ११८ अपने मंत्रों से अपने २ स्थानोंपर पूज्यहैं व होमभी सबका करने के योग्यहै व्रत सदा दान देनेवाले को क-

रना चाहिये जो दिन रात्रि व्रत करनेमें अशक्तहो तो दिनभर उपवास करके रात्रि में यजमान भोजन करलियाकरे ११९ सब पर्व्वतोंका विधान जो भिन्न २ रीतिपर है वह क्रमसे सुनो दानों में जो मंत्र कहे हैं पर्वतों में जैसा फल हैं वह सब सुनो १२० जिससे कि अन्नही ब्रह्म कहाता है व अन्नही सबके प्राणहैं अन्नही से सब प्राणी होते हैं जगत् सब अन्नही से बढ़ताहै १२१ अन्नही लक्ष्मीहै व अन्नही विष्णु है इससे धान्यपर्व्वतके रूपसे हे गिरिराज ! हमारी रक्षाकरो १२२ इस विधि से जो धान्यमय पर्व्वत देता है वह सौ मन्वन्तरतक देवलोकमें बसकर पूजित होताहै १२३ व विमानपर चढ़कर अप्सरा गन्धर्व्वादि से सेवित नृत्य गीत देखता सुनताहुआ स्वर्ग्ग को जाता है १२४ कर्म्म क्षय होनेपर फिर आकर राजा होताहै इसमें संशय नहीं है अब लवणाचलका उत्तम विधानादि कहते हैं १२५ जिसके दानसे पुरुष शिवलोक को जाताहै उत्तम सोलह द्रोणका लवणाचल होताहै १२६ आठ द्रोणका मध्यम व चारका अधम होताहै जो धनहीन पुरुषहै वह अपनी शक्तिके अनुसार द्रोणादिकोंकी संख्याकरे १२७ जितना मुख्य पर्व्वत बनावे उसके चतुर्थांश के विष्कम्भ पर्व्वत अलग बनावे जो पर्व्वत के किनारे २ धरेजाते हैं ब्रह्मादिकों के स्थापन का क्रम पूर्व्वही के समान सदैव जानना चाहिये १२८ उसीप्रकार सुवर्ण के फलआदि बनावे व लोकपालों का स्थापन करे तड़ाग वन वृक्षादि भी धान्य पर्व्वतही के समान इसमें भी बनावे १२९ जागरण वैसेही है केवल दान मंत्रों में भेदहै सो सुनो जिससे कि यह लवणरस सौभाग्य रससे संयुक्त हुआ है १३० इस से तदात्मता से हम दुःखित का पालन करे जिस से कि सब बड़े २ उत्तम रस लवण विना निस्स्वादु होते हैं १३१ व शिव पार्व्वती को सब रसों से नित्यही अधिक प्रिय है इस से हम को शांति दे हे लवण ! जिस से तुम विष्णु भगवान् की देहसे उत्पन्नहो व सब आरोग्य बढ़ातेहो १३२ इस से पर्व्वत रूप होकर इस संसार सागर से हमारी रक्षाकरो इस विधि से जो कोई लवण पर्व्वत दे १३३ वह कल्पभर उमाके

लोक में बसे फिर परमगति को जाय इस के अनन्तर अब उत्तम गुड़पर्वत का विधान कहते हैं १३४ जिसका दान करने से मनुष्य देवताओं से पूजित होकर स्वर्ग को जाता है दोसौ साठमन गुड़ का उत्तम पर्व्वत होता है इस के आधे एकसौ तीसमनका मध्यम १३५ इस के आधे का अधम होता है इस से आधेका थोड़ा द्रव्यवान् करसक्ता है इस में आमन्त्रण पूजा सोने के वृक्ष देवताओं की पूजा १३६ विष्कम्भ पर्व्वत तड़ाग वन देवता होम जागरण और लोकपालों का स्थापित करना १३७ धान्य पर्व्वत के तुल्यकरे मन्त्र में कुछ भेद है सो कहते हैं जैसे सबदेवों में ये विश्वात्मा जनार्द्दनभगवान् श्रेष्ठ हैं १३८ व वेदों में सामवेद योगियों में महायोग सब मन्त्रों में ॐकार स्त्रियों में पार्व्वती १३९ वैसे सब रसों में श्रेष्ठ यह इक्षुरस गुड़ है इससे हम उसके नमस्कार करते हैं गुड़पर्व्वत हमको श्रेष्ठ लक्ष्मीदे १४० हे गुड़पर्व्वत ! जिससे कि सौभाग्यदायिनी पार्व्वतीजीने तुम्हारी रक्षा की है व पार्व्वतीही ने बनायाभी है इससे हमारी सदैव रक्षाकरो १४१ इस विधि से जो गुड़मय पर्व्वत देता है वह गन्धर्वों से सम्पूजितहोकर गौरीलोकमें जाकर पूजित होताहै १४२ फिर सौकल्पके पीछे सप्तद्वीपवती पृथ्वीका राजा होताहै आयु आरोग्यसे युक्त होकर शत्रुओंसे विजय पाता है १४३ अब सब पापहरनेवाला उत्तम सुवर्ण पर्व्वत कहते हैं जिसके दान करने से मनुष्य ब्रह्मलोक को जाते हैं १४४ हज़ार टकाभर सोनेका उत्तम पर्व्वत होताहै व पांचसौ टके भरका मध्यम इसके आधेका अधम इसके आधेका अतिधनहीन को करनाचाहिये १४५ फिर जिसको जैसी शक्तिहो उसके अनुसार देना चाहिये अहंकाररहित होकर धान्यपर्व्वत के समान सब और बातेंकरे १४६ व विष्कम्भ पर्व्वत उसीतरह ऋत्विजोंको दे सत्र के बीज तुम्हारे नमस्कार है ब्रह्मगर्भ तुम्हारे भी १४७ जिससे तुम अनन्तफलदाता हो तिससे हे शिलोच्चय ! रक्षाकरो जिससे तुम अग्निके पुत्र व श्रीविष्णुके पुत्र हो १४८ इससे सुवर्णपर्व्वतके रूप से हमारी रक्षाकरो इस विधिसे जो सुवर्णका पर्व्वतदेताहै १४९ वह

परमानन्दकारक ब्रह्मलोकको जाताहै वहां सौकल्पतक रहकर फिर परमगतिको जाताहै १५० इसके पीछे तिलपर्व्वतका विधान कहते हैं जिसके दानसे मनुष्य उत्तम विष्णुलोकको जाताहै १५१ दश द्रोणका उत्तम तिलपर्व्वत होताहै व पांचका मध्यम तीनका कनिष्ठ तिलशैल कहाताहै १५२ इसमें और सब विष्कम्भपर्व्वतादिक पूर्व ही के समानहैं अब विधिसहित दानमन्त्र कहते हैं १५३ जिससे कि श्रीविष्णुभगवान्‌जीके देहके स्वेद अर्थात् पसीने से तिल कुश उर्द तीनों उत्पन्नहुये हैं इससे तिल हमको शांतिदायक हों १५४ जिससे कि देवताओं के हव्यमें व पितरों के कव्यमें तिलोंसेही रक्षा होती है इससे हे तिलाचल! लक्ष्मीकरो तुम्हारे नमस्कार है १५५ इस विधि से सम्बोधन करके जो उत्तम तिलपर्व्वत दानकरता है वह वैकुण्ठ को जाता है जहां जाकर फिर कोई कभी लौटताही नहीं १५६ इसके पीछे अब उत्तम कार्प्पासाचलका विधानकहते हैं बीसभारकपासका उत्तम कार्प्पासपर्व्वत होताहै दशभारका मध्यम व पांच भार का कनिष्ठ १५७ अल्पधनवाला एकही भारका पर्व्वतदे पर वित्तशाठ्य न करे हे राजन्! और सब धान्यपर्व्वतहीके समान करे १५८ प्रातःकाल होनेपर देनेकेसमय यह मन्त्रपढ़े हे कर्प्पास! जिससे कि तुम सबलोगों के सदैव आच्छादनकरनेवाले हो १५९ इससे तुम्हारे नमस्कारहै हमारे पापसमूह नष्टकरो इसप्रकार से कर्प्पासकापर्व्वत जो कोई शिवजी के सन्निकट देताहै १६० वह कल्पभर रुद्रलोकमें बसताहै फिर भूतलमें जन्मलेकर राजा होताहै अब इसके आगे उत्तम घृताचलका विधान कहते हैं १६१ जोकि तेजोमय महापुण्य व महापातकनाशन घृतहै बीसघड़ा घृतका उत्तम घृतपर्व्वत होताहै १६२ व दशघड़ों का मध्यम पांचघड़ोंका अधम थोड़े धनवाला दो घड़ों का भी पर्व्वतदान विधिपूर्व्वक करसक्ता है १६३ व विष्कम्भपर्व्वत भी उसी रीति से चतुर्थांश से करने चाहिये जड़हन धानके चावलोंसे भरेहुये घड़े उन घृतवाले घड़ोंके ऊपर धरनेचाहिये १६४ व उन सबोंको इस प्रकारसे धरे कि वेसब इकट्ठे होकर पर्व्वताकार होजायँ फिर उन सबोंको सफ़ेद वस्त्रों से

ईख दण्डों व फलोंसे वेष्टितकरे १६५ शेष विधान सब धान्यपर्व्वत के समानकरे अधिवासन होमके देवोंका पूजन सब पूर्व्ववत्प्रकारसे करे १६६ जब रात्रि बीतजाय प्रभातहो तो वह पर्व्वत गुरुको दे और शान्तमन होकर विष्कम्भपर्व्वत सब ऋत्विजों को दे १६७ हे घृत! जिससे कि तुम अमृत व अग्निके संयोगसे बनेहो इससे घृतार्चि विश्वात्मा श्रीशिवजी प्रसन्नहों १६८ जिससे, कि तेजोमय ब्रह्म घृत में सदा टिका रहताहै इससे हे पर्व्वत! घृतपर्व्वतरूपसे हमारी रक्षा करो १६९ इस विधिसे जो उत्तम घृतपर्व्वत देताहै वह ब्रह्महत्यादि महापापोंसे युक्तभीहो पर महादेवजीके लोकको जाताहै १७० जाने के समय हंसादियुक्त किंकिणीसमूहों की मालासे शोभित विमान पर चढ़कर अप्सरा सिद्ध विद्याधरों से युक्त होकर जाताहै १७१ व वहां प्रलयपर्य्यंत पितरोंके साथ विचरता है इसके अनन्तर उत्तम रत्नाचल को कहते हैं १७२ यह रत्नोंका पर्व्वत हजार मोतियों का उत्तम होताहै पांचसौ मोतियों का मध्यम पर्व्वत होताहै तीनसौका अधम होताहै १७३ इन सबोंके चतुर्थांशके विष्कम्भपर्व्वत चारों ओरके बनाने चाहिये पूर्व्व ओर हीरा व गोमेदमणि दक्षिण में इन्द्रनीलमणि १७४ पद्मरागादिकों से पण्डितों को गन्धमादन पर्व्वत बनाना चाहिये वैदूर्य्य विद्रुम से मिलाकर बड़ाभारी अचल बनाना चाहिये १७५ सुवर्णसहित पद्मरागके उत्तर ओर भी विष्कम्भ पर्व्वत बनाना चाहिये अन्य सब धान्यपर्व्वत के समान कल्पना करने चाहिये १७६ उसी प्रकार आवाहन करके सुवर्ण के वृक्ष देवता कल्पित करे पुष्प चंदनादिकों से पूजितकरके प्रातःकाल विसर्ज्जन करे १७७ फिर पूर्व्ववत् गुरुको पर्व्वत व ऋत्विजों को पादपर्व्वतदे फिर यह मन्त्र पढ़े कि जैसे सब देवगण सब रत्नोंमें टिके रहतेहैं १७८ व तुम रत्नमय नित्य रहतेहो इससे हे महाचल! हमारी रक्षाकरो जिससे कि रत्नोंकेही दान से भगवान् प्रसन्नता को प्राप्त होतेहैं १७९ तिससे हे पर्व्वत! पूजा व मंत्रके प्रसाद से तुम हमारी रक्षा करो इस विधिसे जो रत्नका महापर्व्वत देताहै १८० वह देवताओं से पूजित होकर वैकुण्ठ को जाताहै सौकल्पतक वहां

बसता है १८१ तदनन्तर रूप आरोग्य गुणोंसे युक्त सातोंद्वीपोंका महाराज होताहै ब्रह्महत्यादि जो पाप इसजन्म वा पूर्व्वजन्मके किये हुये होतेहैं १८२ वे सब नष्ट होजाते हैं जैसे कि वज्र लगने से पर्व्वत हत होजाता है इसके अनन्तर उत्तम रौप्य अर्थात् चांदीके पर्व्वत के दानका विधान कहतेहैं १८३ जिसके दानसे मनुष्य सोमलोक को जाता है दशहजार टकेभर का उत्तम रजताचल होता है १८४ पांचहजार टकेभरका मध्यम ढाईसहस्र टकेभरका अधम होताहै जो अशक्तहै वह बीसटकेभर से ऊँचे अपनी शक्तिके अनुसार जितना बड़ा चाहे सदैव बनासक्ता है १८५ विष्कम्भपर्व्वत उसीतरह चतुर्थांशके कल्पित करे पूर्व्ववत् सब चांदीहीके विधिपूर्व्वक मन्दराचलादि बनावे १८६ व सब लोकपाल पूर्व्ववत् सुवर्णमय निर्म्माणकरे ब्रह्मा विष्णु सूर्य्य व पर्व्वत के नितम्ब सुवर्णमय बनावे १८७ जो अन्य पर्व्वतोंमें चांदीके कहेहैं वे सब चांदीके पर्व्वतमें सोनेके बनायेजायँ शेष होम जागरणादि धान्यपर्व्वत के समानकरे १८८ व प्रातःकाल होने के पीछे पूर्व्वरीत्यनुसार रजतपर्व्वत गुरु को दे व वस्त्र भूषणादिकों से पूजित करके विष्कम्भपर्व्वत सब ऋत्विजोंको दे १८९ हाथमें कुशलेकर अहंकाररहित होकर यह मंत्र पढ़ताहुआ रजतपर्व्वतदान करे तो पितरोंका व शंकरजी का प्रिय हो व यह प्रार्थना करे कि हे रजत! जिससे तुम पितरोंके व चन्द्रमा और शंकरके प्रियहो १९० इससे शोकसंसारसागर से हमारी रक्षा करो इस प्रकार निवेदन करके जो कोई उत्तम रजताचलदान देता है १९१ वह किरोड़ों गोदानों का फल पाता है व गन्धर्व्व किन्नर अप्सराओं सहित सोमलोक को जाताहै १९२ वहां जबतक प्रलय नहीं होता बसा रहताहै अब इसके अनन्तर उत्तम शर्कराचलदान का विधान कहते हैं १९३ जिसके दानके प्रभावसे विष्णु सूर्य रुद्र देव सदा सन्तुष्टहोते हैं आठभार शर्करा अर्थात् शकरका उत्तम शर्कराचल होताहै १९४ चारभारका मध्यम दो भारका अधम एकभार वा आधे भारका पर्व्वत अल्पधनीकरे १९५ व विष्कम्भपर्व्वत महापर्व्वतके चतुर्थांशसे करे अन्य सुवर्णके पदार्थ व कपड़े सब धान्यपर्व्वत के

समान करे १९६ व पर्व्वतके ऊपर तीन सुवर्ण के वृक्ष स्थापित करे मन्दार पारिजात व कल्पवृक्ष १९७ये तीन वृक्ष सबपर्व्वतों के ऊपर लगाने चाहिये हरिचन्दन व सन्तान ये दोनों वृक्ष पूर्व्व पश्चिम भागमें लगाने चाहिये १९८ सो सब पर्व्वतोंपर लगाने चाहिये नहीं तो शर्कराचलपर तो विशेषरीतिसे मन्दरपर्वत के पश्चिम के पत्रपर कामदेवकी मूर्त्ति सदैव स्थापित करे १९९ व गन्धमादनके शृंगपर उत्तरको मुख कराय कुबेरजीका स्थापन पूजनकरे व विपुलाचल पर पूर्वको मुखकराय सुवर्णके शिरपर हंसकी मूर्त्ति स्थापित करे २०० सुवर्णका चन्द्रमा वामपार्श्व में व वहीं दक्षिणमुख सुरभी स्थापितकरे आवाहन यज्ञादि सब धान्यपर्व्वतके समान करे २०१ यह सब करके मध्यमपर्व्वत गुरुको दे और चारोंओर के चार विष्कम्भपर्व्वत ऋत्विजोंकोदे फिर यह मन्त्रपढ़े २०२ कि सौभाग्य व अमृतका सार यह श्रेष्ठ शर्कराचल है तिससे हे पर्वतश्रेष्ठ ! तुम सदैव आनन्दकारी होवो २०३ अमृत पीनेवाले देवताओं के जो पृथ्वी में बूंदपड़े हैं तिससे तुम उत्पन्न हुयेहो इससे हे शर्कराचल ! तुम हमारी रक्षाकरो २०४ व शंकर कामके धनुष के मध्यसे उत्पन्न हे हे पर्व्वत ! तुम शर्करामयहो इससे संसारसागर से हमारी रक्षा करो २०५ जो मनुष्य इस विधान से शर्कराचल दान देता है वह सब पापों से छूटकर ब्रह्मलोक को जाताहै २०६ चन्द्रमा व सूर्य्य के समान चमकतेहुये विमानपर चढ़के अपने सेवकादिकों सहित विष्णुके समान दीप्तियुक्त होकर स्वर्ग में जाताहै २०७ फिर सौ कल्पके पीछे सप्तद्वीपवती पृथ्वीका राजा होताहै व आयु आरोग्य सम्पन्नहोकर जबतक तीसहजार जन्म होते हैं २०८ बसा रहता है अपनी शक्ति के अनुसार सब पर्व्वतों में अहंकार छोड़कर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये इन पर्व्वतों के उद्यापन में पण्डित की आज्ञासे अलोन वस्तु भोजन करानी चाहिये २०९ व जितने पदार्थ पर्व्वत के समीप आयेहों सब ब्राह्मण के गृह में पहुँचा देने चाहिये यह सब उत्तम पर्व्वतदान का विधान हमने आपसे कहा २१० हे राजन् ! अब और जो कुछ आपको रुचताहो हमसे पूँछो

भीष्मजी ने इतना सुनकर फिर प्रश्नकिया कि हे भगवन् ! संसार सागरसे उतारनेवाला २११ कुछ व्रत कहिये जो स्वर्ग व आरोग्य फलको देताहो पुलस्त्यजी बोले कि अब हम अपने अपने धर्म्मों के लिये कल्याणसप्तमी २१२ विशोकसप्तमी फलसप्तमी वैसेही शर्करासप्तमी कमलसप्तमी मन्दारसप्तमी और शुभसप्तमी ये सातोंसप्तमी पुण्यफल देनेवाली व सब देवर्षिपूजित हैं २१३।२१४ इन सबोंकी विधि यथाक्रम कहते हैं जब शुक्लपक्ष की सप्तमी को रविवार पड़े २१५ तो उसका कल्याणसप्तमी नाम होताहै व विजयासप्तमी भी इसका नाम है इसमें प्रातःकाल उठकर गोदुग्ध मिलाकर नदी में स्नानकरे २१६ तदनन्तर श्वेतवस्त्र धारण करके अक्षतों से एक कमल की कल्पना करे पूर्व्वको उसका मुखमाने व आठ उसमें दल कल्पितकरे मध्य में वर्त्तुलराखे व सब कर्णिका आठोंदिशाओं की ओर ठीक२ कल्पितकरे २१७ व पुष्प अक्षत जलसे देवेशको सबओरसे क्रमसे स्थापनकरे तपनाय नमः इससे पूर्व्व कर्णिकामें तपननाम सूर्य्यका स्थापन करे आग्नेय में मार्त्तण्डाय नमः इससे २१८ दिवाकराय नमः इससे दक्षिणदिशा में विधात्रे नमः इससे नैर्ऋत्य में वरुणाय नमः इससे पश्चिम में भास्कराय नमः इससे वायव्य में २१९ वैकर्त्तनाय नमः इससे उत्तर में देवाय नमः इससे ईशानकोणके दलमें आदि अन्त व मध्यमें परमात्मने नमः ऐसा पढ़े २२० इन मन्त्रोंसे पूजन व नमस्कार सब मन्त्रों के अन्त में होना चाहिये जैसा कि तपनाय नमः इत्यादि में हैं शुक्लवस्त्र व फल भक्ष्य धूप माला और चन्दनसे २२१ भक्तिपूर्व्वक स्थण्डिल पर पूजाकरे गुड़ व लवणभी चढ़ावे तदनन्तर गायत्रीमंत्र से ब्राह्मणश्रेष्ठों की पूजाकरे २२२ व अपनी शक्तिके अनुसार घृत क्षीर गुड़ादिसे पूजा करे तिलपात्र व सुवर्ण ब्राह्मणको दे २२३ इस प्रकार नियमकरके सोवे फिर जब प्रातःकाल उठे तो स्नान व जप करके घृत व खीर भोजनकरके व वेदपढ़ेहुये ब्राह्मणकोभी प्रथम भोजनकराके सुवर्णसहित घृतपात्र जलकुम्भसमेत बैडालव्रत से हीन ब्राह्मण को निवेदित करे २२४।२२५ व कहे कि इसके करनेसे पर-

त्मा भगवान् दिवाकर प्रसन्नहों इसविधिसे सब महीने २ करता रहै २२६ जब वर्ष पूराहोजाय तेरहमास तेरह धेनु दानकरे सब धेनु वस्त्र भूषणसेयुक्त सुवर्णके सींगोंवाली सब दुग्ध देतीहुईहों २२७ जो धनहीनहो वह अहंकारहीन होकर एकही गोदानकरे वित्तशाठ्य न करे कि जिससे नीचेको जाय जिसके गृहमें बहुत धनहै पर देनेकेलिये दरिद्रवत् दे वही वित्तशाठ्य करना है २२८ इस विधान से जो कोई कल्याणसप्तमी का व्रत करताहै वह सब पापोंसे छूटकर सूर्य्यलोक में जाकर पूजित होताहै २२९ आयु आरोग्य ऐश्वर्य्य अनन्त होते हैं सब पाप हरती है व सब देवताओं से पूजित होने से २३० यह कल्याणसप्तमी सर्व्वदुष्टों का नाश करती है अनन्तफल देनेवाली इस कल्याणसप्तमीको २३१ जो पढ़ताहै वा सुनताहै वह सबपापों से छूटजाताहै हे राजसत्तम! अब विशोकसप्तमीका विधान व माहात्म्य कहते हैं २३२ जिसका व्रत रहकर मनुष्य कभी शोक नहीं भोगताहै माघमासके शुक्लपक्षकी पंचमीको तिल जलसे स्नान दन्तधावनपूर्व्वककरके व्रतका आरम्भ करे व्रत रहकर उस दिन ब्रह्मचर्य्य से रहे २३३ । २३४ फिर प्रातःकाल उठकर स्नान जपादि शुद्धतापूर्व्वककरे फिर सुवर्ण का कमल बनाकर अर्काय नमः इस मन्त्रसे पूजे २३५ लाल कँदैल के पुष्पोंसे व लाल दो वस्त्रोंसे पूजा करनी चाहिये हे आदित्य! जैसे विशोक भुवन तुम से सदा रहता है २३६ वैसेही अब हमारे विशोकपूर्व्वक तुम्हारी भक्ति सर्व्वदा हो इसप्रकार पूजाकरके षष्ठीको ब्राह्मणों की भक्तिसे पूजाकरे २३७ व फिर उस दिन गोमूत्रपानकरे फिर उठकर सब अपनी स्नानादि नित्यक्रिया करे यत्नसे ब्राह्मणों की पूजाकर गुड़पात्र संयुक्त २३८ अच्छे दो वस्त्र और कमल ब्राह्मण को देवे तेल लोन रहित अन्न भोजनकरके सप्तमी को मौन रहै २३९ फिर ऐश्वर्य्य चाहनेवाला पुरुष पुराण श्रवणकरे इस विधान से दोनों पक्षों में करे २४० तब तक कि जबतक माघमासकी शुक्लसप्तमी फिर न हो व्रतके अंत में सुवर्ण कमलसंयुक्त कलशदानकरे २४१ सब सामग्री सहित शय्या व दुग्ध देतीहुई कपिलाधेनु दानकरे इसविधि से वित्तशाठ्य छोड़

कर २४२ विशोकसप्तमी का व्रत जो कोई करताहै वह परमगति को जाताहै फिर सौकिरोड़ जन्मोंतक २४३ शोक रोग और दुर्गति से रहित होकर जिस २ कामना की इच्छाकरताहै उसको विशेष रीतिसे पाताहै २४४ व जो निष्काम होकर करताहै वह परब्रह्मको प्राप्त होताहै जो कोई विशोकानाम सप्तमीको पढ़ताहै वा सुनताहै २४५ वह भी इन्द्रलोकमें जाकर फिर कभी कहीं दुःखी नहीं होता है अब और फलसप्तमी नाम व्रत कहते हैं २४६ जिसका व्रत रह कर पुरुष सबपापों से छूटकर स्वर्गको जाताहै इस व्रतका प्रारम्भ शुभ मार्ग्गशीर्षमास में नियमपूर्व्वक पंचमी तिथिको होताहै २४७ षष्ठीका व्रतकरके सुवर्ण का कमल बनावे शर्करासहित किसी कुटु-म्बवान् ब्राह्मणको दे २४८ फिर धर्मका जाननेवाला किसी एक फल का रूप सुवर्ण का बनावे व मध्याह्नमें ब्राह्मणको देकर कहे कि सूर्य्य हमारे ऊपर प्रसन्नहों २४९ फिर अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों की पूजाकरके सप्तमी में दुग्धपान करे फिर फलों का भोजन करना कृष्णपक्षकी सप्तमीतक छोड़े २५० उसको भी इसक्रमसे व्रतकरके फिर सुवर्णकमल सहित सुवर्ण का फल दान करे २५१ उसके संग पात्रसंयुक्त शक्कर कपड़ा और मालाभी देवे इसप्रकार दोनों पक्षोंकी सप्तमियोंका व्रतकरे जबतक कि वर्ष पूरा न हो २५२ इसप्रकार वर्ष पर्य्यंत व्रतरहकर फिर सूर्य्य के मंत्र क्रमसे उच्चारणकरे भानु अर्क रवि ब्रह्मा सूर्य्य शक्र हरि शिव २५३ श्रीमान् विभावसु त्वष्टा व वरुण प्रसन्नहों इसप्रकार प्रत्येकमास की सप्तमी में एकएक नाम कहकर २५४ प्रतिपक्षों में फलत्यागपूर्व्वक यह समाचरणकरे व्रत के अन्तमें एक ब्राह्मण ब्राह्मणी की पूजा वस्त्र भूषणादिकों से करे २५५ फिर उसको सुवर्णकमल फलादिसहित शर्करा का कलश दे फिर यह प्रार्थनाकरे कि जैसा करने से तुम्हारे भक्तोंका काम सदा विफल न हो २५६ वैसी उसके फलकी प्राप्ति हमारे जन्म २ में हो अनन्तफल देनेवाली इस फलसप्तमीको जो करताहै २५७ वह भूत और भविष्यत् की इक्कीस पीढ़ियोंको तारदेताहै और जो सुनता व पढ़ताहै वह कल्याण का भागी होता है २५८ सब पापों से विशुद्ध

शरीर होकर सूर्यलोकमें जाकर पूजितहोताहै इसजन्ममें वा पूर्वजन्म में सुरापानादि जो पाप किये हों २५९ सब नष्टहोजाते हैं अब पाप-नाशिनी शर्करासप्तमीके व्रतका विधान कहतेहैं २६० जिसके करने से आयु आरोग्य ऐश्वर्य्य अनन्त होते हैं वैशाखकी शुक्लसप्तमी को नियतव्रतहो २६१ प्रातःकाल स्नान अच्छे तिलसमेत जलसे करके शुक्ल पुष्पोंकी माला धारण करे व चन्दन लगावे फिर चबूतरे पर कुंकुमसे कर्णिकासहित कमल लिखकर २६२ उसपर सवित्रे नमः इस मंत्रसे चन्दन पुष्प निवेदितकरे फिर उसके ऊपर शर्करा पात्र सहित जलका कुम्भ स्थापितकरे २५३ उसके ऊपर शुक्लवस्त्र लपेट कर श्वेतपुष्पोंकी माला पहिनावे और चन्दन चढ़ावे फिर सुवर्ण के भी दोचार पुष्प बनवाकर उसपर धरे व आगे के लिखेहुये मन्त्रसे पूजनकरे २६४ व जिससे कि तुम वेदों में विश्ववेदमय कहेजाते हो व तुम्हीं अमृतके सर्व्वधनहो इससे हमको शान्तिदान करो २६५ फिर पंचगव्य पीकर उसीके समीप पृथ्वीपर शयनकरे उस समय कि तो सूर्य्यमन्त्र जपे वा कोई पुराण श्रवण करे २६६ इस प्रकार जब रात्रि दिन बीते तो अष्टमी को नित्य नियमकरके सब कमल कलशादि वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको दानकरे २६७ फिर अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणोंको शर्करा घृत व खीर भोजनकरावे फिर आपभी तेल लोनरहित पदार्थ मौनहोकर भोजनकरे २६८ इस विधिसे सब प्रतिमास करतारहै वर्ष बीतजाने के पीछे वह शयन शर्करा कलश सहित २६९ सब सामग्रीसमेत व एक पयस्विनी धेनु व शक्तिमान् हो तो एक गृह अच्छी सामग्रीसमेत २७० व सहस्र निष्क वा सौ निष्क सोना उसमें धरके ब्राह्मणको दानकरे वा दश निष्क नहीं तो तीन निष्क वा एक निष्क २७१ जो शक्तिहो व कुछ और भी सुवर्ण कमल पूर्व की तरह मन्त्रसे पवित्रकरके देनाचाहिये दानी वित्तशाठ्य न करे क्योंकि उसके करनेसे दोष भोगताहै २७२ मुख से अमृत पीने के कारण सूर्य्य स्वर्ग के अमृत हैं व उन्हीं से धरणीपर धान मूँग ऊख आदि २७३ व ऊख के सब सारांश उत्पन्न होते हैं इससे ऊखसार का अमृत उनमें विद्यमान रहता है इसी से

पुण्यकारिणी शर्करा सूर्य्यको इष्ट है व हव्य कव्यादिकों में संयुक्त की जातीहै २७४ इसीसे यह शर्करासप्तमी अश्वमेधयज्ञ के फलको देती है व सब दुष्टोंका नाशकरती है पुत्र पौत्रादिकों को बढ़ाती है २७५ जो कोई इसका व्रत श्रेष्ठभक्तिसे करताहै वह परब्रह्मको प्राप्त होताहै फिर एक कल्पभर स्वर्ग्गमें बसताहै तदनन्तर परमपद को जाताहै २७६ हे पापरहित! इस व्रतका विधान जो कोई सुनताहै वा स्मरण करताहै वा पढ़ताहै वा बुद्धिदेताहै वह इन्द्रलोकमें देवता व मुनीन्द्रों से पूजा जाताहै २७७ अब इसके आगे कमलसप्तमी का व्रत कहते हैं जिसके कीर्त्तन करनेही से सूर्य्यनारायण प्रसन्नहोजाते हैं फिर व्रत करनेको क्या कहें २७८ वसन्तऋतुकी शुक्लसप्तमी को पीले सरसों जलमें मिलाकर स्नानकरे फिर पात्रमें तिल भरके उसके ऊपर सुवर्णका शुभ कमलधरे २७९ दो वस्त्रोंसे आच्छादित करके गन्ध पुष्पों से पूजन करे पूजा ध्यानादिमें यह मंत्र पढ़े कि ॥

चौ० पद्महस्त तव चरण नमामी । विश्वधारि हों तव अनुगामी ॥
नमत दिवाकर देव तुम्हारे । हरहु प्रभाकर पाप हमारे ॥

इस प्रकार पूजन करके मध्याह्नसमय वस्त्र माला भूषणों से ब्राह्मणकी पूजा करके कलशसहित कमल ब्राह्मणको देदे शक्तिके अनुसार वस्त्र भूषणादि से भूषित करके विधिपूर्व्वक ब्राह्मणको कपिला दानकरे २८० । २८२ रात्रि दिन बीतजाने पर अष्टमीको ब्राह्मणोंको भोजन करावे यथाशक्ति आपभी अन्न भोजन करे तैलपक्क और मांस न खाय २८३ इस विधिसे शुक्लसप्तमीको प्रत्येक मासमें भक्तिसे व्रत करे पर वित्तशाठ्य न करे २८४ व्रतके अन्तमें सुवर्ण कमल समेत शय्यादानकरे २८५ व शक्तिके अनुसार सोनेसमेत दुग्ध देतीहुई धेनुदानकरे पात्र आसन दीपादि पूजाकी सामग्रीदे २८६ इस विधि से जो कमलसप्तमीको करताहै उसके गृहमें अनन्त लक्ष्मी होती है व सूर्य्य के लोकमें जाकर वह मोदित होताहै २८७ फिर सातोंलोकों में एक २ कल्प अलग २ बसकर अप्सरादिकोंसे सेवित होकर परम गतिको जाताहै २८८ इस सप्तमीका व्रत पूजन जो देखताहै व मुहूर्त्तमात्र भी सुनता है वा व्रत करनेका भक्तिसे सम्मत देता है वह भी इस

लोकमें अमल लक्ष्मी को पाकर गन्धर्व्व विद्याधरों के लोकमें बसता है २८९ अब इसके पीछे सब पाप नाशन करनेवाली सब इच्छा पूरने हारी पुण्यकारिणी मन्दारसप्तमी का व्रत कहते हैं २९० माघसुदी पंचमीको चतुर मनुष्य थोड़ा भोजनकरके षष्ठीको प्रातःकाल उठकर शौच दन्तधावन स्नानकरके व्रतरहे २९१ ब्राह्मणोंकी पूजाकरके फिर मन्दारवृक्षकी प्रार्थना रात्रिमें करे फिर प्रभातसमय उठकर फिर स्नानकरके फिर ब्राह्मणोंको २९२ भोजनकरावे शक्तिके अनुसार सुवर्णके आठ मन्दारके पुष्प बनावै व एक पुरुष भी सुवर्णका बनावे उसके हाथ में सोनेका कमल पुष्प सुन्दर धरे २९३ व एक कमल कालेतिलों से पात्र भरके उसके ऊपर धरे फिर ये सुवर्णके मन्दारके पुष्प सूर्यनारायण के समर्प्पणहैं इससे पूर्व ओर पूजाकरे २९४ सूर्य्याय नमःइस मन्त्र से मुख में एक दल दे अर्काय नमः इससे दक्षिण ओर व अर्य्यम्णे नमः इससे नैर्ऋत्य दिशामें २९५ वेदधाम्ने नमः इससे पश्चिममें चंडभानवे नमःइससे वायव्यमें पूष्णे नमःआनन्दाय नमःइससे उत्तर ओर २९६ सर्व्वात्मने नमः इससे कर्णिका में कांचन पुरुषकी स्थापनाकरे शुक्लवस्त्र मूर्त्तिको ओढ़ाकर माला और भक्ष्यफलादिकों से पूजाकरे २९७ इसप्रकार पूजा करके पूजा की सामग्री सहित मूर्त्ति वेदशास्त्र पढ़ेहुये ब्राह्मणको देदे फिर पूर्व्वको मुख करके गृहस्थ मनुष्य मौनव्रत धारण किये तेल लोन को छोड़ अन्य शष्कुल्यादि भोजनकरे २९८ इस विधि से प्रत्येक मासकी सप्तमीका व्रत पूजनादि करे वह वर्षपर्य्यन्त करतारहे वित्तशाठ्य न करे २९९ इस व्रतके अन्तमें मूर्त्ति कलशपर स्थापित करके अपने विभवके अनुसार ऐश्वर्य की इच्छा करनेवाला मनुष्य गोदानों के साथ ब्राह्मण को दे ३०० मन्दारनाथ व मन्दारभवन के नमस्कार है यह पढ़कर कहे कि हे सूर्य्य! इस संसारसागर से हमको तारो ३०१ इस विधि से जो मन्दारसप्तमी का व्रत करता है वह पुरुष पापरहित और सुखीहोकर कल्पपर्य्यन्त स्वर्ग में बसकर हर्षित होताहै ३०२ पापसमूह के रूप भयंकर अन्धकार के प्रकाश करनेवाली इस मन्दारसप्तमी को प्राप्त होकर पुरुष संसाररूप रात्रि में नहीं गिरता

है. ३०३ वाञ्छित फल देनेवाली इस मन्दारसप्तमी को जो पढ़ता सुनता है वह भी सब पापों से छूटजाता है. ३०४ अब अतिसुन्दर शुभसप्तमी के व्रतका विधान कहते हैं जिसका व्रत करके मनुष्य रोग शोकके समूह से छूटता है ३०५ पुण्यदायक आश्विनमास की सप्तमी को स्नान जप करके पवित्रहो ब्राह्मणों से पुण्याहवाचन करवाकर इस शुभसप्तमी का आरम्भ करे ३०६ प्रथम चन्दन माला और अनुलेपनों से कपिलाधेनु की पूजा भक्तिसे करे फिर धेनु की प्रार्त्थना करे कि सम्पूर्ण भुवनों में रहनेवाली सूर्य्य के किरणों से उत्पन्न हे शुभकल्याणि ! तुम्हारे अपने शरीरके शुद्ध होनेके लिये मैं नमस्कार करताहूं इसके पीछे प्रस्थमात्र तिल ताम्रके पात्रमें करके ३०७ । ३०८ व सुवर्णका वृषभ बनवाकर वस्त्र माला और गुड़ से युक्तकर उसी पात्रपर स्थापित करे उसके विश्राम के लिये शय्या बर्तन और आसन सब संयुक्तकरे ३०९ नानाप्रकारके फल घृत खीर समेत भोजनके लिये उपस्थित करे फिर अर्य्यमा हमारे ऊपर प्रसन्नहो यह कहकर मध्याह्न में ब्राह्मणको देदे ३१० तदनन्तर पञ्चगव्य पीकर विना बिछाईहुई पृथ्वीपर सोरहे जब प्रभातहो तो भक्तिसे ब्राह्मणों को तृप्तकरे ३११ इस विधि से मनुष्य प्रतिमास में करतारहे सुवर्णका वृषभ व वस्त्र और सोनेकी गऊ सब ब्राह्मणको देतारहे ३१२ जब वर्ष बीतजाय तो शय्या ऊख गुड़युक्त और ताम्रपात्रपर प्रस्थभर तिल रखकर सोनेके वृषभ सहित ३१३ वेद पढ़ेहुये ब्राह्मणको देकर कहे कि विश्वात्मा हमारे ऊपर प्रसन्नहो इसविधि से जो विद्वान् शुभसप्तमी का व्रत करताहै ३१४ उसके विमल लक्ष्मी व कीर्त्ति जन्म २ होती है व मरनेके पीछे अप्सराओं और गन्धर्व्वोंसे पूजित होकर ३१५ गणोंका स्वामी बनकर देव-लोकमें बसताहै कल्पपर्य्यन्त देवलोक में रहकर कल्पकी आदि में अवतार लेकर सप्तद्वीपवती पृथ्वीका राजाधिराज होताहै ३१६ ॥
चौ० सहस भ्रूणहत्या मिटिजाहीं । शतक ब्रह्म हत्याहु नशाहीं ॥
शुभसप्तमी पढ़ै जहँ कोई । सब दुख मिटत तनिक नहिं गोई ३१७
जो मुहूर्त्तभर सुनै कथानक । धेनु दान जो लखै समानक ॥

सो सब पापहीन ह्वै प्रानी। विद्याधर पति होय सुज्ञानी ३१८
सात वर्ष लग जो व्रत येहू। करे पुरुष नारी करि नेहू॥
सप्तलोकपति क्रमसों होई। पुनि हरिपुर कहँ जाय न गोई ३१९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादे
पुष्करमाहात्म्यएकविंशोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय॥

दो० बाइसयें अध्याय महँ नाना व्रत अरु दान॥
विधिपूर्व्वक मुनिराजकह करि बहुभाँति विधान १

इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने पूँछा कि भूर्ल्लोक भुवर्ल्लोक स्वर्लोक महर्ल्लोक जनलोक तपोलोक व सत्यलोक ये सात देवलोक कहाते हैं १ फिर क्रमसे इनकी स्वामिता कैसे होती है व इस लोकमें शुभरूप आयुर्द्दाय आरोग्यता कैसे होती है २ व हे ब्रह्मन्! हे देवताओं से पूज्य! विपुललक्ष्मी पुरुषके कैसे होती है इतना सुनकर पुलस्त्यमुनि बोले कि पूर्व्वकालका वृत्तान्त यह है कि पवनदेव व अग्निदेव को इन्द्रने आज्ञा दी कि तुम दोनोंजने पृथ्वीपर जाकर दैत्यों का नाशकरो पवनकी सहायता से अग्निदेव ने सहस्रों दैत्यों को पृथ्वीपर आकर भस्मकरडाला ३। ४ तारकासुर, कमलाक्ष, कालदंष्ट्र, परावसु, विरोचन और संह्लाद ये सब भाग कर जाय समुद्र में बसे सोभी बहुत अथाह में जहां किसी की बहुधा गति नहीं होती अग्नि व पवन ने जाना कि ये युद्ध करने में अशक्तहैं इसीसे समुद्र में लुके हैं इससे उनका पीछा करना उन्होंने छोड़दिया ५। ६ व तब से वे दैत्यलोग समुद्र से निकलकर देवता मनुष्य सर्प मुनियों को पीड़ितकर के फिर समुद्रमें पैठजानेलगे ७ इसप्रकार हे राजन्! वे पांचो सातो वीर हजारों युगोंतक जलमें किला बनाने के बलसे तीनों लोकोंको पीड़ित करतेरहे ८ फिर बहुत दिनों के पीछे अग्नि पवनको इन्द्रने आज्ञादी कि तुम दोनों जाकर समुद्र शोषलो ९ क्योंकि सब हमारे वैरी दैत्यलोग जाकर इसी समुद्र में छिपे रहते हैं इससे आप दोनों वहां जाकर इसीसमय समुद्र का शोषणही

करडालें १० तब वे दोनोंजने इन्द्र से बोले कि हे देवेंद्र! समुद्र का नाश करना बड़ा अधर्म्म है ११ क्योंकि समुद्र शोष लेनेपर बहुत जीवोंका विनाशहोगा इससे इस विषय में कोई और उपाय करना चाहिये १२ भला जिस समुद्र के एक योजनमात्र में करोड़ों जीव रहते हैं उसका नाश कैसे कियाजाय १३ अग्नि व पवन के ऐसे वचन सुनकर क्रोध के मारे लालनेत्रकर इन्द्र अग्नि व पवन से यह वचन बोले कि १४ धर्म्म अधर्म्म के संयोग को कोई देवता नहीं पातेहैं उनमें आप दोनोंजने तो विशेष करके महात्माहैं १५ परन्तु आप दोनोंजनों ने हमारी आज्ञा मुनियों के व्रत में परायग होकर नहीं की इससे देहको ग्रहणकर १६ हे अग्निदेव! एक मुनिरूप देह से मनुष्य में धर्म अर्थ शास्त्र से रहित योनिको १७ पवन के साथ संसार में तुम्हारा जन्म होगा जब मनुष्य देह धारण करके तुम समुद्रको गण्डूषपर धर शोषलोगे तब फिर तुम देवता होजावोगे इसप्रकार इन्द्र के शापसे अग्नि व पवन दोनों स्वर्गलोकसे उसी क्षण में पृथ्वी में पतितहुये १८। १९ व आकर कुम्भ से दोनों का जन्महुआ मित्रावरुण के वीर्य्य से वसिष्ठरूप होकर उत्पन्नहुये २० उससे दो हुये एक वसिष्ठ व एक अगस्त्य उनमें अगस्त्यजी मुनियोंमें श्रेष्ठ बड़ेभारी तपस्वी वसिष्ठजी के छोटे भाई मुनिभये २१ भीष्मजी बोले कि हे पुलस्त्यजी! अगस्त्यजीके पिता मित्रावरुणजी कैसे हुये कुंभ अर्थात् घड़ेसे अगस्त्यजीका जन्म जैसे हुआ तिसको इससमय में कहिये २२ तब पुलस्त्यजीबोले कि पूर्व्वकालमें धर्म्मकेपुत्र होकर पुराणपुरुष श्रीविष्णुभगवान्ने गन्धमादन पर्व्वत पर बड़ाभारी तप किया २३ उनके तपसे डरकर इन्द्रने वसंत व कामको उनकी तपस्या में विघ्न करने के लिये भेजा उनके साथ बहुत सी अप्सराभी भेजी गईं २४ उन के गाने बजाने भाव और हाव आदि से जब नारायण भगवान् न मोहितहुये २५ तब काम वसंत और अप्सराओंके समूहों को कष्टहुआ तब भगवान्ने काम वसंत के क्षोभ के लिये सैकड़ों स्त्रियां अपनी जंघासे उत्पन्न कीं जो कि तीनोंलोकोंको मोहितकरलें उनको देखकर सब देवगण मोहितहुये और वसन्त कामभी मोहित

होगये २६ । २७ तब श्रीभगवान्‌जी ने देवताओंके सम्मुखही कहा कि यह अप्सरा उर्व्वशी के नामसे प्रसिद्ध होगी २८ इसको कामके वशीभूत होकर मित्र भोग करने के लिये बुलावेंगे इतना कहकर उर्व्वशी को इन्द्रके समीप भेजा एक समय उसीसे कामके वशीभूत होकर मित्रनाम सूर्य्य ने प्रार्त्थना की कि हमको रमण करावो उसने कहा हम सूर्य्य के पास जाती हैं वहां से आकर आपके समीप आवेंगी २९ इतना कहकर वह कमलनयनी सूर्य के लोकको चली तब वरुण ने भी उससे भोग करने की इच्छाकी तब उसने कहा ३० कि हे प्रभो ! मेरे सूर्य्य पति हैं मुझको पहले मित्रने बुलायाहै हम मित्र देवता के निकट जायँगी क्योंकि वे हमसे प्रथम प्रार्त्थना करचुके हैं तब वरुण ने कहा कि हममें चित्तलगाकर चलीजाओ ३१ उसने कहा अच्छा तब मित्रने उसे शापदिया कि आजही तू मनुष्यलोक को जा और बुधके पुत्रके ३२ संग भोग करायाकर क्योंकि तूने यह मिथ्याधर्म्म किया यह कहकर मित्र व वरुण दोनों ने अपना २ वीर्य्य जलके कुम्भमें ३३ छोड़ा उस वीर्य्य से दो मुनिसत्तम उत्पन्न हुये पूर्वसमय में निमिनाम राजा स्त्रियों के साथ जुवा खेलताथा ३४ तिसी समय में ब्रह्मपुत्र वसिष्ठजी आते भये तब उन की पूजा निमिने न की तो वसिष्ठजीने राजाको विदेह होजाने का शापदिया तब राजा निमिनेभी वसिष्ठजीको मरजाने का शापदिया इसप्रकार राजा व मुनि आपसके शापसे दोनों देहहीन होगये ३५ । ३६ व अपना २ शाप मिटाने के लिये दोनों जगत्पति ब्रह्माजी के पास गये ब्रह्माजी की आज्ञासे राजानिमि तो सब प्राणियों के नेत्रों में बसनेलगे ३७ उन्हीं के विश्रामके लिये सब प्राणियों के निमेष हो गये व वसिष्ठजी उस कुम्भ में प्रथम पुत्रहुये ३८ तदनन्तर चतुर्भुजी मूर्त्ति धारणकिये कमण्डलु लिये यज्ञोपवीत पहिने कमलाक्षकी माला धारणकिये शान्तस्वरूप ऋषियों में श्रेष्ठ अगस्त्यजी उत्पन्न हुये ३९ उन्हों ने मलयाचलके एक भाग में वैखानसके विधानसे स्त्री सहित बहुतसे ब्राह्मणों के साथ दुष्कर तप किया ४० फिर बहुत समयकेपीछे तारकादि दैत्योंसे पीड़ित सब जगत्‌को देखकर अग-

स्त्यजी ने समुद्र को पानकरलिया ४१ तब मुनिको वर देने के लिये शंकरादि देवता आये ब्रह्माजी व श्रीभगवान्विष्णुजी भी वरदेनेके लिये मुनिके समीपगये ४२ व सबों ने कहा कि हे मुनिराज! जो तुमको अभीष्टहो वरमांगो तुम्हारा कल्याणहो यह सुनकर अगस्त्यजी बोले कि जब तक पच्चीस किरोड़ एक सहस्र ब्रह्माओं की आयुर्दाय रहै ४३ तबतक हम विमानपर चढ़ेहुये दक्षिण देश आकाश में विचराकरें व हमारे विमान के उदय से जो कोई मेरा पूजन करेगा ४४ वह क्रमसे सातों लोकोंका अधिपति होगा व जो कोई पुष्करतीर्थ में हमारे आश्रम पर जाकर हमारे नाम का कीर्त्तन करेगा ४५ वह पुण्यवान् होगा बस यही वर हम मांगते हैं व जो लोग पिंडदानसहित इस हमारे स्थानपर भक्तिसे श्राद्ध करेंगे ४६ उनके सब पितर हमारे साथ स्वर्गलोक में जितने कालतक हम स्वर्ग में रहेंगे उतने समयतक वे भी हमारे संग बसेंगे यही हम वर मांगतेहैं ४७ ऐसाहीहो ऐसा कहकर सब देवताओंके गण अपने २ धामको चलेगये तिससे पण्डितों को चाहिये कि जिस दिन अगस्त्यके विमानका उदयहो उस दिन अवश्य सदैव अर्घ्य देवें ४८ इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने पूँछा कि अगस्त्यमुनि के लिये कैसे अर्घ्यप्रदान करना चाहिये जो विधान अगस्त्यके पूजन का हो हमसे वर्णन कीजिये ४९ यह श्रवण करके पुलस्त्यजी बोले कि जिस समय अगस्त्यका उदयहो विद्वान् गृहस्थको चाहिये कि चाहे प्रातःकाल हो वा रात्रि हो सफेद तिलोंसे स्नान करके शुक्लवस्त्र वा श्वेतही माला धारणकरे ५० फिर माला और वस्त्रसे वेष्टित करके नये पुष्ट कुम्भका स्थापनकरावे उसमें पंचरत्न छोड़े व घी के बर्तन से कलशको युक्तकरे ५१ उसके ऊपर अँगूठाभरेकी लम्बी सुवर्ण की मूर्त्ति स्थापित करे यह मूर्त्ति चतुर्भुजी विस्तृतभुजायुक्त होनी चाहिये कलशके ऊपर सप्तधान्य धरनी चाहिये ५२ फिर कांस्यपात्र अक्षत सफ़ेद युक्तकरके दीर्घभुजायुक्त दक्षिणमुख स्थित मूर्त्तिको घट से अलगकर ब्राह्मणको मंत्रसे देदे ५३ और जो शक्तिहो तो चांदीसे खुर मढ़ाकर व सोने से सींग मढ़ाकर व थूथुन भी सोनेसे मढ़ाकर बछड़ा

सहित घण्टादि भूषणों से भूषित करके कपिलाधेनु माला और वस्त्र से भूषित कर प्रणाम कर ब्राह्मणको दे ५४ उदय होनेके पीछे सात रात्रितक यह अर्घ्यदान होसक्ताहै सो यह अर्घ्यदान सत्रहवर्ष तक करना चाहिये वा कोई आचार्य कहते हैं कि और भी सत्रहसे अधिक वर्षतक करना चाहिये ५५ पूजन ध्यानादिका मन्त्र यह है ॥

दो० काशपुष्पसमकान्त्यनल अनिलससुद्भव देव ॥
मित्रावरुणतनूज घटयोनि नमत करि सेव ५६

प्रतिवर्ष इस रीतिसे पूजनकरे पर उससे कुछ फल न चाहे व होम भी करे तो भी कुछ फल उससे न चाहे तो कष्ट को न प्राप्त हो ५७ इस विधिसे जो कोई पुरुष अर्घ्यदान अगस्त्यजीको करताहै इस लोकमें रूपवान् होकर आरोग्य रहताहै ५८ फिर दूसरे से भुवर्ल्लोक तीसरेसे स्वर्लोक को क्रमसे जाताहै इसी प्रकार जो सात अर्घ्य देता है वह ऊपरके सातलोकों को प्राप्त होता है ५९ इस अगस्त्यजी के अर्घ्यविधानादि को जो कोई पढ़ता सुनता वा देखता वा बुद्धि देता है वह वैकुण्ठ में बसकर देवताओं से पूजित होताहै ६० इतनी कथा सुनकर भीष्मजी बोले कि हे महामतिवाले! सौभाग्य आरोग्य देनेवाला व शत्रुओं के नाश करनेवाला भुक्ति मुक्ति प्राप्त करानेवाला जो व्रत हो हमसे कहिये ६१ इतना सुन कर पुलस्त्यजी बोले कि पार्व्वतीजी ने जो व्रत धर्मयुक्त ललित कथा कहते हुये महादेवजीसे पूँछाहै व जैसे शंकरजीने उनसे कहा है ६२ सब भुक्ति मुक्ति फलदाता को इससमय वर्णन करते हैं एक समय गौरीजी शंकरजी से बोलीं कि हे सुरेश्वर! आपने अलक्ष्मीको तो शाप दिया ६३ पर जैसे हमको अधिक लक्ष्मी प्राप्त हो उसको विधान हमसे वर्णन कीजिये इतना सुनकर श्रीमहादेवजी बोले हे देवि ! एकाग्रचित्त होकर हमसे सुनो इस व्रतको पूर्व्वकालमें तुमने भी किया था ६४ उसको चाहे पुरुष करे वा स्त्री दोनों के लिये उत्तम आराधन है भाद्रपद वैशाख व पुण्यकारी मार्गशीर्ष के ६५ शुक्लपक्ष की तृतीया को श्वेत सरसों जलमें मिला कर स्नानकरे फिर गोरोचन गोमूत्र गोदुग्ध गोघृत ६६

गोदधि व चन्दन मिलाकर मस्तक में तिलक लगावै यह तिलक सौभाग्य आरोग्य करनेवाला सदैव ललिता को प्रिय करनेहारा है ६७ यदि पुरुष वा स्त्री प्रत्येक पक्षकी तृतीया के व्रतकोकरे तो लाल रँगेहुये वस्त्र धारण करे और सफेदफूल भी धारण करे ६८ परन्तु विधवा स्त्री किसी धातु से रँगा वस्त्र न धारण करे एक सफेद वस्त्र धारे व कुमारी स्त्री भी शुक्ल सूक्ष्म दो वस्त्र धारणकरे ६९ देवता की पूजा पञ्चगव्य से करे फिर केवल दुग्धसे करे फिर मधु से स्नान करावे तदनन्तर पुष्प गन्ध और जलसे पूजाकरे ७० फिर शुक्ल पुष्पों से व नानाप्रकारके फलोंसे पूजाकरे धान्य लावा लवण गुड़ दुग्ध घृत से युक्तकरे ७१ शुक्लअक्षत व शुक्लतिलों से देवी की पूजा सदा करे इनसे प्रतिपक्ष में चरणों की पूजाकरे ७२ वरदायै नमः इससे पादों की पूजाकरे श्रियै नमः इससे गुल्फोंकी अशोकायै नमः इससे जांघों की पूजाकरे पार्व्वत्यै नमः इससे फीलियों की पूजाकरे ७३ मंगल-कारिण्यै नमः इससे ऊरुओं की वामदेव्यै नमः इससे कटिकी पद्मो-दरायै नमः इससे पेटकी श्रियै नमः इससे कण्ठकी पूजाकरे ७४ सौ-भाग्यदायिन्यै नमः इससे हाथोंकी सुमुखश्रियै नमः इससे बाहों की दर्पविनाशिन्यै नमः इस से मुखकी स्मरदायै नमः इससे हँसने के स्थानकी ७५ गौर्य्यै नमः इससे नासिका की उत्पलायै नमः इससे ने-त्रोंकी तुष्ट्यै नमःइससे ललाट और पाटियोंकी कात्यायन्यै नमः इससे शिरकी ७६ गौर्य्यैनमः पुष्ट्यै नमः कान्त्यै नमः श्रियै नमः रम्भायै नमः ललितायैनमः वामदेव्यैनमोनमः ७७ इससे सर्व्वत्र पूजा करके आगे कमल लिखै उसमें सोलह पत्र कर्णिकासहित क्रमसे हों पूर्व्व ओर गौरीको स्थापित करे फिर अपर्णाको फिर दक्षिण में भवानीको रु-द्राणीको नैर्ऋत्यमें पश्चिममें सौम्याको वायव्यमें मदनवासिनीको उत्तरमें पाटला उग्रा व उमाको ७८।८० साध्या पथ्या सौम्या मङ्गला कुमुदा सती भद्रा इनको मध्यमें स्थापितकरे व ललिताको कर्णिका के ऊपर ८१ पुष्प अक्षत जलव नमस्कारसे इन सबको इन स्थानों में स्थापित करे गीत मंगलघोष करके सुवासिनी स्त्री की पूजा लाल पुष्प लाल वस्त्र चन्दनादिकोंसे करे सिंदूर स्नानचूर्ण सबोंके

शिर में लगावे ८२।८३ क्योंकि सिंदूरसहित पुष्पजल का स्नान सबों को अत्यन्त प्रिय होताहै तदनंतर व्रत पूजन बताने कराने वाले गुरुकी पूजा यत्नसे करे ८४ क्योंकि जहां गुरुकी पूजा नहीं होती सब क्रिया वहां निष्फल होजाती हैं गौरीकी पूजा सदा मंत्रों के जपसे व काले कमलों से ८५ दुपहरी के फूलों से कार्त्तिक के महीने में यत्न से करनी चाहिये अगहन के महीने में जाती के पुष्पों से व पौषमें पीली पियाबांसा वा कटसरैया के फूलों से करे ८६ कुंद व कोकाबेरी के फूलों से माघमासमें पूजा करनी चाहिये सिंदुवार वा जाती के पुष्पोंसे उमाकी पूजा फाल्गुनमें करनीचाहिये ८७ चमेली व अशोक के पुष्पों से चैत्र में वैशाखमें चन्दन से व पाड़र डांड़ के पुष्पों से पूजा होनी चाहिये ज्येष्ठ में कमल व मन्दार के पुष्पों से आषाढ़ में जलजों से ८८ मन्दार व मालती से श्रावण में सदा पूजा करनी चाहिये भाद्रपदादि मासों में क्रम से गोमूत्र गोमय गोदुग्ध गोदधि गोघृत कुशोदक ८९ बिल्वपत्र मदार के फूल कमल गोशृंगका धोवन पंचगव्य व बेल क्रमसे सदैव खानाचाहिये ९० यह भाद्रपदादि बारहों महीनों में भोजन करना चाहिये हे पार्व्वति! प्रतिपक्षमें तृतीया तिथिमें एक स्त्री पुरुषकी पूजा करनीचाहिये ९१ उसमें प्रथम भोजन कराकर फिर भक्ति से वस्त्र माला चन्दन से पूजे पुरुषको पीले वस्त्र पहिरावे उढ़ावे व स्त्री को रेशमी लालवस्त्रों से ९२ निष्पाव जीर लोन ऊख गुड़ स्त्री को देने चाहिये व सुवर्ण के कमलपुष्पभी बनवाकर पुरुषको देने चाहिये ९३ फिर यह प्रार्थना करनी चाहिये कि जैसे हे देवि! देव तुमको छोड़कर कहीं नहीं जाते वैसेही सम्पूर्ण दुःखसागरसे हमारा उद्धार करो ९४ भाद्रपदादि बारहों मासोंमें कुमुदा विमला नन्दा भवानी व सुधा शिवा ललिता कमला गौरी सती रम्भा व पार्व्वती ९५ प्रसन्नहों ऐसा उच्चारण करना चाहिये व्रतके अन्तमें सुवर्ण कमलसहित शय्या दान करे ९६ शक्तिके अनुसार चौबीस वा बारह स्त्री पुरुषों के जोड़ोंकी पूजाकरे आठ वा चारमास में पूजाकरे ९७ प्रथम जो दान देनाहो विशेष रीतिसे गुरुको दे फिर औरोंको दे क्योंकि यह अनन्त-

तृतीया है सदैव अनन्त फल देती है ९८ यह देवी सब पापों को हरती है व सब सौभाग्य आरोग्य बढ़ाती है इसका उल्लंघन वित्त-शाठ्य के कारण कभी न करना चाहिये ९९ चाहे नरहो वा नारी सब कोई इसका व्रत करसक्ता है गर्भिणी वा प्रसूतिका कुमारी व अरोगिणी सब करें १०० जब अशुद्धहों तब और से करादेवें इस अनन्त फल देनेवाली तृतीया को जो कोई करता है १०१ कोटि कल्प तक शिवलोक में पूजित होताहै धनहीन पुरुष भी इसे कर सक्ताहै वह वर्षभर ऐसेही व्रतरहै १०२ खाली पुष्प मन्त्र आदिसे विधिपूर्वक पूजनकरे चाहे सुवर्णादि की मूर्त्ति न हो तोभी उसी फलको पावै व जो कोई स्त्री अपने हितकी इच्छा से इस व्रत को करती है १०३ वह गौरीजीके अनुग्रहसे जन्म पौरुषको पातीहै जो कोई पार्वतीजीके व्रतको पढ़ता वा सुनता वा बुद्धिदेता है इन्द्रलोक को जाता है व वहां देव देवी तथा किन्नरों से पूजित होता है अब और भी पापनाशिनी तृतीयाको कहते हैं १०४।१०५ पूर्व्वसमय में कल्पके उत्पन्न लोग इस तृतीयाको रसकल्याणिनी कहते हैं माघ शुक्ल तृतीयाकोप्राप्तहोकर१०६प्रातःकाल होनेपर चन्दन दुग्ध तिलों से स्नान करै व मधुसे और ऊखके रससे विधिपूर्व्वक देवीका स्नान कराना चाहिये १०७ और भी सुगन्धित वस्तुओं से व कुंकुमादिकों से प्रथम दक्षिण अङ्गोंकी पूजा करके फिर वामांगों की पूजा करे१०८ ललितादेव्यै नमः इससे गुल्फों की पूजाकरे शान्त्यै नमः इससे ज-ङ्घाओं और गांठोंकी श्रियै नमः इससे ऊरुओंकी १०९ मन्दालसायै नमः इससे कटिकी अमलायै नमः इससे उदर की मदनवासिन्यै नमः इससे स्तनों की कुमुदायै नमः इससे ग्रीवाकी ११० माधव्यै नमः इससे भुजोंकी कमलायै नमः सुखस्मितायैनमः इससे भुजाग्र की रुद्राण्यै नमः इससे भौहों व मस्तक की शंकरायै नमः इससे पाटी के बालोंकी १११ मदनायै नमः इससे फिर मस्तक की मोहि-न्यै नमः इससे फिर भौहों की चन्द्रार्द्धधारिण्यै नमः इससे नेत्रों की तुष्ट्यै नमः इससे मुखकी ११२ उत्कंठिन्यै नमः इससे कण्ठ की अमृतायै नमः इससे स्तनों की रम्भायै नमः इससे बाहों की

विशोकायै नमः इससे हाथों की ११३ मन्मथाह्वायै नमः इससे हृदयकी पाटलायै नमः इससे उदर की सुरतवासिन्यै नमः इससे कटिकी पङ्कजश्रियै नमः इससे जंघाओं की ११४ गौर्यैनमः इससे गांठ और फीलियों की गान्त्यै नमः इससे गुल्फों की धराधरायै नमः इससे पावों की विश्वकायै नमः इससे शिरकी ११५ भवान्यै नमः कामिन्यै नमः वासुदेव्यै नमः जगच्छ्रियै नमः आनन्दद्दायै नमः नन्दायै नमः सुभद्रायै नमो नमः ११६ इसप्रकार सर्वांगोंकी पूजा करके फिर ब्राह्मण ब्राह्मणी की विधिपूर्वक पूजाकरे फिर अहंकार रहित हो मिष्टान्नों से उनको भोजन करावे ११७ लड्डूसहित एक जलकुम्भ और सफेद दो कपड़े उनको दे फिर सुवर्णका कमलभी उनको देकर गन्धमाल्यादिकों से पूजन करे ११८ इसमें कुमुदा प्रसन्नहो व लवणव्रतको ग्रहणकर इसविधिसे महीनार सदैव देवी का पूजन करे ११९ नियम जो करने के योग्य हैं आगे लिखते हैं माघमें लोन व्रती को न खानाचाहिये फाल्गुन में गुड़ चैत्रमें नव-नीत वैशाखमें मधु १२० ज्येष्ठमासमें जल आषाढ़ में जीर श्रावण में दुग्ध भाद्रपद में दही १२१ आश्विन में घृत कार्त्तिकमें भी मधु मार्गशीर्ष में धनियां व पौषमें शक्कर व्रतीको न खानी चाहिये १२२ व्रतके अन्त में शक्तिहो तो एक २ स्वर्णमुद्रा प्रत्येक मासमें मध्याह्नमें भक्ष्यपात्रसंयुक्त ब्राह्मणको दक्षिणा देनी चाहिये १२३ लड्डू सब संयाव पूरी वारिका घृतसे पूर्ण और पीठीसेपूर्ण नंदिकी १२४ दूध शाक दही भात शाककी पिंडी माघादि मासों में क्रमसे करकके ऊपर दान करने चाहिये १२५ कुमुदा माधवी रम्भा सुभद्रा शिवा जया ललिता कमला अनङ्गा मङ्गला रतिलालसा १२६ च-ण्डिका क्रमसे एक २ माघादि महीनोंमें प्रसन्नहो ऐसा कहना चाहिये व सब मासों में पञ्चगव्य पान करना चाहिये १२७ जिसको ऐसा करनेकी सामर्थ्य न हो वह केवल व्रतही करे तोभी सब फल पावै इस प्रकार स्त्री रसकल्याणिनी व्रतकरे १२८ जब फिर माघमास आवे तो कलश के ऊपर शक्कर धरके उसके ऊपर सुवर्णकी गौरी बनवाकर स्थापित करे उसीपर पञ्चरत्न भी धरे १२९ यह गौरी

अपने अँगूठेभर की लम्बी होनी चाहिये इसके पास कमलाक्ष की माला यज्ञोपवीत व कमण्डलु भी रखना चाहिये मूर्त्ति गौरी की चतुर्भुजी होनी चाहिये व चन्द्रमायुक्त श्वेतवस्त्र से आच्छादित करनी चाहिये १३० इसीप्रकार सोने का एक वृषभ व एक गाय भी सित वस्त्र उढ़ाकर देनी चाहिये वस्त्र पात्र सहित बर्तन ब्राह्मण को देकर कहे कि इससे भवानी प्रसन्नहो १३१ इसविधि से जो कोई रसकल्याणिनी व्रत करताहै वह सब पापोंसे उसी क्षणमें छूट जाताहै १३२ व सहस्रों जन्मों तक कभी दुःखी नहीं होताहै व सहस्र अग्निष्टोम यज्ञों का फल पाताहै १३३ चाहे कोई युवती स्त्री करे वा कुमारी कन्याकरे वा विधवाकरे वा नीचस्वभाववाली स्त्री करे वह भी उसी फलको पाती है १३४ व सौभाग्य आरोग्य युक्त होकर गौरी के लोकमें जाकर पूजित होतीहै इस व्रतको जो पढ़ताहै व जो इसप्रकार प्रसंगसे सुनताहै वहभी सब पापोंसे छूट कर गौरी के लोकमें जाताहै १३५ व वहां के रहनेवालों को प्रिय के लिये मति देताहै वह देवलोक को जाता है अब औरभी तृतीया का एक व्रत कहतेहैं यह सब पापोंको नाश करती है १३६ इस तृतीया का जगत्प्रसिद्ध अग्र्यानन्दकरी नामहै जब कभी शुक्लपक्ष की तृतीया को पूर्वाषाढ़ वा उत्तराषाढ़ नक्षत्रहो १३७ वा रोहिणी नक्षत्र वा मघा वा हस्त वा मूलहो तब कुश चन्दन मिलेहुये जलमें अच्छेप्रकार स्नानकरे १३८ फिर शुक्लवस्त्र मालादि धारण करें व शुक्लही चन्दन का लेपन करे व शुक्लही सुगन्धित पुष्पोंसे भक्तिपूर्वक भवानी की पूजाकरे १३९ व उसी बड़े आसनपर बैठेहुये महादेवजी की भी पूजाकरे वासुदेव्यै नमः शङ्कराय नमः इन दोनों मन्त्रोंसे चरणोंकी पूजाकरै १४० शोकविनाशिन्यै नमः आनन्दाय नमः इनसे जंघाओं की पूजाकरे रम्भायै नमः पिनाकिने नमः इन से फीलियों की पूजाकरे १४१ आनन्दिन्यै नमः शूलपाणये नमः इनसे कटिकी माधव्यै नमः भवाय नमः इनसे नाभिकी १४२ आनन्दकारिण्यै नमः इन्दुधारिणे नमः इनसे स्तनों की उत्कण्ठिन्यै नमः नीलकण्ठाय नमः इनसे कण्ठकी १४३ उत्पलधारिण्यै नमः

रुद्रायनमः इनदोनोंसे हाथोंकी परिरम्भिण्यै नमः नृत्यप्रीताय नमः इनसे बाहोंकी १४४ विलासिन्यै नमः वृषभायनमः इन दोनों से मुख की स्मरणीयायै नमः विश्ववक्त्राय नमः इनदोनोंसे ईषद्धासकी पूजा करे १४५ मन्दारवासिन्यै नमः विश्वधाम्ने नमः इन दोनोंसे नेत्रोंकी नृत्यप्रियायै नमः पाशशूलिने नमः इनसे भौंहोंकी १४६ इन्द्राण्यै नमः वृषवाहाय नमः इनसे ललाटकी स्वाहायै नमः गङ्गाधराय नमः इनसे मुकुटकी इस प्रकार इन मन्त्रोंसे इन अंगोंकी पूजा करके फिर प्रार्थना करे १४७ हे विश्वकायौ ! हे विश्वभुजौ ! हे विश्वपादमुखौ ! हे शिवौ ! हे प्रसन्नवदनौ ! हे पार्व्वतीपरमेश्वरौ ! आप दोनों की वन्दना करते हैं १४८ इसप्रकार विधिपूर्व्वक पूजा करके पार्व्वती महादेवजीके आगे कमल के पराग से कमलपत्र पर अनेकवर्ण से शङ्ख चक्र कटक सहित स्वस्तिक व शुभकारक लिखे ऐसाकरने से धूलिके जितने भाग कमलपत्र से भूमिपर गिरते हैं १४९।१५० उतने हज़ार वर्षतक वह प्राणी शिवलोक में जाकर पूजित होताहै फिर अपनी शक्तिके अनुसार सुवर्ण सहित चार घृतपात्र १५१ ब्राह्मणको देकर जलसे पूर्ण एक करवा दे यह दान चारमास तक प्रति पक्ष में देना चाहिये १५२ व चारमासतक करवाके ऊपर घीसे भरे हुये चारपात्र व तिलों से भरेहुये चारपात्र धरे १५३ सुगन्धित जल पुष्पसहित जल चन्दन कुंकुम कच्चा दूध दही गोशृंगजल १५४ पुष्पमिश्रित जल कूटचूर्णसहित जल उशीरसहित जल यवचूर्ण सहित जल १५५ तिलसहित जल इन पदार्थों को भक्षणकर सोवे यह सब अगहनआदि मासोंके दोनों पक्षों में करना चाहिये १५६ जहां २ पूजन में पुष्प कहे हैं शुक्लही लेने चाहिये व दानके समय में यह मन्त्र सर्व्वत्र पढ़ना चाहिये १५७ ॥

चौ० पापनाशिनी गौरी देवी। होय प्रसन्न सकलसुरसेवी ॥
भागवती ललितारु भवानी। सर्व्व सिद्धिकरि हरें गलानी ॥

जब व्रत करते करते वर्ष बीतजाय तो लोन गुड़ कुंकुम चन्दन कमलपत्र सुवर्ण १५८।१५९ पार्व्वतीजीकी प्रीतिके लिये महादेवकी सुवर्ण की मूर्त्ति ऊंख अच्छे वस्त्रादिकों से आच्छादित तकिया समेत

शय्या १६० सपत्नीक ब्राह्मण को देकर कहे कि गौरी हमारे ऊपर प्रसन्नहो ऐसा करनेसे आत्मानन्दकरी सम्पदा मनुष्य पाताहै १६१ आयु आनन्द पाता है व शोक कभी नहीं पाता चाहे इस व्रतको युवती स्त्री करे वा कुमारी वा विधवा १६२ व्रहभी देवीजीके अनुग्रह से लालित होकर उस फलको पातीहै इस प्रकार प्रतिपक्षमें व्रत रह कर विधिपूर्व्वक मन्त्रोंसे पूजन करके १६३ एकादश रुद्रोंके लोकको करनेवाला जाताहै फिर वहां से नहीं लौटता जो कोई इसे भक्तिसे सुनता वा सुनाता है १६४ इन्द्रलोक में जाकर वह एक कल्पपर्यंत पूजित होताहै महादेवजी पार्वतीजी से बोले कि इसप्रकार व्रतकरनेसे नारी सब स्त्रियोंमें उत्तम पतिव्रता होतीहै १६५ चाहे बड़ा नष्टस्वभाव हो पर व्रत करतेही पतिप्रिया होजाती है व नानाप्रकार के गुणोंसे संयुक्त होतीहै तीनोंलोकों में उसके समान सुन्दरी कोई स्त्री नहीं दिखाई देती १६६ इसी व्रतके प्रभाव से श्रीविष्णुभगवान् ने लक्ष्मीको ग्रहण किया व हमने भी पूर्व्वसमय में तुम्हारे लिये दक्ष का यज्ञ नाश किया १६७ व लक्ष्मी के लिये श्रीविष्णुभगवान् ने पूर्व्वसमय में क्षीरसागर मथाथा इससे हम तुम्हारे व विष्णु लक्ष्मी के आज्ञाकारी हैं तुम कभी भय न करो १६८ व जब सावित्रीने तुम को व लक्ष्मीको शाप दियाथा तब हमने व श्रीविष्णुजी और ब्रह्माजी ने उनको प्रसन्न कियाथा १६९ अब हम ब्रह्मलोकको जाते हैं तुम सुखपूर्व्वक यहांरहो इतना कहकर महादेवजी तो चलेगये व पार्व्वती जी वहीं टिकीरहीं १७० व उस यज्ञमें अग्निजीकी पूजा सब सत्य-युग भर होती रही व देवगण उसमें हव्य भोजन करते रहे और तीनोंलोकभी तृप्त होतेरहे १७१ श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन विद्या-धर गणोंको भोग और मनुष्यों में कामनाकी प्राप्ति इन सबको प्र-भुजी देतेरहे १७२ फिर महादेवजीने विष्णुजीसे कहा कि धर्मोंको आप कहिये तिनमेंसे पार्वतीजीके धर्मों और सरस्वतीजीके व्रतको कहिये १७३ जब महादेवजीने इसप्रकार कहा तो आदर समेत विष्णुजी बोले कि हे महादेवजी हम अपने धर्मको इससमयमें नहीं प्रसिद्धकरेंगे १७४ पार्वतीजीके माहात्म्यको पूर्वसमय में आपहीने

कहाथा तिसको मैं कहताहूं जिसके करने से पाप नाश १७५ नि-स्सन्देह होजावेंगे और आप पवित्र होजावेंगे भीष्मजीने कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्यजी! किस व्रत से मधुरवाणी १७६ मनुष्योंकी सौभाग्य बुद्धि विद्याओं में निपुणता स्त्री पुरुषमें भेद न होना बन्धु-जनसे संग १७७ और पुरुषोंकी वहुत उमर होतीहै यह सब हमसे कहिये तव पुलस्त्यजी बोले कि हे राजन्भीष्मजी! तुमने अच्छा प्रश्न कियाहै सारस्वतव्रतको सुनिये १७८ जिसके संकीर्तनही से देवी सरस्वती प्रसन्न होजाती हैं भक्त इस उत्तम व्रतकी स्तुति करै १७९ पहले प्रातःकाल पूजनकर सुन्दर स्तोत्रका प्रारम्भकरै अथवा रविवार में जब ग्रह और तारा बलवान्हों तबसे प्रारम्भ करै १८० ब्राह्मणों को खीर भोजनकरावै और स्वस्त्ययन इत्यादिक पाठ करावै फिर शक्तिके अनुसार उनको सोनेसमेत सफेद कपड़े देकर १८१ भक्तिसे सफेद माला और अनुलेपनोंसे गायत्रीजी की पूजा करै और प्रार्थनाकरै कि हे देवि! जैसे लोक के पितामह भगवान् ब्रह्माजी १८२ आपको त्यागकर नहीं स्थित होते हैं तैसेही तुम वर-दायिनी हूजिये और वेद शास्त्र धर्म नाच और गानाआदिकभी १८३ आपसे हीन नहीं है तैसेही हमारे सिद्धियां होवें लक्ष्मी मेधा धरा पुष्टि गौरी तुष्टि जया मति १८४ इन आठ मूर्तियों से हे सरस्वती जी! हमारी रक्षा कीजिये इसप्रकार वीणा और कमल कमंडलु और पुस्तक धारण करनेवाली गायत्रीजी की धर्मवेत्ता मनुष्य भक्तिसे सफ़ेद फूल और अक्षतों से पूजा करके सायंकाल और प्रातःकाल मौनव्रत से भोजनकरै १८५ । १८६ और प्रत्येक पक्षकी पंचमीमें ब्राह्मणको सुन्दर गौ घृत के पात्र संयुक्त प्रस्थभर चावल १८७ दूध और सोना देवे और यह कहे कि गायत्रीजी प्रसन्नहों सन्ध्या में यह करतेहुये मौनहीरहे १८८ और तेरहमहीने तक रात्रि में भोजन न करै व्रत समाप्त होजानेपर सफेद चावलोंसे भोजन १८९ सुन्दर चँदोवा और उत्तम घंटा चन्दन दो वस्त्र सुरस दही भात ये सब ब्राह्मणको देवै १९० तदनन्तर भक्ति से उपदेश देनेवाले गुरु-देवजीकी पूजा वित्तशाठ्यरहित होकर वस्त्र माला और अनुलेपनों

से करै १९१ इस विधि से जो सारस्वतव्रत करताहै वह सौभाग्य बुद्धियुक्त और सूक्ष्म कण्ठवाला होजाताहै १९२ और सरस्वती के प्रसाद से ब्रह्मलोकमें पूजित होताहै जो स्त्रीभी इसव्रतको करती है वहभी इसी फलको पाती है १९३ और तीस कल्पतक ब्रह्मलोक में बसती है और जो मनुष्य सारस्वतव्रतको सुनता व पढ़ताहै १९४ वह विद्याधरों के पुरमें तीसहजार वर्षतक वसताहै ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेव्रताध्यायो नामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

दो० तेइसयें अध्यायमहँ भीम निर्जलाख्यान ॥
पुनिवेश्यानङ्ग व्रतहु कह मुनि सहित विधान १

भीष्मजी बोले कि हे श्रेष्ठब्राह्मणपुलस्त्यजी ! वैष्णव जो धर्म हैं जिनको महादेवजीने कहाहै तिन्हें हमसे कहिये वे कैसे धर्म हैं और फल क्याहै १ तब पुलस्त्यजी बोले कि हे भीष्मजी ! पूर्वकाल में रथन्तर कल्पमें महात्मा ब्रह्माजीने मन्दराचल में स्थित पिनाकधारी महादेवजी से पूंछा २ कि हे देवताओं के ईश्वर ! आरोग्य अनन्त ऐश्वर्य और थोड़ी तपस्या से सदैव मनुष्यों को मोक्ष कैसे होताहै ३ हे अधोक्षज महादेवजी ! आप के प्रसादसे वह ज्ञान कौनहै जो थोड़ी तपस्यासे महाफल यहां कहाताहै ४ जब ब्रह्माजी ने लोकभावन संसारकी आत्मा महादेवजीसे इसप्रकार प्रश्नकिया तब महादेवजी मनकी प्रीति के करनेवाले वचन बोले ५ कि इस रथन्तरकल्पसे फिर बीसवां सात लोकोंका धारणकर्त्ता वाराहकल्प होगा तब शुभ सातवें वैवस्वतमन्वन्तर में जब सत्ताईसवां द्वापर युग होगा ६ । ७ तिसमें महातेजस्वी जनार्दनवासुदेवजी भार दूर करने के लिये तीनप्रकारके विष्णुजी होंगे ८ व्यासऋषि बलदेवजी कंस और केशीके नाशनेवाले क्लेशनाशन श्रीकृष्णचन्द्र ये तीन रूप होंगे ९ इससमयमें जो कुशस्थली कहलाती है वह द्वारकानामपुरी दिव्यप्रभाव से युक्त कृष्णचन्द्रजीके बसने के लिये १० संसार के रक्षक भगवानही की आज्ञासे विश्वकर्मा बनावेंगे

तिस द्वारकापुरी की सभा में किसी समय बेप्रमाण दीप्तिवाले भगवान् कैटभराक्षस के नाशनेवाले श्रीकृष्णचन्द्रजी स्त्रियों, और बहुत विद्वान् यादवों कौरवों और देवता गन्धर्वोंसे युक्त बैठेहुये थे ११। १२ धर्मसम्बन्धिनी पुराणों की कथा होरही थी तब प्रतापी कृष्णचन्द्रजीसे भीमसेनजीने पूंछा १३ जिस धर्मको आपने पूंछा है उसीको कृष्णचन्द्रजी कहेंगे और कर्त्ता भीमसेनजीहोंगे १४ इस धर्म के प्रवर्तक महाबली भीमसेनजी हुये जिनके पेटमें तीक्ष्ण वृक नाम अग्निहै १५ तब धर्मात्मा अत्यन्तस्वादकी वस्तु खानेवाले दशसहस्र हाथी के बलवाले महान् भीमसेनजी भगवान् कृष्णचन्द्रजीसे पूंछनेलगे १६ तब धर्मात्मा और तीव्र अग्नि होनेके कारण व्रत में अशक्त भीमसेनजी से यह सब व्रतों में श्रेष्ठ १७ सम्पूर्ण यज्ञ फलका दाता सब पाप नाशनेवाला सब दुष्टों का नाशक सब देवताओं से पूजित पवित्रों का पवित्र मङ्गलों का मङ्गल भविष्यों का भविष्य पुराणों का पुराणव्रत संसारकी आत्मा संसारके गुरु वासुदेवजी कहने लगे १८। १९ कि हे भीमसेन! यदि अष्टमी चतुर्दशी व सबएकादशियोंके व्रत में औरभी दिन नक्षत्रों में तुम व्रत करने में समर्थ नहीं हो २० तो सब पापनाशिनी इस अग्र्य एकादशीका व्रत करो और इसविधिसे इसका व्रत करने से श्रीविष्णु के परम्पदको जावो २१ इसके व्रतका विधान ठीक २ यों है कि माघ शुक्ल दशमी जब होवे तब नेत्रों में घृत लगाकर तिलसहित जलमें स्नानकरे २२ फिर ओंनमोनारायणाय इस मन्त्र से विधिपूर्वक विष्णुकी पूजाकरे उसमें कृष्णाय नमः इससे पादोंकी पूजाकरे कृष्णात्मने नमः इससे शिरकी २३ वैकुण्ठाय नमःइससे कण्ठकी श्रीवत्सधारिणे नमःइससे छातीकी फिर शंखिने नमःगदिने नमःचक्रिणे नमः वरदाय नमः २४ सब कुछ नारायणही हैं ऐसा कहकर आवाहनादि के क्रमसे पूजाकरे दामोदराय नमः इससे उदरकी पूजाकरे पञ्चजनाय नमः इससे कटिकी पूजाकरे २५ सौभाग्यनाथाय नमः इससे ऊरुओं की भूतधारिणे नमः इससे जंघाओं की नीलाय नमः इससे फीलियोंकी विश्वभुजे नमः इससेपादोंकी २६ पूजाकरै देव्यै नमःशां-

त्यै नमः लक्ष्म्यै नमः श्रियै नमः तुष्ट्यै नमः पुष्ट्यै नमः धृत्यै नमः व्युष्ट्यै नमः २७ इनसे देवीकी पूजाकरै विहगनाथाय नमः वायुवेगाय नमः पक्षिणे नमः विषप्रमथनाय नमः इन मंत्रोंसे गरुड़जीकीभी पूजाकरे २८ इसप्रकार विष्णुकी पूजाकरके महादेवजीकी भी पूजा अच्छेप्रकार करे व गणेशकीभी पूजा गन्ध माला धूप नानाप्रकारके भक्ष्य पदार्थों से करे २९ गौके दूधसे सींचीहुई खिचरी खीर घृत सहित भोजनकर व फिर दूसरे स्थान में जाकर ३० बरगद अथवा खैरकी बुद्धिमान् मनुष्य दतून लेकर दांतोंको धोवे फिर आचमनकर पूर्व वा उत्तरमुखहो ३१ सूर्य अस्त होनेकेपीछे सायंकालकी सन्ध्या कर कहे कि नारायणजी के नमस्कार हैं मैं नारायणही की शरण में प्राप्तहूं ३२ इसप्रकार एकादशीको निराहार रहकर केशवभगवान् की पूजा करके उसरात्रि भर शेषशायी भगवान्की पूजाकरे ३३ फिर श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको बुलवाकर खीरसे हवन करावे फिर यह प्रार्थनाकरे कि हे पुण्डरीकाक्ष! हमसदा द्वादशीको दुग्धही भोजन ३४ करेंगे व इस कर्म्मको आप निर्विघ्नतासे समाप्त करें ऐसा कहकर पृथ्वी पर शयनकरे फिर इतिहास कथा ३५ सुने जब रात्रि बीत जाय तो प्रभातसमय किसी नदी पर जावे वहां स्नानकर आनन्द से पाखण्डोंकोभी छोड़देवे ३६ फिर विधिपूर्वक सन्ध्या और पितरों का तर्पणकर शेषकी शय्यापर सोनेवाले हृषीकेश भगवान्के प्रणाम कर ३७ बुद्धिमान् मनुष्य घरके आगे भक्तिसे मण्डप बनवावे वहां चार हाथकी लम्बी चौड़ी शुभ वेदी बनावे व चारही हाथके प्रमाणका एक तोरण उसके ऊपर धरे मध्यमें उसके एक कलश माषमात्र सोना धरके ३८ । ३९ व जलसे पूर्ण करके व नीचे छोटासा छेद करके स्थापितकरे नीचे काले मृगछालापर बैठाहुआ मनुष्य उस की बड़ी२ धारा रात्रिभर अपने शिरपर धारणकरे क्योंकि वेदवादी लोग ऐसी धारा धारण करनेका बहुत भारी फल कहते हैं जिससे कि ऐसाहै इससे हे कुरुश्रेष्ठ! प्रयतचित्त होकर ऐसा करे ४० । ४१ फिर दक्षिण ओर अर्द्धचन्द्र पश्चिम ओर गोलाकार उत्तर में पिप्पल के पत्ते के आकार ४२ मध्य में कमल के पत्रके आकार वैष्णवब्राह्मण

मूर्त्ति स्थापित करावे वेदीकी पूर्व ओर इन्द्रका स्थापन करे व दक्षिणओर यमराजको स्थापितकरे ४३ व जलकीधारा अपने शिर पर धारण करके श्रीविष्णुभगवान् का ध्यानकरे उस वेदीके किनारे दूसरी वेदी बनावे उसपर कर्णिकासहित कमल स्थापितकरे ४४ उसके मध्यमें स्थित पुरुषोत्तमभगवान्के शिरसे प्रणामकरे इसवेदी के निकट हाथभरके लम्बे चौड़े व गहरे तीन कुण्ड बनावे ४५ इन तीनोंमें नीचे योनिचक्र खींचे उसपर यव घृत और तिलोंसे ब्राह्मणों के द्वारा विष्णुदेवताके मंत्रों से अग्नि में हवनकरै ४६ उसपर वि-ष्णुदेवका यज्ञ कल्पितकरे मध्यमकुण्ड में तो यत्नसे घृतकी धारा छोड़े ४७ दूसरेमें दुग्धकी धारा भगवान् पर और तीसरे में जलकी धाराका प्रवाह अपने ऊपर करावे घृतकी धारा चारसेर पक्केसे कम न हो ४८ दुग्ध व जलकी धारा अपने मनसे चाहे जितनी बड़ी व भारी करे जलके कुम्भ वहां तेरह स्थापितकरे उनमें नानाप्रकारके भक्ष्य पदार्थधरे फिर उजलेवस्त्रसे आच्छादितकरे तीन गूलरके पात्रबनावे उनमें पञ्चरत्नडाले ४९। ५० ऋग्वेदोंकी ऋचापढ़ेहुये चार ब्राह्मणों से होमकरावे होमकरनेवाले ब्राह्मण सब उत्तरकोही मुखकरके बैठें चार यजुर्वेदी ब्राह्मण रुद्रमन्त्रका जापकरें ५१ सामवेदी चार ब्राह्मण सामवेदके वैष्णवमन्त्र पढ़ें इसप्रकार बारहो ब्राह्मणों की पूजा वस्त्र माला चन्दनाद्यनुलेपन ५२ अँगूठी पहुँची सुवर्णकी जंजीर पहिरने ओढ़ने बिछानेके वस्त्रोंसेकरे पर वित्तशाठ्य न करे ५३ इसप्रकार गीत मङ्गलादिकों से रात्रि बिताकर प्रातःकाल आचार्य्य को क्रमसे कम सबोंसे दूनी सामग्रीदे ५४ व हे कुरुश्रेष्ठ! जब बनाथ विमल प्रभात कालहो तब उठकर सुवर्णसे सींगें मढ़ाकर तेरह धेनु ब्राह्मणोंकोदे ५५ सब धेनु दुग्धवती व शीलवतीहों सबके लिये एक २ कांस्यपात्र की दोहनीहो सबके खुर चांदी से मढ़ेहों बछवासंयुक्तहों चन्दन से भू-षितहों ५६ ये सब धेनु व ब्राह्मण प्रथम भक्ष्य भोज्य पदार्थोंसे तृप्त कियेजायँ फिर ब्राह्मणों को अनेकप्रकार का एक २ छत्र दियाजाय ५७ फिर आप सैंधवलोन मिलाकर भोजन करे खारीलोन नहीं फिर पुत्रस्त्रीसंयुक्त भोजन कियेहुये ब्राह्मणों को आठपैर तक भेजने

जाय ५८ फिर प्रार्थनाकरे कि क्लेशनाशन देवेश केशवभगवान् प्रसन्नहों ऐसा कहकर वे सब कुम्भ सब धेनु शय्या ५९ व वस्त्र सब ब्राह्मणों के गृहों को पहुँचावे बहुत शय्या न हों तो एकही शय्या नानाप्रकार से भूषित सब सामग्री युक्त करके ब्राह्मण को देदें फिर वह दिन इतिहास पुराण सुनते सुनाते बितावे जो विपुल लक्ष्मी पानेकी इच्छाहो इससे हे भीमसेन! तुम अहंकाररहित सत्त्वगुणको धारणकर ६० । ६२ अच्छेप्रकार से इस गुप्त स्नेहसे मेरे कहेहुये व्रतको करो हे वीरभीमसेन! तुम्हारा कियाहुआ यह व्रत भीमद्वादशी के नामसे प्रसिद्ध होगा ६३ जो यह शुभा भीमद्वादशी सब पाप हरनेवाली है व जो पूर्व्वकल्पोंमें कल्याणिनी नाम व्रत पढ़ाजाता था ६४ हे महावीरों में श्रेष्ठ! तुम उस व्रतके करनेवाले इस वाराह कल्पमेंहो जिस व्रतका स्मरण कीर्त्तन करने से इन्द्रकेभी सब पापों का नाश हुआहै ६५ इसी व्रतके करने से उर्व्वशी सब अप्सराओं में श्रेष्ठहुई व स्वर्ग्ग में भी उसका बड़ा मान हुआ व इसी कल्याणिनी व्रत के करने से वैश्यकुल में उत्पन्न पुलोम की कन्या शची इन्द्रकी पत्नीहुई ६६ वहां हमारी प्राणप्रिया सत्यभामा इन्द्राणीकी सेवकी पूर्व्वजन्म में थी उसीके संग स्नान करने व कल्याणिनी व्रत के करने से हमको उन्होंने पति पाया ६७ व इस कल्याण तिथि में सूर्य्यनेभी बड़ा भारी दानकिया व इसका व्रतभी किया इससे वे सब से अधिक प्रकाशित रहते और ग्रहोंके पति हुये हैं ६८ इसी व्रतको किरोड़ों इन्द्रादि देवताओं और दैत्योंने किया है इससे जो मुखमें किरोड़ों जिह्वा हों तो भी इस व्रतका फल हम न कहसकें फिर औरों की क्या सामर्थ्य जो कहसकें ६९ यह अनन्तकल्याणिनी व्रत कलियुगके भी पापोंका विदारण करता है इससे श्रीकृष्णचन्द्रजी ने इसका बड़ाभारी माहात्म्य कहाहै जिसने इसका व्रतकिया वह नरक में गयेहुये भी अपने पितरोंके उबारने में समर्थ होजाता है ७० हे पापरहित! जो कोई इस कथाको भक्तिसे सुनता है वा परोपकार के लिये पढ़ता है वह यहां भगवान् का भक्त होताहै अन्तकालमें पूजनीय वैकुण्ठलोक में इन्द्रसे पूजा जाताहै ७१ जो पूर्व्वसमयमें माघ

मासकी शुक्लाद्वादशी तिथि कल्याणिनी कहाती थी उसी को इस वाराहकल्पमें भीमसेनने व्रत रहकर भीमसेनी एकादशी नाम रक्खा है इससे जो २ पुण्य कल्याणिनी के व्रतमें कहेगये हैं वे सब अनन्तपुण्य इस निर्ज्जला भीमसेनी एकादशी के भी हैं ७२ इतनी कथा सुनकर ब्रह्माजी फिर शिवजी से बोले कि हमने वर्णों व आश्रमोंकी उत्पत्ति पुराणों में अच्छेप्रकार सुनी व धर्म्मशास्त्र के अंगों से विस्तृत सदाचारभी हमने विधिपूर्व्वक सुना ७३ अब पुण्यात्मा स्त्रियों के समाचार तत्त्व से सुना चाहते हैं इतना सुनकर महादेवजी बोले कि हे ब्रह्मन्! उन पतिव्रता स्त्रियोंमें प्रथम कृष्णचन्द्रजी की स्त्रियों का वर्णन करते हैं हे ब्रह्मन्! श्रीकृष्णचन्द्रजी के एकही पुरमें सोलह सहस्र एकसौ आठ स्त्रियांथीं उन सबोंके संग वसन्त समय में जब कि कोकिला और भँवर पक्षी कूजने लगते थे ७४। ७५ व वन फूल उठताथा तड़ागके तीर कमलके फूल फूलआते थे तब अलंकार धारणकर विश्वात्मा मृगनयन यदुकुलश्रेष्ठ श्रीमान् श्रीकृष्णचन्द्र उन श्रेष्ठ स्त्रियों के संग विहार करने लगते थे उन मृगनयनियों के संग मालती के पुष्पोंका मुकुट शिरपर धरके श्रीहरि विहरते थे ७६। ७७ उसीसमय जाम्बवतीके पुत्र सब गहनोंसे भूषित साम्ब जोकि अत्यन्त रूपवान् थे एकदिन आ निकले इनके रूपमें व कन्दर्प्प के रूपमें कुछ भी अन्तर न था ७८ उन्हें देख जितनी कृष्णचन्द्रजीकी स्त्रियांथीं सब की सब कामबाणसे व्याकुलहो उनसे रति करानेकी अभिलाषा उन्होंने की व उनस्त्रियों के काम की वृद्धि हुई ७९ इसको देखकर श्रीकृष्णचन्द्रने दिव्यदृष्टि से विचारांश किया व सबोंसे कहा कि तुमलोगों को चोर हर लेजावेंगे ८० यह उनका निन्द्यकर्म्म जगन्नाथने प्रत्यक्षमें जानलिया तब सबोंको शापदिया उन सबोंने बड़ी प्रार्थनाकी क्योंकि शाप पाने से सब बहुत व्याकुल होगईं थीं तब भूतभावन शार्ङ्गधारी कृष्णचन्द्रजी ने कहा कि हमींने शाप दिया अब शापका मोक्ष हम नहीं बतासक्के तुम लोगों को उत्तरमें दासों के उद्धारकर्त्ता ब्राह्मणों के प्रिय अनन्तात्मा दाल्भ्य ऋषि मिलेंगे वे जो होनेवाले कल्याणकारक व्रतको कहें उस व्रतका

प्रमाण करना ८१ । ८३ इतना कहकर तिन स्त्रियोंको परित्यागकर भगवान् कृष्णचन्द्रजी तो अन्तर्द्धान होगये बहुत कालके पीछे जब पृथ्वीका भार उतारडाला ८४ मौशलके शेष लोहके लगनेसे केशव भगवान् स्वर्गको चलेगये सब यदुकुल शून्य होगया चोरोंने आकर अर्जुनको जीतकर ८५ यहां तक कि कृष्णचन्द्रजीकी सब स्त्रियों को भी उन चोरोंने हरलिया कि वे सब दासों के भोग करने के योग्य होगईं व नानाप्रकारके दुःख दुर्गति सहनेलगीं ८६ उसीसमय में योगी महातपस्वी दाल्भ्यनाम ऋषि वहां आये उन सबों ने अर्घ्य से मुनिकी पूजाकी व बार २ प्रणाम किया ८७ व बहुत उन के आगे रोदन किया व कृष्णचन्द्रजीके संग जो नानाप्रकारके भोग विलास किये थे दिव्यमाल्यानुलेपनादि कियाथा उनका स्मरण किया ८८ व जगत् के ईश अपने स्वामी अनन्त अपराजित कृष्णचन्द्रजीका स्मरण किया व दिव्य अनुभाववालीपुरी और नानाप्रकारके रत्न स्थानों का स्मरण किया ८९ व सब द्वारकावासियोंका स्मरण किया देवरूप जितने प्रद्युम्नादि पुत्र पौत्रादि थे सबों का स्मरण किया व मुनिके सम्मुख सबकी सब खड़ीहुईं व इस प्रश्नको करने लगीं ९० कि हे भगवन्! चोरोंने जबरदस्ती हम सब लोगों के संग भोग करकिया इससे हमलोगोंका धर्म्म च्युत होगया इस विषयमें आपहीको हमलोग शरणहैं ९१ हे ब्रह्मन्! पूर्वकालमें बुद्धिमान् केशवभगवान्ने आज्ञा भी दी थी कि दाल्भ्यमुनि तुम को मिलेंगे जो कहेंगे करना हा हम लोग परमेश्वर कृष्णचन्द्रका संयोग पाकर भी कैसे अब वेश्याओं के भावको प्राप्त हुईं ९२ हे तपोधन! अब जो वेश्याओंका धर्म्महो वह भी हमसे आप कहें इस बात को सुनकर एकचित्त होकर दाल्भ्यमुनि उनसे कहनेलगे ९३ दाल्भ्य जी बोले कि पूर्वजन्ममें अभिमानयुक्त तुमलोग मानससरमें जलक्रीड़ा कररही थीं कि उसी समयमें नारदमुनि वहां आये ९४ उस जन्ममें तुम सब अग्निकी कन्या अप्सरा थीं परन्तु मारे अहंकारके तुमलोगोंने मुनिके प्रणाम नहीं किया और योगी नारदजी से पूछा कि नारायणजी हमलोगों के स्वामी कैसे होंगे यह बतलाइये तब

नारदजीने तुमलोगोंको पूर्वकालमें वरदान भी दिया व शापभी ९५। ९६ उन्हींके वरदानके कारण वसन्तऋतु में तुमलोगोंने शुक्लपक्ष की द्वादशीको सुवर्णकी सब सामग्री और दो शय्या ब्राह्मणोंको दी थी ९७ इससे नारदजीने कहा कि अन्य जन्ममें नारायणभगवान् तुम्हारे भर्त्ता होंगे व रूप और सौभाग्यके अभिमानसे जिससे तुम लोगोंने हमारे प्रणाम नहीं किया ९८ इस से हम तुमलोगों से अ-प्रसन्न हुये व शाप देते हैं कि नारायण तुम्हारे पति तो होंगे पर अन्त समय उनसे तुम्हारा वियोग होजायगा व चोर तुम सबोंको हर ले-जायँगे तब तुम सब वेश्याके भावको प्राप्त होजाओगी ९९ इसप्र-कारके नारदजी व भगवान् केशवजीके शापसे तुम सब काममोहित वेश्याके भावको प्राप्तहुईहो १०० इससमय अब हम जो कहें उसको तुम लोग ग्रहण करो पूर्वकालमें जब देवासुर संग्राम हुआ था तब देवोंने सहस्रों असुरोंको मारडाला था १०१ वेहीसब इस समय दा-नव असुर दैत्य राक्षस हुये थे उनके सैकड़ों सहस्रों स्त्रियां हैं १०२ वे उनसबों में से जो व्याहीं थीं और जो जबरदस्ती भोगीगई थीं उनसे कहने वालोंमें श्रेष्ठ भगवान् कृष्णचंद्रजीने कहाथा कि १०३ अच्छा जिनके संग तुमलोगों ने भोग किया है वे सब वेश्याओंके धर्म्मको प्राप्तहोंगी और राजाओंकेगृहोंमें रहेंगी व जो भक्तियुक्त होंगी वे देवताओंके कुलोंमें उत्पन्न होंगी १०४ फिर भूतलमें आकर वेश्याहोंगी तब राजालोग उनको जीविका देंगे और शक्तिसे सबों की सौभाग्य होगी १०५ तुम लोगोंके यहां जो कोई द्रव्यलेकर आवे कपट और पाखण्ड छोड़कर प्रीतिभावोंसे उसकी सेवा करना १०६ व देवताओं और पितरों के पुण्य दिन रामनवमी जन्माष्टमी अमा-वास्या आदि तिथियों में शक्तिके अनुसार धेनु पृथ्वी सुवर्ण और धान्य देतीरहना १०७ और जिस व्रतको उपदेश करेंगे उसको सबतरह से करना ऐसा करने से संसारसागर को उतर जाओगी यह बात वेदवादियों ने कही है १०८ जब कभी सूर्य्यवासर को हस्त वा पुष्य वा पुनर्वसु नक्षत्रहो उसदिन सब ओषधियोंको मिला कर स्नान करना चाहिये १०९ क्योंकि उस तिथिमें काम सब कहीं

विद्यमान होजाता है सो वेश्याही नहीं सब स्त्रियों को चाहिये कि स्नानकरके कामकी पूजाकरें उसदिन अनङ्गके नाम ले २ कर पुण्ड- रीकाक्ष भगवान्की पूजा करनी चाहिये ११० उस पूजाका क्रम यह है कि कामाय नमः इससे भगवान् के चरणोंकी पूजाकरे मोहकारि- णे नमः इससे फीलियों की कन्दर्पनिधये नमः इससे लिंगकी पूजा करे प्रीतिमते नमः इससे कटिकी १११ सौख्यसमुद्राय नमः इससे नाभिकी वामनाय नमः इससे उदरकी हृदयेशाय नमः इससे हृदय की आह्लादकारिणे नमः हससेस्तनों की ११२ उत्कण्ठाय नमः इस- से कण्ठकी आनन्दकारिणे नमः इससे मुखकी पुष्पचापाय नमः इ- ससे वामकांधे की पुष्पबाणाय नमः इससे दक्षिण कांधे की ११३ मानसाय नमः इससे मुखकी विलोमाय नमः इससे बालोंकी सर्व्वा- त्मने नमः इससे शिरकी ११४ शिवाय नमः शान्ताय नमः पाशांकु- शधराय नमः गदिने नमः पीतवस्त्राय नमः शंखचक्रधराय नमः ११५ नारायणाय नमः कामदेवात्मने नमः नमश्शान्त्यै नमः प्रीत्यै नमो- रत्यै नमः श्रियै ११६ नमः पुष्ट्यै नमस्तुष्ट्यै नमस्सर्व्वार्थसम्पदे इन सब मंत्रों से कामरूपी श्रीनारायणकी पूजाकरे ११७ गन्ध माल्य धूप दीप नैवेद्यादिकोंसे पूजाकरनी चाहिये तदनन्तर वेदपारगन्ता धर्मशास्त्रपाठी सर्वांगयुक्त ब्राह्मणको बुलाकर गन्धपुष्पादिकों से पूजाकरे फिर पसेरी भर चावल कुछघृत मिलाकर ११८ । ११९ उसे देनाचाहिये देने के समय कहे कि इसदान से माधव प्रसन्नहों इसप्रकार उत्तम ब्राह्मणको अच्छीतरह भोजन करावे १२० व यह भी चित्तमें धारणकरे कि इस से रति व कामदेव भी प्रसन्नहों जो जो ब्राह्मण इच्छा करे वह वह कर्म्म स्त्रीको करनाचाहिये १२१ मु- ख्यकरके वेश्याको तो चाहिये कि सब भावसे अपने को उसके स- मर्प्पणकरदे व उसके सम्मुख मधुर वचन बोले इसप्रकार रविवार को सदा ऐसाही करे १२२ जब तक तेरहमास न बीतें पसेरी २ भर चावल प्रति रविवार को ब्राह्मणको देतीरहे फिर जब तेरहवांमास आवे १२३ तो ब्राह्मणको सब सामग्रीसहित उत्तम एक शय्यादा- नदे शय्या बिस्तर तकिया ओढ़ने पहिनने के वस्त्रों से युक्त होनी

चाहिये १२४ दीवट जूता छाता खराऊँ आसन भी उसके संग चाहिये ब्राह्मण भी सपत्नीक होना चाहिये इसलिये स्त्री पुरुष दोनोंके जंजीर सोनेकी अँगूठी १२५ पहुँची रेशमी वा और महीने वस्त्र व नानाप्रकार के धूप और अनुलेपनों से पूजना चाहिये व सपत्नीक कामदेव की मूर्त्ति गुड़युक्त कुम्भके ऊपर स्थापितकरे १२६ ताम्रके पात्रपर आसन करावे व सुवर्णयुक्त वस्त्रसे आच्छादितकरे कांस्यके पात्र भोजन बनाने व करने के लिये देने चाहिये ऊषभी अवश्य चाहिये १२७ व लागती हुई एक गायभी ब्राह्मणको दे मंत्र यह पढ़े कि हम काम व केशवमें जैसे सदैव कुछ अन्तर नहीं देखतीं १२८ वैसेही हे ब्राह्मण! हमारे सब कामोंकी सदैव सिद्धिहो ऐसेही कांचन पुरुष श्रेष्ठब्राह्मण ग्रहण करै १२९ कांचनपुरुषके दानमें कोदात्कामोदादित्यादि वैदिकमन्त्रपढ़े तदनन्तर प्रदक्षिणाकरके ब्राह्मणका विसर्ज्जनकरे १३० शय्या आसनादि सब ब्राह्मणके गृहमेंपहुँचादे फिर तबसे जब कोई मैथुन करनेकेलिये उस व्रतकरनेवाली वेश्याके गृहमें आवे १३१ उसकी पूजा उसकी इच्छाके अनुकूल सदैव करतीरहै विशेष करके रविवारको इसप्रकार जबतक तेरहवांमास न हो प्रतिमास एक उत्तम ब्राह्मणको १३२ यथाभिलषित कामोंसे तृप्तकरतीरहै व उसके मन्दिर को सब सामग्री भेजतीरहै व उसकी आज्ञासे जब कभी वह नआवे तो औरही रूपवान् पुरुषकेसंग भोग करालिया करे १३३ व जब कभी सूतक व रजोधर्म्म के कारण समयमें कुछ विघ्न होजाय वा देवता मनुष्यादि का कियाहुआ कोई विघ्नहो व ग्रहणादि का सूतकहो १३४ तो अट्ठावन कोपर यथाशक्ति अन्नसे पूरितकरके ब्राह्मणको देदे यह तुम सबों के धर्म्मका व्रत हमने विशेष रीति से कहा १३५ इसी धर्म्मपर सब वेश्याओंको चलना चाहिये इससे तुमलोगभी इसीधर्म्मपर चलो फिर मधुसूदन भगवान् से प्रार्थना करतीरहो कि हे भगवन्! जैसे तब कभी हमारी शय्या शून्य नहीं रखतेथे १३६ ऐसेही इसशय्याके दानसे कभी हमारी शय्या शून्य न रखिये यह कहकर देवदेव नारायण के निमित्त गाना बजाना चाहिये १३७ यह व्रत हमसे पूर्व्वकालमें इन्द्रने दान-

वियों से कहा था १३८ वही वेश्याधर्म्म हमने आपलोगों से कहा ॥
चौ० सर्व्वपापनाशनफलदायक। कल्याणिनीयुवतिमनभायक ॥
यह वेश्याव्रतसुभगबखाना । जाहिप्रसन्न होतभगवाना ॥
जोयहकरतपरमहितकारी । कल्याणिनीयुवतिप्रियधारी ॥
माधवपुरबसिदेवनपूजित । ह्वैपुनिलहतसकलसुखभूजित ॥
जोअनंगव्रतकरिहैंनारी । करिसुख भोगमनो हितकारी ॥
हरिपुरजैहैंअतिअनुरागा । होइहितिनकहँसुभवविरागा १३९।१४२
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेवेश्याव्रतकथनन्नामत्रयोविंशोऽध्यायः२३

चौबीसवां अध्याय ॥

दो० चौबिसयेंमहँअंगारकचौथिकेर व्रतऔर ॥
शुभमहिमाताकीविधिहु कहमुनिकरिकैगौर १

ब्रह्माजीने फिर महादेवजी से पूँछा कि हे भगवन्! जिस व्रत के करने से स्त्री व पुरुष दोनों को वरदान मिले व शोक व्याधि भय और दुःखजिससे न होवे ऐसा कोई और भी व्रत हम से कहिये १ महादेवजी बोले कि श्रावणके कृष्णपक्षकी द्वितीयाको मधुसूदन भगवान् क्षीरसागर में लक्ष्मीसहित सदाबसते हैं २ उस तिथिमें गोविन्दजीकी पूजाकरके पुरुष सबकामोंको पाता है गो पृथ्वी सुवर्णादि सब दान उसदिन देने चाहिये ३ आवाहनादिक पूजा पूर्व्ववत् सब करनीचाहिये इस द्वितीयाका अशून्यशयनी नाम है ४ उसमें इन मन्त्रोंसे विधिपूर्व्वक विष्णुभगवान् की पूजाकरे व हे श्रीवत्सधारिन्! हे श्रीकान्त! हे श्रीपते! हे श्रीधर! हे अव्यय! ५ मेरा गृहस्थाश्रम नष्ट न हो क्योंकि धर्म्म अर्थ काम इसीसे होते हैं हे पुरुषोत्तम! हमारे अग्नि न नष्ट हों व न देवता कभी नष्टहों ६ व स्त्री पुरुषके भेदसे पितरलोग भी न नष्टहों जैसे देव श्रीनारायण कभी लक्ष्मीसे पृथक् नहीं होते ७ वैसेही हे वरदाता देव! हमारे स्त्रीसम्बन्धका वियोग न हो जैसे तुम्हारा शयन कभी लक्ष्मीसे शून्य नहीं होता ८ हे मधुसूदन! ऐसेही हमारी शय्या सदा अशून्य रहे ऐसी प्रार्त्थना करके फिर श्रीनारायणके आगे गीत वादित्र के स-

द्दोंको करावै ९ यदि अन्य बाजे न हों तो घण्टाको बजाये क्योंकि वह सर्ववाद्यमयी होती है इस प्रकार श्रीगोविन्दजीकी पूजाकरके तैलवर्जित अन्यपदार्थ भोजन करे १० सो भी रात्रि में सैन्धव-लोन मिलाकर अन्न भोजनकरे इसप्रकार चातुर्म्मास्यमें व्रत करता रहे जब रात्रि बीतजाय प्रभातसमय आवे तो पति संयुत लक्ष्मीजी की पूजाकर ११ व दीप अन्न और बर्तनयुक्त विलक्षण शय्या दानकरे शय्याके संग खराऊं जूता छाता चामर आसन भी दे १२ व जो २ पदार्थ अपने को इष्टहों सब शय्याके संग दानकरे व शुक्लफूलों और वस्त्रोंसे आच्छादित करे वह शय्या वैष्णव कुटुम्बी सर्व्वांगपूर्ण वेद शास्त्र पढ़ेहुये ब्राह्मणको दे सन्तानहीन ब्राह्मणको कभी न दे फिर वहां स्त्री पुरुष दोनों को बैठाकर विधिसे गहने पहनाकर १३।१४ व भक्ष्य भोज्य पदार्थ संयुक्तवर्त्तन स्त्रीको देवे व ब्राह्मणहीको सुवर्ण की परमेश्वरकी मूर्त्तिबनवाकर सब सामग्री समेत दे उसके संग जल से पूर्ण एकमृत्तिका वा, ताम्र, कांस्यका घड़ा दे इसप्रकार जो पुरुष श्रीहरिका अशून्यशयन व्रत करता है १५।१६ व करने के समय वित्तशाठ्य नहीं करता व नारायणमें परायण होताहै उसकी स्त्रीका वियोग कभी नहीं होता १७ चाहे सधवा स्त्री हो वा विधवाहो जो इस व्रतको रहे जबतक चन्द्रमा सूर्य्य व नक्षत्र रहेंगे तबतक न उसको कहीं कुछ शोकहो न विरूपताहो न स्त्री पुरुष में कभी बिगाड़ हो व पशु पुत्र रत्नादि न कभी उसके क्षय होते हैं जो पुरुष वा स्त्री अशून्यशयन व्रत करता है सप्तसहस्र सातसौ कल्प पर्य्यन्त विष्णुलोकमें जाकर पूजित होता है अशून्यशयनव्रतका विधान सुनकर ब्रह्माजी फिर बोले कि हे शिव ! आरोग्य ऐश्वर्य्य कैसे होताहै व धर्म्म में सदामति कैसे होती है १८।२० व विष्णुभगवान् में अव्यङ्ग भक्ति कैसे होती है महादेवजी बोले कि हे ब्रह्मन् ! तुमने अच्छा प्रश्नकिया हम अभी तुमसे कहते हैं २१ इस इतिहासमें बुद्धिमान् भार्गवमुनि व दैत्यराज विरोचन का संवाद है एक समय प्रह्लाद के पुत्र विरोचन को सोलह वर्षकी अवस्था में देखकर २२ भार्गव मुनि बहुत हँसे व कहा कि हे महाबाहु विरो-

चन! अच्छा २ क्यों न हो आपका कल्याणहो २३ उनका वैसा हँसना देखकर विरोचनने पूँछा कि हे ब्रह्मन्! आप अकस्मात् क्यों हमको हँसे २४ हमको आपने अच्छा २ बहुत कहा इसका कारण अवश्य बतावें जब ऐसा विरोचन ने कहा तो बोलनेवालों में श्रेष्ठ शुक्राचार्य्य बोले कि २५ विस्मययुक्त माहात्म्यके कारण हमने यह हास्य कियाहै सो सुनो वह यहहै कि पूर्व्वकालमें दक्षकी यज्ञ नाश करनेके लिये कोप कियेहुये श्रीमहादेवजी के २६ ललाटसे पसीना का एकबूँद गिरा उसने सात पातालसहित सातों सागरोंको जला-दिया २७ उससे अनेक मुख और नयनवाले प्रकाशित अग्नि के समान भयानक लाखोंकर चरण समेत वीरभद्रनाम शम्भु पार्षदों के अधिप उत्पन्नहुये २८ वे दक्षयज्ञ का नाश करके फिर भूतल में विचरनेलगे व उन्होंने तीनों लोकोंके जलादेनेका विचारकिया तब शिवजीने रोंका २९ व कहा कि हे वीरभद्र! तुमने दक्षयज्ञका विध्वंस किया अब इस लोकभस्मकरण कर्म्मका कुछ भी प्रयोजन नहीं है ३० अब सबको शान्तिदान करो महादेवजी ने कहा हर्षित होकर मनुष्य तुम्हारी पूजा करेंगे ३१ व हे धरात्मज! पृथ्वीतलपर अंगा-रक इस नामसे प्रसिद्धहोगे यह अंगारक मंगलजीका नामहै व देव-लोकमें तुम्हारा दूसरारूप होगा ३२ इससे जो कोई मनुष्य चतुर्थी के दिन तुम्हारी पूजाकरेंगे व रूप आरोग्य ऐश्वर्य्य अनन्त पावेंगे ३३ ऐसा कहनेपर कामरूपी वीरभद्र शान्तरूप होगये व तुरन्त ग्र-हत्वको प्राप्त होगये ३४ एक समय महादेवजी ने देखा कि उनकी पूजा और उत्तम अर्घादिक कोई शूद्र बदलाई पर कर रहा है ३५ उसी शूद्रकी पूजा के कारण शत्रुकुल के वज्ररूप असुर तुम होगये व विविधप्रकार की तुम्हारी रुचि हुई ३६ इसीसे देवता व दानव तुम्हारा विरोचननाम कहते हैं तुम्हाराव्रत हमने देखा कि शूद्रही करता है ३७ तौभी ऐसी रूप सम्पत्ति है इसीसे हम विस्मित हैं व इसीसे हमने साधु साधु कहा कि क्या उत्तम माहात्म्य है ३८ कि देखतेही देखते ऐसा अद्भुतरूप है व करनेपर कैसा ऐश्वर्य्य होगा जिससे कि भक्तिसे मंगलजीके दान ऐश्वर्य्यके आगे औरोंके दाना-

दिककी निन्दाहुई ३९ व देखनेसेही हे दैत्यराज! तुम दानवाधिप हुये इससे हमको बड़ा आश्चर्य्यहुआ महात्मा भार्गवके ऐसेवचन सुनकर ४० प्रह्लाद के पुत्र विरोचन फिर भार्गवजी से बोले कि, हे भगवन्! वह व्रत अच्छेप्रकार हम तत्त्वसे श्रवण किया चाहते हैं ४१ व उस व्रतके लिये जो दानदिया जाता था उसे हमने जन्मान्तरमें देखाथा अब उस व्रतका माहात्म्य व विधि विधिपूर्वक हमसे कहो ४२ ऐसा उनका वचन सुनकर भार्गवजी बोले कि हे दानव! जबकभी चतुर्थी के दिन मंगलवार हो तो ४३ मृत्तिका लगाकर स्नानकरे व पद्मरागमणि धारण करे अग्निर्मूर्द्धादिवः इसमन्त्रको जपताहुआ उत्तर को मुखकरके स्नानकरै ४४ व शूद्र व्रत करता हो तो वह मौनहोकर मंगलदेवका स्मरण करे व भोगविलासकी कोई वस्तु न भक्षणादिकरे दिनभर व्रत करके सूर्य्यास्त समय में गोबर से भूमिलीपै ४५ फिर उस लिपीहुई अँगना की भूमिमें पुष्पमाला अक्षत जलादिसे चारोंओरसे युक्तकरे फिर अच्छीतरह स्वच्छ करके कुंकुमसे अष्टदलकमल वहां लिखे ४६ कुंकुम न हो तो रक्त चन्दन से लिखे फिर भक्ष्यभोज्यसे युक्त करके चारकरवा वहां स्थापितकरे ४७ उन में लाल शालीके चावल और पद्मरागमणिभरे इन चारों करवों को चारों कोणों में स्थापितकरे व विविधप्रकारके फल भी उनपरधरे ४८ गन्धमाल्यादिक भी सब उसीप्रकारसे उनपर स्थापित करे फिर एक कपिलाधेनु की सींगें सुवर्ण से मढ़ाकर व खुर चांदी से कांस्यपात्र की दोहनी और वस्त्र समेत ४९ सप्तधान्य सहित वहां खड़ीकरे फिर अंगुष्ठमात्र विस्तृतभुजायुक्त चतुर्भुजी सुवर्णकी मूर्त्ति ताम्रके पात्र में गुड़भरके उसके ऊपर स्थापितकरे व थोड़ासा घृत भी उसी पात्रमें भरे यह सब धेनु मूर्त्यादि सामग्री सामवेदपाठी जितेन्द्रिय वचनरूपशीलयुक्त उत्तम वंश में उत्पन्न ५०।५१ कुटुम्बी दम्भहीन ब्राह्मण को देनी चाहिये हे भूमिपुत्र! हे महाभाग! तुम महादेवके पसीनेसे उत्पन्नहो ५२ रूप पानेकी इच्छा से तुम्हारे शरण में आयाहूँ अर्घ्य को ग्रहणकरो तुम्हारे नमस्कार हैं इस मन्त्रसे रक्तचन्दन मिलेहुये जलसे अर्घ्य देकर ५३ फिर

रक्तवस्त्र रक्तपुष्पादिकों से श्रेष्ठ ब्राह्मणकी पूजाकरे फिर तिसी मन्त्र से गाय बैल सहित मंगलकी मूर्ति उसी ब्राह्मण को दे ५४ शक्ति हो तो सब सामग्रीसमेत शय्या भी उसी ब्राह्मणको दे इसके विशेष जो २ पदार्थ लोकमें इष्टतमहों और जो घरमें उसके प्रियहों ५५ वह सब दानकी अक्षय इच्छा करनेवाला मनुष्य गुणवान् को देवे फिर प्रदक्षिणा कर श्रेष्ठ ब्राह्मणको विसर्जन कर ५६ रात्रि में दूध भोजन करे इसप्रकार सब आठ २ मंगलके लिये दे अथवा चार २ इस दानसे जो फल होताहै तुमसे कहतेहैं ५७ करनेवाला जन्म २ में रूप सौभाग्ययुक्त होता है विष्णु वा शिवका भक्त होता है व सप्त द्वीपभर का स्वामी होता है ५८ व पीछे सप्त सहस्र कल्पतक रुद्रलोकमें जाकर पूजित होताहै तिससे हे दैत्येन्द्र! तुमभी यह व्रतकरो ५९ जब भृगुनन्दन ने ऐसा कहा तब दैत्यने यह सब व्रत किया हे राजन्! तुम भी इस व्रतको करो क्योंकि वेदवादीलोग इस व्रतको अक्षय कहते हैं ६० जो कोई अनन्यचित्त होकर इसे सुनता है उसको भी भगवान् सब कुछ देते हैं ६१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेअंगारक
चतुर्थीव्रतंनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

दो० पचिसें आदित्य शयन व्रत अरु ताकेरविधान ॥
उत्तम महिमा और फल कहमुनि करिकैध्यान १

इतनी कथा श्रवण करके भीष्मजी ने फिर प्रश्न किया कि जो प्राणी उपवास करने में अशक्त है व फल उपवास करनेवाले का चाहता है वा किसी को व्रतकरने का अनभ्यास है अथवा रोगके कारण व्रत नहीं करसक्ता तो बताइये कि वह कौनसा इष्टव्रतकरे १ पुलस्त्यजी बोले कि जो लोग उपवासकरने में अशक्त हैं उनको नक्तव्रत करना चाहिये चाहे जो व्रतहो नक्तव्रत करनेसे वही फल होता है २ इसी नक्तव्रतका आदित्यशयन भी नामहै इसमें शंकर की पूजा करनी चाहिये यह व्रत नक्षत्रों के योगसे भी होताहै पुराण

के जाननेवाले लोग ऐसाभी कहते हैं ३ जब सप्तमी को हस्तनक्षत्र हो व उसी तिथिमें रविवार हो वा सूर्य्यकी संक्रान्तिहो यह तिथि सब कामना देती है ४ सूर्य्य के नामों से पार्व्वती महादेव की पूजा इस में करनी चाहिये सूर्य्यकी मूर्त्ति व शिवलिङ्गकी पूजा भी होसक्ती है ५ क्योंकि उमापति व रविमें कुछभी भेदनहींहै तिससे गृहमें भानु की पूजा करनी चाहिये ६ सूर्य्याय नमः इससे जब हस्तके सूर्य्य हों तो चरणों की पूजा करनी चाहिये अर्काय नमः इससे जब चित्रा के सूर्य्यहों तो गुल्फोंकी पूजा होनीचाहिये जब स्वाती में सूर्य्य हों तो पुरुषोत्तमाय नमः इससे पीलियोंकी जब विशाखा के सूर्य्य हों तो धात्रेनमः इससे जंघाओंकी ७ जब अनुराधाके हों तो भी धात्रेनमः इसीसे स्तनों की पूजा सहस्रलोचनायनमः इससे दोनों हाथोंकी पर यह भी अनुराधाके सूर्य्य में जब ज्येष्ठामें हों तो अनंगायनमः इससे गुह्यकी पूजा जब मूलमें हों तो भीमायेन्द्रायनमः इससे कटिकी ८ जब पूर्व्वाषाढ़ा वा उत्तराषाढ़ाके सूर्य्य हों तो क्रम से त्वष्ट्रेनमः सप्ततुरंगमायनमः इन दोनोंसे नाभिकी जब श्रवणके सूर्य्यहों तो तीक्ष्णांशवेनमः इससे कुक्षिकी जब धनिष्ठा के हों तो विकर्त्तनायनमः इससे दूसरी कुक्षिकी ९ जब शतभिषाके हों तो ध्वान्तविनाशनायनमः इससे वक्षस्स्थलकी जब पूर्व्वाभाद्रपदा व उत्तराभाद्रपदा के सूर्य्य हों तो भानवेनमः इससे बाहोंकी १० जब रेवतीके हों तो साम्नामधीशायनमः इससे करद्वयकी पूजाकरे जब अश्विनीके हों तो सप्ताश्वधुरन्धरायनमः इससे नखोंकी ११ जब भरणीके सूर्य्य हों तो दिवाकरायनमः इससे कण्ठकी पूजाकरे जब कृत्तिकाके सूर्य्य हों तो अधरस्फुटायनमः इससे ग्रीवाकी पूजा करे व जब रोहिणीके हों तो मार्त्तण्डायनमः इससे नीचेके ओष्ठकी १२ व जब मृगशीर्षके हों तो तपनायनमः इससे ऊपरके ओष्ठकी जब आर्द्राके हों तो हरयेनमः इससे दांतों की पूजाकरे जब पुनर्व्वसु के हों तो सवित्रेनमः इससे नासिका की पूजाकरे १३ जब पुष्यके हों तो अम्भोरुहवल्लभायनमः इससे ललाटकी जब आश्लेषाके हों तो वेद शरीरधारिणेनमः इससे शिर के बालोंकी जब मघाके हों तो

विबुधप्रियायनमः इससे कानोंकी पूजाकरे १४ जब पूर्वाफाल्गुनियोंमें हों तो गोब्राह्मणनन्दनायनमः इससे नेत्रोंकी पूजाकरे जब उत्तराफाल्गुनियों के हों तो भौंहोंकी पूजा विश्वेश्वरायनमः इससे करे १५ इसप्रकार सब नक्षत्रोंके क्रमसे शिवकी पूजाकरके फिर यह मन्त्रपढ़े कि (पाशांकुशपद्मशूलकपालसर्पेन्दुधनुर्द्धराय गयासुरानङ्गपुरान्धकादिविनाशमूलाय शिवायनमः) १६ इत्यादि से सब अंगोंकी पूजा करके विश्वेश्वरायनमः इससे शिरकी पूजाकरे फिर जो कुछ भोजनकरे तैल मांस क्षार लवणरहित और जूंठा न हो १७ इस प्रकार नक्तव्रत करके पुनर्वसु में प्रस्थमात्र तण्डुल गूलर घृतसहित १८ पात्र में भर सुवर्णसहित करके ब्राह्मण को दे दे सातवें पारण में वस्त्र भी दे फिर पारण करने व करानेका विचारकरे जब चौदहवां पारणका समय आवे तो भक्तिसे ब्राह्मण भोजन करावे गुड़ दुग्ध घृतादि मिश्रित पदार्त्थ खिलावे १९।२० फिर आठ पत्र व आठ पखुरियोंसहित सोने का कमल आठ अंगुलका बनवाकर पद्मराग मणि सहित २१ व बहुत सुन्दरी शय्या बनवाकर तकिया चँदवा बिस्तर पंखा २२ खराऊं जूता छाता चामर आसन दर्प्पण व नाना प्रकारके भूषणों व फल वस्त्र चन्दनाद्यनुलेपन से युक्त करके २३ उसीके ऊपर उस कमल को धरके फिर एक कपिला धेनु दूधरूप शीलादिसहित वस्त्रसे आच्छादित करके २४ चांदीसे खुर व सुवर्ण से सींग मढ़ाकर बछड़ासहित कांस्यपात्रकी दोहनी बनाय यह सब सामग्री मन्त्रसे ब्राह्मण को देदे पर मध्याह्नके पूर्वेही और दे फिर प्रार्त्थनाकरे कि २५ हे आदित्यशयन ! तुम्हारा सदा जैसे अशून्यहै कान्ति धारणा लक्ष्मी पुष्टि कभी तुमसे वियुक्तनहीं हैं तैसे मेरे वृद्धि हो २६ जैसे आचार्य्योंने तुमसे अधिक कल्याणकारी व पापरहित देव नहींकहा तैसेही हमको सब संसारसागरके दुःखोंसे उबारो २७ फिर प्रदक्षिणा व प्रणामकरके विसर्ज्जन करे शय्या धेनु आदि सब ब्राह्मणके गृहको पहुँचावे २८ यह महादेवजी का व्रत शीलरहित व दाम्भिकोंसे न कहनाचाहिये व जो गो विप्र देवता ऋषि व उत्तम कर्म्मोंकी अधिक निन्दा करताहो उससे भी न कहे २९ किन्तु जो

शिव वा विष्णुका भक्तहो उसेदे व उसीसे यह गुप्त व्रतविधान प्रकाशितकरे क्योंकि वेदवादीलोग इसे महापापियों के लिये भी अक्षय पुण्य देनेवाला आनन्द करनेहारा और कल्याणकर्त्ता कहते हैं ३० व जो स्त्री इसे भक्तिसे करती है वह बन्धु पुत्रों और धनसे नहीं वियुक्त होती है व यह देवताओंको भी आनन्दकर्त्ता है वह स्त्री रोग दुःख और मोहको नहीं प्राप्त होती है ३१ इस व्रतको पूर्व्व समय में वसिष्ठ अर्ज्जुन कुबेर व इन्द्रने भी कियाथा यह सब पापों को नाशता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है ३२ यह आदित्यशयन व्रत जो कोई पढ़ता है वा सुनता है वह इन्द्रको प्रिय होता है व जो उसके पितरनरकमें भी पड़ेहों तोभी उन सबको स्वर्गभेजदेता है ३३ पिप्पल वट उदुम्बर प्लक्ष जम्बुवृक्ष व बिल्व इनको महर्षिलोगोंने मार्ग्गशीर्षादि दो २ मासोंमें क्रमसे देनेको कहा है व इन्हींकी दन्तधावन करनीचाहिये ३४ । ३५ जब व्रत समाप्तहो तो दही भात व वितान ध्वजा चामर दे व ब्राह्मणों को पंचरत्न संयुक्त जलकुम्भदे ३६ पर वित्तशाठ्य न करे जो करता है वह दोषों को पाताहै ३७ ॥

इति श्रीपद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादेआदित्यशयन व्रतन्नामपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

दो० छब्बिसयें महँ रोहिणी चन्द्रशयन व्रतनाम ॥
उत्तममहिमा अरुविधि कहमुनि अघिफललाम १ ॥

भीष्मजीने फिर पुलस्त्यमुनिसे पूंछा कि दीर्घायु आरोग्य कुलवृद्धिरूप व कुलीनतासे पुरुप कैसे युक्तहोताहै व बार२ जन्मपाकर कैसे आनन्दितरहताहै इसविषयका जो चन्द्रमाका कोई व्रत आप जानते हों तो हमसे वर्णनकरें पुलस्त्यमुनि बोले कि तुमने जो पूंछाहै वह अक्षय स्वर्गकरनेवाला व गोप्य एकव्रतहै वह हम कहेंगे उसे सब पुराणवादी लोग कहा करते हैं २ इस विषयमें रोहिणीचन्द्रशयन नाम व्रत कहा गया है इसमें चन्द्रमाके नामोंसे नारायणकी मूर्त्तिकी पूजा करनीचा-

हिये३ जब कभी सोमवारके दिन पौर्णमासीहो तो अथवा पौर्णमासी को कभी रोहिणी नक्षत्रहो४तब विद्वान् पुरुषको चाहिये कि पंचगव्य में सरसों मिलाकर स्नानकरे फिर आप्यायस्व यह मन्त्र आठसौ बार जपै ५ शूद्रभी श्रेष्ठ भक्तिसे इस व्रतको कर सक्ता है पर पाखण्डियों से आलाप न करे क्योंकि उनसे वार्त्ता करनेसे व्रतभंग हो जाता है सोमायनमः । वरदायनमः । विष्णवेनमोनमः ६ इस मंत्र को जपकर घरमें आकर फिर मधुसूदन भगवान् की पूजाकरे पूजा फल पुष्पादिकोंसे जैसी कही है वैसीकरे पर नाम चन्द्रमाके कीर्त्तन करे ७ सोमायनमः । शांतायनमः । इससे श्रीहरिके दोनों चरणारविंदोंकी पूजाकरे अनन्तधाम्नेनमः। इससे फीलियोंकी जलोदरायनमः । इससे दोनों जांघोंकी अनंगधाम्नेनमः। इससे लिंगकी पूजा करे ८ कामसुखप्रदायनमः । इससे कटिकी सदा पूजाकरे अमृतोदरायनमः । इससे उदरकी शशांकायनमः । इससे नाभिकी ९ चन्द्रायनमः । इससे भी मुखकीही पूजाकरे द्विजानामधिपायनमः। इससे दांतोंकी पूजाकरे चन्द्रमसेनमः । इससे जिह्वाकी कौमोदवनप्रियायनमः । इससे ओष्ठोंकी १० वरौषधीनान्नाथायनमः । इससे नासिकाकी आनन्दबीजायनमः । इस से फिर भृकुटियों की इन्दीवरव्यासकरायनमः। इस से कमल समान दोनों नेत्रों की ११ समस्ताध्वरपूजितायनमः। इससे दोनों कानोंकी दैत्यनिषूदनायनमः। इस से ललाटकी उदधिप्रियायनमः। इस से केशों की १२ शशांकायनमः। इस से श्रीमुरारिके शिरकी पूजाकरे विश्वेश्वरायनमः। इस से किरीट की रोहिणीके पद्मप्रिय लक्ष्मी सौभाग्य सुख और अमृत के सागर की पूजाकरै १३ इसप्रकार गन्ध पुष्प नैवेद्य धूपादिकों से चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी कीभी पूजा करे इसप्रकार पूजनादिव्रत करके रात्रि में पृथ्वी परही शयन करे पर्य्यङ्कादिकों पर नहीं आप भी उसदिन पूरी खीर आदि हविष्यान्न भोजन करे व ब्राह्मण को भी करावे १४ प्रातःकाल सुवर्ण समेत जलकुम्भ ब्राह्मण को दे पापविनाशनायनमः । इस से ब्राह्मण की पूजाकरे प्रथम प्रातःकाल होतेही गोमूत्र पानकरे मांस व क्षार लवण यत्नसे

त्यागे प्रथम अट्ठाईस कवल भोजन करे १५ उन में तीन कवल केवल घृतमें सानकर इसप्रकार पारण करके फिर मुहूर्त्तमात्र इतिहास वा पुराण की कोई कथा श्रवणकरे कदम्ब नीलकमल केतकी जाति सरोज कुब्ज १६ सिन्दुवार मल्लिका श्वेत कँदैल व चम्पक ये सब पुष्प चन्द्रमा को चढ़ाने चाहियें १७ श्रावणादि मासों में ये पुष्प क्रम से सदैव चढ़ाने चाहियें जिसमास में पूजा हो उसमें उसी मासवाले पुष्पों से भगवान् की पूजा करनी चाहिये १८ यह व्रत एक वर्ष तक करना चाहिये व्रत के अन्त में सब सामग्री सहित शय्या दानकरे १९ सुवर्णकी रोहिणी व चन्द्रमाकीमूर्त्ति बनवावे उसमें चन्द्रमा की मूर्त्ति ६ अंगुलकी व रोहिणी की ४ अंगुल की २० रोहिणीकी मूर्त्ति में ८ मोती जड़ने चाहियें व नेत्रभी उज्ज्वल बनाने चाहियें यह मूर्त्ति दुग्ध भरे हुये कलश के ऊपर स्थापित होनी चाहिये कलश कांस्यकाहो अक्षत ऊख और फल संयुक्तकर मन्त्रसे पूर्वाह्ण में ब्राह्मण को दें वस्त्रदोहनी सहित सोने के मुख और चांदी के खुरयुक्त एक धेनुभी हो व एकशङ्ख व बरतन व स्त्री पुरुषों के भूषणों से एक गुण युक्त स्त्री पुरुष ब्राह्मणी ब्राह्मण की पूजा करनी चाहिये २१ । २३ यह सब सामग्री रोहिणी चन्द्ररूप उस ब्राह्मणी ब्राह्मणको देनी चाहिये फिर यह मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करनी चाहिये कि हे कृष्ण ! जैसे रोहिणी कभी तुम्हारे शयनको नहीं त्याग करती २४ क्योंकि आप चन्द्ररूपहो ऐसेही विभूतियों से कभी हमारा भेद न हो जैसे तुम्हीं सब परमानन्द मुक्तिके दाता हो २५ ऐसेही भुक्ति मुक्ति व तुममें हमारी दृढ़ भक्ति सदा बनीरहे संसार से डरेहुये पुरुष के लिये व मुक्तिकी कामना किये हुये प्राणी के अर्थ २६ यह उत्तम व्रतरूप आरोग्य आयुष्य देता है यह व्रत पितरों को भी सदा प्रिय है २७ जो कोई इस व्रतको करता है वह तीनों लोकों का स्वामी होकर तीनसौ सातकल्प तक चन्द्रलोकमें बसता और वहां से फिर नहीं लौटता है २८ व जो कोई स्त्री इस रोहिणी चन्द्रशयननामव्रत को करतीहै उसको भी वही फल मिलता है व चन्द्रलोक से कभी पतित नहीं होती २९ चन्द्रमाके नामों

से श्रीनारायण के पूजन की कथा जो कोई कीर्त्तन करताहै वा सुनताहै वा बुद्धि देताहै वह वैकुण्ठमें बसकर देवोंसे पूजित होताहै२०॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादेरोहिणीचन्द्रशयन व्रतन्नामषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

दो० सप्तविंश अध्याय महँ वापी कूप तड़ाग ॥
इन्हेंआदि उत्सर्ग कह मुनिपुलस्त्य वरभाग १

इतनी कथा श्रवण करके फिर भीष्म जीने पुलस्त्य जी से प्रश्न किया कि तड़ाग वाटिका कूप वापी नहर व देवमन्दिर इनके बनाने लगाने प्रतिष्ठा उत्सर्गादि करने का विधान हमसे कहिये १ इन कार्यों में कितने २ व कैसे ब्राह्मण होने चाहियें व वेदी कैसी बनानी चाहिये दक्षिणा कौन वस्तु देनी चाहिये बलि, काल, स्थान, और आचार्य कैसा होना योग्यहै २ द्रव्यकौन अच्छीहै हे अच्छे व्रत करनेवाले पुलस्त्यजी! सब मुझसे कहिये पुलस्त्यमुनि बोले कि हे महाबाहु राजन्! तड़ागादिकों के उत्सर्ग प्रतिष्ठादिकों की जो विधि ३ पुराणों व इतिहासों में पढ़ी है तुम से कहते हैं जब उत्तरायण सूर्य्यहों चैत्र को छोड़ अन्य माघादि पांच मासों में शुक्लपक्ष में ४ ब्राह्मणों के बताये हुये शुभ वासर नक्षत्र योगादिकों में ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करावे जहां तड़ाग हो व कोई अशुभ वृक्ष न हो तड़ाग के समीप ५ चार हाथ की लम्बी चौड़ी वेदी बनावे उसका मुख चारों दिशाओं को करे और मण्डप १६ हाथका लम्बा चौड़ा बनावे इस में भी चारों ओर को मुख रक्खे ६ वेदी की चारों ओर आठ अंगुल गहरी एक नारी खोदनी चाहिये ९ वा ७ वा ५ गोले शिर के डौवे बनावे ७ बीताभर की लम्बी व ६ व ७ अंगुल की चौड़ी एक योनि बनानी चाहिये किसी २ के मत से सब हाथ भर २ लम्बी चाहियें व तीन २ अंगुल मोटीहों ८ सब की सब सवर्ण व पताका और ध्वजा संयुक्त हों पिप्पल गूलर पकरिया वटकी डालियों से ९ मण्डप की चारों ओर ये दरवाजे करने

चाहिये व शुभ होता ८ होनेचाहिये व आठही द्वारपाल १० आठ जापक ये वेदपाठी ब्राह्मणही होने चाहियें अन्यजाति के लोग नहीं सो भी सब शुभ लक्षणों से सम्पन्न व मन्त्रज्ञ व जितेन्द्रियहों ११ अच्छे कुलीन सुन्दर स्वभाववाले ब्राह्मणोत्तमहों जितने कुण्ड हों उतने कलश हों व सब कलशों के समीप यज्ञ की सामग्री हो कि वहीं २ पूजा कीजाय १२ एक २ बेना एक २ सुन्दर आसन एक२ ताम्रका भारी लोटा व अनेक प्रकार की बलि सब देवताओंके लिये हो जो वस्तु यज्ञभूमि में स्थापित करनी हो मन्त्र पढ़ २ कर चतुर आचार्य्य अपने हाथहींसे स्थापित करे १३ दुधारे किसी वृक्ष के अरत्नि मात्र यज्ञस्तम्भ होने चाहियें १४ वा जितना बड़ा यजमान हो उतनाबड़ा यज्ञस्तम्भहो पच्चीस ब्राह्मण और हों उनसबोंको सुवर्ण के भूषण पहिनाये जायँ १५ सोने के कुण्डल केयूर कटकादि जैसी शक्तिहोदे अँगूठी व नानाप्रकारके वस्त्र धारण करावे १६ अन्य सब ब्राह्मणोंके वस्त्र भूषण समानहों पर आचार्य्यके सबसे दूनेहों शय्या भी आचार्य्यके लिये एकहो व यजमानको जो जो पदार्त्थ अति प्रिय हों सब शय्याके साथ दे १७ एक कछुआ व एक मकर सुवर्णके हों मछली व डुण्डुभसर्प्प चांदीकेहों कुम्भीर व मण्डूक ताम्रके हों शिशु-मार लोहका हो १८ ये सब पदार्त्थ प्रथम से तैयाररहें तब उत्सर्ग का प्रारम्भहो प्रथम यजमान वेदके पारजानेवालों के मन्त्रोंसे सब औषधियों के जलसे स्नान करके शुक्लवस्त्र शुक्लमाला और शुक्लगंध का अनुलेपन धारणकर यजमान अपनी स्त्री व पुत्र पौत्रसे संयुक्त होकर पश्चिम के द्वारसे यज्ञमण्डप में प्रवेश करे तब मङ्गलशब्द और नगारों के शब्द से १९। २१ तत्त्वका जाननेवाला पांचवर्णकी धूलिसे मण्डल बनावे सोलह अरवालाचक्र कमल गर्भवाला चार मुखसे युक्त २२ चौकोर और मध्य में अत्यन्त सुन्दर बनावे तद-न्तर वेदीके ऊपर ग्रहोंका स्थापन हो व लोकपालोंका भी २३ जिस का स्थापन जिस दिशामें चाहिये मन्त्रसेही कियाजाय विना मन्त्र के नहीं वरुण के मन्त्रसे कलश सबके मध्य में स्थापित हो २४ फिर अन्य कलशोंमें ब्रह्मा शिव विष्णु व गणेशका स्थापन क्रमसे

करे लक्ष्मी व गौरी कामी स्थापन करे २५ व सब लोकोंकी शान्ति के लिये और भी नानाप्रकार के भूत प्रेतादिकों का स्थापनकरे सब का स्थापन पुष्प भक्ष्य फलोंसे विधिपूर्व्वक करे २६ कलशों में पंचरत्न छोड़कर ऊपर से वस्त्रलपेटे पुष्प गन्धादिकों से भूषित करके फिर द्वारपालों का स्थापन सब ओरसे करे २७ फिर तिनसे कहे कि तुमलोग यज्ञकरो फिर आचार्य की पूजाकरे ऋग्वेदी दो ब्राह्मण पूर्व्वओर स्थापितकरे यजुर्व्वेदी दो दक्षिण ओर २८ सामवेदी दो पश्चिमओर अथर्व्ववेदी दो उत्तरओर स्थापित किये जायँ उत्तरको मुखकरके वेदीकी दक्षिणओर यजमानबैठे २९ फिर सब तिनयज्ञ करानेवालों से कहे कि आपलोग यज्ञकार्य कीजिये मन्त्रजापकों से कहे कि उत्कृष्ट मन्त्रजप में स्थित हूजिये ३० इस प्रकार सर्वोको आज्ञादेकर मन्त्रवेत्ता आप अग्निका सन्धुक्षणकरे फिर आचार्य्य की आज्ञासे ब्रह्मादिकों के संग यजमान आहुति देनेलगे आहुति घृत व समिधों से प्रथम करे ३१ सो यजमान के होमकरने की आवश्यकता भी नहीं होताओंसे कहे वे आप आहुतिदेंगे प्रथम वारुण मन्त्रों से आहुति देकर फिर सूर्य्यादि ग्रहों के मन्त्रों से तदनन्तर इन्द्रादि लोकपालों के मन्त्रोंसे आहुतिदे ३२ फिर सब देवताओंको फिर लोकपालोंको तदनन्तर शान्तिसूक्त रौद्रसूक्त पावमान व अन्य मांगलिक मन्त्र ३३ फिर पूर्व्वओर बैठाहुआ ऋग्वेदी पुरुषसूक्त पढ़ें फिर शाक्रमन्त्र रौद्रमन्त्र सौम्यमन्त्र, कौष्माण्ड व जातवेदस मन्त्रोंसे हवनहो ३४ फिर सौरसूक्त दक्षिण ओर बैठाहुआ यजुर्व्वेदी ब्राह्मणजपे फिर वैराजपौरुषसूक्त सौपर्णरुद्र सहित ३५ शैशव पंचनिधन गायत्र ज्येष्ठसाम वामदेव्य बृहत्साम रौरव रथन्तर ३६ गवांव्रत विकीर्ण रक्षोघ्न यम इतने मन्त्र पश्चिमद्वारपर बैठाहुआ सामवेदी पढ़े ३७ व उत्तरदिशा में बैठे हुये अथर्व्ववेदी शान्तिक पौष्टिक को मनसे वरुण प्रभुको आश्रित होकर जपैं ३८ पूर्वाह्ण वा रात्रिमें इस प्रकार अधिवासनकर गजके,घोड़ा और रथके नीचेकी, वामीकी,नदी सङ्गमकी, कोटकी,गोशालाकी ३९ मृत्तिका लाकर सब कुम्भों में छोड़े रोचन हरिद्रा गुग्गुलु ये भी कुम्भों में छोड़ ४० फिर

पञ्चगव्य कलशों के ऊपर छिरके तदनन्तर पुरुषसूक्तादि वैदिक मन्त्रों से विधिपूर्व्वक यजमानको स्नान करावे ४१ इस प्रकार निधियुक्त कर्म्मसे रात्रिको बितावे प्रभात होनेपर गोशत इकट्ठाकरे ४२ वह गोशत ब्राह्मणों को दे अथवा अड़सठ गऊ वा पचास वा छत्तीस वा पच्चीसही गऊ दे ४३ फिर अवसर प्राप्तहोने पर अत्यन्त सुन्दर शुद्धलग्नमें वेदके शब्दोंका गान और अनेकप्रकारके बाजाओं को बजवाकर ४४ एकधेनु सुवर्णसे भूषित करके जलमें तैराकर सामवेदी ब्राह्मण को दे ४५ फिर और औरोंको दे सुवर्ण की थाली जो यज्ञके लिये बनवाई गई है वह भी पञ्चरत्न संयुक्त सामगानेवालेको दे तदनन्तर मकर मत्स्यादिक निकालकर ४६ चार वेद वेदांगपाठी ब्राह्मणों के हाथोंपर धराकर महानदी के जलसहित दधि अक्षत से विभूषित कर ४७ उत्तर को मुखकराकर जलके मध्य में छोड़वावे फिर अथर्व्ववेदी के मुखसे मन्त्र पढ़वाकर अच्छेप्रकार स्नानकराकर ४८ आपोहिष्ठा इत्यादि मन्त्रों से प्रोक्षित कराके शेष डुण्डुभादिक भी जलमें छोड़वावे तदनन्तर यजमान मण्डप के भीतर आवे व सभावालों की पूजा करके चारोंओर से यथोचित बलिप्रदान करे ४९ फिर भी चार दिनतक बराबर होम होतारहे चौथे दिन जब चतुर्थी कर्म्म आवे तो भी अपनी शक्तिके अनुसार दान दक्षिणा दे ५० इस प्रकार यज्ञकरके सब यज्ञपात्र व अन्य भी यज्ञसामग्री ऋत्विजों को समान भागसे बांटदे ५१ सुवर्णपात्र व शय्या ब्राह्मणको दानकरके तदनन्तर सहस्र ब्राह्मणों को वा आठसौ को ५२ वा पचास को वा बीस को यथाशक्ति भोजन करावे इसप्रकार पुराणों में तड़ाग की विधि ऐसी कहीगई है ५३ कूप वापी व पुष्करिणी आदि सब जलाशयोंकी इसीप्रकारकी विधिहै यही विधि इनसबोंकी प्रतिष्ठाओं में भी देखीगई है ५४ धवरहर व वाटिका पुष्पवाटिकादिकों के मन्त्र व संकल्पों में भेदहै पर धन थोड़ा हो तो आधोलेख के अनुसार विधि करै ब्रह्माजी ने यही विधि बताई है ५५ और अत्यन्त थोड़ा द्रव्य हो तो एकाग्नि के समान विधिकरै पर वित्तशाठ्य न होनाचाहिये जिस जलाशय में केवल वर्षाकालमेंही जल रहताहै उसके उत्सर्गकरने से

अग्निष्टोम यज्ञका फल होताहै ५६ जिसमें शरत्‌ कालमें भी रहताहै उसके उत्सर्ग में भी वहीफल होताहै व जिसमें हेमन्त शिशिरऋतुओं में भी रहताहै उसके उत्सर्ग प्रतिष्ठादि करनेसे वाजपेय अतिरात्र दोनों यज्ञोंका फल करनेवालेको मिलताहै ५७ जिस जलाशयमें वसन्तऋतुमें भी जल रहताहै उसके कर्त्ताको अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है व जिसमें ग्रीष्मऋतु में भी जल रहताहै उसके कर्त्ताको तो राजसूययज्ञसे भी अधिक फल मिलताहै ५८ हे महाराज ! इन महायज्ञ विशेष धर्म्मों को जो कोई पृथ्वी में अत्यन्त शुद्धबुद्धि मनुष्य करता है वह शुद्ध मनुष्य ब्रह्मलोक को जाता है व अनेक कल्पोंतक वहां बसता है ५९ फिर नानाप्रकार के स्वरादिक लोकों में विचरताहुआ द्विपरार्द्ध पर्य्यन्त स्त्रियोंसमेत तिसी योग के बलसे विष्णुलोकमें बसता है ६० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादेतडागप्रतिष्ठाविधिर्न्नामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

दोहा अट्ठइसे महँ कह्यहुमुनि तरुरोपणविधि सर्व्व ॥
जिन्हें लगाये पुरुष लखि विगतहोत यमगर्व्व १

भीष्मजी ने इतनी कथा सुनकर फिर प्रश्नकिया कि हे ब्रह्मन् ! वृक्षोंका आरोपण व उत्सर्ग जिसप्रकार से किया जाता है उसकी विधि विस्तार से हमसे कहिये १ व वृक्ष लगानेवालों को जो जो लोक मिलतेहैं उनका भी वर्णन कीजिये व यहभी कहिये कि किस वृक्षके लगाने से कौनलोक मिलता है २ यह सुनकर पुलस्त्यमुनि बोले कि वृक्षों के उत्सर्गादिकों की विधि कहते हैं व पुष्पवाटिकादिकों की भी सब तड़ागही के समान वृक्षों की प्रतिष्ठा की जाती है मण्डप का छाना ऋत्विजों का वरण करना व उनकी पूजा उसी प्रकारसे होती है आचार्य्य भी उसीप्रकार से होता है ३ सुवर्ण वस्त्रानुलेपनादिकों से ब्राह्मणों का पूजनभी उसीप्रकार होता है जैसा कि तड़ागविधि में कह आयेहैं विशेष यह है कि सब ओष-

धियों से व दधि अक्षतादि मिलेहुये जलसे सब वृक्षोंको प्रथम सींचे ४ फिर पुष्पों की माला सबको पहिनाकर वस्त्रों से आच्छादित करे फिर सुवर्णकी सुईसे सब वृक्षोंके कान छेदे ५ फिर उसीप्रकारसोनेकी सराई से आंजन सब वृक्षोंके दे सात वा आठफल सोने के बनवावे ६ एक २ वृक्षमें एक २ फल लटकादे फिर धूप प्रत्येक वृक्षकेनीचे करे धूप यहां गुग्गुलुही की करनी श्रेष्ठहै सोभी ताम्रके पात्रमें धरकर दीजाय ७ सप्तधान्य व जलसे पूरित करके वस्त्रगन्धअनुलेपनों से वेष्टित करके एक २ कुम्भ सब वृक्षोंकेनीचे स्थापितकरे ८ फिर उनकी पूजा विधिपूर्व्वक करके सन्ध्यातक वहीं धरे रहने दे फिर सन्ध्यासमय जैसे इन्द्रादि लोकपालों को बलिदान किया जाताहै वैसाही करे ९ प्रत्येक वृक्षकी पूजा धूप दीपादिकों से मन्त्रपढ़ २ कर ब्राह्मणलोग ऐसेही करावें फिर शुक्लवस्त्रसे आच्छादितकर सोनेकी क्षुद्रघण्टिका पहिनाय १० कांस्यपात्र की दोहनी समेत सोने से सींग मढ़ाकर दुग्धदेतीहुई सवत्साधेनु वृक्षोंके बीच २ में घुमाकर उत्तरमुख को छोड़े ११ फिर आपोहिष्ठा इत्यादि मन्त्रों से उसका अभिषेक करे जब धेनु उत्तरको मुखकरके चले तो उसके पीछे २ मंगलगीत गाय २ बाजन बजवावे ऋक् यजुः साम वेदोंमें जो वरुणमन्त्र लिखेहैं सबपढ़े १२ व उन्हीं कुम्भों के जलसे श्रेष्ठ ब्राह्मण विधिसे स्नान करावें व यजमान भी स्नानकर शुक्लवस्त्र धारण करके पूजाकरे १३ यदि विभवहो तो सबऋत्विजोंको इसीप्रकारकी एक २ धेनु दे व सब ऋत्विजोंको सोनेकी जंजीर करधनी अँगूठी व पैंती १४ ओढ़ने पहिनने बिछानेके वस्त्रोंसे व खराऊँ आदि सब सामग्री से भूषितकरे इसप्रकार ऋत्विजोंकी पूजाकर चारदिन तक बराबर वृक्षोंके ऊपर दूधसे सींचतारहै १५ व कालेतिल घृत और यव से होम भी बराबर चारदिन तक होतारहै होमका इन्धन पलाशकी लकड़ीहीका होना चाहिये और किसीकीसे नहीं चौथेदिन उत्सव कियाजाय १६ व दक्षिणा भी अपनी शक्तिके अनुसार दी जाय जो २ पदार्थ अपने को इष्टहों सब अहंकार छोड़कर ब्राह्मणों को दे १७ आचार्य्य को सब से दूनी दक्षिणा देकर नमस्कारकर फिर

क्षमापन करावे इस विधिसे जो विद्वान् वृक्षोत्सव करताहै १८ वह सब कामनाओंको पाताहै व अनन्तपदको पाताहै हे राजेंद्र! जो कोई उत्सर्ग नहीं करसक्ता केवल वृक्ष लगाताही है १९ वह भी जबतक चौदह इन्द्र भोगते हैं तबतक स्वर्गलोकमें बसकर नानाप्रकार के सुख भोगता है जितने पत्ते उस वृक्षमें होते हैं उतने प्रथम के व उतनेही लगानेवाले के पीछे के पुरुष व वहभी तरता है २० व परमसिद्धिको पाकर वहां से फिर कभी निवृत्त नहीं होता है जो कोई इसे नित्य सुनताहै वा सुनाताहै वह भी पुरुष ब्रह्मलोक में जाकर देवताओं से पूजित होताहै जो पुरुष पुत्रहीन होताहै व वृक्ष लगाता है उसके पुत्र के समान काम वृक्ष करताहै २१ । २२ वृक्षोंमें भी हे राजेंद्र! पिप्पल यत्नसे लगावो २३ क्योंकि जो काम हजार पुत्र करसक्ते हैं वह एक अश्वत्थका वृक्ष करेगा अश्वत्थ वृक्ष लगाने से पुरुष धनी होता है व अशोकलगाने से उसके सब शोक नष्ट होजाते हैं २४ पकरिया लगानेवाले को यज्ञका फलदेतीहै अमिली आयुर्बल बढ़ातीहै जामुनि कन्या देती है अनार के लगाने से उत्तमस्त्री मिलतीहै २५ पीपल के लगाने से सब रोग नष्ट होतेहैं पलाश के लगाने से पुरुष अन्यजन्म में पण्डित होता है जो पुरुष वहेरे का वृक्ष लगाताहै वह मरनेपर अवश्य प्रेत होता है २६ कैथा लगाने से कुलकी वृद्धि होती है खैरका वृक्ष लगाने से रोग नष्ट होतेहैं जो लोग निम्बके वृक्ष लगाते हैं उनके ऊपर सूर्य्य नित्यही प्रसन्न होतेहैं२७ बेल लगानेसे महादेवजी प्रसन्न होतेहैं पाड़रडांड़ लगाने से पार्व्वती जीकी प्रसन्नता होती है शिंशपा लगाने से अप्सरा प्रसन्न होती हैं कुन्द लगाने से गन्धर्व्वश्रेष्ठ २८ तिलकका वृक्ष लगाने से सब दासवर्ग प्रसन्न होते हैं बड़हर लगाने से चोर सब प्रसन्न होते हैं चन्दन का वृक्ष बड़ा पुण्यदायक होताहै व कटहरका लक्ष्मी करता है २९ चम्पाका सौभाग्य देताहै करीर लगाने से पुरुष परस्त्रीगामी होताहै तारका वृक्ष लगाने से सन्तानका नाश होता है मौनश्रीका वृक्ष कुल बढ़ाताहै ३० नारियल लगानेवाले के बहुत स्त्रियां होती हैं मुनक्काका वृक्ष लगाने से पुरुष सर्व्वांग सुन्दर होताहै बेरीका वृक्ष

उत्तम स्त्रियों में प्रीति कराताहै केतकी शत्रुनाशिनी होती है ३१ इ-
त्यादि जिन वृक्षोंका नाम नहींलिया वे सब पुण्यदायकही वृक्षहैं वृक्ष
के लगानेवाले व प्रतिष्ठा करनेवाले दोनों ब्रह्मलोकको जाते हैं ३२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादेवृक्षारोपण
विधिर्नामाष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

उनतीसवां अध्याय॥

दोहा उनतिसयें महँ मुनि कह्यहु बहुत भांति मनलाय॥
व्रतसौभाग्य सुशयन प्रथ श्रवण करत मनभाय १

पुलस्त्यजी बोले कि हे राजन्! हम एक और सब काम पूरने
वाला व्रत कहते हैं जिसको पुराण जाननेवाले सौभाग्यशयन नाम
व्रत कहते हैं १ पूर्व्वकालमें जब सब भूः भुवः स्वः महः इत्यादि लोक
भस्म होगये तो सब प्राणियों का सौभाग्य इकट्ठाहोगया २ व बटुर
कर वैकुण्ठमें जाकर श्रीविष्णुभगवान् के वक्षस्स्थलमें स्थितहुआ
तब बहुतदिनों के पीछे जब ब्रह्माजी ने चाहा कि फिर सृष्टि बनावें
तो ३ प्रधानपुरुष से अहङ्कार उत्पन्न हुआ तब वंश वृद्धिकरने के
विषय में ब्रह्मा व श्रीविष्णुभगवान् से परस्पर बड़ी स्पर्द्धा हुई ४
उस स्पर्द्धा से अति पीलेरङ्ग की एक महाभयङ्करी अग्निज्वाला उ-
त्पन्न हुई उससे सन्तप्त होकर श्रीहरिके वक्षस्स्थल से वह सौभा-
ग्य निकलपड़ा ५ जो सौभाग्य श्रीहरिके वक्षस्स्थल में टिकने से
हुआ था वैसा रूप कभी न भूतल में हुआ था न होगा ६ सो उस
सौभाग्यरूप तेज को बुद्धिमान् श्रीहरिने अन्तरिक्ष में छोड़दिया
उसे ब्रह्माके पुत्र बुद्धिमान् दक्षप्रजापतिने पानकरलिया उसके पी-
तेही वे अत्यन्त शोभित हुये ७ व बल तेज बहुत हुआ जो कुछ
दक्षके पीनेके समय सौभाग्य तेज पृथ्वीपर गिरपड़ा वह आठ स्था-
नोंमें होगया ८ उससे सौभाग्य देनेवाली सात ओषधियां उत्पन्न
हुईं एक ऊख दूसरी ताली तीसरी कलाय चौथी शालिधान्यक ९
पांचईं व छठईं सब गोदुग्ध की जाति व सातईं कुसुम्भ के फूलोंकी
जाति व आठवां लोन इन्हीं आठोंका सौभाग्याष्टक नाम है १० व

जो ब्रह्माके पुत्र योगज्ञानके जाननेवाले दक्षने पीलिया था उससे सती नाम कन्या उत्पन्न हुई ११ वह जिससे कि सब लोकों में सब से ललितरूपवती हुई इससे उसका एक ललिता भी नाम हुआ उन त्रैलोक्यसुन्दरी देवीसतीजीके सङ्ग महादेवजी का विवाहहुआ १२ ये सतीजी तीनों लोकोंके सौभाग्य से भरी हुईथीं व भुक्ति मुक्ति को देती हैं उनकी आराधनाकरके चाहे स्त्रीहो वा पुरुषहो क्या नहीं पासक्ता जो जो चाहे सब पासक्ता है १३ यह सुनकर भीष्मजी बोले कि हे भगवन्! उन सतीजी के आराधना की कौन विधिहै जगत् की शांतिके लिये हमसे वर्णन कीजिये १४ यह सुनकर पुलस्त्यमुनि बोले कि हे महाराज! बसन्तऋतु में चैत्रमासके शुक्लपक्षकी तृतीया को प्रातःकाल तिलमिलाये हुये जलमें स्नानकरे १५ क्योंकि उसी तिथि में विश्वात्मा महादेवजी ने वैदिकमन्त्रों के साथ उन सतीजी का पाणिग्रहण कियाहै १६ इससे उस तृतीया को सतीसहित महादेवजी की पूजा नानाप्रकारके फल धूप दीप नैवेद्यादिकों से करनी चाहिये १७ महादेव पार्व्वती की प्रतिमा सुवर्ण की बनवाकर पञ्चगव्य से स्नानकराकर गन्ध और जलसे भी स्नान कराकर पूजनी चाहिये १८ पाटलाये नमः इससे देवी व महादेव दोनोंके चरणों की पूजाकरे शिवाय नमः इससे व जयायै नमः इससे दोनों के घुटुनुओं की पूजाकरे १९ त्र्यम्बकाय नमः इससे रुद्र व भवानी दोनों की पीलियों की पूजाकरे रुद्रेश्वराय नमः विजयायै नमः इनसे दोनों के शिरों और गांठकी २० हरिकेशाय नमः उरुवरदे नमः इनसे दोनों की कटिकी पूजाकरे ईशायै नमः इससे नाभिकी शङ्कराय नमः इससे वक्षस्स्थलकी कोटव्यै नमः इससे दोनों कोखियोंकी शूलपाणये नमः इससे शूलपाणि की मङ्गलायै नमः इससे उदरकी पूजाकरे २१ । २२ सर्व्वात्मने रुद्राय नमः ईशान्यै नमः इनसे दोनों के कुचों की वेदात्मने नमः इससे शिवकी रुद्राण्यै नमः इससे रुद्राणी के कण्ठकी पूजाकरे २३ त्रिपुरघ्नाय नमः इससे व अनन्तायै नमः इससे दोनों के दोनों हाथोंकी त्रिलोचनाय नमः व कालानलप्रिये नमः इससे दोनों के बाहुओं की सौभाग्यभावनाय

नमः इससे दोनों के भूषणों की पूजाकरे २४ स्वाहास्वधायै नमः इससे दोनों के मुखोंकी ईश्वराय नमः इससे महादेवके त्रिशूल की २५ अशोकवनवासिन्यै नमः इससे जो ओष्ठकी पूजा करेंगे उनके अणिमादि आठ सिद्धियां वशीभूत होंगी स्थाणवे नमः चन्द्रमुखप्रिये नमः इनदोनोंसे महादेवके मुखकी पूजाकरे २६ अर्द्धनारीशाय नमः असितांग्यै नमः इन दोनोंसे नासिकाकी पूजाकरै उग्राय नमः ललितायै नमः इन दोनोंसे भौंहोंकी २७ शर्व्वाय नमः इससे महादेवकी जटाओं की वासुदेव्यै नमः इससे ललिता की पाटीकी श्रीकण्ठनाथाय नमः इससे शिवजीके बालों की २८ भीमोग्रभीमरूपिण्यै नमः सर्व्व स्मने नमः इनसे शिरकी पूजाकरे इसरीतिसे विधिवत् हरकी पूजाकरके सौभाग्याष्टक आगे स्थापितकरे निष्पाव कुसुम्भ दुग्ध जीरक ताली ऊख लवण व धनियां २९।३० सौभाग्याष्टक सब ब्राह्मणको दे इसप्रकार महादेव पार्व्वती के अर्पणकर ३१ फिर दोनों के आगे चैत्रमें सिंघाड़ा भोजनकर भूमिपर शयन कररहै फिर जब प्रभातहो तो स्नान जपकरके पवित्रहो ३२ माल्य वस्त्र विभूषणों से ब्राह्मण ब्राह्मणीकी पूजाकरे फिर सौभाग्याष्टक व सुवर्णकी दोनों मूर्त्ति ३३ ललिता प्रसन्नहो ऐसा कहकर ब्राह्मण को देदे इसप्रकार वर्षभर में जितनी तृतीया हों सदैव सबों में स्नान भोजन दान मन्त्रादिकों से करतारहे ३४ भोजन और दानमन्त्र में जो विशेषता है वह हमसे सुनिये चैत्रमें गऊके सींग जल वैशाखमें गोबर ३५ ज्येष्ठ में कल्पवृक्ष का फूल आषाढ़में बेलपत्र श्रावणमें दही भादोंमें कुशाजल ३६ कुँआरमें दूध कार्तिकमें घी अगहन में गोमूत्र पौषमें घी ३७ माघमें कालेतिल और फाल्गुन में पंचगव्य चीखे ललिता विजया भद्रा भवानी कुमुदा शिवा ३८ वासुदेवी गौरी मंगला कमला सती और उमा दानकालमें प्रसन्नहो ऐसे नाम कहे ३९ जब बारहवां महीना आवे तो द्वादशी में हरिकी पूजाकरे व पतिके संग लक्ष्मीजी की भी पूजाकरे ४० व पौर्णमासीके दिन इसीतरह परलोकमें अभयकी इच्छावाले पण्डितको चाहिये कि सपत्नीक ब्रह्माजीकी उपासनाकरे ४१ व जिसके ऐश्वर्य्य की इच्छाहो उसे चाहि-

ये कि सौभाग्याष्टक का दानभी यथाशक्ति करे चमेली अशोक क-
मल कदम्ब उत्पल चम्पक ४२ ॥

दोहा कुब्जक अरु करवीरसिंदु वारकुंकुम अरु बाल ।
कुसुम समन्वित वर्षभर देत रहै गत जाल ॥
कुसुँभ मालती शतदलक हैं पवित्र सब काल ।
अरु अतिप्रिय करवीरहै देतहिं करतनिहाल ४३।४४
इमि व्रत रहिये वर्ष भर पुरुष होय वा नारि ।
सन्ध्यामहँ करि एकचित नमै गौरि त्रिपुरारि ४५ ॥
सब सामग्री युत शयन व्रतके अन्त सप्रेम ।
देय विप्रकहँ पूजिकै करे भली विधि नेम ॥
शिवगौरी की मूर्त्ति अरु वृषभ सुवर्णहि केर ।
धेनु सहितथापै बहुरि विप्रहि देयघनेर ॥
वर्ष समापत द्वादशी महँ लक्ष्मी भगवान ।
सावित्री विधि सहितकरि पूजै सहित विधान ॥
मनोऽभीष्ट सब काम सो पावे निस्सन्देह ।
जोगतछल हरि विधिगिरा लक्ष्मी करकरुनेह ॥
यथाशक्ति नरमिथुन कहँ धेनु वृषभ यक संग ।
पूजित करि देवेलहै हरिपुर सदा अभंग ४८।४९ ॥
वित्तशाठ्य तजि प्रेमसों पूजन करे विनीत ।
पापरहित ह्वै नर लहै हरिपुर परम पुनीत ॥

चौ० यह सौभाग्य शयनव्रत जोई । नारी पुरुष करै मन गोई ॥
सकल काम पावे मनमाने । सत्यकहत नहिं मृषाबखाने ॥
जब तक नियम करै व्रतकेरो । यक फल त्यागै जो प्रियहेरो५०।५१ ॥
यश अरु कीर्त्तिलहै नर नीके । प्रतिमासहि महँ कहत सुठीके ॥
जो सौभाग्य शयनव्रत करई । यश सौभाग्य कीर्त्तिगृह भरई ५२ ॥
कबहुँ न दूरहोहिं त्यहि गेहा । सौभाग्यादिक नाहिं संदेहा ॥
द्वादश वर्ष करै जो कोई । यह सौभाग्य शयन व्रत सोई ५३ ॥
आठ सात संवत्सर करई । ब्रह्मलोक पावत नरवरई ॥
अयुतकल्प तक हरपुरवासी । पुनि बैकुण्ठ जाय सुखरासी ॥

नारि होय वा नरवर होई । मनवाञ्छित पावत नहिं गोई ॥
सधवा करै कुमारी वापी । सापि लहै फल विमल कलापी ॥
जो यहि सुने पढ़े जो गावे । विद्याधर ह्वै हरिपुर जावे ॥
यह व्रतप्रथममदनपुरुहूता । पवननन्दि आदिक करि सूता ॥
कीन्हभलीविधिसबयशपावा । सोहमतुमकहँआजसुनावा५४।५८॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेप्रथमेभाषानुवादे व्रताध्यायोनामएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

दो० तहाँ तीस अध्याय महँ वाष्कलिसे त्रैलोक ॥
जिमिहरिलैइन्द्रहि दियो सोकहकरनविशोक १

भीष्मजी बोले कि हे द्विजोत्तम! प्रभविष्णु श्रीविष्णुजी ने यज्ञ पर्व्वत पर प्राप्त होकर वहां अपने पद क्यों किये व देवदेव ने वहां पदपद्धति क्यों बनाई वह हमसे कहिये व उस पर्व्वतपर श्रीविष्णु जीने पदविन्यासकरके किस दानवको मारा हे महामुनिजी! वह हम से कहो जिन विष्णुभगवान् का वास स्वर्गलोकों में व वैकुण्ठमें रहताहै १।३ उन्हों ने मर्त्यलोक में कैसे अपने पदन्यास किये व देवलोकों में इन्द्रादि सब देवगण ४ व जोकि निरन्तर श्रीहरिकेभक्त हैं पर वेभी परममहातप करने से भी जिन प्रभुकी स्तुति विना भक्ति के नहीं करसक्ते देखो श्रीवराहजीकी बसती महल्लोकमें कहीजाती है ५ व ऐसेही महात्मा नृसिंहजी की जनलोकमें है व वामनजीकी बसती तपोलोकमें कथितहै ६ सो इन लोकोंको छोड़कर कैसे अपने दोपद पितामहके इस क्षेत्र पुष्करके यज्ञपर्व्वतपर स्थापित किया ७ सो इन पदों के स्थापित करने का समाचार हमसे विस्तार से कहो क्योंकि इसके सुनने से निश्चय सब पापोंका नाशहोगा ८ पुलस्त्य जी बोले कि हे वत्स! तुमने अच्छा पूँछा अब एकाग्रचित्तहोकर सुनो जिस रीतिसे पूर्व्वकालमें श्रीविष्णुभगवान्ने पदन्यासकिया ९ यज्ञ पर्व्वत पर आकर शिलापर्व्वतके तटपर पूर्व्व समय सत्ययुगमें देव-

कार्य्य सिद्धहोने के लिये १० व पृथिवी के अर्थ विष्णुभगवान् ने सब तीनोंलोक बलवान् दानवोंसे लेआकर देवताओंको देदिये ११ इसकी कथा योंहै कि जब बलवान् दानवों ने इन्द्रादि देवताओं को जीतकर तीनलोक अपने अधीन करलिये तब महाबली दानवलोग यज्ञोंके भोक्ताहोगये १२ इन सबोंको यज्ञों के भोक्ता महाबली बाष्कलि नाम दैत्यने कराया जब चराचर सब तीनोंलोक ऐसे होगये १३ तो जीनेकी आशासे निराशहोकर इन्द्र परमदुःखको प्राप्तहुये व अपने मनमें विचारनेलगे कि यह वाष्कलिनाम दानव ब्रह्माजी के वरदानके कारण हमसे व सब देवताओंसे समरमें अवध्यहै १४ इससे हम सब देवताओं के साथ ब्रह्मलोक में देवदेव ब्रह्माजी के शरणकोजायँ क्योंकि इसे छोड़ अन्य गति नहीं है १५ ऐसा विचार करके सब देवताओं को सङ्गलेकर इन्द्र १६ अतिवेगसे वहांको गये जहां कि देवदेव ब्रह्माजी विराजते थे व सब देवगण ब्रह्माजी की सभामें पहुँच १७ कर जगत् के करनेवाले पितामहजी से अपनी विपत्ति कहतेहुये बोले हे देवेश! हमारे जीवन के वृत्तान्तको क्यों नहीं जानतेहो १८ तुम्हारे वरदानसे बढ़ेहुये दैत्योंने सब हमलोगों का स्थानतक और सर्वस्व घेरलिया है इस वाष्कलिदुष्टने जो जो दुर्दशायें हमलोगोंकी कीहैं १९ सब आप जानते हैं हे पितामह! उसका उपाय आप शीघ्रकरें हे देवेश! इस जगत् की शान्तिहोने के लिये आप अवश्य कुछ चिन्तना करें २० अब उनलोगोंके परोक्ष में हमलोगों के श्रुतिस्मृतिविहित क्रिया नहीं होती है क्योंकि प्रतिदिन वे लोग हम लोगों की हानि करते हैं २१ जैसे कि कोई प्राकृती मनुष्यादि बार २ अपने प्रयोजन के लिये कहता है उसी प्रकार दैत्यों से निकाले व अपमान किये हुये हम लोग अपना वृत्तान्त कहते हैं २२ जैसा जिसके सङ्ग उसने अपकार किया है वैसा कहा नहीं जाता बस इससे सहस्रगुण अधिक समझिये व जो कोई अपने अपकारी के सङ्ग अपकार नहीं करसक्ता उसके अपकारसे जलेहुये उस निर्ल्लज्जका फिर नरकों में वास होताहै २३। २४ क्योंकि वहभी पापी होजाताहै सो केवल अपकारी से बदला

लेलेनेही में साधुता नहीं है पर क्या करें अपने अर्थ के लिये यह तुच्छबुद्धिवालों कीसी वार्त्ता कहते हैं सोभी क्याकरें कहीं जगत्भर में हमलोगों के लिये स्थान तो मिलताही नहीं जहां निर्व्वाह करें क्या करें हमलोगों का हृदय मारे दुःखके सौ टुकड़े हुआ जाता है तृप्ति भी नहीं होती अब कहीं भी जानेका स्थान नहीं है इस दुःख सागर में डूबतेहुये २५ । २६ हमलोगोंका उद्धार कीजिये बस कोई ऐसा यत्न विचारिये जिसमें इस दैत्यका नाशहो व हमलोगों का तेज बढ़े क्योंकि इस जगत की बड़ी दुर्दशा होरही है कहीं वेदाध्ययन नहीं होता स्वाहा स्वधा वषट्कार नहीं होते व सब उत्सव के कर्म्म निवृत्त होगये हैं वेद क्या किसी शास्त्रादि का पठन पाठन भी कहीं नहीं होता दण्डनीति से भी यह जगत्हीन होगयाहै इससे इसके केवल श्वासमात्र आरहे हैं सो संसार बार बार इस दुःख को पारहा है व दिन दिन कष्टकी दशा होतीजाती है सो इस समय के आजाने से हमलोग बड़ी ग्लानि को पहुँचे हैं इससे इसका उपाय शीघ्र कीजिये २७ । ३० यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि हम जानते हैं कि हमारे वरदान से वाष्कलि दैत्य बड़ा अहङ्कारी होगया है इससे आपलोग उसे नहीं जीतसक्ते वह केवल श्रीविष्णु भगवान् से सिद्ध होसक्ता है ३१ इतना कहकर ब्रह्माजी तत्त्वमय भावको अपने में रोंककर कुछ देरतक ध्यानावस्थित हुये जैसेही एकाग्रचित्त होकर ध्यानकिया है कि चतुर्भुज श्रीविष्णुभगवान् ३२ ब्रह्माके ध्यान कियेहुये हरि थोड़ेही काल में सब लोगों के देखतेही देखते एक मुहूर्त्तभर में वहां आगये ३३ और बोले कि हे ब्रह्माजी! अब इस ध्यान से निवृत्त होओ हम रोंकते हैं जिसलिये तुम्हारा ध्यानथा वे हम तुम्हारे समीप आगये हैं ३४ यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि स्वामीका दर्शनहोना इससमय यह महाप्रसाद हुआ क्योंकि अब यह नामही नहीं रहाजाताथा कि ब्रह्मा जगत्के बनानेवालाहै ३५ आपने तो जगत् उत्पन्न करने के लिये मेरीही उत्पत्तिकीथी व यह जगत् इसी के लिये कियागयाथा कि बहुत दिनोंतकरहेगा इस में कुछ विस्मयकी बात नहीं थी ३६ व आप इसका पालनकरते चले

आये हैं व अन्तसमयमें रुद्र इसका संहारकरते हैं व जब इस प्रकार से जगत् की व्यवस्था चलीजातीथी तो इन महात्मा इन्द्रकी ३७ आराधनाहोतीथी यज्ञादिकोंके भाग अपने भोगते थे परन्तु हे देव-देव! अब दुष्ट वाष्कलिनाम दैत्यने सब हरलियाहै इस विषयमें मन्त्र देकर इस अपने भृत्य मेरी सहायताकीजिये३८ यह सुनकर श्रीवासुदेव भगवान्‌बोले कि आपके वरदानसे इससमय वह दानव अवध्य है इससे बुद्धिसे बन्धनादिसे वह दानव साध्यहै ३९ अब हम दानवों के विनाश के लिये वामनहोंगे परन्तु वामनमूर्त्तिधारी हमारे साथ ये इन्द्रभी उस दानवके स्थानपर चलें ४० व वहां जाकर हमारे अर्थ ये यह कहें कि हे राजन्! इन वामनस्वरूपी ब्राह्मणकेलिये तीनपैर ४१ पृथ्वीदीजिये जो कि हे महाभाग! तुमने हमसे हरली है सो इन्द्रके ऐसे कहनेसे वह दानवेन्द्र अपना जीव भी देदेगा भूमिकी कौनकहे ४२ सो हे पितामह! हम इसप्रकार सब उसके तीनोंलोक लेलेंगे व यत्नसे वरदान देकर उसे पातालवासी करके ४३ उसके वधके लिये शीघ्रताके साथ अपना शूकररूप धारणकरके उसे मारडालेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है अब इन्द्रशीघ्रतासे उसकेस्थानपरचलो ४४ बस इतना कहकर श्रीहरि चुपहोकर अन्तर्द्धान होगये और जाकर देवमाता अदितिके गर्भमें स्थितहुये ४५ प्रथमसे जो नानाप्रकारके अतिघोर निमित्त होरहेथे वे सब समस्त जगत्‌के आधार श्रीविष्णुभगवान्‌के गर्भवास करतेही सुन्दर हितकारी निमित्तों से भूषितहुये जैसे कि मालतीके पुष्पोंकी सुगन्धि आनेलगी ४६।४७ बाद इसके शुभमुहूर्त्त में विधानपूर्वक देवदेव सब प्राणियों के ऊपर दया करनेवाले व देवताओंके हितकेलिये शंखवत् उज्ज्वल व चन्द्रमाके उदयकी तुल्य है श्री जिनके ऐसे हरि अदितिके पुत्रभावको प्राप्तहोतेभये ४८ व श्रीविष्णुभगवान् के अवतार लेनेकेसमय पलक न मारतीहुई देवों की स्त्रियोंके मुख प्रसन्नहुये व पुष्पोंकी धूलिसेयुक्त पवन बहनेलगे व दिनभी श्रीविष्णु के जन्मके हेतु अतिविमल होगया सब के मन प्रसन्न हो उठे ४९ व अजन श्रीविष्णुभगवान्‌को गर्भ में धारण करके अदितिजी भी पुत्रके भारसे कुछ पीड़ित होकर मन्द २ चलनेलगीं

मुखमें कुछ आलस्य बनारहनेलगा पसीना अंगोंमें होनेलगा देहका रंग पीला पड़गया व सब अङ्ग भारी लगनेलगे बार २ कुछ वमन होनेलगा ५० व जब भूत भविष्यके योगसे श्रीनारायण गर्भ में प्रविष्टहुये तो सब प्राणी आपत् से हीनहोकर अन्य सब सुखके मनोरथोंको प्राप्तहुये ५१ व पवन मन्द मन्द बहनेलगा वृक्षोंमें वसन्त ऋतुके समान सब नवीनपल्लव निकलआये सब दिगन्तरों के मार्ग स्वच्छ प्रकट होआये व सब प्राणियों की प्रकृति सत्यबोलने की होगई ५२ आकाश में धूलिका उड़ना बन्दहोगया इससे वह विमल होगया व धीरे धीरे सब अन्धकार नष्टहोगया इससे सबको परमानन्द होनेलगा व हे राजेन्द्र! जब अदितिके गर्भके भीतरही में श्रीविष्णुभगवान् थे कि उन अदितिकी द्रोहकरने में जो बुद्धि हुई ५३ उसे सुनो वे यह विचारनेलगीं कि क्या यहीं से कूदें व स्वर्गको नांघजायँ ५४ व उस वाष्कलिनाम दानवको पातालवासी करदें क्योंकि जिससे हम इन्द्रके ऊपर सन्तुष्टहोकर उनको धन व सौंदर्य्य दिया ५५ व दानवोंके विनाश करनेहीकेलिये एक हमीं पैदा हुईहैं इससे अब प्रकटहोकर अनेक बाणसमूहों व चक्रसमूहों को चलावें ५६ व विविधप्रकार की गदाओं के समूह दानवोंके नाशके लिये छोड़ें व देवताओं को स्वर्गलोकमें स्थापितकरें व दानवों को पाताल में ५७ जब कालके योग से ऐसा करें तोतो हमारा करना सिद्धहो इस प्रकारकी वाणी एकाएकी अदितिके मुखसे निकलआई व प्रकटहोगई ५८ जिसकी न कभी पूर्व्वसमय में चिन्तना हुई थी न कभी वह सुनीगई थी न देखीगई थी पर कोप से कहनेलगीं कि देखो इस मुख्य दैत्यका वध हम अभी करती हैं ५९ पूर्व्वकाल में हमने कश्यप को धन व सुन्दरता दीथी व ये ऋतु उत्साहसे रहित क्यों होरहे हैं ६० हमारी दृष्टि इनको देखकर भ्रमतीसी है हमने तो ऐसा कभी शोचाभी नहीं क्या कोई हमारे भीतर पैठगया जिस करके यह असदृश वचन हम कहरही हैं ६१ हमने तो बहुत कुछ बक डालाहै ऐसा शोचकर फिर अदिति अपने मनमें विचारनेलगीं व विचारती हुई श्रीहरिको देवताओं के हज़ार वर्षतक अपने गर्भ

में धारणकिये ६२ रहीं इसके पीछे फिर वामनरूप वामनजी प्रकट हुये जिनके उत्पन्न होतेही दानवोंके नेत्र हरगये ६३ व देवदेव उन जनार्द्दनजी के जन्मलेतेही नदियां स्वच्छ जल बहानेलगीं सुगन्धित पवन बहने लगा ६४ व उन प्रकाशवान् पुत्रसे कश्यपजीनेभी सुख पाया व सबके मनों में उत्साह हुआ व तीनोंलोकों के वासियोंकेचित्त प्रसन्न होउठे ६५ व जनोंके कष्ट दूरकरनेवाले जनार्द्दनजीके उत्पन्न होतेही स्वर्ग्गलोकमें देवोंके बजायेहुये नगारे बाजनेलगे ६६ ठौर२ सब मङ्गल गान होनेलगे व तीनोंलोकोंको अत्यन्त हर्षहुआ मोह व दुःख सब नष्टहोगये गन्धर्व्वगण अपने भाव स्वरादिकों से गान करनेलगे अपने भर्तृगणोंसहित ६७ व भावयुक्त देवाङ्गनायें व अप्स-राओं के समूह नाचनेलगे व ऐसेही विद्याधर सिद्धोंकेसमूह विमानों पर चढ़ेहुये घूमनेलगे ६८ सत्य व झूँठे कार्य्योंका निर्णय सब लोग करनेलगे व परस्पर दिखानेलगे कि देखो यह पदार्थ सत्यहै व यह मिथ्याहै व रागसे निवृत्तहोकर बारबार गानेलगे दुःखसे गतहोकर सुखका अनुभव करनेलगे ६९ स्वर्ग्ग में प्राप्त स्वर्ग्गवासीलोग नाचने लगे व धर्म्मवान्‌लोग धर्म्मसे प्राप्तकियेहुये भूलोकसे स्वर्गको जाने लगे इसप्रकारसे सब जीव लोकविषादरहितहोगये व निर्मलभये व प्रथमसे जो तिमिरके समूहसे युक्तथे सबको उससे छूटनेकी इच्छा हुई ७० उससमय कोई कोई तो पृथ्वीही पर कहनेलगे कि हे भग-वन्! जयजय व कोईकोई अत्यन्त हर्षित होकर नानाप्रकारके नाद करनेलगे व बहुत से सघन मनकरके मनोहर वाक्यों से गानेलगे व जन्म भय जरा व मृत्यु के हेतु मिटाने के लिये सब निगूढ़ ध्यान करनेलगे इसप्रकार यह सब सम्पूर्ण जगत् सब ओर से हर्षित हो-गया ७१ यह कहनेलगे कि ब्रह्माजी जिनको प्राप्तहोकरके जगत् को करते हैं सोई भगवान् ईश्वर हैं यद्यपि पर तुम्हारे वास्ते वामनरूप उत्पन्नहुये हैं व सबकेसब स्तुति करनेलगे कि ये साक्षात् परमात्मा विष्णुभगवान् हैं व जगत् के लिये ब्रह्माकी प्रार्थना से प्रकट होते हैं यद्यपि अजन्मा अद्वैत ईश्वर हैं ७२ ये ब्रह्माहैं व यही विष्णुहैं व यही महेश्वरदेव हैं यही वेद यही यज्ञ यही स्वर्ग्गभी हैं इसमें सं-

शय्यनहीं है ७३ यह सब स्थावर जङ्गम जगत् विष्णुसे व्याप्तहै वह परमेश्वरहै तो एक परन्तु पृथक्कतासे स्वयम्भू कहाताहै ७४ जैसे नानाप्रकारके रङ्गके स्थानमें स्फटिकमणि नानावर्णका चित्रविचित्र दिखाई देताहै इसीप्रकार गुणोंके वशसे स्वयम्भूका अनुवर्त्तन होता है ७५ जैसे गार्हपत्यअग्नि अन्य अग्नियों के सङ्ग पड़ने से अन्य प्रकार का होजाता है अर्थात् आहवनीयादि के तुल्य होजाता है ऐसेही विष्णुका भी समाचारहै ७६ बस सबप्रकार से वामनदेव देवताओं का कार्य्य करेंगे इसप्रकार चिन्ताकरतेहुये भावीजाननेवाले देवताओं की ७७ बातें ठौर २ होहीरहीथीं कि इन्द्रके सङ्ग वामन जी वाष्कलिके स्थानको गये व दूरहीसे सर्व्व शोभाओंसेयुक्त उस पुरीकोदेखा ७८ जोकि पीले वस्त्रोंसे व सब रत्नोंसे उपशोभित मुख्य मन्दिरों से व बड़े २ चौरहों से शोभितहोतीथी ७९ व जो ऐरावत हाथी के कुलमें उत्पन्न मदचूतेहुये अञ्जन के पर्व्वत के समान काले व बड़े सैकड़ों गजों से विराजमान होरही थी ८० व जो पुरी दूबरे अङ्गोंवाले छोटेकानोंवाले व मनोवेगवाले व गल नेत्र लम्बेवाले व सबप्रकारसे मनोहर घोड़ों से उपशोभितथी ८१ व जिस पुरी में कमलके पुष्प के भीतर के किञ्जल्क व तपायेहुये पक्कसुवर्ण के रङ्ग की व पूर्णमासी के चन्द्रकेसमान प्रकाशित मुखवाली व संलाप और उल्लाप करने में चतुर सहस्रों वेश्या रहतीथीं ८२ व सब वाष्कलि केही आगे नाचतीथीं वह बाजार की वस्तु कोई नहींथी व वह विद्या नहीं थी व वह शिल्पकारी कोई नहीं थी जो वाष्कलिदानवके पुरमें न हो व उसके अक्षिगोचर न हुईहो ८३ व उस पुरमें सहस्रों तो घनी वाटिकायेंथीं व समाजोंके व उत्सवोंकी तो पंक्तियां विद्यमानथीं व मृत्युरहित श्रेष्ठ दानवोंकरके युक्तथी ८४ व वीणा वेणु मृदङ्गों के नादोंसे सब कहीं नादित होरहीथी व सदा प्रहृष्टमन बहुत से दैत्यों से शोभित थी ८५ व सब दैत्य वहां ऐसे प्रसन्न घूमतेथे जैसे कि सुमेरुपर्व्वत पर देवगण घूमते हैं व पदसमूहों के साथ उदात्तादि स्वरों से युक्त वेदघोष सबकहीं होरहाथा ८६ व अग्नियों के घृत सहित धूममें लगकर चलतेहुये पवन से जिसका पापनष्टहोगयाथा

व सुगन्धित धूपको उड़ाकर सुगन्धित करातेहुये पवनोंसे सुवासित होरहीथी ८७ व सुगन्धित दैत्यों से भरेहुये उस पुरमें वह वाष्कलि दैत्य तीनोंलोकोंको अपने वशमें करके सुखसे बसताथा ८८ व वहां रहकर चराचर सबोंका पालन करता बड़ा धर्म्मज्ञ उपकार जानने वाला सत्यवादी व जितेन्द्रियथा ८९ नीति अनीति के जानने में में ऐसा विचक्षणथा कि सब देवताओंके भी देखने के योग्यथा बड़ा ब्रह्मण्य शरण्य व दीनोंका पालन करनेवाला था ९० वेद मन्त्र व उत्साहमें बड़ा समर्त्थ था व प्रभाव उत्साह मन्त्रज तीनों शक्तियां उसमें विद्यमानथीं व छःप्रकारके गुणोंकाभी उत्साहथा जिससे वार्त्ता करता कुछ थोड़ा हँसते हुयेही करताथा ९१ वेदवेदाङ्गों के तत्त्वोंको जानता नित्य यज्ञकर्मकरता तपस्याही में युक्तथा दुश्शीलता में निरत नहींथा व वह सर्व्वत्र हिंसा नहीं करताथा ९२ मान्योंका मान करता शुद्धचित्त रहता सुन्दर मित्रोंकी मित्रताकरता जो पूज्यलोगथे उनकी पूजाकरता सब वेदशास्त्रोंका वेत्ताथा कोई उसके आगे ढिठाई नहीं करसक्ता सुन्दर ऐश्वर्य से युक्तरहता व प्रियदर्शनथा ९३ धन धान्य उसके बहुत थे व बड़ादानी वह दानवथा अर्त्थ धर्म्म काम इस त्रिवर्गका साधन नित्यकरता इससे तीनोंलोकों में श्रेष्ठपुरुष गिनाजाताथा ९४ नित्य अपनी पुरीमें बैठेही बैठे सब देवताओं व दानवों के अहंकार को नष्ट कियाकरता ऐसा वह दैत्य तीनोंलोकों की सब प्रजाओं का पालन करताथा ९५ उस दानव राजाके राज्य करने के समय अधर्म्म में कोई भी नहीं मनलगाता था न कोई दीन वा रोगी वा अल्पायु वा दुःखी था ९६ मूर्ख मन्दरूप दुर्भाग्य व आकृतिरहित भी कोई नहीं था सब सुखी हृष्टपुष्ट सत्कर्म्मनिष्ठा-दिही लोग उसके राज्य में रहते थे ९७ सो एकत्र विमल सकलदेह से युक्त व गुणसमूहों से युक्त व बुद्धिमें प्रविष्ट उस दानव को देख व मानकर महात्मा इन्द्र उसे प्रसन्न करातेहुये दैत्यराज के द्वार-पालसे बोले कि सूर्य्य के समान प्रकाशित तेजसे युक्त ९८ अपने राजासे हमको आयेहुये जनाओ यद्यपि इन्द्र तीनोंलोकों के धारण करने में समर्थ थे पर निराश होने के कारण उनका चित्त छिन्न

भिन्न शतखण्ड था इससे द्वारपाल से कहलाभेजा ९९ यह सुनकर द्वारपर रहनेवाले महायुद्ध दुर्म्मद दानवलोग जनाने स्थान में जाकर दानवेन्द्र से यह बोले कि यह एक बड़े आश्चर्य्य की बात है कि इन्द्र अकेले केवल एक वामननाम मुख्य ब्राह्मण के साथ आप की पुरीमें आये हैं सो हमलोगों को इस समय जो करना हो हे स्वामिन्! वह कहिये १००।१०१ यह सुनकर दैत्यराज सब दानवों से बोला कि तुमलोग जैसे पूर्व्व समय में रहते थे वैसेहीरहो इन्द्रको लाओ वह हमकरके पूज्यहै १०२ व धर्म्मराज इन्द्रको उसी समय इन्द्रसहित वामनजी बनाय उसके सन्निकट आगये व दैत्यराजने बड़े प्रेमसे दोनों महाशयों को देखा १०३ व अपने को कृतार्थ माना और दण्डवत् प्रणाम करके दानवों का धुरन्धर राजा बोला कि १०४ यह अचिन्त्य अप्रकट पदार्थ प्राप्तहुआ इससे मेरे समान धन्यतर कोई नहीं है जो कि मैं लक्ष्मीयुक्त इन्द्रको अपने घरमें आयेहुये देखताहूँ १०५ यदि इन्द्र तुम किसी अर्थके लिये यहां आयेहोगे व कुछ मांगोगे तो गृहमें आयेहुये तुमको अपने प्राण तक देदूँगा यह निश्चय है १०६ फिर धन पुत्र और स्त्रियोंकी कौन कथाहै जो तीनोंलोक मांगोगे तो दे डालूँगा ऐसाकह सम्मुखआये हुये इन्द्रको गोद में बैठाकर १०७ आदर से छपटाकर व प्रणाम करके हाथ पकड़कर बड़े प्रेमसे अपने गृहके भीतरको लिवालेगया व वहां अर्घ्य पाद्याचमनीयादि से उनकी अच्छीरीति से पूजाकी १०८ और कहा कि आज मेरा जन्म सफलहुआ व सब मनोरथ पूर्णहुये जो कि हे इन्द्र! तुमको अपनेआप अपने गृहमें आयेहुये देखताहूँ १०९ हे देवराज! तुमने मुझको मुख्यदानवों में विख्यात किया क्योंकि तुम्हारे आनेसे मेरेगृहकी पुण्यता हुई ११० अग्निष्टोमादि यज्ञोंके अच्छेप्रकार करने से जो फल होताहै आज वहफल हुआ अथवा राजसूय यज्ञका फल तुम्हारे दर्शन से हुआ १११ जो फल पृथ्वीके दान करने से अथवा ऋत्विज के अर्थ गौवेंदेने व राजसूय यज्ञ करने से होता है वह फल मुझको भया ११२ हे इन्द्र! अन्यकिसी तपस्या से तुम्हारे दर्शन नहीं होसक्ते इससे अब इस

गृहमें तुम्हारा जो प्रिय मुझको करना हो वह कहियें ११३ आप इस विषय में कभी किसी भी प्रकार से अन्यथा विकल्प न करें जो आपकहेंगे चाहे अतिदुष्कर भी हो परन्तु उसे कियाहुआही जानें ११४ मैं पुण्य तो थाही पर हे शत्रुसूदन ! तुम्हारे दर्शन से पुण्यताको प्राप्तहुआ क्योंकि मैंने श्रेष्ठ देवताओं,से वन्दित तुम्हारे चरणों की वन्दना की ११५ हे प्रभो ! तुम्हारे आगमन की कौनसी कृत्य है हमसे कहो मैं तुम्हारे आगमन का कारण अतिआश्चर्य्य मानता हूं ११६ इन्द्र यह सुनकर बोले कि हे वाष्कले ! हम तुमको मुख्य दानवोंका प्रधान जानते हैं हे असुरोत्तम ! जो वस्तु तुममें हमने देखी वह अतिआश्चर्य्य की नहीं है ११७ क्योंकि आपके गृह में आये हुये अर्थीलोग विमुख नहीं जाते अर्थियों के लिये तो तुम कल्पवृक्षही हो क्योंकि तुम्हारे समान अन्य कोई दाता विद्यमानही नहीं है ११८ प्रभा में तो सूर्य्य के तुल्यहो व गम्भीरता में समुद्र के समान हो सहनशीलता में पृथ्वी के तुल्य श्रीकरके नारायणकी उपमा है ११९ कश्यपजीके शुभकुल में ये वामननाम ब्राह्मण उत्पन्न हुये सो इन्होंने हमसे प्रार्थना की कि हमें तीनपैर पृथ्वीदेओ १२० उसमें हम अग्निकी रक्षाके लिये कुटीबनावेंगे जिसमें कि यज्ञकिया करेंगे इस कारण यह याच्ञा हमारी है १२१ क्योंकि हे वाष्कले ! हमारे तीनोंलोक तो तुमनेही हरलिये हैं मुझे निवृत्ति कौनहै मैं तो निर्धनहौं जो देनाहै वह तो हमारे है नहीं १२२ व निर्द्धनहैं हमारे कुछहै नहीं जो इनको दें सो पराये अर्थ आपसे याचना करते हैं कुछ अपने अर्थ नहीं इस याच्ञा से इनको जैसा योग्य हो वैसा करो १२३ सो हमारे भी मांगने पर जो योग्यहो वहकरो व येभी मांगते हैं जो करना उचितहो करो क्योंकि तुमभी कश्यप के वंशमें वंशविवर्द्धन उत्पन्न हुये हो सो भी दिति के गर्भ में से उत्पन्न हुये हो व अपने पितासहित तीनोंलोकोंमें पूजितहो १२४ ऐसा वृत्तान्त हमजानते हैं इससे तुमसे हम मांगते हैं इनके अग्निकी रक्षाके लिये तीनपैर पृथ्वीदेदो १२५ हेदानव ! इन वामन के अङ्ग बहुतही छोटे हैं परन्तुहम पराई भूमिमें से कुछभी नहीं देसक्ते १२६ इससे अवश

हैं परन्तु हेवामन! जिससे कि हमसे तुमने मांगाहै अब हमइनसे तुम को इतनी भूमि दिलाते हैं वामन से इतना कहकर फिर वाष्कलिसे कहनेलगे कि जो तुम्हारे गुरुलोग मानें व मन्त्री मानें तो भूमि तीन पैर इनको देओ व बान्धव और अन्य लोगभी जो इस बातको मानें तो तुम तीनपैर पृथ्वी देओ नहीं तो नहीं हमारे मांगने से व अपने बान्धवों के कहने से व अपने बन्धु व कुलके आनेसे व हमारे गृह में आनेसे जो योग्य हो सो करो १२७।१२८ हे महावीर दानवेन्द्र! जो तुम्हारी रुचिहो तो इन महात्मा वामनको तीनपैर देडालो १२९ तब वाष्कलिबोला कि हे देवेन्द्र! तुम्हारा आना अच्छाहो व बहुत शीघ्र कल्याणहो तुम सबलोगों के परायण अपनी उपेक्षा क्योंकरते हो १३० तुम्हारे ऊपर सब भार स्थापित करके ब्रह्माजी सुखसे विराजते हैं व प्राणोंकी धारणासे युक्तहोकर परमपदकी चिन्तना करते हैं १३१ व बहुत से संग्रामों में छिन्न भिन्न होकर जगत् की चिन्ता को छोड़कर क्षीरसागर यज्ञको पाकर केशव भगवान् सुखसे सोते हैं १३२ व तुम्हारे ऊपर त्रिलोकीका भार स्थापित करके गजचर्म्म ओढ़नेवाले उमापति अपनी भार्य्या के साथ विहार करते हैं व हे इन्द्र अन्य सब बलियों से जो बली दानवलोग थे जो किसीके मारने के मानके न थे पर उन सबों को तुमने मारडाला १३३ द्वादश आदित्य एकादश रुद्र दो अश्विनीकुमार आठवसु व ये सनातन धर्म्म १३४ ये सब तुम्हारे बाहुके बलके आश्रित होकर स्वर्ग में बैठे बैठे यज्ञोंके भागीबने हैं तुमने सौ अश्वमेध यज्ञकिये हैं जिनकी समाप्तिमें ब्राह्मणोंको श्रेष्ठ दक्षिणादी है १३५ व हे इन्द्र! तुमने वृत्र नमुचिनाम ब्राह्मणको मारडाला व तुम्हारी आज्ञा करनेवाले प्रभु विष्णु श्रीविष्णु ने पूर्व्वसमय में १३६ हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष को मारा और हिरण्यकशिपु जो जंघापर बैठाकर मारागया १३७ ऐरावत के ऊपर चढ़ेहुये वज्र हाथमें लिये तुमको आतेहुये देखकर संग्रामभूमिमें सब दानव लोग नाशहोते हैं १३८ जिन बलवत्तर दानवों को पूर्व्व समय में तुमने जीतलिया उन्हें कौन जीतसक्ता इससे सहस्राक्ष तुम्हारेतुल्य हम किसी प्रकार से नहीं हो

सक्के १३९ हे देवेन्द्र ! तुम ऐसेहो हमारी तुम्हारे आगे कौन गिनती होसक्ती है हमारा समुद्धार करनेकी इच्छासे तुम्हारा यहां आगमन हुआ १४० इससे हम तुम्हारा कहा करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं निश्चय करके कहते हैं कि अपने प्राणतक भी देदेंगे हे देवराज ! तुमने इतनी भूमिके लिये क्या कहा यहतो भूमि तुम्हारीदी है १४१ ये स्त्रियां पुत्र गो व जो कुछ और धनहै व यह सब तीनोंलोकों का राज्य इस ब्राह्मणको देडालिये १४२ और हमको हमारे पुरुषों को अयशहोगा कि वाष्कलिने घरमें आयेहुये इन्द्रको न दिया १४३ अन्य भी जो कोई अर्थी प्राप्त होताहै वह हमको प्रियतम होताहै आप तो विशेषता से प्रियतम हैं कहीं कभी इस विषय में विचार न कीजिये १४४ हे देवेन्द्र ! इस विषय में हमको बड़ीभारी लज्जा है जो तुमने तीनपैर भूमिमांगी सो भी ब्राह्मणके लिये सो तुम्हारी प्रार्थना से १४५ अब इनको श्रेष्ठ ग्राम हम देंगे व आपको स्वर्ग देदेंगे अश्व गज भूमि व धन वड़ेमोटे ऊँचेकुचों की स्त्रियां १४६ कि जिनके दर्शन मात्रसे वृद्धभी युवावस्था प्राप्तवाले कासा आचरण करने लगता है सो वे स्त्रियां व यह पृथ्वी सब वामनजी को प्रतिग्राहित करादेंगे १४७ व देदेंगे हे देवेन्द्र ! हमारे ऊपर प्रसाद करो जब वाष्कलिनाम दानवेन्द्र ने इतना वचन कहा १४८ तो उस के पुरोहित शुक्राचार्य्यने दानवेन्द्र से यह वचन कहा कि आपराजा हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है परन्तु आठप्रकार के ऐश्वर्य्यों में योग्य अयोग्य नहीं जानते कि किसको कहां हमको क्या देनाचाहिये इससे मन्त्रियोंसे विचार कराकर योग्य अयोग्यकी परीक्षाकरके १४९।१५० तब किसी को कुछ दीजिये क्योंकि तुमने इन्द्रादि सब देवताओं को जीतकर तो यह तीनोंलोकों का राज्यपाया है परन्तु इस वाक्य के पीछे आप बन्धन को प्राप्तहोंगे १५१ क्योंकि हेराजन् ! जो ये वामन हैं सो सनातनविष्णुहैं इनको आप कुछ नदें क्योंकि इन्हों ने आप तुम्हारे पिता को मारडाला है १५२ ये तुम्हारे पिता माता व बन्धुओंके वधकरनेवाले यहां प्राप्तहुये हैं तुम्हारे वंशके उच्छेद करनेवाले हैं और वंशका नाशकरेंगे क्योंकि ये धर्म्मको नहींजानते

केवल देवताओं केही हितमें रहते हैं मायावी जितने दानव थे माया ही से उनको इन्होंने जीतलिया १५३ । १५४ जैसे कि तुम को इन्होंने अपनारूप मायासे वामन करके दिखाया है इस विषय में बहुत कहने से क्या है इनको कुछ भी किसी प्रकार से भी न देना चाहिये १५५ जो मक्खी के पैरभर पृथ्वी इनको देओगे तो विनाशको प्राप्तहोओगे यह हम तुमसे सत्य २ कहेदेते हैं १५६ गुरू ने ऐसाकहाभी पर दैत्यराज फिरबोला कि हे गुरुजी! धर्म्मार्थी मैंने सब प्रतिज्ञा करदी १५७ व प्रतिज्ञा पूरी करना सज्जनोंका सनातन धर्म्महै जो ये भगवान् विष्णु हैं तो मेरेसमान अन्य कोई धन्यतमनहीं है १५८ जो हमसे दानलेकर देवताओं को भूषित करेंगे तो हे गुरुजी और भी हमको धन्यताको पहुँचावेंगे १५९ क्योंकि जिसको योगीलोग और ब्राह्मण ध्यान कियाकरते हैं पर दर्शन नहींपाते सो उन विष्णुभगवान् को आज हमने देखलिया १६० जो लोग कुश जल लेकर नानाप्रकार के दानदेते हैं वेभी यहीकहते हैं कि हमारे ऊपर परमात्मा सनातन श्रीविष्णु प्रसन्नहों १६१ इस वचन के कहतेही वे लोग मुक्तिके भागीहोते हैं इस कार्य्यके करने में जो मुझसे विकल्पहुआथा १६२ कुछ कहते सुनते नहीं बनाथा वह आपने उपदेश करदिया क्योंकि मैंने बालभावसे इनको प्रथम विष्णु भगवान् नहीं जानाथा शत्रुभी जो गृहमें आजाता है तो फिर उसकेलिये कुछ अदेय नहीं रहता १६३ हे गुरुजी! यही शोचकर हम अपने प्राणभी वामनको देदेंगे व इन्द्रको स्वर्ग देदेंगे १६४ जो दान पीड़ाकारक नहीं है वह दान हम देतेहैं क्योंकि जो दान पीड़ाकारक होता है वह दान मलसहित रहता है १६५ इतना सुनकर गुरुजीने मारे लज्जाके नीचेमुख करलिया तब बाष्कलिबोला कि हे इन्द्र! जितनी पृथ्वी आपने हमको दीथी वहसब धरणी हमनेदेदी १६६ क्योंकि इस बातकी हमको बड़ीलज्जाहोगी कि राजाने तीनहीपैर भूमिदी यहसुनइन्द्रबोले कि हे दानवेन्द्र जोआपने हमसे कहा वह सत्य है १६७ परन्तु इन ब्राह्मणदेवने हमसे केवल तीनही पैर पृथ्वी मांगीथी बस इनका प्रयोजन इतनीही से है व हमने भी इन्हीं के

लिये आप से याचनाकी १६८ इससे हे दनुपुत्र! आप इतनीही दें वाष्कलि दैत्यराज बोला कि हे देवराज! तीनपैर पृथ्वी तुमवामन-जीको देओ १६९ व उसपर तुम सुख से बहुत दिनों तक बसो ऐसाकहकर वाष्कलि ने वामनको तीन पैर पृथ्वी १७० कुश जल सहित देकर कहा कि श्रीहरि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हों जब दान-वेन्द्र ने दान दिया तो वामनरूप को छोड़ कर १७१ श्रीहरि ने देवताओं के प्रियकरने की कामनासे सबलोकों में अपने पादों का विक्षेप किया यज्ञपर्व्वत पर चरणधरकर उत्तरको मुखकरके चल-दिये १७२ तब वामन देवके बायेंचरणमें दानवका गृह प्रविष्टहो-गया व उनके प्रथम के प्रक्रमसे सूर्य्यदेव सहित सब नीचेका भाग आगया १७३ व दूसरा चरण जाकर ध्रुवलोकमें लगादिया बस तीसरे चरणके लिये राजा के कुछ रहीनहींगया तब तीसरा अपना चरण वामनजी ने ब्रह्माण्डपर चलाया १७४ उसके अँगूठेके अग्र करके जब अण्ड फटगया उससे बहुतसा जल निकला ब्रह्मलोक को डुबोकर फिर वह जल अन्य लोकों को यथाक्रम डुबोताहुआ १७५ ध्रुवलोक सूर्य्य लोकको डुबोताहुआ यज्ञ पर्व्वत पर पहुँचा फिर पुष्कर में प्रवेशकरके वहजल गङ्गारूप विष्णुभगवान्के पदोंमें प्रविष्टहोगया वेही पृथ्वीतलपर विष्णुके पदहोगये सो उस स्थानपर जो कोई उस वापी में स्नानकरताहै १७६। १७७ उस प्राणी के द-र्शनमात्र से अश्वमेधयज्ञ का फल होताहै व स्नान करनेवाला अपने इक्कीस कुलों समेत वैकुण्ठवास पाता है १७८ व तीनसौ कल्पतक विपुलभोगों को भोगकर उसके अन्त में इस पृथ्वीपर चक्रवर्त्ती राजा होताहै १७९ सो हे भीष्म! भगवान् के अँगूठे से निकले हुये जल की धारा वैष्णवीनदी कहाई विष्णुपादसमुद्भवा १८० नदी अर्थात् गङ्गानदी होगई हे नृप! अनेक कारणों से गङ्गा विष्णुपादसे उत्पन्न हुई जिन गङ्गासे यह सचराचर तीनोंलोक पूर्णहोगया १८१ अँ-गुष्ठ के अग्रकरके क्षत जो अष्ट है उससे जो शुभ जल प्रविष्ट हुआ वह देवनदी विष्णुपदी नामकहाई १८२ तिस देवनदी करके सच-राचर ब्रह्माण्ड व्याप्त है विभूतियों करके हे महाभाग! सबके अनु-

ग्रह के वास्ते १८३ पीछे वामनजी ने वाष्कलि दैत्य से कहा कि हमारा तीसरा पैर पूराकरो वाष्कलिने नीचेको मुखकरलिया इसका उत्तर कुछ न पाया १८४ उसे मौन देखकर पुरोहित शुक्राचार्य्यजी वाक्यबोले कि हे वामनजी ! दानशक्ति स्वाभाविकी होती है अब हमलोग और नहीं उत्पन्न करसक्के १८५ हे स्वामिन् ! इसके पास इतनीही पृथ्वीथी जितनी कि इसने आपको दी है तब वाष्कलिने विष्णुभगवान्से कहा कि जितनी पृथ्वी है १८६ व जितनी आपने पूर्वकालमें उत्पन्न कीथी उसमें मैंने कुछ चुरानहीं रक्खी भूमि थोड़ी व आपबड़े मैं सृष्टि करने में समर्थ नहींहूं १८७ जो आपके समान भूमि बनादूँ हे देव ! यदि प्रभुत्वमें इच्छा शक्ति होती तो यह कार्य्य होता उस दानवको सत्यवादी मानकर श्रीविष्णुभगवान् निरुत्तर होगये क्याकरें क्याकहें १८८ फिर बोलेकि हे दानव ! मुख्यकहो तुम्हारा कौन काम हम करें तुमने हमारे हाथ में जलदिया १८९ हे दानव ! इससें तुम बहुत से वरों के पाने के योग्यहो हम सब कुछ तुमको देंगे तुम जिसपदार्थ के अर्थी होओ वह हमसे मांगो १९० जब देवदेव जनार्दनजी ने ऐसा कहा तो दानवेन्द्रने कहा कि मैं आपकी भक्तिचाहताहूँ व आपके हाथसे अपना मरणचाहता हूँ १९१ व तपस्वियोंकोभी जो आपका श्वेतद्वीप दुर्लभ है वहांकाजाना चाहताहूँ तब विष्णुभगवान्ने कहा कि अच्छातुम छूटगये तबतक रहो अन्य युगमें १९२ जब हम वराह कारूप धारणकरके पृथ्वीतल में प्रवेश करेंगे तब यदितुम हमारे आगे में आजाओगे तबहम तुमको मारडालेंगे १९३ फिर दानवसे कहा कि वत्स अब हमारेआगेसे तुमचलेजाओ हे राजन् ! जब इसप्रकार वामनजी ने तीनोंलोकोंको अपनेपदोंसे समाक्रमणकरलिया १९४ तब असुरों ने सब लोकोंको छोड़दिया व भगवान्वामनजी ने सब तीनोंलोक लेकर इन्द्रको देदिये व आप अन्तर्द्धान होगये १९५ ॥

चौ० अरुपातालमाहिं बसिनीके। वाष्कलिकरनलग्यो सुखठीके ॥
अरुत्रिभुवनपति भयहु पुरंदर। पालनलाग्यो सबविधि सुंदर १९६
यह त्रैविक्रम नाम पुनीता। हरिप्रादुर्भव श्रुतिगण गीता ॥

गङ्गासम्भवयुत अघनाशन । सुमिरतकरत पापकहँत्राशन १९७
यहहरिपद उत्पत्ति बखाना । सबप्रकार नृप सुन्यहु महाना ॥
ज्यहिसुनिनर यहि लोकमँझारी । सकलपापसों छूटतभारी १९८
अरुदुस्स्वप्न कुचिन्ता दुष्कर । लखे विष्णुपद मिटतसुपुष्कर १९९
जोयुगान्त क्रमसों हरिपदत्रय । देखत पापीजन युतवरनय ॥
पद दर्शनमहँ हरिहु दिखाई । यह सूक्ष्मता जौन हम गाई २००
जो नर मौनव्रत धरि तापर । चढ़तभलीविधिसों तजिद्वापर ॥
करत त्रिपुष्कर यात्रा दैचित । अश्वमेध फलपावत सो नित २०१
अरु छूटत सब पातक पाहीं । मरे जातहरिपुर शकनाहीं २०२

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेविष्णुपदोत्पत्ति कीर्त्तनन्नामत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

दो० इकतिस में कुछ बलिकथा शिवदूतीकी गाथ ॥
तासुयुद्ध रुरुसङ्गता स्तव शिवकृत कह साथ १

इतनी कथासुनकर भीष्मजीने फिरपूँछा कि हे भगवन्! त्रिविक्रम का रूप धारणकरके भगवान्ने महाबली वाष्कलि दैत्यराज को बांधा यह महाआश्चर्य्यरूप वृत्तान्त आपनेकहा जिस रूपकर के बलिको निवृत्त किया १ हमने तो बहुतसे द्विजोत्तमों के मुखसे यह सुनाथा कि अबभी पाताल में विरोचन के पुत्र दैत्यराज बलि विराजते हैं २ फिर जब वाष्कलि का रहना आपने कहा व बलि का रहना भी हमने अन्य ब्राह्मणों के मुखों से सुना तो फिर पाताल नागलोक कैसे हुआ व पिशाचों की उत्पत्ति का वहां सम्भव कैसे हो सक्ताहै वहां किसने ऐसाकिया जो पिशाचादि नहीं रहते ३ व पुष्कर तीर्थको अन्तरिक्ष में कौनलेगया यह सब हमसे कहो कि जिससे वाष्कलि दैत्यराज भी बांधागया ४ भूमिका प्रक्रमण तो पूर्वकाल में देवदेव विष्णुभगवान् ने कियाही था फिर दूसरी बार भूमिका प्रक्रमण करने का क्या कारणहुआ ५ यह सब जैसे हुआ हो विस्तार सहित हमसे वर्णन कीजिये क्योंकि यह वृत्तान्त

सब पापनाशक है व ऐश्वर्य्य चाहनेवाले पुरुषके श्रवण करनेके योग्य है ६ पुलस्त्यजी बोले कि हे राजन् ! तुमने तो कौतुकसे बड़े प्रश्नका भार कीर्तन किया है नृपोत्तम ! जैसा वृत्तान्त हुआहै हम सब कहते हैं ७ विष्णुभगवान् के पादके सङ्गसे वाष्कलिका बन्धनहुआ सो तो हमने वर्णनही किया आपने श्रवण किया ८ परन्तु वाष्कलि के बन्धन की वार्त्ता अन्य मन्वन्तरकी है उसके पीछे इस वैवस्वत मन्वन्तर में फिर जब त्रैलोक्य वलि करके दवालियागया तब हे भीष्म ! श्रीविष्णुजी ने ९ वामनावतार धारण करके भूमिको अपने पदों से नापा है व यज्ञ में अकेलेही जाकर उसीप्रकार राजाबलि को बांधा है १० तब फिर वामनजी का प्रादुर्भाव हुआ वामन जी ने फिर तीन पैरोंसे तीनों लोकों को नापा है ११ व बलिसे छीनकर इन्द्रको त्रिलोकी का राज्य देदिया यह उत्पत्ति आपसे कहचुके हैं अब नागों के तीर्थ का वर्णन करते हैं सो हे महाव्रत ! सुनो १२ अनन्त वासुकि तक्षक महाबल कर्कोटक नागेन्द्र पद्म व औरभी बड़े २ सर्प्प १३ जैसे कि महापद्म शङ्ख कुलिक व अपराजित ये सब कश्यपमुनि के सन्तान हैं इनसे सब यह जगत् पूरित है १४ इनकी प्रसूति क-रके यह जगत् पूरित होगया ये सब सर्प बड़े कुटिल भयङ्कर कर्म्म करनेवाले बड़े तीक्ष्ण मुखके व विषसे बड़े उल्वण होते हैं १५ मन्द मनुष्यों को देखते ही एक क्षणभरमें भस्म करदेते हैं तिनके देखते ही हे राजन् ! मनुष्यों का नाशहोता है १६ इस प्रकार दिन२ मनुष्यों का नाश जब होनेलगा तो अपना सब ओरसे नाश देख-कर सब की सब प्रजा १७ शरणागतरक्षक ब्रह्माजी के शरण को गई व हे राजन् ! यह सब वृत्तान्त कहने पर उद्यत हुई १८ व विष्णुभगवान् की नाभिके कमल से उत्पन्न पुराने ब्रह्माजी से सब यहां की प्रजा विनय पूर्वक बोली कि हे देवदेवेश ! सब लोगोंकी उत्पत्ति के कारण आपही परमेश्वर हैं १९ व आपही ने बड़े तीक्ष्ण दांतों वाले सर्प्पों को भी बनाया है परन्तु हम लोग प्रतिदिन इन सर्प्पों से अत्यन्त भय देखतेहैं हम अत्यन्त कृपणहैं मनुष्य व पशु व पक्षीके समूह क्षणमात्रमें भस्म होतेचलेजातेहैं २० हेदेव ! तुमने तो यह

सृष्टिरची है पर सर्प्प इसको उच्छिन्न किये लियेजाते हैं २१ यह जानकर हे पितामह ! जो चित्तमें आवे वह कीजिये यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि हम आप लोगों की रक्षाकरेंगे इस में संशयनहीं है २२ तुमलोग निर्भय अपने २ स्थानमें जाकर सुखसे बसो प्रकट मूर्त्तिहोकर जब ब्रह्माजीने ऐसा कहा २३ तो उनके प्रणाम व स्तुति करके सब प्रजा प्रसन्नहोकर अपने २ स्थानों को चलीआई जब सब प्रजा चलीआई तब ब्रह्माजीने वासुकिआदि सब बड़े २ सर्प्पों को बुलाया २४ व परम क्रोध से सबों को शाप दिया ब्रह्माजीबोले कि हे दुष्ट सर्प्पो! तुम लोग नित्य मनुष्यों व पशुओं को खातेचले जातेहो २५ इससे अब सब मनुष्य और पशु नष्टहोजायँगे जिससे कि हमारे उत्पन्न कियेहुये मनुष्यों को तुम नित्यक्षयकरते चलेजाते हो २६ इस से अन्य समय में हमारे अति दारुण कोप से तुम लोगों का नाश वैवस्वत मन्वन्तर में होगा २७ क्योंकि उसमें दूसरा सोमवंशी राजा जनमेजय होगा वह प्रज्वलित अग्निमें सर्प्पयज्ञ करके तुम लोगों को भस्म करडालेगा २८ व तुम लोगों की मौसी विनता के कहने से गरुड़ तुम लोगों को खाया करेंगे इस प्रकार दुष्टचित्तवाले तुम सबों का नाश होजायगा २९ तुम नागों के सौकुल हैं पर जबतक एक कुल रहजायगा तबतक ऐसा होता रहेगा। ब्रह्माजीके ऐसा कहनेपर सब सर्प्पलोग कांपते हुये ३० उनके चरणों पर गिरकर फिर यह वचन बोले कि हे भगवन् ! आपहीं ने हम लोगों की जाति कुटिल बनाई है ३१ व विषकी उल्वणता क्रूरता व काटने का स्वभाव भी आपही ने बनाया है सो हे देव ! प्रथम हम लोगों को ऐसा बनाकर अब इससमय कैसे शाप देते हैं क्या यह नहीं जानते थे कि ये अपने स्वभाव के अनुसार काम करेंगे ३२ ब्रह्माजी बोले कि जो हमने तुमलोगों को कुटिल स्वभाववाले ही बनाया सही तो क्या तुमलोग निर्भयहोकर नित्य सबको भक्षण कियाकरोगे ३३ नागलोगबोले कि हे देव! मनुष्योंके लिये व हमलोगों के लिये मर्यादा करदीजिये व स्थानभी अलग २ करदीजिये व प्रतिज्ञा भी करालीजिये ३४ व हे देव ! जो यह शाप आपने दिया कि मनुष्य

जनमेजय तुमलोगों को सर्प्पयज्ञमें भस्मकरेगा उससे बचनें काभी कोई उपाय करदीजिये ३५ ब्रह्माजी बोले कि एक जरत्कारु नाम वेदवादियों में श्रेष्ठ ब्राह्मण होगा तुमलोग अपनी जरत्कारु नाम कन्या उसी नामके उस ब्राह्मणको देना उसमें एक पुत्र उत्पन्नहोगा ३६ वह ब्राह्मण तुमलोगों की रक्षाकरेगा व तुम्हारे कुलको पवित्र करेगा व हे नागो! हम मनुष्यों के लिये व तुम्हारेभी एक समय नियत कियेदेते हैं ३७ उस हमारे शासनको एकमन होकरसुनो सुतल वितल व तीसरा तलातल ३८ इन तीन प्रकारके स्थानों को तुम लोगोंको हमने दिया इससे वहीं को तुमको चलेजाना होगा वहां पर हमारी आज्ञासे बहुत प्रकार के भोग भोगतेहुये तुम लोग ३९ टिके रहना व पाताल तक सब तुम लोगोंकाही स्थान है फिर वैवस्वत मन्वन्तरकी आदि में कश्यप मुनिसे धीमान् सुपर्ण के सब देवताओं के भागी गरुड़ उत्पन्नहोंगे ४० वे सब देवताओं के हिस्सेदारहोंगे वे कुछ तुम लोगों का भक्षण करेंगे और जनमेजयके यज्ञ में अग्नि भी तुम लोगोंको भक्षण करेगा तब सबका विनाश होगा ४१ परंतु तुम सबका निस्संदेह नाशहोगा जो २ बड़े क्रूर स्वभाव के महादुष्ट सर्प्प होंगे उन्हींका नाश होगा यह मिथ्या न होगा ४२ व जिसका काल आगयाहो व वह प्राणी और जो तुम्हारा अपकार करे तो उसे तुम खालेना परन्तु तुम लोगोंको काटने के दोषसे मनुष्य लोग गरुड़ मन्त्रों से व औषधों से व तन्त्रों के यत्नों से बंधन करनेवाले जे मनुष्यहों ४३ इससे उनसे डरते भागते रहना व उस अपमानको चित्तमें न लाना बस अन्य किसी उपायसे तुमलोगोंका विनाश न होगा ब्रह्माजी के ऐसे कहने पर सब सर्प्प लोग रसातल को चलेगये ४४ व नानाप्रकार के भोगोंको भोगते हुये वहीं बसते हैं इस प्रकार ब्रह्माजी से शाप व प्रसादको पाकर ४५ हर्षित मन होकर सबके सब पाताल स्थानों में रहनेलगे फिर कुछ कालके पीछे उन लोगोंने चिन्ताकी ४६ कि भरतके वंशमें पाण्डवेय राजा जनमेजय महा यशस्वी होगा वह किसी दैवयोगसे हम लोगों का क्षयकारी होगा ४७ सो त्रिभुवनों के नाथ ब्रह्माजी ने सबके पितामह कैसे हम

लोगोंको शापदिया वे तोसृष्टिके कर्त्ता व जगत्‌केकर्त्ता व जगत् के बन्धु हैं ४८ इस विषयमें विरंचि देवको छोड़ और कोई गतिभी नहीं है व वे देवदेव ब्रह्माजी वैराजस्थान में सदारहते हैं ४९ परन्तु वे देव आजकल पुष्कर तीर्थमें टिकेहुये यज्ञ कर रहे हैं इससे सब लोग वहां चलकर उनको प्रसन्नकरें जब वे सन्तुष्ट होंगे तो वरदान देंगे ५० ऐसा शोचकर नाग लोग पुष्करमें जाकर यज्ञ पर्व्वत पर पहुँचकर उसी शैलकी दीवारमें जाबैठे ५१ उन नागोंको थकेहुये देखकर वहांसे जलकी बड़ीभारी धारा शीतल निकली वह उत्तरको मुख करके धारानिकली व सब को सुखकारिणी हुई ५२ उसीसे वहां नागतीर्थ उत्पन्नहुआ व पृथ्वीपर विख्यातहुआ व कोई कोई उसी को नागकुण्ड कहते हैं व कोई नागसरित्‌भी कहतेहैं ५३ यह नाग तीर्थ सब तीर्थों से पुण्यदायक है व सर्प्पों के भय को नाश करता है इस नागकुण्ड में जो मनुष्य श्रावण शुक्लापञ्चमी को स्नानकरते हैं ५४ उन के कुल में सर्प कभी पीड़ा नहींकरते और तहां जे मनुष्य पितरों की श्राद्ध करिहैं पृथ्वी के बिषे ५५ उन को ब्रह्मा निस्सन्देह परमपददेंगे नागों की भय जान के ब्रह्मा जो लोक पितामह हैं ५६ पञ्चमी सब पाप हरनेवाली शुभ तिथि धन्य है ५७ इसी तिथि में नागों के कार्य्यका उद्धार हुआ है इस तिथिमें सब क्योंकि ते जो खट्टा कडुवा त्याग करें ५८ नागों से ब्रह्माजी ने कहा कि इस तिथि में जो कोई तुम लोगों को दुग्ध चढ़ावे उसको तो कभी न काटना चाहे कुछ दोष भी करे औरों को चाहे जैसाकरना व जो कोई इसश्रावण शुक्लनागपञ्चमीको थोड़े गर्म्मदूधसे नागोंको स्नान करावेंगे उन से नागों की मित्रता होजायगी इतनी कथा सुनकर भीष्म जीने प्रश्न किया कि नागों की व्यवस्थातो हमने सुनी अब जैसे शिवदूती उत्पन्नहुई व जिसने उसको स्थापितकिया ५९ आप वह सब हमसे कहनेके योग्यहैं पुलस्त्य मुनि बोलेकि एकसमय शिवा तप करने में मन लगाकर नीलगिरिपर गई ६० यह शक्ति तमोगुण से जटा से उत्पन्न हुई थी अब इसके वृत्तान्त सुनो उन्होंने अपने मनमें विचारकिया कि हम तप करके बहुत दिनोंतक सम्पूर्ण जगत्

की नाश करेंगी ६१ ऐसा सबों से कहकर उन्हों ने पञ्चाग्नि ता-पने का प्रारम्भ करदिया व उत्तम तप करतेहुये उन देवी को बहुत दिन बीतगये थे ६२ कि तब तक ब्रह्मा से वरपायेहुये महातेजस्वी रुरुनाम असुर उत्पन्नहुआ व समुद्र के भीतर जो रत्नपुरनाम बड़े धन करके युक्त है ६३ उस में सब देवोंको भयंकर रूप वह दैत्य राज्य करने लगा अनेक शत सहस्र कोटि अर्ब्बुद उत्तम दैत्य ६४ उस के सङ्ग नाना शस्त्रास्त्र धारण कियेहुये थे इस से वह मानो दूसरा नमुचि नाम दैत्यही था सो वह रुरुनाम दैत्य बहुत दिनों तक तो अपना समुद्रके मध्यहीमें राज्यकरतारहा फिर लोकपालके पुरको गया ६५ उसका विचारथा कि हम सबको जीतलें इससे देव-ताओंसे वर चाहता था सो जैसेही वह महासुर समुद्र के भीतर से उठकर बाहर चलने लगाथा कि बड़े वेगसे समुद्रका जलबढ़ा ६६ जोकि अनेक नाग ग्राह व मत्स्यादिकोंसे युक्तथा व सब ओरसे उस पर्व्वत के कँगूरों को डुबाता चलाजाता था उस जल के भीतर अ-नेक महादेवजी के वैरी दैत्य थे जो कि विचित्र कवच आयुधादि-कों की शोभा से युक्त थे ६७ सो उन दैत्यों की बड़ी भयंकर वि-शाल सेना समुद्र के जल के बाहर निकली उस सेना में बहुत से दैत्यों के भट हाथियों पर सवार थे व हाथियों की घण्टायें ठनाठन बाजतीथीं ६८ व हाथीभी सब पर्व्वताकारथे उनके जो मद बहताथा वह पर्व्वतों के झरनों के समान दिखाई देताथा व घोड़े सब सुवर्ण के भूषण पहिने व जीन आदि सब जरकसीसे युक्तथे इससे जलके भीतर से निकलेहुये रोहू मत्स्योंके समान चमकतेहुये दिखाई देते थे ६९ ऐसे सहस्रों कोटियों घोड़ों के सङ्ग वह चटापटीकी सेना निकली व रथोंमें चन्द्रमा व सूर्य्य के समान प्रकाशित चक्र आदि लगेथे ७० व पत्रों करके कसे जिनमें पताका फहरारहे ऐसे रथोंमें शब्द होरहा उसीतरहसे वीर हथियार लियेहुए थे ७१ इसीप्रकार बड़े २ हाथियोंपर चढ़कर देवताओंकी भी सेना युद्ध करनेकेलिये अमरावतीपुरी से निकली जिससें के योधा क्लेश नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्र हाथों में लिये थे व प्रत्येक रणमें जिन्होंने जय पायाथा ऐसे

प्रहार करनेवालेथे व अत्यन्त शोभित होतेथे परन्तु जैसे इस बड़ी धूमधामी दैत्योंकी सेनासे युद्धहुआ कि देवताओं की सेना विशेष कर सब भाग खड़ीहुई व ७२ असुरलोग उसके पीछे २ दौड़ खड़े हुये तब जितने देवगणथे भयसे विह्वल होकर औरभी भागे ७३ व नीलगिरिपर गये जहां कि शिवादेवी तपस्या करतीथी व जोकि तपसे युक्त रौद्री व शाम्भवी उत्तमशक्ति थी ७४ जिसको संहारकारिणी कालरात्रि देवी कहते हैं उस प्रोत्फुल्ल कमलदलनेत्रवाली भगवतीने भयसेव्याकुल देवताओंको देखकर उनसे पूछा कि तुम्हारे पीछे कुछ भय हम नहीं देखती हैं ७५ । ७६ पर तो भी तुम इन्द्रादि सब देवगण कैसे भागतेहुये चकित चलेआतेहो इस बातको सुनकर सब देवगण बोले कि चतुरङ्गिणी बड़ीभारी सेना समेत रुरुनाम दैत्योंका राजा अभी आताहै हे देवि ! उसके भयसे भीत होकर हम लोग आपकी शरणमें आये हैं ७७ । ७८ देवताओं के ऐसे वाक्यको सुनकर वह भगवती बड़े ऊंचे स्वरसे ठट्ठाकर हँसी उसके हँसतेही मुखके भीतर से सब श्रेष्ठ अंगोंवाली ७९ व ऊंचे मोटेस्तनोंवाली पाश अंकुश धारणकिये बहुतसी स्त्रियां निकलआईं सबकी सब शूल धारणकिये भयङ्करीथीं व सब बड़े २ दांत निकाले हुयेथीं व सब शिरपर बड़े ऊंचे मुकुट धारणकियेथीं व सबकी सब त्वबुरी बांधेथीं व अकल्याण युक्त भयङ्कर शब्दोंसे चराचरको भय भीत करती थीं ८० । ८१ कोई तो सफेद कपड़ा कोई चित्रविचित्र वस्त्र कोई २ तो अत्यन्त कालेवस्त्र धारण कियेथीं कोई लाल कोई पीले वस्त्रों से शोभित होतीथीं ८२ उनके नानाप्रकारके मुखथे व नानाप्रकारके वेषरूपथे उन सब स्त्रियोंसे युक्तहो देवताओं के अभय करनेवाली ८३ भगवती बोली कि हे देवताओ ! न डरो तुम लोगों का कल्याणहो बस अब हम पहुँचगई किसका भय है ऐसा भगवती कहतीहीथी कि चतुरंगिणी सेना लिये तबतक रुरुनाम दैत्यराजभी आनपहुँचा ८४ व उस नीलपर्वतपर जहां कि सब देवगण विराजते थे व देवताओंकी सेना तथा देवियोंकी सेनासे समाकुलथा खड़ेरहो खड़ेरहो ऐसा बकतेहुये दैत्य उस पर्वतपर आगये

व उन दैत्यों और देवियोंकेसंग महाभयंकर युद्ध होनेलगा ८५।८६
व बाणों से छिन्न भिन्न देह होकर दैत्यलोग इधर उधर दौड़ने
गिरने लगे जैसे कि दण्डों से मारेहुये सर्प्प मारे रोषके इधर उधर
चलबलाकर भागते हैं वैसेही वे दैत्य भागने लगे ८७ किसी के
तो शक्तिसे हृदय निर्भिन्न होगये थे किसीकी छाती गदासे चूर्ण२
होगई थी किसी किसीके शिर फरसों से फटगये थे किसी किसी के
मस्तक मुसलों से विदीर्ण होगये थे ८८ किसी किसीके पेट त्रिशू-
लोंकी नोकोंसे छिदगये थे व किसी किसीके गल श्रेष्ठखड्गोंसे कट-
गये थे व इस प्रकार मारेहुये रथ हाथी घोड़े व पैदर सिपाही समरमें
गिरेथे ८९ यहांतक कि रुरुको छोड़कर सब दैत्य रणमें मारेगये
फिर अपनी सेनाको मारी हुई देखकर रुरुने माया फैलाई ९० उस
से समरभूमि में सब देवताओं व देवियों को मोहित करडाला ऐसी
तामसी मायाकी कि उससे सब अन्धकारही होगया किसीको कुछ
सुझाई नहीं देता ९१ तब देवीजीने महाशक्ति से उस दैत्यको ता-
ड़ित किया उस शक्तिसे ताड़ित होतेही दैत्यका कियाहुआ सब
अन्धकार नष्टहोगया ९२ जब तामसी माया नष्टहोगई तो रुरु
दानव अतिवेगसे पाताल में पैठगया परन्तु वहां भी ९३ क्रुद्धहोकर
देवीजी अपनी शक्तियों को सङ्गलिये जापहुँचीं व सामने खड़ीहुईं
व मारे भयसे आगे गिरेहुये रुरुनाम दानवेन्द्र का ९४ शिर नखके
अग्रभाग से नोचकर व उसका सब चर्म्मलेकर फिर अतिवेगसे वहां
से उड़ीं व पाताल से आकर पुष्कर के पर्व्वतपर कूदपड़ीं ९५ व
उनके सङ्ग बहुत रूपयुक्त अतिप्रकाशित उन कन्याओं की बड़ी
भारी सेनाभी पुष्कर में आगई व विस्मित देवगणों ने रुरुका चर्म्म
व मुण्ड लियेहुये देवीपरमेश्वरी को ९६ अपने तपस्या के स्थानपर
देखा तब बड़े भाग्यवाली वे सब देवियां चारोंओर से भगवती को
घेरकर खड़ी होगईं ९७ और मारे भूँखके भोजन मांगनेलगीं कि
हे वरदेनेवाली! हमसब बहुत भूँखी हैं इससे हमको श्रेष्ठ भोजन
देओ ९८ जब ऐसा उनलोगों ने कहा तो देवीजी ने उनके भोजन
के लिये ध्यानकिया परन्तु बड़ी चिन्तना करनेपर भी जब उन के

लिये कुछ भोजन न विचारमें आया ९९ तो फिररुद्र पशुपति विभु महादेवजी का ध्यानकिया वे भी परमात्मा त्रिलोचनजी ध्यानकरतेही वहां आगये १०० व उन देवीजी से बोले कि तुम्हारा कौन कार्य्य इष्टहै हे देवि ! हेमहामाये ! जो तुम्हारे मनमें हो हमसे कहो १०१ यह सुन शिवदूती देवीबोलीं कि हे देव ! छागों के मध्यमें जो शाकके रूपका कोईहो उसे ये तुमसे खानेके लिये मांगती हैं सो दो नहींतो ये तुम्हीं को वांछित भक्ष्य बनाके आदर से खाजायँगी १०२ सो इनको कुछ भक्षण करने के योग्य देओ नहींतो खाने की इच्छा करके हमें मारडालेंगी १०३ यदि ऐसा न होगा तो बलसे ये हमको भी खाजायँगी ऐसा हमको भी देखके जल्दी इनको भक्ष्य कल्पना करो १०४ महादेवजी बोले कि हे शिवदूति ! अन्य युगका एक वृत्तान्त तुमसे कहते हैं गंगाद्वार में हमारे गणोंने दक्षके यज्ञ का विध्वंस किया था १०५ वहां यज्ञ मृगरूप धारणकरके बड़ेवेगसे भागचलाथा हमने उसको बाणसे माराथा इससे रुधिर बहताचला जाताथा १०६ उसमें छागकीसी गन्धि आनेलगीथी व हमारे अङ्गोंमें भी छागकी गन्धि आनेलगी तब देवताओंने हमारा अजगन्धि नाम धराया था सो अब वह अपनी अजगन्धिता इन लोगोंके भोजनके लिये हम देते हैं १०७ हे देवि ! एक तो इन लोगोंके भक्षणके लिये यह बताया अब दूसरा और कहते हैं हमारा कहना सुनो हे श्रेष्ठ जांघोंवाली ! हे महाप्रभावाली ! हे कालरात्रि ! १०८ जो गर्भवती स्त्री किसी दूसरी स्त्रीका लहँगा पहिनलेगी वा छूलेगी व पुरुष की धोती पहिन लेगी वा छूलेगी तो १०९ पृथ्वी तलपर उस स्त्रीका गर्भ इनमें से किसी किसीका भक्षण होगा इससे जबतक एकवर्ष का लड़का न हो तबतक ये भाग लेंगी सो हठसे ये जाकर भक्षण करलेंगी कोई रोंक न सकेगा ११० इससे ये लोग सैकड़ों वर्षतक तृप्तबनी रहेंगी व अन्य बहुतसी इसमें की देवियां सौरी के गृहमें जहां असावधानता रहेगी व इनकी पूजाभी न होगी तो वहां विघ्न करेंगी १११ जो स्त्रियां अन्य किसीके घरमें वा खेतमें वा तड़ाग में वा वाटिका में बागीचे में ११२ रोती हुई ये स्त्रियां अन्य जगह में

भी हमेशह खड़ी होंगी ऐसी स्त्रियोंके शरीरमें घुसकर इनमें से किसी किसीकी तृप्तिहोगी ११३ यह सुनकर शिवदूती फिर बोलीं कि यह तो प्रजाओं का पीड़न बड़ाखराब भोजन आपने दिया आप देने नहीं जानते हैं हे शङ्कर! ११४ यह प्रजाओं का परिपीड़न बड़ा लज्जाकारक है इससे हे शङ्कर! यह भोजन इनके देनेके योग्य नहीं है ११५ महादेवजी बोले कि अवन्तीपुरी में मैंने स्वामिकार्त्तिक का मुण्डन कियाथा लड़के के मुण्डन के बाद हे शुभे! ११६ तब सब माताओंने आकर अपूर्व्व भोजन बनायाथा व देवलोकसे देवगण उन मातृगणोंके सङ्ग भोजनकरनेको आयेथे ११७ उनमें ब्रह्मादि सब श्रेष्ठ २ देवगणभी थे गन्धर्व्व अप्सरा यक्ष व सब गुह्यक लोगभी थे ११८ मेरुआदि सब पर्व्वतथे व गङ्गादि सब नदियांथीं सब नाग दिग्गज सिद्ध पक्षी व दैत्योंके नाशक अन्य देवभी आये थे ११९ सब ग्रह व वैतालोंसे युक्त डाकिनियांभी आईथीं हे देवि! बहुत कहने से क्याहै ब्रह्माकी बनाई हुई जितनी सृष्टि है १२० सबने आकर भोजनकियाथा व सब तृप्तहोगये थे तब शिवदूतीने कहा कि इनके लिये जो स्वर्गमें भी दुर्लभहो वह भोजन दो १२१ स्नेहसेयुक्त गुड़ सहित नानाप्रकारके हितकारी पदार्त्थ सुन्दर रीति से परिपक्वकरके बनायेहुये हे परमेश्वर! जैसे पदार्त्थ किसी ने कहीं नहीं खाये हों व अपूर्वहों वैसे दो १२२ जब इसतरहसे कहेगये तब तो सो जो देव देव महेश्वरहैं सो भक्ष्य के वास्ते तिससमयमें तिन देवियोंमें पार्व्व-ती के निकट बोले १२३ कि हमने जो अन्न नानाप्रकारसे बनाया था वह सब खर्चहोगया अब कुछ भी और नहीं दिखाई देता १२४ इससे अब आईहुई तुम लोगोंको अब हम क्या भोजन देवें सो कहो अब हम आपलोगोंको जो भोजन देंगे वह अपूर्व्वहोगा १२५ जो किसीने कभी खायाही न होगा वह हम आपलोगोंके खानेको देंगे हमारे नाभिके नीचे गोल २ दोफलके आकारके १२६ अण्डकोश हैं सो तुमको देतेहैं उन्हींका भक्षणकरो इस भोजनसे तुम्हारी श्रेष्ठ तृप्ति होगी १२७ तब उन देवियोंने कहा कि यह तो आपने महा-प्रसाद दिया व हँसकर प्रणाम करके सबकी सब खड़ी होरहीं और

यह वचन बोलीं कि १२८ इस बात को जो कोई शुभ आचारवाले विना हास्यकिये कहेंगे तो उनलोगों के धन पुत्र पशु स्त्री गृहादिक १२९ हमलोगों के देनेसे होंगे व और भी जो कुछ उनके मनमें होगा वह भी होगा व जो कोई इस वृत्तान्तको सुनकर हास्यसे बड़े लम्बे दांत निकालेंगे उनलोगोंके यहां दरिद्रता होगी १३० इससे जान बूझ किसीकी निन्दा और हास्य न करना चाहिये बस इतना कह-कर वे माता लोग तो अन्तर्द्धान होगईं व उतनीही माता इसलोक में प्रसिद्धहुईं १३१ व महादेवजी कहते हैं कि जो मनुष्य इसका उत्साह दीपमालिकाके दिन करेंगे अण्डकोश बनाकर उनमें चने भरेंगे व पुआ व पूरी करेंगे १३२ उनका बन्धु व स्वजनोंसे युक्तहो-कर वंशाच्छेद कभी न होगा अपुत्र पुत्र पावेगा धनका अर्थी धन पावेगा १३३ जिसे रूपकी इच्छाहोगी वह रूपवान् सुभग भोगी व सब शास्त्रों में विशारद होगा व अन्तसमय हंसयुक्त विमान पर चढ़कर ब्रह्मलोक में जाकर पूजित होगा १३४ हे शिवदूति! हमने भी जब उन मातृगणों को ऐसा भक्षणदिया तो फिर तुमको इसमें क्या लज्जाकारक हुआ जो हम कहगये सो सुनो १३५ जो तुम्हारे गणोंको हमने स्त्रियोंके गर्भादि भक्षण करनेको कहा अच्छा अब जो हम कहते हैं उसे सुनो ॥

चौ० जय चामुण्डे देवि भवानी । जय जय भूत विनाशिनि बानी ॥
जय सर्वत्र गमन अधिकारिणि । कालरात्रिनममभयहारिणि १३६
विश्वमूर्त्ति युत शुद्ध विरूपे । लोचन अक्षि विरूप निरूपे ॥
भीमरूप शिवरूपिणि विद्ये । महमाये महजठरि अनिन्द्ये १३७
मनोजये दुर्ग्गे जय तेरो । भीम नयनि क्षुभित क्षयछेरो ॥
महागौरि चित्राङ्गि भवानी । गीतनृत्यप्रियसबशुभखानी १३८
विकराली करालि कालीका । पापहारिणी गिरि बाली का ॥
पाशदण्ड करकमल तिहारे । भीम भयानक हस्तकरारे १३९
चामुण्डेऽनल वदनि महाबलि । तीक्ष्णदंष्ट्र विनवौंयुतअञ्जलि ॥
शववाहिनि प्रेतासन कारिणि । देविशिवेजनअघगणहारिणि १४०
देवि भीषणे भीम विनयने । सर्व्वभूत भयकारिणि अयने ॥

विकराले कराति महकाली । बहुरिकरालिनि सबगुणशाली १४१
विक्रान्ते कराति विकराले । कालरात्रि प्रणमत गिरिबाले ॥
सर्वशास्त्र धारिणि वरदायनि । सर्व्वदेवनुतपदमहमायनि १४२
शिवदूतीस्तुति इमि शिवभाषी । परमेष्ठी त्रिभुवन के साषी ॥
भैसन्तुष्ट देवि नति पाई । बोलीविहँसिसकलसुखदाई १४३
बरमांगहु देवेश जुभावा । पैहहु सो करिहहु जो दावा ॥
इमि सुनि शिव बोले करजोरी । सुनहु प्रिये यह विनतीमोरी ॥
हे वरवदनि जौन नरकबहूं । पढ़िसुस्तोत्रंकरिहिनतिसबहूँ १४४
तिन्हें होहु वरदायनि देवी । सब महँ बसत होहुसबसेवी ॥
जो यहि पर्व्वत पर चढ़ि तोहीं । भक्ति सहित पूजहिंह्वैसोहीं १४५
सो सुत पौत्र समृद्धि अनेका । पशुपावत अरु लहत विवेका ॥
तवउतपत्ति सुनिहि जो प्राणी । भक्तिसहितभाषिहिनिजवाणी १४६
सर्व्व पाप तजि सो नरनीके । पद निर्वाण लहै यह ठीके ॥
भ्रष्टराज्य नृप नवमी माहीं । ह्वैशुचिनियतपढ़िहिशकनाहीं १४७
अथ अष्टमी चतुर्दशि काहूँ । करि उपवास चित्त यक ठाहूँ ॥
वह संवत्सर महँ निज राजू । निष्कण्टक पाइहि युतसाजू १४८
यह ज्ञानान्वित शक्तिबखाना । श्रुति वेदान्त विदित गतमाना ॥
यह राजसी वैष्णवी शक्ती । कहीसही करिकै बड़ि भक्ती १४९
अरु रौद्री यह शक्ति कहावै । शिवदूती कहि ज्यहि जगगावै ॥
तासु चरित यह जो नर कोई । सुनिहिंभक्तिसोंनिजमनजोई १५०
सकल पाप निर्म्मुक्त करारी । पद निर्व्वाण केर अधिकारी ॥
जो पुष्कर जलकरि असनाना । पढ़िहिभक्तियुतपुरुषमहाना १५१
सब फल पाय ब्रह्मपुर जाई । पूजित होइहि सत्य बताई ॥
ज्यहिगृह निखिलपाठ यहरहई । अरुनरनित्यसदाजो कहई १५२
नहिं तहँसर्प्पअनल भयहोई । चौर भीति कतहूँ नहिं कोई ॥
जो बुध पुस्तककीकरु पूजा । भक्तिसहिततजिकैमनदूजा १५३
सो त्रैलोक्य चराचर केरी । पूजा कीन भई नहिं देरी ॥
बहुसुत तासु होहिं गुणधारी । धनभोजनवनिताहितकारी १५४
सकलसुकर्म्म निरत जनसोई । सत्यकहत तनिकौ नहिं गोई ॥

रत्न तुरग गज भृत्य अनेका। होहिं तासु अरु निबहै टेका १५५
ज्यहिगृहभित्तिलिखोस्तवयेहू। तहँहुँ सकल शुभ नाहिं सन्देहू॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेशिवदूती
चरितन्नामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

बत्तीसवां अध्याय॥

दो० बत्तिसयें प्रेतत्वगति पुष्कर सरस्वति गाथ॥
कह्योभलो दृष्टान्तसों विधिपूर्वक मुनिनाथ १

इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने पुलस्त्य मुनिसे प्रश्न किया कि हे महामते! किस कर्म्म के फलसे मनुष्य को प्रेतत्व होताहै व फिर किस कर्म्मके करनेसे प्रेतत्व छूटता है यह हमसे कहो १ पुलस्त्य जी बोले कि हम तुमसे यहसब कहेंगे हे नृपसत्तम! जिसको सुनकर फिर तुम मोहको न प्राप्तहोओगे २ व जिससे प्रेतत्व होती है व जिससे प्रेतत्व से छूट जायगा जो कि घोर नरक में पड़ाहोगा जो नरक देवताओं को भी बड़ेदुष्कर होते हैं ३ जो मनुष्य कर्म्मवश से प्रेतयोनियों में प्राप्त होते हैं वे पण्डित सज्जनों के सङ्ग सम्भाषण करने से व पुण्य तीर्थों का अनुकीर्त्तन करने से छूटजाते हैं ४ इस विषयमें हे भीष्म! यह कथा सुनीजाती है कि पूर्व्वकालमें एक ब्राह्मण जितेन्द्रिय व स्थूल सब कहीं विख्यात व सन्तोषमें सदा स्थित रहता था ५ व सदा वेदाध्ययन करता नित्य योगाभ्यास करनेमेंयुक्त रहता व जप यज्ञ के विधानसे वह नित्य अपना काल बिताताथा ६ क्षमा व दयासे युक्त रहता सबके कठोर वचनादि सह लेता किसी को कुछ नहीं कहता सब शास्त्रोंके निश्चयको जानता किसी जीवकी हिंसा करने में चित्तनहीं लगाता व कोमलता में भी स्थित रहता था ७ ब्रह्मचर्य्य धारण किये रहता व तपस्या करने में युक्त रहता पितरों के श्राद्धादि कर्म्मोंमें युक्त रहता व अन्य वैदिक कार्यों में युक्त रहता ८ परलोक के भयमें सदा युक्त रहता सत्य वचन में युक्त रहता था व मीठी बात कहने में युक्तथा और अतिथियों की पूजन में युक्तथा ९ व इष्टापूर्त्त में युक्तथा सुख दुःख सब सहलेता था अपने कर्म्मकी

विधि में युक्त था १० वेदसे विपरीत कुछनहीं करता सदा वेद पाठ किया करता इसप्रकार संसारके जीतनेकी इच्छासे वह बहुत दिनों तक ऐसे कर्म्म करता रहा इसप्रकार ब्राह्मणके कर्म्म करते २ बहुत वर्ष बीतगये ११ फिर उसके मनमें आया कि मैं अब कुछ तीर्त्थाटन करूँ पुण्यतीर्त्थों के जलों से इस शरीरको भिगोओं १२ प्रथम वह पुष्करतीर्त्थ में गया व सूर्य्योदय होने के प्रथम वहां उसने स्नान किया फिर सन्ध्यावन्दन जप यज्ञकर व देवताओंके नमस्कार करके मार्ग्ग परचला १३ आगे उसने अति भयङ्कर पांच पुरुषों को देखा जहां देखा वह वन कण्टकादि वृक्षोंसे युक्त व मनुष्य व पक्षियों करके रहितथा १४ उन विकृत आकार वाले घोर दर्शनोंको देखकर कुछ मनमें डरकर निश्चल होकर वहीं बैठगया १५ व धैर्य्यको धारणकर भयको छोड़कर दूरही से मधुरवाणी से पूँछा कि तुमलोग कौनहो व ऐसे विकरालरूप कैसे हो १६ कौन कर्म्म किया जिससे ऐसे विकरालरूपको प्राप्तहुये व ऐसे तुमलोग मार्ग्ग में एकही साथकैसे घूमतेहो १७ व किसप्रयोजनके लिये यहसुन वे प्रेतथे बोले कि हमलोग नित्य क्षुधा पिपासासे युक्त रहते हैं इससे महादुःख से घिरे हैं हम सबोंकी बुद्धि हरगई है किसी बातका स्मरण नहीं आता अचेत रहते हैं १८ इससे न किसी दिशाको जानते हैं न किसी विदिशाको ही जानते न अन्तरिक्षको न पृथ्वीको न स्वर्ग्गहीको जानते हैं १९ पर इससमय में इतना दुःख कहनेकी सामर्थ्यहोगई है इससे कुछ सुख जानपड़ताहै व सूर्य्यके देखने से यह भी जानपड़ताहै कि यह प्रातःकालहै २० इसका तो पर्य्युषित नामहै व इसदूसरे का सूची मुख नामहै एकका शीघ्रग एकका रोहक व पांचयें का लेखक नाम है २१ यह सुनकर वह ब्राह्मण बोला कि कर्म्मसे प्रेत होते हैं फिर उनका नाम होना सम्भव कहां होताहै इसका क्या कारणहै जोकि तुमलोगोंके नामहैं २२ प्रेतबोले उन में एकने कहा मैं सदा स्वादु युक्तपदार्त्थों को खाताथा जो जूँठा कुछ बचजाता था वह ब्राह्मण को देदेता था इससे मेरा पर्य्युषित नामहै २३ दूसरेने कहा कि मैं बहुत अन्न इत्यादिक मांगनेवाले ब्राह्मणों को देखकर सूचितयानी

जाजा कहताथा इससे मेरा सूचीमुख नामहुआ २४ तीसराबोला कि जब कोई भूँखा ब्राह्मण मुझसे कुछ मांगता था तो मैं शीघ्र च-लाजाताथा इस कारणसे मेरा शीघ्रग नामहै २५ चौथे ने कहा कि मैं ब्राह्मणों के मांगने के डरसे जाय कोठे के ऊपर बैठकर चुप्पे स्वादु युक्त अन्नादि खाताथा व मनसे घबराया करता कि कोई यहां भी न आजाय इससे मेरा रोहकनाम हुआ २६ पांचयें ने कहा कि जब कोई ब्राह्मण मुझसे कुछ मांगताथा तो मैं मौनव्रत धारणकरलेताथा कुछ उत्तरही नहीं देताथा केवल पैरके अँगूठे से पृथ्वीपर लिखने ल-गताथा इससे मुझ पापीका लेखक नाम हुआ है २७ सो लेखक तो बड़ेकष्टसे चलनेपाताहै व रोहकनीचेको शिरकिये रहताहै शीघ्रग पँगुलाहोगयाहै व सूचीका सुईकासामुख होगया है २८ पर्य्युषित ऊपरको गलाकरके चलताहै व पेट बड़ालम्बावाला कहलाताहै बड़े बड़े पोताहुएहैं व ओष्ठ बहुत लम्बे हैं ये सब इसीपाप से होगये हैं २९ बस हमलोगों ने अपना यह वृत्तान्त आपसे कहा अन्य कुछ पूँछनेकी इच्छाहो तो पूँछिये पूँछनेपर हमलोग सब आपसे कहेंगे ३० ब्राह्मणदेव बोले कि जो जीव पृथ्वीपररहते हैं वे सब कुछपैकुछ भोजन करते हैं इससे तुम लोगोंका आहार भी हम निश्चयसुना चाहते हैं ३१ प्रेतबोले कि हे विप्र! सब प्राणियों से निन्द्यहमलोगों का आहारसुनो जिसे सुनकर बार बार नित्य निन्दा करतेरहोगे ३२ खँखार मूत्र मल व स्त्रियोंकी भगका रुधिर व मैथुनके समयका पतित स्त्रीपुरुषोंका बीज व शौचसे बचाहुआजल प्रेत नित्य खाते पीते हैं ३३ स्त्रियोंकरके जलाया व जूंठाफेंकाहुआ व मलकरके नि-न्द्यप्रेतखाते हैं ३४ चित्तकी लज्जाछोड़कर व बलिमन्त्र से रहित व होमसेहीन व व्रतोंसेहीन जो भोजन होते हैं उनको नित्य प्रेत भो-गते हैं ३५ जिनघरों में माता पिता व अन्य गुरुजनों की पूजा नहीं होती व जिनघरों के पुरुष केवल स्त्रियोंकेही वशीभूतहोते हैं व जि-नमें क्रोध व लोभही से युक्त पुरुष रहते हैं वहां प्रेत भोजन करते हैं ३६ हे तात! हमको अपने भोजनों के कहने में लज्जाहोती है इसी प्रकारके भोजनहैं जिनको कही नहींसक्ते ३७ हे दृढव्रत! अब आप

से प्रेतभाव के छूटने की युक्ति ३८ पूँछते हैं कि जैसा करने से प्रेत होताही नहीं हे तपोधन! वह हमसे कहो ब्राह्मणदेव बोले कि जिसपुरुष ने एक रात्रि वा दो रात्रिभी कृच्छ्रचन्द्रायणादि व्रत किये हैं व अन्य समयसमय के एकादश्यादि व्रत जो कियाकरता है वह प्रेत नहींहोता ३९ जो तीनदिनके व्रत व पांचरात्रियों के वा एकदिनके व्रत प्रतिदिन कियाकरताहै व जो सब प्राणियों पर दयाकरताहै व किसीको मार नहीं डालता वह मनुष्य प्रेत नहीं होता ४० व जो नर देवता अतिथियोंकी पूजाओं में व माता पिता गुरुओंकी पूजाओंमें नित्यलगारहता है व मान अपमान दोनों में तुल्यरहताहै व सुवर्ण और मिट्टी के ढेले को तुल्य समझताहै व शत्रुओं मित्रों में भी तुल्य भाव रखताहै वह प्रेत नहीं होता व जो नर नित्य प्रजाओंके पालन में तत्पर रहता है वह भी प्रेत नहीं होता ४१ । ४२ व जो पुरुष मङ्गल युक्त शुक्लपक्ष की शुक्लचतुर्थी तिथिमें श्राद्ध करता है वह प्रेत नहीं होता ४३ व जो नर क्रोध और असहन शीलताको जीतलेता है व नानाप्रकार की तृष्णा व दुष्टों के सङ्गसे रहित होताहै क्षमा करता दान शील होता वह प्रेत नहीं होता ४४ गौ ब्राह्मण तीर्थ पर्वत नदी देवताओं की जो दण्डवत् करताहै वह प्रेत नहीं होता ४५ इस प्रकार विविधभांति के धर्म्म सुनकर हर्षित होकर प्रेतोंने फिर मुनि से पूँछा कि हे महामुनि जी! जिसके करनेसे मनुष्य प्रेतहोताहै वह हमसे कहो ४६ ब्राह्मणदेव बोले कि जो शूद्रका अन्न खाकर उसमें भी ब्राह्मण तो विशेष करके शूद्रान्न पेटमें रहे २ मरता है वह अवश्य प्रेत होताहै ४७ माता पिता भाई बहिन व पुत्रको जो विना कुछ दोष देखेही छोड़ देताहै वह नर प्रेतही होताहै ४८ व जो यज्ञ के अयोग्य शूद्र अन्त्यजादि को यज्ञ कराता है और यज्ञके योग्य ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंको नहीं कराता व नित्य शूद्रोंकीही सेवामेंलगा रहताहै वह भी नर प्रेत होताहै ४९ व जो किसीकी धरोहर हरलेता है व मित्रसे द्रोह करताहै व शूद्रके लिये नित्य नौकरी करके भोजन बनाता है व विश्वासघात करता है व झूँठी साक्षी देताहै वह प्रेत होता है ५० व जो नर ब्राह्मण को मारता है व गोवध करता है व

चोरी करता है द्विजाति होकर मदिरा पीताहै गुरुकी शय्यापर बैठता व गुरुस्त्रियों के सङ्ग भोग करता है किसीकी भूमि वा कन्या हठसे हरलेता है वह प्रेत होताहै ५१ व बहुत लोगोंकी समान दक्षिणाको पाकर जो नर अकेलाही लेलेताहै औरोंको नहीं देता व नास्तिकता के भावमें युक्त रहताहै वह भी नर प्रेत होताहै ५२ जब ब्राह्मणदेव ने ऐसा कहा तो आकाश में नगारेबाजे व देवताओं की छोड़ी हुई सहस्रों पुष्पों की वृष्टि पृथ्वीपर हुई ५३ व उन सब प्रेतोंके लिये साथही उन ब्राह्मणदेव के सङ्ग सम्भाषणकरने व पुण्यकीर्त्तन करने से विमान आये ५४ इससे श्रेष्ठ ब्राह्मणों की वाणी तीर्थों से भी अतिगरुई है इससे सब प्रयत्नोंसे सज्जनोंके सङ्ग सम्भाषणकरो ५५ हे भीष्म ! यदि तुमको निरालस होकर कल्याणकी बात करनी है तो सब धर्म्मोंका तिलक यह पांचों प्रेतों की कथा जो पढ़ेगा उसके कुलमें लक्षपुश्ततक प्रेत न होगा ५६ अथवा परमश्रद्धा से जो कोई इस वृत्तान्त को बारबार सुनताहै वह भी प्रेत नहीं होता अथवा जो भक्तियुक्तहो करताहै वह प्रेत नहीं होता ५७ इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने पूँछा कि धर्म्मशील मुनियोंने पुष्करतीर्थ को बताया है कि वह स्वर्ग को चलागया है फिर यहां कैसे मिले ५८ क्योंकि जो अलभ्य पदार्थ है वह लभ्य नहीं होता व विना लभ्य हुये फल नहीं देता सो हम बड़े कौतुक से पूँछते हैं हमसे वर्णन कीजिये ५९ पुलस्त्यमुनि बोले कि हे राजन् ! एक समय दक्षिणदेश के किरोड़ों ऋषिलोग पुष्कर में स्नान करने को आये तब पुष्कर तीर्थ स्वर्गको चलागया ६० यह देखकर वे सब मुनिलोग प्राणायाम करते हुये व परब्रह्मका ध्यान करते हुये बारह वर्षतक वहीं ठहरेरहे ६१ व ब्रह्मा सब महर्षिलोग तथा इन्द्रादि देवगण व अन्य ऋषि लोगभी छिपकर बड़े दुष्कर नियम कहतेहुए वहांरहे ६२ व परस्पर विचारकिया कि हे ब्राह्मणो ! कारण पाकर सब पदार्थ चले जाते हैं ऐसेही पुष्करतीर्थ भी कारण पाकर यहांसे चलागया है सो अब मन्त्रसे फिर उसे यहां स्थापित करना चाहिये आपोहिष्ठा इत्यादि तीन मन्त्रों से सन्निकट चला आताहै ६३ व अघमर्षण

मन्त्र जपने से फलदायक होताहै ये बातें कहकर उन सब ब्राह्मणों ने वैसाही किया ६४ इस बातको सुनकर सब लोगोंने कहा कि भाई दक्षिणी ब्राह्मण अपवित्र होते हैं इसीसे उनके आनेपर पुष्करतीर्थ स्वर्ग को चलागया है सो जिस देशकेलिये जो ब्राह्मण हैं वे उसी देशकेलिये पुण्यकारी होते हैं व ऐसेही दक्षिणके ब्राह्मण इस उत्तर देशमें निन्दित होते हैं व जो पर्व्वती ब्राह्मणहैं वे भी श्राद्धमें भोजन के योग्य नहीं होते इसी कारणसे पुष्करतीर्थ इन दक्षिणी ब्राह्मणोंके आनेसे आकाशको चलागयाहै ६५।६६ अब कार्त्तिक की पूर्णमासी को फिर अपने आप यहां आवेगा हे राजन्! तब ब्रह्मासहित सब देवताओं को पुण्यदायक होगा उस समय जिसी किसी वर्णकेलोग इसमें आकर स्नानकरेंगे सब पुण्यके योग्य होंगे हे राजन्! वे सब ब्राह्मणों के तुल्य होजायँगे पर मन्त्र पढ़नेके अधिकारी न होंगे६७। ६८ परन्तु जब कभी कार्त्तिकी को कृत्तिकानक्षत्र हो तो वह तिथि पुष्करतीर्थ में स्नान दान करनेको महातिथि समझी जातीहै स्नान दानमें उत्तमहै ६९ इससे जब कभी कार्त्तिककीपूर्णमासी को भरणी नक्षत्रहो तो सब को पुष्कर में जाना चाहिये क्योंकि उस तिथिको यतियों ने महापुण्य तिथि कहाहै ७० व हे राजन्! जब उस तिथि में कभी रोहिणीनक्षत्रहो तो वह महाकार्त्तिकी कहाती है और देवताओंकोभी दुर्ल्लभ होजाती है ७१ कभी रवि बृहस्पति व सोमवार को ये तीनों नक्षत्र यानी कृत्तिका भरणी व रोहिणी ब्रह्माजीने खुद कहाहै कि ७२ इसयोगमें स्नान करने से अश्वमेधसे अधिक पुण्य होती है व जो दान दिया जाताहै व पितरों को तर्पण कियाजाताहै वह कभी नाश नहीं होता ७३ सो जब विशाखा नक्षत्रके तो सूर्य्य हों व कृत्तिकाके चन्द्रमाहों व पूर्णमासी तिथि होती है इसयोगको पुष्करकहते हैं व यह पुष्करतीर्थ में अतिदुर्ल्लभ होताहै ७४ सो इसयोगमें जब पुष्करतीर्थ अन्तरिक्षसे पितामहके इस पुष्करतीर्थ में उतरैगा व जो कोई स्नान करेंगे उनको महाउदयके लोक मिलेंगे ७५ वे लोग कियेहुये वा विना कियेहुये अन्य पुण्यकी इच्छा फिर नहीं करते जोकि कार्त्तिकीको पुष्करमें स्नानकरते हैं हे महाराज!

यह हमने सत्यही कहाहै ७६ क्योंकि तीर्थोंका यह श्रेष्ठतीर्थ इस पृथ्वीपर पढ़ाजाताहै हे नृप ! इससे पर अन्यतीर्थ पुण्यकारी नहीं पढ़ाजाताहै ७७ यह तीर्थ सदा पुण्यदायकहै पर कार्त्तिकीको तो विशेष करके अतिपुण्यदायक होताहै क्योंकि जब यह तीर्थ उन दक्षिणी ब्राह्मणोंको देखकर आकाशको चलागया था तो उदुम्बर नाम वनसे आकर सरस्वती नदीने इस पुष्करतीर्थको अपने जलसे फिरसे भरा है इससे यह मुनियों के सेवा करने के योग्य है सो वह सरस्वती भी दक्षिणओर पर्व्वतपर अबभी शोभितहोतीहै ७८।७९ व तिल अञ्जनके ढेरकेरङ्ग की है व हरीघास उसके सब ओर लगी है उससे पर्व्वतका वह शिखर वैसेही शोभित होताहै जैसा कि पुष्कर शोभित होताहै ८० मानो वर्षाकालमें वादरों से पूर्ण आकाशकी शोभा देताहै व कदम्ब पुष्पोंकी सुगन्धिसे युक्त और कुरैया अर्ज्जुनकेवृक्षों से भूषित होता है ८१ मानो पालाके ऊपर चढ़ने के लिये सूर्य्यका मार्गही बनाहै तिलक नाम के वृक्षों से घेरने से ऐसी उस शिखर की शोभा होती है जैसे गोले कुचों से स्त्रियोंकी होती है ८२ व बेल के वृक्षों से भी वह शिखर शोभित होता है मानो अतिउत्तम हरेरङ्ग के दुशाले ओढ़े है भ्रमरों के समूहों से सबओर से शोभायमानहोताहै ८३ कोकिलों के मधुरस्वरों से रुचिर है व मयूरों की वाणी से आकुल है सो ऐसे मनोरम पर्व्वत के शिखरपर बड़े ऊँचे पर मनोरम पुण्य बहुतजल से युक्त ब्रह्माकी कन्या यह सरस्वती नदी विराजती है यह बांसों के बीचमें होकर बहती है व बड़ीभारी है और उत्तर मुखको बहती है ८४।८५ वहां से थोड़ीदूर चलकर फिर पश्चिमको चलती है व फिर वहां से वह देवी प्रसन्नहोकर प्रकट बहती है ८६ अन्तर्द्धानताको छोड़कर प्राणियों के ऊपर दयाकरती है वहांपर कनक के समान प्रभाहै व नन्दा प्राचीसरस्वती उसका नाम है ८७ व पुष्करमें उसीको ब्रह्माजी ने पञ्चस्रोतानाम कहा है उस नदी के तीरपर बड़ेरम्यतीर्थ व देवमन्दिरहैं ८८ जिनकीसेवा मुनि सिद्धलोग सर्वत्र कियाकरते हैं उन मुनिसिद्धोंके लिये सरस्वती धर्म्मकाहेतु है ८९ व उसके किनारे किनारे के तीर्थों में हाटकेश्वर

और अक्षिगौरी आदि तीर्थोंका महाउदय है वहां पर जो मनुष्य स्नानकरके दानदेते हैं उसका अक्षयफलहोताहै ९० वहां अन्नदान को श्रेष्ठ कहते हैं व तिलके दानकोभी मुनीन्द्रलोग श्रेष्ठकहते हैं इस से जो कोई उनतीर्थों में देतेहैं उनका दान धर्म्म हेतु श्रेष्ठ कहाता है ९१ व जो कोई उनतीर्थों में स्त्री व पुरुष निश्चयसे यत्न करके वास करते हैं व तीर्थ में मनको लगाते हैं वे ब्रह्माकेलोकमें जाकर मनोवाञ्छित फल भोगते हैं ९२ व उसके समीप जो प्राणी मरताहै कर्म्म क्षय होजाते हैं चाहे स्थावर जङ्गम कोई क्यों न होवे सब हठ से यज्ञका दुर्लभफलपाते हैं ९३ व वह नदी वहां से आगे धर्म्मफल के देनेवाली है जो जन्मादि दुःखोंसे अर्दित चित्तहैं उन पुरुषों को चाहिये कि उस महानदी की सर्वात्मा करके प्रयत्नसे अवश्य सेवा करें ९४ व जो कोई नर उस नदीका पवित्रजल निरन्तर पीते हैं वे लोग मनुष्य नहीं हैं किन्तु इस पृथ्वीपर टिकेहुये देवताहैं ९५ यज्ञ दान व तप करनेसे जो फल अन्यत्र ब्राह्मण लोग पाते हैं वह इस नदीके स्नानमात्र से शूद्रभी पाते हैं ९६ जो लोग महापातकी भी हैं वेभी इस पुष्करतीर्थके दर्शन करनेसे सब पापोंसे छूटकर मरनेपर स्वर्गको जाते हैं ९७ व जो उस तीर्थ में जाकर उपवास करताहै वह पुण्डरीक यज्ञका जो फल होताहै थोड़ेही श्रमसे शीघ्र पुष्करमें पाता है ९८ व माघमास में जो सदा ब्राह्मण को तिल अपनी शक्तिके अनुसार भक्तिपूर्व्वक देताहै वह श्रीविष्णु के भवन में बसताहै ९९ व वहां उपवास स्नान व पञ्चगव्यका पान जो नर करताहै वहभी देहान्त होनेपर स्वर्ग में जाकर बसताहै १०० व उस तीर्थ के समीप जो चोर लोगभी वसते हैं वेभी उसके प्रभाव से स्वर्ग को जाते हैं इसमें संशय नहीं है १०१ व जो ब्राह्मण शूद्रोंकी वृत्तिमें टिके हैं वे तीन रात्रि तक वहां उपास करके अपनी शक्तिके अनुसार कुछ ब्राह्मण श्रेष्ठोंको देते हैं १०२ वे मरने पर विमानपर चढ़े हुये ब्रह्मा व विष्णुकी मूर्त्तिको धारण करके ब्रह्मके साथ सायुज्य मोक्ष पाते हैं १०३ व जिस पुष्करतीर्थ में यज्ञ के समय नदियोंमें श्रेष्ठ गङ्गाजी बड़े आदर से सरस्वती नदीको देख

ने की इच्छा करके सांत्वताके अर्थ आकाश से आकर नदियों में श्रेष्ठ जो सरस्वती है उसको प्राप्त भई हैं वह गंगोद्भेद कहाता है १०४ व वहां जाकर सुर सिद्धोंसे सेवित सरस्वती के विद्याधरों से पूजित विमल जलमें मिलीं १०५ इससे वहांका सरस्वतीका जल गङ्गाजल से मिला हुआहै व तब गङ्गा को देखकर पूर्व्वदिशाको देख सरस्वतीजी ने कहा कि हे सखिगङ्गे ! १०६ तुमने हमको अकेली छोड़दिया इससे विना बन्धुकी हम कहांको जायँ तब सरस्वती को शोकसे कर्षित रोतीहुई जानकर गङ्गा १०७ बोलीं कि तुमको दीन मन जानकर हम पूर्व्वदेश से देखने को आई हैं इतना कह सरस्वती को प्रीति पूर्व्वक मिलकर १०८ व सरस्वती के नेत्रोंका जल पोंछकर गङ्गा वचन बोलीं कि हे महाभागे ! रोदन न करो हे सखि ! तुमने जो दुष्कृत कार्य्य किया १०९ देवताओंका वह कार्य्य किसी से न होता इसीसे हे महाभागे ! तुमको देखनेके लिये सब देवगण यहां आये हैं ११० अब मन वचन व कर्म्मसे इन देवताओं की पूजाकरो यह सुनकर सरस्वतीजी ने सब देवताओंकी पूजा विधि पूर्व्वक क्रमसे की १११ व अपनी सखी गङ्गा का जल सब देवताओं को चढ़ाया उस समय दोनों नदियोंका वहां सङ्गमहुआ यह सङ्गम ज्येष्ठपुष्कर व मध्यमपुष्कर के बीचमें है व लोक में विख्यातहै ११२ व वहां ब्रह्माकी कन्या सरस्वती का तो पश्चिमको मुखहै और गङ्गा जी का उत्तरको मुख है इसके पीछे जो देवगण पुष्कर में आये थे ११३ दुष्करकर्म्म जानकर उनलोगोंने उसकी बड़ी स्तुतिकी कि हे सरस्वति ! तुम बुद्धिहो मति लक्ष्मी विद्या तुम्हींहो ११४ तुम श्रद्धा तुम परानिष्ठाहो बुद्धि मेधा रति क्षमा तुम्हीं हो तुम सिद्धि स्वधा स्वाहा व पवित्र धृतिहो ११५ सन्ध्या रात्रि प्रभा मूर्त्ति मेधा श्रद्धा सरस्वती यज्ञविद्या महाविद्या व शोभनगुह्यविद्या तुम्हीं हो ११६ आन्वीक्षिकी वार्त्ता दण्डनीति तुम्हीं कहीजातीहो हे पुण्यजलवाली ! हे सागरगामिनि ! तुम्हारे नमस्कारहै ११७ हे पापछुड़ानेवाली ! हे जगत्का प्रियकरनेवाली ! तुम्हारे नमस्कारहै स्वार्थ परायण होकर जब इसप्रकार देवताओंने स्तुतिकी तो ११८ तब पूर्व्वको मुख

करके सरस्वती वहीं स्थित होगई जो कि सब तीर्थमयी व सब देवताओंसे युक्तहुई ११९ सो ब्रह्माके वचनके अनुसार यह सरस्वती बहुत प्राचीन है वहांपर एक शुद्ध वटनाम ब्रह्माजीका बड़ाउत्तम पवित्रतीर्थ है १२० उसके दर्शनमात्र से भी जो बड़ेभी पापी नर हों तो ब्रह्माजी के समीप जाकर नानाप्रकारके भोगियों के भोगोंको भोगते हैं १२१ व जो कोई मनुष्य वहां मरने के लिये निरशनव्रत करते हैं वे मरनेके पीछे निर्भय होकर ब्रह्मविमान पर चढ़कर स्वर्गको जाते हैं १२२ व वहांभी जो लोग वेदवादी ब्राह्मणोंको थोड़ा भी दक्षिणा देते हैं उस दियेहुये दानके प्रभावसे सैकड़ों और जन्म के दियेहुए फलको वे भावितात्मा प्राप्तहोते हैं १२३ सो ब्राह्मणों को शक्करके बनायेहुए याने पेड़े बरफी इत्यादि दान देते हैं वे मधु दान करने से ब्रह्मसेवित लोकको बड़ेसुखसे जाते हैं १२४ जो मनुष्य पूजा जप होम करते हैं ब्रह्मभक्तिमें युक्तहोके वे अनन्तफल पाते हैं १२५ जो इन्द्रीजित मनुष्य ज्ञानचक्षु दीप धूप दान करतेहैं वे ब्रह्मसेवित स्थानको जातेहैं १२६ बहुत कहनेसे क्याहै जो गङ्गासागरमें दान करनेसे फलहोताहै वह जीते मरते सबको वहां मिलताहै १२७ स्नान दान जप होम करनेसे वह तीर्थ अनन्त फल देताहै व इसी से वहां श्रीरामचन्द्रजीने आकर राजादशरथके लिये विधिपूर्वक श्राद्ध किया १२८ यह श्राद्ध उन्होंने मार्कण्डेयजी के दिखानेसे किया वहां एक चारकोणोंकी वापीहै वहां जो लोग पिण्ड देते हैं १२९ वे सब हंस जुतेहुये विमानपर चढ़कर स्वर्गको जाते हैं व उसीस्थानके ऊपर यज्ञ जाननेवालों में श्रेष्ठ ब्रह्माजीने बहुत सी दक्षिणा देकर पितृमेध यज्ञ कियाथा उस यज्ञमें वसुसोम तो पितर मानेगयेथे व रुद्रपितामह १३० । १३१ आदित्य प्रपितामह इसीसे अबभी श्राद्धोंमें पितृ पितामह प्रपितामह क्रमसे वसुरुद्रादित्य स्वरूप पढ़ेजातेहैं तीनप्रकारसे पितरोंको बुलाकर फिर ब्रह्माजीने उनसे कहा १३२ कि आपलोग जब पिण्डदान के लिये यहां बुलायेजायँ तो पिण्ड ग्रहण करने को सदा आतेरहें यहां जो पितृ कार्य्य श्राद्ध तर्पणादि कोई करेगा वह अनन्त फलदायक होगा

१३३ व करनेवाले के पितर पितामह व प्रपितामह तृप्ति के लिये सन्तुष्ट रहेंगे तर्प्पण से तृप्तहोंगे और पिण्डदान से स्वर्ग्ग पावेंगे १३४ इससे सब छोड़कर प्राचीसरस्वती में पिण्डदान करना चाहिये पुत्रको चाहिये कि वहां जाकर सबपितरोंका पिण्डदान देकर यत्न से तर्प्पण करे १३५ क्योंकि वहां पर एक प्राचीनेश्वर देव हैं वे उस श्राद्धके साक्षी होजाते हैं इससे वह बहुत दिनों के लिये प्रतिष्ठित होजाताहै यह आदितीर्त्थ कहाताहै केवल दर्शनमात्रसे भी मुक्तिदेताहै १३६ व वहां के जलके स्पर्श करनेसे तो जन्मके बन्धनही से प्राणी छूटजाताहै व उस आदितीर्त्थ में स्नानकरनेसे सदा ब्रह्माजीका अनुचर होताहै १३७ व विधिपूर्व्वक आदितीर्त्थ में स्नान करके भक्तिसे जो मनुष्य थोड़ासाभी अन्नदान देताहै वह पुरुष स्वर्ग्ग को पाता है १३८ व जो कोई वहां ब्रह्माजी के भक्त ब्राह्मणों को स्नान करके धनदेते हैं सोभी वह धन खिचरी और सुवर्ण मिला कर देते हैं वे बुद्धिमान्लोग स्वर्ग्गलोकमें मोदितहोते हैं १३९ जहां कि प्राचीसरस्वती है वहां फिर मनुष्य अन्य कौन पदार्त्थ ढूँढ़े केवल स्नानमात्रही से तप यज्ञादिकों के समान फल मिलजाता है १४० जो नर पुण्यप्राची सरस्वती का जल पीते हैं वे नर नहीं हैं किन्तु देवताहैं यह मार्कण्डेयऋषिने कहाहै १४१ सरस्वती नदीपर पहुँच कर स्नानकरनेका कुछ नियमनहीं है चाहे भोजन कियेहो वा न किये हो चाहे रात्रिहो वा दिन हो तुरन्त स्नान करना चाहिये १४२ सब तीर्त्थों से प्राचीन सरस्वती श्रेष्ठ तीर्त्थ है क्योंकि यह प्राणियों के पापोंका नाशकरताहै व पुण्य बढ़ाताहै १४३ जो लोग उस तीर्त्थमें स्नानकरके जनार्द्दनजीकी यथाशक्ति पूजाकरते हैं वे लोग स्वर्ग्गको जाते हैं १४४ क्योंकि सब देवताओं में विष्णु श्रेष्ठहैं तिन विष्णुने सरस्वतीको सेवनकिया इससे पृथ्वी में सबसे श्रेष्ठतीर्त्थ है यह ब्रह्मा के पुत्रने कहा १४५ उस प्राचीन तीर्त्थ के आगे फिर महोदयनाम तीर्त्थ उसी प्राचीसरस्वतीके तीरहै वहां गङ्गाजीकी प्रत्याशा करती हुई सरस्वतीनदी स्थितहै १४६ उस तीर्त्थको ब्रह्माजीने सबतीर्त्थों से श्रेष्ठ कहा है क्योंकि यहां मन्दाकिनी के साथ पुण्यतीर्त्थका सर-

स्वती से सङ्गमहै १४७ वहां स्थित सरस्वती देवी की स्तुति देवताओंने की है व गङ्गाजीको वहां अकेले आईहुई देखकर सरस्वती दीनमन होकर वहां स्थित होगई है १४८ तब ब्रह्माजीने सरस्वती की रुरुरूपिणी सखी को विमलहैं नेत्र जिसके उत्पन्न करदिया है व श्रीहरिने बहुत शीघ्र हरिणीनाम सखीको उत्पन्न किया है जिसके कमल ऐसे लोचनथे १४९ व देवराज वज्रपाणि इन्द्रजीने वज्रिणी नाम सखीको बनाया व सुकुरंग रुचि नाम सखीको नीलकण्ठ वृषध्वज महादेवजीने बनाया १५० जब सरस्वतीकी सखीको महादेव जीने भी उत्पन्न किया तो फिर सब सखियों करके देखतीहुई सुरनन्दिनीसरस्वती १५१ प्रहृष्ट होकर वहां से फिर महानदी आगे के देशोंमें चलने को आरम्भ करके व अपनी सखियों के साथ वह प्राचीनासरस्वती चलनेपर उद्यतहुई १५२ व सब तीर्थों से सरस्वती तीर्थ श्रेष्ठतमहै प्राचीसरस्वतीका जल भूतलमें जो मृगगण पीते हैं १५३ वे भी स्वर्ग्ग को जाते हैं जैसे यज्ञकरके श्रेष्ठ ब्राह्मण स्वर्ग्ग को जातेहैं प्राचीसरस्वती को चिन्तामणिके समान जानना चाहिये १५४ व वैसेही यह महानदी कामफलों को पूरणकरती है जैसे कि चिन्तामणि पूरणकरताहै वहांपर दक्षिणादिशा को देखकर सरस्वती फिर पश्चिमको मुखकरके चलीहै १५५ व सरस्वती ने वहीं गङ्गाजीसे कहाहै कि अब तुम यहांसे पूर्व्वदिशा को जाओ हे देवि! हमारा विस्मरण अब न करना सुखपूर्व्वक चलीजाओ १५६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेतीर्थावतारोनाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवाँ अध्याय॥

दो० तेंतिसयें मार्कण्डजनि अरु रघुनन्दनकेरि॥
तीर्त्थगमन सीता अनुज सहितकह्योहै टेरि १

इतनीकथा सुनकर भीष्मजी ने पुलस्त्यजीसे पूँछा कि मार्कण्डेय जी ने इस विषयमें रामचन्द्रजीको कैसे समझाया व उनदोनोंजनों

का समागम कैसे व किसकाल में कहां हुआ १ मार्कण्डेय किसके पुत्र थे व कैसे महातपस्वीहुये व उनकेनामकी व्युत्पत्तिकहिये जिस कारणसे यह नामहुआ २ पुलस्त्यजीबोले कि अबहम तुमसे मार्कण्डेय की उत्पत्तिकहते हैं पूर्व के कल्पमें एक मृकण्डनाम मुनि ३ भृगुकेपुत्रहुये उनमहाभागने अपनीभार्य्यासमेत बड़ातप किया वन के भीतरमें बसतेहुये उनदोनों के एकपुत्रहुआ ४ वह जब पांचवर्ष का बालकथा तभीगुणों में बहुत अधिकहुआ उनके आंगनमें घूमते हुये देखकर ज्ञानियों ने जाना कि यह बड़ाविज्ञहोगा ५ व इससे बहुत कालतक वहां टिक के भावी अर्थ समुझते भये उसबालक के पिताने उन ज्ञानियोंको यथोचित सत्कारकरके उनसे अपने पुत्रकी आयुर्दाय पूँछी ६ कि जितनी इसकी आयुहो वह आपलोग गिनकर बतावें कमहै या ज्यादहै मृकण्डके ऐसा पूँछनेपर उन ज्ञानियों मेंसे एक बोला ७ कि हे मुनीश्वर! तुम्हारे पुत्रकी आयुर्दाय ब्रह्माकी बनाईहुई अब केवल छःमास और शेषरही है परन्तु इस विषय में तुमको शोक न करना चाहिये क्योंकि हमने सत्यही कहा है कुछ बनाकर नहींकहा ८ मुनि लोग तो इतना कहकर चलेगये पिताने अपने बालकका यज्ञोपवीत किया ९ व अपने पुत्रसे कहा कि बैठे हुये इन सब ब्राह्मणों के प्रणामकरो इसप्रकार जब पिताने कहा तो उसने सबके अभिवादन किया १० परन्तु वह बालक किसीको पहिचानता तो थाही नहीं इससे उसने सबवर्णों के प्रणामकिया इतने में पांचमास व पच्चीसदिन और बीतगयेहोते ११ उन्हींदिनों में रास्ता में कहींको जाते थे सप्तर्षिलोग वहां आगये उस बालकने उन सबों को देखकर सबों के यथाक्रम अभिवादन किया १२ तब उस दण्ड मेखलाधारण कियेहुये बालक से उन लोगों ने कहा कि आयुष्मान् होओ उनलोगोंने कह तो दिया पर फिर देखा तो उसकी आयुर्दाय क्षीणहोगई थी १३ हे राजन्! केवल पांचही दिन उसकी आयु देखकर सब भयभीतहुये बस उसबालकको लेकर वे ऋषिलोग ब्रह्माजी के निकटको चलेगये १४ व हे राजन्! वहां बालकको छोड़के आगे भूमिमें पतितहोकर सबों ने ब्रह्माजी के प्रणाम किया और बालकसे

कहा कि तू भी प्रणाम कर तब उसने भी ब्रह्माजी का प्रणामकिया १५ तब ब्रह्माजी ने बालक से कहा कि बहुतकाल जिओ यह सब ऋषियों के आगे कहा तब तो ब्रह्माजी के वचन सुनके ऋषिलोग बहुत प्रसन्नहुए १६ व ब्रह्माजी ऋषियोंको देखकर बड़े विस्मित होकर उनसे बोले कि तुमलोग किसलिये यहां आयेहो व यह बालक कौनहै कहो १७ हे राजन्! तब उनऋषियों ने सब उनसे निवेदनकिया कि यह मृकण्डुजीका पुत्रहै व आयु इसकी क्षीणहोगई है अबआप इस बालकको चिरञ्जीवीकरें १८ तब ब्रह्माजीने कहा कि अच्छा अल्पआयुवाले इसबालक के फिरसे मेखला बांधदेवो व यज्ञोपवीत दण्ड भी नया देदेओ यह कहकर फिर समझाया १९ कि हे बालक! जा जिसीकिसी को पृथ्वीतल पर घूमते देख उसीके प्रणाम करता रह २० बस बालक वहांसे झट पृथ्वीपर पहुँचायागया उसने भूतलपरदेखा कि घूमतेहुये वेही ब्रह्माजी आरहे हैं इससे उसने प्रणाम किया २१ ब्रह्माने उससे कहा कि हे पुत्र! बहुत दिनोंतक जीते रहो तब ऋषियों ने कहा कि हमने भी ऐसाही कहा और आपने भी ऐसाही कहा अब आपके और हमारे वचन कैसे सत्यहों २२ जब लोकोंके पितामह ब्रह्माजीसे उन ऋषियों ने ऐसाकहा तो ब्रह्माजी तो सत्यवादी ठहरे क्योंकि सत्यहीपर देखो यह पृथ्वी ठहरी हुई है ब्रह्माजी उससे बोले कि २३ यह बालक मार्कण्डेय आयु से हमारेसमान होगा कल्पकी आदिमें व कल्पके अन्तमें हमारेही सङ्ग बनारहेगा जब हम सोवेंगे सोवेगा जागेंगे जागेगा २४ यह सुनकर उन ऋषियों ने ब्रह्माजी के समीपसे इस भूतलपर मार्कंडेयको घूमने को कहा २५ ऋषिलोग तो तीर्थ यात्रा करने चलेगये व मार्कण्डेय अपने गृहको गये घर में पहुँचकर अपने पितासे बोले २६ कि वेदवादी मुनियों ने हमको ब्रह्मलोक में पहुँचाया था व वहां से चिरञ्जीवी कराकर उन लोगोंने यहां हमको छोड़दिया है २७ इस के विशेष औरभी वरदान हमको दिया है अब तुम्हारा शोक जातारहा कल्पके आदि और अन्त में भी हम बने रहेंगे जब तक ब्रह्मारहेंगे तब तक हमभी रहेंगे २८ हे पिताजी! लोककर्त्ता ब्रह्माजी

के प्रसादसे तपकरनेके लिये हम पुष्करतीर्थ को जायँगे क्योंकि वह उन्हीं का तीर्थ है २९ हेपितः! तहां जाके हम सर्व कामके पूरण करनेवाले व शत्रुओंके नाश करनेवाले जो देवदेवेश ब्रह्माजी हैं उनकी उपासनाकरेंगे ३० व सब सुखके देनेवाले इन्द्रादिकोंके परायण सब लोकके पितामह ब्रह्माजीको प्रसन्न करेंगे ३१ ऐसेमार्कण्डेयके वचन सुनके मृकण्डुजी मुनिसत्तम एक क्षण श्वास को लेतेहुए बड़े आनन्दको प्राप्तहोते भये ३२ व सुमनहोके धीरज धरके यह वचन बोले कि आज हमारा जन्म सफलभया जीवनआजही सुजीवित हुआ ३३ कि जिसकरके सब जगत्के पैदाकरनेवाले पितामह देखेगये हे पुत्र! वंशधारी तुम ऐसे पुत्र करके हम पुत्रवान् हुए ३४ इससे तुम जाके पुष्करमें टिके पितामह को देखो जाय जिन जगन्नाथ को देखके मनुष्य न कभी बूढ़ाहो न मरे ३५ व मनुष्योंको सुख व ऐश्वर्य्य व अक्षय तपस्या होतीहै वहां तीन तो सुन्दर शृंगहैं व तीनही झरनाहैं ३६ व तीन पुष्कर हैं पर इस का कारण नहीं जानते हैं छोटा बड़ा व तीसरा ज्येष्ठ पुष्कर ३७ जो शृंगों के नाम हैं वही झरनों के भी नामहैं जहां ब्रह्मा विष्णु व रुद्र नित्य बनेरहते हैं तीनों जने ३८ हे महाराज! पुष्कर से पुण्यतम पृथ्वी पर और नहीं है इससे श्रेष्ठ जिस पुष्कर का जल तो निर्मल साफ़ ऐसा है कि तीनों लोक में प्रसिद्ध है ३९ और ब्रह्मलोककी मार्ग है वे लोग धन्यहैं जे पुष्करजीको देखतेहैं जो मनुष्य सैकड़ों वर्ष अग्निहोत्र करतेहैं ४० और जे मनुष्य कार्त्तिकी में एक रात्र वासकरते हैं वे बराबर फलपाते हैं यह मैं नहीं करसक्ता कर्म करिके नहीं साधन कियागया ४१ तेहिते हे तात! तुमने विना उपाय जो सबको नाश करनेवाली मृत्युहै उसको जीत लिया और तहां जाके लोकपितामह जो ब्रह्माजी हैं उनको देखा ४२ तेहिते और मनुष्य पृथ्वीतलमें तुम्हारी बराबरनहीं होसक्ताहै क्योंकि तुमने पांचहीवर्ष की उमरमें यह साधन किया और हमको भी प्रसन्नकरदिया ४३ अब तुम हमारे वरदान व आशीर्वाद करके निस्सन्देह चिरजीवियों की उपमा को प्राप्तहोगे ४४ इसतरह से सब कहते

हैं अब तुम जिन लोकोंमें जानेकी इच्छा होवे वहां चलेजाओ इस तरह से पायाहै प्रसाद जेहि करके ऐसा जो मृकण्डुका पुत्र है तिन करिके मार्कण्डाश्रम स्थापन कियागया ४५ व वहां स्नान करके पवित्र होकर प्राणी वाजपेययज्ञ का फलपाता है ४६ व सब पापों से विशुद्ध होकर चिरजीवी होजाता है पुलस्त्यजी बोले कि अब और पुरातन इतिहास तुमसे कहतेहैं ४७ जैसे कि श्रीरामचन्द्रजी ने पुष्कर तीर्थकी यात्राकी है पूर्व्वकाल में चित्रकूट परसे चलकर जानकी लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीने ४८ अत्रिमुनिके आश्रम पर जाकर मुनिसत्तम अत्रिजी से पूँछा कि हे महामुने! कौनसे पुण्य-तीर्थ हैं व क्षेत्रहैं ४९ जहां जाकर राजा व अन्य मनुष्य बन्धुओं का वियोग नहीं प्राप्तहोता हे भगवन्! वह हमसे कहो ५० इस वन-वास से व राजाके मरने से भरतके वियोग से हम तीनोंजने सन्त-प्तहोते हैं ५१ यह श्रीराघव का कहाहुआ वचन सुनकर अत्रिजी बहुत कालतक शोचते रहे फिर उनमें अत्रिजी बोले ५२ कि हे रघु-वंशवर्द्धन श्रीराम वीर! तुमने बहुत अच्छा पूँछाहै ऐसा हमारे पिता ब्रह्माजी का कियाहुआ पुष्करतीर्थ है ५३ वहांपर दो पर्व्वत बड़े विख्यात हैं व वेही यज्ञपर्व्वत की मर्यादा के पर्व्वत हैं उन दोनों पर्व्वतों के मध्यमें ज्येष्ठ मध्यम व कनिष्ठ के नामोंसे प्रसिद्ध तीन कुण्डहैं ५४ वहां जाकर दशरथजी को पिण्डों के दानोंसे तृप्तकरो वह तीर्थोंसे प्रवरतीर्थ है व क्षेत्रोंसे भी उत्तम है ५५ वहां जाने-पर वियोग का दुःख नहीं होता वहां अवियोगा व सुरसा और व हे रघुनन्दन! वहांपर एक सौभाग्यकूप है ५६ इन सबोंमें पिण्डदान करने से पितर मोक्षको पावेंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है व जब-तक महाप्रलय का समय न आवेगा तबतक ब्रह्मलोक में रहेंगे यह हमारे पिताजीने कहा था ५७ सो अब वहां जाइये फिरभी इधरही को आपका आगमन हो बहुत अच्छा ऐसाही होगा ऐसा कहकर चलनेका विचार किया ५८ चलकर ऋक्षवान् पर्व्वतको नांघे फिर वैदिशनाम नगर में पहुँचे आगे चर्म्मण्वती नदी को उतरकर यज्ञ पर्व्वत पर पहुँचे ५९ वेगसे उसको भी नांघकर मध्यम पुष्करके

समीप स्थितहुये वहां स्नानकर जलसे पितरोंका तर्पण किया और देवताओं का भी ६० रात्रि बीतजाने के पीछे फिर रामचन्द्रजी ने मुनिश्रेष्ठ मार्कण्डेयजी को शिष्यों समेत वहां आतेहुये देखा ६१ व उनके समीप जाकर आदर सहित प्रणाम करके पूछा कि हे प्रभो! अवियोगद यानी वियोगके दुःखको दूर करनेवाला कूप किस दिशा में है ६२ फिर मार्कण्डेयजी से कहा कि हम राजा दशरथजीके पुत्र हैं जनोंमें हमारा राम ऐसानाम प्रसिद्ध है हम अत्रिजी की शिक्षा से यहां सौभाग्यवापी देखने के लिये आयेहैं ६३ वह स्थान व कूप सब आप हमको बतावें कहां है इस प्रकार जब रामचन्द्रजीने कहा तो मार्कण्डेयजी उत्तर देनेको उद्यतहुये ६४ व बड़ी मधुरवाणी से बोले कि हे राघव! आपने बड़ा सुकृत किया जोकि तीर्थयात्रा के प्रसङ्गसे इस समयमें यहां आये ६५ यहां आइये हम आपको वह अवियोगजा बावली दिखाते हैं सबलोगों का अवियोग सबप्रकार से यहां होताहै ६६ चाहे परलोक सम्बन्धी वियोगहो वा इसलोक का सम्बन्धीहो जीवन मरणकाहो सब अवियोग होजाता है ऐसा मुनीन्द्रका वचन सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने ६७ महाराज दशरथ जीका स्मरण किया व भरत शत्रुघ्न सब मातालोग और सब अयो-ध्यावासियोंका स्मरण किया ६८ इसप्रकार चिन्ता करते २ सन्ध्या-काल आगया इससे मुनियों के साथ सायङ्कालकी सन्ध्याकी उपा-सना करके श्रीराघवजी ६९ भ्राता व भार्य्या समेत वहीं सोरहे जब थोड़ीसी रात्रि शेषरही बनाय प्रातःकाल होनेलगा तो श्रीरघुनन्दन जीने देखा कि ७० अयोध्या में पिता माता व अन्य पुरवासियों के सङ्ग हम बैठेहैं कोई विवाहका मंगल होरहा जिसमें बहुत से भाई बन्धु इकट्ठे हैं ७१ वहां सब ऋषियोंके साथ भाई भार्या समेत अपने को देखा कि हम भी उन्हींमें बैठेहुये वार्त्ता करते हैं ७२ जब बनाय प्रभात हुआ तो श्रीरामचन्द्रजी ने रात्रिका स्वप्न सब मुनियों से कहा ऋषियोंने कहा हे राघव! यह सब सत्यहै ७३ जब किसी मृ-तक मनुष्यकोदेखते हैं तो श्राद्धकाकरना बहुत आवश्यक होता है क्योंकि अपने वंशकी वृद्धिकी कामनासे व अन्नकी इच्छासे ७४

भक्तियुक्त पुरुषको स्वप्नमें पितर दर्शनदेते हैं अब आपके पिता माताका और भरतका आपके सङ्ग अवियोग होगा ७५ चौदह वर्षमें निश्चय से होगा हे वीर! दशरथजी को श्राद्ध दीजिये ७६ हे महाभाग! ये सब ऋषिलोग तुम्हारी भक्तिसे यहां ठहरे हैं हम जमदग्नि भरद्वाज व लोमश ७७ देवराज और शमीकमुनि ये ६ द्विजोत्तम आपके श्राद्धमें भोजनकरेंगे व श्राद्धकरावेंगे आप श्राद्ध की सामग्री इकट्ठीकरें ७८ पृथ्वीपर जो २ पदार्थ इस समयमुख्य मिलें जैसे कि इंगुदी पिण्याक बदरीफल अवँरा व पक्केबेल व नानाप्रकार के छोटे बड़े मूल ७९ अथवा पवित्र मृगका मांस नहींतो विविध प्रकारके दिव्य अन्न इन सब पदार्थों से ब्राह्मणों को तृप्त करो हे राघव! ८० पुष्करारण्यमें आकर नियत होकर व नियमाशन होकर जो पितरोंको तृप्त करताहै वह अश्वमेधके फलको पाता है ८१ हे राम! अब हम सब जने स्नानके वास्ते ज्येष्ठपुष्कर को जायँगे यह रामचन्द्रजी से कहके सब मुनि लोग चलेगये ८२ रामचन्द्रजी लक्ष्मणसे बोले कि अच्छा पवित्रएक मृगभी लाओ चाहे सुन्दर लक्षणका शशकहो अथवा कृष्णसार मृग व मधु लाओ ८३ मुख्य जँभीरी नेंकलाओ व विविध प्रकारके व पके हुये कैथा व औरभी तरह तरह के फल जौनहों ८४ तौन लाओ श्राद्ध में जल्दी लेकर आओ तब रामचन्द्र की आज्ञा करके वैसाही किया ८५ बेर इंगुदी शाक व तरह तरह के मूल ले करके लक्ष्मणजी ने ढेर लगा दिया ८६ व शीघ्रही सब कन्द मूल फलोंको परिपक्ककरके जानकीजी ने श्रीरामचन्द्रजी को देदिया तब रामचन्द्रजी उस अयोग वापी में स्नान करके मुनियोंके समीप सब पदार्थ लाये ८७ जब मध्याह्न का समय आया व कुतपकाल हुआ तो जिनको जिनको श्रीरामचन्द्रजी ने निमन्त्रण दियाथा वे सब मुनि लोग आये ८८ उन मुनियोंको आये हुये देखकर जानकीजी रामचन्द्रजी के समीपसे हटकर कहीं एकान्त में जा बैठीं ८९ व विस्मयके मारे उनके नेत्र घूमनेलगे और चिन्तासे कांपने लगीं इसका कारण कुछ ब्राह्मणों ने नहीं जाना ९० श्राद्धके कालमें आये हुये ब्राह्मणों को

रामने विधिपूर्वक भोजन कराया व जानकीजी भी जो २ क्रिया रामचन्द्रजी ने कही वहीं से करतीरहीं ९१ जैसा पुराणोंमें विश्वेदेव पूर्वक श्राद्धका विधान लिखाहै सब उन्होंने श्रद्धासे किया जब सब ब्राह्मण भोजन कर चुके तब फिर पिण्डदान किया ९२ व अपनी वहांकी शक्तिके अनुसार श्राद्धमें दक्षिणादी जब सब मुख्य ब्राह्मणलोग श्राद्धमें भोजनकर दक्षिणापाकर प्रसन्नहोकर चलेगये तो रामचन्द्रजी ने जानकीजी से पूँछा ९३ कि हे सुभ्रु! यहां आयेहुये मुनियोंको देखकर तुम वहांसे चली क्योंआईं इसका कारण निश्चय करके कहो विलम्ब न करो ९४ इसमें कुछ कारण अवश्य होगा इस से हमसे न छिपाओ हम अपने और लक्ष्मण के प्राणों का शपथ तुमको कराते हैं ९५ जब इस प्रकारसे स्वामी ने कहा तो लज्जासे नीचेको मुख करके आंसुओं को गिरातीहुई जानकीजी श्रीराघवजी से वाक्यबोलीं ९६ कि हे नाथ! जैसा आश्चर्य्य हमने देखा वह आप सुनें आपने जिनका २ नाम लिया वे सब राजेन्द्र लोग यहां आये ९७ व दोजने सब भूषण धारण किये हुये अन्य प्रकारके पुरुषआये व हे रघुनन्दन! सब ब्राह्मणोंके देहों में लपटे हुये तुम्हरे सब पितर लोग आये ९८ हे राघव! उन्हीं में हमने आपके पिताको देखा कि ब्राह्मणोंके अङ्गों में लगेहुये चले आते हैं सो उनको देखकर लज्जित होकर हम आपके समीपसे चली आईं ९९ आपने श्राद्ध अच्छी तरहसे तो किया न व ब्राह्मणोंको अच्छी रीतिसे भोजन कराया न मैं वल्कल व मृगचर्म्म धारणकिये कैसे महाराजजी के आगे निकलूं १०० हे रघुवंशियोंके प्राज्ञ! आपकी आज्ञासे यह मैंने सत्य २ कहदिया यहीहै अन्य कुछ कारण नहींहै रेशमी वस्त्र वहां धारण करतीथी सो कैकेयीने छीन लिये १०१ तबसे मैंने उस अपनी चीरिणी वनाश्रयी कहती नहीं हूँ कि जिसमें आपको दुःख न हो १०२ हे परन्तप! मैं न माता का स्मरण करती हूं न पिता का केवल यही शोचती रहती हूँ कि इस वनवासका अन्त कब होगा १०३ हे नाथ! बार २ यही चिन्तना किया करतीहूँ व इसी चिन्तनामें दिन बीततेहैं हे नाथ! तुम्हारे चरणोंकी

शपथ करती हूँ १०४ अपने हाथसे इस दशामें मैं राजाको कैसे भोजन देती जो पदार्थ गृहमें कभी दासी दासभी नहीं खाते थे १०५ वे पदार्थ मैं राजाके आगे कैसे परोसती आपही क्यों न कहें कि जो मुझे राजाने सम्पूर्ण आभूषण पहिने हुए पहिले देखाहै १०६ जो मैं चामर हाथमें लेकर राजाके बयार करती थी वह मैं पसीने की पंक्तियों से अंगोंको युक्तकिये हुये राजाको कैसेदेखूँ १०७ तुम ऐसे पुत्रसेतारे हुये राजा स्वर्गको प्राप्तहुये वे मुझको देखकर दुःखितहोते कि निरपराध इस बालाको वनमें कष्टहुआ १०८ व राजराजेन्द्र इस प्रकार मानते इससे मैं उनको देखकर छिपरही हे राम ! आप प्राणसम हैं भला आपसे क्या छिपाना है १०९ हे-नाथ ! इसी सत्यतासे तुम्हारे चरण छूतीहूँ अन्यकोई कारण आपके समीप से चलीजानेका नहींथा यह सुनकर श्रीराघवजीने प्रसन्न होकर प्रियवादिनी अपनी प्रियाको ११० अंकमें लेकर मिलकर आदरपूर्व्वक स्थापित करदिया व प्रथम आप दोनोंभाइयों ने भोजनकिया पीछे से जानकीजीने भोजनकिया १११ इसरीति से वहां उस रात्रिको भी दोनों राघवेन्द्र व जानकीजी वहीं निवसीं जब सूर्य्योदयहुआ तो वहांसे चलने में मनलगाया ११२ पश्चिम को मुखकरके एककोशभर चले कि ज्येष्ठपुष्कर मिला जबतक पुष्कर की पूर्व्वही ओर राघवजी थे कि ११३ वैसेही देवदूतकी कहीहुई आकाशवाणी सुनाईदी कि हे राघव ! तुम्हारा कल्याण हो यह तीर्थ अति दुर्लभ है ११४ हे वीर ! इस स्थानपर स्थित होकर अपने को पुण्यरूप करो व देवताओं का कार्य्य तुमको करना चाहिये देवशत्रुओं को मारनाहोगा ११५ इस बातको सुनकर हर्षित मनहोकर सचिक्कण वचन श्रीराघवेन्द्रजी लक्ष्मण से बोले कि हे लक्ष्मण ! देवदेव ब्रह्माने बड़ा अनुग्रहकिया ११६ हे लक्ष्मण ! यहां पर एकमास निवास करके हम शरीरशोधन व्रत किया चाहते हैं ११७ लक्ष्मण ने कहा बहुत अच्छा तबतो व्रतको समाप्त करके व पिण्डदानादि दानों से व श्राद्धों से ब्रह्माजीको ११८ पुष्करमें विधिपूर्व्वक श्रीरामचन्द्रजी ने तृप्तकिया फिर कनका सुप्रभा नन्दा

प्राची सरस्वती ११९ पुष्करतीर्थ में ये पांच सोते हैं जो कि पितरों को सन्तुष्टि देते हैं वहां दिन २ की पितरों सहित ऋषियों की पूजा करके १२० श्रीरामचन्द्र जी लक्ष्मणजी से बोले कि हे लक्ष्मण ! शीघ्रआओ पुष्कर से जललाओ १२१ व पैरोंको धोकर स्वस्थचित्त होकर शयनकरो व हमभी सोवें रात्रिबीतने पर फिर १२२दक्षिण दिशाको चलेंगे यह सुनकर लक्ष्मणने कहा कि सीता जललावें हे राम ! सब कालमें हम तुम्हारा दासभाव न करेंगे १२३ ये पुष्टहैं व हमसे मोटीताजी भी हैं बताओ तो तुम इस भार्य्यासे और कौनसा कार्य्य कराओगे १२४ क्या यह तुम्हारीप्रिया मरने पर प्रातःकाल तुम्हारे सङ्ग जायगी इसकी रक्षा तुम सदा करते रहतेहो इसीसे यह सदा पुष्टबनी रहतीहै १२५ व हे रघूत्तम! हमको क्लेश दिलाती हुई यह सदा हर्षित रहतीहै हे राम ! हम बड़ेक्लेशमें पड़े हैं इससे हमारे परलोक में हानिहोगी १२६ तुम्हारे लिये हम सदा क्षुधा पिपासा सहते हैं इसमें कुछभी सन्देह नहीं है यह बात पीछे से तुमको जानपड़ेगी १२७ मरने के पीछे कोई किसीकेपीछे जाता हुआ नहीं दिखाई देता चाहेभार्य्या हो वा सुत वा धन कोई भी संग नहीं जाता ऐसा बुद्धिमान् लोग कहते हैं १२८ हे राम ! तुम्हारे पिता अकण्टक राज्य छोड़कर मृतक होगये व कैकेयी के प्रियकरनेकी इच्छासे तुमको वनदिया १२९सो वह कैकेयीभी यहीं स्थित है सब धन व सब बान्धवभी यहीं हैं महाराज दशरथ एकही अपनी गतिकोगये १३० हम यह मानते हैं कि जानो यह सीता तुम्हारे संगजायगी इससे बड़ीरक्षा करते हो हे राघव ! कहो न इस से और कौन कार्य्यकरोगे सो अबकहो १३१ ऐसा कठोर वचन सुनकर जैसे कि कभी लक्ष्मण तो क्या किसीके मुखसे श्रीरामचन्द्र जीने नहीं सुनाथा श्रीराघव व श्रेष्ठस्त्री सीताजी उदासीन होगये १३२ जो लक्ष्मण ने कहा सीताजी ने सब किया पुष्कर से जाकर जल भरलाईं कमलकी तुल्यहैं नेत्र जिनके ऐसे दोनों वीरोंने पुष्कर में १३३ स्नानकिया व जल पानकिया वह रात्रि वहीं बिताकर प्रातः-काल वहांसे चलने को मनकिया कहा लक्ष्मण यहां आओ उठो

दक्षिण दिशाको चलें १३४ लक्ष्मणने कहा कि हम किसी प्रकारसे यहांसे न चलेंगे हे कमलनयन ! तुम अपनी इस भार्य्या के साथ चलेजाओ १३५ हे राघव ! हम न और वनको जायँगे न अयोध्या को जायँगे इसी वनमें चौदहवर्ष रहेंगे १३६ जो हमारे विना तुम अयोध्याको न जाओगे तो हे विभो ! इसी मार्ग्ग होकर फिर आना हम यहीं मिलेंगे १३७ व जो तबतक जीतेरहेंगे तो तुम्हारेसङ्ग फिर पिताके पुरको चलेंगे हम यहीं तपस्या करेंगे हमको तुम क्या करोगे १३८ हे सौम्य ! तुम्हारा मार्ग्ग कल्याणकारी हो जाओ व तुम्हारे मार्ग्गके बाधक कोई न हों व भार्य्यासमेत तुमको आयेहुये कमलकी तुल्य नेत्र हम फिर देखें १३९ व अयोध्यामें पिता पितामहादिकोंके राज्यपर महाराज होकर विराजमान तुमको देखें शत्रुघ्न भरत तो तुम्हारीआज्ञा करनेमें स्थितहीं हैं १४० हमतुम्हारे प्रतिकूलही सही उस में भी वनवासमें विशेष प्रतिकूल सही हे परन्तप ! निरन्तर दिन रात्रि हम कर्म्म करते २ थकगये हैं १४१ अब नहीं करसक्ते इससे सुखपूर्व्वक चले जाइये ऐसा कहतेहुये लक्ष्मणसे श्रीरघुनन्दनजी बोले १४२ कि पहिले अयोध्यासे हमारे संग कैसे निकलेथे तब तो कहाथा कि हे राम ! हम तुम्हारे साथ चौदहवर्ष वन में बसेंगे १४३ तुम्हारे विना हम अकेले कभी स्वर्ग्गमें भी न रहेंगे हे नरव्याघ्र ! जो गति तुम्हारी होगी वही हमारी भी होगी १४४ मेरे ऊपर प्रसन्न होओ राघव मुझको भी संग लेचलो हे शत्रुनाशक ! अब इस समय आधे मार्ग्ग में तुम कैसे रहे जातेहो १४५ लक्ष्मण रामचन्द्रजी से बोले कि चाहे जो हो अब हम फिर वनको न जायँगे लक्ष्मण को वहीं स्थित जान कर श्रीरामचन्द्रजी बोले १४६ कि हे लक्ष्मण ! हम अकेले वनको जाते हैं हमारे पीछे तुमभी चले आना हमारे संग दूसरी यह सीताही है जब रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण से ऐसा कहा १४७ तो रामके वचन को किसी प्रकार ग्रहण करके खड़ेहुये और बलके मर्यादा पर्व्वतपर पहुँचे जोक्षेत्रकी सीमाहै १४८ वहां देवदेवेश अजगन्धनाम महादेव के दर्शन किये अष्टांग प्रणिपात से राघवेन्द्रजी त्रिलोचनजी के नमस्कार करके १४९ पार्व्वती के प्रिय शङ्करजीकी स्तुति करने पर

उद्यतहुये हाथ जोड़कर रोमाञ्चित शरीर होकर १५० सात्त्विक भावको प्राप्तहो रजोगुण तमोगुण को दूरकर स्थित हुये सबलोकों के कारण देवदेव शंकरको जानकर स्तुति करनेलगे १५१ श्रीरामचन्द्रजी बोले कि जो चराचर सम्पूर्ण इस जगत् के कर्त्ता हैं व किये हुये इसके कर्त्ता व सुख दुःखके दाताहैं व अन्तकाल में फिर नाशकर्त्ताहैं शरण देनेवाले उन शङ्कर के हम शरणहैं १५२ व जो ये बारम्बार निर्मल चारु चञ्चल जलवाली बड़ी लहरियों से विषम व स्वर्ग से नीचेको गिरतीहुई गंगाजीको चलायमान पुष्पों से गुथी हुई मालाके समान शिरपर धारण करते हैं उन शरण देनेवाले शङ्करजी के शरण हैं १५३ जो कैलास के पर्वत के शिखरका कम्पाने वाला जो रावण है व कैलास के शृंगके समान ऊँचे रावण ने पादपद्मोंको धारण कियाहै व स्थिरता को प्राप्तभयेहैं उन शरण देनेवाले शंकरजी के शरणमें पहुँचते हैं १५४ व जिन्होंने बार बार मदयुक्त दैत्योंको समर में ध्वंसित किया व विद्याधर नाग व चर अचर सब को बचालिया व मुनियोंको आनन्द से फल मूल भक्षण करनेदिया उन शरण देनेवाले शंकरके शरण को पहुँचतेहैं १५५ व जिन्हों ने दक्षप्रजापति का यज्ञ भगदेवता के नयन व पूषाके दांतोंकी पंक्ति विध्वंसि फोड़ तोड़डाली व वज्रसहित इन्द्रका हाथ जहांका तहां रोक दिया उन शरण देनेवाले महादेवके शरण में पहुँचतेहैं १५६ पाप कियेहुयेभी व विषमताओंमें आसक्तहैं चित्त जिनके अज्ञान जाति वेद गुणोंसे भी हीन जो पुरुष जिनके आश्रित होकर सुख भोगते हैं उन शरण देनेवाले शंकर के शरण हैं १५७ जो कोटि चन्द्रमा रवियों के समान तेजस्वी व विविधप्रकार के दान व सत्त्वों के सन्ताप करनेवाले हैं जिन्होंने अतिप्रचण्ड हालाहल कालकूट नाम विषको पान करलिया उन शरण देनेवाले शंकरके शरण होते हैं १५८ जिन भगवान् महेशजीने ब्रह्मा रुद्र इन्द्रआदि मरुत स्वामिकार्त्तिकसहित देवताओं को अनेकबार वरदिया व नन्दीश्वर को मृत्युके मुखसे फिर निकाल लिया उन शरण देनेवाले शंकर के शरण होते हैं १५९ जो मनसे भी औरोंसे अगम्य हिमवान्पर्वत

के कुञ्जमें धूमव्रतनाम राजासे उत्तम तपस्या करके आराधितहुये व जिन महात्माने भृगुके अर्थ संजीवनी को कहा शरण देनेवाले उन शंकर के हम शरण होतेहैं १६० व जिन महादेवजी ने हाथी व विडाल के तुल्य हैं मुख जिनके ऐसे बलीगणों में जे श्रेष्ठ हैं तिन करके दक्षकीयज्ञको विघ्नकराया व लोकपालों समेत सब देवगणों से दक्षके यज्ञमें पूजितहुये शरण देनेवाले उन शंकर के हम शरण होते हैं १६१ जो शङ्ख चन्द्रमा कुन्दके समान उजले वृषभपर चढ़कर पार्व्वतीजी के संग प्रलयकालके मेघोंसे भूषित आकाशमें चलते हैं शरण देनेवाले उन शंकर के शरण हम होतेहैं १६२ जिन्होंने यम नियमों में परायण भावोंसे युक्त महात्मा पुरुषों से अपने हृदय में कियेगये भक्तिसे स्तुति करतेहुये मुनियोंकी रक्षा करली शरण देने वाले उन शंकर के शरण होतेहैं १६३ व जिन देवने अपने कमल के तुल्य वामहस्त के नखके अग्रभाग से देवताओंके आगे फूलेहुये कमलके तुल्य ब्रह्माजीके पंचम शिरको हठसे काटडाला शरणदेने वाले उनशंकरके शरण होते हैं १६४ व तरुण कमलके समान जिन वरदानीके चरणोंके भक्तिसे प्रणाम करके व अलस छोड़कर अमल-वाणियोंसे स्तुति करके प्रकाशित होतेहुये सूर्य अपने तीक्ष्ण किरणोंसे प्रतिदिन अन्धकारोंको नाशते हैं शरण देनेवाले उन शंकरके शरण होतेहैं १६५ जो अभिमानी पुरुष इस चराचर जगत्के सुरोत्तम गुरुको नहीं जानते अपने ऐश्वर्य्यवान् निगम पढ़ने के अभिमान मेंही पड़े रहते हैं वे कुबुद्धि लोग पीछे यमयातनाका अनुभव करते हैं १६६ इस प्रकार स्तुति करतेहुये श्रीरामचन्द्रजी की वाणी सुन कर शूलपाणि वृषध्वज बोले और आनन्द से तुष्टमन होके राम-चन्द्रसे कहा १६७ कि हे रामचन्द्रजी ! तुम्हारा कल्याणहो हमने जाना तो था कि आप निर्म्मल कुलमें उत्पन्न हुये हैं पर दर्शन आजही हुये आपभी सब जगत् के वन्द्य हैं मनुष्य का रूप धारण करके देव हैं १६८ आपको नाथ पाकर सब देवगण बहुत वर्षोंतक सुखी रहेंगे व बहुतकाल सब आपकी सेवा करेंगे व चौदह वर्षोंके-ही पीछे १६९ भूतलपर अयोध्या में आयेहुये आपको जो मनुष्य

देखेंगे वे सुखी होंगे व अक्षय स्वर्गलोक पावैंगे १७० बड़ाभारी देव. कार्य्य करके फिर अपनी अयोध्यापुरी को चलेआना महादेवजी का ऐसा वचन सुनकर उनके नमस्कार कर बहुत अच्छा आवेंगे यह कहकर शीघ्र वहांसे राघवजी चलदिये १७१ आगे इन्द्र-मार्ग्गनाम नदी के तीरपर पहुँचकर अपनी जटाओं का समूह दृढ़तापूर्व्वक बांधकर इतने में लक्ष्मण भी आये उनसे कहा कि लक्ष्मण ले धन्वा हमको देदो १७२ रामचन्द्रजीका वह वचन सुनकर लक्ष्मणजी सीताजीसे बोले कि हे देवि ! रामचन्द्रजी विना कारण हम को पीछे क्यों छोड़ आयेथे १७३ हम अपना अपराध नहीं जानते जिससे महाभुज श्रीराघवेन्द्र कुपित हुयेहैं श्रीराम-चन्द्रजीके छोड़ेहुये हम निश्चय प्राणोंको छोड़देंगे १७४ हमारे जीनेसे कुछभी प्रयोजन नहीं है कुलदूषण करनेवाले हमको धि-क्कारहै जिस मेरे कारण आर्य्य श्रीराघवजी को क्रोधहुआ मैं बड़ा पापकारी ठहरा १७५ इन महात्माके क्रुद्धहोनेसे नहीं जानता मैं किन लोकोंको जाऊँगा फिर दोनों हाथ शिरपर करके आंसुसहित नेत्र बाष्प सहित गल लक्ष्मण यह वचन बोले १७६ कि मैं कभी मनसा वाचा कर्म्मणा श्रीरामचन्द्रजीका अपराध नहीं करता हे देवि ! मैं तुम्हारे चरणछूकर कहता हूँ मेरी अन्यगति नहीं है १७७ तब सीताजी श्रीरामचन्द्रजी से बोलीं कि आपने क्या लक्ष्मणका त्यागकिया हे लक्ष्मीवर्द्धन ! लक्ष्मण बालकमें विषमता छोड़दीजिये १७८ तब राघवजी सीताजी से बोले कि हम लक्ष्मणको न छोड़ेंगे व हे प्रिये ! न कभी लक्ष्मण के अपराधका स्वप्नमें भी स्मरण करेंगे १७९ हे सुश्रोणि ! यह जो लक्ष्मणका अपराध सुनाई दिया वह उस क्षेत्रका प्रभावथा क्योंकि इस पुष्करक्षेत्र में सौभ्रात्र नहीं है सब लोग अपने २ अर्थ में तत्पर रहते हैं १८० आपस में एक दू-सरेको नहीं देखता कि हम इनके हेतुके लियेभी हैं केवल अपनेही लिये नहीं हैं यहां पुत्र पिताकी बात नहीं सुनते व न पिता पुत्रकी सुनताहै १८१ न शिष्य गुरुकी वाक्य सुनते न शिष्यकी गुरु सुनता है यहां कोई किसीका प्रिय नहीं है १८२ अपने स्वार्थकी प्रीति है

ऐसा कहतेहुये श्रीराघव भाई व भार्य्या समेत नर्म्मदानदीके तीर पर पहुँचे वहां अनुज व सीता समेत स्नानकिया १८३ जलसे अपने पितरोंका तर्पणकिया व देवताओंकाभी तर्प्पणकिया व सूर्य्यनारायण और अन्यदेवताओं को देखकर ध्यान किया १८४ एकाग्रचित्त होकर दोनों भाई सन्ध्यावन्दनके समय कुछ प्रार्थनासी करतेरहे ॥

चौपै० करिकै असनाना श्रीभगवाना सीता अनुजसमेता ।
अतिशयभेशोभित नहिंचितक्षोभित सकलजननसुखदेता ॥
जिमि करि अभिषेका सहितविवेका शिवा षडानन सङ्गा ।
सोहतत्रिपुरारी जगभयहारी जिनक्षयकीनअनङ्गा १८५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेमार्कण्डेयाश्रमदर्शनंनाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवांअध्याय ॥

दो० चौंतिसयें कह ब्रह्ममख पुष्कर महँ विधिकीन ॥
सावित्री स्तुति विष्णु शिवकृत बहुभांति प्रवीन १
क्षिति पर विधि बहु वास कह भाषे दान अनेक ॥
श्वेत भूप वृत्तान्त अरु अन्नदान फल नेक २
तिल घृत जल सुरभीहु कर दान बहुरि ब्रह्माण्ड ॥
दानकह्यो जासम अपर नाहिं छियालिस खाण्ड ३
रामकथा जिमि शूद्रवध द्विज सुत मृतिहित कीन ॥
कही अन्य बहु युक्तिसों सहित विधान मुनीन ४

भीष्मजी ने पुलस्त्यमुनिसे पूंछा कि लोककर्त्ता ब्रह्माजी ने किस कालमें यज्ञकरनेका प्रारम्भ किया था वह आप हमसे वर्णन करें १ जिनको ब्रह्माजीने ऋत्विज् कल्पित कियाथा वे किस २ नामकेथे व उन महात्माने इनलोगोंको दक्षिणा कौनसी दीथी २ जैसा यह वृत्तान्त हुआ हो व जिसतरहका हो वैसा तुम हमसे कहो हमको पितामहके यज्ञ सुनने के विषय में बड़ा कौतूहलहै ३ पुलस्त्यजी बोले कि यह कथा हम पूर्व्वसमय में भी कहआये हैं कि जब ब्रह्मा जी ने स्वायम्भुवमनुको व अन्य मरीच्यादि प्रजापतियों को उत्पन्न

किया तो सबों से कहा कि तुमलोग सृष्टिकरो ४ व आप पुष्कर तीर्थ को चलेगये वहां विस्तारसहित यज्ञ की सामग्री इकट्ठी करके अग्न्यागारमें स्थित होतेभये ५ गन्धर्व गान करते हैं व अप्सरा नाचती हैं व ब्रह्मा उद्गाता होता व अध्वर्य्यु ये चारों यज्ञके सिद्धकरने वाले होतेहैं ६ इन एक २ के सङ्ग तीन २ अन्य इनकी रक्षाके लिये रहते हैं ब्रह्मा के सङ्ग ब्रह्मवाक्यात व अग्नीध्र ये तीन और रहते हैं ७ उनमें पहिले का काम अन्वेषण करना दूसरे का सब विद्या जानना तीसरे का ब्रह्माको प्रसन्न करना उद्गाताके सङ्गभी एक होता एक प्रत्युद्गाता व एक छोटा ब्रह्मा ८ चतुष्टयी द्वितीया ये उद्गाता की कहीगईहै होता मैत्रावरुण तेहीतरहसे अच्छावाक ९ चौथा ग्रावस्तु तृतीया चतुष्टयी अध्वर्यु प्रतिष्ठाता नेता उन्नेता १० चतुर्थी चतुष्टयी कहीगई हैं हे भीष्म! बस वेदचिन्तकोंने ये सोलह ऋत्विज् कहे हैं ११ ब्रह्माजीने यज्ञ तीनसौ साठ बनाये हैं इन सब यज्ञोंमें प्रायः सोलह ब्राह्मण होते हैं १२ कोई २ कहते हैं कि सब यज्ञोंमें तीन सामवेदी ब्राह्मण सदस्य चाहिये व दश अध्वर्य्यु चाहिये पर ब्रह्माजीने अपने यज्ञमें नारदको तो ब्रह्मा बनाया व गौतम को छागिक बनाया १३ देवगर्भको तपोभाव बनाया व देवलको अग्नीध्र बनाया बृहस्पति जीको उद्गाता बनाया व प्रस्थाता पुलहजी को बनाया १४ प्रतिह-न्ता नारायणमुनि को बनाया व दूसरे ब्रह्मा अत्रि को बनाया भृगुको होता व वसिष्ठको मैत्र बनाया १५ अच्छावक क्रतुहुये व च्यवन ग्राव बने पुलस्त्यजी को अध्वर्य्यु व शिवि प्रस्थिता कियेगये १६ बृहस्पति नेष्टा व उन्नेष्टा संशयापरहुये धर्म्मजी वहां सदस्यहुये उन के पुत्र पौत्रादि भी सब सदस्यहुये १७ भरद्वाज शमीक व पुरुकुत्स युगन्धर एणक तीर्णक केश कुतप १८ गार्ग्य वेदशिर इन सब को सामवेदी अध्वर्य्यु बनाया कण्वादिक तथा गंडि और मार्कण्डेय १९ पुत्र पौत्र व शिष्यों व बान्धवों समेत व सब ब्रह्मपुत्र अपने २ पु-त्रादिकों समेत दिन रात्रि वहां कर्म्म करते थे २० एक मन्वन्तर भर यह यज्ञ बराबर होतारहा उसके पीछे यज्ञान्तस्नान हुआ दक्षिण दिशा तो ब्रह्माको दक्षिणा में दीगई व पूर्व्वदिशा होताको २१ प-

श्चिम दिशा अध्वर्य्युको व उत्तर दिशा उद्गाता को इस प्रकार सब तीनोंलोक सब ब्राह्मणों कोही ब्रह्माजीने देदिये २ २४ व सैकड़ों धेनुयज्ञ सिद्धिके लिये ज्ञानवानों करके देना चाहिये उनमें यज्ञमें सबपदार्थ लेआनेवालों को तो बावन २३ व दूसरे स्थानवालों को चौबीस दीगईं तीसरों को सोलह २४ व बारह अग्नीध्र को दीगईं व इसी गिनती के अनुसार सबको ग्रामदासी अजाआदि दियेगये २५ व यज्ञान्तस्नान के पीछे सहस्र ब्राह्मणोंको भोजन दियागया स्वायम्भुवजीने कहाहै कि यहांपर सर्व्वस्वदान यजमान को देनाचाहिये २६ अध्वर्य्युओं को व सदस्यों को उनकी इच्छाके अनुकूल दान देना चाहिये इसलिये सब सामग्री वहां देनेके लिये इकट्ठी कीगई फिर विष्णुभगवान्‌को बुलाकर ब्रह्माजीने आनन्दसहित २७ कहा कि हे सुव्रत ! आप जाकर प्रसन्न कराकर सावित्री को यहां बुला लावें तुम्हारे जानेपर सुन्दर मुखवाली सावित्री कोप न करेगी २८ व तिससे विशेष करके विनयसहित स्निग्ध वचनों से आप बड़े मधुरभाषी हैं क्योंकि आपकी जिह्वासे अमृतस्राव हुआ करता है २९ इससे ऐसा कोई त्रिलोकी में नहीं देखाई देता जो आपका वचन न माने इससे गन्धर्वों के सङ्ग जाकर हमारी प्रियाको लाओ ३० आपके प्रसन्न कराने से हमारे ऊपर हमारी प्रिया सन्तुष्ट होजायगी कोप न करेगी इस विषय में विलम्ब न करना चाहिये हे माधव ! शीघ्रही जाइये ३१ व आपके आगे २ लक्ष्मीभी सावित्री के घरको जायँ प्रथम वे पहुँचें फिर आप बस उनके पीछेही पीछे तुम वहां पहुँचकर हमारी प्रियाको समझाओ ३२ एकान्तमें कहना कि हे देवि ! तुमको ऐसा अप्रिय कार्य्य न करना चाहिये किन्तु हे सुन्दरि ! तुम्हारे मुखको देखते सदा रहतेहैं ३३ इस प्रकारके बहुतसे मधुर वचन कह २ कर प्रसन्न करना चाहिये जिसमें हमारी प्रिया सन्तुष्ट हो ३४ इस प्रकार लोककर्त्ता ब्रह्माजी ने जब कहा तो अतिवेग से श्रीविष्णुभगवान् सावित्रीके समीप को गये ३५ पत्नीसहित आते हुये श्रीकेशवजी को दूरही से देखकर सावित्रीजी उठकर खड़ीहोगईं व श्रीहरि ने प्रणाम किया ३६ हे ब्रह्मपत्नि ! हे देवि ! तुम्हारे

नमस्कार है क्योंकि तुम्हारे नमस्कार करने से सबजन पापोंसे छूट जातेहैं ३७ तुम महाभाग्यवती पतिव्रताहो इससे ब्रह्माजी के मन में सदा निवास करतीहो व रात्रि दिन वे तुम्हारी चिन्तना करतेहैं व तुम्हारी प्रसन्नता चाहते हैं ३८ इन अपनी सखी भृगुकी कन्या लक्ष्मीसेभी पूंछलेओ यदि इनकेवचनमें श्रद्धाहो तो चलिये व हमारे वचनोंका भी जो विश्वासहो तो चलिये विलम्ब न कीजिये ३९ ऐसा कहकर विष्णुभगवान् सावित्रीजीके दोनोंचरण अपने दोनोंहाथों से छूकर बोले कि हे देवि! तुम्हारे नमस्कार करते हैं अब क्षमाकरो ४० हे जगद्वन्द्ये ! हे जगन्मातः ! तुम्हारे प्रणाम करतेहैं यह दशा देख सावित्रीजी ने अपने चरण सिकोर लिये व विष्णुभगवान् के हाथ अपने दोनों हाथोंसे ४१ पकड़लिये व तो भी प्रणाम करतेही रहे तब ऐसे श्रीहरिसे बोलीं कि हे अच्युत ! मैंने सब क्रोधादि माफ किया व हे वत्स! यह लक्ष्मी सदा तुम्हारे हृदयमें निवास करेगी ४२ विना तुम्हारे अन्यत्र किसी प्रकार से इसकी प्रीति न होगी भृगुकी पत्नीमें यह तुम्हारी पत्नी उत्पन्नहुईहै ४३ देवता व दैत्य दोनों समुद्र से पैदाहुयेहैं परन्तु जहां भगवान् हैं वहांही यह भी जन्म लेतीहै ४४ जहां वैकुण्ठादि में आप देवरूपी रहेंगे वहां यह देवरूपिणी रहेगी व जहां आप मनुष्य तनु धारण करेंगे वहां मानुषी होजायगी तुम्हारी सदा सहायक रहेगी इसमें कुछभी सन्देह नहीं है सोभी अत्यन्त पाति-व्रतधर्म्म के साथ सेवा करती रहेगी ४५ हे प्रभो ! अब इस समय जो मुझको कर्त्तव्यहो वह मुझसे कहो विष्णुभगवान् बोले कि यज्ञ का अन्त होचुका है हमको तुम्हारे समीप भेजाहै ४६ कि सावित्री को शीघ्रलाओ जिसमें उनके संग यज्ञान्तस्नान करें इससे हे देवि! आओ हर्षित होकर शीघ्रतासे चलो ४७ व सब देवताओंके मध्य में बैठेहुये अपने पति के दर्शन करो फिर लक्ष्मीजी बोलीं कि हे आर्य्ये ! तुम शीघ्र उठो व जहां पितामहजी हैं वहां शीघ्रचलो ४८ विना तुम्हारे हम न जायँगी यह तुम्हारे चरण छूकर कहती हैं उठ के लक्ष्मीजीने दहिना हाथ अपने दाहिने हाथ से पकड़ लिया ४९ यहां ब्रह्माजी ने सावित्री के आनेमें विलम्ब जानकर समीपही बैठे

हुये महादेव से कहा कि ५० हे देवभूषण ! इस गौरी पार्व्वती के साथ तुमभी वहां जाओ गौरी तो तुम्हारे आगे २ जाय व हे शङ्कर ! तुम पीछे २ जाओ ५१ व समझा बुझाकर तुम लिवालाओ व वही उपाय करना जिससे शीघ्रही सावित्री आवे इस प्रकार ब्रह्माकी आज्ञा से रुद्र पार्व्वती दोनों ५२ स्त्री पुरुष ब्रह्माजी की प्रिया से बोले कि हे पतिव्रते ! तुमको बड़ा काम करना है ५३ तुम पर्व्वतनन्दिनी वरारोहा उमासे पूँछलेओ व हे शुभानने ! इन विशालनयनी लक्ष्मी से पूँछलेओ व चलकर इन्द्राणी से भी पूँछलेना ५४ व जिसीका विश्वास करतीहोओ उसी से पूँछलेओ तुम्हारे नमस्कार करते हैं ऐसा सुनकर ब्रह्माणी जी ने देवदेव महादेवजी को आशीर्व्वाद दिया ५५ व कहा कि हे शङ्कर ! यह गौरी तुम्हारे आधे शरीर में सदा शोभित रहेगी हे त्रैलोक्य सुन्दर ! तुम इससे और भी शोभित होते हो ५६ हे शत्रुहन् ! तुमको नाथ पाकर सब जगत् सुख भागी है ऐसा कहती हुई ब्रह्मा की प्रिया सावित्री का ५७ गौरी ने वाम हाथ पकड़ा व लक्ष्मी ने दहिना हाथ ग्रहण किया इस प्रकार उन दोनों ने पकड़ा तो नमस्कार करके शङ्करजी बोले कि ५८ हे महाभागे ! चलो चलो जहां तुम्हारे पति ब्रह्मा हैं हे वरारोहे ! वहीं चलो क्योंकि स्त्रियोंको भर्त्ताही परम गति होता है ५९ इसप्रकार बड़ा आग्रह होनेपर हे देवि ! तुमको चलना चाहिये कि देखो हे देवि ! ये लक्ष्मीजी व पार्व्वती तुम्हारे आगे खड़ी हैं ६० इन लक्ष्मी के कहने से व हम दोनों के कहने से चलो हे ब्रह्मप्रिये ! तुमको इन सबोंका मान भङ्ग न करना चाहिये ६१ हम लोगोंकी प्रार्त्थना से हर्षित होकर वहां चलो पार्वती बोलीं मैं तुम्हारी प्रियहूं तुमभी यही कहा करती हो ६२ लक्ष्मी जी और मैं दोनों तुम्हारे हाथ पकड़े हैं इससे आइये चलिये हे महाभागे ! जहां तुम्हारे पति हैं ६३ तिस समय में लक्ष्मी और पार्वती जी ने अपने बीचमें करलिया और विष्णु व महादेव व इन्द्रादिक देवता आगे हुए ६४ गन्धर्व्व व अप्सरा व और त्रैलोक्य चराचरों के साथ ब्रह्मा की प्यारी सावित्री वहां पहुंचीं ६५ सावित्री जी इतना सुनकर चलीं

व उनको आतीहुई देखकर सर्व्व लोकके पितामह ब्रह्माजी गायत्री सहित यह वचन बोले ६६ कि यह गायत्री देवी तुम्हारी सेवकी बनीरहेगी व हम तुम्हारे कहने में सदा रहेंगे हे वरारोहे! आज्ञा देओ हमको तुम्हारा कौनसा कार्य्य करना चाहिये ६७ जब ब्रह्माजी ने अपने आप ऐसा कहा तो मारेलज्जा के सावित्रीने नीचेको मुख करलिया व कुछ न बोलीं ६८ तब ब्रह्माजी की प्रेरणासे गायत्री जी सावित्री के पैरों पर गिरपड़ीं व कहने लगीं कि हे देवि! मैंने तुम्हारा बड़ा अपराध किया उसे क्षमाकरो तुम्हारे नमस्कार करती हूं ६९ तब सावित्री जी ने गायत्री को पकड़ कर अपने अङ्गों में छपटालिया व गायत्री को समझाया कि तुमको हमको सदा इन्हीं पतिकी सेवा व इनका मान करना चाहिये ७० क्योंकि स्त्रियों के प्राणों का ईश्वरपतिही है इससे उनके वचन मानना चाहिये देखो सृष्टि के समय में पूर्व्व काल भगवान् ब्रह्माजी ने कहा है ७१ कि स्त्रियों को अलग यज्ञ करने का अधिकार नहीं है न व्रत करनेका अधिकार है न उपवास करनेहीका उसका पति जो कार्य्य बताता जाय उसे निन्दारहित होकर बराबर करती जाय कुछ उसमें वाद विवाद न करे क्योंकि ७२ ॥

दो० जो पतिकी निन्दाकरत श्वश्रू निन्दा फेरि ॥
अरु परिवाद प्रलापहू करत नरक लहटेरि ७३
पति जीवति जो व्रत करत नारीपुनि उपवास ॥
आयु हरत निजस्वामिकी अन्त नरक निजवास ७४

हे भद्रे! ऐसा जानकर तुम कभी इनका अप्रिय न करना व इन के दहिने अङ्गकी सेवा तुम कभी न करना ७५ क्योंकि इनके दहिने अङ्गोंके सब कार्य्य इनकी दक्षिण ओर बैठीहुई हम करेंगी व वाम ओर बैठीहुई इनके सब कार्य्य तुम करती रहो इस नियमके बीच में नारद व पुष्कर दोनों साखी हैं ७६ व अन्यभी ब्रह्माजीके जितने स्थान व मन्दिर हैं सबों में हम दक्षिण ओर व तुम वाम भाग में रहोगी जबतक यह सृष्टि रहेगी तबतक यही नियम चलाजायगा इस के विपरीत न कियाजायगा ७७ आपभी इसी नियमपर चलीं

जायँ व हमभी इसी नियमपर चलती रहेंगी क्योंकि पुष्कर में देखती हैं कि तुम ब्रह्माजीकी बाईंओर बैठीहो ७८ बस इसरीति से अब हमारे उपदेश से बाईंओर सदा बैठतीरहो हम कभीबाईंओर न बैठेंगी बस जिस ओर तुम नहीं बैठीं उसीदहिनीओर हम बैठेंगी यह सुनकर गायत्री बोलीं कि बहुत अच्छा हम तुम्हारी आज्ञासे ऐसाही करेंगी ७९ क्योंकि तुम्हारीही आज्ञा हमको करनीचाहिये तुम हमारे प्राणों के समान सखीहो हे देवि ! हम तुम्हारी कन्याके समान हैं तुम सदा हमारी रक्षा करनेके योग्यहो ८० इनकी जब ऐसी वार्त्ता होगई तब देवदेव ब्रह्माजी ने पुष्कर में श्रीविष्णु भगवान् के साथ स्नान करने के पीछे सब देवताओं को वरदान दिया ८१ सब देवताओं के अधिपति तो इन्द्रको बनाया व सब प्रकाशवानों के स्वामी सूर्य्य को किया व नक्षत्रों के स्वामी चन्द्रमा को किया व जलादि सब रसोंके अधिपति वरुणको किया ८२ सब प्रजापतियों के स्वामी दक्षको किया व नदियों नदों के स्वामी समुद्र को किया कुबेर को सब धनोंका अध्यक्ष बनाया व यक्षों राक्षसोंका भी स्वामी उन्हींको बनाया ८३ व सब रुद्रों के तथा भूत प्रेत पिशाचादि ग्रहोंकेस्वामी महादेवजी को बनाया व सब मनुष्यों के स्वामी स्वायम्भुवमनु को बनाया व पक्षियों के पति गरुड़ को किया ८४ सब ऋषियों के अध्यक्ष वशिष्ठजी को बनाया व सब ग्रहों के स्वामी प्रभाकर अर्थात् सूर्य्यही को किया इसीप्रकार अन्य लोगों को उनके अधीनों का अधिपति बनाकर देव २ ब्रह्माजी ८५ आदरसहित श्रीविष्णु व श्रीशङ्कर से बोले कि पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं उनसबों में आप दोनों की समान पूजाहोगी ८६ विना आप दोनों के निवासकिये किसी तीर्थकी पुण्यता न होगी चाहे अन्यदेव स्थापित इधर उधर देख भी पड़ें ८७ व तीर्थ में क्या जहांकहीं तुम दोनोंकी प्रतिमा व लिंग स्थापित होगा वह सब स्थान पुण्यता को प्राप्त होगा व सब अर्थ धर्म्म काम मोक्ष फल देनेलगेगा व जे मनुष्य उपहारों करके पूजा करेंगे ८८ व आप लोगोंकी पूजा प्रथम करके पीछे हमारी भी जो कोई पूजाकरेंगे उन लोगोंको रोगका भय न होगा जिन देशों व

राज्यों में तुमलोगों की व हमारी पूजा होगी ८९ उनमें सब क्रियायें सिद्धहोंगी व जो फलहोगा हमसे सो सुनो आधि व्याधि उपसर्ग व क्षुधाका भय वहां न होगा ९० व इष्टलोगों का वियोग भी वहां न होगा व न अनिष्टलोगों की संगति होगी न नेत्ररोग न शिरमें पीड़ा न पित्तशूल न भगन्दर रोगहोगा ९१ न अतीसाररोग का वहां भयहोगा न पथरी रोग न (महामारी) हैजारोग होगा व वहां यथेष्ट सब इष्ट पदार्थों की वृद्धिहोती रहेगी व जो लोग अच्छे भी न होंगे वहां उनकी भी बुद्धि उत्तमहोगी ९२ सब ओरसे आरोग्य रहेगी व दीर्घायु सबकीहोगी प्रजा व धन सबकेहोंगे अकाल में किसीकी मृत्यु न होगी गायें थोड़ा दूध न देंगी ९३ अकाल में कोई वृक्ष न फलेंगे उत्पात भय थोड़ाभी न होगा यह सुनकर विष्णुभगवान् ब्रह्माजी की स्तुति करनेकेलिये बोले कि ९४ अनन्त विशुद्धचित्त स्वरूप रूप सहस्रबाहु सहस्ररश्मि प्रभव वेधा विशुद्ध देह व विशुद्ध कर्म्मवाले तुम्हारे नमस्कार है ९५ व समस्त विश्व की पीड़ा हरनेवाले कल्याण करनेवाले सब सूर्य्य अग्न्यादिकों के से भी तीक्ष्ण तेजवाले विद्याओं के विस्तार करनेवाले चक्रधारण करनेवाले व सबकी बुद्धियों के स्थान तुम्हारे नमस्कार है ९६ हे अनादिदेव ! हे अच्युत ! हे भूत बर्त्तमान भविष्यके पति ! हे महेश्वर ! हे महात्माओं के पति ! हे सबके पति ! हे जगत्पति ! हे पृथ्वी के पति ! हे संसारकेपति ! सदा तुम्हारे नमस्कारहै ९७ हे जलेश नारायण विश्वशङ्कर ! हे क्षितीश ! हे विश्वेश्वर ! हे विश्वलोचन ! हे चन्द्र सूर्य अच्युतवीर विश्वव्याप्त मूर्त्तिवाले ! नहीं नाश होती मूर्त्तिवाले हे अव्यय ! तुम्हारे नमस्कारहै ९८ हे प्रज्वलित अग्नि के किरणों से मण्डप में रूंधेहुये ! हे प्रजाओं के ईश ! हे नारायण ! हे विश्वमुख ! हे समस्त देवोंकी पीड़ा हरनेवाले ! हे अमृत ! हे अव्यय ! शरण में आये हुये हमारी रक्षाकरो ९९ हे विभो ! हम तुम्हारे अनेकों मुख देखते हैं व यज्ञकी गतिहो व पुराणहो ब्रह्मा ईश सब जगतों की उत्पत्तियों के स्थान प्रपितामह तुम्हारे नमस्कार है १०० हे आदिदेव ! कभी२ संसारचक्रके घूमनेसे तुम्हारे अनेकरूप

होजाते हैं हे देववर! व तुम सन्मार्ग विज्ञानसे विशुद्ध प्राणियों से उपासना कराने के योग्यहो हम तुम्हारे कैसे प्रणामकरें १०१ इस प्रकार आपको जो कोई जानता है कि आपही सबके आदि हैं वह सब जाननेवालों में श्रेष्ठहै क्योंकि अन्यगुणयुक्तों में हठसे निरूपण करना तुम्हारी विशालमूर्त्तिका तो होसक्ताहै परन्तु सूक्ष्म मूर्त्तिका नहीं होसक्ता १०२ आप इन्द्रिय रहित हैं व इन्द्रियों से युक्त भी हैं व सुन्दरीगतिवालेहो व सुन्दर कर्मवालेहो संसारके बन्धमें इन्द्रियों को भी निक्षिप्त किया है इससे हे देववर! तुम कैसे जानने के योग्य हो १०३ आपका स्वरूप मूर्त्तिवाला भी है व अमूर्त्तिभी है इससे विशुद्ध भाववाले भी आपके शरीरको नहीं जानते व अनेक प्रकारों की भी आपकी मूर्त्तियां हैं इसी से तुम्हारे चारमुख भी कहसक्ते हैं १०४ इसीसे अद्भुत रूपधारी तुम्हाराशरीर ठीक ठीक देवगण भी नहीं जानते कि कैसाहै इसीसे जो सब से पुराना तुम्हारा कमलपर वासरहताहै उसीका सबलोग स्मरण करते हैं १०५ विश्वके उत्पन्न करनेवाले तुम्हारे तत्त्वको निश्चयता के साथ कोई अत्यन्त विशुद्ध भाववाला भी नहीं जानता तो हम तप से विशुद्ध सबसे आदि व पुराने तुम्हारे तत्त्वको कैसे जानें १०६ पुराणों में यह बार २ सुना है कि हमारी उत्पत्ति तुमसे है इससे तुम हमारे उत्पन्न करनेवाले हो इससे हे नाथ! हम आपकी चिन्तना करते हैं पर हम नहीं जानसक्ते क्योंकि तपस्यासे विहीन हैं १०७ हम आदि सब देवतालोग तुम को नहींजानते जहां तक बुद्धिका प्रकाश है वहां तक विचारते रहते हैं पर यह नहींजानते क्योंकि वे वेदहीनहैं १०८ और जन्म के वेद के विचार से तीव्रबुद्धिवाले प्रकाश व अप्रकाशवान् जानते हैं उसी को लाभ समुझते हैं लुब्ध लोग नहीं जानते कि आप मनुष्य हैं वा देवता वा गन्धर्व वा शिवहैं १०९ न तो अति सूक्ष्मरूप विष्णु आपहैं क्योंकि तुम तो कृत्यकरतेहुये स्थूलरूप दिखाईदेते हो पर हम तो जानते हैं कि तुम स्थूलहो व सूक्ष्मभी हो इससे सब को सुलभहो तुम्हारे विषय में जो निश्चय नहींकरते कि तुम सब प्रकार के हो वे लोग नरकमें गिरते हैं ११० हे विस्तृतप्रभाव! चन्द्र वायु

सूर्य्य देव मही व अन्य तत्त्वों के स्वरूप धारण कियेहुये तुम इस संसारमें सर्व्वत्र दिखाई देतेहो व इनको अपने में स्थापित किये तो तुम को एकप्रकार से कैसे कहसकें १११ आपकी स्तुति तो जो भगवान् अनन्त आप में समाधियुक्त हो विशुद्धभावसे चित्तलगावे व सद्भाव से अपने मनको स्थिरकरे तो चाहे कुछ करसके ११२ हे सर्व्वत्र गतप्रभाव! सदा हृदयमें टिकेहुये तुम्हारे नमस्कार है व सदा सर्व्वत्र विद्यमान तुम्हारे नमस्कार है हमने जानलिया है कि सबकी गति तुम्हीं हो ११३ इस संसार चक्रमें भ्रमण करने से भयभीत होकर हम तुम्हारे शरणमें हैं इससे हमारा पालनकरो ११४ ब्रह्माजी बोले कि हे केशव! तुम सर्व्वज्ञहो व ज्ञानराशिहो इसमेंकुछ भी सन्देह नहीं है इससे सब देवोंमें प्रथम तुम्हीं पूज्यहोओगे ११५ जब श्रीनारायण से ब्रह्माजीने ऐसाकहा तो महादेवजी भक्ति से ब्रह्माजीकेसमीप आये व प्रणाम करके उनकी स्तुति करनेलगे ११६॥

चौ० कमलनयनपद्मजभगवाना। करतप्रणामधरतउरध्याना॥
परमात्माऽसुरसुर गुरुस्वामी। नमोनमो बिनवत अनुगामी ११७
सब देवनके ईश तुम्हारे। नमो नमो हम करत पुकारे॥
विष्णुनाभिभवकमलतुम्हारो। जन्मवासथल है नहिंन्यारो ११८
विद्रुमरङ्ग पाणिपद शोभित। लेहुप्रणामअकाम अक्षोभित॥
मैंतवचरण शरण महँ ईशा। पाहिपाहि जगदीशमहीशा ११९
प्रथमनीलनवघनसमश्यामा। तवस्वरूपपद्मजसुठि सामा॥
पुनि लखि रक्ताननतवदेवा। करतसकलजन तुम्हरीसेवा १२०
पद्म समुद्भव पद्मारूढ़ा। कीन जासु तुम सृष्टि अरूढ़ा॥
तेजानत नहिं तुम्हें कृपाला। यहै मोहकर हेतु विशाला १२१
तुम्हें विहाय अनलतहिं कोई। करत त्राण जानत सब सोई॥
मैं सावित्री शाप नशाना। भयों अलक्षितरूप महाना १२२
अब कीजै भार्य्यायुत मेरी। शान्तिसदा विनती सुनि टेरी॥
ब्रह्मा ममपद रक्षण करऊ। कमलासन मम जङ्घाअवऊ १२३
मम कटि पालु विरञ्चि महाना। स्रष्टा गुह्य रखावहु आना॥
नाभि पद्मनिभ रक्षै मेरी। चतुरानन पिचण्ड ममहेरी १२४

पातु चतुर्म्मुख ममउर नीके । पद्मजहृदय सकलविधिठीके ॥
सावित्रीपति कण्ठ हमारो । हृषीकेश मुख करहु उजारो १२५
पद्मवर्ण मम नयनन पालो । परमात्मा मम शिरहि निहालो ॥
इमिकहि शङ्कर विधिकेनामा । कीन्हबहुतविधितिन्हेंप्रणामा १२६

हे भगवन् ! हे ब्रह्मन् ! यह कहके महादेव जी चुपहोरहे तब ब्रह्माजी प्रसन्नहोके महादेवजी से यह बोले १२७ यह ऐसी स्तुति सुनकर ब्रह्माजी महादेवजी से बोले कि तुम्हारा कौनसा कार्य्य हम करें जो जो चाहते हो हमसे कहो और पूँछो यह सुन महादेव जी ने पूँछा कि हे नाथ ! जो हमसे प्रसन्न हुयेहोओ व हमको वर-पानेके योग्य समझतेहोओ १२८ तो हमसे यह कहो कि किस २ स्थानमें रहतेहो व किन २ स्थानों में ब्राह्मण लोग तुमको सदा देखते हैं १२९ व किस किस नाम से तुम्हारे स्थान पृथ्वीतल पर शोभितहोते हैं हे सर्व्वेश ! अपनी भक्तिमें हमको रतजानकर वह हमसे कहो १३० बस अन्य हम कुछ नहीं चाहते ब्रह्माजी बोले कि पुष्कर में हमारा सुरश्रेष्ठनाम प्रसिद्धहै गया में चतुर्म्मुख कान्यकुब्ज में वेदगर्भ व भृगुकच्छ में पितामह १३१ कौबेरी में सृष्टिकर्त्ता नान्दीपुरी में बृहस्पति प्रभासक्षेत्र में पद्मजन्मा वानरी में सुरप्रिय १३२ द्वारका में ऋग्वेदी वैदेशमें भुवनाधिप पौण्ड्रक में पुण्डरीकाक्ष व हस्तिनापुर में पिङ्गाक्ष १३३ जयन्ती में विजय पुष्करावतमें जयन्त उग्रमें पद्महस्त व तमोनदी में तमोनुद १३४ अहिच्छत्रामें जयानन्द काञ्चीपुरी में जनप्रिय पाटलीपुत्र में ब्रह्मा व ऋषिकुण्डमें मुनि १३५ महितारमें मुकुन्द व श्रीनिवासित में श्रीकण्ठ कामरूपमें शुभाकार व वाराणसी में शिवप्रिय १३६ मल्लिकाक्ष में विष्णु महेन्द्राचलपर परशुराम गोनर्दमें स्थविराकार व उज्जैनमें पितामह १३७ कौशाम्बीपुरी में महाबोधि अयोध्या में राघव चित्रकूटपर मुनीन्द्र व विन्ध्याचलपर वाराह १३८ (गङ्गाद्वार) हरिद्वार में परमेष्ठी हिमवान् पर शङ्कर देविकामें शुचिहस्त व चतुर्वटमें स्रुवहस्त १३९ वृन्दावनमें पद्ममणि नैमिषारण्यमें कुशहस्त गोपल्यक्षमें तो गोपीन्द्र व यमुना के तटपर सुचन्द्र १४०

भागीरथी में पद्मतनु व जलंधर में जलानन्द व कौंकण में मद्राक्ष व कांपिल्यमें कनकप्रिय १४१ वेकंट में अन्नदाता व कृतुस्थलमें शंभु लङ्कामें पुलस्त्यमुनि व कश्मीर में हंसबाहन १४२ अर्व्वुदवन में वसिष्ठ उत्पलावत वनमें नारद मेकल पर्व्वतपर श्रुतिदाता प्रयात में यादसाम्पति १४३ सामवेद में यज्ञ मधुरमें मधुरप्रिय अंकोटमें यज्ञभोक्ता ब्रह्मवादे सुरप्रिय १४४ गोमन्तपर नारायण व माया पुरी में द्विजप्रिय ऋषि वेद में दुराधर्ष देवा में सुरमर्दन १४५ व विजया में महारूप व राष्ट्रवर्द्धन में स्वरूप व मालवी में पृथुदूर व शाकंभरी में रसप्रिय १४६ पिण्डारकतीर्थ में गोपाल शङ्खोद्धार में अंगदर्द्धन कादम्बकमें प्रजाध्यक्ष व समस्थलमें देवाध्यक्ष १४७ भद्र पीठपर गङ्गाधर अर्व्वुद पर्व्वतपर जलशायी त्र्यम्बकमें त्रिपुराधीश व श्रीपर्व्वतपर त्रिलोचन १४८ पद्मपूरमें महादेव कपालमें वेधस श्रृंगवेरपुरमें शौरि व नैमिषमें चक्रपाणि १४९ दण्डपुरी में विरूपाक्ष धृतपायक स्थानमें गौतम माल्यवन्तपर हसन्नाथ व बालिकस्थान में द्विजेन्द्र १५० इन्द्रपुरी में देवनाथ व धूतपा में पुरन्दर लम्बा में हंसवाह व चण्डामें गरुड़प्रिय १५१ महोदय में महायज्ञ यज्ञके- तनमें सुयज्ञसिद्धि स्मरस्थानमें पद्मवर्ण व विभामें पद्मबोधन १५२ देवदारु वनमें लिङ्ग व महापतिमें विनायक मातृस्थान में त्र्यंबक अलका में कुलाधिप १५३ त्रिकूटपर गोनर्द पातालमें बासुकि पद्मा- ध्यक्ष केदारमें व कूष्माण्डमें सुरतप्रिय १५४ व कुण्डवारी में सुभाङ्ग सारणी में तक्षक अक्षोटमें पापहा अम्बिकामें सुदर्शन १५५ वरदामें महावीर कान्तार में दुर्ग्गनाशन पर्णाटमें अनन्त व प्रकाशमें दिवा- कर १५६ विरजामें पद्मनाभ वृकस्थल में स्वरुद्र वटकमें मार्कण्ड व वाहिनी में मृगकेतन १५७ पद्मवती में पद्मगृह गगनमें पद्मकेतन ये १०८स्थान हमने तुमसे कहे १५८ कि हे त्रिपुरान्तक! जहां२ हमारी सान्निध्यहै इनमें से जो कोई भक्तिमान्नर एकको भी देखताहै १५९ वह विरजस्थान को पाकर बहुत वर्षोंतक प्रमुदितहोता रहताहै व उसने मानसिक कायिक वाचिक जो पापकियेहों १६० वे सब नाश होजाते हैं इसमें विचारणा न करनीचाहिये व जो कोई इन सबस्थानों

में जाकर हमको देखताहै १६१ वह मोक्षगामी होकर उसस्थानको जाताहै जहां हम नित्य निवास करते हैं व इनस्थानों में जाकर जो कोई पुष्पादि पूजनकी सामग्री से पूजन करता व भोजनवस्त्रादि से ब्राह्मणों को तृप्तकरताहै १६२ व स्थिर ध्यान करताहै तो शीघ्रही सब कुछ पाताहै व उसके पुण्यका फल उत्तमहोताहै इसलोकमें सब सुखभोगकर अन्तमें मोक्षपाता है १६३ व वह ब्रह्मलोक में जाकर बहुत दिनोंतक वहां रहता है जब फिर सृष्टिहोती है तब वैराजों में महातपस्वी देवहोता है १६४ चाहे इसलोकमें ब्रह्महत्यादि पापभी किये हों सो भी चाहे जानकर अथवा विनाजानेहुये परन्तु सब क्षण मात्रमें नष्टहोजाते हैं १६५ व इसलोकमें जो दरिद्रहोते हैं वा जिन की राज्य छूटजाती है पर इनस्थानों में जाकर जो हमको देखते हैं ध्यानलगाकर १६६ व पूजाकरते पितरों का तर्पण करते हैं व पिण्ड दानकरते हैं वे शीघ्रही दुःख से छूटते हैं १६७ व अन्य जन्ममें वे एकछत्र पृथ्वी के राजाहोते हैं इसमें संशय नहीं है व इस जन्ममें सौभाग्य धनधान्य श्रेष्ठ स्त्रियोंकोपाते हैं १६८ व जिस किसीने इन सब स्थानों में से केवल पुष्करहीकी यात्राकी है उसके भी इस लोक में धनधान्य वरस्त्री सौभाग्यहोती हैं इसयात्राविधानको जो करताहै वा कराताहै १६९ वा सुनताहै वह सब पापोंसे निश्चय छूटजाताहै जिस मनुष्यने गुरुस्त्री आदि अगम्य स्त्रियों के संग गमन किया है १७० व जिसने द्रव्यके लोभसे बहुतवर्षकी कीहुई अपनी ब्रह्म क्रिया बेंचडाली है वह पुष्करतीर्थ की यात्रा जो एकबारभी करता है वेदोंके संस्कार को पाताहै १७१ हे शंकर ! इस विषय में बहुत कहने से क्या है जो पूर्वजन्म में भी पाप किया हो वह भी नष्ट होजाता है जो चीज नहीं मिलनेवाली भी होती है उसको पाताहै १७२सब यज्ञों के फलों के तुल्य व सब तीर्थों का फल देनेवाली पुण्यहोती है व जिसने पुष्कर यात्रा की जानों सब वेदोंको पढ़चुका १७३ व जिन लोगोंने आकर पुष्कर में सन्ध्या की व सावित्री की उपासना की व पुष्कर का जल अपनी स्त्री के हाथपर धराकरसा- वित्री की पूजाकराई १७४ अथवा धातुकी सुराही में जल भराकर

वा मिट्टीही की सुराही में भराकर ले आय फिर उसको छानकर दिन के अन्तमें जो सन्ध्योपासन करताहै १७५ सो भी एकाग्रचित्त करके प्राणायाम पूर्वक ऐसी सन्ध्या के करने से जो पुण्य होती है उस का फल हमसे आज सुनो हे शंकर! १७६ उसने जानों बारहवर्षतक बराबर विधिवत्सन्ध्या की व इस तीर्थ में स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होताहै व दान देनेसे सौगुना फल होताहै १७७ यहां उपवास करने से अनन्त फल होता है यह हमने आप कहा है व इस तीर्थ में सावित्रीके आगे जो कोई स्त्री पुरुष को भोजन दे १७८ उसने जानों हमको भोजनकराया इसमें सन्देह नहींहै व जिसने फिर दूसरे सस्त्रीक ब्राह्मण को भोजन दिया उसने जानो केशव भगवान् को भोजनकराया १७९ व इसीसे लक्ष्मीसहित श्री हरि उसे नानाप्रकार के वरदेते हैं व जिसने तीसरे सस्त्रीकब्राह्मण को भोजितकिया उस से उमासहित तुम भोजित होतेहो १८० अथवा इस तीर्थ में आकर गौओं व कुमारियों को भोजन दे तो उसके कुलमें बांझ व (दुर्भगा) विधवा नहीं होती १८१ व न उसकी स्त्री के कभी कन्या उत्पन्न होती है व पति परमप्रिय उसकी स्त्री होती है इससे सब प्रयत्नों से सावित्री के आगे सस्त्रीकब्राह्मण व गो कुमारियों को भोजन कराना चाहिये १८२ खीर मट्ठा की खीर दुग्ध शर्करा मिली खीर इत्यादि भोजन देने चाहिये पर कडुये तेलकी बनीहुई कोईवस्तु न देनी चाहिये १८३ न खट्टा न खारी व अमंगल कोई पदार्थ जो भयंकर हो कभी न देना चाहिये छओं रसों करके बनायेहुए पांचप्रकार के मधुर पदार्थ वेभी तुरन्तके बनाये बासी न हों देने चाहियें १८४ जितनेपदार्थ भोजन कराये जावैं सब घृतसे पूर्ण सुन्दरी तरह पकेहुए शर्करा संयुक्त बहुत दुग्ध समेतहों प्रथम घृत शर्करा दुग्धयुक्त मालपुये होने चाहियें दूसरे घृत शर्करा दुग्धही की पिराकें तीसरी पूरियां इनके भीतर खजूर के फल व छुहारे भरने चाहियें व चौथी गुड़ घृत से बनीहुई लपसी व सोहनहलुआ व पाचईं दधि गुड़की शिखरिणी बस येही पांचप्रकारके मधुर भोजनहैं १८५ ये सब पुरुषोंको आ-

आह्लादकारी हैं व स्त्रियों कों तो अत्यन्त प्रियहैं इनको धनधान्ययुक्त पुरुष खाते पीते हैं व नारियों के समूह तो खाते पीते हैं १८६ व मालपुआओं व पूरियोंसे तो स्त्रियां तृप्तहोजाती हैं इसमें कुछ संशय नहीं है इससे मालपुआ खिलाने से न उनको ज्वर आताहै न ताप न दुःख न वियोग होता है १८७ व बहुत से दास दासी पुत्र भाइयों करके युक्त होता है व २१ पुरुष्य तार देता है १८८ व जो पूरियां यहां देता है उसका कुल बंधुओं पुत्रों दासी दासों से सदा पूर्ण रहताहै व बढ़ताहै १८९ व जो शष्कुली देताहै उसका सब कुल पुत्र व कन्या का हमेशा बधुओं करके युक्त होता है १९० व जो सोहनहलुआ देता है पुत्र पौत्र धन धान्य वस्त्र भूषण युक्त उसका कुल सदा बढ़ता रहता है व जो यहां युवती स्त्रियों को वा युवापुरुषों को दधि गुड़ की शिखरिणी देता है वह सर्वसिद्धियों करके युक्त होता है १९१ व उसकी कन्या व बंधुओं के पुत्र बहुत उत्तम व सज्जन होते हैं यदि उसकी स्त्री युवती हो तो उसके भी पुत्रहोते हैं व जो लड्डू दान करताहै सब सिद्धियोंसे पूरित उसका कुल सदा हर्षित रहताहै यह प्रजापतिजी ने कहाहै हे शिव! यह भोजन लड्डुओंका आठवर्षकी कन्याओंको कराना अत्युत्तमहै १९२ अथवा सुभगा पुत्रवती पतिव्रता धन ऋद्धि सिद्धि युक्त अन्य स्त्रियोंको भी कराना चाहिये जो स्त्री ऐसी स्त्रियोंको लड्डू खिलातीहै वह सहस्र स्त्रियों के भोजन कराने का फल पाती है १९३ व जो मीठे खासे पुये बनाती हैं उनमें मुनक्कोंका रस व गुड़ खाँड़ डालती है १९४ व चावलके अन्नोंकेही बनाती हैं व स्त्रियोंसहित ब्राह्मणों को देती है १९५ व उनके योग्यवस्त्र भी देती है व जो मनुष्यों के पीने के योग्य शर्बत आदिहैं देती है वह सब सुख पाती है १९६ स्त्रियों को चाहिये कि यहां की स्त्रियोंको विधानपूर्वक लहँगा सारी चोली आदि वस्त्रोंसे पूजित करके फिर उनके अङ्गोंमें अपने हाथोंसे कुम्कुम लगायें व पुष्पकी मालादिकोंसे भूषितकरें १९७लालरङ्गकी बनातका वा नरीका जूतादे व हाथमें एक नारियल का फलदे नेत्रोंमें अञ्जन लगादे व मस्तकमें सिन्दूरलगादे १९८ गुड़ व अच्छे मनोहर प्रिय

स्वादयुक्त फल किसी पात्रमें धरकर पात्रसहित हाथमें देकर प्रणाम करके फिर विसर्ज्जन करे १९९ उसके पीछे फिर आप बन्धुओं व बालकों समेत भोजनकरे अथवा जो द्रव्य न हो तीर्त्थमें दान भोजनके वास्ते तो २०० फिर तीर्त्थयात्रा करके अपने घरमें जाकर तब बन्धुओं को खिलावे व तीर्त्थमें देवतासे प्रार्थना करले कि हे देव! हम गृह में पहुँचकर बन्धुओं को खिलावेंगे, हमारे ऊपर प्रसन्नहोओ इसी प्रकार अपने मन्दिर में आकर पितरों के नामभी ब्राह्मण व भाई बन्धुओंको खिलावे २०१ व पिण्डदान तो विधानसे श्राद्धकरके तीर्त्थहीं में करे ब्रह्माके कहने के अनुसार उसके पितर तृप्तहोजाते हैं २०२ हे शिव! तीर्त्थ से आठगुणी पुण्य घर में पिण्डदान करने से होती है क्योंकि द्विजलोग जब घरमें श्राद्ध करते हैं तो उसको नीचजाति वाले नहीं देखते हैं २०३ पर श्राद्ध चाहे तीर्त्थमें हो वा गृहमें एकान्त स्थानमें करनाचाहिये क्योंकि जिस श्राद्धको नीचलोग देख लेतेहैं वह दूषित होजाने के कारण पितरों को नहीं पहुंचता २०४ इससे सब प्रयत्न से श्राद्ध गुप्तस्थानही में करे क्योंकि ब्रह्माजी ने ऐसे गुप्तस्थान में कियेहुयेही श्राद्धको पितरों की तृप्ति करनेवाला कहाहै २०५ श्राद्धमें यदि स्त्रीके भोजनकी भी इच्छाहो तो नववर्ष से नीचेवाली को किसी के नामपर नखिलाना चाहिये जब स्त्री रजस्वला होचुकती हो तो श्राद्धमें भोजन करने के लिये पवित्र होती है २०६ व जो कोई अपना हित चाहताहो वह दान सदा गुप्तहीकरे परन्तु पक्कान्न का दान गुप्तनहीं होसक्ता इससे प्रत्यक्षहीमें दे अन्य दान प्रत्यक्ष में देनेसे नष्ट होजाते हैं २०७ इस से प्रत्यक्षका दान पितर वा देवता किसीकी तुष्टि के लिये कभी नहीं होसक्ता व एक ब्राह्मण के भोजन करानेसे कोटि ब्राह्मण मानों घरमें भोजन कराये जातेहैं २०८ इसमें कुछभी सन्देह नहीं यह पौराणिक का वचन सत्य है कि तीर्त्थ में ब्राह्मणकी परीक्षा कभी नहीं करते २०९ क्योंकि वहां अन्नका अर्थी जैसाही कैसाही ब्राह्मण आवे उसको भोजन देना चाहिये यह मनुजीने कहाहै सतुओंसे पिण्डदान व हलुआ व खीर सेकरे २१० इससे भक्तिमान् मनुष्य को चाहिये कि जहां ऋषि

ब्राह्मण देखें वहां पीना करके व इंगुदी करके व तिलके पीना करके पिण्डदान करे २११ श्राद्धको अर्घ्य आवाहनरहित करे क्योंकि स्वधाको गृध्र व कौआ दृष्टि से दूषित नहीं करसके २१२ वह तैर्थिक श्राद्ध कहाता है पितरोंको बहुत तृप्ति देनेवालाहै तिसको यत्न से करना चाहिये इसमें भक्तिही कारणहै २१३ भक्तिसे पितर प्रसन्न होतेहैं और प्रसन्न होकर कामनाओंको देते हैं पुत्र पौत्र धनधान्य और जिन कामनाओंको मनसे इच्छाकरताहै २१४ भक्तिसे आराधितहुए प्रसन्न पितामहजी मनुष्योंको देते हैं अकालहो वा कालहो मनुष्योंको तीर्थमें सदैव श्राद्ध करना चाहिये २१५ तीर्थ प्राप्तहोने में सदैव स्नान पितृतर्पण और पितरों को अत्यन्त प्यारा पिण्डदान करना चाहिये २१६ पितरगोत्र के आयेहुये को देखते हैं और बड़ी आशासेयुक्त होकर जलकी कांक्षा करतेहैं २१७ इससे विलम्ब नहीं करे और विघ्न न करै तो तिन मनुष्यों की सदैव संन्तान बनी रहती है २१८ व वृद्धिश्राद्ध की कांक्षा करनेवाले पितरभी पुत्रदेते हैं संतान हीन कभी नहीं करते हैं २१९ इससे पूर्व्वसमय में ब्रह्माजी ने अपने आप श्राद्ध कहा है पितृपरायण द्विजों को जो गुणोत्तर करना चाहिये २२० तीर्थमें क्षेत्रमें घरमें संक्रान्ति वा ग्रहण समयमें विषुव संक्रान्ति दक्षिणायन वा उत्तरायण के प्रारम्भ में जन्मनक्षत्र में पीड़ासमय में २२१ इन श्राद्धकालों को पूर्वसमय में ब्रह्माजी ने कहाहै श्राद्ध के करने में पुरुषों को देहसे उत्पन्न पीड़ा नहीं होती है २२२ तिस समय में पुत्रके कियेहुए सब कुकर्म छूटजाते हैं और जैसे ग्रह चोर और राजादिकों से पीड़ाभी नहींहोती है २२३ सब पाप नाश होजाते हैं और प्रजापतिजी के जैसे वचन हैं तैसेही परलोक में शुभगतिको प्राप्त होताहै इसमें सन्देह नहींहै २२४ सत्ययुग में पुष्करतीर्थ त्रेतायुग में नैमिषारण्य द्वापरयुगमें कुरुक्षेत्र और कलियुग में गंगातीर्थको जाना चाहिये २२५ पुष्करमें वासकरना और तपस्या भी दुष्कर है और जगहका कियाहुआ पाप तीर्थ में नाश होजाता है २२६ तीर्थका कियाहुआ पाप कहींभी नाश नहीं होताहै सायंकाल और प्रातःकाल जो हाथजोड़कर पुष्करतीर्थको स्मरण करता

है २२७ तिसको सब तीर्थोंमें स्नान होजाताहै और जो जितेन्द्रिय होकर सायंकाल और प्रातःकाल पुष्कर में स्नान करता है २२८ वह सब यज्ञोंके फलको पाता है और ब्रह्मलोक को जाताहै बारह वर्ष बारह दिन महीना या आधा महीना २२९ जो नित्यही पुष्कर में बसता है वह परमगति को प्राप्त होताहै सब लोकों में ब्रह्मलोक ऊपर स्थितहै २३० जो पुष्कर जानेकी इच्छाकरै वह पुष्कर को सेवनकरै पुष्कर में अच्छेप्रकार स्नान करने से करोड़ तीर्थोंका फल मिलता है विधिपूर्व्वक सब तीर्थों के करने से जो फल मिलताहै २३१ । २३२ उस सब फलको मनुष्य पुष्कर के दर्शन से पाताहै पृथ्वी में दशकरोड़ हज़ार तीर्थोंका २३३ पुष्कर में तीनों सन्ध्याओं में सान्निध्य है जबतक पर्वत और समुद्र रहते हैं २३४ तबतक पुष्कर में मृत्यु होनेवालोंका ब्रह्मलोक होताहै इसमें सन्देह नहीं है हज़ारों जन्मों के जन्मसे मरणपर्यन्त २३५ सब पाप एक बार पुष्कर में स्नान करने से भस्म होजाते हैं पुष्कर बहुत दुष्कर क्षेत्रहै सब पापोंका नाशकर्ता है २३६ हे राजन्! इस समय में पांच पाप नाश कर्ताओंको सुनिये देव देवजी का पूजन ब्रह्मपुत्रका द्रव्य दान २३७ इस जन्ममें दारिद्र्य रोग कोढ़आदि से पीड़ित दरिद्री पुत्रहीन जो पुरुष पृथ्वी में होताहै २३८ तिसके शीघ्रही लक्ष्मी होती है उमर पूर्ण होती है पुत्र होते हैं सुख होताहै लोकपाल संयुक्त मण्डल में प्राप्तकर २३९ श्रेष्ठदेव ब्रह्माजी को जो विधि से देखता है जो कि नवनाभ से पूजित्त मन्त्रमूर्ति और योनि से उत्पन्न नहीं हैं २४० कार्तिक की शुक्लपक्ष की पौर्णमासी में विशेषकर वा सब पूर्णिमाओं में विधि से इसीप्रकार पूजनकरै २४१ संक्रान्ति वा चन्द्रमा सूर्य के ग्रहण में जो गुरुजी से पूजित विभुदेवजी के दर्शन करता है २४२ तिसके शीघ्रही तुष्टि होती है पाप नाश होजाते हैं और देवताओं का मान्य होजाता है २४३ गुरुजी सालभरतक ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य भक्तों की जाति पवित्रता और क्रियादिकों से परीक्षा करै २४४ इसप्रकार उपपन्न जानकर हृदय से धारणकरै और वे भक्त भक्तियुक्त होकर आचार्य परमेश्वरको ध्यानकर २४५

सालभर विष्णुजी के समान गुरुजी में भक्तिकरै तदनन्तर पूरासाल होने में गुरुजीको प्रसन्न करे २४६ हे भगवन् ! आपके प्रसाद से संसाररूपी समुद्र से तरजाऊंगा परब्रह्म की उपासना विरिंच्य के आराधन २४७ सहस्रशीर्षा मन्त्र के जप और मण्डल ब्राह्मण के ध्यानसे भीतरजाऊंगा आप उपदेश दीजिये २४८ हम वैदिकी लक्ष्मी की इच्छा करते हैं विशेषकर प्राप्त कीजिये जब बुद्धिमान् गुरु तिनसे इसप्रकार प्रार्थना कियाजावे तब २४९ आगे ब्रह्मा और विष्णु जी की विधिपूर्वक पूजाकरै और वे भक्त कार्तिककी चतुर्दशीको नेत्र मूंदकर सोवें २५० दोघड़ी रात्रि शेष रहने पर उठे व आसन मार कर बैठे प्रथम हृदयमें श्वेतवस्त्र यज्ञोपवीत धारण कियेहुये अपने गुरु का ध्यानकरे २५१ श्वेतही माला श्वेतहीवस्त्र व श्वेतही चन्दनभी धारण कियेहुये गुरुका ध्यान करे तदनन्तर गृहके बाहर आलस्य को छोड़ नदीके तटपर सदा जाय २५२ वहाँ आचार्य्य दूधवाले वृक्षकी दतून देवे और वे भक्त उसको कूचें समुद्रगामिनी नदीमें जाकर २५३ वा औरही ताल वा घरही में विधिसे ब्रह्ममन्त्र से मन्त्रित दन्तधावन करे २५४ आपोहिष्ठा इस मन्त्र से ७ बार दन्तधावन धोवे व देवस्यत्वा इस मन्त्रसे दन्तधावन दांतोंसेकूँचे व युञ्जान इस मन्त्रसे हाथसे पकड़े रहै २५५ इरावत्या मंत्र से धोकर ब्रह्मोदन से मुखमें फिर कूचकर दूरफेंके और गिरीहुई को देखै २५६ नदी की ओर मुख करके वा पूर्वको मुख करके अथवा किसी ईशानादिकोण की ओर मुख करके दन्तधावनकरे देवता वा नदी के सम्मुख दन्तधावन करने से देवदर्शन और मन्त्रकी सिद्धि होती है २५७ व पश्चिम मुख होकर दन्तधावन करने से सब देवगण दूर चलेजाते हैं व उत्तरको मुख करके दन्तधावन करनेसे सिद्धिहो वा न हो यह नहीं कहसक्ते २५८ व दक्षिण को मुखकरके दन्तधावन करनेसे उस के गुरु की मृत्यु होतीहै इस में संशय नहींहै इस प्रकार तन्दधावन करके किसी देवता के समीप भूमि में सोवे वहीं कदाचित् रात्रि में कुछ स्वप्न देखेहो तो गुरुको सुनावे उस से गुरुको चाहिये कि शुभ वा अशुभ फल विचारें २५९ । २६० फिर जाकर पौर्णमासी में

बह स्नानकरे उस के पीछे किसी देवालय में जाय वहां उसके गुरु को चाहिये कि पूजन कराने के लिये समान भूमिपर मंडल बनावे जैसे विविध प्रकारके लक्षण पूजा करनेकेलिये भूमि के लिखे हैं वि-धिपूर्व्वक उन लक्षणों से पृथ्वी को युक्तकरे उस मण्डल पर सो-लह पखुरियों का कमल बनावे अथवा नवका २६१ । २६२ अ-थवा अष्टदल ऐसा बनाकर किसी अन्य को देखने न दे गुरु को चाहिये कि आपही देखतारहै उसे सब ओरसे श्वेतवस्त्रसे आच्छा-दित करे जिसमें कोई अन्य न देखनेपावे २६३ फिर पुष्प हाथोंमें लियेहुये ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यके क्रमसे अपने शिष्योंको उस मण्ड-लमें पैठावे जब बुधने नवपत्रका कमल बनायाहो तो पूर्व्वओर जो कि इन्द्रकी दिशा है वहां इन्द्रकी पूजाकरे इसी क्रमसे सब लोकपा-लोंकी पूजाकरे जैसे कि अग्निकोण में अग्निकी पूजाकरे व ऐसेही दक्षिण दिशामें यमराजकी व नैर्ऋत्य में निर्ऋति देवता की पूजा करे व पश्चिम दिशामें वरुणजीकी व वायव्यकोणमें वायुकी पूजा करे २६४ । २६६ व उत्तरदिशा में कुबेर की व ईशानकोणमें रुद्र भगवान् की पूजाकरे ऐसेही पूर्व्वदिशा में कमण्डलु की स्थापना पूजाकरे दक्षिण में स्रुवकी २६७ पश्चिम में हंसकी व उत्तर में भी स्रुवकीही पूजाकरे अग्निकोण में ब्रसी कुशासन स्थापितकरे व नै-ऋर्त्य में पादुका स्थापित करे २६८ वायव्य में योगपट्ट व ईशान-कोणमें गलंतिका का स्थापनकरे व पूर्व्वमें विष्णुभगवान् की पूजा करे दक्षिण में शिवजीकी २६९ पश्चिम में सूर्य्यकी व ऋषियोंकी उत्तरदिशामें पूजाहो व मध्यमें पद्मजन्मा ब्रह्माकी पूजाहो व दक्षिण ओर सावित्री की २७० व उत्तरओर गायत्रीकी पूजा होनी चाहिये ऋग्वेद की स्थापना पूजा पूर्व्वओर करे व यजुर्व्वेद की दक्षिण में २७१ पश्चिममें सामवेदकी व उत्तरमें अथर्व्ववेद की व पूर्व्वदिशा में इतिहास पुराणों की स्थापना पूजाकरे दक्षिणदिशा में उक्था आ-दि छब्बीस छन्दोंकी व छन्दश्शास्त्रकी पश्चिममें ज्योतिषकी २७२ व उत्तर में सब मन्वादि धर्म्मशास्त्रों की पूर्व्वके पत्रपर बलभद्रजी की पूजाकरे दक्षिणके पत्रपर प्रद्युम्न की २७३ पश्चिम के पत्रपर

अनिरुद्ध की व वासुदेवकी उत्तरवाले पत्रपर पूर्व में वामदेव दक्षिणमें सद्योजात २७४ पश्चिम में ईशान और उत्तर में तत्पुरुष को स्थापित करे अघोर की पूजा सब दिशाओंमें करदे यह मण्डपकी पूजाहुई २७५ पूर्व्वदिशा में भास्करकी पूजाकरे दक्षिणमें दिवाकर की पश्चिम में प्रभाकर की उत्तर में ग्रहराज की पूजाकरे २७६ इस प्रकार विधिपूर्व्वक परमेश्वर ब्रह्माकी पूजाकरे आठों दिशाओं में क्रमसे आठ कलश स्थापित करे २७७ व नववां ब्रह्माका कलश मध्य में कल्पित करे जिसको मुक्तिकी इच्छाहो उसे ब्रह्माके कलश के जलसे स्नान करावे २७८ जिसे लक्ष्मीकी कामनाहो उसे विष्णु के कलश से व जिसे राज्य की इच्छाहो उसे इन्द्रके कलशसे स्नान करावे २७६ द्रव्यकी इच्छावाले को अग्नि देवताके कलश से व जिसे मृत्यु जीतने की इच्छाहो उसे दक्षिण दिशा में स्थापित यम के घटसे स्नान करावे २८० व जिसे दुष्टों के विनाश कराने की इच्छाहो उसे नैर्ऋत्यकोण में स्थापित निर्ऋति के कलशसे स्नान करावे व पाप नाश करानेके लिये पश्चिममें स्थापित वरुण कलशसे २८१ शरीरके आरोग्य की कामनावालेको वायव्यमें स्थापित वायु कलशसे स्नान करावे व जिसे द्रव्यसम्पत्तिकी कामनाहो उसे उत्तर में स्थापित कुबेरकुम्भसे स्नान करावे २८२ जिसे ज्ञानकी कामना हो उसे ईशानमें स्थापित रुद्रकलशसे स्नान कराना चाहिये ये सब लोकपाल हुये इस क्रमसे जिसने क्रमसे सब कलशोंसे स्नानकिया वह सब दोषोंसे रहित होजाता है २८३ वह तुरन्त ब्रह्मा के तुल्य होजाता है अथवा महाराज होजाता है अथवा सब दिशाओंमें सब लोकपालों की पूजा यथाक्रम से अपनेही नामसे विधानसहित करे इस प्रकार देवताओं व लोकपालों की पूजा विधानसे प्रसन्नमनहो करके २८४ । २८५ फिर पीछे परीक्षा कियेहुये शिष्यों को मण्डल के भीतर नेत्रों में वस्त्र बांधकर प्रवेश करावे व अग्निकोण में शङ्ख चक्र धनुर्बाणादि जिस आयुध के धारण करनेकी इच्छा शिष्य को हो उसे वायुसे धमककर अग्निमें सन्तप्तकरे २८६ व सोम ओषधिसे उसे बढ़ावे व शिष्यको उससे चिह्नित करे फिर शिष्य को नियम

सुनावे कि ब्राह्मणों व देवताओं की निन्दा कभी न करना व विष्णु और ब्रह्माकी निन्दा न करना २८७ इन्द्र सूर्य्य अग्नि लोकपाल व ग्रहों की भी निन्दा न करना गुरु ब्राह्मण व पूर्वदीक्षित मुनीन्द्रों की निन्दाकभी न करना २८८ यह कहकर उसे मन्त्रसुनावे इस प्रकार नियम सुनाकर फिर शिष्यसे होम करावे ब्रह्मयज्ञ के होमका मन्त्र यहहै कि (ॐनमोभगवतेब्रह्मणेसर्वरूपिणेहुंफट्स्वाहा) २८९ और हवन जहांतक सम्भव हो तो षोडशदलवाले कमलोंसे करे सो भी जब अग्नि बनाय प्रज्वलित हो तब होमकरे सबआहुतियोंको देकर फिर अन्तमें घृतकीधारा ऐसी चलावे जो गर्भके मध्यमें हव्य के ऊपरगिरे सो अधिक घृतकी धारा थोड़ेकी नहीं २९० अथवा तीन २ आहुतियों के पीछे घृत छोड़ता जाय यह सब देवदेव ब्रह्माजी के समीपही होम हो होमके अन्तमें जिसने मन्त्रग्रहण किया है वह गुरु दक्षिणा देवे २९१ हाथी घोड़ा पालकी रथ सुवर्ण धान्य आदि जैसा सम्भवहो राजाहो तो वह इनसबदानोंकोदे व राजासे न्यून कोई मध्यमजन हो तो मध्यम गुरु दक्षिणादे २९२ व उससे भी नीचेवाले लोग सुवर्ण सहित दो रुपये दें ऐसा करनेपर जो पुण्य होती है व जैसा उसका माहात्म्य उत्पन्न होताहै २९३ वह सैकड़ों वर्षोंमें भी कोई नहीं कहसक्ता अथवा इस प्रकार मन्त्र श्रवण यज्ञकर जो कोई पद्मपुराणको सुने २९४ उसने जानों सब वेदपुराण व सब मन्त्रों का संग्रह करलिया व उस मन्त्रको फिर वह पुष्करतीर्थ में जपे वा प्रयाग में वा गङ्गासागर में २९५ वा देवह्रद में वा कुरुक्षेत्र में वा काशी में तो विशेष रीतिसे जपे अथवा चन्द्र सूर्य्यके ग्रहण में किसी अयोध्या मथुरा माया द्वारकादि वैष्णवक्षेत्र में जपे परन्तु इन सब स्थानों में जपने से जो फल होता है २९६ वह पुष्कर में सौगुणा ब्रह्माजी के दर्शनसे होता है इससे उनके दर्शन करके प्राणी जिन जिनकामों की इच्छा करताहै उनको पाताहै २९७ व विधानपूर्वक पूजाकरके जो मन्त्र वाला पद्मपुराण सुनता है उसके उस कर्मका ध्यान देवता लोगभी तप करके करते हैं व कहते हैं २९८ कि कब हमलोगों का जन्म भरतखण्ड में होगा कि हम लोगभी दीक्षित हो-

कर पद्मपुराण सुनेंगे २९९ सोभी यों नहीं मन्त्रसुनकर यज्ञमें दीक्षित होकर अपनेको षोडशदलवाले चक्रपर स्थापित करके व फिर सुनने के पीछे परम स्थान को जायँगे जहां जाकर फिर जन्म नहीं होता है ३०० इस रीतिसे देवगण चिन्तना किया करते हैं व कहा करते हैं कि और हम लोग कार्तिककी पूर्णमासीको पुष्करतीर्थ में ब्रह्मयज्ञ कब देखेंगे ३०१ हे भीष्म! इसप्रकार हमने तुमसे यह विधान कहा यह देवगन्धर्व व यक्षोंको सर्व्वदादुर्लभहै ३०२ ऐसा जो निश्चय करके जानताहै व जो यज्ञमण्डल को देखताहै व जो इसको सुनताहै सब मुक्तहोजाते हैं यह हमने सुनाहै ३०३ इसके आगे अब हम वह परम उत्तम रहस्य कहेंगे जिससे लक्ष्मी धैर्य्य तुष्टि पुष्टि सब होती हैं ३०४ व हे राजन्! जिससे सब ग्रह सदा सौम्य होजाते हैं आदित्यवारसे प्रारम्भ करके भक्तिसे जब तक सात दिन नहों तबतक नक्तव्रतकरे फिर जब सातवांदिन पूर्णहोजावे तो ब्राह्मणों को भोजन करावे ३०५। ३०६ व सुवर्णकी सूर्यकी मूर्त्ति मनुष्य बड़े यत्न से बनवावे उसे दो लालवस्त्रों से आच्छादितकरे छतुरी व खराऊं वहां प्राप्तकरे ३०७ व जूताभी दिलावे फिर उस मूर्त्तिको ताम्रके पात्रमें स्थापितकरे घृतसे स्नानकराके फिर वह मूर्त्ति किसी सब अङ्गोंसे पूर्ण ब्राह्मणको देदे परन्तु जहांतक ब्राह्मण वेद शास्त्र पुराण पढ़े हुये मिले तो उसीको देना विशेषहै इस प्रकार इसव्रत व दान के करने का फल जन्म पर्य्यन्त उत्तम आरोग्य रहता है ३०८। ३०९ व समग्र द्रव्य सम्पत्ति होती है यह पुरानी क्रिया है इस में किसी का संवाद नहीं है व मनुष्यों को शान्ति पुष्टिको देती है ३१० व इस से भी विचित्र दूसरी क्रिया यह है कि सोमवारसे उसी प्रकार नक्तव्रतका आरम्भ करे व नक्तव्रत करके पण्डित को चाहिये कि आठ सोमवार बितावे ३११ व प्रत्येक सोमवारको अपनीशक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंको भोजन करातारहै जब नववां सोमवार आवै तो उसमें भी ब्राह्मणों को भोजन करावे ३१२ व ब्राह्मणों को एक धोती एक अँगौछा दो २ वस्त्र दे फिर दो वस्त्रों से आच्छादित करके चन्द्रमाकी मूर्त्तिदे वह मूर्त्ति प्रथम कांस्यके पात्रमें स्थापित करके दुग्ध से पूरित

हो ३१३ व उसीप्रकार छतुरी खराऊँ व जूता इसके सङ्गभी हों यहभी मूर्त्ति किसी सम्पूर्ण अङ्गवाले ब्राह्मणहीको दीजाय अङ्गभङ्ग को नहीं ३१४ व जिस मङ्गलवारको स्वातिनक्षत्रहो उसको मङ्गल की पूजा करके दिनभर व्रत करके सन्ध्याके समय भोजन करे इस प्रकार जबतक आठ मङ्गलहों तबतक मङ्गलको नक्तव्रत करता रहै व प्रतिमङ्गल ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन करातारहै ३१५ मङ्गलकी मूर्त्ति सुवर्ण की बनवाकर ताम्रके पात्रपर स्थापितकरे व पूजा करके वहभी सब अङ्गों से सम्पूर्णहीवाले ब्राह्मणको दिलावै ३१६ व नक्षत्रों के क्रमसे सात नक्तव्रत जब होजायँ तो अर्थात् अश्विनी से प्रारम्भ करे व पुनर्व्वसुतक बीतजायँ तो जब पुष्यनक्षत्र आवे तो पुष्यनक्षत्रकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर स्नान कराय ३१७ फिर जैसा विधान है वैसा अग्नि कार्य्यकरे ऐसा करनेसे जो होताहै हे नृपोत्तम ! उसे सुनो ३१८ सब ग्रह तो सौम्यरूप होजाते हैं व रोग सब नष्ट होजाते हैं देवता सन्तुष्ट होते हैं ३१९ नाग और पितर तृप्त होजाते हैं दुस्स्वप्न नष्ट होजातेहैं और सुनने और पढ़नेवालों को भी येही सब फल होते हैं ३२० जबकभी मङ्गल शनैश्चर सूर्य्य राहु और केतु किसीकी राशिपर आते हैं तो ये रौद्र ग्रह बड़ी भारी पीड़ा करते हैं ३२१ परन्तु इस व्रत के करतेही सबके सब सौभाग्य देनेवाले होजाते हैं व हे राजन् ! जो कोई सदा भक्तियुक्त होकर इस व्रतको करताहै ३२२ उसके ऊपर अनुग्रह करके सब ग्रह उसे शांति देते हैं शनैश्चर और राहु केतुको लोहेके पात्रोंपर बैठावे ३२३ व लोहेहीके भूषण इन शनैश्चरादिकों को पहिनाकर फिर ब्राह्मणों को देदे व इन सबों की प्रीति के लिये दोकालेवस्त्र ब्राह्मणको देदे ३२४ व जिनको शान्ति श्रीविजय की इच्छाहो तो वे लोग शनैश्चरादिकों की मूर्त्तियां सुवर्णकी दें क्योंकि हे राजन् ! व्रतके अन्तमें इन सबग्रहोंकी सुवर्णही की मूर्त्तियां देनी कही हैं ३२५ इससे जो अपनी शान्ति चाहतेहों व्रतके अन्तमें सुवर्णही की मूर्त्तियाँ दें व व्रतके अन्त में ब्राह्मणोंको भोजन भी दें व यथाशक्ति ग्रहोंकी प्रीतिकेलिये दक्षिणा दें ३२६ हे राजेन्द्र ! इस

प्रकार ग्रहयज्ञ करके थोड़ेही श्रमसे सबकामोंको पाजावै शङ्करजी से ज्ञान पानेकी इच्छा करनी चाहिये व सूर्य्य से आरोग्यकी ३२७ व अग्नि से धनकी इच्छा करनी चाहिये और जनार्दन भगवान्‌से गतिकी इच्छा करे व सब जन्तुओं को प्रशान्ति देनेवाले मोक्षकी चाहना ब्रह्माजी से करनीचाहिये ३२८ यह ग्रहयज्ञ सुनकर भीष्मपितामहजी ने पुलस्त्यजी से पूँछा कि जो आपने हमसे यज्ञ कहा उसमें सूर्य्य चन्द्र मङ्गल शनि राहु व केतु इन छःको कहा अब हम छओंका फल सुनाचाहते हैं परन्तु थोड़ेही यत्नसे जिसके करने से वर्षदिनके व्रतके समान पुण्य मिलताहो हे मुनिश्रेष्ठ! ऐसाही उपाय बताइये जिससे थोड़ेही प्रयाससे महाफल मिलताहो ३२९।३३० यह सुनकर पुलस्त्यमुनि बहुत विचारकरके तब बोले कि हे महाराज! यही अर्थ श्वेतनाम महायशस्वी राजाने क्षुधासे अत्यन्त पीड़ितहोकर यज्ञमें वसिष्ठजी से पूँछाथा ३३१ इलावृतखण्डमें एक महाबली श्वेतनाम राजा हुआ उसने देशोंसमेत सप्तद्वीपवती सब पृथ्वी को जीतलिया ३३२ ब्रह्माजी के पुत्र वसिष्ठजी उसके पुरोहितथे सो वह परमधार्म्मिक राजा किसी समयमें सबपृथ्वीको जीत कर ३३३ जपनेवाले ऋषियोंमें श्रेष्ठ अपने पुरोहित वसिष्ठजी से बोला कि हे भगवन्! मैं सहस्र अश्वमेधयज्ञ कियाचाहताहूं ३३४ सो यों नहीं ब्राह्मणों को सुवर्ण रूप्य रत्नोंकेही दान देदे कर करना चाहताहूं व हे गुरो! पृथ्वीपर अन्नदान नहीं दिया चाहताहूं ३३५ क्योंकि जब सुवर्णादिकही बहुतसा देदूँगा तो अन्नदानसे क्या होगा इसप्रकार सुवर्णादिकोंके आगे अन्न कुछभी नहीं है यह जानकर अन्न राजाने कभी न दिया ३३६ किन्तु महायशस्वी राजा श्वेतने रत्न वस्त्र अलङ्कार ग्राम नगर ब्राह्मणों को दिये ३३७ व अन्न जल उस राजाने कभी भूलसे भी ब्राह्मण क्या किसीको कभी नहीं दिया इस के पीछे बहुत अश्वमेध यज्ञकरके राजसत्तम ३३८ अपनी पुण्य से जीतेहुये स्वर्गको गया व वहां तीन अर्ब्ब वर्षतक रहा वहां से सब अलङ्कारों से भूषित ब्रह्माजीके लोक को गया ३३९ वहां अप्सरायें नाचतीथीं व सिद्धोंकी स्त्रियां गानकरतीथीं उसी समय में तुम्बुरु

और नारद ये दो गन्धर्व्व वहां आये ३४० व दोनों महाभागों ने बहुत अच्छेप्रकार से गाया व अन्य मुनिलोग अपनी इन्द्रियों को अपने वशमें कियेहुये अनेक अश्वमेधादि महायज्ञ करनेवाले ब्रह्मा जीकी स्तुति वेदोक्त मन्त्रों से करनेलगे ३४१ इसप्रकार के विभव ब्रह्मलोकमें उस महात्मा राजाको मिले परन्तु वह क्षुधा पिपासासे अत्यन्तपीड़ित होरहाथा ३४२ सो क्षुधा तृषासे पीड़ित वह राजस- त्तम उन मुनियों व अप्सराओं को छोड़कर ऋक्षपर्व्वतपर जापहुँ- चा ३४३ वहां महावनमें एक पूर्व्वकालमें जलकर मुनि मरापड़ाथा उसके हाड़ अपने हाथों से उठा उठाकर वह राजा चाटनेलगा ३४४ तब हे राजन्! वह मुनि विमानपर चढ़कर स्वर्ग्ग को चला गया इसप्रकार वहां हाड़ चाटते चाटते बहुतकाल बीतगया वह तपस्वी दानी राजा हड्डियों को चाटताथा कि इतने में आकर उसके पुरोहित वसिष्ठजी ने देखा व कहा कि हे राजेन्द्र! तुम हड्डियां चाटरहे हो ३४५।३४६ जब महर्षि वसिष्ठजी ने ऐसा कहा तो वह राजा श्वेत उन वसिष्ठमुनि से वचन बोला ३४७ हे भगवन्! क्षुधा व तृष्णासे मैं बहुत व्याकुलहूं क्योंकि मैंने अन्न व जलदान नहीं किया हे मुनि- शार्दूल! इसी से मुझ को क्षुधा सताती है ३४८ जब राजा ने इस प्रकार वसिष्ठमुनिसे कहा तो महामुनि वसिष्ठजी उस राजासे फिर बोले ३४९ कि हे राजेन्द्र! विशेष क्षुधित तुम्हारा हम क्या करें वि- नादीहुई कुछभी वस्तु किसीको नहीं मिलती ३५० रत्न सुवर्णदान देनेसे मनुष्य भोगवान् होताहै व अन्नदानप्रदान करनेसे सब काम पूरेहोते हैं ३५१ सो हे राजन्! उस अन्नको थोड़ा समझकर कुछ दियाही नहीं राजा श्वेत बोले कि हे गुरो! हमसे वह उपाय बताओ जिससे कि विना दियेहुये पदार्त्थभी किसी यत्नसे मिलें ३५२ वसिष्ठ जी बोले कि एक कारण ऐसाहै जिससे कि ऐसाभी होताहै जैसा कि तुम चाहते हो इसमें कुछभी संशय नहीं है ३५३ सो हे नरव्याघ्र! कहतेहुये हमसे वह सुनो पूर्व्वकल्प में एक विनीताश्व नाम राजा हुये ३५४ उन्होंने अश्वमेध यज्ञ करनेका आरम्भ किया यज्ञान्तमें अच्छे अच्छे द्विजेन्द्रों को धेनु घोड़े हाथी आदि दानदिये ३५५ उ-

न्होंने अन्नको थोड़ा समझकर अन्न कुछ भी नहीं दियाथा जैसे कि आपने नहीं दिया तब बहुत कालके पीछे वह राजा जाकर गङ्गाजी के तीर पर मृतक हुआ ३५६ उसके प्रताप से राजा विनीताश्व मायापुरी में चक्रवर्त्ती राजाहुये बहुतदिन राज्यकरके वे भी स्वर्ग्ग को गये जैसे कि आप गयेथे ३५७ वे राजाभी इसीप्रकारसे क्षुधासे पीड़ितहुये थे जैसे कि तुम हुयेहो मर्त्यलोकमें गङ्गानदी के तीर एक नीलपर्व्वतहै ३५८ सो सूर्य्य समान प्रकाशित दीप्तिमान् विमान पर चढ़कर देवताके समान वहां अपना शरीर व अपने पुरोहितको देखा ३५९ उस ब्राह्मणका होता नाम था व गङ्गाजीके किनारे यज्ञ कररहाथा उसे देखकर उस द्विजोत्तमसे उस राजाने पूँछा ३६० तब क्षुधा मिटनेका कारण होताने उससे कहा कि हे राजन् ! आप तिलधेनु घृतधेनु ३६१ जलधेनु व रसधेनु दान विधिपूर्व्वककरें जिससे कि आप तृषा वा क्षुधारहित स्वर्ग्ग में विराजें ३६२ जबतक स्वर्ग में सूर्य्य और चन्द्रमा तपते व प्रकाशित रहेंगे तबतक आप भी स्वर्ग्ग में सुखसे रहेंगे जब इसप्रकार उसके पुरोहित होताने कहा तो राजाने उससे तिलधेनु आदिका विधान पूँछा तब वह बोला कि नृपसत्तम सुनो हम तिलधेनु आदिका विधान तुमसे कहते हैं ३६३। ३६४ सोलह आढक तिलोंकी तो धेनु बनाई जाय व चारआढक का उसका बच्चाबनाया जाय उन दोनों के पैर ऊखके दण्डके बनायेजायँ व उजलेपुष्पों के सुन्दर दांत बनायेजायँ ३६५ चन्दन कर्पूरादि सुगन्धित पदात्थोंकी उन दोनोंकी नासिका बनाईजावे व गुड़की जिह्वा निर्म्माण कीजावे पुष्पोंकी माला की पूँछ बनाई जाय ऐसी रचकर उसे घण्टा भूषणों से भूषितकरे ३६६ ऐसी अच्छी बनाकर फिर सुवर्ण की सींगें कल्पितकरे चांदी के खुरबनावे कांस्यपात्र की दोहनीकरे जैसा कि धेनुदान का विधानहै वैसेही सब करे फिर इसके पीछे वैदिक वा पौराणिक मन्त्रों से ब्राह्मणको विधिपूर्व्वक सङ्कल्प पढ़कर देदे व इस धेनुको मृगचर्म्म पर स्थापित करके व वस्त्रों से आच्छादित करके ३६७।३६८ सूत्रसे अच्छीतरह बांधदे व पञ्चरत्न उसी के सङ्ग धरदे सब अन्न उसके आगे भोजनकेलिये देकर मन्त्रों

से पवित्रकर ब्राह्मणको देदे ३६९ व देनेके समय यह मंत्र पढ़े कि-

दो० अन्नहोय बहु तुरत मम पानहेतु रस सात ॥
द्विजअर्पिततिलधेनुमम करुकामनाप्रसात ३७०

व ब्राह्मण फिर लेनेके समय यह मन्त्र पढ़े कि-

दो० मैं कुटुम्बके अर्थत्वहिं ग्रहण करतहों देवि ॥
दे यजमानहिं काम सब नमनकरत सुरसेवि ३७१

हे नृपसत्तम! इस विधिसे दीहुई तिलधेनु सब कामोंको देती है इससे कुछभी सन्देह नहीं है ३७२ इसीप्रकार कुम्भको धेनुकल्पित करके अन्य सब तिलधेनुके समान बनाकर जलधेनुविधानसे ब्राह्मण को दीजाती है तो तुरन्त सब कामों को देती है ३७३ जो धेनु इस प्रकारसे नहीं दीजाती कोई अङ्ग पूर्ण होनेसे रहजाताहै तो वह सावित्रीके समान सब ऐश्वर्य्योंसे भ्रष्टकरके दाताको नरकों में गिराती है ३७४ इसीप्रकार जो विचक्षणलोग घृतधेनु देते हैं उनके सब कामों को सिद्धकरती हैं व कांतिको बढ़ाती है ३७५ व हे राजन्! इसीप्रकारसे जो कार्त्तिकमास में रसधेनु दीजाती है वह सब कामों को नित्य देती रहती है व अन्तकालमें सुन्दरगति देती है ३७६ इसरीति से संक्षेपतः व विस्तार सहित भी तुमसे हमने सब कहा अब लोककर्त्ता ब्रह्माजी के कहेहुये एक अन्य फलको कहते हैं ३७७ हे राजसत्तम! जो तृष्णा व क्षुधासे पीड़ित होताहो कार्त्तिक मासमें इस पर्व्वतपर आवे ३७८ व रत्नों ओषधियों से सब प्राणी बना कर ब्रह्माण्ड बनावे उसे देवता दानव यक्षों से युक्तकरे ३७९ इस प्रकार सब बीज रसादिकों से युक्त करके लालरङ्ग के सूर्य्य से भी युक्त करे फिर कार्त्तिककी शुक्ला द्वादशीको ३८० अथवा कार्त्तिकही की पूर्णमासी को अन्य किसी मासमें नहीं भक्तिमान् मनुष्य अपने गुरु वा पुरोहितको देदेवे ३८१ जिसने यह ब्रह्माण्डदान किया हे राजन्! उसने ब्रह्माण्ड के भीतर जितने प्राणी हैं उन सबोंका दान करदिया यह तुमसे संक्षेपसे हमने वर्णन किया ३८२ हे राजन्! जो उत्तम दक्षिणाओं से समाप्त बहुतसे यज्ञ करताहै उसको चाहिये कि यह ब्रह्माण्डदानयज्ञ विशेषरीति से करे ३८३ क्योंकि जिसने सब

ब्रह्माण्ड का दान किया उसको फिर क्या जप दान करना व यज्ञ करना बाकीरहा उसने सब कुछ दिया किया व पढ़ा ३८४ राजा अपने पुरोहितसे बोला कि हे विप्र! ब्रह्माण्डदान का विधान हमसेकहो जिसके करने से हममोक्षपावें कालदेश व तीर्थ यह सब कहो ३८५ कि जिसके करने से हमफलके भागीहोवें व इस कुत्सित भावसे शीघ्र हमारी मुक्तिहो ३८६ वसिष्ठजी राजा श्वेतसे बोले कि हे राजन्! उस राजाके पुरोहित उस ब्राह्मणने ऐसासुनकर राजासे सब धातुओं से युक्त सुवर्णका ब्रह्माण्ड बनवाया ३८७ उसपर सहस्रनिष्क सुवर्ण का एक कमल बनवाया उस कमलके ऊपर पद्मराग मणियों से भूषित ब्रह्माजी की मूर्त्ति स्थापित करवाई ३८८ व ब्रह्मा के दोनों ओर सावित्री व गायत्री को स्थापन किया व सब ओर सब ऋषियों और मुनियों को स्थापित कराया और नारदादिक सब उनके पुत्र व इन्द्रादिक सब देवताओंको भी उनके समीप स्थापित कराया ३८९ व ब्रह्माके आगे सब सुवर्ण की मूर्त्तियां बनवाकर स्थापितकीं फिर वराहरूपी भगवान् सनातनकी लक्ष्मीसहित मूर्त्ति ३९० नीलमणि व मरकतमणि की बनवाकर सब भूषणों से भूषित कराया व गोमेद्र मणियोंसे भी उस बुद्धिमान् ने उनकी शोभा कराई ३९१ व चन्द्रमा की शोभा मोतियों से कराई व सूर्य्य की शोभा हीरोंसेरचाई व अन्य सब ग्रहोंको सुवर्णही के भूषण पहिनाकर शोभितकिया ३९२ व निपुण थवई व शंखोंको बुलवाकर सुवर्ण से सतगुनी चांदी लगवाई व चांदी से सतगुना तांबा व तांबे से सतगुना कांस्य मिलाया व कांस्य से सातगुना रांगा व रांगेसे सातगुना सीसा व सीसे से सातगुना लोहा ३९३। ३९४ सातद्वीप व सात समुद्र और सात कुलपर्व्वत इस एक दूसरी से सातगुनी संख्यासे बनवाये ३९५ वृक्ष और सब प्राणी चांदीही के बनवाये व वनके जीव सब सुवर्णकेही निर्म्माण कराये ३९६ छोटे वृक्ष व वनस्पति तृणपर्ण व झाड़ें आदि सब इसरीतिसे बनवाकर तीर्थमें उस विचक्षणने दिवाया ३९७ व अन्य किसीको जब यह दान करनाहो तो उसे भी चाहिये कि कुरुक्षेत्र गया प्रयाग अमरकण्टक द्वारका प्रभास हरिद्वार पुष्कर ३९८ इन तीर्थों में चन्द्रमा

सूर्य्य के ग्रहणों में दे जिस दिनमें कोई छिद्रहो किसी तिथिकी हानि हो दक्षिणायन व उत्तरायण की संक्रान्ति हो ३९९ व्यतीपात योग में बहुत गुण अधिक पुण्य उससे भी अधिक तुला व मीनकी संक्रान्ति के दिन दानसे पुण्यहोती है हे राजेन्द्र! इन समयों में यह देना चाहिये बस कुछ अन्य विचार न करना चाहिये ४०० एक अग्निहोत्रीकी मूर्त्तिभी सुवर्णकी बनवावे जो कि अच्छी प्रकाशित व गुणों से युक्तहो व उसकी पत्नी भी बनवाकर अच्छे प्रकार पूजित करके भूषण पहिनाकर ४०१ व अपने पुरोहितकी भी सपत्नीक मूर्त्ति बनवा कर भूषित पूजितकरे व अन्य ब्राह्मणों की मूर्त्तियां भी बनावे व बहुत नहीं तो अपने सपत्नीक पुरोहितको व अन्य सपत्नीक चौबीस ब्राह्मणों को निमन्त्रितकरे ४०२ इन सबोंको अँगूठी कुण्डल आदि भूषणदे ऐसे इनलोगोंकी पूजाकरके उनके आगे बैठकर ४०३ अष्टाङ्ग झुकाकर वारंवार प्रणामकरे व पुरोहितके आगे हाथजोड़े ४०४ व कहे कि ये ब्राह्मण जिस २ पदार्थकी इच्छा करतेहों पूँछो कि दिये जायँ व फिर आपभी पूँछे कि आप लोग प्रसन्न तो हैं न क्योंकि तुम्हारी प्रसन्नताहीसे हम पवित्रहोते हैं ४०५ व आपलोगोंकी प्रीति योग से ब्रह्माजी प्रसन्नहोते हैं व ब्रह्माण्डदान देने से जनार्दन भगवान् सन्तुष्टहोते हैं ४०६ महादेव भगवान् व देवताओं के राजा इन्द्रभी सन्तुष्टहोते हैं इससे ये सब ब्राह्मणों के आवाहन से हमारे यज्ञमें आवें यह यजमान प्रार्थनाकरे ४०७ व वेद के पारगामी ब्राह्मणों की ऐसी स्तुतिकरके राजा ब्रह्माण्ड अपने गुरुको देदे बस हे राजन्! इस विधानसे वह राजा ब्रह्माण्डदान देकर सब कामों से तृप्तहोकर स्वर्गको चलागया व उस राजा के गुरु ने वह सब ब्रह्माण्ड सब ब्राह्मणों के साथ बांटलिया औरोंकी दक्षिणामें आपने भाग लेलिया व अपने ब्रह्माण्ड में औरोंका भागलगादिया क्योंकि ब्रह्माण्डदान और भूमिदान एकको न लेलेना चाहिये इससे जो अकेला लेताहै उसमें अन्यको नहींदेता वह ब्रह्महत्याको पाताहै इससे सबके सामने लेकर कहदे कि यह इतने का दानहै फिर सबको बांट दे ४०८ । ४११ व जो कोई ब्रह्माण्डदान देतेहुये को देखते हैं वेभी

पवित्रहोजाते हैं इसके दर्शनसे भी मुक्तहोजाते हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है ४१२ व ज्येष्ठमास के शुक्लपक्षकी भीमद्वादशी के उत्सव का परिणाम जो देखता है उसको भी बड़े यज्ञोंकी क्रियाका फलहोता है ४१३ विना यत्नही के जिस लोकको व्रतकाकर्त्ता जाता है उसीको देखनेवाला भी जाताहै व हे राजन् ! जो मन्त्र आगे कहते हैं उससे सदा गौओं के प्रणाम करना चाहिये ४१४ ॥

दो० सौरभेयि श्रीमतिगऊ ब्रह्मसुता अरु पूत ॥
तुम्हरेकरतप्रणाम हम जनिदिखाउयमदूत ४१५

इस मन्त्रके स्मरणमात्र से गोदान करने का फलहोता है इससे तुमभी हे राजेन्द्र ! पुष्कर उत्तमतीर्थ में ४१६ उसमें भी कार्त्तिकी पूर्णमासी में विशेषकरके गोदान करो क्योंकि चाहे स्त्रीहो वा पुरुष हो जो कुछ पापकरता है ४१७ पुष्कर में स्नानमात्र से वह सब नष्ट होजाताहै क्योंकि हे भारत ! समुद्रपर्य्यन्त पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं ४१८ वे सब कार्त्तिकी में पुष्करमें विशेषकरके आते हैं ४१९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेब्रह्माण्डदान नामचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

इतनी कथा सुनकर भीष्मजी ने पुलस्त्यजी से पूँछा कि आपने पुराणकी आश्रय से युक्त सब हम से कहा व जिसप्रकार से राजा श्वेतने अपने गुरुको ब्रह्माण्डदान दिया १ पर इसमें इस वृत्तान्तको सुनकर हमको बड़ा आश्चर्य्य हुआ जो कि मारेभूखके राजा श्वेतने हड्डियां चाटीं व विना अन्नदान कियेहुये इतनी क्षुधा उनको लगी २ सो हम यह सुना चाहते हैं जो राजालोग पृथ्वी पर हुये हैं सब अन्नदानहीसे स्वर्गको गये हैं क्योंकि सबोंने यज्ञकिये हैं और सब यज्ञोंका मूल अन्नही है ३ फिर उस महात्मा राजा श्वेतकी मति कैसे नष्टहोगई जो कि उसने अन्नदान न किया और ऋषियोंने भी उसे यह बात न दिखाई ४ जिस अन्नका ऐसा अद्भुत माहात्म्यहै कि दान तो इसलोकमें दिया जाताहै और परलोक में जाकर उसका फल

भोगने को मिलताहै व अक्षय स्वर्गवास भी मिलताहै ५ ब्राह्मण लोग सदा यही कहा करते हैं कि अन्नदान सब दानों से श्रेष्ठहै इसी से अन्नदान करनेहीसे इन्द्र तीनोंलोक के भोगोंको भोगते हैं ६ व सब द्विजोत्तमलोग उनको शतक्रतु कहते हैं व इसी अन्नदानही से फिर राजसत्तम श्वेतभी ७ स्वर्गकोगये यह सब हमने आपसे सुना इस विषयका और भी जो कोई इतिहासहो तो ८ हे महामते ! फिर भी हम सुनाचाहते हैं आप कहिये तब पुलस्त्यजी बोले कि हे राजन् ! यह कथानक पूर्वकाल में महात्मा अगस्त्यमुनिने ९ श्रीरामचन्द्रजी से कहा है वह हम तुमसे कहेंगे यह सुन भीष्मजी ने फिर पूंछा कि ये राजसत्तम श्रीरामचन्द्र किस वंशमें उत्पन्नहुये १० जिन से कि अगस्त्य ने पुराना इतिहास कहा तब पुलस्त्यमुनि बोले कि ये महाबली श्रीरामचन्द्रजी रघुवंश में उत्पन्न हुये थे ११ जिन्हों ने बड़ाभारी देवकार्य्य किया कि लंकामें जाकर रावण को मारडाला जब आकर लङ्कासे पृथिवीका राज्य करनेलगे तो उनके यहां ऋषि लोग आये १२ व वे महात्मालोग श्रीराघवेन्द्र के मन्दिर में पहुँचे उनमें अगस्त्यजी भी थे उनके कहने से द्वारपालने बड़ी शीघ्रतासे १३ जाकर पूर्णचन्द्रमा के समान उदयहुए रामजी को देखकर ऋषियों का आगमन जनाया १४ कि हे महाराज कौसल्यानन्दन ! आपका कल्याणहो आजकी रात्रिका प्रभात बहुत अच्छाहै क्योंकि आज आपका अलभ्य अभ्युदय प्राप्त हुआ है क्योंकि हे रघुनन्दनजी ! सब मुनियों समेत अगस्त्यमुनि द्वारपर आये हैं उन सूर्य्यसमान प्रकाशित मुनियोंको आयेहुये सुनकर श्रीरामचन्द्रजी द्वारपाल से बोले कि अतिवेग मुनियों को सुखपूर्व्वक यहां लिवाला तू ने द्वार पर मुनिसत्तमों को कैसे रोक रक्खा है १५।१।१७ रामचन्द्रजी की आज्ञासे उसने झट मुनियों का प्रवेश कराया उन मुनियों को आये हुये देखकर हाथजोड़कर प्रणाम करके बोले व प्रणतहोकर सबोंको आसनोंपर बैठाया जब सब मुनिलोग सुवर्ण की झालरेंलगेहुये व बीच २ में सुवर्णही के बेलबूटों से चित्रविचित्र कुशासनों पर सुख पूर्व्वक बैठगये तब उनके पुरोहित वसिष्ठजीने सब मुनियों को पाद्य

आचमनीय व अर्घ्य दिया १८ । २० व श्रीरामचन्द्रजी ने सब ऋषियों की कुशल पूँछी तब वेदवेत्ता महर्षिलोग यह वचन बोले कि हे रघुनन्दन ! आपकी कुशल है व सर्व्वत्र कुशल बनीरहै बस अब आपको कुशली देखकर हमलोग कुशलीहुये और हम लोगों के शत्रुको आपने मारडाला इससे आनन्दित होकर हमलोग जायँ-गे २१ । २२ हे रघुनन्दन ! दुष्टात्मा रावण आपकी पत्नीको हरले-गयाथा उन्हीं आपकी पत्नी के पराक्रमसे मृतकहुआ २३ व हे राम ! विना किसीकी सहायता के अकेले आपने उस दुष्टको मारा जैसा कर्म्म आपने किया है उसको करनेवाला अन्य कोई नहीं है २४ सो आपसे सम्भाषण करनेकेलिये यहां हमलोग आये थे अब आपके दर्शनसे पवित्रहुये हे राजेन्द्र ! आपके दर्शन से सब तपस्वी लोग पवित्रहोकर कृतार्थहुये २५ रावण के वधसे आपने हम लोगों के आँसु पोंछे व हे वीर ! इस जगत्में आपने पुण्य अभयदक्षिणा हम लोगोंको दिया २६ हे अमितविक्रम राघव ! बड़ेभाग्यकी वार्त्ता है कि आप बढ़ते हैं अब आपको देखा और सम्भाषण किया अपने आ-श्रमोंपर जातेहैं २७ जब आप वनमें पैठे थे तब हमने एक इन्द्रधन्वा दिया था व अक्षयबाण दो तरकस व एक कवच अर्पण कियाथा २८ फिर भी कभी हमारे आश्रमपर आपको आनाचाहिये ऐसा कहकर वे मुनिलोग अन्तर्द्धानहुये २९ सब मुख्यमुनियों के चले जानेपर धर्म्मधारियों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी चिन्तना करनेलगे कि हमको फिर भी एकबार सबोंके आश्रमपर नहीं तो अगस्त्यजी के आश्रम पर अवश्य जानाचाहिये क्योंकि उनसे हमने प्रतिज्ञाकी है कि तु-म्हारे आश्रमपर फिर आवेंगे क्योंकि उन्होंने कहा है कि हे रघुन-न्दन ! फिर भी हमारे आश्रमपर आना इससे अगस्त्यजी के समीप हमको अवश्यही जानाचाहिये ३० । ३१ व जो अन्य कोई देव कार्य्य गुप्त वे कहेंगे वह सुनना चाहिये इसप्रकार अमित तेजस्वी रामचन्द्रजी के चिन्ता करतेही करते ३२ कि हम परम धर्म्मकर्म्म करेंगे क्योंकि धर्म्महीं परमगतिहै दशसहस्र वर्षतक उन्होंने राज्य किया ३३ व दान देते २ व यज्ञ करतेही करते सहस्रों वर्ष एक

वर्ष के समान बीतगये व इसप्रकार धर्म्म से महात्मा रामचन्द्रजी प्रजाओंका पालन कररहे थे ३४ कि एकदिन उसी राज्य में रहने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण अपना मृतकपुत्र लेकर राजद्वारपर आया ३५ व बड़ी अमङ्गल रूखीबातें मारे अपने पुत्रके स्नेहके कहनेलगा कि नहीं जानता कि हे पुत्र! मैंने पूर्व्वजन्ममें कौनसा पाप किया ३६ जो तुझ पाँचवर्ष के विना युवावस्थाही पायेहुये अकेले पुत्रको मरा हुआ देखताहूं ३७ अकाल में काल प्राप्तहोना मेरे दुःखके लिये है तू पिताके कार्य्योंको विना कियेहुयेही यमराज के स्थान को चला-गया ३८ तू राजा रामचन्द्रही के पाप से अकाल में मृतक हुआ क्योंकि बालहत्या ब्रह्महत्या व स्त्रीहत्या ये सब रामचन्द्रहीमें हैं ३९ क्योंकि हे पुत्र! तू मेरे एकही पुत्रथा सो उसे अब मरनेपर फिर मैं नहीं देखता अब मैं स्त्रीसहित मृतक होताहूँ ये उस ब्राह्मण के सब दुःख शोकयुक्त वचन श्रीराघवजी ने अपने कानों से सुने ४० उस ब्राह्मण को रोककर वसिष्ठजी से श्रीरामचन्द्रजी बोले कि ऐसे वि-षयमें अब हमको कौनसा कार्य्य करनाचाहिये ४१ अब कितो हम अपने प्राणही अग्नि में हुनदेंगे कितो पर्व्वतपरसेही गिरपड़ेंगे अब इस ब्राह्मणका वचन सुनकर हमारी शुद्धता कैसे हो ४२ जब इसप्रकार दीनहोकर महाराज ने वसिष्ठजी से कहा तो उसी समय में नारदमुनि आगये वे सब ऋषियों के समीप सभामें बैठकर यह वचन बोले ४३ कि हे रामचन्द्रजी! सुनो जिस प्रकार यह काल बीतताचलाजाता है प्रथम जब सत्ययुग था तो सब कुछ ब्राह्मणों के आश्रितथा ४४ कोई ब्राह्मण ऐसा नहीं दिखाई देताथा जो कि तपस्वी न हो इसी से सबलोग अकालमें नहीं मरते थे व सब चिर-जीवी होते थे ४५ फिर त्रेतायुगमें ब्राह्मण क्षत्रिय दोनों अत्युत्तम होने लगे तब अधर्म्म वैश्यों व शूद्रों में रहने लगा ४६ व इसी बीच में कुछ असत्य बोलना भी होचला अधर्म्म के कारण धर्म्म के एकपादमें अधर्म्म आगया ४७ तब ब्राह्मणादि चारोंवर्ण अ-त्यन्त भयभीत हुये तब फिर धर्म्मका दूसरा चरण पूर्ण होआया ४८ व इतनेमें त्रेतायुग बीता द्वापरलगा तब हे नृपोत्तम! अधर्म्म

व असत्य ये दोनों बढ़नेलगे व उस द्वापर युग में तपस्या करना वैश्यों में जारहा व वे लोग केवल जप यज्ञ करते थे इससे जपही में धर्म्म रहताथा परन्तु शूद्र तप नहीं करनेपाताथा ४९ क्योंकि शूद्र को तपकरनेका अधिकार कलियुगही में होताहै परन्तु अब आज-कल इस त्रेतायुग में आपकेही राज्य में बड़ी उग्रतर तपस्या ५० । ५१ एक दुर्ब्बुद्धि शूद्र कर रहाहै इससे यह बालक मृतक होगया है क्योंकि जो कोई दुर्मति मनुष्य अधर्म्म वा अकार्य्य राजाके राज्य में करताहै ५२ हे राजशार्दूल ! वह शीघ्रही प्रलयपर्यन्त के लिये न-रक को जाताहै ५३ और उस पापका चौथाई भाग राजाको होताहै इसलिये आप इस विषयमें यत्नकरें व जाकर इस दुष्कृतको देखें इस प्रकारसे आपके धर्मकी वृद्धि और बलकी भी बढ़ती होगी ५४।५५ और यह बालक जीजावेगा यहसुनकर रामचन्द्रजी आश्चर्यसमेत अतुल आनन्दको पाकर लक्ष्मण से बोले कि तुम जाकर उस ब्राह्मण को समझाओ ५६।५७ व उसके बालकका शरीर तेलकी कुप्पीमें भर करधरदेओ उसमें नानाप्रकार के सुगन्धित कर्प्पूरादि पदार्थ व अतर फुलेलआदि सुगन्धित तैल भरदेओ ५८ जिससे हे सौम्य ! उस बालक का शरीर सड़कर बिगड़ न जावे ऐसा उपायकरो जिससे सहजकर्म करनेवाले इस बालकका शरीर रक्षितरहै वही यत्नकरो ५९ उसकी विपत्ति व परिभेद जैसे न हो वैसाकरो इसप्रकार शुभलक्षण वाले लक्ष्मणजीको आज्ञादेकर ६० मनसे पुष्पकविमानका ध्यान करके कहा कि हे महायशवाले ! शीघ्र आजाओ श्रीराघवजी के मनकी बातको जानकर वह यथेच्छचारी सुवर्णसेभूषित पुष्पकविमान ६१ एक मुहूर्त्तभरमें श्रीराघवजीके समीप आगया व हाथजोड़कर बोला कि हे राघव नराधिप ! मैं आगया ६२ हे महाबाहो ! जो आपका किङ्करथा वही मैं आपकेआगे उपस्थितहुआ ऐसा रुचिर पुष्पक का वचन सुनकर महाराजाधिराज ६३ सब सभासद ऋषियों के प्रणाम करके उस विमानपर आरूढ़हुये धन्वा बाण व खड्ग हाथमें ले लियाथा ६४ व लक्ष्मण और भरतको नगर राज्यकी रक्षाकरने को नियत करदियाथा प्रथम अयोध्याजी से पश्चिम दिशामें उस शूद्र

तपस्वीको एकाग्रचित्तहोकर ढूँढ़ा ६५ फिर हिमावान्पर्व्वतपर बसी हुई उत्तरदिशाको गये फिर महाराज दर्पण समान निर्म्मल पूर्व्व-दिशाको गये व उसे शुद्ध समाचार से युक्त उन्होंने देखा फिर श्री रघुनन्दनजी दक्षिण दिशाको गये ६६ । ६७ एक पर्व्वत के उत्तर ओर समीपही बड़ा सुन्दर व बड़ाभारी एक तड़ाग उन्हों ने देखा उसके तीर तपकरतेहुये एक तपस्वी को भी देखा जो कि एक वृक्ष की शाखा में नीचे को मुख किये हुये लटका था उस तप करते हुये तपस्वी के समीप जाकर ६८ । ६९ श्रीराघवेन्द्रजी बोले कि हे अमरप्रभा ! तुम धन्यहो यह तपकी वृद्धि किसयोनिमें दृढ़निश्च-यकरके कीजाती है ७० हम दशरथजी के पुत्र रामचन्द्र हैं तुमसे कौतूहलके साथ पूँछते हैं इस तपसे तुमने कौनसा अर्थ विचाराहै स्वर्गलोकही चाहतेहो वा अन्य कुछ ७१ अथवा अन्य किसीके लिये तपकरतेहो हे तापस ! हमारे सुननेकी इच्छाहै इससे कहो तुम्हारा कल्याणहो ब्राह्मणहो वा दुर्ज्जय क्षत्रियहो ७२ अथवा तीसरेवर्ण वैश्यहो वा शूद्रहो सत्यही कहो क्योंकि स्वर्गलोक पानेके लिये सत्यबोलना भी तपहै ७३ वह सात्त्विक राजस व तामसके भेद से सत्यात्मक तप भी तीन प्रकारका होताहै जगत् के उदयकेलिये ब्रह्मा जीने जो सत्यात्मक तप उत्पन्नकियाहै वह सात्त्विकहै जिसे ब्राह्मण लोग करते हैं ७४ व रौद्रतप क्षत्रियों के तेजकेलिये उत्पन्न कियाहै वह राजस कहाताहै व जो दूसरेको नष्ट भ्रष्ट करनेके लिये तपहोता है वह आसुर तामसहै ७५ जो अङ्गोंको जलाकर अङ्गार करताहै व अङ्गोंको रुधिरमें बोरता है अथवा पञ्चाग्नि तापताहै कितो सिद्धि ही को पाताहै कितो मृतकही होजाताहै ७६ सो वही तुम्हारा आ-सुरी भावहै हम जानते हैं कि तुम कोई द्विजोत्तम नहीं हो सत्य क-हतेहुये तुम्हारी सिद्धिहोगी व मिथ्या कहनेसे प्राणजायँगे ७७ सर-लतासेही सत्कर्म्म करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुनकर वैसेही नीचेकोही शिर कियेहुये वह बोला कि ७८ हे नृपश्रेष्ठ ! आप अच्छीतरह से तो आये बहुतदिनों के पीछे दिखाई दिये हे राघव ! हे पापरहित ! मैं तुम्हारा पुत्र भूतहूँ व तुम मेरे पितृभूतहो ७९

अथवा हमारेही नहीं तुम तो सबके पिताहो क्योंकि राजा सब का पिताही होताहै इससे तुम पूजाकरनेके योग्यहो क्योंकि तुम्हारे राज्यमें मैं तप करताहूँ उसमें आपका भी भागहै क्योंकि ब्रह्माने पूर्वकालमें जब तप बनायाहै कहदियाहै जिसके राज्यमें कियाजायगा छठा अंश उसको मिलेगा हे राम! इससे हम तपस्वीलोग धन्यनहीं हैं आपही लोग धन्यहैं जिनको विना कियेहुयेही तपकाफल मिलताहै ८०।८१ व इसके विशेष आप इस बात से धन्यहैं कि आपके राज्य में तपस्वी लोग निर्विघ्न तपकरते हैं इससे हे राघव! तुम मेरे तप से सिद्धि को पाओ ८२ व जो आपने कहाथा कि यह तप किसयोनि में होता है सो मैं शूद्रयोनि में उत्पन्नहोकर इस उग्रतपको करताहूँ ८३ व हे राम! मैं चाहताहूँ कि इसी शरीर से जाकर देवता होजाऊँ हे राजन्! मैं मिथ्या नहीं कहता केवल देवलोक के पानेही की इच्छा से करताहूं ८४ हे काकुत्स्थ! मुझको शम्बूक नाम शूद्र आप जानें ऐसा उसके कहतेही श्रीरामचन्द्रजी ने चमकताहुआ खड्ग निकाला ८५ व मियान से बाहरकरके उसका शिरकाटडाला उस शूद्रके मारजाने पर इन्द्र अग्निआदि सब देवोंने ८६ साधु२ कहकर बार२ श्रीरामचन्द्रजी की प्रशंसाकी व देवताओं की कीहुई सुगन्धित पुष्पों की वर्षा ८७ आकाश से वायुकी प्रेरणा से राघवजीके ऊपर हुई व अतिप्रसन्न होकर देवगण वाक्य जाननेवालों में श्रेष्ठ श्रीराघवजी से बोले कि ८८ हे महाव्रत रघुनन्दन ! आपने यह देवताओं का कार्य्य किया इससे हे राम! जो आप चाहतेहो वह वर ग्रहणकरें ८९ व आपके हाथोंसे मरणपाकर यह शूद्र शरीरसहित देखिये स्वर्गको चलागया देवताओं का वचन सुनकर एकाग्रचित्त होकर श्री राघवजी ९० हाथ जोड़कर सहस्रनेत्रवाले इन्द्रसे बोले कि हे देवगण! जो हमारे ऊपर प्रसन्नहो व हम वरपानेके योग्यहो ९१ व जो हमारे कर्म्म से तृप्तहुयेहोओ तो वह ब्राह्मण का पुत्र जिये बस आप लोगों से यही वर हम चाहते हैं ९२ क्योंकि ॥

चौ० मम अपराध विप्रकर बालक । होतो एक जासुकुलपालक ॥
सो अकालमहँ मरयहु विचारा । यमपुर गयहु यहांसे न्यारा ९३

आप जियावहिं तेहिकरिदाया । तुम कल्याण होय मन भाया ॥
जो मम गुरु कह राघव तेरो । पुत्र जियै हैं मृषा न टेरो ९४
यह बालक मम दोष मरेऊ । अब ममपौरुष जियै सदेऊ ॥
यह वरदान कोटिवर सम है । और न चहत कछू ममसब है ९५
सुनि राघवकर वाक्य विशाला । सब सुरसत्तम भये निहाला ॥
ह्वै प्रसन्न बोले श्रीरामहि । सबप्रकार पूरण सबकामहि ९६
महाराज अब निजपुर जाहू । ब्राह्मण को भो निज सुतलाहू ॥
तासु पिता त्यहि पायहु जीवत । बन्धुसहित मातहुँ सुखपीवत ९७
ज्यहि मुहूर्त्त महँ शूद्रहि मारा । तुम रघुनन्दनसहित विचारा ॥
रुचिर तेज जैसे असिकाढ़ा । खींचिकोशसों अतिरिसबाढ़ा ॥
तैस्यहि वहां विप्रकर बालक । सोवत सो उठिबैठ कृपालक ॥
प्राणसहित ह्वैकै न सँदेहू । अबतिन पुनिपायहु निजदेहू ९८
यह सुनि ह्वै प्रसन्न रघुराजा । सुरन कहा तुम जाहु सुसाजा ॥
हम अगस्त्य आश्रमपर जाई । देखब जाय विप्र समुदाई ९९
इमिकहि देवनसों रघुनन्दन । विगत विषाद मुदितजगवन्दन ॥
हेमविभूषित पुष्पक याना । चढ़चो तबै श्रीकृपानिधाना १००

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेशूद्रतापस
वधोनामपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

दो० छत्तिसयें कुम्भज दयो रामहिं अभरण एक ॥
लीन नहीं रघुराज तब भाष्यो दान विवेक १
श्वेतभूप वन स्वर्गगति अरु निजअभरणप्राप्ति ॥
भाषी घटभव मुनि करी पुनि यह कथा समाप्ति २

पुलस्त्यमुनि भीष्मजी से बोले कि तदनन्तर नानाप्रकारके वि-
मानोंपर चढ़ेहुये देवगण चलेगये व श्रीरामचन्द्रजी भी अगस्त्यजी
के तपोवनको गये १ व यह विचारते जातेथे कि जब अगस्त्यजी
हमारे देखनेके लिये पूर्व्वसमय में हमारी सभाको गयेथे तब हमसे
कहाथा कि आप कभी फिर हमारे स्थानपर आवें २ सो अब हम

देवताओं से पूँछकर उनकी अनुमति से देव दानवों से पूजित उन महामुनि के दर्शन करेंगे ३ व वे मुनिसत्तम हमको कुछ उत्तम उपदेश करेंगे जिससे कि हम इस मर्त्यलोकमें कभी फिर दुःखी न होंगे ४ पिता तो हमारे दशरथजी व माता कौसल्याजी व वैसेही परम उत्तम सूर्य्यवंशमें उत्पन्न हुये तथापि ऐसे अत्यन्त दुःखी रहतेहैं ५ कि राज्य पानेके समय में भार्य्या बन्धुसमेत वनमें वासहुआ व फिर रावण हमारी भार्य्याको हरलेगया ६ तब विना किसीकी सहायता केही उत्तम समुद्र में सेतुबांधकर सागरके पार जाकर लङ्कापुरी में कुलसहित रावण का नाश किया ७ व देखके जानकी को हमने त्यागदिया तब सब देवताओंने वहां आकर ऐसी शुद्धता सीता की कही जिससे हम फिर ग्रहण करके अपने गृहको लाये ८ इसप्रकार लाये व बड़ी प्रीतिसे गृहमें रखतेथे पर एक नीचके वचन से लोकापवादके भयसे सीताको फिर विसर्ज्जन किया अब वह देवी पतिव्रता वनमें बसती है व हम पुरमें बसते हैं ९ व हम उत्तम वंशमें उत्पन्न हुये और धनुर्द्धरों में उत्तम हैं ऐसेही उत्तम दुःखसे युक्तभी हैं कि जिसका अन्तही नहींहै इसपर भी हृदय नहीं फटजाता १० हमको बनानेवाले ब्रह्माने निश्चय है कि वज्रकेसार केभी सारसे बनाया है अब इस समय उस ब्राह्मण के लिये पृथ्वीपर घूमतेथे ११ कि इतने में वह पापीशूद्र मिला जिसे मारडाला व देवताओं के वाक्य से फिर भी हमारे प्राणरहगये १२ अब जगत्के हितमें रत व सबसे वन्दित अगस्त्यमुनिको देखेंगे व उनके दर्शन करतेही तुरन्त हमारा दुःख नष्ट होजायगा १३ जैसे कि सूर्य्य के उदय से शीत नष्ट होजाता है वैसेही सब प्रकार से हमारे दुःखकी प्राप्ति नष्ट होजायगी १४ यहां रामचन्द्रजी पुष्पकपर चढ़ेहुये विचार करते निकट पहुँचेथे कि देवगण अगस्त्यजीके आश्रमपर प्रथम पहुँचगये थे उनको पहुँचे हुये देखकर भगवान् अगस्त्य ऋषिने सबको समान अर्घ्य दिया १५ वे देवगणभी पूजा ग्रहणकरके व महामुनि से वार्त्ताकरके हर्षितहो अपने अनुचरों समेत स्वर्गको चलेगये १६ उन सबोंके चलेजाने पर श्रीरामचन्द्रजी पुष्पकविमान परसे उतर

कर ऋषिसत्तम अगस्त्यजीके प्रणाम करनेको गये १७ व श्रीरा-
घवजी बोले कि हम राजादशरथजी के पुत्र हैं व आपकेअभिवादन
करनेको आयेहैं इससे हे मुनिश्रेष्ठ! सौम्यदृष्टिसे देखिये १८ क्योंकि
जैसे आप हमारी ओर देखेंगे वैसेही हमारे पाप धोजायँगे इस में
कुछभी सन्देह नहीं है ऐसा कहकर व मुनिके बार २ प्रणाम करके
श्रीराघवजीने १९ मुनिके शिष्योंकी कुशलपूँछी व मृगोंकी और उन
के पुत्रकी व फिर कहा कि हे भगवन्! इससमय हम शूद्रको मारेहुये
यहां आपके दर्शनकी इच्छासे आये हैं २० अगस्त्यजी बोले कि
हे रघुश्रेष्ठ! आपका आगमन अच्छीतरह तो हुआ हे जगद्वन्द्य! हे
सनातन! हे काकुत्स्थ! आपके दर्शनसे मुनियोंसहित हम पवित्रहुये
२१ हे महाद्युते! हे रघुशार्दूल! तुम्हारे लिये यह अर्घ्य है ग्रहणकी-
जिये हे नरशार्दूल! हे शत्रुओंके मारनेवाले! अहो भाग्यहै कि आप
यहां अच्छे प्रकार से आये २२ आप बहुत उत्तम गुणोंके कारण
नित्य बहुत माननेके योग्यहैं व हमारे इससमय अतिथि व पूजनी-
य हैं व मनमें तो सदा स्थितरहते हैं २३ देवताओंने पहिलेही हम
से कहाथा कि आप शूद्रको मारेहुये आते हैं सो कुछ अपने प्रयो-
जनके लिये उसे नहीं मारा किन्तु ब्राह्मणके अर्थ मारकर उसके पुत्र
को जियाया है २४ हे भगवन् राघव! आइये हमारे इसी आसन
पर हमारे साथ विराजिये व हे महामते! प्रभात समय इसी पुष्पक
पर आरूढ़होकर अयोध्याजीको चलेजाइयेगा २५ हे सौम्य! विश्व-
कर्म्मा के बनायेहुये इस दिव्य भूषणको अपने दिव्य शरीरही से दी-
प्यमान २६ ग्रहणकरें हे राघव! इतना आप हमारा प्रियकरें क्योंकि
कोई वस्तु कहीं पावे व फिर उसे दान करदेनेसे महाफल होताहै २७
आप इन्द्रादिक देवताओंकी रक्षा करने में समर्थ हैं इससे हम यह
देते हैं हे नरश्रेष्ठ! इसे विधिपूर्व्वक ग्रहणकरो २८ तब इक्ष्वाकु वंश-
वालों के महारथ महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी सब धर्म्मोंको स्मरण क-
रतेहुये हाथजोड़कर मुनिश्रेष्ठ अगस्त्यजीसे बोले कि २९ हे ब्रह्मन्!
तुमसे हम प्रतिग्रह कैसेलें क्योंकि दानलेना तो तुमलोगों को भी
निन्दितहै फिर क्षत्रियहोकर व धर्म्मशास्त्र को जानतेहुये हम कैसे

ग्रहणकरें ३० उसमें भी ब्राह्मणका दियाहुआ दान कैसे लें सो तुम हमसे कहो न तो हम पुत्रवान् हैं पर गृहस्थहैं उसमेंभी हे महामुने ! समर्थ हैं ३१ व न आपत्काल से दबेहुये हैं फिर प्रतिग्रह कैसेलें भार्य्या हमारी जानों बहुत दिन हुये तबसे नष्ट होगई है व दूसरी और है नहीं ३२ बस दानलेकर केवल दोषभागी होंगे इसमें कुछ संशय नहीं है क्योंकि जब किसी विपत्तिसे ग्रस्तहो तो क्षत्रिय भी दान लेसक्ताहै ३३ ऐसा करनेमें दोषी नहीं होता मनुजीने भी ऐसा कहा है कि जिस क्षत्रिय के माता पिता वृद्धहों व पतिव्रता स्त्री हो पुत्र छोटासा बालकहो ३४ तो सौ अपकार करके उनका भरण पोषण करना चाहिये ऐसी दशाके लिये मनुजी का वचन है इससे हे ब्रह्मन् ! हमारे ऊपर कोई आपत्काल नहीं है तुमसे दानलेना इससे हम नहीं चाहते ३५ हे सुरपूजित ! इस विषय में हमारे ऊपर आप लोगोंको कोप न करना चाहिये ३६ अगस्त्यमुनि बोले कि दान लेने में कुछ दोषनहीं है राजालोग भी लेतेहैं व हे राघव ! आपको दान क्या दोषकरेगा क्योंकि आप तो तीनोंलोकों के तारनेमें समर्थ हैं ३७ व ब्राह्मणोंके तारनेमें भी समर्थ हैं विशेषकरके तपस्वी ब्राह्मणोंकोभी तारसक्ते हैं व आपको सबके पालनकरनेकी आवश्यकता रहती है इससे हम यह आपको देते हैं हे नराधिप ! इसे ग्रहण कीजिये ३८ श्रीरामचन्द्रजी बोले कि क्षत्रिय कैसे दान ले उसमें भी ब्राह्मणका दियाहुआ यदि कहीं ऐसा लेखहो कि किसी क्षत्रिय ने ब्राह्मणके दियेहुये दानको लियाहो तो हमसे कहिये ३९ अगस्त्य जी बोले कि हे रामचन्द्रजी ! सबसे प्रथमवाले सत्ययुग में सब ब्रह्मरूपथा कोई राजा नहीं था प्रजा योंहीं अपने सुख भोगती थी तब सब प्रजा पुराने शतक्रतु ब्रह्माजीके शरण में गई ४० वह सबप्रजा देवदेवेश के समीप राजाके अर्थपहुँची व बोली कि हे देवदेव ! देवताओंके राजा तो इन्द्रहैं ४१ परन्तु हे लोकेश ! हमलोगोंके कल्याण के लिये कोई श्रेष्ठराजा बनादीजिये कि जिसको पूजा देतीहुई प्रजा आनन्दसे पृथ्वीपर बसे ४२ तब ब्रह्माजी ने इन्द्रादि सबलोकपालों को बुलाकर सबोंसे कहा कि तुम सब अपने २ तेजका भाग कुछ२

देखो ४३ तब लोकपालों ने अपने २ तेजों में से चारभागदिये तब ब्रह्माजी प्रथम आप अक्षय हुये व फिर उनसे अक्षय एकराजा उत्पन्न हुआ ४४ उसको ब्रह्माजी ने लोकपालों के अंशों से युक्तकिया बस तबसे वह राजा पीड़ित प्रजाकी रक्षा व उसका योग क्षेम करने लगा ४५ सो इन्द्रके भागसे तो राजा सबको आज्ञा देनेलगा व वरुणके भागसे वह सब प्राणियोंको पुष्ट करता है ४६ व ऐसेही कुबेर के अंशसे राजा सबको धन देताहै व जो यमराजका भाग राजा में आया उससे प्रजाको कुमार्ग्ग चलनेसे दण्डदेता है ४७ इससे हे रघूत्तम! तुम इन्द्रके भागसे राजा हो हमारे तारने के लिये यह आभरण ग्रहणकरो ४८ तब अगस्त्यमुनि के हाथसे श्रीरामचन्द्रजी ने सूर्य्यसमान प्रकाशित दिव्य आभरण ग्रहणकिया ४९ व ग्रहण करके शत्रु वीरोंके नाशक श्रीराघवजी बड़ी देरतक उसे देखकर व बार २ विचार करके देखा ५० तो उस आभरणमें विचित्र अवँरेके फल के समान बड़ी २ मोतियां लगीथीं व सुवर्ण के तारमें गुहीथीं बीच २ में हीरा मूँगा व नीलमणि गुहे थे ५१ व पद्मरागमणि गोमेद वैदूर्य्य व पुष्परागमणियों से अच्छे प्रकार गुहा हुआथा व विश्वकर्म्मा ने अपनी बड़ी युक्ति से उसे बनाया था ५२ उसे देख बड़े प्रसन्न होकर फिर यह सोचने लगे कि ऐसे रत्न तो हमने आजतक कोई नहीं देखे थे ५३ ये तो ऐसी शोभा से युक्त हैं मानों पृथ्वीभरका सब मूल्य इन्हीं में आगया है ऐसे आभरण तो हमने लङ्का में विभीषण के यहां भी नहीं देखे ५४ मन में ऐसा विचार करके श्रीराघवजी उन ऋषिसत्तम अगस्त्यसे उस आभूषण का आगमन पूँछने लगे ५५ कि हे ब्रह्मन्! यह आभरण तो अतिअद्भुत है व राजाओंको अप्राप्य है आपने कैसे पाया व कहांसे पाया व किसने बनाया ५६ हे महामुनि यह बात हम बड़े कौतूहलसे आप से पूँछते हैं जो रत्न हथेलीके बीचमें रखने से केवल हाथहीपर प्रकाशित होताहै ५७ उसे अधम मणि जानना चाहिये क्योंकि वह सब शास्त्रों में निन्दित है व हे मुनिसत्तम! जो एक स्थानपर धरनेसे सब दिशाओं को प्रकाशित करताहै वह मध्यम है ५८ व ऊपर को

ऊँचा होताहै और बड़े ऊंचे स्थानों को प्रकाशित करता है व जिस में तीन शिखा होती हैं वह उत्तम मणि कहाता है ऐसे रत्नों को ऋषियोंने उत्तम जातिके कहाहै ५९ यह बहुतसे आचार्य्योंका मतहै सो ये रत्न ऐसेही हैं जब सब आचार्य्यों के शिरोमणि राघवेन्द्रजी ने ऐसा कहा तो सब ऋषियों में श्रेष्ठ अगस्त्यजी फिर यह वाक्य बोले कि ६० हे रामचन्द्रजी! सुनो यह पूर्व्वकालका वृत्तान्तहै जो सबसे प्रथमवाले त्रेतायुगमें हुआहै व हमने द्वापरयुगके प्रारम्भमें वनमें देखाहै ६१ हे महाबाहु रघुनन्दनजी! वह बड़े आश्चर्य्यका वृत्तान्त सुनो पूर्व्वकालके त्रेतायुगमें बड़ाभारी लम्बा चौड़ा अरण्यथा ६२ वह सब ओरसे चारसौ कोसकाथा पर मृग व्याघ्रादि कोई उसमें नहीं रहतेथे तिस निर्जनवन में हे सौम्य! उत्तम तप करनेके विचार से ६३ हम उस वनमें जापड़े उस वनका मध्यभाग मूलफलों से युक्त था ६४ व नानाप्रकारके कन्दमूल शाकादिकों से व सुन्दर वनों से शोभित था उस वनके बीचमें बीसकोसके फैलावमें ६५ एक तड़ाग था जोकि हंस कारण्डवोंसे भराहुआ व चकई चकवा पक्षियोंसे उपशोभित था वहां एक परमशोभित आश्चर्य्य और हमने देखा ६६ कि कछुओं से भरा व बगुलोंकी पंक्तियों से युक्त जो वह सरथा व उस सरके समीप हमारे तप करनेकी इच्छाहुई ६७ क्योंकि वह स्थान सब हिंसाओंसे रहित होने के कारण बहुत पुण्यदायकथा हे पुरुषश्रेष्ठ! वहां हम ग्रीष्मऋतुकी रात्रि थी निवास कररहे ६८ प्रातःकाल उठकर उस तड़ागकी सब ओर घूमकर देखनेलगे तो एक बड़ा देदीप्यमान मृतकपुरुष वहां पड़ाथा अवस्था उसकी वृद्धताको नहीं पहुँचीथी ६९ वह परमशोभासे युक्त उसी सरके समीपही विराजमानथा हे राघव! उसके लिये हम एक मुहूर्त्त भरतक चिन्ता करतेरहे ७० कि इसके तीरपर कोई प्राणी तो बसताही नहीं फिर विनाप्राणका क्या कोई यह श्रेष्ठ देवताहै वा कोई मुनिहै अथवा कोई राजाहै फिर सोचा कि यहां मुनि वा राजा कहां से आया ७१ अथवा किसी राजाका पुत्र है पर उसका भी यहां होना असम्भवहै कितो यह कल मरहोगा वा रात्रि को वा आज प्रातःकाल ७२ इससे हम

अब अवश्य इस सर की निष्क्रिया जानलें हे रघूत्तम ! जबतक हम ऐसी चिन्ता करतेहुये खड़ेही थे ७३ कि एक मुहूर्त्तही भरमें देखा तो दिव्य अद्भुत दर्शन परमउदार हंसयुक्त मनोवेग एक बिमान आया ७४ व उसके आगे अप्सराओं के सहस्रों विमान छोटे २ विद्यमानथे व बहुतसे गन्धर्व्वों के विमान आये उनपरसे वे लोग उसी मृतक नरश्रेष्ठ की स्तुति करनेलगे ७५ व दिव्य गीत गानेलगे कोई २ बजाने लगे तब उस विमानपर से हमने देखा कि एक दिव्य पुरुष उतरा ७६ व उस तड़ाग में स्नानकरके उसी मृतकशरीर का मांस खानेलगा व उस मोटे मनुष्य को मांससहित खाकर ७७ फिर उस सरमें स्नान करके विमान पर चढ़कर स्वर्गको जानेलगा तब हमने परमशोभा से युक्त देवसमान प्रकाशित ७८ उस पुरुष से कहा कि हे स्वर्गके रहनेवाले महाभाग ! तुमसे हम पूँछते हैं कि यह निन्दितकर्म्म क्यों करते हो व तुम्हारा यह महानिन्दित आहार कैसे हुआ और गति ऐसी उत्तम कैसे हुई ७९ यदि गुप्तरखने के योग्य न हो तो कहिये तुम्हारी यह दशा कैसे हुई सो हम इस विषयमें आपका परमवचन सुना चाहते हैं ८० आप कौन हैं बतावें व आपका ऐसा निन्दित भोजन क्यों है व हे सौम्य! तुम कहां रहते हो इसे क्यों खाते हो ८१ व मृतक होनेपर भी तुम्हारे इस शरीर में ईश्वरका भाव कैसे बनाहै व यह निन्द्य आहार कैसे है हम निश्चय सुनाचाहते हैं ८२ सो हे राम! हमारे वाक्यको सुनकर सज्जनों में श्रेष्ठ वह पुरुष हाथ जोड़कर हम से यह वचन बोला ८३ कि हमारे सुख व दुःख से उत्पन्न हमारा यह वृत्तान्त सुनो काम बड़ा दुरतिक्रान्त होता है हे ब्राह्मणसत्तम ! जो पूँछते हो तो सुनो ८४ आगेका समाचार है कि विदर्भदेशमें महायशस्वी हमारे पिता वासुदेव नाम तीनोंलोकोंमें महाधर्म्मात्माकरके प्रसिद्धथे ८५ हे ब्रह्मन् ! उनके दो स्त्रियों से दो पुत्र उत्पन्न हुये एक श्वेतनाम हम व दूसरा छोटा सुरथनाम हुआ ८६ पिता के मरजाने पर हमारा राज्याभिषेक हुआ वहां पर हम धर्म्ममें एकाग्रहो बड़े न्यायसे राज्य करने लगे ८७ इसप्रकार राज्य करते २ बहुत सहस्रों वर्ष बीतगये व हम राज्य

करते रहे प्रजाओंका पालन यथावस्थित करते रहे ८८ हे द्विजोत्तम! सो हम किसी निमित्तसे वैराग्य से राज्य छोड़कर मरनेके लिये तपोवन में तप करने को चलेआये ८९ सो आते २ हम पशुपक्षिरहित परमरम्य इसी तड़ागके तटपर तप करनेके लिये पहुँचे ९० राज्य पर अपने भाई सुरथको स्थापित करआयेथे इस सरपर दारुणतप किया ९१ व इस महावनमें दशसहस्रवर्ष तपकरके अनामय अपने स्वामी ब्रह्माजी के लोकको प्राप्तहुये ९२ पर हे ब्रह्मन्! जब हम स्वर्गलोकको प्राप्तहुये व कुछ दिनरहे तो हमको इतनी क्षुधा पिपासालगी कि उससे अत्यन्त पीड़ित होगये ९३ तब त्रिभुवनश्रेष्ठ पितामहजीसे हम बोले कि हे भगवन्! यह स्वर्गलोक तो क्षुधा पिपासासे रहितहै ९४ यह किसकर्म्मका फल है जो हमारे यहांभी क्षुधा पिपासा उत्पन्नहुई हैं सो हे पितामहजी! कुछ हमारे लिये आहार दीजिये ९५ तब हे महामुने! बड़ी देरतक ध्यानकरके ब्रह्माजी हमसे बोले कि तुम्हारा भोजन तो तुम्हारे देहका मांसही है ९६ इससे अपने शरीरका मांस नित्य खायाकरो क्योंकि तुमने अपना शरीर पुष्ट करतेहुये उत्तम तप किया है ९७ सो हे श्वेतभूप! यह मिथ्या न होगा तुमको अपने अङ्गों का मांसही खाना पड़ेगा क्योंकि तुमने अपने पेटको छोड़कर कभी किसीभूँखेको भिक्षाभी नहींदी ९८ न कभी किसी अतिथिहीको अन्नदिया इसीसे स्वर्ग में आये हुये भी तुम्हारे इस समय क्षुधा पिपासा उत्पन्न हुईहैं ९९ इससे हे राजेन्द्र! अपने उसी अतिपुष्ट शरीरका मांस भक्षणकरो क्योंकि वही तुम्हारा पुष्टआहार है इससे उसीसे तुम्हारी तृप्ति होगी १०० जब ब्रह्माजीने ऐसा कहा तो हम उनसे यह बोले कि हे विभो! जब हम अपना शरीर भक्षण करलेंगे तब फिर और क्या खायँगे १०१ इससे ऐसा कोई उपाय बताइये कि विना इस देहके भक्षण कियेही क्षुधाका निर्वार होजावे वा कोई ऐसा अक्षय पदार्थ बताइये कि उसे खाया करें पर चुके कभी न १०२ तब ब्रह्माजी बोले कि अच्छा तुम्हारा देहही हमने अक्षय करदिया जाकर उसे नित्य भक्षण किया करो जो तृप्ति अमृतरसपीने से तुम्हारी होती वह अपने शरीरके मांस

के भक्षण से होगी १०३. जबतक सौ वर्ष पूरे न हों तबतक तुम अपने देहका मांस खातेरहो जब महात्मा अगस्त्य तुम्हारे अतारण्य में आवेंगे १०४ तब तुम इस बड़े दुर्द्धर्ष कष्टसे छूटोगे क्योंकि वे सुरासुरसहित इन्द्रका भी हित करसक्ते हैं १०५ फिर हे राजर्षे! तुम्हारे इस आहार की कितनी बातहै उन महात्माने तो पुष्करमें रहकर देवताओं का बड़ाभारी कार्य्य किया है १०६ समुद्र को निर्जल करके दानवों का निपात किया व सूर्य्यके वैरी विन्ध्याचल का बढ़ना रोकदिया १०७ व आपने अधिक लम्बायमान होकर दक्षिण दिशामें पृथ्वीको नीचेको दबादिया क्योंकि दक्षिण दिशा स्वर्गको चलीगई थी इससे उधर सबलोक विषम होगये थे १०८ तब हमने देवताओंके सङ्ग जाकर उनको प्रेरित किया कि हे महाभाग! इस दक्षिण दिशाको सम करदेओ क्योंकि तुम्हारी गोराई से जगत् समान होजायगा १०९ सो हे राजेन्द्र! उन मुनिने इसप्रकार सबके ऊपर स्थित होकर सब उधरकी पृथ्वीको समान करदिया वह अब भी अन्यत्र की अपेक्षा समान दिखाई देती है ११० सो हम भगवान् ब्रह्माकी आज्ञा से यहां नित्य आकर इस अपने शरीरका मांस खाजाया करते हैं व यह ज्योंकात्यों बना रहताहै १११ सो सौ वर्ष प्रथमसे यह हमारा कुत्सित भोजन होताहै यह शरीर क्षयभी नहीं होता पर हमारी उत्तम तृप्ति होजाया करती है ११२ सो इस कष्टमें पड़ेहुये हम रात्रि दिन उन मुनिकी प्रत्याशा करते रहते हैं यह नहीं जानते कि कभी वे मुनि हमको दर्शन देंगे ११३ सो इस प्रकार चिन्ता करतेहुये हमको सौ वर्ष बीतगये हम जानते हैं कि भगवन् वे अगस्त्य आपही हैं इससे निश्चय हमारी मुक्तिहोजायगी ११४ हे ब्रह्मन्! विना अगस्त्यजी हमारी गति न होगी हे रामचन्द्रजी! उसका ऐसा वचन सुनकर व कुत्सितभोजनदेखकर ११५ हमको बड़ी कृपा उसके ऊपर आई कि इस राजाको हम स्वर्गगामी करदें कि जाकर अमृत पानकरे व यह कुत्सित भोजन नष्टहोजाय ११६ इससे हम उस राजासे फिर बोले कि अगस्त्य क्या करेंगे हे महामते! हम अब तुमको यह कुत्सित भोजन न करने देंगे ११७

जो तुमको वाञ्छितहो हमसे मांगलेओ तव वह स्वर्गी हमसे बोला कि ब्रह्माजीका वचन अन्यथा कैसे होसक्ताहै ११८ उनके वचनके विपरीत हम नहीं करसक्के न अगस्त्यजी को छोड़ अन्य कोई इस कार्य्यको करीसक्ताहै ११९ हे ब्रह्मन्! हम अब जाकर ब्रह्मासे पूछ आवें जैसी वे आज्ञादें वैसाकरें ऐसा कहतेहुये उन राजाश्वेतसे हम बोले कि १२० हम तुम्हारे भाग्यसे आगये हैं इससे हर्षितहोओ इस बातमें सन्देह न करो अगस्त्य हमीं हैं तव वह स्वर्गवासी हम को जानकर पृथ्वीपर दण्डवत् प्रणाम करतेहुये गिरपड़ा १२१ तव हे राम! हमने झट उसको उठाकर कहा कि कहो तुम क्या चाहतेहो हम तुम्हारा क्या उपकार करें॥

चौ० बोल्यहुनृपतिसुनहुद्विजराया। यहिअहारसों कीजियदाया १२२
जासों लहहुं स्वर्गमहँ वासा। तव यश गावत रहहुं प्रकासा॥
तासु हेतु मुझसों कुछदाना। लीजैमुनिवरसहितविधाना १२३
मोपर करहु अनुग्रह भारी। आरत भाषत वचन पुकारी॥
यह आभरण तरण हित मेरे। लेहुनाथ करिकृपा घनेरे १२४
करहु प्रतिग्रह देहु प्रसादा। विप्रवर्य भ्रममिटै विषादा॥
गाय सुवर्ण धान्य धननाना। वसहिंयाहिमहँसकलमहाना १२५
भक्ष्यभोज्य नाना पकवाना। मिलहिंआभरण सों स्वहिंदाना॥
सर्बकाम भोजन सब यासों। द्विजवरमोहिंमिलैसुखवासों १२६
मम तारणमहँ करहु प्रसादा। आपहरें अब सकल विषादा॥
इमिसुनि स्वर्गी वचनदुखारी। ममडर बाढ़ी कृपाअपारी १२७
लासुतरणहित नहिं कछुलोभा। रघुनन्दन ममर्मन नहिंक्षोभा॥
मैं आभरण लीनत्यहि करसों। जैसहिंदीन्ह्योत्यहियुतहरसों १२८
मानुष देह तासुभो लोपा। परमसुभग सुर तनु तहँ रोपा॥
नष्ट शरीर राजऋषि भयऊ। हर्षितवचनसुनतममरह्यऊ १२९
चढ़ि विमान नूतन तनुधारी। गयहु स्वर्गकहँ जयति पुकारी॥
इन्द्र तुल्य तिन भूपतिमोहीं। यहआभरणदीनछविसोहीं १३०
तरण निमित्त आनहित नाहीं। यासों कछुभय नहिं मनमाहीं॥
इमि वैदर्भभूप दै दाना। कलुषरहितह्वैचढ़िसुविमाना १३१

गयहुस्वर्ग तुमसन सो गावा । रघुनन्दन सोसुन्यहुसुहावा ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेरामागस्त्यसंवादो नामषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

दो० सैंतिसयें कह दण्ड नृप दुष्टकर्म्म ज्यहि हेतु ॥
तासु राज्य भृगुशापसों दण्डकवन कहिं देतु १
पुनि किय गृध्र उलूक कर न्याय यथारघुनाथ ॥
राजसूयमखको भरत करनो कह्यो अनाथ २

पुलस्त्यमुनि भीष्मसे बोले कि अगस्त्यजीका यह अद्भुतवाक्य सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने बड़े गौरव व विस्मयसे फिर कुछ पूछने का प्रारम्भकिया १ श्रीराघवमहाराज बोले कि हे भगवन्! जिस वनमें विदर्भदेश के राजा श्वेतने तपकिया वह ऐसा अद्भुत कैसे हुआ २ फिर मृगविवर्ज्जित शून्य उस वनमें राजा कैसे गया व कैसे वहां प्रवेश करके तप करसका ३ व चारोंओर से सौकोसतक वह वन मनुष्यरहित कैसे हुआ व हे भगवन्! वह भूपति किस कार्य्य के लिये वहां गया यह सब हमसे कहो ४ अगस्त्यमुनि बोले कि हे राजन्! सत्ययुग में एक महादण्डधर प्रभु मनुनाम महाराजाधिराज हुये उनके महातेजस्वी इक्ष्वाकुनाम पुत्रहुये ५ तिस पुत्रको राज्य के योग्य समझकर उसको राज्य में स्थापित करके उनसे मनुजीने कहा कि तुम सबसे ज्येष्ठ पुत्रहो इससे पृथ्वीपर जितने राजा हैं उनके राजाहोओ ६ हे राघव! पिताके इस वचन को पुत्रने अङ्गीकारकिया तब अतिहर्षित होकर राजा वैवस्वतमनुजी फिर पुत्र से बोले कि ७ हे पुत्र! तुम्हारे इस कर्म्म से हम बहुत प्रसन्नहुये इसमें कुछभी संशय नहींहै दण्डसे प्रजाकी रक्षाकरो परन्तु विना कुछ कारण किसीको दण्ड न देना ८ क्योंकि जो दण्ड राजालोग अपराधियों के ऊपर करते हैं वह दण्ड विधियुक्त कहागया है इससे दण्ड देनेवाले को स्वर्ग में पहुँचाता है ९ इससे हे महाबाहु पुत्र! दण्डदेने में यत्नवान्होओ ऐसा करनेपर इसलोक में व परलोक में

तुम्हारा बड़ाधर्म्महोगा १० इसप्रकार पुत्रको बहुतभांतिसे समझा बुझाकर हर्षितहो राजामनुजी तो उत्तम ब्रह्मलोकको चलेगये ११ उनके पीछे राजाइक्ष्वाकु को चिन्ताहुई कि हम पुत्रोंको कैसे उत्पन्न करेंगे ऋषियोंकी आज्ञासे उन्होंने अनेक शुभकर्म्म किये तो उनके चौदहपुत्रहुये १२ देवताओं के पुत्रोंके बराबर उन पुत्रोंकरके राजा ने पितरों को तृप्तकिया उन पुत्रोंने राजा को अपने कर्म्मों से बहुत सन्तुष्टकिया सो हे रघुनन्दन! जो उनमें सबसे छोटा था उसने विशेषकर राजाको बहुत सन्तुष्टकिया १३ व वह सब कर्म्मों में पूर्ण भीथा सब वेद शास्त्र पढ़ाभी था व राजा की व अन्य श्रेष्ठजनों की सेवाभी करताथा सो बुद्धिमान् पिताने उसका दण्ड ऐसा नाम धराया १४ क्योंकि उसने जानलिया कि इसके ऊपर कभी दण्डपात होगा सो पिताने उस होनेवाले दण्डको देखकर भी नहीं देखा १५ राजाने कहदिया कि बस विन्ध्याचल व नीलगिरिके मध्यदेश में तुम्हारी गतिहो इतनेही के तुम राजा कियेजातेहो इसलिये वह दण्ड उसी रम्यपर्व्वतपर राजाहुआ १६ उस राजाने पर्व्वतपर एक पुर बसाया अपने मनसे उसका मधुमत्त नाम धराया १७ व ऐसेही प्रमत्तहोकर आपभी पुरोहितसहित वासकिया व राज्य करनेलगा राजा बड़ा शूरवीरथा व ज्ञानीभी कुछ २ था १८ उसका राज्य प्रजाओं से ऐसा कुछदिनों में धन धान्य प्रजासे भराहुआ जैसे कि इन्द्रका स्वर्ग्ग है हे राघव! इसप्रकार बहुत दिनोंतक राजादण्डने राज्यकिया १९ उस धर्म्मात्मा राजाके राज्य में कोई शत्रु नहीं रह गयेथे सबको निर्म्मूल करदियाथा बाद इसके किसीसमय चैत्रमास में राजा दण्ड अतिरम्य भार्ग्गवजी के आश्रमपर गया व वहां उसने रूपमें अद्वितीय अत्युत्तम २० । २१ वनमें विचरतीहुई भार्ग्गवजी की कन्याको देखा जिसका रूप बड़ा ऊँचा मोटाथा सोलह वर्षकी अवस्थाथी चन्द्रसदृश मुखथा २२ सुन्दर नासाथी कहांतक कहें सब अङ्ग उसके अपूर्व्वहीथे कमर उसकी बहुत पतली व ऊपर के और नीचे के सब अङ्ग भारीथे इसप्रकारकी वह थी कि देखके आनन्द होताथा २३ एकही तो वस्त्र धारणकियेथी व प्रथमकी तरुण

अवस्था को प्राप्तथी उसे देखकर राजा अधर्म्म के कारण कामवाण से पीड़ितहुआ २४ व उस कन्याके समीप जाकर बैठकर बोला कि हे सुश्रोणि! तुम यहां कहांसे आईहो व किसकी कन्याहो २५ मैं काम से पीड़ित होकर तुमसे पूँछताहूँ क्योंकि हे सुन्दरि! तुमने दर्शनमात्रसे मेरे चित्तको हरलिया है २६ यह तुम्हारा मुख मुनियोंके भी चित्तको हरलेता है यदि मैं तुम्हारे सङ्ग भोग न करनेपाया तो मुझको मृतकही समझो २७ हे सुलोचने! अब तुम्हारेही दियेहुये मेरेप्राण रहसक्ते हैं इससे मुझको जियाओ हे वरारोहे! मैं तुम्हारा दासहूँ इसलिये मुझ भजतेको भजो २८ उस मदोन्मत्त कामीके ऐसा कहनेपर वह भार्गवी विनयसहित राजासे यह वचन बोली कि २९ हमको सहजही में सब कुछ करडालनेवाले भार्गवजी की कन्या अरजा नाम जानो सो ज्येष्ठ आश्रमके निवासी शुक्रजीकी कन्या का तुम अपमान कियाचाहतेहो ३० हमारे पिता शुक्रजी हैं व तुम उन महात्माके शिष्यहो हे राजकुमार! धर्म्मसे हम तुम्हारी भगिनी हैं ३१ इससे हे राजन्! तुम हमसे ऐसा कहनेके योग्य नहीं हो अन्य बड़े २ दुःखोंसे हम तुमसे रक्षापानेके योग्यहैं ३२ व जानतेहीहो कि हमारे पिताजी कैसे क्रोधी हैं एकक्षण में तुमको भस्मही करडालेंगे अथवा यदि यह राजधर्म्म हो कि जबर्द्दस्ती भी सम्बन्ध होता हो तो ३३ जैसा धर्म्मशास्त्रोंमें लिखाहै उसके अनुसार हमारे पितासे याचनाकरो यदि हमारे महाद्युति पिताजी तुमको देदें तो क्या चिन्ता है ३४ इसके विपरीत जो तुम बलसे कुछ कियाचाहते हो तो बड़ाभारी दुःख तुम्हारे लिये होगा क्योंकि यदि हमारे पिता क्रोध करेंगे तो तीनों लोकोंकोभी भस्म करडालेंगे ३५ ऐसाघोर अद्भुतवचन सुनकर राजा दण्ड मदसे उन्मत्त तोथाही हाथजोड़ शिर आगे झुकाकर बोला कि ३६ हे सुश्रोणि! हे कामिनि! कामबाणसे पीड़ित मेरे ऊपर प्रसन्न होओ हे शुभानने! तुम्हारेही रोकने से हमारे प्राण रुकते हैं अन्यथा जातेही हैं ३७ जब तुम न मिलोगी तो जानो तुमने वध करनेसे भी बड़ा वैर मेरे सङ्ग किया हे भीरु! मुझ अपने भक्तको भजो क्योंकि मुझको तुममें अत्यन्त भक्तिहै ३८ ऐसा कह

कर उस कन्याको बलसे अपने बाहुसे पकड़कर उस राजाने उसे दूसरे हाथसे विवस्त्र करडाला ३९ उसके प्रत्येक अङ्ग अपने अङ्गों में मिलाकर मुखसे मुख चूमनेलगा वह बहुत तड़फड़ाती रही उछलती भागतीरही पर उसने मैथुन करनेका प्रारम्भ करदिया ४० व इस महाघोर अतिदारुण अनर्थ को करके राजा दण्ड अपने नगरको शीघ्र चलागया जैसे मत्त हाथी जो चाहताहै करडालता है ४१ व भार्गवी अपने आश्रमके समीप तो थीही बेचारी रोतीहुई उद्विग्नचित्त अपने देवसमानतेजस्वी पिताके समीप गई ४२ पर उसके पिताजी स्नान करनेगये थे एक मुहूर्त्तभरके पीछे अपने शिष्योंके साथ क्षुधासे पीड़ित आये ४३ उन्होंने अपनी अरजा नाम कन्याको बहुत दीनदेखा जिसके शरीरमें सब रजलगीथी इससे बादरसे ढँकीहुई उजियाली के समान धूमली होगई थी प्रथमकी सब प्रभा जातीरही थी ४४ इस वृत्तान्तको दिव्यदृष्टि से तुरन्त जानकर उन क्षुधापीड़ित महात्माको बड़ाही रोषहुआ इससे तीनोंलोकोंको जलातेही से वे अपने शिष्योंसे बोले कि ४५ अदीर्घदर्शी विपरीत बुद्धि इस दण्ड दुष्टकी घोर भयङ्करी अग्निकी शिखाके समान प्रज्वलित विपत्तिको देखो आगई है ४६ जिसके कारण यह दुर्म्मति सपरिवार नाशको प्राप्तहुआ इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है क्योंकि उसने प्रज्वलित अग्निकी ज्वालाको अपने आप स्पर्श कियाहै ४७ जिससे कि उसने ऐसे घोर पापको कियाहै इससे इस दुर्बुद्धिके ऊपर धूलिकी अतिघोर वर्षाहोगी ४८ इससे यह दुष्टराजा अपने देश भृत्य वाहन परिवारसहित महापापकर्म्मकारी दुष्टमतिवाला नाश को प्राप्त होगा ४९ व इस दुर्बुद्धि दुष्टके देशके सौ कोसि चारों ओर इन्द्र धूलि बरसाकर भस्म करडालेंगे ५० यहाँपर स्थावर जङ्गम जितने प्राणी हैं उस धूलिकी वर्षासे सबका नाशहोजायगा कोई एक भी न बचेगा ५१ जितना इस दुष्टराजा दण्डका देशहै वह आज के सातयें दिन अकस्मात् धूलिकी वर्षासे बनाय ढँक जायगा ५२ फिर पीछे वहां वन होजायगा क्रोधके मारे सन्तप्त होकर वहीं के रहनेवालोंसे कहा कि तुम सब इस देशके बाहर अभी चले चलो

नहीं तो तुमभी दब्बजाओगे ५३ यह कहतेही उस आश्रमपरके रहनेवाले लोग उस राजाके देशसे बाहरको चलेगये ५४ मुनियों से ऐसा कहकर भार्ग्गवजी अपनी अरजा नाम कन्यासे बोले कि हे दुर्म्मेधे! इस आश्रमपर तू अब वसे ५५ क्योंकि यहां सौ योजन तक एक सुन्दर तड़ाग होजायगा सो हे अरजे! विरजा होकर तूही सौवर्षतक वह तड़ाग होकर रहेगी ५६ अपने पिताकी आज्ञा को सुनकर अरजा भार्ग्गवी अत्यन्त दुःखित होकर अपने पितासे बोली कि बहुतअच्छा जो आपकी आज्ञा ५७ व भार्ग्गवने यह कहकर उस आश्रम को छोड़ अन्यत्र जा अपना आश्रम बनालिया उसके पीछे जैसा ब्रह्मवादी मुनिने कहाथा सातयें दिन वह सौकोस लम्बा व उतनाही चौड़ा देश भस्महोगया ५८ उस दण्ड राजाका जितना देश उस विन्ध्यपर्व्वतके ऊपरथा हे राम! भार्ग्गवजी के शाप देने से उतना धर्षणा करनेसे होगया ५९ व तबसे हे राघव! यह सब दण्डकारण्य कहानेलगा हे राघव! जो आपने हमसे पूँछा यह सब हमने तुमसे कहा ६० हे वीर! अब सन्ध्योपासन करनेका कालबीताजाताहै क्योंकि देखो ये महर्षिलोग सब ओरसे जलपूरित कुम्भलिये चलेआते हैं ६१ व देखो बहुत से अर्घ्य देकर सूर्य्य की पूजा कररहे हैं व वेद शास्त्र पढ़नेवाले व ब्रह्मादिदेवोंके उपासक सब ऋषिलोग अब सबकहीं बैठ गये सन्ध्या करनेलगे ६२ सूर्य्य अस्तहोगये हे रामचन्द्र! जाकर तुम भी जलसे आचमन करो ऋषिका वचन सुनकर रामचन्द्रजीभी सन्ध्योपासन करनेके लिये ६३ उस स्थानसे चलकर समीपवर्त्ती तड़ाग पर गये व सन्ध्योपासन करनेलगे परन्तु वह स्थान नानाप्रकार के वृक्षों से शोभित था ६४ एक पुण्यनदी भी बहती थी पर्वत भी वहां था उसके वनमें सैकड़ों कोकिल बोलतेथे नानाप्रकार के अन्य पक्षी बोलरहे थे नानाप्रकार के मृग भरे थे ६५ सिंह व्याघ्रोंसे समाकीर्ण था नानाप्रकार के पक्षियोंसे भरा था वहां बहुत वर्षोंसे एक गृध्र व एक उलूकपक्षी रहते थे ६६ परन्तु पाप करने में निश्चय करके उलूकके गृहमें गृध्र घुसपड़ा व कहनेलगा कि यह गृह हमारा है इससे उससे कलह होनेलगा ६७ अन्तमें ठहरा कि सब लोकों

के राजा आजकल राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रहैं उनसे चलकर पूँछें जिसका वे गृह बतावें उसकाहो ६८ यह कह बड़े कोपसे युक्त एक दूसरेकी बात न सहतेहुये कलहसे व्याकुलचित्त दोनों उसीसमय में रामचन्द्रजी के समीपआये ६९ व परस्पर वैर कियेहुये दोनोंने श्रीराघवजी के चरणछुये व उनमें रामचन्द्रजी से देखकर पहिले गृध्र बोला ७० कि मेरेमतसे सुरोंमें व असुरोंमें तुमप्रधानहो व तुम ऐसे महामतिहो कि बृहस्पति से व शुक्रसे भी विशेष बुद्धिमान् हो ७१ सब प्राणियों के आदि अन्तको जानतेहो व मृत्युलोकमें मानों और इन्द्रहीहो व सूर्य्यके समान दुर्न्निरीक्ष्यहो कोई सामने देख नहीं सक्ता गौरव में हिमवान् के समानहो ७२ व गम्भीरता में सागरहीहो लोकपालोंमें यमराजहीके तुल्यहो सहनशीलतामें पृथ्वीके तुल्यहो व शीघ्रता में पवन के तुल्यहो ७३ व हे राघव! तुम सबके गुरुहो क्योंकि विष्णुरूपहो अमर्षी दुर्ज्जय जेता व सब अस्त्रोंके पारगामी हो ७४ इससे हे देवेश! हे नरश्रेष्ठ! जो मैं विज्ञापन करताहूँ सुनिये हे प्रभो! बहुत दिनों से मेरे बनायेहुये घरको ७५ आपके समीपही यह उलूक हरलेता है देखिये यह कैसा दुराचारीहै कि आपकी आज्ञानहीं मानता है ७६ इससे इसको प्राणान्त दण्ड देकर आप अनुशासन करने के योग्य हैं जब गृध्रने ऐसा कहा तो फिर उलूक बोला ७७ कि हे नराधिप! हे देव! एकचित्त होकर जो मैं निवेदन करताहूँ सुनिये सोम शुक्र सूर्य्य कुबेर व यमराजसे ७८ राजा उत्पन्न होताहै इससे उसकी मनुष्यों में गणना नहींहोती इससे आप सब देवमय हैं व दूसरे नारायणही हैं ७९ व हे राम! कालको अच्छे प्रकार आप विचारतेहैं यह चन्द्रमाका स्वभाव कहाताहै व जिससे आप सबके अन्धकारको दूरकरते हैं इससे सूर्य्य कहेजाते हैं ८० व दोष होनेपर आप भयानक दण्डदेते हैं यह यमराजता आपमें है व दाता प्रहर्त्ता रक्षक सबके हैं यह इन्द्रता आपमें विद्यमानहै ८१ व कोईप्राणी आपके तेजकेमारे ढिठाई नहीं करसक्ता यह अग्निका स्वभाव आपमें है व हे राम! बार २ तुम पापियोंको सन्तप्त कराते रहतेहो इससे भास्करके तुल्यहो ८२ धनाढ्यतामें साक्षात् कुबेरके

तुल्यहो व कुबेर से अधिकहो क्योंकि हे राजसत्तम ! लक्ष्मीभी स्त्री रूप तुम्हारे चित्तमें नित्यही वसीरहती हैं ८३ धनदके कोशकरके कुबेर तुम्हींहो व जितने स्थावर जंगम प्राणी हैं उन सबको सम-झातेहो ८४ क्योंकि हे राम ! शत्रु व मित्रपर तुम्हारी दृष्टि समान पड़ती है इससे नित्य धर्म्महीसे शासन करतेहो व्यवहारविधि सब क्रमपूर्व्वक है ८५ हे राम ! जिसके ऊपर तुम कोप करतेहो उसकी मृत्यु होजाती है इससे हे राजन् ! तुम यमराज कहेजातेहो ८६ हे नृपसत्तम ! जो कोई आपमें मनुष्यबुद्धि करते हैं वे बड़ेक्रूर निर्ल-ज्जहैं व आप सदा सबके ऊपर कृपाही करते हैं ८७ जो लोग दुर्बल होते वा अनाथ होतेहैं उनका बल राजाही होताहै व अन्धोंके लिये राजा नेत्रहोताहै निर्बुद्धिके लिये बुद्धि होताहै ८८ इससे हमलोगों के नाथ तुम्हींहो हे धार्म्मिक ! सुनिये आप वैसा न समझें जैसा हम सब पक्षीलोग कहतेहैं ८९ क्योंकि जो हमलोगों के नाथ गरुड़ जी हैं वेभी तुम्हारेही बनायेहुये हैं इससे हमलोगों के आपके समीप अस्वाम्य नहीं हैं ९० क्योंकि आपही के कियेहुये ये चार प्रकारके प्राणी हुयेहैं देखिये मेरे आश्रममें घुसकर यह गृध्र मुझको बाधित करता है ९१ हे देव ! हे नरपुङ्गव ! आप मनुष्यों व देवताओं में सब के शिक्षक हैं व स्वामी हैं इसका विचार करें यह सुनकर श्रीराम-चन्द्रजीने अपने मन्त्रियों को बुलाया ९२ विष्टि जयन्त विजय शु-द्धार्थ राष्ट्रवर्द्धन अशोक धर्मपाल सुमन्त्र व महाबल ९३ ये सब राम-चन्द्रजी के मन्त्री थे व राजा दशरथजी के भी मन्त्रीथे ये सब नीति युक्त व महात्मा और सर्वशास्त्रोंमें विशारदथे ९४ नीतिशास्त्र व वेदमें कुशल कुलीन न्याय व सम्मत देने में बड़े चतुर थे उन लोगों को बुलाकर पुष्पकविमानपरसे उतरकर श्रीरामचन्द्रजी ९५ विवाद करतेहुये गृध्र व उलूक से बोले कि हे गृध्र ! तुमने कितने दिन हुये जब यह स्थान बनाया था ९६ जो निश्चय जानते हो तो यह कौ-तुक हमसे कहो श्रीराघवजी का यह वचन सुनकर गृध्र बोला ९७ कि हे राम ! यह पृथ्वी बहुत हाथों के मनुष्यों की बनाईहुई है व वे लोग बड़ेलम्बे होतेथे जिन्होंने बनाई है बस जब उन्होंने इस पृथ्वी

को बनाया है तभीसे हमारा यह गृहहै ९८ तब उलूकने श्रीरामचन्द्रजीसे कहा कि हे राघवेन्द्र! जब यह सब पृथ्वी वृक्षोंसेही शोभित थी कहीं किसीके स्थान थेही नहीं तबसे यह मेरा गृह है ९९ यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी अपने मन्त्रियों से बोले कि हे मन्त्रियो! यह हमारा वचन सुनो व विचारो वह सभा नहीं है जिसमें वृद्धलोग न बैठेहों व वे वृद्ध नहीं हैं जो धर्म्मको नहीं कहते १०० व वे धर्म्म नहीं हैं जिनमें सत्य न हो व वह सत्य नहीं है जो छलसे कहाजाय व जो सभ्यलोग सभामें जाकर चुपचाप बैठे रहते हैं १०१ यथोचित समयपर शुभ अशुभ कुछ नहीं कहते वे सब मिथ्यवादी हैं जो सुन कर पीछे काम क्रोध वा भयसे नहीं बोलता १०२ वह वरुण की सहस्र फांसियोंसे बांधाजाता है व वर्षभरके पीछे एकपाशसे छूटता रहताहै १०३ इससे जो अच्छे प्रकार उस विषय को जानताहो तो सत्य २ कहदेना चाहिये यह सुनकर सब मन्त्रीलोग रामचन्द्रजी से बोले १०४ कि हे महामते श्रीराम ! उलूक शोभित होता है व गृध्र नहीं शोभित होता पर इस विषय में आप प्रमाण हैं क्योंकि राजा सबकी परमगति होताहै १०५ सब प्रजाओंका मूल राजा होताहै व राजाही सनातनधर्म्म होताहै व जिन लोगोंका शिक्षक राजाहोताहै उनके अपराधके योग्य दण्ड देतारहताहै वे लोग नरकको नहींजाते १०६ उन पुरुषोत्तमोंको यमराज छोड़देते हैं यह सुनकर रामचन्द्रजी ने कहा १०७ कि सुनो जैसा पुराणों ने कहा है वैसा हम कहते हैं सूर्य्य चन्द्र नक्षत्र सहित स्वर्ग पर्व्वत वृक्ष सहित पृथ्वी १०८ व जल समुद्र सहित यह त्रैलोक्य व चराचर सब तीनोंलोक सब एक हुए जैसे कि आकाश एकहै १०९ उसके पीछे फिर जल व पृथ्वी श्रीविष्णुजी के उदर में प्रवेशहोगई उन सब पृथ्वी जल सहित तीनोंलोकों को ग्रहण करके महातेजस्वी श्री विष्णुजी ११० महासागरमें पैठकर सबओरसे जलरूप होकर बहुत सहस्र वर्षों तक शयन करतेरहे विष्णुके सोजानेपर ब्रह्माभी उन्हीं के उदरमें प्रवेश करगये १११ उनके बहुतसे रोमथे योगाभ्याससे ब्रह्मा उन्हींके छिद्रों में होकर भीतर चलेगये तब बहुतदि-

नोंके पीछे श्रीविष्णुकी नाभि से सुवर्णमय कमल उत्पन्न हुआ ११२ उससे योगीहोकर महाप्रभु ब्रह्मा निकले उन्होंने पृथ्वी वायु पर्वत व वृक्षोंके उत्पन्न करनेकी इच्छाकी ११३ उसकेपीछे सबप्रजा मनुष्य सर्प्प जरायुज अण्डज आदि उन महातपस्वीने उत्पन्न किया ११४ तब श्रीविष्णुके कानों के मैलसे मधु कैटभ दो दैत्य उत्पन्न हुये ये दोनों दानव महावीर्य्य घोर पराक्रमीहुये क्योंकि इनको वरदान भी मिलगयाथा ११५ वे दोनों ब्रह्माको देखकर कोपयुक्त होकर बड़े वेग से ब्रह्माको खानेदौड़े ११६ ब्रह्माजी ने देखा कि सब जीव अलग २ भागेजाते हैं तब ब्रह्माने विष्णुकी स्तुतिकी उन्होंने उनदोनोंको मारडाला ११७ उनकी (मेदस्) चर्बीसे रहने के लिये यह पृथ्वी युक्त बढ़ाई गई उसी मेदस्की गन्धि पृथ्वीमें आनेलगी इसीसे इस पृथ्वीका एक मेदिनी नाम हुआ ११८ इस से गृध्र झूंठा है व पापी है इससे यह गृध्र वध करने के योग्य है क्योंकि यह पापी पराये घरको अपना कहताहै ११९ व इस बिचारे उलूकको यह दुरात्मा पीड़ित करताहै यह सुनकर उस समय आकाशवाणी हुई कि हे रामचन्द्र! इस गृध्रको न मारो क्योंकि यह पूर्व्व समयमें तपोबलसे भस्म होचुकाहै १२० यह किसी समयमें राजाथा तब गौतमके शापसे दग्ध हुआथा इसका ब्रह्मदत्त नामथा व बड़ाशूर सत्यव्रत व पवित्र रहताथा १२१ इसके गृह में एकबार गौतमऋषि आये उनको इसने भोजन करनेके लिये कहा तब कुछ अधिक सौ वर्षतक ऋषिसत्तम गौतम इसके यहां भोजन करतेहुये ठहरे रहे १२२ व यह ब्रह्मदत्त नाम राजा प्रतिदिन पाद्य अर्घ्य सब अपने हाथों से करतारहा मुख्यकर जब भोजन करनेको मुनि चलें तो विशेष करके यह अपनेही हाथोंसे उनके चरण धोवे १२३ एक दिन जब वे महात्मा इसके गृहमें भोजन करनेकोगये तो इसने पूर्ण कुचोंसे स्त्रीको दोनों हाथसे स्पर्श किया १२४ पर मुनिने दिव्य दृष्टिसे तुरन्त जानलिया तब मुनिने क्रोध करके राजाको अति दारुण शापदिया कि हे राजन्! तुम जाकर गृध्रहोओ जब ऐसा शापहुआ तो राजा मुनिसे बोला १२५ महाभाग कृपा करो जिसमें

शापोद्धार होजाय तब उसके वचनको सुनके मुनि, तो दयालु थेही फिर बोले १२६ कि इक्ष्वाकु के कुल में राजीवलोचन महाभाग्यवान् महायशस्वी श्रीरामचन्द्र नाम राजा उत्पन्न होंगे १२७ हे नरपुङ्गव! उनको देखकर तुम अपाप होजाओगे यह आकाशवाणी श्रीरामचन्द्रजीने सुनी इतनेमें वह गृध्र श्रीरामचन्द्रजीके दर्शनसे गृध्र शरीर छोड़कर देव शरीर राजा होगया १२८ शीघ्रही गृध्रका शरीर छोड़कर दिव्यगन्ध अङ्गोंमें लगाये दिव्य भूषण वस्त्र धारण कियेहुये वह श्रीराघवेन्द्रजी से विनयपूर्वक बोला कि १२९ हे धर्म्मज्ञ राघव! बहुत अच्छा हुआ कि आपके प्रसादसे मैं घोरपापसे छूटगया आपने मुझे अपाप करदिया १३० मैंने गृध्ररूपको छोड़कर नररूप महीपति हुआ यह सुन श्रीरामचन्द्र महाराज ने उसको बिदा करके उलूक से कहा कि हे उलूक! तू बड़ा धर्म्मज्ञ है अब अपने घरमें प्रवेशकर १३१ व हम सन्ध्या करके जहां मुनिहैं वहां जायँगे यहकह आचमनकर सायं सन्ध्योपासन करके १३२ महात्मा अगस्त्यजीके आश्रम पर गये उनको अगस्त्यजी ने बड़े आदर से बहुत गुणयुक्त फलमूल १३३ व रसीले बहुतसे शाक भोजनके लिये दिये व उन नरव्याघ्र श्रीराघवजी ने वह अमृत तुल्य फलादि भोजन किया १३४ तृप्तहोकर व प्रसन्न होकर रात्रिभर वहां रहे प्रभात काल उठकर प्रातःकालकी शौच स्नान सन्ध्या बन्दनादि क्रिया करके १३५ वहां से बिदा होनेके लिये ऋषिकेसमीप गये व कुम्भसम्भव महर्षि अगस्त्यजी के प्रणामकरके बोले कि १३६ हे ब्रह्मन्! अब आपसे बिदा होनेकी आज्ञा चाहते हैं इससे आप आज्ञा देने के योग्य हैं हम आपके दर्शन से धन्यहुये व आपने बड़ा अनुग्रह किया १३७ जबकभी अपनेको पवित्र किया चाहेंगे तो आपके दर्शनही करनेको आवेंगे जब श्रीरामचन्द्रजी ने ऐसे अद्भुत वचन कहे १३८ तो तपोधन अगस्त्यजी नेत्रोंमें आंसु भरकर प्रेमसे विह्वल होकर बोले कि हे रामचन्द्रजी! यह शुभ अक्षरों से युक्त आपका वाक्य अत्यन्त अद्भुतहै १३९ हे रघुनन्दन! जो आपने कहा वह सब प्राणियों को पवित्र करताहै क्योंकि जो नर मुहूर्त्त भरभी आ-

पके दर्शन प्रीतिसे करते हैं १४० वे सब प्रकारसे पवित्र होजाते हैं व वेहीदेवता कहेजाते हैं व जो प्राणी भूतल पर आपको घोर दृष्टिसे देखते हैं १४१ वे ब्रह्मदण्ड से हतहोकर तुरन्त नरकगामी होते हैं हे रघुश्रेष्ठ! आप ऐसे सब प्राणियोंके पावन करनेवाले हैं १४२ व हे राघव! जो कोई लोग आपका नाम लेंगे वे सिद्ध होजायँगे अच्छा आप प्रसन्नतासे जायँ व आपका मार्ग्ग सर्व्वथा भयरहितहो १४३ व जाकर धर्म्म से राज्यका पालनकरें क्योंकि आपही इस जगत्की गतिहैं जब इसप्रकार मुनिने कहा तो महाराजाधिराजने अगस्त्य मुनिके अभिवादन करनेके लिये हाथ जोड़ा १४४ व मुनिके प्रणाम करके फिर वहांके रहनेवाले सब तपोधनों के प्रणामकिया १४५ व फिर सुस्थिरचित्त होकर दिव्य पुष्पक विमानपर आरोहण किया चलतेहुये उनको सब मुनिगणों ने आशीर्व्वादों से युक्तकिया १४६ जैसे कि चलतेहुये इन्द्रको देवगण आशीर्व्वादों से युक्त करते हैं फिर वहांसे चलकर सर्व्व अर्थोंके जानने में परमकोविद श्रीराम-चन्द्रजी मध्याह्नके समय १४७ अयोध्याजी में पहुँचे व अपने पैरों सेही कक्षापरसे उतरे व फिर अतिमनोहर पुष्पकविमान को बिदा करके १४८ राजद्वारकी कक्षापर आकर द्वारपालोंसे महाराज यह बोले कि तुमलोग शीघ्र लक्ष्मण व भरतके समीप जाओ १४९ व हमारा आगमन उनसे कहो और यहां लेआओ विलम्ब न हो सरल कार्य्य करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी का वचन सुनकर द्वारपालों ने १५० तु-रन्त लक्ष्मण व भरतसे कहकर श्रीराघव से आकर निवेदन किया कि महाराजका आगमन कहआये व रामचन्द्रजी के दर्शन के लिये दोनों महाराजकुमारों को अन्य द्वारपाललेभी आये १५१ तब अति-प्रिय भरत लक्ष्मणको आयेहुये देखकर श्रीराघवेन्द्रजी उन दोनों जनोंको हृदय में लगाके यह वचनबोले १५२ कि हमने जैसाचा-हिये ब्राह्मणका उत्तम कार्य्य किया व इसीप्रकार अन्यभी कार्य्य ध-र्म्महीके हेतुके कियाचाहते हैं १५३ व अब आत्माकी बराबर तुम दोनों जनों के साथ राजसूय यज्ञ कियाचाहते हैं क्योंकि उसका करना राजाओं का निरन्तर धर्म्महै १५४ देखो लोककारी ब्रह्माजी

ने पूर्व्वसमय में पुष्करतीर्थ में तीनसौ साठ राजसूय महायज्ञ कियेहैं १५५ सो भी सब धर्म्मही के अनुसार कियेहैं क्योंकि वे सब धर्म्मोंको जानते हैं व उसका फलभी उनको मिलगया है कि सब लोकों में उत्तमकीर्त्तिका स्थान पाया है १५६ व शत्रुनाशक मित्र-देवनेभी राजसूय यज्ञकिया है व सोभी बड़ीप्रीति से व शुद्धता से इसीसे वे दोघड़ी में वरुणता को प्राप्तहुये १५७ इससे तुम दोनों जने इसकार्य्य के अर्थ विचरांशकरो व कहो यह सुनकर भरतजी बोले कि हे महाराज! तुम परमधर्म्म हो व तुममें यह सब पृथ्वी टिकी है १५८ व तुम सबोंसे पूजितहो व हे अमितविक्रम! तुम्हारा यश योंही बहुत है व जैसे देवता प्रजापति को वैसेही सब राजा आपको देखते हैं १५९ हमलोग भी आपकी आज्ञाको सदा देखा करते हैं कि देखें क्या आज्ञाहोती है व हे महामते! हे राजन्! प्रजा सब आपको पिताके समान देखती हैं १६० इससे हे राघव! आप पृथ्वीपर सब प्राणियों के गतिभूत हैं सो ऐसे आप ऐसा यज्ञ न करें १६१ क्योंकि इस राजसूय यज्ञसे पृथ्वीपरके सब प्राणियोंका विनाश दिखाई देता है हे राजशार्दूल! हे मनुजेश्वर! सुनाई देता है १६२ कि चन्द्रमाने जब राजसूय यज्ञ कियाथा तो तारकामय युद्ध में देवताओं का बड़ाविनाश हुआथा क्योंकि इसी यज्ञके करने के अहङ्कार से बृहस्पतिकी स्त्री ताराको चन्द्रमाने भोग करने के लिये हरलियाथा १६३ उसमें इतना भारी युद्धहुआ जिसमें देवता दानव दोनोंका विनाशहुआ व वरुणने जब राजसूय यज्ञ कियाथा तब इतना घोर संग्राम हुआ कि उसमें सब मत्स्य कच्छपादि १६४ जलचर जीव क्षीण होगये हे राजशार्दूल! व हे राघव! हरिश्चन्द्रके राजसूय यज्ञके अन्त में १६५ विश्वामित्र व वसिष्ठ से आडीवक नाम महायुद्ध हुआ जिसमें सबलोगों का विनाशहुआ ऐसेही हमने सुना है कि पृथ्वीपर जितने पशु पक्षी तिर्य्यक् योनिवाले जीव हैं १६६ दिव्यराजाओंके राजसूय यज्ञमें उनसबोंका विनाश होजाताहै
चौ० यासोंपुरुषसिंहतुमराघव। निजमतिसोंशुभचरितअराधव १६७
जासों प्राणिन कर हित होई। धर्म्म करहु नृपवर तुम सोई॥

यहसुनि कह राघव सुनु भ्राता । सुनितववचन जीवगणत्राता १६८
भयहुँप्रसन्न धर्म्मधुर धारण । राजसूय अब करिहौंवारण १६९
पूर्णधर्म्म करिहौं यक औरा । कान्यकुब्ज पुर महँ तजि हौरा ॥
वामन मूर्त्ति थापि हों नीके । जासों कीर्त्ति स्वर्ग्गमहँ ठीके १७०
होइहि या महँ नहिं सन्देहा । जिमि गङ्गा लाये युत नेहा ॥
भूप भगीरथ की भै भारी । कीर्त्तिअजहुँ सबलोकप्रचारी १७१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेयज्ञनिवारणं नामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

दो० अड़तिसयें महँ राम जिमि पुनि लङ्कागे आप ॥
भरत सुकण्ठसमेतमग बहुविधिचरित अलाप १
मिल्यो विभीषणप्रेमसों दीन बहुत धन रत्न ॥
तहँ सों वामन गङ्गतट थाप्यो राम सयत्न २

इतनी कथा सुनकर भीष्मजीने पुलस्त्यमुनि से पूँछा कि हे विप्रर्षे! श्रीरामचन्द्रजीने कान्यकुब्ज नगरमें कैसे वामनजीका स्थापन किया व उनकीमूर्त्ति उन्होंने कहांपाई यह हमसे विस्तार सहित कहो १ जिससे कि रामचन्द्रजीकी पावनकीर्त्तिहुई वह मधुर व हमारे हृदय कानों के सुखदेनेवाली राघवजीकी कीर्त्ति कहो २ जिन राघवजी को सबलोग बड़ेअनुराग से देखते थे व अबभी देखते हैं व जो बड़े धर्म्मज्ञ उपकार जाननेवाले व बुद्धिसे बड़ेपरिनिष्ठित थे ३ व सब पृथ्वी का पालन बड़ेधर्म्म से करते थे उनकेराज्य करने के समय सबवृक्ष सदा इष्टफल देते थे ४ व सबवृक्ष रसीलेही फल फरते थे व वृक्षोंसेही विविधप्रकार के वस्त्र निकलते थे व उन महात्माके राज्य में पृथ्वी में विना जोते बोये योंहीअन्न उत्पन्न होताथा महात्माजनोंसे कोई शत्रुता न करता था ५ व उन्होंने देवताओंका बड़ाभारी कार्य्यकिया जोकि लोकोंके शत्रु रावणको पुत्र मन्त्रीसमेत एकखेलके साथ मारडाला ६ उन महाराजाधिराजकी बुद्धि पूर्णधर्म्म करने में प्रवृत्तहुई सो उनका हम सब चरित सुना चाहतेहैं ७ पुलस्त्य

मुनि बोले कि हे नृप! धर्म्ममार्ग्गपर टिकेहुये उन महाबाहु राघवेन्द्रने किसीसमय में जो चरित कियाहै वह एकाग्रमन करके सुनो ८ उन्हों ने एक दिन राक्षसेन्द्र विभीषणका स्मरण किया कि नहीं जानते लंका में विभीषण कैसे राज्यकरेंगे ९ उनके विनाश का समय आगया था क्योंकि रावण देवताओं के प्रतिकूल होगयाथा परन्तु हमने विभीषणको जबतक सूर्य्य चन्द्र रहेंगे तबतक के लिये लंकाका राज्य दे दिया १० यदि उनका विनाश बीचही में होगया तो हमारी कीर्त्ति निरन्तर न रहेगी व जैसे कि रावणने जब तप किया था तो अपने विनाशहोनेहीका वर मांगा था ११ इससे उस पापीको देवताओंके कार्य्य के लिये हमने विध्वस्त करदिया इससे इससमय हमको चाहिये कि आप जाकर विभीषणको देखें १२ व उसके हितकी बातें सिखावें जिससे वह बहुत दिनोंतक योगजानकर राज्यपर स्थित रहै इस प्रकार अमिततेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी चिन्तना करतेथे १३ कि उसी समयमें भरत आये वे रामचन्द्रजीको कुछ दुःखित देखकर उनसे बोले कि हे देव! तुम किस बातकी चिन्तना करतेहो वह रहस्य हमसे क्यों नहीं कहते १४ यह चिन्ता देवताओंके कार्य्य के लियेहै वा पृथ्वीपर किसी अपनेही कार्य्यके लियेहै हे नरोत्तम! हमसे कहिये क्या कोई गुप्त करने के योग्य बात है ऐसा कहतेहुये व ध्यान करतेहुये भरतसे १५ श्रीराघवजी बोले कि ऐसी बात हमारे कोई नहीं है जो तुमसे गुप्त रखने के योग्यहो क्योंकि तुम व महायशस्वी लक्ष्मण यद्यपि बाहर दिखाई देतेहो पर प्राणहीहो १६ इससे तुम दोनों जनोंको भी यह बात विदितहोगई होगी मनमें धारण कियेहोगे पर कहते भी हैं हमको यह बड़ीभारी चिन्ताहै कि देवताओं के मारे विभीषण कैसे राज्य करनेपावेंगे १७ क्योंकि रावण के मारजाने पर अब देवगण विभीषण से डरतेहोंगे इससे विभीषणके मारनेका विचार करतेहोंगे इससे अब हम लङ्काको जायँगे जहां कि हमारे प्रिय विभीषण रहते हैं १८ उन राक्षसेन्द्र विभीषणको व लङ्कापुरीको देखकर व सब धर्म्म नीतिकी बातें उनको सिखाकर व सब पृथ्वी देखकर वानरराज सुग्रीवकोभी देखकर चले आवेंगे १९ व महाराज शत्रुघ्न को

जो मथुरामें राज्यकरते हैं तथा अन्य तुमलोग भाइयों के पुत्र जो ठौर ठौर राज्य करते हैं उनको भी देख आवेंगे व यहां का राज्य तुम अच्छे प्रकार देखे भाले रहना ऐसा कहतेही आगे खड़े होकर भरतजी ने २० कहा कि आपके सङ्ग हमभी चलेंगे रामचन्द्रजी ने कहा अच्छा वीर ऐसाही करो पर लक्ष्मणको बुलाओ उनसे राज्य की रक्षाके लिये कहदें भरतजी लक्ष्मण को बुलालाये राघवजी ने कहा जबतक हम दोनों न आवें तबतक तुम राज्यकी रक्षा करते रहना २१ । २२ इस प्रकार लक्ष्मण को आज्ञा देकर महाराज ने पुष्पक विमानका ध्यान किया वैसेही वह आया व श्रीरामचन्द्रजीने भरतसे कहा चढ़ो फिर आपभी उसपर चढ़े २३ व वहांसे पुष्पकविमानउड़ा प्रथम गान्धारदेश को गया जहां कि भरतके दोनों पुत्र राज्य करतेथे उनको व उनकी राजनीति को देखकर २४ फिर पूर्व्व दिशाको गये जहां कि लक्ष्मणजी का पुत्र राज्य कर रहाथा उसके पुर में ६ रात्रिभर रहकर दोनों भाई २५ उसी विमानपर चढ़ेहुये दक्षिण दिशा को गये जहांका जाना अभीष्टथा प्रथम गङ्गा यमुनाके सङ्गम पर ऋषियोंसे सेवित प्रयागजी में पहुँचे २६ व भरद्वाजजी के प्रणाम करके अत्रिके आश्रम पर गये वहां सब मुनियों से सम्भाषण करके जाय जनस्थान में पहुँचे २७ वहां रामचन्द्र जी भरतसे बोले कि यहां पर दुरात्मा रावण सीता को हरलेगया था व यहांही हमारे पिता के सखा जटायु से उस दुष्ट से युद्ध हुआ था व जटायु मारा गयाथा २८ व यहां हमसे दुरात्मा कबन्धसे महाघोर युद्ध हुआ था उसको मारकर जब हमने जलाया तब उसने कहा कि सीता रावणके यहांहैं २९ ऋष्यमूक पर्व्वत पर सुग्रीव नाम वानर रहता है वह तुम्हारी सहायता करेगा इससे तुम पम्पासर के समीपको जाओ ३० तब हे वीर! हम पम्पासर पर पहुँचे व उसी वनमें एक तापसी शबरी को देखा उससे सम्भाषण करके सीताका पता कुछ न पाकर अपने प्राणोंकी स्थिति से निराश होगये ३१ व हे वीर! यह वही पम्पा है जहां कि हमको व्याकुल देखकर लक्ष्मणने कहा कि हे पुरुषव्याघ्र! हे शत्रुनाशन! शोक न करो ३२ मैं आज्ञाकारी विद्यमानहूँ तो मैथिली

जी को फिर पाओगे यहीं हम वर्ष दिनरहे वे बारहमास हमको सौ वर्ष के समान बीते ३३ यहीं हमने सुग्रीवके अर्थ बाली को मारा यह वही किष्किन्धाहै जिसमें बाली राज्य करताथा ३४ जिसके मारने के बदले में सुग्रीव वानरराज अपने सब वानरों को सङ्गलेकर यहीं हमारे समीप आयाथा ३५ वानरों सहित सुग्रीव जबतक सभा में गये तबतक भरत व श्रीरामचन्द्र दोनों वीर पुरी में पहुँचे ३६ यह वार्त्ता श्रीराघव करतेही थे कि सुग्रीवने सुना कि पुरी में भरत व रामचन्द्रजी आये हैं झट आकर दोनों भाइयों के प्रणाम करके सुग्रीव यह बोले कि हे वीरो ! आप दोनों जने कहां चले व कौन कार्य करोगे ३७ यह कहकर आसनपर बैठाकर दोनों जनोंको अर्घ्य पाद्यादि दिया जब इस प्रकार सम्भाषण सत्कार पाकर श्रीरामचन्द्र जी सभामें बैठे ३८ तो अङ्गद हनुमान् नल नील पाटल गज गवाक्ष गवय पनस बड़े यशवाला ३९ मन्त्री पुरोहित दैवज्ञ दधिवक्र दूसरा नील शतबली मैन्द द्विविद गन्धमादन ४० वीरबाहु सुबाहु वीरसेन व विनायक सूर्य्याभ कुमुद सुषेण हरियूथप ४१ ऋषभ विनत दूसरा गवाक्ष व भीमविक्रम ऋक्षराज धूम्र ये सब अपनी अपनी सेनाओंसमेत आये ४२ व जितनी उनलोगोंकी स्त्रियांथीं सब आईं सुग्रीव की स्त्री रुमा व बाली की स्त्री तारा जोकि फिर सुग्रीव की स्त्री होगई थी ये भी दोनों आईं अङ्गद की सब स्त्रियां आईं अन्य सब उनकी सेवकियां आईं ४३ अतुल हर्ष पाकर सब बहुत अच्छा बहुत अच्छा कहकर बोलीं व सुग्रीवसहित सब महात्मा वानर ४४ व तारा आदिक महाभाग्यवाली सब वानरियां श्रीराघवजी को अच्छे प्रकार देखकर नेत्रों से आंसुओंको छोड़ते हुये व प्रणाम करके सबके सब यह बोले ४५ कि हे देव ! वे देवी सीताजी कहां हैं जिनको रावणको जीतकर तुमने अग्निमें शुद्धकरके महादेवजी के व अपने पिता दशरथजी के आगे ४६ ग्रहण करके अपनी पुरीको लेगये थे हे सुव्रत श्रीराम! उनको हम नहीं देखते फिर ताराने कहा कि हे रघुनन्दनदेव ! विना उनके तुम शोभित नहीं होते ४७ तुम्हारे विना सो वे पतिव्रता जानकीजी कहां हैं व अन्य जानो तुम्हारे कोई भार्य्या है नहीं यह मैं

जानतीहीहूँ पर भार्य्याहीन आप शोभित नहीं होते ४८ जैसे क्रौञ्च पक्षियोंका जोड़ा व चकई चकवोंकाजोड़ा अलग नहीं शोभितहोताव इस प्रकार ताराधिप चन्द्रमाके समान मुखवाली बोलतीहुई तारासे ४९ सब वक्ताओं में श्रेष्ठ कमलनयन श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हे चारुदंष्ट्रे! हे विशालाक्षि! काल वड़ा दुरतिक्रम है ५० इससे सब चराचर जगत्को कालहीका कियाहुआ जानो वह जो चाहताहै करताहै यह सुन उन सब स्त्रियोंको बिदाकरके सुग्रीव सम्मुख स्थितहोकर बोले ५१ कि जिसकार्य्य के लिये आप दोनों नरेश्वर यहां आये हैं उस कार्य्य को शीघ्रकहें क्योंकि यह कार्य्य करनेका समय है ५२ ऐसा कहते हुये सुग्रीवसे रामचन्द्रजी की प्रेरणा से भरतजी ने श्री राघवजीका लङ्कागमन बताया तब सुग्रीवने उनदोनों राघवेन्द्रोंसे कहा कि आपलोगों के सङ्ग ५३ राक्षसेन्द्र विभीषणजी के देखनेको हमभी लङ्का को चलेंगे जब सुग्रीवने ऐसा कहा तो श्रीरामचन्द्रजी ने कहा अच्छा चलो ५४ तब सुग्रीव व दोनों राघवेन्द्र तीनों पुष्पक पर चढ़कर चले कि तबतक विमान जाकर समुद्रकेतीर उत्तरतटपर झटपट पहुँचगया ५५ तब रामचन्द्रजी भरतसे बोले कि यही राक्षसेश्वर विभीषण अपने चार मन्त्रियों समेत अपने प्राण बचानेके अर्थ ५६ आये वैसेही लक्ष्मणने उनको लङ्काके राज्यका अभिषेक करदिया यहां हम समुद्रके इस पार तीनदिनतक स्थितरहे ५७ कि समुद्र हमको दर्शन देगा तो लङ्का जानेका कार्य्य होगा जब हे शत्रुहन्! तीनदिनतक इस समुद्रने हमको दर्शन न दिया ५८ तो हे राघव! फिर चौथेदिन इसके ऊपर हमारा कोपहुआ हमने धन्वाचढ़ाकर झट बाण हाथमें लिया ५९ तब हमको देखकर अत्यन्त भयभीतहो अपनी रक्षा चाहताहुआ लक्ष्मणके शरण में आया व सुग्रीवने समझाया कि राघव अब तुम क्षमाकरो ६० तब हमने समुद्रके सम्मत से वह बाणचलाया जहांजाकर वह गिरा वहांका जल सूखगया वही मरुदेश होगया तब इस समुद्रने अतिशय विनीत होके ६१ हमसे कहा कि हे राघव! सेतु बांधकर तुम लङ्काको जो जाओ हे नरव्याघ्र! इसप्रकार जलसे भरेहुये समुद्रको लांघके जाने

में मेरी अप्रतिष्ठा होगी इससे सेतुके ऊपरहोकर जाओ ६२ सो समुद्र में हमने यह सेतु वरुण के स्थानमें बांधा जिसकी समाप्ति वानरश्रेष्ठों ने तीनदिनों में की थी ६३ चौदहयोजन तो पहिले दिनमें कियागया व दूसरे दिन छत्तीसयोजन व तीसरे दिन पचास योजन ६४ यह तोरण व सुवर्णों के प्राकारयुक्त वही लङ्कापुरी दिखाई देती है यहां पर वानरों ने बड़ा भारी घ्यरहाव किया था ६५ यहांपर चैत्रशुक्लाचतुर्द्दशी को महायुद्ध होने का प्रारम्भहुआ व अड़तालिस दिनकेपीछे रावण मारागया ६६ यहांही राक्षसों में श्रेष्ठ प्रहस्तको नीलने मारा था हनुमान्ने धूम्राक्षको यहीं मारा था ६७व महात्मा इन सुग्रीवने महोदर व अतिकायको यहीं मारडाला था व यहां हमने कुम्भकर्ण को मारा व लक्ष्मणने मेघनादको ६८ व हमने इस स्थानपर राक्षसपुङ्गव दशग्रीवको माराथा यहांपर हम से मिलने के लिये ब्रह्मलोकसे ब्रह्माजी आये थे ६९ व पार्व्वतीस-हित वृषध्वज शूलपाणि महादेवजी आये थे इन्द्रादिक सब देवगण गन्धर्व्व यक्ष राक्षस सब आये थे ७० व यहांपर हमारे पिता महा-राज स्वर्ग्ग से आये थे जो कि अप्सराओं के समूहों से व विद्याधर किन्नरोंसे आवृतथे ७१ उन सबजनोंके सामने जानकी अपनी शुद्धि की इच्छासे अग्निमें पैठकर शुद्ध उसीप्रकारकी फिर निकलआई ७२ लङ्काके अधिप विभीषण ने देखा देवताओं ने देखा सबके सामने पिताजीकी आज्ञासे हमने ग्रहणकिया व उन्हों ने कहा कि हे पुत्र ! अब अयोध्याको जाओ ७३ तुम्हारे विना हमने मोक्ष नहीं चाहा तुमने हमको तारदिया अब भी हमको मुक्तिकी इच्छा नहीं है इन्द्रके लोकको जातेहैं ७४ फिर महाराजने लक्ष्मणसे कहा कि पुत्र तुमने बहुत पुण्य इकट्ठाकी जोकि अपने भाईकेसाथ वनको चलेआये अब इन्हीं अपनेभ्राताकेसाथ उत्तमलोकको प्राप्तहोओगे ७५ फिर जानकी को बुलाकर महाराज यह वचन बोले कि हे सुव्रते! अपने पतिके ऊ-पर तुम क्रोध न करना ७६ क्योंकि हे शुभलोचने! इस कर्म्म से तु-म्हारे भर्त्ताकी बड़ी ख्यातिहोगी रामचन्द्रजी पुष्पकपर स्थित भरतसे यह कहतेही थे ७७ कि वहां विभीषणके दूत आगये उन्होंने शीघ्रही

जाकर विभीषणसे कहा कि सुग्रीव व एक किसी अन्यसहित श्रीराम-चन्द्रजी आये हैं ७८ विभीषण ने रामचन्द्रजीका समीप आगमन सुनकर अपने दूतोंकी पूजा सब काम धनादिकोंसेकी ७९ व लङ्कापुरी को अलंकृतकराके मन्त्रियों समेत पुरीसे वे बाहर निकले व सुमेरु पर सूर्य्यके समान प्रकाशित विमानके ऊपर श्रीरामचन्द्रजीको देखकर ८० अष्टाङ्गप्रणाम करतेहुये विभीषण रामचन्द्रजी के समीप जाकर श्रीराघवजीसे बोले कि आज मेरा जन्म सफलहुआ व मैंने सब मनो-रथ पाये ८१ जो कि जगत्से वन्द्य महादेवादिकों के वन्दित आपके चरण देखे हे भगवन्! आपने मुझे इन्द्रादि देवताओं से प्रशंसित होने के योग्य किया ८२ इससे मैं इससमय अपने को देवताओं के स्वामी पुरन्दर से अधिक मानताहूँ सब रत्नोंसे उपशोभित रावण के प्रकाशित गृहमें रामचन्द्रजी जाकर विराजे तो ८३ अर्घ्यदेकर विभीषण हाथ जोड़कर सुग्रीव व भरतजी से बड़ी नम्रता से बोले कि ८४ यहां आयेहुये रामचन्द्रजीको जो देनाचाहिये वह कुछ मेरे हैही नहीं क्योंकि यह लंका रामने कंटक त्रैलोक्यकेशत्रु ८५ पापी रावण को मारकर श्रीरामचन्द्रजी ने मुझको दी है इससे यह लङ्का ये सब रत्नादि ये स्त्रियां ये सब पुत्र व मैं ८६ यह सब मैंने आप दोनोंजनों को देदिया व तुम्हारे नमस्कार करताहूँ कृपापूर्व्वक ग्रहण कीजिये विभीषण की दीहुई लङ्कादि सब सामग्री प्रीतिपूर्व्वक देने के कारण ग्रहणकरके रामचन्द्रजी व भरत दोनों महाराज बोले कि हमने यह सब तुम्हींको दिया यह सब अक्षयहोकर तुम्हारे सदा रहे तदनन्तर सब राजमन्त्री व लङ्कानिवासी लोग ८७ कौतूहलसे युक्तहोकर श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन के लिये आये व सबोंने विभी-षण से कहा कि हे प्रभो! हमलोगोंको श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन क-राओ ८८ तब विभीषण ने प्रत्येकको ले ले कर रामचन्द्रजी को विदित कराया कि यह अमुक आपके प्रणामकरताहै व यह सामग्री देताहै उन सब जनोंकी नजर भेंट रत्नादि सञ्चय रामचन्द्रजीकी प्रे-रणासे भरत व सुग्रीव ने ग्रहण किया इसप्रकार रामचन्द्रजी तीन रात्रितक वहां राक्षस के मन्दिरमें रहे ८९।९० चौथेदिन रामचन्द्रजी

सभामें विराजते थे तब निकषा जिसका कैकसीभी नामहै अपनेपुत्र विभीषण से बोली कि हे पुत्र! मैं भी रामचन्द्रजीको देखा चाहतीहूँ ९१ क्योंकि उनको देखकर महामुनिसत्तमलोग महापुण्य पातेहैं क्योंकि ये महाभाग चतुर्म्मूर्त्ति धारण कियेहुये साक्षात् सनातन महाविष्णु हैं ९२ व महाभागा सीता लक्ष्मी हैं उनको तुम्हारे ज्येष्ठभ्राताने नहीं जानपाया तुम्हारे पिताने पूर्व्वकालमें स्वर्ग में देवताओं के समागम में कहा था ९३ कि रघुके कुलमें श्रीमहाविष्णु दशरथ राजा के पुत्र दशग्रीव राक्षस के विनाश के लिये होंगे ९४ यह सुनकर विभीषण बोले कि हे मातः! ऐसा करो दो नवीन शुक्ल दिव्यवस्त्र लेओ व चन्दन दधि मधु अक्षतयुक्त एक सुवर्णका पात्र लेओ ९५ व दूर्व्वा भी उसमें धरलेओ श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनकरो सरमा को आगे करके पीछे देवकन्याओं को करलेओ ९६ व श्रीराघवजी के समीप चलो इससे हम आगेजाते हैं ऐसा कहकर विभीषण वहांगये जहां कि श्रीरामचन्द्रजी स्थितथे ९७ वहां जो देश ग्रामके लोग रामचन्द्र जीके दर्शन करनेको आये थे उनको हटाकर सभाको निर्जनकरके श्री रामचन्द्रजी से ९८ विभीषण यह बोले कि हे प्रजानाथ! यद्यपि आप को विदितहै तथापि मेरा एक विज्ञापन सुनिये जिसने रावण कुम्भ-कर्ण व मुझको भी उत्पन्न कियाहै ९९ वह यह हमारी माता हे देव! आपके चरणों को देखा चाहती है इससे आप कृपाकरके उसे दर्शन देने के योग्यहैं १०० यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हम माता के दर्शनकी कामना से उनके समीप चलेंगे हे राक्षसेन्द्र! शीघ्र हमारे आगे आगे चलो १०१ विभीषण से ऐसी प्रतिज्ञा करके श्री राघवेन्द्रजी श्रेष्ठ आसनपर से उठखड़े हुये व पहुँचकर दोनों हाथ जोड़कर शिर पर करके श्रीप्रभुजीने प्रणाम किया १०२ व कहा कि तुम धर्म्म से हमारी माता होतीहो इससे अभिवादन करते हैं व महातपसे व विविधप्रकार की पुण्य से १०३ हे देवि! तुम्हारे ये चरण जो मनुष्य देखता है वह पूर्ण होजाताहै हे पुत्रवत्सले! सो हम इन चरणों को देखकर पूर्ण व पवित्रहुये १०४ जैसे हमारी कौसल्या माता हैं वैसेही आपहैं तब निकषा रामचन्द्रजी से बोली

कि चिरञ्जीवीहोओ व सुखीहोओ १०५ हे वीर! हमारे भर्त्ताने कहा था कि महाविष्णु मानुषका रूप धारण करके रघुकुल में देवताओं के हितके अर्थ अवतीर्ण हुये हैं १०६ व रावण के विनाश के लिये विभीषण को ऐश्वर्य्य देने के लिये अवतीर्ण हुये हैं बालीका वध समुद्र में सेतुबांधना १०७ दशरथजी के पुत्र इन सब कार्य्यों को करेंगे अपने स्वामी के उस वचनका स्मरण करके इससमय मैंने तुमको जाना १०८ सीतालक्ष्मी व आप महाविष्णु और सब वानर देवताहैं हे पुत्र! अब मैं गृहको जाऊँगी तुम स्थिरकीर्त्ति पाओ १०९ तब विभीषण की स्त्री सरमाबोली कि यहीं मैंने अशोकवनिका में स्थित कृपाकरनेवाली जानकीदेवी की सेवा पूरावर्ष कीथी वे आप की प्रिया सुखसे तो हैं न ११० हे परन्तप! मैं नित्य सीताजी के चरणों का स्मरण किया करतीहूँ व रात्रि दिन चिन्तना किया क-रतीहूँ कि उन देवीजीको कबदेखूँगी १११ आप किसलिये यहां जानकीदेवी को नहीं लाये उनके विना आप अकेले नहीं शोभित होते हैं ११२ हे परन्तप! सीता तुम्हारे समीप शोभित होती हैं व तुम उनके समीप ऐसा कहतीहुई के वचन सुनकर भरतजी ने श्री राघवजी से पूँछा कि यह कौन स्त्री है जो वार्त्ता करती है ११३ मन की बात जाननेवाले श्रीरामचन्द्रजी भरत से शीघ्र बोले कि यह विभीषण की भार्य्या है व सरमा इसका नाम है ११४ व सीता की अतिदृढ़प्रियतमा महाभागा सखी है सम्पूर्ण तुम समयका किया हुआ देखो अब नहीं जानते अन्य क्या किया चाहती है ११५ हे सुभगे! अब तुम अपने गृहको जाओ व अपने पति विभीषण की सेवाकरो व जिनको तुम पूँछतीहो वे देवी हमको छोड़कर चलीगई जैसे भाग्यहीन पुरुषको गति छोड़देती है ११६ हे सुभ्रु! उनके विना हम किसीप्रकार कभी प्रीति को नहीं पाते सबकहीं भ्रमण करते हैं पर सब दिशाओं को शून्यही देखते हैं ११७ यह कहकर सीताकी प्रियासखी को बिदाकरके व निकषाके चलेजानेपर रामचन्द्रजी वि-भीषण से बोले ११८ कि तुम कभी देवताओं का अप्रिय न करना न अमरोंका कुछ अपराधही करना हे पापरहित! तुम कुबेरकी आज्ञा

से सब कार्य्य करना ११९ व लङ्कामें किसी प्रकारसे कभी जो कोई मनुष्य आजावे तो कोई राक्षस उसे न मारें किन्तु हमारे समान उसको देखें १२० तब विभीषण बोले कि हे नरव्याघ्र ! आपकी आज्ञासे ऐसाही सब करेंगे विभीषण ऐसा रामचन्द्रजी से कहरहे थे कि वायुदेव रामचन्द्रजी से बोले कि १२१ जिसने पूर्व्वकालमें राजाबलिको बांधाथा वह वैष्णवीमूर्त्ति यहां है उस महाभाग्यवती मूर्त्तिको लेकर आप कान्यकुब्ज नगर में स्थापित करें १२२ रामचन्द्रजी का अभिप्राय जानकर वायुने ऐसा कहाथा तब विभीषण सब रत्नों से वामनजी की मूर्त्तिको भूषित करके १२३ लेआकर रामचन्द्रजी को अर्प्पण करदिया व यह वाक्य बोले कि हे राघव ! जब मेघनाद ने इन्द्रको जीताथा १२४ तब इन कमलनयन वामन जी को वहां से यहां लायाथा अब आप इन देवदेव को लेजायँ व प्रतिष्ठापित करें १२५ अच्छा ऐसाही करेंगे यह कहकर श्रीरामचन्द्र जी पुष्पकपर चढ़े असंख्य धन रत्न व सुरोत्तम वामन को १२६ लेकर चढ़े व सुग्रीव भरत वामनजी के पीछे चढ़े जब चलनेलगे तो आकाशसे रामचन्द्रजी ने विभीषणसे कहा कि अब तुम ठहरो १२७ राघवजी का वचन सुनकर विभीषण फिर श्रीरामचन्द्रजी से बोले कि हे विभो ! जो आज्ञा आपने दीहै हम सब करेंगे १२८ परन्तु हे राजेन्द्र ! इस सेतुपर होकर पृथ्वीपरके सब मनुष्य यहां आकर बाधा करेंगे तब आपकी आज्ञाकी बाधा होगी १२९ तब हे देव ! हमारा कौन नियम रहेगा व हमको क्या करनाहोगा वह भी कहदीजिये विभीषण राक्षसराज के कहेहुये ऐसे वचन को सुनकर १३० हाथमें धनुष लेकर श्रीराघवजीने सेतुके दोखण्ड करदिये व तीन टुकड़े वेग से करके बीचमें दशयोजन बनाय विदीर्णही करडाला १३१ एक योजनकाटके एकखण्ड के इसप्रकार सेतुके तीनखण्ड होगये तब समुद्रके इसपार आकर श्रीरामचन्द्रजी ने वहां उपायन मिलेहुये पदार्थों से लक्ष्मी के पति भगवान् की पूजा १३२ करके देवदेव जनार्द्दनकी मूर्त्ति रामेश्वर के नामसे अभिषेक करके वामनजी को लेकर रामचन्द्रने १३३ स्थापितकी व फिर दक्षिण समुद्र के इस

पार राघवजी आये इतने में अन्तरिक्षसे मेघनादसे भी अधिक गर्जती हुई वाणी से रुद्रजी बोले १३४ कि हे राम ! हे राम ! तुम्हारा कल्याणहो जो तुम रामेश्वरनाम जनार्दनकी मूर्ति यहां स्थापित कियेजातेहो उसमें हम सदा बसे रहेंगे हे राम ! जबतक यह जगत् रहेगा व जबतक यह धरणी रहेगी १३५ व जबतक तुम्हारा यह सेतु रहेगा तबतक हम यहां स्थितरहेंगे देवदेव महादेवकी ऐसी अमृततुल्य वाणी सुनकर १३६ श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हे देव देवेश ! तुम्हारे नमस्कारहै हे भक्तोंको अभय करनेवाले ! हे गौरी-कान्त ! हे दक्षयज्ञविनाशन ! तुम्हारे नमस्कार है १३७ भव शर्व रुद्र वरद पशुपति उग्र व कपर्दी बार बार नित्य तुम्हारे नमस्कार है १३८ महादेव भीम त्र्यम्बक दिशाओं के पति ईशान भगघ्न व अन्धकघाती के नमस्कार है १३९ नीलग्रीव घोर वेधा वेधासे स्तुति कियेहुये कुमार शत्रुके नाश करनेवाले व कुमारके उत्पन्नकरनेवाले तुम्हारे नमस्कार है १४० विलोहित धूम्र शिव क्रथन नित्य नील-शिखण्ड शूली दैत्यों के नाशकरनेवाले तुम्हारे नमस्कार है १४१ उग्र त्रिनेत्र हिरण्यवसुरेतस् अनिन्द्य अम्बिकाभर्त्ता सब देवोंसे स्तुत तुम्हारे नमस्कारहै १४२ अभिगम्य काम्य सद्योजात वृषध्वज मुण्ड जटिल व ब्रह्मचारी के नमस्कार है १४३ तप्यमान शान्त ब्रह्मण्य जय विश्वात्मा विश्वसृट् व विश्वको आच्छादित करके स्थित होने वाले तुम्हारे नमस्कार है १४४ दिव्य प्रपन्नार्त्तिहर भक्तानुकम्पी विश्वतेज मनोगत हे देव ! तुम्हारे बार २ नमो नमः है १४५ पुल-स्त्यमुनि भीष्मजी से बोले कि इसप्रकार जब देवदेव हरकी स्तुति श्रीहरिनेकी तो भक्तिसे नम्र आगे खड़ेहुये राघवजी से महादेवजी बोले कि १४६ हे राघव ! तुम्हारा कल्याण हो जो तुम्हारे मनमें हो कहो सब कुछ देंगे ऐसा कुछ पदार्थ नहीं है जो देनेके योग्य नहीं है हे कमलनयन ! हे महाबाहो ! तुम सनातन देवदेवहो आप सा-क्षान्नारायण हैं मनुष्ययोनिमें गुप्तहैं १४७ आप देवकार्य्य के लिये अवतरे थे सो तुमने देवकार्य्य किया हे शत्रुहन् ! इससमय सब कार्य्य करचुकेहो अब अपने स्थानको चलेजाइये १४८ हे रघुनन्दन ! तुम

ने सेतुनाम उत्तम तीर्थक्रिया सो है शर्जन् १४९ आकर जो मनुष्य यहां सागर के दर्शन करेंगे जो महापातकों से युक्त भी होंगे तो उन के पाप कटजायँगे ब्रह्महत्यादि जो कोई और कष्टहोंगे सब १५० हमारे व समुद्र के दर्शन से नष्ट होजायँगे इसमें विचार न करना चाहिये हे रघूद्वह! जाइये गङ्गाके तटपर अब वामनजीको स्थापित कीजिये १५१ व पृथिवी के आठभागकरके अपने आठपुत्रों व भतीजों को देकर हे देवदेव! अपने स्थान श्वेतद्वीपको चलेजाइये तुम्हारे नमस्कार है १५२ फिर रामचन्द्रजी उनके प्रणाम करके विमानपर चढ़ेहुये पुष्करतीर्थ में पहुँचे परन्तु वहां विमान ऊपरको न गया अड़गया तो श्रीराघवजीने विचारा कि १५३ यह क्या है जो निरालम्ब आकाश में यह विमान बीचमें अड़गयाहै हे सुग्रीव! इसमें कुछ कारणही होगा इसे देखो १५४ सुग्रीव श्रीरामचन्द्रजी के कहने से विमानपर से पृथ्वीपर उतरे वहां सुरसिद्धों के साथ बैठे हुये ब्रह्माजी को उन्होंने देखा १५५ ब्रह्मर्षिगणों सहित व चारों वेदों सहित देखकर आकर श्रीरामचन्द्रजी से कहा कि हे रामचन्द्र जी! लोकके पितामह १५६ ब्रह्माजी विश्वेदेव आदित्य पवन लोकपालोंसहित व अन्य देवताओं समेत बैठे हैं सो हे देव! पुष्पक विमान पितामह को नहीं नाँघता १५७ यह सुन सुवर्ण से भूषित विमान पर से श्रीरामचन्द्रजी उतरकर मंत्रीसहित ब्रह्माजी के नमस्कार करके १५८ आठ अङ्गोंसे प्रणामकर पांच अङ्ग पृथ्वीपर लगाकर देवदेव ब्रह्माजीके नमस्कारकरके श्रीराघव स्तुति करनेलगे व ब्रह्माजी से बोले कि १५९ लोककर्त्ता प्रजापति सुरों से पूजित देवनाथ लोकनाथ प्रजानाथ जगत्पति तुम्हारे नमस्कारहै १६० हे देव देवेश! हे सुरासुरनमस्कृत! हे भूतभव्यभवन्नाथ! हे हरे! हे पिङ्गलोचन! तुम्हारे नमस्कार है १६१ तुम बालहो वृद्धरूपीहो व मृग चर्म तुम्हारा आसन व आच्छादनहै तुम तारणीयहो व हे देव! तीनों लोकों के पतिहो १६२ हे हिरण्यगर्भ पद्मगर्भ वेदगर्भ व स्मृति देनेवाले! हे महासिद्ध महापद्मी महादण्डी व मेखलावाले! तुम्हारे नमस्कारहै १६३ कालहो कालरूपी हो नीलग्रीवहो ज्ञानवालोंमें

श्रेष्ठहो वेदों के करनेवालेहो अर्भक नित्यहो पशुओं के पति व अव्ययहो १६४ दर्भपाणिहो हंसकेतुहो कर्त्ता हर्त्ता हर हरिहो जटी मुण्डी शिखी दण्डी लकुटी व महायशस्वीहो १६५ भूतेश्वर सुराध्यक्ष सर्वात्मा सर्वभावन सर्वग सर्वहारी स्रष्टा गुरु अव्यय १६६ कमण्डलुधर देव स्रुक स्रुवादिधारक हवनीय अर्चनीय ॐकार ज्येष्ठ सामगानेवालेहो १६७ मृत्यु अमृत पारियात्र सुव्रत ब्रह्मचारी व्रतधर गुहावासी सुपङ्कज १६८ अमर दर्शनीय बालसूर्यनिभ व दाहिने बायें पत्नियों करके सेवाको प्राप्तहो १६९ भिक्षु भिक्षुरूपी त्रिजटी व जटिल चित्तवृत्ति करनेवाले काम मधु व मधुकरहो १७० वानप्रस्थ वनगत आश्रमी पूजित जगद्धाता कर्त्ता पुरुष शाश्वत व ध्रुव हो १७१ धर्म्माध्यक्ष विरूपाक्ष त्रिधर्म्म भूतभावन त्रिवेदी बहुरूप व अयुतसूर्य्यसमप्रभ हो १७२ मोहकरनेवाले व बन्धक दानवों के लिये विशेष करके हो देवदेवदेव पद्माङ्कित त्रिनेत्र कमलकी तुल्य जटावालेहो १७३ हरिश्मश्रु धनुर्द्धारी भीम धर्म्मपराक्रम हो जब ब्रह्म जाननेवालों में श्रेष्ठ ब्रह्माजीकी रामचन्द्रजीने इस प्रकार स्तुति की तो १७४ श्रीरामचन्द्रजीका हाथ पकड़ कर ब्रह्मा उनसे बोले कि आप तो महाविष्णु हैं मनुष्य का देहधारण करके भूतल में अवतीर्णहुये हैं १७५ सो हे विभो! आपने सब देवकार्य्य किया जिस जिस देवकार्य्यके लिये अवतारलिया इन वामनजीको गङ्गाजी के दक्षिण तटपर स्थापित करके १७६ अपनी पुरी अयोध्यामें पहुँच कर अपने दिव्यलोक को जाइये इस प्रकार ब्रह्मा से बिदा हुये श्री रामचन्द्रजी पितामहके प्रणाम करके १७७ पुष्पकविमान पर चढ़े व मथुरापुरीमें पहुँचे व वहां भार्य्या पुत्रसमेत शत्रुघाती शत्रुघ्नजी को देखकर १७८ भरत सुग्रीव सहित श्रीराघवजी बहुत सन्तुष्टहुये शत्रुघ्न भाईकेसमीप दोनोंजने इन्द्र व वामनकेसमान प्राप्तहुये १७९ तब शत्रुघ्नजी ने शिरझुकाकर पांचअङ्ग भूमिपर लगाकर प्रणाम किया ऐसे पृथ्वी पर गिरकर भाई को प्रणामकरते देखकर श्रीरामचन्द्रजी ने उठाकर गोद में बैठा लिया १८० फिर भरत व सुग्रीव अच्छीतरहसे शत्रुघ्नजी को मिले फिर बैठेहुये श्रीरामचन्द्रजी को

अर्घ्य देकर शीघ्र १८१ अपना आठ अङ्ग सहित राज्य श्रीराघव जी को निवेदन किया तब रामचन्द्रजी को आये हुये देखकर सब मथुरावासी जन १८२ जिनमें कि बहुतसे ब्राह्मणलोगथे व अन्य उनसे कम वैश्यलोगथे सब श्रीराघवजीके दर्शनके लिये आये उन सब प्रकृति ब्राह्मण व वैश्योंसे सम्भाषणकरके १८३ पांचदिन वहां रहकर श्रीरामचन्द्र जी ने समुद्रके तीरको जाने का मन किया तब शत्रुघ्नजी ने रामचन्द्रजी को घोड़े हाथी १८४ व कच्चा पक्का दोप्रकारका बहुतसा सुवर्ण भेंटदिया तब प्रसन्नहोकर रामचन्द्रजी ने कहा कि यह सब हमने इन दोनों तुम्हारे १८५ पुत्रोंको दिया तुम इन दोनोंको मथुरा के राज्यपर स्थापितकरके शीघ्र अयोध्या को आओ ऐसा कहकर रामचन्द्रजी वहां से चले और मध्याह्न के समय १८६ महोदयमें जाके व गङ्गाके दक्षिणतटपर वहीं गङ्गासागरमें वामनजीका स्थापनकर वहां के ब्राह्मणों से कहा व होनेवाले और विद्यमान वहांके राजाओंसे कहा कि १८७ हमने यह धर्म्मका सेतु ऐश्वर्य्य बढ़नेके लिये कियाहै सो कालको पाकर इसको पालना लोप कभी न करना १८८ हाथ फैलाकर यह प्रार्थना हम तुमलोगों से करते हैं हे राजालोगो! हमारे कियेहुये इस तीर्थ में योग क्षेम करते रहना १८९ व निरालसहोकर नित्य प्रतिदिनकी पूजाकरते रहना व ये ग्राम और लङ्कामें पायाहुआ धन दियेजाते हैं १९० ॥

चौ० इमिवामनकरथापनकीन्हो । वानरपति सुग्रीवहि चीन्हो ॥
कह किष्किन्धा जाहु हरीशा । आप अयोध्या पहुँचि महीशा ।
पुष्पक सों बोले रघुराजा । पुनिआयहुजबहोइहिकाजा १९१
जाहु धनेश्वर बसत जहांहीं । अब यहिसमय काज कछु नाहीं ॥
इमि सब कार्य्य कीन श्रीरामा । भे कृतकृत्य शेष नहिं कामा १९२
कह पुलस्त्य सुनु भीष्म भुआला । यह सब कथा कही गतजाला ॥
रामकथा अतिशय यह पावनि । कहीकहोअबकामनभावनि १९३
सुना चहत सो सकल सुनावें । कौतूहल युत तुम्हें बतावें ॥
नृपनन्दन जाके तुम ग्राही । सो सबकहबतनिकशकनाही ॥
पूँछहु जो पूँछन अभिलाषा । कहब सकल तजिके सबमाषा १९४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेवामनप्रतिष्ठानामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

दो० उनतालिसें कह पद्मकी सब उत्पत्ति बनाय॥
ताहित प्रलय बखानकिय सकलप्रमाण लखाय १
कथा मृकण्ड तनूजकी भाषी प्रलय मँझारि॥
जिमि हरि उदर लखी सकल यज्ञक्रिया हितकारि २

इतनी कथा सुनकर भीष्मपितामहजी ने पुलस्त्यमुनि से पूँछा कि वामनजीका माहात्म्य तो आपने विस्तारसे कहा अब फिर उन्हीं श्रीविष्णुभगवान् का और माहात्म्य कहिये १ प्रथम पद्मका रूप कैसे हुआ व उससे यह जगत् कैसे हुआ व पद्म के मध्य में पूर्वसमय वैष्णवीसृष्टि कैसे हुई २ व पाद्म महाकल्प में पद्ममय जगत् कैसेहुआ व जलार्णव में प्राप्त श्रीविष्णुजी की नाभि से कमल कैसे उत्पन्नहुआ ३ व सागर के जलमें शयनकरतेहुये पद्मनाभ भगवान् का प्रभाव कैसे ऐसाहुआ व उस कमलपर सब देव व ऋषिगण कैसे स्थित होसके ४ हे योगविदाम्पते! यह सम्पूर्ण योग कहो कि कैसे उससे यह सनातनलोक बनाया ५ व कैसे स्थावर जंगम सब के नष्ट होजानेपर शून्य एकार्णव में भगवान् रहजाते हैं व भूगोल भस्म होजाता है कैसे उस एकार्णव में सब उरग राक्षसादि नष्ट हो जाते हैं ६ व जब पवन अग्नि आकाश नष्ट होजाते हैं व धर्म्म स्थान भूतल भी नष्ट होजाता है व सब केवल गह्वररूप होजाता है पृथिव्यादि पञ्चमहाभूतों का विपर्य्यय होजाता है ७ तब योगवेत्ता विश्वपति श्रीभगवान् किस योगपर स्थित होकर आप अकेले रहजाते हैं अन्य कोई भी नहीं रहजाता ८ हे ब्रह्मन्! परम भक्ति से सुनते हुये हमसे यह सम्पूर्ण वर्णन करो क्योंकि यह नारायणकाही यश हमने पूँछा है ९ इससे आप इसके कहने के योग्य हैं हे भगवन्! कुछ हमीं अकेले नहीं पूँछते किन्तु ये सब बैठेहुये मुनिलोग भी श्रवण किया चाहते हैं इससे अवश्यही कृपाकरके कहिये पुलस्त्यमुनि यह सुनकर कहनेलगे कि हे कुरुकुलभूषण! धन्य हो जो नारायणके सुयश के सुनने की तुम्हारी इच्छाहै १० सो तु-

त्तमकुलमें उत्पन्न तुमको योग्यही है सुनो जैसा हमने आदिपुराणों में सुना है व देवताओं से श्रवण कियाहै ११ व महात्मा ब्राह्मणों से भी कहतेहुये सुनाहै व जैसे तपस्वियों में श्रेष्ठ बृहस्पति के समान प्रकाशित १२ पराशरजी के पुत्र श्रीमान् हमलोगों के गुरु व्यास जीने कहा है वह हम तुमसे कहेंगे उसमें भी अब जैसी हमारी शक्ति है व जैसा स्मरण है व जो हमने उन ऋषिजीकी द्वारा जानाहै सब कहेंगे १३ जो मैंने अच्छीतरह से ऋषियों की मार्ग से जानाहै हे सत्तम ! उन नारायण का यश कौन सम्पूर्ण कहसक्ता है १४ क्योंकि विश्वके पिता ये ब्रह्माजी भी निश्चय करके नहीं जानते कि बस यह ऐसाही है क्योंकि वह नारायण का यश विश्वेदेवों का कर्म्म है व महर्षियों का गुप्त धन है १५ वही सब यज्ञोंका पूजन है व तत्त्वदर्शियोंका तत्त्वहै व अध्यात्मयोग जाननेवालों का वही अध्यात्म है व दुष्टकर्म्मोंको नरकरूपहै १६ व वही अधिदैव वही दैव का अधिदैव है जिसकी आधिदैविकसञ्ज्ञा है व पञ्चमहाभूतों का अधिभूत है व परमर्षियों को पर प्रधानरूप है १७ व वेदनिष्ठलोग उसी को यज्ञ कहते हैं व तपस्वीलोग तप कहते हैं व जो इस सब के कर्त्ता हैं व जो कारकहै व बुद्धिहै जो क्षेत्रज्ञ हैं १८ प्रणवरूप पुरुष सब के शिक्षक व एक व बहुत अलग २ भी कहाते हैं व पांचप्रकारके प्राण वही हैं ध्रुव वही हैं नाशरहित हैं १९ काल पाक यज्ञ यज्ञकर्त्ता पाठक विविध प्रकार के भावोंसे जो कहेजाते हैं व इनसबोंसे परे हैं २० वेही भगवान् श्रीनारायण इस संसारको करते हैं व वेही नष्ट भी करदेते हैं व वेही अपनी कई मूर्त्तियों को धारण करके उनसे सब कराते हैं इससे यह सब उन्हींकी कृतिहै २१ व हम सबलोग उन्हीं की यज्ञकरते रहते हैं व सो वेही व उनका उत्थान कोई नहीं जानता वेही वक्ता वेही वक्तव्य वेही हम व वेही जो हम तुमसे कहते हैं २२ जो सुनते हैं व जो सुनाजाता है इसीप्रकार जो कुछ और कहा जाताहै वे सब कथा व वेही श्रुतियां वेही धर्म वही धर्म करनेवाला व धर्म में सब तत्पर २३ विश्व है वही विश्वके प्रति हैं बस उन्हीं को नारायण कहते हैं जो सत्य जो मिथ्या जो आदि जो मध्य जो

अन्त्य व जो मर्य्यादारहित व जो भविष्य २४ व जो कुछ चर अचर है वह सब अन्य कुछ नहीं है किन्तु वही पुरुषश्रेष्ठ प्रधानभूत है हे कुरुनन्दन ! देवताओं के चार सहस्र वर्षोंका सत्ययुग होता है २५ व उसमें देवताओं केही आठसौ वर्षोंकी सन्ध्या और जोड़ी जाती है अर्थात् १७२८००० मनुष्यों के वर्षोंका सत्ययुग होताहै उस सत्ययुग में धर्म्म के चार पाद रहते हैं व अधर्म्म रहताही नहीं २६ इसीसे जितने मनुष्य उस युगमें उत्पन्न होते हैं सब अपने अपने वर्णाश्रमके धर्म्म में तत्पर होते हैं ब्राह्मणलोग सब धर्म्म में तत्पर होते व राजालोग राजवृत्तिमें तत्पर होते २७ वैश्यलोग खेतीके कर्म में रतहोते व शूद्रलोग ब्राह्मणादि तीन वर्णोंकी शुश्रूषा करते इसी से उस युग में सत्य व पराक्रम व धर्म सदा बढ़ते रहते २८ सज्जन लोग धर्म्महीका आचरण करते इससे धर्म बढ़ता रहता हे राजन् ! सत्ययुग में सब जनों का यही हालथा २९ इससे नीचकुलवाले मनुष्योंकी भी धर्म्मही सञ्ज्ञाथी व देवताओं के तीन सहस्र वर्षोंका त्रेतायुग होताहै ३० व उसमें भी देवताओं केही वर्षों से छहसौवर्ष की सन्ध्या जोड़ी जाती है अर्थात् मनुष्यों के १२९६००० वर्षोंका त्रेतायुग होताहै जिसमें धर्म के तीन पाद व अधर्म के दो पाद होते हैं ३१ जिसमें सत्य व पराक्रम व क्रिया धर्म विधान कियेजाते हैं त्रेता में ये विकृतिको प्राप्त होजाते हैं वर्णलोभी होजाते हैं ३२ चारोवर्णोंकी कृत्य शान्ति व दुर्बलता यह विचित्र त्रेतायुगकी गति ब्रह्माने बनाई है ३३ इस युगमें प्राणी राजसी होते हैं इससे सत्यका बोलना कुछ कम होजाता है धर्म के तीनही चरण रहजाते हैं क्योंकि इसमें लोग पापकरने लगते हैं द्वापरयुग देवताओं के दो सहस्र वर्षोंका होताहै व उसमें देवताओं केही चारसौ वर्षोंकी सन्ध्या जोड़ीजातीहै अर्थात् मनुष्योंके ८६४००० वर्षोंका होताहै ३४ तिसमेंभी प्राणी अर्थहीमें युक्तरहते हैं क्योंकि रजोगुणसे ताड़ित होते हैं व शठ व नैष्कृतिक व क्षुद्र होते हैं ३५ इससे धर्मके दोहीपाद रहजाते हैं अधर्मके ३ पाद होतेहैं प्राणी अपने धर्म्मसे विपरीत भी चलनेलगते हैं ३६ ब्रह्मण्यभाव दूर होजाताहै आस्तिक्य नहीं रहती व्रत उप-

वासों को छोड़देतेहैं ३७ व कलियुग देवताओंके सहस्र वर्षोंका होता है इसमें देवताओं केही वर्षोंके दोसौ वर्षों की सन्ध्या जोड़ी जाती है अर्थात् मनुष्यों के ४३२००० वर्षों का कलियुग होताहै जिसमें चार पादोंका अधर्म्म रहताहै व धर्म्म पादरहित होजाता है ३८ इसमें सब मनुष्य कामी तामसी व क्षुद्रस्वभाववालेही उत्पन्न होतेहैं नतो कोई स्वधर्म्म पर चलताहै न कोई साधु स्वभाव होताहै न सत्य बोलताहै ३९ सब नास्तिक व सब वेद ब्राह्मणोंके अभक्त मनुष्य उत्पन्न होतेहैं अहङ्कारसे बँधेहुये स्नेह बन्धन से क्षीण होते हैं ४० व ब्राह्मण सब इस कलियुगमें शूद्रोंके आचार करते हैं व कलियुग में ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ वानप्रस्थ व यति ये सब आश्रम अपने२धर्म्म कर्म्मके विपरीत होते हैं४१ हे कुरुनन्दन!इसयुगके अन्त में वर्णोंका सन्देह होजायगा यह देवताओं के बारह सहस्रवर्षों में चारोंयुगों की संख्या पूर्व्वकालकी बनीहुईहै ४२ ये चारोंयुग अपनी सन्ध्या सन्ध्यांशोंसेयुक्त जब हजार बार बीतजाते हैं तब ब्रह्माजीका एकदिन होता है जब ऐसा ब्रह्माका दिन बीत जाता है तो सब प्राणियों के ४३ शरीरकी निर्व्वृत्ति देखकर काल संहार करने की बुद्धिसे सब देवताओंका सब ब्राह्मणोंका ४४ दैत्योंका दानवोंका राक्षसोंका यक्षोंका व पक्षियोंका गन्धर्वोंका अप्सराओंका सर्प्पोंका ४५ पर्व्वतोंका नदियोंका व हे सत्तम!सब पशुओंका सब तिर्य्यग्योनिवाले मृगपक्ष्यादि जीवों का क्रिमियों व दंशियों का ४६ महाभूतपति पृथिव्यादिकों के करनेवाला संसारके संहारकरने के लिये उद्यत होताहै ४७ व सूर्य्यहोकर सब ओषधियोंको शुष्ककरता व वायुहोकर प्राणियों का प्राणजाल निकाल लेताहै व अग्नि होकर सब लोकोंको भस्मकरताहै फिर मेघहोकर बड़ीभारी वर्षाकरताहै ४८ व नारायण योगी सूर्य्यकी द्वादश मूर्त्तियोंको धारणकरके अपने महातीक्ष्ण किरणोंसे सातोसागरोंको सुखांडालते हैं ४९ इससे सब नदी कूप तड़ागादि जलाशय शुष्क होजाते हैं पानी वह पीलेताहै व वे योगवेत्ता पर्व्वतोंकाभी सब जल खींचलेते हैं ५० फिर पृथ्वी रसातलको चलीजाती है श्रीनारायण सबजलको खींच-

कर सूर्य्य रूपसे उत्तम रसको पीकर उसीमें क्रीड़ाकरने लगते हैं ५१ मूर्त्तिमान् व विना मूर्त्तिमान् व और जो कुछ प्राणी मात्रोंको निश्चित पदार्थ होतेहैं उन सबको श्रीकमलनयन पुरुषोत्तम अपने में मिलालेतेहैं ५२ तब बलवान् वायुहोकर सब जगत् को कँपाते हुये प्राण अपान में मिलकरके वायुओंसे श्रीहरि खींचलेते हैं ५३ तब सब देवगणों के व सब अन्य प्राणियों के पांच इन्द्रियों के सबगुण व जितने पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश हैं ५४ व जो सूंघने के पदार्थ व घ्राण व शरीर पृथ्वी में मिलजाते हैं लोकको लीन करनेवाला भगवान् दोघड़ी में नाश करदेता है ५५ जिह्वा रस तैल आदिरस जलमें मिलजाते हैं व रूप चक्षु इन्द्रिय से देखनेके पदार्थ व नेत्र ज्योतिके आश्रित जितने गुणहैं ५६ स्पर्श प्राण चेष्टाआदि पवनके आश्रित गुण शब्द श्रोत्र इन्द्रिय के गुण घ्राण इन्द्रिय व जो आकाश के आश्रित गुणहैं ५७ व सबकी बुद्धि व मन व चित्त जो क्षेत्रज्ञ के आश्रित हैं वे सब वरदायक परमेष्ठी हृषीकेशमें प्रवेश करते हैं ५८ व सूर्य्यरूपी भगवान् के किरणोंसे घिरेहुये सब वायुसे भ्रमण होतेहुये भूमिकी शाखाके आश्रित होजाते हैं ५९ इन सबोंके संहार से अग्नि उत्पन्न होकर सैकड़ों प्रकारोंसे जलने लगता है व उस अग्नि का संवर्त्तक नाम होताहै वह सब ओरसे सबको भस्म करदेता है ६० पर्व्वत सहित सब छोटे बड़े वृक्ष झाड़ियों को लता गुल्मादिकों को दिव्य सब विमानों को व त्रिविधप्रकार के दिव्यपुरों को ६१ व अन्य भी जो चढ़ने रहने बैठने के पदार्थ हैं सबको वह अग्नि क्षणमें जलादेता है इस प्रकार सब लोकोंको भस्म करतेहुये अग्निको देखकर सब लोकों के करनेवाले व गुरु स्वयम्भू भगवान् ६२ युगान्त में लोकसम्भवमूर्ति धारण करते हैं तब इन्द्र बड़ीकालीघटाओं से युक्त महामेघ होकर ६३ दिव्यजल साकल्य से पृथ्वीको तृप्त कर देतेहैं फिर दुग्ध के समान स्वादिष्ठ श्वेत दिव्यजलसे ६४ जोकि बहुतही शीतल निर्मल होता है पृथ्वीको नाश करदेते हैं उस शीतल जलसे सम्पृक्त यानी मिली हुई जलकी साधर्म्य से पृथ्वी ६५ को एकार्णव करदेते हैं तब वह

सब प्राणियोंसे रहित होजातीहै व तब सब बड़े २ जन्तुभी अमित तेजस्वी श्रीविभु में प्रविष्ट होजाते हैं ६६ क्योंकि सूर्य्य पवन आकाश नष्टहोकर अतिसूक्ष्म होजातेहैं फिर सब समुद्रोंको व प्राणियों को अपने में शुष्ककरके व समुद्रों के जीवोंको ६७ जलाकर सिकोड़ के बनाय अपने में लीन करके वह सनातन परमेश्वर अकेला सो रहताहै अपने पुरानेरूप को धारण करके अमितविक्रमीयोगी सोता है ६८ एकार्णव जलमें व्याप्तहोकर योगकी उपासना करनेलगताहै व उस महाप्रलय के समुद्र में अनेक सहस्रयुगों तक अकेला आप रहताहै ६९ न अन्य कोई प्रकटही जानपड़ताहै न कोई गुप्तही रहता है व न कोई यही जानता है कि जिसका पुरुष नामहै वह कौन है व योग कौनहै और योगवान् कौनहै ७० न कोई उसके पीछे न सन्मुख न पार्श्वमें न आगे कोई देखपड़े व जानपड़े ७१ बस उस देवसत्तम को छोड़कर और कोई तो रहताही नहीं नभ पृथ्वी व पवनमय प्रकाश जो कि भुवनमें रहताहै प्रजापति शेष व इन्द्रमुनि व ब्रह्मा व वेदों को भी अपने में मिलाकर वह प्रभु शयन करने की इच्छा करता है ७२ व इस प्रकार एकार्णव होजानेपर महाद्युति परमेश्वर शयन कर रहता है व पृथ्वीको भी उसी जलमें मिलादेता है हंसभगवान् नारायणरूप ७३ व आप महत्तत्त्व व रजोगुण के बीचमें उसी महार्णव में रजोगुण से रहित होकर अक्षयरूपसे रहता है उसीको ब्रह्म कहते हैं ७४ वह अपनेरूप स्वरूप से तमोगुण के साथ होजाता है परन्तु मनको सत्त्वगुणही में स्थापित रखता है जहां कि सत्त्व रहता है ७५ क्योंकि वह आप तो सब गुणोंसे रहित होताही है व यहीं जब ब्रह्मा उत्पन्न होतेहैं व एकान्तमें उनके प्रणाम करतेहैं तो उनको यथातथ्यज्ञान जैसा कि उपनिषदों में लिखाहै देताहै ७६ व वही परम यज्ञपुरुष कहाता है व वही जो यज्ञका भोक्ताहै पुरुषोत्तम महाप्रभु कहाता है ७७ व यज्ञ करनेवाले जो विप्र होतेहैं वे ऋत्विज कहाते हैं वे इसीके मुखसे पहले निकले हैं यह सुनाजाता है ७८ इसी पुरुषोत्तमसे प्रथम जो उत्पन्न हुआथा उस यज्ञपुरुषके मुखसे वचनके साथही यज्ञमें ब्रह्मा होनेकेलिये ब्राह्मणलोग निकले

व उद्गाता व सामगानेवाले व होता और अध्वर्यु ये दोनोंदोनों बाहु-
ओंसे श्रीप्रभुनें उत्पन्न किये ७९ फिर ब्रह्मण्यको उत्पन्नकिया जोकि
ब्रह्माकी प्रशंसा करतारहताहै व मेढ़ासे मैत्रावरुण व प्रतिष्ठाताको
पैदाकिया ८० व उदरसे प्रतिहर्त्ता को उत्पन्न किया जो यज्ञमें सब
को सामग्री पहुँचाता रहताहै व होताको भी उदरही से उत्पन्नकरता
है जो कि होमकरता है हाथोंसे आग्नीध्रको व यजुर्वेदके जाननेवाले
उन्नेता को पैदाकिया ८१ व अपनी ऊरुओं से अच्छवाक नाम
याज्ञिक को उत्पन्न किया व मोटी जंघा से सुब्रह्मण्य नाम याज्ञिक
को उत्पन्न किया इस रीति से जगत्पति भगवान् ने इन सोलह
याज्ञिकों को उत्पन्नकिया ८२ जब स्वयम्भू भगवान्ने सबयज्ञों के
उत्तम ऋत्विजों को उत्पन्नकिया तबसे वह महायोगी यज्ञपुरुष
कहानेलगा ८३ व फिर साङ्गोपाङ्ग सब वेद उत्पन्न कियेगये व सब
उपनिषत् व क्रिया भी उत्पन्न कीगई व जब परमेश्वर एकार्णव में
शयनकरते थे उस समय जो आश्चर्य्यहुआ ८४ उसेसुनो जैसे
कि मार्कण्डेय विप्रजी को आश्चर्य्य हुआथा उसीप्रलयमें उन महा-
मुनिको महाप्रभुने अपने पेट में करलिया था ८५ जानतेही हो कि
उन मुनिकी आयु बहुत सहस्र वर्षोंकीहै वे एक समय तीर्थयात्रा
के प्रसङ्गसे पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं उनमें घूमते २ बहुत से ८६
पुण्य आश्रम व देवमन्दिर देखतेरहे व नानाप्रकार के देश राज्य
विविधप्रकार के विचित्र पुर नगर देखतेरहे ८७ वे सब देश ग्राम
पुर नगर जपहोममें तत्पर व शान्त तपस्याओं से युक्तथे इसप्रकार
श्रीभगवान् के उदरके भीतर सब देखतेहुये मार्कण्डेयमुनि बहुत
वर्षोंके पीछे भगवान्के उदरसे बाहरनिकले ८८ ईश्वरीमायाके प्र-
भावसे अपना को निकलते न जाना भगवान् के पेटसे निकलकर
संसारको एकार्णवभूत देखा ८९ मार्कण्डेयजीने सब अन्धकार से
ढका देखा तब उनको तीव्रभय उत्पन्नहुई व अपने जीवनका वि-
श्वासभी न रहा ९० परन्तु देवता के दर्शनसे जो परमहर्षितहुयेथे
इससे बड़े विस्मितहुये व वे अपनी बुद्धिसे निजशक्तिके अनुसार
चिन्तना करनेलगे व डरे ९१ कि क्या यह हमने कोई स्वप्नदेखाहै

व हमारा चित्त मोहको प्राप्तहोगया वा सत्य २ हैं इससे कुछ हम को भाव औरही प्रकट होता कि यह क्याहै ९२ सत्य तो यह नहीं होसक्ता जो हम शोचतेहैं वहीहै क्योंकि जब चन्द्रमा सूर्य्यभी नष्टहैं पवनभी नष्टहै पहाड़ भूतलभी नहींहै ९३ तो यह लोक तीर्त्थादिक कहांसे आया जो हम अभी सब देखते थे इसीतरह से शोकहुआ इतने में मार्कण्डेयजीने पर्व्वताकार पुरुषको सोतेहुये देखा ९४ व फिर जैसे समुद्रमें मेघ इसी तरह आधाजल में डूबा जोकि तेजों से तपतेहुये सूर्य्य के समान ९५ व गाम्भीर्य्यतामें सागर के तुल्य व सहस्रों प्रकाशोंके समान प्रकाशित थे ऐसे देवको देखकर विस्मित होकर पूंछनेलगे कि आपकौनहैं ९६ इतनेमें वे मुनिजी फिर उन्हीं के उदरमें चलेगये व फिर उन परमेश्वर के उदरमें पैठेहुये मार्कण्डेयमुनि विस्मययुक्त होकर ९७ वैसेहीस्वप्नके तुल्य सबदेखनेलगे व पहिलेकी नाईं फिर वे पृथ्वीपर घूमनेलगे व वनमें ९८ पुण्यतीर्थ जलयुक्त विविधप्रकार के आश्रम देखनेलगे व यजमानों को ठौर२ यज्ञकरके गुरुओं को दक्षिणा देतेहुये देखनेलगे ९९ व देव देवके उदरमें स्थित ठौर २ सैकड़ों ब्राह्मणोंको यज्ञों में बैठेहुये उन्होंने देखा व सब ब्राह्मणादि वर्णोंको अपने २ सदाचारमें युक्तदेखा१०० व जैसेही पूर्व्वसमय में देखाथा वैसेही ब्रह्मचर्य्यादि चारों आश्रमों कोभी अपने २ कर्म्म करतेहुये देखा इसप्रकार कुछ अधिक सौवर्ष धीमान् मार्कण्डेयजी को वहां १०१ भ्रमण करतेहुये बीते व उसी उदरमें सब पृथ्वीभर देखतेरहे इसके अनन्तर फिर परमेश्वर की कुक्षिसे बाहर निकले १०२ तो देखते क्या हैं कि एक वटवृक्षकी शाखापर एक बालक विराजमान है व सोरहा है व वह वृक्ष उसी अन्धकारसे आच्छादित एकार्णवके जलमें अकेलाहै १०३ व उसकी सब प्राणियों से रहित उसशाखापर वह अकेला बालक क्रीड़ा कर रहा है वे मुनिजी अतिविस्मितहो व अतिकौतुक युक्तहोकर १०४ सूर्य्यवत्प्रकाशित उस बालककीओर देख न सके उसी जलमें एकान्त में स्थितहोकर चिन्तना करनेलगे १०५ कि यह सब तो हमने प्रथम भी देखाथा ऐसा शोचतेही देवमायासे फिर शङ्कित चित्तहुये व वि-

समय युक्तहोकर मार्कण्डेयजी उसी अगाधजल में सोने लगे १०६ प्र-
थमकी तरह घबड़ातेहुये नेत्रोंसे उसे देखनेगये तब उसबालकने कहा
भो तुम! अच्छेरहे १०७ तब श्रीभगवान्योगवान् महान् बालरूप
पुरुषोत्तम मेघसमान गर्ज्जतीहुईवाणीसे बोले कि हे मार्कण्डेय! न
डरो हमारे समीपको चलेआओ १०८ इस बातको सुनकर अति
विस्मित होकर मार्कण्डेयजी बोले कि कौन हमारा अनादर करते
हुये हमारा नामलेकर हमको पुकारता है व दिव्य सहस्रवर्षकी आ-
युवाले हमारे साथ ढिठाई करता है १०९ यह सदाचार तो देवता-
ओं में भी हमारे विषय में उचित नहीं है जोकि हमारा नामलेकर
पुकारें हमको ब्रह्माभी स्नेहसहित दीर्घायु कहकर पुकारते हैं ११०
फिर कौनहै जो घोरतप कियेहुये हमको मार्कण्डेय कहकर पुकार-
ताहै क्या प्राणों को छोड़कर मृत्युको देखना चाहता है वह मार्क-
ण्डेय यह कहके मृत्युको देखना चाहताहै १११ हमको नहीं जान-
ता कि पूर्वकाल में हमने तीव्रतपकी आराधना कीहै जब मार्कण्डे-
यजी इस तरह कोपसे क्षोभित हुये तो इतने में श्रीमधुसूदनजीने
फिर मार्कण्डेय कहकर पुकारा ११२ व ऐसा कहनेपर फिर महाद्यु-
ति मार्कण्डेयजीने वैसेही कोपकरके कहा व भगवान् मधुसूदनजीने
फिर भी उसीप्रकार नामही लेकर पुकारा श्रीभगवान् बोले कि हे
वत्स मार्कण्डेय! हम तुम्हारे पिता गुरु जनक हृषीकेशहैं जिन्होंने
पूर्वकाल में तुमको दीर्घ आयुदीथी फिर तुम हमारे समीप क्यों
नहीं आते ११३ तुम्हारेपिता मृकण्डमुनि ने पुत्रकी कामना से प्र-
थम तीव्रतपस्याकरके हमारी ही आराधनाकी थी ११४ उत्तम
देवताओंकी बराबर तेजवाले तुम्हारे पिताको ऐसी घोरतप में देख
कर हमने अमित तेजयुक्त तुम ऐसे महर्षि पुत्रको दिया ११५ दू-
सरा कौन सहसक्ता व योगमायाकरके एकार्णव में कौन देख सक्ता
११६ यह सुनकर प्रहृष्ट हृदय व विस्मयसे उत्फुल्ललोचनहो महा-
तपस्वी मार्कण्डेयजी ने दोनों हाथजोड़ शिरपर धरके ११७ अपना
नाम व गोत्र सैकड़ों बार बड़े ऊँचेस्वरसे कहकर उन श्रीभगवान्
जीके नमस्कार किया ११८ व मार्कण्डेयजी बोले कि हे पापरहित

भगवन्! मैं तुम्हारी इस मायाको निश्चयकरके जानना चाहताहूँ जो कि तुम इस एकार्णवमें बालरूपी होकर शयन करतेहो ११९ हे प्रभो! हे भगवन्! लोक में इस तुम्हारे रूपका क्या नामहै मैं इस महात्मा रूपकी तर्कणा करताहूँ कि अन्य कौन इस जलमें ठहरसक्ता है १२० यह सुनकर श्रीभगवान्जी बोले कि हम नारायण ब्रह्मा सब प्राणियोंके नाशक रुद्रहैं व हम सहस्रशीर्षा हैं व हजारों पैर वालेहैं १२१ आदित्यवर्ण पुरुष हम हैं व वेद सब हमारेही मुख में रहते हैं व समयपाकर निकलते हैं इससे हम वेदमुखहैं हम अग्नि हैं उसमें भी जो यज्ञका अग्नि है वह हम मुख्य करके हैं व सूर्य्य हम हैं १२२ हम इन्द्र पदपर स्थित शक्र हैं व ऋतुओं के परिवत्सर हम हैं योगों में सांख्ययोग हम हैं व सब युगों के अन्त करनेवाले अन्तक हम हैं १२३ हम सब प्राणी हैं व सहस्रों देव हम हैं व भुजङ्गों में शेषनाग हम हैं व सब पक्षियों में हम गरुड़हैं १२४ व सब प्राणियों के नाशकों में हम विशेष करके कृतान्तहैं जिसका कि काल नामहै व हम धर्म्म और सब आश्रम निवासियोंके तप हैं १२५ हम दयापर धर्म्म हैं व हम महार्णव क्षीरसागर हैं जो सत्य पर एक ब्रह्म है हमहैं व हमीं प्रजापति हैं १२६ हमसांख्यहैं हम योगहैं व हम वह परमपद हैं हम यज्ञहैं व हम यज्ञक्रिया हैं व हम विद्याधिप कहाते हैं १२७ हम प्रकाशहैं हम वायुहैं हम भूमि व स्वर्ग हैं हम आकाश व समुद्रहैं नक्षत्र व दश दिशा हम हैं १२८ वर्ष हम हैं सोम हम हैं मेघ हम हैं व रवि हम हैं हम सब पुराण हैं व पुराणोंका पारायण हमहैं १२९ हम जो कुछ होनेवालाहै व जो कुछ होगया है व जो होरहाहै सब हैं व हमीं से सबकुछ होता है व जो कुछ तुम देखते हो व जो कुछ सुनतेहो १३० व जो लोकमें कुछ अपने भरण पोषण केलिये जानतेहो वह सब हमको जानो हमनेही पहिले इस विश्वको उत्पन्न कियाथा व अब सबको अपनेमें लीन करलियाहै हमें देखो १३१ हे मार्कण्डेय! हम प्रत्येकयुगमें सबजगत्कीरक्षा करतेरहते हैं सो सब हमने तुमसे कहा मार्कण्डेय इसकोधारण करो १३२ व धर्मकी इच्छासे सुनो व मुक्त सबकहीं सुखसेविचरो ब्रह्मा हमारे श-

रीरमें स्थित हैं व सबदेवता तथा ऋषिलोगभी स्थित हैं १३३ इसप्रकार प्रकट व अप्रकट जो दैत्योंके स्थान वा दैत्य दानवादि हैं सब हमको जानो हम एकाक्षर मन्त्रहैं व त्र्यक्षर मन्त्रभी हैं व पितामहभी हमहैं १३४ व अर्थ धर्म्म काम देनेवाला ॐकारमन्त्र हम हैं परमात्मा उदार दर्शन हमहैं इस प्रकार बहुत से आदिपुराण हे महामते! हमको कहतेहैं १३५ इसके अनन्तर मुनि फिर श्रीभगवान्‌के मुखमें चलेगये व भगवान् की कुक्षिमें जाकर मार्कण्डेयजी १३६ तिस के सामने एकान्त में अव्यय हंसरूप को सेवा करना चाहा जिनको अक्षय कहते हैं ऐसे रूपको चन्द्र सूर्य्य रहित महार्णव में उपासना की १३७ महार्णव में धीरे २ हंसनाम प्रभु श्री नारायण बहुत वर्षोंतक फिरते रहे व शुचिहोके तप करनेलगे १३८ व हंसरूप धारण करके उसी जलके ऊपर तप करनेलगे व तपोबल से अपने शरीर को उन्होंने उसजलके ऊपर स्थापित किया तब उन विमल महात्मा नारायण हंसरूपी को लोककी रचना की इच्छाहुई १३९ व महत्तत्त्व और पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश पञ्च महाभूतोंकी चिन्तना उन्होंने की जैसेही उन्होंने चिन्तना की १४० कि वैसेही निराकाश जलमयी नाशहुआ जो सूक्ष्म संसार को ईशने समुद्रके जलमें क्षोभकिया १४१ तब उस जलमें एक छोटासा छिद्र होगया उसमें से एक बड़ाभारी प्रतिशब्द हुआ व उस छिद्रसे पवन निकलनेलगा १४२ व वह पवन सातो समुद्रोंको चलायमान कराते हुये बढ़ा उस बलवान् वायुके वेगसे बढ़नेपर सब प्रलयका वह एकार्णव चलायमान हुआ १४३ उस चलायमान एकार्णव से फिर बड़ावेग उत्पन्नहुआ उससे कृष्णवर्त्मा वैश्वानर महान् अग्नि उत्पन्न हुआ १४४ फिर उस अग्निने बहुत से जलको शोषलिया व उस समस्त जलधि में छिद्र होगया उससे आकाश उत्पन्न हुआ १४५ व अपने तेजसे उत्पन्न अमृतमय जलजानो आकाश उसजलके छिद्र से हुआ व वायु फिर उस आकाश से उत्पन्न हुआ १४६ व जल और वायुके संघर्ष से अग्निकी प्रचण्डता अधिक होगई ॥

चौ० इमिलखिनहहीन सबलोका। भूतविनाशन प्रभुयुतशोका १४७

सृष्टि करन हित भूत बनाया । परमदयालु कीन निजदाया ॥
ब्रह्मजन्मयुत जगत बनावन । शोचनलग्यहुतब्रहिहरिपावन १४८
चतुर्य्युगी सहस्र जब बीती । तब भगवान् कीन यह रीती ॥
जो भूतलपर प्रथम द्विजेन्द्रा । हते प्रतिष्ठित पूज्य नरेन्द्रा १४९
उनमें बहु जनि शुद्ध रहोई । ताहि बनायहु ब्रह्म न गोई ॥
विश्वात्मा योगिनकर ज्ञाना । जब देखत योग्यता महाना १५०
योगवान लखि त्यहि पुनि करई । सब ऐश्वर्य्याधिप नहिं डरई ॥
ताहि ब्रह्मपद पर योगात्मा । थापत जो सबकर परमात्मा १५१
जानत योग सकल जाहेसों । जहां चहत थापत ताहेसों ॥
तब महीश अच्युत भगवाना । सर्व्वलोक कारक बलवाना ॥
त्यहिजलमहँ क्रीडाकी नाना । विधिपूर्व्वकजसलिखोविधाना १५२
तब यक पद्म तहां उपजावा । निज नाभीसों परम सुहावा ॥
सो सुवर्ण मय भयहु तुरन्ता । विरजसूर्य्यसम तेजअनन्ता १५३
चौपै० जिमि अनल प्रकाशित परमविकाशित तिमि सो कमलप्रकाशा॥
अरु जिमि शरदागम तरणिसमागम तिमि सो विशदविकाशा॥
जामैं रजनामा नहिं वरधामा अतिविशाल सब सामा ।
हरिकेतनु रोमा शैवलपोमा जहां सकल अभिरामा १५४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपद्मप्रादुर्भावो नामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

दो० चलिसें महँ कह कमलसे जग उत्पत्ति अपार ॥
कश्यपकी सन्तति कही सकल सहित विस्तार १
पुनि तारकमय समरहित दानव सैन्य सँवार ॥
कह्यो भली विधिसों सुजन देखहिं सहित विचार २

पुलस्त्यमुनि भीष्मजीसे बोले कि जब योगवानोंमें श्रेष्ठ व अग्नि के समान प्रकाशित सब लोकोंको उत्पन्न करनेवाला व चारमुख के ब्रह्माको भी उत्पन्न करानेवाला कमल उत्पन्नहुआ १ तो उस बहुत योजन विस्तृत सुवर्णमय कमलमें पृथ्वी के सबतेज व गुण व लक्षण

सर्व्वत्र दिखाई दिये २ उस कमलको पृथ्वीके रूपके बराबर उत्तम महर्षिलोग कहते हैं क्योंकि वह नारायणजीसे उत्पन्न हुआथा ३ हे राजन्! जो उस पद्मकी सारता है वही पृथ्वी कही जाती है व जो पद्मसारके मुख्यकेसर हैं वेही सब पर्व्वत कहेजाते हैं अर्थात् वेही सब पर्व्वत होगये ४ जैसे कि हिमवान् नील सुमेरु निषध कैलास शृङ्गवान् व गन्धमादन ५ पुण्यपर्व्वत त्रिशिखर कान्त मन्दर उदर पिञ्जर विन्ध्य व अस्ताचल ६ ये पर्व्वत देवगणों के व सिद्धलोगों के रहने के स्थानहैं व पुण्यात्मा लोगों के सब मनोरथ देनेवाले हैं ७ इनके बीचमें जो द्वीपहै उसको जम्बूद्वीप कहतेहैं जम्बूद्वीप का संस्थान जिसमें यज्ञ किया हुआ करती है ८ उससे जो जल बहताहै दिव्य अमृतकी तुल्य उसी से दिव्य तीर्थकी सैकड़ों धारा अमृत रस जलवाले सर सरसी व नदियां भी सबओर को बहती हैं ९ व उस पद्म के जो चारों ओर से केसर थे वेही सब पृथ्वीपर अन्य असंख्य छोटे बड़े पर्व्वत होगये १० व हे नराधिप ! जो उस पद्म के बहुत से पत्र थे वे सब दुर्गम पर्व्वतों के प्रान्तोंमें म्लेच्छदेश हो गये ११ व जो उस कमल के नीचे के पत्र थे वे दैत्यों के असुरोंके व नागोंके बसने के स्थान होगये १२ उन दैत्यादिकों के स्थानोंके व पृथ्वी के मध्य में जो स्थान है वह रसातल कहाता है जो महापाप कर्म्म करनेवाले मनुष्य होते हैं वे उन्हीं में डूबते रहते हैं १३ व जो कुछ उस कमल के चारोंओर सजल रसीला भागथा वही चारों दिशाओं के चार महासागर होगये इस रीति से नारायणके अङ्ग से उत्पन्न उस पद्मसेही सब पृथ्वी उत्पन्न हुई १४ इस पृथ्वी का एक पुष्करिणी भी नाम है व इसी कारण से पुण्य परम यज्ञों में याज्ञिक परमर्षिलोग १५ वेदों के दृष्टान्तों से कमलाकार विचिति बनाते हैं इसप्रकार श्रीभगवान् की बनाई हुई संसार को धारण करनेवाली पृथ्वी है १६ व पर्व्वतों नदियों व सब ह्रदों की रचना जाननीचाहिये इस प्रकार उस पद्महीसे सब पृथ्वी के अवयव निर्म्माण करके उसी पद्म से सूर्यसमान प्रकाशित वरुणसे भी अमितद्युतिवाले ब्रह्माजीको उत्पन्न किया १७ वे प्रथम सृष्टिकरने

के लिये धीरे धीरे तप करनेलगे क्योंकि बिना तपोबल सृष्टि नहीं बनसक्तीथी सो उन के तप में मधु नाम महाअसुर विघ्नकारी उत्पन्नहोगया १८ व उसी के साथ कैटभनाम असुर भी उत्पन्नहुआ वे दोनों रजोगुण व तमोगुण से उत्पन्नहुये १९ व दोनों बड़े तपस्वी हुये व उन महाबलों ने सब जगत् को एकार्णव देखा वे दोनों दिव्य रक्त तो वस्त्र धारणकियेथे व उनके श्वेत बड़े उग्र दांतथे २० किरीट दोनों अतिऊँचे धारण कियेथे बहूँटा व कंकण पहिने थे बहुत फैलेहुये बड़े बड़े लाल लाल उन के नेत्र थे मोटी उनकी छाती थी बाहु बड़ेलम्बे व मोटे थे २१ अंग उनके ऐसे पुष्टथे मानो चलायमान दो पर्वतही थे नवीन मेघसम श्याम चमकतेहुये रङ्ग के आदित्यसम प्रकाशित मुखवालेथे २२ प्रकाशित अंगद धारण किये हुये हाथों से अतिभयानक थे व अपने पांवों के चलाने के विक्षेपसे उस प्रलयके समुद्र को खलभलाये देते थे २३ व शयन करते हुये मानों मधुदैत्य के मारनेवाले श्रीहरिजी को भी कम्पायमान कराते थे ऐसे वे दोनों विचररहे थे कि इतने में चारमुख के ब्रह्माजीको उस पद्म के ऊपर बैठेहुये तप करते योगियों में श्रेष्ठ रूप देखा जो कि नारायण की आज्ञा से तप करके सम्पूर्ण प्रजा को बनाया चाहते थे २४ । २५ वरन देवताओं व विश्वेदेवों को व मरीच्यादि मानसी पुत्रों को उत्पन्नभी करना चाहतेथे तदनन्तर कुटिल दृष्टि से देखतेहुये वे दोनों दुष्ट असुर क्रोध से नेत्रलालकर उन ब्रह्माजी से आकर बड़े अहंकार से बोले कि चारमुख धारण कियेहुये व सफ़ेद पगड़ी बांधेहुये तू कौन पुरुष है जो इस महार्णवमें कमलपर बैठा है हम दोनों को कुछभी नहीं गिनता जो अतिनिःस्पृह सा बैठाहुआ है यहां आ हम दोनों को युद्ध दे हे कमल से उत्पन्न ! २६।२८ हम दोनोंके मारे तू इस महार्णवमें नहीं रहसक्ता व वह कौन होता है जिसने तुझको यहां नियत किया है २९ तेरा स्रष्टा कौन है व रक्षक कौन है उसका नाम क्या है इतना सुनकर ब्रह्माजी बोले कि जिसके समान लोक में कोई शक्ति नहीं धारण करसक्ता वे विष्णु एक कहाते हैं ३० उन्हीं के

संयोगसे हम उत्पन्नहुये हैं व वेही हमारे रक्षक हैं व उन्हींकी आज्ञा से हम यहां बैठहुये हैं तुम दोनों उन्हीं के पास जाओ यह सुनकर मधुकैटभ दोनों बोले कि हे महामुने ! लोक में हम दोनों से परम उत्कृष्ट अन्य कोई नहीं है ३१ क्योंकि हम दोनों रजोगुण व तमो-गुण से इस विश्वको आच्छादित किये रहते हैं रजोगुण व तमोगुणी हैं इसी से ऋषियों के वचन भी उल्लंघन करते व उन धर्म्मशील ऋषियों को भी हम इन्हीं दोनों गुणों से आच्छादित रखते हैं सब देहधारियोंको नाश करते हैं व युग युग में हम दोनों करके संसार युक्त होताहै हम दोनों महादुस्तर हैं ३२।३३ व हम दोनों अर्त्थ काम यज्ञ व अन्य सत्रों के ग्रहण करने के पदार्त्थ हैं व हम दोनों मेंही सब हर्ष युक्त सुख है व कीर्त्ति श्रीभी हमीं दोनों में है ३४ व जो कुछ जहांकहीं देखते हो वह हम दोनों मेंही जानो हमसे पृथक् अन्य कुछ नहीं है यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि हमने पूर्व्वसमय में तुम दोनोंको अनभ्याससे जीते हुये देखा ३५ इसी से सत्त्वगुणका आश्रयण किया क्योंकि जो इस पुष्कर से उत्पन्न होताहै वह सब सत्त्वगुणमय होता है व जो रजोगुण तमो-गुणोंको उत्पन्न करताहै उससे इस विश्वकी उत्पत्ति होतीहै व उसी से सात्त्विक राजस तामस सब प्राणी उत्पन्न होते हैं ३६ । ३७ व वही देव तुम्हारा नाश करेगा वह सोताहै अभी बहुत योजन तक उसके भुजा फैले हैं ३८ व उसीसे हमहैं जोकि एक योजन भरमें विस्तृतहैं उसका नारायण नामहै व उसीने अपनी मायासे हमारा ब्रह्मानाम धरायाहै यह सुनकर उन दोनोंने अपने बाहुओंसे ब्रह्मा के दोनोंहाथ पकड़कर खींचा ३९ जैसे कि धीवरलोग मछलियोंको पकड़कर खींचते हैं फिर ब्रह्मा तो किसी प्रकारसे उनसे छूटगये वे दोनों देवदेव सनातन ४० पद्मनाभ हृषीकेशजी के समीप जाकर प्रणाम करके उनसे बोले कि हे विश्वयोने ! तुम सब विश्वके जीवनहो हमलोग एक तुम्हींको पुरुषोत्तम समझते हैं ४१ व हमदोनों की बुद्धियोंके कारण तुम्हींहो हमलोगोंको तुम्हारा दर्शन ब्रह्माकी कृपासे हुआ ४२ इससे अब तुम्हारे चारों ओर देखना चाहते हैं क्योंकि

तुम्हारे दर्शन सफलहैं हे समरमें विजयपानेवाले! तुम्हारे नमस्कार करते हैं ४३ इतना सुनकर श्रीभगवान्जी बोले कि हे असुरसत्तमो! किसलिये हमसे बोलतेहो कहो हमने तो तुम दोनों को मोक्ष दिया था बड़े आश्चर्य्यकी बातहै जोकि तुम फिर जीना चाहतेहो ४४ तब मधुकैटभ बोले कि हे प्रभो ! आपने मुक्ति तो दी थी पर हम लोगोंको यह इच्छाहै कि जहां कहीं मरें व वधको प्राप्तहों इससे हम अब चाहते हैं कि हम दोनों आपके पुत्रहों ४५ श्रीभगवान्जी ने कहा कि अच्छा तुम आगे होनेवाले कलियुगमें हमारे पुत्र होओगे इसमें सन्देह नहीं है यह हम तुमलोगोंसे सत्यही कहते हैं ४६ इस प्रकार उन दोनों असुरोंको वरदेकर सनातन विश्वकारक देवो-त्तम श्रीप्रभुजी ने सहस्रबाहु व अर्ज्जुनके समान उन दोनोंको रजो-गुण तमोगुण से युक्तहोनेके कारण प्रतापी जानकर अपनी जांघों के नीचे दबालिया ४७ तो ब्रह्माजी फिर कमलमें बैठकर ऊपरको एक हाथ उठाकर घोरतप करनेलगे ४८ जिससे मारे तेजके प्रज्व-लित होनेलगे जैसे कि अन्धकारके नाशक स्वामी सूर्य्य प्रज्वलित होते हैं तब उस समय वे धर्म्मात्मा ब्रह्माजी किरणोंसे युक्त भास्कर के समान प्रकाशित हुये ४९ तब उस समय अन्यरूप धारण कर शम्भु व नारायण महाप्रभु वहां आये सो एक महातेजस्वी तो योगाचार्य्य बनकर आये ५० व दूसरे सांख्यशास्त्र के आचार्य्य महामतिमान् कपिलदेव ब्राह्मणश्रेष्ठ होकर वे दोनों महात्मा पूर्व्व दिशाके क्षेत्रोंमें तत्पररहतेथे ५१ वे दोनों ब्राह्मण आकर अमित तेजस्वी ब्रह्माजीसे बोले जो कि परावरके जाननेवाले व महर्षियों से पूजितथे ५२ वे ब्रह्माभी जगत् की स्थिति में आरूढ़थे इसी से सब प्राणियों के अग्रणी व त्रैलोक्यपूजित कहाते थे ५३ उन दोनों के वचन सुनकर जो कि विमोहित होकर उन्होंने पूर्व्वकालमें कभी कहे थे ब्रह्माजीने तीन इन लोकोंको उत्पन्नकिया जैसे कि यह ब्रह्माकी श्रुति है ५४ वेही ब्रह्माके पुत्रहुये व उन्होंने फिर अन्य ऋषियों को आज्ञादी व उनके आगे ब्रह्माजी स्थितरहे ५५ उनमेंसे उत्पन्न होतेही एक ब्रह्माजीका मानसीपुत्र ब्रह्माजीसे बोला कि आप कहें

मैं कौन सहायता आपकी करूँ ५६ तब ब्रह्माजी उस अपने मानसी पुत्र से बोले कि जो ये कपिल ब्राह्मण हैं सो नारायण में पर हैं जो ये तुमसे कहें वही तुम करो ५७ जब ब्रह्माजीने ऐसा कहा तब वह ब्राह्मण ब्रह्मपुत्र कपिलदेव सांख्याचार्य्य के व योगाचार्य्य पतञ्जलि के समीपगया व हाथ जोड़कर बोला हम तुम्हारी दोनों जनों की सेवा किया चाहते हैं सो कहो क्या करें ५८ तब उन में कपिलदेवजी बोले कि जो सत्य अक्षर है जिस से फिर अष्टादश प्रकार के अनुदात्तादि होते हैं व जो तथ्य अमृतरूप है व जो परमपद है उसको तुम स्मरण करो ५९ यह वचन सुनकर वह ब्रह्मपुत्र उत्तर दिशा को चलागया व वहांजाकर ज्ञानदृष्टि से ब्रह्मको प्राप्त होगया ६० तब फिर ब्रह्माजीने भूलोक उत्पन्न करके फिर द्वितीय भुवर्लोक को उत्पन्न किया व मन से उसी का संकल्प भी किया उससमय अन्य सृष्टि की इच्छा नहीं की ६१ तब वह लोक भी ब्रह्माजीसे बोला कि क्या करूँ तब पितामहजीने आज्ञादी कि तुम इन योगाचार्य्य ब्राह्मण के समीप जाओ कि जो कहें करो वह योगाचार्य्यके समीपगया उन्हों ने अमृतरसमय भगवद्भक्ति योगाभ्यासकी रीतिसे उसे सिखाया वह उस योगको ग्रहण करके अपने स्थानको चलागया ६२।६३ उसके भी चलेजाने पर फिर उन प्रभु ब्रह्माजीने तीसरा पुत्र उत्पन्न किया वह मोक्षप्रवृत्तिमें कुशलहुआ व भूर्भुवः उसका नामथा ६४ वह गोमतीनदीके तीर नैमिषारण्यतीर्थ में जाकर उन्हींदोनों में सांख्याचार्य्य व योगाचार्य्य की अनुमतिसे परमेश्वरका स्मरण करने लगा इसप्रकार ये तीनों ब्रह्मपुत्र महात्मा शम्भुजीके भक्तहुये ६५ ब्रह्माके उनतीनों पुत्रोंको ग्रहणकरके नारायण भगवान् व यतीश्वर कपिलदेवजी चलेगये व शम्भु भी चले गये ६६ जिस कालमें नारायण भगवान् व कपिल यतीश्वरगये ब्रह्मा उसी कालसे फिर घोर तप करनेलगे ६७ पर जब तप न करसके कुछ घबरासे गये तो अपने आधे शरीरसे उन्होंने एक भार्य्या उत्पन्नकी ६८ व उससे कहा कि अपने सदृश पुत्रोंको तुम हमारे संयोग से उत्पन्न करो तब उससे विश्वेदेव व प्रजापति लोग उत्पन्नहुये व सब

तीनोंलोक उत्पन्न हुये ६९ उनमें प्रथम विश्वेदेव ने तपकिया व उन्होंने सब किसीके हितका करनेवाला धर्म्म नाम पुत्र उत्पन्न किया ७० फिर ब्रह्माजी ने दक्ष मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु वशिष्ठ गौतम भृगु अङ्गिरा इन पुत्रोंको उत्पन्नकिया ७१ तीन प्रथमके व दश ये इसप्रकार ब्रह्माजी के ये तेरह पुत्रहुये जोकि अपनी कृत्यमें अतिअद्भुत महर्षिभये इन्हीं तेरहोंसे महर्षियोंके वंशोंका प्रारम्भहुआ है ७२ अदिति दिति दनु काष्ठा अनायु सिंहिका खसा प्रधा क्रोधा सरमा विनता व कद्रु ७३ हे राजन्! ये १२ कन्या दक्ष से उत्पन्नहुईं व चन्द्रमा के सत्ताईस नक्षत्र भी दक्षहीकी कन्याहैं ७४ व मरीचि ने अपने तपोबल से कश्यप नाम पुत्र उत्पन्न किया दक्षने अपनी अदिति आदि बारह कन्यायें उनको देदीं ७५ व नक्षत्ररूपिणी सत्ताईस कन्या चन्द्रमा को दीं हे कुरुनन्दन! वे सब रोहिणी आदि पुण्यरूपिणी हैं ७६ व ब्रह्माजीने पूर्व समय में लक्ष्मी सरस्वती सन्ध्या विश्वेशा व देवी इन नामों से प्रसिद्ध पांचकन्या उत्पन्नकी थीं ७७ सो हे महाराज! ये सब कन्या बड़ीश्रेष्ठ व देवताओं में भी श्रेष्ठहुईं इन पांचों को ब्रह्माजीने धर्म्मको देदीं ७८ व जो ब्रह्मा के आधे शरीर से स्त्री उत्पन्न हुई थी व बड़ी कामरूपिणी थी वह सुरभी होकर झट ब्रह्माजी के समीप उपस्थितहुई ७९ तब लोकपूजित ब्रह्माजीने उसके संग मैथुन को किया यह कार्य्य ब्रह्माजीने लोकोंके उत्पत्तिके लिये व गौवों के अर्थ किया ८० कि जिसमें सब लोग अपनी स्त्रीके संग मैथुन करके सन्तान उत्पन्नकरें उस सुरभी से सब गाय बैल बड़े धर्मयुक्त ११ पुत्र उत्पन्न हुये संध्याकालीन मेघोंके तुल्य लाल महातेजवाले ८१ रोदन करते हुये ब्रह्माके समीप पहुँचे उन्हें रोते व दौड़ते देखकर ब्रह्माजी ने कहा कि जाओ तुम्हारा रुद्र नामहोगा ८२ जैसे कि निर्ऋति शम्भु अयोनिज मृगव्याध कपर्दी महाविश्वेश्वर ८३ अहिर्बुध्न कपाली पिङ्गल सेनानी व महातेज बस येही एकादश रुद्र कहाते हैं ८४ उस सुरभीमेंही ये रुद्रभी उत्पन्न हुये व धेनु वृषभ व देवगणभी हुये ८५ व सब ओषधियां सुरसा नाम कश्यपकी स्त्रीसे हुईं लक्ष्मी

से धर्म्म व काम उत्पन्न हुये सन्ध्या भी सन्ध्याही से उत्पन्नहुई
८६ भव प्रभव कृशास्य सुवह अरुण गरुड़ विश्वामित्र बल और
ध्रुव इतने पुत्र विनताने कश्यपके योगसे उत्पन्न किये ८७ व हवि-
ष्मान् तनूज विधार अभिमत वत्सर भूति सर्व्वासुरनिषूदन ८८
सुपर्व्वा बृहत्कान्त साध्यलोकनमस्कृत वासव इन सबों को देवी
नाम धर्म्मकी पत्नीने उत्पन्न किया ८९ बल प्रथम ध्रुव दूसरे वि-
श्वावसु तीसरे सोम चौथे ईश्वर ९० पांचयें अनुरूप छठें आयु
तिसके बाद यम वायु सातयें व निर्ऋति आठयें ९१ इतने धर्म्म
की सुरभी नाम स्त्रीमें पुत्रहुये व धर्म्मसे विश्वानाम स्त्रीमें विश्वेदेव
नाम देवगण उत्पन्न हुये जोकि सब श्राद्धों में प्रायः दो दो नामों से
प्रसिद्ध आते हैं ९२ दक्ष महाबाहु पुष्कर तम चाक्षुष अत्रि ये भी
धर्म्मसे विश्वामें भद्र महोरग उत्पन्नहुये ९३ विश्रान्तक वसु बाल
निकुम्भ महायश रुरुद अतिसिद्धोजस् भास्कर प्रतिमद्युति ९४ व
देवमाता अदिति ने भी विशेष विश्वेदेव नाम देवताओं को उत्पन्न
किया व मरुत्वतीने मरुत्वान्नाम देवोंको उत्पन्न किया ९५ अग्नि
चक्षु रवि ज्योति सावित्र मित्र अमर शरदृष्टि सुकर्ष व महत्तर ९६
विराज राज विश्वायु सुमति अश्वग चित्ररश्मि निषध नृप ९७
आत्मविधि चारित्र पादमात्रग बृहत् बृहद्रूप व सनाभिग ९८ इन
सबों को मरुत्वतीनेही उत्पन्न कियाहै इससे ये सब मरुद्गण कहाते
हैं व अदिति ने कश्यप से द्वादश आदित्य उत्पन्न किये ९९ उनके
नाम येहैं इन्द्र विष्णु भग त्वष्टा वरुण अर्य्यमा रवि पूषा मित्र वरद
धाता व पर्जन्य १०० ये बारह आदित्य श्रेष्ठ देवताहैं आदित्यके सर-
स्वतीस्त्रीमें दो श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्नहुये १०१ एक तपःश्रेष्ठ व दूसरा गण-
श्रेष्ठ ये दोनों अर्थ धर्म काम इस त्रिवर्ग के करनेवाले हुये व कश्यप
की दनुनाम स्त्रीने दानवोंको उत्पन्न किया व दितिने दैत्योंको १०२
व कालाने कालकेय असुरों को राक्षसों को भी उत्पन्न किया व अल-
म्बुषा के पुत्र महाबली व्याधि इत्यादिक १०३ व सिंहिका के राहु
उत्पन्न हुआ जिसका शरीर दो खण्ड कालान्तर में हुआ तब केतु
हुआ व मुनिनाम कश्यप की नारीसे गन्धर्व्व उत्पन्न हुये व अप्स-

राओंकी माताका प्राचीनामथा १०४ व क्रोधासे सब भूत पिशाच गणहुये व इसी क्रोधासे यक्षगण व राक्षसगण भी उत्पन्नहुये १०५ व सुरभी से गो वृषभादि सब चौपाये उत्पन्न हुये पुराणपुरुष पर्वत माया श्रीविष्णु हरि १०६ व इतनी सृष्टि क्रम से हमने कही व महर्षियों की भी उत्पत्ति कही जो मनुष्य सदा इस अग्र्यपुराण को सुनता है अथवा अमावास्या पूर्णिमा संक्रान्ति शुक्लाष्टमी व कृष्ण-चतुर्दशीआदि पर्व्वों में पढ़ताहै १०७ वह इसलोकके सब सुखोंको भोगकर अन्तकाल होनेपर जाकर स्वर्ग के फलको भोगताहै दृष्टि से मनसे कर्म्मसे व वचनसे इन चारप्रकारों से १०८ जो कोई कृष्ण-चन्द्रजी को प्रसन्न करताहै सन्तुष्ट होकर वे उसे सब कुछ देते हैं जैसे कि ऐसा करनेवाला राजा राज्यपाताहै व धनहीन उत्तम धन पाताहै १०९ क्षीण आयुवाला आयुपाताहै व पुत्र चाहनेवाला पुत्र पाताहै यज्ञार्त्थीलोग विविध प्रकार के मनोरथपाते हैं व तपकरने वाले विविध प्रकार की तपस्याओं का फलपाते हैं ११० जिस २ कामकी इच्छाकरताहै वह २ लोकेश्वरकी कृपा से पाताहै सब छोड़ कर जो कोई यह श्रीहरिके पुष्कर की उत्पत्ति सुनताहै वा पढ़ताहै १११ उसको कुछ अशुभ कभी नहीं होताहै इसरीतिसे यह पौष्कर प्रादुर्भाव महात्मा श्रीहरिरूप ब्रह्माका ११२ वर्णन किया हे महा-राज ! जैसा हमने वेदव्यासजी से श्रवण किया उसी के अनुकूल तुमसे कहा अब श्रीहरिका वैष्णव हारित्व सत्ययुगमें ११३ व देव-ताओं में वैकुण्ठत्व व मनुष्यों में कृष्णत्व जैसा सत्ययुगादिकों में हुआ है वैसा सुनो हे राजन्यसत्तम ! यह ईश्वरकी सहजगतिहै ११४ व हे राजन् ! इससमय भूत भविष्य यथा योग्य सुनो जो भगवान् प्रभु वास्तवमें अप्रकट रहताहै पर प्रकटलिङ्गों में स्थित दिखाई देता है ११५ उसीका नारायण अनन्तात्मा प्रभवाप्यय नामहै इसप्रकार वही नारायण हरि सनातन ११६ ब्रह्मा वायु सोम धर्म्म शुक्र बृह-स्पति के नामों से प्रसिद्ध होताहै वही परमेश्वर अदितिका भी पुत्र हुआ पर हे राजन् ! वह किसीसे उत्पन्न नहीं है ११७ व वही इन्द्र के छोटेभाई होकर विष्णुकहाया अदिति के पुत्रहोने का कारण श्री

हरि की प्रसन्नता है ११८ क्योंकि अदिति के पुत्रहोकर असुर राक्षस व दैत्यों को मारनाथा नहीं तो प्रथम उस नारायण परमेश्वरने ब्रह्माको बनाया व ब्रह्माने फिर असुरोंको और दक्षमरीच्यादि प्रजापतियों को उत्पन्नकिया ११९ फिर मनुष्यों को बनाया मनुष्यों में भी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र आदि के क्रमसे विधिपूर्व्वक रचा व वे महात्मा ब्राह्मण ऐसेहुये कि जो परब्रह्म सनातनकी सारूप्य तकको पहुँचे १२० यह कीर्त्तन करनेके योग्य श्रीविष्णुका आश्चर्य्यदायक कीर्त्तन लोकमें कीर्त्तन करने के योग्य कीर्त्तन करतेहुये हम से सुनो १२१ हे भीष्म ! जब सत्ययुग वर्त्तमान था उसमें वृत्रासुरका वध आनपड़ा तब त्रैलोक्य में विख्यात तारकामय संग्रामहुआ १२२ जिस संग्राम में समरमें बड़े दुर्ज्जय महाघोर दानवों ने देवताओं असुरों यक्षों व उरगों राक्षसों को मारडाला १२३ वे सब जब मारे गये तो रणसे विमुख होकर सबके सब भागखड़े हुये व अपने मन से रक्षा करनेवाले नारायण प्रभुके शरणकोगये १२४ व इसी अवसरमें सब देवताओं का तेज जातारहा सूर्य्य व चन्द्रमा की प्रभा जातीरही आकाश दिनरात्रि अन्धकार से आच्छादितसा रहनेलगा १२५ अकस्मात् मेघ उठनेलगे बिजुली चमकनेलगी वज्रपात व विद्युत्पात होनेलगे व मेघ तड़ातड़ गर्ज्जनेलगे व परस्पर टक्कर खाकर मानो पवन प्रचण्ड होकर चलनेलगे १२६ अतितेजसे युक्त वज्रपातहुआ अग्निकी वर्षा होनेलगी महाघोर शब्द व उत्पात होने लगे मानो आकाश भी जलाजाताहै १२७ उसी बीच में सहस्रों उल्कापात होनेलगे उनके सङ्ग आकाश में चलनेवाले सब गिरने लगे विमान उलटे होकर नीचे को मुखकरके गिरनेलगे कोई अकस्मात् नीचे से ऊपरको उड़नेलगे १२८ जैसे चतुर्य्युगी के पीछे सब लोगोंको भयहोती है वैसेही होनेलगी उस उत्पातके लक्षण से अरूपवान् रूप दिखाई देनेलगे १२९ ऐसी उलटी पलटी बातें होने लगीं कि कुछ किसीको जानही नहीं पड़ताथा कि क्या होताहै सारे तिमिर के सब दशोदिशायें घिरगईं इससे शोभाको नहीं पातीथीं १३० अन्तरिक्ष सब मारेअन्धकार के कालाहोगया उसपर काली

बदरी से घिरगया ऐसे घोर अन्धकारसे घिरगया कि सूर्य्यका कहीं पताही नहीं जानपड़ताथा १३१ घनसमूहसे व तिमिरसे घिरेहुये उस अन्तरिक्ष को अपने दोनों हाथों से खींचकर प्रभु श्रीहरि ने अपना कृष्णरङ्गका मनोहर शरीर वहां आकर दिखाया १३२ जो शरीर सजल जलदसम श्याम व नीलाञ्जन समान चमकताथा व मेघसम श्याम रोमों से युक्तथा तेज व शरीर दोनों की श्यामता मानो काले पहाड़की तुल्य कृष्णजी हैं १३३ व चमचमाता हुआ पीताम्बर धारण किये था सब सुवर्ण के भूषणों से भूषित था व धूम के अन्धकार से युक्त प्रलयके अग्नि के समान प्रज्वलित व चार भुजायुक्त १३४ मोटे कन्धेसेयुक्त शिरपर किरीट धारण किये सुवर्ण की चमकके समान चमकते हुये आयुधों से उपशोभित १३५ होने के कारण सूर्य्य चन्द्रमा की किरणों से युक्त पर्व्वतसमूहसा स्थित था नन्दकखड्गसे कर आनन्दितथा व कौस्तुभमणिसे छातीप्रकाशित थी १३६ व वह शरीर चित्रविचित्र फलयुक्त शक्ति शङ्ख चक्र गदाको धारणकियेथा ऐसे शरीर से युक्त क्षमाशीलसहित भृगुलतायुत शार्ङ्ग नाम धन्वा हाथ में लिये श्रीकृष्णचन्द्रजी दिखाईदिये १३७ देवताओंको उदार फल देते स्वर्गकी स्त्रियोंको परमवल्लभ थे सब लोगों के मनके प्रिय व सबप्राणियों के मनोहरण १३८ व जिसमें नाना प्रकार के मायाविशाल वृक्षथे व जो मेघसमूहकी प्रभासेयुक्त विप्रों के अहंकार मानसेयुक्त व जिसमें पृथिव्यादि पञ्चमहाभूत प्ररोह थे १३९ विशेष पत्र लगे थे ग्रह नक्षत्रही मानो पुष्पथे दैत्यलोगों से चलायमान जो होरहा था व मर्त्यलोगों से प्रकाशित होरहाथा १४० सागर के समान खलभलाताथा व रसातलमें जिसके आश्रय का स्थानथा नागेन्द्रोंकी पाशोंसे विस्तृत पक्षी व जंतुओं से युक्तथा १४१ शील अर्घ्यही गन्धथे सब लोकही महाद्रुम थे अपने भक्तों का आनन्दही जलथा व प्रकट सब अहंकार फेना थे १४२ भूत पिशाचादि जलसमूह थे ग्रह नक्षत्र बुल्ले थे विमानही सब जहाजथे मेघ आडम्बर था १४३ सब जन्तुही मत्स्यगण थे पर्व्वतही शङ्खथे रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुणही आवर्त्त थे सब लोगही तिमिङ्गिल

थे १४४ वीरलोगही वृक्ष लता गुल्मथे भुजङ्गही स्थवारथे बारह आदित्य महाद्वीप थे व ग्यारह रुद्रही द्वीपों के बीच में बसेहुये नगरथे १४५ स्वर्गही आठ पर्वतथे तीनों लोकही महाजलरूप थे सन्ध्यायें लहरियां थीं व सब लोगों के श्वासही पवनथे १४६ दैत्यगण यक्षगण व राक्षसगण मानो जल जन्तु हैं इनसे आकुल है पितामह महावीर्यहै स्वर्गकी स्त्रियां रत्नरूपोंसे आकुल है १४७ श्री कीर्ति कांति लक्ष्मी ये नदीरूपों से आकुल है जैसे महाप्रलयके वक्त काल रूप होके मेघ वेगकरे १४८ इस सत्संयोग अपारनारायणरूप महार्णवसे संयुक्त देवातिदेव वरदायक भक्तोंके अभयङ्कर भक्तवत्सल १४९ अनुग्रह करनेवाले व प्रशान्त करनेवाले शुभरूप हर्यश्वों से युक्त व गरुड़ध्वजा से शोभित १५० व सूर्य्य चन्द्रमा जिस रथमें पहियोंकी जगहहैं व रसरियों की जगह मेरुकूबरहै १५१ ताराही हैं चित्र विचित्र फूल जिसमें व ग्रह, नक्षत्र बकौनावाले; भयोंमें अभय देनेवाले, आकाश में स्थित व देव और दैत्यों से अपराजित १५२ ऐसे दिव्यलोकमय रथमें विराजमान हर्यश्वरथ व मुक्ताओं की शोभासे युक्त श्रीनारायण देवको सब देवताओंने देखा १५३ व इन्द्रादि सब देवगण हाथजोड़कर जय जय शब्द करतेहुये उन शरणपालकी शरण को प्राप्तहुये १५४ व आर्त्तवाणी से पुकारकर सबोंने प्रणाम कर समरमें दानवोंके विनाशकी प्रार्थनाकी तब देवताओं के वचन सुनके देवदेव विष्णु ने दानवों को समर में मारने का विचार किया १५५ तब आकाशमें स्थित उत्तम शरीर धारण कियेहुये श्रीविष्णु भगवान् इन्द्रसे प्रतिज्ञापूर्वक यह वचन बोले कि १५६ हे देवताओ ! शान्त होओ न डरो तुम्हारा कल्याणहो हमने सब दानवोंको जीतलिया तुम अपने तीनों लोक ग्रहण करो १५७ श्रीविष्णु भगवान्‌के इस वाक्यको सत्य जानकर सब देवगण सन्तुष्ट हुये व उत्तम अमृतको पानकर जैसे सन्तुष्ट होते थे वैसेही तृप्तहुये १५८ बस उसीसमय से मेघ विनाश होगये अन्धकार दूरहोगया शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलनेलगे दशोंदिशा प्रसन्न होगईं १५९ चन्द्रमा की रोशनी फैलगई ग्रहोंकी लड़ाई बन्दहोगई समुद्र खुशहोगये १६०

मार्ग्ग सब साफहोगये स्वर्ग्ग मर्त्य पाताल तीनों लोक स्वच्छ होगये व नदी अच्छीतरह बहने लगीं समुद्रका क्षोभ जातारहा १६१ सब मनुष्यों की इन्द्रियां शुभ होगईं जो कि प्रथम व्याकुल होगई थीं शोकरहित होकर महर्षियोंने वेदारम्भ करदिया १६२ व यज्ञोंमें अग्नि प्रज्वलित करके हव्यछोड़ा सबलोग प्रसन्नमन होकर अपने २ प्रवृत्त मार्ग के धर्म करनेलगे १६३ यह सब शत्रुओं के विनाश के विषय की श्रीविष्णुमहाराजकी वाणी जैसेही सुनी व श्रीविष्णुके कियेहुये इस अभयमय समाचार को सुनकर दैत्य दानवों ने १६४ पूर्ण विजय के लिये बड़ाभारी उद्योग किया उन दिनोंमें दानवोंका राजा मयनाम दैत्यथा वह सोनेकी तीन फरियोंसे युक्त १६५ अति पुष्ट चार पहियों से युक्त बड़ेभारी नानाप्रकारके आयुधों से भरेहुये व किङ्किणियों के नादसे नादित व्याघ्र चर्म्म से आच्छन्न १६६ मोतियों व सुवर्णकी गुटिकाओंकी झालरों से चमचमातेहुये नाना प्रकार के कृत्रिम मृगगणों की प्रतिकृतियों से युक्त पक्षियों के पक्षों से विराजित १६७ दिव्यास्त्रों से युक्त मेघके समान नादकरते हुये सुन्दर पहिये लगेहुये आकाशकी तरह १६८ गदा परिघादिकों से पूर्ण मूर्त्तिमान् पर्व्वत के तुल्य सुवर्णके बहूँटों व कङ्कणों से शोभित चन्द्राकार मण्डलयुक्त गुम्मजसे शोभित १६९ पताका ध्वजासे युक्त मन्दराचलपर पहुँचेहुये आदित्य के समान शोभित गजेन्द्रकी सूँड़के समान चढ़ाउतार शरीरवाले कहीं २ केसर से रँगे हुये १७० सहस्र ऋक्षों से युक्त वर्षतेहुये मेघों के समान नादित शत्रुके रथको तोड़नेवाले स्वच्छ रथश्रेष्ठपर १७१ आरूढ़ होकर रणकरने की इच्छासे चला उससमय रथपर उसकी ऐसी शोभाहोतीथी जैसे सुमेरु पर्व्वतपर सूर्य्यकी होतीहै व कोसभर विस्तारवाले पर तारकासुर बहुत से घोड़ोंसे युक्त पर्व्वत के समान ऊँचे गुम्मज से प्रकाशित काले अञ्जनके ढेरके समान काले रत्नों से विराजमान लोहे से जकड़े हुये गुम्मज से युक्त १७२ । १७३ भीतर अत्यन्त प्रकाशित गर्ज्जतेहुये मेघके समान निनाद करते हुये व बड़ेभारी लोहेके जालसे आच्छादित १७४ लोहेकेपरिघ मुद्गर व घनवासियों

से पूर्ण प्रास पाश व बड़े २ काँटोंसे युक्त १७५ डरवानेकेलिये अन्य अस्त्रोंसे शोभित तोमर फरसों से भी शोभित शत्रुओं के लिये दूसरे मन्दराचलके समान उद्यत १७६ व सहस्र गधों से युक्त महारथपर आरूढ़ हुआ व विरोचन नाम दैत्य तो क्रोधकरके गदा हाथमें लेकर १७७ उस सैन्यके आगे २ प्रकाशित शृङ्गसे युक्त पर्वत के समान दिखाई देतेहुये चला व हयग्रीव नाम दानव सहस्र घोड़े मचेहुये रथपर सवार होकर १७८ नाना रचनाओं से युक्त दानवों की सेना के चारों ओर घूमनेलगा व विप्रचित्ति दानव का पुत्र श्वेतनाम दानव श्वेतही कुण्डल भूषण धारण किये १७९ शत्रुओं की सेना के मर्दनकरने को रथपर आरूढ़ हुआ व आन्तकि नाम दानव सहस्रधन्वा अपने हाथों में लिये सबको टङ्कोरतेहुये चला १८० वह समर में प्ररोह सहित पहाड़ के समान स्थित हुआ व खर नाम दानव दांत ओंठ नयन फरकाते हुये मारेक्रोध के नेत्रों से आंसूछोड़ते हुये संग्राम चाहनेलगा व त्वष्टानाम दैत्य अष्टादश घोड़े जुतेहुये रथपर आरूढ़होकर दिव्यव्यूहके मध्यमें शोभित युद्ध करने के लिये उपस्थित हुआ अरिष्टासुर बलिपुत्र वरिष्ठ दुर्द्धरायुध १८१ । १८३ व धराधर विकम्पन ये सब युद्ध करने को चले व किशोरनाम दैत्य अतिहर्ष से प्रेरित हाथीके बच्चे १८४ के समान दैत्यों के मध्य में ऐसा हुआ जैसे कि सब ग्रहोंके मध्यमें सूर्य्य हैं व लम्बनाम दैत्य नवीन मेघके रङ्गके शरीर से युक्त बड़े लम्बे भूषण वस्त्र धारणकिये १८५ दैत्यव्यूहमें पहुँचकर कैसे शोभित हुआ जैसे कि कुहिरा के मध्यमें सूर्य्य शोभित होते हैं तदनन्तर वसुन्धराभ नाम दैत्य दांत ओंठ व नेत्रोंकोही आयुध बनाये १८६ महाक्रूर ग्रह शनैश्चर के समान हँसतेहुये दैत्यों के आगे खड़ा हुआ और वहां बहुत से घोड़ोंपर सवारथे बहुत से गजेन्द्रोंपर १८७ बहुतसे सिंह व्याघ्रोंपर बहुतसे वराहों व ऋक्षोंपर चढ़ेथे कोई गधोंपर कोई ऊँटों पर कोई २ मेघोंपर चढ़ेथे १८८ व बहुत से पैदरहीथे पर सब बड़े भयङ्कर व विकृतमुखवाले थे व कोई एक पैरके बल कोई आधेपैरके बलसे युद्ध करने के लिये नाचतेथे १८९ बहुतसे ताड़ठोंकतेथे बहुत

से शब्द करतेथे व सब हर्षित सिंहके समान नाद दानवश्रेष्ठ करते थे १९० व सब के सब घोर गदा परिघ भयङ्कर व पत्थर मुद्गर हाथों में लियेथे व अपने उन परिघाकार बाहुओंसे देवताओं को डरवाते थे १९१ व पाश खड्ग तोमर अंकुश और पट्टोंसे भी देवगणों को भयभीत करतेथे व शतधार आदि तीक्ष्ण अस्त्रों से क्रीड़ा करते थे १९२ खड्ग शैल छोटे बड़े पर्व्वतोंसे व उनकी शिलाओंसे परिघोंसे व अन्य आयुधों से क्रीड़ा करतेथे इनलोगों की ऐसी क्रीड़ा से आकाश मानो मेघोंसे युक्तसा दिखाई देताथा क्योंकि सब ओरसे दैत्यही दैत्य दिखाई देते थे १९३ इसप्रकारसे वह दानवोंकी महाउत्कट सेना देवताओंके सम्मुख उद्यत मेघसैन्यके समान स्थितहुई १९४॥

चौपै० इमि दानवसेना। सुर सुख देना देवनको दुखदायी।
सबविधिबनिठनिकै निजमतगुनिकै दैत्यनकेसनभाई॥
ह्वैकै मदमत्ता हर्षितचित्ता शोभित तहँ चलिआई।
ज्यहि देखत जोई व्याकुल सोई होत बहुत अकुलाई १९५

दो० दैत्य सैन्य विस्तार यह सुनह्यहु महामहिपाल॥
अब हरिकृत सुरकटकके हमसों सुनिये हाल १९६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेदैत्यसेनावर्णनं नामचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४०॥

इकतालीसवां अध्याय॥

दो० इकतलिसे सुर सैन्यसाजि असुर युद्धके हेतु॥
कालनेमि सब देवगण जीत्यहु सो कहि देतु १
पुनिश्रीहरि त्यहिअसुर कहँ मार्यहु सुर समझाय॥
ब्रह्मलोक गवने कथा यह वरणी चितलाय २

पुलस्त्यमुनि भीष्मजीसे बोले कि द्वादशआदित्य आठवसु एकादशरुद्र दो अश्विनीकुमार ये सब अपनी २ सेना व अनुचरोंसमेत यथाक्रम युद्ध करनेके लिये तैयारहुये १ सब देवताओंके अग्रगामी सहस्र नेत्रवाले लोकपाल इन्द्र सब से ऐरावत प्रथम वाहनपर आरूढहुये २ जो रथरूप वाहन सब सामग्रीसे युक्त सब सुन्दर वहां

से युक्त सुंदर मनोहर चक्रोंसे शोभित व सुवर्ण के छत्रसे भूषितथा३ व जिसके पीछे २ सहस्रों देवताओं गन्धर्वों यक्षों के समूह चले थे व दीप्तिमान् स्वर्गनिवासी महर्षिलोग जिसके पीछे २ चलेथे ४ व फिर वह रथ वज्रके विस्फारणसे उत्पन्न बिजुली व इन्द्रायुधसे युक्त व मेघगणोंसे युक्तथा मानो कामचारी पर्वतों से युक्त दिखाई देता था ५ जिसपर चढ़कर भगवान् इन्द्र सदा सब जगत्में फिरते रहते हैं उस रथके आगे प्रथम कामधेनु व ब्राह्मणलोग मङ्गलके अर्थ चले ६ जब देवताओंकी तुरुहियां व नगारे संग्राम के लिये जातेहुये इन्द्रादिकों के आगे बाजे तो फिर सैकड़ों अप्सरायें आगे २ नाचती हुई चलीं ७ तब अतिप्रकाशित पताकासे व ऐरावतसे युक्तरथपर आरूढ़ होकर सूर्य्य के समान शोभितहुये व वह रथ सहस्रोंअश्वोंसे युक्त पवनके वेगसे चला ८ इन्द्रका रथ मातलिनाम सारथि से युक्त कैसे शोभित हुआ जैसे कि सम्पूर्ण सुमेरु पर्व्वत सूर्य्य के तेजसे आच्छादित होनेसे शोभित होताहै ९ व यमराज दण्ड धारण कियेहुये व काल दण्ड मुद्गरादि धारण किये दैत्योंको भय दिखातेहुये देवताओं की सेनामें खड़ेहुये १० व चारसागरोंसेयुक्त पवनों व नागोंसेयुक्त शंख व बड़ी मुक्ताओंका अङ्गद दक्षिण हाथमें बांधे जलमय शरीर धारण किये ११ कालपाश हाथमें लिये चन्द्रमा के किरणोंके समान अश्वोंसे युक्त व पवनप्रेरित जलाकार सहस्रों लीलाकरतेहुये १२ श्वेत वस्त्र धारणकिये मूँगा जटित बहूँटा पहिने श्याममणिके समान चमकते हुये शरीर को धारण किये फेनरूप हार गलेमें हिलगाये १३ उत्तम पाश धारण कियेहुये वरुण देवताओं की सेनाके मध्यमें आखड़ेहुये व युद्ध मुहूर्त्तको देखतेहुये अपने किनारों को भिन्न कियेहुये समुद्रके समान १४ व अपनी सब सेनासेयुक्त और गुह्यकों के गणोंसे भी युक्त व शङ्खनाम तथा पद्मनाम निधियों से युक्त निधियों के स्वामी १५ राजराज श्रीमान् कुबेरजी गदा हाथमें लिये विमानपर चढ़कर युद्धकरनेवाले पुष्पकपर चढ़े दिखाई दिये १६ व वे राजराज नरवाहन प्रधान देवसेनाके समीप आकर अत्यन्त शोभितहुये क्योंकि निधियों के अधिपति तो यही ठहरे फिर इनके समान अन्य किसी

की शोभा कैसे होती सेनाके पूर्व पक्षपर तो इन्द्रजी स्थितहुये व धर्मराजजी दक्षिणपक्षपर १७ वरुण पश्चिम ओर व कुबेरजी उत्तर ओर इसप्रकार चारलोकपाल महाबली चारोंओरों को १८ मुखकिये देवसेनाकी सब अपनी २ दिशामें रक्षाकरतेहुये स्थितहुये व शोभासे जाज्वल्यमान अमित वेगसे चलनेवाले सातअश्वों से युक्त व दीप्यमान किरणों से प्रकाशित व उदयाचल अस्ताचलपर सदा स्थित चक्रवाले सुमेरु पर्य्यन्त चलनेवाले व स्वर्ग के द्वारपर सदाचक्रदेकर अन्धकार को दूर करातेहुये व सहस्र किरणों से युक्त अतिदीप्यमान तेजसे प्रकाशित रथपर आरूढ़ द्वादशात्मा दिवाकर सूर्य्य देव उपस्थितहुये व श्वेत किरणवाले सोम श्वेत अश्वजुते हुये रथपर आरूढ़ शोभित हुये १९। २२ जो कि सदा हिमजलसे पूर्ण किरणों से जगत् को आच्छादित करते हैं नक्षत्रों व योगों सहित द्विजों के राजा शीतकिरणवाले २३ व रात्रिके अन्धकारके नष्ट होनेपर अपनी ज्योत्स्नाकी छायामें स्थित व सब ज्योतियोंके स्वामी आकाश में सबको रस देनेवाले नाशरहित २४ व्योमचारियों के प्रभु व पवित्र ओषधियों और अमृतके प्रधान स्वामी जगत्के परम भाग सौम्यस्वभाव सर्व्व रसमय अमृतमय २५ उनचन्द्रमाको दानवों ने समरभूमिमें स्थित देखा व जो सब प्राणियों के प्राणहोकर प्राणियों में पांचप्रकार से स्थित रहते हैं २६ व जिन्होंने इन लोकों को सात स्थानों अथवा तीन स्थानों में करदियाहै व जिनको अग्नि के कर्त्ता व सब के उत्पन्न करनेवाले ईश्वर कहते हैं २७ व जिनकी योनि सातोंस्वरों में प्राप्त रहती है व जिनको विना देह चलतेहुए प्राणी कहते हैं २८ क्योंकि सब स्वरोंका उच्चारण उन्हींकी द्वारा होता है व जिनको आकाशगामी शीघ्रगामी व शब्दयोनिज कहते हैं वे सब प्राणियों के स्वामी वायुदेव अपने तेज से प्रज्वलित होतेहुये २९ मेघों सहित देवोंको सुख व दैत्योंको दुःख देतेहुए आये देवसेना में शरीर धारण कियेहुये आये जोकि सदा सब देवताओं के शरीरों को व्यथितनहीं करते व मेघोंकेसंग सदा स्थित रहते व जिनको देवता गन्धर्व्व विद्याधरगण सबमानते हैं वे वायुदेव आये व छोटे२

पन्नगों से पृथक् रहनेवाले बड़े २ सर्प्पलोगभी तीव्रविषको उत्पन्न करतेहुये व विषज्वालासे युक्त मुखवाले वासुकि आदि महासर्प्पराज देवताओं की ओर होकर संग्राममें दैत्योंसे युद्ध करनेकेलिये स्वर्ग को आये व सैकड़ों शाखाओंसेयुक्त वृक्षोंसहित और शिला शृङ्गों सेयुक्त सब पर्व्वत भी शरीर धारण कियेहुये दानवोंसे युद्ध करने के लिये देवताओं के समीप आये व जो हृषीकेश देव पद्मनाभ त्रिविक्रम कहाते हैं ३०। ३३ व युगान्त में जिनको प्रलयाग्नि कहते हैं व जो इससब विश्वभरके स्वामी हैं व सबके उत्पन्न होनेके स्थानहैं व जो वसन्तादिऋतुओं में हव्य भोजन करते हैं वे मधुसूदन भगवान् व जो पृथ्वी जल आकाश वायु अग्निरूपी हैं व श्यामस्वरूप शान्तिकारक श्रीहरि हैं उन्होंने आकर देवताओं से कहा तुम्हारा अविघ्नहो व अपने चक्रसे निकालकर एक चक्र देवताओंको दिया व आप बड़ेदर्प्प के साथ सब आयुधों के विनाश करनेवाली व सब शत्रुओं को कालके निकट पहुँचानेवाली महाकाली गदा हाथसें धारण किये थे ३४। ३६ व वे गरुड़ध्वज श्रीप्रभु प्रास पट्टिश शार्ङ्गआदि समुद्रसे उत्पन्न नाना प्रकारके आयुध धारणकिये थे ३७ वे श्रीहरि कश्यप ऋषिकी पुत्रता को प्राप्त द्विभुजीमूर्त्ति धारण किये व भुजगेन्द्र को मुखमें दबाये भोजन करतेहुये गरुड़के ऊपर चढ़ेहुये आये ३८ जो कि अमृत निकालने के समय में जैसे मन्दराचल शोभित होताथा वैसेही गरुड़पर शोभित होतेथे व देवासुर संग्राम में जिनको सबोंने देखाथा ३९ व उन गरुड़पर आरूढ़ थे जिनके शरीर में अमृत के अर्थ इन्द्रने वज्रसे चिह्न करदियाथा व जो गरुड़ विचित्र पक्षों से शोभित होकर धातुयुक्त पर्व्वतके समान विराजमान थे ४० व जो गरुड़ बड़ेभारी कैलाचल के समान ऊँचे व सूर्य्य समान पराक्रमी व सर्प्पों के महाप्रकाशित मणियोंको धारण कियेथे ४१ व जो अपने मनोहर दोनोंपक्षों से लीलापूर्व्वक स्वर्गको आच्छादित करके जैसे युगान्त में इन्द्र धनुष व मेघोंसे आकाश को घेरलेते हैं ४२ इन्द्र व वायुके सङ्ग लड़े थे वे गरुड़ नील रक्त रङ्गकी पताकाओं से भूषित थे सो ऐसे गरुड़पर आरूढ़ श्रीहरि समर में आये सो सुन्दर

सुवर्णके रङ्गका पीताम्बर धारण किये हुये श्रीनारायण को देखकर सब इन्द्रादि देवताओं ने हाथ जोड़कर प्रणामकिया व मुनिगणोंने भी नमस्कार किया व परममन्त्र युक्त वाणियों से मधुसूदनजी की स्तुतिकी कुबेर आकर चरणोंपर गिरे यमराज हाथ जोड़ आगे खड़े हुये ४३ । ४५ वरुणजी भी हाथ जोड़कर खड़ेहुये व देवराजभी बड़ी नम्रतासे उपस्थितहुये इन सबों से युक्त व पवनसे बँधा हुआ शब्द जिसमें ४६ वह देवसेना शोभित हुई जिस सेनामें कुबेर वनाये जुटेहुये थे व यमराज आगे चलते थे वरुण जिसे चलनेके लिये प्रेरित करते थे व जो देवराज से विराजित होतीथी व जिसका शब्द पर्वतों में आवद्धथा व जो प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित होतीथी व जो जीतनेवाले सहनेवाले व प्रकाशित होनेवाले श्रीविष्णु भगवान् के तेजसे घिरीहुई थी ऐसी बलवती देवताओंकी सेना युद्ध करने के लिये उपस्थितहुई ४७ तब बृहस्पतिजी ने कहा हे इन्द्र! तुम्हारे लिये स्वस्ति हो व दैत्यों के लिये स्वस्ति हो यह वाक्य शुक्राचार्य्य ने कहा ४८ इसके पीछे उन दोनों सेनाओं से महाघोर गाढ़ायुद्ध होनेलगा वे देवता दैत्य परस्पर एक दूसरे के जीतने की इच्छा कररहे हैं ४९ दानव देवताओं के साथ तरह तरहकी चोटें करतेहुये भिड़े मानों पर्वत पर्वतों से लड़रहे हैं ५० वह युद्ध दोनों ओरके वीरोंकी शीघ्रतासे अत्यन्त शोभितहुआ धर्म्म अधर्म्मसे युक्त व शूरता विनय से भी युक्त समर होनेलगा ५१ तब अतिवेगसे चलनेवाले घोड़ोंसे व हथिवालोंके प्रेरित हाथियोंसे व खड्ग लियेहुये आकाशको उछलते हुये पैदरोंसे युक्त ५२ व चलायेहुये मुशलों से वीरोंके ऊपर गिरतेहुये बाणोंसे व धनुषोंके फैलाकर टङ्कोर करनेसे व बड़ेदारुण वीरोंके पातितहोनेसे ५३ वह देवताओं व दानवोंका युद्ध प्रलयकाल के संवर्त्तक नाम अग्निके समान जगत् को त्रास पहुँचानेवाला हुआ ५४ अपने हाथों से छोड़ेहुये परिघों मुद्गरों व पर्व्वतों से समरमें दानवोंने देवताओंको मारा ५५ व जीतहोनेपर प्रकाशितमुखवाले बलीदानवोंसेमारेहुये विषण्णमुख देवगण समर में बड़ेदुःखको प्राप्तहुये ५६ व वे दैत्यों के अस्त्र शूलोंसे मथित परिघों

से भिन्नमस्तक छाती विदीर्णहुये देव बहुतरुधिर अपने अङ्गोंसे बहाने लगे ५७ व देवगण शरजालोंसे ऐसे विचेत करदियेगये कि धीरे २ सब यत्नोंसे रहितहोगये व ऐसे दानवीमायामें पैठे कि कर चरणादि अङ्गोंको न चलासके ५८ देवताओंकी सेना असुरोंसे ऐसी मारीगई कि मानों मृतकके समान दिखाई देनेलगी व देवताओंके सब आयुधोंको दैत्यों ने यत्नरहित करदिया ५९ तब सहस्रनेत्रवाले इन्द्रने दैत्योंकी सेनामें प्रवेश करके वज्रसे दैत्योंके धनुषों से छूटेहुये बाण समूहोंको काटडाला ६० व सब मुख्य २ दैत्योंको प्रथम विचेतकरके फिर सब दानव सेनाको ध्वस्तकरके तामस अस्त्र समूहसे इन्द्र ने सब अन्धकार करदिया ६१ यहांतक कि इन्द्रके घोर तेजसे ऐसे युक्तहुये कि दैत्योंके वाहनादि दिखाई न देनेलगे कि कहां हैं ६२ व इतने में देवगण मायाके पाशोंसे छूटगये व यत्न करके उन्होंने दैत्य समूहों के अन्धकार भूत शिरों को काटकर गिरादिया ६३ इसलिये अपध्वस्त होकर मूच्छित व अन्धकार युक्त पवनके लगने से दीप्ति रहित होकर पक्ष कटेहुये पर्व्वतों के समान सब दानवगण गिरपड़े ६४ व वे सब दैत्यलोग एकमें मिलकर अन्धकार में स्थित महा अन्धकाररूप होगये ६५ तब मयदैत्यने आकर एक महामाया को उत्पन्नकिया उसने इन्द्रकी कीहुई अन्धकाररूपिणी मायाको भस्म करदिया क्योंकि यह माया युगोंके अन्तमें सबको प्रकाशित करती है व और्व्वनाम अग्नि से मयने उस मायाको उत्पन्न कियाथा ६६ सो मयकी बनाईहुई उस महामाया ने उस ऐन्द्री तामसीमाया को नष्ट करदिया तब सूर्य्यके समान प्रकाशित सब दैत्य संग्राममें उठ खड़ेहुये ६७ व उस और्व्वीमायाको प्राप्तहोकर भस्म होतेहुये देवगण चन्द्रमाके शीतललोकके कुण्डमें चलेगये ६८ व वहां से कुछ शीतलहोकर और्व्व अग्निसे जलनेके कारण नष्टचित्त सन्तप्तहृदय शरण चाहतेहुये देवोंने जाकर इन्द्रसे अग्निसे सन्तप्तहोने के समाचारकहे ६९ तब मायासे सन्तप्त व दैत्यों से हन्यमान देवसैन्य को देखकर इन्द्रने वरुणसे उसका कारण पूँछा तो वरुण बोले कि ७० हे इन्द्र! यह पुराने समयका वृत्तान्तहै कि एक ऊर्व्वनाम महा

तेजस्वी ब्राह्मण जोकि गुणों से ब्रह्माके तुल्यथे उन्हों ने अतिदारुण तपकिया ७१ सो सूर्य्यके समान तपसे तपतेहुये उन मुनिकेसमीप देवगण मुनियों व देवर्षियों के साथगये ७२ वहां सबोंके जाने का कारण यहथा कि उससमय सब दैत्यों दानवोंका स्वामी हिरण्यकशिपु नाम दैत्यथा, उसने सब ऋषियों से पूँछा कि सबसे अधिक तेजस्वी कौनऋषि है ७३ तब सब ब्रह्मर्षिलोग धर्मसहित वचन ऊर्ध्वमुनि से बोले व हिण्यकशिपुको भी अपने सङ्गलियेगये कि हे भगवन्! इन दैत्यराजका यह कुल छिन्नमूल होगयाहै ७४ व तुम अकेलेहीहो व पुत्र रहित हो गोत्रसे भी दूसरा नहीं है व आप कौमार व्रतको धारण करके बड़ेविषम कार्य्य में उद्यतहुये हैं ७५ हे विप्र! महामुनियों के बहुतसे गोत्र एकान्तमें विना सन्तान अकेले पड़ेहैं ७६ व ऐसेही सबहैं इसमे पुत्रोंसे मेराप्रयोजन नहींहै हमने बहुत सहस्रवर्षोंतक सिद्ध मुनियोंकी सेवाकी व एकान्त में वायु पालकरके एकदेह होकर हमरहे परन्तु नहीं जानते किसकारण से हमारे पुत्र नहींहुये ७७ व आप तपस्वियोंमें श्रेष्ठहैं और प्रजापतिके समान प्रकाशितहैं इससे कोई उपायकरें कि हमारे वंशहीं चाहे आपहीपुत्रहों वा औरही कोई उपायकरें व हमको तेजस्वीकरें अपना दूसरा शरीर धारणकरें ७८ जब हिरण्यकशिपु ने मुनियों से ऊर्ध्व मुनिसे ऐसा कहवाया तो उन्होंने उन सब मुनियों को आदरसे ग्रहणकरके यह वचन कहा ७९ कि मुनियों का यह निरन्तर धर्म बहुत दिनोंसे विहित चलाआताहै कि वे केवल वनके कन्दमूल फलोंको खाते हैं ८० व ब्राह्मणकी योनि से उत्पन्न ब्राह्मण को जोकि अपनेही कर्म्म से प्रवृत्त रहता है उसका ब्रह्मचर्य्य ब्रह्माके स्थानमें जाकरभी प्रतिष्ठित होता है ८१ व गृहस्थाश्रम में रहनेवाले जनों की तीन प्रकारकी वृत्तियां होती हैं कि वे ब्रह्मचर्य्य वानप्रस्थ व यति धर्म्मको क्रमसे पहुँचते रहतेहैं व वनाश्रम निवासी हमलोगों की वृत्ति ऐसीहोतीहै कि सदा ८२ कोई २ तो जलपानकरके रहते हैं कोई वायुपीकर कोई दांतोंकोही ओखरी बनाते हैं पीसा कूटा पदार्थ नहींखाते अपने दांतोंसेही जो फूटता है चर्व्वणादि करलेते

हैं कोई २ अश्मकुट्ट तपस्वी होते हैं वे पत्थरसे कूटकर विना अ-ग्निके संस्कारही के पदार्थों को खाजाते हैं इसप्रकार कोई पंचाग्नि तापते हैं ८३ व ब्रह्मचर्य्यव्रत धारण करके परमउत्कृष्ट गतिकीप्रा-र्थना करते हैं ८४ इससे ब्रह्मचर्य्य रहनेही से ब्राह्मणकी ब्राह्मणता का विधान होता है ब्रह्मचर्य्य जाननेवाले लोग परलोक के विषय में ऐसा कहते हैं ८५ कि ब्रह्मचर्य्यमेंही धर्म्म स्थितहै व ब्रह्मच-र्य्यही में तप स्थितहै जो ब्राह्मण ब्रह्मचर्य्य व्रतमें स्थितहैं वे स्वर्ग में स्थितहैं ८६ योग विना सिद्धि नहींहोती न विनायोग यश होता है ब्रह्मचर्य्यही लोकमें तपकामूलहै इससे ब्रह्मचर्य्य से बढ़कर कोई तप नहीं है ८७ जो पुरुष इन्द्रिय समूहको अपने वशमें बलसेकरके पञ्चमहाभूत ग्रामोंको अपने वशमें करताहै व ब्रह्मचर्य्यव्रतको धारण करताहै बस सब व्रत करचुकताहै इससे पीछे अन्य कौनसा तप उस को करना रहता है ८८ विना किसी योगकेही केश धारण करना व विना सङ्कल्पकेही व्रत क्रियाका करना व विना ब्रह्मचर्य्यहीके ब्रह्म-चर्य्यव्रत करना इन तीनोंको पाखण्ड ८९ नामहै कहां स्त्रियां कहां उनका संयोग व कहां भावका विपर्य्यय ब्रह्माजी ने सब मनसेही मानवीप्रजा बनाईहै ९० जो आत्माको जीतेहुये तुमलोगोंमें तपस्या का वीर्य्यहो तो प्राजापत्य कर्म्म से मानसी पुत्रोंको उत्पन्नकरो ९१ तपस्वियों के वीर्य्याधानकेलिये मनसे बनाईहुई योनिहोती है व स्त्री के योगसे वीर्य्य त्यागकरना तपस्वियों का व्रत नहीं कहागया ९२ जो आपलोगोंने निर्भयसे होकर यहगुप्तधर्म्म करनेकेलिये कहा है व सज्जनोंकासा कहा मानाहै वह असज्जनोंका कहासा समझाजाता है ९३ इससे हम अपने आत्मा को मनोमय शरीर बनाकर विना स्त्री के संयोगहीके अपने अङ्गसे पुत्र उत्पन्न करेंगे ९४ इसप्रकार हमारा आत्मा दूसरे आत्माको उत्पन्न करेगा जैसे कि सृष्टि करने की इच्छा कियेहुये ब्रह्माने अपनेसेही सबप्रजाओं को उत्पन्न कियाहै ९५ ऐसा कहकर ऊर्ध्वमुनि तपोयुक्त तो थेही उन्होंने अपनी मोटी जांघको अग्निमें करके एक कुशासे प्रसव करने की अरणी को मथा ९६ कि उनकी मोटीजंघाको एकाएकी विदारण करके अति उल्वण

श्रेष्ठ पुत्रहोकर जगत् को भस्म करने की इच्छासे अग्निही उत्पन्न होआया ९७ इसप्रकार ऊर्व्वमुनिकी मोटीजाँघको भेदन करके और्व्वनाम अन्त करनेवाला अग्नि तीनोंलोकोंको जलानेकी इच्छा कियेहुये परमकोप करनेवाला उत्पन्न हुआ ९८ व उत्पन्न होतेही अपने पितासे दीनवाणी से बोला कि हे तात ! मुझको क्षुधा बाधित करती है इससे मुझे जगत्कोही शुष्कतृण समझकर उसमें छोड़देओ कि मैं सबको भस्मकरडालूं ९९ ऐसा कहकर स्वर्ग तक चली गईहुई ज्वालाओं से जँभोई लेतेहुये व दश दिशाओं के सब प्राणियों को भस्म करतेहुये अन्तकके तुल्य वह और्व्व अग्नि बढ़ा १०० इस अवसर में ब्रह्माजी और्व्वमुनि के समीप आये व बोले कि अपने पुत्र को कहीं एकस्थान में धैर्य्यसहित स्थापित करो व जगत् के ऊपर दयाकरो १०१ हम इस तुम्हारे पुत्र ब्राह्मण की उत्तम सहायता करेंगे यह हमारा वचन बोलनेवालों में श्रेष्ठ हे पुत्र ! तुम सत्यजानकर सुनो १०२ ऊर्व्वमुनि बोले कि मैं धन्यहूं व मेरे ऊपर आपने बड़ा अनुग्रह किया जोकि हे परमात्मन् ! मुझ बालक को हितके लिये यह मति देतेहो १०३ इससे जब प्रभातकाल हो तब जैसा समागम मुझको अभीष्ट है उससमागम में किस हव्यसे तृप्त होकर सुखको प्राप्तहोगा १०४ व इस मेरे पुत्र के वीर्य्य के तुल्यहो वैसा कोई स्थान आपबतावें जहां यह जाकररहे भोजन कैसा करेगा १०५ ब्रह्माजी बोले कि अच्छा और्व्व बड़वाके मुखमें समुद्र में तुम्हारा वासहोगा व हे विप्र ! हमसे उत्पन्न इस समुद्र के जलको पीतेरहना कभी बढ़ने न पावे जाओ १०६ हे पुत्र ! वहां हम अपने बनाये हुये जलमय हविको पीतेहुये उसजलके सोतेको तुम्हारे स्थान में छोड़ते रहेंगे जिसमें तुम सदा पीतेरहो कम न हो १०७ फिर हे पुत्र ! युगोंके अन्तमें तुम और हम दोनोंजने निष्ठुर से होकर सब संसारको अन्तकरके प्रलयके जलमें फिरते रहेंगे १०८ व हे पुत्र ऊर्व्व ! तुम्हारा यह पुत्र अग्नि और्व्वके नामसे प्रसिद्ध होकर अन्तकालमें सब देवता असुर मनुष्यादिक चराचर संसारको भस्मकरके जलमें निवास करतारहेगा व अब भी सदा जलपान करतारहै १०९

ऐसाहो इस बातको सुनकर वह ज्वालामाला के मण्डलसेयुक्त और्व्व नाम अग्नि समुद्र के मुखमें पैठगया व बड़वानलके नाम से प्रसिद्ध होकर समुद्र में रहनेलगा यह हमने सुनाहै ११० इसप्रकार इस कार्य्यको इस रीति से सिद्धकरके ब्रह्माजी व सब महर्षिलोग ऊर्व्व मुनिके व उनसे उत्पन्न अग्नि के प्रभाव को जानतेहुये अपने २ स्थानोंको चलेगये १११ व उस महाअद्भुत चरितको देखकर हिरण्यकशिपु दैत्यराज ऊर्व्वके साष्टाङ्ग प्रणाम करके यह वाक्य बोला कि ११२ हे भगवन्! जिसके कि सब लोग साक्षी हैं यह बड़ा अद्भुत वृत्तान्तहै जो कि हे मुनिश्रेष्ठ! तुम्हारे तपसे साक्षात् ब्रह्माजी सन्तुष्ट हुये ११३ व हे महाव्रत! मैं तुम्हारे पुत्र का व तुम्हारा सेवकहूं व तुम इस उज्ज्वलकर्म्म से प्रशंसा के योग्य हो ११४ इससे मुझको अपनी आराधना में युक्त व अपने शरणागत देखो व मेरे गुरु बनो व जब कभी गुरु का अनादर हो तभी मेरी व मेरे वंशवालों की पराजयहो अन्यथा न हो ११५ इतना सुनकर ऊर्व्वमुनि बोले कि हम धन्यहैं व हमारे ऊपर बड़ाअनुग्रह तुमने किया जोकि हमें अपना गुरु बनाया हे सुव्रत! हमारे इसतपके प्रभाव से तुमको कुछ भय नहीं है ११६ अब हमारे इस और्व्वनाम पुत्रकी बनाईहुई इसमाया को तुम ग्रहणकरो केवल निरिंधन अग्निमयी है व अग्नि भी उसे बड़े दुःख से स्पर्श करसक्ते हैं तो औरों की क्या गणना है ११७ यह माया तुम्हारे वंशवालोंमें सदारहेगी जब कभी शत्रुओंके ऊपर कोपकरके चलाओगे तुम्हारे विपक्षियों की पराजय करके तुम्हारी जय करेगी ११८ यह बड़े दुःखसे सहनेके योग्य माया है व देवता लोग भी इसे बड़ेही दुःखसे सहेंगे क्योंकि हमारे पुत्र और्व्व नाम अग्निकी बनाई हुई यह माया है ११९ तब से उस हिरण्यकशिपु दैत्य के यहां यह माया रहनेलगी व किसीके रोंकनेके मानकी नहीं थी इसमें कुछ भी संशय नहीं है परन्तु जिसने इस माया को बनाया है उसीने इसे शापभी दियाहै १२० कि यह जलसे तो न शान्तहो पर अन्य किसी शीतल पदार्थ के स्पर्श करने से शान्त होजाया करे इससे हे इन्द्र! हमको जलयोनि चन्द्रमाको सदाके लिये देदेओ १२१

उनके साथ व अपने सब मत्स्यादि यादोगणों के साथ तुम्हारे प्रसादसे इस मायाको मारडालेंगे इसमें कुछ भी संशय नहींहै १२२ ऐसाहीहो यह कह देवताओं के बढ़ानेवाले इन्द्रने अतिहर्षित होकर शीतास्त्र धारण करनेवाले चन्द्रमाको आगे आगे युद्ध करने के लिये आज्ञादी १२३ कि हे सोम ! तुम जाओ वरुणकी सहायताकरो असुरोंके विनाशके लिये व देवताओंकी विजयके लिये जाओ १२४ क्योंकि सब नक्षत्रादि प्रकाशित पदार्थोंके ईश्वर होनेके कारण तुम दैत्यों के वीर्य्य के समान हो रसके आगमके जाननेवाले विद्वान् सब लोकोंमें रसोंको त्वन्मय कहते हैं १२५ क्योंकि तुम्हारी एकपक्ष में क्षय व एकपक्षमें वृद्धि सब लोगों में प्रसिद्ध है कि कृष्णपक्षमें तुम अपनी एक २ कला देवताओं को पिलाते रहतेहो फिर शुक्लपक्ष में एक २ कला तुम्हारी बढ़ती जातीहै सो यही दशा तुम्हारी समुद्रके भीतर भी रहती है और आकाशमें भी १२६ व तुम्हीं रात्रि व दिन में जगत् को मोहित करातेहुये लोकोंकी छायाका अवलम्बन करके समय प्रवृत्त करतेहो तुम्हारा लक्ष्म शशरूप है १२७ हे सोम ! ये नक्षत्रयोनि भी हैं वे तुम्हारी मायाको नहीं जानते कि तुम नक्षत्रों समेत सूर्य्य से भी बहुत ऊँचे रहतेहो सोभी ज्योतिषों के ऊपर अन्य कुछ तुम्हारे रहनेका स्थान नहीं है १२८ तुम वहां अन्धकारको एकाएकीदूरकरके सम्पूर्ण जगत्को अवभासित करतेहो तुम्हारे शीतभानु हिमतनु ज्योतिषामधिप शशी १२९ अपित्तकालयोगात्मा इज्य यज्ञरस अव्यय ओषधीश क्रियायोनि जलयोनि अनुष्णगु १३० शीतांशु अमृताधार चपल श्वेताश्ववाहन कान्तवपुषांकान्ति सोमपायि सोम ये नाम हैं १३१ सब प्राणियोंके तुम सौम्यरूपहो व तिमिरके नाशकहो तुम नक्षत्रराजहो इससे हे महातेजवाले ! सेनायुक्त वरुण के साथ तुम जाओ १३२ व देवताओं को जलातीहुई इस आसुरी माया को शान्त करो चन्द्रमा बोले कि हे देवराज ! हे वरप्रद ! जो हम से युद्ध के वास्ते कहतेहो १३३ हम देवमाया के नष्ट करने के लिये ऐसा शीत बरसावेंगे कि हमारे शीत से वेष्टित शीत से भस्म इस मायाको देखोगे १३४ बस इतना कहकर चन्द्रमाने इतनी हिम

की वृष्टि की जिसने उन घोर दैत्यों को सब ओर से वेष्टित करलिया जैसे कि वर्षाकाल में मेघ आकाशको आच्छादित करलेते हैं १३५ पाश और शीत किरणधरनेवाले महाबली वरुण व चन्द्रमा दोनोंने पाशके पातोंसे व हिमके पातोंसे सब दानवोंको मारकर व्याकुल कर दिया १३६ पाश व हिमसे युद्ध करनेवाले दो जलनाथ समरमें ऐसे घूमनेलगे मानों जलोंकी धारा उछालतेहुये क्रुद्ध दो महासागर उफ-लाते हैं १३७ उन दोनोंने उस बड़ीभारी दानवसेनाको भरदिया मानो प्रलयकाल के मेघों से जगत् बोरडालागया १३८ इसप्रकार उद्यत दोनों जलनाथ चन्द्रमा व वरुण ने देवताओं के ऊपर दैत्योंकी की हुई उस माया को शान्त करदिया १३९ चन्द्रमाके शीतल हिम से जलेहुये व वरुणके पाशों से बँधेहुये सब दैत्य समरमें चलने फिरने को समर्थ न हुये जैसे कि विना शिरके सर्प नहीं चलसक्ते १४० शीतकिरण के शीतलकिरणोंसे सब दैत्य निपातितहुये व ऐसे मारे गये व हिममें बोरेगये कि उष्णतारहित अग्नि के समान होगये १४१ व उन दैत्योंके सब विमान आकाशसे नीचे गिरनेलगे व आ-काशसे ऊँचेको भी उछलने लगे १४२ उस वरुण के हाथ से बँधी हुई व शीतकिरण चन्द्रमासे आच्छादित माया को देखकर मायावी मयदानव ने आकाश में दानवों को देखा १४३ पर्व्वत से उत्पन्न बड़ी भारी खड्गों के सञ्चार से शब्दयुक्त वृक्ष छोटे २ पर्व्वत व पर्व्वतों के शिखरों से युक्त व कन्दराओं से घनी १४४ सिंह व्याघ्र गणों से आकीर्ण शब्द करतेहुये देवसमूहोंसे यहां मृगगणोंसे हवा से कँपायेहुये वृक्ष काकों से पूरित वृत्तों से युक्त १४५ अपने पुत्र की बनाईहुई यथेच्छाचारिणी व स्वर्ग में शब्द करतीहुई अति विस्तृत पर्वतसम्बन्धी आसुरी माया को सब ओर से उत्पन्नकिया १४६ उस माया ने शिलाओं की वर्षाओं से व खड्गों के बरसाने से व वृक्षों के सम्पातित करने से देवसमूहों को मारा व दैत्योंको जि-आया १४७ व चन्द्रमा और वरुण दोनोंकी मायायें अन्तर्द्धान हो गईं पर्व्वतों के मारे मानो पृथ्वीपर कहीं चलनेका मार्गही न रहा १४८ ऐसे पर्व्वतों ने सब ओर से घेरलिया राक्षस व यक्षगणों ने

ऐसा घेरलिया कि कोई एक भी देवगण दिखाई न देनेलगा धन्वा व अन्यअस्त्र सर्व भग्न होगये १४९ इस प्रकार एक गदाधर श्री विष्णुजीको छोड़कर अन्य जितनी देवगणों की सेनाथी सब निरुपाय होगई सबके अस्त्र शस्त्र टूटगये व सब के यत्न जाते रहे कोई कुछ भी न करसकने लगा परन्तु वे हम लोगों के ईश श्रीविष्णुजी कुछ भी कम्पित नहीं हुये १५० वे सब कुछ सहनेवाले स्वभावके कारण जगत्स्वामी गदाधर जीनें कुछ क्रोध भी न किया सर्व काल के जानने वाले व काले मेघ कीसी आभा से युक्त श्रीभगवान् हरि जीने देवताओं को दैत्यमाया से व्याकुल देखकर १५१ देवासुर विमर्द देखने के वास्ते हरिने रणमें अग्नि व पवनको आज्ञादी उन दोनों ने भगवान् की प्रेरणा से १५२ दैत्यमाया को खींच लिया उस महासंग्राम में अग्नि व पवन ऐसे बढ़े कि उनके प्रबल प्रभावों से १५३ वह सब पार्व्वती माया जलकर भस्महोकर क्षणमात्र में नष्ट होगई पवन से युक्त उस अग्नि ने व अग्नि से युक्त उस प्रचण्ड पवन ने १५४ दैत्यों की सेना को ऐसा भस्म किया कि जैसे प्रलय के समय दोनों भस्म करते हैं पवन प्रथम इतने वेगसे चला कि अग्नि महाप्रचण्ड होगया व फिर अग्नि इतने वेग से जब धधका १५५ तो पवनभी अग्नि तुल्यही उष्ण होगया व दोनों जाकर दबाकर दानवों की सेनामें खाने व विचरनेलगे तब दैत्यसेना के अंगों के इधर उधर टूटफाटकर गिरने पर व दानवों के विमानों के इधर उधर भ्रष्टहोकर गिरने पर पवन के वेग के लगने पर व अग्नि से जलजाने पर १५६ । १५७ दैत्यमाया के वध होनेपर व गदाधर भगवान् की स्तुति होनेपर व दैत्यों के यत्नरहित हो जानेपर तीनों लोकों के बन्धन से छूटजाने पर १५८ व देवताओं के हर्षित होने पर तथा साधु २ कहने पर व इन्द्रकी जय होनेपर दैत्यों की पराजय होने पर १५९ सब दिशाओं के शुद्ध होनेपर व धर्म्म के विस्तार के प्रवृत्त होने पर चन्द्रमार्ग्ग के खुलजानेपर व सूर्य्य के अपने स्थानपर स्थितहोनेपर १६० सब अन्य प्राणियों के अपनी २ प्रवृत्तिपर टिकने पर व मनुष्यों के अपने चरित्रों पर

आरूढ़ होने पर मृत्यु के अभिबन्धन होने पर अग्नि में आहुति परने पर १६१ देवताओं के यज्ञों में शोभित होनेपर व स्वर्ग के अर्थको दिखाने पर सब लोकपालों के अपनी २ दिशा में स्थित होजाने पर १६२ तप करने से शुद्धलोगों के भावपर टिकने पर व पापियों के अभाव होनेपर देवपक्ष के मुदित होने पर दैत्यपक्ष के विषाद करनेपर १६३ धर्म्म के तीनचरण युक्त शरीर होनेपर व अधर्म्म के एकचरण युक्त शरीर होने पर महामार्ग्ग के खुलजाने पर व सन्मार्ग्ग के प्रचार होनेपर १६४ लोगों के धर्म्म में प्रवृत्त होने पर व ब्रह्मचर्य्यादि आश्रमों को अपने २ धर्म्म पर प्रवृत्त होनेपर व प्रजाओं की रक्षा में युक्त राजाओं के विराजमान होनेपर १६५ सम्पूर्ण लोगों के प्रशान्त होनेपर व दानवोंके नाशयुक्त सन्तापित होनेपर अग्नि व वायुके उस संग्राम कर्म्मके करनेपर १६६ तन्मय होकर लोगों के विमल होने पर व उन दोनों से जयक्रिया के होने पर पूर्व्वकाल में वायुके व अग्नि के कियेहुये भयसे व्याकुल दैत्यों को सुनकर १६७ कालनेमि नाम दानव वहां आकर दिखाई दिया जो कि भास्करके आकारका मुकुट धारण किये था शब्दायमान भूषणोंसे भूषित था १६८ मन्दराचलके समान डीलमें था व चांदी सोने से आच्छादित था सैकड़ों उदग्र अस्त्र शस्त्रों से युक्तथा सौ बाहुओं व सौ मुखों से युक्तथा १६९ सौ शिरोंसे युक्त शोभासहित होने से सौ शृङ्ग के पर्व्वत के समान शोभित होता था व बड़ेभारी सूखेतृणोंके समूहमें प्रवेश कियेहुये ग्रीष्मऋतु के अग्निके समान प्रज्वलित होरहाथा १७० व धूमले केशोंसे युक्त हरी मूँछ दाढ़ीसे युक्त बड़े २ दांतों से युक्त व विकटमुखवाला था व तीनों लोकों के मध्य में विस्तारित शरीर को धारण किये था १७१ व बाहुओंसे आकाशको पीटताथा व पैरों से पर्व्वतोंको उठाकर अलग फेंकताथा व अपने मुखके निश्श्वासोंसे वर्षा करतेहुये मेघोंको निकालता था १७२ तिरछे व बड़े लम्बे सुर्ख नेत्रों से युक्तथा व मन्दराचलके समान उदग्र तेजस्वी था व रणमें सब देवताओंको भस्मकरनेकी इच्छासे आरहाथा १७३ व दशदिशाओंको आच्छादित कियेहुये

सब देवताओं को भयभीत कराताथा प्रलयकालके प्यासे मृत्युके समान उपस्थित हुआथा १७४ मानो सुतलसे निकलता हुआ व विपुल पोरोंसे युक्त अंगुलियों से युक्त बड़े ऊँचे पञ्जों से युक्तथा व लम्बे आभरणों से युक्त कुछ छिन्न कवच से शोभितथा १७५ व प्रकाशित उठायेहुये दहिने हाथसे देवताओंके मारेहुये दैत्यों से कहताथा कि खड़ेहो १७६ कालचक्र के तोड़नेवाले उस कालनेमि दानवको देखकर सब देवगण भयसे विह्वलनेत्र होगये १७७ सब को त्रासित करतेहुये उस कालनेमिको सब प्राणियोंने तीनोंलोक नापतेहुये दूसरे वामनजीके समान देखा १७८ वह पवनके वेगसे बड़े ऊँचे आकाशतक उछलकर सब देवताओंको पकड़कर घुमाने लगा १७९ व भ्रमण करते करते इन्द्रको लपटगया उससमय स-मरमें विष्णु सहित मन्दराचलके समान वह दैत्य शोभित हुआ १८० तब काल समान आयेहुये कालनेमिको देखकर इन्द्रसहित सब देवगण अत्यन्त व्यथित हुये १८१ व दानवोंको तृप्त करने की इच्छासे महासुर कालनेमि ग्रीष्मके अन्तके मेघके समान बढ़ा १८२ तीनों लोकों के मध्य में प्राप्त उस महादानवको देखकर य-द्यपि प्रथम महाश्रान्त होगये थे पर अमृतपान कियेहुये के समान दानव लोग उठखड़े हुये १८३ व वे मय आदि दानव लोग भयसन्त्राससे रहित होकर उस तारकामय संग्राम में निरन्तर जीत मानकर प्रकाशित हुये १८४ व युद्ध की इच्छा कियेहुये सब दानव लोग समरमें अत्यन्त शोभित हुये व मन्त्रों में अभ्यास करनेलगे व युद्धमें इधर उधर दौड़नेलगे १८५ इस बातको देखकर काल-नेमिको बड़ी प्रसन्नता हुई उनमें जो मय दैत्यके युद्धमें अगुआ दैत्यथे १८६ वे सब भयको छोड़कर हर्षित होकर युद्ध करनेपर उद्यत होगये व मय तार वराह और हयग्रीव दानव १८७ व वि-प्रचित्तिका पुत्र श्वेत नाम दानव खर व लम्ब वे दोनों अरिष्ट व बलिपुत्रकिशोर है नाम जिसका १८८ स्वर्भानु अमरप्रख्य व म-हाअसुर चक्रयोधी ये सब युद्धविद्या के जाननेवाले व सब तप करके सुस्थित हुये थे १८९ ये सब कुशल दानव कालनेमि के स-

सौंप गये व गदा भुशुण्डी चक्र व फरसों से १९० व काल समान मुसलों से धनवासियों व मुद्गरों से अस्त्र समान बड़े २ पत्थरों से व अतिदारुण गण्ड शैलोंसे १९१ पट्टिशों से भिन्दिपालों से व उत्तम लोहे के परिघों से व बड़े घाव करनेवाली बरछियों से १९२ युग यन्त्र निर्मुक्त उग्र प्रहारयुक्त लाङ्गलोंसे व परिघोंसे व बड़ी २ बांहों से चलायेहुये प्रासों से १९३ भुजङ्गवक्त्र लेलिहान मुखवाले बाणोंसे वज्रों से प्रहरणियों से व चमचमातेहुये भालों से १९४ अतितीक्ष्ण नङ्गे त्रिशूलोंसे व अतिनिर्म्मल चमकते हुये खड्गोंसे प्रसन्न मन कियेहुये दैत्य धन्वा लियेहुये १९५ कालनेमि की लड़ाई में आगेकर शस्त्रों से अतिप्रकाशित दैत्यों की सेना शोभित हुई १९६ जैसे कि आकाश में बिजुली सहित वर्षाकाल में मेघमण्डली शोभित होती है व ऐसेही इन्द्रसे रक्षित देवताओंकी भी सेना हर्षित हुई १९७ जो कि चन्द्र व सूर्य्य की सर्दी व गर्मी युक्तथी व वायुके वेगसे युक्तथी व तारागण जिसमें पताकाथे १९८ व मेघ गणोंकीही क्षुद्रघंटिका बांधे थी ग्रह व नक्षत्रोंसेही हँसती थी यम इन्द्र कुबेर व वरुण से रक्षित थी १९९ व प्रदीप्त वायुसहित अग्निही को मुख बनायेहुये नारायण में परायणथी वह समुद्र के समूह के तुल्य देवताओं की प्रकाशित महासेना २०० यक्ष गन्धर्व्वों से शोभित भयानक अस्त्रयुक्त प्रकाशित हुई उस समय उन दोनों सेनाओं का समागम हुआ २०१ जैसे कि युगों के अन्तमें अन्तरिक्ष और पृथ्वी का संयोग होजाता है व दैत्यों दानवों का महाघोर संकुल युद्ध होनेलगा २०२ जो कि क्षमा और पराक्रम दोनों से युक्तथा व अभिमान व नम्रता से युक्त उस समरमें देव दानव दोनों भयङ्कर अपने २ बलसे विक्रमण करने लगे २०३ मानो पूर्व्व व पश्चिम के दोनों सागरसे जल भर २ कर मेघलोग आकर आपसमें जुटगयेथे उन दोनों सेनाओं से युक्त देव व दानव इधर उधर चलने दौड़ने लगे २०४ जैसे फूलेहुये वृक्षों से युक्त पर्व्वत एकत्र शोभित होते हैं वैसेही भेरी शङ्खादि बजातेहुये देव दानवगण शोभित हुये २०५ शरोंसे पृथ्वी आकाश व सब दिशा-

ओंकी पूर्ति करनेलगे धनुषों की प्रत्यञ्चाओं के शब्द व धनुषों के झुकने की मर्मराहट २०६ व नगारों का बाजना इन सबोंका शब्द दैत्योंके अन्तःकरणमें प्रविष्टहोगया व दोनव दैत्य दोनों परस्पर एक में मिलकर एक एककी किर्षा सुनाने लगे २०७ वी और द्वन्द्वयुद्ध करनेवाले लोग अपने बाहुओं से दूसरे के बाहु तोड़ने खींचनेलगे देवताओं के घोर वज्र व उत्तम परिघ आदि चले २०८ व दानवोंने बड़ी भारी गदायें व खड्ग चलाये गदाओं के निपातों से अङ्गभङ्ग होकर व बाणोंसे खण्ड २ होकर २०९ गिरपड़ते थे व कोई फिर मारते थे इसके पीछे जो गिरपड़ते फिर उठते व घोड़े जुतेहुये रथों पर चढ़कर वो विमानोंपर चढ़कर हाथियों पर चढ़कर २१० परस्पर संक्रुद्ध होकर फिर संग्राममें आजाते थे व दांतोंसे च्वुरी बांधे हुये फिर समरमें २११ अपने २ प्रतियोधी के संग मिलकर लड़ने लगते थे रथपर चढ़ेहुये रथपर चढ़ेहुये लोगों से युद्धकरते व पैदर पैदरोंसे उन रथों का बड़ा तुमुलशब्द ऐसा विदित होताथा २१२ जैसे जलभरे गर्ज्जतेहुये मेघों का आकाश में होताहै कोई २ रथों को तोड़डालते थे व कोई २ रथों से कुचलजाते थे २१३ व कोई २ ऐसे सम्बाधमें पड़जाते थे कि वहांसे उन के रथ फिर चलने ही नहींपाते थे तब परस्पर मैदान में कूदके कुश्ती लड़ने लगे २१४ अपने २ खड्ग मियानों से निकालकर व रथोंपरसे अलग कूद २ कर ढाल खड्ग हाथमें लिये एक दूसरेको मारते थे व बहुतसे वीर अस्त्रोंसे छिन्नभिन्न होकर समरमें पड़ेहुये रुधिर विमन करतेथे २१५ उनके घावोंसे रुधिरकी धारा ऐसी बहती थी जैसे वर्षामें मेघों से धारा निकलती है परस्पर बाण दृष्टि से युद्ध दुर्दिन शोभित हुआ २१६ सो अस्त्र शस्त्रोंसे विख्यात व चलाई खींचीहुई गदाओं से मिलित देव दानवों के शब्दसे युक्त वह महायुद्ध अत्यन्त शोभित हुआ वे दानव महामेघ देवताओं के आयुधों से विराजमान परस्पर बाण बरसाते हुये वर्षा के मेघों के समान शोभितहुये तदनंतर क्रुद्ध होकर महादानव कालनेमि समुद्र के जल से पूर्ण बड़े भारी मेघ के समान बढ़ा २१७ उसके अंगों से बिजुली के समान

शिरोभूषण धारण किये व प्रदीप्त वज्र बरसातेहुये पर्व्वताकारमेघ निकले २१८ व उसके क्रोधसे उत्पन्न अग्निही पवन हुआ व भौंहों की च्यढ़ाई से जो पसीना निकला वही बरसना हुआ व अग्नि सहित अयुतों चिनगारियां उसके मुख से निकलने लगीं २१९ व उसके बाहु आकाश में तिरछे व ऊपरको बढ़गये वे पर्व्वत से निकलेहुये पँचमुहें सर्प्पों के समान शोभितहुये २२० उसने बहुत से अस्त्रजालों से व बहुत प्रकारके धनुषों व बाणों व परिघों से देव समाजको भरदिया उस समय ऊँचे पर्व्वतों से शोभित छोटे पर्व्व-तोंकीसी शोभा हुईथी २२१ वह सुन्दर वस्त्र धारण कियेहुये संग्राम की लालसासे खड़े हुये कैसे शोभित होताथा जैसे कि सन्ध्या के समयके घामसे ग्रस्त साक्षात् सुमेरु पर्व्वत शोभित होता है २२२ देवताओं को अतिवेगसे मथन करनेवाले शृंग पर्व्वत व वृक्षों से उस कालनेमिने मारा पर उसका मारना ऐसा हुआ जैसा कि वज्रसे महापर्व्वतका भेदन होताहै २२३ तब उसने खड्ग लियेहुये हाथों से देवताओं के कुछ शिर काटडाले व कुछ अन्य अंग काटे इससे समरमें कालनेमि के मारे हुये देवगण चलनेमें समर्त्थ न रहे २२४ कोई तो मुष्टिकोंसे मारेगये व कोई मर्द्दन करडालेगये व बहुत से यक्ष गन्धर्व्व नाग पन्नग किन्नर २२५ तिस कालनेमि करके मारे हुये गिरगये उपाय करते हैं पर कोई नहीं चलता क्योंकि बेहोश होगये थे २२६ शरों के बन्धनमें तिसने इन्द्रको डाल दिया वे सब यत्नोंसे रहित होगये यहांतक कि वहांसे उठकर चलभी नहीं सके २२७ निर्ज्जल मेघके तुल्य जल के समुद्र के समान उजले होगये और समर में वरुणको भी निर्व्यापार व पाशरहित करदिया २२८ व समर में कालरूपी उस कालनेमिने परिघों से कुबेरको ऐसा मारा कि रोदन करतेहुये लोकपालेश कुबेर ने धनाधिपताका कार्य्य ही छोड़दिया २२९ यमराज जोकि रणमें सब के ऊपर प्रहार करते हैं व सबको मृत्युके वशीभूत कराते हैं वेभी ऐसे मारेगये कि याम्या-वस्था को छोड़कर भयभीत हो अपनी दक्षिण दिशा को चलेगये २३० उसने सब लोकपालों को अपने अपने अधिकार पर से उठा

दिया व अपने चार रूप धारण करके चारोंदिशाओं में व्याप्त कर दिये २३१ फिर वह नक्षत्रों के स्थानको चलागया वहां राहुकी दिखाई हुई दिव्यरूपिणी चन्द्रमा की लक्ष्मी को देखकर हरलिया व सब चन्द्रलोकमें अपना अधिकार करलिया २३२ व फिर सूर्य्य-लोक में जाकर भास्करजीको उनके अधिकारसे अलग करदिया व उनका दिन करनेवाला कर्म्मभी हरलिया व शासन भी आप करने लगा २३३ व देवताओं के मुख अग्निदेवको भी जीतकर अपने सुखकेलिये वशमें करलिया व वायुको भी हठसे जीतकर अपने वशीभूत करलिया २३४ व अपने बलसे सब समुद्रों से सब नदियों को लेकरके अपने में मिलालिया- तुमलोग सदा हमारे सम्मुख खड़े रहा करो २३५ व स्वर्ग से उत्पन्न और पृथ्वीपर स्थित सब जलों को अपने वशमें करके फिर पर्व्वतों से रक्षित पृथ्वीभरको भी अपने बलसे आक्रमण करलिया २३६ व महाभूतोंका महान् भूतपति होकर व सर्व्वलोकमय होकर वह दैत्य सब लोकों को भय पहुँचानेवाला ब्रह्माकी तुल्य शोभित हुआ २३७ व वह सब लोकपालों का शरीर धारण करके एकही सबका अधिकार करनेलगा व चन्द्र सूर्य्यग्रहों के अधिकारसे युक्त हुआ व अग्नि वायुसेभी युक्तहोकर वह दानव युद्धमें शोभित हुआ २३८ लोकोंकी उत्पत्तिके कारण ब्रह्माजी के अधिकार परभी स्थित होगया तब दैत्यगण उसकी स्तुति करने लगे जैसे कि देवगण ब्रह्माजीकी स्तुति किया करते हैं २३९ व जिनको कोई विपरीत कर्म्म करनेसे कभी नहीं पासक्ता वे वेद धर्म्म क्षमा सत्य श्रीनारायणजी के आश्रयमें चलेगये २४० उन सबोंके नारायणमें मिलजानेपर दानवेश्वर बहुतही क्रुद्धहुआ इस से वैष्णवपदके ग्रहण करनेकी इच्छासे वह दानव इन वेद धर्म्मादिकों के पीछे २ चलदिया जहां कि सो देवताथे २४१ व सुमेरु पर्व्वत पर स्थित श्रीविष्णुभगवान्जीको उसने देखा जो कि शङ्ख चक्र गदा धारण कियेहुये दानवों के विनाशके लिये अपनी गदाको गरुड़ पर सवार हिलारहेथे २४२ सो सजल जलद श्याम शरीर व बिजुली के समान पीलेरङ्गका पीताम्बर धारण किये सुवर्णके पक्ष धारण

कियेहुये कश्यपके पुत्र गरुड़की पीठपर आरूढ़ २४३ दुष्ट दैत्यों के विनाशके लिये मानों आकाशमें स्थितथे सो ऐसे श्रीविष्णुजी के समीप जाकर वह दुष्ट दानव कालनेमि अक्षोभ्य विष्णुसे क्षोभित मनकरके यह वचन बोला व कहनेलगा कि २४४ यही हम सब लोगोंके प्राणोंके नाशक हमारे शत्रुहैं व प्रलयके समुद्रमें विहार करतेहुये मधु व कैटभकेभी शत्रु यही हैं २४५ व यही हमलोगों के विग्रह व अन्यायके स्थान कहेजाते हैं व समरमें अनेक दानवोंको शीघ्रही इन्हींने मारडाला है २४६ यही बड़े निर्लज्ज व निर्घृण लोकमें हैं जिन्हों ने दानवों की स्त्रियोंके केशपाशोंको उखड़वाडाला अर्थात् दानवोंको मारकर उनकी नारियोंको विधवा कर दिया तो उन्हों ने अपने बाल बनवाडाले २४७ यही वे विष्णुहैं जो स्वर्गवासी देवताओं के मध्यमें वैकुण्ठ कहाते हैं व सर्प्पों के मध्यमें अनन्त कहाते हैं व ब्रह्मासे भी प्रथम होने के कारण स्वयम्भू कहाते हैं २४८ व यही देवताओं के नाथहैं व यही हमलोगों को सदा खींचा करते हैं इन्हीं के क्रोध को पाकर हिरण्यकशिपु मारागया २४९ व इन्हीं की छायामें रहकर देवगण यज्ञभाग भोगते हैं व महर्षियों के विधिपूर्वक आहुति दियेहुये घृत तिल । दि को तीन तरहसे खाते हैं २५० व यही वे सब दैत्यों व दानव राक्षसादि देव शत्रुओं के नाशने के हेतु हैं क्योंकि समर में इन्हीं के चक्रानल में पैठकर हमलोगोंके कुल भस्म होजाते हैं २५१ सो ये युद्ध में देवताओं के अर्त्थ अपने प्राण भी छोड़ने को उद्यत होजाते हैं व तेजवाला अपना चक्र शत्रुओं पर छोड़तेहैं २५२ सो अब सब दैत्यों के कालभूत केशव कालभूत हमारी विद्यमानता में अतिक्रान्त कालका फलपावेंगे २५३ बड़े भाग्यकी बात है जो ये विष्णु हमारे सम्मुख आगये हैं सो हमारे बाहुसे पिसकर आज समरमें नाशहोजायँगे २५४ व सब अपने पूर्व्वज दैत्योंका बदला लेकर व उनसे अनृण होकर दानवों के भय पहुँचानेवाले इन विष्णुको आजही समर में मारकर २५५ व फिर शीघ्रही रणमें सब नारायण के अनुयायियों को मारडालेंगे क्योंकि यद्यपि ये

देवताओं की जाति के नहीं हैं वास्तवमें और ही कोई हैं तथापि दानवोंको सदा मारतेही रहते हैं २५६ देखो इन्हींने पूर्व्वसमय में अनन्त होकर व पद्मनाभके नाम से प्रसिद्ध होकर एकार्णव में मधुकैटभ नाम दो दैत्यों को मारडाला २५७ व इन्हीं ने आधा सिंहका व आधा मनुष्यका रूप धारण करके पूर्व्वकाल में हमारे पिता हिरण्यकशिपुको मारडाला २५८ व देवताओं के उत्पन्नकरने वाली अदितिने अपने शुभगर्भमें इनको धारण किया तब इन्होंने तीन पैगोंसे तीनोंलोक अकेलेही हरकर देवताओंको देदिये २५९ वही ये देव विष्णु इसतारकामय संग्राम में हमारे समागम से अब नष्टहोजायँगे २६० ऐसेही औरभी बहुतसे आक्षेप वचन रणमें अयोग्यवाणियोंसेकहकर नारायणजीसे युद्धकरनाही उसने चाहा २६१ इसप्रकार असुरेन्द्रकालनेमि ने बहुतसेभी आक्षेप वचन गदाधर भगवान् से कहे परन्तु उन्हों ने क्षमाके बलसे कोप न किया व दैत्येन्द्रसे कहा कि २६२ हे दैत्य! दूसरे किसीके बलके अहङ्कारसे जो बलहोता है वह थोड़ा होता व जो क्रोधरहित बलहोताहै वह स्थिर रहताहै इससे जो तुम क्षमा छोड़कर बोलते हो अहङ्कार से उत्पन्न दोषोंसे मारेहुयेहो २६३ हमारे मतसे तुम अधमहो तुम्हारे वाग्बल को धिक्कारहै जहां स्त्रियां गर्जती हैं वहां कौन पुरुष स्थितहोते हैं २६४ हे दैत्य! हम तुमको तुम्हारे पूर्व्वजोंकेही मार्गपर चलतेहुये देखते हैं अच्छीबात है जो दशा उनलोगोंकी हुई है वही तुम्हारीभी होगी क्योंकि ब्रह्माके बनायेहुये सेतुको तोड़कर कौन स्वस्तिमान् होताहै २६५ देवताओंके व्यापारघातकरनेवाले तुमको अभी हम मारेंगे व अपने अपने स्थानोंपर अभी देवताओंको स्थापितकरेंगे २६६ जो तुमसे होसके समरमें अपना कृत्य दिखाओ जब संग्राम में श्रीवत्सधारी श्रीविष्णुजीने ऐसाकहा तब बड़े ऊंचेस्वर से हँस कर फिर क्रोधसे अपने सब हाथोंमें उसने अस्त्रशस्त्र धारण किये २६७ व अपने सौ हाथ उठाकर उसने सब देवगणों के स्वामी श्री विष्णु भगवान्की छाती में मारेक्रोधके औरभी नेत्रलालकरके गदा मारी २६८ व मयतारआदि दानवभी समरमें खड्गआदि आयुधों

को उठायेहुये श्रीविष्णुभगवान् के सम्मुख दौड़े २६९ व आकर एकही सङ्ग प्रहार करनेलगे यद्यपि उन बलवान् दैत्योंने अपने नानाप्रकारके अस्त्रशस्त्रों से ताड़ितकिया परन्तु युद्धमें किञ्चिन्मात्रभी श्रीहरि न चलायमानहुये जैसे कि पर्व्वत किसीके चलाये नहीं चलता २७० तब गरुड़जी से महासुर कालनेमि भिड़ा तब उस दानवने अपने सबबाहुओंसे बड़ी भारी घोर २७१ प्रज्वलित गदाको आतोलन करके गरुड़के ऊपर मारा दैत्यके इसकर्म्मसे श्रीविष्णुभगवान् विस्मितहुये २७२ व जब उसने गरुड़के शिरपर गदा मारी तो गरुड़को व्यथितदेखकर व अपने शरीरको भी घावसे युक्त देखकर २७३ क्रोधसे संरक्तनेत्र होकर श्रीहरिजी ने हाथमें चक्र लिया व गरुड़सहित अपने शरीरको महाप्रभुने बढ़ाया २७४ भुजा तो इन की ऐसी बढ़ीं कि दशोंदिशाओं में व्याप्तहोगईं व सब विदिश आकाश पृथ्वी में भी व्याप्तहोगईं २७५ ये भगवान् फिरभी पूर्व्वकाल के अनुसार पराक्रम से तीनों लोकों के दबानेके लिये मानों बढ़े जब श्रीभगवान् महाराजने अपने शरीरको आकाशपर्य्यंत बढ़ाया तो देवगणोंने जयशब्द किया २७६ व गन्धर्वोंसहित ऋषिलोग मधुसूदनजीकी स्तुतिकरनेलगे व वे प्रकाशित किरीट धारणकियेहुये शिरसे अन्तरिक्षको शोभित करानेलगे २७७ व दोनों चरणों से पृथ्वीको दबाकर व बाहुओं से सब दिशाओंको आच्छादित करके शोभित होनेलगे व सूर्य्य किरणों के तुल्य प्रकाशित सहस्र आरागजोंसे युक्त शत्रुओंके क्षयकरनेवाले २७८ दीप्तअग्नि सदृश घोर दिखाई देनेवाले सुवर्ण रेणु व वज्रपर्य्यन्त सब अस्त्रशस्त्रों को भय पहुँचानेवाले २७९ व दानवोंकी मज्जा रुधिर हड्डियोंसे सींचेहुये व सब ओर क्षूरासेभी अधिकतीक्ष्ण अद्वितीय आयुध २८० फूलोंकी मालाओं से युक्त यथेच्छचारी व यथेच्छरूपधारी अपने आप ब्रह्माके बनायेहुये सब शत्रुओंको भय देनेवाले २८१ धारण किया रोषोंसे भरेहुये व नित्य संग्राममें दर्पित व जिसके चलाने से स्थावर जङ्गम सब मोहित होजाते हैं २८२ व मांसभक्षी शृगाल गृध्रआदि जन्तु समर में तृप्त होजाते हैं सूर्य्य के समान प्रकाशित उस अद्वि-

तीय कर्म्म करनेवाले २८३ सुदर्शनचक्रको समरमें उठाकर कोप से प्रदीप्त श्री गदाधरजीने चलाया उससे दानवोंका सब तेज़ नष्ट होगया २८४ व कालनेमिके सौ भुजा कटगये व इसप्रकार आयुध सहित शत्रुके एकही बार चलायेहुये सुदर्शनचक्रसे सौ हाथ काट कर फिर श्रीहरिने अग्निकी चिनगारियों सहितहै अट्टहास जिनमें ऐसे सौशिरभी बलसे चक्र लेकर काटडाला २८५ सो बाहु शिरकटाये हुये वह दानव रणमें न काँपा २८६ डालें कटेहुये वृक्षके समान कबन्ध के तुल्य समरमें खड़ा रहगया उस कालनेमि दानवको गरुड़ ने पंखोंको फैलाकर वायु वेगसे जाकर २८७ अपनी छातीसे काल-नेमि को रगड़ा तब बाहुरहित वह दैत्यराज आकाश से घूमताहुआ २८८ भूमिपर आकाश छोड़कर पृथ्वी को कँपातेहुये गिरपड़ा उस दैत्यके गिरनेपर ऋषिगणसहित देवगण २८९ बहुत अच्छा बहुत अच्छा ऐसा कहतेहुये सबकेसब श्रीहरिकी प्रशंसा करनेलगे व और जो दैत्य युद्धमें पराक्रम दिखाते थे २९० व फिर श्रीहरि ने अपने बाहुओं से ऐसे सबोंको व्याप्तकिया कि जहां के तहां रणमें खड़ेरह गये चल न सके किसी २ के तो बाल पकड़लिये व किसी २ को कण्ठ से पीड़ित करदिया २९१ व किसी २ का मुखही काटडाला किसी २ की कटिपकड़ली व गदा और चक्रसें सबोंको एक २ करके ऐसा मारा कि सबकेसब निर्जीव होगये २९२ सर्वाङ्ग भ्रष्टहोकर सब आकाश से पृथ्वीपर गिरपड़े उन सब दैत्यों के मारजानेपर श्रीपुरुषोत्तमजी २९३ इन्द्रका हितकरके व देवताओं की रक्षाकरके कृतकृत्य हुये इसप्रकार जब वह तारकामय संग्राम समाप्तहुआ २९४ तो उन श्री केशवभगवान्‌जी के समीप लोकके पितामहब्रह्माजी सब देव ऋषि गन्धर्व्व व अप्सराओंसहित तुरन्त आये २९५ व देवदेव श्रीहरि की प्रशंसा करतेहुये यह वाक्य बोले कि हे देवदेव ! आपने महाकर्म किया जोकि देवताओं के हृदयमें गड़ेहुये दानवरूप शल्यको अलग किया २९६ व इस दैत्यवध से हमलोगों को परितोषित किया हे श्रीविष्णो ! जो आपने कालनेमि नाम इस महासुरको मारा २९७ आपके विना दूसरा कोई इसका शिक्षक नहीं था क्योंकि यह सचरा-

चर अन्य लोगोंका व देवताओंका निरादर करतेहुये २९८ व ऋषियोंको भगाकर हमारेसमीप जाकर मानों हमारे स्थानको छीनकरही गर्ज्जने लगाथा इसीसे हमलोग इसके वधकर्मसे परितुष्टहुये २९९ जोकि कालकेही समान इस कालनेमिको आपने मारा इससे आपका कल्याणहो आइये स्वर्गको चलें ३०० क्योंकि वहां बहुतकालसे स्थित ब्रह्मर्षिलोग आपकी प्रतीक्षा करते होंगे हे वरधारियों में श्रेष्ठ! हम आपको कौन वरदेवें ३०१ क्योंकि अपने २ स्थानों पर टिकनेके लिये आपही सब देवताओंको वरदेते हैं इस नियमसे तीनों लोक शत्रुरहित आनन्द करते हैं ३०२ व हे श्रीविष्णो! अभी इसी संग्राममें महात्मा इन्द्रको आपही ने स्थापित किया नहीं तो इनको फिर इन्द्रासन कैसे मिलता जब इसप्रकार भगवान् ब्रह्माजीने नाशरहित श्रीविष्णुजी से कहा ३०३ तो वे शुभवाणी से इन्द्रादि सब देवताओं से बोले कि ॥

चौ० सुनहु देवगण जोयहँ आये । भक्तिसहित सब मम मनभाये ॥
श्रवण देहु यहि ओर सुधारी । सुनहु इन्द्रयुत समवच भारी ॥
कालनेमिआदिकसबदानव । समरहतेहमजोदुखमानव३०४।३०५
सबसो असुरबली शक्रहुसे । यासों मरण न योग्य कतहुँसे ॥
यहि अतिघोर समर सों दोई । भागगये दानव नहिंगोई ३०६
एक विरोचन दैत्य विशाला । राहु दूसरो परम कराला ॥
इन्द्रजाहु सेवहु निज आसा । वरुणजायपश्चिमकरुवासा३०७
यमतुमजाय दखिनदिशिपालहु । तुम कुबेर उत्तरदिशिलालहु ॥
चन्द्र सकल नक्षत्र समेता ।बसहुजायनिजथलसुखलेता३०८
सकल अयन युत तरणि वसन्ते । वसहु प्रकाशहु सब अयनन्ते ॥
दानसहित घृतभाग अपारा । देहुजायद्विजवर तुमन्यारा ३०९
वेद दृष्टविधि सों करिकर्म्मा । हुनहुँ अनल जिमिहै तुमधर्म्मा ॥
करिबहु होम देश सब नीके । करहु पुनीत वेद पढ़िठीके ३१०
ऋषिपढ़ि वेद सुखीहों सारे । पितर श्राद्धलहि होहिंसुखारे ॥
वायु बहैं निज मारगमाहीं । अनलतीनदीपहिंसबठाहीं ३११
निज गुणसों त्रय वर्ण सदाहीं । लोगन तृप्त करहिं गुणग्राही ॥

दीक्षित विप्रकरहिं सबयागा । जिमिश्रुतिमहँमखलिखेविभागा३१२
याज्ञिकद्विज दक्षिणा लहाहीं । पृथकपृथक जिमिशास्त्रकहाहीं ॥
दृष्टिसूर्य्य रसविधु अरु प्राना । वायुसकलप्राणिनमहँआना३१३
इन सबसौम्यकर्म्म सों सबहीं । तृप्तकरत बर्तहु सब अबहीं ॥
सकल महेन्द्र आदि तुम देवा । जिमिभोगत पूरबसबमेवा ३१४
सबनदियो जलनिधि महँ जाहू । निर्मल जलयुत सहितउछाहू ॥
तजहु दैत्यगण सों अबभीती । शान्तिलहहुसुरगणयुतप्रीती ३१५
तुम कल्याण होय हम जाता । लोक सनातन ब्रह्मसुहाता ॥
निज गृहमहँ अरु स्वर्ग मँझारी । बहुरि विशेष समर रखवारी३१६
ह्वै विश्वस्त जाहु जनि देवा । जासों दानव क्षुद्र कहेवा ॥
छिद्रपाय वे होत प्रहारी । नहिंतिनसंस्थितिनियमकरारी३१७
सौम्य भावयुत तुम सुरलोगा । यासों कोमल मनयुत योगा ॥
सत्य पराक्रम श्रीभगवाना । इमिदेवनसोंकहिसविधाना ३१८
ब्रह्मा सहित गयहु त्यहि काला । ब्रह्मलोक कहँ परमकृपाला ॥
सुरउर महाप्रीति उपजाई । गरुड़ध्वज गवने हरषाई ३१९
यह आश्चर्य्य भयहु महिपाला । समर तारकामय त्यहि काला ॥
सकल दैत्यगण जिमि रणमाहीं । श्री हरिमारयहु प्रकट तहांहीं ॥
जो पूँछ्यहु तुम हम सबगावा । सकलभांतिकरिबहुतबनावा ३२०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपद्मोद्भव
देवासुरयुद्धंनामैकचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

दो० बयलिसयें ब्रजाङ्गकी कह उत्पत्तिरु तप्प ॥
जासों तारक असुरभो जिनकिय देवनगप्प १

इतनी कथासुनकर भीष्मजीने पुलस्त्यजी से पूँछा कि हे ब्रह्मन् ! आपने पद्मकी उत्पत्तिकही हमने विस्तारसहित आपकी कहीहुई सुनी अब महादेवजीका माहात्म्य व षडानन की उत्पत्ति सुनाचाहते हैं पर संक्षेपरीति से वर्णन कीजिये १ जैसे हुआ व कियागया व हे ब्रह्मन् ! तारकासुर कैसे उत्पन्न हुआ सुनते हैं वह दानव तो

बड़ा बलवान् था २ फिर षडाननजीने उसे कैसेमारा यहभी आपसे सुना चाहते हैं कार्त्तिकेयजी ने कैसे उसे ध्वस्त किया व महादेवजी ने मुनियों को हिमवान् पर्व्वत के गृहको कैसे भेजा ३ व परमेष्ठी रुद्रजी ने हिमाचल के यहां जाकर पार्व्वती को कैसे पाया हे महा-मुने! जैसा यह सब हुआ हो हमसे सब कहिये ४ पुलस्त्यमुनि बोले कि पूर्व्वकाल का वृत्तान्त है कि कश्यप की दिति नाम पत्नी जोकि दैत्यों की माताहै उसने कश्यप से वर मांगा कश्यपने कहा हे देवि! तुम्हारे ऐसा पुत्रहोगा जिसके अङ्ग वज्रके सारके समान पुष्टहोंगे ५ व उसका वज्राङ्गही नामहोगा यह पुत्र बड़ा धर्म्मवत्सल होगा ऐसा वर पाकर दितिने वज्राङ्ग नाम पुत्र उत्पन्न किया ६ वह उत्प-न्न होतेही सब शास्त्रों के अर्थोंका पारगन्ता हुआ व बड़ी भक्तिसे अपनी मातासे बोला कि हे मातः! मैं क्याकरूं क्या आज्ञा होती है ७ तब हर्षितहोकर दिति उस दैत्याधिप अपने पुत्र वज्राङ्गासुरसे बोली कि हे पुत्र! इन्द्रने हमारे बहुत से पुत्रोंको मारडालाहै ८ उन सबोंका बदला लेने के लिये तुम इन्द्र के वधके लिये जाओ बहुत अच्छा ऐसा कहकर वह महाबली स्वर्ग को गया ९ व वह अमोघ पराक्रमी इन्द्रको पाशसे बांधकर माताके समीपलाया जैसे कि क्रोध कियेहुये व्याध मृगको बांधलावे १० इसी अवसर में ब्रह्माजी व महातपस्वी कश्यपमुनि वहां आये जहां कि इन्द्रको व्याकुल करते हुये पुत्रसहित दिति बैठीथी ११ व दोनोंको देखकर ब्रह्मा व कश्यप ने कहा कि हे पुत्र! इन इन्द्रको छोड़देओ इनका अपमान क्योंकरते हो १२ हे पुत्र! प्रतिष्ठित पुरुषका अपमानही वध कहाता है हमारे कहनेसे जो तुम छोड़देते हो तोभी तुम्हारे हाथसे ये मारेजानेहीके तुल्यहोंगे १३ क्योंकि परकी गौरवता लड़ाईमें शत्रुसे छूटाहुआ शत्रु फिर दिन २ जीतेहीहुये मृतकके तुल्य बनेरहेंगे १४ यह सुनकर वज्राङ्गासुर प्रणतहोकर यह वाक्य बोला कि मुझे इस इन्द्रसे कुछ प्रयोजन नहीं है मैंने तो माताकी आज्ञा पालनकी है १५ सत्यहै जब समरमें अन्य किसीके गौरव से शत्रुके हाथों से शत्रुछूटा तो मरणही है और क्या है सोभी हमारा इन्द्रके पकड़ने का कुछ प्रयो-

जन भी न था हमने तो माताकी आज्ञाकी है आप सुरासुरों के नाथ हैं व आप जानो हमारे पिताही हैं इससे हम आप दोनों का वचन मानेंगे व इन्द्रको आपलोगोंकी भेंटकरते हैं १६ हम तपकिया चाहते हैं अब हमारे सबकार्य्य निर्विघ्न होतेरहें इन्द्रको लेजाइये आप के प्रसादसे हमारे सबकार्य्य होतेरहेंगे इतना कहकर वह वज्राङ्गासुर चुपहुआ १७ उस दैत्यके चुपहोनेपर ब्रह्माजी ने उससे यह कहा कि तुम हमारी आज्ञासे अच्छीतरहसे तपकरो १८ व इस चित्तशुद्धिसे तुमने अपने जन्मका फलपाया इतना कहकर ब्रह्माजी ने एक बड़े २ नेत्रोंवाली रूपवती कन्या उत्पन्नकी १९ व उसे पत्नी बनाने के लिये वज्राङ्गासुरको देदिया व उसकन्याका वराङ्गीऐसानामकरके ब्रह्माजी चलेगये २० व वज्राङ्गभी उस अपनी स्त्रीके सङ्गतप करनेकेलिये वन को चलागया व वहां वह दैत्येन्द्र कई सहस्रवर्षांतक ऊपरको बाहुउठाये तपकरता रहा २१ समय २ की कमलनयन शुद्ध बुद्धि महातपस्वीने तपकी वह शीतकालमें तो रात्रिदिन जलमें रहता व ग्रीष्मऋतु में पञ्चाग्नियों के मध्यमें रहता व वर्षामे योंही विनाछायाके स्थानमें बैठारहताथा व नीचेको मुखकिये तप कियाकरताथा २२ सोभी निराहार होकर उसने ऐसा महाघोर तपकिया कि जिससे तपकी राशिही होगया व फिर वह महातपस्वी एक सहस्रवर्षतक जलही में प्रविष्ट रहा २३ जब वह जलके भीतर प्रविष्टरहा तब उसकी महापतिव्रता स्त्री उसी सरके तीरपर मौनव्रत धारणकिये बैठीरही २४ वहभी निराहारही रहकर महाघोर तपकरतीरही उसके तप करने के समय इन्द्रने एक भय उत्पन्नकिया २५ बन्दरका रूप करके उसके आश्रममें गया और पूजनपात्र बलसे खींच लिया २६ इसके बाद सिंहका रूप करके उस स्त्रीको डरवाने लगा फिर सर्प रूपसे उसके दोनों पैरोंमें डसा २७ परंच वह स्त्री तपबल से न मरी इससे फिर अनेक भयङ्कर कर्म्मोंसे इन्द्रने उसे भयभीतकिया २८ परन्तु जब वह वज्राङ्गकी स्त्री कुछभी भयभीत न हुई तब चुप होरहा तब इन्द्रकी दुष्टता जानकर शापदेनेपर उद्यतहुई २९ उस को शापदेनेपर उद्यत देखकर पुरुषका रूपधरकर भीतहोकर वह

पर्वत उस वज्राङ्गकी स्त्री से बोला कि ३० हे महाव्रते ! हम दुष्ट नहीं हैं सब प्राणियोंके देवहैं यह इन्द्रकोप से तुम्हारा विप्रिय करता है ३१ इतने में सहस्रवर्षका काल बीतगया तब उसकालको जानकर भगवान् कमलसे उत्पन्न ब्रह्माजी ३२ प्रसन्नहोकर उस जलाशय पर आकर वज्राङ्गसे बोले कि हे दितिनन्दन ! उठो हम तुमको सब कामदेंगे ३३ जब इसप्रकार नामलेकर ब्रह्माजीने कहा तो तपोनिधि वह दैत्येन्द्र हाथ जोड़कर ब्रह्माजीसे बोला ३४ कि मैं असुरहूँ पर मेराभाव देवताओं में हो व मुझको अक्षयलोक मिलें व इस शरीर से सदा मुझको तपकरने में प्रीतिरहै ३५ ऐसाहीहोगा यह कहकर देव देव ब्रह्माजी अपने स्थानको चलेगये व तपमें संयम स्थिरकिये हुये वज्राङ्गने भी ३६ उस समय अपनी स्त्रीको देखना चाहा परन्तु जब अपने आश्रम पर आया तो उसे न पाया भूँखउसे उससमय बहुत लगीथी इससे पर्व्वतपर के वनको गया ३७ कि वहांसे फल मूलादि लाकर तो भोजनकरूँ इतने में देखा तो उसकी स्त्री वृक्षके पत्रोंसे मुख झांपे रोदन करतीथी ३८ उसे देखकर समझाते हुये वह दैत्येन्द्र अपनी प्राणप्यारीसे बोला कि हे प्रिये ! यमलोकके जानेकी इच्छाकियेहुये किसने तेरा अपकार किया ३९ हे मानिनि ! अथवा अन्य किसी कार्य्यके लिये रोदन करती है तो कह कौन तेरामनोरथ पूराकरें यह सुनकर वराङ्गी बोली कि दुष्ट देवराज ने प्रथम तो मुझको कामके वशीभूत करनाचाहा फिर अन्य नानाप्रकारके उपायोंसे पीड़ितकिया व भयभीत किया ४० इन्द्रने बिन पति की ऐसी स्त्री जानकर भयदिया इससे इस दुःखका पार न देखकर मैं प्राण त्याग करने पर आरूढ़हूँ ४१ इससे अब उस दुःखमहासागर से तारनेके लिये मुझको एक पुत्रदेओ जब उसने ऐसाकहा तो दैत्येन्द्र कोपसे व्याकुल नेत्र होकर ४२ कहनेलगा कि इस दुष्ट पर्व्वतनेभी इन्द्रहीका उपकारकिया जो सुन्दररूप धारण करके तुझे शापदेने से रोंका इन्द्रका प्रतीकार करने में समर्थथा इतनाकहकर वह महासुर फिर महाउग्रतप करने पर उद्यतहुआ ४३ तब ब्रह्माजीनेजाना कि यह फिर क्रूरतर घोरतप किया चाहताहै इससे जहां वह दैत्य

तपकरनेपर उद्यत हुआथा वहां पितामहजी शीघ्र आगये ४४ व बोले कि हे पुत्र! तुम फिर किसलिये नियमकरने को उद्यतहुये हो हे पुत्र! वह तुम्हारा वाञ्छित हम फिर देवें कहो तो क्या चाहतेहो ४५ वज्राङ्ग बोला कि जबमैं आपसे वर पाकर तपसे उठा तो मैंने अपनी स्त्रीको दुःखित देखा इन्द्रसे भय पाकर पुत्रकी इच्छा करतीहुई हम से बोली ४६ इससे अब आपसे मैं उस दुःखसे तारकपुत्र चाहताहूँ यदि आप मेरे ऊपर सन्तुष्ट हैं तो ऐसा पुत्रदें ब्रह्माजी बोले कि हे वत्स! तुमको अब तपकरने से कुछ कामनहीं है दुस्तर मार्ग्गपर न चलो ४७ तारनाम महाबली पुत्र तुम्हारे होगा जोकि देवताओं की स्त्रियोंको उनके पतियोंसे बहुत दिनोंतक छुड़ादेगा ४८ जब दैत्यनाथ से ब्रह्माजी ने ऐसाकहा तो वह उनके प्रणाम करके जाकर तप करनेसे व इन्द्रके कुवाच्यों से कष्टित अपनी स्त्रीको आनन्दितकरनेलगा ४९ व दोनों स्त्री पुरुष कृतार्त्थ होकर अपने आश्रमको चलेगये व अपनी स्त्रीके गर्भमें जाकर उसने वीर्य्य स्थापन किया ५० वह सहस्रवर्ष पर्य्यन्त गर्भको धारण कियेरही व फिर सहस्रवर्षके पीछे उस वराङ्गी ने पुत्र उत्पन्न किया ५१ जैसेही वह भयङ्कर दैत्य उत्पन्न हुआ कि सब पृथ्वी चलायमान होगई व सब समुद्र खलभलानेलगे ५२ पर्व्वत सब चलायमान हुये भयानक पवन चलनेलगी मुनिलोग इस उत्पात से शंकित होकर जपने के योग्य मन्त्रों को जपनेलगे व व्याधलोग आनन्द से नाद करनेलगे ५३ सूर्य्य व चन्द्रमाकी कान्ति जातीरही सब दिशायें अन्धकार से आच्छादित होगईं जब वह महाअसुर उत्पन्नहुआ तो सब महाअसुर ५४ व असुरों की स्त्रियां हर्षित होकर वहां आये व आईं व हर्षसे युक्त होकर बुलाकर अप्सरायें वहां नचाई गईं ५५ हे महामुने! जब दानवों के बड़ाभारी उत्सवहुआ तब इन्द्रादि देव सबके सब मनमें बहुत दुःखितहुये ५६ वरांगी पुत्रको देखकर हर्षसे पूरित होगई व वज्राङ्ग भी तिस वरांगी करके पैदाकिया पुत्र जानके बहुत खुशहुआ ५७ व जब छोटाहीथा कि सब दैत्यों ने उग्रविक्रमी तारकासुर को अपना राजा बनाया गजासुर हयग्रीव महिषासुरादिकों ने भी कह

दिया कि सब हम दैत्यों का राजा तारकासुर है ये सब दैत्य पृथ्वी को भी तौलसक्के थे परन्तु सबोंने तारकासुरही को महाराजाधि-राज बनाया हे नृपसत्तम ! जब तारकासुर राजसिंहासनपर आ-रूढ़हुआ ५८। ५९ तो वह दानव श्रेष्ठयुक्तिसेयुक्त यह वचन बोला कि हे महाबली दैत्यलोगो ! हमारा वचन सुनो ६० देवगण सदा हमलोगों के वंशका नाश कियाकरते हैं इससे हमारी भी जातिका यही धर्म्म है कि उनके वंशका नाश जैसेहो करतेरहें ६१ क्योंकि हमारा उनका वैर स्वाभाविक चलाआता है इससे अब हमलोग देवताओं को दण्ड देनेकी इच्छा से तप करेंगे सो अन्य किसी के भरोसे पर नहीं कहते अपनेही बाहुओं के बलपर ऐसा करेंगे इसमें अन्तर न पड़ेगा ६२ यह सुनकर सम्मत से पारिया-त्र पर्वत पर गये वहां निराहार होकर जल पत्र खाकर पञ्चाग्नि तापने लगे ६३ इसी तरह सौ २ वर्ष इस रीति से तपस्या करते हुये देहें दुर्बल होगईं वे लोग मानों तपकी राशिहोगये ६४ तब ब्रह्माजी ने आकर उस दैत्येन्द्र से कहा कि हे सुव्रत ! तुम हमसे वरदान मांगो यह सुनकर उसने कहा कि किसी जीवधारी से ह-मारी मृत्यु न हो ६५ तब तो ब्रह्माजीने कहा कि देहधारियों को मरना जरूर है इससे मौत को भी मांग जिसमें बे खौफहोजा ६६ तब उसने ७ दिन के पैदाहुये बालक से मृत्यु मांगी ६७ तब ब्रह्माजीने कहा बहुत अच्छा दिया यह कहकर ब्रह्माजी तो चले गये वह दैत्य अपने घरमें आकर मन्त्रियोंसे कहनेलगा कि जल्दी हमारी फौज तैयार करो ६८ जो तुमलोगों को हमारा प्रिय करना अंगीकार हो तो देवताओं को दण्डदेओ बस इसी में हमारी अ-तुल प्रीति होगी ६९ तारकासुरका ऐसा वचन सुनकर उसका से-नापति ग्रसननाम दानव तुरन्त उपस्थित हुआ व उसने वैसाही किया ७० सबकहीं तुरुही बजवाकर दैत्यों को बुलाया व भयंकर रूप दैत्य सिंहकी सेना को तैयार किया ७१ तिन सब के अग्र-गामी दशयें सरदार हुए जम्भ कुजम्भ महिष कुंजर मेघ कालनेमि निमि मन्थन जम्भक शुम्भ व और सैकड़ों वीरये पृथ्वीको तौलसक्के

हैं ७२ । ७३ हज़ारों गरुड़ोंसे भूषित व सुन्दर पहियों से युक्त व उत्तम कुब्बेदार १६ कोसका लम्बा चौड़ा ७४ व्याघ्र सिंह खरों से नद्ध तारकासुरका रथ था व ग्रसन जम्भक व जम्भ कुम्भी ७५ व मेघ इन सब के रथों में हाथी जुतेहुए थे कालनेमि के रथ में कूष्माण्ड नद्ध थे व चार दांतोंवाला पर्वताकार निमिका हस्ती था ७६ व मन्थननाम दैत्य बड़ेभारी घोड़े में सवारथा व जम्भक उष्ट्र में सवार व महाबल पर्वताकार हाथी पर ७७ शुम्भदैत्य मेषपर व और इसीतरह चित्र विचित्र वाहनों में सवार थे व प्रचण्ड सुंदर कवच बख्तर कुण्डल पगड़ी सब धारण कियेहुये थे ७८ व वह दैत्येन्द्रकी सेना बड़ी भयानक हुई मतवाले व चञ्चल हाथी घोड़ों से युक्त व रथों से व बहुत से पैदरों से युक्त यह चतुरंगिणी सेना बड़े धूमधामसे देवताओंसे लड़ने को चली इस अनन्तरमें वायुदेवता को असुरों ने अपने यहां बुलायाथा वे दानवोंकी सेनाको देख कर फिर इन्द्र से कहने को गये व महात्मा इन्द्रजीकी सभा में जाकर ७९ । ८१ देवताओं के मध्य में विराजमान इन्द्र से इस उपस्थित कार्य्य को उन्होंने कहा सो सुनकर इन्द्रनेत्र मूंदकर कुछ शोचकर ८२ अपने गुरु बृहस्पतिजी से हाथ जोड़कर बोले कि भगवन् दानवों के साथ देवताओं का यह बड़ाभारी घोरयुद्ध आनपड़ा है ८३ इस विषय में क्या करना है वह कहो क्योंकि आप सब उपाय जानने में विचक्षण हैं महेन्द्रका इतना वचन सुनकर बृहस्पति ८४ उदार बुद्धि यह वचन विचारकरके बोले कि हमने चतुरङ्गिणी सेना के निपात के विषय में जो राजनीति सुनरक्खी है वह यह है ८५ कि हे सुरश्रेष्ठ ! तुम भी सेना तैयार करो व दैत्यों की सेनाको जीतो बस साम दाम भेद दण्ड ये चार अंगहैं ८६ लोभ साम से एक धर्म्मी भेद से व मारनेवाले दानसे मानते हैं ८७ एक दण्डही उपाय है आपलोगों को रुचे तो वही करो जब बृहस्पति जी ने ऐसा कहा तो इन्द्रजीने कहा कि बहुत अच्छा ऐसाही कियाजाय व ८८ कर्त्तव्यका विचारांश करके देव सभा में कहा कि हे देवताओ ! सावधान होकर हमारे वाक्य को सुनो ८९ आप सब-

लोग यज्ञ के भोक्ताहैं व परिवार सहित दिव्यात्माहैं व अपने स्थान पर टिकेहुये नित्य जगत् के पालन में रतरहते हैं परन्तु अब सैन्य इकट्ठा करके युद्धकरने का उद्योग करो अपने २ शस्त्रास्त्रों को बुलाओ व शस्त्रदेवताओं की पूजाकरो ९० । ९१ व यमराज को सेनापति करके जल्दी वाहन और विमानों को तैयार करो ९२ ऐसाजानकर सोने के घण्टा बँधेहुये दशहजार घोड़ोंको तैयार करके संग्राम के वास्ते देवताओंके सरदार कवच व बख्तर वगैरह पहनने लगे ९३ क्योंकि अबकी यह देवताओं व दैत्यों का बड़ा घोर संग्राम होनेवालाहै इतना सबों से कहकर इन्द्र आप सबसे प्रथम मातलि सारथिके लायेहुये दुर्जय रथपर आरूढ़ हुये ९४ व यमराज जी अपने वाहन महिषपर आरूढ़ होकर सेना के आगे उपस्थित हुये व उनके चारों ओर उनके चण्ड प्रचण्डादि गण उपस्थित हुये व प्रलयकेकाल वाली ज्वालाओं से युक्त होकर छाग अपने वाहन पर आरूढ़होकर अग्नि देव आकाश में आकर उपस्थित हुये ९५ प्रलयकाल के तुल्य आकाश पर्य्यन्त ज्वालासे पूरित करके शक्तिलेकर बकरीपर चढ़े अग्निभी आपहुँचे ९६ व पवनदेव अंकुश हाथ में लियेहुये बड़े वेगसे आकर विद्यमान हुये व वरुणजी अपने भुजगेन्द्र जुते हुयेरथपर आरूढ़ होकर उपस्थित हुये ९७ व नर युक्त रथपर आरूढ़ यक्षों व राक्षसों के स्वामी तीक्ष्णतलवार लिये हुए आकाशमार्ग होकर समर में कुबेरजी आये ९८ एक इनके दूसरे रथमें सिंहजुते थे उसपर गदाधारण किये कुबेरजी की दूसरी मूर्त्ति आरूढ़थी चन्द्रमा सूर्य्य व अश्विनीकुमार ये भी आकर युद्ध करने को चतुरंगिणी सेना लेकर उद्यतहुये ९९ यह देवराजकी सेना तीनोंलोकों में दुर्जय युद्ध करने को उद्यतहुई इस सेनामें सब तेंतीसकोटि देवगण एकत्रहुये १०० व हिमाचल पर्व्वतके समान श्वेत व श्वेत चामरसे युक्त सुवर्ण के पद्मसे युक्त सुन्दर पुष्पोंकी मालाओं से भूषित व उज्ज्वल कुंकुमके अंकुरों से मनोहर कियेहुये व कपोलों में नानाप्रकार के चित्र विचित्र रंगों के चित्रोंसे युक्त १०१ ऐरावत नाम स्वर्ग के गजराजपर चित्र वि-

भूषण वस्त्र धारणकिये विशाल वज्रांग वितान से भूषित भुजोंपर केयूर धारणकिये १०२ सब देवताओंसे पूजित पादपल्लव स्वर्ग के स्वामी पाकशासन इन्द्रजी शोभितहुये व तब सब देवगणों से शोभित तुरङ्ग मातङ्गोंसे भरीहुई व श्वेतछत्रों व ध्वजोंसे युक्त १०३ व दुर्जय पैदर चलनेवालों से युक्त व नानाप्रकार के आयुधों व वीरोंसे दुस्तर वह देवताओं की सेना बड़ेदुःख से जीतने के योग्य दिखाई दी॥

चौ० तबसबपवनसाध्यगणनाना। अरु अश्विनीकुमारमहाना १०४
राक्षस यक्ष और गन्धर्वा। सहितपुरन्दर सुरगण सर्वा॥
नानायुध करकमल विराजत। दैत्यसैन्य सम्मुखकहँ गाजत १०५
गये सकल सुरवृन्द विलोके। जब तारक कहँभये सशोके॥
देवन देखत तारक वीरा। निजरथसों उतरो रणधीरा १०६
निजकरतल सों कोटिन देवन। मारयहुत्वरित रह्योकछुभेवन॥
मरण शेष सब देव दुखारी। दिशिदिशि भागे घोरपुकारी १०७
सकल समर सामग्री त्यागी। रणसे बिचले मनहुँ अभागी॥
इमि भागत लखि देवनतारक। निजदैत्यनसों वचन उचारक१०८
दैत्यहु देवन को जनि मारहु। धायपकरि ममसदनपमारहु॥
बन्धितकरि लावहु सुरपुञ्जा। हमतिनदेखबसबअँग लुञ्जा १०९
यहसुनिअसुरत्वरितकरिक्रोधा। लोकपालगण गहे अयोधा॥
जिमिपशुपालगहतपशुवृन्दा। तिमि दृढ़पाशनसोंकरिनिन्दा ११०
देवन बाँधि असुर लै आये। तारक दैत्यप के ढिग जाये॥
सुरनबँधनकहिसोनिजरथपर। चढ्यो तारकासुर ह्वै अपडर॥
गयहु निजालय सो बलवाना। बलपौरुष सबभांति प्रधाना १११
सिद्धपुञ्ज गन्धर्व विभूषित। विपुलाचल मस्तकगतदूषित॥
तहांनिवास असुरगण सेवित। तासुहतोतहँ बस्यहुसुदेवित ११२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेदेवासुरसंग्रामे तारकजयोनामद्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४२॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० तैंतालिसवें देवदुख तारकसों जिमिपाय ॥
विधिपहँगे तिनकह शिवा शिवसुतहतिहिवनाय १
पुनि विधिनिशा प्रबोधकिय भईउमासो जाय ॥
तिनबहुतप शिवहित कियो बहुत २ दुखपाय २
देव कथनसों काम शिव कामितकरि भो दाह ॥
तासों रतिरोदन लखत हिमगिरि उरभो डाह ३
सप्तऋषिन उपदेशसों उमा शम्भुमो ब्याह ॥
तासु भोग बहुभांतिकह वीरक तनय उछाह ४

पुलस्त्यजी भीष्मजी से बोले कि तारकासुर के पहुँच जाने के पीछे थोड़ीही देरमें चीनदेशके उजले वस्त्र पहिने द्वारपालक टिहुनी के बलसे पृथ्वीपर बैठकर व हाथसे अपनामुहँ झांपकर १ थोड़े अक्षरों से युक्त स्पष्ट वचनसे बहुत से सूर्य्योंकी तुल्य प्रकाशित शरीर को धारण किये हुए दैत्यराजसे बोला कि हे महाराजाधिराज श्रवण कीजिये २ कालनेमि नाम आपका सेनापति सब देवताओं को बाँधकर लेआयाहै और द्वारपर खड़ाहै व कहता है कि इन देवताओं को किस बन्दीखाने में स्थापित करनेकी आज्ञा होती है ३ द्वारपालका ऐसा वचन सुनकर तारकासुर बोला कि अब सब देवताओं को जहाँ चाहो छोड़ देओ क्योंकि तीनोंलोक हमारेही हैं जहां कहीं रहेंगे बन्दीखानेही में समझो ४ केवल एक इन्द्रके शिर व मोछ दाढ़ीके बाल मुड़वाकर काले वस्त्र पहिनाकर व कुत्तेके पैरसे चिह्नित करके छोड़देओ ५ जब ऐसाही हुआ तो देवता बड़े दुःखित मनसे जगत्के गुरु कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी को देखने के लिये उनके शरणको गये ६ व शिर पृथ्वीपर झुकाकर साष्टाङ्ग प्रणामकरके अपनी सब दुर्दशा का वृत्तान्त कहा ७ व सुन्दर वचनों से कमलासन भगवान् ब्रह्माजीकी स्तुति करते हुये देवगण उनसे बोले कि ८ हे भगवन् ! तुम्हीं प्रथम इस विश्व के उत्पन्न करने की इच्छा से रजोगुणी मूर्त्ति धारण करतेहो

व फिर तुम्हीं सत्त्वगुणी मूर्त्तिसे पालन करतेहो व फिर जब संहार करनेकी इच्छा करतेहो तो तुम्हारीही तमोगुणी मूर्त्ति होजाती-है ८ व व्यक्तियों के आदिभूत तुम्हींहो इससे इस महिमासे हम सबका विचार करके व इस प्रकार तीन मूर्त्तियों को धारण करके पृथ्वी स्वर्ग्गादिकों के विभाग तुम्हीं करते हो ९ इन मूर्त्तियों में सत्त्वगुण की तुम्हारी मूर्त्ति बड़ी उपकारिणी है प्रथम महत्तत्त्व उ-त्पन्न होताहै उसीसे सब विश्व उत्पन्न होता तुम्हारी आयुका प्रमाण व अन्य सबों की आयुका प्रमाण आदि सब उसीसे होताहै व उस के पीछे तुम्हारा राजसी शरीर होताहै फिर उससे सब प्राणी उत्पन्न होते हैं १० व तुम्हारा शिरतो अन्तरिक्षहै व चन्द्रमा सूर्य्य तुम्हारे नेत्रहैं सब सर्प्प तुम्हारे शिरके केश हैं श्रोत्ररन्ध्र सब दिशा हैं व यज्ञ देहहैं नदी संधिहैं चरण भूमि है व उदर तुम्हारा सब समुद्र लोगहैं ११ इस प्रकार मायाकार सबके कारण तुम्हीं प्रसिद्धहो वे-दोंमें सब देवगण सूर्य्यादिक जो सदा प्रकाशित रहते हैं सबके कारण तुम्हीं हो व वेदके अर्त्थ देवगण तुम्हीं से पूंछते हैं क्योंकि तुम्हीं सबसे प्रथम अपनी बुद्धिसे कमलपर आरूढ़ होकर वेदोंको बनातेहो इससे सबसे पुराणपुरुष तुम्हींहो १२ योगशास्त्र तुमको आत्मा कहकर गाताहै व सांख्य शास्त्रमें जो सात गाथायें कहीगई हैं उन सबोंकी हेतु जो आठईहै तुम उसके जीवहो वा अन्तःकरण हो १३ व तुम्हारी स्थूल मूर्त्तिको देखकर जो भाव सूक्ष्म मूर्त्तिको कल्पित करते हैं वे तुम्हींको सबका कारण कहते हैं क्योंकि वे तु-म्हींसे उत्पन्नहैं व अन्तमें फिर तुम्हींमें लीन होजाते हैं १४ व सब इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवगण एक २ होकर व सब एकत्रहोकर भी तुम्हारे सङ्केतों को जानना चाहते हैं पर नहीं जानसक्के इससे भाव अभाव सब व्यक्तियों के संहारके हेतु तुम्हींहो व समस्त इस विश्वके कर्त्ता पालक व नाशक तुम्हींहो १५ प्रथम तुम्हारी सूक्ष्म-मूर्ति रहती है फिर उसीसे यह विश्वरूप स्थूलमूर्त्ति उत्पन्न होती है इससे तुम पुराणपुरुषहो व सब प्राणियोंके भुक्ति मुक्तिके देनेवालेहो १६ व भूत भूत भूतिमान भावको अपने २ भावमें भावितकरके तुम

मिलातेहो व व्यक्तिभाव से युक्तको अलगकरके स्थान २ में व्यक्त करतेहो १७ इसप्रकार सब व्यक्तिमानोंके शरण्य तुम्हींहो व सबके रक्षकहो हमलोग भी इसीसे तुम्हारी शरणमें आयेहैं इससे हमारी रक्षाकरो देवता ऐसी ब्रह्माजी की स्तुतिकरके व कारण जानके चुप होरहे १८ व प्रार्थनाकरके मनोरथ पानेके लिये खड़े होरहे इसप्रकार जब देवताओंने ब्रह्माजीकी स्तुतिकी तो वे बहुत प्रसन्न हुये १९ व बायें हाथसे सङ्केत करते हुये वे देवताओं से बोले कि जैसे सुभगा भी स्त्री कर चरणादिकों के भूषणों को जब कभी अकस्मात् त्याग देतीहै २० व वस्त्र केशोंको भी स्वच्छ नहीं रखती व उदासीनतासे भी युक्त रहती है तो शोभित नहीं होती इसीप्रकार तुमलोग अग्निके साथ भी हो परन्तु शोभित नहीं होते २१ यह तुम लोगोंकी कौन दशाहुई जो दावानलसे जलेहुये वृक्षोंके समान होगयेहो व श्री रहित होगयेहो हे यम ! रोगग्रसित शरीरके कारण २२ तुम अपने शरीरसे कुछ भी शोभित नहीं होते जानो बड़े दुःखीसे दिखाई देतेहो व पद २ परगिरतेसे लक्षित होतेहो व किसी राक्षससे पीड़ित होनेसे भयभीत से बोलतेहो २३ जैसे राक्षसेन्द्र का बन्धन किसीको होजाता है वैसेही तुमको भी होगयासा विदित होताहै हे वरुण ! तुम्हारा वदन सूखगया है मानो अग्नि से जलगया है २४ पाशमें रुधिर कैसे लगाहुआ है व हे पवन ! आप बेहोश कैसे होगये हैं मानो तलवारसे मारेगयेहो २५ व हे कुबेर ! तुमने जानों अब कुबेरता छोड़दीहै जो ऐसे भयभीत दिखाई देतेहो व हे त्रिशूल धारण कियेहुये रुद्रलोगो ! तुम अपनी शूरताको कहो कहांगई २६ व तुम्हारी सब की तीव्रता को लेगया सो कहो जब ब्रह्माजीने सब देवताओं से ऐसा कहा २७ तो बोलनेवालों में प्रधान होनेके कारण सब देवताओंने वायुदेव को बोलने के लिये प्रेरित किया जब इन्द्रादि देवताओं ने पवन को प्रतिबोधितकिया २८ तब वे ब्रह्माजी से बोले कि हे चतुराननन ! तुम अपने चराचर संसार को जानतेहो कि इन्द्रादिक बलवान् देवताओं को सैकड़ों दैत्योंने बलसे जीतलिया २९ दैत्योंने हम लोगोंको यज्ञरहित करदिया व जो यज्ञ सब प्राणी करते थे वेही

जगत् की स्थिति के लिये होतेथे सो यज्ञ होनेको दानवोंने निषेध करदिया है व उन यज्ञोंके करने के लिये आपने ऋषियों को उत्पन्न कियाथा वे बराबर यज्ञ करते थे ३० व उनका फल देवगण स्वर्ग में रहकर भोगते थे सो अब दैत्योंने देवताओं से यज्ञादिकों का फल छीनलिया है जैसे कि दुष्ट राजालोग पृथ्वीपर बहुतसा करलगाकर कृषकों से भूमि छीनलेते हैं ३१ यम शेष व अन्य सब राजाओं का जो अधिकार था सबपर दैत्यों ने अपना अधिकार करलिया है व सूर्य्यादिक हम लोगोंके अधिकार भी छीन लियेहैं ३२ व हमलोगोंके रहनेकेलिये जो स्थान पर्व्वतोंके शृङ्गोंपर व गुहाओंमें आपने बहुत दिनों से नियत करदिया था वहांपर दैत्यराजने अपना अधिकार करलिया है ३३ व नानाप्रकार की चित्र विचित्र गुहाओं में बसकर सब दैत्यलोग नानाप्रकारके सुख भोगते हैं हम लोग मारे २ घूमते हैं बस असुरराज के पुत्रके भयसे हम लोगोंके शरीर ऐसे होगयेहैं जैसे प्रथमथे वैसे नहीं रहे क्योंकि अब हम लोगोंका उपयोगी यही है कि सब दिशाओं में भ्रमण करते हुये फिरें ३४ पर बड़ेशोककी वार्त्ताहै कि हम लोगों के लिये स्वर्ग पर्व्वतों के ऊपर के भाग वज्रादि आपही ने पूर्व्व समय में बनाये थे पर जबसे यह तारकासुर उत्पन्न हुआहै पर जैसे कोई थोड़ी बुद्धिवाले की बुद्धि बदलदेवे इसी तरह उसने हम लोगोंसे वे स्थान छीनलिये हैं ३५ इससे सबदेवगण बाणों से युद्धमें कटेहुए अंगों से व द्वारोंपर द्वारपालादिकों के धक्के खाते हुये बड़े कष्टसे उस दुष्टकी सभामें प्रविष्टहुये ३६ जब इस रीतिसे उसके द्वारपाल पकड़कर घसीटते हुये हम लोगों को सभामें लेगये तो अन्य सब दैत्यके सभासद हँसनेलगे व बेत हाथों में लियेहुए उन लोगोंकरके हम लोग बोलने भी न पावें ३७ व वे बड़े धनवाले व सब अर्थों से सिद्ध आपस में कहने लगे कि तुम लोग थोड़ा कहसक्तेहो इससे शास्त्रयुक्त वचनकहो हे देवताओ! बहुत न बोलो ३८ क्योंकि यह सभा दैत्यसिंह की है इन्द्रकी नहींहै जिस में कि तुम लोग मनमाने शीघ्रताके साथ निर्भय चलेजातेथे ऐसा कहते हुये दैत्यों के सेवक लोगोंसे हमलोग बहुत हँसेगये ३९ उस

दैत्यकी उपासना सब मूर्त्तिमान् वसन्तादि ऋतु करते हैं अपराध होनेपर त्रास भी मिलता है पर भयसे कभी उसके समीप से नहीं हटते ४० व सिद्ध गन्धर्व्व किन्नरलोग वीणालिये तालस्वर से युक्त मनोहर रागोंसे उसके प्रत्येक गृहोंमें गान करते हैं ४१ इसीप्रकार से सब अप्सरा भी उसीकी सेवामें लगी रहती हैं नृत्य कियाकरती हैं व सामग्री का तो वहांकी का वर्णनही नहीं होसक्ता कि कितनी है सब कुछ विद्यमान है पर शरण में आयेहुये की रक्षा नहीं होती इतनाही अन्तर है ४२ बस यह सब वृत्तान्त हमने कहा अथवा सब वृत्तान्त कौन कहसक्ता है क्योंकि उसकी अनीति का वर्णन क-रनेवाला ब्रह्माजी को छोड़कर कौनहै ४३ वायुदेव देवताओं की दुर्दशाके वृत्त इस रीति से कहकर चुपहुये तब भगवान् ब्रह्माजी मन्द २ मुसुकातेहुये बोले कि ४४ यह तारकासुर सब देवताओं व दैत्योंसे अवध्य है जिससे यह माराजायगा वह अबतक तीनोंलो-कों में विद्यमानही नहीं है ४५ वह तो औरभी अधिक तपकरने प-रथा पर हमने जाकर वरदान देकर तप करने से रोंकदिया उसी अपने तपके बलसे वह इस समय तीनोंलोकोंको भस्म करसक्ता है ४६ हमसे उसने वर मांगाथा कि अन्य किसीसे हमारी मृत्यु न हो जो पुत्र महादेवसे उत्पन्नहो व सातहीदिन में बढ़कर महापराक्रमी होजाय उससे हमारावधहो अन्य किसी सुरासुर मनुष्यादिकों से न हो ४७ सो क्याकरें हमने वही वरदेकर उसे तपसे निवृत्तकिया सो भगवान् महादेवके तो आजकल स्त्रीही नहीं है सूर्य्य समान पुत्र कैसेहो जो उस दुष्ट तारकासुरको मारे ४८ हां हिमालय पर्व्वत की कन्या जो देवी उत्पन्न होगी उसमें जब महादेव अपने बीजसे पुत्र उत्पन्न करेंगे जैसे कि अरणीमें से अग्नि उत्पन्न किया जाताहै ४९ तब उस पुत्रसे वधपाकर तारकासुर फिर न दिखाई देगा यह उपाय हमने कहा जैसा कि होगा ५० सो महादेवजी आजकल समाधि लगाये हुये शयनकररहे हैं तबतक तुमलोग निश्शंक होकर अपना समय बिताओ थोड़ेही कालमें यह कार्य्य होगा ५१ जब ब्रह्मा-जी ने ऐसा कहा तो सब देवगण प्रणाम करके व जैसी आज्ञा ऐसा

कहकर चलेगये ५२ देवताओं के चलेजाने के अनन्तर लोकपितामह ब्रह्माजी ने पूर्व्वकालमें उत्पन्न निशादेवीका स्मरण किया ५३ तब भगवती रात्रि ब्रह्माके समीप आई उसको एकान्तमें देखकर ब्रह्माजी उससे बोले कि ५४ हे रात्रि! देवताओं का बड़ाभारी एक कार्य्य आकर उपस्थित हुआहै सो हे देवि! वह तुमको करना चाहिये अब उस अर्थका निश्चय सुनो ५५ तारकनाम दैत्य सब दैत्योंका शिरोमणि बनायागयाहै उसके मारनेके लिये जब भगवान् महादेव आप जन्मलेंगे तो ठीकहोगा ५६ वे अपनी स्त्री में जब पुत्र होकर उत्पन्नहोंगे तो उस पुत्रसे तारकासुरका नाशहोगा परन्तु शङ्करजी की जो पत्नी दक्षकी कन्या सतीनाम से प्रसिद्ध थी ५७ व किसीकारण से पिताके क्रोपसे मृतक होगई थी वह अब तुम्हारे कहने से किसी कारणको पाकर हिमाचलकी कन्या होकर लोकमें पूजित होगी ५८ व जगत् को शून्यजानकर उस सती के वियोग से महादेवजी सिद्धसेवित हिमाचल के कन्दरा में ५९ व सती के जन्महोने की प्रत्याशा बहुत दिनों तक करते रहेंगे फिर जब सती पार्व्वती होगी तो सुन्दर तप करतेहुये पार्व्वती व शिवके योगसे जो उसमें पुत्रहोगा ६० वह तारकासुरको मारेगा जैसेही पार्व्वती जन्म लेगी वैसेही उसको शिवके सङ्गम की इच्छा होगी ६१ व बहुतदिनों के विरह से उत्कण्ठित हरको जाकर प्राप्तहोगी प्रथम वे दोनों बड़ाभारी तपकरेंगे उसके पीछे फिर सङ्गम होगा ६२ फिर उन दोनों में थोड़ासा कलह होजायगा तब तारकासुरको फिर संशय होगा ६३ कि अब पार्वतीके पुत्र होगा व हमको मारेगा इसलिये जब महादेव व पार्वतीका संयोगहो सुरतासोक्ति कारणमें तो तुम उसमें कुछ विघ्न डालदेना जिससे कुछदिन वियोगरहे उस विघ्नकरनेका उपाय हमसे सुनो ६४ जब उन पार्व्वती महादेवका संयोग कुछ दिनतक होचुके तो तुम अपना संज्ञानाम रूप धारणकरके वहां जाकर खड़ी होना बस तुमको देखकर महादेवजी विश्रम्भ मनहोकर हास्य करतेहुये ६५ पार्व्वतीजी को झिटकेंगे व कोप करके देवी पार्व्वती तपकरनेको महादेवसे अलग चलीजायँगी व तपयुक्त ६६

महादेव भी अन्यत्र जाकर तपस्या करनेलगेंगे इस वियोग में जिस अमित दीप्तियुक्त पुत्रको महादेव से पार्व्वती उत्पन्न करेंगी वह सब असुरोंको निस्सन्देह मारेगा ६७ हे देवि ! तुमभी लोकदुर्जय दैत्यों को मारना जबतक कि सुरेश्वरीदेवी गर्म्भधारण कियेरहैं ६८ क्योंकि उनके संगमसे तुम तबतक दैत्यों को न मारसकोगी और जो ऐसा होगा तो तुमसे सब कार्य्य करेंगे ६९ जब उमादेवी नियम को खतम करेंगी तब पर्व्वत से उत्पन्न अपने सारूप्य को प्राप्त होंगी ७० तिस कालमें तुम्हारे साथ वह भवानी होगी व तुम उमाके अंश से रूप धारण करोगी ७१ हे वरदे ! तुमको एक अंशही से उत्पन्न होनेके कारण सब पूजेंगे व सब देवगण नानारूपों से तुम्हारी पूजा करेंगे व तुम उनके अनेक कार्य्य सिद्धकरती रहोगी ७२ व ब्रह्मवादीलोग ॐकारयुक्त गायत्री तुम्हींको कहने लगेंगे व राजालोग शत्रुओंके आक्रान्ति करनेकी मूर्त्ति तुमको कहेंगे ७३ व वैश्यलोग तुमको भूनाम अपनी माता कहेंगे व शूद्रलोग शिवा इस नामसे तुम्हारी पूजाकरेंगे मुनिलोग तुमको क्षान्तिकी मूर्त्तिसमझेंगे जिससे कि उनका मन कभी क्षुभित न होगा व नियम करनेवाले लोगोंकी नीति तुम्हीं होओगी ७४ व अर्थोंकी परिचित्तिनाम पालिका तुम होओगी व सब प्राणियों के कर चरणादि व्यापार करनेकी चेष्टा तुम्हीं होओगी ७५ व सब प्राणियोंकी मुक्ति तुमहोओगी व सब देहियों की गति भी तुम्हीं होओगी अनुरक्त चित्तवालोंकी रति व कीर्त्ति चाहनेवालोंकी प्रीति तुम्हीं होओगी ७६ व सत्यबोलनेवालों की कीर्त्ति तुम्हीं होओगी व दुष्टकर्म्म करनेवालोंकी शान्ति तुम्हीं होओगी व सब प्राणियोंकी भ्रान्ति तुम्हीं होओगी व यज्ञ करनेवालों की गतिभी तुम्हीं होओगी ७७ समुद्रों की महावेला व विलासियों की लीला प्यार से कण्ठ ग्रहण करनेवालों की आनन्द देने व प्रियकरनेवाली विभावरी रात्रिरूपिणी तुम्हीं होओगी ७८ इस प्रकार अनेकरूपों से तुम लोकमें पूजितहोओगी हे वरदे ! जो लोग तुम्हारी स्तुतिकरेंगे व जो पूजाकरेंगे ७९ वे निश्चय सब कामोंको पावेंगे इसमें संशय नहीं है जब ब्रह्माजी ने निशादेवीसे ऐसा कहा

तो वह तथा ऐसा कहकर व ब्रह्माके हाथ जोड़कर ८० अतिवेगसे शीघ्रही हिमाचलके गृहको चलीगई व वहां महारत्नजटित धवरहर पर विराजतीहुई ८१ पाण्डु कमलसम मुखवाली कुछ दुर्बल अंग युक्त व सुन्दर मुखयुक्त स्तनों के भारसे नमित कटियुक्त मेनाको उस निशाभगवतीने देखा ८२ महौषधि गणों से आबद्ध मंत्रराजों से सेवित तप्त सुवर्णके तारोंसे बँधी कांचीसे शोभितथी ८३ जोकि मणियोंके दीपगणोंकी ज्योतिके महाप्रकाशसे प्रकाशित व नाना कार्य्य करनेकी सिद्धियोंके अर्थ अनेक सेवकों से युक्तथा ८४ व जिसमें उजले चीनदेशके वस्त्रोंकी चांदनी भूमिपर बिछीथी व अगुरुआदि सुगन्धित पदार्थोंके धूमकी सुगन्धआरहीथी व अत्युत्तम दुग्धके फेनसेभी कोमलवस्त्रों से मनोरमशय्या बिछीथी ८५ ऐसे स्थानमें विराजमान हिमवान्‌की पत्नी मेना के समीप रात्रिभगवती पहुँची जब क्रमसे दिनबीतगया सूर्य्य अस्ताचलको गये ८६ व बहुधा सब पुरुष सोने परहुये सब को निद्रा आनेलगी सेवकलोग भी सोनेपर उद्यतहुये व चन्द्रमाकी ज्योति लोकमें प्रकटहोआई अच्छे प्रकार रात्रि होगई ८७ राक्षस यक्षआदि रात्रिमें चलने खानेवाले प्राणी ठौर २ घूमनेलगे सुन्दर स्थानों में जन स्त्रियों को कण्ठमें लगाते भये ८८ व अतिपूजित सुन्दर समय आगया मेना भी सोनेपरहुई उसके दोनों नेत्रकमलों को कुछ थोड़ासा ज्ञानरहा बनाय सोये हुये से होगये तब ब्रह्माकी प्रेरणासे गईहुई रात्रिदेवी मेनाकेमुखमें प्रवेशकरगई यह अतिसुखदेनेवाला अद्भुत सङ्गम हुआ ८९ जो रात्रिजगन्माता उमाके जन्म देनेका कारणथी वह क्रम २ से जाकर उदरमें प्राप्तहुई व जाकर गर्भाशयमें स्थितहोगई ९० व देवी गृह उदरमें टिकके प्रकाशित किया इसके पीछे रात्रि बीती प्रातःकालहोनेपर हुआ कि हिमवान्‌की स्त्री मेनाने ९१ ब्राह्म मुहूर्त्तमें कन्याको उत्पन्न किया उसके उत्पन्नहोतेही सब स्थावर जङ्गम जगत् ९२सबसुखीहुआ व सब लोकोंके निवासी सुखीहुये उससमय नरकनिवासियोंको भी स्वर्गके समान सुखहुआ ९३ व क्रूर जन्तुओं काभी चित्त शान्त होगया सूर्य्य चन्द्र नक्षत्रादि प्रकाशितोंका तेज

और भी अच्छेप्रकार प्रकाशित होगया ९४ सब ओषधियोंमें स्वादु युक्त फल उत्पन्न हो आये व सब मालत्यादि पुष्पके वृक्ष फूलउठे आकाश निर्म्मल होगया ९५ शीतल मन्द सुगन्ध तीनप्रकारका पवन चलनेलगा सब दिशायें निर्मल मनोहरहोगईं ऋतुकेयोग्य जो२ फल पुष्पथे सब होआये ९६ पृथ्वीदेवी धानोंकी मालाओंसे युक्त होगई व मुनियोंके बहुत दिनोंके कियेहुये तप सफल होगये ९७ व उनके सफलहोने से मुनियोंके चित्त और भी निर्म्मल होगये व तपकरने में जो शास्त्र उनलोगोंको विस्मरणहोगयेथे वे फिर प्रकटहोकर उन को आगये ९८ व तीर्थोंकाप्रभाव औरभी मुख्य व पुण्यतमहोगया व अन्तरिक्षमें सहस्रों देवलोग विमानोंपर चढ़ेहुये आपहुँचे ९९ उनमें इन्द्र ब्रह्मा श्रीहरि वायु अग्निभीथे इनकोलेकर सबके सब देवगणथे सबोंने उस हिमाचलपर पुष्पोंकी वर्षाकी १०० गन्धर्व मुख्योंने गानकिया व अप्सराओंने नृत्यकिया व सुमेरुपर्यन्त बड़े२ पर्व्वतलोग अपनी नराकारमूर्त्तिधारणकरके वहां आये १०१ व उस महोत्सवमें संयुक्तहुये व चारोंदिशाओंके समुद्र व नदियांभी अपनी मूर्त्ति धारणकरके सब तरफसे आये १०२ इसप्रकार उससमय हिमालयपर्व्वतपर सब चर अचर इकट्ठेहुये इसलिये वह पर्व्वत सबके सेवनके योग्य व प्राप्तहोने व रहनेके योग्य सब पर्व्वतों में उत्तमहोगया १०३ उस महोत्सवके सुखका अनुभव करके सबदेव गण अपने २ स्थानों को चलेगये व गन्धर्व्व किन्नर नागआदिभी सब अपने २ स्थानोंको चलेगये १०४ व हिमवान् पर्व्वतकी कन्या देवी क्रम २ से लक्ष्मीजीके समान रूप गुणवती होकर बढ़नेलगी १०५ यहांतक कि अपने सौभाग्य व रूपसे होते २ तीनोंलोकोंको भी आक्रमण करलिया व हिमालयकी कन्या जितने शुभगुण होते हैं सबोंसे युक्तहुई १०६ व इसी अनन्तरमें इन्द्रने देवसम्मत देवर्षि नारदजी का स्मरण अपने कार्य्य साधनकी शीघ्रताके लिये किया १०७ व वे भगवान् नारदजी इन्द्र की शक्तिको जानकर आनन्द से युक्त होकर इन्द्र के स्थानपर आये १०८ व उनको आयेहुये देखकर आसनपरसे उठकर इन्द्रने यथायोग्य अर्घ्य पाद्याचमनी-

यादि से उनकी पूजाकी १०९ फिर इन्द्रकी दीहुई पूजाको ग्रहण करके व बनाय सुस्थिर होकर नारदजी ने पुरन्दरकी कुशल पूँछी ११० कुशल पूँछनेपर समर्थ इन्द्रजी नारदजी से बोले कि हमारीही क्या तीनोंलोकों की भी कुशल का अंकुर आजकल बन्द होगया है १११ उस फलकी उत्पत्ति के वास्ते मैंने आप से अर्ज किया है जानते सब आप सही २ हो लेकिन ख्याल के लिये कहा भी गया ११२ इसी के लिये हमने आपका स्मरण किया है व आप से निवेदन करते हैं क्योंकि जब कोई कार्य्य होताहै तो अपने सुहृदों से निवेदन करने से उसकी निर्व्वृत्ति होजाती है इससे ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें हिमाचल की कन्या देवीका व महादेवजी का संयोग होजावे ११३ बस जो हमारे पक्षवालेहों उनको शीघ्र इस विषयमें उद्यम करना चाहिये इस प्रकार इन्द्रसे सब प्रयोजन अच्छी रीति से जानकर व उनसे बिदा होकर भगवान् नारदजी ११४ हिमालय पर्व्वतके स्थानको गये व चित्रविचित्र लताओंसे युक्त द्वारपर पहुँचे ११५ नारदजी का आगमन सुनकर मुनिके आगे आकर नरमूर्त्तिधारी हिमवान्ने मुनिके प्रणाम किया व उसकेसाथ भगवान्नारदजी पृथ्वीकी भूषणताको प्राप्त उसके गृहमें प्रविष्टहुये ११६ व हिमवान् के दियेहुये बड़ेभारी सुवर्णके आसन पर अतुल द्युतिवाले महामुनि जी विराजमान हुये ११७ तब हिमवान्ने यथोचित अर्घ्यपाद्यादि मुनिको दिया व मुनिने उस अर्घ्यादिकको विधिपूर्व्वक ग्रहण किया ११८ जब मुनिजी अर्घ्यादि ग्रहणकरचुके तो पर्वतराजने बड़ी सूक्ष्म व मधुरवाणी से धीरेसे मुनिराजकी कुशल पूँछी ११९ तब मुनिजी भी पर्व्वतराजकी कुशल पूँछतेहुये बोले कि हे पर्व्वतराज! उचित धर्म्ममें स्थित महागिरि में तुम्हारा स्थान बहुत विस्तृत है १२० व मनके तुल्य जैसी कोई चाहे वैसेही अनेक कन्दरायें इसमें विद्यमान हैं व तुममें जो गुणोंके समूहोंकी गुरुता विद्यमानहै वह तुम्हारी स्थावरतासे बाहरहै १२१ वैसी तो बहुधा जङ्गमोंमें भी नहीं दिखाईदेती इससे हम बहुत प्रसन्न हुये व तुम्हारे मनकी प्रसन्नता तो मुनियोंसे अधिकदेखतेहैं इससे जानतेहैं कि हमारे आनेसे तुम और भी अधिक

प्रसन्नहुयेहो हे पर्व्वतराज!यह हमको नहीं लक्षितहोता कि अविनयता तुम्हारे यहांसे कहां जाकर स्थितहुई १२२ इसीसे तुम्हारी कन्दराओं में नानाप्रकारके व्रत तप करनेवाले व मधुर वचन बोलनेवाले व अग्नि व सूर्य्यकी बराबर तेजवाले व पवित्र करनेवाले मुनिलोग निवास करते हैं व कन्दराओं में रहतेहुये सूर्य्यवत्प्रकाशित मुनियों से तुम नित्य पवित्र किये जातेहो १२३ व देवता गन्धर्व्व किन्नर विमानों व स्वर्ग्गवासका निरादर करके वहांसे विरागी होकर आकर तुम्हारी कन्दराओं में निवास करते हैं जैसे कोई अपने पिताके गृहमें रहताहै १२४ व हे शैलेन्द्र! तुम धन्यहो कि जिस तुम्हारी कन्दरामें सब लोकोंके स्वामी महादेवजी स्थित होकर सदा रामका ध्यान लगातेहुये स्थित रहते हैं १२५ आदरयुक्त वाणी से नारदजी हिमाचल से ऐसा कहरहे थे कि इतने में मुनिके दर्शनकी इच्छा से पर्व्वतराजकी स्त्री मेना १२६ अपनी कन्या समेत थोड़ी सखी व सेवकियों के साथ वहां आई व लज्जा व प्रेमसे सब अङ्ग नम्र किये हुये उस स्थानमें पैठी १२७ जहां कि हिमाचल के साथ मुनियों में श्रेष्ठ इन्द्रियोंको जीतेहुये नारदजी विराजमान थे व तेजकी राशि मुनिको जैसेही देखा कि गिरिराजकी प्रियतमा भार्य्या ने १२८ अपने मुखको अच्छी प्रकार वस्त्रसे छिपाये हुये व दोनों हाथजोड़कर मुनिके चरणोंके प्रणाम किया उस महाभाग्यवतीको देखकर अमित द्युतिवाले नारदजीने १२९ अमृतरूप आशिषोंसे उसे बहुत बढ़ाया तब पर्व्वतकी पुत्री विस्मित चित्तहोकर १३० अद्भुतरूप नारद मुनिको देखनेलगी तब नारदजी ने बड़ी मधुरवाणी से कहा हे वत्से! यहांआ १३१ तब पार्व्वतीजी अपने पिताके गलेको पकड़ उसी आसनपर बैठगईं तब उनकी माताने कहा हे पुत्रिके! मुनि भगवान्‌के प्रणाम कर उससे अपने मनमाना उत्तम पति पावेगी जब माता ने ऐसा कहा तो वस्त्रसे मुख मूँदकर १३२ । १३३ कुछ शिर हिलादिया पर वचन कुछभी नहीं बोलीं तब माताने कन्या से फिर यह वाक्य कहा १३४ कि हे वत्से! देवर्षिजी के प्रणाम कर तो तुझ को एक रत्नका वह चित्र देऊँगी जोकि मैंने बहुत दिनों से

धररक्खा है १३५ जब माता ने ऐसा कहा तो अतिवेग से पिता की गोद से उठकर कन्या ने मुनिके चरणकमलों पर अपना शिर रखकर वन्दना की १३६ जब कन्याने इस प्रकार वन्दनाकी तो माताने अपनी सखी से धीरेसे कहा कि मुनिराजसे कन्या के सौभाग्य के समाचारपूँछ १३७ व इसके शरीरके सबलक्षणों के फल पूँछ सो कुछ सन्देहकी बात नहीं थी स्त्रियोंका स्वभाव होताहै कि उन को अपनी कन्या की चिन्ता लगीरहती है कि देखें इसका सौभाग्य कैसाहो १३८ इस बातको सखी के कहने से हिमवान् ने जाना कि हमारी प्राणप्रिया के मनको इस बातका पूँछना अभीष्टहै इससे उन्होंने स्पष्टतापूर्व्वक मनोहर सिंहासनपर विराजमान मुनिसे वही प्रश्नकिया तब पर्व्वतकी स्त्रीकी प्रेरणा से सखीकीद्वारा जानकर हिमवान् के कहने पर मुनिश्रेष्ठ नारदजी हँसतेहुये यह वाक्यबोले कि १३९।१४० इस कन्या का पति उत्पन्नही नहीं हुआ व यह लक्षणोंसे विवर्जित है व निरन्तर इसके हाथ उताने रहते हैं व चरण व्यभिचारी हैं १४१ व यह स्वच्छायाहोगी फिर अन्य बहुत हम क्या कहें इस बातको सुनकर हिमवान् बड़े सम्भ्रमसे युक्तहुये व उनका सबधैर्य्य नष्टहोगया १४२ व रोदन करतेहुये व्याकुलचित्त गिरिराज नारदजी से बोले कि इस संसार में बड़ा दोष विद्यमान है क्योंकि इसकी गति नहीं जानीजाती १४३ किसी अतिशयात्माकर के सृष्टि तो जरूरही होती है इसलिये ब्रह्माने संसारियों की यही मर्य्यादा बनाकर स्थित की है १४४ जो जिसके बीजसे उत्पन्न होताहै वह उसी के अर्थ को सिद्धकरता है यह बात प्रसिद्ध है कि कोई ऐसा नहीं है जो किसीसे उत्पन्न न हुआ हो क्योंकि कोई स्फुट नहीं है १४५ इसी प्रकार अपने कर्म्म से विविध प्रकारके जाति उत्पन्न होते हैं जैसे कि अण्डज पक्ष्यादिक अण्डजों से उत्पन्न होते हैं व मनुसे सब मनुष्य हुये १४६ सो मनुष्यों के शरीरों से सब मनुष्य उत्पन्न होतेजाते हैं उसमें भी जो धर्म्म कर्म्म उत्कर्षताके साथ करते हैं वे उत्तम ब्राह्मण की जातिमें उत्पन्न होते हैं १४७ विना पुत्रको उत्पन्नकिये प्राणी नाममात्र रहते हैं मनुष्य तो विशेष करके क्योंकि

ये मनुष्य स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न करते हैं इससे विना पुत्र ये केवल नामैं शेष रहते हैं १४८ सो यह नहीं कि वे प्रथम विवाह करके गृहस्थही होजाते हों किन्तु प्रथम ब्रह्मचर्य्याश्रम में रहकर फिर क्रमसे विवाह करते हैं तब सन्तान उत्पन्न करते हैं सो इस रीतिसे भी सन्तानोंका उत्पन्न करना संसारके बढ़ाने के लिये है १४९ क्योंकि यदि कोई गृहस्थाश्रम को न ग्रहणकरे तो संसारकी उत्पत्ति ही न हो परन्तु बहुधा शास्त्र के कर्त्ताओं ने पुत्रके लाभकी प्रशंसाकी है १५० व ब्रह्माने स्त्रियों को पुरुषोंको मोहित करनेके अर्थ व नरकसे रक्षाकरने के लिये स्त्रियों के विना जन्तुओं की सृष्टि नहीं होसक्ती १५१ व स्त्रियों की जाति अपने स्वभावही से कृपण व दीन होतीहै क्योंकि वह अपनीरक्षा अपने आप नहीं करसक्ती क्योंकि करनेवाले ने शास्त्र के विचार करने की उनकी शक्ति दूषित करदी है इससे उनमें शास्त्रालोचन की सामर्थ्य नहीं होती १५२ ब्रह्माने यह स्त्रियोंका बड़ा अनादर कियाहै जो शास्त्र पढ़ने की बुद्धि उनकी दूषित करदी है पर शास्त्रमें यह बहुत स्थानों में लिखाहै कि १५३ जो कन्या शीलवती व शुभलक्षणोंसे युक्त होती है दश पुत्रोंके समान होतीहै सो यदि कोई कन्याको न उत्पन्न करे तो इस वाक्यका फलही भ्रष्टहोजाय १५४ पर वास्तवमें कन्या सदा कृपण होतीहै इससे शोचकरने के योग्य होतीहै इससे सदा अपने पिताके शोकहीको बढ़ाती रहती है सो जो कन्या सब शुभ अर्थोंसे पूर्ण व पुत्र पौत्रादिकों से युक्तहोती है वहभी पिताको सदा दुःखितही करती है फिर १५५ जो पति पुत्र धनादिकों से दुर्भगा होती है उस दीन बेचारी कन्याको क्याकहें वह तो पिताको महा दुःखसागर में डुबोती है व तुमने हमारी कन्याके शरीरमें सब दोषों का संग्रह बताया १५६ इससे हे नारद! हम मोहितहैं व सूखेजाते हैं ग्लानिके मारे अङ्ग विशीर्ण हुयेजाते हैं जहां ऐसा सङ्कट पड़जाताहै वहां जो उचित नहीं होता वहभी कहाजाताहै १५७ इससे हे मुने! अब हमारे ऊपर अनुग्रह करके हमारी कन्याके दुष्टलक्षणोंको काट डालिये संदेह दूर होनेपरभी मन शंकित रहता है १५८ क्योंकि

तृष्णाफलके लोभसे महात्माओं कोभी चित्त चलायमान कर देती है व स्त्रियोंमें यह परमजन्म होना कि वे अपने दोनों कुलवालों को अपने सदाचारसे भूषित करतीरहैं बहुतही योग्यहै व १५९ उनके इस लोक व परलोक के सुखके लिये सत्पति होताहै पर सत्पति स्त्रियों को दुर्ल्लभ होताहै इससे विगुणभी पतिहो तोभी पतिही है स्त्रीकी रक्षा करताही है १६० विना पुण्योंके किये स्त्री कभी उत्तम पति नहीं पासक्ती पर चाहे जैसा कैसा प्रतिहो स्त्रियों के धर्म्म सुख रति प्रीति देनेवाला वही होता है १६१ व जबतक स्त्री जीती है तबतकका धन भी वही पतिही है अन्य कुछ नहीं है चाहे निर्द्धन दुष्ट वचन कहनेवाला मूर्ख व सब लक्षणों से रहित भी हो १६२ पर स्त्री का परमदेवता सदापतिही है परन्तु देवर्षि आपने कहा कि इस तुम्हारी कन्याका पति उत्पन्न नहींहुआ १६३ यह इसका अतुल असंख्य व अति दुःखद दुर्भाग्य है व इतने चर अचल प्राणियों के समूह इस संसारमें विद्यमान हैं उनमें इसकापति उत्पन्नही नहीं हुआ यह चिन्ता हमारे मन को अत्यन्त दुःखित करती है १६४ व वह नहीं उत्पन्न हुआ यह सुनकर हमारामन अत्यन्त व्याकुलहै, व मनुष्य देवतादिकोंके शुभ अशुभ सूचक जो लक्षण होते हैं १६५ वे सब हमारे विचार से इसके भी कर चरणों में हैं परन्तु आपके कहने से निश्चयहुआ कि इसके कोई शुभसूचक लक्षणही नहीं हैं आपने इसकी (उत्तानहस्तता) ऊँचे हाथ होना कहा १६६ सो इससे तो यह विदितहुआ कि यह सबसे नित्य हाथ उठाकर याचना करती रहेगी शुभ उदय वाली अनुकूल स्वभाव वाली यह देनेवालों की दृष्टिमें कभी न ठहरेगी १६७ व यहभी तुमने कहा कि इसकी स्वच्छायाहै वइसके चरण व्यभिचारीहैं सो हे मुने ! इस लक्षणसेभी यह कल्याणयुक्त हमको नहीं जानपड़ती १६८ व और इसके शरीरके सब लक्षण तो अन्य शुभलक्षणोंको बताते हैं पर जो आपके विचारमें आयाहै वही ठीकहोगा महादुःखी बेचारे हिमवान् जब इतना कहकर ठहरे १६९ तो देवताओंसे पूजित नारदजी कुछ हँसकर यह वचन बोले कि बड़ेभारी हर्षके स्थानपर

तुमने दुःखका उच्चारणकिया १७० हे महापर्व्वत ! तुमने हमारे कहनेको नहीं समझा इससे तुम मोहित होगयेहो अब एकान्त में विचारांशके योग्य हमारी वाणी एकाग्रचित्तहोकर सुनो १७१ व विचारो कि कैसे गूढ़ाशयोंसे भरीहुई है हे हिमाचल ! जो हमने कहा कि इस देवीकापति उत्पन्न नहींहुआ सो सत्यही है १७२ भूतभविष्य व विद्यमान सब संसारके उत्पन्न करनेवाले महादेवजी किसीसे उत्पन्न नहींहुये क्योंकि वे शरण्य निरन्तर विद्यमान सबके शिक्षक शङ्कर परमेश्वर हैं १७३ अन्य ब्रह्मा इन्द्रादि व मुनिलोग गर्भवास जन्महोना वृद्धताआदि दोषोंसे पीड़ित रहतेहैं हे पर्व्वत ! उन तुम्हारे परमईश महादेवजीके ब्रह्मादिदेव क्रीडनक अर्थात् खेलौने हैं १७४ यह ब्रह्माण्ड उनकी इच्छासे उत्पन्नहुआ है विष्णुभगवान् प्रत्येक ब्रह्माके आयुर्दाय के किसी न किसी युगमें कार्य्यके लिये उत्पन्न होतेरहते हैं परन्तु उनकाभी युग २ में उत्पन्नहोना मायाहीसे मानाजाताहै वास्तवमें वेभी कभी उत्पन्न नहींहोते क्योंकि हे भूधर ! अस्थावर जङ्गम सबमें जो आत्मा परमेश्वर है उसका कभी विनाश होतानहीं १७५ व संसारमें उत्पन्न प्राणीके केवल देहका नाशहोताहै आत्मा का नाश कभीनहीं होता १७६ ब्रह्मासे लेकर स्थावर पर्य्यन्त जो यह संसार कहाताहै यह बार २ जन्म मरणके दुःखसे युक्त रहता है १७७ व महादेवजी अचल स्थाणु अजात अजनक जरारहित हैं सो हे सौम्य ! वहीजगन्नाथ निरामय महादेवजी इस तुम्हारी कन्याके पतिहोंगे १७८ व जो हमने कहा कि तुम्हारी कन्या यह देवी लक्षणों से वर्ज्जित है उस वाक्यकाभी अच्छा कोई विचार सुनो १७९ लक्षण दैवके बनाये हुये शरीरी के अङ्गों में जो कुछ चिह्नहोता है उसको कहते हैं व वह आयु धन सौभाग्यादिका प्रकाशक होता है उसीसे आयुआदि जानेजातेहैं १८० परन्तु हे भूधर ! जो अनन्त अप्रमेय होताहै उसके शरीरमें सौभाग्यादि सूचक कोई चिह्न नहीं होसक्ता क्योंकि चिह्न तो दैवका बनाया होता है व उस अनन्त के बनाने वाला कोई होताही नहीं १८१ इससे हे महामते पर्व्वतराज ! इसके अङ्गमें कोई लक्षण नहीं है बस इसीसे हमने इसे लक्षण वर्ज्जित कहा व जो हमने

कहा कि इसकी सदा (उत्तान करता) ऊपर को हाथ उठना रहेगा वह भी ठीकहै १८२ कि वरदान देनेके लिये इस देवी का हाथ सदा उठता रहेगा बस उत्तान करता सिद्धहोगई व यह सुर असुर मुनि समूहोंको सदा वरदेतीरहेगी इस में अन्तर न पड़ेगा १८३ व हम ने जो कहा कि इसके चरण अपनी छाया के व्यभिचारी हैं अर्थात् बराबर पृथ्वीपर नहीं लसते कुछ ऊँचेरहते हैं सो हे शैलसत्तम! उस हमारी वाणीकी भी उक्ति सुनो १८४ इसके चरण वज्र के समान प्रज्वलित व अरुण नखोंसे युक्त हैं व पृथ्वीपर बनाय नहीं लसते कुछेक ऊँचेरहते हैं इससे देवता दैत्य मनुष्यादि सब इस के चरणोंके मणि जड़ित मुकुटों से प्रणाम करेंगे १८५ व उन चरणों पर उन हँसते हुये सुरादिकोंकी छाया पड़ेगी पर (स्वच्छाया) अपनी छाया न पड़ेगी क्योंकि ऐसी विचित्र देवता के छायाहोतीही नहीं व हे महीधर ! यह जगत्पालक महादेवजी की भार्य्या है १८६ व सब लोकोंकी जननी है व सब प्राणियोंको यह उत्पन्न कराती है व तुम्हारे यहां प्राप्तहुई है यह शिवाहै तुमको व संसारको पावन करनेके लिये तुम्हारे क्षेत्रमें से उत्पन्नहुई है १८७ इससे शीघ्रही महादेवजीका संयोग इसकाकराओ हे भूधर! तुमको यह कार्य्य विधि पूर्वक बहुत शीघ्र करना चाहिये १८८ क्योंकि इसमें देवताओं का बड़ाभारी कार्य्य है नारदजी से इस प्रकार सब सुनकर मेनाके पति हिमवान् ने १८९ अपने को फिरसे उत्पन्न समझा व अत्यन्त हर्षित होकर नारदजी से कहा १९० कि हे विभो ! तुमने हमको दुस्तर घोर नरकसे उबारा क्योंकि हम सातोंलोकोंके नीचे पातालको चलेगयेथे जहांसे निकल नहीं सक्तेथे आपने निकाललिया व सातों लोकोंका स्वामी बनाया १९१ हे मुनिवर ! इससमय आपने मुझको हिमाचल किया अब अचल रहूंगा व प्रथमके हिमाचल से अब सौगुना ऊंचा आपने करदिया १९२ अब हे महामुने ! हमारा हृदय आनन्दके दिनोंको हरकर अपने में मिलाके रहेगा अब इस हृदयमें आनन्द नहीं समाता बाहर निकला [illegible] है १९३ सो क्यों न ऐसाहो आप ऐसे लोगों का दर्शन सफल [illegible] है व आपने कहा कि

तुम्हारे ऊपर सब देवता गन्धर्व्व मुनिलोग निवास करते हैं १९४ सो देवता व मुनिलोग तो आप कुछ पाप करतेही नहीं जहां रहते हैं उसकोही पवित्र करते हैं मैं उनको दूषित करताहूं परंच आपभी मेरे ऊपरकी किसी बस्ती में निवासकरें १९५ जब पर्व्वतराज ने ऐसा कहा तो अतिहर्षित होकर नारदजी भूधर से यह वाक्य बोले कि आपने सब कुछ किया हम बस चुके व बड़ेप्रसन्न हैं बस हमारी और भी प्रसन्नता के लिये यह देवकार्य्य करो बस हमारा अन्य कुछ अपना प्रयोजन नहीं है इतना कहकर नारदजी शीघ्र ही स्वर्गको चलेगये १९६ । १९७ व देवमन्दिर में जाकर उन्हों ने इन्द्रको देखा व उचित आसनपर विराजमान होकर जब आनन्दित हुये १९८ तो इन्द्रके पूंछनेपर पार्व्वतीके विषयकी सब कथा कहतेहुये बोले कि जो हमसे करने को कहा गया था वहतो मैंने किया १९९ कि अन्य सब कार्य्य तो हम कर आये अब आगे का कार्य्य तुम सब मिलकर करो क्योंकि मुख्य कार्य्य अब यहहै कि महादेवजी विवाहका करना अङ्गीकार करें सो वह कामके अधिकार में है व काम जानों हिमालयपर सर्व्वत्र विद्यमानही रहताहै अब यह करना चाहिये जिसमें कामदेव धनुष संधानकरे कार्य्यदर्शी नारद जी ने जब इन्द्रसे ऐसा कहा २०० तो भगवान् पुरन्दरने आम्र के अंकुरों को अस्त्र बनानेवाले कामका स्मरण किया जब धीमान् सहस्रलोचनने कामका स्मरण किया २०१ तो अपनी स्त्री रति व विलासके साथ कन्दर्प्प वहां आकर उपस्थित हुआ उसको वहां प्रकट हुये देखकर इन्द्र काम से बोले २०२ कि हे रतिप्रिय! तुमको बहुत उपदेश करने से क्याहै क्योंकि तुम्हारा मनोभव नामहै इससे सब प्राणियों के मनकी बात जानतेहो २०३ इससे जैसे कैसे बने देवताओं का प्रियकरो हे मनोभव! महादेव को पर्व्वतराजकी कन्या से संयोजित कराओ २०४ इस वसन्त व रतिके सङ्ग शीघ्रजाओ जब अपने अर्थकी सिद्धिकेलिये इन्द्रने ऐसा कहा २०५ तो काम भयभीत होकर इन्द्रसे बोला कि हे जगत्प्रभो! मुनियों व दानवों के भयभीतकरानेवाली [illegible] सामग्री से २०६ शङ्करजी बड़े दुःख

से साध्य होने के योग्य हैं क्या तुम नहीं जानते हो उन देव महा-
देवकापद तुम जानलेहो कि नाशरहित है २०७ व ब्रह्मा प्रसन्न
होनेमें व कोपकरनेमें भी शुभ अशुभ दोनों करडालते हैं इसलिये वे
सब उपभोगोंके सारभूतहैं हमारीजान स्वर्गकी अन्य स्त्रियोंको भी
सङ्ग लेलेना चाहिये व लक्ष्मीको तो विशेषकरके सङ्ग लेजाना चा-
हिये कामके ऐसेवचनसुनकर देवताओंसहित इन्द्रबोले २०८।२०९
कि हे काम! हमलोग भी तुम्हारी सहायता के लिये वहां आवेंगे
इसमें सन्देह नहीं है क्योंकि विना हमलोगों के अंश के तुम्हारी
क्या सबकी शक्तिका तिरस्कारही होजाता है २१० कहीं किसी
की सामर्थ्य होती है सबकी एक जगह बराबर शक्ति नहीं होती है
जो हमलोगोंकी शक्ति विना कुछ करसके जब इन्द्रने ऐसा कहा तो
काम अपनेसखा वसन्तको संगलेकर व रतिसंयुक्त होकर हिमालय
पर्वत के शृंगपर को गया व वहां पहुँचकर कार्य्य के उपायसहित
चिन्ता करनेलगा कि २११।२१२ महात्मालोग तो दयावान् व स-
रल होते हैं पर उनका मन बड़ा दुर्ज्जय होताहै इससे प्रथम उनके
मनको पलायमान करके फिर उनको खींचना चाहिये इससे प्रायः
प्रथम उनके मनको संशोषणकरलेनेसे फिर कार्य्यसिद्धिहोगी २१३
बस ऐसे विविध प्रकार के भावोंसेही कार्य्य की सिद्धि कैसे होगी
वैर व द्वेषकरने से होगी सिद्धि तो जब पहले मनको शुद्धकरो तब
होती है २१४ बड़े क्रोधसे व दुष्टसंग से ईर्षा करतीहुई महासखी
धैर्य्य को छोड़कर विध्वस्त होगई अब हम ऐसाकरें कि जो बस
उसीको हम इनके मनके विकार करने के लिये नियत करेंगे उस
सतीके स्मरण से शिव धैर्य्य के द्वारोंको बन्दकरके व सन्तोषका अ-
पकर्षण करके कार्य्य सिद्ध करलेंगे २१५ । २१६ इस हमारे नि-
श्चयको ऐसा कोई पण्डित नहीं है जो जानले क्योंकि विकल्पमात्र
मेरी संस्थाहै व रूप व इन्द्रियोंका कुछ जाहिर नहीं करना होता के-
वल मनही से उत्पन्न होताहूं २१७ इससे स्थिर आत्मासे तपस्या
करतेहुये महादेव के आश्रम में जाकर गम्भीभर पानी के भवँर के
बराबर दुस्तर होकर क्रिया रम्भण करूंगा २१८ क्योंकि वे तो अ-

पनी सब इन्द्रियों को खींचेहुये बैठेहोंगे फिर हमारे इस चरित्र को कैसे जानेंगे ऐसी चिन्तना करके तब काम महादेवजी के आश्रमपर २१९ गया जो आश्रम पृथ्वीका सार व साखूआदि नानाप्रकारके वृक्षों से शोभायमान होरहाथा व शान्तचित्तवाले पशुओं से भराथा व अन्य नानाप्रकार के प्राणियों के समूह से शोभित होताथा २२० नानाप्रकार के पुष्पों व लताओं के जालों से व कंगूरोंपर चरतेहुये मृगगणों से युक्तथा शान्तवृषभों से युक्त व हरीघाससे युक्तथा २२१ महादेवजी के ऐसे आश्रमपर वीरजनों के स्वामी महादेव के बराबर तेजवाले तीननेत्र युक्त महादेव के किसी दूसरे वीरक नाम को देखा २२२ पकीहुई व कुंकुम के रंगकी पीलीजटाओं से शोभित होतेथे वेत्र हाथमें लियेथे व स्वस्थ व भयानक केशों से रहित रूप से भूषित थे २२३ व नेत्र मूँदे कमलासनपर बैठेहुये ध्यानावस्थित अपने नेत्रकमलों से नासिका के अग्रभागको देखरहे थे २२४ अतिमनोहर सिंहकी खालका रुमाल लिये हैं कानों में निश्श्वास रहित सर्प्पोंकी फणा विराजतीथीं व २२५ वे सर्प्प कानों के नीचे कपोलों परतक लटकते थे व ऊपर शिरपरकी जटाओंको चूँबते थे व वासुकि नागराज गले से नाभिपर्य्यन्त लटकते थे २२६ व आप ब्रह्माञ्जलि जोड़े अन्य बहुत से मोटे ऊँचे महाविषधर नागोंसे भूषित थे ऐसे शङ्करजी को देखकर काम धीरे २ उनके समीप गया २२७ व भ्रमरों की झङ्कार से शोभित बनाय मुखके समीप पहुँचा व कानके छेद में होकर मदन महादेवजी के मनमें पहुँच २२८ व वहां धीरे २ भ्रमरके समान मधुर शब्द से कुछ गाने लगा उसे सुनकर महादेवजी ने दक्षप्रजापति की कन्या सतीजी का भोग के वास्ते स्मरण किया क्योंकि मनमें कामके निबास करने से अनुरक्त होगये थे २२९ सतीजी आकर धीरेसे उनकी समाधि भावना को दूरकरके प्रत्यक्षरूपिणी होकर मन में स्थित होगई २३० बस महादेवजी का मन उन अपनी प्राणप्रिया में ऐसा लगा कि तन्मय होगये यद्यपि सब इन्द्रियों को अपनेही वश में कियेथे पर कामके विकार से युक्त होगये २३१ व काम से व्य-

थित होतेही उनको कुछ क्रोधहोआया परन्तु धैर्य्यको धारण करके मदनकी वासनाको दूरकरके योगाभ्यास में आरूढ़ होगये २३२ तब काम उस मायासे ज्वलित होगया इच्छाशरीरी तो था जोकि दोष का स्थान महान् आशयवाला जिसको कोई जानता नहीं २३३ सो वह कामवासना व व्यसनात्मक मछली को पताकालिये महादेवजी के हृदय से निकलकर बाहर खड़ाहुआ २३४ उससमय उसका मित्र वसन्तऋतुभी उसके साथथा बस वसन्तकी सहायतासे पवन के कँपायेहुये आम्र के वृक्षको देखा २३५ तब कामने पुष्पके गुच्छेको बाण बनाकर महादेवजी के वक्षस्स्थल में स्थापित किया व मोहन नाम बाणको मकरध्वजने चलाया २३६ व वह बाण श्री हरजी के परमशुद्ध हृदय में पुरुषाकार होकर लगा जिससे फिर किञ्चित् विमोहित से होगये २३७ जब इसप्रकार हरजी हृदय से काम बाणसे विद्धहुये तब यद्यपि महाधैर्य्यवान् थे पर कामके वशीभूत होकर कांपने लगे २३८ बाद इसके प्रभुतासे भावोंका आवेशदेखा व ऐसे आतुर होगये कि अपने आप आसनपर से उछलकर यद्यपि अच्युत थे पर कामकी व्याकुलतासे बहुत प्रकारके अनर्थ वाक्य बकनेलगे व कामकी प्रवृत्तिहुई २३९ तदनन्तर महादेवजीको इतना कोपहुआ कि उसके अग्निसे तीसरानेत्र धधकउठा व खुलगया २४० जो नेत्र रुद्रजीका प्रलयसमय में संहारकरने के लियेही खुलताथा उसे मदनाग्निके हृदयमें स्थित होनेपर हरजीने अच्छेप्रकार खोल दिया २४१ व उस नेत्राग्निकी चिनगारियोंसे जलतेहुये स्वर्गवासी चिल्लातेहीथे कि कन्दर्प के नाशक श्रीहरजी ने कामको भस्म करडाला २४२ श्रीहरजीके नेत्र से उत्पन्न वह अग्नि कामको भस्म करके अपनी ज्वालाओंको प्रकट करके जगत् भरको भस्म करने के लिये उद्यतहुआ २४३ तब महादेवजीने सबजगत्को बचानेके लिये उस कोपानलको अतिसुगन्धित आम्रवृक्षके मधुमें चन्द्रमामें पुष्पों में २४४ भ्रमरोंमें कोकिलाओंके मुख में विभागकरके बांटदिया कि यह काम कोपानल इनमें रहे व कामके बाणों से भीतर बाहर विद्ध होकर हरजीने २४५ अनुरागकारी इन सबोंमें बांटतेहीसे अग्निको

इनमें स्थापित करदिया सो लोगों को संक्षोभित करानेवाले उस कोपानलको जबसे हरजीने इन पदार्थोंमें बांटदियाहै २४६ तबसे जब कभी कोई कामीपुरुष आम्रादिकों को देखता है तब अत्यन्त काम से पीड़ित होताहै व कामाग्निसे उसके हृदयको जलाकर ये पदार्थ कामको उस वियोगी प्राणी के सम्मुख खड़ा करदेते हैं जिससे वह पुरुष दुःखके वश होजाताहै २४७ श्रीहरजीके कोपानलयुक्त हुङ्कार से भस्म कामको देखकर उसकी स्त्री रति वसन्त के साथ विलाप करनेलगी २४८ जब बहुत रोदनकिया तो वसन्तने बहुत समझाया व तब रति देवदेव त्रिलोचन श्रीशिवजीके शरणको गई २४९ उस के पीछे २ भृङ्ग शब्दकरतेहुये चले व अतिसुगन्धित आम्र के बौर की कलीचली वृक्षों की लताओंके बीच सेंछिपीहुई कोकिलाचली २५० इन सबोंको लौटाकर रतिने अपने बालोंकी जटाको लपेटकर टेढ़ी अलकों से जूराबांधा व उन बालों के ऊपर व अपने सब अङ्गों में भी भस्महुये कामकी भस्म लगाकर २५१ जानुओं के बलसे पृथ्वीपर उँटकुरुआ बैठकर चन्द्रशेखरजीके प्रणाम करतीहुई बोली शिव मनोमय जगन्मय अद्भुत मार्गवाले देव शिखाओंसे अर्चित पादपद्म व सद्भक्तोंकी क्रियामें श्रेष्ठ तुम्हारे नमस्कारहै २५२ संसार रूप व भव संसारके उत्पन्न करनेवाले कामके ध्वस्तकरनेवाले २५३ काम व माया को अपने आश्रय में कियेहुये अमलसृष्टि से भूषित अप्रमाण व गुणोंके स्थान सिद्ध व पुरातन तुम्हारे नमस्कारहै २५४ शरणागतके रक्षा करनेवाले व गुणरूप तुम्हारे नमस्कारहै, व भीम गणानुग तुम्हारे नमस्कार हो नानाप्रकारके भुवनों के कर्त्ता भक्तों के वाञ्छित देनेवाले २५५ कर्म्मों की उत्पत्ति के स्थान व अनन्तरूप सदैव तुम्हारे नमस्कार है असह्य कोपवाले चन्द्रचिह्न सदा तुम्हारे नमस्कारहै २५६ अप्रमाण लीलायुक्त परमस्तुति कियेगये वृषेन्द्र वाहन व त्रिपरान्तक प्रसिद्ध व महौषधरूप नानाप्रकारके रूपधरने वाले तुम्हारे नमस्कारहै २५७ कालरूप व कला धारण करनेवाले व कालकी कलाओं के तिरस्कार करनेवाले चराचराचारविचार श्रेष्ठ व किसी तरहसे जीवोंकी सृष्टिका न आश्रय करनेवाले २५८ तुम्हारे

नमस्कारहै चन्द्रशेखर मैं तुम्हारे शरण में प्राप्तहुईहूँ हे महेश ! सो अपने प्रियतमकी प्राप्तिके लियेही आईहूँ इससे मुझको मेरापति दीजिये यशलीजिये हे भगवन् ! मैं बिनपति के नहीं जीसक्ती हूँ २५९ हे पुरुषेश ! स्त्रिना स्त्री का संसार में पतिही नित्य है प्रियको छोड़कर संसारमें और दूसरा कौनहै व बलमें तुमसे पर और कौनहै तुम सब के प्रभु प्रभावी प्रियोंके प्रभव प्रवीण व परापरके जाननेवालेहो २६० व तुम्हीं सब भुवनके नाथहो व दया करनेवाले हो व दूरकरदीहो भक्त की भय इन्दुमौलि शङ्कर व वृषा कपिकी जब कामकी स्त्री ने इसप्रकार से स्तुतिकी २६१ तो चन्द्रधारी शिवजी सन्तुष्टहुये व उसकी ओर कृपादृष्टि से देखकर उससे मधुरवचन बोले कि जब कोई कामकी इच्छा करेगा तभी प्राणी के काम उत्पन्न होजायगा २६२ व आज से काम का नाम भूतल पर एक अनंग होगा जब महादेवजी ने काम की प्रिया रतिसे ऐसाकहा तो वह श्रीशिवजी के शिर झुकाकर प्रणामकरके २६३ वसन्तसहित हिमालयके दूसरे उपवनको चली गई व उस रम्यस्थलमें दीनहोकर रोदन करनेलगी २६४ व शिवकी आज्ञासे मरण के व्यवसाय से निवृत्तहुई व उसीसमयमें नारद के कहने से हिमाचल २६५ अच्छेप्रकार अपने मन्दिरमें आभूषण से संस्कार करके व विवाहके मंगलों से भूषित करके कल्पवृक्षके पुष्पों की माला पहिनाकर उजले दिव्य चीनदेश के रेशमी वस्त्र धारण कराके २६६ दोसखियोंसहित अपनी कन्याको लेकर एक अच्छे विवाहके सुभग योगमें प्रसन्नमनहोकर २६७ शिवके समीपको चले जातेथे व बहुतसे वन उपवनों को नाँघगये थे इतनेमें उन्होंने महा तेजस्वियोंके भी तर्कणाकरनेके अयोग्य एक विलक्षण स्त्रीको रोदन करतेहुये देखा २६८ जिसके समानरूपमें रम्य उपवनोंमें व पर्वतों के शृंगोंपर व सब लोकों में भी कोई स्त्री नहीं देखीथी सो उसको रोते हुये देखकर हिमाचल बड़े कौतुकसे युक्त हुये २६९ व उसके निकट जाकर उन्होंने उससे पूछा कि हे कल्याणि ! तुमकौनहो व कि-सकी हो व किसलिये रोतीहो २७० हे लोकसुन्दरि ! इस तुम्हारे रोनेका कारण हम थोड़ा नहीं समझते कुछ अधिकही कारण होगा

उनका ऐसा वचन सुनकर वसन्तसहित अतिदीनतासे रोदन करती हुई व शोकग्रसित श्वासको छोड़तीहुई दीनताको बढ़ातीहुई वह स्त्री हिमवान्से बोली कि हे सुव्रत! कामकी प्रियभार्य्या रति हमको जानो २७१।२७२ इस पर्व्वतपर भगवान् महादेवजी तपकरते हैं उन्होंने क्रोधसे अपनातीसरानेत्र खोलदिया २७३ उससे अग्नि शिखाजाल को उत्पन्न करके कामको भस्म करडाला तब भयसे विह्वल होकर मैं उन देवदेवके शरणको गई २७४ व भक्तिसे उनकी बड़ीस्तुति की तब प्रसन्नहोकर शिवजी ने मुझसे कहा कि जा हम प्रसन्नहैं तेरा-पति सब प्राणियों की इच्छासे उनके मनसे उत्पन्न होगा २७५ व जो मनुष्य भक्तिकरके तेरी स्तुतिको पढ़ेगा व हमारा आश्रयीभूत मरण पर्य्यन्त तक जो मनोरथकी इच्छा करेगा वह पावेगा २७६ इससे मैं उनके वाक्यकी आशाकी वशसे प्रतीक्षा करतीहूं व कुछ कालतक अपने शरीरकी रक्षाकरूंगी २७७ जब रतिने पर्व्वतराज से ऐसाकहा तो वे सम्भ्रमसे बहुत भयभीतहुये व अपनी कन्याका हाथ पकड़कर अपने स्थानको चलनेपर उद्यतहुये २७८ तब जो भावी होतीहै वह अवश्य होतीहै इसकारण लज्जित होकर अपनी सखियों की ओर देखकर फिर अपने पितासे कन्या बोली कि २७९ हमको दुर्भाग्य शरीरसे क्याहै कैसे तिस दशाको प्राप्त शङ्करजी हमारे पतिहोंगे २८० हम जानती हैं कि वे तपकरने से मिलसक्ते हैं बिना तपके सर्व्वथा असाध्य हैं इससे तो साधन से होसके तो क्यों भाग्यरहितहो २८१ उन्होंने अपनेतपके भ्रष्टहोनेके भयसे व स्वार्थ जीतनेकी इच्छा से कामको भस्म करदियाहै इससे विदित होताहै कि उनको तप बहुत प्रिय है इससे हम ऐसा दुष्कर तप करेंगी व तपके वास्ते जायँगी जब कन्या ने ऐसा कहा २८२ तो शैलराज मारे स्नेहके व्याकुलहोकर गद्गद वाणीसे अपनी पुत्रीसे बोले कि हे सौम्यदर्शने! हे पुत्रि! यह तुम्हारा अतिसुकुमार शरीर तपकरनेको नहीं सहसक्ता इससे (उमा) अर्थात् (उ) हे (मा) न तपकरो जो कार्य्य होनेपर होते हैं वे अपनेआप समय पर होते हैं इससे होनेवाले कार्य्यके ऊपर हठ न करनाचाहिये क्योंकि जैसे दुःखहोनेवाला होता

है तो विना इच्छाकियेही होजाताहै ऐसेही सुखादिभी जो होनेवाले होते हैं अवश्यहोते हैं फिर हठकरके तपकरने से क्या प्रयोजनहै २८३।२८५ अब चलो घरको चलें वहां चिन्तनाकरें जब ऐसा कहने पर भी गिरिराजकुमारी गृहको न गई २८६ तब पर्व्वतने लज्जित होकर कन्याकी बड़ी प्रशंसाकी इतने में आकाशवाणीहुई जो तीनों लोकों में सुनाई दी २८७ हे हिमाचल! तुमने जो कहा कि पुत्रि तप (उमा) हे पुत्रि! तप न करो इससे इस तुम्हारी कन्याका उमा यह नाम प्रसिद्धहोकर तीनोंलोकोंमें विख्यात होगा २८८ व मूर्त्ति धारण करके यहसब दिशाओं में जाकर अपने भक्तोंके चिन्तित कार्य्यों को करेगी आकाशमण्डल में ऐसी सकाम वाणीको सुनकर २८९ पर्वतराज अपनी कन्याको तपकरनेको कहकर अपनेगृहको चलेगये पुलस्त्यजी बोले कि और पर्व्वतकी पुत्री हिमवान् के उस वनको चलीगई जो देवताओंकोभी अगम्य था २९० अपनी दोनोंसखियों को भी पर्व्वतराजकी पुत्री सङ्गलियेगई जो हिमवान् का सुन्दर शृंग नानाप्रकार के धातुओं से भूषित होरहाथा २९१ दिव्यपुष्प फलों से आकीर्ण व दिव्य गन्धर्व्वोंसे सेवित नाना मृगगणों से युक्त व भ्रमरों के शब्दों से शब्दित वृक्षों से युक्तथा दिव्य झरनों से युक्त सैकड़ों मनोरथों से प्रकाशित नानापक्षियों से आकीर्ण व चकई चकवा नाम पक्षियों से तो उपशोभितही था व जलके पुष्प कमल कुमुदिनी आदि से व स्थलके पुष्प गुलाब आदि प्रफुल्लित पुष्पों से उपशोभित होताथा २९२।२९३ चित्रविचित्र कन्दराओंसे संयुक्त व दिव्य गृहोंसेयुक्त पक्षिसमूहों के शब्दों से शोभित व कल्पवृक्षके वन से शोभितथा २९४ वहां पार्व्वतीजीने हरेपत्रों से युक्त बड़ी २ डालों वाले सब ऋतुओं में पुष्पित रहनेवाले चकई चकवा पक्षियों से शोभित वृक्षको देखा २९५ नानाप्रकार के सैकड़ों पुष्पों से युक्त नानाफलों से लदेहुये सूर्य्य के किरणों से रहित भिन्न २ व मिलेहुये पल्लवों से युक्त २९६ एक वृक्षको देखा वहां सब अपने वस्त्र व भूषण उतारकर दिव्य वल्कल धारणकिये व कुशोंसे बनीहुई करधनी बांधी २९७ प्रतिदिन त्रिकाल स्नान करतीहुई व पाड़रडांड़ वृक्ष के फल

खाकर सौवर्ष बिताये व फिर सौवर्ष एक सूखापत्ता नित्य खाकर बिताये २९८ व फिर तपकी निधान उमाजी सौवर्ष तक निराहार रहीं तब उनके तपके अग्निसे सब प्राणी उद्विग्नहोगये २९९ तब इन्द्रने सप्तर्षियों का स्मरणकिया वे सब आनन्दित होकर वहां आये ३०० व इन्द्रसे पूजित हुये फिर उनलोगों ने पुरन्दर से प्रयोजन पूछा कि हे सुरश्रेष्ठ ! तुम ने हमलोगोंका स्मरण किसलिये किया ३०१ इन्द्र बोले कि आपलोग प्रयोजन सुनें हिमाचल पर्व्वत की एककन्याहै वह उसीपर्व्वत के ऊपर घोर तप करती है ३०२ आप लोग जाकर उसको अभीष्टवर दे आवें क्योंकि देवीके तपका समाप्त होनेसे व इस कार्य्य के करने से जगत् भरका कार्य्य सिद्धहोगा ३०३ अच्छा ऐसा कहकर वे मुनिलोग वहांगये व शैलकुमारी के समीप जाकर मधुरवचन बोले कि ३०४ हे पुत्रि ! हे कमललोचने ! तुम ने किस कामना से तपकियाहै तब गौरीजी आदरपूर्व्वक उनमुनियों से बोलीं कि ३०५ आपलोग महातपस्वी महाभाग हैं व मौनव्रत को छोड़कर आपलोगों के प्रणाम के वास्ते बुद्धिको लगाया है व मनोरथको मांगती हूं ३०६ सुन्दरी तरह प्रसन्न मुखहोके व प्रथम इन हमारी सखियों के दियेहुये आसन परबैठें व कुछदेर मार्ग का श्रममिटावें भोजन करें तो फिर मेराहाल पूछें ३०७ जब पार्व्वतीजी ने ऐसाकहा तो उन्हों ने वैसाही किया आसन अर्घ्य पाद्यादि ग्रहण किया व गौरीजी ने विधिपूर्व्वक उनकी पूजाकी ३०८ फिर सूर्य्य समान प्रकाशित उनसप्तर्षियों से धीरेसे मधुरवचन गिरिनन्दिनी बोलीं व व्रतमें जो मौनव्रतको धारणकियेथीं उसे छोड़दिया व विधि-पूर्वक मुनियों को प्रणाम किया ३०९ व ऐश्वर्य्य युक्त सप्तर्षिलोग भी गौरवको प्राप्त पार्वतीजी मौनव्रतके अन्तमें पार्व्वतीजी से पूछा था ३१० पार्व्वतीजीको भी अपने गौरव का गर्व्वथा इससे मनमें कुछ हँसतीहुई उन सब मुनियों की ओर भलीभाँति देखकर व मौन-ताको छोड़कर उनसे बोलीं कि ३११ आपलोग तो सब प्राणियों के मनकी हाल जानतेही हैं प्राणीलोग अपने शरीरादिकोंका अनादर करते हैं ३१२ कोई २ निपुण प्राणी विविधप्रकार के उद्यम करने

की चेष्टा करते हैं व निरालस होकर उपायों से विविधप्रकारके दुर्लभ भावोंको पातेहैं ३१३ व बहुत लोग नानाप्रकारके आरम्भों का आरम्भ करते हैं व उन आरम्भों का फल अन्य जन्ममें चाहते हैं ३१४ पर हमारा उद्यम आकाश में उत्पन्न पुष्प के माला से भूषित विन्ध्य शृंगके स्पर्श के मनोरथ से बार बार हाथ फैलाताहै ३१५ वह यहहै कि हम महादेवजी को अपना पति किया चाहती हैं और वे स्वभावही से दुराराध्यहैं फिर इससमय तपकरते हैं ३१६ जिस क्रिया को सुर असुर कोई नहीं करते उसीको वे करते रहते हैं इससमय उन्होंने रागको छोड़कर कन्दर्पही को भस्म करडालाहै आप निर्द्वन्द्व बैठे हैं ३१७ तो ऐसे शिवजीकी आराधना हमसी अबला कैसे करसके यह सुनकर उन मुनियों ने अपने मनकी स्थिरता करके ३१८ व पार्व्वतीजी के दृढ़ ज्ञानकी परीक्षा करनेकेलिये उनसे यह वचन क्रमपूर्व्वक बढ़ाकर कहा कि हे पुत्रि ! इसलोक में दोप्रकार के सुख होते हैं एक तो इस शरीरका संयोग होना दूसरा फिर सब पदार्त्थों से चित्तको निवृत्त करना सो महादेव अपने स्वभावही से नग्न रहते हैं व भयङ्कररूप जानो हैंहीं क्योंकि सब देह में भस्म लगाये रहते हैं हड्डियों को धारण किये हैं ३१९ । ३२० व मनुष्यों की खोपड़ियों की माला पहिनते हैं एक मनुष्यकी खोपड़ीही को पात्र बनाकर नङ्ग धड़ङ्ग भीख मांगते फिरते हैं व नेत्र पीले पीले वानरों केसे उनके हैं अन्य कोई कार्य्य कहीं स्थिरहो करतेही नहीं प्रमत्त ऐसे हैं कि उन्मत्तोंकासा आकार रखते हैं बीभत्स रसका संग्रह उनके यहां सदा रहता है ३२१ ऐसे पति से तुमने कौनसा अनर्त्थ अर्त्थ सिद्ध करना चाहा है जो अपने शरीर का निरन्तर सुख चाहती होओ ३२२ तो महादेव के सङ्ग विवाह न करो क्योंकि वे निन्द्य भूतगणों से सेवित हैं रुधिर टपकते हुये मनुष्यों की हड्डियोंसहित चर्ब्बी मनुष्य कपालोंका भूषण करते तो तुमको क्या सुख देंगे ३२३ व फुफुकार छोड़तेहुये सर्प्पेन्द्रों को भूषण बनाते श्मशान में निवास करते हैं व रौद्ररूपही के सब उनके अनुचर हैं ३२४ सब सुरेन्द्रोंके मुकुट समूहों से निघृष्ट चरण

शत्रुओं के नाशक जगत् के पालन पोषण करनेवाले लक्ष्मी के नाथ अनन्तमूर्त्ति श्रीहरि भगवान् हैं ३२५ व ऐसेही सब यज्ञभोक्ता देवताओं के स्वामी पाकदैत्य के नाशक इन्द्र हैं व देवताओं को भोजन पहुँचानेवाले व सबकाम पूरण करनेवाले अग्नि हैं ३२६ जगत्के धाता व सब प्राणियों के प्राण वायुदेव हैं ऐसेही सब धनों के महाप्रभु कुबेरजी हैं ३२७ इनमें से एक किसी को तुम क्यों नहीं ग्रहण करतीहो अथवा तुम इस देहको छोड़कर अन्य देहमें सुख चाहतीहो तो हो ३२८ हे पुत्रि! लोककी सम्पदाओं का यह फल है कि इस देहमें दूसरे देहमें तुम्हारी कल्याण प्राप्तिके लिये ३२९ सब सुख तो तुम्हारे पिताके यहाँहैं जो सब देवताओं से मिलसक्ते हैं परन्तु तुमको वरकी प्राप्तिके लिये क्लेशही करना पड़ेगा क्योंकि बिना पतिके पिताके घरके सुख तुच्छ हैं ३३० बहुधा जितने अर्थोंकी प्रार्थना की जाती है उनका मिलना अत्यन्त दुर्लभ होताहै हे पुत्रि! उन अर्थों में जिनका मिलना उसके स्थानके अनुकूल होताहै वे तो मिलजाते व जिनका मिलना उस स्थान में रहनेवालों को कभी मिलाही नहीं वह नहीं मिलता ३३१ जब मुनियों ने ऐसा कहा तो पार्व्वतीजी बहुत कुपित हुईं व क्रोधकेमारे नेत्रलाल करके व दांतों को चमकातीहुई बोलीं ३३२ कि असत्पदार्थ के ग्रहणकी कौन नीति है व दुःख मिलने में कौन प्रयत्न जब मिलना होता है मिलताही है व जो विपरीतअर्थ के बोद्धा होते हैं उनको सन्मार्गपर कौन चलासक्ता है ३३३ ऐसेही तुम हमको दुष्टबुद्धिवाली ही समझो क्योंकि तुम लोगों के मनसे हम अनुचितस्थान का संग्रह किया चाहती हैं परन्तु हम जानती हैं कि तुमलोग केवल अहङ्कारमानी हो हमारे विषयका विचार कुछ नहीं जानते ३३४ यद्यपि तुमलोग प्रजापतियों के समान हो व सर्व्वदर्शी हो परन्तु निरन्तर विद्यमान जगत् के प्रभु उन देवको नहीं जानते ३३५ जो कि अजन्मा ईशान अव्यक्त अप्रमेयमहिमा हैं व उनके कर्म्म देखने में अयोग्यही हों कोई उत्तम न हों ३३६ परन्तु उनको हरि ब्रह्मादि सुरेश्वर नहीं जानते जैसा कि प्रभाव उनका तीनों भुवनोंमें

प्रसिद्ध है ३३७ व सब प्राणियों में भी उनका प्रभाव प्रकट है पर तुमलोग वहभी नहीं जानते यह गगन किसकी मूर्त्ति है व अग्नि किसकी मूर्त्ति है पवन किसकी मूर्त्ति है ३३८ पृथ्वी किसकी मूर्त्ति है वरुण किसकी मूर्त्ति है व किसके चन्द्रमा सूर्य्य नेत्र हैं व लोकों में किसके लिङ्गकी पूजा भक्तिसे सुर असुर सब करते हैं ३३९ जो तुमलोग कहते हो कि विष्णु इन्द्र महर्षि सब विद्यमान हैं तुम हम जानती हैं कि उन लोगों का भी प्रभाव कुछ नहीं जानते ३४० क्योंकि नारायणादिक सब देव अदिति में कश्यप से उत्पन्न हुये हैं व कश्यप मरीचिके पुत्रहैं व अदिति दक्षकी पुत्री है ३४१ व मरीचि दक्ष दोनों ब्रह्माके पुत्र हैं यह बात प्रसिद्धही है व ब्रह्मा हिरण्मय अण्डसे उत्पन्न हैं जो अण्ड दिव्य सिद्धि विभूति से भूषित था ३४२ वह किसके ध्यान से उत्पन्न हुआथा यह भी कुछ विदित है वह हिरण्मय अण्ड प्राकृतांशक प्रकृति से उत्पन्न हुआथा व नारायण ने अपनी इच्छासे ३४३ प्रेरित ईश्वर रूप पैदाहुआ सो इच्छाही प्रेरणा से यिवशात्मा जनोंकी कारण हुई ३४४ जैसे दुष्ट जनकी उन्मादादि बुद्धि होती है कि वह इष्ट पदार्थ को भी अनिष्ट समुझता है ३४५ व लोक के दीखेहुये व्यवहारों को सदा हँसता है इससे तुमलोग विष्णु को धर्म अधर्म्म दोनोंकी फल प्राप्तिमें जानो ३४६ इससे हे मुनिलोगो ! हमारे कहनेसे जानों कि हम गिरीशरूपी भूमिके निकट प्राप्त हैं जैसे किसान अच्छीतरह से पृथ्वीको जोतकर बीज डालताहै तो उसको वह फल मिलताही है ३४७ जब मुनियोंने पार्वतीजी के ऐसे रम्य हितकारी वचनसुने तबतो हँसकर सुन्दरवचन बोले ३४८ हम जानते हैं कि सज्जनोंका सत्य २ कार्य्य लोकके विधानहीके लिये होता है इसीसे तुमलोग इस हिमालय के गहनवनमें आयेहो ३४९ सो तुम्हीं नहीं जो कोई पराये कार्य्य में प्रीति रखते हैं वे सब इसी प्रकार सबकहीं कठिन स्थानों में भी जायाकरते हैं उनलोगों का चित्त सदा दूसरेका कार्य्यही करनेसे प्रसन्न रहताहै महात्माओं का लक्षणही ऐसा होता है ३५० कि सबके उपकारकेलिये वे लोकयात्रा करतेरहते हैं जैसे कर्म्म महात्मालोग करतेहैं उनको देखकर अन्य

लोग भी करते हैं इससे तुमलोग जाकर हिमाचलसे इससमाचार को जनाओ ३५१ यह सुनकर वे मुनिलोग अतिवेग से हिमाचल के स्थानपर पहुँचे वहां हिमाचल से सब आदरपूर्वक पूजित-हुये ३५२ व फिर वे मुनिलोग जिसलिये वहां गये थे उस सङ्कल्प को प्रकट करतेहुये बोले कि साक्षात् महादेव देव तुम्हारी कन्या को चाहते हैं ३५३ इससे अपने को पवित्र करो जैसे लोग अग्नि में आहुतिदेकर अपने को पावन करते हैं इसमें देवताओंका भी बड़ा भारी कार्य्य है ३५४ यह उद्यम तुमको जगत्के उद्धार करनेकेलिये करनाचाहिये जब मुनियोंने ऐसाकहा तो हिमाचल ऐसे हर्षितहुये कि मारे प्रेमके मुनियों को ३५५ उत्तरदेने में असमर्थहुये इस से मानों प्रार्थना करने लगे तब हिमाचलकी स्त्री मेना मुनियों के प्रणामकरके कन्या के स्नेहसे विह्वल होकर उन मुनियों से अर्थयुक्त वचन बोली ३५६ कि जिसलिये महाफलदायक कन्याके जन्मकी इच्छा लोग करतेहैं वह सब इससमय क्रमसे प्राप्तहुआ ३५७।३५८ कुल जन्म अवस्था रूप ऐश्वर्य्यादिकों से जो वरयुक्त भी होताहै पर जबतक वह अपने आप नहीं मांगता तबतक उसे कन्या नहीं दीजाती सो तो हुआ महादेव अपने आप मांगते हैं परन्तु महादेव नग्नरहते जटा धारणकिये रहते शूल धारण करते व कामको भी मनोरथ के देनेवाले उन्होंने भस्म करदिया है ३५९ पर हमारी कन्याको चाहते हैं भला हमारी कन्याका संयोग उनके साथ कैसे चलेगा मुनिलोग बोले कि शंकरजी के ऐश्वर्य्य को देवगण जानते हैं ३६० इसीसे उनके चरण युगलकी आराधना करके सब शोकों से निवृत्त होजाते हैं जिसके योग्य व अनुरूप उनका यह रूपहै वह तुम्हारी कन्याही बहुत दिनोंसे प्रार्थना करती है ३६१ व घोरतप कररही है व उन्हीं के रूपका स्मरण करती है एकाग्रचित्त होकर जिस व्रतको वह समाप्त करचुकी है ३६२ वह तो वहां एकाग्रहोकर हमलोगोंसे भी नहीं होसक्ता ऐसा कहकर हिमवान् को सङ्ग लेकर सब मुनिलोग वहांगये ३६३ जहां कि सूर्य्यकी ज्वालाको भी जीते हुये तेजोमयी उमा तप कररही थी उससे मुनिलोग बोले कि हे पुत्रि!

क्या चाहतीहै जो चाहे वरमांगे ३६४ उमाजीने कहा कि हम पिनाकी शर्व महादेव को छोड़कर और कुछभी नहीं चाहती हैं जो कि प्राणियोंकासा रूप धारणकिये परमप्रकाशित स्थित हैं ३६५ व धीरता ऐश्वर्य्य कार्य्यादि प्रमाणों से महाअतुल हैं जिनसे बाहर कुछभी नहीं है व जिनसे सब उत्पन्न होताहै ३६६ व जो ईश्वर अनादि हैं बस हमतो उन्हींके शरणमें हैं परन्तु वे हमारे माता पिता के विपरीत सुनाईदेते हैं ३६७ देवीका ऐसावचन सुनकर वे मुनिवरलोग आनन्द के आंसुओं से अपने नेत्रों को आपूरित करके व परमप्रीति से युक्तहोकर पार्व्वतीजी से मधुरवचन बोले व पार्वती जीको मिले हे पुत्रि! यह अति अद्भुत बात है तुमतो मानो अमल ज्ञानकी मूर्त्तिहीहो ३६८। ३६९ क्योंकि हमलोगों ने कहाभी जो चाहोमांगो पर तुमने शंकरको छोड़कर और कुछ नहींचाहा हम लोग उन महादेवके अद्भुत ऐश्वर्य्यको नहीं जानतेथे इससे उसकी निश्चयके व दृढ़ता करनेकेलिये यहां आये हैं सो अब जाना व यह भी जाना कि तुम्हारा निश्चय उन्हींके ऊपर है सो हे पुत्रि! यह तुम्हारा काम बहुतशीघ्र होगा ३७०। ३७१ क्योंकि सूर्य्य की प्रभा कहीं रत्नोंके समीप प्रकाशित होनेके लिये जाती है क्योंकि उसमें तो रत्नोंसे अधिक दीप्ति होती है अपने को छोड़कर और किसीके वर्णन करनेसे कौन प्रयोजन होता है ऐसे तुम शिव विना ३७२ हे पार्व्वति! अब हमलोग महादेवजी के समीप को जानेवाले तो न थे परन्तु तुम्हारा निश्चय प्रेम बताने के लिये जायँगे हमलोगोंका भी एक अर्थ वहां जाने में है ३७३ उसको तुम अपनी बुद्धिही से विचार लेओ कहने की आवश्यकता नहीं है वह हमारा कार्य्य निस्संशय शंकरजी करेंगे ३७४ ऐसा कहकर व पर्व्वतकन्या से पूजित होकर सब मुनिलोग महादेव जी को देखने के लिये हिमवान्के शृङ्गपर गये ३७५ जिस स्थानके समीप गङ्गाजी बहरहीथीं व पीली जटाओंको धारणकिये शिवजी बैठेथे व गङ्गामें मन्दार के पुष्प बहे चलेआतेथे उनके ऊपर बैठेहुये भ्रमर शब्द करते थे ३७६ उसी पर्व्वत के अग्रभाग पर प्रथम महादेवजी का

आश्रम दिखाई दिया जिसपरके सब जन्तु प्रशान्तचित्त थे व सब ओर दिव्यवन लगाथा ३७७ व सब ओर अचल और शब्दरहित जल भराथा वहां मुनियोंने देखा तो वीरक नाम गण हाथमें बेत लिये द्वारपर खड़ेथे ३७८ उनसे पूंछकर मुनिलोग नम्रहोकर वहां खड़ेहोरहे फिर मधुरवाणीसे अपने कार्य्यकी गुरुता उनलोगों ने बताई ३७९ कि हमलोग इस स्थानपर महादेवजी के देखने को आये हैं सो भी कुछ हमलोगोंका कार्य्य नहीं है किन्तु देवताओंकी प्रेरणासे आये हैं ३८० अब वहां पहुँचानेके लिये तुम्हीं हमलोगों की गतिहो जिसमें कालका अतिक्रमण न हो वैसाकरो व प्रतीहारों का कार्य्यभी यही है कि जो कोई आवे उसे स्वामीके समीप पहुँचाते रहें ३८१ जब मुनियों ने ऐसा कहा तो द्वारपाल बड़े गौरवसे उनसे बोला कि हे मुनिलोगो ! महादेवजी स्नान करने व सन्ध्योपासन करने के लिये इसीवनमें मन्दाकिनी के तटपर गये हैं ३८२ अथवा क्षणमात्र यहीं खड़ेरहो आवेंगे तब दर्शन करना यह सुनकर अपने कार्य्यको परखतेहुये मुनिलोग वहीं खड़ेरहे ३८३ जैसे वर्षाकाल में चातकलोग सजल मेघकी प्रतीक्षा करते हैं जब एक क्षणमात्र में सब क्रिया करके महादेवजी आये ३८४ व वीरकके बिछाये हुये मृगचर्म्मपर विराजमानहुये तब नम्रहोकर दोनों पैर झुंकाकर पृथ्वीपर बैठकर ३८५ वीरक प्रणाम करके शिवजीसे बोला कि सात मुनि लोग दीप्त तेजस्वी आपको देखने आयेहैं ३८६ इससे हे विभो ! उनलोगोंको यहां आनेकी आज्ञादेनेके आप योग्यहैं तिस पीछे ध्यान कीजिये जब उस वीरक महात्माने शिवजीसे ऐसा कहा ३८७ तो उन्होंने मुनियोंके आनेके लिये भौंहँघुमाकर सङ्केत किया उस सङ्केत को जानकर वीरकने सातों मुनियोंको शिर हिलाकर बुलाया ३८८ वे लोग दूरखड़े थे इससे ऊँचेस्वर से उनको शिवजीके दर्शनके लिये पुकारा तब दृढ़तासे जटाबाँधेहुये व मृगचर्म्म ओढ़े मुनिलोग ३८९ सब ऐश्वर्य्योंसे युक्त महादेवजीकी वेदीपर आये व हाथजोड़ शिर झुंकाकर ३९० पिनाकीजीके चरणोंके प्रणामकिया व महादेवजीने उनको कृपादृष्टि से देखदिया ३९१ तब अच्छेप्रकार शिवजीके द-

र्शनकरके व आनन्दित होकर सब मुनिलोग शूलपाणिजीकी स्तुति करनेलगे ३९२ अहो हमलोग कृतार्त्थहुये जो कि सुरासुरेन्द्रों से वन्दित पादपल्लव आपको इससमय देखते हैं इतना कहकर कहा कि अब आप पार्व्वतीके सङ्ग अपना विवाहकरें ३९३ यह सुनकर सर्व्वज्ञ शिवजी मुनिसत्तमोंसे हँसकर बोले कि अच्छा इसविषयमें जो कुछ और भी आपलोगोंको करनाहो वहभीकरें ३९४ यह सुनकर मुनिलोग शीघ्रतासे वहांगये जहां कि पार्व्वतीजी तपकरतीथीं व प्रभाव के जाननेवाले वे मुनिलोग उस पर्व्वतके गह्वरमें तप करतीहुई गिरिजासे बोले कि रम्य मनोहारि तपकरनेके कारण तुमने शङ्करजी को पाया अब शीघ्रही वे तुम्हारा पाणिग्रहण करेंगे हमलोग तुम्हारे पितासे पूजितहोकर यहां आये हैं ३९५ । ३९६ व ये तुम्हारे पिता खड़े हैं इनके सङ्ग गृहको जाओ व हमलोग अपने स्थानको जावें जब मुनियोंसे ऐसा सुना तो तपकाफल सत्य होताहै यह चिन्तनाकर ३९७ वेगसे पार्व्वती अपने पिताके दिव्य स्थानको चलीगईं व पिताके गृहमें रहकर उन पार्व्वतीजीने महादेवजीके दर्शनकी उत्कण्ठामें युक्तहोकर एकरात्रिको सहस्रों वर्षोंके समान माना ३९८ उस रात्रिके पीछे जब ब्राह्ममुहूर्त्त आया तो उनके सुहृद्ने नानाप्रकारके मङ्गलकी क्रिया यथायोग्यकी ३९९ इनकी सब मङ्गलक्रिया बहुत मङ्गलयुक्त मन्दिरमें दिव्यमङ्गलोंके संयोगसे कीगई ४०० उस मङ्गलकेसमय वसन्तादिऋतु मूर्त्तिधारण करके हिमाचलकी सेवा करनेलगे पवनलोग ऐसे चले कि वहांके सब कूड़े करकटको उड़ालेगये ४०१ व धवरहर अँटारियों पर श्रीदेवीने आप आकर उनका प्रसाधन किया व कान्तिने सब भावोंको ठीककिया ऋद्धिने सब भूषण अपने हाथों से सवाँरे ४०२ व चिन्तामणि आदि सब मणि रत्न हिमालय पर आकर उपस्थित हुये व सब लतायें और कल्पद्रुमादि वहां आकर मनोरथोंको पूर्ण करनेलगे ४०३ दिव्य औषधियों से युक्त मूर्त्ति धारण किये सब औषधियां आकर उपस्थित हुईं सब रस व सब धातु जानों हिमवान्के किङ्करही थे ४०४ व अन्य आश्रमवासी किङ्करलोग व्यग्रता से शीघ्र कार्य्य करने लगे

सब नदियां व सब समुद्र व जितने और स्थावर जङ्गम पदार्थ थे ४०५ सबों ने आकर हिमाचल की महिमा को बढ़ाया व ऐसेही गन्धमादन पर्व्वत पर शङ्करजी के स्थान पर सब मुनि नाग यक्ष गन्धर्व्व किन्नर व देवता लोग आकर इकट्ठे हुये व अपनी २ मूर्त्ति धारण किये हुये सब मण्डपका कार्य्य करनेलगे ४०६ । ४०७ व ब्रह्माजी ने आकर महादेवजी के विकट ललाट पर जटाजूट में द्वितीया के चन्द्र खण्ड के समान नूतन चन्द्रमा बांधदिया व महादेव जीके नेत्रोंमें सूर्य्य देव आकर विराजमान हुये ४०८ व शिवजी के फिर मनुष्योंकी खोपड़ियोंकी माला गले में चामुण्डा ने धारण की कालीने आकर महादेवजी से कहा कि हे शङ्कर ! ऐसा पुत्र उत्पन्न कीजिये ४०९ जो कि दैत्येन्द्रोंके कुलको मारकर हमको उनके रक्तों से तृप्तकरे विष्णु भगवान् आकर शिवजीको एक चूड़ामणि व कण्ठाभरण देकर ४१० सर्प्पोंसे भूषित उनका दक्षिण हाथ पकड़कर उनके आगे खड़े हुये इन्द्रने आकर चर्ब्बी लगेहुये रक्त चूतेहुये उनके गजचर्म्म को झट अपने हाथसे उठालिया ४११ व चलने के लिये कुछ मुखसे संकेत किया व पवन लोग बड़ी प्रचण्डता से चलनेलगे व उन्हों ने आकर ४१२ हरजी के वाहन नन्दीश्वर वृषभका वेग मनके समान करदिया सूर्य्य व अग्नि व चन्द्रमा शिवजीके नेत्रों में शोभित हुए ४१३ इन दोनों ने अपनी २ द्युति लोकनाथ महादेव में स्थापित करदी व महादेवजी ने अपने आप चांदी के समान चमकतेहुये कपालमें धरकर चिताकी भस्मको अपने सबअङ्गों में लगालिया ४१४ व मनुष्योंके हाड़ोंकी माला हाथसे लेकर गले में पहिनली व प्रेतों के अधिप यमराज आकर भयसहित दूर खड़े हुये ४१५ कुबेरजी नानाप्रकार के भूषण लाये परन्तु उनको छोड़कर बड़ेविषधर सर्प्पोंकोही पकड़ २ कर शिवजीने अपने सब अङ्गों के भूषण बनाये ४१६ तक्षकजीका शिवजीने अपने हाथसे कुण्डल बनाया बस इसप्रकार सर्प्पों से भूषणबनाकर अपने अङ्गोंका प्रसाधन यथोचित करके शंकरजी उपस्थित हुये ४१७ सबनाग यद्यपि बड़ेचञ्चल रहते हैं पर उनके अंगों को पाकर सब अव्यग्र

मूर्त्ति होगये चञ्चलता सबों ने छोड़दी व पृथ्वी देवीने झटपट दिव्य मूर्त्ति धारण करके सब दिव्य औषधियोंको लाकर व सब दिव्य अन्नरसों कोभी लाकर शिवजी के समीप पहुँचाया व वरुणजी सुवर्णके सब रत्नोंके दिव्य भूषण लेकर अपने आप वहां आकर उपस्थितहुये ४१८ । ४१९ व नानाप्रकार के रत्नमयी फूलों को व आभूषणोंको लेकर सबके जाननेवाले वरुणजी आये ४२० व अग्निजी दिव्य सोनेके आभूषण पवित्र लेकरआये ४२१ पवन सुगन्धित उस समय चलने लगा जिसका स्पर्श सबको सुखदायीहुआ इन्द्रने आकर चन्द्रमा के किरणोंके समान चमकतेहुये छत्र को अपने हाथ से उठाया ४२२ जो कि आप बहुतसे भूषण दोनों हाथोंमें धारण किये थे गन्धर्व्वलोग गानेलगे अप्सरायें नाचनेलगीं ४२३ गन्धर्व्व व किन्नर मधुर बाजे बजाते हुये गान करनेलगे मुहूर्त्त ऋतुभी मूर्ति धारण किये हुये वहां नाचने गानेलगे ४२४ इसी प्रकार हिमाचलके यहां भी चपलगण सब गन्धर्व्व किन्नर ऋतुआदि नाचने गाने बजानेलगे इससे उनके स्थानमें बड़ामङ्गल हुआ व ब्रह्माजीने वहां भी जाकर सब उत्सव अपने हाथोंसे किया कराया ४२५ व हिमालयने अपनी स्त्रीके संग सब कन्या के विवाहके उत्सव किये सब देवसमाजसहित महादेवजी आये वेदविधानसे अर्घ्य देकर विवाह हुआ अपनी स्त्री उमाको पाकर श्रीशंकर परमानन्दित हुये ४२६ स्त्री सहित महादेवजी ने वहरात्रि वहां वासकिया गन्धर्व्व लोग गानेलगे व अप्सरायें नाचनेलगीं ४२७ देवताओं व दैत्योंने आकर बड़ी स्तुतिकी इससे महादेवजी बड़े प्रसन्नहुये रात्रिभर वहां रहे प्रातःकाल हिमाचलसे बिदाहुये व अपनी स्त्री उमाकेसाथ ४२८ नन्दीश्वर पर आरूढ़हो वायुवेगसे जाकर मन्दराचलपर पहुँचे उमा सहित महादेवजीके चलेजाने पर हिमाचल परमानन्दितहुये क्योंकि अपनी कन्याको विवाहित आनन्दित देखकर कौन पिता संतुष्ट नहीं होता ४२९ बन्धु वर्गोंके साथ किस कन्याके पिताका मन नहीं विवाह होजाने पर बन्धन से छूटता है व महादेवजी पार्वतीजीके संग नानाप्रकारके उद्यानोंमें व उपवनोंके एकान्त स्थलोंमें ४३० सुरक्त हृदय

होकर विहारकरनेलगे इसप्रकार विहार करते २ बहुतदिन बीतगये फिर महादेवजी अपने स्थानपर आये वहां एकदिन पार्व्वतीजी ने पुत्रके नामसे ४३१ अपनी सखियोंके साथ वस्त्रकी गुड़ियां बनाकर उनका खेलकिया एकदिन पार्व्वतीजीने अपने अङ्गमें सुगन्धिततैल लगाया व ४३२ चावलके पीठेके उबटन से अपने अङ्गों को मर्द्दित किया उस उबटन करने से जो लीझी निकली उससे गणेशकी मूर्त्ति बनाई ४३३ बहुत कालतक उस पुरुषाकार गजमुख से खेल करतीरहीं फिर उसे जलमें फेंकदिया वह जैसे गङ्गाजी के जलमें गिरा बड़ाभारी शरीरवाला होगया ४३४ यहांतक कि उसके विशाल शरीरसे सब जगत् पूर्णहोगया तब पार्व्वतीजीने उसदेवमूर्त्तिको कहा कि हे पुत्र! गङ्गादेवीने कहा यह हमारा पुत्रहै ४३५ व तब गङ्गासे उत्पन्न होने के कारण सब देवताओं ने आकर गाङ्गेय कहकर उन देवकी पूजाकी हाथीकासा मुख होनेके कारण उन देवका गजाननभी नामहुआ ब्रह्माजीने आकर उन गजाननजीको विनायकाधिपत्यदिया। तबसे गजाननजी सब गणोंके नायक होगये ४३६ फिर एकदिन क्रीडाकरती हुई पार्व्वतीजी ने एक मनोहर अंकुर व पल्लवोंसे युक्त सुन्दर अशोक का वृक्ष बनाया ४३७ उसको संस्कार मङ्गलसे अच्छेप्रकार बढ़ाया सब संस्कार देवताओंके पुरोहित बृहस्पति आदि ब्राह्मणों ने उसवृक्षके कराये ४३८ तब सब देवताओं व मुनियों ने देवीजी से यह कहा कि जो मार्ग्ग तुमने अभी दिखाया है वृक्ष बनाकर ब्राह्मणों से संस्कार मङ्गल कराया है उसकी कुछ मर्य्यादा करदीजिये ४३९ व बताइये कि वृक्षों को पुत्र कल्पना करने से फल क्याहोगा क्योंकि तुमने इस वृक्षको बनाकर पुत्रवत्संस्कार कराया है जब देवताओं ने ऐसा कहा तो हर्ष से युक्तहोकर पार्व्वती जी शुभवाणी बोलीं ४४० कि जो कोई इसीप्रकार वृक्ष लगावेगा व निर्ज्जल ग्राममें कूपखुदावेगा उस कूपके बूँद २ जलके स्थानपर एक एक वर्षतक स्वर्ग्गलोकमें सुखसे बसेगा इसमें कुछभी अन्तर नहीं है क्योंकि ४४१ ॥

दो० दश कूपन सम वापिका दशवापी सम ताल ॥

दश तड़ाग सम सुतादश कन्यागा द्रुमबाल ४४२

यह मनुकी मर्य्यादा लोक में नियत होगी जोकि दशकूपों के समान वापी होती है इत्यादि कहीगई है जब देवीजीने ऐसा कहा तो बृहस्पति आदि ब्राह्मणलोग ४४३ लोकमाता भवानी के प्रणाम करके अपने अपने स्थानों को चलेगये उनसबों के चले जाने पर शङ्करजी पार्व्वतीजीका ४४४ हाथ पकड़कर अपने मुख्य स्थान को चलेगये जोकि चित्तकी प्रसन्नताको सदा उत्पन्न करता व जिसमें प्रासाद अटारी उत्तम छहरदीवारी बनी थी ४४५ मोतियों की झालरें लटकती थीं वेदी गज मुक्ताओंसे व मल्लिकासे जटित थी सुवर्णके क्रीडागृह बने थे ४४६ व बिछेहुये पुष्पोंपर मत्तभृंग शब्द करते थे व गृहके भीतरकी दीवारोंमें किन्नरोंका गाना प्रविष्ट होगयाथा ४४७ व सुगन्धित धूपके धूमसे धूपित होनेसे मनको प्रसन्न करानेवाली सुगन्ध आतीथी क्रीडामयूरोंकी नारियों से सब दीवारें चित्रितथीं ४४८ हंसोंके समूह स्फटिक मणियोंके खम्भोंमें अपना स्थान कियेथे व उन खम्भों में बहुतसे किन्नरोंकी मूर्त्तियां सजीव किन्नरोंकीसी दिखाई देतीथीं ४४९ व शुकियोंके सङ्ग विहारकरते हुये शुक पद्मरागसे बने थे व मयूरियोंके सङ्ग विहरते हुये मयूरों की मूर्तियां भीतों में बनीहुई दिखाई देतीथीं व भीतों में सब ओर से इन सबोंकी छायासी मोतियों के प्रतिबिम्बसे दिखाई देती थी ४५० ऐसे अपने स्थानमें महादेवजी अपनी प्राणप्रियाके साथ पांसे खेलनेलगे स्वच्छ इन्द्र नीलमणि से बनेहुये पृथ्वी के भागमें वे दोनों क्रीडा करतेहुए टिके ४५१ व विनोद के रसमें डूबेहुये दोनों प्रिया प्रिय परस्पर शरीरकी सहायताको पाते थे इसप्रकार देवी व शङ्कर क्रीडाकररहे थे कि इतने में ४५२ आकाशसे उत्पन्न होकर महाशब्द सुनाईदिया उसेसुनकर बड़े कौतुकसे देवीजीने शङ्करजीसे पूंछा कि ४५३ यह अपूर्वशब्द कहांसे सुनाई दिया महादेवजी बोले कि हे पवित्र हास्यकरनेवाली! तुमने ऐसा पहले कभी नहीं देखा ४५४ ये हमारेबड़े प्रियगणलोग सदा इसपर्व्वत पर क्रीडा कियाकरते हैं तपकरते रहते हैं व सदा ब्रह्मचर्य्यमें रहते

हैं इनका क्षेत्रसेचन नामहै ४५५ ये वे लोगहैं जिन्हों ने मनुष्यदेह से तपकरके पूर्व्व समयमें हमको सन्तोषित किया है हे शुभानने ! वेही लोग हमारे समीप प्राप्तहुये हैं हमको अत्यन्त प्रिय हैं ४५६ ये लोग जैसा चाहते हैं वैसा रूप धारण करलेते हैं महाउत्साही व महागुणरूपों से युक्त हैं इन महा बलशालियों के कर्म्मों से हम विस्मित हुआ करते हैं ४५७ देवगणों सहित इस जगत् की सृष्टि संहार पालन करने में समर्थ ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि देवता व गन्धर्व्व किन्नर महोरगों से ४५८ हम विवर्ज्जित भी हैं परन्तु इनसे रहित कभी नहीं होते नित्य ये हमारेही संगरहते हैं सो हे चारुसर्व्वांगि ! ये हमको अत्यन्त प्रिय हैं इसीसे इस पर्व्वतपर क्रीडा किया करते हैं ४५९ जब महादेवजीने ऐसाकहा तो देवीजी उनको वहीं छोड़कर आप झरोखे में चकित मुखकरके उनगणों को देखनेलगीं ४६० देखा तो अतिदुर्व्वल बड़ेलम्बे बहुत छोटे बड़ेमोटे बड़े पेटवाले कोई २ व्याघ्रमुख कोई भेड़ व छागों के रूपके थे ४६१ अनेकरूप धारण किये किसीके मुखसे ज्वाला निकलतीथी कोई कालेरंगके कोई पीले रंगके थे कोई सौम्यरूप कोई भीमरूप कोई हास्ययुक्त मुखके कोई काली कोई पीली जटा धारणकिये ४६२ कोई नानाप्रकार के पक्षियों के मुखवाले कोई नाना प्रकारके देवताओं के से मुखकेथे कोई रेशमी वस्त्रपहिने ओढ़े कोई चर्म्मओढ़े बहुत से नंगे बहुत से महाविरूपी ४६३ कोई गोकर्ण कोई गजकर्ण कोई बहुत मुख नेत्रपेट वाले कोई बहुतपाद भुजावाले कोई दिव्य नानाप्रकारके अस्त्रलियेथे ४६४ दिव्यहाथवाले कोई अनेक प्रकारके पुष्पोंके मुकुटबनाये कोई नानाप्रकार के सर्प्पोंको भूषण कियेहुये थे अन्य नानाप्रकार के आ-युध व कवच धारणकिये व नानाप्रकार के केवल भूषण पहिने ४६५ विचित्र वाहनोंपर चढ़ेहुये दिव्यरूप धारण कियेहुये आकाश में घूम रहेथे वीणाबजाने में तत्पर व नानाप्रकार के गान करतेहुये अनेक स्थानों में नाचतेथे ४६६ ऐसे गणेशोंको देखकर देवीजी शङ्करजी से बोलीं कि ये गणेश कितने हैं इनके नाम क्या २ हैं व किस २ से बने हैं ४६७ इन सबों के कर्म्म अलग २ करके एक २ हमसे कहो

शंकरजी बोले कि इनकी संख्या किरोड़ २ है व इनके पौरुष नाना प्रकार से विख्यात हैं ४६८ इन महाबलवानों से सब जगत् आपूरितहै व ये लोग सिद्धक्षेत्रों व राहों जीर्ण बागों व मकानों में ४६९ कभी २ रहते हैं व दानवों के शरीरों में व बालकों में व उन्मत्त पुरुषों में बसतेहैं व ये सब नानाप्रकारके आहार विहारकरते हैं ४७० कोई कोई तो ऊष्मा पानकरते कोई २ फेनी कोई २ धूम कोई मधु कोई चर्व्बी पीते हैं कोई रुधिर पानकरतेहैं कोई सर्व्वभक्षी हैं कोई कुछ भी भोजन नहीं करते ४७१ वेद विद्याको पढ़ते हैं कोई २ तपस्वी हैं कोई २ आहार करते हैं व नानाप्रकारके बाजे इनको प्रियहैं परन्तु इन लोगों के गुण अनन्त हैं इसलिये इनके गणोंका वर्णन हमभी अलग २ नहीं करसक्ते ४७२ यह सुनकर देवीजी बोलीं कि हाथी के चर्म्मका दुपट्टा गलेमें डाले शुद्ध अंगवाला मूँजकी मेखला पहिने व अङ्गों में मनशिला लगाये अतिचञ्चल रागयुक्तमुखवाला ४७३ भ्रमरलपटेहुये कमलके पुष्पों की मालापहिने मधुर आकृति पाषाण के खण्डोंको मञ्जीर बनायेहुये बजाता है ४७४ हे देव ! इस गणेश्वरका क्या नामहै जो किन्नरों के पीछे घूमताहै व जो गणों के गीतों में बार बार कानलगाये बार बार सुनता है ४७५ महादेवजी बोले कि हे देवि ! इसका वीरक नामहै व यह सदाहमारे हृदयको प्रियहै व नानाप्रकारके आश्चर्य्यों व गुणोंका आधार है व सब गणेश्वर लोग इसकी पूजाकरते हैं ४७६ पार्व्वतीजी बोलीं कि हे त्रिपुरान्तक ! ऐसे पुत्रकी उत्कण्ठा हमको है नहीं जानतीं कि कब हम ऐसे आनन्ददायक पुत्रको देखेंगी ४७७ श्रीशिवजी बोले कि यह भी तो तुम्हारा पुत्र है व नेत्रोंको आनन्द देताहै हे सुमध्यमे ! जो तुम इस को पुत्र मानो तो यह वीरक कृतार्थही होजाय ४७८ जब महादेवजी ने ऐसाकहा तो पार्व्वती जी ने हर्षकराने में सदा लगीहुई अपनी विजया नाम सखीको वीरकके बुलाने के लिये भेजा ४७९ व उसने आकाशको स्पर्श करते हुये बड़े प्रासादपर शीघ्रतासे चढ़कर कोटि गणों के बीचमें स्थित वीरक को पुकारा ४८० कि हे वीरक ! यहां आओ तुमने चपलतासे पार्वतीजी को प्रसन्न कियाहै

इससे देवीजी तुम्हें बुलाती हैं जब विजयाने ऐसाकहा तो पाषाण के दो खण्ड जो हाथ में लिये था उनको छोड़कर ४८१ विजयाके पीछे २ देवीजीके समीप धवरहरपर होतेहुये आया जिसकी द्युति लाल कमल के समान थी ४८२ उसे देख पार्व्वतीजी के स्तनों से दुग्ध बहनेलगा इससे वे बोलीं कि हे वत्स! यह बहनाहुआ दूध यथेच्छ पानकरो ४८३ पार्व्वतीजी मधुर वाणी से बोलीं कि यहां आओ हे वीरक! तुम देवदेव महादेव से हममें पुत्र हुये हो ४८४ ऐसाकहकर वीरक को गोदमें बैठालिया व उसकी देहको स्पर्शकरके मुख चूंबतीहुई उसका शिर सूँघकर देहको शुद्धकरके दिव्य भूषणों से उसे भूषित किया ४८५ किङ्किणी नूपुर क्षुद्रघण्टिका माणिक्यके बहूँटे हार अमूल्य रत्न धारण कराये कोमल चित्रविचित्र मनोहर पल्लवों से मन्त्र पढ़ २ कर चित्रितकिया ४८६ फिर विभूति लगाकर पीलीसरसों से उसके अङ्गोंकी रक्षाकी फिर चोवा लेकर सब अंगोंमें लगाया फूलोंकीमाला पहिनाकर गोरोचना से तिलक किया ४८७ व कहा हे वत्स! सबगणों के साथ अच्छीतरह से क्रीडा करतेरहो जब हम बुलावें चलेआयाकरो और जहां सर्पों के समूहों से युक्त पर्वतके वृक्षहों जिनमें हाथी रगड़ २ कर डालें हिलाते हैं ४८८ व गंगाजीकी लहरों से क्षोभित जलसे आकुल व व्याघ्रों से युक्त वनमें न जायाकरो व युद्धमें कोई वीर तेरे सम्मुख न खड़ाहोसकेगा ४८९ जो चाहोगे वह होगा सर्वगुणोंसे तुम्हारा अभीष्ट मिलेगा जब माताने ऐसा कहा तो लीलामें बुद्धि लगाकर ४९० हँसकर माता से बोला यह कंकण माताने दियाहै व सफेद रंग बिन्दुओं से चित्रविचित्र रचना करदिया है व सुन्दर चम्बेली के पुष्पोंकी माला हमारे शिरमें डालीहै ४९१ इससे मैं माताको खुश करूंगा ऐसा विचारकर तब वीरक वनमें फिर खेलने को गया व सबगणों से युक्त हर्ष से दक्षिण से पश्चिम पश्चिम से उत्तर ४९२ उत्तर से पूर्व्व पूर्व्व से फिर मध्यमें अपने सखाओं के संग होरहेगा जब यह कहकर वीरक सब दिशाओं में जा २ कर क्रीडा करनेलगा तो पार्व्वतीजी प्रासाद की खिड़की में बैठीहुई देखने लगीं व अपने मनमें कहनेलगीं कि हमारे तुल्यकौन है जिसे विना

यत्न ऐसापुत्र मिलगया जो नानाप्रकार के आनन्द देरहा है ४९३ अन्य स्त्रियोंको बालिकों की विष्ठा मूत्र थूँकराल पोंछनी पड़ती है हम को ऐसेहीं यह पुत्र अकस्मात् महादेवजी की कृपासे मिलगया है ऐसा विचार पार्व्वतीजी कररहीथीं कि इतने में महादेवजी वहाँ आ-गये उनसे भी कहा कि वीरक को देखो कैसी क्रीडा कररहाहै देवता लोगभी अपने २ वाहनों पर चढ़ेहुये वीरकके संग खेलते हैं व सब लोकपालभी खेलते हैं इससे हमारी इच्छाहै कि आपभी सबके संग खेलें जिसमें कोई खेलते २ वीरकके संग युद्ध न करें इससे वीरककी रक्षाके लिये अवश्य वनको जाइये जब आप वीरककीरक्षा के लिये जायँगे तो मनुष्य लोग भी खेलतेहुये अपने बालकोंकीरक्षाके लिये जाया करेंगे यह सुनकर महादेवजी भी वहां खेलनेगये व पवन से बोले कि तुम इस युक्तिसे चलो कि वीरककी क्रीडामें पुष्पों की माला अपने आप आजायँ व सिद्धों से भरीहुई कन्दराओं में भी इसी रीति से चलो जिसमें उनकी स्त्रियांभी पुष्पमालाओं को पाकर प्रसन्नहोवें व हमारी प्राणप्रिया शैलपुत्री वीरकपुत्र के विनोद से आनन्दित होतीरहे क्योंकि जन्मान्तरके योगसे उमाको इस वीरकपुत्र का सं-योगहुआ है फिर उसकी क्रीडासे उनकी तृप्तिकैसेहो इसीसे वे देखो गवाक्ष के भीतरसे दृष्टिलगाये देखती हैं जब वह सब गणेशों के संग गानेलगताहै वा उनके गानके सुनने में कान लगाता है वा नाचने लगताहै वा सिंहनादकरके ताड़देने लगता है तब पार्व्वती परमा-नन्दित होकर उसे देखने लगती हैं इतने में वीरक वृक्षोंके बीच २ में होकर गन्धर्वों के साथ नाचने गानेलगा व महादेवजीकीसी लीला करनेलगा इतने में सूर्य्य अस्ताचलके समीप पहुँचे उन्हें ऐसा देख-कर वीरक अपने मित्रोंसे बोला कि हे मित्रो ! देखो अब सन्ध्या हुआ चाहती है उनमित्रोंने भी कहा हां मित्र सूर्य्य पश्चिमदिशाको चले-जाते हैं जानों तुम्हारे हृदय को और भी प्रकाशित करते हैं देखो ब्राह्मण लोग सूर्य्यकी आराधना करने के लिये जलाशयोंपर जारहे हैं अब सूर्य्य डूबतेही हैं सुमेरुभी उनकी कुछ सहायतानहीं करता कि कुछ काल अस्त न होने दे हम जानते हैं सूर्य्य अब जलमें प्रवेश

करेंगे फिर प्रातःकाल निकलकर लोकको प्रकाशित करेंगे तब फिर इसीप्रकार मुनिलोग हाथजोड़कर सन्ध्यावन्दन करेंगे जैसे अब कर रहे हैं इससे जबतक सूर्य्य अस्तहोकर हमलोगोंके मनको आच्छादित न करलें तबतक हम सब अपने २ स्थानों को चलेचलें व रत्नों से प्रकाशित अपने २ मन्दिरोंमें आनन्दसे शयनकरें अब इस होनेवाले अन्धकार से चित्तघबराताहै स्थानों में साखूके काष्ठ के दिव्य पर्य्यङ्क विद्यमानहैं उनपर रत्नजटित बिस्तरेपड़े हैं नानाप्रकार की चमचमाहटसे इन्द्र के धन्वाकी विडम्बना कररहे हैं रत्नोंकी क्षुद्रघण्टिकायें सबओर लटकती हैं मोतियों की झालर झलकती है व मनोहर चटापटीका चँदवा ऊपर छतमें तनाहै इतना कहकर सबके सब अपने २ स्थानों में आये व भोजनादि करके शयन करनेलगे आनन्दसे रात्रि बीतनेलगी महादेवजी भी अपने स्थानमें आये वहां दिव्य पर्य्यङ्क अति कोमल बिछौने से युक्त बिछाथा जिसमें हीरोंकी झालर लगीथी नानाप्रकार के अन्य नीलमणि आदि रत्नोंसे भी जटितथा अति मनोहर चँदवा चटापटीका मोतियों की झालरों से युक्त तनाथा व मन्द २ पवन चलरहाथा उस शय्यापर महादेवजी विराजमानहुये श्रीपार्व्वतीजी चरणसेवा करनेलगीं महादेवजी का प्रकाश सहस्र चन्द्रमा के समान होरहाथा पार्व्वतीजी की छवि असित कमलके समान चमकतीथी व रात्रिने सब ओर से बाहर अपने अन्धकार से आच्छादित करदिया था आकाश गाढान्धकार के मारे किसीको दिखाई नहीं देताथा ४९४।५१५॥

चौ० करिबहुकेलिकला गिरिनाथा। गिरिजासोंबोलेमृदुगाथा॥
हास्यकरनहितनिजमनमाहीं। ईर्षारहितहृदयदुखनाहीं ५१६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेगौरीविवाहवर्णनं नामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

चवालीसवां अध्याय॥

दो० चवालिसयें महँ कह्यो गिरिश हास्य उमा सँगकीन॥
जासों गिरिजा कोपकरि त्यहिकह वचन मलीन १॥

पुनि तप करिवर ब्रह्मसों पाय अंग किय गौर ॥
शिव सँग रमीं सहस्र सम तबसुर अनलप ठौर २
विघ्न कीन्ह रतिमाहिं तिन तासों शिव पिववीर्य्य ॥
सहि न सक्यो सो भूमिपर तुरत अग्नि अवकीर्य्य ३
तासों सरभो तासु जल कृतिका नगजा पीव ॥
तासों षण्मुख जन्मभो ज़िनलिय तारक जीव ४
तारक गुह संग्राम अति घोर भयो न सँदेह ॥
ताहि मारि सुर सुख दयो कार्तिकेय धरि देह ५

केलिकलाके पीछे महादेवजी पार्व्वतीजी से बोले कि हे तन्वङ्गि! हमारे गौरशरीर में लसीहुई श्यामशरीर की तुम श्वेतचन्दन के वृक्ष में लपटीहुई काली सर्प्पिणी के समान हमको जानपड़तीहो १ व चन्द्रमाकी ज्योत्स्ना से युक्त रक्त वस्त्र धारणकिये कृष्णपक्ष की रात्रि के समान हमारी दृष्टिको दूषितकरतीहो २ जब इसप्रकार महादेव जी ने पार्व्वतीजी से कहा तो उन्होंने शिवजीका कण्ठ छोड़दिया व कोपसे लालनेत्रकर भौहें टेढ़ी बनायकर कहा कि ३ हे शशिमण्डन! सबजन अपनी जड़तासेही अनादरित होते हैं व उनकी जड़ताके कारण अर्थीलोग अवश्य अपने अर्थको पाजाते हैं ४ हमने बड़ी२ तपस्याओं से तुम्हारे पानेकी प्रार्थना की उसका यह फलहै जो कि पद २ पर हमारा अपमान होताहै ५ हे शिव! हम कुटिल नहीं हैं न गर्व्व के मारे हमारा विषम स्वभावही है तुम विषसहित प्रसिद्ध हो इससे सब दोषोंकी खानिहो यह बात प्रकटही है ६ तुम तो दाँतों को छिपातेहो क्योंकि तुमने भगके नेत्र उखाड़डारे हैं परन्तु भगवान् द्वादशात्मा आदित्यजी तुमको अच्छीतरह जानते हैं ७ ऐसेही तुम अपने दोषों से हमारे शिरमें शूलउठातेहो तुम्हारा महाकाल नामहै उसके पलटेमें हमको काली बताते हो ८ अब हम जायँगी तपकरके अपनाशरीरही छोड़देंगी क्योंकि तुम धूर्त्तसे अनादर पाईहुई हमारे जीनेका अब कुछ काम नहीं है ९ जो तुम अमङ्गल मनुष्योंकी खोपड़ियों की मालापहिने रहतेहो महानीचहो क्योंकि नित्य श्मशानमें निवासकरतेहो देह में चिता भस्म लगाये रहते

हो डाकिनी शाकिनी व मातृकाओं के मध्यमें विचरते हो १० कोपसे तीक्ष्ण उमाजी के ऐसे वचन सुनकर महादेवजी प्रेमसे शिर झुकाकर मधुर वाणीसे बोले कि ११ हे गिरिजे! तुमने समझा नहीं यह वचन तुम्हारी निन्दा का नहीं है हमने तो हास्य करनेके लिये कहाथा १२ स्वच्छचित्तवाले लोग ऐसा विकल्प नहीं मानते जैसा तुमने मानलिया है जो तुमने ऐसा कोप कियाहै तो हम अब फिर कभी तुम्हारे बीच में हास्यकी बात न कहेंगे अब कोपको छोड़ो हे शुचिस्मिते! जैसे हँस २ कर बोलतीथीं वैसेही बोलो अब हम शिर से प्रणाम करते हैं व तुम्हारे हाथ जोड़ते हैं १३। १४ हीन उपमा देने परभी जो अच्छे होते हैं उनमें कुछ विकार नहींहोता व जो अच्छे नहीं होते उनकी प्रशंसा करनेसे कुछ प्रतिष्ठा नहीं होजाती १५ इस प्रकार बहुत प्रिय वचन कह २ कर महादेवजी ने पर्व्वतकुमारी को समझाया परन्तु प्रथमका शिवजीका वचन ऐसा उनके चित्तमें सङ्घटित होगयाथा कि उन्होंने तीव्र कोपको न त्यागा १६ महादेवजी ने वस्त्र पकड़ा पर उनके हाथको झिटक कर व उनकी ओरसे मुँह फेरकर चलने पर उद्यत हुईं १७ जब कोप करके उन्होंने चलीदिया तो महादेवजी फिर बोले कि सत्यही सब अङ्गों से अपने पिताही के तुल्य आचरण करतीहो १८ जैसे तुम्हारे पिता हिमाचल का मन मेघजालसे आच्छादित रहताहै कोई उनकी जड़ताका अन्त नहीं पाता ऐसेही तुम्हाराभी आशय दुरवगाहहै १९ क्यों न हो तुम्हारे पिताका शरीर पत्थरोंसे घिराहुआ इससे सब धातु अलभ्य रहते हैं व नदियोंकी कुटिलतासे युक्त रहताहै हिमादिसे आच्छादित होनेके कारण बड़े दुःखसे सेवा करनेके योग्य है २० फिर उसी हिमाचलसे तुम्हारा जन्म ठहरा तो क्यों न ऐसी जड़ता तुममें हो जब महादेवजी ने ऐसा कहा तो पार्व्वती जी फिर बोलीं २१ व कोपकेमारे शिर कँपानेलगीं दांतों से दांत पीसनेलगीं वज्र समानही वचन बोलीं कि सबको जो लोग दोष दिया करते व सबकी निन्दा किया करतेहों चाहे आप गुणीभीहों पर निन्दित होजाते हैं व उनके सङ्ग रहनेवाले भी निन्दित होजातेहैं सो तुम्हारे

सङ्गसे हमारी भी वही दशाहुई जो अवगुण तुममेंथे सब हममेंभी चलेआये क्योंकि सप्पों की तो अनेक जिह्वता व भस्मसे स्नेहका निवृत्त होना २२ । २३ चन्द्रमाके कलङ्क के कालेपनसे हृदयका कालापन व विषसे दुर्बोधता ये सब अवगुण तुममें हैं व बहुत कहनेसे क्या है, हमारे अपनी वाणी को अधिक श्रम कौनदे २४ तुम सदा श्मशानवास से निर्भयहो व नग्न रहनेसे निर्लज्ज हो व मुण्ड धारण करनेसे निर्घृण हो दया तुम्हारे हैनहीं २५ ऐसा कहकर पार्व्वतीजी उस मन्दराचल परसे चल खड़ीहुई उनके चलने पर सब शिवगणोंने किलकिला शब्द किया २६ व कहा माताजी कहांजाती हो फिर रोदन करनेलगे तब देवीजी के चरणों को पकड़कर गद्गद वाणीसे वीरक २७ बोला कि हे मातः! यह क्याहै कोपकियेहुये कहां जातीहो स्नेहरहित चलीजातीहुई तुम्हारे पीछे मैंभी चलूँगा २८ व नहीं तो इस पर्व्वत परसे नीचे गिरपड़ेंगे तब तो पार्वती ने दाहिने हाथ से वीरक का मुख उठाके २९ तब माता पुत्रसे बोली कि पुत्र शोक न करो न इस पर्व्वतही परसे गिरो न साथही चलो ३० मैं जातीहूं अब जिस कार्य्य के लिये इन दोनों कार्य्यों से रोंकती हैं वह कार्य्य सुनो महादेवजी ने हमको काली कहाहै व हमारे पिताको जड़ कहाहै व हमारा अपमान किया है ३१ इससे हम अब तप करेंगी जिससे गौरी होजावें तुम एक काम करना कि ये लम्पट हमारे पति हमारे जाने के बाद अन्य किसी स्त्रीके संग भोग न करने पावें ३२ तुम द्वारकी रक्षाकरते रहना व इस विषयका छिद्रढूँढ़ते रहना जिससे कि कोई स्त्री हरके समीप न घुसनेपावे ३३ व हे पुत्र! यदि किसी स्त्री को यहां देखना तो हमसे अवश्य कहदेना फिर जो कुछ योग्य होगा वह हम शीघ्रही करेंगी ३४ वीरक ने देवीजी से कहा कि बहुत अच्छा यह काम तो हम करेंगे यह कह माता की आज्ञा के करने से अपने को उसने पवित्र समझा व ज्वर जातारहा ३५ व माताके प्रणाम करके महादेवजी को परस्त्रीगमन से रखानेलगा व देवीजीने वहां से चलकर अपनी माता की सखीको भूषण किये हुये आते देखा ३६ कुसुमामोहिनी नामवाली वह उस पर्व्वतपरकी

देवता थी उसने भी पार्व्वतीजीको देखकर स्नेह से मनमें व्याकुल होगई ३७ व पुत्री कहांजाती हो ऐसा कहकर छपटकर मिली भेंटी व बोली तब उमाजीने महादेव से कोप करने का सब कारण कहा ३८ व फिर माता के समान उस पर्व्वत की देवता से शैलकुमारी जी बोलीं कि तुम इस पर्व्वतराजकी देवता अधीश्वरीहो इससे इसपर नित्य रहतीहो ३९ व सब कहीं इसपर मन से अतीव वत्सला होकर विराजती हो इससे तुमको जो अधिक करना चाहिये वह हम कहती हैं ४० अन्य स्त्रीका आना तुम सदा रखाती रहना इसके लिये इस पर्व्वतपर एकान्त में छिपीहुई तुम रहना ४१ जब कभी महादेव के समीप कोई स्त्री आवे तो तुम हम से अवश्य कहदेना तो उसके अनन्तर अपने लिये अच्छा देखेंगी वही करेंगी ४२ ऐसा उस पर्व्वत की देवता से कहा तब अच्छा ऐसा कहकर वह देवता पर्व्वत पर विचरने को चलीगई व उमाजी भी अपने पिता के अद्भुत उद्यान को चलीगई ४३ अन्तरिक्ष मार्ग होकर वहां जा पहुँची मेघों से आच्छादित उस उपवन में पहुँचकर सब भूषणों को उतार कर वृक्ष के बकलोंको धारण किया ४४ ग्रीष्मऋतु में पञ्चाग्नि तापने लगीं वर्षामें विनाआवरणके ऐसेही बाहर बैठे रहनेलगीं कभी वन के कन्दमूलादि खातीं कभी योंही निराहार रहजातीं सूखे चबूतरे पर सदा बैठी रहतीं ४५ इसरीति से तप सिद्धि करने में व्यवस्थितहुई इसप्रकार तप करते जानकर अन्धकासुरका पुत्र महाबली दैत्य अपने पिता के वधका स्मरण करके सब देवताओं को रण में जीतकर बक दैत्यका रण में महा-उत्कटभ्राता ४६ । ४७ आडिनाम जोकि सदा से महादेवजी का अन्तर देखरहा था कि कब इनको मारने का अवसर पावें व जाकर मारें सो वह देवशत्रु त्रिपुरघाती महादेवजीके पुरमें आया ४८ व वहां आकर वीरक को द्वारपर स्थित उसने देखा तब उसने विचारा कि इसको ब्रह्माजीने वर दियाहै ४९ उसने जाना कि हमारा प्रवेश इससमय नहीं होसक्ता जब कि उसके पिता अन्धकासुर को महादेवजी ने माराथा तब आडि ने ऐसा दारुण तप किया था ५०

कि उसके तपसे अत्यन्त सन्तुष्ट होकर वहां आकर ब्रह्माजी उस से बोले थे कि हे दानव श्रेष्ठ ! इस तपसे हमसे क्या पानेकी इच्छा करते हो ५१ तब ब्रह्माजीसे दैत्य ने कहा कि हम अमर होजायँ यही मांगते हैं ब्रह्माजी बोले कि जो इस संसार में जन्म लेते हैं वे विना मृत्यु के नहीं रहसक्ते ५२ इससे हे दैत्येन्द्र ! प्राणियों को मरना अवश्य पड़ता है ऐसा कहनेपर दैत्य फिर ब्रह्माजी से बोला ५३ कि हे पद्मसम्भव ! जब कभी मेरे रूपका (परिवर्त्तन) बदलना हो तो मेरी मृत्यु हो नहीं तो मैं सदा के लिये अमरबना रहूं ५४ जब उसने ऐसा कहा तो कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी उससे बोले कि जब तेरा दूसरा रूप बदलेगा ५५ तब तेरी मृत्युहोगी अन्यथा कभी तेरी मृत्यु न होगी जब ब्रह्माजीने ऐसाकहा तो उस दैत्यपुत्र ने अपने को अमर समझा ५६ सो उसने उस समय अपनी मृत्यु समझी जबकि वह महादेवजीके स्थानपर पहुँचा व उसने वीरक को द्वार की रक्षा करतेहुये देखा ५७ बस वीरकको देखतेही वह सर्पकारूप धारण करके अदृश्यहो दुर्ज्जय वह दानव गणेश वीरकसे छिपकर ५८ भीतरको चलागया फिर वहां उससर्पशरीरको भी छोड़कर वह महाअसुर उमारूप होगया व विचारा कि जिससे महादेव इसमेरे रूपके संग भोगकरें इससे मायाकरके उसने अपना सब अंगों से सुन्दर ऐसा पार्व्वती का रूपबनाया जिसमें पार्व्वतीजीके प्रत्यक्ष में दिखाई देतेहुये सब चिह्नथे सो सब रूप तो उत्तम बनाकर उस दुष्ट दैत्यने भगके भीतर एक वज्रसम दृढ़ दांत बनाया ५९ । ६१ उसकी नोक बड़ी तीक्ष्ण बनाई व इस प्रकार से महादेवजी के मारने को उद्यत हुआ बस उमाजीका रूप बनाकर वह दैत्य श्रीहरजीके समीप पहुँचा ६२ पापीने ऐसे विचित्र भूषण वस्त्रोंसे अपने शुभ अङ्गोंको भूषितकिया कि उस महासुरको देखकर पार्व्वती जानकर महादेवजी ने उसे छपटालिया ६३ क्योंकि सब अङ्गों से उसे उन्होंने गिरिजाही को जाना व साधुभावसे पूँछा कि हे गिरिजे ! तुम्हारा बनायाहुआ भाव तो नहीं है ६४ तुमने अच्छा किया जो हमारे आशय को जानकर आश्रमपर फिर चलीआई

क्योंकि विना तुम्हारे हमको तीनोंलोक शून्य दिखाईदेते थे ६५ सो हे प्रसन्नवदने ! तुम अपने आप फिर प्राप्तहुईहो यह तुमको योग्यही था जब महादेवजी ने ऐसाकहा तो मन्द २ मुसुकाकर वह दैत्य दैत्यनाशक श्रीहरजी से बोला कि ६६ सो अभिज्ञानों से जानकर त्रिपुरघाती शिवजी से बोला कि हम तप करनेको चलीगईथीं पर अब हमने तपकरके अतुल वरपाया है ६७ व तुम्हारे सङ्ग रति कराने की इच्छाहुई इससे आई हैं इसबात को सुनकर शङ्करजी के मनमें कुछ शंकाहुई इससे विचारकरनेलगे ६८ व हृदय में उसबात को धारण करके कुछ हँसउठे कि येतो कोपकरके यहांसे गईथीं व इनकी प्रकृतिथी कि महादृढ़व्रता थीं ६९ व काम तो कभी इनको प्राप्तही नहीं होताथा अब कहती हैं कि हम सकामाहुई तब तुम्हारे समीप को आईं यह विचारकर महादेवजी ने एकान्त में उनके अप्रत्यक्ष चिह्नों को विचारा ७० तो उनके वामअङ्ग में कोई कमलका लक्षण था उसे न देखा वह पद्मक लक्षण रोमोंका एक घेरासा बना था वह नहीं देखा बस पिनाकीदेवजी ने ७१ दानवीमायाको जान लिया परन्तु अपने आकारको ऐसे यत्नसे छिपाया कि उस दुष्ट दैत्यने जाना कि इन्होंने हमारी मायाको नहींजाना बस दानव दुष्ट भगखोलकर लेटगया व महादेवजीने अपने लिंगमें महातीक्ष्ण अस्त्र आरोपण करके उसके भगमें प्रवेश करदिया कि जिससे वह दानव मृतक होगया ७२ द्वारपाल वीरकने यह हाल न जाना परन्तु स्त्री रूप धारणकिये हुये उस दानवेन्द्रको वनकी देवता कुसुमामोदिनी ने दूरसे देखलियाथा ७३ पवनदेवसे कहा कि तुमशीघ्र चलतेहो पार्वती से जाकर कहदेओ कि शिवके समीप आज एक स्त्री आई भोगकरागई वायुने जाकर देवीजीसे कहा वृत्तान्त के सुनतेही मारे क्रोध के लाल २ नेत्र करके ७४ हृदयकँपाकर वीरक पुत्रको उन्होंने देखा कि अपनी माता हमको स्नेहसे विकल्प छोड़कर ७५ जिससे कि तुमने हमारे परोक्ष में महादेवजी के समीप अन्य स्त्री को जाने दियाहै इससे तुम्हारे हृदय में बड़ी कठोररूखी क्षुराकीधारके समान ७६ तीक्ष्ण शिलाकी मालाके तुल्य जटा होगी बस वीरक तुम्हारे

यह चिह्न होजायगा जिससे तुमने हमारा अनादर किया है सो यह चिह्न सदा सम्भ्रम में व सुचित्त रहनेपरभी बनारहेगा जब ऐसा कहकर कोप को पार्व्वतीजी ने छोड़ा ७७।७८ तो उनके मुख से एक कोपकिये हुये सिंह निकला वह सिंह बड़ा करालथा व जटा उसके कन्धेपर जटित थीं ७९ पूँछ उसकी ऊपर को उठीथी व बड़े विकराल दांतहोने के कारण मुख बड़ा भयंकरथा मुख बाये जिह्वा लपलपाता था कटि व गला पतलाथा ८० तब पार्वतीजीने विचार किया कि इसके मुखमें घुसजायँ इस बातको जानकर भगवान्ब्रह्मा जी ८१ सब सम्पदों के स्थान उस स्थानपर आये व आकर वे देव देवेश स्पष्टवाणी से श्रीपार्व्वतीजी से बोले ८२ कि अब फिर तुम क्या चाहती हो क्या अलभ्यवस्तु तुमको दें जो तप करतीहो हम से मांगो तुरन्तदेंगे व हमारी आज्ञासे अब अतिक्लेशदायी इस तप से निवृत्तहोओ ८३ यह सुनकर गुरूजीके वाक्य के गौरवसे अपने वाञ्छितको प्रकाशित करातेहुये देवीजीबोलीं ८४ कि हमने बड़े दुष्करतप से शंकरजीको पतिपाया परन्तु उन्होंने एकान्त में हमको बहुत कालेवर्णकीहो ऐसा अनेकबार कहा ८५ इससे हमचाहती हैं कि अब काञ्चनके रङ्गकी अत्यन्त गोरीहोकर हम पतिके समीपजायँ व गौरी हमारा नामभी होजाय भूतपति पतिका अंगभी एक ओर विषरहित होजाय उस ओर हम सदालसीहुई बैठीरहें ८६ पार्वतीजी का ऐसा वचन सुनकर जगदीश्वर ब्रह्माजी बोले कि ऐसाहीहो अब तुम अपनेपति के आधे अंगको धारणकरोगी ८७ ब्रह्माजी के ऐसा कहतेही देवीजीने अपनी नीली दीप्तिको छोड़दिया वह त्वचा फूले हुये नील कमलके रंगकी अलग चमकने लगी व फिर वह त्वचा अतिभीमरूपिणी घण्टा धारण किये तीननेत्रकी मूर्त्ति होगई ८८ नानाप्रकारके आभरणों से सम्पूर्ण व पीले कौशेय वस्त्रों को धारण करके स्थित हुई तब नीलकमल कीसी दीप्तिवाली देवीसे ब्रह्माजी ने कहा ८९ कि हे निशे! तुम गिरिजाके शरीरसे उत्पन्नहुई हो अब हमारी आज्ञासे कृत कृत्य हुई व इनसे एक अंश तुममें न्यून रहेगा ९० व यह सिंह जो देवीके क्रोधसे उत्पन्न हुआहै हे वरानने! वह

तुम्हारा वाहन व पताका होवे ९१ अब तुम विन्ध्याचल परको जाओ वहां देवताओं का कार्य्य करोगी व यक्षराज कुबेरका सेवक एक पञ्चाल नाम यक्षहै वह ९२ तुमको दिया जाताहै उसे अपना किंकर बनाना वह सैकड़ों माया जानता है यह सुनकर कौशिकी देवीके नामसे प्रसिद्ध होकर वह देवी विन्ध्याचल परको चलीगई ९३ व पार्व्वतीजी भी अपने संकल्पको पाकर महादेवजी के निकट को चलीगईं व बड़ी शीघ्रता से स्थानमें पैठनेलगीं इतने में वीरकने हाथ पकड़कर खींचलिया ९४ व सुवर्णके बेतसे उसने आगे जानेको रोंकदिया व बड़े कोपसे कोई व्यभिचारिणी जानकर बोला कि ९५ जबतक तू अपना शरीर न छोड़देगी तबतक तेरा वहां जानेका प्रयोजन नहीं है क्योंकि देवीजी का रूप धारण करके तू कोई दैत्य है महादेवजी के छलने को आया है ९६ इसी प्रकार एक और भी दैत्य देवीका रूप धारण करके हमसे छिपकर चला गयाथा पर महादेवजी ने उसे मारडाला उसको मारकर कोप किये हुये महादेवजी ने हमको आज्ञादी है कि ९७ जो अबकभी तुम्हारी असावधानी से कोई यहां चला आवेगा तो तुम फिर अनेक वर्षतक द्वारपाल न होने पाओगे ९८ इससे हम तुम्हारा प्रवेश यहां नहीं देंगे बस शीघ्र यहां से चलीजाओ एक स्नेह वत्सल माता पार्व्वतीको छोड़कर ९९ हे कमललोचने! यहां कोई भी अपरिचित तबसे नहीं जानेपाता व स्त्रीमात्र तो विशेषकरके यहां नहीं जाने पाती क्योंकि हमारे पिता माता दोनोंकी आज्ञा है कि कोई स्त्री न आनेपावे जब देवीजी से वीरकने ऐसाकहा तो उन्होंने अपने मन में विचारा १०० कि वह स्त्री नहींथी दैत्यथा जिसे वायुने हमसे कहाथा क्रोधयुक्त होकर इस बेचारे वीरकको हमने वृथाही शाप दिया १०१ बस मूर्ख लोग इसीप्रकार क्रोध वशहोकर औरका और कर डालते हैं क्रोधसे कीर्त्ति हत होजाती है व क्रोध स्थिर लक्ष्मी व शोभाको नष्ट करदेताहै १०२ विना निश्चय किये हमने अपने पुत्रको शाप देदिया विपरीत बुद्धिवालों को विपद्रोंका उदय सुलभही होता है १०३ ऐसा मनमें विचार करके पार्व्वतीजी वीरकसे बोलीं बोलने के

समय देवीजीका मुखारविन्द कुछ लज्जितसा होआया १०४ हे वीरक! हम तेरी माता हैं इससे तेरे मनको भ्रम न हो हम शङ्करजीकी प्राणप्रिया हिमाचल की पुत्री हैं १०५ हे पुत्र! हमारे अंगोंकी छविकी भ्रान्तिसे शंका न करो प्रसन्न होकर ब्रह्माजीने हमारे अंगों को यह गुराई दी है १०६ हमने दैत्यके वृत्तान्तको नहीं जानाथा इससे तुमको शाप दियाथा जानाथा कि एकान्तमें स्थित शंकरजी के समीप स्त्रीका प्रवेश होगया १०७ अब वह शापतो नहीं लौटाया लौटता पर तुमसे यह कहती हैं कि अब हमारे शापके कारण तुम को मनुष्यों में जन्म लेना पड़ेगा व फिर शीघ्रही वहांसे हमारे समीप आजाओगे वहां सब तुम्हारे मनोरथ पूरेहोंगे १०८ इस बात को सुनकर शिर झुँकाकर पूर्ण मनहोकर माताके चरणों की वन्दना करके पूर्णमासी के चन्द्रके समान प्रकाशित दीप्तिवाली पार्व्वतीजी से वीरक हाथजोड़कर बोला १०९ ॥

द्रुतविलम्बितच्छन्दः ॥

दनुजदेव विवन्दित पादिके । सुमुखसों वर वाक्य निनादिके ॥
नगसुते शरणागतपालिके । तवनमामिपदे गिरिबालिके ११०
तपनमण्डल मण्डितरूपके । निजप्रभाजित स्वर्ण अनूपके ॥
विषमभङ्गविषङ्ग अभीतिके । गिरिसुतेह मयामितवान्तिके १११
प्रणतवाञ्छित पूरण कोकरै । त्वहिंविनाजनके दुखको हरै ११२
जननिपालयमोहिं हितूकरम् । तवसदा सुनिदेशकरम्परम् ११३
तुमसदारणमाहिं कुदानवान् । जननि दारतभारतमालवान् ११४।११५
तवनमामि पदाम्बुजमम्बिके । वितरदेवि दयाञ्जगदम्बिके ११६
भवप्रिये रिपुपुञ्जविदारिके । शमनक्लेश स्वदास विधारिके ११७
सततमामव शङ्करवल्लभे । तवपदाब्ज युगं सुतरांलभे ११८

जब वीरक ने ऐसी स्तुति की तो देवीजी अत्यन्त प्रसन्न होकर अपनेपति जगत्पति शङ्करजीके भवनमें पैठीं ११९ इसीबीचमें शिव जीके दर्शनकेलिये देवगण आये उनको द्वारपाल वीरकने रोंक दिया व आदरपूर्व्वक बिदाकिया १२० व कहा कि हे देवताओ! इससमय हरजी के दर्शन का अवसर नहीं है क्योंकि शंकरजी देवीजी के

संग क्रीड़ा कररहे हैं यह सुनकर वे जैसे आये थे वैसेही चलेगये १२१ व जब पार्व्वतीजी के संग विहार करतेहुये शिवजीको सहस्र वर्ष बीतगये तो देवताओं ने महादेवजी के चेष्टित जानने के लिये अग्निको भेजा १२२ अग्नि शुकपक्षीकारूप धारण करके पक्षियों के जाने के मार्ग्ग झरोखे में होकर भीतरगये वहां उन्होंने शय्यापर शिवजीको शैलकुमारी के संग रतिकरतेहुये देखा १२३ महादेवजी ने भी शुकरूपधारी अग्निको देखा व कुछ कोपयुक्त होकर महादेव जी अग्निसे बोले कि १२४ हे शुकशरीर पावक! तुमने आकर देवी को लज्जित करदिया इससे वे आधा वीर्य्य ग्रहणकरके चलीगईं अब हमारा आधा वीर्य्य तुम ग्रहणकरो १२५ जिससे तुम्हारेही लिये रतिमें विघ्नहुआ इससे अब तुमको वीर्य्य ग्रहण करना पड़ेगा ऐसा कहने पर अञ्जलिमें शिवका वीर्य्य लेकर अग्नि ने पीलिया १२६ परन्तु वह वीर्य्य अग्निके उदरसें न रहसका सब निकलपड़ा उसको सब दिशादेवियों ने ग्रहण किया व सब देवताओंने भी ग्रहण किया क्योंकि उन्हीं सबोंके कारण से वीर्य्यपात अग्नि के मुखमें हुआ था परन्तु वह महेश्वरजी का वीर्य्य दिशा व देवताओं के पेटको भी फोड़ कर १२७ निकलपड़ा व सुवर्ण के रङ्गका होकर एक बड़ेभारी लम्बे चौड़े स्थानपर इकट्ठाहोगया वहां पर बहुत योजन का लम्बाचौड़ा एक सरहोगया १२८ उसमें तुरन्त सुवर्ण के कमलों के फूल निकल आये व नानाप्रकारके जलपक्षी नादकरनेलगे उस सरके वृत्तान्त को सुनकर कि सुवर्ण के जलसे व सुवर्ण के कमलों से युक्त सरहोगया है १२९ कौतुकसे युक्त होकर पार्व्वतीजी वहांगईं व वहां जाकर उस सर के सुवर्ण के कमलों को अपने केशोंमें गूँथकर व जलक्रीड़ा करके १३० अपनी सखियों के साथ उसके तीरपर बैठगईं देखा तो निर्मल कमलयुक्त उस सरके जलके पीनेकेलिये १३१ सूर्य्यकी किरणों के समान प्रकाशित कृत्तिका नाम की नक्षत्ररूपिणी छः स्त्रियां आईं व उन्होंने कमलके पत्तेसे लेकर उस जलको पानकिया व घरको चलीं १३२ तब हर्षसे पार्वतीजीने कहा कि हम भी कमल के पत्रमें लेकर जलपान करेंगी व फिर वे कृत्तिका पार्व्वतीजी से बोलीं कि १३३ यह

महादेवजी के वीर्य्य से उत्पन्न जल हमलोगोंने पान कियाहै यदि इससे हमलोगोंके गर्भकी धारणा होगी व उससे पुत्र उत्पन्नहोगा तो तुमको देदेंगी व वह हमलोगों का भी पुत्र होगा इससे हमारी रक्षा करेगा वृत्तिभी हमलोगों को देगा १३४ तीनोंलोकतक प्रसिद्ध होगा हे शुभानने ! जब कृत्तिकाओं ने ऐसा कहा तो पार्व्वतीजी बोलीं कि तुम्हारे अङ्गसे उत्पन्न पुत्र १३५ हमारा सब अङ्गोंसे युक्त पुत्र कैसे होजायगा तब उमाजीसे फिर कृत्तिकाओं ने कहा कि हम लोग इसकाभी विधान करेंगी १३६ जो तुम्हारे पुत्र होगा उसके उत्तमशिर लगादेंगी ऐसा कहनेपर गिरिजाजी ने कहा हे निन्दारहितो ! ऐसाहीहो १३७ यह सुनकर हर्षसे सम्पूर्णहोकर जहां २ वह जलथा सब इकट्ठे करके पार्व्वतीजी को देदिया उस जलको धीरे २ पार्व्वतीजीने पानकरलिया १३८ उस जलके पीनेपर फिर वह सरोवर नहीं रहगया व पार्व्वतीजीकी दहिनी कोखिको विदीर्णकरके निकलआया १३९ सो जलही नहीं निकला किन्तु सुन्दरबालक होकर निकला जो कि रोग शोकरहित हुआ व सूर्य्य के प्रकाश के समान प्रकाशित व सबकुछ करने में समर्थ हुआ १४० व तुरन्त उस ने अपनेहाथोंमें उग्रत्रिशूल व शक्ति व अंकुश धारणकिया व महाप्रचण्ड दैत्यों के मारनेको चलदिया १४१ इसीकारण से उस बालकदेवका एक कुमारभी नामहुआ फिर देवीजी की बाईंकोखि को विदीर्णकरके भी एक शुभपुत्र उत्पन्न हुआ १४२ यहभी अग्निके मुखसे गिरेहुये जलरूप महादेवजीके वीर्य्यहीसे उत्पन्नहुआ व कृत्तिकाओं के दिये हुये जलसे जिससे कि यह बालकहुआ इससे इसके छःमुखहुये १४३ क्योंकि कृत्तिका छःहोती हैं सो छःशाखाओंसे यह बालक संयुक्तहुआ व वे शाखायें उस बालकके सब मुखों में युक्त होगईं इसीसे उस बालकका एकनाम विशाखभी हुआ व षण्मुखभी नामहुआ १४४ इस प्रकार उसीके स्कन्द विशाख स्कन्द षण्मुख कार्त्तिकेय ये सब नामहुये चैत्रमासकी शुक्लपञ्चमी को षड़ानन उत्पन्नहुये व दशमीको विशाख हुये ये दोनों महाबली १४५ सूर्य्यके समान प्रकाशितहुये जब प्रथम अग्निने महादेवजी का वीर्य्यपीकर उगिलदियाथा तब वह बड़ेभारी

(शर) शरपतके वनमें गिराथा वहीं सरोवर होगया था फिर उसी के जलके पीनेसेहुये इससे एकशरजन्माभी इनका नामहुआ व उसी मासकी दशमीको अग्निने १४६ इन दोनों बालकोंका संस्कारकिया था इससे वह भी तिथि उनको प्रियहै व पञ्चमी को जानो जन्महीहुआ इससे वह जन्मतिथि है व फिर चैत्रशुक्लाषष्ठी को सब देवताओं ने आकर अपना (गुह) अर्थात् आच्छादन रक्षाकरने के लिये इनका अभिषेक किया था इससे वह षष्ठी स्कन्दषष्ठी कहाती है व गुहके सम्बन्ध से गुहभी एक इनका नामहुआ है १४७ ब्रह्मा विष्णु इन्द्र सूर्य्यादि सब देवताओं ने गन्धमाल्यादि क्रीडनकादिकोंसे अभिषेक कियाथा १४८ छत्र चामर लाजा भूषण चन्दनादि विलेपनों से जब अपनी रक्षाकरने के लिये षड़ाननजी का अभिषेक देवताओं ने किया तब १४९ इन्द्रने देवसेनानाम अपनी कन्या उनकोदी कि तुम इसको अपनी स्त्री बनाओ व विष्णुभगवान् ने अपने सुदर्शनचक्रसे निकालकर एक चक्रदिया १५० व कुबेरने दशलक्ष यक्ष उनकी सेवा के लियेदिये अग्निने अपना तेजदिया व वायुने वाहनदिया १५१ त्वष्टाने एक (क्रीडनक) ख्यलौना व एक दिव्यरूप कुण्डल दिया इसप्रकार सब देवताओं ने आकर सब सामग्री षड़ाननजीको दी १५२ व सब इनको सब पदार्थों से युक्त देखकर बहुत आनन्दित हुये व सब देवसमूहों ने पृथ्वीपर माथा झुँकाकर स्कन्दजीकी स्तुति की १५३ जिस स्तोत्र से वरदायक प्रसन्नचित्त स्कन्दजीकी स्तुति देवताओंने आनन्दितचित्तसेंकी है वह स्तोत्र यहहै देवगण बोले कि-

चौ० महाप्रभाकर रूप कुमारा । नमतषड़ानन असुरसँहारा १५४
अर्क विश्वद्युति षण्मुख देवा । काम रूप करते तव सेवा ॥
नानाभरण विभूषित अङ्गा । रणदुर्म्मद कृत दानव भङ्गा ॥
तरणि समान प्रकाशित तोरे । करतप्रणाम निकामनिहोरे १५५
लोकभीतिनाशक करुणा पर । विपुलनयन नमकरत कृपाकर ॥
महाव्रती अरु नाम विशाखा । प्रणमत तुम्हें रहत तव राखा ॥
नीलकण्ठ वाहन भगवाना । करतप्रणाम लहतवरदाना १५६
केयूरादि विभूषित गाता । वरपताकि विनवत सुरत्राता ॥

महाप्रभाव धारि धीरज धर । घण्टाधर सुररक्षणतत्पर १५७
करत नमोनम शम्भुदुलारे । कृपाकरहु अरु दैत्यसँहारे ॥

इतनी स्तुति सुनकर कुमारजी बोले कि आपलोगोंका कौनकाम हमकरें जो कार्य्य असाध्यभीहो पर आपलोगोंने अपने हृदयमें उस के होनेका विचारांश किया हो तो कहिये १५८ जब षडाननजी ने ऐसाकहा तो शिर झुँकाकर सब देवगण मुदितमन होकर महात्मा गुहजीसे बोले कि १५९ बलवान् दुर्ज्जय तीक्ष्ण दुराचारी अतिकोपी सब देवताओं का नाशक तारकनाम दैत्यहै १६० बस उसी दुर्द्धर्ष दैत्यको मारिये बस उसके मारने से सब असुरों का विनाशहोजायगा बस हमलोगों का महाभयदायक यही कार्य्य इससमय उपस्थित है इससे इसको मारिये १६१ व सब देवताओं से अवध्य महाउग्र हिरण्यकशिपुभी बड़ा दुर्ज्जयहै व उसने सब यज्ञोंका नाशकरडाला ऐसा पापी है कि जिसने ब्रह्माजीको भी ताप उत्पन्न करदिया १६२ बस आपका महाबल इन दोनों को मारे जब देवों ने ऐसा कहा तो बहुत अच्छा ऐसाही होगा यह कहकर कहा कि आगेचलो बताओ वह दुष्ट दैत्य कहांहै १६३ बस सब देवताओं से स्तुति पातेहुये जगन्नाथ महेश्वर षडाननजी तारकके वधके अर्थ व जगत्के कल्याण के लिये वहां को गये १६४ व वहां पहुँचकर इन्द्र ने एक दूतको जो देवताओं के पुरुषार्थ को कहसक्ता था तारकासुरके समीप भेजा १६५ वह भयङ्कररूप धारणकरके गया व निर्भय होकर तारकासुर से बोला कि स्वर्ग व देवताओं के पति इन्द्रजीने दैत्योंकेपताकारूप तुमसे युद्ध करनेके लिये कहाहै १६६ इससे यदि शक्ति रखतेहोओ तो उनसे समर करनेकी चेष्टाकरो वे यद्यपि सब जगत्में प्रकाशित थे परन्तु तुमने क्या २ नहीं उनके साथकिया १६७ परन्तु अब वे फिर तीनों लोकों के राजा होगये हैं इससे तुमको सन्देश भेजा है कि कितो युद्धकरो अथवा यहांसे भागो ऐसा अद्भुत वचन सुनकर मारेक्रोधके नेत्र लाल २ करके १६८ नष्टप्राय ऐश्वर्य्यवाला दुष्टात्मा तारकासुर दूतसे बोला कि हमने इन्द्रका पौरुष महारणमें सैकड़ों बार देखाहै १६९ कि कुछभी नहीं दिखाई दिया अब दुष्टमति

इन्द्र निर्लज्जता से ऐसा बकता है जब ऐसा कहनेपर दूत चला गया तो दानवने अपने मनमें चिन्तनाकी कि १७० यदि इन्द्र किसी बलवान् का संश्रयी न होता तो कभी ऐसा न कहसक्ता इन्द्रके इस आशयसे मालूमहोता है कि स्कंद पैदाहुआ १७१ नाशके बतलानेवाले बहुतसे घोर निमित्तभी उसको दिखाई देनेलगे आकाशसे पृथ्वीपर धूलि बरसनेलगी व रक्त गिरनेलगा १७२ वामनेत्र कांपने लगे मुखसूखगया मन व्यथित होगया व अपनी स्त्रियोंके मुखकमल मुर्झातेहुये उसने देखे १७३ दुष्टचित्त प्राणियों को भयानक रूप दुर्वचन कहतेहुये देखा यह विचार करके वह दैत्य क्षणमात्रमें घबड़ाउठा १७४ जितने उसके हाथीथे सब व्यर्थ चिकरनेलगे घोड़ेभी सब हिनहिनाने लगे व उदासीन होगये १७५ सैन्यमें सेनाका बल कुछभी न दिखाई देनेलगा जितने विमान उसकेथे सब अपने आप कांपनेलगे १७६ फिर उसने अपने कोटके शिखरपर चढ़कर देखा तो पुरके चारोंओर हाथियोंकी घण्टाओं के नादसे युक्त व घोड़ोंकी हिनहिनाहट से शब्दायमान बड़ी २ ऊँची पताका ध्वजाओंसे युक्त अनेक विमानों से शोभित चामरों से विभूषित नानाप्रकारके भूषण धारण कियेहुये किन्नरों के गानसे मनोहर व नानाप्रकार के स्वर्ग के वृक्षोंके पुष्पोंकी मालाधारण कियेहुये देववीरोंसे शोभित व अस्त्र शस्त्रों की चमक से चमचमातीहुई व वन्दीगणों की गद्यपद्यमयी वाणी से देवताओं के जय २ कारकी ध्वनिसे युक्त देवताओंकी सेना दिखाई दी ऐसी सेना देखकर कुछ विभ्रान्त मन होकर दैत्यराजने अपने मनमें चिन्तनाकी १७७। १७९ कि ऐसा अपूर्वयोद्धा देवताओं में कौन था जिसको हमने नहीं पराजित किया फिर चिन्ता से व्याकुल उस दैत्यने सुना तो उसके कानोंके लिये बहुतही कडुवाशब्द सुनाई दिया जिसको वहांके वन्दीगण कररहेथे वह ऐसा था कि जिसके सुनने से हृदयफटता था १८० हे अतुलशक्तिकिरण पञ्जर भुजदण्ड प्रचण्डतर क्रोधवाले! जयहो हे सुरवदनकुमुदाकर विलासनयन कुमारवर! जयहो १८१ दैत्यकुल महोदधिके वड़वानल जयहो व मधुरशब्द बोलनेवाले मयूरके ऊपर चढ़नेवाले व दे-

वगणसेवित चरणकमल जयहो १८२ चलित ललित चलायमान समूह नव विमल कमलदलकान्त जयहो हे दैत्यवंशवनदुस्सहदावानल! जयहो १८३ हे विशाख! जयहो व जन्मलेनेसे सातयें रोज लोकोंके शोकदूर करनेवाले जयहो हे सकल लोकनिवासी दैत्यदानवोंके धुरन्धरोंके नाशकरनेवाले स्कन्द! जयहो १८४ यह सब देवताओं के वन्दीगणों से उच्चारित शब्द तारकासुरने सुना तब उसने ब्रह्माजीके वचनका स्मरणकिया जोकि उन्हों ने कहाथा कि तेरा वध एक बालकसे होगा १८५ इसको स्मरणकरके धर्मसमूहका नाश करनेवाला सदा पैदर वीर जिसके पीछे चलते थे व शोकसे ग्रस्तचित्त होकर वह मन्दिर से निकलकर बड़े वेगसे चला १८६ व कालनेमिआदि दैत्य सब भयभीत होकर चकितहुये व अपनी २ सेनाओं में अतिवेग जाकर उपस्थितहुये १८७ व सब दानवों के धुरन्धर हिरण्यकशिपुने कहा कि यदि हमको इस बालकके सम्मुखसे भागनापड़ा तो बड़ीलज्जा का स्थानहोगा १८८ इससे जो हम किसी से युद्धकरेंगे वह लक्ष्मीका आश्रितहोगा अर्थात् विष्णुहीसे युद्ध करेंगे इस अकेले बालकको मारकर हम अपना दुर्य्यश न करेंगे १८९ जाओ दौड़े सेना इकट्ठीकरो यहां तारकासुर कुमारजीको देखकर अपना अतिभयङ्कररूप होकर बोला १९० कि हे बालक! क्या गेंदखेलनेकी क्रीड़ाकरनी चाहतेहो कि समर किया चाहतेहो जिसने धूपको नहीं देखा वह संग्रामका हाल क्या जानें हम तो जानतेहैं कि बालकके सङ्ग कौन लड़ेगा १९१ तुम्हारी बुद्धि बालकपन के कारण थोड़ी है जो हम ऐसे वीरों से समर किया चाहते हो तब कुमार जी भी हर्षयुक्त होकर तारकासुर से हँसकर बोले १९२ हे तारक! शास्त्र का अर्थ सुनो हम निरूपण करते हैं समरमें शस्त्रास्त्रों सेही प्रायः कार्य्य चलताहै चाहे बालक चलावे वा युवा १९३ इसके विशेष हमको बालक न समझना क्योंकि सर्प्पका बालक और भी कष्टदायक होता है बालसूर्य्य बड़े दुःखसे देखने के योग्य होते हैं ऐसेही हम बालक दुर्ज्जय हैं १९४ हे दैत्य! मन्त्र थोड़े अक्षरों का क्या नहीं होता जिसके वशीभूत सब देवादि होजाते हैं जब कुमार

ज़ी ने ऐसाकहा तो तारकासुरने मुद्गरचलाया १९५ कुमारजी ने उसे अपने शस्त्र व अमोघ वीर्य्यसे काटडाला तब दैत्येन्द्रने लोहे की धनवासी वा गोफना चलाई १९६ उसे महाशत्रुओं के नाशक कार्त्तिकेयजी ने हाथसे पकड़लिया व बड़ेतीक्ष्ण शब्द से युक्त गदा उठाकर दैत्य के ऊपरको चलाई १९७ उसके लगने से दैत्यराज वायुवेगसे कांपतेहुये पर्व्वत के समान कांपनेलगा व उसने बालक को दुस्सह और दुर्ज्जय समझा १९८ व बुद्धिसे चिन्तनाकी कि यह कालही आकर प्राप्तहुआहै इसमें संशय नहीं है तारकासुर को कम्पित देखकर कालनेमिआदि महासुर १९९ सबके सब एकही साथ रणदारुण कुमारजीके ऊपर अस्त्र शस्त्र प्रहारकरनेलगे तिन प्रहारोंको व क्लेशोंको महाप्रकाशवान् कुमारजी कुछ न समझतेभये २०० व वे महाबली बालकरूप कुमारजी प्रसन्नचित्तहोकर अकेले महाबली दैत्योंसे युद्धकरनेलगे रणमें बड़ेचतुर दैत्यलोगोंने फिर दूरजाकर बाणोंकी वर्षाकी २०१ व देवताओंके शत्रु बड़े बलीदानव फिर समरमें आकर मारनेलगे परन्तु दैत्यों के अस्त्र लगने से कुमारजीके कुछ व्यथा न हुई २०२ यह देखकर बेचारे देवताओंके प्राण निकलनेलगे व दैत्यों ने देवताओं कोभी अस्त्रशस्त्र प्रहारों से पीड़ितकिया देवताओं को पीड़ित देखकर कुमारजी अत्यन्त क्रुद्ध हुये २०३ व उन्होंने दानवोंकी सब सेनाको शस्त्रों से विदारित कर दिया व जो मरजानेसे बचे उनशस्त्रास्त्रोंसे पीड़ित सुरकण्टक २०४ कालनेमि आदि श्रेष्ठ २ दैत्य सबकेसब भागखड़ेहुये मारते मारते इधर उधर दैत्योंको भागतेहुये २०५ व किन्नर हँसने व गाने बजाने लगे तो सुवर्ण की दीप्ति युक्त व गदा लेकर कुमारजी को पीटने लगा २०६ यहांतक उन्होंने मारा कि षडाननजीका वाहनमयूर रणसे भागखड़ाहुआ अपने वाहनको भागतेहुये व रुधिर बहतेहुये देखकर षडाननजीने उसे छोड़दिया २०७ व एक सुवर्ण से भूषित शक्ति रणमेंली व उसको वहुत तोलनकर षडाननजीने बड़े बलसे २०८ उठाकर तारकासुर से कहा कि हे दुर्ब्बुद्धे ! खड़ाहो खड़ाहो अब तू यमलोकदेख २०९ अब हम इस शक्तिसे तुझे मारते हैं व अपने

कियेहुये कर्म्मोंका स्मरणकर ऐसा कहकर उस दैत्य के ऊपर शक्ति को छोड़दिया २१० कुमारजीके सशब्द केयूरयुक्त भुजासे चलाई हुई वह शक्ति दैत्य के वज्रके पर्वतकी तुल्य महाकर्कश हृदयको वि-दीर्णकरगई २११ इससे प्राणरहित होकर वह पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे प्रलयकालमें भूधर गिरताहै मुकुट पगड़ी भूषण वस्त्र सब उ-सके अङ्गोंसे अलगगिरे २१२ वह दुष्टाधिराज यों मृतकहुआ उस दैत्याधिराज के मारजानेपर फिर कोई प्राणी नरकोंमें भी दुःखित न रहा सब सबकहीं प्रसन्न होगये २१३ देवतालोग स्तुति करते हुये व हँसतेहुए व खेलतेहुए आपहुँचे व उत्साहसहित अपने स्था-नोंको गये २१४ व सबोंने षण्मुखजी को वरदानदिया सब सिद्ध तपोधन किन्नर विद्याधरादियुक्त देवगण बोले २१५ कि जो महा-मतिवाला पुरुष स्कन्दजीके सम्बन्धकी यह कथा पढ़ेगा अथवा सुनेगा वा सुनावेगा वह नर कीर्त्तिमान् होगा व २१६ उसकी बड़ी आयुहोगी धन लक्ष्मी पावेगा दीप्तिमान् होगा ॥

चौ० सब भूतनसोंनिर्भयहोइहि। सबदुखरहितसकलसुखजोइहि २१७
जोनरप्रातकाल सन्ध्याकरि। स्कन्दचरितपढ़िहै निजचित धरि॥
सो किन्नरगणयुत ह्वै प्रानी। धनपति सम होइहि धनखानी॥
यहशुभचरित भीष्महमगावा। सकलभांतिसो तुम्हें सुनावा २१८

इति श्रीपाद्ममहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेकुमारसंभवतारकवधोनाम चतुश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवाँ अध्याय ॥

दो० पैंतालिसें महँ कह कनक कशिपु दैत्य तप आदि ॥
जासों तिन वरपाय किय सकल देवगण बादि १
देवनके अधिकार सब करन लगो सो आप ॥
देव पुकारे विष्णु कहँ सो अवतरे सदाप २
नरहरि तनुहरि धरि हत्यो समर माहिं सो दुष्ट ॥
जो सुर भाग सुभोग करि भयो प्रथम अति पुष्ट ३

भीष्मजीनें पुलस्त्यजीसे पूँछा कि-अब हम इस समय हिरण्य-

कशिपु दैत्यराजका वध सुनाचाहते हैं व वैसेही पाप नाशनेवाला नरसिंहजीका माहात्म्य सुनाचाहते हैं १ पुलस्त्यजी बोले कि हे राजन्! पूर्व्वकालके सत्ययुगमें दैत्योंके आदि पुरुष व स्वामी हिरण्यकशिपुने बड़ाभारी तपकिया २ ग्यारहसहस्र वर्ष तक वह जल के भीतर बैठकर बराबर निराहार रह मौनव्रत धारण कियेरहा ३ सब इन्द्रियों को दमन करके उनके विषयोंसे उन्हें निवृत्त करदिया बराबर ब्रह्मचर्य्य धारण कियेरहा तब उसके तप व नियमसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुये ४ तब सूर्य्यके समान प्रकाशित चमचमाते हुये व हंसयुक्त विमानपर चढ़कर स्वयम्भू ब्रह्माजी अपने आप वहांआये ५ सो अकेले नहीं बारहोसूर्य्य आठवसु साध्यगण उश्वासपवन इन्द्रादिदेव एकादश रुद्र तेरहविश्वे देव यक्ष राक्षस पन्नग ६ छःदिशा चार विदिशा सब नदियां चारसमुद्र सत्ताईस नक्षत्र तीसमुहूर्त्त अन्य खेचर व नवमहाग्रह ७ अन्य देव ब्रह्मर्षि सिद्ध सप्तर्षि राजर्षि अन्य पुण्यकारी लोग गन्धर्व्व अप्सराओंके गण ८ इन सबों को सङ्गलिये चराचरके गुरू वेदवादियोंमें श्रेष्ठ श्रीब्रह्माजी आकर दैत्येन्द्र से बोले ९ हे सुव्रत! हम तुम्हारे तपसे तुम पर प्रसन्न हुये तुम्हारा कल्याणहो यथेष्टवर हमसे मांगो व पाओ १० हिरण्यकशिपु बोला कि हे देवसत्तम! हमको न देवता असुर गन्धर्व्व मारसकें न यक्ष नाग राक्षस न मनुष्य न पिशाच ११ ऋषि मानव हमको शाप न देसकें यदि भगवान् आप हमारे ऊपर प्रसन्नहुयेहों तो यही वर हम आपसे मांगते हैं १२ नतो हमारा वध किसी शस्त्रसेहो न अस्त्रसे न पर्व्वत से न वृक्षसे न सूखेसे न गीलेसे न औरही किसी से सूखे गीले मिलेहुये १३ व हमीं सूर्य्य होजावें हमीं सोम वायु अग्नि जल अन्तरिक्ष नक्षत्र व दश दिशा होजावें १४ हम वरुण काल क्रोध इन्द्र यम कुबेर अन्य धनवान् यक्ष किम्पुरुषों के स्वामी सब कोई हम होजावें व जितने प्राणी तुम्हारे बनायेहुये स्थावर वा जङ्गम हैं उनसे किसीसे हमारा वध नहो १५ ब्रह्माजीबोले कि हे तात! हे वत्स! यद्यपि ऐसा वर हमने किसी को नहींदिया पर तुमको यह अद्भुत वर हमने दिया तुम सबकाम देनेवाले इस वरको पाओगे इस

में संशय नहींहै १६ ऐसा कहकर भगवान् ब्रह्माजी ब्रह्मर्षिगणोंसे सेवित अपने प्रकाशित ब्रह्मस्थानको चलेगये जो सब आकाशों से ऊपरहै १७ तब इस वरदानको सुनकर सब देवता गन्धर्व्व ऋषि चारणादि ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्माजीसे बोले कि १८ हे भगवन्! इस वरदानसे वह असुर हमलोगों को मारडालेगा इससे यद्यपि आपने सबसे अवध्य करदियाहै तोभी उसके वधका कुछ उपाय शोचें १९ क्योंकि हे भगवन्! आप सब चराचर प्राणियों अप्राणियों के आदिकर्त्ता अपने आप प्रभु व हव्य कव्योंके स्रष्टा अव्यक्तप्रकृति सब से पर हैं २० सबलोकों के हितकारक वचन को सुनकर प्रजापति देव ने अतिशीतल वचनों से देवताओं को समझाया व आशा भरोसादिया २१ कि हे देवो! तपका फल तो अवश्य यह दैत्य पावेगा तप फलके अन्त होजाने पर भगवान् श्रीविष्णु आप इसका वध करेंगे २२ ब्रह्माजी का ऐसा वचन सुनकर सब देवगण प्रसन्न होकर अपने अपने दिव्यस्थानों में जाकर हर्षसे बसनेलगे २३ व वरदान पातेही वरसे दर्पित होकर वह हिरण्यकशिपु नाम दैत्यराज सब प्रजाओंको बाधित करनेलगा २४ आश्रमों पर जाजाकर उस महादैत्यराजने महाभाग प्रशंसनीय व्रत नियम धर्म्म कर्म्म करनेवाले इन्द्रियों को दमन करनेवाले मुनियोंको उसने धर्षितकर दिया २५ व स्वर्गादिकों में टिकेहुये सब देवताओं को पराजित करके तीनोंलोकों को अपने आधीन करके वह दानव स्वर्ग में निवास करनेलगा २६ जब वरके मदसे अत्यन्त अन्धहोगया व काल के धर्म्मने प्रेरणाकी तो उसने दैत्योंको यज्ञफल भोगनेवाले बनाया व देवताओं को यज्ञ करनेवाले किया २७ जब ऐसा उसने उलटा पलट किया तो सब देवता साध्य विश्वेदेव वसु रुद्र आदित्य यक्ष व महर्षिलोग २८ शरणागतपालक महाबली श्रीविष्णु भगवान्के शरणकोगये जोकि देवदेव यज्ञमय वासुदेव सनातन ब्रह्मकहातेहैं २९ देवगण बोले कि हे महाभाग श्रीनारायण! देवगण आपके शरण में आये हैं इससे हे प्रभो! हिरण्यकशिपुसे हमसबोंकी रक्षाकरो व उसे मारो ३० क्योंकि तुम हम लोगों के परमधारण पोषण करनेवालेहो

व तुम हमलोगोंके परमगुरुहो व तुमहम ब्रह्मादि देवताओंके परम उत्तम देवहो ३१ श्रीविष्णुभगवान् बोले कि हे देवताओ! भयको त्यागो हम तुमलोगोंको अभय देतेहैं हे देवताओ! आजही स्वर्गको पातेहो कुछविलम्ब नहीं है ३२ अभी हमजाकर वरदानसे दर्पित गणसहित इन्द्रादिकों से अवध्य हिरण्यकशिपुको मारते हैं ३३ इस प्रकार देवताओंसे कहके श्रीभगवान्जी विश्वकी रक्षाकरनेवाले नाश से रहित विष्णु हिरण्यकशिपुके स्थानकोगये ३४ तेजसे भास्करके आकार का रूपधारणकियाथा व कान्तिसे दूसरेचन्द्रमा होगयेथे अपना कटिसे नीचेका शरीर तो मनुष्यकासा करलियाथा व ऊपरका आधा सिंहकासा कियाथा ३५ ऐसे नारसिंह शरीरको धारणकर हाथसे हाथ मींजतेहुये वहांगये व वहां विस्तीर्ण दिव्य रम्य व मनोरम ३६ सब कामयुक्त शुभ्र हिरण्यकशिपुकी सभाको उन्होंने देखा जो सभा सौ योजनकी तो लम्बीथी व पचासकोसकी चौड़ीथी ३७ व आकाशमें निराधारथी इच्छासेही उसमें सब पहुँचजाते थे यद्यपि पृथ्वी परसे पांचयोजन ऊँचेपरथी उसमें जानेपर किसीको वृद्धता शोक व ग्लानि नहीं होतीथी व कल्याणकारिणी सुखदायिनीथी ३८ नानाप्रकारका सभामन्दिर बनाथा उसमें विचित्र आसन बिछेथे व रम्यथी मारेतेजके चमचमा रहीथी सभाके मध्यमें एक जलाशयथा उससे शोभित होती व विश्वकर्म्माकी बनाईहुईथी ३९ उस जलाशयके किनारे किनारे लगेहुये दिव्यवर्ण के फल पुष्पसहित वृक्षोंसे शोभित होतीथी नील पीत अश्याम श्याम श्वेत लालरङ्गकी लताओंके तानोंसे तनीथी ४० सुन्दरी लालरंगकी मंजरीयुक्त लताओंसे युक्त उजले बादरकेरङ्ग सभादेखा ४१ व अपने स्वभावही से सभा प्रकाशवती थी दिव्यसुगन्धित चन्दन कपूर अरगजादि पदार्थों से सुगन्धित होरहीथी सुन्दर सुखहीदेती न दुःखहीदेती न बहुत शीतलही थी न उष्णतायुक्तही थी ४२ न क्षुधा न पिपासा न ग्लानि उसमें के बैठनेवालों को होतीथी व नानारूप के देदीप्यमान सुन्दर चित्रोंसे मानो रूपबनाथा ४३ व अपनेआप ऐसी प्रभासे युक्तथी कि सूर्य्य चन्द्र अग्निकी प्रभाका अतिक्रमण करतीथी अन्तरिक्ष में वि-

राजमान वहसभा सब दैत्योंको प्रकाशित करातीथी ४४ सब उसमें के बैठनेवाले मनुष्य दैत्य प्रकाशित होतेथे व हर्षितचित्तथे नानारस युक्त भक्ष्य भोज्य पदार्थोंसे युक्तथी ४५ उसमें पुण्यगन्धवाली पुष्प माला अनेक लटकती थीं व सबकालों में फलने फूलनेवाले वृक्षलगे थे उष्णकाल में शीतलजलसे युक्त रहती व शीतकाल में उष्णजल से ४६ व पल्लव अंकुर फल पुष्पधारी लतावितानोंसे सञ्छन्न कृत्रिम वृक्षभी परमसुहावने उसने अपनी सभामें कल्पितकराये थे उनसेभी शोभितहोती थी ४७ जिसमें फूलखुशबूदार व फल रसीले शीत व गर्म्म व तालाब ४८ व उस सभामें तीर्थभी देखा कि नलिन पुण्डरीक शतपत्रोंकी सुगन्ध से युक्तथे ४९ छोटी२सरसियां उजले नीले पीले अरुण कमलों से शोभित होतीथीं व नानाआश्चर्य्य देनेवाले अन्य प्रियपुष्पों से शोभित होनेसे मनोरम दिखाईदेती थीं ५० कारण्डव चक्रवाक सारस कुररआदि जलपक्षियों से शोभित होतीथीं विमल स्फुरणकरनेवाले उजलेपरवाले पक्षियोंसे युक्त ५१ व हंसों सारसोंके शब्दोंसे श्रवणसुखदेतीथीं गन्धयुक्त सबलताओंकी पुष्पमञ्जरी धारण कियेथी ५२ ऐसी सभाको भगवान् नृसिंहजी देखकर हर्षितहुये उसमें जो बड़ाभारी तड़ागथा उसके तीर २ खदिर वेतस अर्ज्जुनके वृक्ष लगे थे आम्र निम्ब नागवल्ली कदम्ब वकुल धव ५३ प्रियंगु पाटल शाल्मलि हरदुआ शाल ताल तमाल व मनोरम चम्पाकेवृक्ष ५४ ऐसे ही औरभी पुष्पितवृक्ष सभामें विराजमान होतेथे इलायची कुम्भी हर्फारेवड़ी बिजौरानींबू ५५ महुआ कचनार बहुत ऊँचे ऊँचे भी तालके वृक्षों से शोभित होतीथी अँजना अशोक पर्ण व बहुतसे चित्रक वृक्ष ५६ वारुण वत्सनाभ कटहल चन्दन लगेथे नील पुष्पोंके वृक्ष नीप पिप्पल तिंदुआ ५७ पारिजातकी जातिके अनेक वृक्ष चमेली भद्रकआदि अँतरुआ पीलू उपबालक ५८ मन्दार कुरबक पुन्नाग कुरैया लाल नील पीले तीन प्रकारके अगरु सहित कटसरैया ५९ वा पियाबासाके वृक्षभी लगेथे पलाश अनार बीजपूरक कालीयक दुकूल हींगकेवृक्ष तिलककेतरु ६० खजूर नारियल हरीतक मधूक शतावरी बेल फरेंदे शरावक ६१ हसना तमाल व अन्य ना-

नाप्रकार की झाड़ियों से आच्छादित व विविध प्रकार की लतायें फल पुष्पसमेत लगीथीं ६२ ये व और बहुत वनके वृक्षभी वहां लगे थे व नानाप्रकार के पुष्प फलों से युक्त प्रकाशित होते थे ६३ इन वृक्षोंपर चकोर शतपत्र मत्तकोयल मैनाआदि पुष्पित वृक्षोंपर कूद२ बैठते व शोभित होतेथे ६४ लाल पीले अरुण रङ्गके पक्षी वृक्षों के ऊपर बैठेहुये आनन्दसे परस्पर तीव्र जीवोंको देख रहेथे ६५ उस सभामें चारहजार हाथ लम्बे चौड़े चित्र आसनपर दैत्यराज हिरण्यकशिपु बैठाथा ६६ जो आसन सूर्य्यवत् चमकताथा व अति दिव्यथा व दिव्य बिछौने से आच्छादित था उसपर चमकते हुये कुण्डल धारण कियेहुये हिरण्यकशिपु विराजता था ६७ सो वहां विराजमान हिरण्यकशिपुके आगे पूजाकरने की दृष्टिसे सब गन्धर्व्व लोग मनोहर ताल स्वरसहित गीत गाकर रिझारहेथे ६८ व विश्वाची सहजनी प्रम्लोचा आदि प्रसिद्ध अप्सरायें दिव्या सौरभेयी समीची पुञ्जिकस्थला ६९ मिश्रकेशी रम्भा चित्रिमा श्रुति विश्रुता चारुमन्दा घृताची मेनका व उर्व्वशी ७० इत्यादि अन्य सहस्रों नाचने गाने में विशारद अन्य अप्सराओं से युक्त होकर राजा हिरण्यकशिपु की उपासना करती थीं ७१ व नृत्यगान दिखाती सुनाती थीं व ऐसेही सब दैत्यलोग भी हिरण्यकशिपु से वर पाकर उसकी उपासना करते थे जैसे कि विरोचनके पुत्र बलि विरोचन नरकासुर भौमासुर ७२ प्रह्लाद विप्रचित्ति महासुर गविष्ठ सुरहन्ता दुःखकर्त्ता सुमना व सुमति ७३ घटोदर महापार्श्व क्रथन पीठर विश्वरूप सुरूप महाबल विश्वकाय ७४ दशग्रीव बाली महाअसुर मेघवासा घटाभ विरूप ज्वलन इन्द्रतापन ७५ ये सब ज्वलित कुण्डल धारण कियेहुये पुष्पोंकी माला व कवच बख्तर पहिने सब अपने धर्म्मके अनुसार उत्तमव्रत करनेवाले ७६ सब वरपायेहुये सब शूरवीर व सब मृत्युसे मरेहुयेथे इतने ये व अन्य बहुतसे बड़े २ नामी दैत्य लोग अपने प्रभु हिरण्यकशिपु ७७ महात्माकी उपासना करतेथे सब दिव्यविमानों पर चढ़ेहुये नानाप्रकार के दिव्यवस्त्र भूषण धारण कियेहुयेथे इससे अग्निके समान प्रकाशित होतेथे ७८ सब इन्द्र

के समान शरीरवाले दिखाई देतेथे क्योंकि इन्द्रहीकेसे भूषण वस्त्र धारणकिये थे सब प्रकारसे अपने अङ्गोंको भूषित कियेहुये दैत्यलोग हिरण्यकशिपु की उपासना करतेथे ७९ दैत्य सिंह महात्मा हिरण्यकशिपुका जैसा ऐश्वर्य्यथा वैसा न कहीं देखागयाहै न तीनोंलोकमें सुनागयाहै ८० तपायेहुये सुवर्ण चांदीकी विचित्र वेदीपर जिसमें कि रत्नजटित विचित्र छोटे २ मार्ग बनेथे व सुन्दर मुक्ता जालोंकी झालरोंसे शोभित झरोखोंसेयुक्त उस सभामें हिरण्यकशिपुको नरसिंहजीने देखा ८१ जोकि सुवर्णके कंकण व हार अङ्गमें धारणकिये था व सूर्य्यके किरणोंकी प्रभाके समान ज्वलित होरहाथा व सहस्रों दैत्य जिसकी सेवा करते थे ८२ व नारसिंह शरीरमें भस्ममें छिपेहुये अग्निकेसमान छिपेहुये कालचक्रके समान आयेहुये महाभाग नृसिंहजीको देखकर ८३ हिरण्यकशिपुके पुत्र महावीर्य्यवान् प्रह्लादने दिव्य शरीरधारण किये देव देव श्रीविष्णु भगवान्को अपनी दिव्य दृष्टिसे पहिचानलिया ८४ व सुवर्णके पर्व्वतके समान चमकतेहुये अपूर्व शरीरको धारण कियेहुये नृसिंह भगवान्को देखकर सब दानव बहुत विस्मितहुये हिरण्यकशिपुभी बहुतही विस्मितहुआ ८५ तब उसके ज्येष्ठपुत्र प्रह्लाद उस दैत्यराजसे बोले कि हे महाराज ! हे महाबाहो ! हे दैत्योंमें प्रथम उत्पन्न! हमने यह नारसिंह शरीर न कभी सुनाही था न देखाहीथा ८६ यह अपनेआप प्रकटरूप कहांसे आगया क्योंकि ब्रह्माकी सृष्टिमें ऐसारूप है नहीं हमारामन कहता है कि यह दिव्यरूप दैत्योंके नाश करनेका कारणहै ८७ इस शरीरमें सब देवगण स्थित हैं सब समुद्र व नदियां हैं हिमवान् पारिपात्र आदि अन्य सब कुलपर्व्वतहैं ८८ सब नक्षत्रोंसमेत चन्द्रमा स्थित हैं बारहसूर्य्य अपनी किरणोंसहित हैं कुबेर वरुण यमराज व शचीपति इन्द्रभी हैं ८९ पवन अन्य सबदेव गन्धर्व्व तपोधन ऋषिलोग नाग यक्ष पिशाच व भीम विक्रमवाले राक्षसलोगभी हैं ९० सब देवोंकेदेव ब्रह्माजी हैं व पशुपतिजी भी हैं ये दोनों देवता तो ललाटमें घूमतेहुये दिखाई देतेहैं व अन्य अन्य अङ्गोंमें व सब स्थावर जङ्गम जितना संसारहै सब शरीरभर में दिखाई देताहै ९१ व

हम सब दैत्यगणोंसमेत आपभी इसशरीर में दिखाई देतेहैं व सैं-
कड़ों विमानों से सङ्कीर्ण जो आपकी यह सभाहै वहभी है ९२ व
सब त्रिभुवन सबलोकों के धर्म्म हे राजन्! इस नरसिंह शरीर में
दिखाई देतेहैं देखो यह सम्पूर्ण जगत् दिखाई देता है ९३ महात्मा
प्रजापति मनुजी भी इसशरीरमें स्थितहैं सबग्रह सबयोग व पृथ्वी
व आकाश उत्पातकाल धृति मति रति सत्य तप व दम सबहैं ९४
महानुभाव सनत्कुमार विश्वेदेव सब ऋषिलोग क्रोध काम हर्ष दर्प्प
मोह व सब पितरलोग विद्यमान हैं ९५ प्रह्लादके ऐसे वचन सुन-
कर दैत्योंका स्वामी हिरण्यकशिपु सब अपने अनुचरों से व सब
अन्य दैत्योंसे बोला ९६ कि यह अपूर्वजन्तु कहींसे आगयाहै इस
से इस नरमृगेन्द्र को पकड़लेओ यदि पकड़ने में कुछ संशयहो तो
मारडालो वनका तो जन्तुही है ९७ यह सुनकर उन सब दानवोंने
भीमविक्रमी नृसिंहजी को दुर्व्वचन कह कहकर बहुत अपनीजान
भयभीत किया ९८ परन्तु सिंहनाद बड़ेऊँचेस्वरसे करके महाब-
लवान् नृसिंहजी ने सब सभाको रौंद मर्द्दडाला मानो मुँह फैलाकर
कालही आगयाथा ९९ सब सभाके मर्दन होजानेपर रोषसे व्या-
कुलमुख होकर नेत्र लाल पीले करके हिरण्यकशिपु ने अपनेआप
नृसिंहजी के ऊपर अस्त्रसमूहचलाये १०० जैसे कि सब अस्त्रों में
श्रेष्ठ दण्डनाम दारुण अस्त्रछोड़ा व महादारुण कालचक्र छोड़ा वै-
सेही दूसरा विष्णुचक्र चलाया १०१ अत्युग्र पैतामहास्त्र जोकि
त्रिलोकी के कर्त्ता पितामहजी ने अपने हाथसे बनाया था विचित्र
वज्रचलाया फिर सूखे व गीले दोवज्र चलाये १०२ फिर बड़ारौद्र
व उग्रत्रिशूल चलाया कङ्कालनाम मुसलफेंका ब्रह्मशिरनाम अस्त्र
चलाया ब्राह्मअस्त्रछोड़ा १०३ नारायणास्त्र ऐन्द्रास्त्र आग्नेयास्त्र शै-
शिरास्त्र वायव्यास्त्र मथनास्त्र कापालास्त्र किङ्करास्त्र १०४ वैसेही
एकशक्ति ऐसी छोड़ी जो कहीं रोंकीही नहीं जाती थी क्रौञ्चास्त्र
छोड़ा फिर मोहनास्त्र शोषणास्त्र सन्तापनास्त्र विलापनास्त्र १०५ क-
म्पनास्त्र शातनास्त्र अर्थात् सूक्ष्म करनेका अस्त्र व रोधननाम म-
हास्त्र चलाया कालमुद्गरनाम अक्षोभ्यअस्त्र छोड़ा फिर तापननाम

महाबल अस्त्र छोड़ा १०६ संवर्त्तन मोहन व मायाधरनाम अस्त्र चलाया गान्धर्व्वास्त्र अतिप्रिय नन्दकनाम खड्ग चलाया १०७ प्रस्वापन प्रमथन व उत्तम वारुणास्त्र चलाया फिर पाशुपतास्त्र छोड़ा जिसको कहीं कोई रोंकही नहीं सक्ता १०८ उस समय इतने दिव्यअस्त्र हिरण्यकशिपुने नृसिंहजी के ऊपर छोड़े जैसे धधाकार जलतेहुये अग्निमें आहुतियां छोड़ीजाती हैं १०९ सो असुरोत्तमने मारेप्रज्वलित अस्त्रोंसे नरसिंहजी को आच्छादित करलिया जैसे ग्रीष्मऋतु में सूर्य्यनारायण अपने किरणों से हिमवान्पर्व्वत को आच्छादित करलेते हैं ११० सो सहृयनाम पर्व्वतपरके प्रचण्ड पवन से उद्भूत दैत्य सैन्यसागरने क्षणमात्रमें नृसिंहजी को बोरडा-ला जैसे समुद्रने मैनाकपर्व्वतको बोरडालाथा १११ पाश प्रास खड्ग गदा मुसल वज्र अशनि व बहुत डालोंवाले बड़े२ वृक्षोंसे ११२मुद्गरों से कूट पाशोंसे पर्व्वतों की शिलाओं से उलूखलोंसे पर्व्वतोंसे शत-घ्नियोंसे प्रज्वलित अग्नियोंसे अतिदारुण दण्डों से ११३ हाथों में फसरी लियेहुये इन्द्रकी बराबर व वज्रकी बराबर वेगवाले वे दानव व अन्य सब दानवलोग जो प्रथम सभामें बैठे न थे सबके सब पा-शलिये चारोंओरसे बाहुउठायेहुये नृसिंहजी के पकड़ने को शिर सहित नागों के बच्चों के समान खड़े होगये ११४ व फिर सुवर्ण की मालाओं से भूषिताङ्ग व सुतीक्ष्ण दांतोंसहित मुख टेढ़े कियेहुये व फुरत प्रभावाले पहाड़ के शृंगकी तुल्य देहवाले चीनदेशके कपड़े पहनेहुये हंसों की तुल्य प्रकाशित हुये ११५ दानवों ने चारोंओरसे अग्निमयी मायाको चलाया व उसके साथही प्रचण्ड पवनचलाया जब वह मायावी अग्नि सबओर से जलानेलगा तो महातेजस्वी इन्द्रजीने मेघों से ११६ महावृष्टि कराके उस अग्नि को शान्तकरादिया जब समरमें वह माया प्रतिहतहोगई तो दान-वेन्द्रने ११७ चारोंओर से बड़ाघोर अन्धकार उत्पन्न किया उस अन्धकारसे सबलोक आच्छादित होगये परन्तु बीच२ में दैत्यों के आयुध चमकतेथे ११८ व अपने तेजसे आवृत सूर्य्यके समान प्र-काशित नृसिंहजी बीचमें खड़ेरहेथे व उनकी तीन शिखाओंसे युक्त

भृकुटी को दानवोंने देखा ११९ तो वह मस्तकतक टेढ़ी भृकुटी त्रिपथगामिनी पर्व्वतपरहोकर बहतीहुई गङ्गाजी के समान दिखाई दी व सब माया उसी भृकुटी के प्रकाशसे नष्ट होगई जब सब माया नष्टहोगई तो सब दैत्य १२० हिरण्यकशिपुके शरणको बहुत उदासीन होकर गये तब मारेकोपके जलउठा व तेजसे मानों सबको जलातेहीहुये हिरण्यकशिपु प्रज्वलित होगया १२१ उसके क्रोध करतेही सब जगत् फिर अन्धकारसे आच्छादित होगया व आवह प्रवह विवह समीरण १२२ परावह संवह व उद्वह ये महाबली ६ पवन और सातवां परिवह नाम श्रीमान् पवन चलनेलगा ये सब उत्पातके भयको कहते थे १२३ इसप्रकार ये सातो पवन आकाश में चलायमान हुये व जो ग्रह सबलोकोंके प्रलयकाल में उदय होते हैं १२४ वे सब आकाश में हर्षित होकर सुखपूर्व्वक विचरनेलगे व रात्रि में जिस योगपर न जानाचाहिये चन्द्रमा नक्षत्रोंसहित जाकर उस योगपर होरहा १२५ ग्रह व नक्षत्रोंसहित व भगवान् दिवाकरजी आकाश में पीले दिखाई देनेलगे १२६ व काला कबन्ध अन्तरिक्ष में दिखाई देनेलगा सूर्य्यने अपने में से कालापन उत्पन्न किया अग्निने धुआं उत्पन्नकिया १२७ भगवान् सूर्यमें मण्डलाकार घेरा बनजानेलगा व सूर्य से निकलकर धुआंके रङ्गके अति घोर सातग्रह आकाशमें बहुत ऊँचेस्थित चन्द्रमाके ऊपरतक चले गये व शुक्र बृहस्पति दोनों चन्द्रमाके दहिने बायें होकर स्थितहो गये १२८ । १२९ शनैश्चर व मङ्गल दोनों वर्ण में परस्पर विरुद्ध होगये मङ्गल कालेहोगये व शनैश्चर लालहोगये व एकही कालमें सबग्रह आकाश में एक दूसरे के शृङ्गपर चढ़गये जैसे कि युगान्त समयमें आकाश में परस्पर युद्ध होनेलगता है व चन्द्रमा नक्षत्रों सहित प्रायस्सबग्रहों से व राहुसे युक्तहोगये इससे चराचरके विनाशके लिये रोहिणीका प्रियकरना छोड़दिया जब चन्द्रमाको राहुने ग्रहणकरलिया तो चन्द्र उल्कापातों से हतहोनेलगा १३० । १३२ यहांतक कि प्रज्वलित उल्का चन्द्रमामें सुखपूर्व्वक विचरने लगीं जो देवताओंका भी देव इन्द्रथा उसने भी रुधिरकी वर्षाकी १३३

व बिजुलीके रूपकी बड़ा शब्दकरतीहुई उल्का आकाशसे गिरपड़ी अकाल में सब वृक्ष फूलने फलनेलगे १३४ सब लतायेंभी अकाल में फूल फलउठीं इन सब कुयोगोंने दैत्योंका नाश सूचितकिया एक फल में बहुतसे फल उत्पन्न होगये व एकपुष्पमें कई २ पुष्प निकल आये १३५ व देवताओंकी प्रतिमा नेत्रखोलने मूँदने हँसने रोनेलगीं घोर पुकारकरने धुआंने व प्रज्वलित होनेलगीं १३६ इस प्रकार ये सब देवताओंकी प्रतिमायें महाभयको कहतीथीं वनके मृग पक्षियोंके साथ ग्रामके मृग पक्षी मिलने लपटनेलगे १३७ व फिर मृगों पक्षियों का भयंकर युद्धहोनेलगा व भयानक शब्द करनेलगे नदियोंमें गन्दा पानी बहनेलगा व सब उलटी बहनेलगीं १३८ व रक्तवर्णकी धूलि से आच्छादित होजाने के कारण दिशायें नहीं प्रकाशित होतीं पूजा के योग्य पिप्पलादि वृक्ष अपनेको न पुजानेलगे १३९ व वायुके वेग से प्रायः पूजनीयवृक्ष टूट उखड़ पखड़कर गिरनेलगे व सब प्राणियों की छाया सूर्यकेकारण एकस्थानसे दूसरे स्थानको न जानेलगी किंतु जहांकी तहां स्थित रहनेलगी १४० जैसे कि युगक्षयमें अन्यके साथ सूर्य्य मिलजाते हैं व तब हिरण्यकशिपु दैत्य के ऊपर के स्थानमें १४१ भाण्डागार व आयुधागारमें सब मधुमक्खियों ने अपने छत्ते लगालिये ये सब विविधप्रकार के घोर दृष्टान्तों के उत्पात असुरों के विनाशके लिये व देवताओं की विजयकेलिये दिखाई दिये थे १४२ ये व और भी बहुत से घोररूप उत्पात दिखाई दिये ये और भी बहुत घोररूप उठे १४३ वे सब रणमें दैत्येन्द्रके विनाशहीको प्रकट करते थे व तब महात्मा दैत्येन्द्र ने पृथ्वी को ऐसा कँपाया १४४ कि जिससे पर्व्वतोंमें से निकलकर सर्प्प पृथ्वीपर गिरपड़े अपने विष ज्वाला भरेहुये मुखों से गिरने के समय अग्नि छोड़ते थे १४५ उन में चारशिरके पांचशिरके व सात शिरोंके भी सर्प्पथे व वासुकि तक्षक कर्कोटक धनञ्जय १४६ एलामुख कालिय महापद्म व वीर्य्यवान् सहस्रशीर्षा शुद्धाङ्ग हेमतालध्वज प्रभु १४७ शेष अनन्त महानाग व प्रकम्प ये सब कांप उठे ये जलके भीतर व पृथ्वी के दरारों में थे १४८ व जलभरेहुये सातो समुद्र दैत्येन्द्र के कोपसे सर्वत्र कांप उठे

नागलोग तेजोधारीभी थे परन्तु पातालतलमें विचरतेही विचरते कम्पायमान पातालकेसाथ सबकेसब कांपनेलगे व हिरण्यकशिपु दैत्यने जब पृथ्वीपर आकर उसे क्रोधसे दबाया १४९।१५० पूर्वही वाराहकेसदृश क्रोधयुक्तहोकर दाँतोंसे होठोंको चबाकर गंगा भागीरथी कौशिकी सरयू १५१ यमुना कावेरी कृष्णा वेणी भीमरथी वैहायसी तुङ्गभद्रा महावेगवती गोदावरी नदी १५२ चर्म्मण्वती सिन्धु व सब नद नदियों के पति समुद्रको मेकलपर्व्वत से उत्पन्न नर्म्मदा नदी मणिके समान निर्म्मलजलवाला शोणनद १५३ वेत्रवती नदीनर्मदा की दूसरी धारावाली नर्म्मदा गोमती गोकुला कीर्णा व पूर्व्वासरस्वती महाकालमही तमसा पुष्पवाहिनी जम्बूद्वीप रत्नवान् सब रत्नों से शोभित १५४।१५५ सुवर्ण से मण्डित सुवर्ण पुटक महानद लौहित्य कांचनसे शोभित शैल १५६ कोशकारोंकापुर रजतकी खानिवाला कक्ष मगधदेशकेसब महाग्राम पुण्ड्रदेश व उग्रपुर १५७ सुह्म माड़वाड़ जनकपुर मालावान् काशी कोशलदेश व गरुड़का आलयभी दैत्येन्द्रने कंपादिया १५८ जिसको विश्वकर्म्मा ने कैलासशिखरके समान निर्म्माण कियाथा रक्तरूपी जलसेपूरित महाभयानक लौहित्यनाम महासागर १५९ उदयनाम महापर्व्वत जोकि सौयोजनका ऊँचाथा व सुवर्ण की वेदी जिसपर बनीथी व मेघपंक्तियों से सेवितथा १६० व सुवर्णके चमकतेहुये वृक्षों से प्रकाशित होनेकेकारण सूर्य्यसमान प्रकाशित होता व शाल ताल तमाल कर्णिकारआदि पुष्पितवृक्षों से युक्त १६१ व सब ओर से धातुओं से मण्डित अयोमुखनाम पर्व्वत व तमालके वनकी सुगन्धि से युक्त शुभ मलयनाम पर्व्वत १६२ सौराष्ट्र वाह्लीक सुह्म भीरदेश भोजदेश पाण्ड्यदेश वङ्गदेश कालिङ्गदेस ताम्रलिङ्गदेश १६३ तथा पौण्ड्रदेश शुभ्रदेश वामचूड़ केरलदेश उस दैत्यने इन सबोंको क्षोभित करदिया व देवताओं अप्सराओंके गणोंको भी क्षोभित किया १६४ व अगस्त्यजी के बनाये हुये अगस्त्य भवननाम स्थानको पीड़ित किया जोकि सिद्ध चारणों के समूहोंसे आकीर्ण होने से अतिमनोहरथा १६५ व विचित्र नाना प्रकार के पक्षियों से युक्त व सुपुष्पित महावृक्षों से संयुक्तथा सुवर्ण-

मय शृङ्गों से व अप्सराओं के गणों से सेवित १६६ पुष्पितकगिरि प्रियदर्शन लक्ष्मीवान् था जोकि सागरको विदीर्ण करके उसके भीतरसे किसीसमय निकलाथा व सूर्य्य चन्द्रके विश्रामकरनेका स्थान तबथा १६७ व अबभी है वह महाशृङ्गों से प्रकाशित होकर आकाश को स्पर्श करतेहुये शोभित था चन्द्र सूर्य्य के किरणोंके समान प्रकाशित सागरके जलके तुल्य निर्म्मल १६८ बिजुली से युक्त पर्व्वत श्रीमान् सौयोजनका लम्बा चौड़ाथा व जिस पर्व्वतोत्तमपर बिजुली गिरा करती है १६९ अर्थात् सुदामापर्व्वत व ऋषभदेवजी जिस पर्व्वत पर स्थितथे वह ऋषभनाम व कुञ्जरनाम श्रीसहित पर्व्वत जिसके ऊपरभी अगस्त्यजी का स्थान बनाहुआ था १७० विमलाख्य बड़ा दुर्द्धर्ष स्थानभी उसपर बनाथा व सर्प्पोंकी बड़ीभारी लम्बी चौड़ी मालतीपुरी भोगवती नामपुरीको भी दैत्येन्द्र ने कम्पितकिया १७१ महासेनपर्वत व पारिपात्रपर्व्वतकोभी कम्पितकिया चक्रवान् पर्वतोंमें श्रेष्ठ व वाराहपर्व्वत १७२ व सुवर्णमय शुभदायक प्राग्ज्योतिषपुरकोभी कम्पितकिया जिस पुरमें दुष्टात्मा नरकनाम दानव रहताथा १७३ व मेघों के समान गम्भीर शब्द होतेहुये मेघनाम पर्वत को जिसपर कि साठहजार पर्व्वत छोटे २ और मिलेहुये थे १७४ व मध्याह्न के सूर्य्य के समान प्रकाशित सुमेरुनाम महापर्व्वत जिस की कन्दराओं में यक्ष राक्षस गन्धर्व्व किन्नर नित्य बसते थे १७५ व महापर्व्वत हेमगर्भ नाम व महासेननाम मेघसखनाम पर्व्वत व कैलासनाम पर्व्वतश्रेष्ठको भी दैत्येन्द्रने कम्पित करदिया १७६ व सुवर्ण के पुष्पों के रससे भरेहुये वैखानस नाम सरको व हंस कारण्डवों से आकुल मानससरोवरको भी कम्पित किया १७७ त्रिशृङ्ग नाम पर्व्वतश्रेष्ठ व नदियों में श्रेष्ठकुमारी व तुषारसमूहसे ढकेहुये मन्दराचलको १७८ उशीर बीजगिरि व पर्व्वतोंका राजा भद्रप्रस्थ व प्रजापतिगिरि व पुष्करपर्व्वत १७९ देवाभ्रपर्व्वत व बालुकागिरि व क्रौंच १८० व सप्तर्षिपर्व्वत व धूम्रवर्णपर्व्वत इतने ये पर्वत व अन्य पर्व्वत देश राज्यादि व सागरसमेत सब नदियां इन सबों को उस दैत्येन्द्र ने कम्पायमान करदिया १८१ कपिल महीपुत्र,

व्याघ्रवान् को भी कम्पित किया व पाताल के रहनेवाले निशापुत्र खेचर १८२ व और रौद्रगण व मेघनाम अंकुशायुध व ऊर्ध्वग व भीम वेग इनसबको उसने कंपाया १८३ गदा शूल हाथ में लिये कराल नयनवाला हिरण्यकशिपु मेघसमान शब्द करतेहुये मेघही के समान वेगवान् १८४ वह देवशत्रु वरदान से गर्व्वयुक्त होकर नृसिंह जी के ऊपर को दौड़ा परन्तु उन नृसिंहजी ने अपने अतितीक्ष्ण नखों से १८५ ॐङ्कारकी सहायता से समर में विदीर्ण करके उस दुष्टाधिराज दैत्यको मारडाला ॥

हरिगीतिका ॥

धरणी सुकाल शशाङ्क ग्रह सब सूर्य्य सब विदिशा दिशा १८६
गिरि गिरिश नद नदि सप्तसागर भे उजागर सहनिशा ॥
दितिजेन्द्र नाश विलोकि प्रमुदित भे सकल सुर भूसुरा १८७
ऋषिगण समेत नृसिंह प्रभुकी स्तुतिकरी अतिविस्तरा ॥

चौ० जो तुमदेव धरयोतनुयेहू । नरहरिरूप विगत सन्देहू १८८
यहि पूजिहैं परावर ज्ञानी । अरु भजिहैं पावनकरि बानी ॥
बोलेविधि तुम विधिभगवाना । रुद्रमहेन्द्र तुम्हींनहिंआना १८९
कर्त्ता भर्त्ता हर्त्ता जग के । अव्यय अज तुमहो प्रभु सबके ॥
प्रवरसिद्धि परसत्व परमहवि ।पररहस्यतुमसहितपरमछवि १९०
परयश परमधर्म्म तुम देवा । परमपुराण पुरुषगत भेवा ॥
परमसत्य परतप परपावन । परममार्ग्गपरमखसुरभावन १९१
होता परम कहत त्वहिं नाथा । पुरुषपुराण अनाथ सनाथा ॥
परमशरीर परम तुम योगा । परब्रह्म पर गिरा सुभोगा १९२
पररहस्यपरगति त्वहिं गावत । पुरुषपुराण आदि जगभावत ॥
इमिकहिस्तुतिकरिविधिभगवाना।लोकपितामहचढ़िनिजयाना १९३
ब्रह्मलोक कहँ गयहु तुरन्ता । जपत निरन्तर हरिभगवन्ता ॥
तदनन्तर बाजत सब बाजा । नचीं अप्सरा सहितसमाजा १९४
श्रीनृसिंह हरिगयहु तुरन्ता । क्षीरसिन्धु उत्तरतट अन्ता ॥
तहँ नरसिंह कलेवर थापी । परमप्रकाशित धर्म अलापी १९५
निजपुराण तनुधरि गरुड़ासन । गमनकीन तहँ जहँ न कुशासन ॥

अष्टचक्र युत यानारूढ़ा । परमविभूषित विगत विमूढ़ा १९६
पर अव्यक्त प्रकृति भगवाना । निजसुस्थान गयहु शुभयाना १९७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेनरसिंहप्रादुर्भावोनामपंचचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

दो० छियालिसे महँ है कहो अन्धक वध शिव कीन ॥
गायत्री अरु द्विजनकी महिमा कही प्रवीन १

(भीष्मजीने पुलस्त्यमुनि से पूँछा कि हे ब्रह्मन्! यह नृसिंहस्वरूपी श्रीहरिका अतीव अद्भुत व परममनोहर माहात्म्य तुमने वर्णन किया इसीतरहसे महादेवका वृत्तान्त वर्णन किया अब भैरवका वृत्तान्तकहो जैसे कि प्रभुसमर्थ ईश्वरने हिरण्यकशिपुनाम दैत्यराजको मारा कि जिस हिरण्यकशिपुके भयसे स्वर्गमें देवताओं के हृदय कांपते थे व जिसके भयसे पवन भी मन्द २ बहताथा व ऐसे ही सूर्य्य अतिघाम नहीं करतेथे व प्रजाओं के दण्डदेनेवाले यमराज जिसकी प्रजाओंसे मानो डरतेहीसेथे व ऐसेही इन्द्र व वरुण भी डरतेहीसे थे कहांतक कहें जिसकी आज्ञा में टिकेहुये देवलोग अत्यन्त भय से पीड़ितही रहते थे व सम्पूर्ण तीनोंलोक जिसके वशमें थे इसप्रकारका भी जो महान् हिरण्यकशिपु दैत्यथा उसे नखोंके अग्रभागों से नरसिंहरूपी श्रीविष्णुभगवान्ने विदीर्ण कर डाला सो उत्त) नरसिंहजीका माहात्म्य तुमने विस्तारसहितकहा पर हे ब्रह्मन्! इससमय हम अन्धकासुरको मारणसुना चाहते हैं जिसमें कि संक्षेपरीति से महादेव व श्रीहरिका माहात्म्य कहागयाहै १ यह सुनकर पुलस्त्यमुनि बोले कि उन देवदेवका भी उत्तम कर्म्म तुम सुनो भिन्न अञ्जनके ढेरकेसमान काला अन्धकनाम दैत्य हुआ २ जोकि बड़ी तपस्यासे युक्तथा इससे देवताओं से अवध्यथा उसने पार्व्वतीजीके संग क्रीड़ाकरतेहुये समर्थ महादेवजीको किसीसमय देखा ३ क्रीड़ा करतेहुये हरको देखकर तब उसने पार्वतीदेवी के हरने का मनकिया व विचारा कि हम इस देवीको आज हरते हैं

इसके वियोग से महादेव आप मरजायँगे ४ बस फिर यह लोक-सुन्दरी स्थिरहोकर हमारी भार्य्या होजायगी जिसका मुख कुँकुमके समान लालओष्ठों से युक्त सुन्दर व अतिप्रकाशितहै ५ यदि यह हमारी भार्य्या न हुई तो हमारे जीनेही का क्या प्रयोजन है इस मतिपर स्थितहोकर व मन्त्रियों का सम्मत लेकर ६ वह सेनाके योगको करतेहुये अपने सेनापति से बोला कि देवताओं के निपातन करनेवाले हमारे जैत्ररथको लाओ ७ हम विष्णु रुद्रादि सब देवताओंको जीतेंगे व पर्व्वतकी कन्याको हरलेंगे क्योंकि उसने हमारा मन हरलियाहै ८ तब उसके मन्त्रीने कहा कि इन्द्रादि देवताओंने परस्त्रीके संग अनुरक्त होनेके कारण कनकासुरको मारडाला है ९ इससे कोपयुक्त होकर महादेवादि देवताओंको हम मारडालेंगे क्योंकि उस कनकासुरको मारकर अन्धकासुरके भयसे १० इन्द्र शरण के लिये शङ्करजी के कैलासपर्व्वतपर गयेथे व द्वितीयाका अर्द्धचन्द्र शिरपर धारणकियेहुये देवेश देवदेवजी के प्रणामकरके ११ भयभीत इन्द्रने उनसे सब वृत्तान्तकहे कि हे देवमहादेव ! हमको अभयदानदेओ क्योंकि हम अन्धकासुरसे १२ डरते हैं इसका कारण यहहै कि उसके पुत्र कनकासुरको हमने आज समर में मारडालाहै इससे महाअसुर अन्धकासुर जबतक हमसे मारेहुये अपने पुत्र के वृत्तान्त न जाने १३ तबतक हमको भयपहुँचानेवाले उस दानवको वहीं रहते २ आप मारडालें वह क्रूर दानव स्त्री के लोभसे परभार्य्या हरलेताहै १४ इससे हे देवसत्तम ! वह सर्व्वथा आपसे वधपाने के योग्यहै इन्द्रका ऐसा वचन सुनकर रक्षक महादेवने १५ इन्द्रको अभयदान दिया कि हे पुरन्दर ! तुम न डरो इसप्रकार इन्द्रको अभयदान देकर अपने अद्भुतगणों के साथ अन्धकासुर के मारने के लिये कैलासपरसे द्वारकापुरीको आये १६ चलनेके समय महादेवजीने महाकाय व अन्धकके मारनेकेलिये भूतगणोंको भी साथ ले लियाथा १७ अपना विश्वरूप अतिभयङ्कर बनालियाथा जैसे कि भयङ्कर सर्प्पोंको अपने सब अंगों में लपेटलियाथा जटाओंमें मणि रत्नसहित बहुत से सर्प्प लटकालियेथे १८ व मारेतेजके युगान्त के

अग्निके समान प्रकाशितथे चन्द्रमा मस्तकपर शोभायमान होताथा पांचोंमुख दंष्ट्रांकुरोंसेयुक्त प्रज्वलित होतेथे १९ सर्प जो अंगोंमें लपटे थे वे बड़ाघोरशब्द करतेथे महादेवजीने अनेकसहस्र तो भुजा धारण किये थे उनमें बहुत अस्त्र धारण किये थे २० रत्नजटित व रत्नोंकेही बहुत से आभूषण धारणकिये थे व रणमें बड़ाशब्द करते थे सिंह कांचर्म तो पहिनेथे व व्याघ्रके चमड़ेको उत्तरीयबनायेथे २१ गजका चर्म्म ऊपरसेओढ़ेथे जिसमें भ्रमर उड़ २ बैठते व शब्दकरतेथे ऐसा रूप दैत्योंको भयदेनेवाला महादेवजी बनाकर २२ पृथ्वीपर कैलास परसे उतरेथे जो रूप देखतेही देखते दानवों का नाशकरनेवालाथा वहां अन्धकासुरभी समर में अपने पुत्रको मारेहुये सुनकर २३ बड़े कोपसे युक्तहोकर युद्धके नगारे बजवानेलगा व हाथी घोड़े रथ पैदर चारों अङ्गोंसे युक्त बड़ी धूमधामी सेनालेकर वहां पहुँचा जहां कि सब देवतालोग युद्ध करनेके लिये इकट्ठे स्थितथे २४ तब हाथी रथोंसे युक्त बड़ी सेना सहित युद्ध करनेके लिये उपस्थित दैत्यों को देखकर सब देवगण २५ अपनी रक्षा कहीं न जानकर श्रीशङ्करजी के शरणको गये उनको भयभीत देखकर महादेवजी ने कहा देवता-ओ भयभीत न होओ २६ ऐसा कहकर बड़ेभारी शूलको लेकर रक्षा करने के लिये उपस्थित हुये महादेवसहित सब देवताओं को फिर युद्ध करनेके लिये उद्यत देखकर अन्धकासुरने बहुत से बाण २७ चलाये व बहुतसे देवताओंके नामलेकर युद्धके लिये ललकारा सब देवगण भी बाणोंकी वर्षा करनेलगे व महादेवजीने ऐसे बाण चला-ये कि जिनके मुखोंसे अग्निकी चिनगारियां निकलती चलीजाती थीं २८ व रथपर चढ़ेहुये अन्धकासुरको देवगणोंने चलायेहुये शरों के प्रायःसे ताड़ितकिया कि वह शिथिलहोकर अपने रथपर आयुध रहित शिथिल होगया २९ व कुछकाल में स्वस्थहोकर उसने दैत्यों को बुलाकर युद्ध करनेके लिये नियतकिया परन्तु विविधप्रकार के आयुधोंसे देवताओंने उसकी सेनाको ऐसा मारा कि वह तितिर बि-त्तिर होगई वीर देवताओंने महादेवजीकी सहायतासे ऐसा पराक्रम किया दानवराज अन्धकने देखा कि हमारी सब सेनाको तो देवता-

ओंने छिन्न भिन्न करदिया है ३०।३१ व हमको महादेवने कोटिन बाणोंसे विदीर्ण कियाहै यद्यपि वह विह्वलीभूत होगयाथा परन्तु केवल धैर्य्य धारण करके दौड़कर ३२ उसने महादेवजीका धन्वा पकड़ लिया व उनको गदासे मारा व धन्वाको तोड़डाला चापके टूटजाने पर महादेवजी पृथ्वीपर गिरपड़े ३३ महादेवजीके पृथ्वीपर गिरनेपर तीनोंलोक कांपनेलगे सागरोंने अपने किनारोंको छोड़दिया व पर्व्वतोंने अपने कँगूरोंको छोड़दिया ३४ व सब नक्षत्र अपने २ स्थानों से चलायमानहुये परस्पर युद्धभी करनेलगे जब देवेश महादेवजी पृथ्वीपर गिरपड़े तो फिर अन्धकासुरने कुपित होकर गदासे ३५ नागोंके राजा वासुकि को मारा व उनको महादेवके अङ्गसे पृथ्वीपर गिरादिया तब शिवजीको छोड़कर नागराज भागकर अलग चले गये ३६ एक मुहूर्त्तभरमें स्वस्थ चित्तहोकर परमेश्वर शिवजी उठे फरशालेकर उन्होंने इधर उधर देखा परन्तु वह दानवराज वहां न दिखाईदिया ३७ किन्तु सैकड़ों माया जाननेवाला वह दानव तामसी मायाकरके महादेवजी को मोहित किया व अपने शरीरको उस अन्धकारमें उसने ऐसा छिपाया कि यह न विदितही हुआ कि कहां चलागया ३८ शम्भुके भयको पाकर यह न विदितहुआ कि अब वह पापी क्याकरेगा जब उसने ऐसी अन्धकार की मायासे देवताओंको आच्छादित करलिया तो देवगण बहुत व्याकुल हुये ३९ व सम्भ्रान्तमन होकर अपने कार्य्यके गौरवसे उन्होंने सूर्य्य देवका स्मरणकिया स्मरण करतेही मनुष्यका रूप धारण करके तेजोरूपी हो ऐसे प्राप्तहुये कि सब वह अन्धकार नष्टहोगया अन्धकारके नष्ट होनेपर व प्रकाशके प्रकट होनेपर ४०।४१ सब देवगण अग्नि के समान प्रकाशित नेत्रोंसे युक्त होकर स्कंद आदि बहुत आनन्दित हुये ४२ इसलिये ब्रह्मा विष्णुआदि सब देव सत्तम व षडाननादि सब गण मनुष्यरूपी श्रीसूर्यभगवान् की विविध प्रकारके स्तोत्रोंसे स्तुति करनेलगे जोकि ब्रह्मा विष्णु शिवसेभी श्रेष्ठ जगत्भरमें व्याप्त धिकने सिन्दूरके समान अरुण रूपको धारणकिये थे ऐसे सूर्य्यभगवान्‌को प्रकाशित देखकर पांचअङ्ग पृथ्वीपर झुँकाकर बार २ प्रणाम

करतेहुये महादेवजी देवदेव जगत्भरके नेत्ररूपभास्करजीको चिकनी दृष्टिसे अवलोकन करके चिकनी व गम्भीरवाणीसे बोले कि हे देव! आप अपने तेजोंसे तीनोंलोकोंको प्रकाशित करातेहुये व पूर्णकराते हुये सदा लोकके उपकारके लिये उदित होते हैं ४३। ४६ दैत्योंकी मायासे व्याकुल चित्त सब देवगण व अन्य प्राणियों के भी प्रकाशक व प्रणाम करनेके योग्य तुम्हींहो, ४७ व तुम्हीं इस सम्पूर्ण संसार सागरसे सब प्राणियोंको कर्णधारके समान उत्तीर्णकरातेहो ४८ व विविधप्रकार के यज्ञोंसे भक्तिपूर्व्वक सबलोग तुम्हारी पूजाकरते हैं इसीसे उन लोगों के कल्याणके लिये भास्करजी आप युक्त होते हैं ४९ जो सूर्य्य उदयाचलके शिखरपर मुकुटरूप स्थितहोकर पुष्पों के तुल्य प्रकाशित अपने किरणोंसे व्याप्त होकर सबको प्रकाशित करते हैं व सर्वदिशा विदिशाओं को प्रकाशित करते हैं वे सविता इस लोकमें सबके विभव के लियेहों ५० दिव्य अरगजा चन्दनादि अङ्गोंमें लगायेहुये अपने कल्याणके अर्थी ब्रह्मा इन्द्र विष्णु अग्नि वरुण कुबेर आदि देवगण व ऋषियों के समूहों से प्रतिदिन अपने कल्याणके अर्थ तुम्हारा दिव्यशरीर सदापूजित होता है व जो कोई अपने गृहमें विचित्र पदोंके मण्डलोंसे युक्त वाणियोंसे तुम्हारे देदीप्यमान देहकी स्तुति सदा करते हैं वे लोग नित्य औरों के गृहों में जाकर हाथ उठाकर दान देते हैं ५१।५२ हे देव! कुष्ठरोगकी फुंसियों से पीड़ित अङ्ग व नख केश गिरेहुये विशीर्णदेह से युक्त जो कोई तुम्हारे चरणोंकी सेवामें रत होते हैं वे मनुष्य कुष्ठसे छूटकर सुन्दर सोलहवर्ष की अवस्थावाले मनुष्य के समान दिव्यशरीर होजाते हैं ५३ सामवेदके मन्त्र तुमको साम कहकर यज्ञके अर्थ गाते हैं व अध्वर्य्युलोग अथर्व्वण कहकर गाते हैं व ऋग्वेदवाले ऋग्मूर्त्ति कहकर गाते व यजुर्व्वेदवाले तुमको पितर कहते हैं ५४ व देव ये सब मनुष्यलोग सभामें बैठकर सब देवताओं के सभासद तुमको कहते हैं व किन्नर गन्धर्व्व चारणगण तुमको अपनी सभाके सभासद कहते हैं हमारी ज्ञानमें तुम सबोंके रूपधारण करतेहो इससे सब कुछहो ५५ व जो मनुष्य पूजा करनेके योग्य प्रकाशित तुम्हारे किरणोंकी

पूजा नहीं करते वे द्रव्यहीन विवस्त्र क्षुधा से दुर्बल शरीर होकर मिट्टीका खप्पर हाथमें लेकर पराये द्वारोंपर जा २ कर भिक्षा मांगते फिरते हैं ५६ हे भगवन् ! फूलेहुये कमलदलके समान नेत्रवाले व कुछ विलास से ललित चञ्चल पुतरी से युक्त अतिसुन्दर तरहारसे मनोरम ऊँचे व मोटे स्तनोंके भारसे खिन्न ५७ केलाके खम्भोंके तुल्य चढ़ाउतार जङ्घाओंसे युक्त पृथु मोटे कटिसे युक्त व मणियोंसे निर्म्मित क्षुद्रघण्टिकाओंसे युक्त ललाटपटलमें चन्दनादिकोंसे चिह्नित तुम्हारे शरीरकी जो पूजा करते हैं वे सब कुछ पाते हैं ५८ हे भगवन् ! जो अपने गृहोंमें तुम्हारी पूजा करते हैं उनके भवनों में तूतरे वचन बोलनेवाले बालक व नूपुरादि भूषणोंसे भूषित स्त्रियोंके समूह सदा विराजते रहते हैं इससे हे देव ! संसार को उद्धार करनेवाले तुम्हींहो ५९ हे देव ! तुम ब्रह्माहो तुम श्रीहरिहो पवन अग्नि रुद्र यमराज वरुण इन्द्र सोम बृहस्पति पृथ्वी ईश्वर यज्ञ यज्ञपति कुबेर व अपराजित तुमहो ६० हे भगवन् ! तुम्हारे रथके घोड़े तुमको लेकर पृथ्वीपर से आकाश में जाकर विराजते हैं उनकी द्वारा तुम इस आकाश में प्रकाशित विराजतेहो दिनरात्रि तुम्हारे अश्व चला करते हैं पर थकते कभी नहीं ६१ ध्यानके एक योगमें निरत समाधिमात्रसे तुम्हारे तुरीयपद को जो लोग स्मरण करते हैं हे अनन्त मूर्ते ! वे सब रोगोंसे छूटकर आनन्दपूर्व्वक शाश्वत निरन्तर ब्रह्मपद को जाते हैं ६२ जो ब्रह्मपद जन्म रोगसे रहित परमपुराण ईश जरा मरण शोक भयसे रहित व स्थूलभावकी गणनासे अगणित विशुद्ध वेदान्तवादियों से सर्व्वोपरि पठित है ६३ हे सुरासुरोंके शिरोमुकुटों से निघृष्ट चरणयुगल अमल चारुमूर्त्तिवाले भानुदेव ! भक्तिसे तुम्हारी अग्नि पुञ्जसमान प्रकाशित मूर्त्तिकी उपासना करके बहुतकालतक स्वर्गों में निवास करते हैं ६४ हे भूतेश ! हे भूतवरद ! हे अव्ययात्मन् ! हे आकाश में अट्टहास करनेवाले ! हे सवितः ! हे भुवनैकदीप ! व हे ऋक् साम यजुर्व्वेदों के मन्त्रोंमें निवास करनेवाले ! हे सृष्टिपालन संहार करनेवाले ! हे लोकनाथ ! तुम्हारे नमस्कार है ६५ हे देव ! सब जन्मोंमें कृपण व दीन इस संसार में जन्मज-

न्मान्तर डूबतेहुए व नानाप्रकार के सुन्दर मनोरथों को करतेहुये इस जीवको तुम्हीं उबारो तो उबरे क्योंकि निरन्तर जरा रोग शोक भयसे पीड़ित यह जीव घोर उत्पातोंसे युक्त रहता है ६६ हे भगवन्! जो कोई प्रातःकाल मध्याह्न व सायङ्काल में तुम्हारा स्मरण नित्य करता है वह यहां धर्म्म अर्थ काम सब पाता है व अन्त में तुम्हारे लोकको जाता है ६७ व नित्य सूर्य्यदेवसे मनोवाञ्छितको पाताहै इससे हे देवदेवेश! हे भक्तोंके अभयङ्कर! तुम्हारे नमस्कार है ६८ व हे सुब्रह्मण्य! तुम्हारे नमस्कारहै हे सर्व्वदेव नमस्कृत! तुम्हारे नमस्कार है तिग्म किरणवाले तुम्हारे नमस्कार है जगत् के नेत्र तुम्हारे नमस्कारहै ६९ प्रभाकर तुम्हारे नमस्कारहै हे जगज्जय जगत्पते! तुम्हारे नमस्कारहै हे दिवाकर! इस दानव मुख्य अन्धकासुरसे हम बहुत पीड़ितहैं ७० हे जगत्पते! कहिये क्याकरें कैसे इसे मारें इतनी स्तुति सुनकर सूर्य्यदेव शिवजीसे बोले कि सैकड़ों मायाओंमें विशारद इस पापिष्ठ दैत्यको शूलसे मारिये ७१ व शूलसे अन्धकको मारकर अधिकजयको लीजिये हे देवेश! शूलको लीजिये भय न कीजिये यह सुनकर शिवजीने शूल लेकर ७२ अन्धकासुरको मारा परन्तु उसशूलको उसपापी अन्धकने शिवजीके हाथहीसे छीन लिया व घूमकर उससे शिवजीकोही उसने ताड़ितकिया ७३ अन्धकसे ताड़ितहोकर शिवजीने पाशुपतनाम अत्युग्रबाण उसके ऊपर चलाया शङ्करजीने अपने धन्वाको अच्छेप्रकार खींचकर जो पाशुपत अस्त्र चलाया ७४ रुद्रजीके बाणसे विदीर्ण अन्धकासुरके रुधिर से सैकड़ों सहस्रों वैसेही अन्य अन्धकासुर उत्पन्न होगये ७५ उन सबों को जब रुद्रजी ने विदीर्ण किया तो फिर उनके अङ्गों से अन्य अन्धकासुर प्रकटहुये यहांतक कि इतने अन्धकासुर होगये कि जिनसे सम्पूर्ण जगत् भरगया ७६ तब उस मायावी अन्धकासुरको इस प्रकार बढ़ते हुये देखकर देवदेव महादेवजी ने उस अन्धकके रुधिर के पीनेके लिये बहुतसी मातृकाओं को उत्पन्न किया ७७ जिनके नाम माहेश्वरी ब्राह्मी सौरी बाडवी सौपर्णी वायवी शिखिनी तैत्तिरी ७८ शौरी सौम्या शिवा शिवदूती चामुण्डा वारुणी वाराही ना-

रसिंही वैष्णवी विभावरी ७९ शतानन्दा भगानन्दा पिच्छिला भ-
गमालिनी बाला अतिबला रक्ता सुरभी सुखमण्डिता ८० मातृनन्दा
सुनन्दा बिडाली शकुनी रेवती महापुण्या व शिखिपट्टिका ८१ जब
इन मातृकाओं को शिवजी ने उत्पन्न किया तो उन्होंने सब अन्ध-
कासुरों के अङ्गोंका रुधिर चूसलिया व शिवजी ने त्रिशूल से सबों
को मारडाला ८२ रक्तरहित वह दैत्य सूखगया महाबल रुद्रने शूल
से छेदकर देवतों की हज़ारवर्ष रक्खा मरने न पाया तब उस दैत्य
ने भक्तिसे महादेव की स्तुतिकी ८३। ८४ कि हे शम्भो! तुम संसार
के नाशके हेतुहो तुम्हारे नमस्कारहैं व हे देव वर! प्रसन्नहो तुम्हारे
नमस्कार हैं पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश सूर्य्य चन्द्र यज्वा
संसार की भावना करनेवाले अतिशय से तुम्हींहो ८५ बाणासुर
बाहुवाद्य से तुमको प्रसन्न करके तुम्हींसे अपने पुरमें रक्षाको प्राप्त
भया व रावण तुम सहित कैलास अपने भुजों से उठाकर ८६ सब
राक्षसों का मालिक हुआ और उसका पुत्र भी इन्द्रको जीतनेवाला
हुआ इससे हे हर! तुम्हीं संसार की भयको दूर करतेहो व परम-
उदार सब देवताओं में श्रेष्ठहो इससे हमारे भी सुखके करनेवाले
हो ८७ व सबके जीतनेवाले व मनोरथ देनेवाले तुम्हींहो व तुम्हारे
कमलरूपी चरण शरणागत रक्षक हैं व हे ईश! जो नर तुम्हारे क-
मलरूपी चरणों को हृदय में ध्यान करता है उसको तुम वाञ्छित
फल देतेहो ८८ मुनीश्वरोंने लिङ्गरूपी तुमको आदरसे पूजनकरके
अपने मनोरथों को पायाहै व इस जीवने भव उद्भवरूप इस प्रपंच
के रचनेवाले तुम्हारा स्मरण करके जीवन को प्राप्तकिया है ८९ हे
ईश्वर! तुम्हारे दास पदपद में तुम्हारे चरणोंका स्मरण करके सब
कामना पाते हैं परञ्च हे भक्तवत्सल! मैं तो मूढ़हौं तुम्हारी स्तुति
भी नहीं करने जानता ९० इससे मैं रणमें आकर ईश्वर से दया
चाहताहूं जब दैत्यने महादेवजी की इस तरहसे स्तुतिकी भक्तिस-
हित आदर से ९१ तब तो महादेवजी ने उसको गणोंका मालिक
बनाया व भृंगीरिटी नाम किया पुलस्त्यजी ने कहा कि हे राजन्!
यह भवहारी हरकी महिमा तुमसे ९२ कहा जोकि विघ्नोंको नाश

करनेवाली व भक्तोंको सुख देनेवाली भीष्मजीने पुलस्त्यजीसे पूँछा कि भला मनुष्यको भी देवत्व होताहै सुख राज्य यश धन यश ९३ जय भोग्य आरोग्य आयु विद्या श्री सुत बन्धुवर्ग ये तो मिलते हैं परन्तु किस कारण से मिलते हैं यह हमारे सुनने की इच्छा है हे विप्रसत्तम ! हमसे सबकहो ९४ पुलस्त्यमुनि बोले कि सब ब्राह्मणों के गुणोंसे युक्त विप्र पृथ्वीपर क्या तीनोंलोकों में विप्रदेवके नाम से प्रसिद्ध व पवित्र युग २ से चलेआतेहैं ९५ इस से मनुष्यशरीर में ब्राह्मणही देवहोते हैं अन्य कोई नहीं इसी से ब्राह्मणों की पूजा पृथ्वीपर करके देवगण अक्षयस्वर्ग के सुख भोगते हैं व राजालोग ब्राह्मणों की पूजा करके सुखसे पृथ्वीको भोगते हैं अन्यलोग धन सुख कल्याण भोगते हैं ९६ इससे लोकमें विप्रके समान अन्य कोई नहीं है क्योंकि ब्राह्मण देवताओं के भी देव हैं ब्राह्मण साक्षत्धर्म-मयहोते हैं व पृथ्वीपर भुक्ति मुक्ति सब देतेहैं ९७ ब्राह्मण सबवर्णों के गुरु होते हैं इससे सदा पूज्य होते हैं जैसे तीर्थों का जल पवित्र व पापरहित होता है ऐसेही ब्राह्मण देव होते हैं ब्रह्माजी ने ब्राह्मण को सब देवताओं का स्थान पूर्व्वकालमें बनाया है ९८ इसीअर्थ को एक समय नारदजी ने ब्रह्माजी से पूँछाथा कि हे ब्रह्माजी ! किसकी पूजा करने से श्रीविष्णुभगवान् प्रसन्न होते हैं ९९ यह सुनकर ब्रह्माजी ने कहा कि जिसके ऊपर ब्राह्मण प्रसन्न होते हैं उसके ऊपर श्रीविष्णु प्रसन्न होते हैं इससे ब्राह्मणकी सेवा करने वाला पुरुष परब्रह्म को प्राप्त होता है १०० विष्णु ब्राह्मणों के देहों में सदा बसते हैं इस में सन्देह नहीं है इससे ब्राह्मणकी पूजा करते ही उसी समय विष्णुभगवान् सन्तुष्ट होजाते हैं १०१ व जोलोग दान मान अर्चनादि करके व विप्रकी पूजा करते हैं उसने प्रिय दक्षिणा युत मानों सहस्रों यज्ञ किये १०२ ब्राह्मण का मुख ऊषर व कण्टक रहित खेत है इससे सब बीज उसमें बोने चाहिये क्योंकि यह खेती सबकालों में उत्पन्न होती है १०३ जो दान अच्छे पदार्थों का होता है व जो मनोरम होता जिसके पातेही ब्राह्मणका चित्त प्रसन्न होजाताहै सागरका अन्तहै पर उस दानका अन्तनहीं

है १०४ जो लोग आततायीभी ब्राह्मणको मनसेभी कभी नहींमारते वे लोग अपने मनके अनुकूल लोकको जातेहैं जोकि देवताओंकोभी दुर्लभहै १०५ जिसके गृहमें आकर विद्वान् ब्राह्मण निराशहोकर नहींजाता उसके सब पाप नष्ट होजाते हैं व वह अक्षय स्वर्ग लोकको भोगताहै १०६ काल देश व पात्रमें जो धन ब्राह्मणको दियाजाताहै उस धनको अक्षय जानो क्योंकि वह जन्म २ तक बनारहताहै १०७ ब्राह्मणोंकी पूजाकरके मनुष्य दरिद्र नहीं होता न आतुर होताहै न कभी युद्धादिमें उसकाचित्त कातरहोताहै व वह मनके अनुकूल स्त्रीपाताहै जो ब्राह्मणों की पूजा करताहै १०८ इससे साहसकर्म्म करके ब्राह्मणको पर्व्वों में कुछ देनाचाहिये क्योंकि धनका धर्म्म करनाही फलहै व उससे अक्षय लाभ होताहै १०९ जो हाथ ब्राह्मण के चरणके नीचे दबकर घावयुक्त वा पीड़ित होता है वही हाथ श्रीकर कहाता है व अन्य हाथ केवल कर्म्मकारी हाथ हैं ११० विप्रके पादकी धूलिसे पवित्र व विप्रके चरणके प्रक्षालित जलके विन्दुओं के पीने से प्राणी सब पापों से छूटकर स्वर्ग को जाते हैं १११ ब्राह्मण के पादकी धूलिसे गृह व चौतरे पवित्र होजाते हैं इससे वे पुण्यतीर्थों के तुल्य होजाते हैं सब यज्ञ कर्म्म करनेके लिये प्रशस्त होजाते हैं ११२ ब्रह्माके मुख से प्रथम पापरहित ब्राह्मणलोग उत्पन्न हुये हैं फिर सृष्टि संहार के कारण वेद उन्हींके मुखमें स्थित कराके प्रकट करायेगये हैं ११३ इससे विदितरहै कि ब्राह्मणोंके मुखों में परमेश्वर के स्थापित करायेहुये वेद हैं इससे वेदवादी ब्राह्मणही लोग सब यज्ञ कर्म्म करानेके लिये पवित्रहैं ११४ पितृयज्ञ विवाह अग्निकार्य्य व अन्य सब शान्तियों में व सब स्वस्त्ययनों में ब्राह्मण लोग प्रशस्त हैं ११५ व ब्राह्मणही के मुखसे देवतालोग हव्य भोगते हैं व प्रेत असुरादिक बलि भोगते हैं ऐसेही पितरलोग विप्रही के मुखसे कव्य भोगते हैं ११६ यज्ञकर्म्मों में देवताओं व पितरोंको जो कोई दान होम बलि दे वह ब्राह्मणही के मुखसे दे क्योंकि विना ब्राह्मणोंको दिये व विना खिलाये सब निष्फल होजाता है ११७ जिस यज्ञमें ब्राह्मणोंको नहीं दियाजाता व विप्रोंसे जो यज्ञ श्राद्धादि

नहीं कराये जाते उनमें नित्य प्रेत दैत्य राक्षसही भोग करते हैं इस से ब्राह्मणोंकोही बुलाकर सब कर्म्म करवाने चाहियें ११८ पुण्यकाल में व अयोध्या प्रयाग पुष्कर काशी आदि पुण्यदेशमें सत्पात्र ब्राह्मण को श्रद्धापूर्व्वक देने से लक्षगुण फल होता है ब्राह्मण को देखकर भक्ति से नमस्कार करना चाहिये ११९ तो ब्राह्मण कहताहै चिरंजीव इसीसे मनुष्य दीर्घायु होजाताहै जो ब्राह्मणकी श्रद्धा नहीं करता व नमस्कार नहीं करता इस दोष से आयु क्षीण होजाती है लक्ष्मी का नाश होजाता है दुर्ग्गति होती है १२० व ब्राह्मणों की पूजा करके विप्रोंसेही श्रद्धापूर्व्वक यज्ञ कर्म्मादि करनेकराने से करनेवाले की आयु बढ़ती यश बढ़ता व विद्या धनकी वृद्धि होती है ॥

चौपै० ब्राह्मणपदधारी जहँ नहिं धारी वेद शास्त्र नहिं पाठा।
जहँनहिंस्वधस्वाहास्वस्तिप्रवाहा ननतिसहितअँगआठा॥
ऐसे गृहपुञ्जा सबविधि लुञ्जा कहत शास्त्र सबओरा।
वे अहैं मशाना सब जगजाना करिकै बहुत निचोरा १॥

इतना सुनकर नारदजीने ब्रह्माजी से पूँछा कि कौन विप्र पूज्यतम होता है व कौन अपूज्य होता है १२१ । १२२ हे गुरो ! विप्र के लक्षण यथातथ्य हम से कहो ब्रह्माजी बोले कि सदाचार युक्त इन्द्रियों को दमन कियेहुये पापों से रहित तीर्थभूत अनिन्द्य श्रोत्रिय नित्यपूज्य होताहै नारदजीने पूँछा हे तात ! श्रोत्रिय कैसे जाना जाता है सत्कुल में उत्पन्न होने से वा असत्कुल में उत्पन्न होने से १२४ । १२५ सत्कर्म्म करनेवाला वा असत्कर्म्म करनेवाला कौन ब्राह्मण पूज्यहोता है ब्रह्माजी बोले कि जो अच्छे श्रोत्रियके कुलमें उत्पन्नभी हुआहो पर सदाचारी न हो दुराचारी हो तो वह ब्राह्मण अपूज्य है १२६ व असत्क्षेत्र व असत्कुलमें भी उत्पन्नहो पर सदाचारादि से युक्त हो वह पूज्य है जैसे कि व्यासमुनि व वैभाण्डक मुनि देखो विश्वामित्र क्षत्रिय के कुल में उत्पन्नहुये परन्तु हमारे समान हैं १२७ वशिष्ठ वेश्या के पुत्र हैं इसीप्रकार अन्य बहुत से अन्त्यजादि सिद्ध होगये हैं इस से हे पुत्र ! अच्छे श्रोत्रियादिकों के लक्षण सुनो १२८ पृथ्वी तीर्थभूत है इसमें सब पापों के

नाशकेलिये ब्राह्मण से ब्राह्मणी में जन्म लेनेसे ब्राह्मण कहाताहै जब सब संस्कार वेदविधान से होते हैं तब द्विज होता है १२९ विद्या पढ़ने से विप्रताको प्राप्तहोताहै जिसमें तीनों बातें होती हैं वह श्रोत्रिय कहाताहै १३० जो विप्र विद्यासे पवित्रहो मन्त्रों से पवित्रहो व देवताकी पूजादि करने से पवित्रहो व तीर्थ स्नानादिकों से पवित्र हो वह पूज्यतम होताहै सदा नारायणका भक्त शुद्धान्तःकरण १३१ जितेन्द्रिय जितक्रोध सबजनों में समभाव रखनेवाला गुरुदेव व अतिथिका भक्त माता पिताकी शुश्रूषा में रत १३२ व जिसका मन परस्त्री में कभी न मोदित होताहो जो नित्य पुराणोंकी कथा कहताहो व धर्म्मशास्त्र निरन्तर कहता सुनताहो १३३ ऐसे ब्राह्मण के दर्शन मात्र से अश्वमेध का फल होताहै व उसके संग वार्त्तालाप करने से गंगाजलके स्पर्श करने का फल होता है १३४ व जो ब्राह्मण नित्य व्रतों से पवित्र रहताहै व नित्यस्नान करने और ब्राह्मणों की पूजासे पवित्र रहताहै मित्र अमित्र सब के ऊपर दयावान् रहताहै व सब जनों में समभाव रखताहै १३५ व पराया धन तो क्या वनमें पृथ्वी पर पड़ेहुये पराये तृणको भी नहीं लेता काम क्रोधादिकों से निर्मुक्त रहता व इन्द्रियों से जो पुरुष अजित होताहै १३६ घरमेंभी आगई हुई पराई स्त्रियोंको जो मनसे भी नहीं ग्रहण करता व गायत्री का जाप नित्यकरताहै जो गायत्री तीनपदकी होती है व यजुर्व्वेद में वर्णितहै व चतुर्व्वेदमयी शुद्ध चौबीस अक्षरोंसेयुक्त होतीहै सो इस गायत्री का भेदजानकर तब ब्राह्मण विप्रोंकी पदवी को प्राप्त होता है अन्यथा ब्राह्मण होताही नहीं इतना सुनकर नारदजीने पूँछा कि गायत्रीका क्या लक्षणहै व उसके प्रत्येक अक्षरसे कौन गुण उत्पन्न होताहै १३७ व उसकी कुक्षि चरण गोत्र अच्छेप्रकार निश्चयकरके कहो ब्रह्माजी बोले कि गायत्रीका गायत्री तो छन्दहै व सूर्य्य देवताहैं १३८ शुक्लवर्ण है अग्निमुखहै व विश्वामित्र ऋषिहैं ब्रह्माजीके शिर पर आरूढ़ रहतीहै व विष्णु उसकी शिखाहैं व रुद्रके हृदयमें स्थित रहती है १३९ उपनयन में उसका विनियोग होताहै व सांख्यायन उसका गोत्र है उसके चरण तीनोंलोक हैं व पृथ्वी उसकी कुक्षि में

संस्थित रहती है १४० पादसे लेकर मस्तकपर्य्यन्त चौबीस स्थानों में उसका न्यास होता है चौबीस अक्षरोंका न्यासकरके प्राणी ब्रह्मलोकको पाताहै १४१ उसके प्रत्येक अक्षरके देवताओं को जानकर ब्राह्मण विष्णुभगवान् की सायुज्यताको पाताहै अब गायत्री के अक्षर व उनके लक्षण कहेंगे १४२ इसमें अठारह और सात वा पांच ब्रह्मयजु अक्षर हैं अर्त्थात् वरेण्य पदके विभाग करने पर चौबीस नहीं तो तेईसअक्षर हैं व यह गायत्री यजुर्व्वेदकी है इस मन्त्र में प्रथम ॐक्कारसे प्रारम्भ कियाजाताहै व तकारपर्य्यन्त जलमें स्थित होकर सौबार जपाजाता है १४३ इतने सौबारही के जापसे किरोड़ों उपपातक व अतिपाप मिटजाते हैं व ब्रह्महत्यादि महापातकोंसे भी मुक्त होकर जपनेवाले हमारे लोकको जाते हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है १४४ ॐमग्नेर्व्वाक् पुंसिसयजुर्व्वेदेन जुष्टात्सोमम्पिब स्वाहा यह विष्णुमन्त्र महामन्त्र है व माहेश्वरमन्त्र है १४५ देवी सूर्य्य गणेश व अन्य देवताओंका भी यह मन्त्रहै व गायत्री भी इसीप्रकार विष्णु आदि सब देवताओंका मन्त्रहै सो चाहे ब्राह्मणों के जैसे कैसे कुलमें उत्पन्नहो पर गुणवान्हो व गायत्री मन्त्र नित्य जपताहो १४६ वह साक्षात् अद्वय ब्रह्मरूप होताहै इस से प्रयत्नसे ऐसा ब्राह्मण पूजनीय होताहै दान सबपर्व्वों में विधिपूर्व्वक देना चाहिये १४७ क्योंकि देनेवाला कोटिजन्मतक अक्षय शुभ फलपाताहै व जो ब्राह्मण वेद पढ़ने में निरत रहताहै व औरों को पढ़ाता रहता है १४८ व लोगों को धर्म्म सुनाताहै मोक्ष प्राप्तहोने के आचार श्रुति व स्मृति सुनाताहै पुराण व योगशास्त्रादि संयम के ग्रन्थ सुनाताहै व धर्म्मसंहिताओं को सुनाता है १४९ अन्य सब लोगोंको सुनाकर फिर ब्राह्मणों को भी सुनाताहै वह ब्राह्मण विष्णुके समान स्वर्गादिकों में पूजित होताहै व इस लोकमें भी देवताओं के समान पूजनीय होताहै १५० ऐसे ब्राह्मण को जो कुछ दियाजाता है वह अक्षय होजाताहै व ऐसेही जो तीर्थों के करने से पवित्र पापरहित विप्रकी पूजा करता है वा सम्मान करता है वह मनुष्यभी वैकुण्ठको जाता है १५१ कदाचित् ऐसा ब्राह्मण कुछ पापभी करे पर पाप उसको फिर

न लगें जैसे कि चाण्डालके गृहमें स्थित सूर्य्य व अग्निको कुछ पाप नहीं लगता १५२ ऐसे तपस्वी पण्डित विज्ञानी ब्राह्मण सदा पवित्रही रहते हैं व यज्ञ कराने से पढ़ानेसे अपने से नीचकुलकी कन्याके सङ्ग विवाह करने से व असद्दान लेने से अच्छे ब्राह्मणोंको कुछ दोष नहीं होता क्योंकि विप्रलोग अग्नि व सूर्य्य के समान होते हैं १५३ असद्दान लेनेके दोषोंको ब्राह्मणों के कियेहुये प्राणायाम नाशकर डालते हैं जैसे वायु आकाश में बादरों को उड़ालेजाताहै वैसेही प्राणायाम पापोंको उड़ालेजाते हैं १५४ प्राणायाम सहित गायत्री के प्रत्यक्षरके देवताओं व अक्षरोंको अपने अङ्गों में न्यास करके जो कोई ब्राह्मण नित्य जपता है १५५ वह कोटि जन्मके कियेहुये सब पापोंसे छूटकर ब्रह्माके स्थानको प्राप्त होकर फिर प्रकृति से परब्रह्म में लीन होजाता है १५६ इससे हे नारद! प्राणायामयुक्त गायत्रीको जपो नारदजीने पूँछा कि हे ब्रह्मन्! प्राणायाम कैसे कियेजाते हैं व गायत्री मन्त्रके प्रत्येक अक्षरके देव कौन२ हैं १५७ हे तात! उनके अङ्गन्यास व देवता यथाक्रम हमसे कहो क्योंकि हमारी इसके जानने सुनने में बड़ीप्रीति है ब्रह्माजी बोले कि गुददेशमें अपान नाम वायुरहताहै व हृदयमें प्राणवायु विराजताहै १५८ इससे गुदको सिकोड़कर वहां के अपानवायुको प्राण वायुमें मिलावे फिर हे पुत्र! पूरकसे उत्तम कुम्भकको युक्तकरे फिर रेचककरे १५९ इसप्रकार तीन प्राणायामकरके फिर ब्राह्मण गायत्री को जपै इस रीतिसे जो गायत्री जपताहै उसके सब पापोंका सञ्चय भी हो तो १६० नष्टहोजाताहै व अन्य छोटे पाप तो प्राणायामरहित भी गायत्री के एकबार के भी जपने से नष्टहोजाते हैं प्रत्यक्षर के स्वरको जानकर अपने शरीरके अङ्गोंमें विन्यास करके १६१ प्राणी ब्रह्मता को प्राप्त होताहै बस पूरा फल हम नहीं कहसक्ते हे पुत्र! गायत्री के प्रत्यक्षरके जो देवता हैं सुनो हम कहते हैं १६२ जिनको जपकर फिर ब्राह्मण माताके स्तनका दुग्ध नहीं पीता गायत्री के प्रथम अक्षरके अग्नि देव हैं दूसरे के वायु १६३ तीसरे के सूर्य्य चौथे के विजय पांचयें के यमराज छठें के वरुण १६४ सातयें के

बृहस्पति आठयें के पर्ज्जन्य नवयें के इन्द्र दशयें के गन्धर्व १६५
ग्यारहयेंके पूषा बारहयेंके मित्र तेरहयेंके त्वष्टा चौदहयेंके वसु १६६
पन्दरहेंके मारुत सोलहयें के सोम सत्रहेंके अङ्गिरा अठरहेंके विश्वे-
देव १६७ उन्नीसयें के अश्विनीकुमार बीसयें के प्रजापति व इक्की-
सयें के सर्व्वदेव १६८ बाईसयें के रुद्र तेईसयें के ब्रह्मा व चौबीसयें
के विष्णुभगवान् देवहैं बस येही सब अक्षरों के देवहैं १६९ जप
काल में इन देवताओं की चिन्तना करने से उन देवताओं के साथ
उसकी सायुज्य होती है इन देवताओं के जाननेसे सब वाङ्मय
विदित होजाताहै १७० व सबपापों से छूटकर कर्त्ता ब्रह्माके स्थान
को जाताहै गायत्री का न्यास प्रथम पण्डितको चाहिये कि अपने
शरीर में करे १७१ पादादि मस्तकपर्य्यन्त अपने शरीरमें चौबीस
स्थानोंमें चौबीसों अक्षरोंका न्यासकरे जैसे कि योगी विचक्षण तत्
इसको पाद के अँगूठे में न्यासकरे १७२ सकारको गुल्फदेश में व
विकारको दोनों जङ्घाओंमें विन्यासकरे तुकारको जानुओंके मध्य देश
में वकारको ऊरुदेश में विन्यास करे १७३ रेकारको गुदस्थान में व
णकारको अण्डकोशमें यंकारको कटि देशमें भ इसको नाभिमण्डल
में न्यासकरे र्गोको नाभिमें दे को स्तनों में व वकारको हृदयमें स्य-
कारको करदेश में १७४।१७५ धीकारको मुखदेशमें मकारको तालु
में न्यासकरे हिकारको नासिकाके अग्रभागमें धिकारको नेत्रोंमें वि-
न्यासकरे १७६ योकारको भौंहोंके मध्य में व दूसरे योकार को ल-
लाट में स्थापितकरे नःकारको मुखके वामभागमें व प्रकारको मुख
के दक्षिणभागमें १७७ चोकारको मुखके पश्चिम दकारको मुख के
उत्तरभाग में यात्कारको शिरमें न्यासकरे इसप्रकार सब अङ्गों में
विन्यास करके ध्यानावस्थितहो १७८ इन सबका विन्यासकरके वह
धर्म्मात्मा ब्रह्म विष्णु शिवरूपहोजावे व महायोगी महाज्ञानीहोकर
पर निर्व्वाण को पहुँचे १७९ सन्ध्याकाल का यथार्त्थ न्यास और
सुनो वह इसप्रकारसेहै ॐभूः इसको हृदयमें न्यासकरे ॐभुवः इस
को शिरमें १८० ॐस्वः इसको शिखा में ॐतत्सवितुर्व्वरेण्यम् इस
को शरीरमात्र में विन्यस्तकरे ॐभर्गोदेवस्यधीमहि इसका दोनों

नेत्रों में विन्यासकरे १८१ ॐधियोयोनः प्रचोदयात् इसका दोनों हाथों में ॐमापोज्योतीरसोऽमृतम्ब्रह्मभूर्भुवस्स्वरोम् इससे जल स्पर्शमात्रही से सबपापों से छूटकर श्रीहरिके पुरको जाता है १८२ ॐभूः ॐभुवःॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐतत्स-वितुर्व्वरेण्यम्भर्ग्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् ॐम्ओमापो ज्योतीरसोऽमृतम्ब्रह्मभूर्भुवस्स्वरोम् ॐम् यह सातव्याहृती व १२ ॐङ्कारयुक्त गायत्रीमन्त्रहै इन व्याहृती व ॐङ्कारों समेत गायत्री सन्ध्याकाल में कुम्भक पूरक रेचक प्राणायामों में तीन२ बार पढ़ी जाती है व सूर्य्योपस्थान में केवल चौबीस अक्षर की गायत्री को जपकर महाविद्याका अधिपहोता है व ब्रह्मत्वको पाता है १८३ हे पुत्र! अब ६ कुक्षियों के लक्षणोंसे युक्त गायत्री यत्नसे सुनो जिसको जानकर ब्राह्मण परब्रह्मके स्थानको जाताहै १८४ ॐतत्सवितुर्व्व-रेण्यम्भर्ग्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् १८५ अब पंचशीर्ष गायत्री का लक्षण कहते हैं ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपःॐसत्यम् ॐतत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्ग्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् १८६ इसको जपकरके फिर गायत्री से अपने अङ्गोंमें न्यासकरे तो सब पापसे विनिर्म्मुक्त होकर श्रीविष्णुकी सायुज्यता को प्राप्तहोताहै १८७ ॐभूः पादाभ्यान्नमः ॐभुवर्जानुभ्याम् ॐ स्वःकट्याम् ॐमहर्न्नाभौ ॐजनःहृदये ॐतपः कण्ठे ॐसत्यंललाटे ॐतत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्ग्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् इति शिखायाम् १८८ जो विप्र इन अङ्गन्यासादिकों सहित गायत्रीको नहीं जानता वह ब्राह्मणों में अधम समझागयाहै उसके पापका क्षय नहीं होता जोकि बहुत दानलेने से होताहै १८९ सबबीजों से युक्त इस गायत्रीको जो जानताहै वह चारों वेदोंको जानताहै योग ज्ञान व तीन प्रकारके जपको जानता है १९० जो इस ऐसी गायत्रीको नहीं जानता उस ब्राह्मणको शूद्रसे परे जानना चाहिये उस अप-वित्र ब्राह्मणका दिया किया तर्पण व श्राद्ध देवता पितृगण नहीं लेते १९१ न उसका किया स्नान फलदायी होताहै व जो कुछ वह कर-ताहै सब निष्फल होजाता है विद्या धन जन्म द्विजत्व के उत्कृष्ट

कारणहैं १९२ परन्तु जब वह ब्राह्मण आचारसे भ्रष्टहुआ तो उसके ये सब निष्फल होजातेहैं जैसे कि पवित्र फूल भ्रष्ट जगहमें चढ़ानेके लायक़ नहीं होता इससे पवित्रता ब्राह्मणताका मुख्य कारणहै हमने पूर्व्वसमय में चारों वेदोंसे गायत्री बनाई है १९३ इससे चारों वेदोंसे गायत्री श्रेष्ठहै व मोक्ष देने में समर्थ है दशबार जप करनेसे गायत्री उसजन्मके कियेहुये पापोंको नष्टकरती है व सौबार जपनेसे पूर्वजन्मके कियेहुये पापोंका नाशकरती है १९४ सहस्रबार जपनेसे तीन युगोंके कियेहुये पापोंका विध्वंस करती है रुद्राक्ष वा कमलाक्ष की मालासे जो कोई प्रातःकाल वा सायङ्कालमें गायत्रीमन्त्र जपता है १९५ वह चारों वेदों के पढ़नेका फलपाताहै इसमें कुछ संशय नहीं है व जो ब्राह्मण नियमसे वर्षभरतक तीनों सन्ध्याओं में नित्य गायत्री जपताहै १९६ उसके कोटि जन्मके कियेहुये पाप नष्ट होजाते हैं गायत्री जपमात्रसे पापके पर्व्वतको नष्टकरके जापकको पवित्र करती है १९७ व नित्य जप करने से ब्राह्मण स्वर्ग मोक्षका फल पाताहै व जो कोई द्वादशाक्षर अष्टाक्षर षडक्षरादि श्रीविष्णुभगवान् के मन्त्र प्रतिदिन जपता है १९८ व श्रीहरिके चरणोंके प्रणाम करताहै वह मोक्ष पाताहै व जो वासुदेवके स्तोत्रोंका पाठ करताहै व मुखसे उनकी उत्तम पुराण इतिहास रामायणादिकी कथा कहता है १९९ उसके देहमें पापका लेशमात्रभी नहीं रहता वेदशास्त्रके पाठ से नित्य गङ्गास्नानका फलहोताहै २०० धर्म्मशास्त्र पाठ करने से कोटि यज्ञकाफल होताहै इस प्रकारसे जो सब वेदशास्त्र धर्म्मशास्त्र को पढ़ता है उस ब्राह्मण के गुणको हम नहीं कहसक्ते २०१ वह विश्वरूपक ब्राह्मण तो मूर्त्तिधारणकिये साक्षात् हरि होजाताहै ऐसे ब्राह्मणके शापसे आयु विद्या यश व धनका नाश होजाताहै २०२ व वरदानसे सब सम्पदा आजाती हैं देखो ब्राह्मणके प्रसादसे विष्णु भगवान् ब्रह्मण्यदेव कहाते हैं २०३ भृगुके चरणघातको उन्हों ने कैसे आदरके साथ सहलिया (नमोब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धितायकृष्णायगोविन्दायनमोनमः) अर्थात् ब्रह्मण्यदेव गो ब्राह्मणों के हितकारी जगत्के हित करनेवाले कृष्णगोविन्दके

नमस्कारहै २०४ इस मन्त्रसे जो कोई मनुष्य नित्य श्रीहरिकी पूजा करताहै श्रीहरि उसके ऊपर प्रसन्नहोते हैं व अन्तमें वह श्रीविष्णु की सायुज्यमुक्ति पाताहै २०५॥

चौ० पुण्यधर्म्म विग्रहआख्याना । जो यह सुनत गुनतभगवाना ॥
जन्म जन्मकृत पातकतासू । होत विनाशरु हरिपुरवासू २०६
पढ़त पढ़ावत जो यहि नीके । अरु उपदेशत जनन सुठीके ॥
तासु न जन्महोतयहिलोका । पावतअक्षयस्वर्गविशोका २०७
राज्यभोगधनधान्यअरोगा । सो पावत जन होत, विशोगा ॥
सत्सुतशुभकीरतिसोपावतासुरसमक्षितितलरमतसोहावत२०८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेब्राह्मणसंस्कारोनाम षट्चत्वारिंशत्तमोध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० सैंतालिस महँ अधम द्विज लक्षण कह सप्रमान ॥
ताहढ़ता हित पतित द्विज गाथा कही महान १
पुनि खगपति जनि हरिमिलन कद्रू विनता वाद ॥
तासु मिटनहित अमृतहति इन्द्रखगप संवाद २
पुनि विषदै सुरपति हरो अमृत गरुड़ उरगाद ॥
भुजग विदिशि दिशिगे चले यही सकलहै नाद३

नारदजी ने ब्रह्माजी से पूँछा कि आपके प्रसादसे पुण्यतम ब्राह्मणोंको तो हमने जाना अब हे देवेश ! क्रियाकरने से जैसे उत्तम ब्राह्मण होजाते हैं वैसेही अशुभक्रिया करने से जैसे अधम ब्राह्मण होजाते हैं १ उनके नाम यदि हमारे ऊपर प्रीति करते हो तो हे सुरश्रेष्ठ ! आप कहें ब्रह्माजी बोले कि जो दशप्रकार के स्नानों से रहित होता है व सन्ध्या तर्पणादि से हीन होता है २ संयम नियम करता नहीं वह ब्राह्मणों में अधम है व जो देवपूजा व्रतादिकों से हीनहोता है वेदविद्या से हीन होता ३ सत्य शौचादि योग ज्ञान अग्नितर्पण से वर्जित होताहै वह भी ब्राह्मणाधम है महर्षियों ने ब्राह्मणों के लिये पाँचप्रकारके स्नान कहे हैं ४। १ आग्नेय२वारुण

३ ब्राह्मय ४ वायव्य ५ दिव्य भस्मसे जो स्नान कियाजाता है वह आग्नेय कहाताहै जलसे जो कियाजाताहै वह वारुण ५ आपोहिष्ठा इत्यादि मन्त्रों से जो स्नान कियाजाता है वह ब्राह्मय कहाता है व गोरजसे कियेहुये स्नानको वायव्य कहते हैं व जब घामहो और मेघोंसे पानी बरसे उसमें जो स्नान कियाजाताहै वह दिव्य कहाता है ६ इन स्नानों को जो मन्त्रोंके साथ करताहै वह तीर्थोंमें स्नान करने का फलपाताहै तुलसीपत्र से संयुक्त जो स्नान होताहै व जो शालग्रामशिलाके स्नान करायेहुये जलसे होताहै ७ व गौओंके शृङ्गों के धोवन जलसे जो होताहै व ब्राह्मणके चरण के जलसे जो स्नान कियाजाताहै व माता पिता गुरुओं के चरण प्रक्षालन के जलसे स्नान तो पवित्रों सेभी पवित्रतम होताहै ८ दान तीर्थादि स्नान यज्ञ व्रत होमादिकों के करनेसे जो फल होताहै धीरपुरुष वह फल इन स्नानों के करने से पाताहै इससे इन सब स्नानों में से कोई न कोई ब्राह्मणको नित्य करना चाहिये ९ जो ब्राह्मण नित्य पितरों का तर्प्पण नहीं करता वह (पितृहा) पिताके मारनेवाला कहाताहै व नरकको जाताहै व जो ब्राह्मण सन्ध्योपासन नहींकरता वह (ब्रह्महा) ब्राह्मण के मारनेवाला कहाताहै व वहभी नरकको जाताहै १० जो ब्राह्मण मन्त्र व्रतसे विहीन होता व वेदविद्या शास्त्रविद्यासे विहीन होता यज्ञ दानादिसे रहित होताहै वह अधमसे अधमब्राह्मणहै ११ यज्ञकरके उसका फल द्रव्यादिके लोभसे औरोंको देनेवाले जिनको यज्ञार्प्पक कहते हैं व देवलक जोकि मन्दिरों में स्थापित देवताओं के ऊपर चढ़ेहुये पदार्त्थोंको लेते हैं नाक्षत्र जोकि ज्योतिष अच्छी तरह पढ़ेनहीं केवल योंही कुछ नक्षत्र देखकर मुहूर्त्तादि बतादेते हैं ग्रामयाजक जो गवँई गाँव में पुरोहिती करते हैं व जो नित्य परस्त्री गमन करते हैं ये पाँच ब्राह्मण अधम होते हैं १२ जिनब्राह्मणों के संस्कार मन्त्रोंसे नहीं करायेगये व पवित्र नहीं रहते व जो संयमही-नहोते हैं जो मद्यपान करते हैं दुरात्माहोते हैं ये ब्राह्मण अधमों से भी अधम होते हैं १३ व जो मूढ़ सदा चोरीकरते हैं व सब धर्म्मोंसे विवर्ज्जितहोते हैं नित्यकुमार्ग्गही में चलते हैं वे ब्राह्मण अधमोंसे भी

अधमहोते हैं १४ जो श्रद्धाशीलादिसे रहितहोते हैं माता पिता गुरुओं की सेवा नहीं करते जिन्होंने गुरुमुखसे मन्त्र नहीं सुना जिन्होंने मर्य्यादाको भिन्नकर दिया है ये सब ब्राह्मण अधमों से भी अधम हैं १५ व दुष्ट सज्जनोंसे वार्त्ता करनेके योग्य नहीं हैं सबके सब नरकगामी होंगे व वे दुराचारी सदा अपवित्र हैं व सब कहीं अपूज्य हैं १६ जो ब्राह्मण खड्गबांधकर जीविका करते हैं जो औरोंकी पठौनी करते हैं व जो साक्षात्सम्बन्धसे गाय बैलके ऊपर चढ़ते हैं व जो चटाई आदि बनाकर जीविका करते हैं व जो ब्राह्मणहोकर थवई बढ़ई लुहार दर्ज्जी आदि शिल्पियोंका कर्म्म करते हैं व जो सब प्रकारसे दूषितही कर्म करते हैं १७ जो बलात्कारी व्यभिचारी हैं व जो पासी कोरी चमार आदि अन्त्यजोंकी सेवा करते हैं वा उनका धन अन्न खाते हैं व जो उपकार को नहीं मानते जो माता पिता गुरुआदि अपने से श्रेष्ठों को मारते हैं ये सब अधम कहेगये हैं १८ ऐसेही और जो आचारहत हैं पाखण्डी धर्म्म के निन्दक हैं देवताओं व वेदों को दूषित करते हैं व जो ब्राह्मण ब्राह्मणोंसेही वैर रखते हैं १९ ये ब्राह्मण सबोंसे अधम हैं व कभी नरकसे निवृत्त नहीं होते पर ऐसा भी ब्राह्मण कभी मारडालने के योग्य नहीं है क्योंकि हे द्विज श्रेष्ठ! ऐसे ब्राह्मणको भी मारकर पुरुष ब्रह्मघाती होता है २० अन्त्यजादिकों के सङ्गमें रहकर व म्लेच्छों और चाण्डालादिकों के साथ अन्नखालेनेसे व उनकी स्त्रियोंके सङ्ग भोग करनेसे पतितहुये भी ब्राह्मणको कभी न मारडालना चाहिये २१ सब जातिकी स्त्रियों के सङ्ग भोग करने से सब अभक्ष्य लशुनादि पदार्थों के खानेसे ब्राह्मणत्व नहीं नष्ट होजाता पुण्य करनेसे फिर ब्राह्मण होसक्ता है २२ नारद ने पूछा इससे ऐसा दुष्कर्म करके पीछेसे पुण्य करें हे पितामह! वह विप्र किसगति को जाता है २३ यह सुनकर ब्रह्माजी ने कहा कि सम्पूर्णपापों को करके पीछे जो जितेन्द्रिय होजाताहै वह सब पापों से छूटकर फिर ब्राह्मणताको पाता है २४ ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र! एक विचित्र मनोरमकथा सुनो किसी ब्राह्मणके एक पुत्र हुआ वह युवावस्थाको पहुँचा २५ उस यौवनके मोहसे व सम्पदाके व पूर्व्व-

जन्मके कर्म्मसे एक चाण्डालीके सङ्ग भोगकरके उसका प्रियकारी पति होगया २६ उस चाण्डालीमें उसने बहुतसे पुत्र कन्या उत्पन्न किये अपने कुटुम्बको छोड़कर उसके गृहमें बहुतकालतक रहा २७ परन्तु उसके बनायेहुये अभक्ष्य पदार्थों को नहीं खाताथा व घृणा के मारे मदिरा भी नहीं पीताथा उससे वह सदा कहा करतीथी कि यदि हमारी जूँठी मदिरा पीनेमें तुमको घृणाहो तो अन्य मद्यपिया करो २८ तब उससे वह कहता कि हे प्रिये ! तुम सदा अपवित्र वस्तुके खाने पीने को हमसे न कहाकरो मदिरा के पीनेसे हमारा आचार जाता रहेगा इससे उसकानाम सुनकर हमको लज्जा होती है २९ एकदिन वह ब्राह्मण मृगोंको ढूँढ़कर आया थकगयाथा दिन में गृहमें सोगया तब हँसकर उसने मदिरालेकर उसके मुखमें डाल दिया ३० तब ब्राह्मण के मुखसे अग्नि निकलकर सबओर प्रज्व-लित होनेलगा व अग्नि की ज्वालाने कुटुम्बसहित उस स्त्रीके द्रव्य व घरको जलादिया व स्त्रीकोभी अग्निने भस्म करडाला ३१ तब हा-हाकार करके वह ब्राह्मण उठा और विलाप करनेलगा विलाप करने के पीछे वह लोगोंसे पूँछनेलगा ३२ कि अग्नि कहांसे उत्पन्न हुआ फिर हमारे घरको कैसे उसने जलाया तब आकाशवाणी हुई कि ब्राह्मण तेरे तेजनेही सबको जलाया ३३ जैसा कि उसकी चाण्डा-लीने सोते में उसे मदिरा पिलाया व मुखसे अग्नि निकला व सब घरभर जला सब आकाशवाणी ने कहा उसे सुनकर ब्राह्मण वि-स्मितहुआ उसे विस्मित देखकर फिर आकाशवाणीने कहा ३४ कि हे विप्र ! तुम्हारा सुन्दर तेज नष्ट होगया इससे अब धर्म्म में तत्पर होओ तब मुनिवरों के नमस्कार करके ब्राह्मणने अपना हित पूँछा ३५ उससे मुनि लोग बोले कि तुम दान धर्म्मकरो क्योंकि ब्राह्म-णलोग सब पाप करके नियम व्रतोंसे पवित्र होजाते हैं ३६ नियम सब शास्त्रोंमें लिखे हैं जिनके करनेसे अपवित्र पवित्र होसक्ते हैं चान्द्रा-यण कृच्छ्र तप्तकृच्छ्र बारबार ३७ प्राजापत्य व अन्य दिव्यनियम तुम अपने दोष छुड़ानेके लिये करो पवित्र तीर्थोंमें जाकर गोविन्दजी का आराधन करो ३८ पुण्यतीर्थों के प्रभावसे व गोविन्दके प्रभाव

से थोड़ेही समय में सबपाप नाश होजायँगे ३९ व आप फिर ब्राह्मणत्व को पावेंगे हे तात ! सुनो एक पूर्व्वकालका वृत्तान्त कहते हैं ४० हे वत्स ! विनता के पुत्र गरुड़ पूर्व्वसमय में भूँखे थे पतंगही रूप थे पर अण्ड से बाहर निकलतेही साक्षात् शावक रूप ४१ अपनी माता से बोले कि हे मातः ! हमको क्षुधा बहुत लगी है इससे कुछ भोजन देओ तब पर्व्वताकार महासत्व महाबल गरुड़ ४२ अपने पुत्र को देकर माता बहुत हर्षितहुई व बोली कि हे पुत्र ! हम तुम्हारी क्षुधाको नहीं निवृत्त करसक्ती ४३ लौहित्यानदी के उत्तर तटपर तुम्हारेपिता तप करते हैं जिनका कि कश्यपनामहै व साक्षात् धर्म्मात्मा लोकोंके पितामहही हैं ४४ सो वहां जाओ अपना प्रयोजन पिता से कहो हे तात ! उन्हीं के उपदेशसे तुम्हारी क्षुधा शान्तहोगी ४५ माताका वचन सुनकर महाबली गरुड़ जी मनोवेग तो चलतेही हैं एक मुहूर्त्तभर में अपने पिताके समीप पहुँचे ४६ व अग्निके समान जाज्वल्यमान अपने पिता मुनिश्रेष्ठ को देखकर शिर झुकाकर प्रणाम करके गरुड़जी बोले ४७ कि मैं आप माहात्मा का पुत्र हूं क्षुधाके अर्थ यहां आया हूं हे नाथ ! क्षुधासे अत्यन्त पीड़ितहूं इस से मुझे भोजन दीजिये ४८ तब ध्यान करके उनको अपने संयोग से विनता के पुत्र जानकर पुत्रके स्नेह से यह वचन मुनिसत्तम कश्यपजी बोले ४९ कि समुद्र के किनारे पर अनेक शतसहस्र निषाद लोग ठहरेहैं व बड़े पापी हैं तुम उन्हींको खाओ सुखीहोओ ५० वे दुष्ट तीर्थोंके काकरूपहैं जीवोंको मार मार कर तीर्थ को उजाड़े देते हैं उनके साथ गुप्त एक ब्राह्मण भी रहता है पर वे नहीं पहिंचानते तुम उस ब्राह्मण को छोड़कर उन सब दुष्टों को खाजाना ५१ ऐसा कहने पर गरुड़ने वहां जाकर सबको खालिया गुप्तभाव से टिकेहुये उस ब्राह्मणको भी गरुड़जी लीलगये ५२ वह ब्राह्मण गरुड़ के गले में जाकर वहीं से बार २ बोलने लगा गरुड़ न उसको वान्तही करसकें न लीलही सकें कि भीतर चलाजाता ५३ गरुड़ अपने पिता के समीप गये व पिता से बोले कि हे पितः ! यह हमारे क्याहुआ एक जन्तु हमारे गले में लपट

गया है उसका कुछ उपाय हम नहीं करसक्ते ५४ गरुड़का वचन सुनकर कश्यपजी उनसे बोले कि हे वत्स! हमने तुमसे पहिलेही कहाथा कि उनमें एक ब्राह्मण है उसे छोड़कर औरों को खाना उसे तुमने न जाना ५५ ऐसा गरुड़ से कहकर फिर धीमान् मुनि कश्यपजी उस ब्राह्मण से बोले कि तुम इनकेगले से हमारे निकट निकलआओ जो तुम को हितहोगा हम तुम को देंगे ५६ तदनन्तर वह ब्राह्मण मुनिश्रेष्ठ कश्यपजी से बोला कि ये सब निषाद! हमारे सुहृद् हैं व सम्बन्धी प्रिय हैं ५७ कोई श्वशुर कोई साले कोई अन्य यथार्थ वक्ता कोई लड़के हैं इससे हम इन्हीं के साथ नरक को जायँगे वा कल्याणदायक स्थान को जायँगे ५८ उस ब्राह्मण का ऐसा वचन सुनकर विस्मितहोकर कश्यपजी बोले कि ब्राह्मणों के कुल में उत्पन्नहोकर आप इन चाण्डाल निषादों में पतित हुये ५९ ये लोग तो घोर नरक में डालेजायँगे व बहुतदिनों के पीछे नरक से उद्धार होजायगा परन्तु इनके सङ्ग रहनेसे तुम्हारा उद्धार कभी न होगा ६० सब दुराचारी अपकारी चाण्डालों को व उनके दोषों को छोड़कर तब पुरुष सुखी होताहै व ऐसे दुष्टोंके सङ्ग कभी सुख नहीं पासक्ता ६१ अज्ञानसे अथवा मोहसे जो कोई दारुण पाप करडालता है वह जब उसको छोड़कर धर्म्म करता है तो वह भी परमगति को जाता है ६२ व पापकरनेवाला जो धर्म्म नहीं करता फिरभी पापही करने में बुद्धि लगाता है वह पत्थरकी नावमें चढ़कर समुद्र में डूबता है ६३ व सब प्रकार के पाप करके व अन्य भी नरक में पड़ने के लिये बहुत कुछ सञ्चय करके जो पीछे से उन पापोंसे निवृत्त होकर धर्म्म करताहै तो उसका दोष जाता रहता है ६४ तब वह ब्राह्मण महाप्राज्ञ मुनिवरोंमें उत्तम कश्यपजीसे बोला कि जो यह पक्षी गरुड़ हमको न छोड़ेगा व हमारे प्रिय इन सब बान्धवों को भी न छोड़ेगा ६५ तो हम मर्म्मघाती इस पक्षी के ऊपर अपने प्राण छोड़देंगे नहीं तो यह हमारे इन बन्धुओंको छोड़दे इस बातकी हमने दृढ़ प्रतिज्ञा करली है ६६ तब ब्राह्मण के वधके भय से कश्यपमुनि गरुड़ से यह वचन बोले कि बस अब ब्राह्मणसहित

इन सब म्लेच्छ निषादों को सब ओर उगिल देओ ६७ तब दोष जाननेवाले गरुड़ ने पिताकी आज्ञासे वनोंमें व पर्व्वतोंपर व दिशाओंमें उन सब निषादोंको उगिलदिया ६८ वेही सब पूर्व्वके देश में मूँड़ मुड़ायेहुये विनादाढ़ी मोछके म्लेच्छ प्रकटहोगये व उनमें जो कुछ मोछ व पूरीदाढ़ी रखाये रहते हैं वे भोजन प्रिय यवन कहाते हैं ६९ व अग्निकोणमें वे पापी (नग्नक) नांगे कहाते हैं व दक्षिण दिशामें अब्राचक कहाते हैं ये सब बड़ेघोर दुरात्मा होते हैं गोमांस खाते हैं व प्राणियों के वध करनेमें बड़े प्रसन्न रहते हैं ७० व नैर्ऋत्यकोणमें कर्व्वुरके नामसे प्रसिद्ध वे पापी बसगये जोकि गो ब्राह्मणों के वध करने में सदा उद्यत रहते हैं व पश्चिमदिशामें कुछ पूर्व्वकी ओर खर्पर के नामसे प्रसिद्धहोकर वे दारुण म्लेच्छ बसगये ७१ वायव्यकोण में तुरुष्कके नामसे प्रसिद्धहोकर बड़ी दाढ़ी मोछवाले दुष्टबसे ये गोभोजन करते हैं व घोड़ों की पीठपर सवारहोकर युद्ध करते हैं समरोंसे उलटे नहीं भागते ७२ व उत्तर दिशामें पर्व्वतवासी गिरिके नामसे प्रसिद्ध म्लेच्छ रहते हैं सर्व्वभक्षी दुराचारी व पशुओं पक्षियों के वध करने में रत रहते हैं ७३ ईशानदिशामें निरय नाम म्लेच्छ रहते हैं ये बहुधा वृक्षोंपर रहते हैं इतने म्लेच्छ सब दिशाओं में घोर अस्त्र शस्त्र धारणकिये हुये रहते हैं ७४ इन लोगों के स्पर्शमात्रसे वस्त्रसहित स्नान करडालना चाहिये जब कलियुग कुछ थोड़ासा शेष रहजायगा तो सब धर्म्म कर्म्म बन्द होजायँगे ७५ तब धनके लोभसे सबलोग इन म्लेच्छोंका स्पर्श करने लगेंगे इसप्रकार उन सब म्लेच्छोंको सब दिशाओं में छोड़कर क्षुधा से पीड़ित ७६ गरुड़ फिर आकर अपने पितासे बोले कि हे तात! हमको क्षुधा बहुत बाधित करती है यह सुनकर कश्यपजी शीघ्रतर गरुड़से कृपापूर्व्वक बोले ७७ कि हे पुत्र ! समुद्रके एक स्थानपर प्रमाणरहित महापराक्रमी बड़ेभारी परस्पर मारडालनेकी इच्छा कियेहुये एक हाथी व एक कछुआ ठहरे हैं ७८ तुम शीघ्रजाकर दोनों को जलकेभीतरसे पकड़लाओ वे दोनों तुम्हारी क्षुधाका निवारण करेंगे गरुड़ पिताका वचन सुनकर शीघ्र वहां जाकर उन

दोनोंको पकड़कर ७९ नखोंसे चीरफाड़कर दोनों महासत्वोंको लेकर मनके समान वेगवाले महाबली वे दोनोंको लेकर बिजुलीके वेगसे झट आकाशको चलेगये ८० उनके बैठाने के लिये मन्दराचलादिक पर्व्वत समर्थ न हुये इससे पवनके वेगसे दोलाखयोजन ऊँचेको गरुड़ चलेगये ८१ व वहां एकबड़ीभारी फरेंदेकी शाखापर जागिरे वह शाखा एकाएकी फाटपड़ी गिरतीहुई उस शाखाको पक्षियोंकेराजा गरुड़ने ८२ गो ब्राह्मणोंके भयसे डरकर कि कहीं इसके नीचे गो ब्राह्मण न दबजावें इससे बड़ेवेगसे धारण करलिया उसको लियेहुये बड़े वेगसे आकाशमें चलेजातेहुये महाबली गरुड़से ८३ मनुष्य कारूप धारणकरके उनके समीपजाकर श्रीविष्णुभगवान् बोले कि हे पक्षिराज! तुम कौनहो व आकाशमें किसलिये घूमतेहो ८४ एक बड़ीभारी शाखा लियेहो व बड़ेभारी दो गज कच्छपलियेहो तब गरुड़ मनुष्यरूपधारी श्रीहरिसे बोले कि ८५ हे महाबाहो! हम गरुड़हैं अपनेकर्म्मसे पक्षी होगये हैं व कश्यपमुनिसे हम विनताके गर्भसे उत्पन्नहुये हैं ८६ देखिये इन दोनों जन्तुओंको भक्षण करने के लिये पकड़लाये हैं हमारे बैठनेका स्थान न पृथ्वी होसकी न वृक्ष न पर्व्वत कि जहां बैठकर हम इनकोखाते ८७ तब हमने अनेक योजनके ऊँचे एक फरेंदेकावृक्ष देखा तब खानेके लिये इन दोनों को लियेहुये हम उस वृक्षकी शाखापरकूदे ८८ परन्तु वह शाखा एकाएकी टूटपड़ी उसको लियेहुये हम घूमते हैं इसके गिरपड़नेसे कोटि २ गौओं ब्राह्मणोंका विनाश होजायगा ८९ इसभयसे हमको बड़ा विषादहुआ इसीसे शीघ्र उड़ेहुये चलेजाते हैं क्याकरें कहां जायँ कौन हमारा वेग व भारसहेगा ९० गरुड़के ऐसा कहनेपर श्रीहरि यह बोले कि हमारी एक भुजापर बैठकर इन दोनों हाथी कछुओंको खाओ ९१ यह सुनकर गरुड़ने कहा कि हमारे नीचे सागर व बड़े २ पर्व्वत नहीं ठहरसके तो इन दोनों जीवोंको लियेहुये हमको तुम कैसे धारण करसकोगे ९२ नारायण भगवान्‌को छोड़कर और दूसराकोन हमको धारण करसक्ताहै तीनोंलोकोंमें कौनपुरुष है जो हमारे वेग व भारको सहेगा ९३ श्रीहरिभगवान् बोले

कि पण्डितको चाहिये कि अपना कार्य्यकरे इससे इससमय अपना कार्य्यकरो हे खगश्रेष्ठ ! कार्य्य करके फिर हमको जानजाओगे ९४ श्रीहरिको महासत्व देखकर अपने मनमें विचार करके ऐसाहीहो यह कहकर गरुड़ उनकी महाभुजापर ऊपरसे गिरे ९५ गरुड़के गिरनेपर वह भुजा किञ्चिन्मात्र चलायमान न हुई वहांपर बैठकर गरुड़ने वह वृक्षकी शाखा एक बड़ेभारी पर्व्वतपर छोड़दी ९६ उस शाखाके पतनमात्रसे चराचर वन पर्व्वत सागर सहित सब पृथ्वी चलायमान होगई ९७ तदनन्तर भुजापर बैठकर हाथी व कछुये को गरुड़ने खाया परन्तु वे तृप्त नहींहुये न उनकी क्षुधाही शान्त हुई ९८ यह जानकर श्रीगोविन्द गरुड़ से बोले कि हमारी भुजा का मांस खाकर सुखीहोओ ९९ ऐसा कहनेपर उनकी भुजाका बहुत मांस क्षुधासे गरुड़ने खाया परन्तु हे पुत्र नारद ! उस भुजा में कहीं घाव न दिखाई दिया १०० तब महाप्राज्ञ गरुड़ चराचर के गुरु श्रीहरिजी से बोले कि आप कौन हैं इस समय हम आपका कौनसा प्रियकरें १०१ श्रीनारायणजी बोले कि तुम्हारे प्रियकरने के लिये आयेहुये हमको तुम नारायणजानो इतना कहकर विश्वास के लिये श्रीनारायणजी ने अपना रूप दिखाया १०२ जोकि ॥

दो० पीतवसन घनश्याम अभिराम चतुर्भुजधारि ॥
शङ्ख चक्र कजगदाधर सकलसुरेश प्रचारि १०३

उन श्रीहरि को देखकर शिर झुकाकर प्रणाम करके गरुड़ बोले कि हे पुरुषोत्तम ! हमसे कहिये तुम्हारा क्या प्रिय हमकरें १०४ देव देवेश्वर महातेजस्वी श्रीहरि गरुड़जी से बोले कि हे शूर ! हमारे वाहन होओ व सदाके लिये हमारे सखा बनेरहो १०५ उनसे गरुड़ बोले कि हे त्रिभुवनेश्वर ! हम धन्यहैं व हे नाथ ! तुमको देखकर हमाराजन्म सफलहुआ इस समय में हे प्रभो ! १०६ अब मैं माता पिताके प्रणामकरके तुम्हारे निकट आऊंगा गरुड़की इस कार्य्यमें प्रसन्नता देखकर अतिप्रसन्न होकर श्रीहरिने कहा कि तुम अजर अमर होओ १०७ व सब प्राणियोंसे अवध्यहोओ तेजसे हमारेही समान होओ तुम्हारी गति सबकहीं हो व सम्पूर्ण सुख तुमको

हों १०८ जो कभी तुम्हारे मनमेंहो वह तुरन्त तुम्हें मिलताहै व अ-
पने मनमाना भोजन तुमको सदा विना कष्टके मिला करेगा १०९
कष्ट से अपनी माता को छुड़ाओगे इसमें अन्तर न होगा ऐसा
कहकर श्रीहरिभगवान् तुरन्त अन्तर्द्धानहोगये ११० गरुड़ने भी
अपने पितासे जाकर सब वृत्तान्त कहा सो सुनकर अतिहर्षित
होकर कश्यपजी अपने पुत्र से फिर बोले १११ कि हे खगश्रेष्ठ!
हम धन्य हैं व कल्याणरूपिणी तुम्हारी माता धन्य है क्षेत्र व कुल
धन्य है जिसके तुम ऐसा पुत्र हुआ ११२ क्योंकि जिसके उत्तम
कुल में उत्पन्न पुत्र पुरुषों में उत्तम वैष्णव होता है वह कोटि कुलों
का उद्धार करके श्रीविष्णुजीकी सायुज्य मुक्तिपाता है ११३ जो
नित्य विष्णुकी पूजा करताहै व विष्णुका ध्यान करता व विष्णुहीके
गुणगाता है व सदा विष्णु के मन्त्रको जपता है व उन्हींका स्तोत्र
पढ़ता है ११४ नित्य प्रणाम करता है व रामनवमी जन्माष्टमी
नृसिंहचतुर्दशी व सब एकादशियों में उपवास करता है चाहे सब
कहीं अन्य पापही करतारहाहो पर सब पापों से छूटजाताहै इसमें
संशय नहीं है ११५ जिसके मनमें सदैव श्रीगोविन्द टिके रहते हैं
वही मनुष्यसिंह भगवान्का दास होताहै ११६ क्योंकि कोटि स-
हस्रजन्मों में सत्कर्म्मों को इकट्ठे करके व सब पापों के क्षय होनेपर
मनुष्य विष्णुभगवान् की किङ्करताको पाताहै इससे वह मनुष्य
धन्यहै जो विष्णुकी सादृश्यको प्राप्तहोताहै जोकि विष्णु लोकनाथ
अच्युत नित्यहै व सदा देवताओं से पूजितहै वे भगवान् पुरुषोत्तम
बहुत तपोंसे व धर्म्मों से व बहुत तरहकी यज्ञों से जिसके ऊपर
प्रसन्न होते हैं वह धन्य है ११७। ११९ जो विष्णुभगवान् तपोंसे
बहुत प्रकारके धर्म्मोंसे नानाप्रकारके यज्ञोंसे किसीको नहीं मिलते
वे तुमको सहज में मिलगये अब सौतिके दुःखसे अपनी माता को
छुड़ाओ माताकी प्रतिक्रिया करके सपत्नीके दुःख से छुड़ाकर फिर
श्रीविष्णुकी सेवाको जाना पिताकी आज्ञापाकर व श्रीविष्णुजी से
बड़ाभारी वरपाकर १२०। १२१ माताके समीपजाकर प्रणामकरके
हर्षितहो आगे गरुड़ खड़ेहोरहे पुत्रको देखकर विनता बोलीं आज

तुम्हारा भोजनहुआ व आदरसे तुम्हारे पिलाने तुमको देखा १२२
तुमको विलम्ब किसलिये हुआ हम इस चिन्तासे बहुत व्यथितहुई
माता का वचन सुनकर हँसतेही गरुड़ने १२३ सब वृत्तान्त विधि-
पूर्व्वक कहा.उसे सुनकर विनता बहुत विस्मितहुई व बोलीं कि बा-
लभावसे यह दुष्कर कर्म्म तुमने कैसे करपाया १२४ हम धन्यहैं
व यह कुल धन्यहै कि हे पापरहित ! तुम विष्णुभगवान्के सखाहुये
वर पाकर आयेहुये तुम महात्मापुत्रको देखकर हमारा मन हर्षित
होताहै १२५ हे वत्स ! तुमने अपने पौरुषसे हमारे दोनों कुलों का
उद्धार किया गरुड़ बोले कि हे मातः ! तुम्हारा कौनसा प्रिय कार्य्य
करें उसे कहो १२६ कार्य्यकरके फिर हम नारायण भगवान् के
समीपको जायँगे यह सुनकर पतिव्रता विनता गरुड़से बोलीं १२७
कि हे तात ! हमको बड़ाभारी दुःखहै उसके मिटाने का उपायकरो
हमारी भगिनी व सपत्नी कद्रूने पूर्व्वसमय हम से बाजी लगाईथी
सो हारकर हम १२८ उसकी दासी होगई हैं हे पुत्र ! इस दुःख से
हमको कौन उद्धार करेगा यह वृत्तान्त ऐसाहै कि एक दिन कद्रूके
पुत्र बड़े २ सर्प्पोंने सूर्य्य के घोड़ेको लपटकर कालाकरदिया १२९
तब प्रातःकाल होतेहीहोते हमसे कद्रूने कहा कि आज सूर्य्य के रथ
का एक घोड़ा कालाहोजायगा तब हमने वहांपर कहा कि यह घोड़ा
रंगका सदा से सफ़ेद है १३० तुम्हारा वचन मिथ्याहोगा तब उस
ने कहा कि हम प्रतिज्ञाकरके कहती हैं इस बातको सुनकर हमने
शपथकरके नागमाता कद्रूसे कहा कि १३१ जो आज सूर्य्यका एक
घोड़ा कालाहोजाय तो हम तुम्हारी दासीहोजायँ हमने यहकहा १३२
जब ऐसी प्रतिज्ञा हमने करदी तो उसके धूर्त्तपुत्र सर्प्पों ने अपने
विषसे सूर्य्य के एक घोड़ेको काला करदिया जब देखा तो क्याकरें
फिर हम उसकी दासी होगई १३३ हे कुलनन्दन ! जिस कालमें
उसकी मांगीवस्तु कोई हम देदेंगी उस समय फिर अदासी होजा-
यँगी १३४ यह सुनकर गरुड़ बोले कि हे मातः ! शीघ्रजाकर तुम
कद्रू से पूँछो जो वस्तुमांगे हम ले आनदें तुम इस दुःख से छूटजाओ
व इस बातकी तो हम आज से प्रतिज्ञा करते हैं कि जैसे नागोंको

देखेंगे खालेंगे १३५ तब कद्रूसे जाकर दुःखितहोकर विनताने कहा कि हे कल्याणि ! तुमको जो अभीष्टहो कहो हम उसे देकर इस दुःख से छूटें १३६ तब उस दुराचारिणी कद्रूने कहा कि हम को अमृत देओ यह वचन सुनकर बेचारी विनता प्रभारहित होगई कि अमृत कहां मिलेगा १३७ परन्तु धीरेसे वहां से आकर दुःखितहो अपने पुत्र से बोली कि हे तात ! वह पापिनी तो अमृत मांगती है अब क्या करोगे १३८ यह वचन सुनकर गरुड़ महाक्रोधयुक्त हुये व कहने लगे कि हे मातः ! तुम विमुख न हो हम अमृतलावेंगे १३९ यह कह के बड़े वेगसे जाकर अपने पितासे बोले कि हे पापरहित ! हम जाते हैं माताजी के लिये अमृत लावेंगे १४० गरुड़का वचन सुनकर मुनि खगेश्वर से बोले कि सत्यलोकके ऊपर विश्वकर्म्माकी बनाई पुरी है १४१ वह शुभ व रम्यपुरी देवताओं के हितकेलिये बनाई गई है उस की रक्षा अग्निदेव किया करता है सुर असुर सबको वहां का जाना दुर्लभ है १४२ उसकी रक्षा के लिये अग्निरूप महाबली असुर को देवताओं ने नियत किया है वह महाबली वीर जिसको २ देखता है वही भस्म होजाता है १४३ गरुड़ बोले कि हे मुनिसत्तम ! हमने श्रीनारायणजी से वरपायाहै हे तात ! इससे सुर असुरों के समूहों से भी हमको भयनहीं है फिर एक दो सुर असुरों को कौन कहै १४४ ऐसा कहकर गरुड़ मारेवेगके समुद्र का जल उछालकर आकाश में प्रवेश करके मनोवेगसे गये १४५ उनके पङ्खों के पवन से बहुत धूलि ऊपर को उड़ी उसने गरुड़का पीछा नहींछोड़ा उनके पीछे २ उड़ी चलीही गई १४६ जाकर अपनी चोंचके जलसे गरुड़बलीने अग्नि को बुझाडाला व जो वहांका रक्षक असुरथा उसके नेत्रों में गरुड़ के पीछे पीछे जातीहुई धूलिभरहुई असुरने गरुड़जी को न देखा १४७ कि इन बलीने उसे और उसके समूहों को मारडाला व अमृत वहांसे उठालिया अमृत लेकर चलेजातेहुये गरुड़को देख कर इन्द्र १४८ ऐरावतनाम अपने हाथीपर चढ़कर आकाश में जाकर यह वचन बोले कि पक्षीकारूप धारणकियेहुये तू कौनहै बल से अमृत हरेलियेजाताहै १४९ सब देवताओं का अप्रियकरके कैसे

यहांसे जीसक्ताहै अग्निसमान प्रज्वलित बाणोंसे तुझको अभी यम-मन्दिर को पहुँचाते हैं १५० इन्द्रका वाक्य सुनकर महाबलवान् गरुड़ने बड़ाकोपकरके कहा कि हां तेराअमृत हमलियेजाते हैं अपना पराक्रम दिखा १५१ इतना सुनकर महाबाहु इन्द्रने तीक्ष्णबाणों से गरुड़को मारा जैसे कि मेघ जलकी वर्षासे पर्व्वतके शृङ्गको ताड़ित करताहै १५२ गरुड़ने भी वज्रसमान कठोर नखोंसे ऐरावतगजको विदीर्ण करडाला मातलिनाम सारथि रथ चक्र व आगे चलनेवाले देवताओंको भी विदीर्णकिया १५३ इससे महाबाहु मातलि व गजोंमें श्रेष्ठ ऐरावत दोनों बहुत व्यथितहुये व पङ्खोंके पवनसे सब देवगण पीछेको मुख करके भागे १५४ तब अत्यन्त कुपित होकर इन्द्रने वज्रसे गरुड़को मारा परन्तु वज्रके पात से महाबली पक्षिराज कुछ भी न चलायमानहुये १५५ अपने वज्रको निष्फल देखकर इन्द्र बहुत भयभीतहुये व युद्धसे निवृत्तहोकर वहीं अन्तर्द्धान होगये १५६ जब गरुड़ अमृत लेकर भूतलपर आये तो इन्द्र सब देवताओंको आगे करके आय गरुड़से बोले कि १५७ जो इस समय नागोंकी माता को अमृत देओगे तो वह अपने पुत्र सर्प्पोंको अमर करदेगी १५८ तो तुम्हारी प्रतिज्ञा नष्टहोजायगी जो नागोंके खानेको तुमनेकीथी व प्रतिज्ञा भ्रष्टहोकर तुम्हारे जीनेका कुछभी न फलहोगा इससे हे पापरहित! तुम्हारे सम्मतसे हम यह अमृत कद्रूके पाससे पहुँचतेही हरलावेंगे १५९ गरुड़ बोले कि बहुत अच्छा जिस समय अमृत देकर हमारी दुःखसेयुक्त माता अदासी होजावे व सबलोगोंको यह बात विदित होजावे उससमय तुम हे हरे! अमृत हरलाना हम कुछ न कहेंगे १६० ऐसा कह महावीर्य्य गरुड़ अपनी माता के समीप जाकर माता से बोले कि हे मातः! अमृत हमलाये अब उसको देदो १६१ विनता पुत्रको अमृतसहित आयेहुये देखकर बहुत प्रसन्न चित्तहुई व लेकर कद्रूको देकर सबलोगोंके आगे अदासीताको प्राप्त हुई १६२ जितने तृण काष्ठ पशु प्राणी सर्प्प वहांथे इस बातको जानकर सबदेवता व महर्षिलोग विस्मितहुये १६३ व अपनी माता को दासीकर्म्म से छुड़ाकर गरुड़ स्वस्थचित्त हुये इसी अवसर में

इन्द्र वहां आकर एकाएकी अमृत हरलेगये १६४ उसी रङ्कका वैसाही विष वहां धरगये उसने देखा नहीं कद्रू उस विषको अमृतही जानकर बहुत प्रसन्नहुई व सम्भ्रमसे उन्हों ने अपने पुत्रोंको बुला कर १६५ उनके मुखमें अमृत केही रङ्कका विषदेदिया व माता उन पुत्रोंसे बोली कि तुमलोगोंके कुलमें सदा १६६ मुखमें ये सब देवतालोग टिकेरहें व इस अमृतके बूँदभी टिकेरहें महर्षि देव सिद्ध गन्धर्व व मनुष्य सब तुमलोगों के मुखमेंरहें १६७ तब वे नाग बोले कि हे मातः! सब यह तुम्हारे प्रसादसे हुआ नागोंने भी देवताओंको सिद्धों व मुनियों को बिदाकिया कि जाओ भाइयो अबतो हम तुम सब अमृत पीनेवालेहुये १६८ यह सुन हर्षितहोकर सब देव गन्धर्व मनुष्य मुनिलोग अपने २ स्थानों को चलेगये नाग प्रमुदित हो वहीं निर्भय होकर स्थितरहे ॥

चौ० त्यहिअवसरखगपतितहँआये।बलसोंसकलनागतिनखाये १६९
शेषसर्प्प दिशि विदिशि पराने। गिरि वनबसे जाय बिलखाने ॥
सब सागरन माहिं पाताले। बिलतरु कोटरमाहिंसजाले १७०
निभृत कुञ्जमहँ सर्प्प समूहा। सब ह्वै गुप्तबसे गत ऊहा ॥
सकल भुजगभे भक्ष्यखगेशा। देवविनिर्म्मितत्यहिसँदेशा १७१
सबन खाय जननी अरु ताता। मिलेगरुड़ कहिनिजकुशलाता ॥
देवन पूजिगये हरि पासा। खगपतिबननहेतुत्यहिदासा १७२
जो सुपर्ण कर चरित विशाला। पढ़िहिसुनिहिगतमदबहुजाला ॥
ह्वै सब पापमुक्त सो प्राणी। हरिपुरजाइहिमृषा न वाणी १७३
यहां सकल लहि निजमन माना। जो सबविधि शुभभोग प्रधाना ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेगरुडोत्पत्तिर्नाम सप्तचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

दो० अड़तालिसयें महँ द्विजाचरणरु पूजननीक ॥
पूजकसुखदूषकअसुख करिकैसबविधिठीक १
विप्रवृत्ति विपदादिमहँ क्षत्रियवैश्यहुवृत्ति ॥

करैविप्र तहँ कह अयुध कृषीविधानक कृत्ति २
गोपालन गोदान विधि गोमाहात्म्य अपार ॥
गोदाता स्वर्गादि सुख लहततासुनिरधार ३

ब्रह्माजी नारदजी से बोले कि हे विप्रर्षे! चाण्डालके गृहमें पतित वह ब्राह्मण बहुत रोदनकरके मारेशोकके कश्यपमुनिके समीपगया १ व जाकर मुनिश्रेष्ठसे अपने हितकावचन बोला कि हे मुनिश्रेष्ठ! जैसा करनेसे हम पापसेछूटें वैसा उपाय आपकरें २ यह सुनकर कुछ हँसकर हर्षसे युक्तहो महातेजस्वी मुनि बोले कि तुमतो म्लेच्छों के दर्शनसे आप शान्तहोगये हो ३ अब गायत्री के जपसे होमसे चान्द्रायणादि व्रतोंसे नित्यहरिकेपादोंको स्मरणकरतेहुये एकादशी व्रतकरो ४ रात्रि दिन ध्यान व प्रणाम श्रीप्रभुकेकरो तीर्थस्नान करते रहो बस तुम्हारे पापका अन्तहोजायगा ५ फिर पापक्षय होजानेपर ब्राह्मणता को प्राप्तहोओगे क्योंकि व्रतोंसेही सबलोग स्वर्ग्ग को जाते हैं व व्रतोंसेही पापको नाश करके मोक्ष पाते हैं ६ कश्यपजी का वचनसुनकर वह ब्राह्मण कृतार्थहुआ व विविधप्रकार के पुण्य करके फिर ब्राह्मण होगया ७ व बहुत दिनोंतक तीव्र तपकरके फिर स्वर्गलोक को चलागया क्योंकि सदाचार करनेवाले पुरुष के पाप दिन २ क्षय होतेजाते हैं ८ व असत्कर्म्म करनेवाले की पुण्य दिन २ अंजन की तरह नष्टहुआ करती है अनाचार से विप्र नरक को जाताहै व आचार से देवता होजाताहै ९ इससे जबतक कण्ठ गत प्राणहोते हैं तबतक ब्राह्मण आचार किय करते हैं इससे कर्म्म मन व अङ्गसे तुमभी सदाचारही करो १० जैसे कि कश्यप के उपदेश से वह ब्राह्मण विनीत होगया फिर आचार करके व तप करके स्वर्ग्गको चलागया ११ जो ब्राह्मण आचार नहीं करता वह हतहोकर स्वर्गलोक में भी निन्दित होजाताहै परन्तु फिर आचार करके स्वर्गलोक में बसकर पूजित होताहै १२ नारदजीने ब्रह्माजी से प्रश्न किया कि हे प्रभो! द्विजोत्तमों की पूजाकरके लोग उत्तम गति को पाते हैं व ब्राह्मणों को पीड़ित करके किसगतिको जाते हैं १३ ब्रह्माजी बोले कि क्षुधासे तप्त देहवाले महात्मा ब्राह्मणों की जो

नहीं भक्तिसे पूजाकरते हैं वे नरकको जाते हैं १४ क्रोधसे कठोर वचन कहकर जो ब्राह्मणको निकाल देताहै वह क्लेशरूपी महारौरव नरकको जाता है १५ व नरक से निकलकर कीटादि अन्त्यजों की जाति में उसका जन्महोता है उसमें रोगी दरिद्री होकर क्षुधासे पीड़ित होताहै १६ इससे कोई ब्राह्मण जब भूखा अपने घरपर आवे तो उसका अपमान न करना चाहिये देवता अग्नि व ब्राह्मण को हम न देंगे जो ऐसा कहताहै १७ वह सैकड़ों पशु पक्षियोंकी योनियों में जन्मलेकर फिर चाण्डालयोनि में जन्मपाता है व जो कोई पैर उठाकर ब्राह्मण गाय माता पिता व गुरुको ताड़ित करता है १८ उसका रौरव नरक में निरन्तर वास होता है कभी वहां से उबार नहीं होता यदि कभी किसी पुण्यके प्रभाव से जन्मभी होताहै तो पँगुला होताहै १९ उसमें भी अतिदीन विषादयुक्त व दुःख शोक से पीड़ित रहता है इसप्रकार तीनजन्म के पीछे उसका उद्धार होजाताहै २० जो पुरुष मूका चटकना व दण्डाआदि से ब्राह्मण को मारता है वह तामननाम घोर रौरव में कल्पान्तभर पड़ा रहता है २१ फिर जब जन्मपाता है तो प्रथम कुत्ताहोता फिर वृक फिर चमार पासी कोरीआदि अन्त्यजों की जाति में उत्पन्न होता है उसमें दरिद्र व कुक्षिमें शूलरोगी होताहै २२ जो ब्राह्मण को देखकर जहां का तहां बैठारहताहै उठकर आदर से नहीं बैठाता उसके पीलपांव रोगहोताहै वा लँगड़ाहोताहै अथवा बड़ी नम्रजंघा उसकी होती है जिसके कारण उठने नहींपाता अथवा दोनों पैरोंसे पँगुला होजाताहै २३ व पक्षाघातरोगसे सदा उसके अङ्ग कांपते रहते हैं इस से अवश्य आयेहुये उत्तम ब्राह्मण को देखकर अभ्युत्थान करना चाहिये माता पिता विप्र स्नातकविप्र व तपस्वी को २४ व अन्य अपने बड़े सम्बन्धियों को मारकर कुम्भीपाकनाम नरकमें प्राणी सदा बसताहै वहां बहुत कालतक रहकर फिर नास्तिकों के पुरमें कीड़ा होताहै जहां किकभी माराभी नहीं जाता इससे बहुत दिनों तक उसी योनिमें पड़ा सड़ाकरताहै २५ ब्राह्मणोंसे जो उनके विरुद्ध कठोरवाक्य बोलताहै हे पुत्र! उसके देह में आठप्रकारके कुष्ठरोग

होते हैं २६ विचर्चिका दद्रू मण्डल व शुक्ति सिध्मक कालिकुष्ठ शुक्ल
कुष्ठ तरुण व अतिदारुण २७ इन कुष्ठों के होने पर नानाप्रकार
की अपवित्र औषधों के करने के पापसे पुण्य उसके पास से भाग
जाती है व अपुण्यसे जलकी रेखाके समान तुरन्त वह उसी रोगसे
मृतक होजाताहै २८ इन आठकोढ़ों में तीनही महाकुष्ठ कहेगये हैं
कालिकुष्ठ शुक्लकुष्ठ व अतिदारुण तरुणकुष्ठ २९ ये तीनोंकुष्ठ ब्रह्म-
हत्यादि महापापकरनेवालों के ज्ञानसे वा संसर्ग से अत्यन्तपाप
करनेवालोंकेही देहमें होते हैं ३० एक स्थानपर बैठने उठने रोगी के
वस्त्रधारण करने से उनसे सम्बन्ध करने से मनुष्यों के रोगहोजाते
हैं इससे कुष्ठादि रोगियोंको दूरसे त्यागना चाहिये यदि स्पर्श हो-
जाय तो स्नान करडालनाचाहिये ३१ जातिभ्रष्ट पतित कुष्ठसंयुक्त
चाण्डाल गोमांस खानेवाले मुसल्मानआदि कुत्ता रजस्वलास्त्री
व कोलभिल्ल वनवासी इनको स्पर्शकरके तुरन्त स्नान करना चाहि-
ये ३२ पापके अनुरूप देहमें कुष्ठरोग होते हैं इसलोक में अथवा
परलोकमें पापके अनुरूपही कुष्ठ भोगने पड़ते हैं इसमें संदेह नहीं
है ३३ न्यायसे इकट्ठी कीहुई ब्राह्मणकी जीविका व ब्राह्मणके धन
को जो कोई हरलेताहै वह अक्षयनरकको जाताहै फिर उसका कहीं
जन्म नहीं होता वहीं पड़ा सड़ाकरता है ३४ जो चुगुल ब्राह्मणों
के दोष ढूँढ़ ढूँढ़ कर चुगुली कियाकरता है उसको देखकर अथवा
छूकर वस्त्रसहित जल में पैठना चाहिये ३५ ब्राह्मणकाधन स्नेह
पूर्व्वक भी किसी युक्तिसे छलकर जो खालेताहै उसके सातकुलोंको
वह ब्रह्मधन भस्म करडालताहै व जो जबरदस्ती छीनकर ब्राह्मण
काद्रव्य खाता है उसके दशकुल प्रथमके व दश पीछे के एक वही
इक्कीसपुस्ततक भस्म होजाते हैं ३६ विषको विष नहीं कहते
ब्राह्मणका धनही विषकहाताहै क्योंकि विष अकेले खानेवालेहीको
मारताहै व ब्राह्मणका धन पुत्रपौत्रादिसहित सबको नष्ट करदेता
है ३७ मोहसे जो माता के सङ्ग भोगकरता है वा अन्य वर्ण
वाला ब्राह्मणी के सङ्ग वा गुरुस्त्री के सङ्ग वह घोर रौरवमें गिरता
है फिर उसी में पड़ारहता है पुनः उत्पत्ति दुर्लभ होजाती है ३८

उसके पितर कुम्भीपाक वा तापन नाम नरक में पड़ते हैं अवीचि नाम में कालसूत्रमें रौरवमें वा महारौरवमें पड़ते हैं ३९ कदाचित् देवतालोग उनको उन नरकोंसे निकालना नहीं चाहते तो वे अपने आप ब्राह्मणों के प्राणोंको मारकर फिर निकलना चाहते हैं पर नहीं निकलनेपाते ४० बस उनलोगों के सहस्रों पुरुष सदा रौरवनरक मेंही पड़ेरहते हैं, इससे ब्राह्मणों का धन किसीप्रकार से न हरना चाहिये नारदजी ने ब्रह्माजीसे पूँछा कि सब ब्राह्मणों के वधमें समानही पापहोताहै ४१ तो नरकपातमें विषमताहोनेका कारण हम से कहिये कैसे होती है ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! ब्राह्मण को मार कर जो पाप कहागया है ४२ ब्राह्मण के मारनेवाला पाता है पर इस विषय में कुछ और कहनाहै उसे भी सुनो वेद शास्त्रयुक्त जितेन्द्रिय संस्कारयुक्त सुशील एक ब्राह्मणके मारनेमें लक्षकोटि ब्राह्मणों के मारनेका दोष होता है व वैष्णव ब्राह्मणको मारने से उससे दश गुणा दोष होता है ४३ । ४४ व अपने वंशवालों के वधमें फिर जन्मही नहीं होता सदा नरकही में प्राणी पड़ा सड़ा करता है तीनों वेदोंको पढ़ेहुये ब्राह्मणको व स्नातकको जो मारता है उसके वधके पापका अन्त नहींहै ४५ वेदपाठी सदाचारी तीर्थ व मन्त्रसे पवित्र देहवाले ऐसे ब्राह्मणके मारनेवालेके पापका अन्त नहींहै ४६ किसी अपकारके समुद्देशसे ब्राह्मण प्राण छोड़ता है तो सभासद्लोग उसे विचार लेते हैं कि वास्तव में इसके सङ्ग इसने यह अपकार किया है तब इसने प्राण छोड़े हैं, तो जिसके ऊपर उसने प्राणहत्याकी है वह अवश्य ब्रह्मघाती होगा जो देखता है वह भी ब्रह्मघाती होता है ४७ व कठोर वचनोंसे जो ब्राह्मण पीड़ित वा ताड़ित कियाजाता है जिसके उद्देशसे वह प्राणोंको छोड़ता है वह अवश्य ब्रह्मघातक है ४८ इसप्रकार किसी ब्राह्मणका वध ऋषि मुनि देव सब वेदवादी सब देश व सब राजाओं के वधके समान है ४९ इसीसे ब्राह्मणका वध करके प्राणी अपने पितरों सहित नरकों में पचाया जाताहै जब किसीके अपकार करनेपर कोई ब्राह्मण मरनेपर उद्यत हो तो उसे चाहिये कि उसे मनावे मरने न दे ५० व जिसने कुछ दोष नहीं

किया पर उसके ऊपर कोई योंही मरगया व मरने के समय उसने उसका नाम लिया तब वह आप ब्रह्मघाती होगा व जिसके ऊपर मरा है वह न होगा ५१ जो अपने से अपने को मारता है वा वृक्षों पर चढ़ा करता है वृक्षों के खोथलों के पदार्थों से जीविका करता है वह अपने आप अपने को मारता है इससे आप अपने वंश में ब्रह्मघाती है ५२ जो गर्भपात कराता है वा बालवध कराता है वा बीमार को मारता है वा गुरुवध करता है वा किसी को कहकर नहीं मरा कि हम अमुक के ऊपर मरते हैं वह आप ब्रह्मघाती है ५३ जो ब्राह्मणों में अधम कोई अपने गोत्रवाले को मारता वा मरवाता है वह पाप उसीको होता है चाहे वह न भी कहे कि हमको अमुक मारता है ५४ शूद्र जब किसी ब्राह्मण को पीड़ित करे व अपना कार्य्य सिद्धकरे व ब्राह्मण मृतक होजाय तो शूद्रहीको पापहोगा इसमें सन्देह नहींहै ५५ हे द्विजसत्तम ! जिसने उसी समय किसीको मारडाला है वा जिसने स्त्रीवध बालवध परस्त्रीहरण गृहदाहादि आततायीका कर्म्मकिया है उसको मारडालने वाला पापी न होगा ५६ चाहे वेदान्तीभीहो पर आततायीहो व जो रणमें अपनेको माररहाहो ऐसोंको मारना चाहिये क्योंकि ऐसों के वधसे ब्रह्मघाती नहीं होता ५७ किसीके स्थानमें अग्नि लगानेवाला विषदेनेवाला किसीका धन हरलेनेवाला ब्राह्मण होकर शस्त्रधारणकियेहुये किसीका खेत हरलेनेवाला व किसीकी स्त्री हरनेवाला बस ये ६ आततायी कहाते हैं ५८ राजवध करनेका उद्योगी माता पिता आदि बड़ोंके मारनेमें रत राजाके अनुयायी व दुष्ट राजा ये चार भी आततायी हैं ५९ मारनेपर जो ब्राह्मण आततायीभीहो पर तुरन्त न मरगयाहो तो फिर उस अधमरेको न मारना चाहिये क्योंकि फिर जानबूझकर मारनेपर घोरपापको मारनेवाला पाताहै यह बात निश्चयहै ६० लोकमें ब्राह्मण के समान पूजनीय जगद्गुरु अन्य नहींहै इसीसे उसको मारनेसे जो पाप होता है उससे पर अन्य पाप नहीं है ६१ ब्राह्मण देवता असुरगण व नरों से देवता के समान पूजनीयहै व यह निश्चयहै कि ब्राह्मणके समान तीनोंलोकोंमें कोई

नहीं है ६२ नारदजी ने पूँछा कि हे सुरश्रेष्ठ ! पापरहित ब्राह्मण कौनसी जीविका करके जीवे वह तुम हमसे कहनेके योग्यहो ६३ ब्रह्माजी बोले कि देवता मुनिगण सिद्ध व अन्य वेदवादियोंने विना मांगे मिलीहुई भिक्षाकी वृत्ति ब्राह्मणोंके लिये अच्छी कही है व याचित अन्नकी भिक्षा कुछ अच्छी कहीगई है उञ्छवृत्ति उससे अच्छी है बाजारमें जो अन्न पड़ा रहजाता है उससे जीविका करनेको उञ्छ वृत्ति कहते हैं बस सब वृत्तियोंमें यही श्रेष्ठहै ६४ जिस वृत्तिके आश्रित होकर मुनिश्रेष्ठलोग ब्रह्मके पदको जाते हैं व जो ब्राह्मण यज्ञ कराताहै उसको यज्ञसे बचेहुये द्रव्यकी दक्षिणा लेनी चाहिये ६५ पढ़ाकर व यज्ञ कराकर सदा ब्राह्मणोंको दक्षिणा लेनीचाहिये क्योंकि याजन व पाठन शुभस्वस्त्ययन पढ़ना यही ब्राह्मणोंकी वृत्तिहै ६६ बस विप्रोंकी ये सब वृत्तियां हैं व दान लेना भी उनकी वृत्ति है पर निकृष्ट वृत्तिहै उत्तम नहीं है शास्त्रसे जीविका करनेवाले धन्य हैं व वृक्षोंसे जीविका करनेवाले धन्यहैं ६७ जो तरुओंके फल फूल मूल खाकर जीते हैं वृक्षलताजीवी भी धन्यहैं वाटिकाके अन्नके उपजीवी भी धन्यहैं पर वाटिकाके अन्नसे जीविकामें जन्तुओं के वध का पापहै उसका दोष मिटानेके लिये ६८ अच्छे नवीन जब अन्न उत्पन्नहों तो ब्राह्मणोंको कुछ २ देदेवे नहीं तो अन्नकी जीविका में प्राणियों के वध होने से आयु क्षीण होजायगी ६९ इससे खेती की जीविका करनेवाले पितरों देवताओं व ब्राह्मणों को बहुत अन्न दियाकरें जब इन सब जीविकाओंका अभाव हो तो ब्राह्मण लोग क्षत्रियोंकी भी वृत्तिसे जीसक्ते हैं ७० परन्तु न्यायही से युद्धकरें व वीरव्रतको धारण करें उस क्षत्रियवृत्ति से ब्राह्मण जो राजासे धन पावे ७१ उससे पितृ यज्ञादि पवित्र यज्ञोंमें दानकरे तो उसके दोषसे निवृत्त होजाय व वेदयुक्त होकर सदा धनुर्विद्यामें अभ्यासकरे ७२ शक्ति भाला गदा खड्ग परिघआदिका चलाना सीखे घोड़े पर चढ़ना हाथीपर चढ़ना इन्द्रजाल ७३ रथपर चढ़कर युद्धकरना पैदर युद्ध करना व सब कहीं समर करना सीखे द्विज देव ध्रुव स्त्री तपस्वी साधु साध्वी गुरु राजा इनके वृत्तोंकी रक्षाकरने से जो राजाओं को पुण्य

होतीहै उसको शूरवीर क्षत्रिय पाता है उसे ब्राह्मणादिक कैसे पा-
सक्ते हैं जबतक धनुर्विद्या नहीं सीखते ७४ । ७५ क्योंकि क्षत्रिय
लोग अपने सबपापोंको नष्टकरके अक्षय स्वर्गलोकके सुख भोगते
हैं सम्मुखके न्याय युद्धमें ब्राह्मणलोग रणमें पतितहोजाते हैं ७६ व
क्षत्रिय नहीं पतितहोते इसी से क्षत्रिय जिस स्थानको जाते हैं वह
ब्रह्मवादी ब्राह्मणों को अगम्य है धर्म्मयुद्ध करने के यथार्थ वृत्त व-
र्णन करते हैं सुनो ७७ सम्मुख खड़े होकर जो युद्धकरते हैं व कां-
तरचित्त नहीं होते न भागेहुयेको पीछेसे मारते हैं न विना अस्त्रवालेको
व अस्त्रलियेहुये भी भागेजातेहुये को मारते हैं ७८ युद्ध न करतेहुये
भयसे भीत पतित व पापीको नहीं मारते असत् शूद्र स्तुति करतेहुये
समर में शरण आयेहुये ७९ इनको मारने से मारनेवाला नरक को
जाताहै क्योंकि उसनें दुराचारसे जयकी इच्छा की है इस से वह
पतित होजाता है क्षत्रियों की यह वृत्ति सदा धीरोंसे गाईजाती है
८० जिस वृत्तिका आश्रयण करके सब क्षत्रिय वीर स्वर्गको जाते
हैं धर्म्मयुद्ध करते हुये जिस क्षत्रिय की मृत्यु सम्मुख रणमें होती
है ८१ वह पवित्र होजाता है व सब पापोंसे छूटजाता है व स्वर्ग
लोकमें रत्नोंसे भूषित प्रासादों में वह निवास करता है ८२ जिसमें
कि सुवर्णके खम्भे गड़े होतेहैं व रत्नोंसे जिसका भूतल भूषित होता
है व जो सब इष्टद्रव्योंसे सम्पूर्ण दिव्यवस्त्रों से शोभित होताहै ८३
व जिसके आगे सब कुछ देनेवाले कल्पवृक्ष लगेरहते हैं बावली
कुआँ तड़ागादिकों से उपशोभित होते हैं ८४ जिसकी सेवा उसी
देवपुरकी युवावस्थाको प्राप्त कन्या युवती स्त्रियां किया करती हैं व
उसके आगे आनन्द से प्रमुदित अप्सरायें नाचा करती हैं ८५ ग-
न्धर्व्व गीत गाते हैं स्तुति पढ़ते हैं इस प्रकार क्रमसे ऐसे स्वर्गके
सुख भोगकर वह शूर रणमें मृतक क्षत्रिय कल्पके अन्त में पृथ्वी
भरका चक्रवर्ती राजा होताहै ८६ वहां सब भोगोंका कर्त्ता नीरोग व
कामसमान सुन्दर शरीर होताहै उसकी स्त्रियां सुरूपवती व नवयौ-
वनवाली होती हैं ८७ पुत्र उसके धर्म्मशील सुन्दर पिताके आज्ञा-
कारी होतेहैं इस क्रमसे क्षत्रिय सात जन्मतक सुख भोगते हैं ८८

व अन्याय से युद्ध करनेवाले बहुत कालतक घोरनरक में पड़ेरहते हैं ऐसी क्षत्रियों की वृत्तिको ब्राह्मणलोग भी भोगसक्तेहैं ८९ वैश्य शूद्र अन्त्यज म्लेच्छजातिवाले भी क्षत्रियवृत्तिको ग्रहण करसक्ते हैं परन्तु जो सदा समर में योद्धा न्याययुद्धही से युद्ध करतेहैं ९० वेभी सब वर्ण व ब्राह्मण भी उस परमस्थान को जाते हैं व जो ब्राह्मण शूर न हो युद्ध करनेसे डरताहो अस्त्र शस्त्रके शास्त्रसे रहितहो ९१ वह द्विजसत्तम विपत्ति में वैश्यवृत्ति को कराले वैश्योंकी वृत्ति एकतो वाणिज्य करनीहै दूसरी खेतीहै ९२ सो खेती वाणिज्य दोनों करावे परंतु सन्ध्या वन्दन पूजन पठन पाठनादि विप्रकर्म्मोंको छोड़ न दे परन्तु वाणिज्य में मिथ्याका बोलनाभी है उसे ब्राह्मण न अंगीकारकरे नहीं तो नरक को जायगा ९३ ब्राह्मण को चाहिये कि गीलीद्रव्य न लेवे उसके छोड़देनेसे कल्याण को पाता उस जीविका से जो धन मिले वह सब ब्राह्मण को देदेवे ९४ पितृयज्ञ व अग्नि में विधिपूर्वक हवन करदेवे तौलने में असत्य न करे क्योंकि तौलनेहीमें धर्म्म टिका रहताहै ९५ इससे जो वैश्य वा अन्य कोई वैश्यवृत्ति करनेवाला तौलने में छलभाव करता है वह नरकको जाताहै व जो अतुल द्रव्यहै इसमें भी मिथ्या न करे ९६ तौलने आदिमें वैश्यवृत्तिवाला भी ब्राह्मण मिथ्या न बोले क्योंकि मृषाबोलना पाप को उत्पन्न कराता है सत्यसे पर अन्य धर्म्म नहींहै व मिथ्यासे अधिक कोई पाप नहींहै ९७ इससे सब कार्य्यों में सत्यही विशेष है जो तौलनेमें सत्य नहीं छोड़ता वह हजार अश्वमेधयज्ञ के फलको पाताहै ९८ व हजार अश्वमेध से सत्य विशेष है जो सब कार्य्यों में सत्यही बोलता है मिथ्याको छोड़देता है ९९ वह सब दुर्गमों को तरजाता है व अक्षय स्वर्गलोक के सुखों को भोगता है वाणिज्य विप्र करावे परन्तु मिथ्याको अवश्य छोड़े १०० जो वाणिज्य में बढ़ती हो उसमें से ब्राह्मण तीर्थ देवताके कुछ समर्पणकरे शेष आप भोजनकरे देहके क्लेशसे हजारगुण ज्यादा होताहै १०१ क्योंकि धन इकट्ठे करनेके लिये मनुष्य अथाह विषमजलमें पैठजाते हैं पर्व्वतोंके दुर्गम मार्ग्ग व विपत्तियों से युक्त वनोंमें पैठते हैं १०२

पर्व्वतों में पर्व्वतों की कन्दराओं में शस्त्रमारनेवाले कोल किरात म्लेच्छोंके स्थानोंपर भी जाते हैं जिसस्थानपर जानते हैं कि भयहै परधनके लोभसे वहांभीजाते हैं १०३ लोभीलोग पुत्रों स्त्रियोंको छोड़कर दूरदेशों को चलेजाते हैं कोई २ अपनेही कन्धेपर भारलाद लेते हैं जिससे कचड़जाते हैं १०४ मार्ग में चोरादिकोंसे बड़ेदुःख पाते हैं कहांतक कहें अपने प्राणतकभी देदेते हैं धनसञ्चय पुत्र व प्राणोंसे भी अधिक प्रियतर होता है १०५ सो इन न्यायों से इकट्ठे कियेहुये वाणिज्य के धनको पितरों देवताओं व ब्राह्मणोंको देनेसे अक्षय पुण्य भोगते हैं १०६ वाणिज्य में ये दो बड़ेभारी दोषहैं एक लोभकरना दूसरा मिथ्या बोलना जबतक लोभका त्याग नहीं होता तबतक मिथ्या बोलना भी नहीं छूटसक्ता १०७ इससे यथाक्रम दोनों दोषोंको छोड़कर पण्डित धन इकट्ठा करे जो कोई इन दोनों दोषोंको छोड़कर धन उपार्ज्जन करता है व उसमें से कुछ दान करताहै तो अक्षयफल पाता है व वाणिज्य के दोषों से नहीं लिप्तहोता १०८ इसीप्रकार वैश्यकी दूसरी वृत्ति खेतीकोभी पुण्य कर्म्ममें रत ब्राह्मण करावे दो पहरतक अच्छे चार बली बर्दोंसे खेत जुतावे १०९ चार न हों तो तीन अवश्यहों व ऐसा न करे कि सेवकोंको विश्वास होजाय कि हमारा स्वामी इससमय न आवेगा व हमारे कार्य्यको न जानसकेगा किन्तु ऐसे अनियत समयपर जाकर उनका कार्य्य देखतारहे कि उसके परोक्षमें भी वे लोग सावधानता से कार्य्य करतेरहें बर्दोंको तृण घास वहां चरावे जहाँ चोर व व्याघ्र न हों ११० व उनको यथेष्ट भूसा खली आदि देवें व नित्य स्वामी अपने आप देख भाललियाकरे व होसके तो अपने हाथोंसे भी करे बैलोंके रहनेके स्थानमें कोई बिल न होने पावे १११ व गोबर मूत बचीहुई सानी घासआदिभी नित्य वहांसे अलग करदियेजायँ गोष्ठमें कोई मलिनवस्तु न डाले क्योंकि उसमें सबदेवगण रहते हैं ११२ इससे जैसा अपने सोने बैठनेका स्थान रहताहै पण्डितको चाहिये कि वैसाही बैलोंके रहनेवालेको भी रक्खे उनके श्रम शीत वात व धूलिको यत्नसे दूरकरातारहै ११३ सामान्य शरी-

र धारणकिये हुये भी वृषभोंको अपने प्राणके समान देखे उनके देहके सुख दुःखको अपने देहका सुख दुःख कल्पितकरे ११४ इस विधिसे जो कोई कृषीकर्म्म करावे वह बैलों के जुताने के दोषों से न लिप्तहोवे व धनीहोजावे ११५ जो दुर्ब्बल बैलको बहुत पीटता है व बीमार को पीटता जोतता है व अतिबाल अतिवृद्ध को जोतता है वह गोहत्याके समान पापको पाता है ११६ व जो एक दुर्ब्बल दूसरे सबलके साथ विषमता से जोतता है वह गोहत्या के समान पाप पाता है इसमें संशय नहीं है ११७ व मोह से तृण वा जल उनको अच्छीतरह देख भाल कर नहीं देता दिलाता वहभी गोहत्या के समान पाप पाता है ११८ अमावास्या संक्रान्ति व पौर्णमासी को हलमें बैलों के जोतने से दशहजार गोहत्या के समान पापहोता है ११९ इन वृषभोंकी पूजा जो मनुष्य उजले चित्रविचित्र वस्त्रोंसे कज्जल पुष्पों व तेलों से करता है वह अक्षय स्वर्ग्गलोक पाताहै १२० जो प्रतिदिन नियमसे किसी अन्यके वृषभ को मूठीभर घासदिया करता है उसके सब पाप क्षय होजाते हैं व वह अक्षयस्वर्ग्गलोक पाता है १२१ जैसे ब्राह्मण वैसेही गौ इससे दोनोंकी पूजा समान फल देतीहै परभेद इतनाही है कि ब्राह्मणको नानाप्रकार के भक्ष्य भोज्यादि पदार्त्थ खिलाने चाहियें इससे उन की पूजा मुख्यहै व बैल गाय पशुओंको तृणघास भूसा दियाजाता है इससे यह पूजा गौण है १२२ यह सुनकर नारदजीने पूँछा कि ब्राह्मण ब्रह्मके मुखसे उत्पन्नहुये तुमने यह कहाथा सो ऐसे ब्राह्मण लोग गौओं के तुल्य कैसे हुये हमको इस विषय में बड़ाभारी विस्मय है हे नाथ ! आप इस विस्मयको दूरकरें १२३ ब्रह्माजी बोले कि इसविषयमें यथातथ्य सुनो जैसे ब्राह्मणों व गौओंकी एक पिण्डता व एकही क्रिया पूर्व्वकालमें पुरुषोंने बनाईहै १२४ पूर्व्वकाल में ब्रह्म परमेश्वरके मुखसे तेजोमय बड़ाभारी शब्द उत्पन्न हुआ उसके चारभागहोगये एक वेद दूसरा अग्नि तीसरा ब्राह्मण व चौथागौ १२५ प्रथम तेजसे वेदकी उत्पत्तिहुई फिर अग्निकी फिर गौकी फिर ब्राह्मण की इसप्रकार ये चारों पृथक् २ उत्पन्नहुये १२६ तब हमने प्रथम

उसवेदसे चारवेद सब लोगोंकी स्थितिके लिये व सब भुवनों की स्थिति के लिये बनाये १२७ उनमें वेदों के मन्त्र पढ़ेजाते हैं तो अग्नि सब देवताओं के लिये हव्य भोजन करता है व ब्राह्मण भी देवादिकों केही प्राप्तहोने के लिये हव्य शष्कुल्यादि भोजन करते हैं घृत गौओं से उत्पन्नहोताहै इससे ये सब एकही स्थानसे उत्पन्न कियेगयेहैं १२८ जो ये चारों महात्मा लोकोंमें न रहें तो सब स्थावर जङ्गम भुवन नष्ट होजायँ कुछभी न रहे १२९ इन चारोंसे युक्त लोकस्वभावसे सदाके लिये प्रतिष्ठित हैं सो यह स्वभाव ब्रह्मरूपहै और ये वेद ब्राह्मणादि ब्रह्ममयहैं १३० इससे गौ विप्र देवता व असुरोंसे पूजनीय है क्योंकि सब कार्य्यों में वह उदारहै व सत्य २ गुणोंकी खानिहै १३१ व यह गौ सब देवमयहै व सबके दयाकरनेके योग्यहै इसके शरीरको हमने पूर्व्वकाल में सबका पोषण करनेके लिये व औरोंसे पोषित होनेकेलिये बनाया है १३२ व इसीसे हमने सुन्दर वरभी इनको दिया है कि एकही जन्म में पशुयोनि से तुम्हारी मुक्ति होजायगी १३३ इससे इसलोक में जो गौ वा वृषभ मरते हैं वे हमारे स्थानको चलेजाते हैं इनके देहमें पापका कणमात्र नहीं होता १३४ वृषभ देवरूप होते हैं व गायें देवीरूपिणी होती हैं इससे ये तीनोंशक्तियों को धारण किये गायें तीनों देवताओं की मूर्त्तियां हैं गौके प्रसादसे यज्ञों का निस्संदेह फल होता है १३५ गौओंके सब पदार्थ पवित्र होते हैं इससे तीनोंलोकों को पवित्र करतेहैं गोमूत्र गोमय गोदुग्ध गोदधि गोघृत १३६ इन सबोंको एकमें मिलाकर वा अलग २ भक्षण करनेसे मनुष्य के शरीर में पाप नहीं रहजाता इसीसे घृत दधि व दुग्ध धर्म्मात्मा लोग नित्य खाते पीते हैं १३७ सब पदार्थों में गौसे उत्पन्न पदार्थ उत्तम शुभ व विशेष होते हैं जिसके मुखमें भोजन दही दूध घृत युक्त नहीं मिलता उसकी मूर्त्ति पुतलीकी तुल्यहै १३८ अन्नखानेपर पांच रात्रितक पुष्टता रखता है दुग्ध सातरात्रि तक दधि बीस रात्रितक व घृत एक मासभर तक १३९ गौ के दुग्ध दधि घृत इन पदार्थोंसे रहित अन्न निरन्तर जो मासभर तक खाते हैं उनके भोजनमें प्रेत सदैव भोजन करते हैं १४० परमशुद्ध परमात्म सूर्य्यके

घाममें परिपक्क कियेहुये अन्नके भोजनकरनेसे जो पुण्य होतीहै उस से कोटि कोटिगुनी पुण्य गोघृतादियुक्त अन्नके खानेसे होतीहै १४१ व अन्य भी जो हविष्यान्न हव्यशास्त्र के बनायेहुये हैं उनको खाकर पुण्यकर्म्म करनेसे लक्षगुनी पुण्य होतीहै १४२ व मांसको छोड़कर अन्य जो उत्तम भोज्यपदार्त्थ गोघृतादियुक्त बनायेजातेहैं उनको खाकर जो पुण्यकर्म्म कियेजाते हैं कोटिगुण अधिक पुण्य होती है इस से गौ सर्व्वकार्यों में प्रशस्त सब युगों में चलीआती है १४३ सब कार्योंमें सब कुछ देतीहै व धर्म्म अर्त्थ काम मोक्ष देती है नारदजी ने पूँछा कि किस प्रयोग में किस प्रकार के करने से कौन पुण्य होतीहै १४४ हे लोकेश! उन प्रयोगों के हमसे निश्चय करके नाम कहो जिसमें हमभी तत्त्वसे जानलें ब्रह्माजी यह सुनकर बोले कि एकबार प्रदक्षिणा करके जो गौके प्रणाम करता है १४५ वह सब पापों से छूटकर अक्षय स्वर्ग्गलोक को भोगता है जैसे देवताओं के आचार्य्य बृहस्पति वन्दना करने के योग्य हैं व जैसे लक्ष्मीनाथजी पूजा करनेके योग्यहैं १४६ ऐसेही सात प्रदक्षिणा करके गौ प्रणाम करनेके योग्यहै व इन्द्र ऐसेही गौकी प्रदक्षिणाकर स्वर्ग के ऐश्वर्यको पहुँचे जो कोई बड़े प्रभात समय उठकर जलसहित पात्रलैकर धेनुओं के मध्य में जाकर १४७ गौओंकी सींगोंको सींचता है व मस्तक परसे उस जलके आनेकी प्रत्याशा करता हैं सोभी निराहार व्रतरहकर प्रत्याशा करताहै उसके पुण्यका फल सुनो १४८ हे नारद ! सिद्ध चारणयुक्त महर्षियों से सेवित जितने तीर्त्थ तीनों लोकोंमें सुनाई देतेहैं १४९ उनके स्नानके समान गौओंकी सींगों के जलका स्नान होताहै जो मनुष्य प्रातःसमय उठकर गोघृत मधु १५० सरसों काकुन को स्पर्श करता है वह सब पापोंसे छूटजाता है घृत दुग्ध देनेवाली घृतकीयोनि घृतके उत्पन्न होनेके स्थान १५१ घृतकी नदियां घृतके कुण्ड गौ होती हैं वे सदा हमारे गृहमेंहों घृत हमारे सब अङ्गोंमें हो घृत हमारे मनमें स्थितहो १५२ गौ नित्य हमारे आगे विद्यमान रहती हैं गौ हमारे पीछे नित्य रहती हैं गौ हमारे सब अंगोंमें रहती हैं व गौओंके मध्य में हम बसतेहैं १५३

आचमनकर इस मन्त्रको सन्ध्यासमय व प्रातःकाल जपे तो उसके सब पापोंका नाश होजावे व स्वर्गलोक में उसका वासहोवे १५४ जैसे गौ वैसेही ब्राह्मण जैसे ब्राह्मण वैसेही श्रीहरि जैसे हरि वैसी गङ्गा व इन्हींके समान वृषभभी हैं १५५ गौ मनुष्योंके बन्धु हैं व मनुष्य गौओंके बन्धुहैं जिसके गृहमें गौ नहीं हैं उसका गृह बन्धुरहितहै १५६ गौके मुखमें सब वेद षडङ्ग पदपाठ क्रमसहित रहतेहैं व गौके दोनों शृङ्गोंपर सदा महादेव व विष्णुभगवान् रहते हैं १५७ गौकेपेटमें स्कंद स्थित रहते हैं शिरपर सदा ब्रह्मा स्थित रहतेहैं ललाटमेंभी महादेव रहतेहैं सींगकी फुनगी पर इन्द्र रहते हैं १५८ कानोंमें अश्विनीकुमार दोनों देव रहतेहैं व नेत्रोंमें चन्द्र सूर्य्य रहतेहैं दांतोंमें गरुड़देव जिह्वा में सरस्वतीदेवी बसती हैं १५९ गुदमें सब तीर्थ रहते हैं व गोमूत्रमें गंगा रहती हैं रोमोंमें सबऋषि रहते हैं मुख के पीठमें यमदेव रहते हैं १६० कुबेर व वरुण दहिनी बगलमें रहतेहैं बाईं बगलमें तेजस्वी महाबली यक्षलोग निवास करतेहैं १६१ मुखके बीचमें गन्धर्व्व रहते हैं व नासाअग्रभागमें नागलोग रहते हैं खुरोंके पश्चिमओर अप्सरायें रहती हैं १६२ गोमय में लक्ष्मी बसती है गोमूत्रमें सर्वमंगला अर्थात् सब मङ्गल देनेवाली बसतीहै व पैरोंके अग्रभागमें खेचर निवास करते हैं व हुङ्कार शब्द में प्रजापति निवसते हैं १६३ व धेनुओं के चारों स्तनोंमें चारोंसमुद्र भरेरहतेहैं जो नित्य धेनुका स्पर्श करता है वह नित्य स्नानकरता है चाहे जलसे न भी स्नान कियाहो १६४ इससे मनुष्य जब गौका स्पर्श करता है सब पापोंसे छूटजाता है इससे नित्य धेनुका स्पर्श करना चाहिये गौओंके खुरोंसे उड़ीहुई धूलि जो मनुष्य अपने शिरपर धारण करता है १६५ वह तीर्त्थोंके जलमें स्नान करता है इससे सब पापोंसे छूटजाता है यह सुनकर नारद जीने फिर ब्रह्माजीसे पूँछा कि हे सुरश्रेष्ठ ! गौओंके दशरंग होते हैं उनमें किस रंगकी धेनुदानकरनेसे कौन फल होताहै १६६ हे गुरुश्रेष्ठ ! हे परमेष्ठिन् ! जो प्रियहो तो वह हमसे निश्चय करके कहो ब्रह्माजी बोले कि ब्राह्मण को श्वेतरंग की गौदेकर मनुष्य ईश्वर होजाता है १६७ व अच्छे प्रासादपर बसकर नित्य सुख नानाप्रका-

रके भोग भोगताहै व धूम्ररङ्गकी धेनु स्वर्गारण्य में विहार कराती है व संसार में पापोंसे छुड़ाती है १६८ कपिला का दान अक्षयहोताहै व कृष्णरङ्गकी धेनु ब्राह्मणको देकर पुरुष फिर कष्टित नहीं होता पीलेरङ्गकी धेनु लोकमें दुर्लभहै व गौरी गौ कुलको धन समृद्धि देती है १६९ लालनेत्रवाली गौ उत्तमरूप देतीहै व जिसको धनकी कामनाहो वह नीलीधेनु दानकरे व एकभी कपिला दानकरके मनुष्य सब पापोंसे छूटजाता है १७० जो पाप बाल्यावस्था में कियाहो जो युवावस्था में जो वृद्धता में जो वचन से कियाहो जो कर्म्मसे जो मन से कियाहो १७१ अगम्य स्त्री के सङ्ग गमन करने से जो पाप हुआ हो व मित्रद्रोह करनेसे जो हुआहो मिथ्या साक्षीहोनेसे जो पाप पूरा न तौलने से जो पाप कन्याके विषय में झुँठाई करने का पाप गौ के विषय में मिथ्याबोलने का पाप १७२ जो पुरुष कपिला दानदेता है वह तुरन्त इन सब पापोंको नष्टकराता है चालीस कोसकी चौड़ी महापारवाली महानदी बाणरूप जलसे भरी व बहुत से जलसे फैली है १७३ बाणरूपी जलके वनमें व फैलेहुये जलके समुद्रमें जबतक बच्चेके दो पैर निकलते हैं व मुख बाहर नहीं निकलता १७४ तब तक उस पृथ्वीरूपिणी धेनुका दान करना चाहिये जबतक कि बच्चा बाहर बनाय न निकल आवे सो यों नहीं यदि सामर्थ्यहो तो सुवर्ण से उसके शृङ्गमढ़ाकर रेशमीवस्त्र उढ़ाकर घण्टा व अन्य भूषणोंसे भूषित करके १७५ ताम्र से पीठ मढ़ाकर चांदी से खुर मढ़ाकर कांस्यपात्र की दोहनीसहित चन्दनादि सुगन्धित वस्तु व नानाप्रकारके पुष्पोंसे व नानाप्रकार के अलङ्कारों से भूषित करके १७६ ऐसी कपिलाधेनु वेदपारगन्ता ब्राह्मणको देनेसे उसके सब पाप क्षय होजाते हैं इससे विष्णुलोक में जाकर बसता है फिर वहांसे कभी च्युत नहीं होता १७७ उस कपिला के दुहने के समय जो दुग्ध के बूँद पृथ्वीपर गिरते हैं स्वर्ग में बहुत उत्तमफल पुष्पयुक्त वृक्षोंकी वाटिका उनसे उत्पन्न होजाती हैं १७८ जिनमें वाञ्छित देनेवाले वृक्ष लगेहोते हैं व पायसके कर्दमसे युक्त नदियां होतीहैं व सुवर्ण के बड़े लम्बे चौड़े प्रासाद मन्दिर बने होते हैं बस ऐसी गौओं के देने

वाले वहीं जाकर निवास करते हैं १७९ जो मनुष्य दशधेनु व उन्हीं के संग एकवृषदान करता है व जो वैसी कपिलाका दान करता है ब्रह्माजी ने दोनोंका फल बराबर नियत कियाहै १८० उन दशधेनुओं मेंसे एक २ दश ब्राह्मणों को देनेसे सहस्र गोदानोंका फल होताहै व हे नारद ! उसीके अनुसार से फलभी होताहै १८१ व पितरों के उद्देशसे जो पुत्र एक वृषभ छोड़ताहै उस के पितर जाकर विष्णुलोकमें यथेप्सित पूजित होते हैं १८२ उस एक वृषभके संग चार वत्सतरियां भी पुत्रलोग छोड़ते हैं यह सनातन विधि है १८३ जितने उस वृषभ के व उन वत्सतरियों के रोमहोते हैं उतने सहस्र वर्षोंतक उसके पितर व वहभी स्वर्गलोक के सुख भोगते हैं १८४ वह वृषभ अपनी पूँछसे जितने जलके बूँद उछालताहै उनसे सहस्र गुण अधिक वह जल पितरोंके लिये अमृत होजाता है १८५ व वह छोड़ाहुआ वृषभ जब अपनी खुरों से भूमि खोदताहै व फिर उस गीली मिट्टीके कीचड़ में लोटजाताहै तो उस कीचड़से लक्षकोटिगुण अधिक अमृत पितरोंको भोजनके लिये मिलता है १८६ ॥

चौ० जासुपिताजीवतहोमाता । मृतकहोइविधिवशसुतताता ॥
तासुस्वर्गहित चन्दनभूषित । धेनुदान करिये न विदूषित १८७
पितृ रक्षा हित दाता जोई । छोड़त वृषभ मुदितमनहोई ॥
अक्षय स्वर्ग लहत नरसोई । पूजित मघवासम सो होई १८८
सब लक्षणयुत तरुणीगाई । दुग्धवती ग्राहक मन भाई ॥
धेनुप्रसूता सम अरु धरणी । सम सोधेनु महाकवि वरणी १८९
तासुदान मनुसहित महीसम । होतभलीविधिसोंनतनिककम ॥
दाताशतमखसम सुखभोगी । निजकुलशतकहँकरतअशोगी १९०
जो गोहरण करत वशमोहा । मृतकहोत सोखलगिलोहा ॥
सो कृमिपूरित कुण्डमँझारी । प्रलयसमयतक बसतदुखारी १९१
गोवधकरि निजपितरनसङ्गा । रौरव घोर नरक के भङ्गा ॥
प्रलयसमयतक पचतसुपापी । तासु न प्रतिक्रियाश्रुतिलापी १९२
गोप्रचार भञ्जक अरु सेतू । जोखण्डत ह्वै बहुत सचेतू ॥
अक्षय नरक लहत सो प्रानी । जन्मजन्म नित पावत ग्लानी १९३

परमपुण्यतम यह गो गाथा । एकहुबार सुनावे साथा ॥
सर्व्वपाप क्षय होवत तासू । पुनि सुरसङ्ग मुदित मनवासू १९४
अरु जो सुनतपुण्यशुभपावन । यहचरित्रकलिकलुषनशावन ॥
सप्तजन्म कृत पातक ताके । क्षण महँ नष्ट होत ह्वै पाके १९५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेगोमाहात्म्यं नामाष्टचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

दो० उनचसयें महँ है कहो सदाचार विधि ठीक ॥
सकलभांति सुखदेत जो मरे जिये अतिनीक १
सन्ध्यावन्दन आदि सब धर्म्म कहे निर्द्धारि ॥
जिनसों पावत हैं पुरुष करतलगत फल चारि २

नारदजीने ब्रह्माजीसे पूँछा कि किस आचार से ब्राह्मणका तेज बढ़ताहै व किस आचारसे ब्राह्मणका तेज नष्ट होजाता है १ ब्रह्माजी बोले कि उत्तम ब्राह्मण थोड़ी रात्रि शेषरहे शय्यापर से उठकर देवताओं व पुण्यात्माओं का नित्य स्मरणकरे २ जैसे कि गोविन्द माधव कृष्ण हरि दामोदर नारायण जगन्नाथ वासुदेव अज विभु ३ सरस्वती महालक्ष्मी सावित्री गायत्री ब्रह्मा सूर्य्य चन्द्रमा दिक्पाल ग्रह ४ शङ्कर शिव शम्भु ईश्वर महेश्वर गणेश स्कन्द गौरी भागीरथी पार्व्वती ५ पुण्ययशाके राजा पुण्यश्लोकनल पुण्यश्लोकजनार्द्दन पुण्यश्लोकाजानकीजी पुण्यश्लोकयुधिष्ठिरजी ६ अश्वत्थामा बलि व्यास हनुमान् विभीषण कृपाचार्य्य परशुराम ये सात चिरंजीवी पुरुषहैं ७ प्रातःकाल उठकर इन सबोंको जो मनुष्य स्मरण करताहै वह ब्रह्महत्यादि पापोंसे छूटजाताहै इसमें कुछभीसंशय नहीं है ८ हे तात! इन सबों के एकबार उच्चारण करने से सब यज्ञोंका फल मिलताहै व सैकड़ों सहस्रों गोदानोंका फल मिलताहै ९ फिर इन सबोंका स्मरणकरके पवित्र स्थानमें मलमूत्रका परित्याग करे रात्रिमें दक्षिणको मुखकरके व दिनमें उत्तरको मुखकरके १० तदनन्तर गूलरआदि वृक्षों का दन्तधावन लाकर करे फिर स्नानकरके

सन्ध्यावन्दन करे प्रयत होकर द्विज ११ प्रातःकालकी सन्ध्या में रक्तवर्ण सन्ध्याका ध्यानकरे मध्याह्नमें शुक्लवर्ण का सन्ध्याकाल में कृष्णवर्णकी सरस्वतीका यथाविधि द्विज ध्यान करे १२ स्नान करनेका विधान यों है जोकि यत्नपूर्व्वक व ज्ञानपूर्व्वक करना चाहिये किसी वृक्षके नीचेसे शुद्धमृत्तिका लावे अङ्गों में लगाकर फिर शुद्ध जलसे धोवे १३ शिरमें ललाटमें नासिका हृदय भौंह बाहु बगल नाभि जानु व दोनों चरणोंके नीचे मृतिका लगावे १४ मूत्रोत्सर्ग्ग करनेपर एकबार लिङ्गमें मृत्तिका लगावे मलोत्सर्ग्ग करने गुदमें तीन बार बायेंहाथ में दशबार फिर दोनों हाथों में सातबार जिसको शुद्ध होनेकी इच्छाहो वह इस क्रमसे मृत्तिकालगावे १५ मृत्तिका लगानेके समय यह मन्त्रपढ़े कि पृथ्वी तुम घोड़ोंसे दबाई गईहो रथोंसे व विष्णुभगवान्‌से व सब धन तुममें हैं व तुम्हारी यह मृत्तिकाहै हमने जो पहले पाप किये हैं उनको हरे १६ इसी मन्त्रसे मृत्तिका अङ्गोंमें जो लगावे तो उसके सब पाप क्षय होजायँ व वह पवित्र होजाय १७ तब देवताओंके खोदेहुये किसी पुष्करादि तीर्त्थमें वेदकी विधिसे पण्डित को चाहिये कि स्नानकरे वा घर्घर शोणभद्रआदि किसी नद में वा गङ्गादि नदियोंमें वा कूपमें वा छोटी तलैयामें अथवा किसी तड़ागमें १८ अथवा अन्यत्रही कहीं जहां जलराशिहो वा किसी खावांमें जलहो उसमें नहीं तो सबोंके अभावमें घड़ेमें स्नानकरे सब पापों के नाश होने के लिये मनुष्य विधिपूर्व्वक नित्य स्नानकरे १९ क्योंकि विना स्नान कियेहुये शरीरकी शुद्धि नहीं होती उसमेंभी प्रातस्स्नान महापुण्यदायक व सब पापोंका नाशकहोताहै जो ब्राह्मण प्रातस्स्नान नित्य करता है वह विष्णुलोक में जाकर पूजित होताहै २० प्रातस्सन्ध्याके समीप चारदण्ड पीछेतक पितरोंकेलिये जो जलदान किया जाता है वह अमृतके तुल्य होता है २१ उसके पीछे दोघड़ी तक का काल जबतक कि प्रहर भर दिन नहीं चढ़ता मधुके तुल्य जल रहता है पितरों को बहुत प्रीति बढ़ाताहै २२ उसके पीछे डेढ़पहर दिन चढ़े तक जल दुग्ध के तुल्य रहता है उसके पीछे चारदण्ड तक दुग्ध मिलेहुये जल के समान पानीय रहताहै २३ इसके पीछे

पहरभर दिन रहेतक पानी का पानी रहताहै इसके पीछे सन्ध्यातक पितरोंके लिये फिर वह जल रक्तके तुल्य होजाताहै २४ व जो चौथे पहरके पीछे रात्रि में स्नानकरके पितरों का तर्प्पण करता है उस जल को राक्षस ग्रहण करते हैं इससे नष्टहोजाता है पितर नहीं ग्रहण करते २५ सबकी शुद्धिके लियेही हमने पूर्व्वसमय में जल बनाया है व उस जलकी रक्षाके लिये बड़े धुरन्धर यक्षोंको बनाया है २६ इसलिये अन्यलोक को चलेगयेहुये पितरोंको यक्ष जल नहीं लेनेदेते कि वे अपने आप आकर पान करलियाकरें जिनके पुत्र मर्त्यलोक में विद्यमानहैं उन पितरोंको जल विना पुत्रोंकेदिये दुर्लभ रहता है २७ इससे शिष्य पुत्र पौत्र कन्या पुत्रादिक बन्धुवर्ग्ग तथा अन्य लोगोंको चाहिये कि प्रतिदिन पितरोंका तर्प्पण कियाकरें २८ नारदजीने पूँछा कि हमसे जलका देव बताओ व तर्प्पणविधि बताओ हे देवेश! जैसे हम जानें निश्चय करके कहो २९ ब्रह्माजी बोले कि जलके देवता विष्णुभगवान् सब लोकों में कहे जाते हैं इसलिये जो जल से पवित्र होता है उसका कल्याण विष्णु करते हैं ३० अन्त्यजादिकोंको स्पर्शकरके मनुष्य पापयुक्त होजाताहै गण्डूषमात्र जलपीने से फिर शुद्धहोजाताहै कुशाके संसर्ग्गसे जल अमृत से भी विशेष पवित्र होजाता है क्योंकि हमने कुशों को सब देवताओं का स्थान बनाया है ३१ कुशको मैंने पहलेही सब देवताओंका स्थान बनाया है क्योंकि कुशकी जड़ में ब्रह्माका निवास रहता है व कुश के मध्य में केशवजी का ३२ व कुशके अग्रभागमें शंकर को जानो बस इन्हीं तीनों देवताओं के प्रतिष्ठित होने से कुश महापवित्र हैं कुश हाथों में धारण कियेहुये मनुष्य सदा पवित्र होते हैं इस लिये जो मन्त्र जप यज्ञादि कुश लियेहुये करतेहैं वा स्तोत्र पाठ करते हैं ३३ सब सौगुणा अधिक होजाताहै क्योंकि कुशके संयोग से सहस्रतीर्थ की समानता होजाती है कुश सातप्रकार के होतेहैं कुश काश दूर्व्वा यवपत्र व्रीहि ३४ भरुही व कमल ये क्रमसे लोक में एक दूसरे के अभाव में पवित्र हैं लोक में कुशके अभावमें काश काश के अभाव में दूर्व्वा इत्यादि योजित करना चाहिये ३५ विना

मन्त्रपढ़े जो स्नान कियाजाताहै सब निष्फलहोजाताहै तिल व कुशके स्पर्श करनेसे जलका स्नान अमृतके स्नानके समान होजाताहै ३६ इससे पण्डितको चाहिये कि तिल कुश जलसे नित्य पितरों का तर्प्पणकरे जो दशतिलों के भी साथ स्नान करताहै उसके ऊपर पितरों की उत्तम तृप्तिहोती है ३७ अग्निस्तंभभयसे जो विस्तारसे शक्ति न हो तो जो स्नानकरके नित्य तिल कुश जलसे पितरोंका तर्प्पणकरता है वह अपने पिता माता दोनों के कुलोंका उद्धारकरके ब्रह्माके स्थान को जाता है ३८ युगादि तिथियों में व अमावास्या के दिन तर्प्पण करने से पितरों की विशेष तृप्तिहोती है इससे इन तिथियों में तिलसहित जलसे पितरों का तर्प्पण करनेसे अक्षय स्वर्ग्गलोक को भोगता है तिल जलसहित अमावास्या को नील-सांड़छोड़ने से व वर्षाऋतु में नित्य दीपदान करने से पितरों से अनृण होजाता है जो नियम से अमावास्या में वर्षदिनतक तिल जल से पितरोंका तर्प्पणकरता है वह गणेशके तुल्य सब देवताओं से पूजित होजाता है ऐसेही जो कोई सब युगादि तिथियों में तिलों से पितरों को तृप्त करता है जो फल अमावास्या के तर्प्पणमें कहाहै उसका सौगुणा अधिक फल पाता है कन्या व मीनकी संक्रांति के दिन व माघकी अमावास्या को पितरों का तर्प्पण जो करता है वह स्वर्ग्गलोक में जाकर तृप्त होता है ३९ । ४२ ऐसेही मन्वन्तरादि तिथियों में वा अन्य पुण्यतिथियों में चन्द्रमा सूर्य्य के ग्रहण में गयादि पुण्यतीर्थों में ४३ पितरों का तर्प्पणकरके श्रीविष्णु के स्थानको पुरुष जाताहै इससे पुण्यतिथि पाकर पितरों के समूह का तर्प्पण पण्डित को अवश्य करना चाहिये ४४ प्रथम देवताओं का तर्प्पण एकाग्रचित्त होकर करके फिर पितरों के तर्प्पणका अधिकारी होताहै अन्यथा नहीं ४५ श्राद्धमें व भोजनकाल में एकही हाथ से पितरों को पिण्ड जलादि देना चाहिये व तर्प्पण दोनोंहाथों से करना चाहिये यह सनातन विधिहै ४६ दक्षिणको मुखकरके पवित्र होकर नाम गोत्रादि कह कहकर पण्डित को चाहिये कि पितरों का तर्प्पण करे तृप्यताम् यह वाक्य सबके तर्प्पणमें पढ़े ४७ जो मनुष्य मोह

से सफ़ेद तिलोंसे पितरोंका तर्प्पण करता है अथवा जलदान कर-नेवाला जलमें स्थितहोकर जलके बाहर भूमि में जलदान करता है ४८ वह वृथाही दियाजाता है किसी देवता पितरको नहीं पहुँचता ऐसेही जो आप सूखे स्थलमें स्थितहोकर जलमें जलाञ्जलि छोड़ता है ४९ वह भी जल पितरों को नहीं पहुँचता इससे निरर्थक है व गीला वस्त्र धारण करके जो जल के भीतर पितरों का तर्प्पण करता है ५० देवताओंसहित उसके पितर हे अनघ! सदा तृप्तहोते हैं ऐसेही जलके बाहर शुष्क वस्त्र धारण करके तर्प्पण करना चाहिये धोबी के धोयेहुये वस्त्रको कविलोग अशुद्ध कहते हैं ५१ इससे फिर अपने हाथसे धोवे तब वस्त्र पवित्र होताहै अन्यथा नहीं शुद्ध वस्त्र धारण करके पवित्र स्थानमें स्थित होकर जो पितरोंका तर्प्पण कियाजाता है ५२ तो दशगुण अधिक पितर सन्तुष्ट होते हैं यह निश्चय है स्नान व सन्ध्या पत्थरके पात्रमें जल भरकर व गैंड़ेके चर्म्मके पात्र में अथवा ताम्रके पात्रमें ५३ जो तर्प्पण प्रतिदिन करता एक दूसरे से सौगुणा अधिक उसके पितर तृप्तहोते हैं व चांदीकी मुँदरी जो तर्ज्जनी अर्थात् अँगूठे के लगेवाली अंगुली में धारण करके पितरों का तर्प्पण करताहै ५४ तो सौ सहस्रगुणा अधिक फल होता इसमें सन्देह नहीं है ऐसेही जो पण्डित सुवर्ण की मुँदरी अनामिका में अर्थात् कनगुरिया के लगेवाली अंगुली में धारण करके ५५ पित-रोंके समूहका तर्प्पण करताहै तो लक्षकोटिगुणा अधिक फल होता है व जो सव्य हस्त के अँगूठे तर्ज्जनी के बीच में गैंड़ेका पात्र वा उसके चर्म्मकी अँगूठी ५६ धारण करके व अनामिकामें कोई रत्न धारण करके तर्प्पण करता है उसका अक्षय फल होताहै जब कोई स्नान करनेको चलता है तो उसके पीछे २ देवता पितर गणों के साथ ५७ वायु होकर तृषायुक्त जलकी इच्छासे चलते हैं पर जब उसने स्नान किया विना तर्प्पणही किये वस्त्र निचोडाला तो देव पितर निराशहोकर चलेजाते हैं ५८ इससे विना पितरोंका तर्प्पण किये वस्त्र न निचोना चाहिये मनुष्यके शरीरमें साढ़ेतीन किरोड़ रोम होते हैं ५९ स्नान करनेपर वे सब तीर्थहोजाते हैं उनसे चुये

हुये जल सों देवता पितरोंकी तृप्ति होती है इससे रोम हाथसे न पोंछने चाहिये न धोती से किन्तु ऐसेही सुखाने चाहिये वा अँगोछे से पोंछने चाहिये शिरके बालोंसे टपके हुये जलको देवगण पीते हैं व मूछ दाढ़ी के बालोंके जलसे पितर तृप्त होते हैं ६० नेत्रबालों के से गन्धर्व्व व अन्य नीचे वालोंसे सब जन्तु तृप्त होते हैं देवता पितृगण गन्धर्व्व व सब जन्तु ६१ स्नानमात्रसे सन्तुष्ट होते हैं क्योंकि स्नान करनेपर फिर पाप नहीं रहजाता जो मनुष्य नित्य स्नान करताहै वह पुरुषोंमें उत्तम गिनाजाता है ६२ इससे सब पापों से छूटकर स्वर्गलोक में जाकर पूजित होताहै स्नान के पीछे जबतक तर्प्पण नहीं करता तबतक देवगण उसे महर्षि कहते हैं ६३ तर्प्पण के पीछे फिर पण्डितको चाहिये कि देवताओं की पूजाकरे देवताओं में जो गणेशकी पूजा करता है उसके किसी कार्य्य में कभी विघ्न नहीं होता ६४ व आरोग्यके लिये सूर्य्यकी पूजा करनी चाहिये व धर्म्म मोक्षके अर्थ श्रीलक्ष्मीनाथकी व शिवकी पूजा गृहके कार्य्योंके लिये करनी चाहिये व चण्डिकाकी सब कार्य्यों के लिये ६५ इसप्रकार देवताओं की पूजा करके फिर बलिवैश्वदेव करे फिर अग्निमें आहुति डालकर ब्रह्मयज्ञकरे उसमें ब्राह्मणों का तर्प्पण होता है ६६ व सब देवताओं तथा सब प्राणियों की तृप्ति होती है इससे इन सब कर्म्मों के करने से प्राणी स्वर्ग को जाता है गतागत स्थिर करके व जा २ कर स्वर्ग मोक्ष सुख वह प्राणी भोगताहै ६७ इससे सब यत्नों से नित्यकर्म्म करना चाहिये नारदजी ने ब्रह्माजी से पूँछा कि हे तात ! जैसे मनुष्य सदा जलपाते हैं वैसेही देवता व पितर क्यों नहीं पाते हैं ब्रह्माजी बोले कि पूर्व्वसमयमें हमने सब देवमय अमृतरूप जल उत्पन्न किया ६८ । ६९ व उसकी रक्षाके लिये धनुर्द्धर यक्षोंको बनाकर नियत करदिया सो हमारी आज्ञासे वे यक्ष देवताओं व पितरों को जलके समीप आनेसे मारते हैं पर मनुष्यों को नहीं मारते ७० मर्त्यलोकमें रहनेवाले अन्य पशु पक्षी कीट पतङ्गों को भी नहीं मारते इससे मर्त्यलोकमें जो मनुष्य उत्पन्नहोते हैं वे देवरूपहोतेहैं ७१ वे अपने गुरु माता पिता देवता आदिका तर्प्पण कर

के जाकर स्वर्ग्गमें बसते हैं जो मर्त्यलोकमें जन्मलेकर नित्य स्नान नहीं करता वह सबका मलखाताहै जो विना गायत्र्यादि मन्त्रजपेहुये नित्यरहताहै वह पीब रक्त खाता पीताहै ७२ जो नित्य तर्प्पण नहीं करता उसे पिताके मारने के समान दोष होता है व देवताओं की नित्य पूजा न करने से ब्रह्महत्याके समान पाप होता है ७३ व जो सन्ध्यावन्दन नहीं करता वह पापी जानो सूर्य्य को मारताहै इससे देवपितृतर्प्पण देवपूजन सन्ध्यावन्दनादि कर्म्म नित्य करने चाहियें नारदजी ने पूँछा कि ब्राह्मण के सदाचारकर्म्मोंका क्रम हमसेकहो ७४ व अन्य वर्णोंका भी अतुल आचार हमसे कहो ब्रह्माजी बोले कि ब्राह्मण आचार से आयु पाता है व आचार से सुख पाताहै ७५ आचारही से स्वर्ग मोक्ष सबपाताहै व आचार सब अलक्षणों का नाश करताहै आचारहीन पुरुष लोकमें निन्दितहोजाताहै ७६ निरन्तर दुःखभागी होताहै रोगी व अल्पायुभी होताहै व अनाचार से मनुष्य का नरक में वासभी निश्चय करके होताहै ७७ व आचारसे परलोक पाताहै इससे तत्त्वतः आचारसुनो नित्य गृह गोबरसे लीपनाचाहिये ७८काष्ठके पात्र जलसे धोने चाहिये व पत्थरके भी जलहीसे व कांस्य का पात्र भस्मसे शुद्धहोताहै व ताम्रपात्र खटाईसे ७९ व पत्थरका पात्र मुख्यकरके तेलसे शुद्धहोता है नारियलआदि फलके पात्र खेतकी मृत्तिकासे शुद्धहोतेहैं सुवर्ण चांदी आदिके पात्र केवल जलसे शुद्ध होजाते हैं ८० व लोहका पात्र अग्निमें डालनेसे शुद्ध होताहै अन्न जब सिद्ध होजाता है तो जलके सेकसे शुद्ध होताहै व अपवित्र पृथ्वी खोदने जलाने लीपने धोने व जलकी वर्षाहोनेसे शुद्ध होती है व तेजवाले मणिप्रस्तरादि ८१ । ८२ भस्म व मृत्तिका मलनेसे शुद्ध होते हैं यह हमने पूर्व्वकाल में कहा है शय्या भार्य्या बालक वस्त्र यज्ञोपवीत लोटा ८३ ये अपनेही शुद्ध होते हैं दूसरे के कभी नहीं शुद्ध होते एकही वस्त्र धोतीही पहिनेहुये कभी न भोजनकरे अँगौछा भी लियेरहे व एकही वस्त्र पहिने स्नान भी न करे ८४ व अन्य किसी का वस्त्र धारण करके स्नान न करे बालों व दांतों का संस्कार प्रातःकालही करडाले ८५ व माता पिता गुरुजनों के नित्य

प्रणाम करे भोजन करने के समय दोनों हाथ दोनों पैर व मुख ये पांच गीले होने चाहियें ८६ क्योंकि भोजनके समय जिसके ये पांच ओदेरहते हैं वह सौवर्षतक जीताहै देवता गुरु वेदशास्त्रपाठी ब्राह्मण आचार्य्य ८७ इनकी आज्ञाका उल्लङ्घन न करे व इन सबोंकी तथा यज्ञमें दीक्षित विप्रकी छायाको न गोंजे गोगण देवता ब्राह्मण घृत मधु चौरहा ८८ व पिप्पल वट आम्रआदि पुण्य प्रसिद्ध वृक्षों की प्रदक्षिणा करे धेनु व विप्र अग्नि व ब्राह्मण दो ब्राह्मण स्त्रीपुरुष ८९ इनके मध्यमें होकर न जावे क्योंकि इनके बीचमें चलेजाने से जो प्राणी स्वर्गमें भी टिकाहो तोभी नीचे गिरपड़े जूंठे हाथ से अग्निका स्पर्श न करे ब्राह्मण देवता गुरु ९० अपना शिर पुष्पके वृक्ष यज्ञपात्र अधार्मिक को भी व तीन तेजोंको भी जूंठे कभी न देखे व न स्पर्श करे ९१ सूर्य्यचन्द्रमा व नक्षत्र इन तीनों के तेजोंको जूंठेमुख कभी न देखे व गुरु देवता राजा श्रेष्ठ तपस्वी ९२ योगी देव कर्म्मकारी धर्म्मवक्ता विप्र इनकोभी न देखे न स्पर्शकरे नदियोंके किनारे व नदियों के द्वीपों में समुद्रके तीरपर ९३ पिप्पल वट गूलर आदि यज्ञवृक्षों की जड़ पर बाग में फुलवाड़ी में जलमें शरीर का मूत्र पुरीषादिमल न छोड़े ९४ ब्राह्मण के गृहमें गोशाला में रम्य सुन्दर सड़कपर भी मल त्याग न करे व धीर मनुष्य मंगल के रोज बार कभी न बनवावे ९५ मनुष्यको चाहिये कि दांतों में मैल न रहनेदे और मुखमें नहँ न डाले रविवार व मङ्गलवार को तैल अङ्गमें न लगावे ९६ अपने अङ्गोंको व आसन को न बजावे व गुरुके साथ किसी आसनपर बराबर न बैठे ब्राह्मण का धन न हरे देवता व गुरुकाभी धन न छीनले ९७ राजाका धन तपस्वियों का पँगुले अन्धे व स्त्रीका भी धन न हरे देवता ब्राह्मण धेनु राजा ९८ रोगी भार से व्याकुल गर्भिणी व दुर्ब्बल को मार्ग बतादेवे राजा ब्राह्मण व वैद्यसे विवाद न करे ९९ ब्राह्मणी व गुरुस्त्रीको दूर से वरा देवे उनका स्पर्श कुरीति से न करे जातिभ्रष्ट कुष्ठरोगयुक्त चाण्डाल गोमांसभक्षी १०० धूर्त्त ज्ञानहीन इनको दूरसे बरावे कभी इनका स्पर्श न करे दुष्टस्वभाववाली दुराचारिणी अपवादकरानेवाली

कुकर्म्मकारिणी दुष्टताप्रिय कलहप्रिय प्रमत्तचित्त अधिकअंगवाली निर्ल्लज्ज अन्यके गृहमें व बाहर घूमनेवाली १०१ । १०२ बहुत खर्च करनेवाली आचाररहित बस ऐसी अपनी स्त्रीको दूरसे बरादे रजस्वला गुरुकी स्त्रीके कभी प्रणाम न करै १०३ व न बुद्धिमान् उस का स्पर्शही करे कदाचित् भूलसे स्पर्शकरले तो स्नानकरनेसे शुद्ध होसकेगा व उसके सङ्ग क्रीड़ाभी सदा वर्ज्जनीयहै १०४ न उसका वचनसुने न उसका दर्शनहीकरे गुरुकी स्त्रीका वचनमात्र तो सुनले परन्तु दर्शन कभी न करे पुत्र व छोटेभाईकी स्त्रीको व युवतीहो तो अपनी कन्याको भी १०५ अन्य श्रेष्ठ गुरुजनोंकी स्त्रीकोभी कभी न देखे न हाथ से कभी स्पर्शही करे व इनकेसाथ कथाओंका आलाप न करे न उनकी भौंहोंकी टेढ़ाई आदि देखे १०६ व कलह करती हुई निर्ल्लज्ज किसीभी स्त्रीको सदा त्यागकरे भूसी अङ्गार हड्डी भस्म पर कभी पैर न धरे १०७ कपास पुष्पमाला देवताके ऊपर चढ़कर उतरेहुये तुलसी बिल्वपत्रादिकेऊपर व चिताके काष्ठकेऊपर व गुरुजन के ऊपर कभी पैर न रक्खे सूखी किसीप्रकारकी मछली न खावे व अन्य अपवित्र दुर्ग्गन्धि आनेवाले लशुन प्याज इत्यादि न खावे १०८ अन्य किसीकी जूँठी वस्तु कभी न खावे अन्य किसीके भोजन बनानेसे बचा इन्धन न लगावे दुष्टकेसाथ क्षणमात्र भी सज्जन न ठहरे न चले १०९ व धीर दीपकी मञ्चादि पर पड़कर आईहुई छाया में तथा बहेरेकी छाया में कभी क्षणमात्रभी न ठहरे न छूनेके योग्य पतित म्लेच्छादिकों के साथ व कोप कियेहुये नीचों के साथ ११० क्षणमात्रभी वार्त्तालाप न करे क्योंकि इनकेसङ्ग आलाप करनेसे रौरवनरकको जाताहै अपनी अवस्थासे छोटे पितृव्य व मामाके प्रणाम न करे १११ परन्तु जब उनको देखे तो उठकर हाथ जोड़कर आसन देकर बैठावे तेल लगायेहुये जूँठमुखवाले ओदीधोती पहिनेहुये रोगी ११२ दौड़ते चले जातेहुये व बड़ाभारी भारलादे चलेजातेहुये के प्रणाम न करे यज्ञशालाके भीतर बैठेहुये नष्टपुरुषके व स्त्रियों के सङ्ग क्रीड़ा करतेहुयेके ११३ गोदमें बालक लियेहुयेके पुष्प व कुश हाथ में लियेहुये कभी प्रणाम न करे जलकेभीतरमें अँगौछा आदिसे शिर

व कान ढँकेहुये व शिखा छोड़ेहुये ११४ व विना पैरधोयेहुये व दक्षिण को मुखकरके आचमन न करे यज्ञोपवीतरहित नग्न कच्छ छोड़ेहुये ११५ व एकही वस्त्रधारणकिये हुये आचमनकरनेसे शुद्ध नहींहोता आचमन करनेके समय प्रथम मध्यमादि तीन अंगुलियोंसे मुखका स्पर्शकरे ११६ तदनन्तर अंगुष्ठ व तर्ज्जनीसे नासिकाकास्पर्शकरे फिर अंगुष्ठ व अनामिकासे दोनों नेत्रोंका स्पर्शकरे ११७ फिर कनिष्ठिका व अँगूठे से कानोंका स्पर्शकरे व अंगुष्ठसे नाभिका हथेलीसे हृदय का स्पर्शकरे फिर सब अंगुलियोंसे शिरकेऊपर हुये ११८ बाहु का स्पर्श हाथ के अग्रभाग से करे तब फिर शुद्ध होजावे इसक्रम से आचमन करके मनुष्य पवित्र होताहै ११९ व सबपापोंसे छूट कर अक्षयस्वर्ग लोक को भोगताहै प्राणवायु त्रिपुटी में विद्यमान रहताहै व्यान व अपान ये मुद्रासे धारण किये जाते हैं १२० समान सब अंगुलियोंसे आड़ा जाताहै व उदान तर्ज्जनीको छोड़कर अन्य चार अंगुलियोंसे नाग कूर्म्म कृकल देवदत्त धनञ्जय १२१ जिनके लिये भूमिपर दिया गया है वे नागादि तृप्तहों यह इनप्राणों की धारणाका मन्त्रहै गीले पैरसे शयन सूखेपैरसे भोजन १२२ अन्धकारमें शयन और भोजन न करना चाहिये पश्चिम व दक्षिणको मुखकरके दन्तधावन न करे १२३ उत्तर व पश्चिमको शिर करके कभी न सोवे क्योंकि उत्तर पश्चिमको शिरकरके सोनेसे आयु घटती है व पुरुष ब्रह्महा होता है १२४ इससे उन दिशाओं में शिरकरके न सोवे पूर्व्व व दक्षिणही को शिरकरके सोना उत्तम होताहै पूर्व्वको मुखकरके भोजन करना आयु बढ़ाता है व दक्षिणको मुखकरके यशको बढ़ाता १२५ व पश्चिमको मुखकरके लक्ष्मीको व उत्तरको मुखकरके भोजन करनाभी यशहीको बढ़ाताहै पूर्व्वकीओरको मुखकरके प्रणाम करने से अग्नि देव प्रसन्नहोते हैं दक्षिणको मुखकरके प्रेतत्वहोताहै १२६ पश्चिमको मुखकरने से रोगी होताहै व उत्तरको करने से आयु धन बढ़ते हैं ॥

चौ० एकबार भोजन देवाशन । द्विरावृत्तिनरअशनसुखासन १२७
त्रिरावृत्ति भोजन प्रेतन को । चौथो राक्षस अशन न जनको ॥
मांसरहित हवि देव अहारा । मत्स्य मांस कुनरन कर चारा १२८

पूतिगन्धि पर्य्युषित कुभोजन । अपर खात जो अतिहि नीचजन॥
स्वर्गी नर जब भूतल आवत । चारचिह्नतिनत्वरितबतावत १२९
दान प्रशस्त मधुर शुभवाणी । देवार्चन द्विज तर्प्पण भाणी ॥
कृपणबुद्धि निजजन की निन्दा । मलिनवस्त्रधृतिनीचसुविन्द १३०
अधिकरोष कटुवचन प्रचारा । नरकागत लक्षण निरधारा ॥
वर वाणी नवनीत समाना । करुणामयमनसबहितजाना १३१
धर्म्मबीज भव पुरुषन केरे । ये लक्षण श्रुतिगणके टेरे ॥
कृपण हृदय अतिक्रूर स्वभावा । क्रकचवचनविधितासुबनावा १३२
पाप प्रसूत पुरुष जो जगमें । ये लक्षण हैं तिनके मगमें ॥
सदाचार निर्णय यह जोई । सुनिहिसुनाइहि नरजगसोई १३३
लहि आचारादिक फल नीके । पापपूत स्वर्गति लहिठीके १३४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेसदाचारवर्णनंनामैकोन पञ्चाशोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

दो० पचासयें पितृ मातृकी पूजासम नहिं आन ॥
धर्म्म अहै संसारमहँ यह इह सहित प्रमान १
तादृढ़ता हित बहुकहे शुभदृष्टान्त अनोख ॥
जिन्हें सुनत पितृयज्ञमहँ तुरत होत नर चोख २

भीष्मजीने पूंछा जो पुण्यलोकमें अधिकहै व सदा सबका सम्मत है हे विप्र! जो पूर्वजों ने कीन है सो हमसे कहो १ पुलस्त्यजी यह सुनकर कहनेलगे कि जो तुम हमसे पूछतेहो यही एकसमय में व्यासजीके शिष्योंने व्यासजीको प्रणाम करके धर्म्मको पूंछाथा २ अट्ठासी हज़ार ऋषियोंने सूतके पुत्र सौतिजी से पूँछा कि लोक में पुण्यसे पुण्यतम सब धर्म्मोंमें उत्तम क्या करनेसे मनुष्य अक्षय स्वर्ग सुख भोगते हैं सो कहो ३ मर्त्यलोकमें रहनेवाले मनुष्योंको सुखसे शुद्ध कौन पदार्थ लभ्यहै जो बड़े छोटे सबलोगोंको मिलसक्ता हो ऐसा कोई उत्तम यज्ञ बताओ ४ जिसके करने से मनुष्य स्वर्ग में जाकर देवताओंसे भी पूज्यहो ऐसा कोई तीर्थ यात्रादि उत्तम यज्ञ

भूतलपर करनेके योग्य हमलोगों से कहो व धर्मसे प्रसन्नहो ५ यह सुनकर व्यासजी ने कहा कि हम पंचाख्यान कहतेहैं सो पूर्वसे सुनो जिन पांचोंमें एकको करके नर मोक्ष व स्वर्ग व यशकोपाताहै ६ पिता व स्वामीकी पूजा व सबको बराबर जानना मित्रके साथ द्रोह न करना व विष्णु की भक्ति ये पांच महायज्ञहैं ७ इससे हे विप्र ! पहले माता पिताकी सेवासे मनुष्य धर्मसाधनकरे क्योंकि जो धर्म माता पिताकी सेवासे होताहै वह धर्म पृथ्वीपर सैकड़ों यज्ञ वतीर्थयात्रादिके करनेसे नहीं होताहै ८ सौतिजी ऋषियों से बोले कि पिता धर्म्महै पिता स्वर्ग है पिताही परमतपहै इससे पिताके प्रसन्न होनेपर सब देवता प्रसन्न होतेहैं ९ जिसकी सेवासे वा गुणसे पितरलोग तृप्तहोतेहैं उसको प्रतिदिन गङ्गास्नानका फल विद्यमान रहता है १० माता सर्व्वतीर्त्थमयी होतीहै व पिता सब देवमय होताहै इससे सब यत्नोंसे माता पिता की पूजाकरे जो मनुष्य अपने पिता माताकी प्रदक्षिणा नित्यकरताहै ११ उसने जानो सप्तद्वीपवती पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करली जितनी देरतक प्रदक्षिणाकरने में जानुओं को ग्लानि पहुँचती है उतने पलों के सहस्र २ वर्षपर्य्यन्त प्रदक्षिणा करनेवाला पुरुष स्वर्ग्गलोकमें जाकर पूजितहोता है जिसके दोनोंहाथ पिता माताके कर्म्मोंके करनेमें लगते हैं व शिर उनके प्रणामके लिये झुकताहै व अन्य अङ्ग दण्डवत् प्रणामकरने के समय पृथ्वीपर लगजाते हैं वह अक्षय स्वर्ग्गलोक पाता है माता पिताके चरणोंकी धूलि जबतक पुत्रके मस्तकमें लगी रहतीहै १२।१३ व हाथोंमेंभी लगीरहतीहै उतने समयके विपलों के समान वर्षतक पुत्र देवलोकमें पूजितहोताहै माता पिताके चरणारविन्दोंका जल जो पुत्र पीताहै १४ उसके कोटिजन्मके इकट्ठे कियेहुये पाप मिटजातेहैं वह मनुष्य इसलोकमें धन्यहै व सब पापोंसे पवित्र है १५ इससे एकही जन्मसे गणेशके तुल्य स्वर्गमें जाकर पूजितहोता है जो अधम पुरुष अपने पिता माताके वचनोंका उल्लङ्घन करताहै १६ वह प्रलयपर्य्यन्त नरकमें जाकर बसताहै विना पिता माताकी कुछ पूजा कियेहुये जो पुत्राधम भोजनकरताहै १७ वह कल्पके अन्ततक कृमि भरेहुये नरककूपमें पड़ारहता है रोगी वृद्ध जीविकारहित १८

नेत्र कानसे विकल अपने माता पिताको छोड़ देनेसे पुत्र रौरवनरकको जाताहै फिर अन्त्यज म्लेच्छ व चाण्डालोंकी योनियोंमें उत्पन्न होताहै १९ क्योंकि मातापिताका पालन पोषण न करनेसे सबपुण्य क्षयहोजाताहै माता पिताकी आराधना न करके जो पुत्र तीर्थ व देवताओं की भक्तिभी करताहै २० वह तीर्थ देवकी भक्तिका फल नहीं पाता कीट पतङ्गके समान पृथ्वीपर दुःखित फिरताहै हे विप्रलोगो! इस विषय में हम एक पूर्व्वकालका वृत्तान्त कहते हैं उसे यत्नसे सुनो २१ जिस को सुनकर फिर प्राणी मोहित नहीं होता न फिर पृथ्वीपर जन्मही पाता है पूर्व्वकालमें एक नरोत्तम नाम ब्राह्मणहुआ २२ वह अपने पिता माताका अनादर करके तीर्थसेवा करने को चलागया सब तीर्थों में घूमते २ उस ब्राह्मणके २३ अनन्त स्नानकरने के फलसे प्रतिदिन अपने आप आकाशमें वस्त्र सूखजानेलगे तब उस ब्राह्मण के मनमें बड़ा अहङ्कारहोगया कि २४ हमारे समान पुण्यकर्म करने वाला महायशस्वी कोई पुरुष नहीं है ऐसा कहने व समझनेपर एक बगुलापक्षी उससे बोला २५ कि तुम कुछ भी धर्म्मात्मा नहीं हो तब मारेक्रोधके वैरबुद्धिसे ब्राह्मणने बगुले को शापदिया जिससे कि वह बगुला भस्महोकर आकाशसे पृथ्वीपर गिरपड़ा २६ गिरते समय कह गया कि हे द्विजेन्द्र! तुमको अन्तकालमें बड़ा भारी मोहहोगा इस पापसे फिर उस ब्राह्मण की धोती स्वर्ग्ग में सूखनेके लिये न जाने लगी २७ तब ब्राह्मणको बड़ाभारी विषाद हुआ तब आकाशवाणी हुई कि हे ब्राह्मण! अब परमधार्म्मिक मूकनाम एक चाण्डाल के पासको जा २८ वहां तू धर्म्म जानेगा व उसके वचनसे तेरा कल्याण होगा ऐसी आकाशवाणीको सुनकर ब्राह्मण उस मूकनाम चाण्डाल के मन्दिरको गया २९ व उस को बड़े आदरसे अपने पिता माता की सेवाकरतेहुये देखा शीतकालमें उष्णजल अपने पिता माताको देरहाथा ३० उनके अङ्गोंमें अपने हाथोंसे तेललगाकर अग्निबारकर तपाता फिर बहुत रुई भरीहुई तोसकपर पहुड़ाकर सुन्दर गरुईरजाई उढ़ाता नित्य मीठे अन्न खिलाता दुग्ध भात व अन्य ६ प्रकारके रस भोजन कराता ३१ वसन्तऋतुमें फिर सुगन्धित पुष्पोंकी माला

पहिनाता इसी प्रकार अन्य जो विविध प्रकार के भोग्य पदार्थ होते निरन्तर देता ३२ उष्णकालमें नित्य बेनासे मातापिताके ऊपर पवनकरता जब उनकी समयके अनुसार नित्य पूजा करलेता तब आप भोजन करता था ३३ फिर श्रम व सन्तापका निवारण करता इन पुण्योंसे प्रसन्न होकर उसके घरके भीतर विष्णु हमेशह रहते थे ३४ व कभी २ अनाधार अन्तरिक्षमें क्रीड़ाकरते हुये श्रीविष्णु भगवान् को देखा सो एकदिन नहीं उन त्रिभुवनेश्वरको प्रतिदिन उसके घरमें स्थित देखा ३५ कि ब्राह्मणका कांतरूप धारण किये हुये जिसके समान तीनों लोकों में कोई सुन्दर न था उनको देखा विष्णु भगवान्का वह तेजोमय महादिव्यशरीर मन्दिरको प्रकाश करतेहुये ३६ ऐसीमूर्तिको देखकर विस्मित होकर नरोत्तम ब्राह्मण उस मूक नाम चाण्डालसे बोला कि हमारे निकट आओ तो तुमसे कुछ धर्म्म कर्म्मकी वार्ता पूँछें ३७ तब तुम हमारा व सबलोगों के हित करनेवाला कर्म्म हम से कहना मूकनाम चाण्डाल बोला कि मैं इस समय अपने पिता माता की पूजा कररहाहूँ तो तुम्हारे समीप कैसे आऊँ ३८ माता पिताकी पूजाकरके पीछे तुम्हारा कर्म्म करूंगा मेरे द्वारपर ठहरो तुम्हारा आतिथ्य करताहूँ ३९ चाण्डाल के ऐसा कहनेपर ब्राह्मणदेवने बड़ाकोप किया व कहा कि हम ब्राह्मणको छोड़कर तेरा अधिक अन्य क्या कार्य्य है ४० यह सुनकर वह चाण्डाल बोला कि हे ब्राह्मण! वृथा क्यों कोप करतेहो मैं तुम्हारा बगुला नहीं हूँ हे तात! तुम्हारा कोप उसी बगुलेही में सिद्ध होसक्ता है अन्य किसी में नहीं ४१ सो बगुले के ऊपर भी तुम्हारा क्या चला उसकेही शाप से जब तुम्हारे स्नान की धोती आकाश में नहीं सूखने व ठहरने लगी तब आप आकाशवाणी सुनकर हमारे गृह पर आये हैं ४२ ठहरो २ कहेंगे नहीं तो तुम एक पतिव्रता स्त्री के समीपजाओ हे द्विजश्रेष्ठ! उसको देखतेही तुम्हारा प्रिय फलेगा ४३ तब ब्राह्मण का रूप धारण कियेहुये श्रीविष्णुभगवान् चाण्डाल के घरसे निकलकर ब्राह्मण से बोले कि चलो उस पतिव्रताके घर को हमभी चलते हैं ४४ तब विचार करके ब्राह्मण विप्ररूपी श्रीहरिके

सङ्ग २ चला व विप्ररूपधारी हरिसे मार्ग में बोला कि ४५ हे महाविप्र ! तुम इस चाण्डालके गृह के भीतर किस लिये सदा रहतेहो व कभी २ स्त्रियोंसहित क्यों हर्षित होतेहो ४६ श्रीहरिभगवान् बोले कि इस समय तुम्हारा मन अच्छी तरह शुद्ध नहीं है पतिव्रता को देखकर पीछे से हमको भी अच्छीतरह जानोगे ४७ नरोत्तम ब्राह्मण बोला कि हे तात! वह पतिव्रता कौनहै व उसमें कौनसा बड़ा भारी ज्ञान है जिसके कारण हम अब उसके पासको जाते हैं हे द्विज! यह कारण हमसे कहो ४८ श्रीहरिभगवान् बोले कि नदियों में गङ्गा श्रेष्ठहैं व स्त्रियों में पतिव्रता स्त्री श्रेष्ठ होतीहै मनुष्योंमें राजा श्रेष्ठ होताहै व देवताओं में जनार्द्दनजी श्रेष्ठहैं ४९ इससे नित्य पतिके हित करने में निरत पतिव्रता स्त्री अपने दोनों कुलके सौ सौ पुरुषोंका उद्धार करती है ५० व महाप्रलयपर्य्यन्त स्वर्ग के सुख भोगती है व स्वर्ग से भ्रष्ट होनेपर जब उसका जन्म होताहै तो उसका पति सार्व्वभौम चक्रवर्त्ती राजा होताहै ५१ उसी की महारानी होकर नानाप्रकारके सुख भोगती है फिर २ उसको स्वर्गका राज्यमिलता रहताहै इसमें कुछ संशय नहीं है ५२ इस रीति से सौ जन्म पाकर तब वह मोक्षको पाती है तब उस ब्राह्मणने श्रीहरिजी से पूँछा कि पतिव्रता कौन होती है उसका लक्षण हमसे कहो ५३ हे द्विजशार्दूल! जिससे हम अच्छीतरह पतिव्रताके लक्षण जानें इससे हम से कहो श्रीहरिजी बोले कि जो स्त्री अपने पतिको स्नेहसे पुत्रसे सौगुणा अधिक समझे व भय से राजाके समान माने ५४ व आराधना विष्णुके समान पतिकी करे वह स्त्री पतिव्रता कहाती है जो स्त्री कार्य में दासी की बराबर व भोगमें वेश्याकी व भोजनमें माताकी बराबर ५५ व विपत्ति में जो पतिको सलाह देती है वह स्त्री पतिव्रता है व जो मनसा वाचा कर्मणासे पतिकी आज्ञाको नहीं टालती वह पतिव्रताहै ५६ व जब पहिले पति भोजन करले पीछे अपना खाती है वह पतिव्रता है जिस २ शय्यापर उसका पति नित्य सोताहो यत्नसे ५७ वहां २ जो अपने पतिकी सेवा नित्य किया करतीहो व कभी न मत्सरता करती हो न कृपणता न मान करतीहो ५८ मान अ-

भानको समान मानतीहो उसका पतिव्रता नाम है जो स्त्री सुन्दर वेषधारी किसी पुरुषको देखकर उसकी अवस्था के अनुसार उसे अपने भाई पिता व पुत्रके समान ५९ समझती मानती है वह स्त्री पतिव्रताहै हे द्विजशार्दूल! आओ उसके पास चलें व जैसा तुम्हारा इष्ट हो चलकर उस पतिव्रतासे पूँछो ६० जहां चलतेहो उसके आठ स्त्रियां हैं उनमें एक श्रेष्ठरङ्गवाली रूपयौवनसम्पन्न दयायुक्त यश-स्विनी ६१ शुभानामसे विख्यातहै जाकर उससे अपना हित पूँछो ऐसा कहकर श्रीभगवान् वहीं अन्तर्द्धान होगये ६२ उनको अदृश्य देखकर वह ब्राह्मण बहुत विस्मित हुआ फिर उस साध्वी के गृह में जाकर उस पतिव्रतासे उस ब्राह्मणने पुकारकर कहा ६३ अतिथि के वचन सुनकर अपने गृहसे झट निकलकर वहां ब्राह्मणको देख कर वह पतिव्रता द्वारपर खड़ी होरही ६४ उसे देखकर द्विजश्रेष्ठ हर्षितहोकर बोला कि जैसा हमसे उस मूकने व एक ब्राह्मणने कहा है वैसा हमारा हितकारी व प्रिय वचन हमसे कहो ६५ पतिव्रता बोली कि इससमय मुझको अपने पतिकी सेवा करनी है मैं इससमय स्व-तन्त्र नहीं हूं इससे अब जातीहूँ पतिकी सेवाकरके तब तुम्हारे लिये अर्घ्य पाद्यादि लेकर आऊँगी इससमय आतिथ्य ग्रहणकरो ६६ ब्राह्मण बोला कि हमारे देहमें क्षुधा नहीं है न पिपासाहै न हम थके हैं इससे अर्घ्यादि की आवश्यकता नहीं है हे कल्याणि! हमारा अभीष्ट कहो नहीं तो हम अभी तुमको शापदेंगे ६७ तब वह पति-व्रता बोली कि हे द्विजोत्तम! हम बक नहीं हैं जिसको शाप देओगे जाकर धर्म्मतुलाधारसे अपना हितपूँछो ६८ यह कहकर वह महा-भाग्यवती अपने गृहके भीतरको चलीगई तब उस ब्राह्मणने जैसे चाण्डालके गृहमें एक ब्राह्मणको देखा था वैसेही वहांभी देखा ६९ फिर विचारांशकरके विस्मित होकर ब्राह्मण उन विप्ररूपी श्रीहरिके साथ जाकर हर्षित मनसे टिकेहुये उन ब्राह्मणदेव से बोला कि ७० हे विप्रदेव! हमने इस पतिव्रता के लक्षणदेखे कि हमारे देशान्तरके वृत्तको देखतेही उसने कहदिया ७१ हम आपसे यह पूँछते हैं कि चाण्डाल व पतिव्रता दोनों कैसे हमारे वृत्तान्तको जानगये व सज्ज-

नोंका आचार कैसे जानते हैं इस विषय में हमको बड़ा विस्मय है यह क्या आश्चर्य्य है ७२ श्रीहरि बोले कि हे तात! सबका कारण तो वही सर्व्वभूतभावन जानताहै अतिपुण्य व सदाचारसे जिसको देखकर तुमको विस्मय हुआ ७३ अब यह बताओ कि उस पतिव्रताने तुमसे क्या कहा यह सुनकर वह ब्राह्मण विप्ररूपी श्रीहरिसे बोला कि उसने तो हमसे कहा कि तुम धर्म्मतुलाधार से जाकर पूँछो ७४ श्रीहरि बोले कि हे मुनिशार्दूल! आओ हम उसके पास चलते हैं यह कहकर चले चलतेहुये श्रीहरिसे ब्राह्मण ने पूँछा कि धर्म्मतुलाधार कहां रहताहै ७५ श्रीहरि बोले कि वह सब जनों के समूहमें रहताहै व सब पदार्थ मोललेता है फिर बेंचताहै तुलाधार ७६ यव रस घृत कूट अन्नका संचय सबजन उसके कहनेके मुताबिक लेते देते हैं ७७ व प्राणान्त भी चाहे होने पर हो परन्तु सत्य छोड़कर कभी झूँठीबात मुखसे नहीं निकालता इसीसे वह तुलाधार सब नरवरोंमें श्रेष्ठहै ७८ व उसका प्रमाण सब मानतेहैं यह कहते हुये दोनों जनों ने जाकर बहुत रस बेंचतेहुये तुलाधारको देखा जो कि मलिनवस्त्र धारण किये था दांतों में जिसके मैल लगा था ७९ व वस्तु धन सम्बन्धी बहुत लोगों से विविधप्रकारकी वाणी बोलता था उसके चारों ओर बहुत से स्त्री पुरुष बैठेहुये थे ८० किसी प्रकारसे उसके समीपजाकर वह नरोत्तम ब्राह्मण मधुरवाणीसे बोला कि हम तुम्हारे पास आये हैं हमसे धर्म्म बताओ ८१ यह सुनकर तुलाधार बोला कि हे द्विज! जब तक हमारे समीप ये जन बैठे हैं तब तक हमको स्वस्थता नहीं है व यह भीड़ पहरभर रात्रि बीते तक रहेगी ८२ अब हमारे उपदेशसे तुम धर्माकरके समीप जाओ तुमने बगुला मारडालाहै इससे आकाशमें तुम्हारी धोतीका सूखना बन्दहोगयाहै ८३ यह सब वहां जानोगे कि सज्जनसे अद्रोहकरना चाहिये वहां उसके उपदेशसे तुम्हारा मनोरथ सफलहोगा ८४ उस ब्राह्मणसे ऐसा कहकर तुलाधार फिर अपना क्रय विक्रय करनेलगा ब्राह्मण विप्ररूपी श्रीहरिसे बोला कि हे तात! अब मैं सज्जनाद्रोहक धर्म्माकरके पासको जाताहूँ ८५ परन्तु तुलाधारने जो उपदेश जहां

जाने को दियाहै मैं उसका स्थान नहीं जानता हूँ कि कहां है आप यदि जानतेहों तो कृपाकरके बतावें श्रीहरि बोले कि आओ तुम्हारे साथ हम उसके गृहको चलेंगे ८६ यह कहकर दोनोंचले मार्ग में जाते हुये श्रीहरिसे ब्राह्मणने पूँछा कि तुलाधार न तो स्नानकरता है न देवता पितरोंका तर्पण करताहै ८७ उसके सब अङ्गोंमें मल लगारहता है कोई उत्तम लक्षण नहीं दिखाई देता फिर वह हमारे देशान्तर के समाचारों को अपने यहां बैठे २ कैसे जानलेताहै ८८ इस विषयमें हमको विस्मयहै हे तात ! इसका सब कारण हमसे कहो श्रीहरि बोले कि तुलाधारने सत्य बोलने व सबमें समभाव रखनेसे तीनोंलोक जीतलिये हैं ८९ व देवता मुनिगणोंसहित उसके माता पिता सब तृप्तरहतेहैं इसी से वह धर्म्मात्मा भूत भविष्य सब वृत्तांत जानता है ९० क्योंकि सत्यसे पर और कोई धर्म्म नहीं व असत्य के समान पाप नहीं है व विशेषकरके जो वह सब प्राणियों में सम भाव रखताहै उसीका यह फलहै ९१ जिसका मन शत्रु मित्र दोनों में व उदासीनमें भी समान रहताहै उसके सब पाप नाश होजातेहैं व विष्णुकी सायुज्यको वह नर पाताहै ९२ इस तरहसे जो रहता है वह कुलके कोटिन पुरुष उद्धारकरताहै सत्य दम शम धैर्य्य स्थिरता अलाभता ९३ अनालस्य व अनाश्चर्य्यता सब उसमें स्थित रहते हैं इसीसे देवलोकके व नरलोक के सब वृत्तान्त ९४ वह धर्म्मज्ञ जानता है क्योंकि इसीसे उसके शरीरमें श्रीहरि निवासकरतेहैं बस लोक में उसके समान सत्य व सरलता में कोई दूसरा नहीं है ९५ वह साक्षात् धर्म्ममय है व उसी ने इस जगत् को स्थित कररक्खाहै ब्राह्मण बोला कि हमने आपके प्रसादसे तुलाधारके सर्व्वज्ञ होने का कारणजाना ९६ अब अद्रोहक का वृत्तान्त हमसे कहो जिसके समीप को तुलाधारने जानेको कहाहै श्रीहरि भगवान् बोले कि पूर्व्वसमय का यह वृत्तान्तहै कि एक राजपुत्रके कुलकी स्त्री नवयौवनयुक्त ९७ कामदेवकी स्त्री रतिके समान व इन्द्रकी स्त्री शचीके समान सुन्दरी थी वही स्त्री उस राजपुत्रको प्राणके समान प्रियथी व सुन्दरी तो थीही इससे सुन्दरी उसका नामभी था ९८ अकस्मात् उस राजपुत्र को

कहीं जानेकी अत्यन्त आवश्यकता हुई इससे वह चलने पर उद्यत हुआ तब उसने अपने मनसे विचारा कि प्राणोंसे भी गरीयसी ९९ इस अपनी भार्य्याको किसस्थानमें स्थापितकरें जहां निश्चय इसकी रक्षा होतीरहे यह विचार करके एकाएकी वह राजपुत्र इस सज्जना-द्रोहकके पास आया १०० व वैसा वचन उसने कहा कि हमारी स्त्री को आप अपने गृहमें रक्खें इस बातको सुनकर वह बहुत विस्मित हुआ व बोला कि मैं न तो तुम्हारा पिताहूँ न भ्राता न बन्धुहूँ १०१ न तुम्हारे पिता वा माता के कुलका हूँ न इसी तुम्हारी भार्य्याही के पिता माता के कुलका हूँ न कोई सुहज्जनही हूँ फिर हे तात ! इस स्त्रीको मेरे घरमें स्थापित करके तुम कैसे स्वस्थ होओगे १०२ तब उस राजपुत्रने सबलोगोंके सामने उससे यह कहा कि लोकमें तुम्हारे समान धर्म्मज्ञ व विजितेन्द्रिय और कोई नहीं है १०३ इससे हम तुमको प्रामाणिक समझते हैं इस विषयमें तुम हमको दूषित न करो कि हमारे यहां कैसे अपनी स्त्री स्थापित करतेहो तब वह सज्जना-द्रोहक बोला कि तुम तो सर्व्वज्ञहो हमको जानते हो पर अन्य लोगों से क्यों हमको दूषित कराया चाहतेहो क्योंकि तीनोंलोकोंको भी मो-हित करनेवाली तुम्हारी भार्य्याकी रक्षा कौन पुरुष करसक्ताहै १०४ राजपुत्र बोला कि हम तो पृथ्वीपर तुम्हींको ऐसा जानकर यहां आये हैं बस यह तुम्हारे यहां तबतक रहे व हम अपने आवश्यक कार्य्य के लिये मन्दिरको जायँ १०५ ऐसा कहने पर फिर इस सज्जना द्रोह-कने कहा कि इस सुन्दर पुरमें बहुत से युवापुरुष रहते हैं फिर ऐसी स्त्रीकी रक्षा यहां कैसे होसकेगी १०६ तब राजपुत्रने फिर कहा कि जैसे बने इसकी रक्षाकरो हम तो जाते हैं तब यह गृहस्थ बड़ेसङ्कटसे उस राजपुत्रसे बोला कि १०७ हम अपनी स्त्रीके सङ्ग जो कर्म करते हैं वही अनुचित कार्य्य इसके सङ्गभी करेंगे इसप्रकारसे जो तुम्हारी भार्य्या हमारे गृहमें रहाचाहे तो रहे १०८ इसके रक्षण में ऐसी अरचा होगी हम कहे देते हैं तुम अपना इष्टकार्य्य करो हमारी स्त्रीके सङ्ग हमारी शय्यापर हमारे सङ्गइसको भी रहनाहोगा १०९ यदि ऐसा रहना तुम प्रसन्नकरो तो यह हमारे यहां रहे नहीं तो जाय इस

बातको क्षणभर विचारांश करके फिर वह राजपुत्र बोला कि ११० हे तात ! तुमने बहुतअच्छा कहा अब जैसा तुमको अभीष्टहो वैसा करो फिर उसने अपनी भार्य्यासे कहा कि ये शुभ अशुभ जो कुछकहैं १११ हे सुन्दरि! वह सब हमारी आज्ञासे करना उसमें तुमको कुछभी दोष न होगा ऐसा कहकर राजपुत्र चलागया ११२ इसके बाद रातको जो कहा था वही किया वह धार्मिक नित्य स्त्रियों के मध्यमें सोताथा ११३ व यह सज्जनाद्रोहक ब्राह्मण अपनी भार्य्या व पराई भार्य्याका स्पर्श करनेलगा परन्तु जब अपनी भार्य्या के अङ्गोंका स्पर्शहो तो इसका मन कामयुक्त होजायाकरे ११४ व जब उस राजपुत्रकी भार्य्या का स्पर्श कभी होजाय तो उसे कन्याके समान माने जब एक शय्या पर कभी अपनी भार्य्या व उस राजपुत्र की भार्य्या के सङ्गलेटे व राजपुत्रकी भार्य्या के स्तन बार २ उसकी पीठमें लगजायाकरें ११५ तो यह माने कि हमारे बालक किसीपुत्रके स्तनहैं स्त्रीके नहीं हैं अथवा माताके स्तनहैं उसके अङ्ग इसके अङ्गोंमें बार २ लगते ११६ परन्तु यह अपनी माताकेही स्तन मानता प्रतिदिन ऐसाही होता क्योंकि अन्यत्र रात्रि में उसके रहने से उसकी रक्षा न जानकर यह अपनीही शय्यापर उसे लेटाताथा परन्तु उसके स्पर्शसे स्त्रीकास्पर्श नहीं मानता किन्तु माता का स्पर्शही समझताथा इसप्रकार एकवर्ष बीतगया तब उस स्त्रीका पति उस पुरमें आया व उसने लोगों से इसके व अपनी स्त्रीके वृत्त पूँछे ११७। ११८ कोई २ तो दोनों के वृत्तोंको कल्याणरूप समझते थे व कोई युवापुरुष विस्मित होते कोई कहते कि क्या तुमने अपनी स्त्री इसको देदी थी क्योंकि यह तो उसके सङ्ग नित्य एक शय्या पर सोता है ११९ फिर स्त्री पुरुषों के एकत्र संसर्ग होने से शान्तता कैसे रहसक्ती है जिस युवा पुरुषको उस स्त्री के संग भोग करने की इच्छा थी उससे जब उसके पति ने पूँछा तो उसने यही कहा १२० कि बस तुम्हारी स्त्री ने इसके संग अवश्य क्रीड़ा की है उसने लोगों की कुवाणी युक्त वार्त्ता पुण्य के बल से सुनी व यह वार्त्ता इस सज्जनाद्रोहकनेभी सुनी तब जनों के अपवादके छुड़ानेकी बुद्धि इसके हुई १२१ बस बहुतसा काठ इकट्ठे करके उसमें अग्नि

लगादिया इसीसमयमें वह प्रतापी राजपुत्र इसके गृहमें आया १२२ व उसने देखा तो काष्ठोंकी चिता धन्धा २ कार जलती है स्त्री तो प्रसन्नमुख बैठीहै व पुरुषका मुख विषादयुक्त है १२३ चितामें प्रवेश करनेपर उद्यत है दोनोंके मनकी बात जानकर राजपुत्र वचन बोला कि हे मित्र ! बहुत दिनोंपर आयेहुये हमसे क्यों नहीं बोलते हो १२४ तब यह धर्म्मात्मा उत्तमबुद्धिका सज्जनाद्रोहक बोला कि तुम्हारे हितके कारणसे जो दुष्कृतकर्म्म हमने किया १२५ जनोंके अपवाद से सब व्यर्थ मानते हैं इससे आज हम इस अग्निमें अपनी सत्यताके लिये पैठें देवता मनुष्य सब देखें १२६ ऐसा कह कर यह सुमहाभाग अग्नि में प्रवेश करगया जब यह अग्निमें पैठा तो हे तात ! न तो इसके बाल जले न बालों के फूल मुरझाये १२७ इसके अंगको अग्निने न जलाया न वस्त्रजले न कुन्तलजले आकाशमें देवताओंने व मर्त्यलोक में मनुष्योंने बहुतअच्छा बहुतअच्छा ऐसा कहा १२८ व सब ओरसे इसके शिरपर पुष्पोंकी वर्षाहुई व जिन २ ने उनदोनों के विषयमें पापकी वार्त्ता कहीथी १२९ उनके मुखों में विविधप्रकार के कुष्ठरोग होगये व वहां आकर देवताओंने अग्निके भीतरसे खींचकर आनन्द से १३० पुष्पोंसे दोनोंकी बड़ी भारी पूजाकी इस वृत्तको देखकर मुनिगण बहुत विस्मितहुये सब मुनिगण व मनुष्योंने १३१ इस महातेजस्वीकी पूजाकी व इस महात्माने उन सबोंकीपूजाकी व देवता असुर मनुष्योंने मिलकर इसका सज्जनाद्रोहक ऐसा नाम धराया १३२ व इसके पैरोंकी धूलिसे पृथ्वी पवित्रहोकर अन्नसे पूर्ण होगई व देवताओंने राजपुत्रसे कहा कि अब अपनी भार्य्याको तुम ग्रहणकरो १३३ बस इस सज्जनाद्रोहक के समान इस लोकमें न कोई हुआहै न होगा व न इस समय कोई ऐसा पृथ्वीपर काम लोभ को जीतेहुये पुरुषहै १३४ क्योंकि देवता असुर मनुष्य राक्षस कीट मृग पक्षी इन सबोंसे काम बड़ेदुःखसे जीतने के योग्य है १३५ कामही से सब प्राणियोंको लोभ व क्रोधभी उत्पन्न होते हैं इससे संसार को कामही बांधेहुये है अकाम कोई कभी नहीं होसक्ता १३६ इसने सब चौदहोभुवन जीतलिये वासुदेवभगवान् आनन्दसे

इसके हृदय में निवास करतेरहेंगे १३७ इसका स्पर्श करके व इसे देखकर मनुष्य सब पापों से छूटजायँगे व पापरहितलोग अक्षय स्वर्ग पावेंगे १३८ ऐसा कहकर सब देवगण विमानों पर चढ़कर स्वर्ग को चलेगये मनुष्यलोगभी संतुष्ट होकर अपने २ स्थानों को गये व स्त्री पुरुष राजपुत्र अपने गृह को चलागया १३९ व यह सज्जनाद्रोह दिव्यदृष्टि होगया इस से नित्य सब कहीं देवताओं को घूमतेहुये देखता व लीलापूर्व्वक तीनोंलोकों की वार्त्ता बैठे २ जानता है १४० यह श्रीहरिके मुख से सुनतेहुये नरोत्तमविप्र ने उस के स्थानपर आकर सज्जनाद्रोह को देखा व पूँछा कि हम से धर्म्म उपदेश करो जिसमें हमारा हितहो कहो १४१ सज्जनाद्रोह बोला कि हे धर्म्मज्ञ ब्राह्मण ! तुम पुरुषों में उत्तम एक वैष्णव के समीप जाओ उनको देखकर तुम्हारा अभीष्ट अभी सिद्धहोगा १४२ बगुले का वध व उस से आकाश में गीली धोती का न सूखना व अन्य जो तुम्हारी इच्छा है जानतेही हो पूँछना १४३ यह सुनकर विष्णुरूप ब्राह्मण के साथ आनन्द से वैष्णव के पास गये १४४ व सब लक्षण सम्पूर्ण अपनेतेजसे दीप्यमान आगेखड़ेहुये तेजयुक्त शुद्धपुरुष को देखा १४५ उस ध्यानस्थ हरिकेप्रिय वैष्णव से नरोत्तमविप्र बोला कि हम बड़ी दूरसे तुम्हारेपास आयेहैं इससे जो हम पूँछना चाहतेहैं वह कृपाकरके हमसेकहो १४६ वैष्णवजी बोले कि हे द्विज ! दानवोंके अरि ईश्वर सुरश्रेष्ठ श्रीहरि सदा तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहैं इससे हमारा मन तुमको देखकर इस समयमें हर्षितहुआहै १४७ सो उनके दर्शन तुमकरो तुम्हारा आज अतुल कल्याणहोगा व मनोरथ सफल होगा व आकाश में तुम्हारी धोती सूखने लगेगी १४८ सो वे हरिदेव हमारे गृह में स्थित रहते हैं जैसे उनका दर्शन करोगे सब कार्य्य होजायँगे जब वैष्णवजी ने ऐसा कहा तो नरोत्तमविप्र फिर उन से बोले १४९ कि वे विष्णुभगवान् तुम्हारे गृह में कहां स्थित हैं बताओ तुम्हारे प्रसाद से हम उन के समीप जावें वैष्णव जी बोले कि इस रम्य देवगृह में प्रवेश करके श्रीपरमेश्वर के दर्शन करो १५० क्योंकि उन के दर्शन करके घोरजन्म बन्धन

क्लेश व पाप से छूटजाओगे वैष्णवजी का ऐसा वचन सुनकर वह ब्राह्मण उस मन्दिर के भीतर गया १५१ व कमल के पुष्पों से रचित शय्यापर बैठेहुये उन्हीं ब्राह्मणरूपी श्रीहरिको देखा जिनको चाण्डाल के व तुलाधार सज्जनाद्रोह के गृहमें देखाथा शिर झुँकाकर झटप्रणामकरके दोनों चरण हाथोंसे पकड़लिया १५२ व कहा कि हे देवेश ! हमारेऊपर प्रसन्नहो हमने तुमको पूर्व्वकालमें न जाना इससे इसलोक व परलोक में हम तुम्हारे किङ्कर हैं १५३ हे मधुसूदन ! हमने आपका अनुग्रह देखा यदि आपकी कृपा हमपर हो तो अब हम आपका रूप देखाचाहते हैं १५४ श्रीविष्णुभगवान् बोले कि हे भूदेव ! हमारी प्रीति तुममें सदासे है व इसीके स्नेहसे सब पुण्यवानों के दर्शन हमने तुमको कराये १५५ क्योंकि पुण्यवानों के एकबार भी दर्शन से स्पर्शसे ध्यानसे कीर्त्तन व भाषणसे प्राणी अक्षयस्वर्ग्गलोक भोगताहै १५६ व पुण्यवानों के नित्य संसर्ग्गसे सब पापोंका नाश होताहै व अनेक सुख भोगकर प्राणी हमारे देह में लीनहोजाता है १५७ पुण्यतीर्थों में स्नानकरके व शम्भुकी मूर्त्ति का स्पर्शकरके व पुण्यवानों के स्थानोंके व पुण्यवानों के दर्शनसे प्राणी हमारे शरीर में लीनहोजाता है १५८ व सब लोगोंके आगे हमारी पुण्यकथा कहकर भी हममें लीनहोता है हमारे ये सब प्रिय हमारेही शरीर में लीनहोते हैं १५९ हमारे एकादशी रामनवमी जन्माष्टमीआदि व्रतों में उपोषणकरके व हमारे चरित्रोंको सुन कर व रात्रिमें जागरण करके हमारे देहमें लीनहोता है १६० व जो अत्यन्त घोषण व नृत्यगीत बाजादिकोंसे हमारा नाम लेताहै वह हम में लीनहोता है १६१ हमारे भक्त तीर्थभूत होतेहैं इसीसे जब तुम ने बगुलामारडाला तो उसने तुमको शापदिया उससे छूटने के लिये वहां स्थितहोकर जो उसने तुमसे कहा १६२ कि महात्मा पुण्यवानोंमें श्रेष्ठ मूकके पासको तुमजाओ सो हे तात ! तुमने जब मूक का दर्शन किया उसीके प्रसादसे सब कहीं जा २ कर हमारे पूजनादि को तुमनेदेखा १६३ व उन सब महात्माओंके दर्शनकिये उनलोगोंके दर्शनसे व संभाषण करनेसे व हमारे मिलापकेभावसे आप अब ह-

मारे स्थान पर आगये हैं १६४ जिसके कोटिसहस्र जन्मोंके पाप नष्टहोजाते हैं वह धर्म्मज्ञ हमको देखताहै व हमारे दर्शनसे उसे प्रसन्नताहोती है १६५ हे पापरहित ! हे वत्स ! हमारेही अनुग्रहसे तुम ने हमको देखाहै इससे जो तुम्हारे मनमें हो वह वर हमसे मांगो १६६ नरोत्तमब्राह्मण बोला कि हे नाथ ! सब प्रकारसे हमारा मन तुममें लगे व हे सर्वलोकेश ! तुमको छोड़ हमको और कुछ न रुचे १६७ श्रीभगवान्जी बोले कि हे पापरहित ! जिससे कि तुम्हारी ऐसी बुद्धि स्फुरितहै इससे हमारे देहमें स्थित होकर हमारेही समान भोगोंको भोगोगे १६८ परन्तु तुमने अभी माता पिताकी पूजा नहीं की वह हमारीही पूजा है इससे प्रथम जाकर अपने पिता माता की पूजाकरो पीछे हमारे शरीरमें लीन होओगे १६९ उन दोनों के निश्वासके वायुसे व बार २ अत्यन्तकोप से नित्य तुम्हारा तप नष्ट होतारहता है इससे अब जाकर उन अपने पिता माता की पूजा करो १७० जिसपुत्र के ऊपर माता पिताका क्रोध पतितहोता है उसको नरकमें पड़ने से न हम रोंकसकें न ब्रह्मा न शङ्कर १७१ इस से तुम जाकर अपने पिता मातकी पूजा यत्नसेकरो फिर उनके मरण के पीछे उनके प्रसादसे हमारे स्थानकोजाओ १७२ ऐसा कहनेपर वह ब्राह्मण फिर जगद्गुरु श्रीजनार्द्दनजी से बोला कि हे नाथ ! यदि हमारे ऊपर प्रसन्नहुयेहोओ व प्रसन्न हृदयहोकर अपने मनको शान्तकियाहो तो हमको अपना पुरातनरूप दिखाओ १७३ यह सुनकर ब्राह्मणकी प्रणयसे प्रसन्न हृदय होकर वशी व ब्रह्मण्यभगवान् पुण्यकर्म्म करनेवाले उस ब्राह्मण को शङ्ख चक्र गदा पद्म धारणकिये अपना पुरुषोत्तमरूप दिखाया जो रूप सब लोकोंका एक कर्त्ता व तेजसे जगत्को पूरित कियेरहता है १७४ । १७५ ऐसे प्रभु के दण्डवत्प्रणाम करके ब्राह्मण फिर अच्युत भगवान् से बोला कि आज मेराजन्म सफलहुआ व आज मेरे नेत्रों को कल्याणमिला १७६ आज मेरेहाथ प्रशंसाके योग्यहुये व आज मैं धन्यहुआ आज मेरे पुरुष सनातन ब्रह्मलोकको जातेहैं १७७ हे जनार्द्दन ! तुम्हारे प्रसादसे हमारे बान्धव आमन्त्रित होते हैं इससमय मेरे सब मनोरथ

प्रसिद्धहुये १७८ किन्तु हे नाथ ! मुझको मूकादिकोंके ज्ञानका विस्मय है कि उनलोगोंको कैसे ऐसा ज्ञानमिला अन्य देशमें स्थित मेरे वृत्तान्त वे लोग कैसे जानते हैं १७९ उस मूक चाण्डाल के गृहके भीतर आकाशमें अतिशोभित एक ब्राह्मण स्थितथा ऐसेही पतिव्रताके गृहमें वैसाही एक ब्राह्मणथा व तुलाधारकी तुलाकी शिखा परभी एक वैसाही ब्राह्मणथा १८० ऐसेही सज्जनाद्रोहके मन्दिर में व तुम वैष्णवके मन्दिरमें स्थितहो हे प्रभो ! अनुग्रहकरके मुझ से बताओ कि इन सबको ऐसाज्ञान कैसे हुआ व ये कौनथे १८१ यह सुनकर श्रीभगवान् बोले कि मूकनाम चाण्डाल सदा अपने पिता माताका भक्तहै व शुभानाम वह जानों पतिव्रताही है तुलाधार सत्यवादी है व सब जनोंमें समभाव रखता है १८२ सज्जनाद्रोहने लोभ व कामको जीतलियाहै व वैष्णव हमारा भक्तहै सो हम इन सबोंके गुणोंसे प्रसन्नहोकर उनके स्थानों में सदा आनन्दसे स्थित रहते हैं १८३ हे द्विजसत्तम ! अकेले हमीं नहींरहते सरस्वती व लक्ष्मी सहित सदा निवासकरते हैं ब्राह्मण बोला कि ब्रह्महत्यादि महापातकोंके संसर्ग से व अगम्यागमनादि अतिपापों से व गुप्त पातकों से पृथ्वीतल पर चाण्डाल उत्पन्न होता है १८४ धर्म्मज्ञलोग स्मृति शास्त्रों में सदा ऐसा कहतेहैं पुराण वेद व शास्त्रों मेंभी ऐसाही कहा है फिर तुम चाण्डाल के गृहमें कैसे स्थित रहते हो १८५ श्रीभगवान् बोले कि तीनोंलोकों में सब कल्याणों से श्रेष्ठ सदाचार वृत्तहै इससे अपने वृत्तमें स्थित मूक चाण्डालको भी ब्राह्मण कहतेहैं १८६ सब लोकों में पुण्य कर्म्म करनेवाला मूक के तुल्य अन्य कोई नहीं है क्योंकि माता पिता की भक्ति में तत्पर होकर उसने तीनोंलोक जीतलिये १८७ उसने जो अपने पिता माता की भक्तिकी है उस से सब देवगणोंसहित हम सन्तुष्ट हैं व इसीसे ब्राह्मणका रूप धारण करके उसके गृहमें भीतर व आकाशमें हम स्थितरहते हैं १८८ ऐसेही पतिव्रता के पातिव्रतसे सन्तुष्ट होकर उसके गृह में विप्र रूपधारी हम रहते हैं व तुलाधार के गृह में उसकी सत्यता से प्रसन्नहोकर रहते हैं ऐसेही अद्रोहक व वैष्णव के गृहमें भी उनके

वृत्तसे प्रसन्नहोकर रहते हैं १८९ हे धर्म्मज्ञ! इन सबोंके स्थानोंमें हम सदा निवासकरतेहैं मुहूर्त्त भरकोभी नहीं छोड़ते जो हमको नित्य देखते हैं वे कोईभी पापकारी जन नहीं हैं १९० बड़े पुण्य से तुम ने हमको हमारे अनुग्रह से देखा व उस चाण्डाल को देखा माता पिताकी भक्ति करने के कारण चाण्डाल देवता होगया है १९१ इससे उसके साथ हम प्रीतिसे उसके मन्दिरमें टिके रहते हैं हे द्विजनन्दन! वह फिर २ हमारी कथाका आलाप किया करता है १९२ इसीसे भूतभावन हम उसी स्थानपर व उनके मनमें नित्य बैठे रहते हैं इसीसे वहभी तुम्हारे वृत्तजानता है व पतिव्रतादिभी जानते हैं १९३ उनके वृत्तोंको हम कहते हैं तुम क्रमसेसुनो जिसको सुनकर मनुष्य जन्मबन्धनसे छूटजाताहै १९४ पिता माता सेपरतीर्थ देवताओं में भी नहीं है इससे जिसने पिताकी पूजाकी वही पुरुषोत्तमहै १९५ माता पिताकी देवता व गुरुकी आज्ञा समान फल देती है माता पिताकी सेवा करने से स्वर्ग व राज्य मिलता है उनकी बाधा करने से रौरवनाम नरकको जाता है १९६ वह हमारे हृदयमें टिका रहताहै व हम उसके हृदयमें रहते हैं हम दोनों में अन्तर नहीं है इस लोक व परलोकमें वह हमारे समानहै १९७ हमारे आगे हमारे पुर में अपने बान्धवोंसमेत अक्षयभोग भोगता है व अन्तमें हममेंलीनहोजाता है १९८ इसीसे यह मूक चाण्डाल तीनोंलोकोंकी वार्त्ता जानताहै हे नरशार्दूल! इस विषयमें तुमको विस्मय कैसे हुआ १९९ नरोत्तमब्राह्मण बोला कि हे जगदीश्वर! मोहसे वा अज्ञानसे जिसने माता पिता की पूजा न की हो अथवा की हो तो जानकर फिर हे जगदीश्वर! सदसत् क्याकरे जो शुद्धहो २०० श्रीभगवान् बोले कि एकदिन एकमास एकपक्ष आधापक्ष वा वर्षभर जिसने अपने पिता माताकी भक्तिकी वह हमारेस्थानको चला जाता है २०१ व माता पिताका कोप अपने ऊपर कराके अवश्य नरकको जाताहै व जिसने माता पिताकी पूजा पहले निरन्तर कीहो व न कीहो २०२ वह भी वृषोत्सर्ग करनेपर पिता माताकी भक्तिका फल पाता है व श्राद्धमें अन्न वस्त्र गोरस मांससहित व मांसरहित २०३ अन्नपान

तथा गोदुग्ध गोघृत गोदधि आदि कोई श्राद्धमें अपनी जाति वालोंको खिलाताहै सब लक्षगुणा अधिक होताहै जो बुद्धिमान् पुत्र अपना सर्वधन लगाकर पिता माताका श्राद्ध कर डालताहै २०४ वह जातिस्मरत्वको प्राप्त होताहै व पिता माताकी भक्तिका फल पाताहै श्राद्धसे अधिक महायज्ञ तीनोंलोकों में कोई नहींहै २०५ क्योंकि जो कुछ श्राद्धमें दियाजाताहै सब अक्षय होजाताहै श्राद्धमें औरोंको खिलानेसे दश हज़ारगुणा अधिक फलहोताहै व जातिवालों को खिलानेसे लाखगुण अधिक फल मिलताहै २०६ श्राद्धमें पिण्डदान करनेसे कोटिगुण अधिक पुण्य होतीहै व ब्राह्मणको खिलानेसे अनन्तपुण्य होतीहै गङ्गाके जलसे व गङ्गाके तीरपर गयामें प्रयाग व पुष्करमें २०७ वाराणसीमें सिद्धकुंडमें व गङ्गासागरसंगममें इन स्थानोंमें जो अन्नसे पिण्डदान करताहै उसकी मुक्ति होतीहै इसमें संशय नहीं है २०८ व उसके पितर अक्षयस्वर्गवास व जन्मका उत्तमफल पाते हैं व विशेषकरके जो गङ्गामें जाकर तिलसहित जलदान करताहै २०९ वह मुक्तिमार्ग को प्राप्तहोताहै व पिण्डदान करने से क्या कहना उससे तो पाताही है नदीके तीरपर अन्यत्र से सहस्रगुण अधिक फल मिलताहै व नदके तीरपर दश सहस्रगुण २१० व सामान्य फलके संसर्गसे श्राद्धमें सौगुण अधिक फलहोता है अमावास्या को व युगादि तिथियों में चन्द्रमा व सूर्य्यके ग्रहण में २११ जो पार्व्वणश्राद्ध करता है वह अक्षय फल पाता है व उसके सब पितर दशसहस्र वर्षतक सन्तुष्ट बने रहते हैं २१२ व पुत्रको प्रिय आशीर्व्वाद और अनन्तभाग्य देते हैं इससे सब किसी पर्व्वमें पुत्रोंको आनन्दसे पार्व्वणश्राद्ध करनाचाहिये २१३ क्योंकि माता पिताके इस यज्ञको करके पुत्र जन्मबन्धनसे छूटजाताहै प्रतिदिन जो श्राद्ध कियाजाता है उसको नित्यश्राद्ध कहते हैं २१४ इससे जो श्रद्धा से नित्य श्राद्ध करताहै वह मनुष्य मोक्षपाता है ऐसेही अपरपक्ष में विधानसे काम्य श्राद्ध कियाजाताहै २१५ सो काम्यश्राद्धकरके अपने मनका वाञ्छित फल करनेवाला पाताहै आषाढ़ी पूर्णमासी के पीछे जो पांचवां पक्षहोताहै २१६ उसमें श्राद्धकरे चाहे कन्या के

सूर्य्य हों अथवा न हों कन्याके सूर्य्यहोने पर जो प्रथमके सोलह दिनहोतेहैं २१७ वे श्रेष्ठ दक्षिणा देकर समाप्तकियेहुये यज्ञोंके समानहोते हैं बस महापुण्य काम्यश्राद्ध करने का कन्या के सूर्य्यही में मुख्यकालहोता है २१८ यदि कन्याके सूर्य्य में श्राद्ध किसी कारण से न करसके तो तुलाके सूर्य्य में कृष्णपक्षके सोलहदिन में करे क्योंकि जब कन्या तुला दोनों राशियोंके सूर्य्यों में कृष्णपक्षके सोलहदिनों में श्राद्ध नहीं हो तो वृश्चिकके सूर्य्य लगजाते हैं तो पितर निराश होकर चलेजाते हैं २१९ व बार २ शापदेकर फिर अपने स्थानको चलेजाते हैं पिताके शापसे पुत्रका सब कुछ नष्टहोजाता है यह इस विषय में स्मृति है २२० धन पुत्र यश कामना अभीष्ट आयु ये सब पितरों के आशीर्वाद से मनुष्य इन सबोंको जन्मजन्म में पाते हैं २२१ इससे यह समय छोड़नेके योग्य नहीं है जैसे कैसे बने श्राद्धकरे विवाह यज्ञोपवीतादि मङ्गल यज्ञकार्य्यों में नान्दीमुख श्राद्ध करना चाहिये २२२ क्योंकि उसके करनेसे अक्षयपुण्य मिलती है व करनेवालेकागोत्र बढ़ताहै जो इसके विपरीत करता है नान्दीमुख श्राद्ध नहीं करता वह पुरुष नरकको जाताहै २२३ व उसका कुलक्षय होता है पृथ्वीपर दीनहोकर जीता है नान्दीमुख श्राद्ध करके फिर शम्भु के पुत्र गणेश की पूजाकरे २२४ पीछे षोड़शमाताओं की पूजाकरके पितरोंकी पूजाकरे प्रपितापूर्वक नान्दीमुखमें २२५ नान्दीमुखमें सब ब्राह्मणों को पूर्व्वमुख स्थापितकरे इसमें स्वधाके स्थान में नमःका प्रयोग उच्चारण करे अन्य सब नान्दीमुखमें पार्व्वणही की कृत्य होती है २२६ चन्द्रमा सूर्य्य के ग्रहण में पिण्ड व जलदान करने से मनुष्य अक्षयस्वर्ग पाता है व पितरों की पुष्टता बढ़ती है २२७ ग्रहणों में जो नर स्नान नहीं करता व शक्तिहोने पर पिण्डदान जलदान नहीं करता वह चाण्डालताको प्राप्त होता है २२८ जब चन्द्रमा का ग्रहण होता है तब सब दान भूमिदान के समान होते हैं व सब ब्राह्मण व्यासके समान होते व सब जल गंगा के समान होजाता है जब चन्द्रमा राहुग्रस्त होताहै २२९ चन्द्रग्रहण में लक्षगुण पुण्य होती है व सूर्य्यग्रहण में दशलक्षगुण पर गंगा

जलमें पहुँचने से चन्द्रग्रहण में कोटिगुण व सूर्य्यग्रहण में दशकोटिगुण २३० सौ सहस्र गोदान अच्छेप्रकार करनेसे जो फल होता है वह फल चन्द्रग्रहण में गङ्गास्नान करनेसे होताहै २३१ चन्द्र सूर्य्यग्रहण में जो गङ्गास्नान करता है वह सब तीर्थों में स्नान कर चुकता है फिर किस लिये पृथ्वी भरमें फिरतारहताहै २३२ सूर्य्यवासरको सूर्य्यग्रहण व सोमवार को चन्द्रग्रहण चूड़ामणियोग कहाताहै इसमें स्नान करने से अनन्त फल होताहै २३३ इन दोनों ग्रहणोंके पूर्व्व व्रत रहकर किसी तीर्थ में जो पुरुष पिण्डदान जलदान व अन्य सुवर्ण रजत अन्नादि दान देता है वह सत्यलोक में जाकर बसता है २३४ ब्राह्मण बोला कि आपने पिताका महायज्ञ श्राद्ध बताया अब यह बताइये कि पिताकी वृद्धावस्था में पुत्रको क्या करना चाहिये २३५ हे देव ! धीमान् पुत्र कौनसा कर्म्म पिताके लिये करे जो जन्म २ में परमकल्याण पावे यह हमसे यत्नसे कहिये २३६ श्रीभगवान् बोले कि पूर्व्व अवस्था में पिताही पुत्र कहता है व उत्तर अवस्था में पुत्र पिता होजाताहै यह बात पालनके अनुसार है पूजन के अनुसार नहीं २३७ क्योंकि प्रथम अवस्था में पिता पुत्रका पालन करता है व अन्त अवस्था में पुत्र पिताका पालन करताहै पुत्र को चाहिये कि वृद्धावस्था में देवताके समान पिताकी पूजाकरे व पुत्रके समान स्नेहकरे व मनसे भी उसके वचनका उल्लङ्घन कभी न करे २३८ जो पुत्र अपने बीमार पिताके रोग मिटनेकी औषध अच्छी तरह करता कराता है वह अक्षय स्वर्गलोक पाता है व देवताओंसे भी पूजित होताहै २३९ व मरनेपर उद्यत अपने पिताकी मृत्यु के लक्षण देखते ही जो पुत्र उसे यजन करता है वह देवताओं की तुल्यताको प्राप्त होता है २४० जो पुत्र आसन्नमरण अपने पिताको विधिपूर्व्वक निरशनव्रत कराके पिताको स्वर्ग्गलोक दिलाता है उस धीर पुत्रके छहगुण सुनो २४१ सहस्र अश्वमेधयज्ञ व सैकड़ों वाजपेययज्ञों का फल घर में निरशन करने से होताहै व तीर्थ में कोटि गुण पुण्य होता है २४२ व जो पुरुषोत्तम जाकर गंगाजी के जलमें प्राण छोड़ताहै वह पुरुष फिर माताके स्तन नहीं पीता मुक्तहोजा-

ताहै २४३ व जो पुरुष अपनी इच्छासे जाकर वाराणसी में प्राण छोड़ता है वह अभीष्ट फल भोगकर फिर हमारे देहमें लीन होता है २४४ जो गति योगयुक्त ऊर्ध्वरेता मुनियोंकी होती है वह गति सात ब्रह्मपुत्रों में प्राण छोड़ते हुये पुरुषको मिलती है २४५ विशेष करके सात ब्रह्मपुत्रों में से शोणभद्रके उत्तर तीरपर आश्रित होकर विधिसे जो प्राणत्याग करता है वह हमारी समता को प्राप्तहोता है २४६ व उसी के उर्व्वशीकेशनाम पुण्यतीर्थ में जो द्विजोत्तम मृतक होताहै वह फिर उत्पन्न नहीं होता न दोषोंसे लिप्तहोताहै २४७ व जिसका प्राणत्याग गृह के भीतर होताहै गृहमें जितनी गांठियां छप्पर आदिमें होती हैं उतने जन्मों तक वह प्राणी जहां जन्मपाताहै बन्धनमें रहता है २४८ एक २ वर्षके पीछे एक २ बन्धन कम होताजाता है जैसे २ अपने पुत्रों व बन्धुओं को देखता है पीड़ित होता है बन्धनसे नहीं छूटता २४९ पर्व्वतपर वनमें वा अन्य किसी निर्ज्जन स्थान में जो पुरुष मृतक होताहै वह नरकको जाताहै जब कभी जन्म होताहै तो कीटादि योनि में होताहै २५० मरने के पीछे जिसका दाह दूसरे दिन भी नहीं होता वह साठ हज़ार वर्षतक कुम्भीपाक नरकमें रहताहै २५१ जो पुरुष अस्पृश्य म्लेच्छादिकों का स्पर्श करते हुये मरता है वा उच्छिष्टस्थान में पतित होकर मरता वह बहुत कालतक नरक में रहकर फिर म्लेच्छजातियों में उत्पन्न होताहै २५२ व वैसेही फिर बहुत कीट पतङ्गोंकी जातियोंमें उत्पन्न होता है इससे बहुत कालमें पुण्य पाप नहीं जानपड़ता मृतकही से लक्षित होजाता है कि इसने कितना पुण्य पाप कियाथा २५३ पुण्यकरने से पुण्यके प्रयोगों से मरनेपर मनुष्योंकी जो गति होती है वैसीही उसकी गति होतीहै २५४ व जो किसी पुण्यतीर्थ में विष्णु के नामोंका स्मरण करतेहुये मृतक होताहै वह पापसे पवित्रहोकर हमारे पुरको चलाजाताहै यहांके कियेहुये दोषोंसे नहीं लिप्तहोताहै २५५ मरेहुये पिताका देह लेकर जो बली पुत्र चलता है पद २ पर अश्वमेध यज्ञका फल पाता है इस में कुछभी संशय नहीं है २५६ चितापर पिताके शरीरको विधिपूर्व्वक स्थापित करके जो पुत्र मन्त्र

पढ़कर मुख में अग्नि लगाता है व यह मन्त्र पढ़ता है कि २५७
दो० लोभ मोह युत पाप अरु पुण्य समावृत देह ॥
दहत सकल अँग जाय सो दिव्य लोक सह नेह २५८
वह आप दिव्यलोकको जाताहै व उसका पिता भी दिव्यलोकको जाताहै जब दाह करचुके तो चाहिये कि अस्थिसञ्चयन करे व दशाह के भीतरही गीले वस्त्र त्यागकरे २५९ उसके संग कुछ लोहा धरके वस्त्र में बांधकर अग्निमें वा जलमें फेंकदे फिर ग्यारहेंदिन पण्डितको चाहिये कि एकादशाह श्राद्धकरे २६० व प्रेतका शरीर पुष्टहोनेकेलिये एक ब्राह्मण को भोजन दे व फिर विधिपूर्व्वक उसको दानदे जैसे कि वस्त्र पीठ पादुका २६१ सब सामग्री समेत शय्या धन हाथी घोड़ा कृष्णधेनु ये सब पापों के छूटनेकेलिये दे २६२ आद्य श्राद्ध चौथेदिन व त्रिपाक्षिक ऊनषाण्मासिक ऊनाब्दिक व बारहमासों के नाम से बारह बस इन्हीं को षोडश श्राद्ध कहतेहैं २६३ जिस पुरुषके लिये कर्त्ताकी शक्ति व श्रद्धाके अनुसार ये षोडश श्राद्ध नहीं होते उसका प्रेतत्व स्थिरही रहताहै चाहे उसके लिये फिर अन्य सैकड़ों श्राद्धकरे २६४ वर्षपर्य्यन्त अन्न मांस जलयुक्त एक नित्य घट दियाकरे नित्य नित्य न होसके तो पक्षभरके पीछे वा मास भरके पीछे इकट्ठे देदिया करे २६५ व सपिण्डीकरण श्राद्ध पण्डित को चाहिये कि वर्षभरके पीछे पार्वणश्राद्ध के विधान से करावे २६६ पिताका अशौच वर्षभर रहताहै व माताका ६ मासतक स्त्रीका तीनमासतक भाई व पुत्रका डेढ़मास तक २६७ व अन्य सपिण्डोंका अशौच तबतक रहताहै जब तक कि मृतक गृहमें रहताहै व हे तात ! जो पुत्र के लिये निषिद्ध है सुनो हम कहते हैं २६८ ब्रह्मचारी व सदाचारी रहे व स्त्रीकेसंग जब तक अशौच रहे भोग न करे अशौच जैसे २७० के श्लोकमें लिखाहै दोपहरके यानी पहले के ९ पीछे के ७ दण्ड २६९ छोड़कर मध्याह्न के दो दण्ड कुतप कहाते हैं इस कालमें जो पितरों को दियाजाताहै वह अक्षय होजाताहै श्राद्धमें दौहित्र कुतप व तिल ये तीन बहुत पवित्र होते हैं व २७० सत्य अक्रोध अशीघ्रता इन तीनों की श्राद्ध में प्रशंसा होती है सायङ्काल की सन्ध्या परान्नभोजन दुबारभोजन

मैथुन २७१ दानदेना दानलेना श्राद्ध करनेके पीछे इनको उस दिन न करे व सैकड़ों अकर्त्तव्य कर्मकरकेभी पण्डितको चाहिये कि श्राद्ध करे२७२क्योंकि वह सब अकर्त्तव्य श्राद्धकरनेपर कर्त्तव्यताको प्राप्त होजाताहै यह ब्रह्माजी ने अपने आप कहा है हे विप्र! सुनो पूर्व्व समयका एक वृत्तान्त हम बहुत विधानसे कहते हैं २७३ कि गुरु की गौ मारके फिर श्राद्ध करने से वे लोग फिर स्वर्गको चलेगये उन लोगों के कीर्त्तनमात्र से श्राद्ध अक्षय होताहै २७४ वसिष्ठमुनि के सात ब्राह्मण बड़े सुब्रत शिष्य थे एक समय उनके पिताके श्राद्धका काल आगया व उनके पास अकाल होनेके कारण और कुछ भी नहीं था इससे वे अतिप्रिय गुरुकी होमधेनु २७५ सातो भाई घर को खुशीसे माँगलेगये व गोघृत दुग्ध गोदधि सब श्राद्धमें चाहिये था एकाएकी सब नहीं मिलसका उन मूर्खों ने उस धेनुका वध करडाला फिर विचारकर २७६ उसी के मांससे पिण्डदान करदिया व शेष अपने इष्टमित्र व ब्राह्मणों को खिलादिया जब पितृकर्म्म समाप्त हो गये तो बछड़ेको लेकर वे सातो ब्राह्मण २७७ गुरु के समीप लेगये व कहा कि धेनुको व्याघ्रने भक्षण करलिया तब अपने तपोबल से उसका कारण जानकर मुनिने २७८ शिष्योंको शाप दिया कि तुम लोगोंने बड़ा दुष्ट कर्म्म किया जो गोवध किया व उससे पिण्डदान किया शेषमांस भोजन किया अन्य ब्राह्मणों को भी खिलाकर भ्रष्ट किया इससे जाओ चाण्डाल होओ तव वे ब्राह्मण कांपतेहुये हाथ जोड़कर आगे खड़े हुये २७९ बोले कि महाराज धेनुका मांस हम लोगों ने पिता व पितामहादिकों के श्राद्धमें देदिया हे नाथ! हमने आपके मुखसे बहुतबार सुनाथा कि सहस्रों अकर्त्तव्यकरके व महापाप करके भी २८० जो पितरोंका कार्य्य करते हैं वे पापसे निवृत्त होके स्वर्गको जाते हैं हे नाथ! यह पूर्व्वकालमें तुम्हारे मुखसे सुनाहीथा २८१ झूँठ नहीं कहते हे धर्म्मज्ञ! आप क्षमा करने योग्यहैं इससे इस शाप का अन्त भी आपही करें वसिष्ठजी बोले कि हे पापवालो! अब तो हमने शापदेदिया वह नहीं फिरसक्ता परन्तु धर्मके विचारसे नहीं २८२ तुमलोगोंने गोवध कियाहै इससे हम इतना अनुग्रह करते हैं

कि चाण्डालादि योनिमें उत्पन्न होनेपर भी तुम पूर्व्व के वृत्तान्त का स्मरण करोगे व तुम लोगोंका ज्ञान न लुप्तहोगा व स्मृति शास्त्र जो पढ़ा है वह भी न नष्टहोगा २८३ पापयोनि से उत्तीर्ण होकर पीछे मुक्त होजावोगे तब गुरुजी के शापसे प्राणों को छोड़कर वे ब्राह्मण लोग २८४ चाण्डालकी योनिमें उत्पन्नहुये परन्तु सब ज्ञानसेयुक्तहुये पूर्व्वजन्म का स्मरण करतेहुये उन ब्राह्मणों ने चाण्डालयोनिमें भी दुग्ध पान नहीं किया पूर्वका वह जन्म स्मरण करतेरहे २८५ जब उस योनि में मृतकहुये तब फिर सबकेसब वनमें चक्रवाक पक्षी हुये फिर वेही अन्यजन्ममें मानसतीर्थमें जाकर शुक्लवर्ण हंसहुये २८६ उस योनिमें वहुत दिन रहकर वे महाभाग दुःखसे मरनेपर हुये उसी कालमें धर्म्मकेतु नामवाले महाराज २८७ अपनी स्त्री परिवारसहित उस तीर्थ में स्नानकरनेको आये तब उनमें से तीन हंस मारेमोह के राजाकी स्त्रीको देखकर अपने मनमें यह कहकर कि जो हमलोग इस राजकुलमें उत्पन्नहोते तो ऐसी स्त्रियां व अन्य सुख भोगते ऐसा विचारकर मरगये व उन चारोंने विचारा कि हमतो कहीं फिर वेद वेदान्त जाननेवाले ब्राह्मणहोते तो मोक्षको प्राप्तहोते २८८। २८९ यह विचारकर सब अन्य लोकान्तरको चलेगये व जाकर उसी राजाके राज्यमें चार तो उत्तम ब्राह्मणहुये २९० सो भी कुरुक्षेत्रमें वहां वेद व वेदांग उन्होंने पढ़े व अपने तपोवलके प्रभावसे उनको पूर्व्व पर दोनों का स्मरण बनारहा २९१ व उनमें के तीन हर्षसे मोहित होकर राजाके कुलमें उत्पन्नहुये उनका ज्ञान लुप्तहोगया इससे पर अपर किसीको नहीं जानतेथे न अपना हित अहित जानते २९२ वे ब्राह्मण एकदिन सन्देहसे स्वचेटकको बुलाके कहा कि तुमराजाकेपास जाओ सम्भ्रम सहित कृपणतासे पत्र देव २९३ ये जब सातो व्याध हुये थे तब दशार्ण देशमेंहुये थे व जब मृगहुये तो कालञ्जर पर्व्वत पर व शरद्वीप में चक्रवाक हुये व मानससर में हंस हुये २९४ वे ही फिर कुरुक्षेत्र में वेदपाठी ब्राह्मण हुये तुम लोग बहुत वड़ाभारी मार्ग्ग चलचुके हो इससे कष्टितहो २९५ तब चेटकने लेख लेकर राजा को दिखाया उस लेखको देखकर वे राजा राज्य छोड़कर उन

चारों ब्राह्मणों के पास चले गये २९६ व उनके पास जाकर उन के वचन उन तीनों ने सुने व सब तपोधन चारो ब्राह्मण व तीनों राजपुत्र साती थोड़े कालमें मुक्त होगये २९७ जो कोई श्राद्ध में यह सप्तव्याधादिक सुनताहै वा सुनाताहै उसके पितरोंके लिये जो अन्न पानादि दियेजाते हैं वे अक्षयहोकर टिकते हैं २९८ यह कथा सुन कर ब्राह्मण फिर बोला कि हे केशव! जो ब्राह्मण धनहीनहै वा तपस्वी वनमें टिका है व गृहस्थ है उसका श्राद्ध कैसे हो २९९ श्रीभगवान् बोले कि तृण काष्ठ इकट्ठा करके भिक्षामांगकर कौड़ी २ बटोरकर जो पितरों का कार्य करता है उसको औरोंकी अपेक्षा लाखगुण अधिक पुण्य होता है ३०० व सैकड़ों अकर्त्तव्य कार्य्यकरके जो पितृकार्य्य करता है उसके सब पाप क्षय होजाते व वह मनुष्य स्वर्गको जाता है ३०१ जब कुछ नहीं होता व पिताकी तिथिमें जो कोई गौओंको घास खिलादेता है वह सुन्दर फलादिके पिण्डदानके करने का फल पुण्यपाताहै ३०२ पूर्व्वकालमें राजाविराटके राज्यमें एक दीनब्राह्मण बहुत रोया क्योंकि उसके पिताकी तिथिआगई उसके पास कुछ थाही नहीं इससे रोया ३०३ बड़ीदेरतक रोदनकरके उस दीन ब्राह्मणने किसी वेदशास्त्रवादी ब्राह्मणसे कहा कि हे ब्रह्मन्! आज मेरे पिताकी तिथिहै पर मेरे पास कुछ है नहीं क्याकरूँ जो पितरोंका हितहो ३०४ हे ब्रह्मविदांवर! मेरे पास कुछभी कौड़ीमात्र धन नहीं है ऐसा उपदेश मुझको दीजिये जिसमें मैं धर्म्म में स्थितरहूँ ३०५ वह ब्राह्मण बोला कि हे तात! कुतपमुहूर्त्तमें जोकि मध्याह्नसमयमें होताहै शीघ्रवनको चलेजाओ व पिताके उद्देशसे थोड़ीसी घासलेकर किसी गौको खिला दो ३०६ तब वह ब्राह्मणका वचन सुनकर तुरन्त वनको चलागया व प्रसन्नमनहोकर पूराभर घासलेकर पिताकी पुष्टिकेअर्थ नामलेकर धेनुको खिला दिया ३०७ इस पुण्यके प्रसादसे वह देवलोकको चला गया वहां बहुतवर्षोंतक सुख भोग कर फिर धनियों के कुलमें उत्पन्न हुआ ३०८ व पूर्व्वकालकी पुण्यके व पितृयज्ञ के कारण वह बड़ा धनवान्हुआ व बहुतधनलगाकर अपने पिताको पिण्डदेनेलगा३०९ व अन्य बहुत धन पितरों के अर्थ उसने दिया इस एक जन्म की

पुण्यसे वह विष्णुके मन्दिरको चलागया वहां बहुत सुखभोग कर आकर चक्रवर्त्ती राजाहुआ ३१० व वहां फिर पितरोंके नानाप्रकार के यज्ञ करके मुक्तहोगया ॥

चौ० पितृमखसम जासों संसारा । आन यज्ञ नहिं किये विचारा ॥
तासों सर्व्व यत्न सों प्रानी । शक्त्यनुसारकरेहितजानी ३११
जो सब जन आगे यह गाथा । गावे विधिसों करे सनाथा ॥
प्रतिश्लोक सुरसरि असनाना । फलपावेनरसहितविधाना ३१२
जन्म जन्म कृत पातक पुञ्जा । गिरिसम होहिं होहिं ते गुञ्जा ॥
पुनि सव नष्ट होहिं नहिं शङ्का । सकृदुच्चारण करत न अङ्का ३१३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपंचाख्यानो नामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

दो० इक्यावन महँ कह भलो पतिव्रता उपख्यान ॥
जाहि सुने सब नारि निज पति कहँ गुनत महान १

नरोत्तम ब्राह्मण श्रीभगवान्‌जीसे बोला कि हे जगदीश्वर ! तुम सब देवताओं देवदेवों व औरों के भी प्रभु कर्त्ता हर्त्ता रक्षक भर्त्ता पिता व स्वामीहो १ व हम सब लोगोंकेभी स्वामीहो जो कथा आपने कही उसके समान और नहीं है हे विष्णो ! हमारी वाणी का श्रम कहनेमें नहीं होता परन्तु हमको एक विषयमें और कौतूहलहै पिपासा क्षुधा भी यही है २ अब जो हम पूँछें वह प्रियकरके स्वामीको कहना चाहिये हे नाथ ! वह पतिव्रता भूत भविष्य वर्त्तमान वृत्तान्तों को कैसे जानतीहै ३ उसका क्या प्रभावहै हमसे सब आप कहने के योग्यहैं कि उसने कौनकर्म्म कियाहै जिसके प्रभावसे उसे ऐसा ज्ञान है ४ श्रीभगवान् बोले कि हे वत्स ! हमने तो पूर्व्वही कहदिया कि पतिव्रता पतिकी सेवाकरती है पर तुमको औरभी उसके चरित सुननेकी इच्छा है तो हम सब तुम से कहेंगे जो तुम्हारे मन में है वह पतिव्रता अपने पति के प्राणसमान व पति के हित में सदा निरत रहती है ५ इससे देवताओं व वेदवादी मुनियोंकेभी आराधना करने

के वह योग्यहै क्योंकि लोकमें जो स्त्री एकही पति से भोग कराती हो वह पूजन करने के योग्यहै ६ ऐसा कोई नहीं हुआ न होगा जो उस पतिव्रता स्त्री के विषय में कुछ विघ्न करसके हे तात! मध्यदेश में पूर्व्वकाल एक अतिसुन्दरी नगरी थी ७ उसमें एक ब्राह्मणी शैव्यानामकी पतिव्रता स्त्री रहतीथी पूर्व्वकर्म्मके विरोधसे उसका पति कुष्ठी होगया ८ घावबहतेहुये उस अपने पतिकी सेवा में नित्य वह परायण रहती थी पति जिस २ बातका मनोरथ करता अपनी शक्ति के अनुसार वह कियाकरती ९ व देवताके समान नित्य उसकी पूजा करती व ईर्ष्या छोड़कर नित्य स्नेहकरती उसका पति कभी परमसुन्दरी एक वेश्याको मार्ग में आतेहुये देखकर १० मोहवश कामसे व्याकुल हुआ व बहुतकालतक ऊर्ध्वश्वासें लेकर उदासीन होगया ११ इस बातको सुनकर उस पतिव्रतास्त्रीने गृहसे बाहर निकलकर अपने पतिसे पूँछा कि हे नाथ! तुम उदास कैसेहो व ऊर्ध्वश्वासें कैसे लेतेहो १२ जो करने के योग्यहो कहिये वा मेरे करनेकेयोग्य भी न हो तो वहभी प्रिय कहिये जो तुमको प्रियहोगा वह कार्य्य मैं करूँगी क्योंकि तुम एक मेरे गुरु व प्रियहो १३ हे नाथ! अपना अभीष्ट कहो यथाशक्ति मैं अवश्य करूँगी ऐसा कहनेपर उसका पति बोला कि हे प्रिये! वृथा क्यों कहती है १४ तू उस कार्य्यको नहीं करसक्ती न मैं करसक्ता व न मैं वृथा कहीसक्ताहूँ और तुम पूछनेकाभी अधिकार न करो जैसे कि बड़ेभारी ऊँचे वृक्षका फल १५ स्पर्श करने के योग्य नहीं होता व कोई वामनतनुधारी पुरुष भूमिहीपर खड़ेहुये उसके फलको तोड़ाचाहे वैसाही रमणी के लोभसे व मोहसे हमारा वाञ्छित है कि उसे न हमीं करसक्ते हैं न तुम्हीं करसक्ती हो यह सुनकर पतिव्रता बोली कि हे स्वामिन्! तुम्हारे मनकी बात जानकर मैं कार्यकरनेमें समर्थहूँ १६।१७ हे नाथ! मुझको आज्ञादीजिये जैसे बनेगा वैसे कार्य्य कियाहीजायगा जो मैं तुम्हरा दुर्लभ कार्य्य यत्नसे करसकूँगी १८ तो मेरा अतिकल्याण इसलोकमें व परलोकमें फलित होगा ऐसा कहने पर परम प्रसन्नहोकर उसका पति बोला कि १९ पापके अभ्याससे एक पापी पुरुषकी ओर देखतेहुये एक निर्लज्जा

परमसुन्दरी वेश्या को इस मार्ग में जातेहुये हमने देखा २० सब ओर से उत्तम अङ्गवाली उस वेश्या को देखकर हमारा मन जलने लगा जो तुम्हारे प्रसाद से हम उस नवयौवना वेश्याको पावें २१ तो हमारा जन्म सफलहो बस यह हमारा हित करो जो वह उत्तमाङ्गी कुष्ठ रोगयुक्त दीन नवीन घाव बहते हुये हमको २२ न ग्रहण करेगी तो हमको मरजानाही हितहोगा पतिका वचन सुनकर पतिव्रता वचन बोली २३ कि हे प्रभो! आप स्थिरहों मैं यथाशक्ति इस कार्य्यको करूँगी मनमें ऐसा विचारांशकरके जब रात्रि बीती प्रातःकालहुआ २४ तो थोड़ा गोबर व झाड़ूलेकर आनन्द से पतिव्रता गई वेश्याके गृहपर पहुँचकर उसका सब द्वारझारबहारडाला २५ व सब मार्ग्ग द्वारछज्जोंके नीचे नीचे सब अच्छेप्रकार लेपनकिया व कोई मनुष्य न देखले इस भयसे बड़ेतड़केही ऐसा करके अपने गृहको लौटआई २६ इसक्रमसे उस पतिव्रताने तीनादिन तक ऐसा कार्य्य किया तब उस वेश्याने अपनीदासियों व दासोंसे २७ पूँछा इस चबूतरे आदिके लीपने पोतने के किसके ये शुभकर्म्म हैं हमने तो किसी से कहाभी नहीं पर हमारे प्रियकरनेके लिये किसने यह बड़ेप्रातःकालही ऐसा उज्ज्वल कर्म्म किया है २८ कि देखो सब द्वारमार्ग्ग झाड़ा बहारापड़ा है द्वारपर के सब चबूतरे लीपे पोते पड़े हैं तब दास दासियोंने आपसमें एक दूसरेकी ओर देखकर वेश्यासे कहा कि २९ हे भद्रे! हमलोगों ने यह लीपने पोतने व बहारनेका कर्म्म नहीं किया तब वह वेश्या बहुत विस्मित हुई व थोड़ी रात्रि बाकी रहजाने पर ३० उठी तो उसी तरह गोबर पानी व बढ़नी हाथ में लिये उस पतिव्रताको द्वार पर आयेहुये देखा व उस महापतिव्रता साधुब्राह्मणी को देखकर ३१ उसके चरणोंपर गिरपड़ी व बोली कि हा मेरे ऊपर क्षमाकरो मेरी आयु देह धन सम्पत्ति यश कीर्ति ३२ मेरे इन सबों के विनाशके लिये हे पतिव्रते! ऐसा कार्य्य करतीहो जो२ चाहतीहो कहो हे पतिव्रते! हम सब कुछ देंगी बताओ क्या चाहतीहो ३३ सुवर्ण मणि रत्न सुन्दरवस्त्र वा अन्य जो कुछ मनमेंहो कहो क्या चाहतीहो तब वह पतिव्रता उस वेश्यासे बोली कि धनसे तो मेरा कुछभी प्रयोजन

नहीं है ३४ थोड़ासा और कुछ कार्य्य है जो उसको करोगी तो कहूं-
गी जानो हमारे हृदयका सब सन्तोष तुमनेकिया ३५ तब वेश्याबो-
ली कि हे पतिव्रते! शीघ्रकहो सत्य २ हम तुम्हारा कार्य्य करेंगी हे
मातः! मेरी रक्षाकरो जो करनाहै शीघ्र मुझसे कहो ३६ तब लज्जित
होकर अपने पतिका प्रियवाक्य उस पतिव्रताने कहा एक क्षणभर
उस वेश्याने विचारकरके पतिव्रतासे कहा कि ३७ दुर्गन्धियुक्त
कोढ़ीका सम्पर्क करना तो बहुतही कठिनहै परन्तु जो तुम्हारापति
हमारे गृहमें आवेगा तो एकदिन हम उसकेसंग रहेंगी ३८ पतिव्रता
बोली कि हे सुन्दरि! आजकी रात्रिमें अपने पति को लेकर हम तुम्हा-
रे घरपर आवेंगी व भोग भोगकर पतिके सन्तुष्ट होनेपर फिर पति
को अपने गृहको लेजावेंगी ३९ वेश्या बोली कि हे महाभागे! अब
बड़ी शीघ्रताके साथ अपने गृहको जाओ व तुम्हारा पति आजकी
अर्द्धरात्रिमें अवश्य हमारे गृहपर आजावे ४० क्योंकि बहुतसे रा-
जालोग व अन्य राजाओंके समान धनाढ्यलोग हमारे गृहमें एक २
करके नित्यआते हैं व रहते हैं ४१ परन्तु आज तुम्हारे भयसे व लो-
ग हमारे गृहको शून्यकरदेंगे वह तुम्हारा पति आवे व हमारे संग
यथेष्ट भोगकरके जाय ४२ ऐसा सुनकर वह पतिव्रता अपने गृह
को गई व अपने पतिसे बोली कि तुम्हारा कार्य्य फलितहुआ ४३ आ-
ज रात्रिमें अपने घरमें आनेकेलिये तुमको उसने कहाहै उसके बहुत
से पतिहैं परन्तु तुम्हारे लिये इसरात्रिमें किसीका संग्रह न करेगी
४४ ब्राह्मण बोला कि हम कैसे उसके गृहको जावेंगे क्योंकि हमतो
अपने अंगोंसे चलीनहीं सक्ते सो तुमभी जानतीहो फिर उसके गृह
तक जानेकेलिये कौनउपाय विचारा है कैसे कार्य्यहोगा ४५ पतिव्रता
बोली कि तुम को अपनी पीठपर चढ़ाकर उसके घरमें पहुँचादेंगी
व वाञ्छित सिद्ध होजानेपर उसीमार्ग्ग होकर फिर तुमको यहां पहुँ-
चावेंगी ४६ उसका पति बोला कि हे कल्याणि! तुम्हारे करनेसे सब
हमारे मनोरथ सिद्धहोंगे इससमय जो काम तुमने कियाहै वह सब
स्त्रियोंको दुस्सहहै ४७ क्योंकि अपने पतिको कोईभी स्त्री अन्य स्त्रीके
संग भोग नहीं करने देती उस नगरमें एकधनीके गृहमें नित्य चोर धन

हरलेजातेथे होते २ वहांके राजाने यह वृत्तान्त सुना ४८ व सुनकर सब रात्रिमें घूम घूमकर रक्षाकरनेवाले सेवकोंको राजाने बड़ेक्रोधसे बुलाया व कहा कि यदि तुमलोग जीनाचाहते हो तो एकचोर हम को देओ ४९ राजाकी आज्ञाको लेकर मारेभय के व्याकुल दूतलोग सब दिशाओं में चोर ढूँढ़नेलगे व उन चारों ने राजाकी आज्ञासे जबरदस्ती एकको चोर बनाकर पकड़ा ५० परन्तु नगरके समीप बहुत घनेवृक्ष लगे थे किसीकेनीचे समाधि लगायेहुये महातेजस्वी मुनियों में श्रेष्ठ माण्डव्यजी बैठेथे ५१ जो कि अग्निके समान प्रकाशित योगियों में श्रेष्ठथे व केवल उनकी नाड़ियों के भीतर पवन चलरहाथा कुछभी न प्रकाशित होताथा ५२ ब्रह्माकेतुल्य टिकेहुये उन मुनिको देखकर वे दुष्टराजा के चौकीदार बोले कि यह अद्भुत आकार का चोरहै धूर्त वनमें बैठाहै ५३ ऐसा कहकर उन पापियों ने उन मुनिसत्तमको बँधुआकरलिया परन्तु उन्होंने उन दारुण पुरुषों की ओर न देखा न उनसे कुछ कहा कि हमको क्यों पकड़ते हो ५४ बस मुनिको लेजाकर वे राजासे बोले कि हमलोग इस चोरको पकड़ लायेहैं इसको नगरके समीप चौरहामें चोरदण्ड दीजिये ५५ राजा की आज्ञासे रात्रिही में माण्डव्यजी को राजसेवकोंने ग्रामके समीपही मार्ग्गमें शूलीके कीलपर चढ़ादिया व पायु इन्द्रिमें शूलदे दिया व शूलसे मस्तक छेदनलगे ५६ परन्तु उन विद्वान् महामुनिने अपने शरीर में कुछ व्यथाही न जानी अन्य लोगोंने भी आकर अन्य बहुत से घोरदण्ड दिये परन्तु मुनिराज ने कुछ समझाही नहीं कि कौनदण्ड देताहै ५७ वे लोग तो दण्डदेकर चलेगयेथे उसीघोर अन्धकारकी रात्रिमें अपनेपति को पीठपर चढ़ायेहुये वह पतिव्रता वहां पर पहुँची ५८ व माण्डव्यमुनिके अंगमें उस कोढ़ीका अंग लगगया बस समाधि में जिन देवताओं का ध्यान मुनिकरते थे उस कुष्ठी के संसर्ग्गमात्रसे सब भागगये मुनिकी समाधि टूटगई ५९ तब माण्डव्यमुनि बोले कि जिस असाधुने अतिपीड़ायुक्त हमको कष्टदिया है वह सूर्य्य निकलते निकलते भस्म होजाय ६० जैसे माण्डव्यजी ने ऐसा कहाहै कि इतने में उसका वह कोढ़ीपति उसकी पीठपरसे

गिरपड़ा व भस्म होगया तब उस पतिव्रता ने कहा कि अब तीन दिनतक सूर्य्य न उदितहो बस शापदेकर वह अपने गृहको चली गई व अपने पतिका भस्मीभूत शरीरभी लियेगई उसे पलँगपर लिटाकर आपभी वहीं बैठी ६१ । ६२ व मुनिजी भी उसको शाप देकर अपने किसी अभीष्ट देशको चलेगये बस तबसे तीन दिनतक सूर्य्यलोकमें नहीं उदितहुये ६३ सूर्य्यके न निकलने से तीनों चराचरलोक व्याकुलहुये इन्द्रको आगेकरके सबदेव ब्रह्माजी के समीप गये ६४ व सब देवताओं ने ब्रह्माजीसे सब वृत्तान्त कहा कि सूर्य्य के न उदित होनेका कारण हमलोग नहीं जानते इस विषयमें जो योग्यहो आपकरें ६५ ब्रह्माजी बोले जो कुछ पतिव्रताका वृत्तान्त था व माण्डव्यमुनि का जो वृत्त था व जिसकारण से सूर्य्य नहीं उदित होते थे उन्हों ने देवताओं से सब कहा ६६ तब सब देवगण विमानों पर चढ़कर ब्रह्माजी को आगे कर अतिवेग स्वर्ग से भूतलपर उस पतिव्रता के समीप आये ६७ उन देवताओं के विमानोंकी शोभासे व मुनियों के तेजसे सौ सूर्य्य के समान प्रकाश उस पतिव्रता के मन्दिर के भीतर हुआ परन्तु अन्यत्र अन्धकारही बनारहा ६८ तब वह पतिव्रता रोदन करनेलगी कि हाय मैं हतहुई मेरे गृहमें सूर्य्य कैसे उदितहुआ ऐसा कहा पर विमान पर चढ़ेहुये देवताओं को उसने नहीं देखा ६९ पर ब्रह्माजी उस पतिव्रता से बोले कि सब देवताओं व सब ब्राह्मणों व सब गौओं को ७० बड़ादुःख है व मरे जाते हैं इस विषयमें तुम कैसे शोचतीहो हे मातः! सूर्य्योदयके ऊपर क्रोधको छोड़ो ७१ पतिव्रता बोली कि सब लोकोंका अतिक्रमण करके मेरा एकपति गुरु है इसकी मृत्यु मुनि के शापसे सूर्य्योदय होते २ होजायगी अभी केवल शरीर जलगयाहै ७२ इसीकारणसे मैंने सूर्य्यको शापदेदिया है कि तीनदिनतक न उदितहो सो न तो मैंने कोपसे सूर्य्य को शापदियाहै न मोहसे न लोभसे न कामसे न मत्सरसे केवल अपने पतिके जीनेके लिये ऐसा किया है ७३ ब्रह्माजी बोले कि एकके मरनेपर तीन लोकों का हित होता है इससे इस कार्य्य के करने में हे मातः! तुमको अधिक पुण्य होगी ७४

तब वह पतिव्रता देवताओंके आगे ब्रह्माजीसे बोली कि पति को छोड़कर मुझको तुम्हारा सत्यलोकभी प्रिय नहीं है फिर अन्य पुण्यादिकोंकी क्या गणना है ७५ यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि जब सूर्य्य उदित होजायँगे व तुम्हारा स्वामी भस्महोजायगा तीनोंलोक स्वस्थ होजायँगे तब तुम्हारा हित करेंगे ७६ उस जलेहुये ब्राह्मण के शरीरके भस्म से कामदेवस्वरूपी एक पुरुष होगा सब गुणों से युक्त मानों रतिका पति व तुम रतिकी बराबर होगी ७७ जैसे देवताओंसे श्री हरिपूज्यहैं व जैसे लक्ष्मी अच्छेप्रकार पूजितहोती हैं वैसेही तुम स्त्री पुरुष स्वर्गमें पूजितहोओगे यह हमारा वचनकरो सूर्य्य को निकलने देओ ७८ पतिव्रता बोली कि हे ब्रह्मन्! अपने पतिके मरनेपर मैं विधवा होजाने के कारण लोकभर में निन्दित होजाऊँगी मैले आचारोंसे युक्त होकर किन लोकोंको जाऊँगी ७९ ब्रह्माजी बोले कि इस विषय में तुम्हारा कुछ दोष नहीं है तुम्हारा पति मृतक नहीं हुआ हम लोगोंके वचन से वह कुष्ठी अब काम के समान रूपवान्हो ८० ब्रह्माके ऐसा कहनेपर एकक्षणभर विचारकर पतिव्रताने कहा अच्छा यदि ऐसाहै तो हे तात! सूर्य्योदयहो ८१ बस जैसेही सूर्य्य निकले कि मुनिके शापसे भस्मीभूत उसके पति के शरीरसे कामको भी पीड़ित करनेवाला उसका पति ब्राह्मण दिव्य रूप निकल आया ८२ उसको देखकर सब पुरवासी विस्मितहुये व सब देवगण हर्षित हुये सबजन स्वस्थहोगये ८३ व स्वर्गलोक से एक सूर्य्य समान प्रकाशित विमान आया उसपर अपने पति के साथ चढ़कर देवविमानोंके मध्य में होकर वह पतिव्रता स्वर्ग को चलीगई ८४ इससे वह पतिव्रता हमारे समान शुभ है जैसे हम सब के वृत्त जानते हैं वैसेही वह भी जानती है इसीसे भूत भविष्य वर्त्तमान सब के वृत्त जानती है ८५ ॥

चौ० जो यहपुण्याख्यानमहत्तम । जननसुनावतंसुनत विज्ञतम ॥
जन्म जन्म कृत पातक जासू । नष्टहोत क्षणमाहिं खुलासू ८६
अक्षय स्वर्ग लहत सो प्रानी । देवन सँग विचरत अनुगामी ॥
ब्राह्मणलहत वेद अति पावन । जन्मजन्मसुखनिजमनभावन ८७

एकबार जो सुनत सुनावत। अघसमूह तजि पूतकहावत ॥
देवालय पावत सुखराशी। स्वर्गभ्रष्ट धनराशिप्रकाशी ८८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपतिव्रतो
पाख्याननामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

दो० बावनयें महँ पतिव्रता दुराचारिणी केर ॥
धर्म्म कहे शुभ गतिनरक पातकमहिं सों ढेर १
कन्यादान महात्म्य अरु तासु विधान बखान ॥
पति लक्षणरु अयोग्यपति विधवाधर्म्मसमान २

यह सुनकर नरोत्तम ब्राह्मणने श्रीहरिसे पूँछा कि हे विष्णो! मा-ण्डव्यमुनिकी देहमें शूलका आघात कैसेहुआ व पतिव्रताके पतिके शरीरमें कुष्ठरोग कैसे हुआ १ श्रीभगवान् बोले कि बाल्यावस्थाके कारण माण्डव्यमुनि बरं नाम जन्तुओं के गुदमें सिरकी का भुआ खोंसकर मारे मोहके छोड़देते थे २ उसी अपवादके दोषसे धर्म्म न जानतेहुये मुनि को एक रात्रि दिन बड़े कष्टकी व्यथा भोगनीपड़ी ३ परन्तु समाधिके कारण उन्होंने शूलसे उत्पन्न व्यथा को नहीं जाना व बड़ाभारी योगाभ्यास मुनि किये थे इस कारणसे भी उनको कुछ कष्ट नहीं विदितहुआ ४ व अजितेन्द्रिय होनेके कारणसे उस कुष्ठी ब्राह्मणके शरीरका स्पर्श जैसे उनके शरीरसे होगया उससे जो दुर्ग-न्धिहुई उसे द्विजपुङ्गवने जानाथा ५ व पूर्व्वकालमें उस कुष्ठी ब्राह्मण ने आठवर्ष की चारकन्यायें ब्राह्मण को दानकी थीं व तीन दशवर्ष की कन्यायें दींथीं इस कारण उसको पतिव्रतास्त्री मिली ६ व उसी अपनी स्त्री के कारण वह ब्राह्मण हमारी समताको पहुँचगया इस पुरातन वेदकर्म्म में तुमको विस्मय क्यों हुई ७ इतना सुनकर फिर ब्राह्मण ने पूँछा कि हे नाथ! जिस पुरुषकी स्त्री अच्छे आचरणकी होती है उस पुरुषको निश्चय स्वर्गलोक मिलता है व जिसकी दु-राचारिणी होतीहै उसको भी अपनी स्त्री प्रियहोतीहै फिर ऐसी स्त्रीके कारण नरक क्यों होताहै हम इसका कारण सुना चाहते हैं ८ श्री

भगवान् बोले कि जो पुरुष अपना सब धनभी अपनी स्त्रियोंको दे देते हैं उनकी भी स्त्रियां प्रायः ऐसे दुराचारकरती हैं कि उनका पता उनके पति नहीं पाते व मनसे भी उनकी रचा नहीं करसक्के ९ स्त्रियोंको प्रायः कोई न प्रियहै न अप्रिय जैसे पशु नये २ तृणकी इच्छा करते हैं वैसेही स्त्रियाँ नये २ पुरुष की इच्छा कियाकरती हैं १० जो कामिनी स्त्री होती है वह धनहीन विरूप गुणवर्ज्जित अकुलीन व अपने सेवकनीच जाति वालेके संग भोगकरती है ११ गुणयुक्त कुलीन महाधनी सुन्दर रतिकरने में चतुर अपने पतिको छोड़कर नीचदासकी सेवा करतीहै १२ हे भूसुर! इस विषयमें एक पार्व्वती नारदके संवादकी पुरानी गाथाहै उससे विदित होजाताहै कि स्त्रियोंकी चेष्टा प्रायः कोई पुरुष नहीं जानपाता १३ हे विप्र स्वभावहीसे लोगों के आचार जाननेकी इच्छासे नारदमुनि अपने मनमें विचारांश करके पर्व्वतों में उत्तम कैलास पर्व्वतपर गये १४ उस समय महादेवजी हिमवान् पर्व्वतपर ध्यानकर रहेथे तब उन महात्माने प्रणामकरके वृषकेतु का आख्यान पार्व्वतीजी से पूँछा १५ कि हे देवि! हम स्त्रियों की दुष्ट चेष्टा जानना चाहतेहैं क्योंकि तुम बहुतसी स्त्रियोंकी चेष्टा कौतुकसे जानती होओगी १६ तुमसे कुछछिपानहीं है सब स्त्रियोंकी मनकी बात निश्चय करके तुम जानतीहो इससे सब स्त्रियोंकी दुराचारता हमसेकहो क्योंकिमैं अज्ञहूं इससे विनयसे पूछताहूं १७ श्रीपार्व्वती देवीबोलीं कि युवती स्त्रियोंका चित्त सदा पुरुषों मेंहीधरा रहताहै इसमें संशय नहीं है चाहे उनकी योनिका संयोग पुरुषके साथ होताहो वा न होताहो १८ सुन्दर पुरुषको देखकर चाहे वह भाईहो वा पुत्रभीहो स्त्रियोंकी योनिसे जल निकलने लगताहै हे नारद! यह सत्यहै सत्यहै १९ कोई स्थाननहीं मिलता अवकाश नहीं होता न उनसे प्रार्थना करनेवाला पुरुष कोई होताहै हे नारद! इससे स्त्रियोंका पातिव्रत निबहताहै २० घृतके घड़ेके समान स्त्रीहोती है व तप्त अंगारों के समान पुरुष होता है इससे घृत व अग्नि एक स्थानपर न धरना चाहिये २१ जैसे मतवाले हाथीको अंकुशके बलसे हथिवाल अपने वशमें करताहै वैसेही स्त्रियोंका रक्षक होना चा-

हिये २२ कुमार अवस्थामें स्त्रियोंकीरक्षा पिता करताहै व पति युवा-
वस्थामें रक्षा करताहै व वृद्धावस्थामें पुत्र रक्षाकरताहै क्योंकि स्त्री
स्वतन्त्र रहनेके योग्य नहीं होती २३ इससे जहां स्त्रीको स्वतन्त्रता
हुई अपनी इच्छासे जानेआने लगी व किसी पुरुषने उससे प्रार्थना
की व उसे विदित हुआ कि यहांपर कोई देखनेवाला नहीं है बस स्त्री
दुराचारिणी होजाती है २४ जैसे विना रक्षा किये भोजन कुत्ते व काकके
वशमें होजाता है ऐसेही युवती स्त्री जहां स्वच्छन्द रही कि दुराचा-
रिणी होगई इसमें कुछभी अन्तर नहीं है २५ फिर जब स्त्री परपु-
रुषसे रतहुई तो उसके संसर्ग से कुल उच्छिष्टहोजाता है क्योंकि
जो पराये बीजसे उत्पन्न होताहै वह वर्णशङ्कर होता है २६ जारज
अन्य पुरुष से उत्पन्न पापी निश्चय नरक में बसता है फिर जब
जन्महोता है तो कीटपतङ्गोंकी योनिमें बार २ पृथ्वीपर होता है २७
तदनन्तर हे द्विजनन्दन! फिर म्लेच्छोंके कुलमें जन्महोताहै व जिससे
कुल का नाशहोता है इससे दुष्ट दुराचारिणी स्त्री को फिर न धारण
करना चाहिये २८ जो पुरुषाधम स्त्रीका दोष जानकर क्षमा करता
है कुछ कहता त्यागता नहीं वह घोर रौरवनरक में पितरों सहित प-
तित होताहै २९ कोई स्त्री तो कुलको पतितकरातीहै व कोई कुलका उ-
द्धारकरातीहै इससे सब प्रयत्नसे पंडितको चाहिये कि अच्छे कुलकीस्त्री
केसाथ विवाह करे ३० क्योंकि जो स्त्री अच्छेकुलकी होती है व अच्छे
ही कुल में ब्याही जातीहै वह दोनों कुलोंको समान रखती है व पति-
व्रता वंशों को तारती है दुराचारिणी पतित कराती है ३१ स्त्रियोंकेही
अधीनस्वर्ग्ग कुल लाञ्छन यश अयश पुत्र कन्या मित्र संसारमें कहे
जातेहैं ३२ इससे पण्डितको चाहिये कि एक वा दो स्त्रियोंको ब्याहे
उनसे सन्तानका अर्थ चलता है व कामकाभी अर्थ चलता है व ब-
हुत स्त्रियों के संग विवाहकरना दोषकारीही होताहै इससे दोसे अ-
धिक स्त्रीका संग्रह न करे ३३ क्योंकि बहुत स्त्रियोंके होनेपर समय२
पर एकपति नहीं पहुँचता व जो पुरुष रजस्वलाहोने के पीछे अपनी
स्त्री के संग भोग नहीं करता उसको ब्राह्मणके मारने व गर्भपातक
कराने का दोष होताहै व अन्त में नरकपात होताहै ३४ व जो पाप-

कारी पुरुष अपनी साधुस्वभाववाली स्त्रीको दुर्भगा करके छोड़ देताहै उसके वध करने से जो पाप होता है उस पापको भोगकरके फिर अन्तमें नरकको जाताहै ३५ व जो कोई किसीकी स्त्री हरलेता है वह चाण्डाल की कुलता को प्राप्त होजाताहै व ऐसेही बहुतोंका जूँठा खानेसे पुरुष पतित होजाता है ३६ व जो पुरुष स्त्री के गलेमें अपना वीर्य्यपातित करताहै वह बहुत दिनोंतक नरकमें वासकरताहै व उसके शिरपर नित्य मल मूत्र गिरायाजाता है ३७ इसप्रकार हजार वर्षतक वह दुष्ट मल मूत्रकाभार ढोयाकरताहै फिर जितने उसकेअङ्ग में रोमहोतेहैं उतने वर्षतक रौरवनरकमें पड़ारहताहै ३८ फिर कीट योनियोंमें जन्मपाताहै फिर जब मनुष्य होताहै तो पूर्व्वकपापसे कलह व शोकसे सदा युक्त रहताहै ३९ ऐसे तीन जन्मपाकर मनुष्य पापसे छूटता है व जो स्त्री छलसे किसी पुरुषको वशमें करलेती है वह नरकको भोगती है फिर कौवाकी योनिमें वन्ध्या होती है ४० व किसी के उच्छिष्ट पदार्थ के खानेसे नरक भोगकरके फिर विधवा होतीहै व जो पुरुष पासी कोरी चमार आदि अन्त्यजों की स्त्रीके संग भोग करता है वा म्लेच्छ की स्त्रीके संग वा डोमकी स्त्रीके संग ४१ वह क्रम से दूने तिगुने चौगुने वर्षोंतक नरक में जाकर वीजही पीनेको पाता है व महादुःख भोगता रहताहै माता गुरुस्त्री ब्राह्मणी रानी ४२ अन्य वा अपने स्वामी की स्त्री के संग भोगकरके फिर कभी जन्म नहीं पाता व जो अपनी भगिनी भानजे की स्त्री कन्या पुत्रकी स्त्री ४३ चची मामी व फूफू मौसी आदिकेसङ्ग भोग करताहै वह भी कभी नहीं जन्मपाता सदा नरकही में पड़ारहता है ४४ व जो ब्राह्मणको मार डालता है वह अन्धा गूँगा होताहै कानोंसे उसे सुनाई नहीं देता व नेत्रोंसे जल बहा करता है इन दुःखोंसे कभी छुट्टी नहीं पाता ४५ बस स्त्रियोंके शीलका वर्णन हमने किया इतनी कथा सुनकर नरोत्तम ब्राह्मण ने श्रीहरिसे पूँछा कि ऐसे पापको करके फिर कैसे इन से छूटे ४६ हे भगवन् ! सो हमसे कहो हमको सुनने की इच्छा है श्रीभगवान् बोले कि ऐसी माता भगिनी पुत्रवधूआदि अगम्य स्त्रियोंके सङ्ग भोगकरके मरण के समय लोहेकी स्त्रीकी पुतली बन-

वाकर अच्छीतरह तपाकर ४७ उसका आलिङ्गन करके प्राण छोड़े तो पवित्र होकर स्वर्ग को चलाजाय व नहीं तो गृहस्थाश्रम छोड़कर मनुष्य हममें चित्तलगावे ४८ व नित्य हम गोविन्दका स्मरण करे तो सब पाप भस्महोजायँ गुरुकी स्त्रीके संग प्रसंग करना ब्रह्महत्याके समान होताहै ४९ व सैकड़ों सहस्रोंबार महुआ की पीठी की मदिरा पीनेसे जो पाप होताहै सुवर्णआदि हरलेने से व उनके हरण करनेवालों के संसर्गसे ५० इत्यादि अन्य महापाप अतिपाप करनेसे जो पाप होतेहैं वे सब गोविन्दका भजन स्मरण करने सेअग्निको पाकररुई व सूखेतृणके समान भस्म होजातेहैं५१ इससे हमारे गोविन्दनामके स्मरण करनेसे मनुष्य पवित्र होजाताहै अथवा गृहस्थाश्रम न छोड़े गृहहीमें रहकर गोविन्द गोविन्द५२करतारहे व पूजा करता रहे तो गुरुस्त्रीगमनादि पापोंसे छूटजावे गंगाजीके तट पर सूर्य्यग्रहण में ५३ जो फल सहस्रगोदान करने से होताहै उस फलसे सहस्रगुण अधिकफल ५४ गोविन्दके कीर्त्तन से होता है व हमारे पुरमें निश्चलबास होताहै यदि कामोंके भोगने की इच्छाहो तो घरमें रहकर भी फिर वैकुण्ठ से आकर वह मनुष्य पृथ्वीभरका चक्रवर्त्ती राजा होताहै ५५ व पुराणोंमें हमारी कथा सुनकर मनुष्य हमारे तुल्य होजाता है व जो पुराण बांचता है वह विष्णुकी सायुज्यमुक्ति पाताहै ५६ इससे धर्म्मसञ्चय पुराण नित्य सुनने चाहिये व प्रयत्न से पुराण सुनाकर पुरुष विष्णु शरीर होजाता है ५७ वा अन्य स्त्रीकृत दोषों के मिटाने के उपाय यथायोग्य होते हैं निश्चय से हे द्विजनन्दन ! चित्तलगाकर सुनो हम चित्तलगाकर कहते हैं ५८ बीजसहित एक श्वेत कूष्माण्ड व घड़ाभर जल किसी पुण्यदिन में ब्राह्मणको देनेसे सामान्य स्त्री के भोगके पापसे पुरुष पवित्र होजाता है ५९ व समयपर सब धान आदिके बीज ब्राह्मण को देने से सब पाप क्षयहोकर दाता को अक्षय स्वर्गलोक भोगना मिलताहै ६० हे विप्र ! पतिव्रताओं का गुण जैसा दृढ़होताहै कहते हैं शुद्धवंश पतिव्रतासे होताहै व नित्य लक्ष्मी प्राप्तहोती है ६१ व पतिव्रता अपने व पतिके वंशभरको स्वर्गको पहुँचाती है

हे विप्र ! पतिव्रता के गुण तुम पूँछने को भूलगये थे ६२ व तुमने पूँछे भी थे तो हम भी भूलगये थे अब सबलोक के हितकारी सुन्दर पतिव्रताओं के गुण फिर कहते हैं क्योंकि उन्हीं के गुण लोगों के शुभगुण हैं पूर्व्वकालमें पुण्य अपुण्य सबकार्य्य करके भी जो स्त्रियां ६३ पीछेसे पतिव्रता होजाती हैं वे भी हमारी गतिको पाती हैं छः मास वा वर्षभर भी व अधिक उत्तम कहते हैं ६४ जो स्त्री पतिव्रताके धर्म्ममें टिकती है वह भी पवित्र होकर स्वर्गको चलीजाती है पतिव्रता स्त्री जो मद्यप विप्रहन्ता व सब पापकियेहुये भी अपने पतिको ६५ पापसे छुड़ाकर स्वर्गलोक को पहुँचाती है वह पीछे से आप भी जाती है व कन्दर्प्प के समान रूपवान् अपने पतिको पाकर व अपना रतिके समान मनोरम ६६ रूप धारणकरके विष्णु के लोकमें बहुत कालतक अनन्तसुख भोगकरती है व जिस स्त्रीका पति कहीं विदेश में मरजाता है व वह उससमय उसके सङ्ग नहीं जलसक्ती पतिव्रतत्व के बलसे उसके वस्त्र खराऊँआदि चिह्नलेकर पीछे से सती होजाती है वह अग्निमें पवित्रहोकर पापसे पतिको उद्धार करती है जिस पतिव्रता स्त्रीका पति देशान्तरमें मरगया ६७।६८ वह स्त्री पतिके चिह्नलेकर अग्निमें सतीहोकर स्वर्गको जातीहै जो ब्राह्मण जातिकी स्त्री अपने मृतकपतिके साथही आपभी किसी उपघात से मरजाती है वह आत्मघात करनेके कारण न अपनेही को स्वर्ग को लेजातीहै न अपने पतिहीको इससे ब्रह्माकी आज्ञाहै कि ब्राह्मणी अपने पतिके साथ मृतक न होजावे ६९।७० क्योंकि पति के मरनेपर आत्मघात करके मरने से भ्रष्टगतिको पाती है नरोत्तम विप्रने यह सुनकर पूँछा कि सब जातियों में ब्राह्मणकी जाति श्रेष्ठहै ७१ व सब पुण्य करने में भी ब्राह्मण मुख्यहैं पर पतिके सङ्ग ब्राह्मणीके मरनेका निषेध कैसे हुआ श्रीभगवान्जी बोले कि ब्राह्मणी को साहसकर्म्म करना कभी योग्य नहीं है ७२ क्योंकि जो थोड़ा भी मरनेको बाकी रहगई हो तो उसका वध करनेवाला ब्रह्मघाती होताहै इससे ब्राह्मणजातिकी स्त्री ब्रह्मचर्य्य से युक्त रहकरे ७३ हम विधवा ब्राह्मणीका धर्म्म कहते हैं चित्तलगाकर जैसा चाहिये

सुनो पतिके मरने पर ब्राह्मणकी स्त्री व बासी अन्न व मांस मछली कभी न भक्षणकरे ७४ ऐसे नियमसे रहने से वर्षदिन में सहस्रअश्वमेध यज्ञोंका फलपावै अपने इष्टदेवकी पूजा नित्य करती रहे व विष्णुके सब उत्तम व्रत करतीरहै ७५ व अपने पतिको भी पिण्डदान तर्पण घमण्ड छोड़कर करतीरहै मरने के पीछे फिर कोटि सहस्रयुगपर्य्यंत व कोटिसैकड़ों युगपर्य्यन्त ७६ अपने पतिके सङ्ग वह पतिव्रता ब्राह्मणी विष्णुलोक में जाकर निवासकरे इस प्रकारके महाव्रत.को पाकर ब्राह्मणकी विधवा स्त्री नरक से ७७ अपने व पतिके दोनों कुलवालों के सैकड़ों सहस्रों वंशोंको तारे इससे उसके बन्धुजन पुत्र भाई इत्यादिको चाहिये ७८ कि उसके नियम व्रतोंका लोप न करावें जहां तक व्रत नियम उससे होसकें करने दें एकादशी को जो विधवा व्रत नहीं करती ७९ वह फिर विधवा होतीहै व जन्म २ में दुर्भगा होतीहै व मछली मांस खानेसे व्रतोंके छोड़ने से ८० विधवा बहुत दिनोंतक नरकमें रहकर फिर कुकुरिया होतीहै जो कुलनाशिनी विधवा मैथुन कराती है ८१ वह बहुत दिनोंतक नरक भोगकर घड़ियाली दश जन्मतक होती है वा दोजन्मतक शृगाली होकर फिर मनुष्य होती है ८२ व उसी प्रकार बालविधवा होकर दासी होजाती है विधवा धर्म्म सुनकर नरोत्तम विप्रने पूँछा कि कन्यादान का फल व दासीदान का फल हमसे कहो ८३ यदि हमारे ऊपर अनुग्रह हो तो उसका विधान भी कहो श्रीभगवान् बोले कि रूपयुक्त गुणों से सम्पन्न कुलीन युवावस्था को प्राप्त ८४ सब बातों से समृद्ध धनसे सम्पूर्ण पुरुषको कन्यादान करनेसे जो फल होताहै सुनो ऐसे पुरुषको जो सब भूषणों से भूषित कन्या देताहै ८५ उसने जानो पर्व्वत वनादि सहित सब पृथ्वीदान करदी आधेभूषण देनेसे आधा फल भी होता है ८६ विना भूषणकी कन्या के दानसे चौथाई फल होताहै व जो कन्याको बेंचकर उसका धन खाताहै वह मनुष्य नरक को जाता है ८७ क्योंकि अपनी कन्याको बेंचकर पुरुष कभी नरक से निकसही नहीं होता व लोभ से जो कन्या के अयोग्य वृद्धादि पुरुष को कन्या देता है ८८ वह रौरवनरक बहुत दिनोंतक भोगकर

चाण्डालकी योनिमें उत्पन्न होता है इसीसे दमादसे कुछ कन्याकी बदलाई में कभी ८९ मनसे भी न ले क्योंकि उसको जो कुछ दिया जाताहै वह अक्षय होजाताहै पृथ्वी गौ सुवर्ण धन वस्त्र व धान्य ९० जो कुछ दमादको दायज दियाजाताहै वह सब अक्षय होजाताहै हे वत्स ! विवाह के समय अपने गोत्रवाले वा अन्य गोत्रवाले ९१ जो दायज देते हैं वह सब अक्षय होजाताहै दाताको चाहिये कि अपने दानका स्मरण न करे व लेनेवालेको चाहिये कि हठ से बहुत न मांगे ९२ क्योंकि ऐसा करनेपर दोनों नरकमें गिरते हैं जैसे कि रस्सी टूटजानेपर घड़ा कूपमें गिरपड़ताहै परन्तु जो सात्त्विक देने-वाले ने दान देने को कहाहो देडाले ९३ क्योंकि कहकर विना दिये हुये वह पुरुष नरक को जाता है व फिर जब जन्म लेता है तो उस का दास होता है बहुतही निकटवासीको व बहुत दूर रहनेवालेको व बड़ेभारी धनाढ्य को अतिदरिद्री को ९४ कुलहीन को मूर्ख को इन छः को कन्या न देनी चाहिये अतिवृद्ध अतिदीन रोगी एक ग्रामवासी ९५ अतिक्रुद्ध असन्तुष्ट इन छःका भी कन्या न देनीचा-हिये इन बारहोंको कन्या देकर मनुष्य नरकको जाताहै ९६ लोभ से वा सम्मानके लाभसे कन्याकी बदलाई कभी न करनी चाहिये कि उसकी कन्या अपने वा अपने पुत्रादि के सङ्ग ब्याहले व अपनी उसके वा उसके पुत्रादि के सङ्ग ब्याहे बस मुनियों को यही प्रिय है कि सुशीला युवती रूपवती स्त्री ९७ भूषण वस्त्रोंसे भूषित शय्या सहित कन्यादे जिससे अनन्तफल पावे युवतीस्त्री व दशवर्ष के भी-तरकी कन्या दोनों के दानका तुल्यफल होता है ९८ परन्तु युवती स्त्री अच्छे युवा पुरुष को देनी चाहिये व कन्या उसकी अवस्था के वरको देनीचाहिये तब समान फल होताहै व जो कोई स्त्री मोलले-कर किसी देवताको देदेता है इस धीरताका कार्य्यकरता है ९९ वह कल्पभर स्वर्ग में बसता है व फिर पृथ्वीपर कि तो राजा होताहै अथवा महाधनी व प्रत्येक जन्ममें श्रेष्ठ गोरेरङ्गकी अच्छे स्वभाव की मनके अनुकूल प्रिय मधुर बोलनेवाली स्त्री पाताहै १०० ॥

चौ० जो यह पुण्याख्यान अनुत्तम । सुनत सुनावत वाडवसत्तम ॥

सकल पापक्षय तासु तुरन्ता । होत शास्त्रपारग धनवन्ता १०१
अक्षय स्वर्ग्ग लहत सो प्रानी । नारीवल्लभ अरु गुणखानी ॥
विजय लहत क्षत्रिय रणमाहीं । लोकनाथ होवत शक नाहीं १०२
जन्म जन्मकृत पातक राशी । सुनत नशातरु तेज प्रकाशी ॥
लहत सुभाग्य लोकमहँ सोई । वरनारी पावत नहिं गोई १०३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपंचाख्यानेस्त्री
णामाख्यानंनामद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

दो० तिरपनयें महँ कह भलो तुलाधार इतिहास ॥
ताअन्तर्ग्गत शूद्रकी कथा कही सुखवास १
सत्यवादिता लोभकी वरहानिता प्रकाश ॥
उभय चरितमें है कही देखहिं सुजन विकाश २

नरोत्तम ब्राह्मणने श्रीहरिसे पूँछा कि हे प्रभो ! तुलाधारका चरित्र व अतुलप्रभाव सम्पूर्णकहो यदि हमारे ऊपर अनुग्रहहो १ श्रीभगवान् बोले कि जो पुरुष सत्यभाव अलोभ व विना घमण्ड के ऐसेही दानदेता है वह नित्य दक्षिणासहित सौयज्ञ करनेका फल पाताहै २ सत्यहीसे सूर्य्य अपने समयपर उदित होते हैं सत्यही से पवन चलताहै सत्यहीसे समुद्र मर्य्यादाको नहीं नांघता व पृथ्वी सत्यहीसे कूर्म्मकी पीठपरसे नहीं उतरपड़ती ३ सत्यही से सबलोक ठहरेहुये हैं व सत्यही से सब पर्व्वत अपने अपने स्थानोंपर स्थितहैं व सत्य से भ्रष्टपुरुष नरकवासी होताहै ४ सत्यमें जिसके अङ्ग रतहोते हैं व शरीरभर जिसका सदा सत्यही में निरत रहता है वह शरीरसहित स्वर्ग्ग में जाकर फिर वहांसे गिरता नहीं ५ सत्यहीसे सब मुनिलोग स्वर्ग्ग में जाकर स्थिरहुये हैं सत्यही से राजायुधिष्ठिर शरीर सहित स्वर्ग्ग को चलेगये ६ व सब शत्रुगणों को जीतकर लोगोंको धर्म्म से पालन किया व राजसूय अतिदुर्ल्लभ शुद्धयज्ञ सत्यही के बलसे किया ७ व चौरासी सहस्र ब्राह्मणों को नित्य सुवर्ण के पात्रों में रा-

जाओं के भोजनकरने के योग्य पदार्थ वे भोजन कराते थे ८ भोजन कराके सब सुवर्ण के पात्र व राजयोग्य वस्त्र सब उन्हीं ब्राह्मणों को देदेते थे इस के विशेष उन ब्राह्मणों को जो और कुछ अभीष्ट होताथा वहभी देतेथे ९ जब जानलेते थे कि अब ब्राह्मण दरिद्ररहित होगये तब उनको बिदाकरते थे ऐसेही वेद शास्त्र जिह्वाग्र रखनेवाले सोलह सहस्र ब्राह्मणों को विमत्सरहोकर राजा सत्यही के बलसे भोजन देताथा १० बहुत दिनोंतक सत्य राजाके जीतनेके लिये उनके गृह में गुप्तरूपसे स्थितरहा परन्तु राजाने सबके प्राणोंके ऊपर ऐसा अनुग्रह किया जिससे सत्य क्या सब जगत् भरको जीतलिया ११ व सत्यही से असुरवंशी राजाबलि आगे के आठयें मन्वन्तर में इन्द्र होगा इसी सत्यही के कारण पाताल में टिकेहुये उस बलिके गृहमें हम नित्य टिकेरहते हैं १२ सो ऐसा पुण्यकर्म्म उसने किया है कि उसके गृहमें हम समीप नित्यही टिकेरहते हैं व हमने पहले बन्धन इसलिये कियाथा जिसमें दैत्ययोनिसे वह छूटजाय १३ सो तल व अमरता तो उसे हमने देहीदी है पर इन्द्रत्व भी देदेंगे क्योंकि कह दियाहै कि तू आठवें मन्वन्तर में इन्द्रहोगा राजा हरिश्चन्द्र इसी सत्यहीके बलसे वाहन परिच्छदादिसहित १४ अपने शुद्ध शरीर से जाकर सत्यलोक में प्रतिष्ठितहुये हैं व बहुत से अन्य राजालोग महर्षि सिद्धलोग १५ ज्ञानी संन्यासीआदि सब सत्यही से सत्यलोक में स्थित हैं इससे इसलोक में जो सत्यबोलने पर आरूढ़ है वह संसारका उद्धार करसक्ताहै १६ सो महात्मा तुलाधार सत्य वाक्यमें प्रतिष्ठितहै सत्यवाक्यके कारण लोकमें उसके समान और नहींहै १७ सहस्र अश्वमेध यज्ञ व सत्यबोलने को तौलने से सहस्र अश्वमेधसे सत्यही विशेष गरू होताहै १८ सब सत्यही से साध्य किया जाताहै क्योंकि सत्य बड़ा दुरतिक्रम होताहै सत्यवाक्यसे ही बहुलानाम धेनु स्वर्गलोकको चलीगई १९ सो अकेली नहीं अपने सब राज्यभरको लेकरगई अब वहांसे फिर लौटना दुर्लभहै वैसेही यह सदा साक्षी रहताहै मिथ्या किसी भी प्रकारसे नहीं कहता २० बहुतसस्ता व बहुत महँगा मोललेने व बेंचनें में कभी विपरीत नहीं कहता साक्षियों के

बीचमें विशेष विश्वास सत्यही वचन का होताहै २१ क्योंकि साक्षी लोग सत्यबोलकर बहुत से स्वर्ग को चलेगये हैं जो लोग प्रशस्त वक्ताहोते हैं वे सभामें जाकर सत्यही वचन कहते हैं तब वाक्पति कहाते हैं २२ सत्यवादी उस स्थान को जाताहै जहां अन्य यज्ञोंसे जाना दुर्लभ है क्योंकि जो सभामें सत्य बोलता है वह अश्वमेध यज्ञका फल पाताहै २३ लोभ वा वैरसे मिथ्या कहकर रौरव नरक को जाताहै तुलाधार सब जनों का साक्षी रहता है इससे सब जनों का सूर्य्य है २४ लोभके सन्त्याग करने से मनुष्य देवता होजाता है एक कोई महाभाग शूद्र था वह लोभमें कभी नहीं अपना वर्ताव करता था २५ शाकसे व शिलोञ्छ से बड़े दुःखसे अपनी जीविका करता था अङ्ग बनाय उसके दुर्बलहोगये थे कपड़ों व वस्त्रोंका काम हाथोंसे करता था २६ परन्तु सदा ऐसा लोभरहित था कि कभी पर-धन उसने न ग्रहणकिया उसकी परीक्षा करने के लिये हम दोवस्त्र लेकर २७ चुप्पे नदीके तीरपर धर दिया उसने दोनों वस्त्र धरेदेखे परन्तु लोभमें मन न किया २८ जाना कि अन्य किसीके हैं इससे अपने गृहको चला आया तब हमने अपने मनसे विचारा कि थोड़ा माल जानकर इसने दो वस्त्र नहीं लिये २९ गोमेदमणि बीचमें धरके हमने एक गूलरका फल उसके पास ऊपरसे गिरादिया जहां नदीके किनारे जनवर्ज्जित स्थानपर वह नित्य आताथा ३० वह वहां आया व उधर वह अद्भुत पदार्थ उसने देखा व शोचा कि यह पड़ाहुआ नहीं है किसीने यहांपर रक्खाहै यह कृत्रिम जानपड़ताहै ३१ इसके ले लेने से मेरा अलोभ इससमय नष्टहोजायगा इसकेरक्षा करने में मुझको बड़ाकष्ट होगा क्योंकि इसके पाजानेसे अहङ्कार बड़ाहोजाताहै ३२ क्योंकि जहां लोभहोताहै वहां लाभभीहोताहै व लाभसे लोभभी होता है व लोभग्रस्त पुरुषको निरन्तर नरकहोताहै ३३ जो मेरे घरमें बहुत विगुण धन रहेगा तो मेरे पुत्र स्त्रियोंको बड़ाभारी उन्माद होजाय-गा ३४ उन्मादसे कामउत्पन्न होगा व कामविकारसे बुद्धिका विभ्रम होगा भ्रमसे मोहहोगा व मोहसे अहङ्कार अहङ्कारसे क्रोध लोभहोंगे ३५ इन सबोंके अधिक होनेसे तपस्याका नाशहोगा तपस्या क्षीण

होनेपर दोष उत्पन्नहोंगे व दोषोंसे चित्तको मोहहोगा ३६ इनसबों की जञ्जीरमें बँधजाने पर ऊपरको फिर न चलनाहोगा ऐसा विचार करके उसेछोड़कर वहशूद्र अपनेगृहको चलागया ३७ तब आकाशमें टिकेहुये देवगणोंने अच्छा २ कहा तब हम विना गांठिका सुन्दररूप धारण करके उसके समीपको ३८ गये व जाकर देवताओंका संवाद कहनेलगे जोकि आकाश में टिकेहुये देवताओंने कहाथा तब बनाय समीपजानेके प्रसङ्गसे व जलकेचूनेसे ३९ उसकी स्त्रीनेवहां आकर हमसे देवताका कारण पूँछा तब उसके चित्तमें जो पूँछनेकोथा वह उससे कहा ४० व निश्चलहोकर उस देववाणीके वृत्तकहा कि जो तुम्हारे हृदयमें है वह तो ब्रह्माने भाग्यवशसे तुम्हारे पति के आगे गिरायाथा परन्तु तुम्हारेपतिने अज्ञतासे ४१ ग्रहण नहीं किया अब तुम्हारे लिये फिर और धन नहीं है जो दियाजाय उससे तो जबतक तुम व तुम्हारे पति जीतेरहते भोजन चलाजाता ४२ इससे हेमातः! गृहशून्य है शीघ्र जाकर तिससे न लिये हुए पदार्थ को पूंछो यह मंगलकारी वचन सुनकर वह अतिवेग अपने पति के समीप ४३ जाकर व इस दुर्व्वृत्तको उससे उसनेकहा सुनकर वह शूद्र विस्मित हुआ व अच्छीतरह चिन्तनाकरके उसकेसाथ हमारेपासआया ४४ व एकान्तमें अपनी भिक्षुकी व निर्लोभता कहतेहुये बोला कि हमसे जैसा हालहो कहो तब हम नग्न जैनतपस्वी का वेष धारण कियेहुये तो थेही उससे बोले कि हे तात! अपने आप नेत्रों के सामने गिरेहुये उस गोमेदमणियुक्तपात्रको तृण के समान कैसे ४५ तुमने छोड़दिया इससे हे तात! अब फिरतुम्हारेभाग्यमें और कुछनहीं है कल्याणकारी अतुलशौर्य फिर ऐश्वर्य्यजातारहा ४६ जबतक तुमजीवोगे तबतक अपने बन्धुओं का महादुःख देखते रहोगे जो गति मृतक पुरुषोंकी होती है वह तुम्हारी नित्य बनीरहेगी ४७ इससे हमारी जान तुम जाकर उसीको फिरजल्दी ग्रहणकरो व अकण्टकभोग भोगो अतुल ऐश्वर्य्य शूरता व अन्त में विस्मयरहित लोकों को प्राप्त होओ ४८ यह सुनकर वह शूद्र बोला कि मुझको धनकी कुछभी इच्छा नहीं है क्योंकि धन संसारमें बन्धनका रूपहै सो यदि मनुष्य इस बन्धनसे

बँधजाताहै तो फिर मोक्ष नहीं पाता ४९ धनमें जो इस लोकमें व पर लोकमें भी दोषहोते हैं सुनो जिसके धनहोताहै उसको चोरोंसे जालिया- लोंसे राजा व राजसेवकोंसे व अन्य ज़बरदस्तों से सदा भय होती है ५० जैसे छागादि पशुओं व मत्स्योंके मारनेकी इच्छा प्रायः दुष्टमनुष्य कियेरहते हैं वैसेनित्य धनवानोंके वधकी कियेरहते हैं फिर धन सु- खदायी कैसेहोसक्ते हैं ५१ धनप्राणका नाशकराताहै पापका करने- वाला कालादिकों का प्रिय यह ग्रह दुर्गति का आदि कारण है ५२ तब जैनवालोंके आचार्य्यका रूपधारण किये इन उस शूद्रसे बोले कि जिसके धनहै उसीके मित्र होते हैं जिसके धनहोताहै उसी के बान्धव होते हैं कुल शील पाण्डित्य रूप भोग्य वंश व सुख सब जिसके धन होताहै उसीके होते हैं ५३ जो धनसे हीन होजाता है उसकी स्त्री पुत्रादिभी उसे छोड़ देते हैं फिर धनहीन के मित्र कैसे रहसक्ते हैं व धर्म्म कैसे रहसक्ताहै ५४ अश्वमेधादियज्ञ तड़ागादि खुदाना परोपकारकरना स्वर्ग जानेकेलिये सोपानरूप दान ये सब धनहीनके नहीं सिद्ध होते ५५ व्रतोंका करना अपनी रक्षा के लिये पूजा पाठका कराना धर्म्मग्रन्थ पुराण धर्म्मशास्त्र वेदों का सुनना पितरोंकेलिये श्राद्धादि यज्ञकरना दूरदेशोंके तीर्थोंकी यात्रा ये सब धनहीनके नहीं होसक्ते ५६ व रोगोंका प्रतीकार अच्छी तरह नहीं होसक्ता क्योंकि पथ्यभोजन उचितऔषध बिना धनके नहीं होसक्ते विग्रहका रक्षण नहीं होसक्ता सदा शत्रुओंकी विजय हुआ करतीहै ५७ व उत्तमस्त्रियों की बातें जन्मसे धनही के योगसे मिलती हैं ॥ जिन स्त्रियोंसेही गृहस्थाश्रम के भूत भविष्य वर्त्तमान सब सुख व दुःख मिलते हैं ५८ इस से हे तात! बहुतसा धन जो तुम्हारेआगे पतित हुआथा उसको लेकर अपनेमनमाने सुखभोगो व नाना प्र- कारके दान पुण्य करके स्वर्गको यहांसे जल्दी प्राप्तहोओ ५९ शूद्र बोला कि कामके वशीभूत न होनेसे सब व्रत होते हैं क्रोध न करने से तीर्थसेवा होती है प्राणियों के ऊपर दयाकरनाही मन्त्रजप है सन्तोषही धन होताहै ६० अहिंसा परम सिद्धिहै व शिलोञ्छवृत्ति उत्तम जीविकाहै शाकका आहार अमृत के तुल्य है उपवास करना

ही परम तपहै ६१ सन्तोषही [illegible]सको महाभोगहै व किसीको एक कौड़ी देदेनाही महादानहै प[illegible]को माताके समान देखनाही परम धर्म्म व पद्रव्यको मिट्टी के [illegible]ले के समान जानना परमसंयम है ६२ परस्त्रीको सर्पकेसमान समझना यही मेरा सब यज्ञहै इससे हे गुणाकर! मैं सत्यही कहताहूँ इसे न ग्रहणकरूंगा ६३ क्योंकि कीचड़ में पैरधरकर फिर उसके धोने से दूरसे उसका न छूनाही श्रेष्ठहोता है जब उस शूद्रने ऐसा कहा तो हे नरश्रेष्ठ! आकाशसे पुष्पोंकी वर्षा हुई ६४ वह देवताओं की कीहुई पुष्पवृष्टि उसके शिरपर व सब अङ्गोंपरहुई देवताओंके नगारे बाजे अप्सरायें नाचनेलगीं ६५ गन्धर्व्वपत्नियों ने गाया व स्वर्ग से एक विमान भूमिपर आया उस पर चढ़ेहुये व अन्य देवताओंने उस शूद्रसेकहा कि इस विमानपर चढ़ो ६६ व सत्यलोक में चलकर इन्द्रकेसमान भोग भोगो व हे धार्म्मिक! तुम्हारे सुखभोग करने की संख्या नहीं है ६७ जब देवताओं ने ऐसाकहा तो शूद्र बोला कि कैसे ग्रंथिरहित इसको ज्ञान व चेष्टा व आपणहै ६८ उससे विदित होताहै कि तुम क्या श्रीहरिहो वा श्रीहर अथवा ब्रह्मा इन्द्र व बृहस्पतिहो कि हमारे छलने के लिये साक्षात् धर्म्महो यहांआयेहो ६९ जब उसने ऐसाकहा तो वह क्षपणरूपधारी बोला कि सुरकीकरके तुम्हाराधर्म्म जानने के लिये हम विष्णु यहां आये हैं ७० हे महामुने! अबसङ्कोच न करो विमानपर चढ़कर परिवारसहित स्वर्गकोजाओ हमारे प्रसादसे तुम्हारी सदा नवीन युवावस्था बनीरहेगी ७१ व हे महाप्राज्ञ! तुम अनन्त भोग पावोगे बस दिव्य आभूषणों से युक्त दिव्य वस्त्रों से शोभित ७२ अपने सब बन्धुओं समेत वह शूद्र एकाएकी स्वर्गको चलागया ॥

चौ० इमिद्विजवरमो लोभविहायी । स्वर्गगयो शूद्रक समुदायी ७३
तुलाधार तिमि धर्म्मधुरन्धर । सत्यधर्म्मनिष्ठित धार्म्मिकवर ॥
तासों देशान्तरकी वार्त्ता । जानतसकलकबहुँनहिंआर्त्ता ७४
तुलाधार समआन प्रतिष्ठित । नहिं सुरलोकहुमहँपरिनिष्ठित ॥
तासों तुमहूँ द्विजवर सङ्गा । सुरपुर जावहु सुभग अभङ्गा ७५
सर्व्वधर्म्म निष्ठित जो मानव । यहवृत्तान्त सुनिहिकरि मानव ॥

जन्म जन्म अर्ज्जित त्यहिपापा । क्षणमहँ नष्टहोहिंगे आपा ७६
एकबार जो पढ़िहि पढ़ाइहि । सर्व्वयज्ञ फल सो नरपाइहि ॥
सब लोगन के देखत विप्रा । गयहुस्वर्गकहँअतिशयक्षिप्रा ॥
भयहु देवपूजित सुरलोका । विगतविकारविगतसबशोका ७७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेशूद्रस्यालोभाख्यानं नामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

दो० चौवनयेंमहँ कह अहल्या सुरपति व्यभिचार ॥
गौतम शाप दियो दुहुन पुनि दोनों उद्धार १
रघुपति वचनतरी अहल्या देवी स्तुति शक्र ॥
करि सहस्र लोचन हुये यदपि रूपथो वक्र २

श्रीभगवान् नरोत्तम ब्राह्मणसे बोले कि अद्रोहककी महिमा भी लोकमें अति दुस्सह है जिसने कि एक शय्यापर प्राप्त स्त्री को ग्रहण न किया इससे उसने जानो सब लोगों को भी जीतलिया १ यह कर्म्म ज्ञानियों से भी दुस्साध्य है व ब्रह्मवादी मुनियों से भी दुस्साध्य है सुर असुर मनुष्यों के करने के योग्य नहीं फिर और कौन इसे करसक्ताहै २ अपने स्वभावही से विषम कामको जीतने के लिये कौन पुरुष समर्थ होसक्ताहै हे विप्र ! अद्रोहकको छोड़कर और कोई भी कामको नहीं जीतसक्ता इससे वही संसारभरके जीतनेवाला पुरुषहै अन्य कोई नहीं ३ देखो अहल्याके हरने से इन्द्र के अङ्गों में भगही भगहोगये फिर देवीकेप्रसाद से सहस्र भगाङ्ग के सहस्राक्ष होगये ४ यह वृत्तान्त सचराचर लोकमें विदितहै सब कोई जानता है यह सुनकर नरोत्तम विप्रने पूँछा कि हे प्रभो ! इन्द्रने अहल्याको कैसेहरा ५ व भगाङ्गत्वहोकर फिर सहस्राक्षत्व इन्द्र के कैसे हुई भगों के चिह्नहोकर उनके स्थानों में नेत्रों के चिह्न कैसेहोगये ६ यह दुश्श्रुत इन्द्रकी विकलता मैं तत्त्वसे सुनाचाहता हूँ श्रीभगवानूजी बोले कि यह पूर्व्वकालका वृत्तान्त है कि अपने अङ्गसे उत्पन्न अहल्यानाम कन्या ब्रह्माजी ने ७ गौतममुनिको सब लोकपालों के आगे

दी तब सब लोकपाल काम से व्याकुलहुये ८ परन्तु उनमें विशेष करके इन्द्रके हृदयमें तो मारे सम्मोहके बाणही सा स्थितहोगया सब लोकपालों को छोड़कर इससुन्दर वेषवती श्रेष्ठ अंगवाली स्त्री को ९ इस ब्राह्मण को यह रत्नभूत देदिया हाय २ अब हम क्याकरें यह मनमें चिन्तनाकरतेही थे जब गौतमजी के यहां अहल्या अपूर्व्वरूप से युक्त तो थीही यौवनयुक्त भी हुई तब १० फिर इन्द्रने माया से जाकर उसका शोभनरूप देखा तब फिर वे चिन्ताकरके गौतम के स्थानकोगये ११ जानेके पीछे जो वृत्तान्त हुआ उसे हमसे सुनो एक समय गौतममुनि पुष्कर तीर्थ को स्नानकरने को गये १२ व गृहमें उनकी पतिव्रता स्त्री गृहको झाड़ बहारकर घरकी वस्तु पात्रादि शोधन करनेलगी व फिर बलि वैश्वदेवादि करने के लिये सब वस्तु उसने इकट्ठी की १३ अग्नि कर्म्म करने के लिये इन्धन घृतादि इकट्ठेकिये इसी समय में उन महात्मा गौतमजीकारूप धारण करके इन्द्र उन मुनिकी पर्णकुटी में आनन्द से घुसआये वह अहल्या पतिव्रता अपने पतिको आयेहुये देखकर बड़ीश्रद्धा से १४ । १५ झटपट देवस्थानमें सब पूजनकी सामग्री धरनेपर उद्यतहुई तब कामबाण से पीड़ित मुनिका वेषधारण कियेहुये इन्द्र उसपतिव्रतासे बोले कि १६ हे वामे ! हमको चुम्बनादिक देओ क्योंकि हम कामके वशहैं तब वह लज्जितहोकर यह वचन बोली १७ कि हे नाथ ! यह तो देवकार्य्य करने का समय है इसको त्याग के आप ऐसा कहने के योग्य नहीं हैं हे मुने ! आप सब पुण्यों के समयों को जानते हैं क्योंकि धर्म्मज्ञहैं १८ यह मुहूर्त्त इस कर्म्म के योग्य नहीं है इससे इसमें ऐसा करना अयोग्यहै तब कामसे पीड़ित गौतमवेषधारी इन्द्र उसके सब सुन्दर अपूर्व्व अंग बनाय निकटसे देखकर और भी कामसे व्यथित होकर १९ बोले कि हे प्रिये ! इससमय अब इसवार्त्ता से कुछकाम नहीं है हम को काम पीड़ित करताहै चाहे करने के योग्यहो वा अयोग्यहो पति का वचन करनाही स्त्रीको योग्य है २० क्योंकि जो स्त्री निरन्तर उचित अनुचित जोहो अपनेपतिका वचन करती है वही पतिव्रता कहाती है व जो स्त्री अपनेपतिकी आज्ञाका उल्लङ्घन करती है उसमें

भी मैथुनके समय में विशेषकरके २१ उसकी पुण्य नष्टहोजाती है व वह दुर्गतिको जाती है तब अहल्या बोली कि हे मुने! देवताओं की सब वस्तु तो यहां विद्यमानहैं २२ न कि कोई और वस्तु बाकी रहगई है तो उसे भी लाऊँ नित्यकर्म्म करलीजिये फिर जो इच्छा होगी होगा तब उसपतिव्रता से मुनिवेषधारी इन्द्र बोले कि हमको आलिंगनादिदेओ २३ हमने भयछोड़कर जलसे इन सब वस्तुओं को सङ्कल्पकरके देवताओं को देदियाहै ऐसा कहकर उसको आलिंगन करके इन्द्र ने अच्छीतरह अपना मनोरथ पूराकरलिया २४ हे विप्र! इसी अवसरमें मुनिके हृदयमें कल्मष आया तो ध्यानलगाने से इन्द्रके वृत्तान्तको वहींसे जानलिया २५ व झटपट वहांसे आकर मुनि अपनेद्वारपर खड़ेहोगये तब इन्द्र मुनिको द्वारपर देखकर बि-डाल के शरीरमें प्रवेश करगये २६ व चलतेहुये मूतक के मार्ग में मार्ज्जारकारूप धारण करके बाहरको निकले तब मुनिबोले कि मा-र्ज्जारकारूप धारणकिये तू कौनहै २७ तब मारेभयके इन्द्रका मायावी रूप मार्ज्जारका छूटगया अपनारूप धारण करके हाथजोड़कर आगे खड़ेहोगये इन्द्रको आगे खड़े देखकर मुनिने बड़ाकोपकिया २८ व कहा जिससे तुमने भगकेलोभमें ऐसा अनुचित परस्त्रीगमन कर्म्म सहसा व छलसे कियाहै इससे तुम्हारे अंगों में उत्तम सहस्रभग होजावें २९ व हे पापिष्ठ! तेरा लिंग यहीं कटकर गिरपड़ेगा हे मूढ़! अब हमारे आगे से देवताओं के स्थान स्वर्ग को चलाजा ३० तुझे सहस्र भगों से चिह्नित सब मुनिलोग मनुष्य श्रेष्ठ सिद्ध व नागादि सब देखें ऐसाकहकर मुनिश्रेष्ठ रोदन करतीहुई उस प-तिव्रतासे ३१ बोले कि यह इस समय तेरा क्या दारुणकर्म्म आ-गयाहै ऐसाकहनेपर भयसे कांपतीहुई अहल्या अपने पतिसेबोली ३२ कि मैंने अज्ञानसे यह कर्म्मकिया है इससे आपक्षमाकरने के योग्य हैं गौतमजीने कहा कि हां तूनें अज्ञानहीसे ऐसा कर्म्मकिया है हम जानते हैं परन्तु अन्य पुरुषके सङ्ग भोगकराने से तू पाप युक्त व अपवित्रहोगई है ३३ इससे अस्थि चर्म्मसेयुक्त मांसरहित व नखरहित होकर अकेली बहुत कालतक यहांपड़ी रहेगी पुरुष व

स्त्रियांसब तुझे देखा करेंगी ३४ तब दुःखितहोकर अहल्याबोली कि इस शापका अन्तभी करदीजिये ऐसा कहनेपर करुणायुक्त होकर क्रोधरहित हो सजलनेत्र मुनि ३५ गौतमजी बोले कि महाराजाधिराज-दशरथ जीके पुत्र श्रीरामचन्द्र जी जोकि साक्षात् महाविष्णु रूप प्रकट होंगे अपनी स्त्री सीता व लक्ष्मणसमेत इसवन में आवेंगे ३६ तो दुःखित देहसूखी विनाशरीर की मार्ग में पड़ी हुई तुझको देखकर वे हँसतेहुये अपने गुरु वशिष्ठजी से कहेंगे ३७ कि हे ब्रह्मन्! यह सूखीहुई प्रतिमा अस्थिमयी किसकी है हे ब्रह्मन्! ऐसा रूप विपर्य्यय हमने पूर्व्वकाल में कभी नहीं देखा ३८ तब मनुष्यका रूप धारण किये महाविष्णु श्रीरामचन्द्रजीसे वशिष्ठमुनि सब वृत्तान्त जो पहिले भयाहै कहेंगे ३९ वशिष्ठ के वचन सुनकर वे धर्म्मात्मा रामचन्द्र जी फिर बोलेंगे कि इस बेचारी का तो कुछ भी दोष नहीं है दोष तो इन्द्रका है ४० जब रामचन्द्रजी ऐसाकहेंगे तब निन्दित रूपछोड़कर दिव्यरूप धारण करके फिर तू हमारे गृहको चलीआवेगी ४१ इसप्रकार अहल्याको शापदेकर गौतमजी तपकरने के लिये वनको चलेगये तब अहल्या उसी प्रकार का शुष्क रूप धारण करके वहीं मार्ग्ग में स्थित होगई ४२ व जब रामचन्द्रजी का अवतारहुआ तो उनके वचनसे फिर गौतमजी को प्राप्तहुई व गौतम उस अपनी पतिव्रतास्त्री के सङ्ग अबभी स्वर्ग्ग में टिकेहैं ४३ व इन्द्र भी सहस्रभग होजाने की लज्जासे लज्जित होकर बहुत दिनोंतक जलके भीतर स्थितरहे व उसी जलके भीतर स्थित होकर उन्हों ने देवी की इन्द्राक्षी संज्ञासे स्तुति की ४४ उस स्तोत्र से परितोषित देवी बहुत प्रसन्नहुई व वहां आकर इन्द्र से बोलीं कि हमसे जो चाहो वरमांगो ४५ तब शत्रुओं के पुर जीतने वाले इन्द्र देवी से यह बोले कि हे देवि! तुम्हारे प्रसाद से हमारी यह मुनिकेशापसे उत्पन्न कुरूपता ४६ नष्टहोजाय व हम फिर प्रथमकी नाईं देवराजता को प्राप्त होजायँ तब देवी इन्द्रसे बोलीं कि मुनिके शापसे जो विपत्ति तुमको हुई है ४७ हे सुरेश्वर! उसे ब्रह्मादि देवता भी नहींमिटासक्ते इससे हमभी नहींमिटासक्तीं किन्तु हम इस विषय

में ऐसी बुद्धि करेंगी कि लोग न जानसकेंगे कि इन्द्र के सहस्रभग हैं ४८ सब योनियों के भीतर तुम्हारे सहस्र दृष्टि होजायँगी उससे तुम देखतेरहोगे व सहस्राक्ष तुम्हारा नामहोगा बस जाकर देवताओं का राज्य भोगतेरहोगे ४९ व हमारे वरदान से मेषांड तुम्हारा लिंग होगा ॥

चौ० इमिकहिसोजगजननिभवानी । अन्तर्द्धान भई त्यहिठानी ॥
इन्द्र अबहुँ देवी वर पाई । देवलोक पूजित द्विजराई ५०
भये कामवश इन्द्रहु केरी । भै दुर्द्दशा तनिक नहिं देरी ॥
अद्रोहक न कामवश भयऊ । यासों परमधर्म्म तनु हयऊ ५१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेऽहल्याहरणंनाम चतुष्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

दो० पचपनयें महँ कामवश विधि मनसिज च्युति पाय ॥
शान्तनुपालि अमोघिका तीर्थ प्रकटि यह गाय १

ब्रह्माजी नारदजीसे बोले कि अन्य कामयुक्तकी कथा कहते हैं सुनो पूर्वहीं गङ्गाजीके किनारेपर एक परमहंस ब्राह्मण रहताथा १ वह सहस्रों को उपदेश करताथा व सब विप्रोंमें श्रेष्ठथा सबको शान्त करताथा एक दण्ड धारण किये अचल पृथ्वीपर वास करता जैसे कि कच्छप के ऊपर पृथ्वी अचल स्थित है २ वह ब्राह्मण अकेला एक देवमन्दिर में रहताथा एक दिन सन्ध्याके समय अपने पतिके गृह से दूसरे घरको जानेके लिये ३ एक रूपशालिनी युवती नारी अकस्मात् निकली उसे देखकर वह भगवान् बिप्र काम के भय से पीड़ित हुआ ४ और उसस्त्री को घर के भीतर करके रात्रि में उस को प्रसन्न करना चाहाथा उस स्त्री ने देवागार के किवाड़ बन्दकर लिया ५ कभी ब्राह्मणको द्वारसे भीतर न आनेदिया इसतरहसे समाधि लगाये रात्रि व्यतीत करके रोनेलगा ६ व उस श्रेष्ठ बैठकवाली स्त्री की चिन्ता करतारहा कि क्याकहूं दरवाजे पर मैं क्याकरूं यह विचार करके उसको उस द्वारपर से पुकारा कि हे प्रिये ! हमको

किंवाड़ खोलदे ७ हे कांते ! हम तेरे वशीभूत तेरे पति हैं पुकारते हैं उसने आकर किवाड़ खोलकर देखा तो वह वृद्धब्राह्मण खड़ाथा व काम की लालसा उसे अपने वशीभूत कियेथी ८ वह विनीतहोकर धीरेसे ब्राह्मण से बोली कि हे तात! तुम ऐसी बात फिर कभी मुझसे कहने के योग्य नहींहो तब वह भगवान्विप्र बोला कि मेरे पास बहुत सा धनहै ९ हे कल्याणि ! तुझको देऊँगा अब किवाड़ अच्छीतरह खोलदे ब्राह्मणसे वह फिर बोली कि तुम तो धर्म्म से मेरे पिता के समानहो १० हे धार्म्मिक ! अपनी पुत्री पराई स्त्री मेरे सङ्ग भोग करने की इच्छा न करो क्योंकि जो सुविचार में दृढ़ होता है वह मन से भी विना विचार का कोई कार्य्य नहीं करता ११ हाथों से रेलकर ब्राह्मण उस किवाड़ के भीतर घुसनेलगा कि उसने किवाड़ बन्द करलिया ब्राह्मणदेव का शिर उसीके बीच में दबगया फिर शिर खींचने से न निकला यहांतक कि वृद्ध कामातुर विप्र मृतक होगया प्रातस्समय उसके किङ्कर जो ब्रह्मचारीलोगथे आये १२ । १३ उस अपने स्वामीको अद्भुत शिर कटेहुये किवाड़में दबेहुये देखकर वहींपर खड़ीहुई उस स्त्री से उनलोगोंने पूँछा कि हे सुन्दरि ! इनको कैसे तुमने मारडाला कहो तो १४ तब वह सब वृत्तान्त कहकर अपने वाञ्छित स्थानको चलीगई तब लोगोंने कहा कि भाई कामकी महिमा मनुष्योंको दुर्निवारहै १५ सब सुर असुर मनुष्य व अन्य जंतु मृग पशु पक्षी सब काम के वशीभूत हैं देखो अमोघाको देखकर विष्णु भगवान् कहते हैं कि लोकके पितामह ब्रह्माजी कामके वशीभूत होगये थे १६ व वहीं रुधिर से उत्पन्न अपना बीजपातित करगये थे व वहीं लोहित्या नाम नदी उत्पन्न होगई जोकि सब लोगों को अबभी पवित्र करती है १७ जिसकी सेवाकरके पुरुष सनातन ब्रह्म लोकको जाता है नरोत्तम ब्राह्मण श्रीहरिसे पूँछनेलगा कि ब्रह्माजी को कैसे मोह हुआ व अमोघा नाम वराङ्गना कौनथी १८ व उसके स्थानपर जो लौहित्य नाम तीर्थराज उत्पन्न हुआ उसकी उत्पत्ति निश्चय से मैं सुना चाहताहूँ श्रीभगवान् बोले कि ब्रह्माके समान प्रकाशित सब देवताओंसे आराधना करनेके योग्य १९ एक शान्त-

नुमुनि थे उनकी पत्नी बड़ी पतिव्रताथी अमोघा उसका नामथा रूप व यौवन दोनों से युक्तथी २० उसके पतिके खोजमें एकदिन ब्रह्माजी उसके गृहको गये उस समय मुनिश्रेष्ठ शान्तनु कहीं पुष्पादिक लेने गये थे २१ ब्रह्माजी को देखकर उसने अर्घ्यपाद्याचमनीयादि के लिये जलादि दिया व दूरही से प्रणामकरके गृह के भीतर को वह चलीगई २२ पर उस अनिन्द्यअंगवाली युवतीको देखकर ब्रह्माजी कामके वशीभूत होगये थे इसीसे वह अपने गृहके भीतर एकान्तमें चलीगई थी ब्रह्माजी ने अपनेको एकाग्रकरके उस स्त्रीके लिये बड़ी चिन्तनाकी २३ तब जो खट्वा ब्रह्माजीके बैठनेके लिये उसने आसन दियाथा उसपर उनका बीजपतित होगया व ब्रह्माजी तुरन्त कामसे परिपीड़ित होकर वहांसे भयभीत होकर चलेगये २४ इतनेमें शान्तनु भी अपने गृहमें आये व पीठामें वीर्य्यको देखकर पतिव्रता अमोघासे बोले कि यहां कौन पुरुष आयाहै २५ तो वह पतिव्रता पतिसे बोली कि यहां ब्रह्माजी आयेथे हे नाथ! तुमको ढूँढ़नेके लिये आयेथे मैंने बैठने के लिये खट्वादीथी २६ यहांपर वीर्यपातित होनेका कारण अब तुम अपने तपोबल से जानने के योग्यहो तब ध्यान करने से उस ब्राह्मण ने जानलिया २७ व अपनी स्त्रीसे उसने कहा कि हे पतिव्रते! हमारी आज्ञा से यह ब्रह्माजीका वीर्य धारणकरो इससे सब लोकोंको पावन करानेवाला तुम्हारे पुत्र उत्पन्नहोगा २८ उससे हमारा तुम्हारा अभीष्ट कल्याण सब लोकों में फलितहोगा व यहां वहां सब कहीं आनन्द देगा तब सन्तान होनेके कारण अपने पतिकी आज्ञा को संभव से अङ्गीकार करके २९ उस महाभाग्यवती ने परमात्मा श्रीब्रह्माजी का वीर्य्य उठाकर पान करलिया वह उदर में जाकर घूमनेलगा एक जलके आवर्त्तके समान घूमा व महारौद्ररूप हुआ ३० उस बीजको वह न सहसकी इससे शान्तनुसे बोली कि हे नाथ! इस समय मैं इस गर्भको नहीं धारण करसक्ती ३१ हे तत्त्वज्ञ! अब मैं क्या करूं मेरे तो प्राणही जाते हैं हे महाभाग! जहां आज्ञादीजिये वहां इस गर्भको छोड़ूँ ३२ पति की आज्ञापाकर उसने जलरूप तेजोमय शुद्धधर्म्म प्रतिष्ठित गर्भ को एक युगन्धरनाम स्थानपर

छोड़दिया ३३ उसके मध्यमें किरीट शिरपर धारणकिये नीलवस्त्र ओढ़े एक शुद्धवर्णका पुरुष रत्नगण अङ्गों में धारण कियेहुये अति प्रकाशित होनेके कारण बड़े दुःखसे देखने के योग्य दिखाई दिया ३४ तब देवताओंने स्वर्गसे पुष्पोंकी वर्षा करदी व कहा कि यह सब तीर्थोंमें तीर्थराजके नामसे प्रसिद्ध होकर उत्पन्न हुआहै ३५ विष्णु भगवान् बोले कि जब हम भृगु के वंशमें राम इस नामसे प्रसिद्ध उत्पन्न हुये व सैन्य बल वाहनसहित पिता के मारनेवाले ३६ समरमें भयभीत क्षत्रियोंको भी किसी कारणसे मारडाला इससे पाप युक्त होगये इससे ब्रह्महत्याके समान घोरपाप हमारे गेह में पैठ गया ३७ हाथोंसे भल२ फिर हम फरशाको चलाया चाहते थे पर हाथ नहीं फैलते थे तब आकाशवाणी हुई कि हे राम ! हमारा वचन करो ३८ जिस तीर्थमें धोनेसे तुम्हारा कुठार निर्मलहोजावे वहां सब क्षत्रियों के मारनेका तुम्हारा पाप नष्टहोगा ३९ व फिर अन्यलोगों काभी पाप वहां स्नानकरने से नष्टहोगा इससे सब जनोंके हितके वास्ते हे मानद ! शीघ्र बड़े २ सुन्दर बड़े तीर्थोंको जाओ ४० उन महातीर्थोंके बीचमें जो छोटा स्थानभी तुम्हारे इस फरशाको शुद्ध करै तो तुम उसको सब तीर्थोंमें मुक्तिदायक तीर्थ जानना ४१ यह सुनकर परशुराम तीर्थाटन करने को चलेगये गङ्गा सरस्वती शुभ्रा कावेरी सरयू ४२ गोदावरी यमुना कद्रू वसुदा व अन्य पुण्यप्रद रम्य गौरी कुण्डादिकों में जो पूर्वमें सुन्दर स्थित हैं जाकर पवन वेगसे उन वीरने सर्व्वत्र स्नान किया व अपने कुठारको धोया परंतु वह निर्म्मल न हुआ ४३ । ४४ तब रम्य गिरिगुहा में गये महारण्योंमें व महापर्व्वतों पर गये व अन्य पर्व्वतों के शृङ्गोंपर जो दुर्लभ हैं गये ४५ व सबों में धोया परन्तु उनका कुठार निर्म्मल न हुआ तब शत्रुओं के पुरों को जीतनेवाले परशुरामजी बहुत विषादित हुये ४६ विविधप्रकार से हाहाकरके एकठिकाने पृथ्वीपर बैठगये व बड़ी चिन्ता करनेलगे तब फिर आकाशवाणी हुई ४७ कि हे देवेश! यहां से पूर्व्वदिशा में पर्व्वतकी कन्दरामें तीर्थ है यह सुनकर नरशार्दूल परशुरामजी ने वहां जाकर उस कुण्ड को देखा ४८ जिसमें

दक्षिणावर्त्त श्वेतपाप हरनेवाला सुन्दर जल घूमरहा था उस जलके स्पर्शमात्र से उनका कुठार शुद्धहोगया ४९ तब आनन्दित होकर परशुरामजी ने भी उसमें स्नानकिया तब सबके मारनेवाली बुद्धि उनकी जातीरही व आत्मा शुद्धहोगया ५० व बहुत दिनोंतक वहां रहकर फिर रामजी ने उस तीर्थको प्रसन्न किया व उसको वहीं अचलकरके बड़ेवेग से बहतेहुये उसे वहीं स्थापितकरके आप क्षारसमुद्र के उत्तर तटपर को चलेगये सो यह तीर्थवर भूतल पर साक्षात् ब्रह्माजी का कियाहुआ है ५१ । ५२ इससे सुखद स्वर्गद शुद्ध व मुक्तिमार्ग सदा दिखानेवाला है इस प्रकार कामका प्रभाव दुर्व्वार व दुस्सह जानो ५३ काम उत्पन्न होनेपर पुण्य अपुण्य के प्रयोग करडालने पर बड़ापाप होजाता है ब्रह्माजी के हृदय से उत्पन्न वह तीर्थ लोहित्या के नामसे प्रसिद्ध हुआ ५४ शान्तनुजी के क्षेत्रसे उत्पन्न होने से अमोघाके गर्भसे उत्पन्न होनेसे ब्रह्माजीके वीर्य्य के पतित होनेसे शान्तनुमुनि के अमत्सर से ५५ व अमोघा के पातिव्रता धर्म्म से वह सब तीर्थों में श्रेष्ठहोगया ॥

चौ० पुण्याख्यान सुपावनकारी । जोयहिपढ़िहिनित्यअधिकारी ५६
अथवासुनिहिमहीतलमाहीं । मुक्तिमार्ग जाइहिशकनाहीं ५७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपंचाख्याने लौहित्योत्पत्तिर्नामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

दो० छप्पनयेंमहँ कामवश शिव हरिके वृत्तान्त ॥
पुनि मूकादिक स्वर्ग्गगति भाषी सुलभनितान्त १

श्रीभगवान्‌जी नरोत्तम विप्रसे बोले कि पूर्व्वकाल में गन्धर्व्व किन्नर व मनुष्यों की रूपशालिनी युवती स्त्रियों को देखकर शङ्करजी भी कामके वशीभूतहुये १ मन्त्रसे उन स्त्रियों को आकाश में बड़ी दूर खींचकर तपकरने के बहानेसे उन सबोंमें मनलगाकर २ अति रम्यकुटी बनाकर उन सबोंके साथ महेश्वरजी काम से निरादरित होकर क्रीड़ा करनेलगे ३ इसी अवसर में गौरीजी के मनमें कुछ

भ्रान्तिहुई तो उन्होंने ध्यानयोग से जगदीश्वरजीको स्त्रियों के सङ्ग क्रीड़ा करतेहुये देखा ४ व देखतेही रोषके वशीभूत हुई तब अपना क्षेमङ्करी पक्षिणीका रूप धारणकरके प्रवेशकिया ५ आकाश में जाकर एकान्त में खड़ीहुई व देखा तो स्त्रियों के बीच में कामके समान सुन्दर पुरुषोत्तम रूप धारण कियेहुये स्त्रियोंको आलिङ्गनकिये क्रीड़ा कररहे हैं व रागसे पीड़ित होरहे हैं ६ । ७ व बार बार उनका आलिङ्गन करते थे व अनङ्ग से पीड़ित महादेवजी को सबस्त्रियां बार बार चूँबतीथीं इस वृत्तको देखकर वह क्षेमङ्करी आगे टूटपड़ी व उन स्त्रियोंके बाल खींचलिये नेत्रोंमें चरणोंका प्रहारकिया ८ व लज्जाके मारे पीड़ित होकर महादेवजी ने पीछेको मुखकरलिया केशपकड़कर घसीटकर क्षेमङ्करी ने सबों को आकाश से पृथ्वीपर पटकदिया ९ वे सब स्त्रियां पृथ्वीपर पहुँचतेही विरूपमुखी होगईं व पार्व्वतीजी के शापसे भस्मीभूत अङ्गहोकर वनवासी कालभिल्ल म्लेच्छों के वशीभूत होगईं १० वेही चाण्डाल स्त्रियां बार बार पतिहीन वेश्यां इस लोकमें होनेलगीं यानी पति नहीं हैं व पतियों से संयुक्तहैं व अबभी उमाजी के शापको सब भोग कररहीहैं ११ तब पार्व्वतीजीने अपने सैकड़ों रूप धारणकरके महादेवजी के पासगईं हे द्विज ! निरन्तर कामका ऐसा प्रभाव जानिये १२ फिर बहुत दिनोंके पीछे पार्व्वती केसाथ कैलासपर्व्वत पर को शिवजी गये इससे जो मनुष्य क्षेमङ्करी पक्षिणी को देखकर प्रणाम करते हैं १३ उनके धन ऋद्धि विभव इसलोक व परलोक में बढ़ते हैं क्षेमङ्करी को देखतेही यह मंत्रपढ़कर प्रणाम करना चाहिये ॥

दो० कुंकुमरञ्जित गाततुम कुन्दइन्दु सितमूखि १४
सबमङ्गलप्रददेवि क्षेमङ्करि नमतअदूखि ॥

वह योगिनी क्षेमङ्करी चाहे सम्मुखहो वा विमुख दिखाईदे १५ पर उसे देखतेही जो प्रणाम नहींकरता युद्धमें उसकी हार होती है व नमस्कार करने से राजद्वार व विद्यामें जीत होती है १६ कामका ऐसा माहात्म्य है कि महादेवभी मोहके वशीभूत हुये व देवता असुरों के ऊपर क्षमाकरने से इन सबोंके स्वामीहुये १७ व इस अद्रोहक के

समान तो लोकमें कोई नहीं है न हुआहै न होगा जिसने कि रूप यौवनयुक्त स्त्रीको अपनी शय्यापर रात्रि दिन सुलाया परन्तु कामको ऐसा जीता कि उसके संग मैथुन न किया १८ उसका परित्याग करनेही से सुरासुरों को दुर्ल्लभलोक उसने सिद्ध करलिया ऐसेही यह वैष्णव मुख्य भी सुरासुरगणों से पूजाकरने के योग्य है १९ जो कि भक्तिसे प्रथम हमारा भोग लगाता है जो शेष रहता है वही आप खाताहै इसप्रकारके अभ्यासकी धीरतासे बहुत दिनोंतक सुखकिया २० जब इस वैष्णवकी भार्य्याआई व इसके पास संगम के लिये भेजीगई तो प्रथम विष्णुको अर्प्पण करके शेष पदात्थ भोगना चाहिये इस विचार से इसने अपनी स्त्री आनन्द से हमको देडाली बारह वर्षतक हमारे भोग करनेके लिये सङ्कल्प करदिया २१ इसीसे इसके गृहमें घर रखानेके लिये हम सदा टिके रहते हैं व सूखे आमलकी फल हमको सदा अर्प्पण कियाकरता है २२ इससे इस को हमने सब वैष्णवोंका वैष्णव बनादियाहै हेविप्र! जे देवता व मनुष्य पहिले हमारे भक्त रहे हैं व हमारे मार्गमें चलनेवाले रहे हैं २३ अपनी स्त्री आज तक किसीने किसी देवको नहीं देदी इसनेही हमको दीहै जिससे किसीने इस कार्य्य को नहीं करपाया व हमने कियाहै इससे हमने इसका मनोहर वैष्णवसर्व्वस्व नाम रक्खा है २४ इसके गृहमें हम टिके रहते हैं मुहूर्त्तमात्र नहींजाते इससे ये हमारे भक्त हैं हे विप्र! उनको हम सुलभ हैं २५ उनको हम अपनी पदवी शीघ्र देते हैं हे विप्र! हमारी व हमारे भक्तकी सुजनता व सुभोज्यता समान रहती है २६ इसीसे हमारी इस वैष्णवकी सायुज्यता व सखित्व हे भूदेव! तुम देखते हो कि अन्तर नहीं है इसके पीछे मूकादिक पाँचो श्री हरिको प्राप्तहुये २७ जब स्वर्गजाने की इच्छा उनलोगोंको हुई तो अपनी स्त्री पुत्र भृत्यसमेत चलेगये व उनलोगों के गृहोंके समीप जो छपकी मूषकीआदि जन्तु रहते थे २८ व नानाप्रकार के कीट पतङ्गादि रहते थे वे सब देवरूपी होकर उनलोगोंके संग वैकुण्ठको चलेगये व्याजसी सूतादिकों से बोले कि जब वे सब श्रीहरिपुरको चले तो सब सिद्ध महर्षियों ने २९ अच्छा अच्छा कहकर पुष्पोंकी

वर्षा उन सबोंके ऊपर की व देवताओं के नगारे विमानों पर तथा वनों में बाजे ३० व अपने अपने रथों पर चढ़ वैकुण्ठ की मार्ग से स्वर्ग को गये यह अद्भुत देखकर ब्राह्मण श्रीजनार्दनजी से बोला ३१ कि हे मधुसूदन ! मुझको भी कुछ उपदेश दीजिये श्री भगवान्जी बोले कि हे तात ! शोकसे व्याकुल मनवाले अपने पिता माताके समीप तुम जाओ ३२ व यत्नसे उनकी आराधना सेवाकरके बहुत शीघ्र हमारे स्थानको आओगे पिता माता के समान देवता देवलोक में नहीं हैं ३३ क्योंकि उन्हीं ने इस देहको देकर फिर बड़े यत्नसे लड़कपन में पालाहै अज्ञान दोषसहित देहको बढ़ाया व पुष्ट कियाहै ३४ इससे माता पिताके समान और कोई पूज्य व मान्य चराचर तीनों लोकोंमें नहीं है इतना नरोत्तम ब्राह्मण से कहकर सब देवता सपरिवार उन मूकादि पांचोंको संगलेकर माधव जीको स्तुति करतेहुये हरिमन्दिर को चलेगये जिस लोकमें विश्वकर्माकी बनाईहुई अतिरम्य रत्नोंसेयुक्त इष्टपदार्थों से सम्पूर्ण कल्प वृक्षादिकों से युक्त सुवर्ण के गृहोंसे युक्त उनके बीचमें नानावर्ण के रत्नोंसे चित्रविचित्र ३५ । ३७ हीरा व वैदूर्य्यमणियों की सिढ़ियों से शोभित गङ्गाके जलसे संयुत गीत वाद्यादिकों से सम्पूर्ण सब खावांआदि दुर्गमताओं से आकुल ३८ बहुत कोकिलाओंके आलापों से युक्त सिद्ध गन्धर्व्वों से सेवित रूप अवस्थादि युक्त सुजनों से पूर्ण आकाशको आक्रमण करतीहुई वैकुण्ठपुरी है ३९ जिसमें स्थित लोग फिर कभी वहांसे पतित नहींहोते उसमें सब पांचोंको लेकर श्रीहरि जाकर विराजनेलगे व नरोत्तमब्राह्मण भी अपने गृहमें जाकर बड़े प्रयत्नों से अपने पिता माताकी आराधना करके ४० थोड़े ही काल में कुटुम्बसहित जाकर श्रीहरिमें लीनहोगया ॥

चौ० पञ्चाख्यानपुण्ययहगावा । सोसब मुनिवर तुम्हेंसुनावा ४१
जो यहि पढ़त सुनतहै प्राणी । तासु न दुर्गति मृषा न वाणी ॥
द्विजहत्यादिक पाप समूहा । ताहि न लागत कबहुँ अनूहा ४२
कोटि धेनु दीन्हें फल जोई । लहत सुजन पावत पढ़िसोई ॥
पञ्चाख्यान श्रवण सों मानव । सबसुख पावत अरु दुखहानव ४३

नित्य देवसरि पुष्कर माहीं । किये सनान लहतफलआहीं ॥
जो फल पावत सो यहिकेरे । एक बार सुनवे से हेरे ४४
दुष्ट स्वप्न क्षणमहँ क्षयहोहीं । रोग नाश पुनि होत समोहीं ॥
श्री आरोग्य धनादिक जोई । पढ़त पुरुष पावत नहिंगोई ४५
सकल मनोरथ पावत नीके । जब ज्यहिकहँ निजमनसोंठीके ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपंचाख्यानं नामषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

दो० सत्तावनयें महँ कह्यो वापी कूप तड़ाग ॥
बनवावन माहात्म्यसब लखहुसहित अनुराग १

यह वृत्तान्त सुनकर ब्राह्मणों ने व्यासमुनि से पूँछा कि हे मुनि शार्दूल ! कीर्त्ति धर्म्म अर्थ व अन्य सब श्रेष्ठपदार्थ जैसे लोगोंको मिलते हैं यदि हमलोगोंके ऊपर अनुग्रहहो तो हमलोगोंसे कहो १ व्यासमुनि बोले कि जिस पुरुष के खुदायेहुये खातके जलसे एक मासतक गौवें तृप्तहोती हैं एकमास के सौगुने दिनोंतक पवित्रहोकर वह प्राणी देवताओंसे पूजितहोता है २ छोटीतलैयाओं के खुदाने से विशेषकरके पुरुष पवित्र होते हैं जैसे कि यज्ञकर्म्म करने से पवित्र होतेहैं व जो जलदान करने तथा सब अन्नदान करनेसे फल होताहै उसे सुनो ३ जो कोई निरन्तर वर्ष दिन तक जलदान करता है वह एक कल्प भरतक स्वर्ग के सुख भोगता है ४ व जिसके खुदायेहुये तड़ागादि खातोंमें मेघ जितने बूँद बरसाते हैं उतने सहस्रवर्ष तक वह मनुष्य दिव्यलोकमें बसकर सुख भोगताहै ५ जलदान व अन्न के पाकसे मनुष्य प्रसन्नहोताहै व विना अन्नजलके प्राणोंकी धारणा नहीं होसक्ती ६ पितरों का तर्प्पण विना जलके नहीं होता न शौच हो न रूप शुद्धहो न विना जलके अङ्गोंकी दुर्गन्धिका नाश होता है जितने बीज बोयेजाते हैं सब जलहीमें रहते हैं व जलहीके अधीन होते हैं ७ वस्त्रोंका धोना व पात्रों का शुद्धकरना जलही से होता है वस विना जलके कोई भी कार्य्य नहीं होसक्ता इससे जल पवित्रहै ८

इससे सब प्रयत्नों से बावली कूप तड़ागादिक सब यत्नों से व सब धनोंसे अवश्य कराना चाहिये ९ व जो निर्ज्जलदेशमें तड़ाग कूपादिजलाशय बनवाताहै जितने दिनोंतक उसका जलाशय बनारहता है प्रत्येक दिनके समान कल्पोंतक स्वर्गलोकमें बनवानेवाला बसता है १० व जब वह प्राणी कभी समय बीत जानेपर स्वर्ग्ग से पतित होताहै तो पृथ्वीपर वेदवेदाङ्गों के अर्थोंका पारगन्ता ब्राह्मण होता है व परमधर्म्मात्मा होता है इससे सब लोगों का बन्धु होता है फिर वह तपकरके संसार से मुक्त होजाता है क्योंकि विना ब्राह्मण के शरीरको पाये कोई मोक्षका अधिकारी नहीं होता व अन्य जाति वाला जब तड़ागादि खुदाता है तो स्वर्ग्गादि सुख भोग कर आठ जन्मतक ब्राह्मण शरीर पाताहै तब मुक्तहोताहै व जो आकर किसी जातिका तड़ागादि खुदानेवाला क्षत्रिय की जाति में उत्पन्न होताहै तो पृथ्वीमण्डल भरका चक्रवर्त्ती महाराजाधिराज होताहै ११।१२ यदि वैश्य होनाचाहताहै तो जन्म २ तक वैश्यहोकर प्रिय अक्षय धन पाता है व शूद्र अन्त्यजादिक जब तड़ागादि खुदवाते हैं तो वे भी स्वर्ग्गवास बहुत दिनोंतक पाते हैं १३ जो पुरुष बहुत नहीं चार हाथ के गिर्द में कूप खुदाता है जिससे सब जनोंका उपकार होता है वह पुरुष एक कल्पतक स्वर्ग्ग में वास करता है १४ जो उसके दूने आठ हाथ के गिर्द में कूपादि खुदवाताहै वह उसका दूना फल पाता है व चौगुना सोलह हाथ के गिर्द में कूप खुदवाने से सौगुना फल पाता व बीस हाथ की लम्बी चौड़ी पुष्करिणी जो बनवाताहै १५ वह विष्णुलोक में जाकर दिव्य भोग भोगता है जब जन्म लेनेकी इच्छा करता है तो भूतलपर आकर बड़ाधनी व समर्थ पुरुष सरस्वतीका पति राजा होताहै १६ ऐसेही चालीस साठ अस्सी हाथ की लम्बी चौड़ी पुष्करिणी के खुदवाने से दूना तिगुना चौगुना फल पाता है व जो बड़ा विस्तीर्ण सहस्र हाथका लम्बा चौड़ा खात खुदवाता है वह स्वर्ग्ग से पतितही नहीं होता १७ वहां सहस्रोंवर्ष तक देवताओं से पूजित होताहै व जितने जन्तु किसी के तड़ागादि में रहते हैं वा जितने जल पीते हैं १८ उतनेही उसके इस जन्म में

उसके पीछे चलनेवाले किङ्कर मिलते हैं उसके गृह राज्य पुर देश में प्रजा बसती है १९ व नानाप्रकारके सुख जब तक स्वर्ग में रहता है भोगता है इस लोकमें जन्म लेनेपर महिषी धेनु हथिनी आदि सहस्रों पशु व नानाप्रकारका और भी धन उसको मिलता है २० उपदेश करनेवाला धन लगानेवाला कर्त्ता भूमि देनेवाला सहाय करनेवाला खुदाने के लिये अपने फावड़ादि यन्त्र देनेवाला व मँजूरी से अधिक कार्य्य करनेवाला ये ६ स्वर्गगामी होते हैं व जितने पक्षी किसी के खुदायें हुये खातमें जल पीते हैं उतने देवताओं के सौ वर्ष तक वह प्राणी स्वर्ग में वास करता है २१ जिसके खातमें वनका शूकर व भैंसे षट्मासतक पानी पीते हैं तो कर्त्ता सहस्रवर्षतक स्वर्ग में बसता है व जिसके खुदवाये तड़ागादि में देवी का रूप धारण करके कोई वनकी हथिनी स्नान करती पानी पीती है लाखवर्षतक उसका कर्त्ता स्वर्ग में बसता है २२ कोटिवर्ष तक तो तड़ागादि खुदवाने का उपदेश करनेवाला स्वर्ग में बसताहै व खुदवानेवाला तो अक्षयस्वर्गवास पाता है पूर्व्वसमयमें एक धनी के पुत्रने बड़ा भारी तड़ाग २३ दश सहस्र रुपये खर्च करके खुदवाया था व बहुतसा परिश्रम प्राणबल धनादिकके द्वारा किया था यह तड़ाग सब जीवों के उपकारके लिये भक्ति से खुदवाया जल उसका बड़ा शुद्धथा २४ पर कुछ काल में उसके खुदवानेवाला धनहीन होगया तब कोई धनी अपने वास्ते उसे मोल लेने में उद्यत हुआ २५ इस बातको सुनकर धनी ने विचारकरके कहा कि हमारा व्यवहार सुनो इसके कारणसे हम दशसहस्र मुद्रादेंगे २६ परन्तु तुमने जो पुण्य इस पुष्करिणी के खुदवाने से पाई है वह हमको देदेवो जिस से वह पुष्करिणी अब हमारी होजाय इसतरह से वह शक्तिसे मूल्य देकर उसको अपनी करने में उद्यतहुआ २७ तब उसने उस धनवान् से कहा कि हमारी पुष्करिणी की पुण्य तो प्रतिदिन दशसहस्र मुद्रादानकी होती है यह सब विद्वान् लोग कहते हैं फिर तुमको कैसे दश सहस्रपर उसकोदेदें २८ इस निर्ज्जल देश में हमने यह खात खुदवाया था इसमें यथेष्ट सब स्नान पानादि कर्म्म करते हैं २९ इस

से हे तात! एकदिन का फल दशसहस्र मुद्रादेनेसे तुमकोदेंगे तब वह धनवान् हँसा व उसके सब सभासद् लोगभी हँसे ३० तब लज्जा से पीड़ित होकर वह खात खुदवानेवाला फिर उससे बोला कि हम तो सत्यही कहते हैं कि एकदिनका फल दशसहस्र मुद्राका होताहै पर अब धर्म्म से हमारी तुम्हारी परीक्षा होजावे ३१ तब वह धनवान् बड़े घमण्डसे बोला कि अच्छा हे पितः! हमारा वचनसुनो हम दशसहस्र मुद्रा तुमको देके एक पत्थर मँगवाके ३२ तुम्हारी पुष्करिणी में फेंकेंगे जो हमारा पत्थर जलमें यथायोग डूबजायगा व फिर निकल आवेगा व फिर डूबजायगा पुनः न निकलेगा ३३ तो हमारे दशसहस्र जानोगये व यदि डूबकर पत्थर उतराआवे फिर न डूबे तो तुम्हारी पुष्करिणी आज से हमारी होजायगी व दशसहस्र मुद्रा तुमको देंगे उसने कहा अच्छा बस दशसहस्र मुद्रा उस धनीसे लेकर वह पुष्करिणीवाला अपने गृहको चला ३४ व सब साक्षियों के आगे उसने दशसहस्र का एकप्रस्तर उस पुष्करिणी में फेंका इस वृत्तान्त को देवता असुर मनुष्य सबों ने देखा ३५ तब धर्म्मसाक्षी ने धर्म्म तुलापर धरके दोनों को तौला पुष्करिणी का जल और दशसहस्र मुद्राका दान ३६ समान न हुआ किन्तु एकदिन का पुष्करिणी का जल दशसहस्र मुद्रादान के फलसे अधिक हुआ तब उस धनी के मन में बड़ा दुःखहुआ उसके दूसरे दिन ३७ धनीका फेंकाहुआ पत्थर ऊपर तैरआया व फिर डूबगया व उस जलके ऊपर टापूकी तरह एक और पर्व्वत तैरनेलगा तब लोगोंने बड़ा कोलाहल किया ३८ वह अद्भुतबात सुनकर पुष्करिणी खुदवानेवाला व वह महाजन दोनों आनन्दित होकर आये उसने पर्व्वत को उतराते हुये देखकर कहा देखो हमारे दशसहस्र उतराआये ३९ तब खातके स्वामीने पर्वत निकाल कर जलसे बाहर दूर फेंकदिया व कहा कि वह पत्थर तो तुम्हारा डूब गया बस धनी अपनासा मुख कियेहुये चलागया व खात खुदवाने वाला जबतक इस लोकमें रहा उन दशसहस्रमुद्राओंसे सुख भोगता रहा अन्तमें सपरिवार स्वर्ग के सुख भोगने को चलागया इससे जो कोई अपने गोत्रवालों के व माता के गोत्रवालों के वा राजा व सुहृदों

के ४०।४१ सखाओं के वा उपकार करनेवालों के वा अन्य जनों के उपकारके लिये तड़ागादि कोई खात खुदवाताहै अक्षयफल पाताहै व जो तपस्वियों के लिये वा अनाथोंकेलिये व ब्राह्मणों के लिये तड़ागादि बनवादेताहै वह तो विशेष फल पाताहै ४२ इनलोगोंके लिये जलाशय बनवाकर अक्षय स्वर्ग फल पाता है इससे हे ब्राह्मणो! अपनी शक्तिके अनुसार जो खातादिक करेगा ४३ उसके सब पाप क्षय होजायँगे व पुण्यसे मोक्षपावेगा इसमें संशय नहीं है ॥

चौ० जो यहधर्म्माख्यानमहोत्कट । जनन सुनावत विप्र झटापट४४
सर्व्व खात फल भोगत सोई । धर्म्मात्मा सब विधि नहिं गोई ॥
सूर्य्यग्रहण गंगा के तीरा । कोटि धेनु जो देत सुधीरा ॥
जो फल पावत सो नर ज्ञानी । श्रोता सो फल लहत न हानी४५
नहिं दारिद्र्य लहत नहिं शोका । व्याधिकबहुँ नहिंपावतलोका४६
असन्मान अरु दुःख महाना । कबहुँ न पावत पुरुष महाना ४७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेखातादिकीर्तनं नामसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

दो० अट्ठावनयें महँ कह्यो वृक्षारोप महात्म ॥
प्रपादान घटदानहू जासों कर्त्त तदात्म १

व्यास भगवान् सब ब्राह्मणोंसे बोले कि हे महाभाग्यवालो! सब प्रकारके वृक्षोंके लगानेसे जो फल होताहै वह अलग २ कहते हैं चित्तलगाकर सुनो १ जो कोई किसी जलाशयके किनारे सबओर पुण्यवृक्ष लगाता है उसकी पुण्यके फलका अन्त कह नहीं सकते २ अलग वृक्षोंके लगाने से जितना फल मिलताहै उससे लक्षकोटिगुण अधिक जलके समीप लगाने से मिलता है ३ व अपने खुदाये हुये तलैया तालके किनारे लगानेसे तो अनन्त फल प्राणी पाताहै व उस से भी सौगुण पुण्य पुण्यकारी वृक्षोंके लगाने से मिलती है ४ किसी जलाशय के समीप पिप्पल लगानेसे जो फल मनुष्य पाताहै वह सैकड़ों यज्ञोंसेभी नहीं पाताहै ५ उसके जितने पत्ते पत्ते २ में जल

में गिरते हैं वे सब पिण्डों के समान होते हैं पितरों के लिये अक्षय तृप्ति कराते हैं ६ उसपर बैठकर पक्षी यथेष्ट फलखाते हैं ब्राह्मणों के भोजन कराने के समान अक्षयफल लगानेवाले को मिलता है ७ जो फल एकपिप्पलका वृक्ष लगानेसे होताहै वह फल सैकड़ों यज्ञों व सैकड़ों पुत्रों से नहीं होताहै ८ उष्णता से व्याकुल होकर देवता ब्राह्मण धेनुआदि उसकी छायामें आकर बैठते हैं उससे लगानेवाले के पितरों को व लगानेवालेको भी अक्षय स्वर्गवास मिलता है ९ अक्षय होने के कारण कर्त्ताको जो फल होताहै उसका वर्णन ठीक २ नहीं होसक्ता इससे सब प्रयत्नों से श्रीविष्णुका वृक्ष पिप्पल लगाना चाहिये १० पिप्पलका एकभी वृक्ष लगाकर मनुष्य स्वर्ग से नहीं हीन होता इससे हे द्विजोत्तमो ! इस महावृक्ष को लगाओ ११ जलके निकट व जहां रसोंका मोल लेना बेंचना होताहो मार्ग में वा जलाशय के किनारे पर जो महाशय पिप्पल लगाता है १२ वा इन स्थानोंमें अश्वत्थादि व औरही कोई आम्रादि पुण्यवृक्ष लगाता है वह मनुष्य मनोरम स्वर्गलोक को जाताहै हे ब्राह्मणो ! पिप्पल की पूजाकरने से जो फल मिलता है कहते हैं सुनो १३ स्नानकरके जो पिप्पलको स्पर्शकरता है वह सब पापों से छूट जाता है विना स्नानकिये जो स्पर्श करता है स्नानके फलको पाताहै १४ पिप्पल के दर्शन से पापनाश होता स्पर्शसे लक्ष्मी मिलती है पूजाकरके पिप्पलकी प्रदक्षिणा करने में यहपढ़े कि हे अश्वत्थ तुम्हारी प्रदक्षिणा करने से आयु होती है इससे तुम्हारे नमस्कार है १५ चल दलवृक्ष सदा विष्णुस्थित बोधिसत्व यज्ञरूप अश्वत्थ सदा तुम्हारे नमस्कार है १६ पिप्पल को जो खीर शष्कुली दुग्धआदि नैवेद्य लगाता है पुष्प धूप दीपादि देताहै वह अक्षय स्वर्ग लोकपाता है १७ पिप्पलके पूजनेको अक्षय पुत्रसमझो धन करनेवाला व यश करनेवाला विजय मान देनेवाला कल्याणदेनेवाला समझना चाहिये १८ पिप्पलके नीचे बैठकर जो जप होम स्तोत्रपाठ मन्त्र यन्त्रादि कुछ कियाजाताहै वह सब कोटि गुणहोजाताहै १९ जिसकी जड़में विष्णुभगवान् सदास्थित रहते हैं व मध्यमें शङ्कर अग्रभाग में

ब्रह्मा जगत् में उसकीपूजा कौन न करे २० सोमवती अमावास्याके दिन मौन स्नानकरके पिप्पलकी वन्दना करनेसे सहस्र गोदानका फल होता है २१ व सात प्रदक्षिणा करनेसे दश सहस्र गोदानका फल होता है व अधिक प्रदक्षिणा करनेसे लक्षकोटि गोदानकाफल होता है इसमे सदा पिप्पलकी पूजा करनीचाहिये सोमवती अमावास्या को तो विशेष करके २२ उस दिन पिप्पलकेनीचे जो फल मूल जलादि कुछ दियाजाता है हे विप्रो! वह सब जन्म २ के लिये अक्षय होजाता है २३ अश्वत्थके समान लोकमें अन्य कोई नहीं है क्योंकि भूतलपर यह विष्णुरूपी वृक्षहै जैसे लोकमें ब्राह्मण पूज्यहैं धेनु व देवता पूज्यहैं २४ वैसेही देवरूपी यह वृक्ष पूज्यतमहै इसके लगाने रक्षाकरने स्पर्शकरने में सबपवित्रही कर्म्म होते हैं २५ व यह वृक्ष पूजनकरने से धन पुत्र स्वर्ग्ग मोक्ष क्रमसे देताहै परन्तु जो कोई अश्वत्थ के शरीरमें कुछभी छेदकरता है २६ वह मनुष्य एक कल्प तक नरकभोगकर पीछे चण्डाल योनि में उत्पन्न होता है व जो दुष्ट उसकी जड़ही काटडालता है उसका फिर जन्म नहीं होता नरकहीमें पड़ारहता है २७ व उसके पुरुषा घोरदर्शन रौरवनरकमें सदा पड़ेरहते हैं उनका भी फिर जन्म नहीं होता पिप्पल के एक वृक्षके लगाने से जो फलहोताहै २८ वही चम्पा व मन्दारके लगाने से होता है क्योंकि ये तीनों वृक्ष केशव रूप हैं आठ बेलके वृक्ष व सात बरगदके २९ व नींबके दशवृक्ष लगाने से बराबर फलहोता है भोद्विजो! एक २ वृक्ष के लगानेका फल अलग २ कहागयाहै ३० यह जानकर धर्म्मात्मा को चाहिये कि इन वृक्षोंकी वाटिका लगावे वही कृत्रिमवन कहाता है जो कोई इन वृक्षों के साथ हज़ार वृक्ष आम्र के लगाता है वह हज़ार कोटि सै कल्पभर स्वर्ग्गलोक में बसता है इसीप्रकार इसके दूने तिगुने न्यून वा अधिक आम्रों की वाटिका लगाने से कोटिबर्ष तक ३१ । ३२ स्वर्ग्ग सुख भोगकर राजाहोता है वा और ही कोई अच्छा ईश्वरहोता है उसमें स्वर्ग्ग के समान सुखका राज्यभोगता है कल्याण मङ्गल पाताहै ३३ आरोग्य सौख्य शूरता ये सब वाटिका लगाने से मिलते हैं वाटिका

के फल जो सहस्रों जन्तु खाते हैं ३४ व उनके आश्रित पक्षी कीट पतङ्ग शलभादिक रहते हैं छायामें जो जनआकर विश्राम करतेहैं उनके संख्याके समान देवताओं से पूजित सैकड़ों लोग स्वर्ग में लगानेवाले की सेवाकरते हैं जो वृक्ष वड़े २ होते हैं वे सब देवरूपी होते हैं ३५ । ३६ इससे पिता के तुल्य उनवृक्षों की पूजा करनी चाहिये उनकी सेवाकरनेसे पिण्डदानादि का फलहोताहै व वेहीवृक्ष फिर जब वह प्राणी मर्त्यलोक में जन्मपाता है तो सुन्दर रूपधारी आज्ञाकारी उसपुरुषके पुत्रहोते हैं व सेवाकरते हैं व सदा पुण्य क्रियाकरतेहैं सुखीरहते कभी बीमार नहीं होते ऐसेही सैकड़ों जीव जन्तु जो आम्र वृक्षमें लगेरहते हैं वे भी लगानेवाले के सेवकों में श्रेष्ठ ३७।३८ पुत्रादिहोतेहैं आमलकी हर्र व अन्य कटु तिक्त अम्ल वृक्ष जो वाटिकाओं में लगाये जाते हैं व उनमें सुन्दर फल होते हैं सब लगानेसे सुन्दरशुद्ध कल्याणकारी फल होते हैं सो इन पुण्यवृक्षों के लगानेवाले पुरुष परमोत्तमगतिपातेहैं व जहांसुवर्णहीके दुमहला पँचमहला आदि बनेहोते हैं व सब रत्नोंसे विभूषितहोते हैं व सब भूषणों से संयुक्त पवनके समान वेगवाले विमानहोते हैं ३९ । ४० व सुवर्ण मय वृक्ष लगेहोते हैं जोकि सबकालों में फल पुष्पादि देते हैं व सब ऋतुओंमें सुखदेते हैं व सौम्य स्वभाववाली रसीलीबोली बोलनेवाली षोडशवार्षिकी अप्सराओं की तुल्य युवतियां रहती हैं ४१ व सब गाने बजाने नाचने में तत्परहोती हैं पर धीरस्वभावकी होती हैं बस उत्तम वृक्ष लगानेवाले वहींको जाते हैं इसके विशेष वहां पुष्करिणियां व और खातभी होतीहैं ४२ शुद्ध मणिमय प्रस्तरों से घाटबँधीहुई नदियां भी होती हैं व कर्दम उनमें पायसका होताहै व जल दुग्धहीहोताहै उसमें फेना उठता है व ६ रसोंसे युक्त नाना प्रकारके अन्नबने तैयारधरेरहते हैं ४३ जैसे यहां मर्त्यलोकमें जन्म लेकर पुण्यात्मा नानाप्रकारके भोग भोगते हैं वैसेही स्वर्गमें जाकर भी भोगते हैं वेही पुण्यात्मा बार २ स्वर्गके सुखभोगतेहैं व बार २ मर्त्यलोकके भोगतेरहते हैं व नदी खात आरामके सुखवहांभी भोगते हैं ४४ जैसापुण्य करतेहैं वैसेही क्रमसे स्वर्गभोगतेहैं व मर्त्यलोक

के भी अधिपहोंके सुखपाते हैं वस वृक्ष लगानेवाले वापी कूप तड़ाग बनवाने खुदानेवाले इसी प्रकार के सुख भोगतेहैं कदाचित् तलैया आदिके खुदानेमें असमर्थ हो तो पयश्शाला जिसे पौशालाकहते हैं उसको दिलावें तोभी पुष्करिणी खुदाने व दानकरने का फलपावे ४५ प्रपादानका सब पापहर श्रेष्ठ लक्षण कहते हैं जोकि स्वर्ग के भोगों को देताहै व स्थिर स्वर्ग मोक्ष कोभी देताहै ४६ अब कीर्ति बढ़ानेवाली प्रपा अर्थात् पयश्शालाके लक्षण कहतेहैं जहां निर्जल मार्ग हो पानीकाबड़ा कष्ट हो वहां एक मांड़व छवावे ४७ जहां कि वर्षा ग्रीष्म व शरत्काल में भी जितने पथिकआवें सबके रहने का स्थानहो अगरु कर्पूरादि सुगन्धित पदार्थों से युक्त जल सब के पीनेको इकट्ठारहै ४८ उन लोगोंकेलिये आसन रात्रिमें दीपादिके लिये व थकेहुये लोगोंके लगाने के लिये तेल व खानेको अन्न सब वहां दे ऐसा प्रपादान करने से प्राणी कभी स्वर्गसे नहीं च्युतहोता इसप्रकार तीनवर्ष तक लगातार पौशाला देने से पुरुष छोटेताल के खुदाने का फल पाजाता है ४९ व जब कभी वह मनुष्य स्वर्ग से च्युतहोताहै तो इसलोकमें देवताओं से भी पूजितहोता है जिससे सबकालों में प्रपादान नहीं होसक्ता केवल ग्रीष्मऋतुमें एकही मासतक पौशालादेता है सोभी निर्जल स्थानमें ५० वह एक कल्प तक स्वर्ग में वासकरता है जब स्वर्गसे भ्रष्टहोता है तो पृथ्वीपर आकर जिसस्थान को पुष्करिणीप्रद जाते हैं उस स्थानमें जाकर पौशालादेनेवाला टिकताहै ५१ प्रपादान भी न होसके तो सबपापोंके नाशके लिये धर्म्मघट दान देवे धर्म्मघट देनेके समय यह मन्त्रपढ़े॥

दो० ब्रह्म विष्णु शिवरूप यह देते हैं घट लेव ५२
तवप्रसाद, ममसफल सब होहिंमनोरथदेव ॥
दुइरत्ती सोना सुघट की दक्षिणा सुदेय ५३
तीनवर्ष इमि दानकरि प्रपादान फललेय ॥
जो पुष्करिणी आदि फल पढ़ेसुनावे कोय ५४
लक्ष पापसों छूटिकै सद्गति पावे सोय ॥
जनन पुण्यआख्यान यह पुरुष सुनावे जोय ५५

कोटिसहस्रन कल्पलग सुरपुरवन्दितहोय ५६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपुष्करिण्यादिधर्मकीर्तननामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

दो० उनसठयें महँ सेतु सुरमन्दिर द्विजगृह आदि ॥
रचन देवपूजन थपन कह्यो व्यास श्रुतिवादि १

श्रीवेदव्यास मुनि ऋषियों से बोले कि कीर्त्तिधर्म्म में पर अन्य शुभ ब्रह्माजीका कहाहुआ सेतुबांधना पुण्यकर्म्म कहते हैं १ दुर्गम मार्ग्ग में दुस्तर कीचड़ में बहुत दुष्टलोगों के ठगीकरनेवाले नाली नालेआदि स्थान में सेतु वा बांधबँधाने से पवित्रहोकर मनुष्य देवता होजाता है २ यदि बीताभरका लम्बा चौड़ा भी बांध कोई बँधाताहै तो देवताओं के सौवर्षतक स्वर्ग्ग में वासकरता है ऐसेही जो इससे अधिक दो तीन चार पांच बीताका लम्बा चौड़ा पुल बांध कोई बँधाता है वह कभी स्वर्ग्ग से हीन नहीं होता ३ कदाचित् किसी पापके योगसे पृथ्वीपर जन्मभी पाताहै तो स्त्री पुत्रादि से युक्तहोता व रोग शोकसे रहित होताहै ४ व जो हाथभरगहिरे किसी गढ़ेके ऊपर पुल वा बांध बँधाता है वहभी स्वर्ग्ग से नहीं हीनहोता क्योंकि उसके दिन दिन के सब पापक्षय होतेजाते हैं ५ ऐसे बांध व बड़े सेतु का समान फल होताहै इससे बुद्धिमान् को चाहिये कि अपने धन प्राणके नाशसे भी पुल बांधआदि अवश्य करावे बँधावे ६ इस विषय में वृद्धों का सम्मत एक पूर्व्वकाल का वृत्तान्त है सुनो कोई चोर बड़ेभयङ्कर मार्ग्गहोकर चोरी करनेको आया ७ एक गढ़ाथा उसमें पैरधरकर जानेके लिये एक मरेहुये बैलका शिरधरकर उसके ऊपर पैररखकर चोरी करनेको चलागया व किसी गृहस्थका धन चुराकर उसीपर होकर ८ अपने घरको चलागया व उसीपर पैरधरकर बहुतलोग बहुत दिनोंतक अपने गृहोंको आते जातेरहे सबको एक चरण धरने को निश्चय से सुखमिलताथा जो उस मार्ग्गहोकर आता था ९ बस एक पादके दुर्ग्गमकुण्डमें वह गोशिर तारक होगया बस उस

धरनेवाले चोरको प्रत्येक जनके पैररखने से एक चान्द्रायण व्रतका फल मिलनेलगा १० जब चोर मृतक हुआ व यमपुरमें जाकर चित्र-गुप्तके सामने उपस्थित कियागया तब चित्रगुप्त ने कहा कि इसके धर्म्ममात्रका थोड़ाभी फल नहीं है ११ न तो देवता पितरोंका कार्य्य इसने कियाहै न तीर्थस्नान व ब्राह्मणों का पूजन किया है न दान दिया न गुरुजनों का मानकिया न परलोक के हित कुछ शुभदान किया १२ मनसे भी इसने नहीं किया फिर क्रियासे क्याकहें साहस कर्म्म चोरी व परस्त्रीगमन सदा यह करता रहा है १३ प्राणियों का मिथ्या अपवाद कहाकरता व साधुओं की निन्दामें निरतरहता इसी प्रकार सैकड़ों सहस्रों गौओं को इसने चुराया है १४ तब प्रलयाग्नि समान प्रकाशित धर्म्मराजजीने कार्यकर्त्ताको आज्ञादी कि इसे शीघ्र नरकमें डालो व वहांसे फिर कभी निकलने न पावे कि १५ इतने में चित्रगुप्तने देखा तो उसके विषयमें कुछ पुण्य लिखीथी इससे उसके ऊपर उनको दयाआई इससे उन्होंने धर्म्मराज से कहा कि हे नाथ! इसने मार्ग्ग के एक गढ़ेमें एक बैलका शिर रखदिया था उसकी कुछ थोड़ीसी पुण्यहै इससे इस समय कुछ क्षमा करनी चाहिये १६ व कुछ कालतक इसको उस पुण्यसे विश्राम करने देना चाहिये व चिन्तना करके आज्ञादेनी चाहिये जिसमें यह अपने उस धर्म्म का फलभी पृथ्वीपर भोगकरलेवे तब धर्म्मात्मा धर्म्मराजजीने एकाग्र मनहोकर उसकी पुण्यका विचारांशकिया उससे पायागया कि वह चोर बारह वर्षतक जाकर मर्त्यलोकमें राजाहो यह सोचकर धर्म्मराज जीने उससे कहा कि हे पापिन्! मर्त्यलोककोजा बारहवर्षतक शत्रुर-हित राज्यभोगकर हे दुष्ट! तूने जोमार्ग्गमें बैलका शिर धरदियाथा उस पर की बहुतलोग आयेगये हैं उसी कारण से छूटगया व बारह वर्षतक राज्य भोगना दियाजाताहै १७। १८ इसके पीछे फिर यहां आकर नरक में डालाजायगा फिर उसी में रहेगा कभी जन्म न मिलेगा तब वह चोर दुःख से पीड़ित हाथजोड़कर धर्म्मराजजी से बोला कि १९ हे धर्म्मराज! मुझपापकारी के ऊपर कुछ दया होनी चाहिये हे नाथ! मैं अनाथहूं जिसमें प्रीतिपूर्व्वक आपकी दयाको

जानता रहूं २० तब धर्म्मराज बोले कि अच्छा यहां से जा तू बड़ा दुःखी है हमारे प्रसादसे अपने पूर्व्व वृत्तान्तोंका स्मरण तुझको बनारहेगा २१ बस इसी अनन्तरमें यमदूत ने उसे नीचेको उतारा कि उसका जन्म भूतलपर एक बड़े दुर्भाग्यवाले बनियें के यहां हुआ २२ वहां जन्मलेनेही से पूर्व्वजन्मके कर्म्म के फलसे विविध प्रकार के दुःख उसे भोगनेपड़े इक्कीसवर्षकी अवस्थातक महाकष्ट उसनेभोगे २३ उसी समय में उस देशका राजा अपने कर्म्म से परिपीड़ित होकर मृतक होगया तब मन्त्रियों ने इकट्ठे होकर विचार किया कि किसीको राजा बनाना चाहिये २४ ऐसा विचारकरके सब कहीं राजा बनानेके लिये पुरुष ढूंढ़ा ढूंढ़ते २ उसी पूर्व्वजन्मके चोर बनियेंवाले को पाया उसने सबके आगे राजाबनना अङ्गीकार किया २५ तब सबों ने लिवालेजाकर विधिपूर्व्वक उसका राज्याभिषेक किया राज्य पाकर धर्म्मराजके वरके कारण २६ पूर्व्वजन्मके वृत्तान्त का स्मरण उसको होआया इससे प्रथम उसने अपने राज्यमें सब नदियों में पत्थरों से सेतु बँधवाये व कहीं कहीं झीलों में कच्चे बांध बँधवाये व जल के अन्यभी दुर्गम नाले नालियों पर पुल बनवाये राज्यभर में बड़ी बड़ी पक्की सड़कें बनवाईं २७ बावली कूप तड़ाग प्रपा वाटिका व अन्य पुण्यवृक्ष लगवाये व बनवाये नानाप्रकार के अन्य पुण्य दान यज्ञकिये कराये २८ पूर्व्वके कर्म्मोंका स्मरण करतेहुये उसने सब पापों के नाशके लिये ऐसे पुण्यकर्म्म किये कराये बहुत प्रकारके धर्म्म व विविधप्रकारके व्रतकिये २९ देवताओं ब्राह्मणों व गुरुओं को बहुत तृप्तकरने से वह सब पापोंसे पवित्रहोगया व बारह वर्ष राज्यकरके धीमान् धर्म्मराजके समीप फिर पहुँचा ३० उसको सभा में पहुँचे हुये विमानपर सवार देखकर धर्म्मराजने अपने नेत्र मारेक्रोध के लाल करलिये तब हाथ जोड़कर वह धर्म्मराज से बोला कि महाराज मेरे धर्म्मों को तो देखिये कुछ कियाहै वा नहीं ३१ तब धर्म्मराजके समीप चित्रगुप्त बोले कि यह विष्णुलोकको जावे क्योंकि यह मन से व कर्म्म से पवित्रहोगया ३२ तब धर्म्मराज प्रसन्न होकर मुसकाये व उन्हों ने कहा कि हां हमने

विचारा वैकुण्ठ को जाओ जाओ ३३ उसीसमयमें देवलोकसे दिव्य चित्रविचित्ररङ्ग का विमान आया उसपर चढ़कर वह वैकुण्ठ को चलागया जहांसे फिर मर्त्यलोकका आना दुर्ल्लभ होजाता है ३४ इस से जो कोई हाथभर का भी लम्बा चौड़ा पुल बँधाता है वह राज्यसुख भोगता है व अन्त में स्वर्ग को जाताहै ३५ ऐसेही गौओं के चरने के लिये जो भूमि छोड़ देता है वा रखौना रखाता है उस में चरने देता है वा ऐसेही उनको अच्छा चारा देताहै वहभी स्वर्ग से नहीं कभी पतित होता जो गति गोदान करनेवालेकी होती है वही उसकी भी होती है ३६ जो पुरुष चारहाथ लम्बी चौड़ी भूमि गौओं के चरने के लिये कहीं छोड़ता है उसे इष्ट स्वर्गवास मिलता है अन्य बहुत कहने से क्या है ३७ जो अपना हितचाहे यथाशक्ति गौओं के चरने के लिये कुछ स्थान अवश्य छोड़े व कुछभोजन उनको देतारहे क्योंकि प्रतिदिन गोग्रास ब्रह्मभोज देवभोजसे सौगुणा अधिक होताहै ३८ इससे गौओंको चारा देनेसे कभी स्वर्ग से नहीं हीन होता जो कोई पुण्यकारी वृक्ष काटता है वा गौओं के चरने की भूमि जोत बो लेता है ३९ उसके इक्कीस पुरुषतक रौरव नरक में पड़ते हैं गौओं के चरने की भूमि जोतनेवालेको जान कर यथाशक्ति राजा दण्डदेवे ४० क्योंकि जो पाप पिप्पलादि धर्म्म वृक्षों के काटनेवाले को होतेहैं वेही गौओं के चरने की भूमि हरने वालों को भी होते हैं इससे इनके दण्ड देनेमें सुख मिलताहै इससे उसको दण्डदेना चाहिये ४१ जो पुरुष विष्णुभगवान्के अर्थ कोई घवरहर बनवाता है जिसपर दो तीन वा चार पांच शोभायमान सुंदर कलशोंसे युक्त सुन्दर खण्ड होतेहैं ४२ व इससे भी अधिक जो पक्की ईंटों का वा पत्थरोंका मन्दिर श्रीहरिके लिये बनवाता है उस में धन भरदेता है व जीविका पूरी लगादेता है व दिव्य मनोहर अंगनाई बनवा देता है ४३ प्रतिष्ठा कर्म्म करके सेवक नियत करदेता है व उस में अपने इष्टदेवकी मूर्त्ति विशेष करके विष्णुकी मूर्त्तिका स्थापन करता है ४४ वह नरोत्तम श्रीविष्णुकी सायुज्य मुक्ति पाता है ऐसेही श्रीहरि की वा अन्य किसी देवता की प्रतिमा बनवा-

कर ४५ व अन्य देवाताओं की भी मूर्त्तियां बनवाकर उनके बीचमें स्थापित करता है व जो फल मनुष्य पाता है वह फल पृथ्वीपर सहस्रों यज्ञों के करने से व दान व्रतादिकों के देने करने से नहीं मिलता ४६ व कल्पकोटि सहस्रकल्प कोटि शतपर्य्यन्त रत्नसंयुक्त व द्रव्यों से सम्पूर्ण प्रासादपर ४७ यथेच्छचारी सर्वलोक मनोहर विमानों पर जाकर बसता है व जब कभी स्वर्ग से च्युत होता है तो पृथ्वीपर चक्रवर्त्ती राजा होता है व सब गुणों से युक्त इन्द्रियों को अपने वश में रखता है ४८ व अपनी शक्तिके अनुसार जो शिव-लिंग के लिये प्रासाद बनवाता है जो विष्णुकी मूर्त्ति के स्थापनका फल कहाहै वही शिवलिंगस्थापनमें भी पाताहै ४९ व वहां वह महा-भाग्यवान् अपने मनमाने भोग भोगताहै व सुन्दरी स्त्रियोंसे व नाना प्रकारके सुखद पदार्थों से पूर्ण स्वर्गलोक को भोगताहै ५० स्वर्ग भोग क्षय होनेपर पृथ्वीपर बड़ा राजा होता है वा महाधनी होता महादेवकी प्रतिमा बनवाकर स्थापित करके देवगृह में ५१ सुन्दर स्वरूप की मूर्त्ति स्थापन करके सुखसे अपने परिवारसहित मनुष्य कोटि कल्पतक स्वर्ग में बसता है व स्वर्ग से भ्रष्ट होकर पृथ्वीपर बड़ा राजा होता है वा पूर्णधनी व पूज्यतम होता है ५२ व सबदे-वियों को वनवाकर जो मनुष्य नवीन मन्दिर में स्थापित करता है वह सब देवियों के प्रसादसे इसीलोकमें देवसमान पूजितहोजाताहै ५३ अतिशय निर्विघ्न सुखपाता है व रोगरहित रहताहै व रत्नयुक्त मन्दिर में वसता है जिसकी भूमि मणिजटित होने के कारण चित्र विचित्रहोती है ५४ व देवी की कृपा से अपनी सुन्दरी स्त्रियोंकेसंग निर्भय सोता है व उसके रम्यगृह में सब इन्द्रियोंको सुखदेनेवाले नित्य नृत्य गीत हुआ करते हैं ५५ रत्नजटित मृदङ्ग वीणादिकों के शब्द व गाने नाचनेवाली स्त्रियोंके ताल होते रहतेहैं निर्मल सुखद रम्यरत्नयुक्त गृहमें शोभित होताहै ५६ ऐसेही जो बुद्धिमान् मनुष्य अन्य देवताओंकी प्रतिमाओंके लिये व देवी के लिये उत्तमप्रासाद बनवाते हैं कोटिवर्षपर्य्यन्त स्वर्गलोक में बसते हैं ५७ व स्वर्ग से जब भ्रष्ट होते हैं तब देवी की भक्तिमें परायण राजा होते हैं इस

प्रकार सहस्रजन्मतक जातिस्मर होतेहैं ५८ व गणेश वा देवीका प्रासाद जो प्रीतिमान् मनुष्य बनवाता है वह स्वर्ग में जाकर देवताओं से पूजित होता है ५९ व देवी के पुर में जाकर राजा होता है वहां के राज्यसुख भोगता रहताहै व सब कार्यों में विघ्नरहित होताहै जैसे कि गणेश विघ्नरहित होते हैं ६० व उसकी आज्ञा सुर असुर मनुष्योंमें सदा चलतीहै ऐसाही फल सूर्यका मन्दिर बनवानेमें उत्तम मनुष्य पाताहै ६१ प्रसन्नचित्त व अरोगी रहकर कामदेवके आकार का होकर प्रकाशित होता है व जैसे सब लोगों से गणेश वन्द्य हैं वैसेही वह वन्द्य होताहै ६२ व सूर्य्यकी प्रतिमा के लिये पत्थर का मन्दिर बनवाकर कोटिकल्पतक स्वर्गसुख भोगकर फिर राजा वा धनेश्वर होता है ६३ विष्णुआदि देवताओं के पूजनका जो अलग २ फल होता है मनुष्यों के हित के लिये प्रत्येक अलग २ कहते हैं ६४ जो कोई एक मासतक देवमन्दिर में घृतका दीप देता है वह देवताओं के दश सहस्रवर्षतक स्वर्ग में देवताओंसे पूजित होता है ६५ व ऐसेही जो मनुष्य पृथ्वीपर देवलिंगका स्नान घृत से कराता है एक मासतक निरन्तर कराने से कोटिसहस्र कल्पतक स्वर्गमें बसताहै ६६ तिलके तेलके दीपदानमेंभी घृतहीके समान फल होता है व अन्य तेलकेसे घृतका आधा फल मिलताहै व जो मास भर देवमन्दिर में जलदान करता है वह कहीं की ईश्वरता पाताहै ६७ धूपदान करने से गन्धर्व्व होता व चन्दन चढ़ानेसे इसका दूना फल होता है कस्तूरी व अगुरु की धूप देने से बहुत फल होता है ६८ माला पुष्प के दान से मनुष्य देवराज होता है व शीतकालमें रजाई तोसकआदि रुई भरेहुये वस्त्र देकर सब दुःखों से छूटता है ६९ व उष्णकाल में शीतलपटी देने से सब काम पाताहै व अपनी शक्ति के अनुसार कोई भी वस्त्र दानकरके कष्टित नहीं होता ७० व जो चारहाथका भी वस्त्र सुन्दर शरीर के ढांकने के लिये देता है व जिससे कि मनुष्य अपना चरण ढांक सक्ता है वह कभी स्वर्ग से नहीं हीनहोता ७१ व अपनी शक्तिके अनुसार सुवर्ण दान करनेसे मनुष्य स्वर्ग में पूजित होताहै व जब जन्म पाताहै तो दशयोजन में सब

से अधिक रूपवान् होताहै ७२ व सुवर्ण के साथ रत्न मिलाकर देने से खाली सुवर्ण दानकी अपेक्षा दशगुणा फलहोता है हीरा वैदूर्य्य मणि मरकतमणि माणिक्यआदि देवताकी मूर्त्तिको देकर वा यशस्वी तपस्वी ब्राह्मणको देकर मनुष्य सौ योजन के मण्डल का अधिप होताहै ७३ । ७४ व पृथ्वीपर जन्म पाकर सब लोगोंको प्रीतिकारी होताहै सुगन्धित द्रव्य देनेसे मनुष्य बड़ा वक्ता होता है व सुन्दर होताहै ७५ सामान्य सुपारीदान करने से रत्नोंसे भूषित कण्ठहोता है व श्रेष्ठदासी दान करनेसे कल्पपर्य्यन्त स्वर्ग्ग में बसता है ७६ श्रेष्ठस्त्री दान करनेसे पृथ्वीपर धनेश्वर होता है व बहुत दासों के देने से स्वर्ग्ग में बहुत भृत्योंसे युक्त होताहै ७७ व पृथ्वीपर अक्षय ऋद्धि जन्म जन्म में होती है व सब तूर्य्य देनेसे गुणवान् व सब लोगोंके मनका होताहै ७८ व नृत्य गीतादिकों के शास्त्रों के देनेसे गन्धर्व्वोंका पति होता है व दासी दासोंकी जोड़ी दान करनेसे धन स्त्रियोंसे युक्त स्वर्ग्ग में बसता है ७९ व ऐसेही गोप्रदान करने से स्वर्ग्गलोक में बहुत कालतक बसताहै देवमूर्त्तिके ऊपर दुग्धचढ़ाने से वा दुग्धका भोग लगानेसे कई कल्पोंतक स्वर्ग्ग में निवासकरता है ८० दधिसे स्नान कराने से दुग्धसे दूनाफल होता है व घृत से सौगुना अधिक व छरसयुक्त अन्न दानकरने से राजाहोता है ८१ व पायस देने से मुनियों में श्रेष्ठ मुनि होता है शष्कुलीआदि हविष्यान्न देने से वेद शास्त्रके अर्थों का पारगन्ता होताहै ८२ व मांस छोड़कर अन्य सब भोज्य पदार्थोंके देने से ब्रह्मचारी होताहै मधु गुड़ लवण दान करने से सौभाग्य पाता है ८३ शर्करादि मधुर वस्तुओं के दानसे सब लोगों से अधिक सुन्दरता होती है अन्य देवताओंकी मूर्त्तियोंकी व शम्भु के लिङ्गोंकी पूजा विधान से करने से ८४ क्रमसे स्वर्ग्गादि लोकों का पति होता है व लोकों के हितके लिये देवता सामने खड़ेरहतेहैं ८५ जलपात्रादि दानकरनेसे मनुष्य स्वर्ग्ग से नहीं हीन होता है शय्या भोजन दानसे नर सबपापों से छूटजाताहै इससे ऐश्वर्य्यकी इच्छा कियेहुये लोगोंको विष्णु शिव ब्रह्माकी पूजा अवश्य करनी चाहिये क्योंकि सब देवगण लोगों

के हितही के लिये स्थितहैं इससे सब देवताओंकी पूजा यथासम्भव समय २ पर सबको करनीचाहिये व एकबार भी शम्भुके लिङ्गों की प्रदक्षिणा करके मनुष्योत्तम देवताओंके सौवर्षतक स्वर्गके सुख भोगता है ८६ इसी क्रमसे महादेवजी के नमस्कार करनेसे मनुष्य लोगोंसे वन्द्य होता है व अन्त में स्वर्ग को जाता है इससे नित्य उनकी पूजा करनी चाहिये ८७ लिङ्गरूपी देवका धन जो मनुष्य हर लेताहै वह रौरवनरक में बहुत दिनोंतक रहकर फिर कीड़ा होताहै ८८ शिवलिंग वा श्रीहरिको पूजा देनेवाले से जो कोई मनुष्य हर लेताहै वह कोटिसहस्र कुलोंसमेत कभी नरक से नहीं निवृत्त होता ८९ जल पुष्प अक्षत धूप दीपादिके लिये किसीसे धन वा अन्य कुछ वस्त्रादि लेकर फिर लोभसे पीछे देवता को नहीं देता वह अक्षय नरक को जाताहै ९० व लिंगपूजनेवाले दासकी दासीके संग भोग करनेसे नरकसे नहीं निवृत्तहोता क्योंकि कामार्त्तहोकर चाहे माताके संग भोगकरे पर दासीके संग कभी न भोगकरे ९१ इससे शिवकी दासीके संग भोग करने से व शिवका धन हरलेने से व शिवके अन्न पानके भक्षण करने पीनेसे मनुष्य नरकको जाताहै ९२ इसीसे जो देवल विप्र होताहै अर्थात् शिवके ऊपरकी चढ़ीहुई वा शिवके अर्थ धरीहुई वस्तु भोजन करताहै वह नरकसे नहीं निवृत्तहोता व जो देवता के लिये जितनी वस्तु आतीहै उसे देवता के पूजनही में लगादेता है आप उसमें से कुछ नहीं खातापीता वह लिङ्गके पूजनका फलपाता है वेश्या के सङ्ग भोगकरने से मनुष्य कीड़ोंकी जातिमें उत्पन्न होता है इससे वेश्याजनों से दूररहनेही से हित होता है ९३ व इसीसे वेश्याका स्पर्श होजानेपर मनुष्य स्नान करनेसे शुद्धहोताहै क्योंकि वेश्या बहुत पुरुषों से भोगकराने के कारण बड़ी मलिनहोती है इस से नरकको जाती है ९४ परन्तु जो वेश्या तपस्विनी होती है व देवताओं की पूजा में सदा निरत रहती है व पातिव्रत धर्म्म में पर शुद्ध रहती है वह अक्षय स्वर्ग भोगती है ९५ जो पुरुष सदा वेश्या के सन्निकट किसीकारण से रहता है पर उसे माताके समान देखता है वह देवलोकमें जाकर देवके समान सम्पूर्ण भोग

पाता है ९६ व सुर असुर मनुष्यों का वन्दनीय होता है जैसे कि श्रीहरि सबके वन्दनीय हैं बस वैसाही वह पुरुष भी सब लोकों का पूज्य व सब प्राणियोंका पावन होताहै ९७ जो पुरुष सदा देवता का दास बनारहता है व देवताके सेवकोंके ऊपर कृपारखता है वह पृथ्वीका अतिक्रमण करके देवलोकमें पूजित होताहै ९८ जो कोई देवमूर्त्तियों व शिवलिङ्गों के लिये मण्डप बनवाता है वह समर्थ पुरुष स्वर्गको जाताहै उसके वहांरहनेका काल सुनो ९९ जो तृणसे देवमण्डप छवाता है वह एकसहस्र वर्षतक स्वर्ग में बसता है व जो करीर वृक्षकी डालियों से छवाताहै वह शतसहस्र वर्षतक व जो खैरकी लकड़ी से छवाता है वह लाख वर्षतक स्वर्गवास करता है व जो काष्ठसे छवाता है वह दश हज़ार वर्षतक १०० व जो बड़ी यत्नसे सुन्दर पत्थरों से छवाता है वह किरोड़ों वर्षतक स्वर्ग में निवास करता है इससे सब यत्न से पण्डितको चाहिये कि देवताके लिये मण्डप बनवावे १०१ मण्डप बनवाने से जितने कालतक प्राणी स्वर्ग में रहता है उतनेही कालतक मनुष्य देवमण्डप हरने से नरकमें रहताहै १०२ जनों के समूहमें जहां कि रम्यवस्तुओं का मोल बेंचहोता है व पथिकों के रहने के स्थान में नदों नदियों के जलके आगमन के स्थानपर १०३ देवताओं का मण्डप बनवानेसे जो फल मनुष्य पाता है उससे दूना फल पाता है जब कि किसी ब्राह्मणके मन्दिर में देवमण्डप बनवाता है १०४ व जो किसी दीन अनाथ ब्राह्मण का मन्दिर बनवादेता है या सम्पन्नही विप्रका गृह अच्छीतरह बनवाछवा देताहै वह देवमन्दिर बनवाने से दूना फल पाताहै उसमें अनाथ विप्रका गृह बनवादेने से तो कभी स्वर्ग से च्युतही नहीं होता सदा निवास करता रहता व सुख भोगताहै १०५॥

चौ० जो यह उत्तमपुण्याख्याना। नित्य सुने जन परममहाना॥
अक्षय स्वर्ग लहै सो प्रानी। प्रासादिक फल पावे ज्ञानी १०६
ईश्वर धनिक पुण्यकारिन को। ज्ञानिमहात्मा मतिधारिन को॥
जो यह पाठ पढ़ावे कोई। कबहुँस्वर्गसोंनहिंच्युतहोई १०७
देवदास दासिन के आगे। देवालय महँ अतिअनुरागे॥

जो द्विज पढ़े शुद्ध उपखाना । मोक्षमार्ग्ग जावे युतज्ञाना १०८
नृप ईश्वर धनवान गुणिनके । वेदशास्त्रपाठी सुमुनिन के॥
आगे पढ़िकै मुक्ति लहै नर । सुने लहै सो फल करनेकर १०९

ऋषियों ने व्यासमुनि से पूँछा कि हे द्विजोत्तम ! मर्त्यलोक में सब पुण्योंसे श्रेष्ठपुण्यदायक कौन पदार्थहै जो पवित्रभीहो व सब तपस्वियों मुनियों को सुलभहो ११० व चारोवर्ण चारोआश्रम पापकारी मनुष्य गुणवान् अगुणवान् वर्ण अवर्ण सबको सुलभहो व सबके छूनेके योग्यहो १११ व्यासमुनि बोले कि ऐसा तो भूतलपर सब पवित्रों से पवित्र रुद्राक्ष है जिसके दर्शनमात्रसे लोगोंके पापों की राशि नष्ट होजाती है ११२ स्पर्श करने से स्वर्ग्गलोक भोगने को मिलताहै धारण करनेसे रौद्रता प्राप्तिहोती है इससे शिर छाती व बाहु में मनुष्य रुद्राक्ष धारण करे ११३ वह पुरुषलोक में महादेवके समान व यज्ञमें भी शिवके समान दिखाई देवे व वैसा मनुष्य जिस देशमें रहे वह देश पुण्यवान् होजाय ११४ उस नरको देखकर व स्पर्शकरके अन्यमनुष्य पापसे पवित्र होजाय व वह रुद्राक्ष धारण कियेहुये जो स्वस्तिपढ़े व जपकरे व तर्पणकरे व दान व स्नान व पूजा व प्रदक्षिणा करे ११५ व जो कुछ पुण्यकार्य्य करे वह सब अनन्त फलदेवे हे द्विजो ! तीर्थोंके महाफलको रुद्राक्ष देताहै ११६ इसके धारण करने से प्राणी पापसे पवित्रहोकर मोक्षभागी होताहै इससे अवश्य सब वर्णोंको रुद्राक्ष धारण करना चाहिये ब्रह्मग्रन्थियुक्त अच्छी रुद्राक्षकी माला लेकर ११७ जो जपाजाता है दान कियाजाता है स्तोत्र पढ़ाजाता मन्त्रउच्चारण कियाजाता व देवपूजन कियाजाता है सब अक्षय होजाता है व पाप क्षय होजाता है ११८ मालाका लक्षण कहते हैं हे द्विजश्रेष्ठो ! सुनो उसका लक्षण जानकर शिवमार्ग्ग पाओगे ११९ योनिरहित कीड़ों का खाया व छिद्ररहित व आपस में मिलेहुये बीजमालामें बरादेने चाहियें १२० व जो माला अपने हाथ से गँठिलाई गई हो वहभी वर्ज्जित है व जिसकी गांठ ढीलीहो व जिसकी गुटिका आपस में लड़जाती हों व शूद्रादिकों ने जिसमें गांठेंदीहों वह अशुद्धहोती है इससे दूरसे उसे

त्यागना चाहिये १२१ व मध्यमापर बीजलगारहे क्रमसे प्रत्येक गुटिकाको खींचतारहे हाथके चलानेसे बार २ उन बीजोंका स्पर्श होतारहे १२२ जो मन्त्र जपे वह गिनतीके साथ जपे क्योंकि विना गिनतीका जप निष्फल होजाताहै वह सब देवताओंके मन्त्र अपनी मालासे मनुष्य जपाकरे १२३ व पवित्र होकर जो किसी तीर्थ में जपे तो कोटिगुणा अधिक फल पावे तीर्थाभावमें किसी शुद्ध लीपी पोती पवित्र भूमिपर बैठकर जपे अथवा पवित्र पिप्पलादि वृक्षों के नीचे बैठकर जपे १२४ वगाइयों के गोष्ठमें चौरहापरके मन्दिर में विष्णुकामन्त्र शिवकामन्त्र गणेश व सूर्य्यकामन्त्र जपनेसे अनन्त फलहोता है १२५ शून्य मन्दिरमें वा जिस स्थानपर कोई मृतक हुआहो श्मशानभूमिमें चौरहे में देवीका मन्त्र जपनेसे तुरन्त सिद्ध होता है १२६ जितने वैदिकमन्त्र हैं व जितने पुराण और तन्त्र के मन्त्र हैं सब रुद्राक्षकी मालासे जपने से वाञ्छित इष्ट अर्थ के दायक होते हैं १२७ रुद्राक्षकी मालाका शुद्ध जल जो शिरपर धारण करता है वह सब पापों से पवित्र होकर पुण्यवान् होजाता है १२८ रुद्राक्षका प्रत्येक बीज प्रत्येक देवताके तुल्य होता है इससे जो मनुष्य धारण करता है वह सब देवताओं में श्रेष्ठ होजाता है १२९ ब्राह्मणलोगों ने पूँछा कि रुद्राक्ष कहां से उत्पन्न हुआ व कैसे पवित्र होगया व पृथ्वीपर स्थावर कैसे हुआ व उसका प्रचार प्रथम किसने किया १३० वेदव्यासजी बोले कि भो विप्रो ! प्रथमके सत्ययुग में त्रिपुरनाम दानव हुआ उसने देवताओं को वधकरके अन्तरिक्ष में अपने तीनपुर बनाये १३१ व ब्रह्मासे वर पाकर वह सब लोकों के नाश करनेपर उद्यत हुआ तब भयभीत देवताओंने जाकर महादेवजी से निवेदन किया तब उन्होंनें सुना १३२ तो अजगव धन्वा को चढ़ाकर उसमें अन्तक के समान प्रज्वलित बाण धारण किया व अपनी दिव्यदृष्टिसे अन्तरिक्ष में स्थित उसको देखकर मारा १३३ वह स्वर्ग से गिरीहुई महाउल्काके समान पृथ्वीपर गिरपड़ा व उसके मारने के समय महादेवजी कुछ व्याकुलहुये इससे उनके नेत्रों से जलके बूँद पृथ्वीपर गिरे १३४ वहीं आंसुओं के बूँदों से

महारुद्राक्षका वृक्ष पृथ्वीपर उत्पन्न हुआ उसका फल किसी जीवने गुप्ततासे न जाना १३५ तब कैलास शिखरपर देवदेव महेश्वरजी के पृथ्वीपर प्रणामकरके स्कन्दजी बोले १३६ कि हे नाथ! हम निश्चय करने के लिये रुद्राक्षका फल जाना चाहते हैं इसके जपने धारणकरने स्पर्श करने व देखने से क्या फलहोता है १३७ महादेवजी बोले कि रुद्राक्षके दर्शनसे लक्षपुण्य होती हैं स्पर्श करने से कोटि व दशकोटि पुण्य मनुष्य धारण करने से पाताहै १३८ व लक्षकोटि सहस्रलक्ष कोटिसौ पुण्य इसके जपने से मनुष्य पाताहै इस विषय में विचार न करना चाहिये १३९ उच्छिष्ट हो वा किसी खराब कर्म्म करने में टिकाहो वा सब पापों से युक्तहो रुद्राक्ष धारण करने से सब पापों से छूटजाता है १४० गलेमें रुद्राक्ष पहिनकर जो चाण्डाल भी मरे वह भी रुद्ररूप होजावे फिर मनुष्यादिकों को क्या कहनाहै १४१ ध्यान धारणसे हीनभी पुरुष जो रुद्राक्ष धारण करे तो सब पापों से छूटकर परमगतिको जावे १४२ स्कन्दजी बोले कि हे शङ्कर! रुद्राक्ष एक मुख द्विमुख त्रिमुख चतुर्म्मुख पञ्चमुख षण्मुख सप्तमुख अष्टमुख नवमुख दशमुख व एकादशमुख १४३ द्वादशमुख त्रयोदशमुख व चतुर्दशमुखयुक्त कल्याणकारी कहे हैं १४४ उनके मुखभेदसे देवता कौन २ हैं हमसे कहो हे जगदीश्वर! उनका गुण और दोषभी कहो १४५ जो हमारे ऊपर अनुग्रहहो तो यथार्थ कहो ईश्वरजी बोले कि एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिव है इससे ब्रह्महत्या को दूर करता है १४६ इससे सब पापक्षय होने के लिये देह में धारण करे वह शिवलोक को जाता है व शिवके साथ मोदित होता है १४७ बड़ी पुण्य के योगसे व शिव के अनुग्रह से एकमुखी रुद्राक्ष व कैलास मनुष्य पाता है क्योंकि हे षडानन! वह मुक्ति का मार्ग्ग है १४८ देव वा देवी वा नर जो कोई द्विमुखी रुद्राक्ष धारण करता है उसके गोवधादि से बटोरेहुये सब गुप्त पाप नष्ट होजाते हैं १४९ व अक्षय स्वर्ग्गलोक पाता है द्विमुख की रुद्राक्ष धारण करने से त्रिमुखी रुद्राक्ष साक्षात् अग्निरूप है वह जिसके शरीर में रहता है १५० उसके उस जन्मके पाप को भस्म करता है

जैसे अग्नि इन्धन को भस्म करता है स्त्रीहत्या ब्रह्महत्या व बहुतों की हत्यासे १५१ जो पाप पुरुष पाताहै वह सब तुरन्त नष्ट होजाता है जो फल अग्निपूजा में अग्निकार्य्य में घीकी आहुति देनेसे मनुष्य पाताहै १५२ वह फल मनुष्य पाताहै व अनन्त स्वर्ग्गसुख भोगता है त्रिमुखी रुद्राक्ष जो धारण करता है वह पृथ्वीपर ब्रह्मा के समान होताहै १५३ व जन्म २ के कियेहुये दुःखसमूह को भस्म करता है उसके पेटमें कोईरोग नहींहोता न कोई विपत्ति होती है १५४ पराजय कभी नहीं होती न अग्निसे कभी घर जलता है इतने ये फल होते हैं व अन्य सब वज्रादि पातसे निवारण होताहै १५५ त्रिमुखी धारण करने से कोई भी अशुभ नहीं होता चतुर्म्मुखी रुद्राक्ष आप ब्रह्माकी मूर्त्ति है सो जिसकी देहपर रहताहै १५६ वह ब्राह्मण सब शास्त्रों के जाननेवाले ब्राह्मणों में श्रेष्ठ होताहै सब धर्म्मशास्त्रों के अर्थ जानता है व सब स्मृति व पुराणों को जानने लगताहै १५७ जो पाप मनुष्यहत्या में होताहै व बहुतसे घर जलादेनेसे होताहै वह सब चतुर्म्मुखी धारणकरनेसे शीघ्रही नष्ट होजाताहै १५८ महेशजी सन्तुष्ट होते हैं व वह सब प्राणियों का स्वामी होता है सद्योजात सदेशान तत्पुरुष घोरदर्शन १५९ व वामदेव ये पांचदेव पञ्चमुखी रुद्राक्षमें सदा स्थित रहते हैं इससे पृथ्वीपर बहुधा पञ्चमुखी सब कहीं होतेहैं १६० यह रुद्राक्ष रुद्रका पुत्ररूप है इससे पण्डितको चाहिये कि इसको धारणकरे कल्पकोटिसहस्र व कल्पकोटिसौ १६१ इतने कालतक शिवकेआगे सुरासुरों से वह पूजित होताहै व जब पृथ्वीपर जन्मपाता है तो चक्रवर्ती राजा होता है सब तेजों से युक्त शिव के स्थानमें होताहै १६२ इससे सब यत्न से पञ्चमुखी को धारणकर व षण्मुखी रुद्राक्ष षडानन अपने दहिने भुजपर धारण करते हैं १६३ इस से जो कोई अपने दक्षिणभुजपर इसे धारण करताहै वह ब्रह्महत्यादि पापों से छूटजाता है इसमें संशय नहीं है वह कल्पान्त के पीछे स्कन्द के तुल्य शूरहोताहै १६४ उसकी पराजय कभी नहीं होती व वह गुणों की खानि होजाताहै व जैसे महादेव के नन्दन कुमारजी हैं ऐसाही वहभी होजाताहै १६५ ब्राह्मण राजाओंसे पूजितहोताहै

व क्षत्रिय जयपाताहै व वैश्य शूद्रादिक सदा ऐश्वर्य्यसे पूरित रहते हैं १६६ व उस पुरुषको गौरी वरदान करती है और माताकी तरह सुलभ होतीहै फिर अपने भुजकेबलसे वह मनुष्य संसारभरको जीतनेवाला होजाताहै १६७ प्रशस्तवादी व धीर अन्यसभामें व राजमन्दिर राजसभामें होताहै व रणमें न कभी कातर होताहै न कभी भागताहै १६८ इतने ये व अन्य सब षण्मुखी रुद्राक्षके धारण करने से फल होते हैं व सप्तमुखी महासेन अनन्तनाम नागराज है १६९ इसके प्रत्येकमुख में प्रत्येकनाग स्थितरहते हैं जैसे कि अनन्त कर्कट पुण्डरीक तक्षक १७० विषोल्वण कारीष व सातवें शङ्खचूड़ ये सब महावीर्य्य सप्तमुखीके सातो मुखोंमें व्यवस्थित रहते हैं १७१ इस रुद्राक्षके धारणमात्र से शरीर में विषनहीं व्याप्तहोता वह पुरुष हरको अत्यन्तप्रिय होजाताहै जैसे कि सब नागों के राजा वासुकि शिवको प्रियहैं १७२ व हमारी प्रीतिसे धारण करनेवालेके सब पाप दिन२ नष्टहोते रहते हैं ब्रह्महत्या मदिरापान चोरीआदि गुरुकी शय्यापर बैठनेआदिसे १७३ जो पाप मनुष्य पाताहै सब तुरन्त नष्टहोजाते हैं व तीनोंलोकों में देव महादेवके सदृश भोग निश्चय से पाताहै १७४ अष्टमुखी रुद्राक्ष महासेन साक्षात् विनायक देवहै इसके धारण करने से जो पुण्य होती है वह हमसे सुनो १७५ जन्म जन्म न तो वह मूर्खहोता न बीमार न नष्टबुद्धि होता है व उसके सब काजोंमें निरन्तर अविघ्न रहता है १७६ लिखने में बड़ी निपुणता होती है व महाकार्य्योंमें कुशलता व सब आरम्भों के कार्य्योंमें उसको प्रतिदिन सामर्थ्य होतीजाती है १७७ झूँठाई के पाप घाटतौलनेके पाप सब झूँठाइयों के पाप लिङ्ग पेट हाथसे गुरुस्त्री छूनेका पाप १७८ इन्हें आदि सब अतिपापोंसे छूटकर स्वर्गसुखभोगकर परमगतिको जाता है १७९ ये सब गुण अष्टमुखी के धारण करने से होते हैं नवमुखी रुद्राक्षके भैरव देवहैं उसे जो बाहुपर धारण करताहै १८० उसमें भी श्वेतरङ्गकी नवमुखी जोकि मुक्तिदायक होताहै वह तो हमारे तुल्य बली होजाता है इसमें कुछभी अन्तर नहीं है जो लक्षकोटिसहस्र ब्रह्महत्या करता है १८१ नवमुखी के धारण करने से सब शीघ्रही

नष्टहोजाती हैं व देवलोक में जाकर वह इन्द्रके समान देवताओं से पूजित होता है १८२ व महादेव के समान शिवके गृह में रहकर गणेशही होजाता है इसमें संशय नहीं है व दशमुखवाले रुद्राक्षके धारण करने से सर्प्पनष्ट होजाते हैं क्योंकि इस रुद्राक्ष के गरुड़ देवहैं १८३ व हे वत्स ! एकादशी मुखवाले के एकादश रुद्रदेवता हैं इसको नित्य शिखा में धारण करना चाहिये उसकी पुण्यका फल सुनो १८४ सहस्र अश्वमेध यज्ञ व अन्य कोटियज्ञ व सौसहस्र गोदान का फल अच्छेप्रकार करने देने से जो होताहै १८५ वह एकादश मुखवाले के धारण करने से शीघ्र होताहै व वह हरके तुल्य होजाता है लोकमें फिर उसका जन्म नहीं होता है १८६ व द्वादश मुखवाले रुद्राक्षों के गलमें धारण करने से उनके बारहों मुखपर स्थित बारहोंसूर्य्य सन्तुष्टहोते हैं १८७ व गोमेध नरमेधयज्ञ करने से जो फल भोगने को मिलता है वह फल शीघ्र मिलताहै व वज्रादिक का निवारण होता है १८८ अग्निकी भय नहीं होती न कोई व्याधि होती है धनकालाभ व सुखहोता है वह प्राणी धनाढ्य होजाता है दरिद्रता उसके निकट नहीं आती १८९ हाथी घोड़ा मनुष्य बिलार मूप खरहा सर्प्प वृक कुत्ता व्याघ्रादि शृगालादि मारनेसे जो पाप होता है १९० द्वादश मुखवाले के धारण करनेसे उससे छूटजाता है इसमें सन्देहनहींहै व त्रयोदश मुखवाले रुद्राक्ष जो मिलें १९१ तो कल्याणकारी हैं व इससे वह सब कामों के फल देताहै इसके धारण करने से रसायनविद्या सिद्धहोती है व धातुओं का मारण प्रवीणता आजाताहै १९२ उस भाग्यवान् के हे षण्मुख! ये सब उसको सिद्धहोजाते हैं इसमें कुछभी अन्तर नहीं सत्यही कहते हैं माता पिता बहन गुरु भ्राता इनको भी जो कोई मारडालताहै १९३ वह भी त्रयोदशमुखीके धारणसे उसपाप से छूटजाता है व अक्षय स्वर्गलोकपाताहै जैसे महेश्वरदेवहैं वैसाही होजाता है १९४ व हे वत्स! जो चतुर्दशमुखीरुद्राक्ष कोई धारण करताहै शिर में व बाहुमें वह तो शिवकी शक्तिका रूपही होजाताहै १९५ व बार बार बहुत वर्णन करनेसे क्याहै वह पुण्यके गौरवसे सदा देवताओं

से पूजितहोताहै व स्वर्ग्गलोकसे कभी भूतलपर नहीं गिरता १९६ षडाननजी ने इतना सुनकर फिर महादेवजी से पूँछा कि हे भगवन्! मुख २ का जैसा धारण करने का विधानहै व जिस मन्त्रसे न्यासकरने का विधानहै हम सब सुनाचाहते हैं १९७ महादेवजी बोले कि हे षण्मुख! सुनो प्रत्येक मुखका जैसा विधानहै निश्चयकरके कहते हैं ये गुण जो कहेगये हैं विना मन्त्रोच्चारणहीके धारणकियेके हैं १९८ व जो मनुष्य पृथ्वीपर मन्त्रसंयुक्त धारणकरताहै उसकेगुण व महत्त्व नहीं कहसक्ते १९९ अब मन्त्रकहते हैं ॐरुद्रःएकवक्त्रस्य यह एकमुखी रुद्राक्षके धारणका मन्त्रहै ॐस्वन्द्विवक्त्रस्य यह द्विमुखी का ॐभुन्त्रिवक्त्रस्य यह त्रिमुखीका है ॐह्रींश्चतुर्व्वक्त्रस्य यह चतुर्मुखी का ॐह्रींम्पञ्चवक्त्रस्य यह पञ्चमुखीका ॐह्रंषड्वक्त्रस्य यहषण्मुखी का ॐह्रस्सप्तवक्त्रस्य यह सप्तमुखीका ॐक्ष्मष्टवक्त्रस्य यह अष्टमुखीका ॐक्ष्रून्नववक्त्रस्य यह नवमुखीका ॐक्षंदशवक्त्रस्य यह दशमुखीका ॐश्रीमेकादशवक्त्रस्य यह एकादशमुखीका ॐह्रीन्द्वादशवक्त्रस्ययह द्वादशमुखीका ॐद्यौन्त्रयोदशवक्त्रस्य यह त्रयोदशमुखी का ॐन्नांचतुर्द्दशवक्त्रस्य यह चतुर्दशमुखी के धारणकरनेका मन्त्र है इसप्रकार यथाक्रम इन मन्त्रोंका न्यास करनाचाहिये शिरमें व छाती में माला धारणकरके जो मनुष्य चलताहै प्रत्येकपदपर अश्वमेधयज्ञ का फलपाताहै यह अन्यथा नहीं है २०० सनमुखवाले रुद्राक्षों के धारणसे मनुष्य हमारे समान होजाता है इससे हे पुत्र! बड़े यत्नसे सब रुद्राक्षों को धारण करो २०१ रुद्राक्ष धारण करके जो मनुष्य पृथ्वीपर मरताहै वह सब देवोंसे पूजित होतेहुये हमारेपुरको जाताहै २०२ हे वत्स! मरुदेशमें पहिले वाणिज्य के लिये एक बनियां अपनी बनिन को भी सङ्ग लिये जाताथा इतने में एकवृक्ष के नीचे पहुँचा इतने में उसके ऊपर वज्रपातहुआ जिससे वह मृतकहोगया २०३ व उसकी स्त्री भी मृतकहोगई पर वह प्रेतहोकर नाचनेलगी उसे नाचते देखकर एक ब्राह्मणने उससे पूँछा कि तू कौन है जो जीर्णवस्त्र धारण किये नाचती है दीन है तू २०४ तब वह उस ब्राह्मण से बोली कि मैंने आकाशवाणी सुनी थी कि इस पुरुषका मरण निश्चय है कि

वज्रपात से अभी होगा २०५ सो मेरे पतिका मरण सत्यही वज्रपातही से हुआ व मेरा भी सो जब इस अन्तर में मेरे पति के शिरपर आकाश से वज्रगिरा तो यह पृथ्वी में गड़ेहुये एक रुद्राक्ष के टुकड़ेपर जा गिरा उसके प्रभाव से हे पुत्र! हमारे आगे जल्दी विमान आया उसपर सवार होकर मेरा पति शिवपुर को चलागया मैं उसी हर्ष से नाचतीहूँ उस ब्राह्मणने कहा कि तेरापति पुण्यात्मा ठहरा जो कि अपमृत्यु को पाकर भी रुद्राक्षके खण्डके प्रभाव से शिवलोकको गया उसीके पुण्य से तुझको भी वहां पहुँचना चाहिये इस बातको सुनकर हमारे पुरसे एक और विमान आया व उस ब्राह्मण के वचन के सत्य करने के लिये उस बनिन को भी चढ़ाकर हमारे लोक को लेगया वे दोनों अबभी हमारे लोक में बहुत दिनों से हैं व रहेंगे इसप्रकार रुद्राक्ष के खण्डपर मरने के समय वह बनियां हमारे लोक को चलागया व उसीकी पुण्य से उसकी स्त्री भी २०६ । २०८ ॥

चौ० इमिमरि वैश्यगयहु ममधामा । जो धारंत रुद्राक्ष सुसामा ॥
नहिं कहिसकत तासु फल कोई । पावत पुरुष जौनगतिसोई २०९
मरण समय जाके गलमाला । अरु शिर यक रुद्राक्ष विशाला ॥
वैष्णव शैव सौर गाणेशा । चहत होत सो नाहिं अँदेशा २१०
जो यहिं पढ़त पढ़ावत नीके । सुनत सुनावत सब विधि ठीके ॥
सर्व्वपापतजि मोक्षहि पावत । अन्यसकलसुख निजमनभावत २११

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेरुद्राक्षमाहात्म्यं नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

दो० साठीके महँ धात्रिका फल माहात्म्य महान ॥
पुनि तुलसी माहात्म्यकुछ वर्णितसहितविधान १

स्कन्दजीने महादेवजीसे पूँछा कि हम अब अन्य किसी वृक्षकी पवित्रता पूँछते हैं हे जगदीश्वर! सब लोगों के हितके लिये कहिये १ महादेवजी बोले कि सब लोकों में विख्यात आमलकी का फल

परमपवित्र है जिसके लगाने से चाहे नरहो वा नारी जन्मके बन्धन से छूटजाता है २ यह फल अतिपवित्र होनेके कारण वासुदेवजी को अतिप्रिय है व इसके भक्षणमात्र से प्राणी सब पापों से छूटता है ३ भक्षण करने से आयु बढ़ती है पान करने से धर्म्म इकट्ठे होताहै उसको लगाकर स्नान करनेसे अलक्ष्मी नाश होता है व सब ऐश्वर्य्य मिलता है ४ हे षडानन ! जिस गृहमें सदा धात्रीफल रहतेहैं वा उसका वृक्षही लगारहता है उस गृह में प्रेत दैत्य व राक्षस नहीं जाते ५ जब एकादशीके एकदिन एक भी धात्रीफल मनुष्योंके गृह में रहता है तो उस गृह के समान पवित्र न गंगा रहती हैं न गया न काशी न पुष्कर ६ दोनों पक्षकी एकादशियों में जो अमरा के फल देह में लगाकर वा जल में डालकर स्नान करता है उस के सब पाप नष्ट होजाते हैं व वह विष्णुलोक में जाकर पूजितहोता है ७ हे षडानन ! धात्रीफलका भक्षण व स्नान हरिवासर में नियत है परन्तु व्रत के दिन केवल धात्रीफलसहित स्नान करना चाहिये व पारण के दिन धात्रीफल भक्षण करना चाहिये ८ व जो धात्रीफल खाकर एकादशी का व्रत करता है व व्रत के दिन आमलकीफल से स्नान करता फिर पारण के दिन द्वादशी को धात्रीफल खाताहै एकादशी चाहे कृष्णपक्ष की हो वा शुक्लपक्षकी हो ९ सो हे षडानन ! एकही उपवास इस विधि से करनेसे सात जन्मके किये हुये पापोंसे करनेवाला छूटजाता है इसमें संशय नहींहै १० अक्षय स्वर्गलोक पाता है फिर श्रीविष्णुकी सायुज्य मुक्ति पाता है इससे सब प्रयत्नों से धात्रीस्नान स्पर्श व दर्शन करनाचाहिये ११ क्योंकि धात्री के द्रव से जिसके बाल निरन्तर मलेजाते हैं वह फिर हे षडानन ! माताका दूध कभी नहीं पीता यानी मुक्त होजाता है १२ क्योंकि धात्री के दर्शन करने स्पर्श करने व इनके अभाव में नाम उच्चारण करने से सन्तुष्टहोकर श्रीविष्णु वर देते हैं व सम्मुख दर्शन देते हैं १३ जहां धात्रीफल रहता है वहां केशवभगवान् रहते हैं व वहां सरस्वती लक्ष्मी दोनों स्थिरहोकर रहती हैं व ब्रह्मा रहते हैं इससे धात्रीफल अवश्य गृहमें स्थापितरक्खे १४ क्योंकि जहां धात्री

प्रतिष्ठित रहती है वहां अलक्ष्मी नष्ट होजातीहै व सन्तुष्ट होकर उस स्थान को देवतालोग मारेहर्ष के कभी नहीं छोड़ते १५ जो कोई धात्रीफलसहित नैवेद्य देताहै उसके ऊपर विष्णु सन्तुष्ट होते हैं अन्य सैकड़ों यज्ञोंसे इतना नहीं सन्तुष्ट होते १६ धात्रीफल के रससे स्नान करके जो लक्ष्मीनाथ की पूजा करता है व उसके मनमें जो अभीष्ट होताहै उसका फल पाताहै १७ व ऐसेही धात्रीके लक्षणका स्मरण करके व फलसे पूजा करके मनुष्य सैकड़ों सहस्रों सुवर्णपुष्पों से पूजाकरने का फल पाता है १८ हे स्कन्द ! जो गति योगसे विज्ञानी मुनियोंकी होतीहै उस गतिको धात्री सेवा करनेवाला पाताहै १९ तीर्थसेवा तीर्थयात्रा करने से व विविधप्रकारके व्रत करने से वह गति नहीं पाता जो कि धात्रीफलकी अच्छी सेवा करनेसे मनुष्य पाताहै २० हे तात ! धात्रीफलकी सेवा करने से सब देवताओं सब देवियों व हमारे सब गणोंकी प्रीतिहोती है व स्नान करने से सम्मुख होकर २१ सब वर देते हैं धात्रीफल के सेवन से जो कोई दुष्टग्रह हैं व उग्रस्वभाववाले दैत्य राक्षस हैं वे सब दुःखदायी नहीं होते २२ हे पुत्र ! सब यज्ञों में सब कार्य्यों में व सब देवताओं की पूजा में आमलकीका फल उत्तम व प्रशस्तहोता है पर सूर्यको छोड़कर २३ इससे हे तात ! रविवासर को व विशेष करके सप्तमी को धात्रीफल के निकट न जाना चाहिये २४ रविवार को जो कोई धात्रीफल से स्नान करता है वा भोजन करता है आयु धन स्त्री सब उसके नष्ट होजाते हैं २५ संक्रान्ति शुक्रवार षष्ठी प्रतिपदा नवमी व अमावास्या में धात्रीको दूरसे बराना चाहिये २६ मरण के समय मुख पेट शिर केश शरीर नाक कान इनमें जिसके धात्रीफल रहता है वह विष्णु-मन्दिर को जाता है २७ धात्रीफल के केवल स्पर्शमात्र से मरनेपर मनुष्य श्रीविष्णुके लोकको जाताहै उसके सब पाप क्षय होजाते हैं विमानपर चढ़कर स्वर्ग को जाताहै २८ धात्रीफल का सरस चूर्ण लगाकर जो पुरुष स्नान करने को चलता है वह धर्म्मात्मा पदपद पर अश्वमेध का फल पाता है २९ इस धात्रीफल के दर्शनमात्र से जो कोई पापिष्ठ जन्तु होते हैं व दारुण दुष्टग्रह होते हैं सब पवित्र

होकर सौम्यस्वभाव होजाते हैं ३० पूर्वसमय में हे स्कन्द ! एक चाण्डाल व्याधा शिकार खेलनेगया बहुत से मृग पक्षियों को मार कर पिपासा से पीड़ितहुआ ३१ व क्षुधासे भी पीड़ित हुआ उसे आगे एक अमराकावृक्ष बड़े बड़े फलोंसे युक्त दिखाई दिया बस उसपर चढ़कर उसने अच्छीतरह आमलकी के फलखाये ३२ पर भाग्यवश वह वृक्ष परसे पृथ्वीपर गिरपड़ा बड़ी चोट लगने के कारण तुरन्त वहीं मृतकहोगया ३३ तब सब प्रेतगण व राक्षस भूतगण वहां आये व यमराजके सब सेवकोंने उसका शरीर उठा लेजानेका यत्नकिया ३४ परन्तु उठाना तो दूररहा उस मरेहुये चाण्डालके सामने वे सब देखही न सके तब सब आपसमें एक दूसरेसे यह हमाराहै यह कहकर लड़ने लगे ३५ परन्तु न कोई उसको उठायही सका न निकट जाकर देखही सका तब वे सब मुनिगणों को देखकर उनके पासगये ३६ व उनसे बोले कि हे धीर मुनिलोगो ! इस पापकारी चाण्डाल को हम प्रेत लोग व यमराज के सेवकलोग किसलिये नहीं देखसक्ते ३७ जो अन्य जीवोंको मारते हैं वे जब मृतक होते हैं वा जो युद्धसे डरकर भागते हैं व पीछेसे शस्त्रोंसे मारडालेजाते हैं व जो वज्र अग्नि काष्ठसे डर कर फिर उन्हीं से पीड़ितहोकर मरते हैं ३८ जो मनुष्य सिंह व्याघ्रों से मारेजाते हैं वा वृकोंसे मारेजाते हैं वा जलके जन्तु मत्स्य नक्रादि-कोंसे मारेजाते हैं वा जलस्थलमें कहीं स्थित प्रेतों से मारेजाते हैं जो वृक्षों व पर्व्वतों परसे गिरकर मरते हैं ३९ जो पशु पक्षियोंसे मारे जातेहैं व जो वन्दीखाना में व विषसे मरते हैं वा जो आत्मघात करके मरते हैं व जिनके श्राद्धकर्म्म नहीं होते ४० जो गुप्तस्थान में किसी व्यभिचारादि कर्म्म करनेके कारण मारडालेजाते हैं व जो धूर्त गुरु ब्राह्मण व राजासे वैररखते हैं जो पाखण्डी होते हैं जो कौलिक वाममार्गी मद्य मांस मत्स्यादि पञ्चमकारसेवी होते हैं जो क्रूर किसी को विषखिलादेते हैं जो झूँठी साखीदेते हैं ४१ जो अशौचका अन्न खाते हैं वे प्रेतलोक को जातेहैं इसमें सन्देह नहीं है हम सबलोग व धर्म्मराज के सेवक व राक्षस दैत्यलोग क्याकरें सबलोग कहते ही रहे कि यह चाण्डाल हमाराहै हम लेजायँगे यह हमारा है हम

लेजायँगे परन्तु कोई भी इसे न लेजासके ४२ सूर्य्य के समान बड़े दुःख से देखने के योग्य यह कौन है व इसका कौन प्रभाव है बताइये मुनिलोग प्रेतादिकों से बोले कि हे प्रेतो ! इसने पकेहुये आमलकी के फल खाये हैं ४३ व इसीके चढ़नेके कारण बहुत से फल पृथ्वीपर गिरपड़ेथे उन्हींके ऊपर यह गिरा व मरा इस कारण से तुमलोग इसे नहीं देखसक्के ४४ यह वृक्ष परसे गिराभी पर मारेस्नेह के अभी इसने प्राण नहीं छोड़े पर अब प्राण छोड़ता है क्योंकि न तो यह रविवार है न शुक्रवार जिसदिन आमलकी के नीचे जानेका निषेध है ४५ आज तो सोमवार है इसलिये धात्री-फलके भक्षणमात्र से यह पापसे छूटकर स्वर्ग को चलाजायगा यह सुनकर प्रेत बोले कि हमलोग कभी किसी की निन्दा नहीं करते अज्ञान से तुमलोगों से कुछ पूँछना चाहते हैं ४६ जबतक देवलोक से इसके लिये विमान न आवे तबतक हमारे पूँछनेका उत्तरदेओ हे मुनिशार्दूलो ! जो तुमलोगोंके मन में स्थितहो कहो ४७ जबतक ब्राह्मणलोग तुमलोगों के स्थानपर वेद नहीं उच्चारणकरते तभी तक हमलोग यहां खड़े हैं क्योंकि जहां वेदमन्त्र व वेद पढ़ेजाते हैं व तरह तरहके मन्त्र पढ़ेजातेहैं ४८ व जहां पुराणपढ़ेजाते जहां मन्वादि स्मृतियां पढ़ीजाती हैं वहां हमलोग क्षणमात्रभी नहीं ठह-रसक्के व यज्ञहोम जपके स्थान में भी नहीं ठहरसक्के देवपूजनादि कर्म्मों के स्थानों में नहीं ठहरसक्के ४९ इससे हाल कहो हे द्विजो! क्या करके मनुष्य प्रेतयोनि पाता है ५० यह अच्छी तरह सुना चाहते हैं कि विकृत शरीर कैसे होते हैं तब यह सुनकर ब्राह्मण बोले शीत वात घाम के क्लेशों से व क्षुधा पिपासा विशेष दुःखों से ५१ व अन्यभी बहुत दुःखोंसे झूठगवाही देने से सदा पीड़ित रहते हैं व जो लोग किसी को मारडालते हैं वा अकस्मात् बँधुआ करते हैं वे प्रेतहोकर नरकमें जाते हैं ५२ व जो लोग औरोंके अवगुणादि छिद्र ढूँढ़ाकरते हैं व ब्राह्मणों के कर्म्मोंका घात करते हैं व अपने गुरु माता पिताआदिके कर्म्मोंका घात करते हैं वे प्रेत कभी प्रेत योनिसे नहीं छूटते ५३ व जो दानकरतेहुये दाताको रोकता है वह

बहुत कालतक प्रेतहीरहता है कभी नरकसे निवृत्तही नहींहोता ५४ व जो मूढ़ पराई स्त्री को अपने वशमें करलेतेहैं फिर उसका पालन पोषण नहीं करते व अपनी स्त्रीका भी पालन नहींकरते निरपराध उसका परित्याग करते हैं वे लोग मरनेपर प्रेत होते हैं ५५ व जो नर प्रतिज्ञाकरके फिर उसे नहीं करते व बहुधा मिथ्या बोलते हैं व व्रतभङ्ग करडालते हैं व कमल के पत्तेपर भोजन करते हैं वे भी अपने कर्म्मसे भूतल पर प्रेत होते हैं ५६ जो लोग अपनी व चाचा व मामाकी शुद्ध कन्या व स्त्री को बेचतेहैं वे कर्मसे पृथ्वीपर प्रेत हो-ते हैं ५७ इत्यादि अन्यभी नानाप्रकार के कुकर्म्म करनेवाले लोग सदा पृथ्वीपर प्रेतही होकर रहतेहैं प्रेतोंने पूँछा कि हे ब्राह्मणो! कि-सकर्म्म के करने से मनुष्य प्रेत नहींहोता ५८ हमलोगों के हितके लिये व अन्यलोगों के हितके लिये तुरन्त हमलोगों से कहो ब्राह्मण लोग बोले कि जो बुद्धिमान्लोग विधि से तीर्थों में स्नान करतेहैं ५९ व देवमूर्त्तियोंके प्रणाम करतेहैं वे मनुष्य प्रेत नहींहोते एकादशी व्रत रहकर व एकादशीके अभावमें द्वादशीका व्रत विशेषकरके रह कर ६० श्रीहरिकी पूजाकरते हैं वे लोग प्रेत नहीं होते वेदके मन्त्रों से व पुराणोंके स्तोत्रों वा मन्त्रोंसे ६१ जो देवताओंके पूजनमें रतरहते हैं वे लोग प्रेत नहीं होते पुराणको सुनकर व दिव्यसन्वादि धर्म्म शास्त्र सुनकर ६२ व इनको पढ़कर व पढ़ाकर मनुष्य प्रेत नहींहोता विविधप्रकारके व्रतोंसे पवित्र व रुद्राक्षके धारणसे ६३ पवित्र व रुद्राक्ष की मालासे मन्त्र जपने से मनुष्य प्रेत नहीं होते धात्रीफल के रसमें स्नान करनेवाले व नित्य उनके भक्षण करनेवाले ६४ व धात्रीफलों से विष्णुकी पूजा करनेवाले पिशाच नहीं होते प्रेतलोग बोले कि पौराणिकलोग कहते हैं कि सज्जनों के दर्शन से पुण्यहोती है ६५ इससेही धीरो अपने दर्शन से हमलोगों का हितकरने के योग्य आप लोगहैं अब ऐसा कोई उपदेश दीजिये जिससे हम सबोंकी प्रेतभाव से मुक्तिहो ६६ इससे भो धीरो! कोई व्रतादि उपदेशकरो क्योंकि हमलोग आपलोगों के शरण में आये हैं यह सुनकर वे दयालु मुनि लोग उन प्रेतोंसे बोले ६७ कि तुमलोग मुक्तिके लिये धात्रीफल

शीघ्र भक्षणकरो प्रेतबोले कि हे ब्राह्मणलोगो ! हमलोग तो धात्रीके वृक्षके दर्शनमात्र को वहां ठहर नहीं सक्ते ६८ फिर उनके फलों के भक्षणकरने में हमलोगों की शक्तियां इस समय कैसे होसकें ब्राह्मणलोग बोले कि हमलोगोंके वचनसे तुमलोग धात्री के समीप जासकोगे इससे जाकर उसके फल खाओ ६९ तुमलोगों का परलोक सफलहोगा उनलोगों से वरपाकर पिशाचलोगों ने धात्री के वृक्ष पर ७० चढ़कर लीलापूर्व्वक यथेष्ट फल भक्षण किया तब स्वर्ग्ग से बड़ी शीघ्रता के साथ बड़ाभारी सुन्दर विमान ७१ आया उस पर चढ़कर वह चाण्डाल व वे सब पिशाच स्वर्गको चलेगये हे पुत्र ! जहांका जाना व्रतों व यज्ञोंसेभी दुर्ल्लभहै धात्री भक्षण करने का मुख्य करके मरण के समय ऐसा अद्भुत माहात्म्य है ७२ यह सुनकर स्कन्दजीने पूँछा कि धात्रीके भक्षण करनेसे आपने कहा कि पूर्व्वकाल में प्रेत स्वर्गको चलेगये परन्तु उसके भक्षण करनेसे अब अन्य मनुष्यादि क्यों स्वर्ग्ग को नहींजाते ७३ महादेवजी बोले कि पूर्व्वसमयमें ज्ञानके लोप होनेसे वे प्रेतलोग अपना हित अहित नहीं जानतेथे क्योंकि उच्छिष्ट रहते व श्लेष्मा मूत्र विष्ठाआदि खातेथे ७४ हे ब्राह्मणो ! मोहके वशीभूत होनेसे प्रेत सदा विष्ठा मूत्र ख्यँखारआदि भोजन करते हैं प्रेतलोग बार बार मल त्याग करनेपर शौच करनेसे बचावचाया व मलमिश्रितभी जल सदा पीते हैं व शूकर मुरगा कौआ आदिका मांस खातेहैं ७५ व जिसने मृतकसूतक और जननसूतकसे युक्त पुरुषके घरकाअन्न कभी नहीं छोड़ा खाताही रहा उसके घरका अन्न व जल सदा प्रेत खातेपीते रहते हैं ७६ व जिसकी स्त्री अपनी इन्द्रियों को अपने वशमें नहीं रखती सदा अपवित्र बनीरहती है संयम से वर्जित रहती व अपने सास श्वशुरआदि गुरुजनों को घर से निकाल देती है उसके गृहमें प्रेत नित्य भोजनकरते हैं ७७ व जो लोग अपनी जातिसे भ्रष्टहोजाते हैं व अपने बलउत्साहको छोड़ देते हैं वे लोग बहिरे अंधे दुर्बल कर्मसे प्रेत होते हैं ७८ उनको क्षण-मात्र भी कभी मंगलकी बात नहीं होती व सदा दुःखों से युक्त बने रहते हैं आकार विकृत हैं व भयंकर हैं सब भोगों से विवर्जित

रहते हैं ७९ व सदा नंगे रहतेहैं रोगोंसे युक्तरूखी शरीरके मलसहित बनेरहतेहैं ये जो गिनायेगये और बहुतसे दुःखसे पीड़ित प्रेतजाति ८० उसी कर्मके विपाकसे यथेष्ट ऐसेहोते हैं ब्राह्मणलोगबोले कि जो लोग पिता माता व गुरुजनोंकी व देवताओंकी निन्दामें रतरहतेहैं ८१ पाखण्ड करते हैं कौलधर्म्म में टिकेहुये मद्य मांस मत्स्यादि पञ्चम-कारों की सेवा करते हैं वे सब अपने पापकर्मोंसे पृथ्वीपर प्रेतही होते हैं व जो गले में फांसी लगाकर जल में डूबकर शस्त्रों से मारकर व विषखाकर आत्मघात करते हैं ८२ वे प्रथम तो प्रेतहोतेही हैं फिर चाण्डालादि योनियों में उत्पन्न होते हैं जो अन्त्यज पतितहो-जाते हैं व कुष्ठादि पापरोगों से युक्तहोकर मरते हैं ८३ वा युद्धमें अन्त्यजों के हाथोंसे मारेजाते हैं वे निश्चय पृथ्वीपर प्रेतही होते हैं जो ब्रह्महत्यादि महापापों से संयुक्त होनेके कारण विवाह से बाहर करदिये जाते हैं ८४ व शूरता के कारण बड़ी शीघ्रता से निरपरा-धियों को विना विचारे मारडालते हैं वे भी पृथ्वीपर प्रेतही होते हैं जो लोग राजासे द्रोहकरते हैं व माता पितासे द्रोहकरने का विचार रखते हैं ८५ न वेदशास्त्र पढ़ते न पढ़ाते हैं व व्रत नहीं करते न देव-पूजा करते हैं व मन्त्र व स्नानसे हीनहोते हैं व गुरुस्त्रीके सङ्ग भोग करते हैं ८६ व ऐसेही पासी कोरी चमारआदि अन्त्यजों की स्त्रियोंके सङ्ग भोगकरते हैं व अन्य नारकी योनिवाले भङ्गी डोम कोलभिल्ला-दिकों की स्त्रियोंके सङ्ग मैथुन करते हैं व जो क्रूर हठसे किसीके ऊपर उपवास करके मरजाते हैं वा किसी म्लेच्छदेश में जाकर मरते हैं ८७ वा म्लेच्छों की भाषा बोलने से अशुद्धहोकर मरते हैं अथवा म्ले-च्छोंके सन्निकट रात्रि दिन रहकर उनकी सेवासे जीते हैं व जो अपनी स्त्रीको अन्य किसी के पास भेजकर उस द्रव्यसे जीते हैं अथवा स्त्री का धन जबरदस्ती छीनकर उससे जीविका करते हैं ८८ व अपनी स्त्रियोंकी जो रक्षा नहीं करते ये सब प्रेतही होते हैं इसमें संशय नहीं है मारे भूख के देह जलतेहुये थके ब्राह्मणको गृहमें आजाने पर ८९ उस गुणयुक्त पुण्य अभ्यागत को जो भोजन नहीं देते वे भी मृतक होनेपर प्रेतही होते हैं जो लोग गोमांसखानेवाले म्लेच्छों के हाथ

गाय बैल बेंचते हैं ९० वे बहुत दिनोंतक प्रेतलोकही में रहते हैं उनका जन्म कभी चाण्डालयोनियों में भी नहीं होता नरकही में पड़े हुये सड़ते रहते हैं व जो पशु अशौचके बीचमें उत्पन्न होते हैं व मरतेभी अशौचहीमें हैं ९१ वे बहुत दिनोंतक प्रेत पिशाच होते हैं व बार २ अशौचही में उत्पन्न होते व मरते रहते हैं जिनलोगों के जातकर्म्मादि संस्कार नहींहोते ९२ वे एक २ संस्कारके न होने पर प्रेतत्व भोगते हैं व जो जन्मभर स्नान सन्ध्या देवपूजन यज्ञ व्रतादिकों से रहित होते हैं वे पापी सदा नरकही में रहते हैं फिर प्रेत होते हैं उस योनि से कभी नहीं छुट्टी पाते जो लोग भोजनसे जूँठेपात्र व अपने विष्ठा मूत्रादिमल ९३ । ९४ किसी तीर्त्थ में डालते हैं वे भी प्रेतही होते हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है जिनलोगों ने पृथ्वीपर दानमान पूजनादिकोंसे ब्राह्मणोंको नहीं तृप्त किया ९५ व पिता माता गुरुओंको भी नहीं तृप्त किया वे निश्चय अपने कर्म से प्रेतही होतेहैं व जो स्त्रियां अपने पतिको छोड़कर अन्य पुरुषों के पास रहती हैं ९६ वे बहुत कालतक प्रेतलोक में रहकर फिर पासी कोरी चमारआदि अन्त्यज योनियों में उत्पन्न होती हैं जो स्त्रियां विषयादि इन्द्रियों के मोहसे पतिको छलके ९७ व जो स्त्रियां गृह में मीठे अच्छे पदार्त्थ बनाकर औरोंको नहीं देतीं आपही खा जाती हैं वे पापिनी भी बहुत कालतक पृथ्वीपर प्रेतही होकर रहती हैं जो यहां विष्ठा मूत्रयुक्त अन्नादि खालेते हैं अथवा ब्राह्मण का धन जबरदस्ती वा चोरीसे खालेतेहैं ९८ व अन्य लशुन प्याज गाजरआदि अभक्ष्य पदार्त्थ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य होकर खाते हैं वे भी सदाके लिये प्रेतहोते हैं जो लोग बलसे किसीकी श्रेष्ठ वस्तुओं को हरलेते हैं व देते नहीं हैं ९९ व अतिथियों का अपमान करते हैं वे मरकर प्रेतहोकर नरक में पड़ते हैं इससे उस आमलकी को खाकर उसके सरस चूर्ण से स्नानकरके १०० सब पापोंसे छूटकर मनुष्य विष्णुलोकमें जाकर पूजित होताहै इससे सब यत्नों से आमलकी फलकी सेवाकरो १०१ जो कोई यह शुभपुण्यदायक आख्यान सुनेगा वह सब पापों से विशुद्ध होकर विष्णुलोक में पूजित हो-

गा १०२ इस आख्यान को जो नित्य लोगोंके आगे पढ़ेंगे व मुख्य करके वैष्णवोंके आगे विशेषकर पढ़ेगा वह विष्णुकी सायुज्य मुक्ति पावेगा यह पौराणिकों ने कहा है १०३ इस आख्यान को सुनकर स्कन्दजीने फिर शिवजीसे पूँछा कि हे प्रभो! हमने वृक्षोंका दो प्रकार का पवित्र फलजाना अब मोक्षदायक पुष्प पत्रका फल सुनाचाहते हैं १०४ शिवजी बोले कि सब पत्र पुष्पोंसे कल्याणदायिनी तुलसी है जोकि सब कामफलों को देती है व परमशुद्ध है व विष्णुकी होनेके कारण विष्णुको अत्यन्तप्रियहै १०५ भुक्ति मुक्ति दोनों देती हैव सब लोकोंसे श्रेष्ठ मुख्य और शुभ है जिसकी सेवाकरके व धारणकरके श्रेष्ठमुनिलोग अक्षय स्वर्गलोक को चलेगये हैं १०६ पूर्वकालमें सबलोगोंके हितकेलिये इसे श्रीविष्णुजीने लगायाहै इससे तुलसीका पत्र व पुष्प सब धर्म्मोंसे प्रतिष्ठितहै १०७ जैसे श्रीविष्णुजीको लक्ष्मी प्रियहैं व जैसे हम प्रियहैं वैसेही यह तुलसीदेवी प्रिय है बस और चौथा कोई ऐसा प्रिय नहीं है १०८ तुलसीका एक पत्र सौ सुवर्ण के पत्रों के तुल्य होताहै अन्य पुष्पों तथा अन्य वस्त्रों व अन्य सुगन्धित अनुलेपनों से १०९ दैत्यों के नाशक विष्णु बिना तुलसीदल चढ़ाये नहीं सन्तुष्ट होते चाहे कोटिपूजन सामग्री इकट्ठी करे जिसने श्रेष्ठ आशासे इस तुलसीपत्रसे श्रीहरिकी पूजाकी ११० उसने सब कुछ दिया होमकिया व सब कुछ जानलिया व यज्ञ व्रतादि किया व चार वेद छःवेदाङ्ग छःशास्त्र अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण सब तन्त्र शास्त्र सब संहिता उसने पढ़ा पढ़ाया व दान किया जिसने कि तुलसीसे हरिकी पूजाकी जन्म २ में तेज सुख भाग्य यश लक्ष्मी शोभा कुल शील स्त्री पुत्र व कन्या धन राज्य आरोग्य ज्ञान व विज्ञान सब उसको मिलते हैं मानों सब उसके हथेली में रक्खे हैं १११।११२ जैसे सुरलोक में मुक्ति देनेवाली पवित्र अंगकी गङ्गा हैं व इस लोकमें जैसे भागीरथी पुण्य हैं वैसेही कल्याणकारिणी तुलसी है ११४ गङ्गा जलसे स्नान कराने से क्याहै व पुष्करतीर्थ की सेवा करने से क्या है तुलसीदलमिश्रित जलही से प्राणी पवित्रतम होजाता है ११५ जिस बुद्धिमान् के सम्मुख जन्म २ में श्रीमाधवजी रहते हैं सुनकर

उसकी श्रद्धा तुलसी से हरिकी पूजा करनेको होतीहै ११६ तुलसी की मञ्जरी व दलसमेत श्रीविष्णुकी पूजा करनी चाहिये हे स्कन्द! उस पूजनकी पुण्यका फल हम नहीं कहसक्के ११७ जहां तुलसीका वन होताहै वहीं श्रीकेशव सदा टिके रहते हैं व वहीं सब देवगणों सहित ब्रह्मा और लक्ष्मी रहती हैं ११८ इससे सदा तुलसीही के निकट बैठकर जहांतक होसके श्रीहरि की पूजाकरे क्योंकि स्तोत्र पाठ मन्त्रादि जप जो कुछ तुलसी के निकट कियाजाता है सब अनन्त फल देताहै ११९ व जो प्रेत कूष्माण्ड पिशाच व ब्रह्मराक्षस भूत दैत्यादिक होतेहैं तुलसी के समीप से सदा भागजातेहैं १२० व तुलसीदल देखकर अलक्ष्मी का नाश होजाता है तथा डाकिनी शाकिनीआदि सब दुष्ट मातालोग संकोच के वश होजाती हैं तुलसीदलको देखकर १२१ व वहां ब्रह्महत्यादिक पाप पापोंसे उत्पन्न नानाप्रकार के रोग व कुमन्त्र से किये करायेहुये मारणादि प्रयोग सब नष्ट होजातेहैं १२२ जिसने श्रीहरिके लिये पृथ्वीपर तुलसीका वन लगाया उसने विधिपूर्व्वक प्रिय दक्षिणादेकर सौयज्ञ करलिये १२३ श्रीहरि की अन्य आठ प्रकार की प्रतिमाओंपर व शालग्राम शिलाओंपर तुलसीदल चढ़ाकर मनुष्य श्रीविष्णुभगवान् की सायुज्यमुक्ति पाताहै १२४ जो श्रीहरिके लिये पृथ्वीपर तुलसी लगाता है उसके पुरुषा जो कहीं होतेहैं आनन्दित होतेहैं व वह श्रीमाधव जीके स्थान को जाताहै १२५ श्रीहरि की पूजा तुलसीदल से करके फिर दूसरे समय में उनके ऊपर की चढ़ी तुलसी के दल जो अपने शिरपर धरलेताहै वह पापसे पवित्र होकर स्वर्गको जाताहै १२६ पूजन करने से कीर्त्तन करनेसे ध्यानकरने से लगाने से व अङ्गों में धारण करनेसे तुलसी पापको हरतीहै स्वर्ग व मोक्ष देतीहै १२७ मनुष्यको चाहिये कि आपकरे और औरोंको सिखापनदे १२८ जब आसन्न मरण कोई होता है व तुलसी के समीप लेटकर वा बैठकर प्राण छोड़ता है वह श्रीमाधवजी के परमस्थान वैकुण्ठ गोलोक साकेतलोकादि को जाता है जो वस्तु श्रीहरिको प्रियतर होती है वह हमको भी प्रियतर होतीहै १२९ व फिर सब देवताओंको व देवियों

को वह प्रियतम होती है हे षडानन ! श्राद्धोंमें व यज्ञकार्य्यों में जो कोई तुलसीका एकपत्र भी चढ़ाताहै उसके सब श्राद्धादि पूर्ण होजाते हैं १३० इससे सब प्रयत्न से तुलसी का सेवनकरो क्योंकि जिसने तुलसी का सेवनकिया उसने सब देवतीर्त्थ गुरु व विप्रोंका सेवनकिया इससे हे षण्मुख ! तुमभी तुलसी की सेवाकरो शिखा में तुलसी करके जो प्राणोंको छोड़ताहै १३१।१३२ वह पापसमूह से छूटकर निरामय स्वर्ग्ग भोगता है राजसूयादि यज्ञों से व विविध प्रकारके व्रतों यमनियमों से १३३ धीरलोग जो गति पाते हैं उसे तुलसी की सेवाकरनेवाला पाता है मनुष्य एक तुलसीदल से श्री हरिकी पूजाकरके १३४ वैष्णवता को प्राप्तहोताहै फिर अन्यशास्त्रों के विस्तारसे क्याहै जो पुरुष किरोड़ तुलसीदलोंसे श्रीविष्णुजीकी पूजाकरताहै वह फिर माताके स्तनोंका दुग्ध नहीं पीता किन्तु मुक्त होकर श्रीहरिमें लीनहोजाता है १३५ जिसने कोमल शाखापत्रों से केशवकी पूजाकी वह सैकड़ों सहस्रों अपने पुरुषोंको वैकुण्ठमें स्थापित कराताहै हे तात ! तुलसीके प्रधान गुण हमने तुमसे कहे १३६। १३७ व सम्पूर्ण गुण तो बहुत कालमें भी हम नहीं कहसक्ते ॥

चौ०जोयहपुण्याख्यानसुहावन।नित्यसुनतअतिशयमनभावन१३८
पूर्व्वजन्मकृत पाप विहायी । जनि बन्धनसों जाय छुड़ायी ॥
एक बार पढ़ने सों प्राणी । अग्निष्टोमफललहतप्रमाणी१३९
नित्यपढ़त यह जो नर कोई । राजसूय फल पावत सोई ॥
व्याधि मूर्खता ताहि न व्यापै । निरुज सदा सो वेद अलापै ॥
सदा लहै जय कबहुँ न हारै । शत्रुहिलखत तुरत सो मारै १४०
यह आख्यान लिखितज्यहिगेहा । तहां रमा नित नहिं संदेहा ॥
व्याधि प्रेत अवमानरु शोका । त्यहिगृहकबहुँ न बसैंअशोका१४१
जहँ क्षणमात्र रहै यह पावन । शुभतुलसीमाहात्म्य सुहावन ॥
तहँ न दरिद्र दोष दुख कोई । कबहुँ सुनात सदा सुख होई १४२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेतुलसी महात्म्यंनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

दो० इकसठयें महँ तुलसिका स्तवन कह्यो अतिचित्र ॥
जाहि लखे सबसे अधिक तुलसी परमपवित्र १

सब ऋषियों ने व्यासजीसे पूँछा कि तुलसीकेपत्र पुष्पका माहात्म्य व श्रीहरिका माहात्म्य हमलोगोंने आपसे सुना अब तुलसी का स्तोत्र सुननेकी इच्छा है १ वेदव्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणो ! पूर्व्वकाल में हमने जो स्कन्दपुराण में कहाहै वही पुराना इतिहास मोक्षकी इच्छासे तुमलोगों के आगे कहते हैं २ हे ब्राह्मणो ! शतानन्द मुनिके बड़े व्रतकरनेवाले सब शिष्यलोग गुरु के प्रणामकरके पुण्य से अपना हित पूँछतेहुये बोले कि ३ हे नाथ ! पूर्व्वकाल में आपने जो तुलसीकास्तोत्र ब्रह्माजीके मुखसे सुनाथा हे वेदवादियों में श्रेष्ठ ! वह हम आपसे सुना चाहते हैं ४ शतानन्दजी बोले कि तुलसी के नमस्कार करतेही असुरोंके अहङ्कार के नाशक श्रीहरि प्रसन्न होतेहैं व पाप नष्ट होजाते हैं और अक्षय पुण्य होती है ५ पृथ्वीपर उस तुलसी की पूजा व वन्दना लोग क्यों नहीं करते हैं कि जिसके दर्शनमात्रसे कोटि गोदान करनेका फल मिलता है ६ कलियुगमें वेलोग धन्यहैं कि जिनके मनमें शालग्रामशिलाके लिये तुलसी सदा पृथ्वीपर लगीहुई विद्यमान रहतीहै ७ जो हाथ केशव के अर्थ कलियुग में इस भूतलपर तुलसीदल उतारते हैं व तुलसी लगाते हैं वे धन्यहैं ८ जिसने तुलसीदल से दुःखनाशक श्रीहरि का पूजन किया अपने किङ्करोंसहित यमराज उसके ऊपर रुष्ट होकरभी क्या करेंगे ९ कलियुग में मनुष्य तीर्थयात्रा करने से क्यों सिद्धहोनेकी इच्छा करते हैं स्नान दान ध्यान भोजन केशवपूजन कीर्त्तन व रोपणकरनेसे तुलसी सब पापोंको भस्म करतीहै हे तुलसि ! तुम अमृत जन्माहो व सदा केशवकी प्रियाहो १०।११ हम केशवके अर्थ तुम्हारे दल उतारतेहैं हे शोभने ! वरदेनेवालीहोओ इस मन्त्रसे तुलसीदल उतारना चाहिये हे कलियुगके भी पापनशानेवाली ! हे पवित्राङ्गि ! तुम ऐसाकरो जिसमें हम तुम्हारे अङ्गों से

उत्पन्न दलोंसे श्रीहरिकी पूजाकरें जो कोई इनदोनों मन्त्रोंसे तुलसी दल उतारकर वासुदेव भगवान् की पूजा करताहै वह पूजा लक्षकोटि गुण होजाती है हे देवेशि! तुम्हारा प्रभाव सब देवसत्तम मुनि सिद्ध गन्धर्व व पाताल में नागलोग गाते हैं परन्तु केशवजीको छोड़कर अन्य कोई देव तुम्हारा प्रभाव नहीं जानते १४।१५ न तुम्हारे गुणों का प्रमाणही कोटिशत कल्पोंतक वर्णन करने से भी कोई देवादिक जानसक्ते हैं क्योंकि विष्णुके आनन्द करने के लिये तुम पहिले क्षीर सागरके मथनके उद्यम से उत्पन्न हुईहो १६ व इसीसे सबसे पहिले तुम तुलसीको केशवजी ने अपने शिरपर धारण किया है हे देवि! इसप्रकार विष्णुके सब अङ्गोंको पाकर तुमने पवित्रता पाई है तुम्हारे नमस्कार करताहूं तुम्हारे अङ्गों से उत्पन्न दलों से जैसे हम श्रीहरि की पूजाकरें १७।१८ व परमगति को जावें वैसा तुम नित्य कल्याण हमको करो हे तुलसि! जगत् के हितके लिये व गोपियों के हितके लिये कृष्णचन्द्रजी ने तुमको गोमतीनदीके तीरपर लगाया व पाला है व वृन्दावन में विचरतेहुये श्रीविष्णुजी ने अपने आप तुम्हारी सेवा गोकुलके बढ़ने के लिये व कंसके मारने के लियेकी है व हे जगत्प्रिये! पूर्वकाल में राक्षसों के वधके लिये वशिष्ठजी के कहने से श्रीरामचन्द्रजी ने सरयू के तीरपर तुमको लगाया है व तपके वृद्धि के लिये इससे हे तुलसिके! मैं तुम्हारे नमस्कार करताहूं १९।२२ व श्रीरामचन्द्रजी के वियोग से व्याकुल होकर श्रीजानकीजी अशोक वनमें तुमको लगाकर व ध्यान करके फिर अपने प्रियको प्राप्त हुई हैं २३ व हे देवि! पूर्वकाल में शङ्करजी के अर्थ पार्वती देवी ने तुमको हिमालय पर्वतपर अपना तप बढ़नेको लगाया हे तुलसि! तुम्हारे हम नमस्कार करते हैं २४ नन्दनवन में दुःस्वप्न नाशहोने व मङ्गल होनेकेलिये सब देवोंकी स्त्रियों ने व किन्नरों ने तुम्हारी सेवाकी है हे तुलसि! तुम्हारे नमस्कार है २५ गयाके धर्मारण्य में अपना हित चाहतेहुये पितरों ने आप पुण्यरूपिणी तुलसी की सेवा की है २६ दण्डकवन में श्रीरामचन्द्रदेव ने भक्तिसे तुलसीको लगाया व लक्ष्मणजी ने सींचा व सीताजी ने पाला २७ जैसे गङ्गा

देवी तीनोंलोकों में व्याप्तहैं यह शास्त्रों में कहागया है वैसेही चरा-
चरसहित तीनोंलोकों में तुलसीदेवी विद्यमानहैं २८ ऋष्यमूक
पर्व्वतपर बसेहुये कपियों के राजा सुग्रीवने बाली के नाशकेलिये
व ताराके संगमके हेतु तुलसी की सेवाकी २९ व तुलसी देवी के
प्रणाम करके सागरको नांघे इसी से सब कार्य्यकरके हर्षित होकर
हनुमान्जी फिर निर्विघ्न इस पार आगये ३० तुलसी को धारण
करके सब पातकों से पुरुष छूटता है व हे मुनिशार्दूल ! ब्रह्महत्यादि
महापातक से छूटता है ३१ तुलसीपत्रसहित जल जो अपने शिर
पर धारण करता है वह गंगास्नान व दश गोदान करने का फल
पाता है ३२ हे देवि ! हे देवेशि ! प्रसन्नहोओ हे हरिवल्लभे ! प्रसन्न
होओ हे क्षीरसागर से उत्पन्न तुलसीजी ! तुम्हारे हम नमस्कार
करते हैं ३३ द्वादशी को जागरण करके जो कोई तुलसी का यह
स्तोत्र पढ़ता है उसके बत्तीस अपराध श्रीकेशवजी क्षमा करते हैं
३४ यौवन बाल्य कौमार व वृद्धावस्था में जो पाप कोई करता है
सब तुलसीस्तोत्र पाठ करने से नष्ट होजाते हैं ३५ व देवेश श्री
केशव प्रसन्न होते हैं व सन्तुष्ट होकर उसे लक्ष्मी देते हैं व शत्रुओं
का नाश करके सुख व विद्या देते हैं ३६ तुलसी के ग्रहण करनेवाले
लोगों को देवेश भगवान् मुक्ति देते हैं व तुलसी के नाममात्र से दे-
वलोग वाञ्छित देते हैं ३७ तुलसी के स्तोत्र से सन्तुष्ट होकर देवेश
श्रीहरि गृहस्थोंको भी मुक्तिदेते हैं सुख व वृद्धिदेते हैं व यममार्ग के
पाप तुलसीका स्तोत्र पढ़ने से सहज में नष्ट होजाते हैं ३८ व जिसके
गृहमें तुलसीका स्तोत्र लिखाधरा रहता है वह पुरुष अशुभ नहीं
पाता किन्तु निश्चित शुभ पाता है ३९ व उसके सब मंगल होते हैं
कुछ भी अमंगल नहीं होता व सदा सुभिक्षही रहता व बहुत धन
धान्य होते हैं ४० केशवमें उसकी निश्चल भक्ति होतीहै व वैष्णवों
का अवियोग होताहै जबतक वह जीताहै व्याधि से बचा रहता है
व अधर्म्म में उसकी मति नहीं लगती ४१ द्वादशी रात्रि में जाग-
रण करके जो कोई तुलसीका स्तोत्र पढ़ताहै वह कोटि सहस्र तीर्थों
में लक्षकोटि तीर्थों में स्नान करनेका जो फल होताहै ४२ वह फल

जो कोई तुलसीजी का स्तोत्र जिसी किसी समय पढ़ता है वह फल पाता है ४३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेतुलसीस्तवमाहात्म्यं नामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

दो० बासठयें महँ है कहो श्रीगंगामाहात्म्य ॥
जाहि सुनतही नरलहत वासुदेवतादात्म्य १

सब ऋषियों ने व्यासजी से पूँछा कि जिसमें स्नानकरनेसे सम्पूर्ण पाप निश्चय करके नष्टहोजाते हों व महापातकभी जिसकी यात्रा के उद्देशही से कांपने लगतेहों वह उद्देश हमसे कहो १ व जैसे स्वर्ग में इन्द्र भोगकरते हैं वैसेही वे अक्षय स्वर्ग भोगते हैं व कभी उन की देवयोनिसे हानि नहीं होती ऐसा उपदेश हमसे कहो २ व जिसके स्नानादि करनेसे यहां स्वर्गके सुखोंके समान सुखभोगने को मिल-तेहों व अन्तमें उत्तम देवताकी मूर्त्ति वह प्राणी होजाताहो व कलि-युग के पापसमुद्र के उतरने के लिये बड़ीभारी नौकाहो व स्वर्ग जाने के लिये सोपानहो वह हमलोगोंसे कहो ३ व्यासजी बोले कि हे विप्रो! जिसकी चिन्तना करनेवाले लोगों के पूर्वजन्म व इस जन्मके पाप तुरन्त मिटजाते हैं चाहे स्त्री स्मरणकरे वा पुरुष सबके पाप दूरहोते हैं उसको गङ्गा कहते हैं ४ सो गङ्गा इस नामके स्मरणमात्र से जि-तने उपपातकहैं सब नष्ट होजाते हैं व कीर्त्तन करने से पाप व द-र्शनकरने से ब्रह्महत्यादि महापाप क्षयहोते हैं ५ व गङ्गामें स्नान करने व गङ्गाजल पीने व पितरोंका तर्प्पणकरने से प्रतिदिन महा-पातकोंके समूह क्षयहोते रहते हैं ६ जैसे अग्निसे क्षणमात्र में रुई व शुष्कतृण जलजाते हैं वैसेही गङ्गाजलके स्पर्शसे सबपाप क्षणमात्रमें भस्महोजातेहैं ७ व गङ्गास्नान करनेपर अन्तमें स्वर्गवास मिलता है यहां यश पुण्य राज्य मिलते हैं स्वर्ग के पीछे फिर परमगति मुक्ति मिलती है ८ व गङ्गाके तीरपर जाकर पितरों के उद्देश से विधिपूर्वक शुद्धवाक्य पढ़कर पिण्डदान जो कोई करता है उसकी पुण्यका फल

सुनो ९ केवल किसी अन्नसे पिण्डदान करनेसे उसके पितृगण सहस्र वर्षतक स्वर्ग में वासकरते हैं उसके सङ्ग तिल न देनेसे दो सहस्रवर्ष तक व किसी पवित्र फलसे भी पिण्डदेने से इतनाही फल होता है १० व हे विप्रो ! जो कोई गोघृत गोदुग्ध वा गोदधि से पिण्डदेता है उसकी पुण्यका तो अन्तही नहीं है जो कोई गोघृतादि से पिण्ड-दान करता है वह जानों नित्य सौयज्ञ करता है ११ व उसके पितर जो नरक में भी होते हैं वे धन्यहोकर प्रथम मर्त्यलोक में आजाते हैं यहां धन पुत्र आरोग्य सुख सम्मान से युक्तहोते हैं व अन्यलोगों से पूजित होते हैं १२ व जिसके पितर अपने कर्म्मके अनुसार प्रथम से भूतलपर कीट पतङ्गोंकी योनिमें उत्पन्न होते हैं व रसातल में होते हैं वा वृक्षादि स्थावरआदि होते हैं वा पत्ती होते हैं वे उस योनिसे छूट कर मर्त्यलोक में धनी वा राजाहोते हैं १३ इससे पुत्र पौत्र गोत्रवाले कन्याके पुत्र दामाद भानजे सुहृद् मित्र स्त्री व प्रियलोग १४सबको चा-हिये कि यथाशक्ति सामग्रीसमेत गङ्गाके तीरपर वा गङ्गाके जलके भी-तर जलदान व पिण्डदानकरें क्योंकि जिनके लिये वहां पिण्डदान जल-दान कियाजाताहै उनको अक्षय स्वर्गवास होताहै १५व जो पिण्डपाने वालोंसे ऊपरवाले पिता माताके कुलवाले होते हैं वे भी वहांपर पिण्डादि पानेपर सैकड़ों सहस्रों पुस्तिवाले सब मर्त्यलोक में जन्मलेकर सुखी रहते हैं १६ स्वर्ग में व नीचेके लोकोंमें वा मध्यके लोकोंमें जहां कहीं स्थित प्राणीलोग नित्य इस बातकी इच्छा कियाकरते हैं कि हमारे वंशका एकभी कोई गंगास्नान करने को कभी जायगा १७ जो कोई वंशमें एकभी गंगास्नान करने को जाताहै उसके पुरुषा पवित्र होजाते हैं यही बड़ीभारी पुण्यहै क्योंकि जो कोई महापुण्या गंगाका स्नान करते हैं वे औरोंको तारते हैं व आपभी तरते हैं १८ गंगाके सबगुण चारमुखों के ब्रह्माभी नहीं कहसके इससे हे द्विजो! हमभी भागीरथी के कुछ गुण कहते हैं १९ जितने मुनि सिद्ध गन्धर्व व अन्य श्रेष्ठ देवता हैं सब गंगाके तीरपर तपकरके अब स्वर्ग लोकके सुखभोगते हैं २० व दिव्यशरीर धारण कियेहुये कामग विमा-नपर चढ़ेहुये जहां चाहते हैं सुख भोगते हैं अभी निवृत्त नहींहुये

जब कभी इस लोकमें आकर जन्मलेते हैं तो भी रत्नोंसे पूर्ण गृहोंमें बसते हैं २१ जहां कि सुवर्ण के प्रासादहोते हैं व सबलोगों के स्थानों से ऊँचे कल्याणकारी होते हैं व इष्टपदार्थों से भरेहुयेहोते व जिनमें मनोरम स्त्रियां होती हैं २२ व पारिजात के समान पुष्प वृक्ष लगे होते हैं मानो कल्पवृक्ष हैं गङ्गाके तीरपर तप करके इसी प्रकार के सुख फिर स्वर्ग में जाकर प्राणी भोगते हैं २३ जो गति नानाप्रकार के यज्ञोंसे व विविध प्रकार के तपों व्रतोंसे व बड़ेदान करनेसे दुर्लभ होती है उस गतिको पुरुष गंगाकी सेवाकरके पाता है २४ जार-पति से उत्पन्न पतित दुष्ट अन्त्यज गुरुघाती सबके द्रोहसे संयुक्त सब पातकों से संयुक्त २५ पिताको पुत्र छोड़देते हैं व स्त्रियां ऐसे पतिको छोड़ देती हैं सुहृद्गण ऐसे सुहृदों को छोड़ देते हैं व सब श्रेष्ठलोग व सब बान्धवलोग भी छोड़देते हैं परन्तु गंगाजी ऐसोंको कभी नहीं छोड़तीं २६ जैसे माता अपने छोटे बालक को मलादि से शुद्धकरती रहती व मलयुक्तको भी गोद में बैठालेती है ऐसेही गंगाभी सब पापियोंको अपनी गोदमें बैठालेती हैं व उनके मलों को साफ करदेती हैं २७ व माता सब भोग्य अलङ्कारादिकों से अपने पुत्रोंको जैसे शोभित करती व वे फिर प्रसिद्ध होजाते हैं जैसे दिव्यरूपों को मुक्ति देनेवाली गंगाजी दर्शनमात्र से जे लोग भक्तिसे स्नान करते हैं २८ उनके लक्षकुल को संसारसे कल्या-णकारिणी गंगा तार देती हैं जिन मनुष्योंने एकबार भी गंगा जीमें स्नान किया उनके लक्ष पुरुषोंतक को कल्याणदायिनी गंगा जी तारती हैं दुःखहारिणी गंगाजी का जो स्मरण करता है ध्यान करता व प्रतिष्ठित करता व उनके मीठे जलपर मोहित होताहै २९ इन सबोंके दोनों वंशोंको संसारसमुद्रसे गंगाजी तारती हैं संक्रा-न्तियों में व्यतीपात योग में चन्द्रमा व सूर्य्य के ग्रहणों में ३० व अन्य पुण्यकालों में गंगामें स्नान करके पुरुष अपने कोटि कुलों का उद्धार करताहै जिसदिन उत्तरायण सूर्य्य होते हैं अर्थात् जिसदिन मकरकी संक्रान्ति होतीहै यदि शुक्लपक्ष हो तो दिनमें जो लोग गंगा स्नान करते हैं ३१ वे धन्यहैं क्योंकि उस दिन गंगाजी के हृदय में

जनार्दन भगवान् स्थित रहते हैं इस तिथि में इस विधिसे जो भागीरथीके शुभजलमें ३२ प्राण छोड़ताहै वह स्वर्गमें जाकर बसता है व फिर वहांसे कभी नहीं लौटता व जो नित्य गंगास्नान करता है वह नित्य सब देवताओं के समीप पहुँचताहै ३३ क्योंकि विष्णु सर्व्व देवताओं के प्रधान हैं व गंगा विष्णुमयी हैं गंगामें पिण्डदान करनेसे व पितरोंको तिलसहित जलदान करनेसे ३४ जिसके पितर नरक में होते हैं वे स्वर्ग को चलेजाते हैं व जिसके स्वर्ग में होते हैं मोक्ष पाजाते हैं जिसको परस्त्री परधन की वाञ्छा होती है व जो परबाधा व परद्रोह करने में रत होता है ३५ सब मनुष्यों की प्राप्ति व परमगति गंगाजीही हैं जो मनुष्य वेद शास्त्रसे हीनहै व गुरुकी निन्दामें तत्परहै ३६ व जो समयके आचारसे हीन होता है उसको गंगा के समान अन्यगति नहीं है जिसने सुखसौभाग्य स्वर्गमोक्ष देनेवाली गंगाकी पूजाकी उसको बहुत धनयुक्त यज्ञों के करनेसे व अतिदुष्कर तपोंके करनेसे क्याहै व जिसके आगे सुख मोक्ष भुक्ति देनेवाली गंगाजी स्थित हैं उसको नित्य परमनियमों के करने व चित्त रोकनेवाले योगाभ्यासों से क्या है गंगाजी में स्नानमात्र से तुरन्त उत्तम पुण्य होती है व पुरुषोंके बहुत जन्मोंके बटोरेहुये पाप नष्ट होजाते हैं प्रभासमें सूर्य्यग्रहण में सहस्र गोदान करने से जो फल मिलता है ३७। ४० दान करनेसे जो फल मिलता है, गंगा स्नान से प्रतिदिन वह फल मिलता रहताहै जो कोई प्रसंगसे भी गंगाके दर्शन करताहै पापको वे हरलेती हैं व जल स्पर्श करने से स्वर्ग को देती हैं ४१ व स्नान करलेनेसे मोक्षको देती हैं चाहे किसी उद्यमादि अन्य कार्य्यहीके लिये वहां गयाहो सब इन्द्रियोंकी चञ्चलता वासना शक्तिसे उत्पन्न होती है ४२ उससे जो अपने लोग हैं वेभी उससे घृणा करने लगते हैं परन्तु गंगाजी उससे भी घृणा नहीं करतीं किन्तु उसके सब पापोंको दर्शनसे नष्ट करदेती हैं परधन की इच्छा करनी व परस्त्रीकी अभिलाषा करनी ४३ परधर्म्म में रुचि करनी ये सब दर्शनसे नष्ट होनेके कारणहैं जो कुछ मिलजाय उसीसे सन्तोष करना अपने धर्म्मों में निष्ठरहना ४४ सब प्राणियों

में समता रखना ये सब फल गंगामें स्नान करतेही प्राणी को मिल जाते हैं जो मनुष्य गंगाको पाकर सुखसे वहां निवास करताहै ४५ वह इसलोकमें तो जीवन्मुक्त होताहै व अन्तमें सब उत्तमोंसे उत्तम होताहै जो जाकर गंगा तटपर वासकरताहै उसको फिर कुछकरना नहीं रहजाता ४६ क्योंकि जीवन्मुक्तहोकर वह पुरुष कृतकृत्य हो जाताहै यज्ञ दान तप जप श्राद्ध व देवपूजन ४७ जो कुछ गंगाजी के किनारेपर कियाजाता है नित्य कोटिगुण अधिक होता है अन्य स्थानपर का कियाहुआ पाप गंगाके तीरपर नष्ट होजाता है ४८ व गंगाके तीरपर कियाहुआ पाप गंगास्नानही से नष्ट होता है अन्य किसी उपायसे नहीं अपने जन्मनक्षत्रके दिन जो कोई गंगासंगममें स्नान करता है वह अपने कुलको उद्धार करदेता है जैसे आदरसे सदा मनुष्य धनवान्पुरुषकी नित्य स्तुति करता है ४९ । ५० जो एक बार भी वैसेही गंगाजीकी स्तुतिकरे तो स्वर्ग जानेका पात्र होजावे अश्रद्धासे भी जो गंगा इस नामका कीर्त्तन ५१ करता है वह नर अतिपुण्यवान् होजाता है व स्वर्ग का पात्र होता है पृथ्वी पर मनुष्यों को प्रतिष्ठित करती हैं व पातालमें नागों को तारती हैं ५२ व स्वर्ग में देवताओं को तारती हैं इसीसे गंगा का त्रिपथगा नाम है जानकर वा अजान होकर किसी इच्छा से वा अनिच्छा से ५३ जो मनुष्य गंगाके तटपर वा गंगाके भीतर मरता है स्वर्ग पाकर फिर मोक्षपाता है जो गति योगयुक्त सतो- गुणी बुद्धिमान् योगी की होती है ५४ वह गति गंगा में प्राणछो- ड़नेवाले प्राणी की होतीहै सहस्रों चान्द्रायणव्रतों से जो शरीरका शोधन करता है ५५ उससे अधिकफल इच्छानुसार गंगाजल के पान करने से पाताहै तभीतक सब तीर्थोंका विशेष प्रभाव रहताहै व तभीतक सब देवताओंका भी ५६ व तभीतक सब वेदोंका जब तक प्राणी गंगाको नहीं प्राप्तहोता पृथ्वीपर साढ़ेतीन किरोड़ तीर्थ हैं यह वायुदेवने देखकर कहाहै ५७ ऐसेही स्वर्ग व पृथ्वी व अन्त- रिक्षमें भी बहुतसे हैं परन्तु विष्णुके पादार्घ्यसे उत्पन्न त्रिपथगामिनी ५८ धर्मव्रता इस नामसे प्रसिद्ध कोई नहींहै हे जाह्नवि! इस नाम

से प्रसिद्ध तुम्हींहो इससे हमारे पापको हरो तुम विष्णुके पादसे उ-
त्पन्नहो इससे वैष्णवी कहातीहो व विष्णुसे भी पूजितहो ५९ इससे
जन्मसे लेकर मरणपर्य्यंतके कियेहुये पापसे हमारी रक्षाकरो श्रद्धा
व धर्म्मसे सम्पूर्ण व श्रीयुक्त तुम्हारी रजसे ६० हे भागीरथि! महा-
देवि अमृतसे हमको पवित्रकरो इन तीन श्लोकश्रेष्ठों से जो गंगा-
जलमें स्नान करताहै ६१ कोटिजन्म के कियेहुये पापसे छूटजाताहै
इसमें कुछ संशय नहीं है अब श्रीहरिका कहा गङ्गाजी का मूलम-
न्त्र कहते हैं ६२ जिसको एकबार जपकर पवित्रहोकर मनुष्य वि-
ष्णुभगवान् के शरीरमें प्रविष्टहोजाता है ॐनमोगङ्गायै विश्वरूपि
ण्यैनारायण्यैनमोनमः बस यही गङ्गाजीका मूलमन्त्रहै जिसका अ-
र्थ यहहै कि विश्वरूपिणी नारायणी गङ्गाजीके नमोनमोनमः है ६३
जो पुरुष गङ्गाके तीरपर उत्पन्नमृत्तिका अपने शिरपर धारणकरता
है वह विना गंगास्नान कियेहुयेही सब पापों से छूटजाता है ६४ व
जो गंगाजलमें लगकर बहतेहुये पवनका स्पर्श करताहै वह घोरपापसे
पवित्र होकर अक्षय स्वर्ग्ग भोगता है ६५ जबतक मनुष्यका हाड़
गंगाजलमें पड़ारहता है उतने सहस्रवर्षतक वह प्राणी स्वर्ग्गलोक
में पूजित होताहै ६६ माता पिता व अपने अन्य बन्धुजनों के व
अनाथ अन्य लोगोंके भी व अपने गुरुके हाड़ गंगाजल में डालने
से मनुष्य कभी स्वर्ग्ग से नहीं च्युतहोता ६७ जो मनुष्य अपने
पितरोंकेहाड़ गंगाजीमें डालनेके लिये लेचलताहै वह मनुष्य पद२
पर अश्वमेध यज्ञका फल पाताहै ६८ जो गंगाजीके तीरपर स्थित
हैं वे देश राज्य पशु पक्षी कीड़े स्थावर जंगम व अन्य कोई सब धन्य
हैं ६९ भो द्विजसत्तमो ! गंगाजीके किनारेपरसे कोसभरके भीतर
जितने मनुष्य मृतक होतेहैं वे सब देवता होजाते हैं व अन्य मनु-
ष्य सब पृथ्वीपर मनुष्य होतेहैं ७० जो मनुष्य गंगास्नानके लिये
चलता है भाग्यवशसे मार्ग्गही में मृतक होजाता है वहभी स्वर्ग्ग
पाताहै व गंगास्नानका भी फल पाजाता है ७१ गंगाजलमें पतित
होकर जो पक्ष्यादिक व कीट पतंग नक्र मत्स्यादि गंगास्नान के
जानेवाले लोगोंके पैरोंमें दबकर राहमें मृतक होतेहैं वे सब स्वर्ग्ग

को जाते हैं ७२ हे ब्राह्मणो! गंगा जाने के लिये जो कोई औरोंको उपदेश देते हैं व जो जाते हैं दोनों को पुण्यकारी गंगास्नानका फल मिलताहै ७३ व पाखण्डों से हतचित्त जो लोग गंगाकी निन्दा करतेहैं वे घोरनरक को जातेहैं फिर वहांसे आना दुर्लभ होजाताहै ७४ जो किसी दुष्ट अपावन स्थानमें भी स्थित हो पर गंगा २ नित्य कीर्त्तनकरताहो व स्तोत्र पढ़ताहो वहभी स्वर्गको जाताहै फिर और बहुत कहने से क्याहै ७५ जो सैकड़ों योजनोंपरसे गंगा २ ऐसा कहता है वह सब पापों से छूटता है व विष्णुके लोकको जाताहै ७६ व जो जन्मभर में कभी गंगास्नान नहीं करते वेहीलोग अन्धे पँगुले होतेहैं व उनका जन्म मिथ्या होजाता है व वेही गर्भसे पतित होजाते हैं ७७ व जो गंगाकी कीर्त्तनभी नहीं करते वे मनुष्य जड़ोंके तुल्य अधम हैं व जो औरोंको उपदेश नहीं देते वे वातुल चित्तविभ्रमवाले समझेजाते हैं ७८ व जो शास्त्र पढ़कर औरों को नहीं पढ़ाते उनका शास्त्र जैसे निष्फल होजाता है हे ब्राह्मणो! ऐसेही जो कुबुद्धि गंगाका फल किसीको नहीं सुनाते उनके भी पढ़नेका फल जातारहता है व वे अधम पतित होजाते हैं ७९ व जो लोग शास्त्र और गंगामाहात्म्य औरोंको पढ़ाते हैं व आपभी श्रद्धासे पढ़ते हैं वे धीर स्वर्गको जातेहैं व अपने पितरों और गुरुओं को तारते हैं ८० जो कोई अपनी शक्तिके अनुसार गंगा जाने के लिये मार्गका खर्च देताहै वह भी गंगास्नानका फल पाताहै व गङ्गास्नानके लिये जो पराये अन्नकी प्रार्थना करता अपना अन्न खाकर जाताहै वह परान्न खाकर जानेवाले से दूनाफल पाता है अपनी इच्छा से वा अनिच्छासे किसीकी प्रेरणा से वा परसेवा से ८१।८२ जिसी किसी उपायसे जो पुण्यात्मा गंगाजी को जाता है वह देवलोकको जाताहै गंगाजीका इतना माहात्म्य सुनकर ब्राह्मणों ने पूँछा कि हे व्यासजी! आपसे हमलोगों ने निर्म्मल गंगामाहात्म्य सुना ८३ पर अब यह सुनाइये कि गंगा कैसे ऐसी निरन्तर सब पावन करनेवाली हैं व कैसे उत्पन्नहुईं व कहां से आईं व कैसा उनका आकार है यह सुनकर श्रीवेदव्यासजी बोले कि सुनो हम

उस पुरातनी कथाको कहते हैं ८४ जिसको सुनकर उत्तम मनुष्य मोक्षमार्ग को जाते हैं पूर्वकाल की यह कथा है कि मुनियों में श्रेष्ठ नारदजीने ब्रह्मलोकमें जाकर ८५ ब्रह्माजीके नमस्कार करके त्रैलोक्यपावन परमपवित्र यह इतिहास उनसे पूछा कि हे तात ! अपनी सृष्टि में आपने महादेव व कृष्णका सम्मत कौनसा पदार्थ उत्पन्न किया है ८६ जो सबका हितकारी है व सब स्वर्ग मर्त्य पाताल निवासियों के हितके लिये वही एकही पदार्थ हो व सबोंमें उत्तम से उत्तमहो चाहे वह कोई देवीहो वा देवताहो ८७ जिसकी आराधना करके सब देवता दैत्य मनुष्य नाग अण्डज स्वेदज वृक्ष व अन्य उद्भिदादि ८८ इन सबोंका कल्याण जिसको पाकरहो व समग्र निश्चित ऐश्वर्य्य हो बस उसको हमसे कहो ब्रह्माजी बोले कि प्रथम हमने एक प्रकृतिरूपिणी माया उत्पन्न की व उससे कहा ८९ कि तुम सब लोकोंके मध्यमें आदिहोओ जिसमें हम तुमसे संसार को उत्पन्नकरें इस बातको सुनकर वह श्रेष्ठ आकृति सात प्रकारकी होगई ९० एक गायत्री दूसरी सरस्वती तीसरी लक्ष्मी चौथी द्रव्यदेने वाली सर्वसस्या अर्थात् पृथ्वी पांचईं ज्ञानविद्या छठीं शक्तिकाबीज व तपस्विनी उमादेवी ९१ सातईं धर्म्मकाबीज वर्णिका यही सातकही गई हैं गायत्री से वेद उत्पन्न हुये वेदोंसे सब जगत् स्थितभया ९२ स्वस्ति स्वाहा स्वधा दीक्षा ये सब गायत्री से पैदाहुये इनका उच्चारण यज्ञमें सदा करना चाहिये जैसे कि हमारा उच्चारण सब यज्ञोंमें मुनि लोग करते हैं ९३ जब ये सात उत्पन्न होगईं तो हमने यज्ञकिया उसमें देवतालोग अमृत पीकर अजर अमर होगये व स्वर्ग को चले गये फिर वे लोग स्वर्गसे पृथ्वीपर अमृतका रस छोड़नेलगे उस रस से संयुक्त होनेके कारण पृथ्वी सब अन्नों व सब ओषधियों से युक्तहुई उन सब अन्न ओषधियोंके फलों मूलोंसे मनुष्य सुखी सुस्थिर होकर धरणीपर बसे ९४।९५ व सरस्वती सब लोगोंके मुखमें व मनमें आकर स्थितहुई व फिर वह सब शास्त्रों में धर्म्मका उपदेश करनेलगी ९६ व जो ज्ञानविद्या उत्पन्नहुई थी उसीके कारण कलह शोक मोह कल्याण व अकल्याण ये सब तिसके विना सब जगत् जात्यतत्त्व

कहाया ९७ व जो लक्ष्मी उत्पन्नहुई थी उसके विना सब जगत् निश्चित नहीं रहता क्योंकि उसी लक्ष्मीहीसे अन्न भूषण वस्त्र उत्पन्न होते हैं व तीनों लोकोंको सुख राज्य सब उन्हींकी कृपासे मिलते हैं इसीसे वे श्रीहरिकी वल्लभाहुई व सब उनका आदर करता है ९८ व उमाके हेतुसे महादेवको तीनोंलोकों में निरन्तर ज्ञानहुआ इससे वे ज्ञानमाता कहाती हैं व शम्भुके अर्द्धाङ्ग में निवास करती हैं ९९ वे अत्युग्रवर्णिकाशक्ति हैं व सब लोगों को मोहित करती हैं व सब लोकों के रहनेवाले लोगोंकी स्थिति व संहार के करनेवाली हैं १०० जिन्होंने पूर्वकाल में मधु व कैटभ नाम दो असुरोंको मारा व सब लोकमें प्रसिद्ध रुरुनाम दैत्य को जिन्होंने मारा १०१ व फिर सब देवसैन्यको अकेले जीतनेवाले महिषासुर को समर में जिन देवीजी ने लीलापूर्व्वक मारडाला यद्यपि वह सब युद्धोंमें विशारद था तदनन्तर चण्ड मुण्ड व महासुर रक्तबीज को मारा फिर शुम्भ निशुम्भ को व उनके जो सेवक थे उन सब दैत्यश्रेष्ठोंको देवी ने लीलापूर्व्वक मारडाला १०२ इस प्रकार सब दैत्यों की सेनाको मारकर सब मङ्गल करनेवाली देवीजी ने तीनोंलोकों को पालित करके मोदित किया १०३ व जो धर्म्मद्रवी के स्वरूप से सर्व्वधर्म्मप्रतिष्ठिता गंगा जी होगई थीं उनको हमने बड़ी देखके अपने कमण्डलु में करलिया था १०४ विष्णु के कमलरूपी चरणोदक से उत्पन्न हुईं उनको महादेवजी अपने शिरमें धारण किया इसतरह वे हम ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तीनों की मूर्त्तियों से भी वे युक्त हुईं १०५ वे धर्म्मद्रवी के नामसे इसलिये प्रसिद्ध हुईं कि हमारे कमण्डलु में जलरूप थीं व वे राजा बलिके यज्ञ में सबके उत्पन्न करानेवाले श्रीविष्णु से उत्पन्न हुई थीं १०६ जब पूर्व्वकाल में बलवानों में श्रेष्ठ बलिको श्रीविष्णुजी ने कपटसे छला तो दोपादों से सब महीतलको व्याप्त करदिया १०७ व एक पाद आकाश को भेदनकरके फिर सब ब्रह्माण्डको तोड़कर हमारे पुरमें स्थितहुआ तब हमने उस कमण्डलु के जलसे उस पादकी पूजाकी १०८ पादके धोने के समय थोड़ासा जल ऊपरसे गिरा व सुमेरु पर्व्वतपर पड़ा उस पर्व्वतपरसे घूमते

घूमते महादेवजी को प्राप्तहो के व जटामें स्थितहोके रहा १०९ जब राजा भगीरथने अपने पुरुषों के तरनेकेलिये महादेवजीका तप किया कि स्वर्ग्ग से गङ्गाजी आवें इससे हमेशह गजश्रेष्ठ की आराधना किया ११० उसने पर्वतको अपने पराक्रम से काटके तीनों दांतों से तीन बिल करदिये इसीसे तीन छेदोंसे निकलने के सबबसे लोकमें त्रिस्रोतनामसे प्रसिद्धहुई १११ उस जलमें ब्रह्मा विष्णु व शिव तीनों का योगजानों थाही इससे उस परम पवित्र जलसे त्रैलोक्यपावनी गङ्गानामसे प्रसिद्ध होकर बहीं इससे उन देवी गङ्गामें जो कोई स्नान करता है उसको सब धर्म्मों का फल मिलताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है ११२ जो गति सब यज्ञ करने सब मन्त्रजपने व होम देवपूजन करने से प्राणीको नहीं मिलती वह गति गङ्गासेवनसे मिलती है ११३ धर्म्मसाधनका उपाय इससे पर और नहीं है तीनों लोकों के भी पुण्य के संयोग से दूसरा धर्म्मसाधन का उपाय नहींहै इससे नारद तुम गङ्गाको जाओ ११४ जब भगीरथ गंगाको लेगये तो इनके जलका व सगर के पुत्रोंके हाड़ोंका संयोग हुआ इससे वे अपने पूर्व्व पुरुषों समेत व मृतक परपुरुषोंसमेत आकर अच्युत भगवान् के पुरमें बसे ११५ ब्रह्माजी के मुखसे ऐसा सुनकर मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी गङ्गाद्वारपर तपकरके ब्रह्माके तुल्य होगये ११६ गङ्गा सब कहीं तो सुलभ हैं परन्तु तीन स्थानों में दुर्लभ हैं एक गंगाद्वार में व दूसरे प्रयाग में तीसरे गङ्गासागरसङ्गम में ११७ इन तीनों स्थानों में तीन रात्रि वा एकरात्रि निवास करने से मनुष्य परमगति को जाताहै इससे मनुष्य को चाहिये कि शीघ्रमुक्ति के वास्ते सर्व उपायसे विचारकरे ११८ इससे हे धर्म्मज्ञ ऋषियो ! कल्याणदायिनी भागीरथी को जाओ थोड़ेही कालमें स्वर्ग्ग व मोक्ष पाओगे ११९ सब युगोंमें गङ्गा मुक्तिदेती थीं परन्तु कलियुगमें तो विशेषकरके मोक्षदेती हैं जो प्राणी क्लेश व अनन्त पापों से युक्त हैं उनके भी पापदूर करके मुक्ति देदेती हैं १२० व्यासजी के मुखकी ऐसी शुभवाणी को सुनकर वे ब्राह्मणलोग गङ्गाजी के तटपर तप करके मोक्षमार्ग्ग को चलेगये १२१ ॥

चौ० जो नर यह पावन आख्याना। सुनत अनुत्तम सहितविधाना॥
सकल दुःख के उतरत पारा। गंगास्नान सुफल संसारा १२२
एक बार जो करत उचारा। सर्व यज्ञ फल लहत अपारा॥
दान यज्ञ जप स्नान सुरार्चन। स्तोत्रमन्त्रपाठनअरुअर्पन १२३
गंगा तीर करत नर कोई। फल अनन्त पावत है सोई॥
यासों जप होमादिक सारे। तहँहिकरनचहियेंसुविचारे १२४
जासों जन्म जन्म के पातक। तुरत मिटत होवत नहिं घातक॥
अरु अनन्त फल पावत प्राणी। सत्यसत्य यह मृषा न वाणी १२५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेगङ्गामाहात्म्यं नामद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय॥

दो० तिरसठयें महँ गणपकर वर माहात्म्य कहोइ॥
बहुरि कह्यो सुस्तोत्र त्यहि अपर कह्यो नहिं कोइ १

इसके अनन्तर व्यासजी के शिष्य महामुनि सञ्जय ने अपने गुरु के नमस्कारकरके पूर्व कालमें पूँछा कि १ देवताओं के पूजन का उपाय व क्रम हमसे बताओ सब देवताओं में आगे नित्य कौन पूज्यतम है व मध्य में कौन २ व अन्त में कौन पूज्य है व किसका क्या प्रभाव है व हे ब्रह्मन्! पूजाकरके मनुष्य कौन फल पाताहै ३ वेदव्यासजी बोले कि सब देवताओं की पूजामें अविघ्न होनेकेलिये प्रथम गणेश की पूजा करनी चाहिये इसका कारण जैसे पार्वती जी ने प्रथम दो पुत्र उत्पन्न किये थे उनमें गणेश विनायकता को प्राप्तहुये हैं सुनो ४ पार्वतीजीने महादेवजी से सर्वलोकों के धारण करनेवाले शूरवीर स्कन्द व गणेश नाम दो पुत्र उत्पन्न किये ५ उन दोनोंपुत्रों को देखकर पर्वतकी कन्या गौरीजी सिद्धि के लिये अपने दोनों पुत्रों से यह वचन बोलीं कि हे पुत्रो! अमृतसे युक्त करके यह लड्डू हमको आनन्दित होकर देवताओंने दियाहै ६ इस का महाबुद्धि नाम है अमृत से बनायागया है इसके गुण भी कहती हैं एकाग्रचित्त होकर तुम दोनों सुनो ७ इसके सुगन्धमात्र से पुरुष

अमर होजाता है व सब शास्त्रों के अर्थ का निश्चय जानजाता व सब शास्त्रों के अर्थ में कोविद होजाता है ८ सब वेदमन्त्रों में निपुण होता व लेखक तो ऐसा चित्रविचित्र बुद्धिमान् होताहै कि उस के समान दूसरा होही नहीं सक्ता व सब ज्ञान विज्ञान के तत्त्व को जानता है व सर्व्वज्ञ होजाता है इसमें कुछ संशय नहींहै ९ हे पुत्रो! धर्मकी आधिक्यता से सैकड़ों सिद्धियां मिलती हैं इससे तुम दोनों पुत्रों में से जो धर्म्म से अधिक होगा उसको यह मोदक देंगी यह तुम्हारे पिताका भी सम्मत है कि जो धर्म्मकरने में अधिकहो उसी को यह मोदक वा लड्डू दियाजाय १० माताके मुखसे ऐसा वचन सुनकर परमकोविद स्कन्दजी तीनों लोकोंमें जितने तीर्त्थ हैं उनमें स्नान करने को तुरन्त चलेगये ११ अपने मयूरपर सवार हुये व एक क्षणमात्र में तीनोंलोकों के सब तीर्त्थों में स्नानकरके लौटआये व गणेश झटपट अपने पिता माताकी प्रदक्षिणाकरके व प्रणामकर के १२ हाथ जोड़कर आनन्द से आगे खड़े होगये व स्कन्दने भी आगे खड़ेहोके कहा कि हम सब तीर्त्थों में स्नानकर आयेहैं इससे धर्म्म में अधिक हैं हमको यह मोदकदेओ १३ तब दोनों पुत्रों को देखकर विस्मित होकर पार्व्वतीजी बोलीं कि सब तीर्त्थों में स्नान करने से व सब देवताओं के नमस्कार करने से १४ सब यज्ञ मन्त्र व्रत करने से व अन्य योग नियम तप आदि करने से माता पिता की पूजाकरने के सोलहें भागका भी फल नहीं मिलता १५ इससे लम्बोदर तुमसे सैकड़ों गुण धर्म्म में अधिक हैं क्योंकि इसने माता पिता हम दोनोंकी प्रदक्षिणा की है इससे देवताओंका बनाया हुआ यह मोदक इसी को हम देंगी १६ यह कहकर वह मोदक गणेश को देदिया इसीकारण से सबसे प्रथम गणेशजीकी पूजा होती है व सब छोटे बड़े यज्ञों में भी प्रथम गणपतिही का पूजन होताहै वेद शास्त्र स्तोत्रादिकों में व नित्यपूजा में भी सबको चाहिये कि पहिले गणेशका पूजनकरके फिर अन्यदेवकी पूजाकरे १७ क्योंकि पार्वती सहित महादेवजीने उनको बड़ा भारी वर दिया है कि आगे इन्हीं गणेशहीं की पूजासे सब देवता सन्तुष्ट होंगे १८ व सब देवता व

देवियों का व पितरों का तप व सन्तोष प्रथम इनकी पूजा करने से नित्य होगा १९ इसीसे नित्य गणपति की पूजा प्रथम करनी चाहिये हे द्विज ! तुम भी सब यज्ञों में प्रथम गणेशका पूजन किया कराया करो क्योंकि सब कोटि कोटिगुण होताहै जैसे कि देव देवियों के २० गणों को बुलाकर महादेव व पार्वतीजी ने सबके आगे सब देवगणों की आधिपत्य गणेश को दी है २१ इससे सब यज्ञों में व सब स्तोत्रों के पाठ करने में व नित्यपूजनमें मनुष्य प्रथम गणेश की पूजाकरके सब सिद्धि पाताहै २२ यही जानकर सब देवताओंने भी एक बार गणेशकी पूजा निश्चय से प्रिय मनोरथ पाने के लिये व स्वर्गमोक्ष के लिये की थी २३ चतुर्थी के रोज गणेश की पूजा करके रात्रिको भोजन करे यह पूजा लिङ्गमें व प्रतिमा में जो करे २४ तो यह स्तुतिकरे कि हे गणाधिप ! तुम्हारे अर्थ नमस्कार है हे सब विघ्नों के शांति देनेवाले उमानन्द ! हे प्राज्ञ ! भवसागर से हमारी रक्षाकरो हे हरके आनन्द करनेवाले ! हे ज्ञानविज्ञानप्रद ! हे प्रभो ! हे विघ्नराज ! तुम्हारे नमस्कार है तुम सदा प्रसन्न होओ २५। २६ जो कोई व्रतकरके इन मन्त्रों से गणेश की पूजा करता है व नमस्कार करता है वह सब पापों से छूटकर देवलोक में जाकर पूजित होताहै २७ अब गणेश के १२ नामका स्तोत्र कहते हैं ॐ नमोगणपतये यह मंत्र कहागया २८ गणपतिर्विघ्नराजोलम्बतुण्डो गजाननः। द्वैमातुरश्चहेरम्बएकदन्तोगणाधिपः २९ विनायकश्चारुकर्णःपशुपालोभवात्मजः। द्वादशैतानिनामानिप्रातरुत्थाययःपठेत् ३० अर्थात् गणपति १ विघ्नराज २ लम्बतुण्ड ३ गजानन ४ द्वैमातुर ५ हेरम्ब ६ एकदन्त ७ गणाधिप ८ विनायक ९ चारुकर्ण १० पशुपाल ११ भवात्मज १२ ये बारह नाम प्रातःकाल उठकर जो पढ़े २९।३० उसके वशमें सब विश्व होजाय व विघ्न कहीं न हो बड़े बड़े प्रेत शान्त होजायँ व कोईरोग न पीड़ितकरे व सबपापोंसे छूटकर अक्षय स्वर्गपावे इसमें कुछ विचारणा करनेकी आवश्यकता नहींहै ३१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेगणपतिस्तोत्रंनाम त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥

चौंसठवां अध्याय ॥

दो० चौंसठयें महँ पुनि गणप स्तवन कह्यो अतिनीक ॥
ज्यहि पढ़ि कढ़ि सुर भवनसों समरहिगये सुठीक १
दैत्यन जीत्यो पुनि असुर कालकेय बलवान ॥
देव पराजित कीन पुनि मरो चित्ररथवान २ ॥

व्यासजी फिर सञ्जय से बोले कि सबसिद्धि करनेवाला सब अभीष्टदेनेवाला व पवित्र गणेशका और स्तोत्र कहते हैं १ ॐनमो गणपतये एकदन्त महाकाय तप्तकाञ्चनसन्निभ लम्बोदर विशालाक्ष व गणनायक के हम प्रणाम करते हैं २ मौंजी व काला मृगचर्म्म धारणकिये नागको यज्ञोपवीतकिये व मस्तकपर द्वितीयाका चन्द्रमा धारण कियेहुये गणनायक की हम वन्दना करते हैं ३ सब विघ्न के हरनेवाले सब विघ्नों से रहित व सब सिद्धिकरनेवाले देवगणनायक की हम वन्दना करते हैं मूषकपर आरूढ़ होकर देवासुर नाम महायुद्ध करनेको ४ जानेवाले महाबाहु उन गणनायककी हम वन्दना करते हैं अम्बिका के हृदय के आनन्द देनेवाले व मातृकाओं से परिवेष्टित ५ भक्ति के प्रिय मदसे उन्मत्त उन गणनायक की वन्दना करते हैं विचित्र रत्नों से विचित्रांगवाले चित्रमाला से विभूषित ६ कामका रूप धारण कियेहुये उन गणनायक देवकी वन्दना करते हैं गजमुख देवताओं में श्रेष्ठ सुन्दर कानों में भूषण पहिने ७ पाश व अंकुश धारण कियेहुये उन देवगणनायक के नमस्कार करतेहैं यक्ष किन्नर गन्धर्व्व सिद्ध विद्याधरों से सदा स्तुतिकियेहुये उन महादेव गणनायकके प्रणाम करते हैं इस गणाष्टक को जो कोई भक्तिसे पढ़ता ८।९ वह मनुष्य सब सिद्धि पाताहै व रुद्रके लोकमें जाकर पूजित होताहै व सात जन्मतक वह मनुष्य निर्द्धन कभी नहीं होता १० जो इसको नित्य पढ़ता है वह नर बड़ा राजा होताहै व इसके पढ़ने सुनने से भी तीनोंलोकों को वशमें करता है यह महापुण्य माहात्म्य गणेशजी का श्रेष्ठ स्तोत्र है ११ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेगणपतिस्तोत्रंनामचतुष्षष्टितमोऽध्यायः६४॥

पैंसठवां अध्याय ॥

श्रीवेदव्यासजीने कहा कि सब नान्दीमुखों में जो गणाधिपकी पूजन करता है उसके सब वश होजाते हैं व अक्षय पुण्य होती है १ गणानांत्वा इस मंत्रसे गणाधिप के पूजन से सब काम सिद्धहोते हैं व स्वर्ग मिलता फिर मुक्ति मिलती है २ किसी देवालय में प्रतिमा स्थापित करके वा विचित्र शिवालय में अथवा द्वारपर के सरदरमें जो गणेशकी मूर्त्ति स्थापित करता है ३ वा अन्य किसी स्थान पर जहां कि निरन्तर उनकी मूर्त्तिपर दृष्टिपड़तीरहे देवेश को स्थापितकरके जो नर अपनी शक्तिके अनुसार पूजन करता है ४ उसके सब प्रिय कार्य्य निर्विघ्न समाप्त होते हैं व तीनोंलोक उसके वशमें आजाते हैं ५ विद्यार्थी जो पूजन करता है वेदशास्त्र से उत्पन्न विद्या पाताहै व और भी कारीगरी व विजय सब सिद्धियों को पाकर अन्त में मोक्षपाता है ६ धनका अर्थी बहुत धन कन्याका अर्थी सुन्दरी कन्या पाताहै ऐश्वर्य्य धन व कुलका मोक्ष देनेवाला व भूषण पुत्र पाताहै ७ व किसी रोग से वह कभी पीड़ित नहीं होता न ग्रह प्रेत पिशाचादिकों सेही पीड़ित होताहै शृंगी व राक्षस बिजुली वज्र व चोरोंसे कभी पीड़ित नहीं होता ८ विनायक की पूजा करने से उसके ऊपर राजा नहीं कोप करता न महामारीकी भय होतीहै न दुर्बलता व दुर्भिक्ष की पीड़ा कभी उसको गणेशजी की पूजा करने से बाधित करती है ९ गणेश की पूजा अपने अर्थकी सिद्धि के लिये सब देवताओंने कीथी इससे सब विघ्नोंके काटनेवाले गणेश के प्रणाम करना चाहिये १० सर्व पूजा करनेका यह मन्त्र है कि ॐनमोगणपतये इससे नारायणके प्रियपुष्पोंसे व अन्य सुगन्धित पुष्पोंसे मोदक फल मूल अन्य देशकाल में उत्पन्न द्रव्यों से ११ दधि दुग्ध अन्य प्रिय वाद्यों से व सुगन्धित दीपधूपादिकों से जो गणेश की पूजा करता है वह सब सिद्धि पाताहै १२ व गणेश के लिंगकी पूजा जो विशेष रीति से करताहै व बहुत प्रकार की प्रिय पूजाकी सामग्री देताहै वस्त्र भूषणादि से भूषित करता है सो सब लक्ष गुण होताहै १३ वह सब फल

पाताहै यह गणेशकी मूर्त्ति भारतखण्डमें वनिताके पूर्व तर्फ में लौहित्यानदीके दक्षिण तीरपरहै १४ वहां लिंगरूप गणेशकी स्थापना महादेव पार्व्वतीकी आज्ञासे सब देवताओंने की है सो वहां लिंगरूपी गणेश अब भी सब लोगोंका विघ्ननाशने के लिये स्थितहैं १५ अपनी शक्तिके अनुसार इकट्ठे किये हुये पदार्थों से वहां गणेश की पूजा करके मनुष्य वेद शास्त्रों के अर्थों का पारगन्ता होकर सबों का नायक होजाताहै १६ व एकवार प्रदक्षिणा करके दर्शन करके जो मनुष्य उस लिंगरूपी गणेशकी मूर्तिका स्पर्श करताहै अक्षय स्वर्गवास पाताहै व वहां देवताओं से पूजित होताहै १७ म्लेच्छादिकों के संसर्ग से जो दोषहैं उसे दूर करने के लिये व तपस्वियों की गतिके लिये व सबजनों के पुत्र पानेके लिये शंभु व विनायक पूज्यहैं १८ लौहित्यानदी में स्नान करके जाकर गणाधिपकी पूजा करताहै वह सातजन्म के कियेहुये पापसे छूटजाता है इस में कुछ भी संशय नहीं है १९ विनायकजी की पूजाकरके मनुष्य निर्द्धनता कृपणता शोक मत्सरादि असंगल नहीं पाता २० गणेशकी पूजा करनेसे मनुष्यको फिर सिद्धि फिर भोग्य फिर कीर्त्ति फिर बल मिलता रहता है इसमें कुछ संशय नहीं है २१ इनकी पूजा करने से सब अमंगल नष्ट होजाते हैं व उसके ऊपर ब्रह्मा विष्णु शिवादिक सब देव प्रसन्न होते हैं २२ एकवार मोह व भ्रान्तिसे इन्द्रने न श्री हरिकी पूजाकी न गणेशहीकी की इससे उन बुद्धिमान्के राज्यमें बड़ाभारी विघ्न उत्पन्नहुआ क्योंकि इन्द्रने गणेशकी पूजा बनाय भुलादी थी इससे महावीर्य्यवाले दैत्योंने बड़ा युद्ध किया उस रणमें २३ हिरण्याक्ष ने इन्द्रको जीता था इसकारण से देवतालोग सौ वर्ष तक निर्व्वीर्य्य होगयेथे २४ व उन्हीं दिनोंमें देवासुर संग्राम हुआ उसमें देवताओंकी हारहुई तब सब देवताओंने जाकर देवदेव शिव जीसे निवेदन किया २५ कि हे भगवन्! असुरोंने फिर युद्ध करके हमलोगों का राज्य हरलिया व यज्ञ भाग बन्द कर दिया यह सुन कर महादेवजी देवताओं से यह वचन बोले कि २६ हमने व पार्वती ने प्रसन्न होकर गणेश को यह वर दिया है कि जो तुम्हारी पूजा

करेगा उसकी सिद्धिहोगी इससे उनकी पूजासे तुमलोगों की परम सिद्धि होगी २७ क्योंकि जो कोई पुरुष किसी महोत्सवमें गणेश जीका निरादर करता है उसकी सिद्धि कभी नहीं होती व समर में पराजय होती है २८ तुमलोगोंने यज्ञ बड़ाभारी किया परन्तु मारे मोह व निन्दासे गणेशजी की पूजा नहीं की इसी से तुमलोगों की पराजय हुई २९ इससे हे देवताओ! शीघ्रजाओ व तुरन्त महात्मा गणेश की पूजाकरो तुमलोगों की तुरन्त जय होगी ३० तब महादेवके मुखसे अपने कल्याणका वचन सुनकर हर्षितहोकर सबदेवगण जाकर गणेशके आगे स्थितहुये ३१ व हाथ जोड़कर बोले कि हे गणाधिप! तुम्हारे नमस्कारहै हे सब देवताओं के एकपालक भुक्ति मुक्ति देनेवाले! प्रीतिसे तुम्हारी देवमूर्त्तिके नमस्कार करते हैं ३२ सब युद्धोंमें जय देनेवाले सब कर्म्मों में सिद्धि करनेवाले महामाया करनेहारे व महाकाय तुम्हारे नमस्कार करतेहैं ३३ एकदन्त महाप्राज्ञ वक्रतुण्ड विनायक महर्षि व देवता व इन्द्रके देवके हम सब नमस्कार करते हैं ३४ हे विनायक! यज्ञमें प्रथम जो तुम्हारी पूजा नहीं की वह महर्षियों देवों व इन्द्रका दोष क्षमाकरो देवताओंकी वाणी सुनकर गणेशजी बोले ३५ कि हमसे वाञ्छित वर मांगो तब बृहस्पतिको आगेकरके इन्द्रादि सब देवगण ३६ गणेशजीसे बोले कि हम लोगोंकी विजयहो यही वर मांगते हैं देवताओं का वचन सुनकर गणेशजी वाक्य बोले ३७ बहुत अच्छा हे सुरश्रेष्ठो! तुम लोगों की शीघ्र जयहोगी इस बातको सुन सब देवगणोंने हर्षयुक्त मनसे ३८ गन्धादिकोंसे गणेशजीकी बड़ीभारी पूजाकी चन्दन दिव्य धूप सुन्दर वस्त्र नन्दन वनमें उत्पन्न ३९ पारिजातादि पुष्पोंसे व अन्य देवताओं के मनहरनेवाले पदार्थोंसे भी पूजाकी देवताओंसे पूजित गणेशजी देवसत्तमोंसे बोले ४० कि हे देवलोगो! अद्भुतसाहस देव विष्णुके पास जाओ वे तुम्हारा वाञ्छित काम करेंगे तब तो देवता ४१ अपने अपने रथोंपर चढ़कर नाशरहित श्रीहरिजी के समीप गये पीताम्बरको धारण कियेहुये हरिके नमस्कार करके आनन्द से बोले ४२ कि हमलोग शिवजी के पुत्रके समीप जाकर गणेश

की पूजा करके आपके निकट हे केशव! हे महात्मन्! आये हैं ४३ देवताओं का ऐसा वचन सुनकर अव्यय श्रीहरि बहुत अच्छा यह कहकर देवगणोंसे बोले कि हम श्रेष्ठ श्रेष्ठ सब दैत्योंको मारेंगे ४४ श्रीनारायणके मुखसे च्युत वचन अमृत सुनकर देवगण बहुत खुश हुये व मानों बहुत मनोहर द्रव्योंसे हरिकी पूजाकी ४५ तब इन्द्रादि देवताओं से श्रीविष्णुभगवान् फिर बोले कि सबलोग अपनी अपनी सेना इकट्ठी करके युद्धकरने को निर्भय उद्यतहोओ ४६ व उन दुराचारी दैत्योंको व फ़ौजको जो कि चारोंतरफ है हम मारेंगे अस्त्रशस्त्र लेकर समर में तुमलोग पहिले निर्भय होकर युद्ध करने के लिये ठहरो ४७ श्रीविष्णुभगवान् का वचन सुनकर देवसत्तम विमानोंपर चढ़कर दिव्य अस्त्रशस्त्र धारण करके सबचले ४८ व बड़े कठोर वचन दैत्यों को कहनेलगे उन वचनों को दैत्यों के दूतों ने सुन। हिरण्याक्षनाम महाबली दैत्यराज से जाकर कहा ४९ सुनकर असुरों में श्रेष्ठ दैत्यराज बहुत कुपितहुआ व अपने मन्त्रियों को बुला कर क्रुद्धहोकर बोला कि ५० इस समय इन्द्रादि सब देवगण क्रूर बुद्धि होगये हैं विष्णुकी प्रत्याशामें हैं व शम्भुसे भी कहाहै ५१ कि अतिउत्कट दैत्यसमूहों को हम कैसे जीतेंगे यह सुनकर महादेवजी बोले कि भो देवो! तुम सबजने गणेशजी को पूजन करो ५२ उन गणेश की पूजा करके असुरों व दानवों को जीतोगे यह सुनके सब देवगणोंने प्रसन्नतासे गणेशजीको पूजन किया ५३ तब खुशहोके गणेशजीने बड़ा उत्कृष्ट वरदान दिया कि अभी सब दैत्योंको जीतो-गे यह सुनके देवताओंने खुशीसे ५४ हरिसे कहा और हमारे मारने की प्रत्याशा किये हैं विष्णुने देवताओं से कहा कि बहुत अच्छाहुआ तबतो देवतालोग अस्त्रलेके रथोंपर सवारहोके ५५ लड़ने को तैयार निर्भय खड़ेहैं इससे जिसकी जो शक्ति हो वह देवताओंके जीतनेके वास्ते कहे ५६ तब राजाके वचन सुनके मधुदैत्य बोला कि हे राजन्! हम हरिको जीतेंगे हमको सहायक दीजिये ५७ नारायणके जीतनेसे सब देवता डरजायँगे इससे सब पुरोंके जीतनेवाला नारायण हमारा भागहै ५८ इसके बाद धुंधु व सुन्द व कालकेय महाबली मधुके सह-

यक कहनेलगे कि हे राजन्! हम माधवको जीतेंगे ५९ ये चारदैत्य
की फ़ौजमें मुख्य थे और बलीभी थे काल मृत्युकी बराबर सब अस्त्र
विधिके जाननेवाले थे ६० उनमें बल कहनेलगा कि जिसको जयप्राप्त
है उस विष्णुको हम जीतेंगे यह हे राजन्! हमने प्रतिज्ञा कीहै ६१
नमुचि व शुचि दोनों बलसे दैत्यराजसे कहनेलगे कि हमदोनोंजने
बलसे बलवानों को जीतेंगे ६२ जम्भ कहनेलगा कि भो दैत्यलोगो!
निर्भय होजाव हम निस्संदेह अग्रचरणसहित इन्द्रको जीतेंगे ६३
यह सुनकर त्रिपुर बोला कि हम विनायक को जीतेंगे इसके बाद देव-
ताओं को मारनेवाला बलवान् सेनानी मथनाम दैत्य बोला कि ६४
मैं राक्षसों को लेकर सब हिरण्यक व कुबेरको जीतोंगा इसी समय
नारद मुनि तहां ६५ जाके हिरण्याक्ष से बोले कि मैं जिष्णुभगवान्
का दूत आयाहूं जो प्राणोंको चाहो तो हमारे कहने से राज्य छोड़दो
६६ न छोड़ो तो हमसे लड़ो या रसातल को चलेजाओ यह सुनके
हिरण्याक्ष कोप करके नारदजीसे बोला ६७ हे ब्राह्मण! तू अवध्य
है इससे हमारे आगेसे जा देवताओं की विपत्ति व क्लेश व नाश आगे
६८ देख हे विप्र! क्षणमात्र में सब हरिहरादिक नाश होजायँगे
ऐसा कहके वह दैत्येन्द्र बलाध्यक्षसे बोला ६९ कि सब रथ व फ़ौज
तय्यार करके लाओ जल्दी ऐसे दैत्यराज के वचन सुनके वह नायक
इधर उधर ७० फ़ौजोंको बुलाकर सहसा से डरतेहुये जल्दीआये
कोटिन कोटिन अक्षौहिणी फ़ौजें ७१ एक एक वीरके बड़े २ वाहन
रथ चित्रविचित्र हाथी ऊंट गधा ७२ सिंह व्याघ्र भैंसोंपर चढ़के आये
व बड़े बड़े बाजे बाजनेलगे सिंहोंके भयानक शब्द होनेलगे ७३
जिन करके दिशा पूरित होगईं समुद्र क्षोभित हुआ पर्वत व सब
लोक डरे व कांपने लगे ७४ देवतोंने नगारे बजाये व और बाजाओं
से तरह तरह के वायुसे मेघोंकेसे शब्द होनेलगे ७५ त्रैलोक्यवासी
सबलोग मारेडरके [illegible] हुये व सब मनोरथ रहित होगये ऐसा
भारी संग्रामहुआ जिसमें आकाश में वीरपहुंचे ७६ परिघ फँसरी
शूल तलवार सोंटा धन्वा व बड़ेतीक्ष्ण बाणों से परस्पर संग्राम में
मारनेलगे ७७ शस्त्रास्त्रों से दिशा सब पूरितहुईं ऐसी लड़ाई हुई कि

पृथ्वी पहाड़ जल ७८ देवस्थान आकाश पर्व्वताग्र व शिखरों व कन्दराओं में व जङ्गलों में उनसे युद्धहुआ ७९ पुष्कलादि मेघों की वर्षाकी धाराकाजल जैसे वर्षता है इसी तरह फ़ौजों में सैकड़ों हज़ारों अस्त्र वर्षे ८० किसीके बाणोंसे शरीर कटगये कोई शक्तियों से कोई मुसलों से कोई शूलसे कोई फरसा से घायल होके धरती में गिरगये ८१ उनमें जौन बहादुर नीतिसे लड़ते थे स्वामी के अर्थ बेख़ौफ लड़कर सम्मुखगिरे वे तो वैकुण्ठ को चलेगये ८२ और जे डरपोकने पापिष्ठ भगेहुओं के मारनेवाले व अन्याय से लड़नेवाले थे वे यमपुरीको पहुंचे ८३ इससे तुमलोग हाथियोंपर चढ़कर तो हाथियोंपर चढ़ेहुये लोगोंको मारो घोड़ेवाले घोड़ोंके व ऊँचे स्थानोंपर के लोगों को ऊँचेपर से मारो रथोंपर चढ़नेवालों को रथोंपर चढ़ेहुये मारो व पैदरोंको पैदरचलकर ८४ ऐसी अपने राजाकी आज्ञापाकर सब दैत्यगण देवताओं से युद्ध करनेलगे युद्धकी इच्छा किये दोनों ओर के शूरवीर हर्षितहोकर परस्पर लड़नेलगे उनमें जो धर्म्मिष्ठ थे वे तो प्रसन्नता से धर्म्मयुद्ध करने लगे ८५ किसी किसीके बाहु महाबल से आयेहुये मुसलों से छिन्नभिन्न होगये व मस्तक फटगये केश व शिर व वस्त्र किसीके पृथ्वीपर गिरगये ८६ व महाबली मध्यसे कटकर व धड़से जुदाहोकर धरती में गिरपड़े किसी किसीके उग्रखड्गों के पातोंसे व बहुतों के फरसों से अङ्ग छिन्नभिन्न होगये ८७ दिव्य भूषणों से भूषित बहुत से वीर पृथ्वीपर छिन्नभिन्न होकर गिरपड़े यहांतक कि हाथी घोड़े व रथ देवता दैत्यों से भूतल प्रकाशित होनेलगा ८८ बहुत प्रकारकी पताकाओं व केतुओं से टूटेहुये रथादिकों से रणभूमि पूरितहोगई व वन पर्व्वतादि सहित सब पृथ्वी ८९ देवताओं दैत्यों के रुधिर के समूहसे बिलकुल भीगगई व मांसभक्षी पशु पक्षी आकर वीरोंके अङ्ग नोच २ कर खानेलगे ९० राक्षसों ने व वृकादिकों ने बहुतसा रुधिर उस समयमें पानकिया व अन्य शृगालादि पशुओं ने और गृध्र चिल्ह काकादि पक्षियों ने बड़े आनन्द से बहुत रुधिर पानकिया व बहुतसा मांस खालिया इस अनन्तर में देवताओंके आचार्य्य महापण्डित बृहस्पतिजी वहांपर आये देवशूरों के जीनेके लिये

मृतसञ्जीविनीविद्या को जपनेलगे जिस विद्याको उस समय कोई भी नहीं रोकसक्ता था फिर देवताओं के वैद्य महाविद्वान् धन्वन्तरिजी वहांआये ओषधों के प्रयोग करतेहुये उस महारण में घूमने लगे ९३ । ९४ उन दोनोंकी युक्तियों से जो देवगण मृतक हुयेथे सब जीउठे व घावरहित पीड़ाहीन व बलयुक्त होकर फिर अतिकठोर युद्ध करनेलगे ९५ इस प्रकार युद्ध करने से सैकड़ों सहस्रों दैत्योंके उद्भटगण बाणोंसे गलाकटकर गिरगये व पुण्यके योगसे ९६ देवताओं की उस समय विजयहुई इससे सिद्ध चारणादिलोग जयशब्द करकेनाद करनेलगे ऋषिलोग व अन्य आकाशचारी गन्धर्व्व अप्सरादिगण ९७ सब जयजयकार करनेलगे देवताओं के नगारे बाजे व अप्सराओं के गणनाचे गन्धर्व्वलोग गीत गानेलगे व महर्षिलोग प्रशंसा करनेलगे इस कर्म्मको देखकर महाबली महातेजस्वी दैत्यराज का सेनापति कालकेयनाम दैत्य रथपर चढ़कर धन्वालिये रणमें उपस्थित हुआ ९८ । ९९ व देवसमूहों को नाना शस्त्रास्त्रों से मारकर पृथ्वीपर नचानेलगा बाणसमूह से आकाश को आच्छादित करदिया १०० यहांतक कि देवसैन्यपर सहस्रों किरोड़ों बाण बरसाये उससे संग्राम से न लौटनेवाले देवगण गिरनेलगे १०१ व सब सिद्ध गन्धर्व्व किन्नरादिकोंके अङ्गोंसे रुधिर बहनेलगा व विविध प्रकार के शस्त्रास्त्रों से पीड़ित देवगण पृथ्वीपर आगिरे १०२ उनमें कोई कोई तो सहस्र बाणों से भिन्नथे व कोई दशसहस्र शरों से इस प्रकार जो श्रेष्ठदेवगण थे सब महावीर्य्य महापराक्रम पृथ्वीपर पतितहुये १०३ व बहुतसे देवगण रथोंपर चढ़ेही खड़े व्यथितहुये बाणों से ऐसे व्यथितहुये कि कालकेयके सम्मुख खड़े न होसके १०४ उसने देवसेनामें ऐसा मथन किया जैसे हाथी कमलसहित किसी तड़ाग को मथे वज्र व अग्निके समान कठोर प्रकाशित उसके बाणोंसे देवगण ऐसे पीड़ितहुये १०५ कि समर में न ठहरसके इससे इन्द्रके समीपको गये तब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ चित्ररथनाम देव १०६ रथ पर चढ़कर युद्ध करने के लिये आया व महासुर उस सेनापति से बोला १०७ कि हे महाशूर ! तुम जैसे देवसेना को माररहे हो वैसे

शूर व प्रशंसा करनेके योग्य हो १०८ तुमने इस समय बड़ा हिर-ण्याक्ष का प्रियकर्म्म युद्धमें किया परन्तु अब हम अपने बाणों से तुमको यममन्दिर में पहुँचाते हैं १०९ तब कुछ हँसकर कालकेय बोला कि हमने सब देवगणों को तो प्रथमही लीलापूर्वक जीत लियाहै ११० व सब देवसेना भी निन्दाके साथ जीतली है अब हे सुरसत्तम! यदि तुमको मरणमें प्रीति है १११ तो बहुत अच्छा इन तीक्ष्णबाणों से तुमको भी अभी यममन्दिर को पहुँचाते हैं इतना कहकर काल समान बाण निकालकर ११२ चलाया परन्तु चित्र-रथने तीन तीक्ष्णबाणों से उसे आकाशही में काटडाला तब उसने समरमें अन्य बाण संयोजित करके ११३ देवताओं के मुख्य चित्र-रथपर चलाया परन्तु बड़ी शीघ्रताके साथ उसे भी तीक्ष्णबाणोंसे उन्होंने काटडाला तब परस्पर तीक्ष्णबाणोंकी वर्षा दोनों एक दूसरे के ऊपर करनेलगे व दोनों धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ थे इससे एक दूसरे के बाण बाणों से काटतेरहे इस प्रकार उन दोनों देव दैत्यों का अद्भुत धर्म्मयुद्ध अत्यन्त कठोरहुआ ११४।११५ उसके देखनेके लिये सब ऋषि देव असुर नागादि आये इस तरह सैकड़ों हज़ारों बाणों को लियेहुये ११६ परस्पर जीतनेके लिये समरमें दोनों वीर शजितहुये इसके बाद गन्धर्व्वपतिने बड़ा क्रोध किया क्योंकि वह बड़ा तेजस्वी था ११७ उसने तीनबाण दैत्य के मस्तकमें मारा पांच बाण हृदय में मारा सात बाण पेट व नाभिमें मारे पांच वस्तिमें मारे ११८ बाणों से पीड़ित दैत्य महाक्लेश को प्राप्तभया शिथिल भी होगया धन्वा भी शिथिल हुआ यहांतक कि बहुत कालके बाद होशभया ११९ मधुदैत्यको तीन बाणोंसे भेदन किया व दैत्यराजके देखतेही देखते अस्त्रोंसे धन्वा काटडाला १२० इसके बाद बली सुरोत्तमने काला-न्तक के समान हज़ारबाणसे दैत्य सिंहको मारा १२१ हतचित्त दैत्य के के शरीर से बहुत रुधिर बहनेलगा पंच बाणों से व्याकुल उस विह्वल दानव ने फिर शूल लिया १२२ शूल हाथमें लियेहुये उस दैत्य के घोड़ोंको चार बाणोंसे मारकर तीन बाणोंसे सारथीको गिरा दिया १२३ तब तो उस दैत्यने गन्धर्व्वसत्तमको शूलसे मारा उस

शूल को बलवान् चित्ररथ ने तीन बाणों से काटडाला १२४ जैसे सर्प अपना फणा काटडालनेसे कोप करता है ऐसेही वह वीर दैत्य शूलको कटा देख मुद्गर लेके उस देवको दौड़ा १२५ मुद्गर लियेहुये उस दैत्य सेनाधिपको आतेहुये देखकर चित्ररथने तलवारसे उसका शिर देहसे काटकर अलग करदिया १२६ तब वह दैत्य पृथ्वी में गिरगया जिसके गिरनेसे पृथ्वी चलायमान हुई व बाद सब दैत्य गण विमुख होके भागे १२७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेकालकेय
वधोनामपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

दो० छाछठयें अध्यायमहँ भयो घोर संग्राम ॥
कालेयकको मारकर गो जयन्त निजधाम १

व्यासजी बोले कि भाई को मृतक देखके कालेयनाम दानव धन्वाबाण लेके चित्ररथ को दौड़ा १ कालमृत्यु के समान दीप्तिवाले उस असुरको दौड़ते देखके महाबली इन्द्रके पुत्र जयन्तने उसको घेरलिया २ व महातेजस्वी जयन्तजी सत्य धर्मयुक्त दोनों लोक में हित करनेवाले वचन उस दैत्यसे बोले ३ कि हथियारके लगने से जो दुःखीहो व और किसीभी तरहके क्लेशसे युक्तहो व प्रभग्न व अस्त्र रहित को जो मारे वह मूर्ख है ४ इससे अब इसके संग मत लड़ो धर्मयुद्ध में स्थितहो ५ इस वचनको सुनके क्रोधसे मूर्च्छित कालेय जयन्तसे बोला कि मैं पहले अपने भाई के मारनेवाले को मारकर अभी तुझे भी मारूंगा ६ तब तो उसके वचनको सुनतेही सुरश्रेष्ठ जयन्तने कालाग्नि के तुल्य प्रभावाले उस असुरको तीक्ष्णबाणोंसे मारा ७ जिन बाणों को काटकर उस असुर ने तीनबाणों से जयन्त को मारा जैसे कि वर्षाकालीन मेघों से गेरूकी नदी बहै ८ इसतरह से वे महाबली दोनों वीर न कोई डरता है न निर्बल पड़ता है एक एक के जीतने की इच्छासे दम भी न लेतेथे ९ बाद इसके जयन्त जीने बाणसे उस दैत्यका धन्वा काटकर पांच बाणोंसे कालेय दैत्य

के सारथी को ज़मीनपर गिरादिया १० व महातीक्ष्ण आठ बाणोंसे चारों घोड़ोंको गिराया तब तो उसने पैदलही शक्तिसे कुमारजीको मारा ११ और गदासे कूबर वरूथ व घोड़ों रथसहित जयन्तजीको पृथ्वी में गिराकर सिंहनाद से गर्जा १२ परन्तु जयन्तजी पृथ्वी में गिरतेही बड़ी फुरती से गदा लेकर उसके निकट पहुँचे व गदा चलनेलगीं जैसे कि बिजली गिरने से लोगोंको असह्य आवाज होती है १३ उसीतरह दोनों वीरों के गदापात से शब्द वारंवार होनेलगा इस तरहसे लड़े कि बराबर चार वर्षतक गदायुद्धही करते रहे १४ इस तरह आकाशमें लड़तेहुये जब गदा टूटगई तब तो दोनों वीरोंने ढाल तलवार लैके पैदलही महाअद्भुत लोमहर्षण युद्ध किया १५ जिसको देखके देवता दैत्य महोरग सब विस्मितहुये दो घंटोंके बाद तलवारों की चोटोंसे दोनों वीरोंकी बख्तर कटगई १६ तिसपर भी दोनों युद्धाभिलाषियों का खड्गयुद्ध होताही रहा तब तो बड़े पराक्रमी जयन्तने उस दैत्यको चिकुर में पकड़कर १७ तलवारसे शिर काटकर पृथ्वी में गिरादिया तब तो सब देवता जयजयकार शब्द करके महाआनन्द को प्राप्तहुये १८ और अंगभंग सब दैत्यसमूह सब दिशाओं को भागगये १९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेकालेयवधो नामषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

दो० सरसठयें अध्यायमहँ सुर असुरनकर युद्ध ॥
जामहँ बलि अरु इन्द्रह्वौ कीनसमर अतिक्रुद्ध १

वेदव्यासजी ऋषियोंसे बोले कि कालकेयका वध सुनकर महाबली हिरण्याक्ष दैत्यराज अत्यन्त कुपित हुआ व मारेरोष के नेत्र लाल करके उसने असुरोंको आज्ञादी १ कि अबकी मैंभी देवताओं को मारनेकी इच्छासे लड़ाई के वास्ते जाऊंगा व सब दैत्य भी देवताओं के मारनेको जावें जो कोई न जायँगे वे यहां हमारे हाथों से मारेजायँगे २ ऐसा वचन राजाका सुनकर शेष दैत्यगणों के स्वामी

अपनी २ सेना लेकर युद्ध करनेको चले क्योंकि सबके सब कालकी फांसीमें बँधजानेके कारण पीड़ित होरहे थे ३ इस प्रकार प्रथमकी सेनासे सौगुनी अधिक सैन्य अबकी दैत्योंकी चली व सब युद्धकी इच्छासे आकाश को निरन्तर एक दूसरी सेनाके पीछे चली ४ व इधरसे सब एकादश रुद्र सब बृहस्पतिआदि ऋषिगण आठवसु इन्द्र स्कन्द गणेश सबों के जीतनेवाले श्रीविष्णु अर्जुन के आगे चलनेवाले ५ ये सब हर्षित होकर युद्ध करनेके लिये चले व देवता दैत्यों की सेनाका ऐसा महायुद्ध हुआ कि ६ सर्व्वलोक भयङ्कर न कभी तबतक ऐसा हुआ था न सुनाई दिया था नानाप्रकार के शस्त्रास्त्र ऐसे दोनों ओरसे चले कि जैसे शिशिरऋतु में जंगल में बूंदें पड़ें जिनसे पर्व्वत वन समुद्रसहित सब पृथ्वी आकाश अन्तरिक्ष स्वर्गलोक सब पूरित होगये ऐसा वह युद्ध शोभित हुआ ७ आकाश में देवता दैत्योंसे परस्पर युद्धहोनेलगा व पृथ्वीपर भी दोनों सेनाओं से समर होनेलगा ८ दोनोंओरों से बाण मुसल ऋष्टि शक्ति आदिकी वृष्टिहोनेलगी व दारुण खड्गपात व चक्र व फरसोंकी मार होनेलगी ९ अन्य विविध प्रकार के आयुधों से परस्पर सब मारने लगे यहांतक कि पृथ्वीसे लेकर आकाशपर्य्यन्त सब नानाप्रकार के शस्त्रास्त्रों से घोररूप दिखानेलगा पूरित होगया १० जैसे प्रलय समय के मेघ मुसलधाराओं से रुधिरकीवर्षाकरते हैं वैसेही शस्त्रोंसे व बाणों से कंक कौआ शृगालादिकों से ११ व घावोंसे देवता दैत्यों के अंगों से मुसलधाराओं से रुधिर की वर्षा होनेलगी कोई कोई गिरपड़ते कोई युद्धकरते कोई खेलते कोई हँसते १२ कोई पीड़ाके नाद करते व कोई बार बार सिंहनाद करते किसी किसीके बाहु छिन्नहोगये थे व किसी किसीके पांव छिन्नभिन्न होगये १३ व किसी किसीके बगल पेटआदि छिन्नभिन्न होगये थे इससे पृथ्वीपर सैकड़ों गिरेथे कोटि कोटि सहस्र गज अश्व व असुर १४ धरणी के पृष्ठपर गिरते व रुधिर समूह में डूबजाते यहांतक युद्धहुआ कि भूतलपर रुधिर का समुद्र ही बहनिकला १५ व नदियां उसमें से उलटी बहनेलगीं खड्गादिकोंके मियान उनमें तृणकाष्ठों के समान बहनेलगे व शक्तियां गोलि

काष्ठके समान नीचे नीचे बहनेलगीं १६ मुसल मुद्गर शूलादि मकरादि जलजन्तुओं के स्थानपर होगये जयके ध्वज पताकादि मत्स्यों के समान व ढालें कछुओं के समान उतराती थीं १७ बहुत से शर व ऊँट इत्यादिकों से रुकेहुये वीरोंके केश व चामरें शैवालके समान इतस्ततः हलकोरों से चलते थे १८ व अन्य विविध प्रकार की पड़ी हुई लोथोंसे महारुधिरमय समुद्र उमड़ाकर बहनेलगे उस समय पर्व्वत वनादि सहित सब पृथ्वी १९ रुधिर समूह से पूरित होनेके कारण महाभयङ्कर होगई थी वहां स्कन्दजी की शक्तिके पातसे लक्षों दैत्य यमपुरको चलेगये २० नन्दीश्वर व गणेशादि गणोंने भी सहस्रों को यमपुर पहुँचाया अग्नि ने अग्निशिख बाणों से व वरुण के पाश से भग्नहोकर बहुत से यमालयमें मग्नहुये २१ व वरुण आदि के पुत्रों पौत्रों व आगे चलनेवाले व मन्त्रियोंने शर शक्त्यादिकों से दैत्यों के अनेक पुत्र पौत्र मन्त्र्यादिकोंको निपातित करके यमपुर पहुँचाया २२ सब सूर्य्यादि सात ग्रहोंने सब पवनोंने यक्ष गन्धर्व्व किन्नरोंने व बड़ीगदासे धीमान् कुबेरजीने २३ व घनों के समूहोंसे तुषारों व हिमोंसे चन्द्रमाने व नागों के घोर विषोंने दैत्यों को भूतलपर मारकरगिराया २४ व अन्य विविध तरह के देवताओं ने भी कोटि २ सहस्र दैत्योंको पृथ्वीपर गिराया कि सब दैत्य नाश होगये २५ कोई २ तो सम्मुख देहछोड़कर देवलोकको दैत्यभी चले जाते थे व कोई २ पापयुद्धकरने के कारण मरकर यमपुरको जाते थे व कोई २ पाताल लोकको चलेजाते थे यह भेद पुण्य अपुण्य के कारण से होताथा २६ इसी अवसरमें महर्षियों ने सब ओरों से ऐसे शब्द उच्चारण किये कि ब्राह्मणों व गौओं व स्त्रियों व तपस्वियोंकेलिये स्वस्तिहो २७ व युद्ध करतेहुये अन्य सब जन्तुओंके लिये भी अभी स्वस्तिहो इसप्रकार सब देवताओं से पीडित दैत्यगण जो मारडालनेसे बचभीगये वे पहाड़ोंमें जाघुसे २८ व कातर होकर जौन रणमें डरते थे सब दिशाओंको भागे जब दैत्यों का समूह इधर उधर भाग खड़ाहुआ तो बलनाम महाबली २९ आकर नानाप्रकारके अग्नि समान बाणों का संधान करके देवताओंको पीडित करनेलगा उस

के बाणोंसे पीड़ित होकर बहुत से बल दर्पित देवगण ३० तो पृथ्वी पर गिर पड़े व बहुत से रणभूमिसे भाग खड़ेहुये उसका दारुण व रोमहर्षण ऐसा महाकर्म्म देखकर ३१ देवताओं व ऋषियोंने बड़ी प्रशंसाकी व जो बाकी रहे वे महाशोर करनेलगे ॥

चौ० तबकोप्यहुसुरपतिरणमाहीं । महावीर जासम कोउ नाहीं ३२
शर समूह सों बल बलवानहिं । मार्यो त्वरित कीनमनमानहि ॥
पुनि बलवीर क्रुद्ध ह्वै शक्रहिं । मारिशस्त्रसों कियरणवक्रहि ३३

शरीरों से बहतेहुये रुधिर से अवसिक्त अंग दोनों वीर जैसे चैत्र महीनामें फूलेहुये टेसूके वृक्ष नज़र आते थे ३४ फिर उस दैत्यने हज़ारों चक्र व शूल व मुशल रणमें चपल इन्द्रकी देहमें मारे ३५ उसके चलायेहुये चक्र व शूलको बलवान् इन्द्रने खेलसा करतेहुये रणमें अपने उत्तम वाणों से काटडाला ३६ फिर महातेजस्वी दैत्य ने जल्दी से हाथी पर सवार इन्द्र की छाती में शक्ति से मारा ३७ तिस शक्ति से ताड़ित इन्द्र हाथीके ऊपर विह्वल होगया परन्तु क्षण मात्रही में इन्द्रने रोष व बल से स्वास्थ्य पाकर दैत्यको मारा ३८ यहां तक कि रथमें सवार दैत्यके हाथ दोनों व धन्वा एकही बाण से काटलिया व वीरोंको मारनेवाले इन्द्रने एकही बाण से ध्वजा व तीक्ष्णढाल काटलिया ३९ व चार तीक्ष्ण बाणोंसे चारों घोड़ोंको मारा व एक बाणसे उसके सारथी का शिर क्षणमात्र में काटडाला ४० जब धन्वा कटगया रथ टूटगया और घोड़े मरगये व सारथी भी मर गया तब तो वह दैत्य खुद भी मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिरगया व दो घड़ी के बाद मर भी गया ४१ बाद इसके बड़ा कोप करके देवताओंका गर्व्व दूर करनेवाले नमुचि नाम दैत्यने गदा लेकर सहसासे इन्द्रके हाथी को मारा ४२ जैसे कि सुमेरु पर्व्वत के कंगूरों में अकस्मात् वज्रपातहो ऐसा लोमहर्षण शब्द उस दैत्यकी गदा की चोट से हुआ ४३ उसके प्रहार से पीड़ित गज विह्वलहोके रुधिर से भीगा क्लेशित होके पीछे को हटा ४४ तब तो सैकड़ों हज़ारों दैत्य इन्द्रको दौड़े तिन सबको इन्द्रने क्षुराकी तुल्य धारवाली तलवारों से काट गिराया ४५ तब तो उस दैत्यने ऐसी माया की कि जो जो बाण

चलावे वे सब जीवधारीहो करके देवताओं को महा पीड़ा देनेलगे यहां तक कि कोई तो पृथ्वी में गिरगये व कोई रथों केही ऊपर सो रहे ४६ ऐसा उस दैत्यका बड़ा कर्म देखके भगवान्‌ने सब उसके चलायेहुये जीवधारी बाणोंको अपने चक्रसे काट डाला जो देहों में गड़ेहुये थे ४७ तब तो इन्द्रने तीन बाणों से उस दैत्यको पृथ्वी पर गिराया मूर्च्छित होकर पृथ्वीपरगिरा गिरतेही फिर झट उठकर ४८ बड़ा भयानक मुद्गर लेकर इन्द्रके मारने को उद्यत हुआ तब तो इन्द्र ने अपने वज्र से उस दैत्यको मारा ४९ कि वह महाबली कटगयाहै वक्षःस्थल जिसका पृथ्वीमें गिरगया तब तो देवता व सिद्ध व महर्षि इन्द्रको साधु साधु यह कहनेलगे ५० व बहुत से फूलोंकी वर्षाकरके इन्द्रको पूजतेभये अब सम्पूर्ण दैत्य गण भयभीत होकर भगे गंधर्व गानेलगे अप्सरायें नाचनेलगीं ५१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेवलनमुचिवधो नामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि फौज व नमुचिको मरा हुआ देखके नमुचि का छोटा भाई मुचि वहां आकर बोला कि तुमने हमारे ज्येष्ठ भाई को मारडाला १ उस वक्त मैं न था अब मैं अभी बाणों से तुमको यम-लोकको पठाताहूं तब तो महातेजस्वी सब देवतोंसे पूज्य इन्द्रजी उस दैत्य से कहनेलगे कि २ अभी तुम अपने भाई की धर्म्ममार्ग को पावोगे जैसे पांखी अग्निकी गर्म्मी को विनाजाने प्यार से उसमें कूदकर भस्म होजाती है इसीतरह तुम भी आयेहो ३ जैसे पांखी मोहसे अग्निमें सहसा गिरपड़ती है इसीतरह तुम भी हमसे लड़ने की इच्छा करतेहो ऐसा इन्द्र कहतेही हैं कि उस मुचिने तीन बाण इन्द्रके मारे ४ परन्तु परपुरंजय इन्द्रने तीनों बाणोंको तीनही बाणों से काटडाला तब फिर उस दैत्यने दश बाण इन्द्र के मारे व तीन बाणोंसे इन्द्रके ऐरावत हाथीको मारा ५ और सात बाणोंसे मातलि नाम इन्द्र के सारथीको काटकर महाबलन्द आवाज़से गर्जा फिर

गर्जकर उस मुचिनाम दैत्यने इन्द्रके मारने के लिये लोहे की गदा को लेकर घुमाया सम्भ्रमसे उस गदा को महाबल पराक्रमी इन्द्रने कोप करके अनायाससे अपने कुलिशसे काटकर दैत्यको मारा ६।७ कुलिशके प्रहार करतेही वह दैत्य मृतकहोके पृथ्वी में गिरगया उसके गिरने से पृथ्वी चलायमान हुई ८ अब दैत्य के मरने पर देवता तो नाचनेलगे और दैत्य भागनेलगे॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेमुचिवधोनामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

व्यासजी बोले कि तारेय नाम दैत्यने जोकि महाबल युक्त इन्द्र की तुल्य पराक्रमी था उसने संग्राममें पितृघाती स्कन्दजीको बाणों से मारा १ तब तो महाबाहुहरिकी तुल्य पराक्रम रखनेवाले स्कन्द जीने उसके चलायेहुये बाणोंको काटडाला व अपने उत्तम बाणों से उस दैत्यको भेदन किया २ तब तो उस दैत्यने सहसा स्कन्दजीको बाणों से तायलिया उन बाणोंको स्कन्दजीने अपने बाणों से उसी दम बेख़ौफ़ काटडाला ३ फिर तारेयने रणभूमि में अग्नि बाणों से मारा यहां तक कि वज्रकी तुल्य बाण महादेवके पुत्र स्कन्दकी देहमें गोड़दिये ४ उस वक्त सेनानी स्कन्दजीने जिनके अग्निही देवता हैं उन बाणों से दैत्यके बाणोंको हटाया तब फिर दैत्यने महादेवहैं जिनके देवता उन बाणोंको स्वामिकार्तिक पर चलाया ५ उनको बाण के चढ़ातेही स्कन्दजीने काटदिया तब तो दैत्यने बड़ा भयानक दारुण अघोरास्त्र चलाया ६ पर्वत वृक्ष सिंह सर्पादिक बाणरूप कोटि कोटि हजारों स्कन्दजी को दौड़े ७ स्कन्दजीने उन सब बाणों को काटकर अग्नि व सूर्य्य की तुल्य बाणों से दैत्यश्रेष्ठको पैरोंसे लेकर शिर तक भेदन किया ८ सुवर्ण की फोंकवाले बाण दैत्यपतिकी देह में गड़ेहुये कैसे शोभित हुये जैसे कि नीले पत्थरों में सोने के तार शोभा देते हैं ९ तब उसकी देहसे बहुत रक्त बहनेलगा जैसे कि चैत्र महीनेमें बहुतसे फूलोंसे युक्त शमीका वृक्षहो १० रथके घोड़े पृथ्वी

पर रथोंके नीचे मानों सोगये इसके बाद बड़ा कोपकरके बड़ा भयानक दारुण शूल ११ काल मृत्युकी बराबर चमचमाता हुआ लेके स्कन्दजी पर चलाया स्कन्दजी ने भी पाशुपत शूल १२ चलाया जिससे रणभूमि में मुहूर्त्त मात्रही में उस दैत्य के अस्त्रको भस्मकर डाला तब तो फिर दैत्यने ब्रह्माकी दीहुई शक्तिको छोड़ा १३ शूल पर इसके बाद सैकड़ों कूट की बराबर प्रभावाला शूल व दैत्यकी चलाई हुई शक्ति दोनों वज्रकी समान आकाश में भिड़े १४ बाद इसके दोनों बलवानों के अस्त्र पृथ्वी में गिरे तब तो दैत्यपति ने अग्निकी ज्वालाकी मिसाल बाणों से स्कन्दजीको १५ कैसे पीड़ित किया जैसे कि मेघोंकी वृष्टिधार पर्वत को परंच महाबाहु स्वामिकार्तिकजी ने उस बाणवृष्टि को काटकर उस दैत्यका धन्वा भी १६ तलवार से काटडाला इसीतरह उसके सारथी का शिर काटकर बहुत से बाणों से उसके घोड़ोंको पृथ्वीमें गिरादिया १७ तब तो वह दैत्य मुसल लेकर बड़े वेगसे रणमें स्कन्दजीको दौड़ा यहांतक कि मुसल से स्कन्दजी और उनके बाहन मयूर दोनों को मारा १८ जिसके प्रहार से मयूर विह्वल होकर वारंवार कांपनेलगा तब स्कन्दजीने तलवारसे उस दैत्यको मारा और अतिदारुण उसके मुसलको काट डाला तब तारेयने शक्ति लेकर स्कन्दजीको मारा १९ । २० स्वामिकार्तिकजीने भी अमोघ दुष्टघातिनी शक्ति छोड़ी तब तो स्कन्दजी की संसार को प्रलय करनेवाली शक्ति तारेय नाम दैत्यको भस्मकर के २१ व यमदण्ड के बराबर उसके अस्त्रको काटकर फिर स्कन्दजी के पास आगई वह दैत्य मृतकहोके पृथ्वीमें गिरगया जिसके गिरने से पृथ्वी चलायमान होगई २२ दैत्यके मरनेपर देवताओंने स्कन्द जी को फूलों व धूपदीपादि से पूजन किया २३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेतारेयवधोनामैको नसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

दो० सत्तरयेंमहँ शमन सों देवान्तक दुर्द्दर्प ॥
दो दैत्योंकरयुद्धभो उभय किये स्मृति अर्प्प १ ॥

व्यासजी ऋषियों से बोले कि बल व इन्द्रका युद्ध होताही था कि इतने में देवान्तक नाम दैत्य गर्जताहुआ धर्म से समर करने के लिये दांतोंसे ओठ चबातेहुये चला १ व समरमें पहुँचतेही निन्दित वचन बोला कि तुम मारे मोहके न तो धर्म्म को जानतेहो कि वह कौन है २ पाप पुण्यके प्रयोगसे सबके ऊपर अनुग्रह वा कोप करने के स्वामी हो हमको ब्रह्माने बनाया है इससे तुम्हारी आज्ञाको करताहूं ३ तुम जिससे धर्म नहीं जानते कि काल मृत्युको आगे किये हुये धर्मराज कौन होताहै क्योंकि हमारे न कोई कभी रोग होसक्ताहै न बुढ़ापा न काल आसक्ता न मृत्यु कुछ हमारा करसक्ती है ४ धर्मसे प्रचलित होकर कर्मी दिन रात्रि कष्टको प्राप्त होताहै ऐसा कहकर राक्षसने महावीर्य धर्मके एक साक्षी यमराजजीको तीन तीक्ष्णबाणों से मारा ५ जब कालसमान कराल तीन बाणों से उसने मारा तो धर्म्मराजजीने अन्य तीन बाणोंसे उसके बाणोंको काटडाला ६ तब उसने युगान्त के अग्नि के समान प्रज्वलित बाणों से समर में यमराज को मारा तब यमराजजी ने बाणों से बाणों को काटडाला ७ तब अति क्रुद्ध परस्पर अपनी अपनी जय चाहते हुये दोनों महाबल पराक्रमी समर में एक दूसरे को मारनेलगे ८ यहांतक कि दोनोंका अति दारुण युद्ध दिन रात्रि बढ़तागया तब अति क्रोध करके बलवान् अहंकारयुक्त दैत्य श्रेष्ठ ने शक्ति से यमराजजी को मारा तब धर्मराज ने क्रोधसे शीघ्रही उस शक्तिको पकड़कर ९।१० शक्तिही से राक्षस के स्तनों के बीच में मारा तो उसका सब अंग विह्वल होगया और मुखसे रक्त आगया ११ फिर महातेजस्वी ने क्रुद्धहोकर घोर सफल दण्डलेकर उस दैत्यके शरीर में मारा १२ उससे अश्वरथ सारथि और शस्त्रों सहित योद्धाको मारे क्रोध के भस्मकर डाला १३ उसके मारजानेपर दुर्धर्ष नाम दानव शूल हाथ

में लेकर मारने की इच्छा से यमराजजी के ऊपरको दौड़ा १४ शूल हाथमेंलिये बड़वानल के समान चमकते हुये उसे आते देखकर अत्यन्त निर्भय यमराजजी शक्ति हाथमें लेकर रण में प्राप्त हुये १५ तब असुर ने यमराजजी को देखकर शूल से मारा फिर यमराजजी ने रणभूमि में शक्तिमारी १६ तो शक्ति सहसा से अग्नि समूह के समान प्रकाशित शूल को जलाकर दैत्य के हृदय को काटकर पृथ्वी में चलीगई १७ तब शक्तिसे जर्जर देह होकर रथसमेत राक्षस पृथ्वी में गिरगया फिर महाबली दुर्मुखदैत्य धनुष खींचकर यमराज जी के पासआया तब खड्ग चर्म धारणकर रथमें यमराजजी चढ़े तो रणमें यमराजजी को देखकर उसने तीक्ष्ण बाणों से यमराजजी को मारा १८। १९ तब यमराजजीने रथसे उतरकर एक तलवारसे ऐसा उसे मारा जिससे कि कुण्डल सहित उसका शिर कटकर पृथ्वी पर गिरपड़ा २० व मारने से बचीहुई उस दैत्यकी सब सेना दशों दिशा में भागगई २१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेदेवान्तकदुर्धर्षदुर्मुखवधोनामसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

दो० इकहत्तर महँ इन्द्रने नमुचि असुर वधकीन ॥
यही कह्यो मुनिराजहू जो सबभांति प्रवीन १

व्यासजी ऋषियों से बोले कि इतने में रथपर आरूढ़ होकर क्रोधयुक्त नमुचिनाम दैत्य आया व सर्प्पाकार बाणों से देवताओं को पीड़ित करनेलगा १ समर में उसके बाणों को देव सिद्ध किन्नर व सर्प्प कोई नहीं सहसके २ इतने में बलनाम दैत्यको मारकर उच्चैश्श्रवानाम घोड़े से युक्त मातलिनाम सारथि के लायेहुये रथपर चढ़कर इन्द्रजी उस महाबली से युद्ध करने को आये ३ तब महावीर्य्य इन्द्र को आयेहुये देखकर दैत्यों में श्रेष्ठ नमुचिनाम दैत्य इन्द्रसे बोला कि ४ हे इन्द्र ! प्राकृती देवों के मारने से हमारा यश प्रिय लाभ और जय नहीं है ५ व तुमको मारडालने से हमको सब

उत्तमपदार्थ एकाएकी मिलजायँगे क्योंकि देवताओं का राज्यही मिलेगा जिसमें देवालय में सब सुख मिलेंगे ६ यह सुनकर शत्रुओं के पुरों के जीतनेवाले महातेजस्वी इन्द्रजी उससे बोले कि केवल वाक्य कहने से सब जगह शूरता सुलभ होसक्ती है ७ यदि तुम्हारे महा पराक्रमहो तो हे दानवाधम ! अपना वीर्य्य समर में दिखाओ नहीं तो हम तुमको अभी यमपुरको पहुँचाते हैं ८ यह सुनकर महातेजस्वी दैत्यश्रेष्ठ बहुत कुपित हुआ व उसने पांच तीक्ष्णबाणों से देवराजजी को मारा ९ परन्तु इन्द्रजी ने क्षुरकी धारसे भी तीक्ष्ण पांच बाणों से उसके शरों को काटडाला बस दोनों महावीर्य्य परस्पर अपनी २ विजय चाहते हुये १० युद्ध करनेलगे सहसा वेगसे बाणों से बाणों को काटनेलगे और पत्थर के समान बाणों से देहोंको काटनेलगे ११ उन दोनों ओरके वीरों ने रणमें बहुतही अपूर्व कर्म किये लाघवतासे बाणों को छोड़ना और ग्रहणकरना दुर्लभ होगया १२ उन दोनों को देखकर देवगण व असुरगग अतिविस्मित हुये तब उस दैत्यने माया का अस्त्रछोड़ा १३ उसमें सब ओरसे सैकड़ों सहस्रों बाणचले तब वीर्यवान् इन्द्र फिर क्रोध से शीघ्रही धनुष लेकर १४ उग्र बाणों से सब राक्षसों की देहों में प्रकाशित होतेहुये मारतेभये फिर एक सहस्र आठ बाणों से १५ परस्पर काटनेलगे तब सब वीर बाणों से आच्छादित आकाश देखते भये १६ खड्गों के लगने से सहस्रों वीर पृथ्वी में गिरतेभये इसप्रकार तिस संग्राम में बहुत काल बीतता भया १७ तब क्रूरकर्म करनेवाला नमुचि मायाका अस्त्र दिखलाता भया जिस अस्त्रसे तीनों लोकों में अन्धकार ऐसा छागया कि कहीं भी अन्तर न रहा १८ देवता और असुरोंकेसमूह परस्पर न देखतेभये चन्द्रमादि ग्रह अग्नि और देवता १९ और सूर्य भी तिस घोर अन्धकार में न दिखाई पड़ते भये दैत्य के अग्निशिखाके समान बाणों से शीघ्रही २० सब देवता और इन्द्र भी रणसम्मुख में कटने लगे बाणों से भिन्न देह होकर सब देव पृथ्वी में गिरते भये २१ और कुछ शूर कटेहुये दशोंदिशाओं में भागजाते भये तब सब देवों से पूजित भगवान् इन्द्र राक्षस का

कूट जानकर २२ आकाश में सैकड़ों सूर्य की समान दीप्तिवाले सौम्य अस्त्रको छोड़तेभये तब इस अस्त्रको विलम्बित देखकर बहुत घंटावाली शक्ति से २३ दैत्य की छाती में मारतेभये तो दैत्य व्यथा युक्त होकर गिरजाता भया और बहुत समय में संज्ञाको पाताभया तब फिर दैत्य क्रोध से मूर्च्छित होकर २४ वेगसे जाकर सुरश्रेष्ठ व ऐरावत को पकड़ता भया और क्रोधसे इन्द्र के हाथीको बहुत त्रास देताभया २५ फिर इन्द्र समेत हाथी को पकड़कर पृथ्वी में गिराताभया तब भूमिमें प्राप्त इन्द्र क्षणमात्र कष्ट पातेभये २६ और दैत्येन्द्र इन्द्र के पकड़ने और यूथपों के मारने के लिये हाथी के दांतों के बीचमें स्थित होताभया २७ तब इन्द्र तलवार से नमुचिका शिर काटकर गिरादेते भये तो सब देव प्रसन्न होतेभये गन्धर्वलोग ललितगीत गानेलगे और प्रसन्नमुनि इन्द्रकी स्तुति करनेलगे २८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेद्वितीयनमुचिवधोनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

दो० बाहत्तरयें महँ कह्यो समरकठोर सुघोर ॥
कृष्णचन्द्र मधुदैत्यकर जय हरिजीकीओर १

वेदव्यासजी संजयसे बोले कि धनुषहाथ में लेकर सेनासे युक्त हो सुन्दर रथपर चढ़कर देव और असुरगणों के आगे संग्राम में बड़े क्रोधसे युक्तहोकर देवताओंका मर्दन करनेवाला मधुदैत्य नाश रहित लक्ष्मीके पति ईश्वर हरिजीसे कठोर वचन बोला १ । २ कि रे नारायण ! तुम युद्ध के धर्म नहीं जानतेहो अन्याय से मारनेका उपायकर नष्ट होकर तुम नहीं शोचकरतेहो ३ इस कीचड़योग से देवभाव नष्ट होगा और दूसरी सृष्टि मैं करूँगा ४ देवगणों समेत यहांपर तुमको मारडालूँगा ऐसाकहकर धनुष लेकर बाणोंसे कृष्ण जीको मारनेलगा ५ तब माधवजी वज्रके समान दीप्तिवाले बहुत बाणोंसे उसके बाणोंको काटकर मधुदैत्य की सब देहमें मारतेभये ६ तो वह दैत्य बाणोंसे आच्छादित होगया तब उसको श्रेष्ठ देवता

लोग जोकि रुद्रादिक शूर सत्त्वगुण धारण करने वाले ७ और अ-
नेक प्रकारकी देवियां हथियार और सवारी से युक्त होकर स्वामि-
कार्तिक गणेशदेव लोकेश हर विष्णु ८ और भी ग्रहादिक देव सब
मिलकर युद्ध करने लगे तब मधुदैत्य की मायासे निश्चय संमुख
और विमुखमें भी देवता बाण शक्ति और ऋष्टिकी वर्षाओं से नष्ट
हुये और शस्त्रोंसे पीड़ित होकर सहसासे भूमिमें गिरतेभये ९।१०
इस अन्तरमें विष्णुजी सुदर्शनको ग्रहणकर रणभूमि में असुरों को
मारने लगे ११ फिर राक्षसों के शिरोंको सहस्रों खण्डकर देवेश
जी गिराते भये १२ इसी प्रकार और भी दैत्योंको विभुजी संग्राम
से भगाते भये तब कृष्णजीको देखकर मुनि और सब देवता वि-
स्मयको प्राप्त होतेभये १३ और कान कालमें देवता और मुनिगण
यह कहने लगे कि सदैव देवताओंके एक रक्षक नाशरहित ईश्वर
हरि १४ सबके साक्षी देव और युग युगमें दैत्योंके जीतने वाले हैं
और कल्पके अन्तमें हरिजी कैसे सब देवताओं को नाश करते
हैं १५ इसी अन्तर में मायायुक्त मधुदैत्य शिवजी का रूप धारण
कर नाशरहित हरिजीसे बोला १६ कि रे पापी ! दैत्यों के आगे रण-
भूमि में दैत्योंको मारकर क्या इससमय में तुम्हारा कल्याण, धर्म,
कीर्त्ति,यश और गुण होगा १७ बड़े उन्मत्तभावसे पराये और अपने
वालोंको नहीं जानते हो इससे तुमको तीक्ष्ण बाणों से यमराजजी
के स्थानको भेजताहूं १८ इसप्रकार कहकर उग्रबाणों से रणभूमि
में केशवजीको मारने लगा तब माधवजी उसके बाणोंको काटकर
यह बोले १९ कि रणभूमि में महादेवजी का रूपधारे, प्रिय, शूर,
शूरोंके कर्म करनेवाले, माया से युक्त मधुराक्षस तुमको हम जानते
हैं २० तुमको रणभूमि में गिराकर मिथ्यालोक दूंगा इसी अन्तर
में तीक्ष्ण बाणोंसे लड़ाई में जटाधारेहुये वृषकेतु बैलपर सवार म-
हादेवजीका रूप धारेहुये मधुराक्षसको मारते भये तिस समय में
हरिजी और उस मधुराक्षस का अत्यन्त युद्ध होताभया २१ । २२
परस्पर बाणों से बाणोंको काटते भये तब नाशरहित हरिजी बाण
से राक्षस के धनुषको काटते भये २३ फिर बैलरूप उसकी सवारी

को गिरादेते भये तब वह राक्षस शूल हाथ में लेकर कृष्णजी के ऊपर को दौड़ा २४ और शूलको घुमाकर परमेश्वरजी को मारने लगा तब कृष्णजी तीनबाणों से कालकी अग्निके समान दीप्तिवाले शूल को काटडालते भये २५ तब महाबाहु क्रूर अत्यन्त मायावी मधुराक्षस देवीजीका रूप धारण कर सिंहपर सवारहोकर भगवान्के समीप जाता भया २६ और बहुत प्रकारके बाणों से विष्णुजीको मारने लगा तिस पीछे यह वचन बोला कि हे सुरश्रेष्ठ ! हमारे स्वामी को तुम्हींने लड़ाई में गिराया है २७ हम तुमको मारडालते हैं या मेरे पुत्र गणेश और स्वामिकार्त्तिक मारेंगे ऐसा कहतेहुये राक्षस को कृष्णजी बहुत बाणों से मारते भये २८ तब वह राक्षस प्राणहीन होकर रक्त गिराताहुआ पृथ्वी में गिरजाताभया तो माता पिताको नाशहुये देखकर महाबलवान् मायावी २९ स्वामिकार्तिक भी शक्ति को लेकर भगवान् से युद्धकरनेको जाता भया तब ब्रह्माजी मोहसे पीड़ित स्वामिकार्तिक से बोले ३० कि देखो लोकके साक्षी तुम्हारे माता पिता इसप्रकारके युद्धको आकाश में दूरसे स्थित होकर देख रहे हैं ३१ यह वचन सुनकर और देखकर वह मायावी स्वामिकार्तिकरूप राक्षस वहीं अन्तर्द्धान होगया तब अत्यन्त अभिमानी धुंधु और सुंधु उसके भाई ३२ रणभूमि में गरुड़के ऊपर भगवान् के मारने के लिये आते भये तब खड्ग हाथ में लियेहुये धुंधु और गदा लियेहुये सुंधुको ३३ कृष्णजी एक नंदकनाम तलवार से तो धुंधु और गदासे सुंधुको मारकर पृथ्वी में गिरादेते भये तब वे वीर रुधिर बहाते भये ३४ तब तमोगुण से युक्त मधुराक्षस शीघ्रही अन्तर्द्धान होगया और माया से विष्णुजी के ऊपर सैकड़ों पर्वतों को गिराता भया तो लड़ाई में हरिजी तिन पर्वतों को काटकर क्रोध से सुदर्शनचक्रसे मधुराक्षस के शिरको काटकर गिरादेते भये ३५। ३६ तब ब्रह्मादिक देव शिव और अन्य देवता विष्णुजी को मधुसूदन ऐसा नाम संसार में करते भये ३७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेमधुवधोनाम द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० तीहत्तरयें महँ हत्यो वृत्रासुर कहँ शक्र ॥
तासु युद्धवर्णन कियो जो सब विधिसों वक्र १

वेदव्यासजी सञ्जयजीसे बोले कि तदनन्तर महातेजस्वी दैत्यों में श्रेष्ठ वृत्रासुर बड़ेभारी हाथीपर सवारहोकर समर में इन्द्र के ऊपरको दौड़ा १ आतेहुये वृत्रासुर के सब अङ्गोंमें हाथीपर सवार इन्द्रने कालाग्नि के समान चमकतेहुये बाणोंसे मारा २ तब महा बली वृत्रासुरने इन्द्रके शिरमें एक वाण मारा तिससे महाबली भी इन्द्र चलायमान हुये ३ फिर अपने को सँभालकर वीर्यवान् इन्द्रजी ने धन्वा उठाकर सहस्रों बाण सन्धान करके उस दैत्यराजके ऊपर बरसाये ४ तब महापराक्रमी दैत्यराजने सर्पाकार बाणोंसे संग्राम में सब देवोंके स्वामी इन्द्रको मारा व उनके बाणोंको भी काटा ५ फिर इन्द्रने सहस्रों बाणोंसे दैत्यको मारा व दोनोंओरसे सूर्य्यके किरणोंके तुल्य चमकतेहुये बाण चलनेलगे ६ इसप्रकार सैकड़ों सहस्रोंबाणोंसे परस्पर दोनों युद्धकरनेलगे ऐसा उनके युद्धमें विदितहोता कि जानों मनके तुल्य वेगवाले दो पर्व्वत आपस में दौड़ दौड़कर युद्धकररहे थे ७ जानों बड़वानल के अधिक स्पर्श होजानेके कारण दो पर्व्वत समुद्र से निकलकर आकाश में उड़तेहुये दोओर से चलेआते थे ऐसी उन दोनोंकी शोभा युद्धके समय होरहीथी उनदोनों धनुर्द्धरों के युद्धमें तुल्यगुणयुक्त बाण इधर उधर से चलते थे ८ इस क्रमसे रात्रि दिन बराबर समर होता रहता था ऐसा युद्ध होताही था कि फिर इन्द्रने शूलसे वृत्रासुरके हाथीको मारा९ वह पृथ्वीपर मरकर गिरपड़ा परन्तु शीघ्रताके साथ वृत्रासुर अपने रथपर चढ़गया व रथ पर चढ़ेही चढ़े उसने इन्द्रके हाथी ऐरावण के बड़े बलसे एक शक्ति मारी १० वह शक्ति इन्द्रके व उनके गजके भी ऐसीलगी जैसे वज्र पर्व्वत के लगाथा इससे दोनों कम्पायमानहोकर शोभित होगये ११ फिर इन्द्रने शक्तिलेकर वृत्रासुरकी छाती मेंमारा जिससे वृत्रासुर रथ के ऊपर गिरगया १२ फिर क्षणभरमें होश होकर गर्जकर वृत्रासुरने

बाणसे समर में इन्द्रको मारा जिससे इन्द्र बड़े कष्टको प्राप्तहुये १३ फिर इन्द्र होशको पाकर तीक्ष्ण सैकड़ों करोड़ों बाणों से वृत्रासुर को बहुत व्यथायुक्त करतेभये १४ फिर वृत्रासुरने इन्द्रके ऊपर महाशूल चलाया और पाशुपतास्त्र भी इन्द्रके ऊपर चलाया व इन्द्रने उसके ऊपर वैष्णवास्त्र छोड़ा १५ वे अग्नि के समान प्रकाशित दोनों महास्त्र आकाशमें जाकर परस्पर लड़नेलगे व उनके टक्करोंसे हज़ारों चिनगारियां निकलने लगीं १६ ऐसी करालज्वालायें उन दोनोंसे निकलीं कि उनके सामने देव दैत्यसैन्यमें कोईभी खड़ा न रहसका जैसे प्रचण्ड अग्नि के सामने पतङ्ग नहीं ठहरसक्ते १७ जलकर बहुत से दैत्य देव पृथ्वीपर गिरपड़े व बहुत से सब दिशाओं को भागगये यहांतक देव दानवों की सेनाकेलोग भागे कि समर शून्य होगया १८ अपने अस्त्रको न देखकर मारेक्रोधके मूर्च्छितहोकर उस दैत्य ने मायासे पर्व्वतास्त्र इन्द्रके ऊपर छोड़ा परन्तु बाणसमूहों से इन्द्र ने सब शिलासमूहों को काटडाला तब उसने महाबली इन्द्रके ऊपर अघोरास्त्र चलाया १९।२० उससे कोटि कोटि सहस्र नानाप्रकारके श्रेष्ठ जन्तुनिकले जैसे कि सिंह शार्दूल ऋक्ष वृक व्याघ्र हाथी २१ सर्प्पादि अनेक जन्तु निकलकर इन्द्रके ऊपर को दौड़नेलगे परन्तु वे उनके समीप पहुँचने नहींपाये शत्रुवीरोंके नाशक इन्द्रने बड़े पैने बाण भल्ल अर्द्धचन्द्रादिकों से काटकर सबोंको तिल तिल उड़ादिया एकभी न बाकीरहा न वहांतक पहुँचा तब महाबाहु वीर्य्यवान् वृत्रासुरने धन्वा उठाकर २२। २३ वज्रसे कुछेकहीकम सहस्रों बाणों से इन्द्रको मारा परन्तु इन्द्रजीने बड़ेतीक्ष्ण बाणोंसे उसके चलाये हुये आयुधोंको काटकर फिर उसका धन्वा काटडाला २४ व एकक्षणमात्रमें सारथि व घोड़ोंको भी मारकर पृथ्वी में गिराया तब उसने कांटेसहित एक बड़ी भारी गदालेकर व उसकी पूजा करके २५ इन्द्र के हाथीके शिरमेंमारा कि जिससे मोहित होकर हाथी पृथ्वीपर पहुँच गया हाथीके साथही साथ गदासमेत इन्द्रभी पृथ्वीपर पहुँचगये २६ तब इन्द्र व वृत्रासुर से पृथ्वीपर गदायुद्ध होनेलगा जैसे वज्रपात होने से शब्द होता है वैसेही गदापात से होनेलगा व घूम घूमकर

नानाप्रकार के दावँपेंचों के साथ बार बार गदायुद्ध होतारहा शिरों के ऊपर बगलों में घुटनोंपर छाती में जङ्घामें एक दूसरेको गदासे मारता था जिस अङ्गमें एक मारता दूसरा भी उसीमें मारता इस कारण दोनोंका बड़ाघोर चटाचटीका गदायुद्धहुआ जिससे सबलोग भयभीत होगये इस युद्धको देखकर देवगण सिद्ध व दानवलोग सब बड़े विस्मित हुये २७। २९ ऐसे वे दोनों समान वीर लड़े कि दोनों को अपनी अपनी मृत्यु का सन्देह हुआ दोनों अपने अपने चित्त से हारगये ॥

चौ० तबद्वौनिजनिजगदाविहायी। खड्गचर्म्म करगहिअगुआयी ॥
ह्वै पदाति रणभूमि मझारी। खड्गप्रहार कीन अतिभारी ॥
चपलाउल्कासम असिचमकीं। उभयअङ्गलगि अतिशयदमकीं ॥
पर वृत्रासुर प्राण प्रहारी। भयेपुरन्दर जय अधिकारी ॥
गावन गीत लगे गन्धर्व्वा। प्रमुदित भये तबहिं सुरसर्व्वा ॥
स्तवन करनलागे मुनियूथा। आनन्दित सब सिद्धवरूथा ॥
ह्वै भयभीत असुर गणसारे। त्यागिसमरदिशिविदिशिसिधारे ॥
इन्द्रविजययहसुनिहिसुनाइहि। जोनरसदासमरजयपाइहि३०।४०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेवृत्रासुरवधोनाम त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

दो० चौहत्तरेमहँ सुचितनय त्रिपुरसुतादिकदैत्य ॥
मारेसब सुरगण मिलित पुनि मारेगे ऐत्य १

वेदव्यासजी बोले कि चारघोड़ोंसे युक्त सूर्य्यके समान चमचमाते हुये रथपर चढ़कर त्रिपुरासुरका पुत्र समरमें गणाधिपसे बोला कि १ तुम्हारे पिताने हमारे पिताको समर में मारडाला है इससे तुमको अग्निकी शिखाके तुल्य बाणों से हम यमराजजी के स्थानको भेजते हैं २ तब उससे देव गणेशजी बोले कि पूर्व्वकाल में दुष्ट तुम्हारे पिताने देवताओंका बड़ा अहित कियाथा ३ यह हमने अपने पिताके मुखसे सुनाहै कि उसने बड़े पापका कर्म्म कियाथा सो ज्ञानबल से

पापकर्म्ममें रत दुष्ट जानकर ४ हमारे पिताजीने बलसे एकही बाण से तुम्हारे पिताको मारडाला था सो कीचड़ से उद्धार करके उन्होंने मोहसे यमराजजी के मन्दिरको भेजदिया था ५ इससे हे दैत्य ! उसी के मार्ग्ग को हम क्षणमात्र में तुमको भी भेजते हैं ऐसा कहतेहुये देवताओं के अधिप के पुत्र महाबुद्धिमान् गणेशजी को ६ उसने कालाग्नि समान प्रज्वलित तीक्ष्ण दशबाणों से मारा फिर सहस्र बाणों से गणेशजी ने उस दैत्य को साहस से मारा ७ वे सब बाण यमदण्ड के समान छूराकी धारसे भी तीक्ष्ण धारवाले उजली चील्ह के पङ्ख शिरपर लगेहुये वज्र और अग्नि के समान प्रकाशित थे ८ ऐसे बाणों से देवताओंमें पूजित लंबोदरजी उसके बाणोंको काटकर फिर सहसा से पर्व्वताकार बाणों से फिर दैत्यको मारते भये ९ शरोंसे उसके सर्व्वाङ्ग ऐसे पीड़ित होगये कि मूर्च्छित होकर वह पृथ्वीपर गिरपड़ा तदनन्तर भद्र सौभद्र भीषण व निर्ज्जरान्तक नाम के चारदैत्य १० युद्धकरने के लिये आये व सबोंने अपनी अपनी गदा गणेश के ऊपर साथही चलाईं ११ परन्तु महाबली गणेशजीने लाघवतासे राक्षसों की गदाओं को वृथाकर भद्रका शिर फरसासे मारा अलग गिरा १२ व सौभद्रका शिर खड्गसे काटडाला भीषणका कुठारसे व निर्ज्जरान्तक का खड्गसे शिर १३ काट गिराया और चार महापर्वत के समान और गणमुख्योंकोभी काटा १४ तब असुरोंमें उत्तम त्रिपुरासुरका पुत्र संज्ञाको पाकर अपने रथमें चढ़कर गणेशजीको अनेकप्रकारके बाणों और भालोंसे मारनेलगा तो धर्मात्मा गणेशजी उसके अस्त्रोंको काट कर फिर त्रिपुरासुरके पुत्रको बाणोंसे मारनेलगे १५।१६ चारबाणोंसे घोड़ोंको एकसे सारथीको और बहुतसे बाणों से उसके गणनायकों को मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया १७ तब शीघ्रतासे त्रिपुरासुरका पुत्र दूसरे रथपर चढ़कर वज्रके समान बाणों से गणेशजीको विदारण करताभया १८ तो रक्तसे अंग भीजकर क्रोध में घोर यमराजकी समान दीप्तिवाले महाक्रोधयुक्त गणेशजी बली राक्षसके तीनबाणों से माथेमें सात बाणोंसे स्तनोंके बीचमें चार बाणोंसे तोंदीके पास पांच बाणोंसे मुष्टि मस्तकमें मारतेभये १९ । २० तब बाणोंसे सब

अंग पीड़ित होकर वह दैत्य रणभूमि में बड़े क्लेशको पाकर रथके ऊपर गिरगया २१ तो उसके धीर सारथीने संग्रामसे बाहर राक्षस को लेजाकर करदिया और शूर देवताओंसे पूजित गणेशजीने उस विमुख राक्षसको फिर न मारा २२ फिर बहुत समय में वह राक्षस संज्ञाको पाकर सारथीसे बोला कि हे सूत ! रणभूमिमें डरपोक शिव-पुत्र गणेशजीके पासचलो २३ तब सारथी सत्य और कोमल वचन बोला कि गणेशजीके बाणोंको रणभूमि में सहनेको कौन समर्थ है २४ हे प्रभाके पुत्र ! तिससे मूर्च्छित तुमको मैं लड़ाईसे बाहर ले-गयाथा इससमय में यह जानकर जो युक्तहो वह कीजिये २५ इसी अन्तर में राजाके भेजेहुये शुक्रजी आगये और औषधोंसे हाथीको अच्छा किया २६ पहले से सौगुणा बलवान् करदिया पूर्वके अभि-मंत्रित जलको देकर उसके अंगके घावोंको अच्छा किया २७ तब परसदुर्जय वह हाथी रणभूमिमें दांतोंसे पर्वतको फोड़ताभया और इसीप्रकार सैकड़ों सहस्रों सेनावालों और सेनापतियोंकोभी गिराता भया और वह दैत्य हाथीपर चढ़कर कालकी अग्निके समान बाणों से २८ । २९ मुख्य मुख्य देवाधिपोंको मारकर पृथ्वीमें गिराताभया तब यमराजके दण्डके समान दीप्तिवाले राक्षसके बाणोंसे ३० महा बलवान् रक्तसमूहसे युक्त होकर देवतालोग गिरते भये और जिस जिस राहसे वह दैत्य और हाथी जाताभया ३१ वहां वहांपर बाणों से शीघ्रही भयंकर समूह करताभया कोई तो हाथीसे गिराये गये और कोई उस दैत्यहाथी के सवारसे गिरायेगये ३२ और वेगभ्र-मणसे कोई देवता तापयुक्त कियेगये इसीप्रकार देवगणोंके अध्यक्ष उस राक्षस और हाथीको अनेकप्रकारके शस्त्र अस्त्रों और बहुत बाणोंसे मारते भये तिसपरभी महाबली और युद्धमें निर्भय देवता उस हाथीसे युद्ध करने में न समर्थभये ३३ । ३४ शीघ्रही त्रिपुरा-सुरका पुत्र हाथीके दांतों और बाणों से देवताओं को गिराता भया और जो देवता जर्जरदेह होकर पृथ्वी में नहीं गिरे ३५ वे डरकर कष्ट से व्याकुल होकर शरणागतकी रक्षा करनेवाले गणेशजी की शरणमें गये तब प्रतापी गणेशजी देवोंका कष्ट देखकर ३६ वज्र

और अग्निके समान बाणों से हाथीसमेत राक्षसको ताड़ित करते भये तब बाणसे हाथीसमेत राक्षसका वेग रुकजाताभया और फिर उठता भया ३७ तदनन्तर दोनोंवीर बाणोंसे परस्पर भेदन करतेभये शब्द करतेभये परस्पर जयकी इच्छा करते भये ३८ और दोनों देव और असुर वीरोंमें मुख्य रक्तसे सब अङ्गयुक्त होगये तब वह मतवाला हाथी अपने दांतोंसे मूसेको विदारण करताभया ३९ तब मूसे ने भी हाथी को पीड़ित किया तो मूसे और हाथीका बड़ा घोर युद्ध होनेलगा और राक्षस और गणेशजीका भी अद्भुत युद्ध हुआ नीचे ऊपर समविभागमें चारोंका युद्धहुआ ४० शब्द समेत सब लोकोंको भयङ्कर तुमुलयुद्ध हुआ दांतों दांतोंसे बाणों बाणोंसे ४१ देव और दानवोंका संग्राम में घोरयुद्ध हुआ तो मूसेने महाबली बड़े हाथी को भेदन किया और पृष्ठवंश के आगे स्थित होकर दैत्य के दांतों के द्वार हृदय और कांधे में शीघ्रता से फरसा से काटा ४२ । ४३ तब हाथी समेत त्रिपुरासुर का पुत्र प्राणरहित होकर रक्तगिराता हुआ पृथ्वी में गिरताभया तो मुनि और देवता प्रशंसा करने लगे और साधु साधु यह बोलते भये ४४ और अन्य देवताओं ने संग्राम में सफल अस्त्रोंसे दैत्योंको जबतक सेनाका जय शब्द नहीं समाप्तहुआ तब तक नाश करदिया ४५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादे त्रैपुरिविमर्दोनामचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

दो० पचहत्तरयें महँ कहब देवासुर संग्राम ॥
हिरण्याक्षवध अन्तमहँ विजयस्तोत्र ललाम १

व्यासजी बोले कि इन्द्रादिक सब देवता महेश्वरजी से वचन सुनकर सब दैत्यसमूहों को चारोंओर से भगाते भये १ तब महाबाहु कुम्भनाम बड़ा असुर आताभया और कुबेरजी को गदासे मारता भया. २ कुबेरजी भी गदाओं से कुम्भको मारनेलगे तब परस्पर दोनों का भयङ्कर गदा युद्ध होताभया ३ जो कि अत्यन्तही भयानक था

तिस कुम्भसे महायुद्ध को कर अन्तमें कुबेरजी तिस कुम्भकी छाती में गदा मारते भये ४।५ तब डाढ़ैंटूटकर कुम्भ पृथ्वी में गिरताभया तो महापराक्रमी जम्भ असुर रथपर चढ़कर तिसी समय में इन्द्रके घोड़े और हाथीको बाण समूहों से मारनेलगा तो इन्द्र वज्र से जम्भ को काटडालते भये ६।७ तब जम्भ रक्तसे भीगाहुआ प्राणरहित होकर पृथ्वीमें गिरताभया फिर अरण्य, सुघोर, अघोर, घोर ये चार मुख्य गणोंको संग्राम में शक्तिसे इन्द्रजी काटकर शीघ्रता से प्रत्येक को गिरादेते भये ८ । ९ और जयन्तजी सौरभको बाणसमूहों से वशकरते भये शक्ति हाथमें लियेहुये संह्लाद,यमदण्ड,नरान्तकको भी १०जयन्तजी मारकर गिरातेभये तब देह भस्म करनेवाला काल खड्ग से बाभ्रवको गिराताभया ११ और मृत्यु शक्तिसे अश्व और निर्घृण-कको रणभूमिमें काटताभया ये महाबली सातराक्षस अग्नि से जलाये गये १२ भद्रबाहु, महाबाहु, सुगन्ध, गन्ध, भौरिक,बह्लिक और भीम ये सात सेनाके आगे जानेवाले १३ रण में देहजलकर प्राणरहित हो-कर पृथ्वीमें गिरतेभये फिर महात्मा वरुणकी फँसरी में बँधेहुये महा-पराक्रमी १४ शूरोंको भयानक शूर पृथ्वी में गिरातेभये और सूर्य्य जीकी किरणसमूहों से पांच राक्षस मारेगये १५ तुरु, तुम्बुरु, दुर्मेधा, साधक, साधकाभिध,क्रूर,क्रौंच,रणेशान,मोद,संमोद और षण्मुख १६ ये सब दैत्य संग्राम में वायुके बाणोंसे गिरायेगये तब नैर्ऋत राक्षस गदासे भीमको पृथ्वी में गिरादेता भया १७ फिर रुद्रोंकी शूलों से संग्राम में डरेहुये सम्मुख रणमें निपुण सैकड़ों दैत्य दानव गिरते भये१८ रश्मिमाली शूर वसुओंके बाणोंके लगने व मेघोंकी करकाओं और अत्यन्त दारुण वज्रोंके लगनेसे १९ रणमें सैकड़ों बली दैत्य गिरायेगये कुबेरकी गदाओं से भी सैकड़ों दैत्य गिरायेगये २० इन्द्र के वज्रसे असंख्य श्रेष्ठ राक्षस कटकर पृथ्वी में गिरे और स्वामि-कार्त्तिक की शक्तिसे भी बहुत मारेगये २१ गणेशजी के फरसा से मुख्य मुख्य राक्षस गिरायेगये फिर तीव्रकर्म्म करनेवाले भगवान्‌के हाथ से छूटेहुये चक्रसे २२ श्रेष्ठ दैत्योंके शिर पृथ्वीमें गिरतेभये यम-राजजी यमदण्ड से हजारों करोड़को २३ भूमिमें तिस समय गिराते

भये काल खड्गसे दानवोंको मृत्यु शक्तिसे दैत्योंको वरुणजी फँसरी सें और राक्षसों को गिरातेभये २४ फिर तक्षकादिकों के पात और चन्द्रमा की शरदी से बहुत राक्षस मारेगये फिर वरुणजी घोड़ेपर चढ़कर तीक्ष्ण फँसरी से हाथियों को नाशते भये २५ और दैत्योंके हाथीके गण्डस्थल में परिघ से भी मारतेभये इसी प्रकार घोड़ों और हाथियों को शीघ्रता से गिरातेभये २६ इसी प्रकार महाबलवान् सिद्ध गन्धर्व अप्सरा और देवता मातृका और गणेशजीसे २७ महाघोर प्रलयके दानव गिरायेगये बाण, खड्ग, शूल, शक्ति, फरसा २८ लाठी, परिघ और भालाओं से देवता राक्षसों को गिरातेभये इस प्रकार दैत्योंके नाशहोनेमें हिरण्याक्ष आकर २९ सूर्य्यके रथके सदृश रथके रत्नोंसे शोभित सुवर्णके सुन्दर घंटा और चामरोंसे भूषित ३० पताका और ध्वजाओं से पूर्ण रम्य इन्द्रके रथके समान रथपर चढ़कर बाण समूहों से नाशकरनेलगा यह महावीर असुरों का स्वामी हिरण्याक्ष देवता और दैत्योंसे दुःखसे लड़ने योग्यहै इस वीरने सैकड़ों हज़ारों सेना समेत हाथियों घोड़े सहित रथों को पृथ्वीमें गिरादिया इसप्रकार सब देवताओं के समूहों में घूमकर ३१ । ३३ मृत्युके समान बाण समूहों को गिराताभया और क्रमसे संग्राम में देवताओं की सेनाको इस प्रकार मथताभया ३४ जैसे पुष्करिणी वृन्द में हाथी कमल के वनको मथता है तब हिरण्याक्ष के तीक्ष्ण बाणोंके लगने और वेगसे वारंवार सिंहके समान शब्दों से ३५ वेगही से देवता लोग पृथ्वीमें गिरतेभये दश तीक्ष्ण बाणोंसे जयन्तको मारा३६पांच बाणोंसे रेमन्तको पन्द्रहसे इन्द्रको बीससे चित्ररथको पचीससे स्वामिकार्त्तिक को ३७ तीनसे गणेशको चालीस से यमराजजी को भी मारा और काल और मृत्युको द्विगुण हाथसे ३८ दश बाणों से जगत् के प्राण कुबेरजीको छः और सात बाणोंसे सब रुद्रोंको अलग अलग ३९ सब वसुओंको दशबाणों से सिद्धोंको आठ बाणोंसे गन्धर्वों को दशबाणों से सर्पोंको छः बाणोंसे मारा ४० ओजके समूह अत्यन्त वीर्य्य और शीघ्र लाघव दर्शनसे आपत्तिको प्राप्तहोकर देवता डरसे उसके मारने में न समर्थ भये ४१ महादेवजी के शूलके सदृश मर्म

काटनेवाले बाणोंसे युद्धमें ताड़ितहुये देवता मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिरतेभये ४२ श्रेष्ठ देव भी तिसके सम्मुख स्थितहोने में न समर्थ भये तब इन्द्र संयुक्त कँपेहुये देवता ४३ ताड़ित होकर शरणागत की रक्षाकरनेवाले भगवान् हरिजीकी शरण में जातेभये इसी अन्तर में विष्णुजी देवोंके स्वामी इन्द्रसे बोले कि ४४ इस समय में संग्राम में हिरण्याक्षके सम्मुख जावो तब इन्द्र शीघ्रता से हिरण्याक्षके नाश करनेके लिये उसके समीप गये ४५ तो हिरण्याक्ष ने बाणोंसे विष्णु जीके रथको काटकर विष्णुजीको भी आच्छादित करलिया और रथके सम्मुख दैत्य नाशरहित विष्णुजी से बोला कि ४६ देवताओं समेत तुमको मारकर इस समय में और सृष्टिकरूंगा तब गर्जतेहुये उस श्रेष्ठ दैत्यसे विष्णुजी यह बोले कि ४७ रे पापी! तू निन्दा करने में योग्य है जो युद्धमें स्थिर होगा तो तुझे देखूंगा तदनन्तर सैकड़ों बाणोंसे नाशरहित विष्णुजीको हिरण्याक्ष ने मारा ४८ और असं-भ्रान्त होकर यमराज के दण्डके समान बाणोंको काटा फिर सहस्रों बाणोंको विष्णुजीके ऊपर चलाया ४९ तो विष्णुजीने बाणोंसे काटा। और विष्णुजीने छूनेसे अग्निके समान बाणोंको चलाया ५० तो काटनेवाले तीक्ष्ण आकाशमें जानेवाले मनोजव लाघव से विष्णुजी के अस्त्रके रुई सूखे तृणके समान ५१ सुवर्णके सहस्र बाणोंसे हिर-ण्याक्ष ताड़ित हुआ तो बाधासे पीड़ित होकर क्रुद्धहोकर पर्व्वत उठा कर ५२ महाबली हिरण्याक्ष ने भगवान् के ऊपर मारा तो हरिजी ने गदासे लीलापूर्व्वक चूर्ण करडाला ५३ इसी प्रकार सहस्रपर्व्वत क्रमसे मारे और राक्षसों के वैरी विष्णुजीने तैसेही शीघ्रता से चूर्ण करडाले ५४ फिर हिरण्याक्षने हज़ार भुजाकर बाण अत्यन्त उग्र शक्ति शूल और बहुत फरसा आदिकों से क्रोधयुक्त चित्तहोकर विष्णुजी के ऊपर वर्षाकी हिरण्याक्ष के चलायेहुये अस्त्रोंको विष्णुजीने ५५। ५६ प्रकाशित राक्षसों को भयङ्कर बाणों से काटडाला और हिर-ण्याक्ष ने महादेवजी के शूलके समान नाशरहित हरि ईश्वरके ऊपर बाणोंसे वर्षाकर सब देहोंमें विष्णुजी को ताड़ित किया हिरण्याक्ष संग्राम में क्लेशको प्राप्तहोकर अत्यन्त उत्तम सर्वशक्ति ५७। ५८

कालजिह्वाके समान घोर आठ घंटासे युक्त हरिजीकी चौड़ी छातीमें शीघ्रता से चलाताभया ५९ तब हरिजी बिजली समेत सजल मेघ के समान शोभित होतेभये तो दैत्य रोनेलगे और देवता जय हो यह अच्छा शब्द कहनेलगे ६० फिर विष्णुजी दैत्यों की सेनामें चक्र छोड़तेभये तो चक्र तिन राक्षसों के शिर काटकर फिर विष्णुजी के पास आजाताभया ६१ फिर विष्णुजी हिरण्याक्ष के ऊपर शक्तिचला कर रणमें गिरादेते भये तो हिरण्याक्ष बहुत समय में होशको पाकर अग्निबाणसे केशवजी को ६२ प्रहारकरताभया तब क्रुद्धहोकर विष्णु जी कौबेरास्त्र छोड़तेभये फिर हिरण्याक्ष अत्यन्तदारुण आसुर मायास्त्रछोड़ता भया ६३ सिंह व्याघ्र भैंस हाथी और मछलियों को भी मायासे उत्पन्न करलेताभया और प्रतापी हिरण्याक्ष समर में विष्णुजी को मारताभया ६४ तब मायाके अस्त्रों से उत्पन्न शस्त्र और अस्त्रसमूहों को विष्णुजी बाणों से काटतेभये और शूलसे इस प्रकार ताड़ित करतेभये ६५ कि हिरण्याक्ष के उस समय सबअङ्ग विह्वल होगये रक्तसे भीगजाता भया फिर रक्तसे भीगेहुये विष्णुजी भी ६६ हिरण्याक्ष को खींचतेभये और तीनबाणों से ताड़ित करते भये और वरूथ ध्वजा पताका रथ छत्र ६७ और सारथी को दश २ बाणोंसे काटतेभये रथके कटकर गिरजाने में हिरण्याक्ष दूसरे रथपर ६८ चढ़जाताभया और सम्मुख करलेताभया तब महाघोर लोमहर्षण लोकोंको विस्मय करनेवाला परस्पर अस्त्रयुद्ध होताभया ६९।७० तो युद्धमें देवताओं के सौवर्ष बीत जातेभये तब महाबली हिरण्याक्ष वामनजी की नाईं बढ़ताभया ७१ क्रोधसे मुखसे चराचर त्रैलोक्य को ग्रहण करलेताभया और पृथ्वीको उठाकर रसातलमें प्रवेश कर जाताभया ७२ और प्रीतिसंयुक्त शेष दैत्यभी तिसके पीछे प्रवेश कर जातेभये तब महातेजस्वी विष्णुजी दैत्यके बड़े बलको जानकर ७३ उसके मारने की इच्छा से शूकररूप धारणकर हिरण्याक्ष के पीछे शीघ्रही रसातलमें प्रवेश करजातेभये ७४ वहां रसातल में जाकर वहींपर प्राप्त लोकके आधार पृथ्वीको अपनी डाढ़में उठालेतेभये ७५ अमिततेजस्वी विष्णुजीको पृथ्वीधारणकर जातेहुये जानकर हिरण्या-

क्ष विष्णुजीको कठोरशब्दोंसे व्यथित करताहुआ प्राप्त होजाताभया
७६ तब मायाके शूकररूप विष्णुजी क्रोध से दुर्वचनों को सहकर
जलके ऊपर पृथ्वीको धरदेतेभये ७७ और पृथ्वी में अपने सत्त्वको
स्थापित कर तिस समयमें अचला कर देतेभये तदनन्तर हिरण्याक्ष
उपस्थित होजाताभया ७८ और बड़ेक्रोधसे युक्तहोकर हरिजीकोगदा
से मारताभया तब मायाके शूकररूप विष्णुजी तिस गदाको कुछभी
न समझतेहुये छल लेते भये ७९ जैसे योगयुक्त मनुष्य मृत्युको
नहीं समझताहै और कौमोदकी गदासे हिरण्याक्षको मारतेभये तब
फिर क्रोधसे युक्त महाबली हिरण्याक्ष ८० विष्णुजीकी दहिनीभुजा
में मुष्टि से मारताभया इस प्रकार महाघोर युद्ध दहिने बायें इधर
उधर आपस में प्रहार करतेहुये होताभया तब आकाश में स्थित
ब्रह्मादिक देवता युद्ध देखतेभये ८१ । ८२ और प्रजा देवता और
ऋषियों का कल्याण हो यह कहकर देवदेवेश शूकररूपी विष्णुजी
से बोले ८३ कि हे देव! बालक की नाईं क्रीड़ा न कीजिये इस देवों
के कण्टक को नाश कीजिये तब महातेजस्वी मायाके शूकररूप धा-
रण करनेवाले विष्णुजी ८४ ब्रह्मादिकोंकी सलाह पाकर सहस्रसूर्य
के समान प्रकाशित बड़ी दीप्तिवाले तीक्ष्ण दैत्यके अन्त करनेवाले
भयानक प्रलय की अग्नि के समान दीप्तियुक्त चक्रको छोड़ते भये
यह विष्णुजी का छोड़ाहुआ चक्र महाबली हिरण्याक्ष को ८५।८६
ब्रह्मादिक देवताओं के देखतेही शीघ्रही भस्म करदेताभया और
दैत्यका अन्त करनेवाला भयानकचक्र विष्णुजी के पास आजा-
ताभया ८७ तब ब्रह्मादिक देवता और इन्द्रादिक लोकपाल विष्णु
जीकी विजय देख आकर स्तुति करने लगे ८८ कि संसार के
आदिभूत देवता और सुरों में श्रेष्ठ संसार के पालन करनेवाले
विष्णुजी के नमस्कार है जिनकी नाभिकमल से ब्रह्माजी होतेभये
तिनकी शरण में हमलोग प्राप्त हैं ८९ मत्स्य कच्छप नृसिंह और
वामनरूप धारण करनेवाले आपके नमस्कारहै ९० क्षत्रियोंके नाश
करनेवाले परशुरामजी रावणके नाशकर्ता रामजी और नीलाम्बर
धारण करनेवाले प्रलम्बासुरके नाशकरनेहारे बलरामजी बुद्धदैत्यों

के मोहन करनेवाले म्लेच्छोंके नाशकरनेवाले कल्कीजी और शूकर रूप धारण करनेवाले आपके नमस्कार है संसार के हितके लिये युगयुगमें आप रूप धारण करते और असुरोंका संहार करते हैं ९१। ९२ इस समय में आपने प्रगल्भ हिरण्याक्ष दैत्यको मारा है यह इन्द्रादिक लोकपालों की निन्दाकर तिरस्कार करता था ९३ इसे आपने देवताओं के कल्याणहीके लिये माराहै हे देवताओंमें श्रेष्ठ! प्रसन्न हूजिये हे देवदेव! ब्रह्मारूपसे आप इस संसारके रचनेवाले हैं ९४ और आपही पालन करनेहारे हैं युगयुग में मनोहररूपोंको धारण करते हैं और आपही कालाग्नि शिव होकर अन्तकाल में संसार को नाश करते हैं ९५ इससे आपही संसार के कारण हैं हे ईश! आपसे पर जीव और अजीव नहीं हैं जो कुछ भूत भविष्य और वर्तमानरूपहै ९६ सब चराचर आपही हैं आपके विना कुछ संसार नहीं शोभापाता है है नहींहै यह भेदनिष्ठ सत् असत्स्वरूप आपही में प्रकाशित होताहै ९७ हे देव! आपको विना पकीहुई बुद्धिवाला कोई भी नहीं जानने योग्य है आपके चरण में परायण मनुष्यही जानसक्ताहै तिससे शरणागत की रक्षा करनेवाले आपकी हम शरणमें प्राप्त हैं ९८ व्यासजी बोले कि प्रसन्नआत्मावाले विष्णुजी देवताओं से बोले कि हे देवताओ! तुम्हारे स्तोत्र से इस समयमें मैं प्रसन्न हूं तुम्हारा कल्याणहो ९९ जो भक्तिसे इस विजयस्तोत्र को आदर से पढ़ता है तिसको तीनों लोकोंमें कुछ दुर्लभ नहीं है १०० एकलाख अच्छी प्रकार गऊ देनेसे जो फल मिलताहै वह फल इस स्तोत्रके कीर्त्तन और सुनने से मनुष्य पाताहै १०१ देवदेवजी का नित्यकीर्त्तन सब कामना देनेवाला है इससे श्रेष्ठ महाज्ञान न हुआ है और न होगा १०२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेदेवासुरसंग्राम समाप्तौविजयस्तोत्रन्नामपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० छीहत्तरयें महँ असुर होनहेतु कह नीक ॥

पुण्यकर्म्म, पातककरम भाषे बहुत सुठीक १
लखिस्वभावसुरअसुरनरपशुपक्ष्यादिकज्ञान ॥
पूर्वजन्म करह्वोतजिमि ताकर कियो बखान २

सञ्जयजीने व्यासजीसे पूँछा कि चाहे सम्मुखयुद्धकरके वा विमुख होकर जो असुरलोग मृतक होते हैं हे ब्रह्मन्! उनकी गति हम तत्त्व से सुना चाहते हैं १ ये दैत्य सचराचर इन तीनों लोकों में असंख्यात हैं सो मरजाने पर कहांको जाते हैं भो गुरुदेवजी! यह हम से कहिये २ व्यासजी बोले कि जो दैत्यश्रेष्ठ रणमें सम्मुख युद्धकरके मृतक होते हैं वे आप देवता होकर निरन्तर नानाप्रकार के भोग भोगते हैं ३ जहां वे लोग भोगकरते हैं वहां अनेक प्रकारके रत्नों से भूषित सुवर्णके तो मन्दिर हैं व सब काम देनेवाले वृक्ष लगे हैं व स्वर्गकी नदी के जल से युक्त हैं ४ कमलआदि पुष्पों से युक्त तड़ाग व अन्य सुगन्धित पुष्पों के वृक्ष लगे हैं दधि दुग्ध घृत और शक्कर से युक्त शुभदायिनी तलैया हैं ५ अत्यन्तरूपवती सदैव नवीन युवावस्थावाली वहां पर स्त्रियां राज्य करती हैं फिर तैसेही पृथ्वी में ६ इसी प्रकार आठ जन्म पाकर धनी राजाके मन्त्री होते हैं फिर अर्द्धसम्मुख गात्रसे निरन्तर स्वर्ग के सुख भोगते हैं ७ और जो विमुख, कायर, डरपोंक लड़ाई में मायावी देवता और ब्राह्मणों के वैरी होते हैं वे घोरनरक को जाते हैं ८ जो गिरेहुये, मूर्च्छायुक्त, कटेहुये और लड़ाई में और से जो युद्धकरताहो इन सबको जो मारते हैं वे म्लेच्छ कुत्सित वचन कहनेवाले नरकको जाते हैं ९ और वेही मनुष्य पराई धरोहर के चुरानेवाले तत्त्वसे विमुख होते हैं रात्रि वा वनमें नाश होने में चोर, साहस करनेवाले १० सर्वभक्षी, मूर्ख, म्लेच्छ, गऊ और ब्राह्मणों के नाश करनेवाले, कुत्सित वचन कहनेवाले जो सब कूटयोनियां हैं ११ तिनकी पिशाची बोली है लोकाचार विद्यमान नहीं है पवित्रता, तपस्या, ज्ञान, देव पितृतर्पण १२ यज्ञ में दान और श्राद्धादिक, पितर, ब्राह्मण, देवता और तपस्वियोंकी सेवा ये सब कर्म्म नहीं करते हैं १३ इसीकारण ज्ञानके लोपहोनेसे मल शौचनहीं विद्यमान होताहै माता, बहन वा

और स्त्रीकी कामना करनेवाले होते हैं १४ सब विपर्यय है संसार से अच्छा आचार मलिन उनका होताहै वे सर्प वा औरही निंदित योनियों में १५ उत्पन्न सदैव दैत्यही होते हैं जिनकी अकारण पुण्यहै वे मरकर दुर्गतिको प्राप्तहोतेहैं ब्राह्मण,स्त्री और बालकके नाशकर्त्ता १६ गौवोंके खानेवाले, दुरात्मा,नहीं भोजनके योग्य भोजनोंके खाने वाले कीटयोनिको प्राप्तहोते वृक्ष और चींटी होतेहैं १७वे देवताओंके वैरी मन्त्र और देवताओं में विश्वास नहीं करतेहैं बड़ेभाईको नहीं मानते हैं उनकेसमान किसी कीभी निंदित जीविका नहीं होतीहै रोम और भग के बेंचनेवाले पृथ्वीमें निंदित पदार्थों के खानेवाले होते हैं जो व्रत दान स्नान यज्ञादिक करतेहैं सब साहसहीके साथ करतेहैं १८।१९ मछली व मांस खानेसे बहुत प्रसन्न रहतेहैं व मिथ्या वचन बोलतेहैं सदा कामयुक्त रहते व सदा लोभ और क्रोध करते व सदा मदकरते रहतेहैं २० लोगोंके मारने व बाँधनेमें लगे रहतेहैं जुआ खेलने व स्त्रियोंकी गीतोंके सुनने में प्रसन्न रहते हैं दुष्टनौकर और दुष्टही जनोंसे प्रसन्न रहते व लशुन प्याज आदि दुर्गन्धी वस्तुओं के खानेसे बहुत प्रसन्न रहते हैं २१ देवता ब्राह्मणों के पूजने धर्म्म करने व वेद पुराण धर्म्मशास्त्र सुनने में श्रद्धा नहीं रखते व स्तोत्र और पुण्यकारी मन्त्रादि पढ़ने जपने में कभी रुचि नहीं करते २२ प्रायः बहुत रोगों से युक्त रहते व अधिक क्रोध करते चाहे कुरूप हीहों पर रूप बहुत बनाते व वस्त्रादि बहुत काले नीले धारण करते हैं जब दैत्य पृथ्वीमें मनुष्योंमें उत्पन्न होतेहैं तो ये सब लक्षणहोतेहैं २३ व जब यक्षलोग पृथ्वीपर आकर मनुष्य होतेहैं तो उनमें ये लक्षण होतेहैं वे अपने से बड़ा किसीको नहीं जानते न अपने गुरुको न औरही किसीको श्रेष्ठ समझते हैं गर्भपूरण की इच्छा करते हैं अतिथि गुरु ब्राह्मणकी पूजा कभी नहीं करते २४ न किसी देवताको मानते न पुत्र न अपने गोत्रवाले को न मित्रको न बान्धव को दान तो स्वप्नमेंभी जानतेही नहीं जो कुछ अन्न वस्त्रादि पातेहैं आपहीखाते पहिनते हैं २५ व धनकी तो ऐसी रक्षा करते हैं कि प्रायः आपभी नहीं खाते पीते फिर देनातो दूरही रहता विना फाँसीपर चढ़ादिये

राजाको भी कुछ धन नहीं देते २६ वे यक्षलोग दुर्गतिमें भी स्थित पराये अर्थ के लिये औरोंका बोझा लादते रहते हैं व प्रेतोंका लक्षण तो सब लोगोंसे निन्दित है २७ चाहे स्त्री हों वा पुरुष हों जो प्रेतयोनिसे आकर जन्म लेतेहैं उनके लक्षण एकाग्रमन करके सुनो वे मैला कीचड़ नित्य अपने अङ्गोंमें लगाये रहते हैं सत्य व शौच से विवर्जित रहते २८ दांत केश व वस्त्रों और देहमें प्रायः मल लगाये रहते गृहपीठादि पात्रों का थोड़ा भी साफ शुद्ध रखना उन को नहीं रुचता २९ स्त्रियोंका सुख देखना नहीं चाहते प्रायः वन में शीघ्रही जाकर बैठ रहते हैं मलिन जूँठा दुर्गन्धियुक्त भोजन करने में पृथ्वी में प्रसन्न रहते हैं ३० खाना पीना व सोना उन को अँधेरे मेंही अच्छा लगताहै स्वस्थता कभी उनको नहीं अच्छी लगती देहमें कभीभी पवित्रता नहीं रहती ३१ मनुष्योंमें जन्म पाये हुये प्रेतोंके ऐसे लक्षण होतेहैं व जो अपना हित अहित मित्र अमित्र गुण अगुण नहीं जानते ३२ पाप पुण्यादिक का स्थान नहीं जानते न स्नान करते न देवता ब्राह्मण का पूजनकरतेहैं शत्रु मित्र उदासीन को स्वभाव से नहीं जानते हैं ३३ बस उनको मनुष्य लोगोंमें आयेहुये बुद्धिसे पशु समझना चाहिये व जो अपनी बुद्धिसे पृथ्वीमें मृषा जहां तहां फिरा करते ३४ वे लोग पृथ्वीपर यक्षरूप हैं इससे सब कर्मोंसे बाहर करनेके योग्यहैं इन लोगोंके भेदकहते हैं जैसे पृथ्वीपर दिखाई देतेहैं ३५ मर्त्यलोकमें आयेहुये लोगोंको उनके पापके अनुमार उनकी जाति जाननी चाहिये जो इस जन्ममें पृथ्वीमें बड़ी मैली कुचैली जगहमें रहताहै व कपटरूपी रहताहै ३६ सबका जूँठा खाताहै उसको उस जन्मका कौआ विद्वानों ने कहा है नहीं खानेवाली वस्तुका खानेवाला अशुद्धही वस्तु प्रियवाला पापी उसजन्मका कुत्ताहै ३७ सब गुह्योंमें प्रवृत्त भक्ष्य और अभक्ष्य वस्तुओं का खानेवाला पृथ्वी में पशुआदिक योनियों में उत्पन्नहोनेवाला होताहै ३८ कुत्ता से हाथसेछीननेवाले म्लेच्छोंके खानेको प्रियकरने वाले विशेषकर सुवर और चरणसे युद्धकरनेवाले ३९ जीवोंके पालन और भोजन और निन्दित बुरीवस्तुओं के खानेवाले, पर्वतमें अग्नि

के काष्ठ इकट्ठा करनेवाले हैं ४० वे सदैव म्लेच्छ जानने चाहिये क्षत्रियों के भयसे व्याकुल कुलीन मनुष्यों के नष्ट धर्म करनेवाले सदैव शौचसे हीन होनेवाले मनुष्य म्लेच्छ और चोर होतेहैं उनके संसर्ग संबन्ध अन्नके भोजनकरने ४१। ४२ और उनकी स्त्रियों में मैथुन करने से और भी मनुष्य उसी भावको प्राप्तहोजाते हैं तिस-कालमें सब मनुष्य दुःख और रोगसे तापयुक्तहोते हैं ४३ दुर्भिक्ष से अन्नही में परायण, मूर्ख, सदैव राजासे पीड़ित, झूंठबोलनेवाले और सब शौचसे हीनहोते हैं ४४ मनुष्य पुराण और आगम की संहिता नहीं सुनते हैं मदिरा और मांसही प्रियवाले, पापी सबखा-नेवाले, अत्यन्त घोर, ४५ घोर आचार में लगेहुये, नित्यही छलमें परायणहोते हैं पुत्र पिता, माता और गुरुओंकी पालना नहीं करते हैं ४६ नौकर गुणशाली स्वामी की सेवा नहींकरते हैं कोई स्त्रियां स्वामी और श्वशुरकी सेवा नहीं करती हैं अपनी माता ४७ नि-त्यही कष्टपातीहैं ऐसे मनुष्यहोते हैं घर घर में लड़ाईहोती है राजा, मन्त्री और पुरोहित म्लेच्छ और मदिरा पीनेवालेहोतेहैं ४८ मांस रहित मनुष्य तिनको मछली और मांसों से बलिदेते हैं पाखण्ड के परिश्रमयोगों से गुण और वार्ता में प्रधानहोते हैं ४९ धनी, कोकिल और मूर्खों से पृथ्वीतल व्याप्त होताहै फिर परस्पर प्रिय मूढ़ वन वा नगरों में ५० मछली और मांसादिक खाने और नहीं खानेवाली वस्तुओं को खातेहैं वनमें ब्राह्मण वा और भी मनुष्य पापका व्य-वहार करते हैं ५१ भक्तिमान् भी पशुको बेंचडालते हैं सब पूर्व के देवता पापीनरककोजाते हैं और पितरोंको भी नरकमें गिराते हैं ५२ और जो मनुष्य पिशाच और गुह्यकहैं उनके नम्रतामें प्रीति नहीं होतीहै न देवता और मनुष्यों में प्रीतिहोतीहै ५३ संजयजी बोले कि हेनाथ व्यासजी तत्त्वके जाननेवाले, मनुष्य भावोंमें कैसेलक्षण कोजानते हैं इससंदेहको निश्चय दूरकीजिये ५४ तबव्यासजीबोले कि हे संजय! असुर, राक्षस, प्रेत, ब्राह्मण वा और जातियों में जन्म लेकर अपने स्वभावको नहीं त्यागते हैं ५५ जो असुर मनुष्यलोक में उत्पन्नहोते हैं उनके सदैव लड़ाई प्यारीहोती है कुहक, कब्बर और

क्रूर पृथ्वी में राक्षसजाननेचाहिये ५६ मनुष्य उद्विग्नआदिक दान और पृथ्वीमें देवपूजन जो करताहै वह उग्रभायसे धनपाकर निरन्तर राज्यभोगताहै ५७ जय शूरता आदिक पुण्यपाता है फिर पापनाश होजाताहै इसप्रकार पृथ्वीतल, स्वर्ग, नागलोक और यमराजके स्थानमें सुखहीपाताहै ५८ कोई उग्रतपस्यासे स्वर्ग में देवताहोता है प्रह्लादजी वासुदेवभगवान् की आराधना से देवताओं में पूजित हुये ५९ अन्धकदैत्य महादेवजी की स्तुतिकरने से महादेवजी का गणहुआ और महाबली भृंगी गणोंमें मुख्य हुआहै ६० ये वा और भी बहुतहोचुके हैं बलि, इन्द्रहोंगे और प्रह्लादादिक इसलोक और परलोकमें सदैव अच्छीगतिको प्राप्तहोते हैं ६१ कोई श्रेष्ठ देवता दैत्यों के कुलमें उत्पन्नहोकर सब सैकड़ों हजारों पितरोंको तारदेते हैं ६२ एकभी बुद्धिमान् अच्छे पुत्रसे कुलभरकी रक्षाहोजाती है एक भी वैष्णवपुत्र करोड़कुलको उद्धार करदेताहै ६३ जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, ब्राह्मण और देवताओंके पूजन में रतहोताहै धर्म के क्षय होने में कलियुगमें पुर और देशों में बसताहै ६४ एकधर्मात्मा मनुष्य भी पुरमें गांव, जन और कुलकी रक्षाकरता है और ब्राह्मणों का भारीपुर विज्ञानियों से भरजाताहै ६५ वहांपर सब ब्राह्मण निरन्तर संध्योपासनमें तत्परहोजाते हैं वेदपाठमें लगेरहते हैं धीर, देवता, अतिथि और ब्राह्मणों की पूजा करते हैं ६६ यज्ञ, व्रत और अग्नि कर्म करते हैं षट्कर्म में निश्चय करते हैं और उनको अत्यन्तक्लेश प्राप्तहोने में भी पापमें मन नहीं वर्तमानहोताहै ६७ वे वीर निरन्तर सनातन व्रत और यज्ञकरते थे कदाचित् दैवयोगसे एक गृहस्थ, चतुर ६८ मन्त्रजाननेवाला श्रेष्ठ ब्राह्मण मन्त्रसे घृतको अग्निमें हवनकरता था कि तिसीसमय में उसको घोर मुतकर्कहुई ६९ तब वह पेशाब करने के लिये बाहरगया और उसजगहपर रक्षाकरने के लिये एक दासी को छोड़गया उसदासी की ग़फ़लतसे कुत्ता घीखागया ७० तब डरकर उसदासीने घीके बर्तन में पेशाब करदिया जब शीघ्रता से वह ब्राह्मण आया तब उसने घीकेविना देखेही उसी पेशाब से हवनकिया ७१ तब तिसीक्षण से अग्नि में

आश्चर्यदिखाई पड़ा कि सोनेही के समान साक्षात् सोनेही के तार अग्निसे निकलनेलगे ७२ तब ब्राह्मण आनन्द से उनतारों को लेकर फिर हवन करनेलगा और विस्मयहोकर दासी से पूंछनेलगा कि हे प्रिये ! यह कैसेतार निकलते हैं इसका कारण कहिये ७३ तब आनन्द से उसदासी ने सबवृत्तान्त पेशाब करने और कुत्ते के घी खाजाने का ब्राह्मण से कहदिया तब तो ब्राह्मण नित्यही उसी समयमें उसीप्रकार हवनकरनेलगा ७४ तो अद्भुतसमृद्धि मनुष्यों के विस्मयकरनेवाली उसके घरमें भरगई तदनन्तर परस्पर उसपुर में सबलोगोंने यह हालसुनकर ७५ लोभसे सबदुष्टोंने वही दुराचार कर्मकिया भारीलोभसे अन्तमें कीचड़में फँसना होताहै ७६ कीचड़ रूप भय से बुद्धिभ्रंश होजाती है तदनन्तर पापसमूह से वह पुर जलगया ७७ स्त्रियां दुष्ट और सब मनुष्यभी पापबलसे दुष्टहोगये वह चतुर वृद्धब्राह्मण तिसकार्य में बुद्धि न धारण करता भया ७८ उससमयमें उसकी पतिव्रता बड़ेदुःखसे युक्तहुई स्त्री क्लेशसे तप्तकर पुरके कार्यको अपने पति से कहनेलगी ७९ कि हे नाथ ! तुमको दुःखसंयुक्त देखकर मेरेकष्ट होताहै इसगांवके आचार अच्छे नहीं हैं इससे आपदूसरे गांवके जानेके योग्यहैं ८० तब वह दोषका जाननेवाला ब्राह्मणमुसकाकर बोलाकि हे महाभागे ! स्त्री जो श्रेष्ठ हितकारी धर्मको छोड़कर पापसे जीवताहै ८१ वह नरकको जाताहै और जो धर्म नहीं छोड़ताहै वह नरक नहींजाताहै ये स्त्रियां और सबकुटुम्बसमेत दुराचारी ब्राह्मण ८२ बहुत पापके योगसे महापातकी हैं बड़ेपाप समेत रसातलको जावेंगे ८३ फिरअन्तमें मोक्षको न पाकर अपराध का अन्तनहोगा मैं अकेलाही अपनी पुण्यकी रक्षाकरनेसे यहांरहूंगा ८४ तब वह ब्राह्मणी उस ब्राह्मणसे बोलीकि तुम्हारे वचन मनुष्यों के हँसनेके योग्यहैं हमारेही आगेकहनेके आप योग्यहैं और किसी के आगे कहनेके योग्यनहीं हैं ८५ तबब्राह्मण बोला कि हे प्रिये ! जो मैं यहांसे और जगहजाऊंगा तो उसीक्षणमें द्रव्य और अपने जनों समेत यहपुरी नरकको चलीजावेगी ८६ ऐसा कहकर परम प्रसन्न होकर वह ब्राह्मण उस स्त्री समेत अपने धनको लेकर शीघ्रही और

गांवको चला ८७ और रुककर पुरी को देखनेलगा कि पहलेकी नाईं स्थिर है तबवह पतिव्रता अपनेपतिसे बोली कि यह पुरी नाशनहीं हुईहै ८८ तब विस्मययुक्त वह श्रेष्ठब्राह्मण विचारकर अपनी स्त्रीसे बोला कि कुछ हमारी द्रव्य घरसे बाहर वहींपर रहगई है ८९ तब विचारकर वह स्त्री अपने पतिसे बोली कि मैं भ्रांतिसे जूते वहींभूल आईहूं ९० ऐसा पति से कहकर वह पतिव्रता जूतोंको लेकर फिर चलीआई जब पतिकेसमीपआई तो पुरको पीछे फिरकर देखा तो पुर सब नष्टहोगया ९१ ब्राह्मण आदिक वर्णकच्चर पुरवासीसब दुःखित होकर घोर नरकमें पड़ेहुएहैं जहां से लौटनाही नहीं होता ९२ और क्लेश से यमपुरको जा रहे हैं जहां से निकलना नहीं होता फिर पूति-गंध, मेध्य, वर्जनीय कहाते हैं ९३ पहले की नाईं खानेमें प्रसन्न इसी समयमें पापकाकरनेवाला चोरीका करनेहारा रात्रिमें चलनेवाला इन को पण्डित लोग वंचक जाने ९४ सबकार्यों में चतुरनहींहो सबकर्मों को नहीं जाने समय के आचार न जानताहो वह मूर्ख पशु है ९५ इसीप्रकार ऊंट आदिक और भच्चादि न्योरा आदिक हैं और जो जातिवालों से वैर करता है रति और युद्धमें कायर है ९६ नित्यही जूंठा खाना प्रियहो ऐसे मनुष्यको पण्डितलोग कुत्ता कहते हैं और जो नित्यही चोरी करताहो बहुत मित्रोंको ठगताहो९७ जोड़ाहोने में नित्यही लड़ाई होतीहो वह मनुष्य कहाता है प्रकृतिसे नित्यही चञ्चलहो सदैव भोजन में चंचलहो ९८ वन प्रसन्नहो ऐसा मनुष्य पृथ्वी में वानर है भाषा और बुद्धि से अपने जन और दूसरे मनुष्यों में जो चुगुली करताहो ९९ चुगुली के करने से वह पुरुष सर्प कहाताहै और जो बलवान् क्रांत शील निरन्तर लज्जाहीन १०० मःसादिक प्रियहो भोगीहो ऐसा मनुष्य नृसिंह कहाताहै उसके शब्द से डरकर और भेड़ियाआदिक कष्टपाते हैं १०१ और हाथीआदिक जो मनुष्य हैं वे दूरदर्शी जानने योग्य हैं ऐसेही क्रमसे मनुष्यों में जाने १०२ अब मनुष्यरूप में स्थित देवताओं के लक्षण कहते हैं ब्राह्मण, देवता, अतिथि, गुरु, साधु और तपस्वियों की १०३ पूजा करताहो नित्यही तप करताहो धर्मशास्त्र और नीति नित्यही देख-

ताहो क्षमायुक्त क्रोधहीन सत्यवादी जितेन्द्रिय १०४ कृपायुक्त सं-
सार में प्यारा रूपवान् मीठी वाणी वोलनेवाला वाणी में श्रेष्ठ सब
कार्यों में गुणी चतुर महावली १०५ साक्षर विद्वान् गाने और ना-
चने के अर्थ के तत्त्वका जाननेवाला आत्मविद्या आदि कार्यों और
स्वरों में सर्वतन्त्रीहो १०६ सब हविष्यों और गऊके दुग्ध से खीर
पकाकर श्राद्धादि करताहो मांस न खाताहो अच्छेयोग से स्वादु
द्रव्य में अत्यन्त शोभन प्रत्यग्र में १०७ चन्दन माला कपड़े शस्त्र
और गहनों में प्रसन्नहो अतिथि के दान पार्वण आदिक श्राद्धों के
कर्म १०८ कार्य में स्नान दानादिक व्रत यज्ञ देवपूजन पाठ इनमें
जिसका काल बीतताहो कोईदिन खाली न जाताहो १०९ यही म-
नुष्योंका निरन्तर सदाचार है देवताओं के समान मनुष्यों का आ-
चार श्रेष्ठ मुनियोंने कहाहै ११० सत्त्व गुण अधिकवाला देवताहै डर
पोंकनेवाला मनुष्य है सदैव गम्भीर देवताहै सदैव कोमल मनुष्यहै
१११ देवता और मनुष्योंकी स्तुति से प्रसन्नता निश्चय दैत्यादिक
में नहीं होती है व होती है तो प्रीतिभाव श्रेष्ठ सुख सुहृद् पुण्य व शुभ
कर्म्म ११२ देवता व मनुष्यों में एकसे होते हैं व दैत्य राक्षसों के
एक से व प्रेतादिकों के प्रेतही के साथ प्रीति होतीहै व पशुकी प्रीति
पशुसे होती है ११३ ऐसेही कौआ आदि अपनी जातिवालेके साथ
प्रीति करते हैं ऐसेही और भी अपनी जातिवाले से तो प्रसन्न रहते
हैं व अन्य जातिवाले से सदा अप्रसन्न यही तिनका लक्षण है ११४
ऐसेही पुण्य विशेष से श्रेष्ठ जातियोंमें प्रिय अप्रिय पुण्य पाप गुण
अवगुण जाने ११५ व अन्य जाति के स्त्री पुरुषों के योग से कभी
सुख नहीं होता न प्रीति होती है अपनीही जातिवाले व अपनेही
कुटुम्बवाले से सबों की मुक्ति वा नरक में भी प्रीति होती है ११६
जो पुरुष पूर्वजन्म में बहुत पुण्य करता है उसकी आयु इस जन्म
में बड़ी होती है व पापी की आयु बहुत कमहोती है व जो पूर्व
जन्मके अति पापी मनुष्य होते हैं वे इस जन्म में दैत्य राक्षसादि
होते हैं ११७ सत्ययुग में देवताही स्वर्ग से च्युत होकर पृथ्वीपर
मनुष्य होतें थे दैत्य राक्षसादिक नहीं होते थे त्रेता में भी प्रायः

देवताही उत्पन्नहुये व द्वापर में आधे देवता आधे दैत्य व ११८ कलियुग की सन्ध्यामें आधे से कम देवता व आधे से अधिक दैत्य उत्पन्नहुये जो महाभारत हुआ है उसमें देवता और राक्षसादिक दोनों थे ११९ जो दुर्योधन के योधा और सेना आदिक और कर्णादिक वीर पृथ्वी में हुये हैं वे दैत्यादिक सब थे १२० व भीष्मपितामह वसुओं में मुख्यहुये व द्रोणाचार्य्य देवमुनि प्रभु व अश्वत्थामा साक्षात् महादेवका रूप व श्रीहरि साक्षात् नन्दकुमार हुये १२१ पाण्डवलोग पांच धर्म्म वायु इन्द्र व अश्विनीकुमारही आकर युधिष्ठिर भीम अर्ज्जुन नकुल सहदेव के क्रमसेहुये विदुर साक्षात् धर्म्मराजहीहुये गान्धारी द्रौपदी व कुन्ती ये सब पृथ्वी में देवाङ्गनाथीं जो धृतराष्ट्र पाण्डव व पाण्डु की स्त्रियां क्रमसे हुईं १२२ कलियुग के मध्यमें देवता दैत्य और शेषमें दैत्य और राक्षस सदैव प्रेत मांस खानेवाले पशुपक्षी उत्पन्न होंगे १२३ व दुर्य्योधनादिकों की स्त्रियां पूर्व्वजन्म की कुलटा स्त्रियांथीं ये सब नित्यही कष्टयुक्त अपनी २ जोड़ीके साथ प्रसन्न रहती थीं और तिन्हीं के आचार कहती थीं १२४ परन्तु कलह करने व पापकरनेपर पाण्डवों कौरवों की सब स्त्रियां उद्यतथीं व जितने दैत्यादिक आकर जन्मे थे वेभी पापकर्म्मही करने पर उद्यतरहे इससे सबके सब नरकगामी हुये १२५ इतना सुनकर वैशंपायनजी ने फिर पूँछा कि दैत्यादिकों के मिथ्याभाव से देवलोक में देवत्व नहीं हुआ सब नरकहीको गये तो फिर देवलोक के सुख भोग आरोग्य बलसमूह १२६ राज्य आयु कीर्त्ति अभीष्ट प्रिय बल नीति विद्यादिक भावी सनातन जन्म और दृढ़ता १२७ दान पढ़ने के कर्म और यज्ञादिक उनको कैसे कभी मिला व मिलसक्ता है यह सब मुझ शिष्य से आप कहने के योग्य हैं १२८ वेदव्यासजी बोले कि दैत्य लोग जो साहस करते हैं वही उनका निश्चित तप है व वही व्रत यज्ञादिक और बान्धवों से प्रीति है १२९ इससे जो ब्राह्मण अपनी इन्द्रियोंको दमन कियेरहताहै व दुर्गुणों से मुक्तरहता है व नीतिशास्त्रके अर्थ को निश्चय जानताहै वह अनेक प्रकारके इनकर्मों से पवित्रहोकर देवताओंके समान लक्षण वाला होजाताहै १३० पुराण

व शास्त्रोंके अनुसार कर्म्म करनेवाला यहां व स्वर्गमेंभी सबसे पूज्य होताहै व जो अपनेआप पुण्य करता है वह पृथ्वीभरके उद्धार करने में समर्थ होताहै १३१ विशेष कर वैष्णवको देखकर जो प्रसन्न होता और पूजाकरताहै वह सब पापों से प्राणी छूटजाताहै व पृथ्वीभरकेउ-द्धार करनेमें समर्थहोताहै १३२ जो ब्राह्मण अपने छवोंकर्म्ममें लगा रहता है और सदैव सब यज्ञकरता रहता है और धर्म्मका आख्यान नित्यही जिसको प्रिय लगता है, वह पृथ्वीभरके उद्धार करनेमें समर्थ होता है १३३ और जो विश्वासघाती कृतघ्न व्रतके लोपकरने वाले और द्विज देवताओं में वैरकरनेहारे होते हैं ये मनुष्य पृथ्वीको छोटी करते हैं १३४ व जो पापी मदिरापान करते हैं व सदा जुआ खेलते रहते हैं व पाखण्डकर्म्म करते हैं वे मनुष्य पृथ्वीभरको छोटी करते हैं १३५ व जो अच्छेकर्म्मसे हीनहैं नित्यही उद्वेगयुक्त रहते हैं निर्भय और स्मृति शास्त्रके अर्थमें उद्विग्न रहते हैं वे लोग पृथ्वीको छोटी करते हैं १३६ और जो अपनी वृत्तिको छोड़कर अधम वृत्ति करते हैं तथा वैरके कारण अपने गुरुकी निन्दाकरते हैं वे मनुष्य पृथ्वीको छोटी करते हैं १३७ व जो लोग दाताको दानदेने से रोकते हैं व पाप करने की प्रेरणाकरते हैं व दीन अनाथों को पीड़ादेते हैं वे लोग पृथ्वीको छोटी करते हैं १३८ इतने ये व अन्य बहुत जो पापाचार करने में पुरुष रत होते हैं वे अपने स्वर्ग में बसेहुये भी पुरुषोंको नरक में गिराते हैं व पृथ्वीको छोटी करते हैं १३९ ॥

चौ०जो यह गुह्य परमहितकारी । शुभइतिहास सुनहिं नरनारी ॥
ताहि नरक दुख अरु दुर्भागा । अरुदीनता न सङ्गहिलागा १४०
दैत्य होत नहिं सो नर कबहूँ । लहतस्वर्गक्षिति मोदित अबहूँ ॥
नहीं अकाल मरण हो तासू । कबहुँ न पापकरहिंअँगवासू १४१
यहां सर्व्वजनपति सो होई । स्वर्गमाहिं सुरपति हो सोई ॥
कल्प कल्पकरि स्वर्ग्ग सुभोगा । पुनिपावत सोमोक्ष अशोगा १४२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादे पुण्यव्यक्तिर्नामषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

दो० सतहत्तरयें महँ कह्यो सब संक्रान्ति महात्म ॥
मुख्य मकरसंक्रमणकर कह महात्म शुभदात्म १
माघ शुक्करवि सप्तमी कर महात्म बहुभांति ॥
कह्योव्यासज्यहिसुनतब्रत आननकाहुपुसांति २

वैशम्पायनजी ने पूँछा कि हे द्विजवर ! हे प्रभो ! जो ये नित्य आकाश में तपते रहते हैं व अनेक किरणों के स्वामी हैं ये कौनहैं व इनका कैसा प्रभाव है व कहां उत्पन्न हुये हैं १ व ये कौन कौन कार्य्य उदितहोकर करते रहते हैं देवता मुनिवर सिद्ध चारण राक्षस २ व सम्पूर्ण मनुष्य मुख्यकरके ब्राह्मणलोग जिनकी पूजा नित्य करते हैं ये कौनहैं कहिये वेदव्यासजी बोले कि प्रथम परब्रह्मकातेज परब्रह्म के शरीर से बाहर निकला ३ उसको साक्षात् ब्रह्ममय समझो व धर्म्म काम अर्थ मोक्षके देनेवाला जानो सो जब यह तेजका समूह निकला तो अपने निर्म्मल किरणों से अतिप्रचण्ड हुआ इससे बड़े दुःखसे सहने के योग्य हुआ ४ ऐसे प्रचण्ड तेजको देखकर उससे अत्यन्त पीड़ित होकर सब लोगभागे व सब समुद्र व श्रेष्ठ नदियां व नदादिक ५ सूखगये व उनमें के जन्तु आतुर होकर मरनेलगे व और भी जीवजन्तु सबकहीं व्याकुल होकर मरनेलगे तब इन्द्रादि देवता ब्रह्माजीके शरण को गये ६ व इस अर्थको उन्होंने ब्रह्माजी से कहा तब वे देवताओं से बोले कि हे देवताओ ! ब्रह्मकारूप जल है व यह तेजोमय ब्रह्मका दूसरा स्वरूप है इससे ब्रह्मरूप जल व ब्रह्मतेजमें कुछ अन्तर नहीं है ब्रह्माको लेकर तृणपर्य्यन्त जो चराचरसहित तीनों लोकहैं उनमें इन्हीं तेजोमयका भाव टिकाहै व यही सबको पालन करते हैं ब्रह्मकी जलमयी व तेजोमयी ये दोनों मूर्त्तियां अमृत के तुल्य हैं इन्हीं दोनों से चराचरसहित तीनों लोक पवित्र होते हैं ७।८ व देवतालोग जरायुज अण्डज स्वेदज अन्यउद्भिजादि सब इन्हीं दोनोंसे उत्पन्न होते हैं इससे इन सूर्य्य व जलका प्रभाव हमभी ठीक ठीक नहीं कहसक्ते उनमें भी इन सूर्य्यही ने सब लोगों

की उत्पत्ति कीहै व यही सबकी रक्षाकरते व पालन करते हैं ९।१० सब कारक्षक इनके तुल्य दूसरा कोई नहीं है प्रातःकाल इनके दर्शन करतेही पापकी राशि नष्ट होजाती है ११ व इन्हीं की आराधना करके ब्राह्मणादि सज्जन मोक्षको सिद्ध करते हैं संध्योपासन के कालमें वेदवादी ब्राह्मणलोग १२ इनकी ओरको हाथ उठाते हैं इसीसे वे लोग देवताओंसे भी पूजित होतेहैं व इन्हींके मण्डलके मध्यमें टिकी हुई जो सन्ध्या देवीकी १३ उपासना द्विज करते हैं वे स्वर्ग और मोक्षको प्राप्त होतेहैं पृथ्वीमें पतित और उच्छिष्ट भी सूर्यनारायण की किरणोंसे पवित्र होजाते हैं १४ सन्ध्योपासनही करनेसे वह पापसे पवित्र होजाते हैं चाण्डाल गऊके मारनेवाले पतित कुष्ठरोगसे ग्रस्त १५ ब्रह्महत्यादि महापातक कियेहुये चोरी परस्त्रीगमनादि उपपातक कियेहुये पुरुषों को देखकर जो मनुष्य सूर्यकी ओर देखतेहैं वे बड़े भारी पापसे छूटजाते हैं १६ इनकी उपासनामात्र से प्राणी सब रोगोंसे छूटजाता है न अन्धाहोताहै न दरिद्र होता न दुःख पाताहै न किसी बातका शोक उसको होताहै १७ व इनकी उपासना करके इसलोक व परलोक में भी पुरुष प्रकाशित होता है हरिहरादिक देव सब मनुष्यों से अदृष्ट हैं इससे सदा नहीं दिखाई देते १८ वे ध्यानरूप से प्राप्त होनेके योग्य हैं व ये सूर्य्य सदा दिखाई देते हैं इससे दृष्टदेव कहाते हैं इतना सुनकर देवगण ब्रह्माजीसे बोले कि हमलोगों ने जाना कि इनकी आराधना सब कार्य्योंको सिद्ध करती है इससे इनकी उपासना व पूजा करनी चाहिये १९ परन्तु इन्हीं के प्रलयके अग्निके समान दर्शन से सब मनुष्यादिक जीव आज कल पृथ्वीमें मृतक होगये हैं २० व इन्हींके तेजके प्रभाव से समुद्रादि सब जलाशय नष्ट होगये हैं व इनके तेजको हमलोगभी नहीं सहसक्ते फिर अन्य जनोंको क्या कहें २१ इससे तुम्हारे प्रसाद से जैसे हमलोग रविकी पूजा करसकें व मर्त्यलोकके मनुष्यादिक भक्ति से पूजा करसकें वह उपाय कीजिये २२ देवताओंका वचन सुनकर ब्रह्माजी सूर्यके समीप गये व जाकर सब लोगों के हित के लिये स्तुति करने लगे २३ ॥

चौ०। तुम सबजनके नेत्रस्वरूपा । रोग विनाशक देव अनूपा ॥
ब्रह्मरूपधर प्रलयानल सम । तुम दुष्प्रेक्ष्य कृपाकीजै मम ॥
सर्व्व देव व्यापी तुम देवा । वायुसखा तव करत सुसेवा ॥
वेद शास्त्र तुमसों सब पावन । तुमजगजीवन जलबरसावन ॥
तुम उत्पत्ति प्रलय के स्वामी । भुवनेश्वर तुम एक सुनामी ॥
तुम्हैं विना सब लोगन केरो । एकहुदिननहिंजीवनटेरो २४।२६
सब लोगन के तुम प्रभु एका । गोप्ता पिता जननि सविवेका ॥
चर अरु अचरसहित सबलोका । तव प्रसादसों होहिं अशोका २७
तुम सम सब देवन महँ कोई । नाथ न अपर तनिक नहिंगोई ॥
तुम सबके हौ अन्तर्य्यामी । जासों व्यापक पूरणकामी ॥
सकल तेजसों तुम संसारा । धारण करत न आन पसारा ॥
रूप गन्धआदिक के कारी । तुम सब रसके स्वादुप्रचारी ॥
इमि विश्वेश्वर सविता देवा । स्थिति कारण जगकेर कहेवा ॥
पुण्यक्षेत्र सब तीर्थ समूहा । सबमखके तुम प्रभु यह ऊहा ॥
तुम पवित्र कारण सब केरे । सब साक्षी तुम हौ श्रुति टेरे ॥
सब गुणखानि सकलजगकर्त्ता । तुम सर्व्वज्ञरु पालक हर्त्ता ॥
ध्वान्तपाप रोगन के नाशक । दारिद दुःखहरण सबभासक ॥
उभय लोकमहँ तुम जनबन्धू । सर्व्व नयन सर्व्वज्ञ अनन्धू ॥
तुम विहाय सब जगदुपकारी । नाथ आन नहिं कहत पुकारी ॥
इमिविधि स्तवन श्रवणकरि शूरा । बोले वचन ब्रह्मसों पूरा २८।३२

सूर्य्यनारायण बोले कि हे विश्वेश विश्वभावक महाप्राज्ञ पितामहजी! शीघ्र कहिये आपका कहना हम अवश्य करेंगे ३३ तब ब्रह्माजीने कहा कि अतिप्रचण्ड तुम्हारे किरण लोगोंको बड़ेदुस्सह हैं इस से हे सुरेश्वर! जैसा करने से ये किरण कोमल होजायँ वैसा कीजिये ३४ सूर्य्यभगवान् बोले कि हे प्रभो! हमारे किरोड़ों किरण हैं वे लोगोंके परमनाशकारी हैं संसार में अभीष्ट करनेवाले नहीं हैं इससे किसी उपाय से कुछ कम करवाडालिये ३५ तब सूर्य्य के कहने के अनुसार ब्रह्माजीने तुरन्त विश्वकर्म्मा को बुलाकर उन से एकयन्त्र बनवाकर उस यन्त्र अर्थात् शानपर चढ़ाकर ३६ प्रलयके

अग्निकेसमान प्रज्वलित सूर्यके किरणोंका बहुतसा भाग काटडाला उसीके चूर्ण से विष्णुभगवान् का सुदर्शनचक्र बनाया ३७ जोकि कभी निष्फल नहीं होता व उसीसे सफल यमदण्ड व महादेव का पाशुपतास्त्र बनाया कालका श्रेष्ठ खड्गभी उसीसे बनाया व बहुत हर्ष करानेवाली शक्तिबनाई ३८ देवीका श्रेष्ठशास्त्र व विचित्रशूल ब्रह्माजी की आज्ञा से विश्वकर्म्माने उसीसे ये सब शस्त्रास्त्र बनादिये ३९ सूर्य्यके सहस्र किरणों को छोड़कर विश्वकर्म्मा ने अन्य जो असंख्य किरण थे सब काटकर सूक्ष्म करडाले जब ब्रह्माजी ने यह उपाय किया तो फिर वे सूर्य्य कश्यपमुनिसे ४० उनकी अदिति नाम स्त्री में उत्पन्न हुये इसीसे उनका एक आदित्य भी नामहुआ ये आदित्य संसारके अन्त में सुमेरुके कँगूरेपर घूमते हुये रहते हैं ४१ सदैव ऊपर दिनरात्र लक्षयोजन पृथ्वीके रहते हैं और चन्द्रादिक ग्रहभी वहीं ब्रह्माके कहनेपर रहते हैं ४२ सूर्यनारायण बारहो मासों में बारह राशियोंपर जाते हैं इसी से इनका द्वादशात्मा नाम है क्योंकि बारहोपर बारहनामके सूर्य्य रहते हैं जिससे कि ये प्रत्येक राशिपर संक्रमण करते हैं इससे उसकालको सबलोग संक्रान्ति कहते हैं ४३ उन सब संक्रान्तियोंका जो फल है वह हम कहते हैं धनु मिथुन व कन्या मीनराशिकी संक्रान्तियोंका षडशीत्यानन नाम है ४४ व वृष वृश्चिक कुम्भ और सिंह की संक्रान्तिको विष्णुपदी कहते हैं इनमें तर्पण दान और देवपूजन करने से अक्षय फल जानिये ४५ धनु मिथुन कन्या व मीनकी संक्रान्तियों मे छियासीसहस्र गुण फलहोता है वृष सिंह वृश्चिक व कुम्भकी संक्रांतियों में लक्षगुणफल होता है व कर्क और मकरकी संक्रांतियों में कोटि गुण अधिक फल होताहै ४६ विष्णुपदी संक्रांतियोंमें दान करना अक्षय कहाता है व जो दान उस दिन करता है श्रीहरिके सन्निकट जन्म २ में निवास करताहै ४७ शीतकालमें रजाई लिहाफ तोसकआदि (तूलपटी) रुई भरेहुये वस्त्र जो कोई ब्राह्मणको देताहै उसके देह में दुःख नहीं उत्पन्न होता व तुलादान शय्यादान मकर कर्क दोनों संक्रान्तियों में करने से अक्षय फल होताहै ४८ व सब सामग्रीस-

हित शय्यादान जो कोई ईर्षारहित उस दिन करता है सोभी पढ़े लिखे सदाचारी विप्रको जो देताहै वह राजपदवी पाताहै ४९ ऐसेही जो कोई नदीके तटपर अथवा मार्गमें अच्छेप्रकार अग्नि प्रज्वलित करके दीन ब्राह्मणादिकोंको तपाताहै और जलको पिलाताहै वह भी राज्यपदवी पाताहै व जो इस संक्रान्तिमें तिलकातेल व ताम्बूल देताहै वह पृथ्वीभर का राजा होताहै ५० सत्यभाव से ब्राह्मण के जो नमस्कार करता है वह धनवान् अक्षय धन पाता है माघमास के शुक्लपक्षकी पूर्णमासी को प्रातःकाल ५१ स्नान करके जो तिल सहित जलसे पितरों का तर्पण करता है वह अपने पितरोंको अक्षयलोक को पहुँचाताहै व आप भी अन्त में अक्षय स्वर्ग पाता है व सुन्दर लक्षणों से युक्त सुवर्ण से सींगें मणिके समान दीप्तिवाली मढ़ाकर ५२ चांदी से खुर मढ़ाकर कांस्यपात्र की दोहनी समेत जो धेनु दान करता है सो भी किसी श्रेष्ठब्राह्मण को जो कि वेद शास्त्र पढ़कर सदाचार में निष्ठहो वह पृथ्वीमण्डलभर का राजा होताहै ५३ व जो अन्न और गहना ब्राह्मण को देताहै वह एक भूमण्डलका राजा होताहै वा धनवान् होताहै व जो कोई पूर्णमासीको सब सामग्रीसमेत तिलधेनु ब्राह्मण को देताहै ५४ वह सातजन्म के कियेहुये पापोंसे छूटकर अक्षयस्वर्गवास पाताहै व उसी माघकी पूर्णमासी को घृतसहित अन्न ब्राह्मण को देकर अक्षयस्वर्गलोक भोगता है ५५ धान्य वस्त्र सेवक गृह पीढ़ाआदि जो उस दिन देता है सोभी किसी श्रेष्ठ सब अङ्गोंसे युक्त ब्राह्मण को अङ्गभङ्ग को नहीं उस दाताके गृहको लक्ष्मी कभी नहीं छोड़तीहै ५६ व इस युगादि तिथिमें जो कुछ दान थोड़ा वा बहुत ब्राह्मणको दियाजाता है परलोकमें वह अक्षय होजाताहै ५७ व जो इस तिथिमें देवपूजन स्तोत्रपाठ धर्म्माख्यान सुनना कियाजाताहै वह मनुष्यको सब पापोंसे पवित्र करताहै और मनुष्य स्वर्गमें पूज्य होताहै ५८ व माघमासके शुक्लपक्षकी तृतीया मन्वन्तर की तिथिहै उसमें जो कुछ दियाजाता है अक्षय होजाता है ५९ व दाताको धनभोग राज्यसुख स्वर्गसुख कल्पान्तरतक मिलते हैं इससे इस मन्वन्तर की तिथिमें दान

सज्जनपूजन जो कुछ कियाजाता है अनन्त फल देताहै ६० पुराणों में एक और भी तिथि अत्यन्त पुण्यकारिणी है वह माघमास के शुक्लपक्षकी सप्तमी है उसका कोटिभास्करा नाम है इस पुण्य तिथिमें उपवास करके मनुष्य जन्मबन्धनसे निस्संशय छुटजाताहै ६१।६२ क्योंकि माघशुक्ला सप्तमी सूर्य्यग्रहणके तुल्य होती है अरुणोदय बेलामें इस तिथिमें स्नान करनेका महाफलहै ६३ स्नान करनेके समय इस नीचेलिखेहुये मन्त्रको पढ़ना चाहिये यच्चतत्र कृतम्पापम्मयासप्तसुजन्मसु । तन्मेरोगञ्चशोकञ्चभास्करीहन्तुसप्तमी ॥ अर्थात् ॥

दो० सप्तजन्म कृत पाप मम रोग शोक जो होय ॥
माघ मकरसितसप्तमी सबकहँ डारै खोय ६४
सतहत्तर के वर्ष में मास सातयें केरि ॥
भीमरथी है सप्तमी कहत विज्ञ सबटेरि ॥
पापी त्यहि नांघत नहीं जो जीवत तबताहिं ॥
षष्ठिसहस्रक वर्षतक ब्रह्मलोकमहँ जाहिं ॥
सोफल तब असनान सों होयमातु अबमोहिं ॥
रविमण्डलमहँगतनमन करतजननिहौतोहिं ६५

सो इन मन्त्रोंकोपढ़कर स्नानकरके जो कोई अर्घ्यपात्रमें वा मदार वा अकौआके पत्तेमें करके दुपहरी का पुष्प व सुगन्धित बेरकेफल धरके अथवा ताम्रके पात्रमें धरके व बहुत श्वेत तण्डुलसे भरके ६६ यज्ञोपवीत व सिंदूर धरके सुन्दर अर्घ्य देताहै उसके सातजन्मोंके कियेहुये सब पाप नष्ट होजाते हैं ६७ तबतक चाहे उसके पितर नरक में पड़ेहुये पीड़ितही होतेहों व वह अनेक दुःखदायी रोगों और पापोंसे पीड़ित होताहो परन्तु जैसेही इस सप्तमीमें ऊपर लिखे हुये स्नानादि करताहै पितर तुरन्त दुःखसे छूटकर स्वर्गवासीहोते हैं व वह अन्त में अक्षय स्वर्ग पाताहै व उस दिन खीर पूरीआदि शुद्ध हविष्यान्न ब्राह्मणोंको खिलाना चाहिये ६८ कोई वस्तु पत्थर पर पिसीहुई उसदिन न खिलानी चाहिये न स्योहां राई सरसों का शाक खिलानाचाहिये केलाकी फलियां बकरीकाघी कटसरैया व पियाबासाके पीलेफूल गर्मजलमेंस्नान जम्भीरी निम्बू ये सब इस तिथिमें

देनेको वर्जितहैं व ये सब पदार्थ सूर्य्यकोभी कभी न देने चाहियें ६९।
७० व उस दिन व्रत रहनेवाले को अनर्थ न बकना चाहिये केवल
धर्म्मचिन्ता करनी चाहिये यह सूर्य्यनारायणजीका व्रत महापुण्य-
कारीहै पुराणोंमें इसकी प्रशंसाहै ७१ उसके व्रतरहने व स्नान दानादि
करने से सहस्रों कोटियों वर्षोंतक प्राणी सूर्य्यलोक में जाकर सूर्य्य
हीके समान नानाप्रकार के सुख भोगता है यदि स्वर्ग्ग मेंही सुख
भोगने की इच्छाकरे तो स्वर्ग्गहीं में अनन्त भोग सुख भोगता है
७२ व जब स्वर्ग्ग से च्युत होता है तो भूतलपर महाधनी राजा
होताहै व पूर्व्वजन्म के संस्कार से मर्त्यलोक में वह प्राणी सूर्य्यको
व्रत करता है ७३ व नानाप्रकार के सुख सम्पदा भोगता है व जन्म
जन्म में सूर्य्य के प्रसादसे सब सुखही पाताहै रोग शोक कभी उस
के नहीं होते ७४ माघके शुक्लपक्षकी सप्तमी जब रविवारको होती है
तो महाजया कहाती है व अन्य किसी मासकी शुक्लसप्तमी रविवार
को होनेसे विजयाकहाती है ७५ विजयासप्तमी व्रतादि करनेसे लक्ष
कोटि गुण अधिक फलदेतीहै व महाजया अनन्त फलदेतीहै महा-
जयाके एक व्रत करने से जन्मबन्धन से प्राणी छूटजाताहै ७६ इस
तिथि में जो कोई सूर्य्यकी प्रीति से लालघोड़ा सुवर्ण लालवस्त्र व
लालअन्न देताहै वह मर्त्यलोक में सबका पति होताहै फिर स्वर्ग्ग-
वास करता है पुनः मर्त्यलोक में आकर राजा वा महाधनी होताहै
७७ परन्तु इन अश्वादि दानोंका भेद कहते हैं हे विप्र ! चित्त ल-
गाकर सुनो समझो उत्तम भूषणों से युक्तकरके जो लाल घोड़ादेता
है ७८ उसने जानो सात समुद्रोंसहित पृथ्वीभर का दानकिया व
जन्मान्तर में वह सप्तद्वीपवती पृथ्वीका स्वामी होताहै ७९ घोड़ेके
न होनेपर पण्डितोंको चाहिये कि लालरङ्ग का हृष्टपुष्ट बैल अच्छी
तरह अलंकृत करके देवें उसके साथ माशाभर वा दो माशा सुवर्ण
दक्षिणा देवें ८० उसके संग कुछ अभीष्ट रत्नभी देवें यदि रत्नों का
अभाव हो तो सुवर्णही देवें अथवा यदि बैलभी न मिले तो केवल
सुवर्णही देनेसे स्वर्ग भोग करने को मिलताहै व मर्त्यलोकमें जन्म
होनेपर बड़ा भारी धनवान् होता है ८१ व जो अपनी शक्ति के

अनुसार सूर्य्य के लिये इस तिथि में लाल वस्त्र व लाल धान्य देता है वह स्वर्ग वा पृथ्वीका स्वामी होता है व कभी उसको लक्ष्मी नहीं छोड़ती है ८२ अरोगी अतिप्रसन्न सदा रहता है व चोरोंका जीतनेवाला प्रतापी होता है जबतक सूर्य्य आकाश में विराजमान रहते हैं तबतक वह भी वहां देवताओं से पूजित होताहै ८३ माघमास की शुक्ल द्वादशी व सप्तमी को जो कोई कुछ उत्सव करता है इसलोक में अभीष्ट फल पाता है अन्त में जाकर देवताओं से पूजित होता है ८४ व सूर्य्यवासर को जब कभी सप्तमी हो उस दिन विधिपूर्व्वक व्रतकरे तो पापसे पवित्र होकर यहां अपने मनमाने सुख भोगकरे व मरनेपर मुक्तिपावे ८५ प्रत्येक मास में करनेका जो विधान है उसके लक्षण कहते हैं इस व्रत के प्रसाद से पुरुष स्वर्ग में देवताओं से भी पूजित होताहै ८६ उत्तरायण सूर्य्य में जब रविवार को सप्तमी तिथिपड़े सोभी शुक्लपक्ष में व यदि उस दिन पुन्नामधेयवाचक कोई नक्षत्रहो तब सप्तमी व्रतका प्रारम्भ करे ८७ हस्त अनुराधा पुष्य श्रवण मृगशिर व पुनर्व्वसु इन नक्षत्रों को इस विषय में पण्डितलोग पुन्नामधेयनक्षत्र कहते हैं ८८ जब सप्तमी व्रत करनाहो तो पञ्चमी को एकबार भोजन करे फिर षष्ठी को दिनभर कुछ न खाय रात्रि में भोजनकरे फिर सप्तमी को ऐसेही निर्ज्जल व्रत रहकरके अष्टमी में पारणकरे ८९ यद्वा जबसे प्रारम्भ करे पहिली सप्तमी को मदार वा अकौआका पत्र खाकर रहजाय दूसरी को शुद्ध गोबर खाकररहे तीसरी को मरिच चौथी को जल पांचईं को कोई फल छठीं को लालमूल गञ्जीआदि सातईंको उपवास आठईं को एकबार भोजन नवईं को दुग्ध भोजन दशईं को वायु पीकररहे ग्यारहवीं को घृत व बारहवीं को निर्ज्जल व्रत इस क्रमसे सूर्य्यनारायण के लिये जो बारह शुक्लसप्तमी व्रत करता है वह अभीष्ट फल पाता है ९० उसमें जो मदार वा अकौआ का पत्र लिखा है उसके लिये ग्रामके पूर्व्व उत्तर ईशानकोण में जो मदार का वृक्ष लगाहो उससे दो नवीन कोमल छोटेपत्र अर्थात् सुनगे लवे उनको दांतों से न कूँचे जलके साथ योंहीं पीजाय व जो पवित्र गो-

बर लिखा है वह पृथ्वीपर जो न गिराहो वा गिराहो तो पृथ्वीपर आधे अँगूठे की ऊँचाईतक का छोड़कर ऊपर से पके मदूदूशाहीं टकाभर लेकर दांतों से न कूँचकर जलके सङ्ग पीजावे व जो सुन्दर मरिच लिखा है वह विनाछेदकी नवीन मोटी बहुत सूखी एक लेकर दांतों से न कूँचकर केवल जलके साथ पीना चाहिये जल, ब्रह्मतीर्थ व पितृतीर्थ की अंगुलियों के मूलस्थान में जितना आवे उतना पीना चाहिये अर्थात् अँगूठा व अँगूठे के समीप की दो अंगुलियों के सिकोड़ने से जो हाथमें खाली होजाय उसमें जितना आसके उतना पीना चाहिये व जो फल लिखा है वह खजूर व नारियल को छोड़कर अन्य किसी वृक्षका होना चाहिये जिसे विना दांतों के कूँचे हुये जलके साथ पीसके घृतभी जिस प्रमाण से जल पीनेको लिखा है उसी प्रमाण से पीना चाहिये ९१ व जो नक्तव्रत रात्रिका भोजन कहआये हैं उससे यह प्रयोजन है कि सन्ध्या के समय जब अपने से दूनी अर्थात् सातहाथ की छाया होजाय उससमय भोजन करने को नक्तव्रत कहते हैं रात्रि के भोजन को नक्तव्रत नहीं कहते ९२ प्रथम फल पुष्पादिकों से विधिपूर्व्वक सूर्य्यदेव की पूजाकरनी चाहिये उसके पीछे अन्नदान करके तब जिसदिन जिससमय जो पदार्थ खाने पीने को कहा है खाना पीना चाहिये ९३ पूजा के पीछे ऐसा ध्यान करना चाहिये सब लक्षणों से सम्पूर्ण सब भूषणों से भूषित द्विभुज लालवर्ण व लाल कमल हाथमें लियेहुये ९४ विशेष तेजसे युक्त बहुत जलके मध्य में स्थित वस्त्रादिकों से आच्छादित कमलके आसनपर विराजमान लाल चन्दनादि सुगन्धित पदार्थ अङ्गों में लगायेहुये ९५ सूर्य्यदेवकी चिन्तना करनी चाहिये व पूजाकालमें तो प्रथम विशेष रीति से ध्यान करना चाहिये तदनन्तर पूजन करना चाहिये व सूर्य्य के लिये यह मन्त्र जपना चाहिये भास्कराय विद्महे सहस्ररश्मये धीमहि तन्नस्सूर्य्यः प्रचोदयात् ॥ अर्थात् भास्करके लिये जानते हैं व सहस्रकिरणकेलिये ध्यान करते हैं इससे सूर्य्य हम लोगोंको प्रेरितकरें ९६ बस यही जप सप्तमी में श्रेष्ठ और विजयदाता कहाहै सब पुष्पों में लाल कँदैल के पुष्पों से सूर्य्यकी पूजाकरने

से बड़ाफल होताहै इसप्रकार प्रत्येक शुक्लसप्तमी को व्रत पूजनादि करके ९७ अष्टमीको पारणकरना चाहिये पारण अष्टमीही में करना चाहिये नवमी में सप्तमीव्रतका पारण कभी न करना चाहिये ९८ क्योंकि नवमी में पारण करने से व्रतकाफल नहीं मिलता पारण भी अपराह्णमें कडू तीत आमिल वस्तुओंको छोड़कर करना चाहिये ९९ चावल अच्छेप्रकार शुद्ध करलेने चाहियें तृणबीजादि कुछ उसमें न रहने देवे मूँग उर्द तिलादि व घृतसे सप्तमी व्रतवाला पारण न करे १०० व ब्राह्मणों को दुग्धादि हव्य पदार्थों से भक्तिपूर्व्वक भोजन करावे व यथाशक्ति और भी अन्नपान व्यञ्जनादिकों से भोजनकरावे पर मांस कभी न आपखाय न खिलावे १०१ ब्राह्मणों को दक्षिणा जैसा जिसका भागहो उसको वैसी देवे यह न कहे कि हमारे लेखे सब समान हैं जो जैसा विद्या आचार जातिमें श्रेष्ठहो उसको वैसी दक्षिणादे ॥

चौ० सर्व्वपापनाशिनी सुहावनि । धन पुत्रादि अनेक बढ़ावनि ॥
अरु अनन्त फलदायिनि जोई । रहत सप्तमी शुभलह सोई ॥
अरु जो करत भक्तिसों पारण । उभय लहत रविलोक अवारण ॥
कल्पकोटि बसि स्वर्ग्ग बहोरी । जात परमगति सत्य कहोरी ॥
यह शिवकहा पूर्व्वही काला । परमकृपालु महान दयाला ॥
जो यह व्रतविधान सुनलेइहि । अरु जो पालनकरि मनदेइहि ॥
जनन सुनाइहि जो नर कोई । ह्वै प्रसन्न चित मानव जोई ॥
सबसमानफललहिहैं प्राणी । सत्यसत्ययहमृषा न वाणी १०२।१०५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेअर्काङ्गसप्तमीव्रतन्नाम सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

दो० अठत्तरे महँ सूर्य्यदिन व्रत सुमन्त्र अरु नाम ॥
कहे सूर्य्य के व्यासमुनि जो सब गुणके धाम १

इतनी कथा सुनकर वैशम्पायनजी ने व्यासजी से पूँछा कि हे भगवन् ! तुम्हारे प्रसादसे अतिपावन सूर्य्यकी सप्तमीका व्रत हमने

सुना अब जो और कुछ सूर्य्यका प्रियहो उसेभी सुना चाहते हैं १
वेदव्यासजी बोले कि रम्य कैलास पर्वतके शिखरपर सुखसे बैठेहुये
महादेवजी से भूमि में शिर झुकाकर प्रणाम करके स्कन्दजी वचन
बोले २ कि अर्कसप्तमी का विधान हमने तुमसे विस्तार से सुना हे
नाथ! अब जो उनके वारादिकका फल है वह सुना चाहते हैं ३
महादेवजी बोले कि रविवारको लाल पुष्पों से जो मनुष्य सूर्य्य को
अर्घ्य देताहै व नक्तसमयमें हविष्यान्न भोजन करताहै वह स्वर्ग
से नहीं च्युतहोता ४ सप्तमीको जो कार्य्य करनेसे सूर्य्य प्रसन्न होते
हैं रविवार को वह करने से गणसहित आदित्यजी प्रसन्न होते हैं ५
वे तिथि व वारके पालन करनेसे एकही प्रकार प्रसन्न होते हैं जबतक
सूर्य्य अपने एक गणके साथ आकाशमें दिखाई देते हैं ६ तबतक
सब काम देते हैं सब पुण्य सब ऐश्वर्य्य रोगनाश स्वर्गवास मोक्ष
देते हैं परन्तु रविवार को अन्य दिनमें नहीं ७ कदाचित् रविवार स-
प्तमी के दिन संक्रान्तिहो व पक्ष शुक्लहो तो उस दिन जो व्रत पूजा
जपादि कियाजाय सब अक्षय होजाय ८ आदित्यवार को जो कोई
अपने गृहमें सूर्य्य की पूजा करता है उसके पुण्यका फल आगे
कहेंगे अब पूजाविधि कहते हैं सूर्य्य की मूर्त्ति सुवर्णादि से बनवा
कर वस्त्रसे वेष्टित करके मण्डलपर स्थापित करे ९ मूर्त्ति द्विभुजी
लाल कमल के पत्रपर स्थित सुन्दर गलेवाली रक्तवस्त्र व सब रक्त
भूषणों से भूषितहो उसको देखकर फिर सूर्य्य का ध्यानकर पुष्पा-
ञ्जलि ईशानकोण में छोड़े १० पूजा के समय यह मन्त्र पढ़े आ-
दित्याय विद्महे भास्करायधीमहि तन्नोभानुः प्रचोदयात् ॥ अर्थात्
आदित्य को जानते हैं भास्कर को ध्यावते हैं इससे भानु हमलोगों
को प्रेरितकरें ११ तब गुरुके उपदेश कियेहुये विधान से पहिले
चन्दनादि विलेपन विलेपनके अन्त में धूपदे धूपके अनन्तर दीप
१२ दीपके अन्त में नैवेद्य नैवेद्यके पीछे जल फिर मन्त्रजपे फिर
स्तुति पाठ करे फिर मुद्रा दिखावे फिर नमस्कार करे १३ पहिली
मुद्राका अञ्जलि नाम है दूसरी का धेनुकाहै इसप्रकार जो सूर्य की
पूजाकरताहै वह सूर्यकी सायुज्यमुक्ति पाताहै १४ जब हमने ब्रह्मा

का शिर काटा था तो वह कपाल हमारे हाथ में लपट गया था सो इन्हीं रविके प्रसादसे काशीके तटपर हमारे हाथसे छूटा १५ इससे इनसे श्रेष्ठतर देव तीनों लोकों में नहीं है इन्हींके प्रसादसे हम उस घोर गुरुपाप से मुक्तहुये १६ यह सुनकर स्कन्दजी ने पूँछा कि हे नाथ ! हे प्रभो ! तुमसे यह वाणी सुनकर हमको विस्मय हुआ तुमसे अन्य बड़ादेव कैसे व तुमने ब्रह्मवध कैसे किया १७ तुमतो ज्ञानी ईश्वर योगीहो व लोग तुमको अक्षर अव्यय कहते हैं देवताओं के एक गुरु तुमहो व सबों में व्यासरूपी महेश्वर कहातेहो १८ सर्व्वज्ञ नित्य वरदायी व सब प्राणियों के स्वामी हो हे नाथ ! फिर तुम्हारे दुष्कृत कैसे हुआ व विशेष क्रोध कैसे हुआ १९ तब महादेवजी बोले कि हे पुत्र ! लोगोंके हितके लिये प्रत्येक युगमें अलग २ होकर हम सब ब्रह्मा विष्णु महेश्वर होकर सब करते हैं २० न तो हम तीनोंका कभी बन्ध होता न मोक्ष न कभी अकार्य्य होता न कार्य्य परन्तु लोगों की रक्षाके लिये हमलोग विधिपूर्व्वक विचरा करते हैं २१ हम सब लोग परमहैं व सब विघ्नविनाशन हैं व सब रोगों का प्रशमन करते हैं व सब अर्थों के प्रसाधक हैं २२ ऐसेही ये सूर्य्य भी हैं एक परन्तु इनके अनेक भेदहैं इसीसे प्रत्येक मास में इनकी पूजा अलग २ होती है व इसीसे ये एकहैं पर बारह मासों में बारह नामों से प्रसिद्ध होते हैं २३ जैसे कि मार्गशीर्ष मास में इनका मित्र नाम होताहै व पौषमें सनातनविष्णु माघमास में वरुण व फाल्गुन में सूर्य्य २४ चैत्रमास में भानुके नामसे ये तपते हैं व वैशाख में तापन कहाते हैं ज्येष्ठमास में इन्द्र नामसे तपते हैं व आषाढ़में रवि तपते हैं २५ श्रावण मास में गभस्ति ऐसेही भाद्रपद में यम व आश्विन में हिरण्यरेता व कार्त्तिक मास में दिवाकर २६ ये बारह आदित्य मास मासमें कहेजाते हैं उरुरूप महातेजस्वी व युगान्तके अग्निके समान प्रकाशित रहते हैं २७ यह सूर्य्य की कथा जो कोई पढ़ताहै उसके पाप नहीं रहता न वह रोगी होताहै न उसके दरिद्रता होती है न उसका कभी अपमान होता है २८ मरण होनेपर अक्षय स्वर्ग पाता है फिर कभी कालान्तर में जब भूतल में जन्म

चाहताहै तो जन्म लेकर नानाप्रकार के सुख राज्य व यश क्रमसे पाता है अब हम सबको प्रिय श्रेष्ठमहामन्त्र कहते हैं २९ ॐसहस्रबाहु आदित्यके नमोनमः है पद्महस्त तुम्हारे नमस्कार है वरुण के नमोनमः है ३० तिमिरनाशक के नमस्कार है व श्रीसूर्य्य के नमोनमः है सहस्रजिह्वके नमस्कार है भानुके नमोनमः है ३१ तुम ब्रह्माहो तुम विष्णुहो तुम रुद्रहो तुम्हारे नमोनमः है सब प्राणियों में तुम अग्निहो व वायुहो तुम्हारे नमोनमः है ३२ तुम सब कहीं पहुँचतेहो व सब प्राणियों में रहतेहो तुम्हारे विना कहीं कुछ नहीं है चराचर इस सब जगत् में व सबदेहमें तुम्हीं टिकेहो ३३ इस को जपकर मनुष्य सबकाम स्वर्ग के भोग्यपदार्थ क्रमसे पाताहै आदित्य भास्कर सूर्य्य अर्क भानु दिवाकर ३४ सुवर्णरेता मित्र पूषा त्वष्टा स्वयम्भू व तिमिराश ये द्वादशनाम कहेगये ३५ सूर्य्य के इन बारहनामोंको पवित्रहोकर जो मनुष्य पढ़े वह सबरोग व सब पापसे छूटकर परमगतिकोपावे ३६ अब महात्मा भास्करजी के और नाम कहते हैं जो रक्ताख्य रक्तनिभ और सिन्दूरके समान लालदेह वाले सूर्य्य के ३७ मुख्यनाम कहेंगे उनको हे षडानन! सुनो तपन तापन कर्त्ता हर्त्ता ग्रहेश्वर ३८ लोकसाक्षी त्रिलोकेश व्योमाधिप दिवाकर अग्निगर्भ महाविप्र स्वर्ग सप्ताश्ववाहन ३९ पद्महस्त तमोभेदी ऋग्वेद यजुस्सामग कालप्रिय पुण्डरीक मूलस्थान व भावित ४० जो कोई भक्तिसे सदैव इन नामोंका स्मरणकरे उसको रोग का भय कहीं से न हो हे कार्त्तिकेय ! हे महामते ! आदित्य का सब पापहारी शुभ मन्त्र सुनो इसमें कुछ सन्देह नहीं करना चाहिये ॐ मिन्द्रायनमःस्वाहा । ॐ विष्णवे नमस्स्वाहा ४१ । ४२ इस मन्त्रका जपना होम करना व सन्ध्योपासन करना सब शान्तिकरताहै व सब विघ्नोंका नाशकरता है ४३ व मकरी विस्फोटकादिक सब रोगों का नाशकरताहै व कामलादिकरोग व जो और बड़े दारुण रोगहैं उन का नाशकरताहै ४४ एकाहिक प्रतिदिन आनेवाले त्र्याहिक तीसरे दिन आनेवाले व चातुर्थिक चौथे दिन आनेवाले ज्वरको अन्य कुष्ठ रोग क्षयीरोग उदररोग व सब प्रकार के ज्वर ४५ पथरीरोग मूत्र-

कृच्छ्ररोग व नानाप्रकारके रोग वातके प्रभवरोग व जो रोग गर्भ से उत्पन्नहोते हैं ४६ कुष्ठरोग के मण्डलादिरोग अन्य नानाप्रकार की पीड़ा करनेवाले रोग ये सब आदित्यका उच्चारणही करने से नष्ट होजाते हैं ४७ हे देवदेवेश ! हमारी रक्षा सब ग्रहों व रोगभयों से करो जिससे हे दिवाकर ! तुम्हारे कीर्त्तनसे सब नष्टहों ४८ अब सब काम अर्थों का साधक मूलमन्त्र महात्मा भास्करजी का कहते हैं जो कि नित्य भुक्ति व मुक्तिदेताहै ४९ वह मन्त्र यहहै ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्य्याय नमः । इस मन्त्र से सदा निश्चय सब सिद्धिहोती है ५० व रोग जो नानाप्रकारके होते हैं सब भागजाते हैं निकट नहीं ठहरते और अनिष्ट भय नहीं होताहै जो जल हाथमें लेकर जैसे २ सूर्य्य घूमतेहैं वैसे २ क्रमसे घुमातारहताहै ५१ उस जलके पीने से मनुष्य सब रोग से छूटताहै इस जलको सूर्य्यावर्त्त कहते हैं इस जलको किसीको न दे न किसी से कहे बड़ेयत्न से गुप्तरक्खे ५२ मुख्यकर जो अभक्तहों व जो पुत्रहीन हों व जहां पाखण्डीलोग बैठेहों हे पुत्र ! यह सूर्य्यावर्त्त जल कडूतेल मिलाकर नस्यदे वा पिलावे तो वह सब रोगों से छूटजाता है व मूलमन्त्र सन्ध्याके समय नित्य होम कर्म्म में जपने से ५३।५४ सबरोग और सब अनिष्ट ग्रह नष्ट होजाते हैं हे वत्स ! अन्य बहुत शास्त्रोंसे व बहुत विस्तृत अन्य मन्त्रों से क्याहै सब शान्ति करने वाला व सब अर्थों का साधक यही मन्त्र है नास्तिकको यह मन्त्र विधान न देना चाहिये न देवता ब्राह्मणकी निंदा करनेवाले को देना चाहिये ५५ । ५६ बस गुरुभक्तको देना चाहिये औरों को कभी न देना चाहिये प्रातःकाल उठकर जो मनुष्य नित्य इसका कीर्त्तन करेगा ५७ चाहे गोवध कियेहो वा उपकारको न मानताहो वहभी सब पापों से छूटजायगा व इस मन्त्रसे सन्तुष्ट होकर सूर्य्य आरोग्य और धनवृद्धि करते हैं इसमें कुछभी सन्देह नहीं है एक काल दो काल वा तीन काल जो कोई नित्य ५८ । ५९ सूर्य्य के सन्निकट इसको पढ़ताहै वह अभीष्ट फल पाताहै पुत्रार्थी पुत्र पाताहै व कन्याका अर्थी कन्या पाताहै ६० व विद्यार्थी न्याय व्याकरणादिक विद्याको पाताहै और धनका अर्थी धनको पाताहै ॥

चौ० श्रद्धाभक्तिसहित जोप्रानी । संयुत ह्वै सुनि है यह बानी ॥
सर्व्वपाप विरहित ह्वै सोई । सूर्य्यलोक पाइहि नहिं गोई ॥
भास्कर व्रत दिन अरु रविवारा । पुण्यतीर्थमहँ सहित विचारा ॥
जो यह पढ़े मनुजधरि ध्याना । कोटिगुणाधिक फललह नाना ॥
ग्रह भोजनके समयरु पूजा । समयविप्रभोजन तजि दूजा ॥
द्विजआगे जो पढ़ै विचारी । सो अनन्त गुणकर अधिकारी ॥
तपसी विप्र देवगण आगे । जो यह पढ़े सहित अनुरागे ॥
बहुरि पढ़ावे करि बहु प्रेमा । सुरपुरपूजितहोय सनेमा६१।६५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेसूर्यैशोति नामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उनासीवां अध्याय ॥

दो० उनासीवें महँ कह्यो भद्रकेतु इतिहास ॥
जोकरिरविकीभक्तिसब गणयुतगोरविपास १

श्रीवेदव्यासजी वैशम्पायनजी से बोले कि मध्यदेश में अति सुन्दर उसमण्डलका राजा भद्रकेतु नामहुआ वह नानाप्रकारके तपों से व बहुत प्रकारके व्रतों से अतिपवित्रथा १ देवता ब्राह्मण अतिथि व गुरुजनोंकी पूजा नित्य अच्छेभावसे करताथा पूर्वजन्मके संस्कार से उसके बायेंहाथ में श्वेतकुष्ठ होगया २ वैद्योंसे औषध करायेगये उनसे वह और भी बढ़ा तब वह राजा अपने मन्त्रियोंको व अन्य मुख्य २ ब्राह्मणों को बुलाकर उन लोगोंसे बोला कि ३ हे ब्राह्मणो! यह लोकनिन्दित दुःसह पाप हमारे बायेंहाथ में होगया है इस से हम किसी पुण्यक्षेत्रमें जाकर अपना शरीर छोड़ना चाहते हैं ४ इस से हे वीर धर्म्मज्ञो! परलोक के हितके लिये तुमलोग आज्ञादेओ जो कि वंशहीन मुझको इस लोकमें हितहो व मरनेपर भी हितहो ५ आप लोग प्रसन्न होकर जो कुछ कहेंगे हम सबकरेंगे ब्राह्मणलोग बोले कि जब धर्म्मशील बुद्धिमान् तुम इस राज्यको छोड़देओगे ६ तो हे राजन्! यह देश नष्ट होजायगा इससे तुम इसे न छोड़ो हमलोगों ने इस रोगके मिटने का यह उपाय विचारा है ७ कि हे प्रभो! तुम

सूर्यकी आराधना यत्नसे करो यह सुनकर राजा बोला कि हे ब्राह्मणो ! किस उपाय से हम भास्करजी को सन्तुष्ट करेंगे ८ क्योंकि हम तो इस कुष्ठरोगके कारण अपवित्र हैं व लोगों से निन्दित हैं हे ब्राह्मणो ! निन्दित होनेके कारण हम तो सब प्राणियोंसे अदृश्य रहते हैं ९ सो हमको अब क्या आराधना करनेसेहै व क्या राज्यसे है तब ब्राह्मणलोग फिर बोले कि यहांपर स्थित होकर तुम सूर्यकी उपासना करो १० इससे इस घोरपाप से छूटकर स्वर्ग पाओगे फिर स्वर्ग से मोक्ष यह सुनकर उस राजेन्द्रने उन उत्तम ब्राह्मणों के प्रणाम करके ११ सूर्य्यदेवता की परम आराधनाकी जैसे कि नित्य पूजा करना मन्त्रजपना नानाप्रकार की पूजा सामग्री उपलेपनादिक इकट्ठे करना १२ नानाप्रकार के फल अर्घ व हाथसे बूसी निकालेहुये चावलोंसे पूजा करनी दुपहरीके पुष्प अकौवाके पत्ते कँदैल व कञ्जीके लालपुष्प १३ लालकुंकुम सिन्दूर व वासन्ती आदि से पूजाकरे सुगन्धित केलाके पत्र तथा केलाके मनोहर फलसे १४ सदा सूर्यकी पूजाकरे और अर्घदेवै इस प्रकार राजा सब मन्त्रियों व पुरोहितों समेत आदित्यकी पूजा करनेलगा १५ सब स्त्रियों व अपने घरके सब पुरुषोंको राजाने बुलवाया वेभी अर्घदेनेलगे १६ व सब अन्तःपुर में रहनेवाली दासियां अर्घ देनेलगीं व अन्य वेदवादीलोग जहां तहां बैठकर विधिपूर्वक पूजन करनेलगे व सूर्यकी अत्यन्त उग्र शान्ति के मन्त्र स्तोत्र नानाप्रकार के पढ़ेगये १७ मूलमन्त्र व अन्य मन्त्रों से सब दिवाकरजी को जपनेलगे व ऐसेही एकाग्रचित्त होकर उन सबोंने और सूर्य्य के व्रत नियम किये १८ बस एकही वर्षमें राजा रोगसे छूटगया जब सम्पूर्ण घोररोग बीतगया तो वह राजा फिर सब जगत् का राज्य करनेलगा १९ व सब से नियम कराकर सूर्य्यका व्रत करानेलगा सबसे कहदिया कि बहुत नहीं तो एकमदार का फूल व एक सुगन्धित केलाका फल २० व मदारके पांच कोमल पत्तोंसे सब कोई सूर्य्यकी पूजा कियाकरें इस प्रकार सबलोग राजाके राज्यके राजाका प्रिय करने के लिये प्रतिदिन पूजा करतेरहे २१ व रविवार को प्रायः सब निराहार रहते

अथवा पायस पूरीआदि हविष्यान्न भोजन करके सब नर सूर्य्यको जपते होते २ इस प्रकार तीन वर्षतक सबोंने सूर्य्यका व्रत नियम किया २२ तब सन्तुष्ट होकर सूर्य्यनारायण आकर कृपासे राजासे बोले कि जो तुम्हारे मनको अभीष्टहो वह वर हमसे मांगो २३ हम तुम्हारे अनुचर पुरवासियों समेतके हितके लिये यहां आयेहैं राजा बोला कि हे सबके नेत्र! जो हमारा प्रिय वर दिया चाहते हो २४ तो इन सबोंसमेत हमको मरणके पीछे अपने लोकमें स्थानदेओ सूर्य भगवान् बोलेकि तुम्हारे मन्त्री अन्य जन ब्राह्मणलोग व भृत्यवर्ग्ग अपनी अपनी स्त्रियों समेत भूषण वस्त्र धारणकिये २५ नवीन युवा अवस्थाको प्राप्त शुद्ध जबतक प्रलय न हो तबतक सब भोगों से युक्त रोगरहित होकर हमारे सुन्दरपुर में बसें २६ जहां कि कल्प वृक्षों की फुलवाड़ियां चारोंओरों से लगी हैं उत्तम महल बनेहुए हैं हे महाभाग! स्त्रियां ठौर २ नृत्य करती हैं गीतगाती हैं २७ वहां पांच कल्पतक तुम मनुकी आदि में बसोगे पीछे तुम फिर भरतखण्ड के राजाहोओगे व ये तुम्हारे पुरवासी ब्राह्मणलोग फिर तुम्हारे पुरोहित होंगे २८ व ये सब देशवासी लोग फिर तुम्हारे राज्य में बसकर बड़े बड़े धनवान् होंगे व सब बड़े २ पण्डित होंगे व वहां हमसे वर पाकर सबके सब स्वर्ग्ग के सुख पृथ्वीही पर भोगोगे २९ ऐसा कहकर सूर्य्यनारायण वहीं अन्तर्द्धान होगये व वह राजामरने के पीछे समाज सहित स्वर्ग्ग को गया और आनन्द करनेलगा ३० व जो उसके पुर राज्य में कीट पतङ्गादि थे वे सब अपने अपने पुत्र पौत्रादिकों सहित स्वर्ग्ग में देववृक्षों के नीचे नानाप्रकार के विहार करनेलगे ३१ ऐसेही सब राजकुल के लोग व ब्राह्मणलोग व मुनि-लोग व जो क्षत्रियादिक अन्यवर्ण थे सब शीघ्रही सूर्य्यलोक को गये ३२ किसी को वहां यह न जानपड़ा कि हमारे पुत्र धन स्त्री सम्बन्धी वहां रहगये किन्तु सबके सब सम्बन्धी दिव्यरूप धारण कियेहुये वहीं पहुँचगये और सूर्य्यजी के प्रसाद से रोग रहित होकर सब सुख करनेलगे ३३ ॥

चौ० पुण्यकूटयहजो अघहारी । ह्वै पवित्र नर पढ़िहि विचारी ॥

सकल पाप ताके क्षय ह्वैहैं। स्वर्गमाहिं पूजित सुख पैहैं॥
वरद भानु ताके सुरपुर में। साची ह्वैहैं निज पुरवर में॥
जोयुतनियम सुनिहियहप्राणी। निज वांछितपाइहि सचवाणी॥
सब पापन के अन्त कराई। सूर्य्यलोक बासि अति हरषाई॥
याके सुनत तुरतसो मानव। पण्डित होत महागुणवानव॥
यह अतिगुह्यगुह्य इतिहासा। रवि निजमुखसों कीन प्रकासा॥
सो संक्षेपसहित हम गावा। विप्रवर्य्य सब तुम्हैं सुनावा३४।३७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेभद्रेश्वरा-
ख्यानंनामैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९॥

असीवां अध्याय॥

दो० अस्सीकेरे महँ कह्यो सूर्य्य चन्द्र ग्रहदान॥
जाहिदेखिसबसुजनजन देवें सहितविधान १

वैशम्पायनने व्यासजी से फिर पूँछा कि आपके प्रसाद से ग्रह-राज सूर्य्य का प्रभाव हमने सुना हे द्विज! अब रव्यादि ग्रहोंका साधन हमसे कहो १ रव्यादि ग्रह कौनहैं उनका सन्तोष व प्रियकैसे होताहै व किसकाल में किस देशमें उनका दर्शन कल्याणदायक वा अकल्याणदायक होताहै २ वेदव्यासजी बोले कि जो ग्रहादिकलोक में हैं सब अपने अपने पाप पुण्य भोगते हैं व सब विश्व भरके कर्मों के क्षयके लिये समय पर शुभ अशुभ करते हैं ३ सबजनों में व ग्रहों में सूर्य्य कालके नाशक कहाते हैं क्योंकि उन्हीं के उदय अस्त से कालबीतता है ये तीक्ष्ण व सौम्य किरणोंके योगसे निग्रह व अनुग्रह करते हैं ४ इससे प्रथम इन्हींके सन्तोष का उपाय हम कहते हैं जो अर्ककी लकड़ी से वा पल्लवसे होमकरता है ५ चाहे आकृष्णेन इस मन्त्रसे अथवा प्रथम कहेहुये मूलमन्त्र से शान्तिके लिये घी युक्त आहुति देता है वह अपना वाञ्छित फल पाताहै ६ सब रोगों की शान्ति केलिये वा किसीको वधबन्धन से छुड़ाने केलिये एक एक मन्त्रसे सौ २ आहुतियां देनीचाहियें ७ सूर्यके दिन मिश्री वा शक्करासे हवन करना चाहिये व अपनी शक्तिके अनुसार मनोहर हव्य

कव्योंसे ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये ८ शुक्लपक्षकी सप्तमी अथवा पूर्णमासी को जो कोई होम सूर्य्य मन्त्रसे करता है वह यदि रोगीहोता है तो रोगसे छूटता है रोगसे कष्टनहीं पाताहै ९ ब्रह्मासे लेकर तृणपर्य्यन्त सबसे सूर्य्यके बड़ा पराक्रम है सब जनोंके प्राण सूर्य्यही के अधीन हैं क्योंकि सब मीठेरस इन्हींके किरणों से उत्पन्न होते हैं व जलभी इन्हींके किरणोंसे उत्पन्न होताहै १० । ११ चन्द्रमा सबके मनमें स्थित रहते हैं व सूर्य्य प्राणोंमें ये दोनों प्राणोंके साथ ही मृत्युकाल में शरीर के बीचसे निकलजाते हैं चन्द्रमा की सोलह कलायें होती हैं व चन्द्रमा की एकमूर्त्ति शिरके भीतर रहती है वह दिन रात्रि नीचेको मुखकिये एक प्रकार के अमृत की वर्षा करती रहती है सब छोटेबड़े जीवजन्तु उसीसे जीते हैं व उसीसे सबके बल होताहै १२ । १३ व चन्द्रमा पृथ्वीमें सब अन्नोंके राजाहैं इससे सब का पालन पोषण अन्नसे करते हैं बस इन्हीं दोनों सूर्य्य चन्द्रमाओं से यह संसार स्थावर जङ्गम पुष्टहोता है १४ इससे इन्हीं दोनोंकी आराधना से शरीर की पुष्टिहोती है व शरीरकी पुष्टताही से फिर पुण्यहोती है व शरीर की पुष्टताही से साधक सर्वदापवित्र होकर सब कार्य्य सिद्ध करलेताहै १५ जो अधम मनुष्य मोहसे चन्द्रमाकी पूजा नहींकरता उसकी आयु क्षयहोती है व वह फिर नरकमें पड़ताहै १६ चन्द्रमाकी स्तुति इन मन्त्रोंसे करनीचाहिये कलारहित महादेवजीके मस्तकपर तुम अपनी कलासे द्वितीयाको स्थित होतेहो हे जगन्नाथ चन्द्र ! तुम्हारे नमस्कार है १७ द्वितीयाको तो इस मन्त्रसे नमस्कार करै व अन्य तिथिमें भी जो चन्द्रमा के इसी मन्त्रसे नमस्कार करता है वहभी वाञ्छित फल पाताहै १८ प्रथम तुम अत्रिमुनिके नेत्रोंसे उत्पन्न हुये फिर क्षीरसागर के मथने से व तुम्हारा महेशजी के मुकुट में वासहै हे चन्द्र ! तुम्हारे नमस्कार है १९ सुधाकर जगत्पति दिव्य रूप तुम्हारे नमस्कार है शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष दोनोंमें बराबर रात्रिमें तुम प्रकाश करतेहो यह पण्डितलोग कहते हैं २० ॐ ह्रांह्रीं सोमाय नमः । यह चन्द्रमा का जपनेका मन्त्रहै प्रातःकाल जपना चाहिये इस प्रकार जो चन्द्रमाकी पूजा करताहै वा इस इतिहास को सुनाता

सुनता है वह जन्म जन्ममें अमृत के तुल्य लोगोंको मीठालगता है २१ ऐसेही सहस्रनाम से जो स्तुति करता है वा पृथ्वीमें पूजाकरता है वह अक्षय स्वर्गवास पाताहै फिर वहां से लौटना दुर्लभ होजाता है २२ पीतल वा कांस्य के पात्रमें दधि घी भरकर अपने विभव के अनुसार थोड़ा वा बहुत अहङ्कार रहित जो कोई पुरुष चन्द्रमा के लिये दान देता है अथवा सुवर्ण के पात्र में वा चांदी के वा कांस्यही के वा लोहे के वा मृत्तिकाही के पात्रमें दधि घी भरके किसी पर्व्व में जो कोई बहुत पढ़े लिखे सदाचारी बहुत पुत्रवाले ब्राह्मणको देता है उसकारूप अमृतसे भी अधिक सौभाग्यवाला होताहै चाहेस्त्रीहो वा पुरुष जोई देताहै उसकी दुर्भाग्य कभी नहीं होती है २३।२५ परन्तु रूपसौभाग्य अच्छी होनेके लिये यह मन्त्र पढ़ना चाहिये कि रूप सौभाग्यकी कामना से हम दधिसहित कांस्य के पात्रमें करके देतेहैं हमको सौभाग्य व रूप देओ २६ इस मन्त्रको पढ़कर अहङ्कार रहित होकर ब्राह्मणको दे देवे व अपनी शक्तिके अनुसार दक्षिणा और नये वस्त्रादिभी देवे २७ ॥

चौ० भोज्य अन्न नानाविधिकेरे । अरु ताम्बूल मनोहरहेरे ॥
सुमन मालिकादिक सब दाना । रूपसुभाग्य हेतु मन माना २८
देय विप्र कहँ जो नर कोई । विधु सों लहै सकल सुख सोई ॥
सुरपुर नरपुर सबकहुँ सोई । सुभग रूप पावे नहिं गोई २९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादे सोमार्चननामाशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

दो० इक्यासियें महँ भौमकी है उत्पत्ति कछूक ॥
पुनि दुर्गापूजन भजन बहुविधिकह्यो न चूक १

वैशम्पायन ने फिर वेदव्यासजी से पूँछा कि अब हम मङ्गलकी उत्पत्ति जनोंमें सन्तोष प्रभाव विभव व तेज निश्चय करके सुना चाहते हैं १ वेदव्यासजी बोले कि मङ्गल शिव से उत्पन्न हुये हैं व पृथ्वीसे उत्पन्न होनेके कारण महीसुत वा कुज कहाते हैं सत्त्वगुणी

व बलसे सम्पूर्ण हैं इसीसे पृथ्वीमें शूर व शक्तिधर रहते हैं २ ती-
क्ष्णस्वभाव क्रूरग्रह लोहिताङ्ग देव प्रतापवान् हैं कुमार रूपसम्पन्न
विद्युत् के समान प्रकाशित प्रभु रहते हैं ३ ये दैत्य राक्षस व दानवों
के निकट कभी नहींजाते दशाके योगसे मनुष्य उद्भिज्ज व पशु प-
क्षियोंको बाधित करते हैं ४ यह सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि मङ्गल
महादेवजी से कैसे उत्पन्न हुये व पृथ्वीके पुत्र कैसे हुये व क्रूरग्रह
देव कैसे हुये यह हम जानना चाहते हैं ५ व इनकी सन्तुष्टता सदैव
सब लोगोंपर कैसे होती है हे गुरुजी! इनका सब प्रभाव अपने मुख
से कहिये जिससे निस्संशय हम जानें ६ व्यासजी बोले कि हिरण्याक्ष
के कुलमें बुद्धिमान् अन्धकनाम दैत्यों का राजा सब देवताओं का
अन्तकर्त्ता हुआ वह विष्णुके तुल्य पराक्रमी था उसने विष्णुजी से
वरदानपाकर इन्द्रादि सब देवताओं को क्रमसे जीतलिया ७।८ तब
सबदेवता जाकर ब्रह्माजीसे यह बोले कि अन्धकासुरने हमलोगोंका
राज्य सुख व यज्ञ सब हरलिया ९ इससे उसके वधका उपाय कहो वा
करो तब ब्रह्माजी देवताओं से बोले कि इसके वधका उपाय १० नहीं
है क्योंकि इसने विष्णुभगवान्से वरपाया है व अमृत भक्षण किया
है परन्तु जैसे इस असुरका निश्चय अनादरहोगा ११ लोकके हित
के लिये हमकुछ उपाय करते हैं कामसंयुक्त श्रद्धा और अपनी
मायात्रि चिकित्सा को भेजेंगे क्योंकि सब स्त्री रतिको प्राप्तहोती हैं
यह विचारकर ब्रह्माजीने अपने मनमें फिर शोचा तो विदितहुआ
कि पार्व्वती दुर्गाको छोड़कर और किसीको देखकर उसका मन
न स्थिरहोगा जब वह पार्व्वतीके ऊपर मोहित होगा तो जगत्स्वा-
मी शिवजी कोपकरके उसको विरूप करडालेंगे १२। १३ तब अ-
सुरता को छोड़कर वह दैत्य मरजायगा ऐसा कहकर ब्रह्माजी ने
श्रद्धा व कामयुक्त विचिकित्सा अपनी मायाको उसके पास भेजा
उन्होंने जाकर उसके मनमें ऐसीबात उत्पन्न करादी १४।१५ कि वह
अपनी स्त्रियोंसे अन्य सुन्दरी स्त्रियां ढूँढ़नेलगा परन्तु उसे अपनी
स्त्रियों से रूपवती कोई स्त्री न दिखाई दी तब उस मायासे प्रेरित
होकर वह तीनों लोकोंमें घूमनेलगा १६ जाते २ हिमवान् पर्वतके

ऊपर उसने अति परमोत्तम एक स्त्रीरत्नदेखा व उन पार्व्वतीजीको देखकर वह दैत्य कामके वशीभूत हुआ १७ ज्ञान लोपहोजाने के कारण उसने उन दुर्ग्गाजी को ग्रहण करना चाहा पार्व्वतीजी अपने रूपको मायावीरूप बनाकर जाय १८ झट महादेवजीके समीप बैठीं परन्तु काम से विचेत और उन्मत्तचित्त वह वहां भी उनके पकड़नेको गया १९ वहां उनको न देखकर वह दैत्य फिर उसीस्थान पर आया जहां प्रथम दुर्ग्गाजीको देखाथा तो वहां उनकी उसमाया की मूर्त्तिको देखा व कामातुर होकर उस मूर्त्तिको पकड़नेलगा तब वह देवीका रूप महादेव का रूपहोगया २० उसे देखकर वह दैत्य क्रोधसे अपनेस्थानको चलागया वहांसे अपने योधाओंको युद्धकरने के लिये सजाकर महादेवजीके जीतनेके लिये उत्सुकहुआ २१ कि उनकोजीतकर गौरीको अपने यहां लाकर उनके संग कामक्रीड़ाकरें इस बातको सुनकर सब देवगण इकट्ठेहुये व नन्दीश्वरके संगजाकर २२ दैत्योंसे युद्धकरनेलगे दोनों सेनाओंसे महाभयङ्कर युद्धहुआ पर जो दैत्य रणमें मृतकहों दैत्योंके आचार्य्यने मृतसञ्जीवनी विद्यासे उनको जिलादिया इससे वे दैत्य फिर महाबली देवताओंसे युद्धकरनेलगे तब जो दैत्य नष्टहों फिर जीनेसे न्यूनही न होनेलगे २३ इस वृत्तान्त को देवताओंने कैलास पर आकर सब महादेवजी से निवेदन किया तब क्रुद्धहोकर शम्भुजीने नन्दीश्वर से कहा २४ कि हे वीर ! तुम दैत्यालय को शीघ्रजाओ व हमारी आज्ञासे सब दैत्योंके सामने उस दैत्यराज की सभामें सबको दिखाकर २५ उस दुरात्मा दैत्याचार्य्यकी दाढ़ीके बाल पकड़कर घसीटते हुये विह्वलकरके अतिवेग हमारे पासलाओ व २६ पार्व्वतीनाथजीकी प्रेरणासे श्रीमान् नन्दीश्वरने जाकर सब दैत्योंके सामने बलसे शुक्राचार्य्य की दाढ़ी पकड़ली २७ व जब पकड़कर लेचले तो दैत्योंने बाणोंसे नानाप्रकारके प्रहार नन्दीश्वर के ऊपर किये परन्तु बलशाली नन्दीश्वर के अङ्गोंमें वे कुछभी पीड़ा व घाव न करसके २८ देवताओंके आगे आगे नन्दीश्वर भार्ग्गवजीकी दाढ़ी पकड़ेहुये बड़ेहर्षित चित्तहोकर महादेवजी के आगे आगये २९ तब असुरों के गुरु भार्ग्गवजी को

पकड़कर महादेवजी अपना रौद्रस्वरूप धारण करके कालान्तक स्वरूपी होकर झट लीलगये ३० तब क्रुद्धहोकर दैत्योंकापति महाबली अन्धकासुर अपनी सब दैत्यसेना संग लिये घोर अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करताहुआ महादेवजीकी ओरको दौड़ा ३१ व इधरसे देवता सिद्ध चारण गुह्यक विद्याधर गन्धर्वादिक सब मारे क्रोधके दैत्योंसे युद्ध करनेके लियेगये ३२ व देवता दानवोंकी सैन्योंसे सर्व्वलोक भयंकर महाविषम युद्ध होनेलगा ३३ उसमें अपने अपने तीक्ष्ण बाणों से देवगण दैत्यों को मारनेलगे व उस महारण में दैत्यलोग देवताओं को मारनेलगे ३४ आपस में जयकी इच्छा कियेहुये देवगण व दैत्यगण सुवर्णकी फोंकवाले व रत्नोंकी फोंकोंवाले वज्रसमान पुष्ट बाणों से मारनेलगे ३५ वे दोनों ओरोंके चलायेहुये बाण जिनके लगतेथे उनके अङ्गोंको व आकाश को प्रकाशित करतेथे परन्तु देवताओंने सफल अस्त्रसमूहोंसे मारकर महापराक्रमी दैत्योंको पृथ्वीपर गिरादिया यहांतक कि देवताओं के शस्त्रास्त्रों से सब जगत् व्याप्त होगया ३६ । ३७ दैत्यों के चलाये हुये सब शस्त्रोंको देवताओंने और यत्नसे युद्धकरते हुये महादेवजीने भी उनके प्रत्यस्त्रोंसे काटडाला तब शूलसे पीड़ित बहुत कालहुये और नहींमरे नम्रतायुक्त अन्धकको शिवजीने अपनागण करलिया ३८।३९ फिर देवताओंसे कहकर महादेवजीने शुक्राचार्य्य को मुखसे उगिलदिया वह गर्भ भूमिमें पतित हुआ इसीसे फिर भौम कहाया ४० बस इस प्रकार मङ्गल पृथ्वीके सुत व शिवके सुतहुये व शुक्रजी आनन्द युक्तहोकर महादेवजीकी आज्ञासे फिर दैत्योंके पास चलेगये ४१ मङ्गलजी की पूजा मङ्गलवार चतुर्थीमें जब दशादिक अरिष्टहो और गोचर में भी अनिष्ट राशिहो तब अच्छी तरहसे व्रत रहकर ४२ त्रिकोण मण्डल में मंगलजी की पूजा लालफल और लाल चन्दनादिक लेपनों से करे इसप्रकार पूजित होकर मंगल बुद्धि, धन ४३ पुत्र सुख और यशको देते हैं व्यासजी ने अपने शिष्यों से कहा कि हे शिष्यो ! यह कल्याणदायक धर्मका आख्यान तुमसे वर्णन किया अब क्या सुननेकी इच्छा है ४४ जिसके सुनने से फिर जन्म मरण नहीं होता है ब्राह्मण क्षत्रिय

और वैश्यों को पुण्यदाता है और कल्याणकी इच्छा करनेवालों को असेवन करने योग्य है ४५ हमारी आज्ञा से तुम सब कृतकृत्य होकर सुखपूर्वक जावो ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र नारद ! इसप्रकार सत्यवतीजी के पुत्र भगवान् व्यासजी सुनाकर ४६ अनेक प्रकार के धर्मों का निर्णयकर शम्याप्रास को चलेगये हे वत्स ! तुम भी श्रद्धा से तत्त्व को जानकर सुखपूर्वक ४७ आनन्द से भगवान् को गान करतेहुये यथाकाल विचरो और मनुष्यों को धर्म उपदेश करतेहुये संसार के गुरु भगवान् को प्रसन्न करो ४८ पुलस्त्यजी बोले कि हे राजन् भीष्मजी ! इस प्रकार ब्रह्माजी के कहने से नारद जी, गन्धमादन पर्वत में बदरिकाश्रम में मुनिवर नारायणजी के दर्शन करने को चलेगये ४९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेभौमोत्पत्तिपूजनं नामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

दो० बायासी अध्याय महँ ग्रहपूजन सविधान ॥
कह पुलस्त्यमुनि भीष्म सों जो सब गुणकी खान १

भीष्मजी बोले कि हे पुलस्त्यजी! सूर्य्य, चन्द्रमा और मङ्गल का पूजन तो सुना अब इस समय में चन्द्रपुत्र बुधजी का पूजन कहिये १ तब पुलस्त्यजी बोले कि हे भीष्मजी ! ताराके गर्भ से उत्पन्न चन्द्रमा के कुमार बुधजी मनुष्यों को शुभ और अशुभ फलके दाता शुभ और क्रूर दोनों ग्रह जानने योग्यहैं २ बुधजीका बाणके आकार मण्डल कहा हुआ है हरिन्मणि के समान वर्णवाले चूर्ण से मण्डल करै ३ और वहीं पर चन्द्रमादिक फूल और सुन्दर धूप से पूजन कर दशा अरिष्ट वा गोचर अरिष्टहो तो विधिपूर्वक दान भी देवे ४ कपूर, मूंग, हराकपड़ा, हरीमणि और यथाशक्ति सोना भी बुधकी प्रसन्नताके लिये देवे ५ हे चन्द्रपुत्र ! हे महाबुद्धियुक्त ! हे वेद और वेदाङ्ग के पारगामी ! हे ग्रहों के मध्यमें स्थित बुधजी ! आपके नमस्कार है हमारे ऊपर सदैव प्रसन्न हूजिये ६ हे महाराज भी-

ष्मजी! इस प्रकार एकाग्रचित्त होकर बुधकी भक्ति से स्तुति करने से बुधजी के प्रसाद से सम्पूर्ण कामनाओं को मनुष्य पाता है ७ बृहस्पतिजी का पूजन षट्कोणके आकारवाले मण्डल में कहाहुआहै यह मण्डल पीले अच्छे चूर्णका बनावे ८ और पीले सुगन्धयुक्त फूलों और पीले कपड़े और सुवर्ण से पूजन करै दशा और गोचर में जो बृहस्पति अरिष्टहो तो यथाशक्ति दानदेवे ९ चनेकीदाल,पीला कपड़ा, सोना और पुखराज ये अरिष्ट की शांतिके लिये ब्राह्मणको देवे १० हे देवताओं के आचार्य सब शास्त्रोंमें निपुण बृहस्पतिजी! इस दानसे प्रसन्न और इसी समयमें शुभकर्ता हो ११ हे राजेन्द्र भीष्मजी! इस प्रकार पूजन करने से बृहस्पतिजी प्रसन्न होजाते हैं और मनुष्य बृहस्पतिजीके पूजन से सब कामनाओं को प्राप्तहोता है १२ अब शुक्रजी का भी पूजन कहते हैं जिसके करने से पुरुषों को अच्छे प्रकारसे सब कामनाओं की प्राप्ति होजाती है १३ शुक्रजीका मण्डल पांच कोणका कहाहुआ है बुद्धिमान् मनुष्य विधि से सफ़ेद वर्णवाले चूर्णसे मण्डल बनावे १४ फिर मनुष्य श्रद्धायुक्तही होकर भक्तिसे सफ़ेद चन्दन सफ़ेद फूल और सफ़ेदही कपड़े से शुक्रजी का पूजन करै १५ यथाशक्ति चांदीका दक्षिणा भी कहा है दशा आदिक अरिष्ट हों तो सफ़ेद घोड़ा देवे १६ चावल, सफ़ेद कपड़ा, चांदी, सफ़ेद चन्दन और सुगन्धयुक्त कपूर ये ब्राह्मण को दानदेवे १७ हे महाभाग दानवोंके पुरोहित सब असुरोंसे पूजित शुक्रजी! इस दानसे सन्तुष्ट हूजिये १८ यह मन्त्र उच्चारण कर जैसा कहा हुआहै वैसाही दानदेवे तो उसके ऊपर शुक्रजी शीघ्र प्रसन्न होजाते हैं १९ शनैश्चरके पूजनके लिये मनुष्य के आकार मण्डल काले वर्णवाले चूर्णसे करै और पूजन भक्तिसे २० काली गन्ध, कालेफूल और कालेही कपड़े से करै लोहका दक्षिणा दान, तिलकीखरी २१ कालीगौ, कालेकपड़े, यथाशक्ति सोना और नीलमणि देवे २२ हे सूर्यके पुत्र! हे महाभाग! हे छायाकेपुत्र! हे महाबलयुक्त शनैश्चरजी! इस दानसे नीचेको आपकी दृष्टिहो और प्रसन्न हूजिये २३ इस प्रकार भक्तिसे शनैश्चरजी की स्तुतिकर जो ब्राह्मण को दान

देताहै तो उसकी दशा और गोचर के भी अरिष्ट शनैश्चरजी के ऊपर प्रसन्न होजाते हैं २४ राहुका वर्णआदिक और मण्डल भी शनैश्चर के समान सूर्य के आकार कहाहुआ है और पूजा शनैश्चर के समान है २५ गोमेद, सरसों, तिल, उड़द काले, भैंस और बकरी का दान राहुमें कहाहुआ है २६ हे सिंहिका के पुत्र दैत्योंमें श्रेष्ठ चन्द्रमा और सूर्यके मर्दन करनेवाले अच्छे व्रतवाले महाभाग राहुजी! इस दानसे प्रसन्न हूजिये २७ केतुका सुन्दर ध्वजाकार मण्डल बनावै और पूजा और वर्णआदिक सब शनैश्चर के समान जाने २८ सोना समेत सप्तधान्य केतुका दान कहाहै इस प्रकार करनेसे मनुष्य के ऊपर प्रसन्न होजाते हैं २९ और धन, पुत्र, सुख और सौभाग्यदेते हैं (आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यञ्च हिरण्ययेनसवितारथेन देवोयातिभुवनानिपश्यन्) यह सूर्यजीका मन्त्रहै (इमंदेवाऽसपत्नछंसुवध्वंमहतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममनुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै विशएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाछंराजा) यह चन्द्रमा का मन्त्रहै ३० (अग्निर्मूर्द्धादिवःककुत्पतिः पृथिव्याअयंअपाछंरेताछंसिजिन्वति) यह मंगलका जप और पूजनमें मन्त्रहै (उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसछंसृजेथामयंचअस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत) यह बुधका मन्त्र है (बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषुयद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम्) यह बृहस्पति का मन्त्रहै ३१ (अन्नात्परिस्रुतोरसंब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रंपयः सोमंप्रजापतिर्ऋतेन सत्यमिन्द्रियंविपानछंशुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु) यह शुक्रका मन्त्रहै (शन्नोदेवीरभीष्टयआपोभवंतुपीतयेशंयोरभिस्रवन्तुनः) यह शनैश्चरका मन्त्र है (कयानश्चित्रआभुवदूतीसदावृधःसखाकयाशचिष्ठयावृता ।।) यह राहुका मन्त्र है (केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽपेशसेसमुषद्भिरजायथाः) यह केतुका मन्त्रहै ३२ ये मन्त्र ग्रहोंके पूजन और जप में कहेहुयेहैं इस प्रकार करनेसे सब ग्रह प्रसन्न ३३ होजातेहैं और पुरुषों को निरन्तर अच्छी सम्पदा देतेहैं हे महाराज भीष्मजी!

यह मैंने सब तुम से क्रम से कहा ३४ इसको सुनकर मनुष्य सब सुनने के अर्थ के सार को प्राप्त होता और महादेवजीके समीपको प्राप्त होता है यह पवित्र, यश का निधान और पितरों को बहुत प्यारा होताहै ३५ यह देवताओं में अमृत के समानहै पापी पुरुषों को पुण्यका देनेवाला है इस यशके देनेवाले को जो भक्तिसे पढ़ता और सुनता है मधु, मुर और नरक के वैरी कृष्णचन्द्रका पूजनदेखता है ३६ और मनुष्यों को जो बुद्धि देता है वह इन्द्रलोक में ब्रह्मा, शिव और श्रेष्ठ देवताओंसे पूजित होकर एक कल्पतक बसता है और जो इस शुभ ऋषियोंके चरितको नित्यही सुनताहै ३७ वह सब पापों से छूटकर स्वर्गलोकमें पूजित होता है सतयुगमें तपस्या की प्रशंसा है त्रेतायुग में ज्ञान की ३८ द्वापरयुग में ज्ञानकी और कलियुग में दान की प्रशंसा मुनिलोग करते हैं सब दानों में यही एक उत्तम दान है ३९ यह सब प्राणियों को अभय देनेवालाहै इस से श्रेष्ठ दान नहीं है प्रभु भगवान् यह कहते हैं कि शूद्र को दान प्रधान है ४० दानसे तिसको सब कामनाओं की प्राप्ति और तपस्याभी होतीहै यह पुण्य, पवित्र, उमर बढ़ानेवाला और सब पाप नाशकरनेवाला ४१ पुराण तुमसे कहा इसमें तीर्थश्राद्धका भी वर्णन है इसको जो मनुष्य सुनता वा पढ़ता है वह लक्ष्मीयुक्त होजाता है ४२ और सब पापोंसे छूटकर लक्ष्मी समेत हरिजी के समीप जाताहै हे महाराज ! यह पुण्यकारी और महापापों का नाशनेवाला तुमसे वर्णन किया ४३ इसकी ब्रह्मा, सूर्य और रुद्रजीभी पूजा करतेहैं यह सुनने योग्यहै इसके जाननेवाले यही कहतेहैं हे राजन् ! यह सृष्टिखण्ड मैंने तुमसे कहा है ४४ यही पुराण के आदि और नव प्रकार की सृष्टि पौष्कर है जो विद्वान् इसको ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्योंको सुनाता वा सुनता वा पढ़ता है वह सौकरोड़कल्प ब्रह्मलोक में आनन्द करता है ४५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेप्रथमेसृष्टिखण्डेभाषानुवादेपुराणावतारे ब्रह्मार्चनवर्णनंनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

सृष्टिखण्डसमाप्तम् ॥ शुभंभवतु ॥

भविष्यपुराण क्री० १=)

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासीकृत भाषाहै–इस में पौराणिक इतिहास, चारोंवर्णोंके धर्म, स्त्रीशिक्षा व परीक्षा, व्रतोंके उद्यापन, शाकद्वीपीय ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, होनेवाले राजाओं का राज्य समय, गर्भिणी के धर्म, धेनुदानविधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगाने का फल और सब प्रकारके दानोंका माहात्म्यआदि वर्णन कियेगये हैं ॥

शिवपुराण भाषा क्री० १॥)

इसका पण्डित प्यारेलालजी ने उर्दूसे हिन्दीभाषा में भाषानुवाद कियाहै इसमें शिवजीके निर्गुण व सगुण स्वरूप का वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काश्यपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्ममाहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदि में छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त कीगई है ॥

स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्यखण्ड क्री० ।=)

पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी का भाषा है इस में सेतुबन्ध का माहात्म्य वहां के सब तीर्थों का वैभव, महालयश्राद्ध का माहात्म्य, नरकों व रामेश्वर महादेव का वर्णन इत्यादि बहुत सी कथायें हैं ॥

ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा क्री० ।)॥

जिसको पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्ड से देश भाषा में रचा जिसमें अनेक प्रकार के इतिहास और सम्पूर्णव्रतों के माहात्म्यआदि वर्णित हैं ॥

बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत क्री० ४) पु०

इसके भाषाटीका को श्रीअंगदशास्त्रीजी ने अक्षर अक्षर के अर्थ को ललित व्रजबोली में रचना किया है यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै [illegible] जिसकी सहायता से थोड़ा भी जाननेवाला भागवत को अच्छीतरह [illegible] समझ सक्ताहै यह पुस्तक प्रत्येक विद्वान् के पास रहनी चाहिये क्यों[illegible] भागवत बड़ा कठिन पुराण है विना ऐसे सहज भाषाटीका के सब को श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ता है इसका मूल बीचमें और भाषाटीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से पत्रेनुमा छपाहै कागज़ [illegible] है और छापा पत्थर है ॥

बृहन्नारदीयपुराण क़ी० ।≡)

पण्डित देवीसहायशर्मा नारनौलनिवासीकृत भाषा है—जिस में श्री नारदजी और सनत्कुमार संवादद्वारा श्रद्धाभक्तिनिरूपण, भगवद्भक्ति माहात्म्य वर्णन, उत्तम तीर्थों का निरूपण, सगरवंशीय सौदास राजा की कथा, श्रीगङ्गाजी की उत्पत्ति, राजा बलिका वृत्तान्त, दानविधि का निरूपण, व्रतों और श्राद्धोंका विधान, तिथिनिर्णय, प्रायश्चित्तविधान, यममार्ग का निरूपण, संसार के दुःखों का कथन, मोक्षोपायवर्णन, वेदमाली और तिसके पुत्र यज्ञमाली वा सुमाली की कथा और विष्णुजी के चरणोदक का माहात्म्य इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

सुखसागर क़ी० ७) पु०

सुखसागरों का तर्जुमा पंजाब के रहनेवाले बाबू मक्खनलालजी ने कियाहै इस सुखसागरमें बहुतही मोटेहरूफ़ और अत्यन्तही उम्दा तसवीरें इत्यादि सब सामान है कि जिसकी तारीफ़ नहीं होसक्ती देखनेही से हाल मालूम होगा ॥

गणेशपुराण भाषा क़ी० २॥) पु०

इसको मुन्शीनवलकिशोरजी की आज्ञानुसार नारनौलनिवासी पंडित देवीसहायजी ने संस्कृत से श्लोक २ का देशभाषा में उल्था कियाहै इसमें गणेशजीका सम्पूर्णचरित्र विस्तारपूर्वक व और भी अनेक विषय वर्णितहैं ॥

श्रीवाराहपुराणपूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध क़ी० १) पु०

जिसका जयपुरनिवासि पण्डित माधवप्रसादजी ने मुन्शीनवलकिशोरजी के व्ययसे संस्कृत से देवनागरी में भाषाकिया और पण्डित दुर्गाप्रसाद और पण्डित सरयूप्रसादजीने शुद्ध कियाहै इसमें श्रीभगवान् वाराहनारायण ने धरती से चौबिस हज़ार श्लोकों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होनेके लिये इतिहास संयुक्त कथायें वर्णन की हैं ॥

गरुड़पुराण क़ी० ≡)।

इसमें ३४ अध्याय प्रेतकल्प के बीच में मूल और नीचे ऊपर भाषा टीका रखकर छापेगये हैं जिसमें सम्पर्ण प्रेतही का कर्म है और प्रेतही की सम्पूर्ण षोडशी सापिंडन शांति वृषोत्सर्ग इत्यादि क्रिया भी विस्तारपूर्वक वर्णितहैं ॥